ॐ

स्वामी शरण कृत

अथर्ववेद भाष्य

सरल पाठ, मन्त्रार्थ, पदार्थ सहित

(प्रथम भाग, काण्ड 1-10)

प्रकाशक

पालीवाल प्रकाशन

117/एच-1/02, पाण्डु नगर, जे.के. मन्दिर के सामने, कानपुर - 208005

ईमेल - swamivedayan@gmail.com

बेवसाईट - vedayan.simplesite.com

संस्करण : प्रथम, मकर संक्रान्ति, पौष, 2075 वि., 5120 युगाब्द (ई. 2019)

सर्वाधिकार : स्वामी शरण

मूल्य : दो हजार रुपये (दोनों भाग)

ॐ यो असौ आदित्ये पुरुषः, सो असौ अहम्, ॐ खम् ब्रह्म॥

जो आदित्य पुरुष (ईश्वर) है, वह मैं हूँ। ओम् सर्वव्यापक ब्रह्म है॥

पुस्तक	:	**अथर्ववेद भाष्य**
लेखक	:	स्वामी शरण
सर्वाधिकार	:	लेखकाधीन
संस्करण	:	प्रथम 2019
सहयोग राशि	:	रु. 2000/–(**दोनों भाग**)
प्रकाशक	:	**पालीवाल प्रकाशन** **117/एच-1/02, पाण्डु नगर,** **जे.के. मन्दिर के सामने, कानपुर - 208005** **ईमेल - swamivedayan@gmail.com** **बेवसाईट - vedayan.simplesite.com**
मुद्रक	:	**पालीवाल प्रकाशन** **117/एच-1/02, पाण्डु नगर,** **जे.के. मन्दिर के सामने, कानपुर - 208005** **ईमेल - swamivedayan@gmail.com** **बेवसाईट - vedayan.simplesite.com**

ATHARVAVED BHASHYA
BY SWAMI SHARAN

सहयोग राशि : दो हजार रुपये (दोनों भाग)

ॐ

स्वामी शरण कृत

अथर्ववेद भाष्य

सरल पाठ, मन्त्रार्थ, भावार्थ, पदार्थ सहित

विषय सूची

1.	प्रथमम् काण्डम्	7-83
2.	द्वितीयम् काण्डम्	84-189
3.	तृतीयम् काण्डम्	190-326
4.	चतुर्थम् काण्डम्	327-465
5.	पञ्चमम् काण्डम्	466-478
6.	षष्ठम् काण्डम्	479-496
7.	सप्तमम् काण्डम्	497-529
8.	अष्टमम् काण्डम्	530-532
9.	नवमम् काण्डम्	533-537
10.	दशमम् काण्डम्	538-541

ॐ

निवेदन

हमारी मान्यता है कि वेद भगवान् ही हमारे गुरु हैं। वेद ही परमात्मा का शब्द-शरीर तथा प्रत्यक्ष रूप है। वेद विश्व का प्राचीनतम साहित्य तथा भारतीय धर्म - संस्कृति का मूल स्रोत है। वेद का पाठ तथा स्वाध्याय करना हमारा परम धर्म है। हमारी मान्यताएँ, चिन्तन तथा आचार - विचार वेद के अनुकूल होना चाहिए। वेद में सूक्त का गठन महत्वपूर्ण है। अतः भाव, विचार, सन्देश को स्पष्ट रूप से समझने के लिए सम्पूर्ण सूक्त को ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है। मात्र एक मन्त्र को लेकर विचार करने पर भ्रम भी हो सकता है। यद्यपि बहुधा एक मन्त्र अथवा उसका कोई अंश भी अत्यन्त महत्वपूर्ण सन्देश या मार्गदर्शन दे सकता है।

हमने वेद भाष्य में मन्त्रों का सरल पाठ देने के साथ ही मन्त्रार्थ, भावार्थ तथा पदार्थ भी प्रस्तुत किया है। इसका स्वाध्याय कर लें तो धात्वादि कोश, सरल संस्कृत व्याकरण तथा वैदिक शब्दकोश का उपयोग कर विचारशील परिजन सम्पूर्ण वेद का इसी रूप में प्रामाणिक अर्थ करने में समर्थ हो सकते हैं। सरल पाठ में मन्त्र का सन्धियों से मुक्त पाठ प्रस्तुत किया जाता है। इसका अर्थ है कि पदान्त में अन्य पद की सन्धि नहीं होती है। सरल पाठ में क्रिया विभक्ति अथवा नामिक विभक्ति के पश्चात् कोई शब्द या पद सन्धि के द्वारा नहीं मिलाया जाता है। इसी प्रकार अव्यय आदि शब्दों में जहाँ विभक्ति का लोप होता है, उनके अन्त में भी किसी पद या शब्द या शब्दांश की सन्धि नहीं होती है। इस प्रकार सरल पाठ में सभी पद पृथक् तथा स्पष्ट होते हैं। वेद मन्त्रों का सरल पाठ जनसाधारण के लिए, विशेष रूप से विद्यार्थियों के लिए वेद पाठ तथा अर्थ समझने के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है।

मन्त्रार्थ में हमने मन्त्र का यथासम्भव शाब्दिक अनुवाद देने का प्रयास किया है। वेदमन्त्र के किस पद के लिए भाषा में किस पद का प्रयोग किया गया है, यह भी पूर्णतः स्पष्ट है। मन्त्र का पद यथावत् देकर भाषा में अर्थ दिया गया है। संस्कृत में बहुधा वर्तमान काल की सहायक क्रियाएं अस्ति (है) आदि का लोप होता है, अर्थात् इनके विना वाक्य पूर्ण हो जाता है। भाषा में इनका प्रयोग आवश्यक होता है। हमने प्रयास किया है कि उनको भी कोष्ठक में दिया जाये जिससे यह स्पष्ठ रहे कि यह शब्द वेदमन्त्र में नहीं है तथा वाक्य पूरा करने के लिए भाषा में लिखना पड़ा है। इसी प्रकार संयोजक शब्दों (अथवा, तथा आदि) भी वाक्य पूर्ण करने के लिए इसी रूप में दिये गये हैं। इस प्रकार हमने मन्त्रार्थ में तटस्थता, निष्पक्षता, वस्तुनिष्ठता तथा प्रामाणिकता का ध्यान रखने का पूर्ण प्रयास किया है। फिर भी यदि कोई भूल-चूक रह गयी होगी तो विद्वानों के मार्गदर्शन के अनुसार भविष्य में संशोधन-परिष्कार किया जा सकता है।

भावार्थ में मन्त्र के भाव तथा सन्देश को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। यह वेदार्थ नहीं है, भावार्थ है। इसमें हमारे विवेक की सीमा है तथा मतभेद के लिए पर्याप्त अवकाश भी है। इससे वेदमन्त्र तथा वेदार्थ की प्रामाणिकता प्रभावित नहीं होती है। प्रवचनकर्ता इसमें अपने विवेक के अनुसार परिवर्तन-परिष्कार के लिए स्वतन्त्र हैं।

पदार्थ में मुख्यतः धातुज शब्दों में धातु स्पष्ट करना आवश्यक माना गया है। अन्य पदों सर्वनाम, अव्यय, संख्या, उपसर्ग आदि के अर्थ को लेकर कोई मतभेद नहीं है। संज्ञा, विशेषण तथा क्रियाएं धातुज हैं। उनमें धातु स्पष्ट कर देने से वास्तविक शाब्दिक अर्थ स्पष्ट हो जाता है। कुछ धातुएं अनेकार्थी भी होती हैं। मन्त्र में जिस अर्थ की उपयोगिता हो, उसे ग्रहण कर सकते हैं। धातु के एक से अधिक अर्थों के अनुसार भी यदि मन्त्र का अर्थ हो सकता है तो श्लेष के रूप में स्वीकार्य है। इसमें विचारधारा को लेकर कोई दुराग्रह नहीं होना चाहिए। हमें वेद के विचारों

को महत्व देना चाहिए, वेदमन्त्रों का अर्थ अपने विचार के अनुसार करने का दुराग्रह उचित नहीं है। वेदमन्त्रों का सरल स्वाभाविक शाब्दिक अर्थ सभी अध्येता सहज रूप से जानें तथा उसका चिन्तन-मनन कर स्वयम् अपने विवेक के अनुसार विचार विकसित करें। इसके पश्चात् भावार्थ तथा व्याख्या प्रत्येक व्यक्ति अपने विवेक के अनुसार स्वतन्त्र रूप से कर सकता है।

वैदिक भाषा और संस्कृत की संरचना में सूक्ष्म अन्तर मिलता है। वेद में उपसर्ग और धातुएँ संस्कृत से अधिक हैं। विभक्तियों में बहुलता है तथा विकल्प भी स्वीकार्य हैं।

कुछ उपसर्ग और अव्ययों में त्य आदि प्रत्यय जुड़कर नामिक शब्द बन जाते हैं। फिर उनमें नामिक विभक्ति लग जाती है। महर्षि पाणिनि ने एक सूत्र में इस नियम का उल्लेख किया है। इस प्रकार के शब्दों को अपवाद ही कहा जा सकता है। इस प्रकार नि उपसर्ग में त्य प्रत्यय जुड़कर नित्य शब्द बना। जिसका बहुवचन नित्यासः बना। इस शब्द का अर्थ नि उपसर्ग के अर्थ से लिया जायेगा। अतः नित्यासः शब्द का अर्थ निरन्तर बने रहना ही है।

उपसर्ग तथा अन्य अव्यय शब्दों में प्रत्यय जोड़कर नामिक शब्द बनते हैं। ऐसे अव्ययज अथवा निपातज शब्द संज्ञा और विशेषण बन जाते हैं परन्तु उनसे क्रियाएँ नहीं बनतीं अर्थात् उनमें आख्यातिक अथवा क्रिया विभक्तियाँ नहीं जुड़ती हैं। इस प्रकार नामिक अर्थात् संज्ञा विशेषण शब्द दो प्रकार के हो जाते हैं - धातुज तथा अधातुज अथवा अव्ययज या निपातज। कुछ शब्द ध्वनि के अनुसार होते हैं, जिनकी कोई धातु नहीं होती है। उन्हें ध्वन्यानुसारी शब्द कहते हैं। जैसे - चिश्चा।

वैदिक भाषा और संस्कृत में उपसर्ग और धातुएँ लगभग समान हैं, परन्तु प्रत्यय और विभक्तियाँ में अन्तर मिलता है। वेद में उपसर्ग और धातुएँ संस्कृत से अधिक हैं। विभक्तियों में बहुलता है तथा विकल्प भी स्वीकार्य हैं। जिन शब्दों के क्रिया रूप मिल जाते हैं, उनकी धातु निश्चित है। (सिच्यते - सिच - यजु. 19/15)। हिंसा के भाव वाली धातुओं में गति का भाव निहित होता है तथा गत्यर्थक धातुओं में जानना, पाना का भाव निहित होता है। वेद को श्रुति भी कहते हैं। प्राचीनकाल में गुरु से सुनकर ही शिष्य ज्ञान प्राप्त करते थे अतः वेद में श्रु-श्रवण धातु का अर्थ जानना, विद्वान होना भी स्वाभाविक रूप से माना जाना चाहिए। श्रवस्यवः आदि शब्द विद्वान्, सुनाने वाले, सुनने वाले के लिए प्रयोग किये गये हैं।

धातु अथवा शब्द के प्रथम स्वर से पूर्व अ लगता है तथा सन्धि हो जाती है। इसे परम्परागत व्याकरण में सन्धि प्रकरण में गुण कहा गया है। इस प्रकार अ जुड़ने को प्रत्यय भी माना जाता है। यदि पहले से अ, आ है तो दोनों मिलकर दीर्घ आ हो जायेंगे, इसी प्रकार इ होने पर ए, उ होने पर ओ हो जाते हैं। उदाहरण के लिए रम् से राम, कम् से काम शब्द बनते हैं। इक प्रयय लगने पर भी ऐसा होता है। वेद में इक प्रत्यय जुड़ने पर वैदिक शब्द बनेगा। वैदिक शब्द का अर्थ है - वेद से उत्पन्न, वेद से सम्बन्धित, वेद से युक्त। यह प्रत्यय स्वार्थ अर्थात् स्वयम् के अर्थ में भी लगता है। इसका अर्थ है कि कम तथा काम शब्द के अर्थ समान होंगे।

अग्नि शब्द का अर्थ ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् आदि होता है। वेद में इसी अर्थ में यह शब्द परमात्मा के लिए सर्वाधिक प्रयुक्त है। शब्दार्थ के अनुसार समाज के ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् भी अभिप्रेत हैं। इसी प्रकार वेदमन्त्रों के अनेक अर्थ होते हैं।

लोकभाषा में पञ्चमाक्षर के स्थान पर अनुस्वार (ं) का प्रयोग अधिक होने लगा है। यह अनुचित है। इससे उच्चारण अशुद्ध होता है तथा अर्थ भी अस्पष्ट हो सकता है। हमने अनुस्वार (ं) के स्थान पर क से म तक पञ्चमाक्षर का प्रयोग करने का प्रयास किया है। य, र, ल, व, श, ष, स के पहले आने वाले अनुस्वार (ं) को तालव्य, मूर्धन्य और दन्त्य स्थान के अनुसार शब्द क्रम में रखा गया है। इसी प्रकार ह से पहले आने वाला अनुस्वार (ं) स्वाभाविक रूप से ङ के स्थान पर है। ङ के स्थान पर अनुस्वार (ं) को स्वीकार किया गया है। इससे सभी को

सरलता होती है। विसर्ग (:) का उच्चारण स् (सूक्ष्म) अथवा ह् (सूक्ष्म) के रूप में है। अतः इसको शब्दकोश में इसी क्रम में स्थान दिया गया है।

वेदार्थ करने में अनेक विद्वान् अपने विचार को वेद में दर्शाने का प्रयास करते हैं। इसके लिए अनेक शब्द ही नहीं, वाक्यांश तथा कई वाक्य तक वेदमन्त्र का अर्थ करते समय जोड़ देते हैं जिनके लिए कोई शब्द या पद वेदमन्त्र में होता ही नहीं है। इसे अध्याहार कहा जाता है। कहा जाता है कि अध्याहार मन्त्र का अर्थ स्पष्ट करने के लिए दिया जाता है। स्पष्ट है कि इस प्रकार विद्वान् मन्त्रार्थ के स्थान पर भावार्थ करते हैं। कई विद्वान् तो पदार्थ में भी अध्याहार के नाम पर ऐसी टिप्पणियां तक दे देते हैं जिनको उचित नहीं माना जा सकता है। हम उनकी आलोचना नहीं करना चाहते हैं। उन्होंने जो भी प्रयास किये, उससे ही वेद के अध्ययन को दिशा मिली तथा हम इस प्रकार निष्पक्ष प्रामाणिक वेदार्थ करने का प्रयास कर पा रहे हैं। भविष्य में विद्वान् अधिक उत्तम, निष्पक्ष तथा प्रामाणिक वेदार्थ प्रस्तुत करेंगे, ऐसी आशा - अपेक्षा करना स्वाभाविक है। आशा है कि हमारे सहयोगी इस कार्य को पूर्ण करेंगे। शेष जीवन काल में हमसे जो कुछ बन पड़ेगा, सेवा करने का प्रयास करते रहेंगे।

मकर संक्रान्ति, पौष, 2075 वि. **स्वामी शरण**

पाण्डु नगर, कानपुर

ॐ

स्वामी शरण कृत

अथर्ववेद भाष्य

सरल पाठ, मन्त्रार्थ, पदार्थ सहित

प्रथमम् काण्डम्

1 अनुवाक - 1

1 मेधाजनन सूक्त - 1 (1)

1. शम् नो देवीः अभिष्टये, आपो भवन्तु पीतये।
शम् योः अभि स्त्रवन्तु नः॥ 1॥

मन्त्रार्थ :- **देवीः** देवी **आपो** आप **नो** हमारे **अभिष्टये** अभीष्ट के लिए **पीतये** पीने के लिए **शम्** कल्याणकारी **भवन्तु** हों। **नः** हमारे लिए **शम्** कल्याण **योः** मिलाने वाला **अभि स्त्रवन्तु** अभिसिञ्चन करें॥ 1॥

भावार्थ :- इस मन्त्र में हमारे लिए प्रकृति के कल्याणकारी होने की भावना है। सर्वथा इष्ट करने वाले, दिव्य गुणों से युक्त कल्याणकारी आप हमारे लिए भी कल्याणकारी हों, शमनकारी हों, शान्तिमय हों। आप अभिसिञ्चन करने वाले, शान्ति प्रदान करने वालों को, हमें मिलाने में कल्याणकारी हों॥ 1॥

पदार्थ :- **शम्** = कल्याणकारी (शम् - कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)। **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **देवीः** = दिव्यगुणयुक्त (दिव् - तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना)। **अभिष्टये** = अभीष्ट के लिए (अभि - अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, इष - इच्छा करना, चाहना, जाना)। **आपो** - व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना)। **भवन्तु** = हों, हो जायें (भू - होना)। **पीतये** = पान के लिए (पी-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)। **शम्** = कल्याणकारी (शम् - कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)। **योः** = मिलने वाला (यु - मिलना, मिलाना, अलग करना)। **अभि** = सभी ओर। **स्त्रवन्तु** = अभिसिञ्चन करें (स्रु - जाना, जानना, पाना, सृ - जाना, सरकना, बहना, टपकना)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)॥ 1॥

2. ये त्रिषप्ताः परियन्ति, विश्वा रूपाणि बिभ्रतः।
वाचस्पतिः बला तेषाम्, तन्वो अद्य दधातु मे॥ 2॥

मन्त्रार्थ :- **ये** = जो **त्रिषप्ताः** = त्रि-सप्त **विश्वा** = विश्व, सभी, सब **रूपाणि** = रचना, आकार, रूप **बिभ्रतः** = भरण, धारण करते हुए **परियन्ति** = सभी ओर आच्छादित हैं, सर्वव्यापक हैं। **वाचस्पतिः** = वाणी का रक्षक, पालक **तेषाम्** = उनका **बला** = बल **तन्वो** = विस्तार, वृद्धि **अद्य** = आज **मे** = मेरा, मेरे लिए **दधातु** = धारण करे॥ 2॥

भावार्थ :- **'त्रिसप्ताः'** पद त्रिसप्त का बहुवचन है। इसका अर्थ हुआ अनेक त्रिसप्त। अर्थात् जितने 'त्रिसप्त' होते हैं, सभी। इससे तीन और सात के संयोग से व्यक्त होने वाले सभी अर्थ इसमें समाहित हैं। तीन और सात से किन बातों को ग्रहण किया जाये, यह तो मन्त्र का रचनाकार ही जानता है। यदि वेद में ही कहीं तीन और सात बातों का स्पष्ट उल्लेख मिले तो वही मान्य होगा, अन्यथा सभी भाष्यकारों ने अपनी मान्यताओं के अनुसार कल्पना प्रस्तुत की है, वे सभी मत विचारणीय हैं।

पदार्थ :- ये = जो (सर्वनाम)। **त्रिषप्ताः =** त्रि-सप्त (त्रि - तीन (संख्या), सप - पूर्ण होना, पूर्ण ज्ञान होना, पूरा समझना, पूर्णतया जानना, संसक्त होना, संलग्न होना, मिलाप होना)। **परियन्ति =** सभी ओर आच्छादित हैं, सर्वव्यापक हैं (परि - सभी तरफ (उपसर्ग), यम् - रोकना, स्वाधीन रखना, आवरण करना, पोषण करना, नियमन करना, यन - उद्धार करना)। **विश्वा =** विश्व, सभी, सब (सर्वनाम)। **रूपाणि =** रचना, आकार, रूप (रूप - आकार बनाना, रचना करना, मन में रूपाकृति लाना)। **बिभ्रतः =** भरण, धारण करते हुए (भृ - भरना, भरण करना, धारण करना)। **वाचस्पतिः =** वाणी का रक्षक, पालक (वच - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना, पत् - जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **बला =** बल (बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना)। **तेषाम् =** उनका (सर्वनाम)। **तन्वो =** विस्तार, वृद्धि (तन् - विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना)। **अद्य =** आज (अव्यय)। **दधातु =** धारण करे (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)। **मे =** मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम) **॥ 2 ॥**

3. पुनः एहि वाचः पते, देवेन मनसा सह।
वसोः पते नि रमय मयि, एव अस्तु मयि श्रुतम् ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ :- वाचः = वाणी **पते =** पति **देवेन =** तेजस्वी, विद्वान् द्वारा **मनसा =** मन से, मन द्वारा **सह =** साथ, सहित **पुनः =** फिर **एहि =** आओ। **वसोः =** वसु का, वासस्थान तथा वास करने वाले लोगों का **पते =** पति **मयि =** मुझमें **नि =** निश्चित, निरन्तर **रमय =** रमण करो। **श्रुतम् =** श्रुत **एव =** ही **मयि =** मुझमें **अस्तु =** हो **॥ 3 ॥**

भावार्थ :- वाचस्पति शब्द से सामान्य वाणी के साथ मुख्यतः वेदवाणी के रक्षक स्वामी का भाव लेना चाहिए। श्रुत शब्द से वेद का स्पष्ट संकेत इसी मन्त्र में किया ही गया है। वेद को समझने, उपयोग करने के लिए दिव्य मन की आवश्यकता है। परमात्मा को वाचस्पति के साथ ही यहाँ वसोष्पति भी कहा गया है, क्योंकि वेद के अध्ययन-उपयोग के लिए आवास-वस्त्र भी चाहिए।

पदार्थ :- पुनः = फिर (अव्यय)। **एहि =** आओ, प्राप्त करो (ई - जाना)। **वाचः =** वाणी (वच - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)। **पते =** पति (पत् - जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **देवेन =** तेजस्वी, विद्वान् द्वारा (दिव् - तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **मनसा =** मन से, मन द्वारा (मन् - जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **सह =** साथ, सहित (सर्वनाम)। **वसोः =** वसु का, वासस्थान तथा वास करने वाले लोगों का (वस् - वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)। **पते =** पति (पत् - जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **नि =** निश्चित, निरन्तर (अव्यय)। **रमय =** रमण करो (रम - रमना, क्रीडा करना, खेलना)। **मयि =** मुझमें (सर्वनाम)। **एव =** ही (अव्यय)। **अस्तु =** हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **मयि =** मुझमें (सर्वनाम)। **श्रुतम् =** श्रुत को, सुने हुए को (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना) **॥ 3 ॥**

4. इह एव अभि वि तनु, उभे आर्त्नी इव ज्यया।
वाचः पतिः नि यच्छतु मयि, एव अस्तु मयि श्रुतम् ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ :- ज्यया = ज्या, वृद्ध, जयी द्वारा **इह =** इसमें, यहां, यह **एव =** ही **आर्त्नी =** सम्यक् वचन, वाणी, गति, प्राप्ति **इव =** समान, की भाँति, के समान **अभि =** अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा **वि =** विशेष, विना, विलोम **तनु =** विस्तार करो। **वाचः =** वाणी **पतिः =** पति **नि =** निश्चित, निरन्तर **मयि =** मुझमें। **उभे =** दोनों, पूर्णता **यच्छतु =** दो, प्रदान करो **श्रुतम् =** श्रुत **एव =** ही **मयि =** मुझमें **अस्तु =** हो **॥ 4 ॥**

भावार्थ :- अनुभवी विद्वान् वृद्ध जन के मार्गदर्शन से हमारा विस्तार उस तरह होता है जैसे स्वयम् सम्यक् गति का विस्तार होता है। गतिशीलता जैसी गति प्राप्त होती है। इसके लिए वेद का ज्ञान चाहिए। साधक की व्याकुलता देखिए,

वह कहता है कि वेद प्रदान करें और मुझमें वेद ही हो।

पदार्थ :- इह = इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **एव =** ही (अव्यय)। **अभि =** अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **तनु =** विस्तार करो (तन् - विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना)। **उभे =** दोनों, पूर्णता (उभय - दोनो, उभ् - पूर्ण करना, भरना)। **आर्त्नी =** सम्यक् वचन, वाणी, गति, प्राप्ति (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अर् - ऋ - गति, ज्ञान, प्राप्ति करना, फैलाना, शब्द करना, ध्वनि करना, महत्व प्रदर्शन करना, हिंसा करना)। **इव =** समान, की भाँति, के समान (अव्यय)। **ज्यया =** ज्या, वृद्ध, जयी द्वारा (ज्या - वृद्ध होना, बड़ा होना, बर्द्धित होना, जि - जय होना, जीतना)। **वाचः =** वाणी (वच - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)। **पतिः =** पति (पत् - जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **नि =** निश्चित, निरन्तर (अव्यय)। **यच्छतु =** दो, प्रदान करो (यच्छ - देना)। **मयि =** मुझमें (सर्वनाम)। **एव =** ही (अव्यय)। **अस्तु =** हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **मयि =** मुझमें (सर्वनाम)। **श्रुतम् =** श्रुत को, सुने हुए को (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना) **॥ 4 ॥**

5. उपहूतो वाचः पतिः उप अस्मान्, वाचः पतिः ह्वयताम्।
सम् श्रुतेन गमेमहि, मा श्रुतेन वि राधिषि ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ :- वाचः = वाणी **पतिः =** पति **उप =** समीप **उपहूतो =** समीप बुलाया गया, आह्वान किया गया। **वाचः =** वाणी **पतिः =** पति **अस्मान् =** हमें, हमको **ह्वयताम् =** पुकारें, आह्वान करें, आदान-प्रदान करें। **श्रुतेन =** श्रुत द्वारा, श्रुत से **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति **गमेमहि =** जाते हैं। **श्रुतेन =** श्रुत से **वि =** विलोम **मा =** मत **राधिषि =** निर्णय करें **॥ 5 ॥**

भावार्थ :- वेदवाणी के स्वामी तथा रक्षक विद्वानों को समीप बुलायें एवम् प्रार्थना करें कि हमको भी वे समीप बुलायें। इस प्रकार वेद के विद्वानों के साथ आदान-प्रदान का क्रम चलता रहे। हमारा जीवन वेद के अनुकूल चले। वेद के अनुसार ही जीवन का मापन-मूल्याङ्कन करें तथा सभी कार्यों को विशेष रूप से सिद्ध करें।

पदार्थ :- उपहूतो = समीप बुलाया गया, आह्वान किया गया (उप - समीप, हु - देना, दान करना, आदान-प्रदान करना, ह्वे - बुलाना, आह्वान करना)। **वाचः =** वाणी (वच - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)। **पतिः =** पति (पत् - जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **उप =** समीप (उपसर्ग)। **अस्मान् =** हमें, हमको (सर्वनाम)। **वाचः =** वाणी (वच - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)। **पतिः =** पति (पत् - जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **ह्वयताम् =** पुकारें, आह्वान करें, आदान-प्रदान करें (हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे - शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **श्रुतेन =** श्रुत द्वारा, श्रुत से (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)। **गमेमहि =** जाते हैं (गम् - जाना, जानना, पाना)। **मा =** नहीं, मत (अव्यय)। **श्रुतेन =** श्रुत द्वारा, श्रुत से (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)। **वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **राधिषि =** शुद्ध, निर्दोष निर्णय, वृद्धि, सिद्ध करें (रध - शुद्ध होना, निर्दोष होना, पूर्ण करना, समाप्त करना, परिपक्व होना, अपकार करना, हिंसा करना, राध - बढ़ना, निर्णय करना, सिद्ध होना) **॥ 5 ॥**

2 रोग-उपशमन सूक्त - 2 (2)

6. विद्म शरस्य पितरम्, पर्जन्यम् भूरि-धायसम्।
विद्मो सु अस्य मातरम्, पृथिवीम् भूरिवर्पसम् ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ :- विद्म = विद्म, जानने वाले। **शरस्य =** शरः के लिए। **पितरम् =** पिता को, ज्ञानी को, पालन करने वाले को। **पर्जन्यम् =** पोषण उत्पन्न करने वाले, पर्जन्य। **भूरि-धायसम् =** बहु धारण करने वाले, पोषण करने वाले। **विद्मो =** विद्म, जानने वाले। **सु =** उत्तम, सुष्ठु, अच्छा, सुन्दर। **अस्य =** इसका। **मातरम् =** माता को। **पृथिवीम् =** पृथिवी को। **भूरिवर्पसम् =** भूरि का, गति का, उत्पत्ति का। **॥ 1 ॥**

पदार्थ :- विद्म = विद्म, जानने वाले (विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना, विद्यमान होना, विचार करना)। **शरस्य =** शरः के लिए (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, शृ - मार डालना, दुःख देना, पीड़ा करना, फटना, हिंसा करना, मारना, श्रि - सेवा करना, आश्रय करना)। **पितरम् =** पिता को, ज्ञानी को, पालन करने वाले को (पि - जाना, जानना, पाना, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **पर्जन्यम् =** पोषण उत्पन्न करने वाले, पर्जन्य (पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना, तृप्त करना, जन् = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **भूरि-धायसम् =** बहु धारण करने वाले, पोषण करने वाले (भूरि = बहु, बहुत, अव्यय-सर्वनाम,धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)। **विद्मो =** विद्म, जानने वाले (विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना, विद्यमान होना, विचार करना)। **सु =** उत्तम, सुष्ठु, अच्छा, सुन्दर (उपसर्ग)। **अस्य =** इसका (सर्वनाम)। **मातरम् =** माता को (मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना)। **पृथिवीम् =** पृथिवी को (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)। **भूरिवर्पसम् =** भूरि का, गति का, उत्पत्ति का (भूरि = बहु, बहुत, अव्यय-सर्वनाम, वृ = वरण करना, वृप-वर्प = रूप बनाना)।। **1** ।।

7. ज्या के परि णो नम, अश्मानम् तन्वम् कृधि।
वीडुः वरीयः अरातीः, अप द्वेषांसि आ कृधि।। 2 ।।

मन्त्रार्थ :- ज्या = ज्या, वृद्ध, जयी। **के =** कौन, कोई । **परि =** परे, सभी ओर, साथ। **णो =** हमको, हमारे लिए, हमारा। **नम =** नमन। **अश्मानम् =** अशन करते हैं, व्याप्त, व्यापक, प्राप्त करते हैं। **तन्वम् =** तन्व को, विस्तार को। **कृधि =** करो। **वीडुः =** वीडु। **वरीयः =** वरीय। **अरातीः =** अदानियों को। **अप =** दूर, नीचे, अपकार। **द्वेषांसि =** द्वेषों को। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम। **कृधि =** करो।। **2** ।।

पदार्थ :- ज्या = ज्या, वृद्ध, जयी (ज्या - वृद्ध होना, बड़ा होना, बर्द्धित होना, जि - जय होना, जीतना)। **के =** कौन, कोई (सर्वनाम)। **परि =** परे, सभी ओर, साथ (उपसर्ग)। **णो =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **नम =** नमन (नम् = नमन करना, सम्मान करना, शब्द करना)। **अश्मानम् =** अशन को, व्याप्त, व्यापक को (अश् = भोजन करना, व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना)। **तन्वम् =** तन्व को, विस्तार को (तन् = विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना)। **कृधि =** करो (कृ = करना)। **वीडुः =** वीडु (वी = जाना, व्याप्त होना, कान्ति होना, प्रकाश होना, चमकना)। **वरीयः =** वरीय (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **अरातीः =** अदानियों को (अ + रा = देना, रम् - रमना, रमण करना, रम जाना, रत होना, क्रीडा करना, प्रिय होना, मूल्यवान होना)। **अप =** दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। **द्वेषांसि =** द्वेषों को (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना, मत्सर करना)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **कृधि =** करो (कृ = करना)।। **2** ।।

8. वृक्षम् यत् गावः परिसस्वजानाः अनुस्फुरम् शरम् अर्चन्ति ऋभुम्।
शरुम् अस्मत् यवय दिद्युम् इन्द्र।। 3 ।।

मन्त्रार्थ :- वृक्षम् = हमसे। **यत् =** जो। **गावः =** शब्द, वाणी, वचन। **परिसस्वजानाः =** परि शोधक, परिशोधनकर्ता, शुद्ध कर्ता। **अनुस्फुरम् =** अनुस्फुर को। **शरम् =** सुनने वाला, सुनाने वाला, उपदेशक, मार्गदर्शक। **अर्चन्ति =** पूजा करते हैं, सम्मान करते हैं। **ऋभुम् =** ऋभु को। **शरुम् =** सुनने वाला को, सुनाने वाला को, उपदेशक, मार्गदर्शक को। **अस्मत् =** हमसे। **यवय =** मिश्रित करो, पृथक् करो। **दिद्युम् =** अग्रगामी को, प्रकाशमान को। **इन्द्र =** परम ऐश्वर्यशाली ।। **3** ।।

पदार्थ :- वृक्षम् = हमसे (सर्वनाम)। **यत् =** जो (सर्वनाम)। **गावः =** शब्द, वाणी, वचन (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)। **परिसस्वजानाः =** परि

शोधक, परिशोधनकर्ता, शुद्ध कर्ता (परि = सभी तरफ, उपसर्ग,**सस् (संस्)**–सोना, सस् = शुद्ध करना)। **अनुस्फुरम् =** अनुस्फुर को (अनु = अनुकूल, पश्चात्, स्फुर्–हिलना, स्फुरित होना, जाना, फैलना, दिखना, देखना।)। **शरम्** = सुनने वाला, सुनाने वाला, उपदेशक, मार्गदर्शक (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना)। **अर्चन्ति =** पूजा करते हैं, सम्मान करते हैं (अर्च - पूजा करना, मान करना)। **ऋभुम् =** ऋभु को (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना, भा - प्रकाश होना)। **शरुम्** = सुनने वाला को, सुनाने वाला को, उपदेशक, मार्गदर्शक को (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना)। **अस्मत् =** हमसे (सर्वनाम)। **यवय =** मिश्रित करो, पृथक् करो (यु = मिलाना, अलग करना, यव = समाप्त करना, उपसंहार करना)। **दिद्युम् =** अग्रगामी को, प्रकाशमान को (द्युत् = प्रकाशित होना, द्यु = अभिगमन करना, आक्रमण करना, आगे जाना, समीप जाना)। **इन्द्र =** परम ऐश्वर्यशाली (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)।। **3** ।।

9. यथा द्याम् च पृथिवीम् च, अन्तः तिष्ठति तेजनम्।
एवा रोगम् च आ-स्रावम् च, अन्तः तिष्ठतु मुञ्ज इत् ।। 4 ।।

मन्त्रार्थ :- यथा = जिससे, जैसे, जिस प्रकार। **द्याम् =** द्यु को, सबसे बढ़कर, विशिष्ट, प्रकाशमय। **च =** और। **पृथिवीम् =** पृथिवी को। **च =** और।**, अन्तः =** बीच में, भीतर। **तिष्ठति =** स्थित है, ठहरा है, खड़ा है। **तेजनम् =** तेज को। **एवा =** ही। **रोगम् =** रोग को। **च =** और। **आ-स्रावम् =** आ स्रवित को। **च =** और। **अन्तः =** बीच में, भीतर। **तिष्ठतु =** प्रतिष्ठित है, स्थित है, ठहरा है, खड़ा है। **मुञ्ज** - शब्द करें, सम्पीडित करें। **इत् =** ही।। 4 ।।

पदार्थ :- यथा = जिससे, जैसे, जिस प्रकार (अव्यय)। **द्याम् =** द्यु को, सबसे बढ़कर, विशिष्ट, प्रकाशमय (द्यु - आगे जाना, समीप जाना, द्युत् -दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, द्यै = तिरस्कार करना)। **च =** और (अव्यय)। **पृथिवीम् =** पृथिवी को (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)। **च =** और (अव्यय)।**, अन्तः =** बीच में, भीतर (उपसर्ग, सर्वनाम)। **तिष्ठति =** स्थित है, ठहरा है, खड़ा है (तिष्ठ् = ठहरना, खड़ा होना)। **तेजनम् =** तेज को (तिज्, तेज् = चमकना, चमकाना, पैना करना, प्रभाव होना, तीक्ष्ण करना)। **एवा =** ही (अव्यय)। **रोगम् =** रोग को (रुज् - रोग होना, कष्ट होना, हिंसा करना)। **च =** और (अव्यय)। **आ-स्रावम् =** आ स्रवित को (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से,स्रु = जाना, जानना, पाना, सृ - जाना, सरकना, बहना,)। **च =** और (अव्यय)। **अन्तः =** बीच में, भीतर (उपसर्ग, सर्वनाम)। **तिष्ठतु =** प्रतिष्ठित है, स्थित है, ठहरा है, खड़ा है (तिष्ठ् = ठहरना, खड़ा होना)। **मुञ्ज** - शब्द करें, सम्पीडित करें (मुञ्ज - शब्द करना, हर्षोन्मत्त होना, सम्पीडित करना)। **इत् =** ही (अव्यय)।। 4 ।।

3 मूत्र मोचन सूक्त - 3 (3)

10. विद्मा शरस्य पितरम्, पर्जन्यम् शतवृष्ण्यम्।
तेन ते तन्वे शम् करम्, पृथिव्याम् ते निसेचनम्,बहिः ते अस्तु बाल् इति॥ ।।

मन्त्रार्थ :- विद्मा = विद्या। **शरस्य =** शर के लिए। **पितरम् =** पिता को, ज्ञानी को, पालन करने वाले को। **पर्जन्यम् =** पोषण उत्पन्न करने वाले, पर्जन्य। **शतवृष्ण्यम् =** सैकडो वर्षा करने वाले, पराक्रमी को। **तेन =** उससे, उसके द्वारा । **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **तन्वे =** तन्व में, विस्तार के लिए। **शम् =** कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी। **करम् =** करने वाले को। **पृथिव्याम् =** पृथ्वी पर। **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **निसेचनम्** = निश्चत सिञ्चन को। **बहिः =** बढ़ा हुआ, विराट, महान्। **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **अस्तु =** हो। **बाल् =** बल। **इति =** ऐसा, यह, इसी प्रकार।**॥ ।।**

पदार्थ :-विद्मा = विद्या (विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना, विद्यमान होना, विचार करना)। **शरस्य =** शर के लिए (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, शृ - मार डालना, दुःख देना, पीड़ा करना, फटना, हिंसा करना, मारना, श्रि - सेवा करना, आश्रय करना)। **पितरम् =** पिता को, ज्ञानी को, पालन करने वाले को (पि - जाना, जानना, पाना, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **पर्जन्यम् =** पोषण उत्पन्न करने वाले, पर्जन्य (पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना, तृप्त करना, जन् = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **शतवृष्ण्यम् =** सैकडो वर्षा करने वाले, पराक्रमी को (शत = सौ,वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना या पीड़ा करना, दुःख

देना, पीड़ित करना)। **तेन** = उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **तन्वे** = तन्व में, विस्तार के लिए (तन् = विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना)। **शम्** = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी (शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)। **करम्** = करने वाले को (कृ - करना)। **पृथिव्याम्** = पृथ्वी पर (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **निसेचनम्** = निश्चत सिञ्चन को (नि - निश्चित रूप से, (सिञ्च् - सिञ्चन करना, सि - बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना)। **बहिः** = बढ़ा हुआ, विराट, महान् (बर्ह् - श्रेष्ठ होना, प्रधान होना, प्रयास करना, उद्यम-व्यवसाय करना, खेलना, बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **अस्तु** = हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **बाल्** = बल (बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना)। **इति** = ऐसा, यह, इसी प्रकार (अव्यय)।**1 ॥**

11. विद्मा शरस्य पितरम् मित्रम् शतवृष्ण्यम्।
तेन ते तन्वे शम् करम्, पृथिव्याम् ते निसेचनम्, बहिः ते अस्तु बाल् इति॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ :- विद्मा = विद्या। **शरस्य** = शर के लिए। **पितरम्** = पिता को, ज्ञानी को, पालन करने वाले को। **मित्रम्** = मित्र को। **शतवृष्ण्यम्** = सैकडो वर्षा करने वाले, पराक्रमी को। **तेन** = उससे, उसके द्वारा । **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **तन्वे** = तन्व में, विस्तार के लिए। **शम्** = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी। **करम्** = करने वाले को। **पृथिव्याम्** = पृथ्वी पर। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **निसेचनम्** = निश्चत सिञ्चन को। **बहिः** = बढ़ा हुआ, विराट, महान्। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **अस्तु** = हो। **बाल्** = बल। **इति** = ऐसा, यह, इसी प्रकार।**2 ॥**

पदार्थ :-विद्मा = विद्या (विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना, विद्यमान होना, विचार करना)। **शरस्य** = शर के लिए (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, शृ - मार डालना, दुःख देना, पीड़ा करना, फटना, हिंसा करना, मारना, श्रि - सेवा करना, आश्रय करना)। **पितरम्** = पिता को, ज्ञानी को, पालन करने वाले को (पि - जाना, जानना, पाना, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **मित्रम्** = मित्र को (मिद् - स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, नरम होना, मृदुल होना)। **शतवृष्ण्यम्** = सैकडो वर्षा करने वाले, पराक्रमी को (शत = सौ,वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना या पीड़ा करना, दुःख देना, पीड़ित करना)। **तेन** = उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **तन्वे** = तन्व में, विस्तार के लिए (तन् = विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना)। **शम्** = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी (शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)। **करम्** = करने वाले को (कृ - करना)। **पृथिव्याम्** = पृथ्वी पर (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **निसेचनम्** = निश्चत सिञ्चन को (नि - निश्चित रूप से, (सिञ्च् - सिञ्चन करना, सि - बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना)। **बहिः** = बढ़ा हुआ, विराट, महान् (बर्ह् - श्रेष्ठ होना, प्रधान होना, प्रयास करना, उद्यम-व्यवसाय करना, खेलना, बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **अस्तु** = हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **बाल्** = बल (बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना)। **इति** = ऐसा, यह, इसी प्रकार (अव्यय)।**1 2 ॥**

12. विद्मा शरस्य पितरम् वरुणम् शतवृष्ण्यम्।
तेन ते तन्वे शम् करम्, पृथिव्याम् ते निसेचनम्, बहिः ते अस्तु बाल् इति॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ :- विद्मा = विद्या। **शरस्य** = शर के लिए। **पितरम्** = पिता को, ज्ञानी को, पालन करने वाले को। **वरुणम्** = वरुण को। **शतवृष्ण्यम्** = सैकडो वर्षा करने वाले, पराक्रमी को। **तेन** = उससे, उसके द्वारा । **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **तन्वे** = तन्व में, विस्तार के लिए। **शम्** = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी। **करम्** = करने वाले को **पृथिव्याम्** = पृथ्वी पर। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **निसेचनम्** = निश्चत सिञ्चन को। **बहिः** = बढ़ा हुआ, विराट, महान्। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **अस्तु** = हो। **बाल्** = बल। **इति** = ऐसा, यह, इसी प्रकार।**3 ॥**

पदार्थ :-विद्मा = विद्या (विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना, विद्यमान होना, विचार करना)। **शरस्य** = शर के लिए (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, शृ - मार डालना, दुःख देना, पीड़ा करना, फटना, हिंसा करना, मारना, श्रि - सेवा करना, आश्रय करना)। **पितरम्** = पिता को, ज्ञानी को, पालन करने वाले को (पि - जाना, जानना, पाना, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **वरुणम्** = वरुण को (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **शतवृष्ण्यम्** = सैकडो वर्षा करने वाले, पराक्रमी को (शत = सौ,वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना या पीड़ा करना, दुःख देना, पीड़ित करना)। **तेन** = उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **तन्वे** = तन्व में, विस्तार के लिए (तन् = विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना)। **शम्** = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी (शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)। **करम्** = करने वाले को (कृ - करना)। **पृथिव्याम्** = पृथ्वी पर (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **निसेचनम्** = निश्चत सिञ्चन को (नि - निश्चित रूप से, (सिञ्च् - सिञ्चन करना, सि - बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना)। **बहिः** = बढ़ा हुआ, विराट, महान् (बर्ह् - श्रेष्ठ होना, प्रधान होना, प्रयास करना, उद्यम-व्यवसाय करना, खेलना, बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **अस्तु** = हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **बाल्** = बल (बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना)। **इति** = ऐसा, यह, इसी प्रकार (अव्यय)।**। 3 ॥**

13. विद्मा शरस्य पितरम् चन्द्रम् शतवृष्ण्यम्।
तेन ते तन्वे शम् करम्, पृथिव्याम् ते निसेचनम्, बहिः ते अस्तु बाल् इति॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ :- विद्मा = विद्या। **शरस्य** = शर के लिए। **पितरम्** = पिता को, ज्ञानी को, पालन करने वाले को। **वरुणम्** = आनन्द, प्रकाश। **शतवृष्ण्यम्** = सैकडो वर्षा करने वाले, पराक्रमी को। **तेन** = उससे, उसके द्वारा । **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **तन्वे** = तन्व में, विस्तार के लिए। **शम्** = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी। **करम्** = करने वाले को। **पृथिव्याम्** = पृथ्वी पर। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **निसेचनम्** = निश्चत सिञ्चन को। **बहिः** = बढ़ा हुआ, विराट, महान्। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **अस्तु** = हो। **बाल्** = बल। **इति** = ऐसा, यह, इसी प्रकार।**3 ॥**

पदार्थ :-विद्मा = विद्या (विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना, विद्यमान होना, विचार करना)। **शरस्य** = शर के लिए (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, शृ - मार डालना, दुःख देना, पीड़ा करना, फटना, हिंसा करना, मारना, श्रि - सेवा करना, आश्रय करना)। **पितरम्** = पिता को, ज्ञानी को, पालन करने वाले को (पि - जाना, जानना, पाना, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **चन्द्रम्** = आनन्द, प्रकाश (चन्द्र - आनन्द होना, चमकना)। **शतवृष्ण्यम्** = सैकडो वर्षा करने वाले, पराक्रमी को (शत = सौ,वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना या पीड़ा करना, दुःख देना, पीड़ित करना)। **तेन** = उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **तन्वे** = तन्व में, विस्तार के लिए (तन् = विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना)। **शम्** = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी (शम् = कल्याण होना, शान्त

होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)। **करम्** = करने वाले को। (कृ - करना)। **पृथिव्याम्** = पृथ्वी पर (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **निसेचनम्** = निश्चत सिञ्चन को (नि - निश्चित रूप से, (सिञ्च् - सिञ्चन करना, सि - बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना)। **बहिः** = बढ़ा हुआ, विराट, महान् (बर्ह् - श्रेष्ठ होना, प्रधान होना, प्रयास करना, उद्यम-व्यवसाय करना, खेलना, बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **अस्तु** = हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **बाल्** = बल (बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना)। **इति** = ऐसा, यह, इसी प्रकार (अव्यय)।। **4** ।।

14. विद्मा शरस्य पितरम् सूर्यम् शतवृष्ण्यम्।
तेन ते तन्वे शम् करम्, पृथिव्याम् ते निसेचनम्, बहिः ते अस्तु बाल् इति।। 5 ।।

मन्त्रार्थ :- **विद्मा** = विद्या। **शरस्य** = शर के लिए। **पितरम्** = पिता को, ज्ञानी को, पालन करने वाले को। **सूर्यम्** = सूर्य को । **शतवृष्ण्यम्** = सैकडो वर्षा करने वाले, पराक्रमी को। **तेन** = उससे, उसके द्वारा । **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **तन्वे** = तन्व में, विस्तार के लिए। **शम्** = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी। **करम्** = करने वाले को। **पृथिव्याम्** = पृथ्वी पर। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **निसेचनम्** = निश्चत सिञ्चन को। **बहिः** = बढ़ा हुआ, विराट, महान्। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **अस्तु** = हो। **बाल्** = बल। **इति** = ऐसा, यह, इसी प्रकार।**3** ।।

पदार्थ :-**विद्मा** = विद्या (विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना, विद्यमान होना, विचार करना)। **शरस्य** = शर के लिए (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, शृ - मार डालना, दुःख देना, पीड़ा करना, फटना, हिंसा करना, मारना, श्रि - सेवा करना, आश्रय करना)। **पितरम्** = पिता को, ज्ञानी को, पालन करने वाले को (पि - जाना, जानना, पाना, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **सूर्यम्** = सूर्य को (सुर - ऐश्वर्य होना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना, सू - उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, ऐश्वर्य होना)।। **शतवृष्ण्यम्** = सैकडो वर्षा करने वाले, पराक्रमी को (शत = सौ,वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना या पीड़ा करना, दुःख देना, पीड़ित करना)। **तेन** = उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **तन्वे** = तन्व में, विस्तार के लिए (तन् = विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना)। **शम्** = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी (शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)। **करम्** = करने वाले को। (कृ - करना)। **पृथिव्याम्** = पृथ्वी पर (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **निसेचनम्** = निश्चत सिञ्चन को (नि - निश्चित रूप से, (सिञ्च् - सिञ्चन करना, सि - बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना)। **बहिः** = बढ़ा हुआ, विराट, महान् (बर्ह् - श्रेष्ठ होना, प्रधान होना, प्रयास करना, उद्यम-व्यवसाय करना, खेलना, बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **अस्तु** = हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **बाल्** = बल (बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना)। **इति** = ऐसा, यह, इसी प्रकार (अव्यय)।। **5** ।।

15. यत् आन्त्रेषु गवीन्योः, यत् वस्तौ अधि संश्रुतम्।
एव ते मूत्रम् मुच्यताम् बहिः बाल् इति सर्वकम्।। 6 ।।

मन्त्रार्थ :- **यत्** = जिसे, जो। **आन्त्रेषु** = अन्तः भीतर। **गवीन्योः**= वाणी, ज्ञान,कहने योग्य, कथनीय। **यत्** = जिसे, जो। **वस्तौ** = वस्तु का, प्रेरणा का, वास का । **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)।

संश्रुतम् = सम्यक् सुनने वाले को। **एव** = ही। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **मूत्रम्** = मूत्र को। **मुच्यताम्** = मुक्त करें । **बहिः** = बढ़ा हुआ, विराट, महान्। **बाल्** = बल। **इति** = ऐसा, यह, इसी प्रकार। **सर्वकम्** -सभी को ॥ 6 ॥

पदार्थ :- यत् = जिसे, जो (सर्वनाम)। **आन्त्रेषु** = अन्तः भीतर (अन्तः = बीच में, भीतर, अन् - प्राणवान् होना, जीवन होना, श्वास लेना)। **गवीन्योः**= वाणी, ज्ञान,कहने योग्य, कथनीय (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, गम् = जाना, जानना, पाना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **वस्तौ** = वस्तु का, प्रेरणा का, वास का (वस्त - प्रेरणा करना, प्रातः होना, प्रभात होना, वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)। **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **संश्रुतम्** = सम्यक् सुनने वाले को (सम् - सम्यक्, श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)। **एव** = ही (अव्यय)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **मूत्रम्** = मूत्र को (मु-मू - बाँधना, जकड़ना, पुड़िया बनाना, मूत्र् = जल गिरना, मूत्र त्याग करना)। **मुच्यताम्** = मुक्त करें (मुच् - घर्षण करना, ऐश्वर्य होना, पूजा करना, बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना, प्रसन्न होना)। **बहिः** = बढ़ा हुआ, विराट, महान् (बर्ह् - श्रेष्ठ होना, प्रधान होना, प्रयास करना, उद्यम-व्यवसाय करना, खेलना, बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **बाल्** = बल (बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना)। **इति** = ऐसा, यह, इसी प्रकार (अव्यय)। **सर्वकम्** -सभी को (सर्व = सब (सर्वनाम ॥ 6 ॥

16. प्र ते भिनद्मि मेहनम् वर्त्रम् वेशन्त्याः इव।
एव ते मूत्रम् मुच्यताम् बहिः बाल् इति सर्वकम्॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ :- प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **भिनद्मि** = भेदन किया। **मेहनम्** = सिञ्चन करने वाले। **वर्त्रम्** = वर्तिका। **वेशन्त्याः** = प्रविष्ट हो। **इव** = समान, की भाँति, के समान। **एव** = ही। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **मूत्रम्** = मूत्र को। **मुच्यताम्** = मुक्त करें। **बहिः** = बढ़ा हुआ, विराट, महान्। **बाल्** = बल। **इति** = ऐसा, यह, इसी प्रकार। **सर्वकम्** -सभी को ॥ 7 ॥

पदार्थ :- प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **भिनद्मि** = भेदन किया (भिद्-भिन्द् - भेदना, भेदन करना, भाग करना)। **मेहनम्** = सिञ्चन करने वाले (मिह् - सिञ्चन करना, घर्षण करना, दबाना)। **वर्त्रम्** = वर्तिका (वृत् - वर्तन करना, वर्ताव करना, रहना, होना, वरण करना, स्वीकार करना, हिंसा करना, सेवा करना, चमकना, बोलना)। **वेशन्त्याः** = प्रविष्ट हो (विश - घुसना, भीतर जाना, धंसना, चारों ओर फैलना)। **इव** = समान, की भाँति, के समान (अव्यय)। **एव** = ही (अव्यय)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **मूत्रम्** = मूत्र को (मु-मू - बाँधना, जकड़ना, पुड़िया बनाना, मूत्र् = जल गिरना, मूत्र त्याग करना)। **मुच्यताम्** = मुक्त करें (मुच् - घर्षण करना, ऐश्वर्य होना, पूजा करना, बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना, प्रसन्न होना)। **बहिः** = बढ़ा हुआ, विराट, महान् (बर्ह् - श्रेष्ठ होना, प्रधान होना, प्रयास करना, उद्यम-व्यवसाय करना, खेलना, बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **बाल्** = बल (बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना)। **इति** = ऐसा, यह, इसी प्रकार (अव्यय)। **सर्वकम्** -सभी को (सर्व = सब (सर्वनाम) ॥ 7 ॥

17. विसितम् ते वस्ति बिलम् समुद्रस्य उद्धेः-इव।
एव ते मूत्रम् मुच्यताम् बहिः बाल् इति सर्वकम्॥ 8 ॥

मन्त्रार्थ :- विसितम् = विशेष सित को। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **वस्ति** = वस्तिः। **बिलम्** = भेद, आच्छादन, आवरण। **समुद्रस्य** = समुद्र का। **उद्धेः-इव** = आद्रता को धारण करने वाले के समान। **एव** = ही। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **मूत्रम्** = मूत्र को। **मुच्यताम्** = मुक्त करें। **बहिः** = बढ़ा हुआ, विराट, महान्। **बाल्** = बल। **इति** = ऐसा, यह, इसी प्रकार। **सर्वकम्** -सभी को ॥ 7 ॥

पदार्थ :- विसितम् = विशेष सित को (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग),सि - बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **वस्ति** = वस्तिः (वस्त - प्रेरणा करना, प्रातः होना, प्रभात होना, वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)। **बिलम्** = भेद, आच्छादन, आवरण (बिल् - आच्छादन करना, जाना, छेद करना, भेदना, भेदन करना, भाग करना)। **समुद्रस्य** = समुद्र का (सम् = सम्यक्, भलीभांति, सम् - न घबराना, एक समान रहना, उत् - उच्च, ऊपर, उत्कृष्ट, रा - दान करना, देना, उन्द - आर्द्र होना, गीला होना, द्रु - पिघलना, बहना, चलना, जाना, जानना, पाना, अनुसरण करना)। **उद्धेः-इव** = आद्रता को धारण करने वाले के समान (उद् - उन्द् – होना, गीला होना, कष्ट होना, इव = समान, की भाँति, के समान (अव्यय)।)। **एव** = ही (अव्यय)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **मूत्रम्** = मूत्र को (मु-मू - बाँधना, जकड़ना, पुड़िया बनाना, मूत्र् = जल गिरना, मूत्र त्याग करना)। **मुच्यताम्** = मुक्त करें (मुच् - घर्षण करना, ऐश्वर्य होना, पूजा करना, बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना, प्रसन्न होना)। **बहिः** = बढ़ा हुआ, विराट, महान् (बर्ह् - श्रेष्ठ होना, प्रधान होना, प्रयास करना, उद्यम-व्यवसाय करना, खेलना, बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **बाल्** = बल (बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना)। **इति** = ऐसा, यह, इसी प्रकार (अव्यय)। **सर्वकम्** - सभी को (सर्व = सब (सर्वनाम) **॥ 8 ॥**

18. यथा इषुका परा-अपतत् अव-सृष्टा अधि धन्वनः।
एव ते मूत्रम् मुच्यताम् बहिः बाल् इति सर्वकम्॥ 9 ॥

मन्त्रार्थ :- यथा = जिससे, जैसे, जिस प्रकार । **इषुका** = इषुकार, इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि वाले। **परा-अपतत्** = परागति से ऊपर उठो। **अव-सृष्टा** = अवसर्जन किया हुआ, अवसर्जन करने वाला। **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार। **धन्वनः** = गति, शब्द करने वाले का। **एव** = ही। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **मूत्रम्** = मूत्र को। **मुच्यताम्** = मुक्त करें। **बहिः** = बढ़ा हुआ, विराट, महान्। **बाल्** = बल। **इति** = ऐसा, यह, इसी प्रकार। **सर्वकम्** -सभी को **॥ 9 ॥**

पदार्थ :- यथा = जिससे, जैसे, जिस प्रकार (अव्यय)। **इषुका** = इषुकार, इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि वाले (इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना)। **परा-अपतत्** = परागति से ऊपर उठो (पत् = ऐश्वर्य होना, जाना, जानना, पाना, नीचे गति करना)। **अव-सृष्टा** = अवसर्जन किया हुआ, अवसर्जन करने वाला (अव = नीचे, दूर, प्राप्त, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, सृज् - रचना करना, बनाना, उत्पादन करना, त्याग करना)। **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **धन्वनः** = गति, शब्द करने वाले का (धन्व - जाना, जानना, पाना, धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)। **एव** = ही (अव्यय)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **मूत्रम्** = मूत्र को (मु-मू - बाँधना, जकड़ना, पुड़िया बनाना, मूत्र् = जल गिरना, मूत्र त्याग करना)। **मुच्यताम्** = मुक्त करें (मुच् - घर्षण करना, ऐश्वर्य होना, पूजा करना, बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना, प्रसन्न होना)। **बहिः** = बढ़ा हुआ, विराट, महान् (बर्ह् - श्रेष्ठ होना, प्रधान होना, प्रयास करना, उद्यम-व्यवसाय करना, खेलना, बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **बाल्** = बल (बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना)। **इति** = ऐसा, यह, इसी प्रकार (अव्यय)। **सर्वकम्** - सभी को (सर्व = सब (सर्वनाम) **॥ 9 ॥**

4 अपांभेसज – सूक्त - 4 (4)

19. अम्बयः यन्ति अध्वभिः जामयः अध्वरीयताम्।
पृञ्चतीः मधुना पयः॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ :- अम्बयः = सेवाभावी विद्वान्। **यन्ति** = प्राप्त होते हैं, नियमन-नियन्त्रण करते हैं । **अध्वभिः** = मार्ग द्वारा

। **जामयः** = पोषण करने वाली। **अध्वरीयताम्** = अध्वरों का, अहिंसकों का, अवर्णनीयों का। **पृञ्चतीः** = स्पर्श करता है । **मधुना** = मधु द्वारा। **पयः** = ज्ञान, रक्षण, गतिशील, प्रवाहमान, प्रवाहपूर्ण।। **1** ।।

पदार्थ :- **अम्बयः** = सेवाभावी विद्वान् (अम्ब् = जाना, जानना, शब्द करना, मर्दन करना)। **यन्ति** = प्राप्त होते हैं, नियमन-नियन्त्रण करते हैं (यम् = रोकना, स्वाधीन रखना, आवरण करना, पोषण करना, नियमन करना, यन -उद्धार करना, या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, जानना)। **अध्वभिः** = मार्ग द्वारा (अधु = चलना, विचरण करना)। **जामयः** = पोषण करने वाली (जम् = खाना, निगलना, जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **अध्वरीयताम्** = अध्वरों का, अहिंसकों का, अवर्णनीयों का (अ - नहीं, ध्वृ-ध्वर् = हिंसा करना, टेढ़ा करना, झुकाना, मार डालना, वर्णन करना)। **पृञ्चतीः** = स्पर्श करता है (पृच् = संयम करना, तपस्या करना, स्पर्श करना, संयोग करना, मिलना) **मधुना** = मधु द्वारा (मध् = मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना, मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)। **पयः** = ज्ञान, रक्षण, गतिशील, प्रवाहमान, प्रवाहपूर्ण (पय् - गति करना, रक्षण करना, ज्ञान, गमन, प्राप्ति करना, पि - जाना, जानना, पाना, पा- पालन करना, रक्षा करना)।। **1** ।।

20. अमूर्या उप सूर्ये याभिः वा सूर्यः सह।
ताः नः हिन्वन्तु अध्वरम्।। 2 ।।

मन्त्रार्थ :- **अमूर्या** = सेवाभावी विद्वान्। **उप** = समीप। **सूर्ये** = सूर्य में। **याभिः** = जिसके द्वारा। **वा** = अथवा । **सूर्यः** = सूर्य, उत्पन्न करने वाला। **सह** = साथ, सहित। **ताः** = वे, वह, वे दोनो। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा **हिन्वन्तु** = संतृप्त, तृप्त करे। **अध्वरम्** = अध्वर, अहिंसक, अवर्णनीय को।। **2** ।।

पदार्थ :- **अमूर्या** = सेवाभावी विद्वान् (अम् = जाना, जानना, शब्द करना, सेवा करना, रोग होना)। **उप** = समीप (उपसर्ग)। **सूर्ये** = सूर्य में (सुर - ऐश्वर्य होना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना, सू - उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, ऐश्वर्य होना)। **याभिः** = जिसके द्वारा (सर्वनाम)। **वा** = अथवा (अव्यय)। **सूर्यः** = सूर्य, उत्पन्न करने वाला (सुर - ऐश्वर्य होना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना, सू - उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, ऐश्वर्य होना)। **सह** = साथ, सहित (सर्वनाम)। **ताः** = वे, वह, वे दोनो (सर्वनाम)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **हिन्वन्तु** = संतृप्त, तृप्त करे (हिन्व - तृप्त होना, शान्त होना)। **अध्वरम्** = अध्वर, अहिंसक, अवर्णनीय को (अ - नहीं, ध्वृ-ध्वर् = हिंसा करना, टेढ़ा करना, झुकाना, मार डालना, वर्णन करना)।। **2** ।।

21. अपः देवीः उप ह्वये यत्र गावः पिबन्ति नः।
सिन्धुभ्यः कर्त्वं हविः।। 3 ।।

मन्त्रार्थ :- **अपः** = पालन करने वाला, पालक, रक्षक। **देवीः** = दिव्यगुणयुक्त। **उप** = समीप। **ह्वये** = आह्वान करते हैं, आदान-प्रदान करते हैं। **यत्र** = जहाँ। **गावः** = शब्द, वाणी, वचन। **पिबन्ति** = पीते हैं। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा। **सिन्धुभ्यः** = समुद्रों के लिए। **कर्त्वं** = कर्ता, करने वाले । **हविः** = हवि, दान करने योग्य, लेने योग्य, तृप्त करने योग्य।। **3** ।।

पदार्थ :- **अपः** = पालन करने वाला, पालक, रक्षक् (अप = पालन करना, जाना, जानना, पाना)। **देवीः** = दिव्यगुणयुक्त (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **उप** = समीप (उपसर्ग)। **ह्वये** = आह्वान करते हैं, आदान-प्रदान करते हैं (हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)। **यत्र** = जहाँ (सर्वनाम)। **गावः** = शब्द, वाणी, वचन (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)। **पिबन्ति** = पीते हैं (पी-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **सिन्धुभ्यः** = समुद्रों के लिए (सिध - सिद्ध होना, पूर्ण होना, जाना, जानना, पाना, अध्ययन करना, दीक्षा देना, शुभ कार्य करना, सिञ् - बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना)। **कर्त्वं** = कर्ता, करने वाले (कृ - करना)। **हविः** = हवि, दान करने योग्य, लेने योग्य, तृप्त करने योग्य (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे -

शब्द करना, आह्वान करना)।**॥ 3 ॥**

22. अप्सु अन्तः अमृतम् अप्सु भेषजम्
अपाम् उत प्रशस्तिभिः अश्वाः भवथ वाजिनः
गावो भवथ वाजिनीः ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ :- अप्सु = पालन में, पालन करने वालों में **अन्तः =** बीच में **अमृतम् =** न मरने वाला, अमर, अमृत को **अप्सु =** पालन में, पालन करने वालों में **भेषजम् =** भेषज को, औषधि को **अपाम् =** अपा को, पालकों को **उत =** ही **प्रशस्तिभिः =** प्रशस्तियों द्वारा **अश्वाः =** अश्व, तीव्र गति युक्त, व्यापक **भवथ =** होते हो **वाजिनः =** बलवान्, वेगवान्, गतिशील **गावो =** शब्द, वाणी, वचन **भवथ =** होते हो **वाजिनीः =** बलवती, वाजयुक्त, गतियुक्त **॥ 4 ॥**

भावार्थ :- अमृत, भेषज पालनकर्ताओं में शीघ्रगामी है। जो लोग दूसरों का पालन-रक्षण करते हैं, उन्हें अमृत तत्व शीघ्रता से प्राप्त होता है। भेषज शक्ति भी उनको शीघ्रता से प्राप्त होती है।

पदार्थ :- अप्सु = पालन में, पालन करने वालों में (अप् = व्याप्त होना, पालन करना, फैलना)। **अन्तः =** बीच में। **अमृतम् =** न मरने वाला, अमर, अमृत को (अ - नहीं, मृ = मरना)। **अप्सु =** पालन में, पालन करने वालों में (अप् = व्याप्त होना, पालन करना, फैलना)। **भेषजम् =** भेषज को, औषधि को (भिषज् - रोग मुक्त करना, चिकित्सा करना, नष्ट करना, भेष - डरना, जाना, जानना, पाना)। **अपाम् =** अपा को, पालकों को (अप - पालन करना)। **उत =** ही। **प्रशस्तिभिः =** प्रशस्तियों द्वारा (प्र = प्रकृष्ट, अधिक, शस्-शंस् - प्रशंसा करना, हिंसा करना, मारना, दुःख देना)। **अश्वाः =** अश्व, तीव्र गति युक्त, व्यापक (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)। **भवथ =** होते हो (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **वाजिनः =** बलवान्, वेगवान्, गतिशील (वाज् = बल होना, गति करना, जानना, पाना)। **गावो =** शब्द, वाणी, वचन (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)। **भवथ =** होते हो (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **वाजिनीः =** बलवती, वाजयुक्त, गतियुक्त (वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना) **॥ 4 ॥**

5 अपांभेसज – सूक्त - 5 (5)

23. आपो हि ष्ठा मयोभुवः, ताः नः ऊर्जे दधातन।
महे रणाय चक्षसे ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ :- आपो आपः **मयोभुवः** मयोभुव **ष्ठा** स्थित है, **ता** वह **महे** महत् **रणाय** रण (शब्द) के लिए **चक्षसे** देखने के लिए **नः** हमारे लिए **ऊर्जे** ऊर्जा **दधातन** धारण करे **॥ 1 ॥**

भावार्थ :- अप धातु का अर्थ पालन करना होने से आप शब्द का अर्थ पालन करने वाली माता तथा व्यापक आध्यात्मिक अर्थ में परमात्मा भी है। आप धातु का अर्थ व्याप्त होना होने से भी आपः का अर्थ परमात्मा ग्रहण किया जाता है। मय धातु का सामान्य अर्थ गति है। गति अर्थ वाली धातु का तीन प्रकार लक्ष्यार्थ सर्वत्र ग्राह्य है ज्ञान, गमन, प्राप्ति। मयोभुवः का अर्थ गतिशीलता के साथ ही ज्ञान पाना भी है। रण धातु का अर्थ शब्द करना है। शब्द को देखने के संदेश को वेदवाणी का दृष्टा होने की भावना के रूप में समझना चाहिए **॥ 1 ॥**

पदार्थ - आपो = व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)। **हि =** ही, निश्चय (अव्यय) **ष्ठा =** स्थित हो (स्था - स्थित होना, ठहरना)। **मयोभुवः =** विद्वान् = गति से होने वाले, ज्ञान से होने वाले (मय् - जाना, जानना, पाना)। **ताः =** वे (सर्वनाम)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **ऊर्जे =** ऊर्जा के लिए (ऊर्ज् = प्राण होना, चेतन होना, बल होना, ऊर्जा होना, शक्तिमान होना, पराक्रमी होना, चलना, जाना)। **दधातन =** धारण करो (धा-दध् - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)। **महे =** पूजा करने के लिए,

हे महान्, पूज्य, महिमावान्, महान् (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना)। **रणाय =** रण, शब्द के लिए (रण - शब्द करना, आवाज करना, जाना)। **चक्षसे =** देखने के लिए, देखते हो (चक्ष् - स्पष्ट बोलना, कहना, देखना) **॥ 1 ॥**

24. यो वः शिवतमो रसः, तस्य भाजयत इह नः।
उशतीः इव मातरः ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ :- **यो** जो **वः** तुम्हारा **शिवतमो** अत्यन्त कल्याणकारी **रसः** रस (है), **तस्य** उसका **इह** यहाँ **नः** हमको **उशतीः** उशती **मातरः** माता के **इव** समान **भाजयत** सेवन करायें **॥ 2 ॥**

भावार्थ :- परमात्मा तथा प्रकृति की उपासना से हमारे लिए कल्याणकारी पोषण प्राप्त होता है **॥ 2 ॥**

विशेष :- उशती पद माता का विशेषण है। उश-वश धातु का अर्थ चाहना है। माता पुत्र को चाहती है, स्नेह करती है, पोषण करती है। उशती का यही भावार्थ लेना चाहिए।

पदार्थ :- **यो =** जो (सर्वनाम)। **वः =** तुम लोग, तुम्हारा, तुमको, तुम सबका, तुम सबको, तुम सबके लिए (सर्वनाम)। **शिवतमो =** अत्यन्त कल्याणकारी। (शिव् = कल्याण करना)। **रसः =** रस (रस - स्वाद लेना, चखना, प्रीति करना, प्यार करना)। **तस्य =** उसका (सर्वनाम)। **भाजयत =** सेवन करायें, भाग दें (भज् = सेवा करना, भजन करना, भाग करना, अलग करना)। **इह =** इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **उशतीरिव =** उशती, इच्छा करने वाला, कामना करने वाला (वश्-उश् - इच्छा करना, चाहना)। **मातरः =** माता (मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना) **॥ 2 ॥**

25. तस्मा अरम् गमाम, वो यस्य क्षयाय जिन्वथ।
आपो जनयथा च नः ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ :- **तस्मा** इससे **वो** तुम्हारे लिए **अरम्** पर्याप्त **गमाम** जायें, **यस्य** जिसके **क्षयाय** निवास के लिए **जिन्वथ** प्रीति करो। **च** और **आपो** आपः **नः** हमारे लिए **जनयथा** उत्पन्न करे **॥ 3 ॥**

भावार्थ :- आपः अर्थात् परमात्मा, माता, जल के रूप में तीनों अर्थों में सन्देश स्पष्ट है कि आधा-अधूरा नहीं पर्याप्त प्रयास होना चाहिए। परमात्मा की उपासना हो, परिवार हो अथवा प्रकृति हो, पूरे मन से पर्याप्त ध्यान-उपासना-सेवा करना आवश्यक है, तभी प्रयास फलदायी होते हैं **॥ 3 ॥**

पदार्थ :- **तस्मा =** इससे (सर्वनाम)। **अरम् =** पर्याप्त (अव्यय)। **गमाम =** जायें (गम् = जाना)। **वो =** तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **यस्य =** जिसका (सर्वनाम)। **क्षयाय =** निवास के लिए (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)। **जिन्वथ =** प्रीति करो (जिन्व् = सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना, आनन्द होना, मुक्त करना, प्रकाशित होना, बोलना)। **आपो =** आप, व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)। **जनयथा =** उत्पन्न करे (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **च =** और। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम) **॥ 3 ॥**

26. ईशाना वार्याणाम्, क्षयन्तीः चर्षणीनाम्।
अपो याचामि भेषजम् ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ :- **ईशाना =** अधिकार करने वाला, ऐश्वर्य वाला। **वार्याणाम् =** वार्यों, वरणीयों, वरण करने योग्यों का (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **क्षयन्तीः =** निवास करते हैं, । **चर्षणीनाम् =** आनन्द, चेतना, विचार युक्तों का। **अपो =** पालन करने वाला। **याचामि =** याचना करता हूँ । **भेषजम् =** भेषज को, औषधि को **॥ 4 ॥**

पदार्थ :- **ईशाना =** अधिकार करने वाला, ऐश्वर्य वाला (ईश = ऐश्वर्य-अधिकार होना)। **वार्याणाम् =** वार्यों, वरणीयों, वरण करने योग्यों का (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय

करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **क्षयन्तीः** = निवास करते हैं, (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना, निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)। **चर्षणीनाम्** = आनन्द, चेतना, विचार युक्तों का (चृष्-चर्ष - आनन्द होना, चेतन होना, विचार करना)। **अपो** = पालन करने वाला (अप = जाना, जानना, पाना, पालन करना)। **याचामि** = याचना करता हूँ (याच - याचना करना, मांगना, देने की चाहना करना)। **भेषजम्** = भेषज को, औषधि को (भिषज् - रोग मुक्त करना, चिकित्सा करना, नष्ट करना, भेष - डरना, जाना, जानना, पाना)।। **4** ।।

6 अपांभेसज – सूक्त - 6 (6)

27. शम् नो देवीः अभिष्टये, आपो भवन्तु पीतये।
शम् योः अभि स्त्रवन्तु नः ।। 1 ।।

मन्त्रार्थ :- **देवीः** देवी **आपो** आप **नो** हमारे **अभिष्टये** अभीष्ट के लिए **पीतये** पीने के लिए **शम्** कल्याणकारी **भवन्तु** हों। **नः** हमारे लिए **शम्** कल्याण **योः** मिलाने वाला **अभि स्त्रवन्तु** अभिसिञ्चन करें ।। **1** ।।

भावार्थ :- इसमें भी हमारे लिए प्रकृति के कल्याणकारी होने की भावना है। सर्वथा इष्ट करने वाले, दिव्य गुणों से युक्त कल्याणकारी आप हमारे लिए भी कल्याणकारी हों, शमनकारी हों, शान्तिमय हों। आप अभिसिञ्चन करने वाले, शान्ति प्रदान करने वालों को, हमें मिलाने में कल्याणकारी हों ।। **1** ।।

पदार्थ :- **शम्** = कल्याणकारी (शम् - कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)। **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **देवीः** = दिव्यगुणयुक्त (दिव् - तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना)। **अभिष्टये** = अभीष्ट के लिए (अभि - अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, इष - इच्छा करना, चाहना, जाना)। **आपो** - व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना)। **भवन्तु** = हों, हो जायें (भू - होना)। **पीतये** = पान के लिए (पी-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)। **शम्** = कल्याणकारी (शम् - कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)। **योः** = मिलने वाला (यु - मिलना, मिलाना, अलग करना)। **अभि** = सभी ओर। **स्त्रवन्तु** = अभिसिञ्चन करें (स्रु - जाना, जानना, पाना, सृ - जाना, सरकना, बहना, टपकना)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम) ।। **1** ।।

28. अप्सु मे सोमो अब्रवीत्, अन्तः विश्वानि भेषजा।
अग्निम् च विश्वशम्भुवम् ।। 2 ।।

मन्त्रार्थ :- **अप्सु** = पालन-रक्षण में। **मे** = मेरा, मेरे लिए। **सोमो** = सृजन-ऐश्वर्य-अन्तकर्ता। **अब्रवीत्** = बोला। **अन्तः** = बीच में, भीतर। **विश्वानि** = सभी। **भेषजा** = भेषज, औषधि। **अग्निम्** = अग्नि को, ऊर्ध्वगामी, तेजस्वी, विद्वान् को। **च** = और। **विश्वशम्भुवम्** = विश्व कल्याण भावना को।। **2** ।।

पदार्थ :- **अप्सु** = पालन-रक्षण में (अप = जाना, जानना, पाना, पालन करना)। **मे** = मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **सोमो** = सृजन-ऐश्वर्य-अन्तकर्ता (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना, सो - अन्त करना)। **अब्रवीत्** = बोला (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, ब्रू - कहना, बोलना)। **अन्तः** = बीच में, भीतर (उपसर्ग, सर्वनाम)। **विश्वानि** = सभी (सर्वनाम)। **भेषजा** = भेषज, औषधि (भिषज् - रोग मुक्त करना, चिकित्सा करना, नष्ट करना, भेष - डरना, जाना, जानना, पाना)। **अग्निम्** = अग्नि को, ऊर्ध्वगामी, तेजस्वी, विद्वान् को (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **च** = और (अव्यय)। **विश्वशम्भुवम्** = विश्व कल्याण भावना को (शम् = शमन करना, शान्त होना, सुख होना, कल्याण होना)।। **2** ।।

29. आपः पृणीत भेषजम् वरूथम् तन्वे मम।
ज्योक् च सूर्यम् दृशे ।। 3 ।।

मन्त्रार्थ :- आपः = आप, व्याप्त, व्यापक। **पृणीत** = पूर्ण करो। **भेषजम्** = भेषज को, औषधि को। **वरूथम्** = वरूथ । **तन्वे** = तन्व में, विस्तार के लिए। **मम** = मेरा। **ज्योक्** = ज्योक्, सुदीर्घ, चिरकालीन, निरन्तर। **च** = और। **सूर्यम्** = सूर्य को। **दृशे** = देखने के लिए।। **3** ।।

पदार्थ- आपः = आप, व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)। **पृणीत** = पूर्ण करो (पृ - पूर्ण करना, भरना, पालन करना)। **भेषजम्** = भेषज को, औषधि को (भिषज् - रोग मुक्त करना, चिकित्सा करना, नष्ट करना, भेष - डरना, जाना, जानना, पाना)। **वरूथम्** = वरूथ (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **तन्वे** = तन्व में, विस्तार के लिए (तन् = विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना)। **मम** = मेरा (सर्वनाम)। **ज्योक्** = ज्योक्, सुदीर्घ, चिरकालीन, निरन्तर (ज्या - जीर्ण होना, वृद्ध होना, पुराना होना, ज्यु = गति होना)। **च** = और (अव्यय)। **सूर्यम्** = सूर्य को (सुर - ऐश्वर्य होना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना, सू - उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, ऐश्वर्य होना)। **दृशे** = देखने के लिए (दृश्-पश्य -देखना)।। **3** ।।

30. शम् नः आपः धन्वन्याः, शम् उ सन्तु अनूप्याः।
शम् नः खनिमित्रमाः आपः, शम् उ याः कुम्भे आभृताः,
शिवाः नः सन्तु वार्षिकीः।। 4 ।।

मन्त्रार्थ :- शम् = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा। **आपः** = आप, व्याप्त, व्यापक । **धन्वन्याः** = गति, शब्द करने वाले का। **शम्** = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी। **उ** = निश्चय ही, भी । **सन्तु** = हों। **अनूप्याः** = अनूप, अनुपालक, प्राणवान्, चेतना-रक्षक। **शम्** = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा। **खनिमित्रमाः** = खननमित्र। **आपः** = आप, व्याप्त, व्यापक। **शम्** = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी। **उ** = निश्चय ही, भी। **याः** = जो। **कुम्भे** = कुम्भ के लिए । **आभृताः** = परिपूर्ण है । **शिवाः** = कल्याणकारी । **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा । **सन्तु** = हों । **वार्षिकीः** = पराक्रमी।। **4** ।।

पदार्थ :- शम् = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी (शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **आपः** = आप, व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)। **धन्वन्याः** = गति, शब्द करने वाले का (धन्व - जाना, जानना, पाना, धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना) **शम्** = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी (शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)। **उ** = निश्चय ही, भी (निपात, अव्यय)। **सन्तु** = हों (अस् - होना)। **अनूप्याः** = अनूप, अनुपालक, प्राणवान्, चेतना-रक्षक (अनु = अनुकूल, पश्चात्, अन् = प्राण होना, चेतन होना, श्वास लेना, स्पन्दन करना, जीवन होना, समर्थ होना, जाना, पा - रक्षा करना, पालन करना)। **शम्** = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी (शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **खनिमित्रमाः** = ख़नन मित्र (खन् = खनन करना, खोदना, मिद् - स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, नरम होना, मृदुल होना, मिद् - स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, नरम होना, मृदुल होना)। **आपः** = आप, व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)। **शम्** = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी (शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)। **उ** = निश्चय ही, भी (निपात, अव्यय)। **याः** = जो (सर्वनाम)। **कुम्भे** = कुम्भ के लिए (कुम्भ् = आच्छादन करना)। **आभृताः** = परिपूर्ण है (आ - समन्तात्, पूर्णतः, भृ - भरण करना, पूर्ण करना)। **शिवाः** = कल्याणकारी (शिव् = कल्याण करना)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **सन्तु** = हों (अस् - होना)। **वार्षिकीः** = पराक्रमी (वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी

पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना)।**।। 4 ।।**

(2) अनुवाक - 2

7 मेधाजनन - सूक्त - 1 (7)

31. स्तुवानम् अग्ने आ वह यातुधानम् किमीदिनम्।
त्वम् हि देव वन्दितः हन्ता दस्योः बभूविथ।। 1 ।।

मन्त्रार्थ :- स्तुवानम् = स्तुतिवान् को **अग्ने =** हे अग्नि **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **वह =** वहन करो, ले जाओ **यातुधानम् =** यातुधान को **किमीदिनम्** = यह क्या है, ऐसे भाव वाले को, जिज्ञासु को **त्वम् =** तुम **हि =** ही, निश्चय **देव =** विद्वान्, तेजस्वी, देवगण **वन्दितः** = वन्दित, जिनकी वन्दना की गयी है, वन्दना युक्त **हन्ता =** मारने वाला **दस्योः =** अनेक दस्यु, रक्षणीय **बभूविथ =** हो गये **।। 1 ।।**

पदार्थ :- स्तुवानम् = स्तुतिवान् को (स्तु - स्तुति करना, प्रशंसा करना, पूजा करना, अर्चा करना, सेवा करना, भजन करना)। **अग्ने =** हे अग्नि (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **वह =** वहन करो, ले जाओ (वह् = वहन करना, ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)। **यातुधानम् =** यातुधान को (या - जाना, यत् - यत्न करना, प्रयास करना, उद्योग करना, दुःख देना, छाया-आच्छादन करना, रोकना, धा = धारण करना)। **किमीदिनम्** = यह क्या है, ऐसे भाव वाले को, जिज्ञासु को (किम् - क्या (सर्वनाम), इदम् - यह, इसको (सर्वनाम))। **त्वम् =** तुम (सर्वनाम)। **हि =** ही, निश्चय (अव्यय)। **देव =** विद्वान्, तेजस्वी, देवगण (दिव् - तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **वन्दितः** = वन्दित, जिनकी वन्दना की गयी है, वन्दना युक्त (वन्द् = स्तुति करना, प्रणाम करना, वन्दना करना, प्रशंसा करना)। **हन्ता =** मारने वाला (हन् - मारना)। **दस्योः =** अनेक दस्यु, रक्षणीय (दस् - रक्षण, पालन, स्थापन करना, देखना, नष्ट होना, नष्ट करना, डसना)। **बभूविथ =** हो गये (भू = होना, प्राप्त होना) **।। 1 ।।**

32. आज्यस्य परमेस्थिन् जातवेदः तनूवशिन्।
अग्ने तौलस्य प्र अशान यातुधानान् वि लापय।। 2 ।।

मन्त्रार्थ :- आज्यस्य = आज्य का, सम्यक् गति, ज्ञान का। **परमेस्थिन् =** परम् में स्थित। **जातवेदः =** विद्वान्, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले। **तनूवशिन् =** विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द । **अग्ने =** हे अग्नि। **तौलस्य =** तुला का। **प्र =** प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक। **अशान =** व्यापक, व्याप्त होने वाले। **यातुधानान् =** यातुधानों को। **वि =** विशेष, विना, विलोम। **लापय** - विलय करो।**। 2 ।।**

पदार्थ :- आज्यस्य = आज्य का, सम्यक् गति, ज्ञान का (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अज् - जाना, स्थापन करना, दौड़ाना, फेकना, जि- जीतना, सर्वोत्कर्ष से रहना, ज्या - वृद्ध होना)। **परमेस्थिन् =** परम् में स्थित (परम् = परन्तु, फिर, परम् (अव्यय)स्था- स्थित होना, ठहरना)। **जातवेदः =** विद्वान्, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले (जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जा-ज्ञा - जानना, विद् - जानना)। **तनूवशिन् =** विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द (तन् = विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना)। **अग्ने =** हे अग्नि (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **तौलस्य =** तुला का (तुल् - तोलना, तुलना करना)। **प्र =** प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **अशान =** व्यापक, व्याप्त होने वाले (अश् = भोजन करना, व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, नक्ष् - जाना, आना)। **यातुधानान् =** यातुधानों को (या - जाना, यत् - यत्न करना, प्रयास करना, उद्योग करना, दुःख देना, छाया-आच्छादन करना, रोकना, धा = धारण करना)। **वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **लापय** - विलय करो (ली - युक्त होना, प्राप्त होना, मिलना, कष्ट होना, पतला करना, गलाना।)।**। 2 ।।**

33. वि लपन्तु यातुधानाः अत्त्रिणः ये किमीदिनः।

अथ इदम् अग्ने नः हविः इन्द्रः च प्रति हर्यतम् ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ :- वि = विशेष, विना, विलोम। **लपन्तु** - स्पष्ट बोलो। **यातुधानाः** = यातुधान। **अत्त्रिणः** = सतत गमनीय । **ये** = जो। **किमीदिनः** = यह क्या है, ऐसे भाव वाले, जिज्ञासु । **अथ** = अब, इसके अनन्तर। **इदम्** = यह, इसको । **अग्ने** = हे अग्नि। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा। **हविः** = हवि, दान करने योग्य, लेने योग्य, तृप्त करने योग्य। **इन्द्रः** = परम ऐश्वर्यशाली। **च** = और। **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में। **हर्यतम्** = हर्य, प्रकाश करने वाले, गतिशील, इच्छुक, चाहने वाले, हरण करने योग्य को।**। 3 ॥**

पदार्थ :- वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **लपन्तु** - स्पष्ट बोलो (लप् - स्पष्ट बोलना)। **यातुधानाः** = यातुधान (या - जाना, यत् - यत्न करना, प्रयास करना, उद्योग करना, दुःख देना, छाया-आच्छादन करना, रोकना, धा = धारण करना)। **अत्त्रिणः** = सतत गमनीय (अत् = सतत गति होना)। **ये** = जो (सर्वनाम)। **किमीदिनः** = यह क्या है, ऐसे भाव वाले, जिज्ञासु (किम् - क्या (सर्वनाम), इदम् - यह, इसको (सर्वनाम))। **अथ** = अब, इसके अनन्तर (अव्यय)। **इदम्** = यह, इसको (सर्वनाम)। **अग्ने** = हे अग्नि (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **हविः** = हवि, दान करने योग्य, लेने योग्य, तृप्त करने योग्य (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **इन्द्रः** = परम ऐश्वर्यशाली (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **च** = और (अव्यय)। **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग)। **हर्यतम्** = हर्य, प्रकाश करने वाले, गतिशील, इच्छुक, चाहने वाले, हरण करने योग्य को (हर्य् - चलना, जाना, इच्छा करना, चाहना, प्रकाशित होना, सूखना, हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना, नष्ट करना)॥ **3 ॥**

34. अग्निः पूर्वः आ रभताम् प्र इन्द्रः नुदतु बाहुमान्।
ब्रवीतु सर्वो यातुमान् अयम् अस्मि इति आ इत्य ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ :- अग्निः = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान्। **पूर्वः** = पूर्व। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम । **रभताम्** = आनन्दित, उपक्रम को। **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक। **इन्द्रः** = परम ऐश्वर्यशाली। **नुदतु** = भेजें। **बाहुमान्** = प्रयास करने वाले को। **ब्रवीतु** = बोलो। **सर्वो** = सभी। **यातुमान्** = यातुधान के योग्य। **अयम्** = यह। **अस्मि** = हूँ । **इति** = ऐसा, यह, इसी प्रकार। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम। **इत्य** = प्राप्य, गति, ज्ञान **॥ 4 ॥**

पदार्थ :- अग्निः = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **पूर्वः** = पूर्व (पूर्व = पूर्व, पहले, सर्वनाम, पूर्व - पूर्ण करना, भरना, निवास करना, आश्चर्य करना, आमन्त्रण करना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **रभताम्** = आनन्दित, उपक्रम को (रभ - कार्य आरम्भ करना, आनन्दित होना, प्रसन्न होना)। **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **इन्द्रः** = परम ऐश्वर्यशाली (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **नुदतु** = भेजें (नुद् = भेजना, प्रेरणा करना, जाना)। **बाहुमान्** = प्रयास करने वाले को (बाह् - प्रयास करना, बह् - बहना, गति करना, बाहर होना, परे हो जाना, हिंसा करना)। **ब्रवीतु** = बोलो (ब्रू - कहना, बोलना)। **सर्वो** = सभी (सर्वनाम)। **यातुमान्** = यातुधान के योग्य (या - जाना, यत् - यत्न करना, प्रयास करना, उद्योग करना, दुःख देना, छाया-आच्छादन करना, रोकना)। **अयम्** = यह (सर्वनाम)। **अस्मि** = हूँ (सर्वनाम)। **इति** = ऐसा, यह, इसी प्रकार (अव्यय)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **इत्य** = प्राप्य, गति, ज्ञान (इ - जाना, जानना, पाना) **॥ 4 ॥**

35. पश्याम ते वीर्यम् जातवेदः प्र नः ब्रूहि यातुधानान् नृचक्षः।
त्वया सर्वे परितप्ताः पुरस्तात् ते आ यन्तु प्रब्रुवाणाः उप इदम् ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ :- पश्याम = देखता हूँ। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **वीर्यम्** = पराक्रम, वीरता को। **जातवेदः** = विद्वान्, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले। **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा। **ब्रूहि** = कहो। **यातुधानान्** = यातुधानों को। **नृचक्षः** = नरों को देखने वाले। **त्वया** = तुम्हारे द्वारा, तुमसे। **सर्वे** = सभी। **परितप्ताः**

= परितप्त। **पुरस्तात्** = पहले। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम। **यन्तु** = पोषण करो, उद्धार करो, प्राप्त करो नियमन-नियन्त्रण करो। **प्रब्रुवाणाः** = प्रकृष्ट बोलना, कहना। **उप** = समीप। **इदम्** = यह, इसको।। **5 ।।**

पदार्थ :- पश्याम = देखता हूँ (पश्-दृश् = देखना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **वीर्यम्** = पराक्रम, वीरता को (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)। **जातवेदः** = विद्वान्, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले (जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जा-ज्ञा - जानना, विद् - जानना)। **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **ब्रूहि** = कहो (ब्रू = कहना, बोलना)। **यातुधानान्** = यातुधानों को (या - जाना, यत् - यत्न करना, प्रयास करना, उद्योग करना, दुःख देना, छाया-आच्छादन करना, रोकना, धा = धारण करना)। **नृचक्षः** = नरों को देखने वाले (नृ- ले जाना, चक्ष - देखना)। **त्वया** = तुम्हारे द्वारा, तुमसे (सर्वनाम)। **सर्वे** = सभी (सर्वनाम)। **परितप्ताः** = परितप्त (परि = सभी तरफ, उपसर्ग, तप - ऐश्वर्य होना, तपना, दाह होना, तप करना, तप्त होना, तप्त करना, जलना, जलाना, तृषा होना)। **पुरस्तात्** = पहले (अव्यय)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **यन्तु** = पोषण करो, उद्धार करो, प्राप्त करो नियमन-नियन्त्रण करो (यम् = रोकना, स्वाधीन रखना, आवरण करना, पोषण करना, नियमन करना, यन - उद्धार करना, या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, जानना)। **प्रब्रुवाणाः** = प्रकृष्ट बोलना, कहना (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, ब्रू = कहना, बोलना)। **उप** = समीप (उपसर्ग)। **इदम्** = यह, इसको (सर्वनाम)।। **5 ।।**

36. आ रभस्व जातवेदः अस्माक अर्थाय जज्ञिषे।
दूतः नः अग्ने भूत्वा यातुधानान् वि लापय। 6 ।।

मन्त्रार्थ :- आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम। **रभस्व** = आनन्दित हो, उपक्रम करो। **जातवेदः** = विद्वान्, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले। **अस्माक** = हमारा। **अर्थाय** = अर्थ के लिए। **जज्ञिषे** = उत्पन्न होता है। **दूतः** = गतिशील, विद्वान्, परिश्रमी, दुःखदायी। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा। **अग्ने** = हे अग्नि। **भूत्वा** = होकर । **यातुधानान्** = यातुधानों को। **वि** = विशेष, विना, विलोम। **लापय** - विलय करो। **6 ।।**

पदार्थ :- आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **रभस्व** = आनन्दित हो, उपक्रम करो। (रभ - आनन्दित होना, प्रसन्न होना)। **जातवेदः** = विद्वान्, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले (जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जा-ज्ञा - जानना, विद् - जानना)। **अस्माक** = हमारा (सर्वनाम)। **अर्थाय** = अर्थ के लिए (अर्थ - मांगना, याचना करना, चाहना)। **जज्ञिषे** = उत्पन्न होता है (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **दूतः** = गतिशील, विद्वान्, परिश्रमी, दुःखदायी (दू = जाना, जानना, पाना, सुगन्ध लेना, श्रम करना, जलना, तप्त होना, दुःख होना, दुःख देना)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **अग्ने** = हे अग्नि (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **भूत्वा** = होकर (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।। **यातुधानान्** = यातुधानों को (या - जाना, यत् - यत्न करना, प्रयास करना, उद्योग करना, दुःख देना, छाया-आच्छादन करना, रोकना, धा = धारण करना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **लापय** - विलय करो (ली - युक्त होना, प्राप्त होना, मिलना, कष्ट होना, पतला करना, गलाना।)। **6 ।।**

37. त्वम् अग्ने यातुधानान् उपबद्धान् इह आ वह।
अथ एषाम् इन्द्रः वज्रेण अपि शीर्षाणि वृश्चतु।। 7 ।।

मन्त्रार्थ :- त्वम् = तुम। **अग्ने** = हे अग्नि। **यातुधानान्** = यातुधानों को। **उपबद्धान्** = उपबद्ध को। **इह** = इसमें, यहां, यह। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम। **वह** = वहन करो, ले जाओ। **अथ** = अब, इसके अनन्तर। **एषाम्** = इनका। **इन्द्रः** = परम ऐश्वर्यशाली। **वज्रेण** = वज्र, गतिमान द्वारा। **अपि** = भी, निकट। **शीर्षाणि** = शीर्ष के। **वृश्चतु** = वरण करो।। **7 ।।**

पदार्थ :- त्वम् = तुम (सर्वनाम)। **अग्ने =** हे अग्नि (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **यातुधानान् =** यातुधानों को (या - जाना, यत् - यत्न करना, प्रयास करना, उद्योग करना, दुःख देना, छाया-आच्छादन करना, रोकना, धा = धारण करना)। **उपबद्धान् =** उपबद्ध को (उप- समीप बद् - स्थिर होना, स्वस्थ होना, बध्-बन्ध् = बाँधना, बद्ध करना, हिंसा करना, मारना, वध करना, घृणा करना)। **इह =** इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **वह =** वहन करो, ले जाओ (वह् = वहन करना, ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)। **अथ =** अब, इसके अनन्तर (अव्यय)। **एषाम् =** इनका (सर्वनाम)। **इन्द्रः =** परम ऐश्वर्यशाली (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **वज्रेण =** वज्र, गतिमान द्वारा (वज् - गति करना, जाना)। **अपि =** भी, निकट (अव्यय)। **शीर्षाणि =** शीर्ष के (शीर्ष = शीर्ष होना, मुख्य होना, उच्च होना)। **वृश्चतु =** वरण करो (वृ - वरण करना, आच्छादन करना, स्वीकार करना,)।**। 7 ।।**

8 यातुधाननाशन सूक्त - 2 (8)

38. इदम् हविः यातुधानान्, नदी फेनम् इव आ वहत्।
यः इदम स्त्री पुमान् अकः, इह सः स्तुवताम् जनः ।। 1 ।।

मन्त्रार्थ :- इदम् = यह, इसको। **हविः =** हवि, दान करने योग्य, लेने योग्य, तृप्त करने योग्य। **यातुधानान् =** यातुधानों को । **नदी =** नदी। **फेनम् =** फेन को। **इव =** समान, की भाँति, के समान। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम। **वहत् =** वहन करते हैं। **यः =** जो। **इदम =** यह, इसको। **स्त्री =** स्त्री, आच्छादित करने वाले। **पुमान् =** पवित्रता युक्त, रक्षक। **अकः =** प्रगतिशील, कुटिल। **इह =** इसमें, यहां, यह। **सः =** वह, उसने। **स्तुवताम् =** स्तुति का। **जनः =** जन।**। 1 ।।**

पदार्थ :- इदम् = यह, इसको (सर्वनाम)। **हविः =** हवि, दान करने योग्य, लेने योग्य, तृप्त करने योग्य (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **यातुधानान् =** यातुधानों को (या - जाना, यत् - यत्न करना, प्रयास करना, उद्योग करना, दुःख देना, छाया-आच्छादन करना, रोकना, धा = धारण करना)। **नदी =** नदी (नद् - शब्द करना, झंकार करना, चमकना)। **फेनम् =** फेन को (स्फी-फेय्-स्फाय = बढ़ना, मोटा होना, स्थूल होना)। **इव =** समान, की भाँति, के समान (अव्यय)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **वहत् =** वहन करते हैं (वह् = वहन करना, ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)। **यः =** जो (सर्वनाम)। **इदम =** यह, इसको (सर्वनाम)। **स्त्री =** स्त्री, आच्छादित करने वाले (स्तृ = आच्छादित करना, ढकना)। **पुमान् =** पवित्रता युक्त, रक्षक (पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)। **अकः =** प्रगतिशील, कुटिल (अक् - जाना, जानना पाना, टेढ़ा जाना, कुटिल गति करना)। **इह =** इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **सः =** वह, उसने (सर्वनाम)। **स्तुवताम् =** स्तुति का (स्तु = स्तुति, पूजा, सेवा करना)। **जनः =** जन (जन - उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।**। 1 ।।**

39. अयम् स्तुवानः आ अगमत् इमम् स्म प्रति हर्यत।
बृहस्पते वशे लब्ध्वा अग्नीषोमा वि विध्यतम् ।। 2 ।।

मन्त्रार्थ :- अयम् = यह। **स्तुवानः =** स्तुतिवान्। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम। **अगमत् =** गये, अगम **इमम् =** इसको । **स्म =** है। **प्रति =** प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में । **हर्यत =** हर्यत, प्रकाश करने वाले, गतिशील, इच्छुक, चाहने वाले, हरण करने योग्य। **बृहस्पते =** हे बृहस्पति, महान् पालक-रक्षक। **वशे =** वश में। **लब्ध्वा =** लबों को । **अग्नीषोमा =** अग्नि और सोम। **वि =** विशेष, विना, विलोम। **विध्यतम् =** वेधन को, विधान को।**। 2 ।।**

पदार्थ :- अयम् = यह (सर्वनाम)। **स्तुवानः =** स्तुतिवान् (स्तु - स्तुति करना, प्रशंसा करना, पूजा करना, अर्चा करना, सेवा करना, भजन करना)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **अगमत् =** गये, अगम (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अग् = जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, गति करना, घूमना, कुटिल गति करना, टेढ़ा जाना, लेना, ग्रहण करना, गम् = जाना, जानना, पाना)। **इमम् =** इसको (सर्वनाम)। **स्म =** है (अस् - होना)। **प्रति =** प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग)। **हर्यत =** हर्यत, प्रकाश करने वाले,

गतिशील, इच्छुक, चाहने वाले, हरण करने योग्य (हर्य् - चलना, जाना, इच्छा करना, चाहना, प्रकाशित होना, सूखना, हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना)। **बृहस्पते** = हे बृहस्पति, महान् पालक-रक्षक। बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना, पत् - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना, नीचे जाना, गिरना, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **वशे** = वश में (वश् = इच्छा करना, चाहना, चमकना)। **लब्ध्वा** = लबों को (लभ = प्राप्त होना, मिलना)। **अग्नीषोमा** = अग्नि और सोम (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना, सु = उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **विध्यतम्** = वेधन को, विधान को (विध - विधान करना, वेध करना, वेधन करना, ताडना)।। **2** ।।

40. यातु-धानस्य सोमप जहि प्रजाम् नयस्व च।
निः स्तुवानस्य पातय परम् अक्षि उत अवरम्।। 3 ।।

मन्त्रार्थ :- यातु-धानस्य = यातुधान का। **सोमप** = सोम का पालक, सोमपान करने वाला। **जहि** = हनन करो, नष्ट करो (जह - हिंसा करना, चलना, फैलना, जहा – परित्याग करना, छोड़ना)। **प्रजाम्** = प्रजा को। **नयस्व** = ले जाते हैं। **च** = और। **निः** = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर। **स्तुवानस्य** = स्तुतवान का। **पातय** = रक्षा, पालन के लिए । **परम्** = परन्तु, फिर, परम्। **अक्षि** = अक्षित , व्याप्त, अविनाशी । **उत** = ही, भी, ओर। **अवरम्** = अवर, अवरणीय, रक्षक को।। **3** ।।

पदार्थ :- यातु-धानस्य = यातुधान का (या - जाना, यत् - यत्न करना, प्रयास करना, उद्योग करना, दुःख देना, छाया-आच्छादन करना, रोकना, धा = धारण करना)। **सोमप** = सोम का पालक, सोमपान करने वाला (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना, पा - रक्षा करना, पालन करना, सो–स्य, सय - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना)। **जहि** = हनन करो, नष्ट करो (जह - हिंसा करना, चलना, फैलना, जहा – परित्याग करना, छोड़ना)। **प्रजाम्** = प्रजा को (प्र - बहुत, प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **नयस्व** = ले जाते हैं (नी - नय - जाना, हिलना, पहुँचना, संरक्षण करना)। **च** = और (अव्यय)। **निः** = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग)। **स्तुवानस्य** = स्तुतवान का (स्तुञ् - प्रशंसा करना, स्तुति करना, पूजा करना, अर्चा करना, सेवा करना, भजन करना, वन - शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, आपद्ग्रस्त होना, अलग करना, मिलाना, स्मरण करना, बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, याचना करना, मांगना, दुःख देना, उद्योग-धन्धा करना,)। **पातय** = रक्षा, पालन के लिए (पा = रक्षा करना, पालन करना)। **परम्** = परन्तु, फिर, परम् (अव्यय)। **अक्षि** = अक्षित , व्याप्त, अविनाशी (अ = नहीं, अक्ष - खेलना, देखना, एकत्र होना, व्याप्त होना, इच्छितार्थ होना, पैठना, क्षि - क्षय होना, नष्ट होना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **अवरम्** = अवर, अवरणीय, रक्षक को (अ - नहीं, वृ-वर्-वरण करना, इच्छा करना, आशा करना, अवर - नीचे, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)।। **3** ।।

41. यत्र एषाम् अग्ने जनिमानि वेत्थ गुहा सताम् अत्रिणाम्।
जातवेदः तान् त्वम् ब्रह्मणा वावृधानः जहि एषाम् शततर्हम् अग्ने।। 4 ।।

मन्त्रार्थ :- यत्र = जहाँ । **एषाम्** = इनका। **अग्ने** = हे अग्नि । **जनिमानि** = उत्पन्नों को । **वेत्थ** = जानें, जानते हो । **गुहा** = गुह्य, गुहा। **सताम्** = सत्य को। **अत्रिणाम्** = अत्रियों का। **जातवेदः** = विद्वान्, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले । **तान्** = उनको। **त्वम्** = तुम। **ब्रह्मणा** = ब्रह्म द्वारा। **वावृधानः** = वृद्धि करने वाले। **जहि** = हनन करो, नष्ट करो। **एषाम्** = इनका। **शततर्हम्** = बहु हिंसा को। **अग्ने** = हे अग्नि।। **4** ।।

पदार्थ :- यत्र = जहाँ (सर्वनाम)। **एषाम्** = इनका (सर्वनाम)। **अग्ने** = हे अग्नि (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **जनिमानि** = उत्पन्नों को (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **वेत्थ** = जानें, जानते हो (विद् = जानना, समझना, विद्यमान होना)। **गुहा** = गुह्य, गुहा (गुह् - आच्छादन

करना, छिपाना, ढकना, गति करना, जाना, जानना, हिंसा करना)। **सताम् =** सत्य को (सत् = होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना)। **अत्रिणाम् =** अत्रियों का (अत् = जाना, सतत गति करना, जानना, पाना, त्रि - तीन, संख्या)। **जातवेदः =** विद्वान्, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले (जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जा- ज्ञा - जानना, विद् - जानना)। **तान् =** उनको (सर्वनाम)। **त्वम् =** तुम (सर्वनाम)। **ब्रह्मणा** = ब्रह्म द्वारा (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **वावृधानः =** वृद्धि करने वाले (वृध् = वृद्धि करना, बढ़ना)। **जहि =** हनन करो, नष्ट करो (जह - हिंसा करना, चलना, फैलना, जहा – परित्याग करना, छोड़ना)। **एषाम् =** इनका (सर्वनाम)। **शततर्हम् =** बहु हिंसा को (शत - सौ, **तृह्** – मार डालना, दुःख देना)। **अग्ने =** हे अग्नि (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)।**। 4 ।।**

9 विजयप्रार्थना सूक्त - 3 (9)

42. अस्मिन् वसु वसवः धारयन्तु इन्द्रः पूषा वरुणः मित्रः अग्निः। इमम् आदित्याः उत विश्वे च देवाः उत्तरस्मिन् ज्योतिषि धारयन्तु।। 1 ।।

मन्त्रार्थ :- अस्मिन् = इस, इसमें। **वसु =** वसु, स्नेहपूर्वक निवास करने तथा वास देने वाले। **वसवः =** स्नेहपूर्वक निवास करने तथा वास देने वाले। **धारयन्तु =** धारण करें। **इन्द्रः =** परम ऐश्वर्यशाली। **पूषा =** पोषण करने वाला, पोषणकर्ता। **वरुणः =** वरुण। **मित्रः =** मित्र। **अग्निः =** अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान्। **इमम् =** इसको। **आदित्याः =** अदिति से उत्पन्न, अक्षय-अविनाशी से उत्पन्न। **उत** = ही, भी, ओर। **विश्वे =** सभी। **च =** और। **देवाः =** विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने । **उत्तरस्मिन् =** उत्तर में । **ज्योतिषि =** प्रकाश। **धारयन्तु =** धारण करें **।। 1 ।।**

पदार्थ :- अस्मिन् = इस, इसमें (सर्वनाम)। **वसु =** वसु, स्नेहपूर्वक निवास करने तथा वास देने वाले (वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)। **वसवः =** स्नेहपूर्वक निवास करने तथा वास देने वाले (वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)। **धारयन्तु =** धारण करें (धाः = पोषण करना, रक्षण करना, देना, दान करना, धार बाँधना, धारा होना)। **इन्द्रः =** परम ऐश्वर्यशाली (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **पूषा =** पोषण करने वाला, पोषणकर्ता (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, पूष - बढ़ना, अधिक होना, पोषण करना)। **वरुणः =** वरुण (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **मित्रः =** मित्र (मिद् - स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, नरम होना, मृदुल होना)। **अग्निः =** अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **इमम् =** इसको (सर्वनाम)। **आदित्याः =** अदिति से उत्पन्न, अक्षय-अविनाशी से उत्पन्न (अ - नहीं, अद् - खाना, नष्ट करना, दी = क्षय होना, नष्ट होना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **विश्वे =** सभी (सर्वनाम)। **च =** और (अव्यय)। **देवाः =** विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **उत्तरस्मिन् =** उत्तर में (सर्वनाम)। **ज्योतिषि =** प्रकाश (ज्युत - कान्तिमान् होना, चमकना, प्रकाशित होना)। **धारयन्तु =** धारण करें (धाः = पोषण करना, रक्षण करना, देना, दान करना, धार बाँधना, धारा होना) **।। 1 ।।**

43. अस्य देवाः प्रदिशि ज्योतिः अस्तु सूर्यः अग्निः उत वा हिरण्यम्। सपत्नाः अस्मत् अधरे भवन्तु उत्तमम् नाकम् अधि रोहय इमम्।। 2 ।।

मन्त्रार्थ :- अस्य = इसका। **देवाः =** विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने। **प्रदिशि =** प्रदिश में। **ज्योतिः =** प्रकाश । **अस्तु =** हो । **सूर्यः =** सूर्य, उत्पन्न करने वाला। **अग्निः =** अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान्। **उत** = ही, भी, ओर। । **वा =** अथवा। **हिरण्यम् =** हिरण्य को, प्रकाशमान, चमकीले को **। सपत्नाः =** प्रकाश-ऐश्वर्यवान्, प्रकाश-रक्षक। **अस्मत् =** हमसे (सर्वनाम)। **अधरे =** अधर, जय, अधारण के लिए (अधर् - न्यून करना, जीतना, निम्न गति करना, अ - नहीं, धृ - धारण करना)। **भवन्तु** = हों, हो जायें (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना

करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **उत्तमम् =** उत्तम को, श्रेष्ठ-इच्छा, शुभ-इच्छा को (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, तम् - अन्धकार होना, इच्छा करना, चाहना, मानसिक या शारीरिक व्यथा से दुःखित होना)। **नाकम् =** नाक, अक रहित, अकुटिल, अविचल (नक् - नक्क् = नष्ट होना, नष्ट करना, न - नहीं, अक् - जाना, कुटिल गति करना, नश्-नक्क -नाश होना)। **अधि =** अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **रोहय =** बढ़ता हुआ, चढ़ता हुआ (रुह - बढ़ना, ऊपर जाना, चढ़ना, बीज से उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना)। **इमम् =** इसको (सर्वनाम)।। **2 ।।**

पदार्थ :- अस्य = इसका (सर्वनाम)। **देवाः =** विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **प्रदिशि =** प्रदिश में (प्र - प्रकृष्ट, दिश् - दिखाना, दिखाना, समझाना, कहना, देना)। **ज्योतिः =** प्रकाश (ज्युत - कान्तिमान् होना, चमकना, प्रकाशित होना)। **अस्तु =** हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **सूर्यः =** सूर्य, उत्पन्न करने वाला (सुर - ऐश्वर्य होना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना, सू - उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, ऐश्वर्य होना)। **अग्निः =** अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **वा =** अथवा (अव्यय)। **=** हिरण्य को, प्रकाशमान, चमकीले को (हिरण - प्रकाश होना, दीप्त होना, शब्द करना, ध्वनि होना)। **। सपत्नाः =** प्रकाश-ऐश्वर्यवान्, प्रकाश-रक्षक (स - सहित, साथ, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, पत् = जाना, नीचे जाना, पतन होना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना, सप - पूर्ण ज्ञान होना, पूरा समझना, पूर्णतया जानना, संसक्त होना, संलग्न होना, मिलाप होना)। **अस्मत् =** हमसे (सर्वनाम)। **अधरे =** अधर, जय, अधारण के लिए (अधर् - न्यून करना, जीतना, निम्न गति करना, अ - नहीं, धृ - धारण करना)। **भवन्तु =** हों, हो जायें (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **उत्तमम् =** उत्तम को, श्रेष्ठ-इच्छा, शुभ-इच्छा को (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, तम् - अन्धकार होना, इच्छा करना, चाहना, मानसिक या शारीरिक व्यथा से दुःखित होना)। **नाकम् =** नाक, अक रहित, अकुटिल, अविचल (नक् - नक्क् = नष्ट होना, नष्ट करना, न - नहीं, अक् - जाना, कुटिल गति करना, नश्-नक्क -नाश होना)। **अधि =** अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **रोहय =** बढ़ता हुआ, चढ़ता हुआ (रुह - बढ़ना, ऊपर जाना, चढ़ना, बीज से उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना)। **इमम् =** इसको (सर्वनाम)।। **2 ।।**

44. येन इन्द्राय सम्-अभरः पयांसि उत्तमेन ब्रह्मणा जातवेदः।
तेन त्वम् अग्ने इह वर्धय इमम् सजातानाम् श्रैष्ठ्ये आ धेहि एनम्।। 3 ।।

मन्त्रार्थ :- येन = जिससे, जिसके द्वारा। **इन्द्राय =** इन्द्र के लिए। **सम्-अभरः =** सम्यक् रूप से भरण किया। **पयांसि =** विस्तृत, विस्तारयुक्त, गतिशील, प्रवाहमान। **उत्तमेन =** उत्तम द्वारा, श्रेष्ठ-इच्छा द्वारा। **ब्रह्मणा** = ब्रह्म द्वारा। **जातवेदः =** विद्वान्, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले। **तेन =** उससे, उसके द्वारा। **त्वम् =** तुम। **अग्ने =** हे अग्नि। **इह =** इसमें, यहां, यह। **वर्धय =** बढ़ो। **इमम् =** इसको। **सजातानाम् =** सम्बन्धी। **श्रैष्ठ्ये =** श्रेष्ठ के लिए। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम। **धेहि =** धारण करें। **एनम् =** इसको, इसे।। **3 ।।**

पदार्थ :- येन = जिससे, जिसके द्वारा (सर्वनाम)। **इन्द्राय =** इन्द्र के लिए (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **सम्-अभरः =** सम्यक् रूप से भरण किया (सम् = सम्यक्, भलीभांति,अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, भृ = भरण करना, भरना)। **पयांसि =** विस्तृत, विस्तारयुक्त, गतिशील, प्रवाहमान (पय् = जाना, जानना, पाना, बहना, पयस् = विस्तार करना, फैलाना)। **उत्तमेन =** उत्तम द्वारा, श्रेष्ठ-इच्छा द्वारा (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, तम् - अन्धकार होना, इच्छा करना, चाहना, मानसिक या शारीरिक व्यथा से दुःखित होना)। **ब्रह्मणा** = ब्रह्म द्वारा (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **जातवेदः =** विद्वान्, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले (जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जा-ज्ञा - जानना, विद् - जानना)। **तेन =** उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **त्वम् =** तुम (सर्वनाम)। **अग्ने =** हे अग्नि (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना,

ग्रहण करना)। **इह** = इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **वर्धय** = बढ़ो (वृध् = बढ़ना, चमकना, बोलना)। **इमम्** = इसको (सर्वनाम)। **सजातानाम्** = सम्बन्धी (स - साथ, सहित, सज्, संज = सम्बन्धी होना, आलिंगन करना, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **श्रैष्ठ्ये** = श्रेष्ठ के लिए (श्री = सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना, श्री-श्रीण = पकाना, रांधना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **धेहि** = धारण करें (धा-धि-धी - धारण करना, पहनना, पोषण करना, रक्षण करना, देना)। **एनम्** = इसको, इसे (सर्वनाम)।**॥ 3 ॥**

45. आ एषाम् यज्ञम् उत वर्चः ददे अहम् रायः पोषम् उत चित्तानि अग्ने।
सपत्नाः अस्मत् अधरे भवन्तु उत्तमम् नाकम् अधि रोहय इमम्॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ :- आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम। **एषाम्** = इनका। **यज्ञम्** = यजन को। **उत** = ही, भी, ओर (अव्। **वर्चः** = प्रकाश। **ददे** = दिया, दान किया। **अहम्** = मैं । **रायः** = गति, विद्या, वाणी। **पोषम्** = पोषण करने वाले । **उत** = ही, भी, ओर। **चित्तानि** = चित्त या चेतना, ज्ञान। **अग्ने** = हे अग्नि। **सपत्नाः** = प्रकाश-ऐश्वर्यवान्, प्रकाश-रक्षक । **अस्मत्** = हमसे। **अधरे** = अधर, जय, अधारण के लिए। **भवन्तु** = हों, हो जायें। **उत्तमम्** = उत्तम को, श्रेष्ठ-इच्छा, शुभ-इच्छा को। **नाकम्** = नाक, अक रहित, अकुटिल, अविचल। **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार। **रोहय** = बढ़ता हुआ, चढ़ता हुआ। **इमम्** = इसको।**॥ 4 ॥**

पदार्थ :- आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **एषाम्** = इनका (सर्वनाम)। **यज्ञम्** = यजन को (यज - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **वर्चः** = प्रकाश (वर्च - प्रकाशित होना, चमकना)। **ददे** = दिया, दान किया (दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)। **अहम्** = मैं (सर्वनाम)। **रायः** = गति, विद्या, वाणी (रा-देना, लेना, ग्रहण करना, रय् = जाना, जानना, पाना, रै = शब्द करना)। **पोषम्** = पोषण करने वाले (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, पूष - बढ़ना, अधिक होना, पोषण करना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **चित्तानि** = चित्त या चेतना, ज्ञान (चि - चुनना, एकत्र करना, चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, सम्यक् ज्ञान होना, स्मरण करना, शंका करना, सन्देह करना)। **अग्ने** = हे अग्नि (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **सपत्नाः** = प्रकाश-ऐश्वर्यवान्, प्रकाश-रक्षक (स - सहित, साथ, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, पत् = जाना, नीचे जाना, पतन होना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना, सप - पूर्ण ज्ञान होना, पूरा समझना, पूर्णतया जानना, संसक्त होना, संलग्न होना, मिलाप होना)। **अस्मत्** = हमसे (सर्वनाम)। **अधरे** = अधर, जय, अधारण के लिए (अधर् - न्यून करना, जीतना, निम्न गति करना, अ - नहीं, धृ - धारण करना)। **भवन्तु** = हों, हो जायें (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **उत्तमम्** = उत्तम को, श्रेष्ठ-इच्छा, शुभ-इच्छा को (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, तम् - अन्धकार होना, इच्छा करना, चाहना, मानसिक या शारीरिक व्यथा से दुःखित होना)। **नाकम्** = नाक, अक रहित, अकुटिल, अविचल (नक् - नक्क् = नष्ट होना, नष्ट करना, न - नहीं, अक् - जाना, कुटिल गति करना, नश्-नक्क -नाश होना)। **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **रोहय** = बढ़ता हुआ, चढ़ता हुआ (रुह - बढ़ना, ऊपर जाना, चढ़ना, बीज से उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना)। **इमम्** = इसको (सर्वनाम)।**॥ 4 ॥**

10 पाशविमोचन - सूक्त - 4 (10)

46. अयम् देवानाम् असुरः वि राजति वशा हि सत्या वरुणस्य राज्ञः।
ततः परि ब्रह्मणा शाशदानः उग्रस्य मन्योः उत् इमम् नयामि॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ :- अयम् = यह। **देवानाम्** = देवों का। **असुरः** = असुर, प्रकाश देने वाला, ऐश्वर्यहीन, उत्पन्न-सृजन नहीं करने वाला । **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **राजति** = प्रकाशित होता है (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **वशा** = इच्छाएँ (वश् = इच्छा करना, चाहना, चमकना)। **हि** = ही, निश्चय (अव्यय)। **सत्या** = सत्य (सत् = होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना)। **वरुणस्य** = वरुण का (वर - इच्छा करना,

चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **राज्ञः** = प्रकाशित होने वाला। **ततः** = अतः, इसलिए, उससे, उसके अनन्तर। **परि** = सभी तरफ। **ब्रह्मणा** = ब्रह्म द्वारा। **शाशदानः** = बैठा हुआ। **उग्रस्य** = उग्र का। **मन्योः** = विचारणीय। **उत्** = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च। **इमम्** = इसको। **नयामि** = ले जाता हूँ ।**। 1 ।।**

पदार्थ :- अयम् = यह (सर्वनाम)। **देवानाम्** = देवों का (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **असुरः** = असुर, प्रकाश देने वाला, ऐश्वर्यहीन, उत्पन्न-सृजन नहीं करने वाला (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **राजति** = प्रकाशित होता है (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **वशा** = इच्छाएँ (वश् = इच्छा करना, चाहना, चमकना)। **हि** = ही, निश्चय (अव्यय)। **सत्या** = सत्य (सत् = होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना)। **वरुणस्य** = वरुण का (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **राज्ञः** = प्रकाशित होने वाला (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **ततः** = अतः, इसलिए, उससे, उसके अनन्तर (सर्वनाम)। **परि** = सभी तरफ (उपसर्ग)। **ब्रह्मणा** = ब्रह्म द्वारा (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **शाशदानः** = बैठा हुआ (शद्-शी - जीर्ण होना, धीरे-धीरे अल्प होना, मुरझाना, गिरना, जाना, नीचे फेंकना, नीचे गिराना)। **उग्रस्य** = उग्र का (उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना, उग् - उग्र - उग्र होना, तेज होना)। **मन्योः** = विचारणीय (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **उत्** = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)। **इमम्** = इसको (सर्वनाम)। **नयामि** = ले जाता हूँ (नी = ले जाना, नय - जाना, हिलना, पहुँचना, संरक्षण करना)।**। 1 ।।**

47. नमः ते राजन् वरुण अस्तु मन्यवे विश्वम् हि उग्र निचिकेषि द्रुग्धम्।
सहस्रम् अन्यान् प्र सुवामि साकम् शतम् जीवाति शरदः तव अयम्।। 2 ।।

मन्त्रार्थ :- नमः = नमन। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **राजन्** = हे राजन्, प्रकाशित होने वाले। **वरुण** = वरुण । **अस्तु** = हो। **मन्यवे** = मन्यु के लिए, मानते हैं । **विश्वम्** = सबको, सब विश्व को। **हि** = ही, निश्चय। **उग्र** = उग्र, वक्तागण, समूह, सम्बन्धी। **निचिकेषि** = निश्चित जानना समझना। **द्रुग्धम्** = जाना, शीघ्रता से जाने को, द्रुग्ध को। **सहस्रम्** = सहस्र को, बहुतों को । **अन्यान्** = अन्यों को। **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक। **सुवामि** = प्रेरणा देता है । **साकम्** = साथ। **शतम्** = सौ। **जीवाति** = जीवन-यापन करता है। **शरदः** = शरद्। **तव** = तुम्हारा। **अयम्** = यह।**। 2 ।।**

पदार्थ :- नमः = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **राजन्** = हे राजन्, प्रकाशित होने वाले (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **वरुण** = वरुण (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **अस्तु** = हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **मन्यवे** = मन्यु के लिए, मानते हैं (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **विश्वम्** = सबको, सब विश्व को (विश्व - सब कुछ)। **हि** = ही, निश्चय (अव्यय)। **उग्र** = उग्र, वक्तागण, समूह, सम्बन्धी (उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना)। **निचिकेषि** = निश्चित जानना समझना (नि - निश्चित, निरन्तर, कित् - जानना)। । **द्रुग्धम्** = जाना, शीघ्रता से जाने को, द्रुग्ध को (द्रु - जाना, शीघ्रता से जाना, चलना, बहना, प्रवाहित होना)। **सहस्रम्** = सहस्र को, बहुतों को (सहस्र = हजार (संख्या))। **अन्यान्** = अन्यों को (सर्वनाम)। **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **सुवामि** = प्रेरणा देता है (**षू** - प्रेरणा, भेजना, उड़ाना, कार्य में लगाना)। **साकम्** = साथ (अव्यय)। **शतम्** = सौ (सर्वनाम)।

जीवाति = जीवन-यापन करता है (जीव् = जीवन होना, प्राणवान् होना, प्राण धारण करना, जीवन धारण करना)। **शरदः =** शरद् (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, शृ - मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना)। **तव =** तुम्हारा (सर्वनाम)। **अयम् =** यह (सर्वनाम)।। **2** ।।

48. यत् उवक्थ अनृतम् जिह्वा वृजिनम् बहु।
राज्ञः त्वा सत्यधर्मणः मुञ्चामि वरुणात् अहम्।। 3 ।।

मन्त्रार्थ :- यत् = जिसे, जो। **उवक्थ =** बोलने वाला, कहने वाला। **अनृतम् =** अनृत को, ऋतहीन को। **जिह्वा =** जिह्वा। **वृजिनम् =** वृजनों, त्याग, वर्जनाओं को। **बहु =** बहुत। **राज्ञः =** प्रकाशित होने वाला, राजा का। **त्वा =** तुमको, तुम्हें, तुम्हारा। **सत्यधर्मणः =** सत्य धर्म वाले। **मुञ्चामि =** मुक्त करता हूँ, कहता हूँ,। **वरुणात् =** प्रकाशित होने वाला, राजा का। **अहम् =** मैं।। **3** ।।

पदार्थ :- यत् = जिसे, जो (सर्वनाम)। **उवक्थ =** बोलने वाला, कहने वाला (वच् - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)। **अनृतम् =** अनृत को, ऋतहीन को (अन् - नहीं, ऋत - चलना, जाना, फैलाना, संचलन करना, सदाचरण करना)। **जिह्वा =** जिह्वा (जिह = जाना, जानना, पाना)। **वृजिनम् =** वृजनों, त्याग, वर्जनाओं को (वृज् = छोड़ना, त्यागना, वर्जित करना)। **बहु =** बहुत (सर्वनाम)। **राज्ञः =** प्रकाशित होने वाला, राजा का (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **त्वा =** तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **सत्यधर्मणः =** सत्य धर्म वाले (सत् = होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना, धृ = धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना, स्थिर रहना)। **मुञ्चामि =** मुक्त करता हूँ, कहता हूँ, (मुञ्च् = मुक्त करना, त्याग करना, बोलना, कहना, गर्व करना)। **वरुणात् =** प्रकाशित होने वाला, राजा का (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **अहम् =** मैं (सर्वनाम)।। **3** ।।

49. मुञ्चामि त्वा वैश्वानरात् अर्णवात् महतः परि।
सजातान् उग्र इह आ वद ब्रह्म च अप चिकीहि नः।। 4 ।।

मन्त्रार्थ :- मुञ्चामि = मुक्त करता हूँ, कहता हूँ,। **त्वा =** तुमको, तुम्हें, तुम्हारा। **वैश्वानरात् =** विश्वनायक से। **अर्णवात् =** अर्णव, गतिशील, विद्वान्, गति, ज्ञान युक्त, रतिहीन, प्राप्त होने वाले, अहिंसक। **महतः =** महान्। **परि =** सभी तरफ। **सजातान् =** सम्बन्धियों को। **उग्र =** उग्र, वक्तागण, समूह, सम्बन्धी। **इह =** इसमें, यहां, यह। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम। **वद =** बोलो। **ब्रह्म =** ब्रह्म, महान्, बड़ा, बृहत्। **च =** और। **अप =** दूर, नीचे, अपकार। **चिकीहि =** जानो समझो। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा।। **4** ।।

पदार्थ :- मुञ्चामि = मुक्त करता हूँ, कहता हूँ, (मुञ्च् = मुक्त करना, त्याग करना, बोलना, कहना, गर्व करना) **त्वा =** तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **वैश्वानरात् =** विश्वनायक से (विश्व - सब, नृ - चलना, ले जाना, विनय होना)। **अर्णवात् =** अर्णव, गतिशील, विद्वान्, गति, ज्ञान युक्त, रतिहीन, प्राप्त होने वाले, अहिंसक (अर्-ऋ - गति करना, जाना, जानना, पाना, शब्द करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, जाना, जानना, पाना, दुर्गति होना)। **महतः =** महान् (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना)। **परि =** सभी तरफ (उपसर्ग)। **सजातान् =** सम्बन्धियों को (स - साथ, सहित, सज्, संज = सम्बन्धी होना, आलिंगन करना, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **उग्र =** उग्र, वक्तागण, समूह, सम्बन्धी (उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना)। **इह =** इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **वद =** बोलो (वद - कहना, समझाना)। **ब्रह्म =** ब्रह्म, महान्, बड़ा, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **च =** और (अव्यय)। **अप =** दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। **चिकीहि =** जानो समझो (कित् - जानना)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)।। **4** ।।

11 नारी सुखप्रसूति सूक्त - 5 (11)

50. वषट् ते पूषन् अस्मिन् सूतौ अर्यमा होता कृणोतु वेधाः।
सिस्रताम् नारी ऋतप्रजाता वि पर्वाणि जिहताम् सूतवै॥ 1॥

मन्त्रार्थ :- वषट् = वषट्, इच्छा, वास। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **पूषन्** = पोषण करने वाला, पोषणकर्ता। **अस्मिन्** = इस, इसमें। **सूतौ** = उत्पन्नकर्ता, ऐश्वर्यवान्। **अर्यमा** = अर्यमा, ज्ञानी। **होता** = आह्वान्, ग्रहण, दान करने वाले। **कृणोतु** = करो। **वेधाः** = विद्वान्, विधान करने वाले। **सिस्रताम्** = सरकाओ। **नारी** = नारी। **ऋतप्रजाता** = ऋत से उत्पन्न। **वि** = विशेष, विना, विलोम। **पर्वाणि** = पर्व युक्त। **जिहताम्** = जाओ, जानो, प्राप्त करो। **सूतवै** = सुत के लिए, उत्पन्न करने के लिए, गति करने के लिए, ऐश्वर्यवान के लिए।**1॥**

पदार्थ :- वषट् = वषट्, इच्छा, वास (वश् = इच्छा करना, चाहना, चमकना, वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **पूषन्** = पोषण करने वाला, पोषणकर्ता (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, पूष - बढ़ना, अधिक होना, पोषण करना)। **अस्मिन्** = इस, इसमें (सर्वनाम)। **सूतौ** = उत्पन्नकर्ता, ऐश्वर्यवान् (सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना)। **अर्यमा** = अर्यमा, ज्ञानी (ऋ - जाना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना, पहुँचाना, अर्-ऋ - गति करना, जाना, जानना, पाना, शब्द करना)। **होता** = आह्वान्, ग्रहण, दान करने वाले (हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)। **कृणोतु** = करो (कृ = करना)। **वेधाः** = विद्वान्, विधान करने वाले (विध् = विधान करना, वेधना, वेध करना, ताडना करना)। **सिस्रताम्** = सरकाओ (सृ – जाना, सरकना)। **नारी** = नारी (नृ - नम्र होना, विनय होना, कोमल होना, मृदु होना, चलना, ले जाना)। **ऋतप्रजाता** = ऋत से उत्पन्न (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना, धा = धारण करना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **पर्वाणि** = पर्व युक्त (पर्व् - पूर्ण करना, पूरा करना, भरना, विभाग करना)। **जिहताम्** = जाओ, जानो, प्राप्त करो (जिह् - जाना, चलना, जानना, पाना)। **सूतवै** = सुत के लिए, उत्पन्न करने के लिए, गति करने के लिए, ऐश्वर्यवान के लिए (सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना)।**1॥**

51. चतस्रो दिवः प्रदिशः चतस्रः भूम्याः उत।
देवाः गर्भम् सम् ऐरयन् तम् वि ऊर्णुवन्तु सूतवे॥ 2॥

मन्त्रार्थ :- चतस्रो = चार। **दिवः** = दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय। **प्रदिशः** = प्रदिश, दिशा। **चतस्रः** = चार। **भूम्याः** = भूमि का, भूम्य, उत्पन्न योग्य। **उत** = विशेष, विना, विलोम। **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने। **गर्भम्** = गर्भ। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति। **ऐरयन्** = प्रगति, विद्या, प्राप्ति, प्रेरणा करते हुए। **तम्** = उसको, उसे। **वि** = विशेष, विना, विलोम। **ऊर्णुवन्तु** = आवरण-आच्छादन करते हैं। **सूतवे** = सुत के लिए, उत्पन्न करने के लिए, गति करने के लिए, ऐश्वर्यवान के लिए।**2॥**

पदार्थ :- चतस्रो = चार (संख्या) **दिवः** = दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)। **प्रदिशः** = प्रदिश, दिशा (प्र - प्रकृष्ट, दिश् - दिखाना, दिखाना, समझाना, कहना, देना)।। **चतस्रः** = चार (संख्या)। **भूम्याः** = भूमि का, भूम्य, उत्पन्न योग्य (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **उत** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **गर्भम्** = गर्भ (गृह् - ग्रहण करना, लेना, गृ = सींचना, गीला करना, घर्षण करना, जानना, समझना, खाना, निगलना, शब्द करना, गल्भ् - जाना, जानना, पाना, ज्ञान होना, चतुर होना, साहस होना, धैर्य रखना, गृभ्-गर्भ् - अन्दर होना, अन्तःवास करना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **ऐरयन्** = प्रगति, विद्या, प्राप्ति, प्रेरणा करते

हुए (इर् - ईर्ष्या करना, ऋ-इर्य - जाना, चलना, फैलाना, ईर - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **ऊर्णुवन्तु** = आवरण-आच्छादन करते हैं (ऊर्ण = बुनना, आच्छादन करना, ढकना)। **सूतवे** = सुत के लिए, उत्पन्न करने के लिए, गति करने के लिए, ऐश्वर्यवान के लिए (सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना)।**। 2 ।।**

52. सूषा वि ऊर्णोतु वि योनिम् हापयामसि।
श्रथय सूषणे त्वम् अव त्वम् विष्कले सृज।। 3 ।।

मन्त्रार्थ :- सूषा = सूषा, उत्पन्नकर्ता। **वि** = विशेष, विना, विलोम। **ऊर्णोतु** = आवरण-आच्छादन युक्त। **वि** = विशेष, विना, विलोम। **योनिम्** = योनि को, बन्धन, मिलन को, सम्बन्ध को। **हापयामसि** = जाते हो, गति करते हो। **श्रथय** = मुक्त करो, प्रयत्न करो, प्रगति करो। **सूषणे** = सूषा, उत्पन्नकर्ता के लिए। **त्वम्** = तुम। **अव** = नीचे, दूर, प्राप्त। **त्वम्** = तुम । **विष्कले** = व्यापक गति के लिए। **सृज** = सृजन करो।**। 3 ।।**

पदार्थ :- सूषा = सूषा, उत्पन्नकर्ता (सूष-सुस = उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **ऊर्णोतु** = आवरण-आच्छादन युक्त (ऊर्ण = बुनना, आच्छादन करना, ढकना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **योनिम्** = योनि को, बन्धन, मिलन को, सम्बन्ध को (युन्-यु - बांधना, बन्धन करना, गूंथना। यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, संयोग-वियोग करना)। **हापयामसि** = जाते हो, गति करते हो (हा - त्याग करना, चलना, जाना)। **श्रथय** = मुक्त करो, प्रयत्न करो, प्रगति करो (श्रथ - प्रयत्न करना, जाना, मुक्त करना, छोड़ना, मारना, पीड़ा देना, बन्धन करना, निर्बल होना, शक्तिहीन होना)। **सूषणे** = सूषा, उत्पन्नकर्ता के लिए (सूष-सुस = उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना)। **त्वम्** = तुम (सर्वनाम)। **अव** = नीचे, दूर, प्राप्त (अव्यय)। **त्वम्** = तुम (सर्वनाम)। **विष्कले** = व्यापक गति के लिए (विष्ण-विष् -विविष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना, व्यापना, फैलना, प्रसृत होना, कल - गणना, करना, गिनना, गति करना, शब्द करना, स्वाद लेना, धारण-घर्षण-मन्थन करना, भेदना, छेदन करना)। **सृज** = सृजन करो (सृज् - छोड़ना, त्याग करना, विविध रूप से उत्पन्न करना, रचना करना)।**। 3 ।।**

53. न-इव मांसे न पीवसि न-इव मज्जसु आहतम्।
अव एतु पृश्नि शेवलम् शुने जरायु अत्तवे अव जरायु पद्यताम्।। 4 ।।

मन्त्रार्थ :- न-इव = नहीं। **मांसे** = मांस को। **न** = नहीं, समान, उपमार्थक। **पीवसि** = सेवा करने वाला, सिंचन करने वाला, बीज बोने वाला, प्रकाश करने वाला। **न-इव** = नहीं। **मज्जसु** = मज्ज के लिए, शुद्धि के लिए। **आहतम्** = व्याप्त किया, कहा। **अव** = नीचे, दूर, प्राप्त । **एतु** = प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे । **पृश्नि** = प्रश्नकर्ता । **शेवलम्** = शेवधि को, सिञ्चन-सेवा को। **शुने** = प्रगतिशील, विद्वान्। **जरायु** = जीर्ण, वृद्ध या परिपक्व आयु वाले। **अत्तवे** = अतिशय गमनशील के लिए, जानने वाले के लिए। **अव** = नीचे, दूर, प्राप्त। **जरायु** = जीर्ण, वृद्ध या परिपक्व आयु वाले । **पद्यताम्** = चलता हूँ, जाता हूँ, जानता हूँ **।। 4 ।।**

पदार्थ :- न-इव = नहीं (अव्यय)। **मांसे** = मांस को (मस् = रूपान्तरण करना, मापन करना, मापना)। **न** = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **पीवसि** = सेवा करने वाला, सिंचन करने वाला, बीज बोने वाला, प्रकाश करने वाला (पिव् - सेवा करना, सिंचन करना, बीज बोना, प्रकाश करना, पीव - पुष्ट होना, मोटा होना, पी-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)। **न-इव** = नहीं (अव्यय)। **मज्जसु** = मज्ज के लिए, शुद्धि के लिए (मज्ज - शुद्ध करना, स्नान करना)। **आहतम्** = व्याप्त किया, कहा (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, अह - फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, ह्वे = शब्द करना)। **अव** = नीचे, दूर, प्राप्त (अव्यय)। **एतु** = प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना, इच्छा करना, प्रेरणा करना, ए - जाना, फैलना, व्यापना, गर्भवती होना, इच्छा करना, चाहना, खाना, उड़ाना, फेंकना, भेजना, प्रेरणा करना)। **पृश्नि** = प्रश्नकर्ता (पृश् - पृच्छ - पूछना, जानने की इच्छा करना, प्रश्न करना, पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सहन करना)। **शेवलम्** = शेवधि को, सिञ्चन-सेवा को (शेव - सेचन, घर्षण, सेवा करना, सभा में होना, पवित्र होना, जाना)। **शुने** = प्रगतिशील, विद्वान् (शुन

= जाना, जानना, पाना)। **जरायु =** जीर्ण, वृद्ध या परिपक्व आयु वाले (जृ - वृद्ध होना, जीर्ण होना, अय - जाना, जानना, पाना)। **अत्तवे =** अतिशय गमनशील के लिए, जानने वाले के लिए (अत् = जाना, सतत गति करना, जानना, पाना)। **अव =** नीचे, दूर, प्राप्त (अव्यय)। **जरायु =** जीर्ण, वृद्ध या परिपक्व आयु वाले (जृ - वृद्ध होना, जीर्ण होना, अय - जाना, जानना, पाना)। **पद्यताम् =** चलता हूँ, जाता हूँ, जानता हूँ (पद् - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना) **॥ 4 ॥**

54. वि ते भिनद्मि मेहनम् वि योनिम् वि गवीनिके।
वि मातरम् च पुत्रम् च वि कुमारम् जरायुणा ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ :- वि = विशेष, विना, विलोम। **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **भिनद्मि =** भेदन करने वाले। **मेहनम् =** सिञ्चन करने वाले। **वि =** विशेष, विना, विलोम। **योनिम् =** योनि को, बन्धन, मिलन को, सम्बन्ध को। **वि =** विशेष, विना, विलोम। **गवीनिके =** वाणी, ज्ञान के लिए। **वि =** विशेष, विना, विलोम। **मातरम् =** माता को। **च =** और। **पुत्रम् =** पुत्र को। **च =** और। **वि =** विशेष, विना, विलोम। **कुमारम् =** कुमार को, बालक को, चाहने वाले को, इच्छाओं को। **जरायुणा =** जीर्ण, वृद्ध, वर्धित, परिपक्व आयु द्वारा। **॥ 5 ॥**

पदार्थ :- वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **भिनद्मि =** भेदन करने वाले (भिद्-भिन्द् - भेदना, भेदन करना, भाग करना)। **मेहनम् =** सिञ्चन करने वाले (मिह् - सिञ्चन करना, घर्षण करना, दबाना)। **वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **योनिम् =** योनि को, बन्धन, मिलन को, सम्बन्ध को (युन्-यु - बांधना, बन्धन करना, गूंथना। यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, संयोग-वियोग करना)। **वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **गवीनिके =** वाणी, ज्ञान के लिए (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, गम् = जाना, जानना, पाना)। **वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **मातरम् =** माता को (मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना)। **च =** और (अव्यय)। **पुत्रम् =** पुत्र को (पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)। **च =** और (अव्यय)। **वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **कुमारम् =** कुमार को, बालक को, चाहने वाले को, इच्छाओं को (कुमार - खेलना, बालक के समान क्रीडा करना, कुम् = चाहना, इच्छा करना)। **जरायुणा =** जीर्ण, वृद्ध, वर्धित, परिपक्व आयु द्वारा (जृ - वृद्ध होना, जीर्ण होना, अय - जाना, जानना, पाना)। **॥ 5 ॥**

55. यथा वातो यथा मनो, यथा पतन्ति पक्षिणः।
एव आ त्वम् दशमास्य साकम्, जरायुणा पत अव जरायु पद्यताम् ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ :- यथा = जिससे, जैसे, जिस प्रकार। **वातो =** वात। **यथा =** जिससे, जैसे, जिस प्रकार। **मनो =** मन। **यथा =** जिससे, जैसे, जिस प्रकार। **पतन्ति =** गिरते हैं, उड़ते हैं। **पक्षिणः =** पक्षयुक्त। **एव =** ही। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम। **त्वम् =** तुम। **दशमास्य =** दश मासो को। **साकम् =** साथ। **जरायुणा =** जीर्ण, वृद्ध, वर्धित, परिपक्व आयु द्वारा। **पत =** ऐश्वर्य। **अव =** नीचे, दूर, प्राप्त। **जरायु =** जीर्ण, वृद्ध या परिपक्व आयु वाले। **पद्यताम् =** पथ को, मार्ग को **॥ 6 ॥**

पदार्थ :- यथा = जिससे, जैसे, जिस प्रकार। **वातो =** वात (वात - सुखी होना, आनन्द करना, सेवा करना, जाना, वा - गति करना, बहना, पवन की भाँति चलना)। **यथा =** जिससे, जैसे, जिस प्रकार। **मनो =** मन (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **यथा =** जिससे, जैसे, जिस प्रकार। **पतन्ति =** गिरते हैं, उड़ते हैं (पत् = जाना, उड़ना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **पक्षिणः =** पक्षयुक्त (पक्ष् - पक्ष होना, पक्ष लेना, किसी एक पक्ष को ग्रहण करना, विभाग करना, ग्रहण करना, स्वीकार करना)। **एव =** ही (अव्यय)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **त्वम् =** तुम (सर्वनाम)। **दशमास्य =** दश मासो को (दश = दश, दस, संख्या, मा = मान करना, मापना, मस् = रूपान्तरण करना, मापन करना, मापना)। **साकम् =** साथ (अव्यय)। **जरायुणा =** जीर्ण, वृद्ध, वर्धित, परिपक्व आयु द्वारा (जृ - वृद्ध होना, जीर्ण होना, अय - जाना, जानना, पाना)। **पत =** ऐश्वर्य (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **अव =** नीचे,

दूर, प्राप्त (अव्यय)। **जरायु =** जीर्ण, वृद्ध या परिपक्व आयु वाले (जृ - वृद्ध होना, जीर्ण होना, अय - जाना, जानना, पाना)। **पद्यताम् =** पथ को, मार्ग को (पद् - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना) **॥ 6 ॥**

(3) अनुवाक - 3

12 यक्ष्मानाशन सूक्त - 1 (12)

56. जरायुजः प्रथमः उस्रियः वृषा वातभ्रजाः स्तनयन् एति वृष्ट्या।
स नो मृडाति तन्वे ऋजुगः रुजन् यः एकम् ओजः त्रेधा विचक्रमे ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ :- जरायुजः = जरायुज, जरायु से उत्पन्न **प्रथमः =** प्रथम, पहला, विस्तार **उस्रियः =** उस्रिय, प्रभातकर्ता को, तपाने वाले को **वृषा =** पराक्रमी **वातभ्रजाः =** वात-भ्रज **स्तनयन् =** गर्जन करते हुए **एति =** जाता है, प्राप्त होता है, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करता है **वृष्ट्या =** उच्च पराक्रम द्वारा **स =** वह, उसने **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा **मृडाति =** सुखी करें, सुख दें **तन्वे =** तन्व में, विस्तार के लिए **ऋजुगः =** ऋजुगामी **रुजन् =** हिंसा करते हुए, रुग्ण करते हुए **यः =** जो **एकम् =** एक को **ओजः =** ओज **त्रेधा =** तीन प्रकार से **विचक्रमे =** रचना की **॥ 1 ॥**

पदार्थ :- जरायुजः = जरायुज, जरायु से उत्पन्न (जृ - वृद्ध होना, जीर्ण होना, अय - जाना, जानना, पाना, जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **प्रथमः =** प्रथम, पहला, विस्तार (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)। **उस्रियः =** उस्रिय, प्रभातकर्ता को, तपाने वाले को (उषस् - प्रभात होना, उष - जलना, हिंसा करना, रोग होना)। **वृषा =** पराक्रमी (वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना या पीड़ा करना, दुःख देना, पीड़ित करना)। **वातभ्रजाः =** वात-भ्रज (वात - सुखी होना, आनन्द करना, सेवा करना, जाना, वा - गति करना, बहना, पवन की भाँति चलना, भृ - भरण-पोषण, धारण करना, भृज् - भूँजना, तलना, सेंकना)। **स्तनयन् =** गर्जन करते हुए (स्तन - मेघ की गर्जना होना, शब्द करना, ध्वनि करना)। **एति =** जाता है, प्राप्त होता है, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करता है (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना, इच्छा करना, प्रेरणा करना)। **वृष्ट्या =** उच्च पराक्रम द्वारा (वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना या पीड़ा करना, दुःख देना, पीड़ित करना)। **स =** वह, उसने (सर्वनाम)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **मृडाति =** सुखी करें, सुख दें (मृड - सुखी होना, सुख देना)। **तन्वे =** तन्व में, विस्तार के लिए (तन् = विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना)। **ऋजुगः =** ऋजुगामी (ऋज - जाना, खड़ा रहना, स्थिर होना, बलिष्ठ होना, सामर्थ्यवान् होना, जीना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना, गम्-गच्छ् = जाना)। **रुजन् =** हिंसा करते हुए, रुग्ण करते हुए (रुज् - हिंसा करना, रोग होना, कष्ट होना, टूटना)। **यः =** जो (सर्वनाम)। **एकम् =** एक को (संख्या)। **ओजः =** ओज (ओज - शक्तिमान् होना, जीवित होना, बढ़ना)। **त्रेधा =** तीन प्रकार से (त्रि = तीन, संख्या, सर्वनाम)। **विचक्रमे =** रचना की (वि = विशेष, कृ -करना, चक-तृप्त होना, सन्तुष्ट होना) **॥ 1 ॥**

57. अङ्गे अङ्गे शोचिषा शिश्रियाणम्, नमस्यन्तः त्वा हविषा विधेम।
अङ्कान् समङ्कान् हविषा विधेम, यो अग्रभीत् पर्व अस्य ग्रभीता ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ :- अङ्गे = अंग में, प्रगतिशील, विद्वान् में। **अङ्गे =** अंग में, प्रगतिशील, विद्वान् में। **शोचिषा =** शोचमान द्वारा, शुद्ध, पवित्र द्वारा। **शिश्रियाणम् =** सेवा करने वाले, आश्रय देने वाले को। **नमस्यन्तः =** नमस्कार करो । **त्वा =** तुमको, तुम्हें, तुम्हारा । **हविषा =** हविष् द्वारा, दान व आदान-प्रदान द्वारा। **विधेम =** विधान करें, विशेष रूप से धारण करें । **अङ्कान् =** गणना, अंक, गोद । **समङ्कान् =** सम्यक् गणना। **हविषा =** हविष् द्वारा, दान व आदान-प्रदान द्वारा। **विधेम =** विधान करें, विशेष रूप से धारण करें । **यो =** जो। **अग्रभीत् =** गर्भ हुआ, ग्रहण किया, अग्रभ को। **पर्व =** पर्व । **अस्य =** इसका। **ग्रभीता =** ग्रहण किया **॥ 2 ॥**

पदार्थ :- अङ्गे = अंग में, प्रगतिशील, विद्वान् में (अंग् = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)। **अङ्गे =** अंग में, प्रगतिशील, विद्वान् में (अंग् = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)। **शोचिषा =** शोचमान द्वारा, शुद्ध, पवित्र द्वारा (शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना, शुद्ध - पवित्र करना, दुःख मानना, शोक करना)। **शिश्रियाणम् =** सेवा करने वाले, आश्रय देने वाले को (श्री = सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना)। **नमस्यन्तः =** नमस्कार करो (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना, ते - तुम्हारे लिए, तुमको)। **त्वा =** तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **हविषा =** हविष् द्वारा, दान व आदान-प्रदान द्वारा (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **विधेम =** विधान करें, विशेष रूप से धारण करें (वि - विशेष। विध् - विधान करना, वेधना, वेध करना, ताडना करना। धा = धारण, पोषण, रक्षण, दान करना)।। **अङ्कान् =** गणना, अंक, गोद (अंक् = गिनना, जाना, चिह्न लगाना, परिचय करना, गोद में लेना)। **समङ्कान् =** सम्यक् गणना (सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति,अंक् = गिनना, जाना, चिह्न लगाना, परिचय करना, गोद में लेना)। **हविषा =** हविष् द्वारा, दान व आदान-प्रदान द्वारा (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **विधेम =** विधान करें, विशेष रूप से धारण करें (वि - विशेष। विध् - विधान करना, वेधना, वेध करना, ताडना करना। धा = धारण, पोषण, रक्षण, दान करना)। **यो =** जो। **अग्रभीत् =** गर्भ हुआ, ग्रहण किया, अग्रभ को (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, गृ = सींचना, जानना, समझना, खाना, निगलना, शब्द करना, गृह् - गृभ्- गर्भ् - अन्तःवास करना, ग्रहण लेना, लेना, स्वीकार करना, अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **पर्व =** पर्व (पर्व् - पूर्ण करना, पूरा करना, भरना, विभाग करना)। **अस्य =** इसका (सर्वनाम)। **ग्रभीता =** ग्रहण किया (गृ = सींचना, जानना, समझना, खाना, निगलना, शब्द करना, गृह् - गृभ्-गर्भ् - अन्तःवास करना, ग्रहण लेना, लेना, स्वीकार करना, अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **॥ 2 ॥**

58. मुञ्च शीर्षक्त्याः उत कासः एनम्, परुः-परुः आ-विवेशा यो अस्य। यो अभ्रजा वातजा यः च शुष्मो, वनस्पतीन् सचताम् पर्वतान् च॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ :- मुञ्च = मुक्त करें। **शीर्षक्त्याः =** शीर्ष, शिर सम्बन्धी। **उत =** ही, भी, ओर। **कासः =** प्रकाशक को । **एनम् =** इसको, इसे। **परुः-परुः =** परु, रक्षक। **आ-विवेशा =** सम्यक् प्रवेश करो। **यो =** जो। **अस्य =** इसका । **यो =** जो। **अभ्रजा =** प्रकाशित किया। **वातजा =** वात, वायु के समान तीव्र गति वाले। **यः =** जो । **च =** और । **शुष्मो =** सुखाने वाला । **वनस्पतीन् =** वनस्पतियों को । **सचताम् =** अभिसिञ्चन करें, सींचे । **पर्वतान् =** पर्वतों को । **च =** और ॥ **3** ॥

पदार्थ :- मुञ्च = मुक्त करें (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **शीर्षक्त्याः =** शीर्ष, शिर सम्बन्धी (शीर्ष = शीर्ष होना, मुख्य होना, उच्च होना)। **उत =** ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **कासः =** प्रकाशक को (कास् = प्रकाश करना)। **एनम् =** इसको, इसे (सर्वनाम)। **परुः-परुः =** परु, रक्षक (पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना)। **आ-विवेशा =** सम्यक् प्रवेश करो (आ- समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, वि - विशेष, विश् - प्रवेश करना, अन्तर्गमन करना, सूचना करना, प्रेरणा करना)। **यो =** जो (सर्वनाम)। **अस्य =** इसका (सर्वनाम)। **यो =** जो (सर्वनाम)। **अभ्रजा =** प्रकाशित किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, भृज् - भूँजना, तलना, सेंकना, चमकना, तेज होना, जानना)। **वातजा =** वात, वायु के समान तीव्र गति वाले (वात - सुखी होना, आनन्द करना, सेवा करना, जाना, वा - गति करना, बहना, पवन की भाँति चलना)। **यः =** जो (सर्वनाम)। **च =** और (अव्यय)। **शुष्मो =** सुखाने वाला (शुष् - सुखाना)। **वनस्पतीन् =** वनस्पतियों को (वन - शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, आपद्ग्रस्त होना, अलग करना, मिलाना, स्मरण करना, बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, याचना करना, मांगना, दुःख देना, उद्योग-धन्धा करना, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **सचताम् =** अभिसिञ्चन करें, सींचे (सच् = सिञ्चन करना, सेवा करना, सन्तुष्ट करना, जानना, पूर्णतया समझना, सम्बन्धी होना)। **पर्वतान् =** पर्वतों को (पर्व् - पूर्ण करना, पूरा करना, भरना, विभाग करना)। **च =** और (अव्यय)।। **3** ॥

59. शम् मे परस्मै गात्राय शम् अस्तु अवराय मे।
शम् मे चतुभ्यः अङ्गेभ्यः शमस्तु तन्वे मम॥ 4॥

मन्त्रार्थ :- शम् = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी। **मे** = मेरा, मेरे लिए । **परस्मै** = पर से, अन्य से। **गात्राय** = स्तुति, गान, गायन करने के लिए। **शम्** = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी। **अस्तु** = हो । **अवराय** = अवरों के लिए, अवरणीयों के लिए, रक्षकों के लिए । **मे** = मेरा, मेरे लिए । **शम्** = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी। **मे** = मेरा, मेरे लिए। **चतुभ्यः** = चार के लिए। **अङ्गेभ्यः** = अंग के लिए, प्रगतिशील के लिए, विद्वान्के लिए। **शमस्तु** = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी हो। **तन्वे** = तन्व में, विस्तार के लिए । **मम** = मेरा॥ **4॥**

पदार्थ :- शम् = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी (शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)। **मे** = मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **परस्मै** = पर से, अन्य से (सर्वनाम)। **गात्राय** = स्तुति, गान, गायन करने के लिए (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गम् - जाना, जानना, पाना)। **शम्** = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी (शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)। **अस्तु** = हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **अवराय** = अवरों के लिए, अवरणीयों के लिए, रक्षकों के लिए (अ - नहीं, वृ-वर्-वरण करना, इच्छा करना, आशा करना, अवर - नीचे, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)। **मे** = मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **शम्** = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी (शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)। **मे** = मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **चतुभ्यः** = चार के लिए (संख्या)। **अङ्गेभ्यः** = अंग के लिए, प्रगतिशील के लिए, विद्वान्के लिए (अंग् = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)। **शमस्तु** = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी हो (शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)। **तन्वे** = तन्व में, विस्तार के लिए (तन् = विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना)। **मम** = मेरा (सर्वनाम)॥ **4॥**

13 विद्युत् सूक्त - 2 (13)

60. नमः ते अस्तु विद्युते नमः ते स्तनयित्नवे।
नमः ते अस्तु अश्मने येन दुः-दाशे अस्यसि॥ 1॥

मन्त्रार्थ :- नमः = नमन । **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **अस्तु** = हो। **विद्युते** = विद्युत में, विद्युत् के लिए। **नमः** = नमन। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **स्तनयित्नवे** = हे गर्जनयुक्त। **नमः** = नमन। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **अस्तु** = हो। **अश्मने** = व्याप्त, व्यापक, प्राप्त के लिए। **येन** = जिससे, जिसके द्वारा। **दुः-दाशे** = अति दुखदायी, बहुत दुख देने वाला। **अस्यसि** = फेंकते हो ॥ **1॥**

पदार्थ :- नमः = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **अस्तु** = हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **विद्युते** = विद्युत में, विद्युत् के लिए (वि - विशेष। द्युत् -दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना)। **नमः** = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **स्तनयित्नवे** = हे गर्जनयुक्त (स्तन - मेघ की गर्जना होना, शब्द करना, ध्वनि करना)। **नमः** = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **अस्तु** = हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **अश्मने** = व्याप्त, व्यापक, प्राप्त के लिए (अश् = भोजन करना, व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना)। **येन** = जिससे, जिसके द्वारा (सर्वनाम)। **दुः-दाशे** = अति दुखदायी, बहुत दुख देने वाला(दुः = बुरा, अनुचित, कठिन (उपसर्ग) दाश् – देना, मार डालना, दुःख देना)। **अस्यसि** = फेंकते हो (अस् - फेंकना, बिखेरना, उड़ाना, होना, रहना, जाना, लेना,

चमकाना।) **। 1 ।।**

61. नमः ते प्र-वतः नपात् यत तपः सम्-ऊहसि।
मृडय नः तनूभ्यः मयः तोकेभ्यः कृधि।। 2 ।।

मन्त्रार्थ :- नमः = नमन। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **प्र-वतः** = प्रवदा, प्रवक्ता, प्रकृष्ट बोलने वाला। **नपात्** = प्राप्त किया। **यत** = जिससे। **तपः** = तप। **सम-ऊहसि** = सम्यक् ऊहन करते हो, सम्यक् तर्क करते हो। **मृडय** = सुखी करो। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा। **तनूभ्यः** = विस्तार, शरीर के लिए। **मयः** = गति, ज्ञान। **तोकेभ्यः** = तोक, गति, वृद्धि, हिंसा, बल, दान, निवास के लिए । **कृधि** = करो।। **2 ।।**

पदार्थ :- नमः = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **प्र-वतः** = प्रवदा, प्रवक्ता, प्रकृष्ट बोलने वाला (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, वद - कहना, समझाना)। **नपात्** = प्राप्त किया (नप - पहुंचना, जानना, पाना, शब्द करना, झंकार करना, चमकना, न - नहीं, पा - पालन करना, रक्षा करना, पत् - ऐश्वर्य होना, गिरना)। **यत** = जिससे (सर्वनाम)। **तपः** = तप (तप - ऐश्वर्य होना, तपना, दाह होना, तप करना, तप्त होना, तप्त करना, जलना, जलाना, तृषा होना)। **सम-ऊहसि** = सम्यक् ऊहन करते हो, सम्यक् तर्क करते हो (सम् = सम्यक्, भलीभांति, ऊह् = परिकल्पना करना, तर्क करना)। **मृडय** = सुखी करो (मृड - सुखी होना, सुख देना)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **तनूभ्यः** = विस्तार, शरीर के लिए (तन् = विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना)। **मयः** = गति, ज्ञान (मय् - जाना, जानना, पाना)। **तोकेभ्यः** = तोक, गति, वृद्धि, हिंसा, बल, दान, निवास के लिए (तु - गति, वृद्धि, हिंसा करना, तुज् - बल होना, दान करना, निवास करना, ग्रहण करना, चमकना)। **कृधि** = करो (कृ = करना)।। **2 ।।**

62. प्र-वतः नपात् नमः एव अस्तु तुभ्यम् नमः ते हेतये तपुषे च कृण्मः।
विद्म ते धाम परमम् गुहा यत् समुद्रे अन्तः नि-हिता असि नाभिः।। 3 ।।

मन्त्रार्थ :- प्र-वतः = प्रवदा, प्रवक्ता, प्रकृष्ट बोलने वाला। **नपात्** = प्राप्त किया। **नमः** = नमन। **एव** = ही । **अस्तु** = हो। **तुभ्यम्** = तुम्हारे लिए । **नमः** = नमन। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **हेतये** = हेता, गति, ज्ञान, प्राप्ति, वृद्धि, प्रेरणादाता के लिए । **तपुषे** = तप के लिए **। च** = और। **कृण्मः** = करते हैं। **विद्म** = विद्म, जानने वाले **। ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **धाम** = धारण करने योग्य। **परमम्** = परम, अत्यन्त, उच्चतम, प्रमुखतम। **गुहा** = गुह्य, गुहा। **यत्** = जिसे, जो। **समुद्रे** = समुद्र में। **अन्तः** = बीच में, भीतर। **नि-हिता** = निहित, स्थित। **असि** = हो। **नाभिः** = नाभि।। **3 ।।**

पदार्थ :- प्र-वतः = प्रवदा, प्रवक्ता, प्रकृष्ट बोलने वाला (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, वद - कहना, समझाना)। **नपात्** = प्राप्त किया (नप - पहुंचना, जानना, पाना, शब्द करना, झंकार करना, चमकना, न - नहीं, पा - पालन करना, रक्षा करना, पत् - ऐश्वर्य होना, गिरना)। **नमः** = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **एव** = ही (अव्यय)। **अस्तु** = हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **तुभ्यम्** = तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **नमः** = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **हेतये** = हेता, गति, ज्ञान, प्राप्ति, वृद्धि, प्रेरणादाता के लिए (हि - गति, वृद्धि, प्रेरणा करना, जाना, जानना, पाना)। **तपुषे** = तप के लिए (तप - ऐश्वर्य होना, तपना, दाह होना, तप करना, तप्त होना, तप्त करना, जलना, जलाना, तृषा होना) **। च** = और (अव्यय)। **कृण्मः** = करते हैं (कृ = करना)। **विद्म** = विद्म, जानने वाले (विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना, विद्यमान होना, विचार करना) **। ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **धाम** = धारण करने योग्य (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)। **परमम्** = परम, अत्यन्त, उच्चतम, प्रमुखतम (सर्वनाम)। **गुहा** = गुह्य, गुहा (गुह् - आच्छादन करना, छिपाना, ढकना, गति करना, जाना, जानना, हिंसा करना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **समुद्रे** = समुद्र में (सम् = सम्यक्, भलीभांति। उन्द - आर्द्र होना, गीला होना)। **अन्तः** = बीच में, भीतर (उपसर्ग, सर्वनाम)। **नि-हिता** = निहित, स्थित (नि - निरन्तर, निश्चित, हि - जाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना)। **असि** = हो (अस् - होना)। **नाभिः** = नाभि

(नभ - नष्ट होना, दुःख देना या मार डालना, हिंसा करना, मध्य में स्थित होना, केन्द्र होना)।। **3 ।।**

63. याम् त्वा देवाः असृजन्त विश्वे इषुम् कृण्वानाः असनाय धृष्णुम्।
सा नो मृड विदथे गृणाना तस्यै ते नमः अस्तु देवि।। 4 ।।

मन्त्रार्थ :- याम् = जिसको। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा। **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने । **असृजन्त** = सृजन किया। **विश्वे** = सभी । **इषुम्** = विद्या, इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि को । **कृण्वानाः** = करने वाला, करते हुए **असनाय** = चमकने के लिये, फेंकने के लिये । **धृष्णुम्** = विजय, गर्व को । **सा** = वह। **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा । **मृड** = सुख। **विदथे** = विदथ में । **गृणाना** = वाणी, बोध, अभिसिंचन करने वाले। **तस्यै** = उसके लिए। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए । **नमः** = नमन। **अस्तु** = हो । **देवि** = देवी, तेजस्विनी ।। **4 ।।**

पदार्थ :- याम् = जिसको (सर्वनाम)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **असृजन्त** = सृजन किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, सृज्- सृजन करना, रचना करना, बनाना, विविध रूप से उत्पादन करना)। **विश्वे** = सभी (सर्वनाम)। **इषुम्** = विद्या, इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि को (इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना)। **कृण्वानाः** = करने वाला, करते हुए (कृ = करना)। **असनाय** = चमकने के लिये, फेंकने के लिये (अस् - होना, **अस्** - फेंकना, बिखेरना, उड़ाना, चमकना, प्रकाश करना।)। **धृष्णुम्** = विजय, गर्व को (धृष् = जीतना, गर्व करना, धृष्टता करना, अभिमान करना, स्वयम् को बड़ा समझना, चतुरता दिखाना, वञ्चना करना)। **सा** = वह (सर्वनाम)। **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **मृड** = सुख (मृड - सुखी होना, सुख देना)। **विदथे** = विदथ में (विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)। **गृणाना** = वाणी, बोध, अभिसिंचन करने वाले (गृ-गृण् = शब्द करना, सिञ्चन करना, घर्षण करना, जानना, समझना, निगलना, बहिर्गमन करना, गृ - शब्द करना, गा-गै = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना)। **तस्यै** = उसके लिए (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **नमः** = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **अस्तु** = हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **देवि** = देवी, तेजस्विनी (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)।। **4 ।।**

14 कुलपाकन्या सूक्त - 3 (14)

64. भगम् अस्याः वर्चः आ अदिषि, अधि वृक्षात्-इव स्रजम्।
महाबुध्न इव पर्वतो, ज्योक् पितृष्वास्ताम्।। 1 ।।

मन्त्रार्थ :- भगम् = भग को, सेवा को । **अस्याः** = इसका। **वर्चः** = प्रकाश। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम । **अदिषि** = अक्षय, अविनाशी। **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार। **वृक्षात्-इव** = वृक्ष के समान। **स्रजम्** = सृजनों को, सृजनकर्ताओं को। **महाबुध्न** = महान् विद्वान्। **इव** = समान, की भाँति, के समान। **पर्वतो,** = पर्वत, पर्वतों। **ज्योक्** = ज्योक्, सुदीर्घ, चिरकालीन, निरन्तर। **पितृष्वास्ताम्** = पितृत्व को, पालन-रक्षणीयता को, गतिशीलता को।। **1 ।।**

पदार्थ :- भगम् = भग को, सेवा को (भग्-भज् = सेवा करना, सेवन करना, सेवित होना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)।। **अस्याः** = इसका (सर्वनाम)। **वर्चः** = प्रकाश (वर्च - प्रकाशित होना, चमकना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **अदिषि** = अक्षय, अविनाशी (अ - नहीं (उपसर्ग), अद् = खाना, दी = नष्ट होना)। **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **वृक्षात्-इव** = वृक्ष के समान (वृक्ष - वरण करना, आच्छादन करना)। **स्रजम्** = सृजनों को, सृजनकर्ताओं को (सृज - छोड़ना, त्याग करना, विविध रूप से उत्पन्न करना, बनाना, रचना करना)। **महाबुध्न** = महान् विद्वान् (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, बुध् - बोध होना,

बोध करना, जानना, समझना)। **इव** = समान, की भाँति, के समान (अव्यय)। **पर्वतो,** = पर्वत, पर्वतों (पर्व् - पूर्ण करना, पूरा करना, भरना, विभाग करना)। **ज्योक्** = ज्योक्, सुदीर्घ, चिरकालीन, निरन्तर (ज्यु = गति होना। ज्या - जीर्ण होना, पुराना होना, वृद्ध होना, बर्द्धित होना, बड़ा होना, जि - जय होना, जीतना)। **पितृष्वास्ताम्** = पितृत्व को, पालन-रक्षणीयता को, गतिशीलता को (पा - रक्षा करना, पालन करना, पि-जाना, स्थानान्तर करना)।। **1** ।।

65. एषा ते राजन् कन्या वधूः नि धूयताम् यम।
सा मातुः बध्यताम् गृहे, अथो भ्रातुः अथो पितुः ।। 2 ।।

मन्त्रार्थ :- **एषा** = यह। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **राजन्** = हे राजन्, प्रकाशित होने वाले। **कन्या** = कन्या, प्रकाशयोग्य। **वधूः** = वध करने वाला। **नि** = निश्चित, निरन्तर। **धूयताम्** = धूय का। **यम** = यम। **सा** = वह। **मातुः** = माता का। **बध्यताम्** = बध्य का। **बधान** = बाँधा। **गृहे** = गृह में, घर में। **अथो** = अब, इसके बाद, इसके अनन्तर। **भ्रातुः** = भ्राता का। **अथो** = अब, इसके बाद, इसके अनन्तर। **पितुः** = पिता का, गति, ज्ञान का।। **2** ।।

पदार्थ :- **एषा** = यह (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **राजन्** = हे राजन्, प्रकाशित होने वाले (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **कन्या** = कन्या, प्रकाशयोग्य (कन् - व्याप्त होना, प्रकाश करना, प्रीति करना, तृप्त होना, जाना, जानना, पाना, चाहना)। **वधूः** = वध करने वाला (वध्-हन् = मारना)। **नि** = निश्चित, निरन्तर (अव्यय)। **धूयताम्** = धूय का (धू -कम्पन करना, नोचना, कम्पित करना, काँपना, कम्पाना, कम्पित होना, हिलाना, क्षोभित करना)। **यम** = यम (यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)। **सा** = वह (सर्वनाम)। **मातुः** = माता का (मा = मान करना, मापना) **बध्यताम्** = बध्य का (बध्-बन्ध् = बाँधना, बद्ध करना, हिंसा करना, मारना, वध करना, घृणा करना)। **बधान** = बाँधा (बध्-बन्ध् = बाँधना, बद्ध करना, हिंसा करना, मारना, वध करना, घृणा करना)। **गृहे** = गृह में, घर में (गृह - लेना, स्वीकार करना, निवास करना)। **अथो** = अब, इसके बाद, इसके अनन्तर (अव्यय)। **भ्रातुः** = भ्राता का (भृ = भरण करना)। **अथो** = अब, इसके बाद, इसके अनन्तर (अव्यय)। **पितुः** = पिता का, गति, ज्ञान का (पा - रक्षा करना, पालन करना, पि = गति करना, जाना, जानना, पाना)।। **2** ।।

66. एषा ते कुलपाः राजन् ताम् ऊ ते परि दद्मसि।
ज्योक् पितृषु आसातै आ शीर्ष्णः सम्-ओप्यात् ।। 3 ।।

मन्त्रार्थ :- **एषा** = यह। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **कुलपाः** = कुल-पालक। **राजन्** = हे राजन्, प्रकाशित होने वाले। **ताम्** = उसको। **ऊ** = ही। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **परि** = सभी तरफ। **दद्मसि** = देता हूँ, आदान-प्रदान करता हूँ । **ज्योक्** = ज्योक्, सुदीर्घ, चिरकालीन, निरन्तर। **पितृषु** = पिता का, गति, ज्ञान का। **आसातै** = भलीभाँति स्थापित होने के लिए। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम। **शीर्ष्णः** = शीर्ष। **सम्-ओप्यात्** = सम्यक् बोता है ।। **3** ।।

पदार्थ :-**एषा** = यह (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **कुलपाः** = कुल-पालक (कुल् = आवरण होना, एकत्र करना, बटोरना, अपने के समान वर्तना, सजातीयता से रहना, गिनना,पा - रक्षा करना, पालन करना)। **राजन्** = हे राजन्, प्रकाशित होने वाले (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **ताम्** = उसको (सर्वनाम)। **ऊ** = ही (अव्यय)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **परि** = सभी तरफ (उपसर्ग)। **दद्मसि** = देता हूँ, आदान-प्रदान करता हूँ (दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)। **ज्योक्** = ज्योक्, सुदीर्घ, चिरकालीन, निरन्तर (ज्यु = गति होना। ज्या - जीर्ण होना, पुराना होना, वृद्ध होना, बर्द्धित होना, बड़ा होना, जि - जय होना, जीतना)। **पितृषु** = पिता का, गति, ज्ञान का (पा - रक्षा करना, पालन करना, पि = गति करना, जाना, जानना, पाना)। **आसातै** = भलीभाँति स्थापित होने के लिए (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, सद् = जाना, आ-सद् - आना, साद् = स्थापित करना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **शीर्ष्णः** = शीर्ष (शीर्ष = शीर्ष होना, मुख्य होना, उच्च होना)। **सम्-ओप्यात्** = सम्यक् बोता है (सम् = सम्यक्, भलीभांति, वप - बीज बोना, उत्पन्न करना, बुनना, अन्नादि काटना, बाल काटना) ।। **3** ।।

67. असितस्य ते ब्रह्मणा कश्यपस्य गयस्य च।
अन्तः-कोशम्-इव जामयः अपि नह्यामि ते भगम्॥ 4॥

मन्त्रार्थ :- असितस्य = अबन्धित, प्रकाशित का। **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **ब्रह्मणा =** महान्, बड़ा, बृहत् । **कश्यपस्य =** कश्यप का। **गयस्य =** गय, गायन, वाणी, गति, ज्ञान को। **च =** और। **अन्तः-कोशम्-इव =** अन्तः कोश के समान। **जामयः =** पोषण करने वाला, उत्पन्न होने वाले, भोजन करने वाले। **अपि =** भी, निकट। **नह्यामि =** बंधन । **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **भगम् =** भग को, सेवा को।। **4॥**

पदार्थ :- असितस्य = अबन्धित, प्रकाशित का (अ = नहीं, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, सि = बाँधना, गूँथना, फंदे से पकड़ना) **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **ब्रह्मणा =** महान्, बड़ा, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **कश्यपस्य =** कश्यप का (कश - प्रकाश होना, शासन करना, दण्ड देना, प्रकाश करना, गति करना, चलना)। **गयस्य =** गय, गायन, वाणी, गति, ज्ञान को (गै - शब्द, ध्वनि करना, गायन करना)। **च =** और (अव्यय)। **अन्तः-कोशम्-इव =** अन्तः कोश के समान (अन्तः = बीच में, भीतर (अव्यय, उपसर्ग, सर्वनाम, कुश् = आलिंगन करना, लपेटना, कोश होना, समाधान करना, सहना)। **जामयः =** पोषण करने वाला, उत्पन्न होने वाले, भोजन करने वाले (जम् = खाना, निगलना, जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **अपि =** भी, निकट (अव्यय)। **नह्यामि =** बंधन (नह् - बांधना, अड़ाना)। **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **भगम् =** भग को, सेवा को (भग्-भज् = सेवा करना, सेवन करना, सेवित होना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)।। **4॥**

15 पुष्टिकर्म सूक्त - 4 (15)

68. सम् सम् स्रवन्तु सिन्धवः सम् वाताः सम् पतत्रिणः।
इमम् यज्ञम् प्र-दिवः मे जुषन्ताम् सम्-स्राव्येण इविषा जुहोमि॥ 1॥

मन्त्रार्थ :- सम् = सम्यक् रूप से, भली भाँति। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति। **स्रवन्तु =** अभिसिञ्चन करें, स्रवित हों। **सिन्धवः =** सिन्धु-समूह। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति। **वाताः =** वात, वायु के समान तीव्र गति वाले । **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति। **पतत्रिणः =** पतनशील, ऐश्वर्यमान। **इमम् =** इसको। **यज्ञम् =** यजन को। **मे =** मेरा, मेरे लिए। **जुषन्ताम् =** सेवा करें। **सम्-स्राव्येण =** सम्यक् स्रवित हों। **इविषा =** जाता है। **जुहोमि =** दान करते हैं, आदान-प्रदान करते हैं।। **1॥**

पदार्थ :- सम् = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **स्रवन्तु =** अभिसिञ्चन करें, स्रवित हों (स्रु = जाना, जानना, पाना, सृ - जाना, सरकना, बहना, टपकना)। **सिन्धवः =** सिन्धु-समूह (सिध - सिद्ध होना, पूर्ण होना, जाना, जानना, पाना, अध्ययन करना, दीक्षा देना, शुभ कार्य करना, सिञ् - बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **वाताः =** वात, वायु के समान तीव्र गति वाले (वात - सुखी होना, आनन्द करना, सेवा करना, जाना, वा - गति करना, बहना, पवन की भाँति चलना)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **पतत्रिणः =** पतनशील, ऐश्वर्यमान (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **इमम् =** इसको (सर्वनाम)। **यज्ञम् =** यजन को (यज - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना)। **प्र-दिवः =** प्रदिवः (प्र - प्रकृष्ट, दिश् - दिखाना, दिखाना, समझाना, कहना, देना)।)। **मे =** मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **जुषन्ताम् =** सेवा करें (जुष् = विचार करना, सेवा करना, सेवन करना, विवेक होना, विवेचना करना, प्रीति करना, चाहना, दुलारना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना)। **सम्-स्राव्येण =** सम्यक् स्रवित हों (स्रु = जाना, जानना, पाना, सृ - जाना, सरकना, बहना, टपकना)। **इविषा =** जाता है (इ = जाना, जानना पाना)। **जुहोमि =** दान करते हैं, आदान-प्रदान करते हैं (हु-जुहु = दान करना, आदान-प्रदान करना, ग्रहण करना, तृप्त करना, जु - जाना, शीघ्र जाना, भागना)।। **1॥**

69. इह एव हवम् आ यात मे इह सम्-स्रावणाः उत इमम् वर्धयत गिरः।

इह आ एतु सर्वः यः पशुः अस्मिन् तिष्ठतु या रयिः ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ :- इह = इसमें, यहां, यह। **एव** = ही। **हवम्** = दान को, आह्वान को, दान करने योग्य, लेने योग्य, तृप्त करने योग्य। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम। **यात** = प्राप्त, गत। **मे** = मेरा, मेरे लिए। **इह** = इसमें, यहां, यह । **सम्-स्रावणाः** = सम्यक् स्रवित हों। **उत** = ही, भी, ओर। **इमम्** = इसको। **वर्धयत** = बढ़ो, बढ़ाओ। **गिरः** = वाणियाँ, बोध, सिञ्चन। **इह** = इसमें, यहां, यह। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम। **एतु** = प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे। **सर्वः** = सब, सभी। **यः** = जो। **पशुः** = पशु, बन्धन, दृष्टा, देखने वाला। **अस्मिन्** = इस, इसमें। **तिष्ठतु** = स्थित है, ठहरा है, खड़ा है। **या** = जो। **रयिः** = विद्या, ज्ञान। **॥ 2 ॥**

पदार्थ :- इह = इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **एव** = ही (अव्यय)। **हवम्** = दान को, आह्वान को, दान करने योग्य, लेने योग्य, तृप्त करने योग्य (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **यात** = प्राप्त, गत (या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)। **मे** = मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **इह** = इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **सम्-स्रावणाः** = सम्यक् स्रवित हों (स्रु = जाना, जानना, पाना, सृ - जाना, सरकना, बहना, टपकना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **इमम्** = इसको (सर्वनाम)। **वर्धयत** = बढ़ो, बढ़ाओ (वृध् = बढ़ना, चमकना, बोलना)। **गिरः** = वाणियाँ, बोध, सिञ्चन (गृ - सींचना, गीला करना, समझना, जानना, गृ - शब्द करना)। **इह** = इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **एतु** = प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना, इच्छा करना, प्रेरणा करना, ए - जाना, फैलना, व्यापना, गर्भवती होना, इच्छा करना, चाहना, खाना, उड़ाना, फेंकना, भेजना, प्रेरणा करना)। **सर्वः** = सब, सभी (सर्वनाम)। **यः** = जो (सर्वनाम)। **पशुः** = पशु, बन्धन, दृष्टा, देखने वाला (पश् - देखना, पश - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना)। **अस्मिन्** = इस, इसमें (सर्वनाम)। **तिष्ठतु** = स्थित है, ठहरा है, खड़ा है (तिष्ठ् = ठहरना, खड़ा होना)। **या** = जो (सर्वनाम)। **रयिः** = विद्या, ज्ञान (रय्-रि, री - चलना, जाना, जानना, पाना, री-रै - शब्द करना)। **॥ 2 ॥**

70. ये नदीनाम् सम्-स्रवन्ति उत्सासः सदम् अक्षिताः।
तेभिः मे सर्वैः सम्-स्रावैः धनम् सम् स्रावयामसि ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ :- ये = जो। **नदीनाम्** = नदियों का। **सम्-स्रवन्ति** = सम्यक् स्रवित होते है। **सम्-स्राव्येण** = सम्यक् स्रवित हों। **उत्सासः** = आर्द्र होना, गीला होना। **सदम्** = बैठने वाले को, सदन, स्थान को। **अक्षिताः** = अक्षित, व्याप्त, अविनाशी, खेल, क्रीडा, दृष्टि, एकत्रीकरण, समूह, व्यापक। **तेभिः** = उनके द्वारा। **मे** = मेरा, मेरे लिए। **सर्वैः** = सब। **सम्-स्रावैः** = सम्यक् स्राव। **धनम्** = धन को। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति। **स्रावयामसि** = अभिसिञ्चन करें, स्रवित हों। **॥ 3 ॥**

पदार्थ :- ये = जो (सर्वनाम)। **नदीनाम्** = नदियों का (नद् - शब्द करना, झंकार करना, चमकना)। **सम्-स्रवन्ति** = सम्यक् स्रवित होते है (स्रु = जाना, जानना, पाना, सृ - जाना, सरकना, बहना, टपकना)। **सम्-स्राव्येण** = सम्यक् स्रवित हों (स्रु = जाना, जानना, पाना, सृ - जाना, सरकना, बहना, टपकना)। **उत्सासः** = आर्द्र होना, गीला होना (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, उद् - उन्द् – आर्द्र होना, गीला होना, कष्ट होना)। **सदम्** = बैठने वाले को, सदन, स्थान को (सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)। **अक्षिताः** = अक्षित, व्याप्त, अविनाशी, खेल, क्रीडा, दृष्टि, एकत्रीकरण, समूह, व्यापक (अ = नहीं, अक्ष - खेलना, देखना, एकत्र होना, व्याप्त होना, इच्छितार्थ होना, पैठना, क्षि - क्षय होना, नष्ट होना)। **तेभिः** = उनके द्वारा (सर्वनाम)। **मे** = मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **सर्वैः** = सब (सर्वनाम)। **सम्-स्रावैः** = सम्यक् स्राव (स्रु = जाना, जानना, पाना, सृ - जाना, सरकना, बहना, टपकना)। **धनम्** = धन को (धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **स्रावयामसि** = अभिसिञ्चन करें, स्रवित हों (स्रु = जाना, जानना, पाना, सृ - जाना, सरकना, बहना, टपकना)। **॥ 3 ॥**

71. ये सर्पिषः सम्-स्रवन्ति क्षीरस्य च उदकस्य च।

तेभिः मे सर्वैः सम्-स्रावैः धनम् सम् स्रावयामसि ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ :- ये = जो। **सर्पिषः =** प्रगतिशील विद्वान् का। **सम्-स्रवन्ति =** सम्यक् स्रवित होते है। **क्षीरस्य =** क्षीर का, निवास, क्षति, क्षय का। **च =** और। **उदकस्य =** उदक, उच्च गति, आद्रता का। **च =** और। **तेभिः =** उनके द्वारा । **मे =** मेरा, मेरे लिए। **सर्वैः =** सब। **सम्-स्रावैः =** सम्यक् स्राव। **धनम् =** धन को। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति । **स्रावयामसि =** अभिसिञ्चन करें, स्रवित हों।। **4 ॥**

पदार्थ :- ये = जो (सर्वनाम)। **सर्पिषः =** प्रगतिशील विद्वान् का (सृप् - जाना, सरकना, जानना, पाना, चलना)। **सम्-स्रवन्ति =** सम्यक् स्रवित होते है (स्रु = जाना, जानना, पाना, सृ - जाना, सरकना, बहना, टपकना)। **क्षीरस्य =** क्षीर का, निवास, क्षति, क्षय का (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना, क्षी - क्षीण होना, हिंसा करना)। **च =** और (अव्यय)। **उदकस्य =** उदक, उच्च गति, आद्रता का (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, अक् - जाना, टेढ़ा जाना, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना)। **च =** और (अव्यय)। **तेभिः =** उनके द्वारा (सर्वनाम)। **मे =** मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **सर्वैः =** सब (सर्वनाम)। **सम्-स्रावैः =** सम्यक् स्राव (स्रु = जाना, जानना, पाना, सृ - जाना, सरकना, बहना, टपकना)। **धनम् =** धन को (धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **स्रावयामसि =** अभिसिञ्चन करें, स्रवित हों (स्रु = जाना, जानना, पाना, सृ - जाना, सरकना, बहना, टपकना)।। **4 ॥**

16 पुष्टिकर्म सूक्त - 5 (16)

72. ये अमा-वस्याम् रात्रिम् उत्-स्थुः व्राजम् अत्त्रिणः।
अग्निः तुरीयः यातु-हा सः अस्मभ्यम् अधि ब्रवत्॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ :- ये = जो। **अमा-वस्याम् =** अमावस्या में, अतुल्य वास में। **रात्रिम् =** रात्रि को, अनुदान को। **उत्-स्थुः =** ऊपर स्थित। **व्राजम् =** प्रगतिशील, पूर्ण सिद्ध को। **अत्त्रिणः =** अतिशय गमनशील, जानने वाले। **अग्निः =** अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान्। **तुरीयः =** शीघ्रकारी, शीघ्रगामी। **यातु-हा =** प्राप्त हो, जाये। **सः =** वह, उसने। **अस्मभ्यम् =** हमारे लिए। **अधि =** अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार। **ब्रवत् =** बोलें।। **1 ॥**

पदार्थ :- ये = जो (सर्वनाम)। **अमा-वस्याम् =** अमावस्या में, अतुल्य वास में (अ = नहीं, अम् = गति, शब्द, सेवा करना, मा - मापना, मान करना, वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)। **रात्रिम् =** रात्रि को, अनुदान को (रा - देना, मिल जाना)। **उत्-स्थुः =** ऊपर स्थित (उत् = ऊपर, स्था- स्थित होना, ठहरना)। **व्राजम् =** प्रगतिशील, पूर्ण सिद्ध को (व्रज = जाना, पूर्ण करना, सिद्ध करना)। **अत्त्रिणः =** अतिशय गमनशील, जानने वाले (अत् = जाना, सतत गति करना, जानना, पाना)। **अग्निः =** अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **तुरीयः =** शीघ्रकारी, शीघ्रगामी (तुर्-तुरण् = शीघ्रता करना)। **यातु-हा =** प्राप्त हो, जाये (या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, यत् - यत्न करना, प्रयास करना, उद्योग करना, दुःख देना, छाया-आच्छादन करना, रोकना,)। **सः =** वह, उसने (सर्वनाम)। **अस्मभ्यम् =** हमारे लिए (सर्वनाम)। **अधि =** अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **ब्रवत् =** बोलें (ब्रू - कहना, बोलना)।। **1 ॥**

73. सीसाय अधि आह वरुणः सीसाय अग्निः उप अवति।
सीसम् मे इन्द्रः प्र अयच्छत् तत् अङ्ग यातु-चातनम्॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ :- सीसाय = सीस के लिए। **अधि =** अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार। **आह =** व्याप्त किया, कहा। **वरुणः =** वरुण। **सीसाय =** सीस के लिए। **अग्निः =** अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान्। **उप =** समीप । **अवति =** रक्षा करो। **सीसम् =** सीस को। **मे =** मेरा, मेरे लिए। **इन्द्रः =** इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान। **प्र =** प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक। **अयच्छत् =** दिया। **तत् =** वह, उस को। **अङ्ग =** अङ्ग, विद्वान्, प्रगतिशील, पाने वाला। ।

यातु-चातनम् = यातु चातन को, याचना, नाश, गति को **॥ 2 ॥**

पदार्थ :- सीसाय = सीस के लिए (शी = सोना, शयन करना। षष = शक्ति होना, सामर्थ्य होना, गणना करना, सि = बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना)। **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **आह** = व्याप्त किया, कहा (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, अह - फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, ह्वे = शब्द करना)। **वरुणः** = वरुण (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **सीसाय** = सीस के लिए (शी = सोना, शयन करना। षष = शक्ति होना, सामर्थ्य होना, गणना करना, सि = बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना)। **अग्निः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **उप** = समीप (उपसर्ग)। **अवति** = रक्षा करो (अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)। **सीसम्** = सीस को (शी = सोना, शयन करना। षष = शक्ति होना, सामर्थ्य होना, गणना करना, सि = बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना)। **मे** = मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **इन्द्रः** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **अयच्छत्** = दिया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, यच्छ - देना, दान करना)। **तत्** = वह, उस को (सर्वनाम)। **अङ्ग** = अङ्ग, विद्वान्, प्रगतिशील, पाने वाला (अंग् = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)। **यातु-चातनम्** = यातु चातन को, याचना, नाश, गति को (या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, चात्-चातय - नाश होना, नाश करना, चत - मांगना, याचना करना, जाना) **॥ 2 ॥**

74. इदम् वि-स्कन्धम् सहते इदम् बाधते अत्रिणः।
अनेन विश्वा ससहे या जातानि पिशाच्याः ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ :- इदम् = यह, इसको। **वि-स्कन्धम्** = विस्कन्ध को। **सहते** = सक्षम, समर्थ, तृप्त, सन्तुष्ट के लिए। **इदम्** = यह, इसको। **बाधते** = बाधित करता है, दुःख देता है। **अत्रिणः** = अतिशय गमनशील, जानने वाले। **अनेन** = अन। **विश्वा** = विश्व, सभी, सब। **ससहे** = सक्षम, समर्थ, तृप्त, सन्तुष्ट के लिए। **या** = जो। **जातानि** = उत्पन्न हुए । **पिशाच्याः** = पिशाच, विखण्डन करने वाले, टुकड़े करने वाले।। **3 ॥**

पदार्थ :- इदम् = यह, इसको (सर्वनाम)। **वि-स्कन्धम्** = विस्कन्ध को (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग),स्कन्द = जाना, सूखना)। **सहते** = सक्षम, समर्थ, तृप्त, सन्तुष्ट के लिए (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)। **इदम्** = यह, इसको (सर्वनाम)। **बाधते** = बाधित करता है, दुःख देता है (बाध - रोकना, अटकाव करना, बाधा देना, दुःख देना)। **अत्रिणः** = अतिशय गमनशील, जानने वाले (अत् = जाना, सतत गति करना, जानना, पाना)। **अनेन** = अन (अन् - जीवन होना, प्राणवान् होना, समर्थ होना, जाना)। **विश्वा** = विश्व, सभी, सब (सर्वनाम)। **ससहे** = सक्षम, समर्थ, तृप्त, सन्तुष्ट के लिए (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ठ होना, प्रसन्न होना)। **या** = जो (सर्वनाम)। **जातानि** = उत्पन्न हुए (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **पिशाच्याः** = पिशाच, विखण्डन करने वाले, टुकड़े करने वाले (पिश् - जाना, प्रकाश होना, चीरना, टुकड़े करना)।। **3 ॥**

75. यदि नः गाम् हंसि यदि अश्वम् यदि पुरुषम्।
तम् त्वा सीसेन विध्यामः यथा नः असः अवीर-हा ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ :- यदि = यदि। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा। **गाम्** = गान, गाय, गायक को। **हंसि** = प्रसन्न करते हो, नष्ट करते हो। **यदि** = यदि। **अश्वम्** = अश्व, तीव्र गति युक्त, व्यापक को। **यदि** = यदि। **पुरुषम्** = पुरुष को, परिपूर्ण, अग्रगामी, अग्रणी को। **तम्** = उसको, उसे। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा। **सीसेन** = सीस द्वारा। **विध्यामः** = विधान का, वेधन का, वेध का। **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा। **असः** = हो। **अवीर-हा** = वीरों को नहीं मारने वाले, अ-वीरों को मारने वाले।। **1 ॥**

पदार्थ :- यदि = यदि (अव्यय)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **गाम्** = गान, गाय, गायक को (गा

= स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गम् - जाना, जानना, पाना)। **हंसि =** प्रसन्न करते हो, नष्ट करते हो (हन् - मारना, हंस = हंसना, हंसाना, प्रसन्न करना, प्रसन्न रहना, प्रसन्न होना)। **यदि =** यदि (अव्यय)। **अश्वम् =** अश्व, तीव्र गति युक्त, व्यापक को (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)। **यदि =** यदि (अव्यय)। **पुरुषम् =** पुरुष को, परिपूर्ण, अग्रगामी, अग्रणी को (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, पृ - पूर्ण करना, भरना, पालन करना, रक्षा करना, तृप्त करना)। । **तम् =** उसको, उसे (सर्वनाम)। **त्वा =** तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **सीसेन =** सीस द्वारा (शी = सोना, शयन करना। षष = शक्ति होना, सामर्थ्य होना, गणना करना, सि = बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना)। **विध्यामः =** विधान का, वेधन का, वेध का (विध - विधान करना, वेध करना, वेधन करना, ताडना)। **यथा =** जिससे, जैसे, जिस प्रकार। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **असः =** हो (अस् = होना)। **अवीर-हा =** वीरों को नहीं मारने वाले, अ-वीरों को मारने वाले (अ- नहीं, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, वीर - वीर होना, वीरता दिखाना, पराक्रम करना, हन - मार डालना)।**। 1 ।।**

(4) अनुवाक - 4

17 रुधिर-स्राव-निवर्तन-धमनी-बन्धन सूक्त - 6 (17)

76. अमूः याः यन्ति योषितो, हिरा लोहतवाससः।
अभ्रातर इव जामयः, तिष्ठन्तु हतवर्चसः ।। 1 ।।

मन्त्रार्थ :- अमूः = यह। **याः =** जो। **यन्ति =** प्राप्त होते हैं, नियमन-नियन्त्रण, पोषण करते हैं। **योषितो =** योषित, हिंसक को। **हिरा =** प्रकाशमान, शब्दमय। **लोहतवाससः =** लोह वास वाले। **अभ्रातर =** भरण किया। **इव =** समान, की भाँति, के समान। **जामयः =** पोषण करने वाला, उत्पन्न होने वाले, भोजन करने वाले। **तिष्ठन्तु =** स्थित हों, ठहरें । **हतवर्चसः =** प्रकाशहीन, हतप्रभ।**। 1 ।।**

पदार्थ :- अमूः = यह (सर्वनाम)। **याः =** जो (सर्वनाम)। **यन्ति =** प्राप्त होते हैं, नियमन-नियन्त्रण, पोषण करते हैं (यम् = रोकना, स्वाधीन रखना, आवरण करना, पोषण करना, नियमन करना, यन - उद्धार करना, या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, जानना)। **योषितो =** योषित, हिंसक को (युष = हिंसा करना)। **हिरा =** प्रकाशमान, शब्दमय (हिर - प्रकाश होना, शब्द करना, गति करना, खोजना)। **लोहतवाससः =** लोह वास वाले (लू = काटना, कतरना, चीरना, वस् = रहना, निवास करना)। **अभ्रातर =** भरण किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, भृ = भरना, भरण करना, अभ्र - जाना, मेघ की गति)। **इव =** समान, की भाँति, के समान (अव्यय)। **जामयः =** पोषण करने वाला, उत्पन्न होने वाले, भोजन करने वाले (जम् = खाना, निगलना, जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **तिष्ठन्तु =** स्थित हों, ठहरें (तिष्ठ् = ठहरना, खड़ा होना)। **हतवर्चसः =** प्रकाशहीन, हतप्रभ (हन् - मारना, वर्च - प्रकाशित होना, चमकना)।**। 1 ।।**

77. तिष्ठ अवरे तिष्ठ परे उत त्वम् तिष्ठ मध्यमे।
कनिष्ठिका च तिष्ठति तिष्ठात् इत् धमनिः मही ।। 2 ।।

मन्त्रार्थ :- तिष्ठ = उठो, ठहरो, खड़े हो। **अवरे =** अवर में, अवरणीय में, रक्षक में। **तिष्ठ =** उठो, ठहरो, खड़े हो । **परे =** पर, परम, बाद में। **उत** = ही, भी, ओर। **त्वम् =** तुम। **तिष्ठ =** उठो, ठहरो, खड़े हो। **मध्यमे =** मध्य के लिए । **कनिष्ठिका =** प्रकाशमान, व्यापक। **च =** और। **तिष्ठति =** स्थित है, ठहरा है, खड़ा है। **तिष्ठात् =** ठहरो, स्थित हो, ठहरो, खड़े हो। **इत् =** ही। **धमनिः =** वाद्य बजाने वाले, धौंकने वाले, फूँकने वाले। **मही =** मही, महिमावान्, महान्**।। 2 ।।**

पदार्थ :- तिष्ठ = उठो, ठहरो, खड़े हो (तिष्ठ् = ठहरना, खड़ा होना)। **अवरे =** अवर में, अवरणीय में, रक्षक में (अ - नहीं, वृ-वर्-वरण करना, इच्छा करना, आशा करना, अवर - नीचे, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)। **तिष्ठ =** उठो, ठहरो, खड़े हो (तिष्ठ् = ठहरना, खड़ा होना)। **परे =** पर, परम, बाद में (पर = पराया, अन्य, दूसरा, परे, पश्चात्, बाद में (उपसर्ग))। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **त्वम् =** तुम (सर्वनाम)। **तिष्ठ =** उठो,

ठहरो, खड़े हो (तिष्ठ् = ठहरना, खड़ा होना)। **मध्यमे =** मध्य के लिए (सर्वनाम)। **कनिष्ठिका =** प्रकाशमान, व्यापक (कन् - व्याप्त होना, प्रकाश करना, प्रीति करना, तृप्त होना, जाना, जानना, पाना, चाहना)। **च =** और (अव्यय)। **तिष्ठति =** स्थित है, ठहरा है, खड़ा है (तिष्ठ् = ठहरना, खड़ा होना)। **तिष्ठात् =** ठहरो, स्थित हो, ठहरो, खड़े हो (तिष्ठ् = ठहरना, खड़ा होना)। **इत् =** ही (अव्यय)। **धमनिः =** वाद्य बजाने वाले, धौंकने वाले, फूँकने वाले (धम्-ध्मा - चलना, जाना, जानना, पाना, वाद्य बजाना, धौंकना, फूँकना, मुंह से वंशी आदि वाद्य बजाना, आग सुलगाना, आग लगाना, प्रदीप्त करना, जलाना)। **मही =** मही, महिमावान्, महान् (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना) **॥ 2 ॥**

78. शतस्य धमनीनाम् सहस्रस्य हिराणाम्।
अस्थुः इत् मध्यमाः इमाः साकम् अन्ताः अरंसत ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ :- शतस्य = सौ का। **धमनीनाम् =** वाद्य बजाने वाले, धौंकने वाले। **सहस्रस्य =** हजारों का। **हिराणाम् =** हिरण्य का, प्रकाशमान, शब्दमय का। **अस्थुः =** अस्थि, अस्तित्व का आधार। **इत् =** ही। **मध्यमाः =** मध्यम। **इमाः =** ये। **साकम् =** साथ। **अन्ताः =** अन्तः, भीतर, अन्त करने वाले। **अरंसत =** गतिशील, विद्वान्, गति, ज्ञान युक्त। **॥ 3 ॥**

पदार्थ :- शतस्य = सौ का (सर्वनाम)। **धमनीनाम् =** वाद्य बजाने वाले, धौंकने वाले, (धम्-ध्मा - चलना, जाना, जानना, पाना, वाद्य बजाना, धौंकना, फूँकना, मुंह से वंशी आदि वाद्य बजाना, आग सुलगाना, आग लगाना, प्रदीप्त करना, जलाना)। **सहस्रस्य =** हजारों का (संख्या)। **हिराणाम् =** हिरण्य का, प्रकाशमान, शब्दमय का (हिरण - प्रकाश होना, दीप्त होना, शब्द करना, ध्वनि होना, हि = गति करना, रण् = शब्द करना, जाना, पण् = स्तुति करना, व्यवहार करना)। **अस्थुः =** अस्थि, अस्तित्व का आधार (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, स्था- स्थित होना, ठहरना)। **इत् =** ही (अव्यय)। **मध्यमाः =** मध्यम (सर्वनाम)। **इमाः =** ये (सर्वनाम)। **साकम् =** साथ (अव्यय)। **अन्ताः =** अन्तः, भीतर, अन्त करने वाले (अन्तः = बीच में, अन्त् - अन्त होना, समाप्त होना, बाँधना, पाना, हिंसा करना)। **अरंसत =** गतिशील, विद्वान्, गति, ज्ञान युक्त (ऋ-अर् = जाना, जानना, पाना, महत्व दिखाना, शब्द करना, ध्वनि करना, हिंसा करना, रण - शब्द करना, जाना)। **॥ 3 ॥**

79. परि वः सिकता-वती धनूः बृहती अक्रमीत्।
तिष्ठत इलयत सु कम् ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ :- परि सभी तरफ। **वः =** तुम लोग, तुम्हारा, तुमको, तुम सबका, तुम सबको, तुम सबके लिए। **सिकता-वती =** अस्पष्ट शब्द बोलने वाले। **धनूः =** धनवान्, गतिकारक। **बृहती =** महान्, बड़ा, बृहत्। **अक्रमीत् =** आक्रान्त किया, वृद्धि की, रक्षा की। **तिष्ठत =** ठहरा, खड़ा रहा। **इलयत =** प्रेरणा करो, प्रेरणा देता है। **सु =** उत्तम, सुष्ठु, अच्छा, सुन्दर । **कम् =** किसको। **॥ 4 ॥**

पदार्थ :- परि सभी तरफ (उपसर्ग)। **वः =** तुम लोग, तुम्हारा, तुमको, तुम सबका, तुम सबको, तुम सबके लिए। **सिकता-वती =** अस्पष्ट शब्द बोलने वाले (सिक्-सिङ्क्-सिज-सिञ्ज - अस्पष्ट शब्द करना, वद् - वच्- बोलना)। **धनूः =** धनवान्, गतिकारक (धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)। **बृहती =** महान्, बड़ा, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **अक्रमीत् =** आक्रान्त किया, वृद्धि की, रक्षा की (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अ = नहीं, उपसर्ग, क्रम् = जाना, बढ़ना, रक्षा करना)। **तिष्ठत =** ठहरा, खड़ा रहा (तिष्ठ् = ठहरना, खड़ा होना)। **इलयत =** प्रेरणा करो, प्रेरणा देता है (इल् - सहना, समर्थ होना, नींद लेना, जाना, भेजना, प्रेरणा देना, फेंकना, उड़ाना, बिखेरना।)। **सु =** उत्तम, सुष्ठु, अच्छा, सुन्दर (उपसर्ग)। **कम् =** किसको (सर्वनाम)। **॥ 4 ॥**

18 अलक्ष्मीनाशन सूक्त - 7 (18)

80. निः लक्ष्म्यम् ललाम्यम् निः अरातिम् सुवामसि।

अथ या भद्रा तानि नः प्र-जायै अरातिम् नयामसि ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ :- निः = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर। **लक्ष्म्यम्** = दृष्टि, विचार के योग्य। **ललाम्यम्** = ललाम के योग्य, चाहने योग्य, खेलने योग्य। **निः** = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर। **अरातिम्** = अदानी को। **सुवामसि** = उत्पन्न कर्ता, उत्तम शब्द कर्ता, श्रेष्ठ सेवा करने वाले हो। **अथ** = अब, इसके अनन्तर। **या** = जो। **भद्रा** = कल्याणकारी। **तानि** = वे, उन को। **नः** = उत्तम, सुष्ठु, अच्छा, सुन्दर। **प्र-जायै** = प्रजा के लिए। **अरातिम्** = अदानी को। **नयामसि** - ले जाते हो।। **1 ॥**

पदार्थ :- निः = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग)। **लक्ष्म्यम्** = दृष्टि, विचार के योग्य (लक्ष् - देखना, विचार करना)। **ललाम्यम्** = ललाम के योग्य, चाहने योग्य, खेलने योग्य (लल् - क्रीडा करना, खेलना, जीभ बाहर निकाल कर हिलाना, इच्छा करना, चाहना, रखना, टिकाना, स्थापित करना, रमण करना, खेलना, रति करना)। **निः** = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग)। **अरातिम्** = अदानी को (अ - नहीं, रा = देना, रम् - रमना, रमण करना, रम जाना, रत होना, क्रीडा करना, प्रिय होना, मूल्यवान होना)। **सुवामसि** = उत्पन्न कर्ता, उत्तम शब्द कर्ता, श्रेष्ठ सेवा करने वाले हो (सु = उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, सू- भेजना, उड़ाना, सु - उत्तम, अच्छा, वन - शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, आपद्ग्रस्त होना, अलग करना, मिलाना, स्मरण करना, बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, याचना करना, मांगना, दुःख देना, उद्योग-धन्धा करना)। **अथ** = अब, इसके अनन्तर (अव्यय)। **या** = जो (सर्वनाम)। **भद्रा** = कल्याणकारी (भदि-भन्द् = सुख होना, शुभ कर्म करना, कल्याण होना)। **तानि** = वे, उन को (सर्वनाम)। **नः** = उत्तम, सुष्ठु, अच्छा, सुन्दर (उपसर्ग)। **प्र-जायै** = प्रजा के लिए (प्र - प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न करना)। **अरातिम्** = अदानी को (अ - नहीं, रा = देना, रम् - रमना, रमण करना, रम जाना, रत होना, क्रीडा करना, प्रिय होना, मूल्यवान होना)। **नयामसि** - ले जाते हो (नी = ले जाना)।। **1 ॥**

81. निः अरणिम् सविता साविषक् पदोः निः हस्तयोः वरुणः मित्रः अर्यमा।
निः अस्मभ्यम् अनु-मतिः रराण प्र इमाम् देवाः असाविषुः सौभगाय ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ :- निः = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर। **अरणिम्** = गतिशील, विद्वान्, गति, ज्ञान युक्त को। **सविता** = सृष्टिकर्ता, उत्पन्न करने वाला, ऐश्वर्यवान् तथा ऐश्वर्य देने वाला। **साविषक्** = साविषक्, ऐश्वर्यवान् तथा ऐश्वर्य देने वाला । **पदोः** = पद। **निः** = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर। **हस्तयोः** = हाथों का। **वरुणः** = वरुण। **मित्रः** = मित्र। **अर्यमा** = अर्यमा, ज्ञानी। **निः** = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर। **अस्मभ्यम्** = हमारे लिए। **अनु-मतिः** = अनुमति, अनुकूल मन, अनुकूल विचार। **रराण** = दानी, शब्द करता हुआ। **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक। **इमाम्** = इसको, इस। **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने। **असाविषुः** = साविषत, विषम के लिए। **सौभगाय** = सौभाग्य के लिए ॥ **2 ॥**

पदार्थ :- निः = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग)। **अरणिम्** = गतिशील, विद्वान्, गति, ज्ञान युक्त को (ऋ- अर् = जाना, जानना, पाना, महत्व दिखाना, शब्द करना, ध्वनि करना, हिंसा करना, रण - शब्द करना, जाना)। **सविता** = सृष्टिकर्ता, उत्पन्न करने वाला, ऐश्वर्यवान् तथा ऐश्वर्य देने वाला (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)। **साविषक्** = साविषक्, ऐश्वर्यवान् तथा ऐश्वर्य देने वाला (सु = उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, सींचना, स्नान करना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)। **पदोः** = पद (पद् - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना)। **निः** = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग)। **हस्तयोः** = हाथों का (हस्त - देना, लेना, ग्रहण करना)। **वरुणः** = वरुण (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **मित्रः** = मित्र (मिद् - स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, मृदुल होना)। **अर्यमा** = अर्यमा, ज्ञानी (ऋ - जाना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना, पहुँचाना, अर्-ऋ - गति करना, जाना, जानना, पाना, शब्द करना, व्याप्त होना, मिलाना, महत्व दिखाना, हिंसा करना)। **निः** = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग)। **अस्मभ्यम्** = हमारे लिए (सर्वनाम)। **अनु-मतिः** = अनुमति, अनुकूल मन, अनुकूल विचार (अनु - अनुकूल, पश्चात्, मन् - मनन करना, विचार करना)। **रराण** = दानी, शब्द करता हुआ (रा - देना, मिल जाना, रण - शब्द करना,

जाना, रन् - अलग करना, मिलाना)। **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **इमाम्** = इसको, इस (सर्वनाम)। **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **असाविषुः** = साविषत, विषम के लिए (सु = उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, सींचना, स्नान करना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)। **सौभगाय** = सौभाग्य के लिए (सु - अच्छा, सुन्दर, सु = उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, सींचना, भग् -भज् - सेवा करना, सेवन करना, दान करना, अलग करना, सो–स्य, सय - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना) **॥ 2 ॥**

82. यत् ते आत्मनि त्वाम् घोरम् अस्ति यत् वा केशेषु प्रति-चक्षणे वा।
सर्वम् तत् वाचा अप हन्मः वयम् देवः त्वा सविता सूदयतु ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ :- यत् = जिसे, जो। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **आत्मनि** = आत्मा में। **त्वाम्** = तुमको, तुम्हारी। **घोरम्** = घोर को। **अस्ति** = है। **यत्** = जिसे, जो। **वा** = अथवा। **केशेषु** = केश को। **प्रति-चक्षणे** = प्रत्येक में देखने के लिए, । **वा** = अथवा। **सर्वम्** = सब। **तत्** = वह, उस को। **वाचा** = वाणी से। **अप** = दूर, नीचे, अपकार। **हन्मः** = मारने वाले । **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग। **देवः** = देव। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा। **सविता** = सृष्टिकर्ता, उत्पन्न करने वाला, ऐश्वर्यवान् तथा ऐश्वर्य देने वाला। **सूदयतु** = आश्रय करता है, वर्षा करता है, पवित्र करता है। **॥ 3 ॥**

पदार्थ :- यत् = जिसे, जो (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **आत्मनि** = आत्मा में (आत् = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (वैदिक उपसर्ग), आत् - होना, चिरन्तन होना, नित्य होना, चेतन होना, मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना, अत् - सतत गमन करना, निरन्तर चलना, सतत चलना, जानना, पाना)। **त्वाम्** = तुमको, तुम्हारी (सर्वनाम)। **घोरम्** = घोर को (घुर् = भयंकर होना, चमकना, घोर् = चतुराई से चलना)। **अस्ति** = है (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **वा** = अथवा (अव्यय)। **केशेषु** = केश को (किश्-केश्-किस् - गति करना, बाल उगना, व्याप्त होना, फैलना)। **प्रति-चक्षणे** = प्रत्येक में देखने के लिए, (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में,(चक्ष् - स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)। **वा** = अथवा (अव्यय)। **सर्वम्** = सब (सर्वनाम)। **तत्** = वह, उस को (सर्वनाम)। **वाचा** = वाणी से (वच - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)। **अप** = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। **हन्मः** = मारने वाले (हन् - मारना)। **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **देवः** = देव (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **सविता** = सृष्टिकर्ता, उत्पन्न करने वाला, ऐश्वर्यवान् तथा ऐश्वर्य देने वाला (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)। **सूदयतु** = आश्रय करता है, वर्षा करता है, पवित्र करता है (सूद् - टपकना, झरना, आश्रय करना, शुद्ध करना, पवित्र करना)। **॥ 3 ॥**

83. रिश्य-पदीम् वृष-दतीम् गो-सेधाम् वि-धमाम् उत।
वि-लीढ्यम् ललाम्यम् ताः अस्मत् नाशयामसि ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ :- रिश्य-पदीम् = हिंसनीय पदीय को। **वृष-दतीम्** = पराक्रमी दान को, पराक्रमी त्याग को। **गो-सेधाम्** = शब्द साधक। **वि-धमाम्** = विधान। **उत** = ही, भी, ओर। **वि-लीढ्यम्** = विलीढ्य को। **ललाम्यम्** = ललाम के योग्य, चाहने योग्य, खेलने योग्य। **ताः** = वे। **अस्मत्** = हमसे। **नाशयामसि** = नाश करने वाली, विनाशिका हो **॥ 4 ॥**

पदार्थ :- रिश्य-पदीम् = हिंसनीय पदीय को (रिश्-रिष - हिंसा करना, मार डालना या दुःख देना, मारने का यत्न करना, पद् - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना)। **वृष-दतीम्** = पराक्रमी दान को, पराक्रमी त्याग को (वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना या पीड़ा करना, दुःख देना, पीड़ित करना, दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)। **गो-सेधाम्** = शब्द साधक (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, सिध् = जाना, सिद्ध होना)। **वि-धमाम्** = विधान (वि - विशेष। विध् - विधान करना, वेधना, वेध करना, ताडना करना,

धम्-ध्मा - चलना, जाना, जानना, पाना, वाद्य बजाना, धौंकना, फूँकना, मुंह से वंशी आदि वाद्य बजाना, आग सुलगाना, आग लगाना, प्रदीप्त करना, जलाना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **वि-लीढ्यम्** = विलीढ्य को (वि = विशेष, विना, विलोम, लिह् - चाटना, चखना)। **ललाम्यम्** = ललाम के योग्य, चाहने योग्य, खेलने योग्य (लल् - क्रीडा करना, खेलना, जीभ बाहर निकाल कर हिलाना, इच्छा करना, चाहना, रखना, टिकाना, स्थापित करना, रमण करना, खेलना, रति करना)। **ताः** = वे (सर्वनाम)। **अस्मत्** = हमसे (सर्वनाम)। **नाशयामसि** = नाश करने वाली, विनाशिका हो (नश् - नष्ट होना, अदृश्य होना) **॥ 4 ॥**

19 शत्रुनिवारण सूक्त - 8 (19)

84. मा नः विदन् वि-व्याधिनः मो अभि-व्याधिनः विदन्।
आरात् शरव्याः अस्मत् विषूचीः इन्द्र पातय ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ :- मा = नहीं, मत। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा। **विदन्** = जानते हुए, जानने वाले। **वि-व्याधिनः** = विशेष व्याधी वाले, विशेष हिंसक। **मो** = बन्धन। **अभि-व्याधिनः** = विशेष व्याधी वाले, विशेष हिंसक। **विदन्** = जानते हुए, जानने वाले। **आरात्** = दूर से, समीप। **शरव्याः** = शरव्य द्वारा, गन्तव्य द्वारा, श्रवणीय द्वारा, हिंसनीय द्वारा। **अस्मत्** = हमसे। **विषूचीः** = विसूची। **इन्द्र** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान। **पातय** = पालन करने वाले के लिए **॥ 1 ॥**

पदार्थ :- मा = नहीं, मत (अव्यय)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **विदन्** = जानते हुए, जानने वाले (विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)। **वि-व्याधिनः** = विशेष व्याधी वाले, विशेष हिंसक (वि - विशेष, व्यध - ताडना करना, पीडा करना, छेदना, हिंसा करना)। **मो** = बन्धन (मू = बाँधना)। **अभि-व्याधिनः** = विशेष व्याधी वाले, विशेष हिंसक (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग), व्यध - ताडना करना, पीडा करना, छेदना, हिंसा करना)। **विदन्** = जानते हुए, जानने वाले (विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)। **आरात्** = दूर से, समीप (अव्यय)। **शरव्याः** = शरव्य द्वारा, गन्तव्य द्वारा, श्रवणीय द्वारा, हिंसनीय द्वारा (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, शृ - मार डालना, दुःख देना, पीड़ा करना, फटना, हिंसा करना, मारना, श्रि - सेवा करना, आश्रय करना)। **अस्मत्** = हमसे (सर्वनाम)। **विषूचीः** = विसूची (विष - सींचना, प्रोक्षण करना, सूच - सूचना करना, बात कहना, जताना, दूसरे की न्यूनता दिखाना। सु - उत्पन्न करना)। **इन्द्र** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **पातय** = पालन करने वाले के लिए (पा = रक्षा करना, पालन करना) **॥ 1 ॥**

85. विष्वञ्चः अस्मत् शरवः पतन्तु ये अस्ताः ये च आस्याः।
दैवी मनुष्य-इषवः मम अमित्रान् वि विध्यत ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ :- विष्वञ्चः = विश्व, व्याप्त। **अस्मत्** = हमसे। **शरवः** = शरव, गन्तव्य, श्रवणीय, हिंसनीय। **पतन्तु** = गिरायें, उड़ायें। **ये** = हमसे। **अस्ताः** = प्रकाशमान। **ये** = हमसे। **च** = हमसे। **आस्याः** = आस्य। **दैवी** = दिव्य। **मनुष्य-इषवः** = मनुष्यों में, विचारशीलों में। **मम** = मेरा। **अमित्रान्** = अमित्र का, अस्नेही का। **वि** = विशेष, विना, विलोम। **विध्यत** = वेधन करो, विधान करो। **॥ 2 ॥**

पदार्थ :- विष्वञ्चः = विश्व, व्याप्त (विष्ण-विष् -विविष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना, व्यापना, फैलना, प्रसृत होना)। **अस्मत्** = हमसे (सर्वनाम)। **शरवः** = शरव, गन्तव्य, श्रवणीय, हिंसनीय (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, शृ - मार डालना, दुःख देना, पीड़ा करना, फटना, हिंसा करना, मारना, श्रि - सेवा करना, आश्रय करना)। **पतन्तु** = गिरायें, उड़ायें (पत् = जाना, उड़ना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **ये** = हमसे (सर्वनाम)। **अस्ताः** = प्रकाशमान (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **ये** = हमसे (सर्वनाम)। **च** = हमसे (सर्वनाम)। **आस्याः** = आस्य (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, आस् - बैठना, उपस्थित होना, विद्यमान होना, जीवित रहना, होना)। **दैवी** = दिव्य (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **मनुष्य-इषवः** = मनुष्यों में, विचारशीलों में

(मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **मम** = मेरा (सर्वनाम)। **अमित्रान्** = अमित्र का, अस्नेही का (अ = नहीं, मिद् = प्रीति करना, स्नेह करना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **विध्यत** = वेधन करो, विधान करो (विध - विधान करना, वेध करना, वेधन करना, ताडना)।। **2** ।।

86. यो नः स्वो यो अरणो सजातः
उत निष्ट्यो यो अस्मान् अभिदासति।
रुद्रः शरव्यया एतान्
मम अमित्रान् वि विध्यतु।। 3 ।।

मन्त्रार्थ :- **यो** = जो **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा **स्वो** = उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि या जगत् **यो** = जो **अरणो** = गतिशील, विद्वान्, गति, ज्ञान युक्त **सजातः** = सम्बन्धी **उत** = ही, भी, ओर **निष्ट्यो** = निष्ट्य ने **यो** = जो **अस्मान्** = हमें, हमको **अभिदासति** = सर्वथा दान करता है **रुद्रः** = करुणाशील, रुदन करने वाले, रुदन कराने वाले **शरव्यया** = शरव्य द्वारा **एतान्** = इनको, ये **मम** = मेरा **अमित्रान्** = अमित्रों को, अस्नेही जनों को **वि** = विशेष, विविध, विना, विलोम **विध्यतु** = वेधन करे।। **3** ।।

पदार्थ :- **यो** = जो (सर्वनाम)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **स्वो** = उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि या जगत् (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **अरणो** = गतिशील, विद्वान्, गति, ज्ञान युक्त (ऋ-अर् = जाना, जानना, पाना, महत्व दिखाना, शब्द करना, ध्वनि करना, हिंसा करना, रण - शब्द करना, जाना)। **सजातः** = सम्बन्धी (स - साथ, सहित, सज्, संज = सम्बन्धी होना, आलिंगन करना, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **निष्ट्यो** = निष्ट्य ने (निष - प्राप्त करना, ले जाना, स्त्यै - शब्द करना, ध्वनि करना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **अस्मान्** = हमें, हमको (सर्वनाम)। **अभिदासति** = सर्वथा दान करता है (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, दास् - देना, दान करना)। **रुद्रः** = करुणाशील, रुदन करने वाले, रुदन कराने वाले (रुद् = रुदन् करना, करुण होना)। **शरव्यया** = शरव्य द्वारा (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, शृ - मार डालना, दुःख देना, पीड़ा करना, फटना, हिंसा करना, मारना, श्रि - सेवा करना, आश्रय करना)। **एतान्** = इनको, ये (सर्वनाम)। **मम** = मेरा (सर्वनाम)। **अमित्रान्** = अमित्रों को, अस्नेही जनों को (अ = नहीं, मिद् = स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, नरम होना, मृदुल होना, मा - मापना, मान करना)। **वि** = विशेष, विविध, विना, विलोम (उपसर्ग)। **विध्यतु** = वेधन करे (विध - विधान करना, वेध करना, वेधन करना, ताडना)।। **3** ।।

87. यः स-पत्नः यः असपत्नः यः द्विषन् शपाति नः।
देवाः तम् सर्वे धूर्वन्तु ब्रह्म वर्म मम अन्तरम्।। 4 ।।

मन्त्रार्थ :- **यो** = जो **सपत्नो** = प्रकाश-ऐश्वर्यवान्, प्रकाश-रक्षक **यो** = जो **असपत्नो** = प्रकाश-ऐश्वर्यवान्, प्रकाश-रक्षक, जो सपत्न नहीं हो **यो** = जो **च** = और **द्विषन्** = द्वेष करता हुआ **शपाति** = शपथ लेते हैं, शाप देते हैं **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने **तम्** = उसको, उसे **सर्वे** = सब **धूर्वन्तु** = हिंसा करो, प्रगति करो **ब्रह्म** = ब्रह्म, महान्, बड़ा, विराट, बृहत् **वर्म** = वर्म, आच्छादन **मम** = मेरा **अन्तरम्** = प्राणवान् को, अन्तर को, भीतर को।। **4** ।।

पदार्थ :- **यो** = जो (सर्वनाम)। **सपत्नो** = प्रकाश-ऐश्वर्यवान्, प्रकाश-रक्षक (स - सहित, साथ, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, पत् = जाना, नीचे जाना, पतन होना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना, सप - पूर्ण ज्ञान होना, पूरा समझना, पूर्णतया जानना, संसक्त होना, संलग्न होना, मिलाप होना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **असपत्नो** = प्रकाश-ऐश्वर्यवान्, प्रकाश-रक्षक, जो सपत्न नहीं हो (स - सहित, साथ, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, पत् = जाना, नीचे जाना, पतन होना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना, सप - पूर्ण ज्ञान होना, पूरा समझना, पूर्णतया जानना, संसक्त होना, संलग्न होना,

मिलाप होना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **च** = और (अव्यय)। **द्विषन्** = द्वेष करता हुआ (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)। **शपाति** = शपथ लेते हैं, शाप देते हैं (शप् = शपथ लेना, प्रतिज्ञा करना, शाप देना, निन्दा करना)। **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **सर्वे** = सब (सर्वनाम)। **धूर्वन्तु** = हिंसा करो, प्रगति करो (धूर् = हिंसा करना, गति करना)। **ब्रह्म** = ब्रह्म, महान्, बड़ा, विराट, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **वर्म** = वर्म, आच्छादन (वृ - वरण करना, स्वीकार करना, पसन्द करना, नियोजित करना, नियमित करना, आच्छादित करना, ढंकना, वर्ण - वर्णन करना, चमकना, आज्ञा करना, प्रेरणा करना, भेजना, रंगना)। **मम** = मेरा (सर्वनाम)। **अन्तरम्** = प्राणवान् को, अन्तर को, भीतर को (अन् = प्राणवान् होना, अन्त् - बाँधना, हिंसा करना, चलना) **॥ 4 ॥॥**

20 शत्रुनिवारण सूक्त - 9 (20)

88. अदार-सृत् भवतु देव सोम अस्मिन् यज्ञे मरुतः मृडत नः।
मा नः विदत् अभि-भाः मो अशस्तिः मा नः विदत् वृजिना द्वेष्या या॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ :- अदार-सृत् = विदारण की ओर न जाने वाला। **भवतु** = हो, हो जाये। **देव** = देव, विद्वान्, तेजस्वी, दिव्यस्वरूप। **सोम** = सृजन-ऐश्वर्य-अन्तकर्ता, ऐश्वर्यवान्, सृष्टिकर्ता। **अस्मिन्** = इस, इसमें। **यज्ञे** = यज्ञ में, यजन में, देवपूजा, संगतिकरण, दान कर्म में। **मरुतः** = मरुत्, मरणशील। **मृडत** = सुख। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा। **मा** = नहीं, मत। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा। **विदत्** = जानें। **अभि-भाः** = सभी ओर प्रकाशित, सर्वथा प्रकाशित। **मो** = बन्धन। **अशस्तिः** = भोजन, व्यापकता, अहिंसा, गति, ज्ञान। **मा** = नहीं, मत । **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा। **विदत्** = जानें। **वृजिना** = वृजन, त्याग, वर्जना। **द्वेष्या** = द्वेष करता है। **या** = जो।**॥ 1 ॥**

पदार्थ :- अदार-सृत् = विदारण की ओर न जाने वाला (अ - नहीं (उपसर्ग), दृ - सत्कार करना, आदर करना, चीरना, फाड़ना, टुकड़े-टुकड़े करना, सृ - जाना, सरकना, बहना, टपकना)। **भवतु** = हो, हो जाये (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **देव** = देव, विद्वान्, तेजस्वी, दिव्यस्वरूप (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **सोम** = सृजन-ऐश्वर्य-अन्तकर्ता, ऐश्वर्यवान्, सृष्टिकर्ता, (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामथ्य, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना। सू = प्रेरणा देना। सो–स्य, सय - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना)। **अस्मिन्** = इस, इसमें (सर्वनाम)। **यज्ञे** = यज्ञ में, यजन में, देवपूजा, संगतिकरण, दान कर्म में (यज - देवपूजा करना, देना, संगति करना)। **मरुतः** = मरुत्, मरणशील (मृ = मरना, देहत्याग करना)। **मृडत** = सुख (मृड - सुखी होना, सुख देना)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **मा** = नहीं, मत (अव्यय)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **विदत्** = जानें (विद - समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)। **अभि-भाः** = सभी ओर प्रकाशित, सर्वथा प्रकाशित (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, भा - चमकना, प्रकाशित होना, सुन्दर दीखना)। **मो** = बन्धन (मू = बाँधना)। **अशस्तिः** = भोजन, व्यापकता, अहिंसा, गति, ज्ञान (अ - नहीं, अश् = भोजन करना, व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, शस् - हिंसा करना, मारना, दुःख देना, काटना, शंस्-शस् - स्तुति, प्रशंसा करना)। **मा** = नहीं, मत (अव्यय)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **विदत्** = जानें (विद - समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)। **वृजिना** = वृजन, त्याग, वर्जना (वृज् = छोड़ना, त्यागना, वर्जित करना)। **द्वेष्या** = द्वेष करता है (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)। **या** = जो (सर्वनाम)।**॥ 1 ॥**

89. यः अद्य सेन्यः वधः अघ-यूनाम् उत्-ईरते।
युवम् तम् मित्रावरुणौ अस्मत् यवयवतम् परि॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ :- यः = जो **अद्य =** आज **सेन्यः =** सेन्य, बन्धन योग्य। **वधः =** वध करने वाला। **अघ-यूनाम् =** हिंसा का, पाप का। **उत्-ईरते =** उत्कृष्ट प्रेरित करो, कम्पित करो। **युवम्** = तुमको। **तम् =** उसको, उसे। **मित्रावरुणौ =** मित्र और वरुण, स्नेही तथा वरणीय। **अस्मत् =** इससे, इस। **यवयवतम् =** मिश्रित करो, पृथक् करो। **परि =** सभी तरफ।**। 2 ।।**

पदार्थ :-यः = जो (सर्वनाम)। **अद्य =** आज (अव्यय)। **सेन्यः =** सेन्य, बन्धन योग्य (सि–सिन् = बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना)। **वधः =** वध करने वाला (वध्-हन् = मारना)। **अघ-यूनाम् =** हिंसा का, पाप का(अघ - पाप करना, अपराध करना)। **उत्-ईरते =** उत्कृष्ट प्रेरित करो, कम्पित करो (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, ईर् = कम्पन करना, जाना, जानना, पाना, फेकना, प्रेरणा करना)। **युवम्** = तुमको (सर्वनाम)। **तम् =** उसको, उसे (सर्वनाम)। **मित्रावरुणौ =** मित्र और वरुण, स्नेही तथा वरणीय (मिद् - स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, नरम होना, मृदुल होना, वृ = वरण करना, अपनाना, पसन्द करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **अस्मत् =** इससे, इस (सर्वनाम)। **यवयवतम् =** मिश्रित करो, पृथक् करो (यु = मिलाना, अलग करना, यव = समाप्त करना, उपसंहार करना)। **परि =** सभी तरफ (उपसर्ग)।**। 2 ।।**

90. इतः च यत् अमुतः च यत् वधम् वरुण यावय।
वि महत् शर्म यच्छ वरीयः यवम् वधम्।। 3 ।।

मन्त्रार्थ :- इतः = यहां से। **च =** और। **यत् =** जिसे, जो। **अमुतः =** इससे। **च =** और। **यत् =** जिसे, जो। **वधम् =** वध को। **वरुण =** वरुण। **यावय** = गति, ज्ञान, प्राप्त। **वि =** विशेष, विना, विलोम। **महत् =** महान्। **शर्म =** सुख, सम्मान, समृद्धि। **यच्छ =** दो, प्रदान करो। **वरीयः =** वरीय। **यवम् =** यव को। **वधम् =** वध को **।। 3 ।।**

पदार्थ :- इतः = यहां से। **च =** और (अव्यय)। **यत् =** जिसे, जो (सर्वनाम)। **अमुतः =** इससे (सर्वनाम)। **च =** और (अव्यय)। **यत् =** जिसे, जो (सर्वनाम)। **वधम् =** वध को (वध्-हन् = मारना)। **वरुण =** वरुण (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **यावय** = गति, ज्ञान, प्राप्त (या - जाना, जानना, पाना)। **वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **महत् =** महान् (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना)। **शर्म =** सुख, सम्मान, समृद्धि (शर्म् = सुख होना, श्रीमान् होना, सम्मानित होना)। **यच्छ =** दो, प्रदान करो (यच्छ = देना)। **वरीयः =** वरीय (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **यवम् =** यव को (यु = मिलाना, अलग करना, यव = समाप्त करना, उपसंहार करना)। **वधम् =** वध को (वध्-हन् = मारना)।**।। 3 ।।**

91. शासः इत्था महान् असि अमित्र-साहः अस्तृतः।
न यस्य हन्यते सखा न जीयते कदा चन।। 4 ।।

मन्त्रार्थ :- शासः = शासन करो। **इत्था =** इस प्रकार। **महान् =** बड़े, पूज्य, महान्। **असि =** हो। **अमित्र-साहः =** अमित्र को सहन करने वाला। **अस्तृतः =** अनाच्छादित, अपूर्ण। **न =** नहीं, समान, उपमार्थक। **यस्य =** जिसका। **हन्यते =** मारने योग्य। **सखा =** मित्र। **न =** नहीं, समान, उपमार्थक। **जीयते** = जीता जाता है। **कदा =** कब। **चन =** ही।**। 4 ।।**

पदार्थ :- शासः = शासन करो (शास् - शासन करना)। **इत्था =** इस प्रकार (अव्यय)। **महान् =** बड़े, पूज्य, महान् (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना)। **असि =** हो (अस् - होना)। **अमित्र-साहः =** अमित्र को सहन करने वाला (अ = नहीं, मिद् = स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, नरम होना, मृदुल होना, सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)। **अस्तृतः =** अनाच्छादित, अपूर्ण (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, स्तृ - पूर्ण करना, आच्छादित करना, ढकना, फैलाना)। **न =** नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **यस्य =** जिसका (सर्वनाम)। **हन्यते =** मारने योग्य (हन् - मारना)। **सखा** = मित्र (सख् = मित्र होना)। **न =** नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **जीयते** = जीता जाता है (जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)। **कदा =** कब (सर्वनाम)। **चन =** ही।**। 4 ।।**

21 शत्रुनिवारण सूक्त - 10 (21)

92. स्वस्ति-दाः विशाम् पतिः वृत्र-हा वि-मृधो वशी।
वृषा इन्द्रः पुरः एतु नः सोम-पाः अभयम्-करः॥ 1॥

मन्त्रार्थ :- स्वस्ति-दाः = कल्याणकारी दान। **विशाम्** = प्रवेशी को। **पतिः** = ऐश्वर्यवान्, स्वामी। **वृत्र-हा** = वृत्र (हिंसा) का हनन करने वाले । **वि-मृधो** = विशेष हिंसक, विशेष आद्र। **वशी** = वश, इच्छा। **वृषा** = पराक्रमी। **इन्द्रः** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान। **पुरः** = पहले। **एतु** = प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा। **सोम-पाः** = सोम का पालक-रक्षक, सोमपान करने वाला। **अभयम्-करः** = अभय, भय-हीन करना, भय-मुक्त करना॥ **1॥**

पदार्थ :- स्वस्ति-दाः = कल्याणकारी दान, ऐश्वर्य युक्त दान (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्‌भुत सामर्थ्य, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, स्वस्ति = कल्याण, दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना)। **विशाम्** = प्रवेशी को (विश - भीतर जाना, चारों ओर फैलना, विश - घुसना, भीतर जाना, धंसना)। **पतिः** = ऐश्वर्यवान्, स्वामी (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **वृत्र-हा** = वृत्र (हिंसा) का हनन करने वाले (वृ - वरण करना, आच्छादन करना, स्वीकार करना, वृत् - वर्तना, वर्तमान होना वरण करना, सेवा करना, चमकना, बोलना, हिंसा करना, हन् - हिंसा करना)। **वि-मृधो** = विशेष हिंसक, विशेष आद्र (वि = विशेष, विना, विलोम, मृध - दबाना, हिंसा करना, मार डालना, दुःख देना, आद्र करना, गीला करना, गीला होना)। **वशी** = वश, इच्छा (वश् = इच्छा करना, चाहना, चमकना)। **वृषा** = पराक्रमी (वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना या पीड़ा करना, दुःख देना, पीड़ित करना)। **इन्द्रः** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **पुरः** = पहले (पुरो = पहले, अव्यय)। **एतु** = प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना, इच्छा करना, प्रेरणा करना, ए - जाना, फैलना, व्यापना, गर्भवती होना, इच्छा करना, चाहना, खाना, उड़ाना, फेंकना, भेजना, प्रेरणा करना)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **सोम-पाः** = सोम का पालक-रक्षक, सोमपान करने वाला (सु = उत्पन्न करना, अद्‌भुत सामर्थ्य, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना। सू = प्रेरणा देना। सो–स्य, सय् - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना। पा - पालन-रक्षण करना)। **अभयम्-करः** = अभय, भय-हीन करना, भय-मुक्त करना (अ - नहीं, भी = भय होना, डरना, घबराना, कृ - करना)।॥ **1॥**

93. वि नः इन्द्र मृधः जहि नीचा यच्छ पृतन्यतः।
अधमम् गमय तमः यः अस्मान् अभि-दासति॥ 2॥

मन्त्रार्थ :- इन्द्र - हे इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, **नः** - हमारा, **मृधो** - हिंसक को, **वि** - विशेष, **जहि** = नष्ट करो, **नीचा** - नीचा, **यच्छ** - दो, **पृतन्यतः** = व्यापक, बलात् निकालने वाले। **यो** - जो, **अस्मान्** - हमको, **अभिदासति** - काटता है, देता है, दास बनाता है, **अधमम्** - नीचे, **गमया** - ले जाओ, **तमः** - तमस् को॥ **2॥**

पदार्थ :- वि = विशेष, विना, विलोम। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा। **इन्द्र** = परम ऐश्वर्यशाली। **मृधः** = हिंसक को (मृध् - मार डालना या दुःख देना, आर्द्र करना, गीला करना, गीला होना)। **जहि** = हनन करो, नष्ट करो (जह - हिंसा करना, चलना, फैलना, जहा – परित्याग करना, छोड़ना)।। **नीचा** - नीचा, दास, सेवक (नीचा, नीच - दासत्व करना)। **यच्छ** = दो (यच्छ् = देना)। **पृतन्यतः** = व्यापक, बलात् निकालने वाले (पृत -व्याप्त होना, जीवन होना, बलपूर्वक निकालना, पृ = पूर्ण करना, प्रीति करना, प्रेम करना)। **यः** = जो। **अस्मान्** = हमको। **अभिदासति** - काटता है, देता है, दास बनाता है (अभि = सभी ओर, दास् - दान करना, देना, सौंपना, दासता करना, काटना)। **अधमम्** = नीचे को। गमय - ले जाओ (गम् = जाना)। **तमः** = तमस् को॥ **2॥॥ 2॥**

94. वि रक्षः वि मृधः जहि वि वृत्रस्य हनू रुज।
वि मन्युम् इन्द्र वृत्र-हन् अमित्रस्य अभि-दासतः॥ 3॥

मन्त्रार्थ :- वि = विशेष, विना, विलोम **रक्षो** = रक्षा करो **वि** = विशेष, विना, विलोम **मृधो** = हिंसक, आद्र **जहि** = हनन करो, नष्ट करो **वि** = विशेष, विना, विलोम **वृत्रस्य** = प्रकाश, वाणी के **हनू** = हनन करने वाले **रुज** = हिंसा करो, रुग्ण करो **वि** = विशेष, विना, विलोम **मन्युम्** = मन्यु को, गर्व को **इन्द्र** = परम ऐश्वर्यशाली **वृत्रहन्** = हिंसा का हनन करने वाले **अमित्रस्य** = अमित्र, अस्नेही का **अभिदासतः** = सर्वथा दान करने वाले ॥ 3 ॥

पदार्थ :- वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **रक्षो** = रक्षा करो (रक्ष - रक्षण करना, बचाना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **मृधो** = हिंसक, आद्र (मृध - दबाना, हिंसा करना, मार डालना, दुःख देना, आद्र करना, गीला करना, गीला होना)। **जहि** = हनन करो, नष्ट करो (जह - हिंसा करना, चलना, फैलना, जहा – परित्याग करना, छोड़ना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **वृत्रस्य** = प्रकाश, वाणी के (वृ - वरण करना, आच्छादन करना, स्वीकार करना, वृत् - वर्तना, वर्तमान होना वरण करना, सेवा करना, चमकना, बोलना, हिंसा करना)। **हनू** = हनन करने वाले (हन् - मारना)। **रुज** = हिंसा करो, रुग्ण करो (रुज् - हिंसा करना, रोग होना, कष्ट होना, टूटना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **मन्युम्** = मन्यु को, गर्व को (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **इन्द्र** = परम ऐश्वर्यशाली (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **वृत्रहन्** = हिंसा का हनन करने वाले (वृ - वरण करना, आच्छादन करना, स्वीकार करना, वृत् - वर्तना, वर्तमान होना वरण करना, सेवा करना, चमकना, बोलना, हिंसा करना, हन् - हिंसा करना)। **अमित्रस्य** = अमित्र, अस्नेही का (अ = नहीं, मिद् = प्रीति करना, स्नेह करना)। **अभिदासतः** = सर्वथा दान करने वाले (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, दास् - देना, दान करना) ॥ 3 ॥

95. अप इन्द्र द्विषतः मनः अप जिज्यासतः वधम्।
वि महत् शर्म यच्छ वरीयः यवय वधम् ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ :- अप = दूर, नीचे, अपकार। **इन्द्र** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान। **द्विषतः** = द्वेष करने वाले का। **मनः** = मन। **अप** = दूर, नीचे, अपकार। **जिज्यासतः** = विजेता, वर्द्धित। **वधम्** = वध को। **वि** = विशेष, विना, विलोम । **महत्** = महान्। **शर्म** = सुख, सम्मान, समृद्धि। **यच्छ** = दो, प्रदान करो। **वरीयः** = वरीय। **यवय** = मिश्रित करो, पृथक् करो। **वधम्** = वध को ॥ 4 ॥

पदार्थ :- अप = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। **इन्द्र** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **द्विषतः** = द्वेष करने वाले का (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)। **मनः** = मन (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **अप** = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। **जिज्यासतः** = विजेता, वर्द्धित (ज्या - जीर्ण होना, पुराना होना, वृद्ध होना, बर्द्धित होना, बड़ा होना, जि - जय होना, जीतना)। **वधम्** = वध को (वध्-हन् = मारना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **महत्** = महान् (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना)। **शर्म** = सुख, सम्मान, समृद्धि (शर्म् = सुख होना, श्रीमान् होना, सम्मानित होना)। **यच्छ** = दो, प्रदान करो (यच्छ = देना)। **वरीयः** = वरीय (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **यवय** = मिश्रित करो, पृथक् करो (यु = मिलाना, अलग करना, यव = समाप्त करना, उपसंहार करना)। **वधम्** = वध को (वध्-हन् = मारना)। ॥ 4 ॥

5 अनुवाक - 5

22 हृद्-रोगकमलानाशन सूक्त - 1 (22)

96. अनु सूर्यम् उत् अयताम् हृत्-द्योतः हरिमा च ते।
गो रोहितस्य वर्णेन तेन त्वा परि दध्मसि ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - अनु = पश्चात्, पीछे, अनुकूल **सूर्यम्** = सूर्य को **उत्** = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर,

उच्च **अयताम्** = गति, ज्ञान, प्राप्ति, उद्धार हो **हृत्-द्योतः** = हृदय-प्रकाश **हरिमा** = हरि **च** = और **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **गो** = शब्द करने वाला, मननशील, उपदेशक **रोहितस्य** = रोहित का **वर्णेन** = वर्ण द्वारा, वर्ण से **तेन** = उससे, उसके द्वारा **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **परि** = सभी तरफ **दध्मसि** = धारण करते हो ॥ 1 ॥

पदार्थ :- अनु = पश्चात्, पीछे, अनुकूल (उपसर्ग)। **सूर्यम्** = सूर्य को (सुर - ऐश्वर्य होना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना, सू - उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, ऐश्वर्य होना)। **उत्** = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)। **अयताम्** = गति, ज्ञान, प्राप्ति, उद्धार हो (अ - नहीं, यन् - उद्धार करना, प्रेरणा करना, अय् = जाना, जानना, पाना)। **हृत्-द्योतः** = हृदय-प्रकाश (हृ - प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, लेना, ग्रहण करना, नष्ट करना, द्युत् - प्रकाशित होना, द्यु - अभिगमन करना, आक्रमण करना, आगे जाना, समीप जाना, प्रकाश होना, जानना)। **हरिमा** = हरि (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)। **च** = और (अव्यय)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **गो** = शब्द करने वाला, मननशील, उपदेशक (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)। **रोहितस्य** = रोहित का (रुह = बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना, बढ़ना, चढ़ना)। **वर्णेन** = वर्ण द्वारा, वर्ण से (वृ - वरण करना, स्वीकार करना, वर्ण - वर्णन करना, चमकना, आज्ञा करना, प्रेरणा करना, भेजना, रंगना)। **तेन** = उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **परि** = सभी तरफ (उपसर्ग)। **दध्मसि** = धारण करते हो (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना) ॥ 1 ॥

97. परि त्वा रोहितैः वर्णैः दीर्घायु-त्वाय दध्मसि।
यथा अयम् अरपाः असत् अथो अहरितः भुवत् ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ :- परि = सभी तरफ। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा। **रोहितैः** = रोहित के लिए। **वर्णैः** = वर्ण। **दीर्घायु-त्वाय** = दीर्घ आयुत्व के लिए। **दध्मसि** = धारण करते हो। **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार। **अयम्** = यह। **अरपाः** = प्राप्त का रक्षक-पालक, गति-व्यवस्था का रक्षक। **असत्** = हो जाये। **अथो** = अब, इसके पश्चात्, इसके अनन्तर। **अहरितः** = व्यापक। **भुवत्** = होता हैं ॥ 2 ॥

पदार्थ :- परि = सभी तरफ (उपसर्ग)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **रोहितैः** = रोहित के लिए (रुह = बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना, बढ़ना, चढ़ना)। **वर्णैः** = वर्ण (वृ - वरण करना, स्वीकार करना, वर्ण - वर्णन करना, चमकना, आज्ञा करना, प्रेरणा करना, भेजना, रंगना)। **दीर्घायु-त्वाय** = दीर्घ आयुत्व के लिए (दृह - बढ़ना, वृद्धिगत होना)। **दध्मसि** = धारण करते हो (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)। **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार। **अयम्** = यह (सर्वनाम)। **अरपाः** = प्राप्त का रक्षक-पालक, गति-व्यवस्था का रक्षक (ऋ-अर् = जाना, जानना, पाना, महत्व दिखाना, शब्द करना, ध्वनि करना, हिंसा करना, रप - स्पष्ट बोलना, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **असत्** = हो जाये (अस् = होना)। **अथो** = अब, इसके पश्चात्, इसके अनन्तर (अव्यय)। **अहरितः** = व्यापक (अह् = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना) **भुवत्** = होता हैं (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना) ॥ 2 ॥

98. या रोहिणीः देवत्याः गावः याः उत रोहिणीः।
रूपम्-रूपम् वयः-वयः ताभिः त्वा परि दध्मसि ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ :- या = जो। **रोहिणीः** = रोहिणी, आरोहण करने वाली। **देवत्याः** = देवत्व का, दिव्यता का। **गावः** = शब्द, वाणी, वचन। **याः** = जो। **उत** = ही, भी, ओर। **रोहिणीः** = रोहिणी, आरोहण करने वाली। **रूपम्-रूपम्** = रचना, आकार, रूप को। **वयः-वयः** = वय, रचना। **ताभिः** = उनके द्वारा। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा। **परि** = सभी तरफ। **दध्मसि** = धारण करते हो ॥ 3 ॥

पदार्थ :- या = जो (सर्वनाम)। **रोहिणीः** = रोहिणी, आरोहण करने वाली (रुह - बढ़ना, ऊपर जाना, चढ़ना, बीज

से उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना)। **देवत्याः** = देवत्व का, दिव्यता का (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **गावः** = शब्द, वाणी, वचन (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)। **याः** = जो (सर्वनाम)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **रोहिणीः** = रोहिणी, आरोहण करने वाली (रुह - बढ़ना, ऊपर जाना, चढ़ना, बीज से उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना)। **रूपम्-रूपम्** = रचना, आकार, रूप को (रूप - बनाना, आकार बनाना, रचना करना, मन में रुपाकृति लाना)। **वयः-वयः** = वय, रचना (वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वा - गति करना, बहना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण करना, घेरना, भेजना, खाना, वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना) **ताभिः** = उनके द्वारा (सर्वनाम)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **परि** = सभी तरफ (उपसर्ग)। **दध्मसि** = धारण करते हो (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।। **3** ।।

99. सुकेषु ते हरिमाणम् रोपणाकासु दध्मसि।
अथो हारिद्रवेषु ते हरिमाणम् नि दध्मसि।। 4 ।।

मन्त्रार्थ :- **सुकेषु** = उत्तम वचनों में। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **हरिमाणम्** = ले जाने वालों का, हरण करने वालों का। **रोपणाकासु** = जागरूकता से प्रकाशित। **दध्मसि** = धारण करते हो। **अथो** = अब, इसके पश्चात्, इसके अनन्तर। **हारिद्रवेषु** = हरि को जानने वाला, हरि का अनुसरण करने वाला। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **हरिमाणम्** = ले जाने वालों का, हरण करने वालों का। **नि** = निश्चित, निरन्तर। **दध्मसि** = धारण करते हो।। **4** ।।

पदार्थ :- **सुकेषु** = उत्तम वचनों में (सु = उत्तम, अच्छा (उपसर्ग), कु-शब्द करना, अस्पष्ट बोलना, भौंरे के समान शब्द करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **हरिमाणम्** = ले जाने वालों का, हरण करने वालों का (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना, नष्ट करना)। **रोपणाकासु** = जागरूकता से प्रकाशित (रुप् - विकल चित्त होना, भ्रान्त होना, जागना, जागरूक होना, कास् = प्रकाश करना)। **दध्मसि** = धारण करते हो (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)। **अथो** = अब, इसके पश्चात्, इसके अनन्तर (अव्यय)। **हारिद्रवेषु** = हरि को जानने वाला, हरि का अनुसरण करने वाला (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना, द्रु - पिघलना, बहना, चलना, जाना, जानना, पाना, अनुसरण करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **हरिमाणम्** = ले जाने वालों का, हरण करने वालों का (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना, नष्ट करना)। **नि** = निश्चित, निरन्तर (अव्यय)। **दध्मसि** = धारण करते हो (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)।। **4** ।।

23 श्वेत कुष्ठ नाशन सूक्त - 2 (23)

100. नक्तम्-जाता असि ओषधे रामे कृष्णे असिक्नि च।
इदम् रजनि रजय किलासम् पलितम् च यत्।। 1 ।।

मन्त्रार्थ :- **नक्तम्-जाता** = रात्रि को उत्पन्न। **असि** = हो। **ओषधे** = हे ओषधि। **रामे** = राम के लिए, रमण के लिए। **कृष्णे** = कृष्ण के लिए। **असिक्नि** = असिक्नी, प्रकाशमान, प्रक्षेपणशील, प्रगतिशील। **च** = और। **इदम्** = यह, इसको। **रजनि** = रज। **रजय** = रज। **किलासम्** = किलास को। **पलितम्** = फलित-पुष्पित, शुद्ध को। **च** = और। **यत्** = जिसे, जो ।। **1** ।।

पदार्थ :- **नक्तम्-जाता** = रात्रि को उत्पन्न (नक्तम् = रात्रि (अव्यय) (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।)। **असि** = हो (अस् - होना)। **ओषधे** = हे ओषधि (उषध्-ओषध् - चिकित्सा करना, रोगमुक्त करना)। **रामे** = राम के लिए, रमण के लिए (रम् - रमना, रमण करना, रमणीय होना)। **कृष्णे** = कृष्ण के लिए, (कृष् = विलेखन, कर्षण करना, खींचना, आकर्षण होना, रेखा करना)। **असिक्नि** = असिक्नी, प्रकाशमान, प्रक्षेपणशील, प्रगतिशील (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, अस् - प्रक्षेपण करना, फेंकना, बिखेरना, उड़ाना, सिक्-सिङ्क्-सिज-सिञ्ज - अस्पष्ट शब्द करना)। **च** = और (अव्यय)। **इदम्** = यह, इसको (सर्वनाम)। **रजनि** = रज

(रज - रज होना, धूल होना, सूक्ष्म होना, रंग देना, रंगना, लीन होना)। **रजय** = रज (रज - रज होना, धूल होना, सूक्ष्म होना, रंग देना, रंगना, लीन होना)। **किलासम्** = किलास को (किल् - श्वेत होना, खेलना, भेजना, उड़ाना)। **पलितम्** = फलित-पुष्पित, शुद्ध को (पल् - जाना, फलित- पुष्पित होना, फल देना, काटना, गिराना, उढ़ाना, शुद्ध करना)। **च** = और (अव्यय)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)।**॥ 1 ॥**

101. किलासम् च पलितम् च निः इतः नाशय पृषत्।
आ त्वा स्वः विशताम् वर्णः परा शुक्लानि पातय॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ :- किलासम् = किलास को। **च** = और। **पलितम्** = फलित-पुष्पित, शुद्ध को। **च** = और। **निः** = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर। **इतः** = यहां से। **नाशय** = नाश करने वाली, विनाशिका। **पृषत्** = सींचने वाला, अभिसिञ्चन करने वाला। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा। **स्वः** = उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि। **विशताम्** = प्रविष्ट का। **वर्णः** = वर्ण। **परा** = परम्, परे, पीछे, विपरीत। **शुक्लानि** = शुक्ल के लिए, , त्यागी, रचनाशील, शुद्ध, पवित्र, पावन, पवित्रकर्ता के लिए। **पातय** = रक्षा करो, पालन करो।**॥ 2 ॥**

पदार्थ :- किलासम् = किलास को (किल् - श्वेत होना, खेलना, भेजना, उड़ाना)। **च** = और (अव्यय)। **पलितम्** = फलित-पुष्पित, शुद्ध को (पल् - जाना, फलित- पुष्पित होना, फल देना, काटना, गिराना, उढ़ाना, शुद्ध करना)। **च** = और (अव्यय)। **निः** = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग)। **इतः** = यहां से। **नाशय** = नाश करने वाली, विनाशिका (नश् - नष्ट होना, अदृश्य होना)। **पृषत्** = सींचने वाला, अभिसिञ्चन करने वाला (पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सींचना, सींचना, सहन करना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **स्वः** = उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना)। **विशताम्** = प्रविष्ट का (विश - घुसना, भीतर जाना, धंसना, चारों ओर फैलना)। **वर्णः** = वर्ण (वृ - वरण करना, स्वीकार करना, वर्ण - वर्णन करना, चमकना, आज्ञा करना, प्रेरणा करना, भेजना, रंगना)। **परा** = परम्, परे, पीछे, विपरीत (अव्यय)। **शुक्लानि** = शुक्ल के लिए, , त्यागी, रचनाशील, शुद्ध, पवित्र, पावन, पवित्रकर्ता के लिए (शुक्ल - त्याग करना, रचना करना, शुक् - जाना, शुच् - शुद्ध होना)। **पातय** = रक्षा करो, पालन करो (पा = रक्षा करना, पालन करना)।**॥ 2 ॥**

102. असितम् ते प्र-लयनम् आ-स्थानम् असितम् तव।
असिक्नी असि ओषधे निः इतः नाशय पृषत्॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ :- असितम् = अबन्धित, प्रकाशित। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **प्र-लयनम्** = प्रलय को। **आ-स्थानम्** = आस्थान को। **असितम्** = अबन्धित, प्रकाशित। **तव** = तुम्हारा। **असिक्नी** = असिक्नी, प्रकाशमान, प्रक्षेपणशील, प्रगतिशील। **असि** = हो। **ओषधे** = हे ओषधि। **निः** = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर। **इतः** = यहां से। **नाशय** = नाश करने वाली, विनाशिका। **पृषत्** = सींचने वाला, अभिसिञ्चन करने वाला।**॥ 3 ॥**

पदार्थ :- असितम् = अबन्धित, प्रकाशित (अ = नहीं, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, सि = बाँधना, गूँथना, फंदे से पकड़ना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **प्र-लयनम्** = प्रलय को (प्र - प्रकृष्ट, ली = कष्ट होना। ली = युक्त होना, प्राप्त होना, मिलना। ली = पतला करना, गलाना)। **आ-स्थानम्** = आस्थान को (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, अस् = होना, स्था = ठहरना)। **असितम्** = अबन्धित, प्रकाशित (अ = नहीं, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, सि = बाँधना, गूँथना, फंदे से पकड़ना)। **तव** = तुम्हारा (सर्वनाम)। **असिक्नी** = असिक्नी, प्रकाशमान, प्रक्षेपणशील, प्रगतिशील (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, अस् - प्रक्षेपण करना, फेंकना, बिखेरना, उड़ाना, सिक्-सिङ्क्-सिज-सिञ्ज - अस्पष्ट शब्द करना)। **असि** = हो (अस् - होना)। **ओषधे** = हे ओषधि (उषध्-ओषध् - चिकित्सा करना, रोगमुक्त करना)। **निः** = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग)। **इतः** = यहां से। **नाशय** = नाश करने वाली, विनाशिका (नश् - नष्ट होना, अदृश्य होना)। **पृषत्** = सींचने वाला, अभिसिञ्चन करने वाला (पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सींचना, सींचना, सहन करना)।**॥ 3 ॥**

103. अस्थि-जस्य किलासस्य तनू-जस्य च यत् त्वचि।
दूष्या कृतस्य ब्रह्मणा लक्ष्म श्वेतम् अनीनशम्॥ 4॥

मन्त्रार्थ :- अस्थि-जस्य = अस्थि, अस्तित्व का। **किलासस्य =** किलास का। **तनू-जस्य =** विस्तार। **च =** और । **यत् =** जिसे, जो। **त्वचि =** त्वचा, चर्म, खाल में। **दूष्या =** दूषक, दुष्टाचरण। **कृतस्य =** किये हुए का। **ब्रह्मणा** = ब्रह्म द्वारा। **लक्ष्म =** दृष्टि, विचार। **श्वेतम् =** श्वेत या शुभ्रता को। **अनीनशम् =** स्पन्दनशील, चेतना, प्राण को **॥ 4॥**

पदार्थ :- अस्थि-जस्य = अस्थि, अस्तित्व का (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, स्था- स्थित होना, ठहरना, जस् - मार डालना, पीड़ा देना, ताड़ना करना, उपेक्षा करना, मुक्त करना, छोड़ देना)। **किलासस्य =** किलास का (किल् - श्वेत होना, खेलना, भेजना, उड़ाना)। **तनू-जस्य =** विस्तार (तन् = विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना, जस् - मार डालना, पीड़ा देना, ताड़ना करना, उपेक्षा करना, मुक्त करना, छोड़ देना)। **च =** और (अव्यय)। **यत् =** जिसे, जो (सर्वनाम)। **त्वचि =** त्वचा, चर्म, खाल में (त्वच - आच्छादित करना, लपेटना, ढांकना)। **दूष्या =** दूषक, दुष्टाचरण (दूष् =दुष्टाचरण, दूषित होना, दूषित करना)। **कृतस्य =** किये हुए का (कृ = करना)। **ब्रह्मणा** = ब्रह्म द्वारा (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **लक्ष्म =** दृष्टि, विचार (लक्ष् - देखना, विचार करना)। **श्वेतम् =** श्वेत या शुभ्रता को (श्वित - श्वेत होना, शुभ्र होना, श्वि = जानना, जाना, बढ़ना)। **अनीनशम् =** स्पन्दनशील, चेतना, प्राण को (अन् = प्राण होना, चेतन होना, श्वास लेना, स्पन्दन करना, हलचल करना, जीवन होना, समर्थ होना, जाना) **॥ 4॥**

24 श्वेत कुष्ठ नाशन सूक्त - 3 (24)

104. सु-पर्णः जातः प्रथमः तस्य त्वम् पित्तम् आसिथ।
तत् आसुरी युधा जिता रूपम् चक्रे वनस्पतीन्॥ 1॥

मन्त्रार्थ :- सु-पर्णः = सुपर्ण, उत्तम पर्ण वाले। **जातः =** उत्पन्न। **प्रथमः =** प्रथम, पहला, विस्तार। **तस्य =** उसका । **त्वम् =** तुम। **पित्तम्** = पित्त को। **आसिथ =** आसीन, बैठे हुए। **तत् =** वह, उस को। **आसुरी =** आसुर सम्बन्धी, असुर सम्बन्धी। **युधा =** युद्ध करने वाला। **जिता =** जीतने वाला। **रूपम् =** रचना, आकार, रूप को। **चक्रे =** किया। **वनस्पतीन्** = वनस्पतियों को।**॥ 1॥**

पदार्थ :-सु-पर्णः = सुपर्ण, उत्तम पर्ण वाले (सु - उत्तम, श्रेष्ठ, पर्ण - हरा करना, हरा होना, पृ - पूर्ण करना, भरना)। **जातः =** उत्पन्न (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **प्रथमः =** प्रथम, पहला, विस्तार (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)। **तस्य =** उसका (सर्वनाम)। **त्वम् =** तुम (सर्वनाम)। **पित्तम्** = पित्त को (पि = जाना, जानना, पाना)। **आसिथ =** आसीन, बैठे हुए (अस् - होना, आस् - बैठना, उपस्थित होना, विद्यमान होना, जीवित रहना, होना)। **तत् =** वह, उस को (सर्वनाम)। **आसुरी =** आसुर सम्बन्धी, असुर सम्बन्धी (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना, सुर - अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, चमकना)। **युधा =** युद्ध करने वाला (युध - युद्ध करना, लड़ाई करना)। **जिता =** जीतने वाला (जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)। **रूपम् =** रचना, आकार, रूप को (रूप - बनाना, आकार बनाना, रचना करना, मन में रुपाकृति लाना)। **चक्रे =** किया (कृ - करना)। **वनस्पतीन्** = वनस्पतियों को (वन - शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, आपद्ग्रस्त होना, अलग करना, मिलाना, स्मरण करना, बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, याचना करना, मांगना, दुःख देना, उद्योग-धन्धा करना, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना, पा - पालन करना, रक्षा करना)।**॥ 1॥**

105. आसुरी चक्रे प्रथमा इदम् किलास-भेषजम् इदम् किलास-नाशनम्।

अनीनशत् किलासम् स-रूपाम् अकरत् त्वचम् ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ :- आसुरी = आसुर सम्बन्धी, असुर सम्बन्धी। **चक्रे** = किया। **प्रथमा** = प्रथम। **इदम्** = यह, इसको । **किलास-भेषजम्** = किलास भेषज को, किलास औषधि को। **इदम्** = यह, इसको। **किलास-नाशनम्** = किलास का नाश करने वाली को। **अनीनशत्** = स्पन्दनशील, चेतना, प्राण में। **किलासम्** = किलास को। **स-रूपाम्** = सरूप को। **अकरत्** = किया, कर्महीन, न करने वाले। **त्वचम्** = त्वचा, चर्म, खाल को।**॥ 2 ॥**

पदार्थ :- आसुरी = आसुर सम्बन्धी, असुर सम्बन्धी (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना, सुर - अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, चमकना)। **चक्रे** = किया (कृ - करना)। **प्रथमा** = प्रथम (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)। **इदम्** = यह, इसको (सर्वनाम)। **किलास-भेषजम्** = किलास भेषज को, किलास औषधि को (किल् - श्वेत होना, खेलना, भेजना, उड़ाना, भिषज् - रोग मुक्त करना, चिकित्सा करना, नष्ट करना, भेष - डरना, जाना, जानना, पाना)। **इदम्** = यह, इसको (सर्वनाम)। **किलास-नाशनम्** = किलास का नाश करने वाली को (किल् - श्वेत होना, खेलना, भेजना, उड़ाना, नश् - नष्ट होना, अदृश्य होना)। **अनीनशत्** = स्पन्दनशील, चेतना, प्राण में (अन् = प्राण होना, जीवन होना, चेतन होना, श्वास लेना, स्पन्दन करना, हलचल करना, समर्थ होना, जाना)। **किलासम्** = किलास को (किल् - श्वेत होना, खेलना, भेजना, उड़ाना)। **स-रूपाम्** = सरूप को (स = सहित, साथ (उपसर्ग)। रूप - बनाना, आकार बनाना, रचना करना, मन में रूपाकृति लाना)। **अकरत्** = किया, कर्महीन, न करने वाले (अ = नहीं, उपसर्ग, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, कृ = करना)। **त्वचम्** = त्वचा, चर्म, खाल को (त्वच - आच्छादित करना, लपेटना, ढांकना)।**॥ 2 ॥**

106. स-रूपा नाम ते माता स-रूपः नाम ते पिता।
सरूप-कृत् त्वम् ओषधे सा स-रूपम् इदम् कृधि ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ :- स-रूपा = सरूप। **नाम** = नाम वाले। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **माता** = माता, मान करने वाला । **स-रूपः** = सरूप। **नाम** = नाम वाले। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **पिता** = पिता, पालन करने वाला, पिता। **सरूप-कृत्** = सरूप करने वाले। **त्वम्** = वह, उस को। **ओषधे** = हे ओषधि। **सा** = वह। **स-रूपम्** = सरूप को। **इदम्** = यह, इसको। **कृधि** = करो।**॥ 3 ॥**

पदार्थ :- स-रूपा = सरूप (स = सहित, साथ (उपसर्ग)। रूप - बनाना, आकार बनाना, रचना करना, मन में रूपाकृति लाना)। **नाम** = नाम वाले (नाम - नाम होना, नाम रखना, नम् = नमन करना, सम्मान करना, शब्द करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **माता** = माता, मान करने वाला (मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना)। **स-रूपः** = सरूप (स = सहित, साथ (उपसर्ग)। रूप - बनाना, आकार बनाना, रचना करना, मन में रूपाकृति लाना)। **नाम** = नाम वाले (नाम - नाम होना, नाम रखना, नम् = नमन करना, सम्मान करना, शब्द करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **पिता** = पिता, पालन करने वाला, पिता (पि - जाना, जानना, पाना, पा- पालन करना, रक्षा करना)। **सरूप-कृत्** = सरूप करने वाले (स = सहित, साथ (उपसर्ग)। रूप - बनाना, आकार बनाना, रचना करना, मन में रूपाकृति लाना, कृ = करना)। **त्वम्** = वह, उस को (सर्वनाम)। **ओषधे** = हे ओषधि (उषध्-ओषध् - चिकित्सा करना, रोगमुक्त करना)। **सा** = वह (सर्वनाम)। **स-रूपम्** = सरूप को (स = सहित, साथ (उपसर्ग)। रूप - बनाना, आकार बनाना, रचना करना, मन में रूपाकृति लाना)। **इदम्** = यह, इसको (सर्वनाम)। **कृधि** = करो (कृ = करना)।**॥ 3 ॥**

107. श्याम सरूपम्-करणी पृथिव्याः अधि उत्-भृता।
इदम् ऊ सु प्र साधय पुनः रूपाणि कल्पय ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ :- श्याम = श्याम। **सरूपम्-करणी** = सरूप करने वाली। **पृथिव्याः** = पृथ्वी योग्य, पृथिवी के। **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार। **उत्-भृता** = उत्तम भरण, पोषण, धारण करने वाले । **इदम्**

= यह, इसको। **ऊ** = ही। **सु प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक। **साधय** = पूर्ण करो। **पुनः** = फिर। **रूपाणि** = रचना, आकार, रूप। **कल्पय** = समर्थ, रचनाशील।। **4** ।।

पदार्थ :- **श्याम** = श्याम (श्यम = वितर्क करना, विवाद करना, रंगना। श्यै - चलना, जाना, तैरना)। **सरूपम्-करणी** = सरूप करने वाली (स = सहित, साथ (उपसर्ग)। रूप - बनाना, आकार बनाना, रचना करना, मन में रूपाकृति लाना, कृ = करना)। **पृथिव्याः** = पृथ्वी योग्य, पृथिवी के (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)। **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **उत्-भृता** = उत्तम भरण, पोषण, धारण करने वाले (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च,भृ - भरण-पोषण, धारण करना)। **इदम्** = यह, इसको (सर्वनाम)। **ऊ** = ही (अव्यय)। **सु प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **साधय** = पूर्ण करो (साध - पूर्ण करना, सिद्ध करना, जय पाना, जीतना, यशस्वी होना, साधना करना)। **पुनः** = फिर (अव्यय)। **रूपाणि** = रचना, आकार, रूप (रूप - आकार बनाना, रचना करना, मन में रूपाकृति लाना)। **कल्पय** = समर्थ, रचनाशील (कल्प् - कल्पना करना, विचार करना, बनाना, रचना करना, शक्तिमान होना, समर्थ होना)।। **4** ।।

25 श्वेत कुष्ठ नाशन सूक्त - 4 (25)

108. यत् अग्निः अपो अदहत् प्रविश्य, यत्र अकृण्वन् धर्मधृतो नमांसि।
तत्र ते आहुः परमम् जनित्रम् सः नः सम्-वि द्वान् परि वृङ्गधि तक्मन्।। 1 ।।

मन्त्रार्थ :- **यत्** = जिसे, जो। **अग्निः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान्। **अपो** = पालन करने वाला। **अदहत्** = दहन किया, नष्ठ किया। **प्रविश्य** = प्रवेश करते हैं। **यत्र** = जहाँ। **अकृण्वन्** = किया। **धर्मधृतो** = धर्म धारण करने वाले । **नमांसि** = नमन करते हैं। **तत्र** = वहाँ। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **आहुः** = आदान-प्रदान किया हुआ, आहुत, आह्वान किये, बुलाये हुए, व्याप्त। **परमम्** = परम, अत्यन्त, उच्चतम, प्रमुखतम। **जनित्रम्** = उत्पादक, उत्पन्न कर्ता। **सः** = वह, उसने। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा। **सम्-विद्वान्** = सम्यक् विद्वान्। **परि** = सभी तरफ। **वृङ्ग्धि** = वर्जित करो, हटाओ, छोडो। **तक्मन्** = सहन करने वाले।। **1** ।।

पदार्थ :- **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **अग्निः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **अपो** = पालन करने वाला (अप = जाना, जानना, पाना, पालन करना)। **अदहत्** = दहन किया, नष्ठ किया (अ - नहीं (उपसर्ग), दह् - जलाना, नष्ट करना, दुःख देना)। **प्रविश्य** = प्रवेश करते हैं (प्र - प्रकृष्ट, विश् = प्रवेश करना, भीतर जाना)। **यत्र** = जहाँ (सर्वनाम)। **अकृण्वन्** = किया (अ = नहीं, उपसर्ग, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, कृ = करना)। **धर्मधृतो** = धर्म धारण करने वाले (धृ = धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना, स्थिर रहना, धृ - रहना, स्थिर रहना, धारण करना, पास रखना, युक्त होना)। **नमांसि** = नमन करते हैं (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **तत्र** = वहाँ (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **आहुः** = आदान-प्रदान किया हुआ, आहुत, आह्वान किये, बुलाये हुए, व्याप्त (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, अह - फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, हु - दान करना, आदान-प्रदान करना)। **परमम्** = परम, अत्यन्त, उच्चतम, प्रमुखतम (सर्वनाम)। **जनित्रम्** = उत्पादक, उत्पन्न कर्ता (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **सः** = वह, उसने (सर्वनाम)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **सम्-विद्वान्** = सम्यक् विद्वान् (सम् - सम्यक्, विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)। **परि** = सभी तरफ (उपसर्ग)। **वृङ्ग्धि** = वर्जित करो, हटाओ, छोडो (वृज = छोड़ना, वर्जित करना)। **तक्मन्** = सहन करने वाले (तक - सहन करना, उपहास करना, ठठ्ठा करना)।। **1** ।।

109. यदि अर्चिः यदि वा असि शोचिः शकल्य-एषि यदि वा ते जनित्रम्।
ह्रूडुः नाम असि हरितस्य देव, सः नः सम्-विद्वान् परि वृङ्गधि तक्मन्।। 2 ।।

मन्त्रार्थ :- **यदि** = यदि। **अर्चिः** = अर्चना, पूजा, सेवा, मान। **यदि** = यदि। **वा** = अथवा। **असि** = हूँ। **शोचिः** = शुद्ध, पवित्र। **शकल्य-एषि** = सक्षम, समर्थ में। **यदि** = यदि। **वा** = अथवा। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **जनित्रम्** =

उत्पादक, उत्पन्न कर्ता। **हूडुः** = हरण करने वाले। **नाम** = नाम वाले। **असि** = हूँ। **हरितस्य** = हरित, हरि का। **देव** = देव, विद्वान्, तेजस्वी, दिव्यस्वरूप। **सः** = वह, उसने। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा। **सम्-विद्वान्** = सम्यक् विद्वान्। **परि** = सभी तरफ। **वृङ्ग्धि** = वर्जित करो, हटाओ, छोडो। **तक्मन्** = सहन करने वाले **॥ 2 ॥**

पदार्थ :- यदि = यदि (अव्यय)। **अर्चिः** = अर्चना, पूजा, सेवा, मान (अर्च - पूजा करना, मान करना, सेवा करना)। **यदि** = यदि (अव्यय)। **वा** = अथवा (अव्यय)। **असि** = हूँ (सर्वनाम)। **शोचिः** = शुद्ध, पवित्र (शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना, शुद्ध - पवित्र करना, दुःख मानना, शोक करना)। **शकल्य-एषि** = सक्षम, समर्थ में (शक् - सक्षम होना, कर सकना, सहना, सहन करना)। **यदि** = यदि (अव्यय)। **वा** = अथवा (अव्यय)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **जनित्रम्** = उत्पादक, उत्पन्न कर्ता (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **हूडुः** = हरण करने वाले (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, लेना, ग्रहण करना, नष्ट करना)। **नाम** = नाम वाले (अव्यय)। **असि** = हूँ (सर्वनाम)। **हरितस्य** = हरित, हरि का (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)। **देव** = देव, विद्वान्, तेजस्वी, दिव्यस्वरूप (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **सः** = वह, उसने (सर्वनाम)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **सम्-विद्वान्** = सम्यक् विद्वान् (सम् - सम्यक्, विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)। **परि** = सभी तरफ (उपसर्ग)। **वृङ्ग्धि** = वर्जित करो, हटाओ, छोडो (वृज = छोड़ना, वर्जित करना)। **तक्मन्** = सहन करने वाले (तक - सहन करना, उपहास करना, ठठ्ठा करना) **॥ 2 ॥**

110. यदि शोकः यदि वा अभि-शोकः यदि वा राज्ञः वरुणस्य असि पुत्रः।
हूडुः नाम असि हरितस्य देव, सः नः सम्-विद्वान् परि वृङ्गधि तक्मन्॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ :- यदि = यदि। **शोकः** = शोक, दुःख, चिन्ता। **यदि** = यदि। **वा** = अथवा। **अभि-शोकः** = सर्वथा शोक, दुःख, चिन्ता। **यदि** = यदि। **वा** = अथवा। **राज्ञः** = प्रकाशित होने वाला, राजा का। **वरुणस्य** = वरुण का। **असि** = हूँ।। **पुत्रः** = पुत्र। **हूडुः** = हरण करने वाले। **नाम** = नाम वाले। **असि** = हूँ। **हरितस्य** = हरित, हरि का। **देव** = देव, विद्वान्, तेजस्वी, दिव्यस्वरूप। **सः** = वह, उसने। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा। **सम्-विद्वान्** = सम्यक् विद्वान्। **परि** = सभी तरफ। **वृङ्ग्धि** = वर्जित करो, हटाओ, छोडो। **तक्मन्** = सहन करने वाले **॥ 3 ॥**

पदार्थ :- यदि = यदि (अव्यय)। **शोकः** = शोक, दुःख, चिन्ता (शुक्-शुच् - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना, शुच् - दुःख मानना, शोक करना)। **यदि** = यदि (अव्यय)। **वा** = अथवा (अव्यय)। **अभि-शोकः** = सर्वथा शोक, दुःख, चिन्ता (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, शुक्-शुच् - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना, शुच् - दुःख मानना, शोक करना)। **यदि** = यदि (अव्यय)। **वा** = अथवा (अव्यय)। **राज्ञः** = प्रकाशित होने वाला, राजा का (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **वरुणस्य** = वरुण का (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **असि** = हूँ (सर्वनाम)। **पुत्रः** = पुत्र (पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)। **हूडुः** = हरण करने वाले (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, लेना, ग्रहण करना, नष्ट करना)। **नाम** = नाम वाले (अव्यय)। **असि** = हूँ (सर्वनाम)। **हरितस्य** = हरित, हरि का (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)। **देव** = देव, विद्वान्, तेजस्वी, दिव्यस्वरूप (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **सः** = वह, उसने (सर्वनाम)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **सम्-विद्वान्** = सम्यक् विद्वान् (सम् - सम्यक्, विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)। **परि** = सभी तरफ (उपसर्ग)। **वृङ्ग्धि** = वर्जित करो, हटाओ, छोडो (वृज = छोड़ना, वर्जित करना)। **तक्मन्** = सहन करने वाले (तक - सहन करना, उपहास करना, ठठ्ठा करना) **॥ 3 ॥**

111. नमः शीताय तक्मने, नमो रूपाय शोचिषे कृणोमि।
यो अन्येद्युः उभयद्युः अभि एति, तृतीयकाय नमो अस्तु तक्मने॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ :- नमः = नमन। **शीताय** = शीत के लिए। **तक्मने** = सहन करने के लिए। **नमो** = नमन। **रूपाय** = रचना, आकार, रूप के लिए। **शोचिषे** = शुद्ध, पवित्र के लिए। **कृणोमि** = करता हूँ। **यो** = जो। **अन्येद्युः** = अन्य दिन। **उभयद्युः** = दोनों दिन। **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा। **एति** = जाता है, प्राप्त होता है, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करता है। **तृतीयकाय** = तृतीय, तीसरे के लिए। **नमो** = नमन। **अस्तु** = हो। **तक्मने** = सहन करने के लिए।। **4** ।।

पदार्थ :- नमः = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **शीताय** = शीत के लिए (शि - तीक्ष्ण करना, पैना करना, पतला करना, सुनना, शी = सोना, शयन करना)। **तक्मने** = सहन करने के लिए (तक - सहन करना, उपहास करना, ठठ्ठा करना)। **नमो** = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **रूपाय** = रचना, आकार, रूप के लिए (रूप - रूप बनाना, आकार बनाना)। **शोचिषे** = शुद्ध, पवित्र के लिए (शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना, शुद्ध - पवित्र करना, दुःख मानना, शोक करना)। **कृणोमि** = करता हूँ (कृ = करना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **अन्येद्युः** = अन्य दिन (अव्यय)। **उभयद्युः** = दोनों दिन (अव्यय)। **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **एति** = जाता है, प्राप्त होता है, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करता है (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना, इच्छा करना, प्रेरणा करना)। **तृतीयकाय** = तृतीय, तीसरे के लिए (संख्या, सर्वनाम)। **नमो** = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **अस्तु** = हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **तक्मने** = सहन करने के लिए (तक - सहन करना, उपहास करना, ठठ्ठा करना)।। **4** ।।

26 शर्म (सुख) प्राति सूक्त - 5 (26)

112. आरे असौ अस्मद् अस्तु, हेतिः देवासो असत्।
आरे अश्मा यम् अस्यथ।। 1 ।।

मन्त्रार्थ :- आरे = दूर। **असौ** = यह। **अस्मद्** = हमसे। **अस्तु** = हो। **हेतिः** = हेति, गति, ज्ञान, प्राप्ति, वृद्धि, प्रेरणा। **देवासो** = देवगण। **असत्** = हो जाये। **आरे** = दूर। **अश्मा** = व्याप्त, व्यापक, प्राप्त। **यम्** = जिसे, जिसको। **अस्यथ** = स्थित हुआ, प्रकाशित हुआ, फेका।। **1** ।।

पदार्थ :- आरे = दूर (अव्यय)। **असौ** = यह (सर्वनाम)। **अस्मद्** = हमसे (सर्वनाम)। **अस्तु** = हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **हेतिः** = हेति, गति, ज्ञान, प्राप्ति, वृद्धि, प्रेरणा (हि - गति, वृद्धि, प्रेरणा करना, जाना, जानना, पाना)। **देवासो** = देवगण (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **असत्** = हो जाये (अस् = होना)। **आरे** = दूर (अव्यय)। **अश्मा** = व्याप्त, व्यापक, प्राप्त (अश् = भोजन करना, व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना)। **यम्** = जिसे, जिसको (सर्वनाम)। **अस्यथ** = स्थित हुआ, प्रकाशित हुआ, फेका (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)।। **1** ।।

113. सखा असौ अस्मभ्यम् अस्तु, रातिः सखा इन्द्रो भगः।
सविता चित्रराधाः।। 2 ।।

मन्त्रार्थ :- सखा = मित्र। **असौ** = यह। **अस्मभ्यम्** = हमारे लिए। **अस्तु** = हो। **रातिः** = अनुदान। **सखा** = मित्र।। **इन्द्रो** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान। **भगः** = भग, सेवा, सेवित, सेवनीय। **सविता** = सृष्टिकर्ता, उत्पन्न करने वाला, ऐश्वर्यवान् तथा ऐश्वर्य देने वाला। **चित्रराधाः** = चित्रराध वाला।। **2** ।।

पदार्थ :- सखा = मित्र (सख् = मित्र होना)। **असौ** = यह (सर्वनाम)। **अस्मभ्यम्** = हमारे लिए (सर्वनाम)। **अस्तु** = हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **रातिः** = अनुदान (रा - देना, मिल जाना)। **सखा** = मित्र (सख् = मित्र होना)। **इन्द्रो** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **भगः** = भग, सेवा, सेवित, सेवनीय (भग्-भज् = सेवा करना, सेवन करना, सेवित होना, दान करना, पकाना,

सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)। **सविता =** सृष्टिकर्ता, उत्पन्न करने वाला, ऐश्वर्यवान् तथा ऐश्वर्य देने वाला (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)। **चित्रराधाः =** चित्रराध वाला (चित्र् = चित्र बनाना, आश्चर्य करना, चि - चुनना, एकत्र करना, चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, सम्यक् ज्ञान होना, स्मरण करना, शंका करना, सन्देह करना। रध - शुद्ध होना, निर्दोष होना, पूर्ण करना, समाप्त करना, परिपक्व होना, अपकार करना, हिंसा करना, राध - बढ़ना, निर्णय करना, सिद्ध होना)।**॥ 2 ॥**

114. यूयम् नः प्र-वतः नपात् मरुतः सूर्य-त्वचसः।
शर्म यच्छाथ स-प्रथाः ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ :- यूयम् = तुम दोनों। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा। **प्र-वतः =** प्रवदा, प्रवक्ता, प्रकृष्ट बोलने वाला। **नपात् =** प्राप्त किया। **मरुतः =** मरणशील का, मरुत् का। **सूर्य-त्वचसः =** सूर्य की त्वचा, सूर्य के समान आच्छादन वाले । **शर्म =** सुख, सम्मान, समृद्धि। **यच्छाथ =** प्रदान करे। **स-प्रथाः =** सप्रथा, पूर्ण ज्ञान युक्त, विस्तृत।**॥ 3 ॥**

पदार्थ :- यूयम् = तुम दोनों (सर्वनाम)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **प्र-वतः =** प्रवदा, प्रवक्ता, प्रकृष्ट बोलने वाला (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, वद - कहना, समझाना)। **नपात् =** प्राप्त किया (नप - पहुंचना, जानना, पाना, शब्द करना, झंकार करना, चमकना, न - नहीं, पा - पालन करना, रक्षा करना, पत् - ऐश्वर्य होना, गिरना)। **मरुतः =** मरणशील का, मरुत् का (मृ = मरना, देहत्याग करना)। **सूर्य-त्वचसः =** सूर्य की त्वचा, सूर्य के समान आच्छादन वाले (सुर - ऐश्वर्य होना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना, सू - उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, ऐश्वर्य होना, त्वच - आच्छादित करना, लपेटना, ढांकना)। **शर्म =** सुख, सम्मान, समृद्धि (शर्म् = सुख होना, श्रीमान् होना, सम्मानित होना)। **यच्छाथ =** प्रदान करे (यच्छ = देना)। **स-प्रथाः =** सप्रथा, पूर्ण ज्ञान युक्त, विस्तृत (सप - पूर्ण ज्ञान होना, पूरा समझना, पूर्णतया जानना, संसक्त होना, संलग्न होना, मिलाप होना)।**॥ 3 ॥**

115. सुसूदत मृडत मृडय नः तनूभ्यः मयः तोकेभ्यः कृधि ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ :-सुसूदत = सुन्दर पवित्रता। **मृडत =** सुख। **मृडय =** सुखी करो। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा। **तनूभ्यः =** तनूओं द्वारा, विस्तारों द्वारा, वाणियों द्वारा। **मयः =** गति, ज्ञान। **तोकेभ्यः =** तोक, गति, वृद्धि, हिंसा, बल, दान, निवास द्वारा। **कृधि =** करो।**॥ 4 ॥**

पदार्थ :- सुसूदत = सुन्दर पवित्रता (सु - सुन्दर, अच्छा, सूद् - टपकना, झरना, आश्रय करना, शुद्ध करना, पवित्र करना) **मृडत =** सुख (मृड - सुखी होना, सुख देना)। **मृडय =** सुखी करो (मृड - सुखी होना, सुख देना)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **तनूभ्यः =** तनूओं द्वारा, विस्तारों द्वारा, वाणियों द्वारा (तन् = विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना)। **मयः =** गति, ज्ञान (मय् - जाना, जानना, पाना)। **तोकेभ्यः =** तोक, गति, वृद्धि, हिंसा, बल, दान, निवास द्वारा (तु - गति, वृद्धि, हिंसा करना, तुज् - बल होना, दान करना, निवास करना, ग्रहण करना, चमकना)। **कृधि =** करो (कृ = करना)।**॥ 4 ॥**

27 स्वस्ति अयन सूक्त - 6 (27)

116. अमूः पारे पृदाक्वः त्रि-सप्ताः निः-जरायवः।
तासाम् जरायु-भिः वयम् अक्ष्यौ अपि व्ययामसि अघ-योः परि-पन्थिनः ॥॥

मन्त्रार्थ :- अमूः = यह। **पारे =** पार के लिए। **पृदाक्वः =** पूर्ण करने वाले। त्रि-सप्ताः = त्रिसप्त। **निः-जरायवः =** निश्चित जीर्ण, वृद्ध या परिपक्व। **तासाम् =** उनका। **जरायु-भिः =** जीर्ण, वृद्ध या परिपक्व आयु द्वारा। **वयम् =** हम सब, हम लोग। **अक्ष्यौ =** अक्ष का, खेल, क्रीडा, दृष्टि, समूह, व्यापक का। **अपि =** भी, निकट। **व्ययामसि =** व्यय करते हो। **अघ-योः =** पापी, अपराधी। **परि-पन्थिनः =** परिपन्थी, सब ओर से धारण करने वाले।**॥ 1 ॥**

पदार्थ :- अमूः = यह (सर्वनाम)। **पारे =** पार के लिए (पार - कार्य पूर्ण करना, पृ - पूर्ण करना, पालन-पोषण

करना, प्रेम करना)। **पृदाक्वः** = पूर्ण करने वाले (पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना)। त्रि-सप्ताः = त्रिसप्त (त्रि = तीन, संख्या, सर्वनाम, सप्त = सात (संख्या))। **निः-जरायवः** = निश्चित जीर्ण, वृद्ध या परिपक्व (नि - निश्चित, निरन्तर,जृ - वृद्ध होना, जीर्ण होना)। **तासाम्** = उनका (सर्वनाम)। **जरायु-भिः** = जीर्ण, वृद्ध या परिपक्व आयु द्वारा (जृ - वृद्ध होना, जीर्ण होना, अय - जाना, जानना, पाना)। **वयम्** = हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **अक्ष्यौ** = अक्ष का, खेल, क्रीडा, दृष्टि, समूह, व्यापक का (अक्ष् - खेलना, देखना, व्याप्त होना, एकत्र होना)। **अपि** = भी, निकट (अव्यय)। **व्ययामसि** = व्यय करते हो (वि - विशेष, इ-अय् - जाना, जानना, पाना, व्यय - आच्छादन करना, उपयोग होना, खर्च होना, नाश होना)। **अघ-योः** = पापी, अपराधी (अघ् = पाप, अपराध करना)। **परि-पन्थिनः** = परिपन्थी, सब ओर से धारण करने वाले (परि = सभी तरफ, उपसर्ग, पन्थ् - जाना, घूमना)।। **1** ।।

117. विषूची एतु कृन्तती पिनाकम्-इव बिभ्रती।
विष्वक् पुनः-भुवाः मनः असम्-ऋद्धाः अघ-यवः ।। 2 ।।

मन्त्रार्थ :- विषूची = विसूची। **एतु** = प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे। **कृन्तती** = घेरता हूँ, कतरता हूँ। **पिनाकम्-इव** = जानने वाले के समान, शब्द करने वाले के समान। **बिभ्रती** = भरण, धारण करती हुई। **विष्वक्** = विश्व, व्याप्त। **पुनः-भुवाः** = फिर होने वाला। **मनः** = मन। **असम्-ऋद्धाः** = अस वृद्धि को, प्रकाश वृद्धि को, गति वृद्धि को। **अघ-यवः** = पापी, अपराधी।। **2** ।।

पदार्थ :- विषूची = विसूची (विष - सींचना, प्रोक्षण करना, सूच - सूचना करना, बात कहना, जताना, दूसरे की न्यूनता दिखाना। सु - उत्पन्न करना)। **एतु** = प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना, इच्छा करना, प्रेरणा करना, ए - जाना, फैलना, व्यापना, गर्भवती होना, इच्छा करना, चाहना, खाना, उड़ाना, फेंकना, भेजना, प्रेरणा करना)। **कृन्तती** = घेरता हूँ, कतरता हूँ (कृन्त = घेरना, कतरना)। **पिनाकम्-इव** = जानने वाले के समान, शब्द करने वाले के समान (पि = जाना, जानना, पिण् - शब्द करना, इव = समान, की भाँति, के समान (अव्यय))। **बिभ्रती** = भरण, धारण करती हुई (भृ- भरना, भरण करना, धारण करना)। **विष्वक्** = विश्व, व्याप्त (विष्ण-विष् -विविष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना, व्यापना, फैलना, प्रसृत होना)। **पुनः-भुवाः** = फिर होने वाला (पुनः = फिर (अव्यय) भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **मनः** = मन (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **असम्-ऋद्धाः** = अस वृद्धि को, प्रकाश वृद्धि को, गति वृद्धि को (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, ऋध् -वृद्धि होना, वृद्धि करना, समृद्धि होना, ऐश्वर्य होना, आनन्दित करना, पूर्ण करना)। **अघ-यवः** = पापी, अपराधी (अघ् = पाप, अपराध करना)।। **2** ।।

118. न बहवः सम् अशकन् न अर्भकाः अभि दधृषुः।
वेणोः अद्गाः-इव अभितः असम्-ऋद्धाः अघ-यवः ।। 3 ।।

मन्त्रार्थ :- न = नहीं, समान, उपमार्थक। **बहवः** = बहुत। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति। **अशकन्** = असह, असमर्थ, सह सका, समर्थ हुआ। **न** = नहीं, समान, उपमार्थक। **अर्भकाः** = अर्भक के लिए। **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा। **दधृषुः** = धारण करे, धारण किया। **वेणोः** = जाना, समझना, जानना, स्मरण करना। **अद्गाः-इव** = भोग के समान, आत्मसात् के समान। **अभितः** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा। **असम्-ऋद्धाः** = समृद्धि रहित, असमृद्ध। **अघ-यवः** = पापी, अपराधी।। **3** ।।

पदार्थ :- न = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **बहवः** = बहुत (सर्वनाम)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **अशकन्** = असह, असमर्थ, सह सका, समर्थ हुआ (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, शक - सहना, सहन करना, समर्थ होना)। **न** = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **अर्भकाः** = अर्भक के लिए (ऋ - जाना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना, पहुँचाना, अर्-ऋ - गति करना, जाना, जानना, पाना, शब्द करना, व्याप्त होना, मिलाना,

महत्व दिखाना, हिंसा करना)। **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **दधृषुः** = धारण करे, धारण किया (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)। **वेणोः** = जाना, समझना, जानना, स्मरण करना (वेण् - जाना, समझना, जानना, स्मरण करना, सारासार विचार करना, तारतम्य देखना, वाद्ययन्त्र बजाना, वाद्ययन्त्र हाथ में लेना)। **अद्गाः-इव** = भोग के समान, आत्मसात् के समान (अद् = खाना, भोग करना, ग्रहण करना, आत्मसात् करना, इव = समान, की भाँति, के समान (अव्यय))। **अभितः** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (सर्वनाम)। **असम्-ऋद्धाः** = समृद्धि रहित, असमृद्ध (अ- नही, ऋध् -वृद्धि होना, वृद्धि करना, समृद्धि होना, ऐश्वर्य होना, आनन्दित करना, पूर्ण करना)। **अघ-यवः** = पापी, अपराधी (अघ् = पाप, अपराध करना)।। **3** ।।

119. प्र इतम् पादौ प्र स्फुरतम् वहतम् पृणतः गृहान्।
इन्द्राणी एतु प्रथमा अजीता अमुषिता पुरः ।। 4 ।।

मन्त्रार्थ :- **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक। **इतम्** = पाये, गति, ज्ञान, प्रकाश प्राप्त किया। **पादौ** = पादयुगल, दो पैर । **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक। **स्फुरतम्** = स्फुरण को। **वहतम्** = वहन करते हो, लाते हो, वहन करने वाले को। **पृणतः** = पूर्ण करो, पालन करो। **गृहान्** = घरों को। **इन्द्राणी** = इन्द्राणी, परम ऐश्वर्यशाली। **एतु** = प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे। **प्रथमा** = प्रथम। **अजीता** = अजित। **अमुषिता** = चोरी नहीं हुआ। **पुरः** = पहले।। **4** ।।

पदार्थ :- **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **इतम्** = पाये, गति, ज्ञान, प्रकाश प्राप्त किया (इ - जाना, जानना, पाना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)। **पादौ** = पादयुगल, दो पैर (पद् - चलना, भूषित होना)। **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **स्फुरतम्** = स्फुरण को (स्फुर - हिलना, स्फुरित होना, जाना, फैलना, सूझना)। **वहतम्** = वहन करते हो, लाते हो, वहन करने वाले को (वह् = वहन करना, ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)। **पृणतः** = पूर्ण करो, पालन करो (पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना)। **गृहान्** = घरों को (गृह - लेना, स्वीकार करना, निवास करना)। **इन्द्राणी** = इन्द्राणी, परम ऐश्वर्यशाली (इन्द = परम ऐश्वर्य होना)। **एतु** = प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना, इच्छा करना, प्रेरणा करना, ए - जाना, फैलना, व्यापना, गर्भवती होना, इच्छा करना, चाहना, खाना, उड़ाना, फेंकना, भेजना, प्रेरणा करना)। **प्रथमा** = प्रथम (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)। **अजीता** = अजित (जि-सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना, अज् - जाना, स्थापना, दौड़ाना, फेकना)। **अमुषिता** = चोरी नहीं हुआ (अ- नही, मुष् - चोरी करना)। **पुरः** = पहले (पुरो = पहले, अव्यय)।। **4** ।।

28 रक्षोघ्न सूक्त - 7 (28)

120. उप प्र अगात् देवो अग्नि, रक्षोहा अमीवचातनः।
दहन् अप द्वयाविनो, यातु धानान् किमीदिनः ।। 1 ।।

मन्त्रार्थ :- **उप** = समीप। **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक। **अगात्** = भ्रमण किया, गया, प्राप्त किया, स्तुति की। **देवो** = देव। **अग्निः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान्। **रक्षोहा** = रक्षा का विचार करने वाले, रक्षकों का हनन करने वाले । **अमीवचातनः** = शब्द, गति, सेवा युक्त, अहिंसक। **दहन्** = जलाओ। **अप** = दूर, नीचे, अपकार। **द्वयाविनो** = युगल । **यातु-धानान्** = यातुधानों को। **किमीदिनः** = यह क्या है, ऐसे भाव वाले को, जिज्ञासु ।। **1** ।।

पदार्थ :- **उप** = समीप (उपसर्ग)। **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **अगात्** = भ्रमण किया, गया, प्राप्त किया, स्तुति की (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अग् = जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, गति करना, घूमना, कुटिल गति करना, टेढ़ा जाना, लेना, ग्रहण करना, गम् = जाना, जानना, पाना, गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना)। **देवो** = देव (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **अग्निः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **रक्षोहा** = रक्षा का विचार करने वाले, रक्षकों का हनन करने वाले (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना, ऊह् - अनुमान करना, विचार करना। हन - मार डालना, प्राप्त

करना, जाना, समाप्त करना)। **अमीवचातनः** = शब्द, गति, सेवा युक्त, अहिंसक (अम् = गति, शब्द, सेवा करना, रोग होना, अ + मा, अ - नहीं, मा = मापना, नापना, तौलना, मि - फेकना, स्थापना करना, रक्षा करना, मी - हिंसा करना, मारना, वच् - बोलना, कहना)। **दहन्** = जलाओ (दह् - जलाना, नष्ट करना, दुःख देना)। **अप** = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। **द्वयाविनो** = युगल (द्वि = दो, संख्या)। **यातु-धानान्** = यातुधानों को (या - जाना, यत् - यत्न करना, प्रयास करना, उद्योग करना, दुःख देना, छाया-आच्छादन करना, रोकना, धा = धारण करना)। **किमीदिनः** = यह क्या है, ऐसे भाव वाले को, जिज्ञासु (किम् - क्या (सर्वनाम), इदम् - यह, इसको (सर्वनाम)) **॥ 1 ॥**

121. प्रति दह यातु-धानान्, प्रति देव किमीदिनः।
प्रतीचीः कृष्ण-वर्तने, सम् दह यातुधान्यः ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ :- प्रति = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में। **दह** = जलाओ। **यातु-धानान्** = यातुधानों को। **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में। **देव** = देव, विद्वान्, तेजस्वी, दिव्यस्वरूप। **किमीदिनः** = यह क्या है, ऐसे भाव वाले को, जिज्ञासु। **प्रतीचीः** = प्रतिकूल, पीछे, पश्चिम। **कृष्ण-वर्तने** = कृष्णवर्तन के लिए। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति। **दह** = जलाओ। **यातुधान्यः** = यातुधान के योग्य। **॥ 2 ॥**

पदार्थ :- प्रति = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग)। **दह** = जलाओ (दह् - जलाना, नष्ट करना, दुःख देना)। **यातु-धानान्** = यातुधानों को (या - जाना, यत् - यत्न करना, प्रयास करना, उद्योग करना, दुःख देना, छाया-आच्छादन करना, रोकना, धा = धारण करना)। **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग)। **देव** = देव, विद्वान्, तेजस्वी, दिव्यस्वरूप (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **किमीदिनः** = यह क्या है, ऐसे भाव वाले को, जिज्ञासु (किम् - क्या (सर्वनाम), इदम् - यह, इसको (सर्वनाम))। **प्रतीचीः** = प्रतिकूल, पीछे, पश्चिम (सर्वनाम)। **कृष्ण-वर्तने** = कृष्णवर्तन के लिए (कृष् = विलेखन, कर्षण करना, खींचना, आकर्षण होना, रेखा करना, वृत् - वर्तन करना, वर्ताव करना, रहना, होना, वरण करना, स्वीकार करना, हिंसा करना, सेवा करना, चमकना, बोलना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **दह** = जलाओ (दह् - जलाना, नष्ट करना, दुःख देना)। **यातुधान्यः** = यातुधान के योग्य (या - जाना, यत् - यत्न करना, प्रयास करना, उद्योग करना, दुःख देना, छाया-आच्छादन करना, रोकना, धा = धारण करना)। **॥ 2 ॥**

122. या शशाप शपनेन या अघम् मूरम् आ-दधे।
या रसस्य हरणाय जातम् आ-रेभे तोकम् अत्तु सा ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ :- या = जो। **शशाप** = शपथ, प्रतिज्ञा, शाप। **शपनेन** = शपथ, प्रतिज्ञा, शाप द्वारा। **या** = जो। **अघम्** = पाप को। **मूरम्** = घेरा, घेरने वाले को। **आ-दधे** = सम्यक् धारण करता हूँ, ग्रहण करता हूँ। **या** = जो। **रसस्य** = रस का। **हरणाय** = हर, हरने वाला, ले जाने वाला, पहुँचाने वाला। **जातम्** = उत्पन्न हुआ, उत्पन्न हुए को। **आ-रेभे** = सम्यक् गति, ज्ञान, शब्द के लिए। **तोकम्** = तोक, गति, वृद्धि, हिंसा, बल, दान, निवास को। **अत्तु** = खाये। **सा** = वह। **॥ 3 ॥**

पदार्थ :- या = जो (सर्वनाम)। **शशाप** = शपथ, प्रतिज्ञा, शाप (शप् - शपथ करना, सौगन्ध खाना, प्रतिज्ञा करना, शाप देना, गाली देना)। **शपनेन** = शपथ, प्रतिज्ञा, शाप द्वारा (शप् - शपथ करना, सौगन्ध खाना, प्रतिज्ञा करना, शाप देना, गाली देना)। **या** = जो (सर्वनाम)। **अघम्** = पाप को (अघ - पाप करना, अपराध करना)। **मूरम्** = घेरा, घेरने वाले को (मुर - घेरना, लपेटना)। **आ-दधे** = सम्यक् धारण करता हूँ, ग्रहण करता हूँ (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, दध् - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना, आ-दध् - ग्रहण करना, लेना)। **या** = जो (सर्वनाम)। **रसस्य** = रस का (रस - स्वाद लेना, चखना, प्रीति करना, प्यार करना)। **हरणाय** = हर, हरने वाला, ले जाने वाला, पहुँचाने वाला (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)। **जातम्** = उत्पन्न हुआ, उत्पन्न हुए को (जन-उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **आ-रेभे** = सम्यक् गति, ज्ञान, शब्द के लिए (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, रभ - आनन्द होना, आरम्भ करना, रा - देना, रि - जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, री - गति करना, झरना-टपकना, लेना, शब्द करना, सुनना))। **तोकम्** = तोक, गति, वृद्धि, हिंसा, बल, दान, निवास को (तु - गति, वृद्धि, हिंसा करना,

तुज् - बल होना, दान करना, निवास करना, ग्रहण करना, चमकना)। **अत्तु =** खाये (अद् - खाना)। **सा =** वह (सर्वनाम)।। **3 ।।**

123. पुत्रम् अत्तु यातु-धानीः स्वसारम् उत नप्त्यम्।
अध मिथः वि-केश्यः वि घ्नताम् यातु-धान्यः वि तृह्यन्ताम् अराय्यः ।। 4 ।।

मन्त्रार्थ :- पुत्रम् = पुत्र को। **अत्तु =** खाये। **यातु-धानीः =** यातुधान। **स्वसारम् =** स्वगति, उत्तम गति, उत्तम गृह को। **उत =** ही, भी, ओर। **नप्त्यम् =** प्राप्त करने वाले को, विद्वान् को। **अध =** नीचे। **मिथः =** मिथ, एकत्र, संयुक्त, प्रबुद्ध, ज्ञानी। **वि-केश्यः =** विशेष गति, विशेष व्याप्त। **वि =** विशेष, विना, विलोम। **घ्नताम् =** हनन करने वाले को, नष्ट करने वाले को। **यातु-धान्यः =** यातुधान के योग्य। **वि =** विशेष, विना, विलोम। **तृह्यन्ताम् =** हिंसकों का। **अराय्यः =** अदान, गतिहीन, शब्दहीन, हिंसक, गतिशील, व्यापक।। **4 ।।**

पदार्थ :- पुत्रम् = पुत्र को (पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)। **अत्तु =** खाये (अद् - खाना)। **यातु-धानीः =** यातुधान (या - जाना, यत् - यत्न करना, प्रयास करना, उद्योग करना, दुःख देना, छाया-आच्छादन करना, रोकना, धा = धारण करना)। **स्वसारम् =** स्वगति, उत्तम गति, उत्तम गृह को (सु = उत्तम, अच्छा, स्व - अपना, सृ = जाना, जानना, पाना, पहुंचना, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **नप्त्यम् =** प्राप्त करने वाले को, विद्वान् को (नप - पहुंचना, जानना, पाना, शब्द करना, झंकार करना, चमकना)। **अध =** नीचे (अव्यय)। **मिथः =** मिथ, एकत्र, संयुक्त, प्रबुद्ध, ज्ञानी (मिथ् - समझना, जानना, पीड़ा करना, दुःख देना, एकत्र करना, जोड़ना, जुड़ाना, संयुक्त करना)। **वि-केश्यः =** विशेष गति, विशेष व्याप्त (वि - विशेष, किश्-केश्-किस् - गति करना, बाल उगना, व्याप्त होना, फैलना)। **वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **घ्नताम् =** हनन करने वाले को, नष्ट करने वाले को (हन् - मारना)। **यातु-धान्यः =** यातुधान के योग्य (या - जाना, यत् - यत्न करना, प्रयास करना, उद्योग करना, दुःख देना, छाया-आच्छादन करना, रोकना, धा = धारण करना)। **वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **तृह्यन्ताम् =** हिंसकों का (तृह्-तृंह् = हिंसा करना)। **अराय्यः =** अदान, गतिहीन, शब्दहीन, हिंसक, गतिशील, व्यापक (अ - नहीं, रा-देना, लेना, ग्रहण करना, रय् = जाना, जानना, पाना, रै = शब्द करना, ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना)।। **4 ।।**

6 अनुवाक - 6

29 राष्ट्र अभिवर्धन सपत्नक्षयण सूक्त - 1 (29)

124. अभि-वर्तेन मणिना येन इन्द्रः अभि-ववृधे।
तेन अस्मान् ब्रह्मणः पते अभि राष्ट्राय वर्धय ।। 1 ।।

मन्त्रार्थ :- अभि-वर्तेन = सभी ओर वरण करने वाले। **मणिना =** मणि, शब्द। **येन =** जिससे, जिसके द्वारा। **इन्द्रः =** इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान। **अभि-ववृधे =** सभी ओर बढ़ने के लिए, चमकने के लिए। **तेन =** उससे, उसके द्वारा। **अस्मान् =** हमें, हमको। **ब्रह्मणः =** महान्, बड़ा, बृहत्। **पते =** हे पति। **अभि =** अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा। **राष्ट्राय =** राष्ट्र के लिए। **वर्धय =** बढ़ो, बढ़ाओ।। **1 ।।**

पदार्थ :- अभि-वर्तेन = सभी ओर वरण करने वाले (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, वृत् - वर्तन करना, वर्ताव करना, रहना, होना, वरण करना, स्वीकार करना, हिंसा करना, सेवा करना, चमकना, बोलना)। **मणिना =** मणि, शब्द (मण् - शब्द करना)। **येन =** जिससे, जिसके द्वारा। **इन्द्रः =** इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **अभि-ववृधे =** सभी ओर बढ़ने के लिए, चमकने के लिए (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, वृध् = बढ़ना, चमकना, बोलना)। **तेन =** उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **अस्मान् =** हमें, हमको (सर्वनाम)। **ब्रह्मणः =** महान्, बड़ा, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **पते =** हे पति (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **अभि =** अभिमुख,

विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **राष्ट्राय** = राष्ट्र के लिए (रास = शब्द करना। राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **वर्धय** = बढ़ो, बढ़ाओ (वृध् = बढ़ना, चमकना, बोलना)।। **1** ।।

125. अभि-वृत्य स-पत्नान् अभि याः नः अरातयः।
अभि पृतन्यन्तम् तिष्ठ अभि यः नः दुरस्यति।। 2 ।।

मन्त्रार्थ :- **अभि-वृत्य** = सभी ओर वरण करने वाले। **स-पत्नान्** = सपत्नों को, ऐश्वर्यवान को। **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा। **याः** = जो। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा। **अरातयः** = अदानी। **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा। **पृतन्यन्तम्** = व्यापक, बलात् निकालने वाले को। **तिष्ठ** = उठो, ठहरो, खड़े हो। **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा। **यः** = जो। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा। **दुरस्यति** = दुःख हो, दूर हो।। **2** ।।

पदार्थ :- **अभि-वृत्य** = सभी ओर वरण करने वाले (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, वृत् - वर्तन करना, वर्ताव करना, रहना, होना, वरण करना, स्वीकार करना, हिंसा करना, सेवा करना, चमकना, बोलना)। **स-पत्नान्** = सपत्नों को, ऐश्वर्यवान को (स - सहित, साथ। पत् = जाना, उड़ना, पतन होना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **याः** = जो (सर्वनाम)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **अरातयः** = अदानी (अ - नहीं, रा = देना, रम् - रमना, रमण करना, रम जाना, रत होना, क्रीडा करना, प्रिय होना, मूल्यवान होना)। **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **पृतन्यन्तम्** = व्यापक, बलात् निकालने वाले (पृत -व्याप्त होना, जीवन होना, बलपूर्वक निकालना, पृ = पूर्ण करना)। **तिष्ठ** = उठो, ठहरो, खड़े हो (तिष्ठ् = ठहरना, खड़ा होना)। **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **यः** = जो (सर्वनाम)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **दुरस्यति** = दुःख हो, दूर हो (दुः = बुरा, अनुचित, कठिन, दु-दुर् = जाना, दूर जाना, दुःख होना, दुःख भोगना, तप्त करना, जलना, जलाना)।। **2** ।।

126. अभि त्वा देवः सविता अभि सोमः अवीवृधत्।
अभि त्वा विश्वा भूतानि अभि-वर्तः यथा अससि।। 3 ।।

मन्त्रार्थ :- **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा। **देवः** = देव। **सविता** = सृष्टिकर्ता, उत्पन्न करने वाला, ऐश्वर्यवान् तथा ऐश्वर्य देने वाला। **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा। **सोमः** = सृजन-ऐश्वर्य-अन्तकर्ता, ऐश्वर्यवान्, सृष्टिकर्ता। **अवीवृधत्** = व्यापकता, रक्षा से वर्धित, बढ़ा हुआ। **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा। **विश्वा** = विश्व, सभी, सब। **भूतानि** = भूतों को, उत्पन्न हुओं को। **अभि-वर्तः** = सभी ओर वरण करने वाले। **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार। **अससि** = हो।। **3** ।।

पदार्थ :- **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **देवः** = देव (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **सविता** = सृष्टिकर्ता, उत्पन्न करने वाला, ऐश्वर्यवान् तथा ऐश्वर्य देने वाला (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)। **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **सोमः** = सृजन-ऐश्वर्य-अन्तकर्ता, ऐश्वर्यवान्, सृष्टिकर्ता, (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामथ्य, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना। सू = प्रेरणा देना। सो–स्य, सय - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना)। **अवीवृधत्** = व्यापकता, रक्षा से वर्धित, बढ़ा हुआ (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, वी- जाना, व्यापना, वृध् - बढ़ना)। **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **विश्वा** = विश्व, सभी, सब (सर्वनाम)। **भूतानि** = भूतों को, उत्पन्न हुओं को (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **अभि-वर्तः** = सभी ओर वरण करने वाले (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, वृत् - वर्तन करना, वर्ताव करना, रहना,

होना, वरण करना, स्वीकार करना, हिंसा करना, सेवा करना, चमकना, बोलना)। **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार। **अससि** = हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना) **॥ 3 ॥**

127. अभि-ववर्तः अभि-भव सपत्न-क्षयणः मणिः।
राष्ट्राय मह्यम् बध्यताम् स-पत्नेभ्यः परा-भुवे ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ :- अभि-ववर्तः = सभी ओर वरण करने वाले। **अभि-भव** = सभी ओर, सर्वथा होने वाला। **सपत्न-क्षयणः** = ऐश्वर्यशाली निवास। **मणिः** = मणि, शब्द। **राष्ट्राय** = राष्ट्र के लिए। **मह्यम्** = मेरे लिए। **बध्यताम्** = बाँध दें। **स-पत्नेभ्यः** = ऐश्वर्यवान् द्वारा। **परा-भुवे** = परम् हो **॥ 4 ॥**

पदार्थ :- अभि-ववर्तः = सभी ओर वरण करने वाले (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, वृत् - वर्तन करना, वर्ताव करना, रहना, होना, वरण करना, स्वीकार करना, हिंसा करना, सेवा करना, चमकना, बोलना)। **अभि-भव** = सभी ओर, सर्वथा होने वाला (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, भू - होना)। **सपत्न-क्षयणः** = ऐश्वर्यशाली निवास (पत् = गिरना, शक्तिमान होना, ऐश्वर्य होना, क्षि = निवास करना, जाना, जानना, पाना, क्षय् (क्षि) - सूक्ष्म होना, अल्प होना, न्यून होना, क्षय होना, नष्ट होना)। **मणिः** = मणि, शब्द (मण् - शब्द करना)। **राष्ट्राय** = राष्ट्र के लिए (रास = शब्द करना। राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **मह्यम्** = मेरे लिए (सर्वनाम)। **बध्यताम्** = बाँध दें (बध्-बन्ध् = बाँधना, बद्ध करना, हिंसा करना, मारना, वध करना, घृणा करना)। **स-पत्नेभ्यः** = ऐश्वर्यवान् द्वारा (स - सहित, साथ। पत् = जाना, उड़ना, पतन होना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **परा-भुवे** = परम् हो (परा = परम, परे, पीछे, विपरीत, अव्यय, भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना) **॥ 4 ॥**

128. उत् असौ सूर्यः अगात् उत् इदम् मामकम् वचः।
यथा अहम् शत्रु-हः असानि असपत्नः सपत्न-हा ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ :- उत् = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च। **असौ** = यह। **सूर्यः** = सूर्य, उत्पन्न करने वाला, उत्पन्नकर्ता, ऐश्वर्यवान्। **अगात्** = भ्रमण किया, गया, प्राप्त किया, स्तुति की। **उत्** = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च। **इदम्** = यह, इसको। **मामकम्** = मेरे। **वचः** = वचन। **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार। **अहम्** = मैं। **शत्रु-हः** = शत्रु का हनन करने वाला। **असानि** = हो। **असपत्नः** = प्रकाश-ऐश्वर्यवान्, प्रकाश-रक्षक, जो सपत्न नहीं हो। **सपत्न-हा** = सपत्नघाती। **॥ 5 ॥**

पदार्थ :- उत् = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)। **असौ** = यह (सर्वनाम)। **सूर्यः** = सूर्य, उत्पन्न करने वाला, उत्पन्नकर्ता, ऐश्वर्यवान् (सुर - ऐश्वर्य होना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना, सू - उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, ऐश्वर्य होना)। **अगात्** = भ्रमण किया, गया, प्राप्त किया, स्तुति की (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अग् = जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, गति करना, घूमना, कुटिल गति करना, टेढ़ा जाना, लेना, ग्रहण करना, गम् = जाना, जानना, पाना, गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना)। **उत्** = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)। **इदम्** = यह, इसको (सर्वनाम)। **मामकम्** = मेरे (सर्वनाम)। **वचः** = वचन (वच् - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)। **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार। **अहम्** = मैं (सर्वनाम)। **शत्रु-हः** = शत्रु का हनन करने वाला (शी-शद्-शत् - जीर्ण होना, गिरना, गिराना, हन् - मारना)। **असानि** = हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **असपत्नः** = प्रकाश-ऐश्वर्यवान्, प्रकाश-रक्षक, जो सपत्न नहीं हो (स - सहित, साथ, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, पत् = जाना, नीचे जाना, पतन होना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना, सप - पूर्ण ज्ञान होना, पूरा समझना, पूर्णतया जानना, संसक्त होना, संलग्न होना, मिलाप होना)। **सपत्न-हा** = सपत्नघाती (सप् = पूर्ण ज्ञान होना, पत् = ऐश्वर्य होना, निम्नगति करना, गिरना, हन - मार डालना, प्राप्त करना)। **॥ 5 ॥**

129. सपत्न-क्षयणः वृषा अभि-राष्ट्रः वि-ससहिः।
यथा अहम् एषाम् वीराणाम् वि-राजानि जनस्य च॥ 6॥

मन्त्रार्थ :- सपत्न-क्षयणः = ऐश्वर्यशाली निवास। **वृषा =** पराक्रमी। **अभि-राष्ट्रः =** अभिराष्ट्र, सभी ओर राष्ट्र, सर्वथा राष्ट्र। **वि-ससहिः** = विशेष समर्थ होना। **यथा =** जिससे, जैसे, जिस प्रकार। **अहम् =** मैं। **एषाम् =** इनका। **वीराणाम् =** वीरों का। **वि-राजानि =** विशेष प्रकाशवान् का। **जनस्य =** जन का। **च =** और॥ **6॥**

पदार्थ :- सपत्न-क्षयणः = ऐश्वर्यशाली निवास (पत् = गिरना, शक्तिमान होना, ऐश्वर्य होना, क्षि = निवास करना, जाना, जानना, पाना, क्षय् (क्षि) - सूक्ष्म होना, अल्प होना, न्यून होना, क्षय होना, नष्ट होना)। **वृषा =** पराक्रमी (वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना या पीड़ा करना, दुःख देना, पीड़ित करना)। **अभि-राष्ट्रः =** अभिराष्ट्र, सभी ओर राष्ट्र, सर्वथा राष्ट्र (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, रास = शब्द करना। राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **वि-ससहिः** = विशेष समर्थ होना (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग), सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ठ होना, प्रसन्न होना)। **यथा =** जिससे, जैसे, जिस प्रकार। **अहम् =** मैं (सर्वनाम)। **एषाम् =** इनका (सर्वनाम)। **वीराणाम् =** वीरों का (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)। **वि-राजानि =** विशेष प्रकाशवान् का (वि = विशेष, विना, विलोम, राज् = प्रकाशित होना, शोभित होना, चमकना)। **जनस्य =** जन का (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **च =** और (अव्यय)॥ **6॥**

30 दीर्घायुप्राप्ति सूक्त - 2 (30)

130. विश्वे देवाः वसवो रक्षते इमम्, उत आदित्या जागृत यूयम् अस्मिन्।
मा इमम् स-नाभिः उत वा अन्य-नाभिः, मा इमम् प्रापत् पौरुषेयो वधो यः॥ 1॥

मन्त्रार्थ :- विश्वे = सभी। **देवाः =** विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने। **वसवो =** वसुगण, निवास करने वाले, वास देने वाले। **रक्षते =** रक्षा के लिए। **इमम् =** इसको। **उत** = ही, भी, ओर। **आदित्या =** अदिति, अक्षय-अविनाशी, अदिति से उत्पन्न, अक्षय-अविनाशी से उत्पन्न। **जागृत =** जागा हुआ, जाग्रत। **यूयम् =** तुम दोनों। **अस्मिन् =** इस, इसमें। **मा =** नहीं, मत। **इमम् =** इसको। **स-नाभिः =** नाभि सहित समान नाभि। **उत** = ही, भी, ओर। **वा =** अथवा। **अन्य-नाभिः =** अन्य नाभि। **मा =** नहीं, मत। **इमम् =** इसको। **प्रापत् =** पूर्ण, तृप्त। **पौरुषेयो =** पौरुष के लिए, परिपूर्ण, अग्रगामी, अग्रणी का। **वधो =** वध। **यः =** जो॥ **1॥**

पदार्थ :- विश्वे = सभी (सर्वनाम)। **देवाः =** विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **वसवो =** वसुगण, निवास करने वाले, वास देने वाले (वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)। **रक्षते =** रक्षा के लिए (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना)। **इमम् =** इसको (सर्वनाम)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **आदित्या =** अदिति, अक्षय-अविनाशी, अदिति से उत्पन्न, अक्षय-अविनाशी से उत्पन्न (अ - नहीं, अद् - खाना, नष्ट करना, दी = क्षय होना, नष्ट होना)। **जागृत =** जागा हुआ, जाग्रत (जागृ - जगना, नींद न लेना)। **यूयम् =** तुम दोनों (सर्वनाम)। **अस्मिन् =** इस, इसमें (सर्वनाम)। **मा =** नहीं, मत (अव्यय)। **इमम् =** इसको (सर्वनाम)। **स-नाभिः =** नाभि सहित समान नाभि (स-समान, सहित, नभ - नष्ट होना, दुःख देना या मार डालना, हिंसा करना, मध्य में स्थित होना, केन्द्र होना, नह् - बांधना, अड़ाना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **वा =** अथवा (अव्यय)। **अन्य-नाभिः =** अन्य नाभि (अन्य = कोई और, इतर, अन्य (सर्वनाम), नभ - नष्ट होना, दुःख देना या मार डालना, हिंसा करना, मध्य में स्थित होना, केन्द्र होना, नह् - बांधना, अड़ाना)। **मा =** नहीं, मत (अव्यय)। **इमम् =** इसको (सर्वनाम)। **प्रापत् =** पूर्ण, तृप्त (प्रा- पूर्ण करना, तृप्त करना)। **पौरुषेयो =** पौरुष के लिए, परिपूर्ण, अग्रगामी, अग्रणी का (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, पृ - पूर्ण करना, भरना, पालन करना, रक्षा करना, तृप्त करना)। **वधो =** वध (वध्-हन् = मारना)। **यः =** जो (सर्वनाम)॥ **1॥**

131. ये वः देवाः पितरः ये च पुत्राः स-चेतसः मे श्रृणुत इदम् उक्तम्। सर्वेभ्यः वः परि ददामि एतम् स्वस्ति एनम् जरसे वहाथ॥ 2॥

मन्त्रार्थ :- ये = जो। **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग। **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने। **पितरः** = गतिशील, ज्ञानी, पालन करने वाले। **ये** = जो। **च** = और। **पुत्राः** = पुत्र। **स-चेतसः** = समान चित्त वाले। **मे** = मेरा, मेरे लिए। **श्रृणुत** = सुनो। **इदम्** = यह, इसको। **उक्तम्** = उक्ति को, कथन को, कही गयी बात को। **सर्वेभ्यः** = सबके लिए। **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग । **परि** = सभी तरफ। **ददामि** = देता हूँ। **एतम्** = यह, इसको। **स्वस्ति** = कल्याण। **एनम्** = इसको, इसे। **जरसे** = जीर्ण, वृद्ध, वर्धित, परिपक्व के लिए। **वहाथ** = वहन करो, ले जाओ।**। 2॥**

पदार्थ :- ये = जो (सर्वनाम)। **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **पितरः** = गतिशील, ज्ञानी, पालन करने वाले (पि - जाना, जानना, पाना, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **ये** = जो (सर्वनाम)। **च** = और (अव्यय)। **पुत्राः** = पुत्र (पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)। **स-चेतसः** = समान चित्त वाले (चित - विचार करना, चिन्तन करना, स्मरण करना)। **मे** = मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **श्रृणुत** = सुनो (श्रु-शृण् = सुनना)। **इदम्** = यह, इसको (सर्वनाम)। **उक्तम्** = उक्ति को, कथन को, कही गयी बात को (उक् - उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना)। **सर्वेभ्यः** = सबके लिए (सर्वनाम)। **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **परि** = सभी तरफ (उपसर्ग)। **ददामि** = देता हूँ (दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)। **एतम्** = यह, इसको (सर्वनाम)। **स्वस्ति** = कल्याण (अव्यय)। **एनम्** = इसको, इसे (सर्वनाम)। **जरसे** = जीर्ण, वृद्ध, वर्धित, परिपक्व के लिए (जृ - वृद्ध होना, जीर्ण होना)। **वहाथ** = वहन करो, ले जाओ (वह् = वहन करना, ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)।**। 2॥**

132. ये देवाः दिवि स्थ ये पृथिव्याम् ये अन्तरिक्षे औषधीषु पशुषु अप्सु अन्तः। ते कृणुत जरसम् आयुः अस्मै शतम् अन्यान् परि वृणक्तु मृत्यून्॥ 3॥

मन्त्रार्थ :- ये = जो। **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने। **दिवि** = देवी, तेजस्विनी। **स्थ** = स्थित, हो। **ये** = जो। **पृथिव्याम्** = पृथ्वी पर। **ये** = जो। **अन्तरिक्षे** = अन्तरिक्ष में। **औषधीषु** = ओषधियों में। **पशुषु** = पशु को, दृष्टा को, बन्धन को। **अप्सु** = पालन-रक्षण में। **अन्तः** = बीच में, भीतर **। ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **कृणुत** = करो। **जरसम्** = जीर्ण, वृद्ध, वर्धित, परिपक्व को। **आयुः** = आयु। **अस्मै** = इसके लिए, हमको, हमारे लिए। **शतम्** = सौ। **अन्यान्** = अन्यों को। **परि** = सभी तरफ। **वृणक्तु** = वरण करो, त्याग करो। **मृत्यून्** = मृत्यु को।**। 3॥**

पदार्थ :- ये = जो (सर्वनाम)। **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **दिवि** = देवी, तेजस्विनी (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **स्थ** = स्थित, हो (स्था- स्थित होना, ठहरना)। **ये** = जो (सर्वनाम)। **पृथिव्याम्** = पृथ्वी पर (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)। **ये** = जो (सर्वनाम)। **अन्तरिक्षे** = अन्तरिक्ष में (अन्तः - बीच में, इक्ष् - स्वाद लेना, ईक्ष् -देखना)। **औषधीषु** = ओषधियों में (उषध्-ओषध् = चिकित्सा करना, रोग मुक्त करना)। **पशुषु** = पशु को, दृष्टा को, बन्धन को (पश्-दृश् = देखना, पश - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना)। **अप्सु** = पालन-रक्षण में (अप = जाना, जानना, पाना, पालन करना)। **अन्तः** = बीच में, भीतर (अव्यय, उपसर्ग, सर्वनाम)**। ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **कृणुत** = करो (कृ - करना)। **जरसम्** = जीर्ण, वृद्ध, वर्धित, परिपक्व को (जृ - वृद्ध होना, जीर्ण होना)। **आयुः** = आयु (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अय = जाना, जानना, पाना, गति करना, आय - शब्द करना, शासन करना, यु = मिलना, अलग करना)। **अस्मै** = इसके लिए, हमको, हमारे लिए (सर्वनाम)। **शतम्** = सौ (संख्या, सर्वनाम)। **अन्यान्**

= अन्यों को (सर्वनाम)। **परि** = सभी तरफ (उपसर्ग)। **वृणक्तु** = वरण करो, त्याग करो (वृ = वरण करना, वृण - परित्याग करना, आनन्द करना, उत्साह करना)। **मृत्यून्** = मृत्यु को (मृ = मरना, देहत्याग करना)।। **3** ।।

133. येषाम् प्र-याजाः उत वा अनु-याजाः हुतभागाः अहुत-अदः च देवाः।
येषाम् वः पञ्च प्र-दिशः वि-भक्ताः तान् वः अस्मै सत्र-सदः कृणोमि।। 4 ।।

मन्त्रार्थ :- **येषाम्** = जिनका। **प्र-याजाः** = प्रमुख यजनीय। **उत** = ही, भी, ओर। **वा** = अथवा। **अनु-याजाः** = अनु यजनीय। **हुतभागाः** = दान युक्त सेवा, आदान-प्रदान युक्त सेवा। **अहुत-अदः** = बिना दान खाने वाला। **च** = और । **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने। **येषाम्** = जिनका। **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग। **पञ्च** = पाँच। **प्र-दिशः** = प्रदिश, दिशा। **वि-भक्ताः** = विभाग करने वाले। **तान्** = उनको। **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग। **अस्मै** = इसके लिए, हमको, हमारे लिए। **सत्र-सदः** = सत्र में बैठने वाला। **कृणोमि** = करता हूँ।। **4** ।।

पदार्थ :- **येषाम्** = जिनका। **प्र-याजाः** = प्रमुख यजनीय (प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग), यज - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना, संयोग करना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **वा** = अथवा (अव्यय)। **अनु-याजाः** = अनु यजनीय (अनु = पश्चात्, पीछे, अनुकूल (उपसर्ग)। यज - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना, संयोग करना)। **हुतभागाः** = दान युक्त सेवा, आदान-प्रदान युक्त सेवा, (हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, भज् = सेवा करना, भजन करना, भाग करना, अलग करना)। **अहुत-अदः** = बिना दान खाने वाला (अ - नहीं, हु - दान करना, आदान-प्रदान करना, अह् = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना अद् - खाना, नष्ट करना)। **च** = और (अव्यय)। **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **येषाम्** = जिनका। **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **पञ्च** = पाँच (पञ्च - पाँच, संख्या)। **प्र-दिशः** = प्रदिश, दिशा (प्र - प्रकृष्ट, दिश् - दिखाना, दिखाना, समझाना, कहना, देना)। **वि-भक्ताः** = विभाग करने वाले (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। भज् - सेवा करना, दान करना, वि-भज् - विभाजन करना, बाँटना)। **तान्** = उनको (सर्वनाम)। **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **अस्मै** = इसके लिए, हमको, हमारे लिए (सर्वनाम)। **सत्र-सदः** = सत्र में बैठने वाला (सत्र् - फैलाना, विस्तार करना, सम्बन्ध करना, संसर्गी होना, सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)। **कृणोमि** = करता हूँ (कृ = करना)।। **4** ।।

31 पाशमोचन सूक्त - 3 (31)

134. आशानाम् आशा-पालेभ्यः चतुःभ्यः अमृतेभ्यः।
इदम् भूतस्य अधि-अक्षेभ्यः विधेम हविषा वयम्।। 1 ।।

मन्त्रार्थ :- **आशानाम्** = आशा वाले। **आशा-पालेभ्यः** = आशाओं का पालन-रक्षण करने वाले के लिए। **चतुःभ्यः** = चार के लिए। **अमृतेभ्यः** = अमृत के लिए, अमरता के लिए। **इदम्** = यह, इसको। **भूतस्य** = भूत का, उत्पन्न हुए का।। **अधि-अक्षेभ्यः** = अधि अक्ष के लिए। **विधेम** = विधान करें, विशेष रूप से धारण करें। **हविषा** = हविष् द्वारा, दान व आदान-प्रदान द्वारा। **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग।। **1** ।।

पदार्थ :- **आशानाम्** = आशा वाले (आ-शास् - आशा करना, इच्छा करना, शास् - शासन करना, आ- समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, शास् = आशीर्वाद देना, बोध करना, शासन करना, भला चाहना, आशा करना)। **आशा-पालेभ्यः** = आशाओं का पालन-रक्षण करने वाले के लिए (आ-शास् - आशा करना, इच्छा करना, शास् - शासन करना, आ-समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, शास् = आशीर्वाद देना, बोध करना, शासन करना, भला चाहना, आशा करना)। **चतुःभ्यः** = चार के लिए (संख्या)। **अमृतेभ्यः** = अमृत के लिए, अमरता के लिए (अ - नहीं, मृ = मरना, देहत्याग करना)। **इदम्** = यह, इसको (सर्वनाम)। **भूतस्य** = भूत का, उत्पन्न हुए का (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न

होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **अधि-अक्षेभ्यः** = अधि अक्ष के लिए (अधि = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार, अक्ष - खेलना, देखना, एकत्र होना, व्याप्त होना, इच्छितार्थ होना, पैठना)। **विधेम** = विधान करें, विशेष रूप से धारण करें (वि - विशेष। विध् - विधान करना, वेधना, वेध करना, ताडना करना। धा = धारण, पोषण, रक्षण, दान करना)। **हविषा** = हविष् द्वारा, दान व आदान-प्रदान द्वारा (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)।। **1** ।।

135. ये आशानाम् आशा-पालाः चत्वारः स्थन देवाः।
ते नः निः-ऋत्याः पाशेभ्यः मुञ्चत अंहसः-अंहसः ।। 2 ।।

मन्त्रार्थ :- ये = जो। **आशानाम्** = आशा वाले। **आशा-पालाः** = आशाओं का पालन-रक्षण करने वाले। **चत्वारः** = चार। **स्थन** = स्थित हैं। **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा। **निः-ऋत्याः** = निरन्तर प्रगतिशील। **पाशेभ्यः** = पाश के, दिखाने वालें के लिए, बन्धन के लिए। **मुञ्चत** = मुक्त करें, कहें। **अंहसः-अंहसः** = प्रकाशमान।। **2** ।।

पदार्थ :- ये = जो (सर्वनाम)। **आशानाम्** = आशा वाले (आ-शास् - आशा करना, इच्छा करना, शास् - शासन करना, आ- समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, शास् = आशीर्वाद देना, बोध करना, शासन करना, भला चाहना, आशा करना)। **आशा-पालाः** = आशाओं का पालन-रक्षण करने वाले (आ-शास् - आशा करना, इच्छा करना, शास् - शासन करना, आ- समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, शास् = आशीर्वाद देना, बोध करना, शासन करना, भला चाहना, आशा करना)। **चत्वारः** = चार (संख्या)। **स्थन** = स्थित हैं (स्था- स्थित होना, ठहरना)। **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **निः-ऋत्याः** = निरन्तर प्रगतिशील (नि = निश्चित, निरन्तर (अव्यय)। ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)। **पाशेभ्यः** = पाश के, दिखाने वालें के लिए, बन्धन के लिए (पश् - देखना, पश - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना)। **मुञ्चत** = मुक्त करें, कहें (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः-अंहसः** = प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना)।। **2** ।।

136. अस्रामः त्वा हविषा यजामि अश्लोणः त्वा घृतेन जुहोमि।
यः आशानाम् आशा-पालः तुरीयः देवः सः नः सु-भूतम् आ इह वक्षत्।। 3 ।।

मन्त्रार्थ :- अस्रामः = गतिमान हो। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा। **हविषा** = हविष् द्वारा, दान व आदान-प्रदान द्वारा। **यजामि** = यजन करते हैं। **अश्लोणः** = तीव्र गति युक्त, व्यापक। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा। **घृतेन** = अभिसिञ्चित द्वारा, प्रकाशमान द्वारा। **जुहोमि** = दान करते हैं, आदान-प्रदान करते हैं। **यः** = जो। **आशानाम्** = आशा वाले। **आशा-पालः** = आशाओं का पालन-रक्षण करने वाले। **तुरीयः** = शीघ्रकारी, शीघ्रगामी। **देवः** = देव, विद्वान्, तेजस्वी, दिव्यस्वरूप। **सः** = वह, उसने। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा। **सु-भूतम्** =उत्तम उत्पन्न करने वाले को, सु भूत को। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम। **इह** = इसमें, यहां, यह। **वक्षत्** = रक्षण करो, पालन करो।। **3** ।।

पदार्थ :- अस्रामः = गतिमान हो (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, सृ - जाना, जाना, पाना, सरकना)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **हविषा** = हविष् द्वारा, दान व आदान-प्रदान द्वारा (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **यजामि** = यजन करते हैं (यज् = पूजा करना, देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)। **अश्लोणः** = तीव्र गति युक्त, व्यापक (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **घृतेन** = अभिसिञ्चित द्वारा, प्रकाशमान द्वारा (घृ - चमकना, प्रकाश करना, सिञ्चन करना, गीला करना, टपकना, बूंद बूंद गिरना, क्षरित होना, क्षरण होना, झरना, घर्षण होना, नाश होना, शब्द होना)। **जुहोमि** = दान करते हैं,

आदान-प्रदान करते हैं (हु-जुहु = दान करना, आदान-प्रदान करना, ग्रहण करना, तृप्त करना, जु - जाना, शीघ्र जाना, भागना)। **यः** = जो (सर्वनाम)। **आशानाम्** = आशा वाले (आ-शास् - आशा करना, इच्छा करना, शास् - शासन करना, आ- समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, शास् = आशीर्वाद देना, बोध करना, शासन करना, भला चाहना, आशा करना)। **आशा-पालः** = आशाओं का पालन-रक्षण करने वाले (आ-शास् - आशा करना, इच्छा करना, शास् - शासन करना, आ- समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, शास् = आशीर्वाद देना, बोध करना, शासन करना, भला चाहना, आशा करना)। **तुरीयः** = शीघ्रकारी, शीघ्रगामी (तुर्-तुरण् = शीघ्रता करना)। **देवः** = देव, विद्वान्, तेजस्वी, दिव्यस्वरूप (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **सः** = वह, उसने (सर्वनाम)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **सु-भूतम्** =उत्तम उत्पन्न करने वाले को, सु भूत को (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **इह** = इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **वक्षत्** = **र**क्षण करो, पालन करो (वक्ष = पालन करना, रक्षा करना। वक्ष = क्रोध करना, बटोरना, ढेर करना)।**। 3 ।।**

137. स्वस्ति मात्रे उत पित्रे नः अस्तु स्वस्ति गोभ्यः जगते पुरुषेभ्यः।
विश्वम् सु-भूतम् सु-विदत्रम् नः अस्तु ज्योक् एव दृशेम सूर्यम्।। 4 ।।

मन्त्रार्थ :- स्वस्ति = कल्याण। **मात्रे** = माता में। **उत** = ही, भी, ओर। **पित्रे** = पितृ के लिए। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा। **अस्तु** = हो। **स्वस्ति** = कल्याण। **गोभ्यः** = शब्दकर्ता, मननशीलों के लिए। **जगते** = संसार के लिए, गतिशील के लिए। **पुरुषेभ्यः** = पुरुष के लिए, परिपूर्ण, अग्रगामी, अग्रणी के लिए। **विश्वम्** = सबको, विश्व को। **सु-भूतम्** = उत्तम उत्पन्न करने वाले को, सु भूत को। **सु-विदत्रम्** = उत्तम विद्वानों को, कल्याणकारी दानियों को। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा। **अस्तु** = हो। **ज्योक्** = ज्योक्, सुदीर्घ, चिरकालीन, निरन्तर। **एव** = ही। **दृशेम** = दृश को, देखने वाले को। **सूर्यम्** = सूर्य को, उत्पन्नकर्ता, ऐश्वर्यवान् को।**। 4 ।।**

पदार्थ :- स्वस्ति = कल्याण (अव्यय)। **मात्रे** = माता में (मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **पित्रे** = पितृ के लिए (पा = रक्षा करना, पालन करना, पि = जाना, जानना, पाना)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **अस्तु** = हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **स्वस्ति** = कल्याण (अव्यय)। **गोभ्यः** = शब्दकर्ता, मननशीलों के लिए (गु - अस्पष्ट बोलना, शब्द करना, मनन करना)। **जगते** = संसार के लिए, गतिशील के लिए (जग् = गति करना, लेना, घर्षण करना)। **पुरुषेभ्यः** = पुरुष के लिए, परिपूर्ण, अग्रगामी, अग्रणी के लिए (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, पृ - पूर्ण करना, भरना, पालन करना, रक्षा करना, तृप्त करना)। **विश्वम्** = सबको, विश्व को (विश्व - सब कुछ)। **सु-भूतम्** = उत्तम उत्पन्न करने वाले को, सु भूत को (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **सु-विदत्रम्** = उत्तम विद्वानों को, कल्याणकारी दानियों को (सु = अच्छा (उपसर्ग)। वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। विद् - जानना। दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **अस्तु** = हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **ज्योक्** = ज्योक्, सुदीर्घ, चिरकालीन, निरन्तर (ज्यु = गति होना। ज्या - जीर्ण होना, पुराना होना, वृद्ध होना, बर्द्धित होना, बड़ा होना, जि - जय होना, जीतना)। **एव** = ही (अव्यय)। **दृशेम** = दृश को, देखने वाले को (दृश्-पश्य -देखना)। **सूर्यम्** = सूर्य को, उत्पन्नकर्ता, ऐश्वर्यवान् को (सुर - ऐश्वर्य होना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना, सू - उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, ऐश्वर्य होना)।**। 4 ।।**

32 महद्ब्रह्म सूक्त - 4 (32)

138. इदम् जनासः विदथ महत् ब्रह्म वदिष्यति।
न तत् पृथिव्याम् नो दिवि येन प्राणन्ति वीरुधः।। 1 ।।

मन्त्रार्थ :- इदम् = यह, इसको। **जनासः** = जन, लोग, उत्पन्न हुए, उत्पन्न करने वाले। **विदथ** = विद्वान्। **महत्** = महान्। **ब्रह्म** = ब्रह्म, महान्, बड़ा, बृहत्। **वदिष्यति** = बोलते हो। **न** = नहीं, समान, उपमार्थक। **तत्** = वह, उस को। **पृथिव्याम्** = पृथ्वी पर। **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा। **दिवि** = दिव्यता में, दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय में। **येन** = जिससे, जिसके द्वारा। **प्राणन्ति** = प्राण। **वीरुधः** = वीरता को धारण करने वाला, पराक्रमी।। **1** ।।

पदार्थ :- इदम् = यह, इसको (सर्वनाम)। **जनासः** = जन, लोग, उत्पन्न हुए, उत्पन्न करने वाले (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **विदथ** = विद्वान् (विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)। **महत्** = महान् (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना)। **ब्रह्म** = ब्रह्म, महान्, बड़ा, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **वदिष्यति** = बोलते हो (वद - कहना, स्पष्ट कहना, बोलना, समझाना)।। **न** = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **तत्** = वह, उस को (सर्वनाम)। **पृथिव्याम्** = पृथ्वी पर (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)। **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **दिवि** = दिव्यता में, दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय में (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)। **येन** = जिससे, जिसके द्वारा। **प्राणन्ति** = प्राण (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अन- जीवन होना, चेतन होना, प्रा- पूर्ण करना, तृप्त करना)। **वीरुधः** = वीरता को धारण करने वाला, पराक्रमी (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)।। **1** ।।

139. अन्तरिक्षे आसाम् स्थाम श्रान्तसदाम्-इव।
आ-स्थानम् अस्य भूतस्य विदुः तत् वेधसः न वा।। 2 ।।

मन्त्रार्थ :- अन्तरिक्षे = अन्तरिक्ष में। **आसाम्** = इनका। **स्थाम** = स्थान को। **श्रान्तसदाम्-इव** = परिश्रमी। **आ-स्थानम्** = सम्यक् स्थान को। **अस्य** = इसका। **भूतस्य** = भूत का, उत्पन्न हुए का। **विदुः** = विद्वान्। **तत्** = वह, उस को। **वेधसः** = विद्वान्, विधान करने वाले। **न** = नहीं, समान, उपमार्थक। **वा** = अथवा।। **2** ।।

पदार्थ :- अन्तरिक्षे = अन्तरिक्ष में (अन्तः - बीच में, इक्ष् - स्वाद लेना, ईक्ष् -देखना)। **आसाम्** = इनका (सर्वनाम)। **स्थाम** = स्थान को (स्था - स्थित होना, ठहरना) **श्रान्तसदाम्-इव** = परिश्रमी (श्रम् - थकना, श्रान्त होना, पीड़ित होना, दुःखित होना, तपश्चर्या करना, व्रत करन, सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना, इव = समान, की भाँति, के समान (अव्यय))। **आ-स्थानम्** = सम्यक् स्थान को (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग), स्था - स्थित होना, ठहरना)। **अस्य** = इसका (सर्वनाम)। **भूतस्य** = भूत का, उत्पन्न हुए का (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **विदुः** = विद्वान् (विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)। **तत्** = वह, उस को (सर्वनाम)। **वेधसः** = विद्वान्, विधान करने वाले (विध् = विधान करना, वेधना, वेध करना, ताडना करना)। **न** = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **वा** = अथवा (अव्यय)।। **2** ।।

140. यद् रोदसी रेजमाने भूमिः च निरतक्षतम्।
आर्द्रम् तत् अद्य सर्वदा समुद्रस्य-इव स्रोत्याः।। 3 ।।

मन्त्रार्थ :- यद् = जो। **रोदसी** = प्रकाश देने वाले, वाणी, गति की सामर्थ्य से युक्त, करुणाशील, रोने वाले, रुलाने वाले। **रेजमाने** = प्रकाशमान में। **भूमिः** = भूमि। **च** = और। **निरतक्षतम्** = निरन्तर आच्छादित किया, निरन्तर शब्द किया। **आर्द्रम्** = सम्यक् वचन, वाणी, गति, प्राप्ति को। **तत्** = वह, उस को। **अद्य** = आज। **सर्वदा** = सभी समय, सब दिन। **समुद्रस्य-इव** = समुद्र के समान। **स्रोत्याः** = स्रोत्य का।। **3** ।।

पदार्थ :- यद् = जो (सर्वनाम)। **रोदसी** = प्रकाश देने वाले, वाणी, गति की सामर्थ्य से युक्त, करुणाशील, रोने वाले, रुलाने वाले (रुद् - रोना, रुलाना, करुण होना, रु - शब्द करना, जाना, चलना, जानना, पाना)। **रेजमाने** =

प्रकाशमान में (रेज् - चमकना, प्रकाशित होना)। **भूमिः =** भूमि (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **च =** और (अव्यय)। **निरतक्षतम् =** निरन्तर आच्छादित किया, निरन्तर शब्द किया (नि = निश्चित, निरन्तर (अव्यय), तक्ष - आच्छादित करना, छीलना, बोलना, हिंसा करना)। **आर्द्रम् =** सम्यक् वचन, वाणी, गति, प्राप्ति को (अर्द - गति, ज्ञान, प्राप्ति करना, मांगना, याचना करना, हिंसा करना)। **तत् =** वह, उस को (सर्वनाम)। **अद्य =** आज (अव्यय)। **सर्वदा** = सभी समय, सब दिन (अव्यय)। **समुद्रस्य-इव =** समुद्र के समान (सम् = सम्यक्, भलीभांति। उन्द - आर्द्र होना, गीला होना)। **स्रोत्याः** = स्रोत्य का (स्रु = जाना, जानना, पाना, सृ - जाना, सरकना, बहना, टपकना)।**॥ 3 ॥**

141. विश्वम् अन्याम् अभि-वार तत् अन्यस्याम् अधि श्रितम्।
दिवे च विश्व-वेदसे पृथिव्यै च अकरम् नमः ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ :- विश्वम् = सबको, सब विश्व को। **अन्याम् =** अन्य, कोई और, इतर। **अभि-वार =** सभी ओर वरणीय, वरण करने वाला। **तत् =** वह, उस को। **अन्यस्याम् =** अन्य, इतर में। **अधि =** अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार। **श्रितम् =** सेवित, परिपक्व, आश्रित, श्रेय युक्त को। **दिवे =** दिव में, दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय में। **च =** और। **विश्व-वेदसे =** सर्वज्ञ, सबको जानने वाले के लिए। **पृथिव्यै =** पृथ्वी के लिए। **च =** और। **अकरम् =** किया, कर्महीन को, न करने वाले को। **नमः =** नमन **॥ 4 ॥**

पदार्थ :- विश्वम् = सबको, सब विश्व को (विश्व - सब कुछ)। **अन्याम् =** अन्य, कोई और, इतर (सर्वनाम)। **अभि-वार =** सभी ओर वरणीय, वरण करने वाला (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **तत् =** वह, उस को (सर्वनाम)। **अन्यस्याम् =** अन्य, इतर में (सर्वनाम)। **अधि =** अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **श्रितम् =** सेवित, परिपक्व, आश्रित, श्रेय युक्त को (श्री = सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना)। **दिवे =** दिव में, दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय में (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)। **च =** और (अव्यय)। **विश्व-वेदसे =** सर्वज्ञ, सबको जानने वाले के लिए (विश्व - सब, विद - समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)। **पृथिव्यै =** पृथ्वी के लिए (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)। **च =** और (अव्यय)। **अकरम् =** किया, कर्महीन को, न करने वाले को (अ = नहीं, उपसर्ग, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, कृ = करना)। **नमः =** नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)।**॥ 4 ॥**

33 आपः सूक्त - 5 (33)

142. हिरण्य-वर्णाः शुचयः पावकाः यासु जातः सविता यासु अग्निः।
याः अग्निम् गर्भम् दधिरे सु-वर्णाः ताः नः आपः शम् स्योनाः भवन्तु ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ :- हिरण्य-वर्णाः = हिरण्य वर्ण वाले। **शुचयः =** पवित्र। **पावकाः =** पवित्रकारक, पावक, पवित्रकर्ता, पवित्र करने वाला। **यासु =** जिनमें। **जातः =** उत्पन्न। **सविता =** सृष्टिकर्ता, उत्पन्न करने वाला, ऐश्वर्यवान् तथा ऐश्वर्य देने वाला। **यासु =** जिनमें। **अग्निः =** अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान्। **याः =** जो। **अग्निम् =** अग्नि को, ऊर्ध्वगामी, तेजस्वी, विद्वान् को। **गर्भम् =** गर्भ को। **दधिरे =** धारण किया। **सु-वर्णाः =** सुन्दर वर्ण। **ताः =** वे। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा। **आपः =** आप, व्याप्त, व्यापक। **शम् =** कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी। **स्योनाः =** सुख। **भवन्तु =** हों, हो जायें।**॥ 1 ॥**

पदार्थ :- हिरण्य-वर्णाः = हिरण्य वर्ण वाले (हिरण - प्रकाश होना, दीप्त होना, शब्द करना, ध्वनि होना। (वृ - वरण करना, स्वीकार करना, वर्ण - वर्णन करना, चमकना, आज्ञा करना, प्रेरणा करना, भेजना, रंगना)। **शुचयः =** पवित्र (शुच्-

शुक्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)। **पावकाः =** पवित्रकारक, पावक, पवित्रकर्ता, पवित्र करने वाला (पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)। **यासु =** जिनमें (सर्वनाम)। **जातः =** उत्पन्न (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **सविता =** सृष्टिकर्ता, उत्पन्न करने वाला, ऐश्वर्यवान् तथा ऐश्वर्य देने वाला (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)। **यासु =** जिनमें (सर्वनाम)। **अग्निः =** अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **याः =** जो (सर्वनाम)। **अग्निम् =** अग्नि को, ऊर्ध्वगामी, तेजस्वी, विद्वान् को (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **गर्भम् =** गर्भ को (गृह् - ग्रहण करना, लेना, गृ = सींचना, गीला करना, घर्षण करना, जानना, समझना, खाना, निगलना, शब्द करना, गल्भ् - जाना, जानना, पाना, ज्ञान होना, चतुर होना, साहस होना, धैर्य रखना, गृभ्-गर्भ् - अन्दर होना, अन्तःवास करना)। **दधिरे =** धारण किया (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)। **सु-वर्णाः =** सुन्दर वर्ण (सु - अच्छा, सुन्दर, (वृ - वरण करना, स्वीकार करना, वर्ण - वर्णन करना, चमकना, आज्ञा करना, प्रेरणा करना, भेजना, रंगना)। **ताः =** वे (सर्वनाम)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **आपः =** आप, व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)। **शम् =** कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी (शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)। **स्योनाः =** सुख (स्योन् = सुख होना, सुख देना)। **भवन्तु =** हों, हो जायें (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।। **1** ।।

143. यासाम् राजा वरुणः याति मध्ये सत्यानृते अव-पश्यन् जनानाम्।
या अग्निम् गर्भम् दधिरे सु-वर्णाः ताः नः आपः शम् स्योनाः भवन्तु।। 2 ।।

मन्त्रार्थ :- यासाम् = प्रयास का, जानने वालों का। **राजा =** राजा। **वरुणः =** वरुण। **याति =** जाता है। **मध्ये =** मध्य में। **सत्यानृते =** सत्य और आनृत, सत्य और अनृत। **अव-पश्यन् =** नीचे देखते हुए, देखने वाले। **जनानाम् =** जनों का, उत्पन्न लोगों का। **याः =** जो। **अग्निम् =** अग्नि को, ऊर्ध्वगामी, तेजस्वी, विद्वान् को। **गर्भम् =** गर्भ को। **दधिरे =** धारण किया। **सु-वर्णाः =** सुन्दर वर्ण। **ताः =** वे। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा। **आपः =** आप, व्याप्त, व्यापक। **शम् =** कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी। **स्योनाः =** सुख। **भवन्तु =** हों, हो जायें **।। 2 ।।**

पदार्थ :- यासाम् = प्रयास का, जानने वालों का (यस् - प्रयास करना, या - जाना, जानना, पाना)। **राजा =** राजा (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **वरुणः =** वरुण (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **याति =** जाता है (या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)। **मध्ये =** मध्य में (सर्वनाम)। **सत्यानृते =** सत्य और आनृत, सत्य और अनृत (सत् = होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना, अन् - नहीं, ऋत - चलना, जाना, फैलाना, संचलन करना, सदाचरण करना)। **अव-पश्यन् =** नीचे देखते हुए, देखने वाले (**अव =** नीचे, दूर, प्राप्त (अव्यय), पश्-दृश् = देखना)। **जनानाम् =** जनों का, उत्पन्न लोगों का (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **याः =** जो (सर्वनाम)। **अग्निम् =** अग्नि को, ऊर्ध्वगामी, तेजस्वी, विद्वान् को (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **गर्भम् =** गर्भ को (गृह् - ग्रहण करना, लेना, गृ = सींचना, गीला करना, घर्षण करना, जानना, समझना, खाना, निगलना, शब्द करना, गल्भ् - जाना, जानना, पाना, ज्ञान होना, चतुर होना, साहस होना, धैर्य रखना, गृभ्-गर्भ् - अन्दर होना, अन्तःवास करना)। **दधिरे =** धारण किया (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)। **सु-वर्णाः =** सुन्दर वर्ण (सु - अच्छा, सुन्दर, (वृ - वरण करना, स्वीकार करना, वर्ण - वर्णन करना, चमकना, आज्ञा करना, प्रेरणा करना, भेजना, रंगना)। **ताः =** वे (सर्वनाम)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **आपः =** आप, व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)। **शम् =** कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी (शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)। **स्योनाः =** सुख (स्योन् = सुख होना, सुख देना)। **भवन्तु =** हों, हो

जायें (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना) ॥ 2 ॥

144. यासाम् देवाः दिवि कृण्वन्ति भक्षम् याः अन्तरिक्षे बहु-धा भवन्ति।
याः अग्निम् गर्भम् दधिरे सु-वर्णाः ताः नः आपः शम् स्योनाः भवन्तु ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ :- यासाम् = प्रयास का। **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने। **दिवि** = देवी, तेजस्विनी। **कृण्वन्ति** = करते हैं। **भक्षम्** = भक्ष को। **याः** = जो। **अन्तरिक्षे** = अन्तरिक्ष में। **बहु-धा** = बहुत प्रकार से। **भवन्ति** = होते हैं। **याः** = जो। **अग्निम्** = अग्नि को, ऊर्ध्वगामी, तेजस्वी, विद्वान् को। **गर्भम्** = गर्भ को। **दधिरे** = धारण किया। **सु-वर्णाः** = सुन्दर वर्ण। **ताः** = वे। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा। **आपः** = आप, व्याप्त, व्यापक। **शम्** = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी। **स्योनाः** = सुख। **भवन्तु** = हों, हो जायें ॥ 3 ॥

पदार्थ :- यासाम् = प्रयास का (यस् - प्रयास करना, या - जाना, जानना, पाना)। **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **दिवि** = देवी, तेजस्विनी (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **कृण्वन्ति** = करते हैं (कृ - करना)। **भक्षम्** = भक्ष को (भक्ष - खाना, ग्रहण करना)। **याः** = जो (सर्वनाम)। **अन्तरिक्षे** = अन्तरिक्ष में (अन्तः - बीच में, इक्ष् - स्वाद लेना, ईक्ष् -देखना)। **बहु-धा** = बहुत प्रकार से (सर्वनाम)। **भवन्ति** = होते हैं (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **याः** = जो (सर्वनाम)। **अग्निम्** = अग्नि को, ऊर्ध्वगामी, तेजस्वी, विद्वान् को (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **गर्भम्** = गर्भ को (गृह् - ग्रहण करना, लेना, गृ = सींचना, गीला करना, घर्षण करना, जानना, समझना, खाना, निगलना, शब्द करना, गल्भ् - जाना, जानना, पाना, ज्ञान होना, चतुर होना, साहस होना, धैर्य रखना, गृभ्-गर्भ् - अन्दर होना, अन्तःवास करना)। **दधिरे** = धारण किया (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)। **सु-वर्णाः** = सुन्दर वर्ण (सु - अच्छा, सुन्दर, (वृ - वरण करना, स्वीकार करना, वर्ण - वर्णन करना, चमकना, आज्ञा करना, प्रेरणा करना, भेजना, रंगना)। **ताः** = वे (सर्वनाम)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **आपः** = आप, व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)। **शम्** = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी (शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)। **स्योनाः** = सुख (स्योन् = सुख होना, सुख देना)। **भवन्तु** = हों, हो जायें (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना) ॥ 3 ॥

145. शिवेन मा चक्षुषा पश्यत आपः शिवया तन्वा उप स्पृशत त्वचम् मे।
घृत-श्चुतः शुचयः याः पावकाः ताः नः आपः शम् स्योनाः भवन्तु ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ :- शिवेन = शिव द्वारा, कल्याणकारी द्वारा। **मा** = नहीं, मत। **चक्षुषा** = नेत्रों द्वारा, दृष्टि द्वारा, स्पष्ट वाणी द्वारा। **पश्यत** = देखो, देखता है। **आपः** = आप, व्याप्त, व्यापक। **शिवया** = कल्याणकारी के लिए। **तन्वा** = विस्तार, वृद्धि । **उप** = समीप। **स्पृशत** = स्पर्श। **त्वचम्** = त्वचा, चर्म, खाल को। **मे** = मेरा, मेरे लिए। **घृत-श्चुतः** = प्रकाश से सिञ्चित, प्रकाशयुक्त। **शुचयः** = पवित्र। **याः** = जो। **पावकाः** = पवित्रकारक, पावक, पवित्रकर्ता, पवित्र करने वाला। **ताः** = वे। । **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा। **आपः** = आप, व्याप्त, व्यापक। **शम्** = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी। **स्योनाः** = सुख। **भवन्तु** = हों, हो जायें ॥ 4 ॥

पदार्थ :-शिवेन = शिव द्वारा, कल्याणकारी द्वारा (शिव् = कल्याण करना)। **मा** = नहीं, मत (अव्यय)। **चक्षुषा** = नेत्रों द्वारा, दृष्टि द्वारा, स्पष्ट वाणी द्वारा (चक्ष् - स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)। **पश्यत** = देखो, देखता है (पश्-दृश् = देखना)। **आपः** = आप, व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)। **शिवया** = कल्याणकारी के लिए (शिव् = कल्याण करना)। **तन्वा** = विस्तार, वृद्धि (तन् = विस्तार, श्रद्धा, उपकार,

शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना)। **उप** = समीप (उपसर्ग)। **स्पृशत** = स्पर्श (स्पृश - स्पर्श करना, छूना, संयोग करना, हाथ से लेना)। **त्वचम्** = त्वचा, चर्म, खाल को (त्वच - आच्छादित करना, लपेटना, ढांकना)। **मे** = मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **घृत-श्चुतः** = प्रकाश से सिञ्चित, प्रकाशयुक्त (घृ - चमकना, प्रकाश करना, सिञ्चन करना, गीला करना, टपकना, बूंद बूंद गिरना, क्षरित होना, क्षरण होना, झरना, घर्षण होना, नाश होना, शब्द होना। श्चुत् - टपकना, झरना, सींचना)। **शुचयः** = पवित्र (शुच्-शुक्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)। **याः** = जो (सर्वनाम)। **पावकाः** = पवित्रकारक, पावक, पवित्रकर्ता, पवित्र करने वाला (पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)। **ताः** = वे (सर्वनाम)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **आपः** = आप, व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)। **शम्** = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी (शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)। **स्योनाः** = सुख (स्योन् = सुख होना, सुख देना)। **भवन्तु** = हों, हो जायें (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना) **॥ 4 ॥**

34 मधुविद्या सूक्त - 6 (34)

146. इयम् वीरुत् मधु-जाता मधुना त्वा खनामसि।
मधोः अधि प्र-जाता असि सा नः मधु-मतः कृधि॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ :- इयम् = यह, इसको। **वीरुत्** = वीरता को धारण करने वाला, पराक्रमी। **मधु-जाता** = मधु उत्पन्न करने वाले। **मधुना** = मधु द्वारा। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा। **खनामसि** = खनन करते हो, खोदते हो। **मधोः** = मधु का। **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार। **प्र-जाता** = प्रजनन करने वाले। **असि** = हो। **सा** = वह। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा। **मधु-मतः** = मधुयुक्त का। **कृधि** = करो॥ **1 ॥**

पदार्थ :- इयम् = यह, इसको (सर्वनाम)। **वीरुत्** = वीरता को धारण करने वाला, पराक्रमी (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)। **मधु-जाता** = मधु उत्पन्न करने वाले (मध् = मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना, मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना, जन् = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **मधुना** = मधु द्वारा (मध् = मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना, मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **खनामसि** = खनन करते हो, खोदते हो (खन् = खनन करना, खोदना)। **मधोः** = मधु का (मध् = मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना, मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)। **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **प्र-जाता** = प्रजनन करने वाले (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, जन् = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **असि** = हो (अस् - होना)। **सा** = वह (सर्वनाम)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **मधु-मतः** = मधुयुक्त का (मध् = मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना, मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)। **कृधि** = करो (कृ = करना)॥ **1 ॥**

147. जिह्वायाः अग्रे मधु मे जिह्वा-मूले मधूलकम्।
मम इत् अह क्रतौ असः मम चित्तम् उप-आयसि॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ :- जिह्वायाः = जिह्वा का। **अग्रे** = अग्र, आगे, पहले। **मधु** = मीठा, मधु। **मे** = मेरा, मेरे लिए। **जिह्वा-मूले** = जिह्व मूल के लिए। **मधूलकम्** = मीठा, मधु को। **मम** = मेरा। **इत्** = ही। **अह** = व्यापक। **क्रतौ** = कर्मशील। **असः** = हो। **मम** = मेरा। **चित्तम्** = चित्त या चेतना, ज्ञान को। **उप-आयसि** = समीप आते हो **॥ 2 ॥**

पदार्थ :- जिह्वायाः = जिह्वा का (जिह = जाना, जानना, पाना)। **अग्रे** = अग्र, आगे, पहले (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **मधु** = मीठा, मधु (मध् = मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना, मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)। **मे** = मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **जिह्वा-मूले** = जिह्व मूल के लिए (जिह = जाना, जानना, पाना, मूल् = बोना, उगना, उत्पन्न होना)। **मधूलकम्** = मीठा, मधु को (मध् = मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना, मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)। **मम** = मेरा (सर्वनाम)। **इत्** = ही (अव्यय)। **अह** = व्यापक (अह् = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना)। **क्रतौ** = कर्मशील (कृ = करना)। **असः** =

हो (अस् - होना)। **मम** = मेरा (सर्वनाम)। **चित्तम्** = चित्त या चेतना, ज्ञान (चि - चुनना, एकत्र करना, चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, सम्यक् ज्ञान होना, स्मरण करना, शंका करना, सन्देह करना)। **उप-आयसि** = समीप आते हो (उप = समीप (उपसर्ग) आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अय् = जाना, जानना, पाना) ॥ **2** ॥

148. मधु-मत् मे नि-क्रमणम् मध-मत् मे परा-अयनम्।
वाचा वदामि मधु-मत् भूयासम् मधु-संदृशः ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ :- मधु-मत् = मधुयुक्त। **मे** = मेरा, मेरे लिए। **नि-क्रमणम्** = निक्रमण को, निकलने को। **मध-मत्** = मधुयुक्त। **मे** = मेरा, मेरे लिए। **परा-अयनम्** = परा अयन को, परम जानने वाले को। **वाचा** = वाणी से। **वदामि** = बोलता हूँ। **मधु-मत्** = मधुयुक्त। **भूयासम्** = हो जाऊँ। **मधु-संदृशः** = मधु को सम्यक् दिखाने वाला ॥ **3** ॥

पदार्थ :- मधु-मत् = मधुयुक्त (मध् = मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना, मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)। **मे** = मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **नि-क्रमणम्** = निक्रमण को, निकलने को (नि - निश्चित, निरन्तर, कृ - करना)। **मध-मत्** = मधुयुक्त (मध् = मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना, मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)। **मे** = मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **परा-अयनम्** = परा अयन को, परम जानने वाले को (परा = परम, परे, पीछे, विपरीत, अव्यय, अय् = जाना, जानना, पाना)। **वाचा** = वाणी से (वच - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)। **वदामि** = बोलता हूँ (वद - कहना, स्पष्ट कहना, बोलना, समझाना)। **मधु-मत्** = मधुयुक्त (मध् = मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना, मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)। **भूयासम्** = हो जाऊँ (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **मधु-संदृशः** = मधु को सम्यक् दिखाने वाला (मध् = मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना, सम् - सम्यक्, भलीभाँति, दृश् - देखना) ॥ **3** ॥

149. मधोः अस्मि मधु-तरः मदुघात् मधुमत्-तरः।
माम् इत् किल त्वम् वनाः शाखाम् मधुमतीम्-इव ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ :- मधोः = मधु का। **अस्मि** = हूँ। **मधु-तरः** = अधिक मधु युक्त। **मदुघात्** = मदुघ से। **मधुमत्-तरः** = अधिक मधु युक्त। **माम्** = मुझको। **इत्** = ही। **किल** = निश्चय ही। **त्वम्** = तुम। **वनाः** = वन। **शाखाम्** = शाखा को। **मधुमतीम्-इव** = मधु के समान ॥ **4** ॥

पदार्थ :- मधोः = मधु का (मध् = मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना, मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)। **अस्मि** = हूँ (सर्वनाम)। **मधु-तरः** = अधिक मधु युक्त (मध् = मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना, मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना, तृ - पार जाना, पर तीर को जाना, जल पर तैरना, जीतना, जल के पार जाना)। **मदुघात्** = मदुघ से (मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)। **मधुमत्-तरः** = अधिक मधु युक्त (मध् = मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना, मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना, तृ - पार जाना, पर तीर को जाना, जल पर तैरना, जीतना, जल के पार जाना)। **माम्** = मुझको (सर्वनाम)। **इत्** = ही (अव्यय)। **किल** = निश्चय ही (सर्वनाम)। **त्वम्** = तुम (सर्वनाम)। **वनाः** = वन (वन - शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, आपद्ग्रस्त होना, अलग करना, मिलाना, स्मरण करना, बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, याचना करना, मांगना, दुःख देना, उद्योग-धन्धा करना)। **शाखाम्** = शाखा को (शाख् = व्याप्त होना, फैलना, शाखा निकलना)। **मधुमतीम्-इव** = मधु के समान (मध् = मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना, मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)। ॥ **4** ॥

150. परि त्वा परि-तत्नुना इक्षुणा अगाम् अवि-द्विषे।
यथा माम् कामिनी असः यथा मत् न अप-गाः असः ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ :- परि = सभी तरफ। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा। **परि-तत्नुना** = परिव्याप्त द्वारा। **इक्षुणा** = स्वादिष्ट । **अगाम्** = भ्रमण किया, गया, प्राप्त किया, स्तुति की। **अवि-द्विषे** = अविद्वेष में, विद्वेष हीन में। **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार। **माम्** = मुझको। **कामिनी** = कामना, इच्छा। **असः** = हो। **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार। **मत्** = मुझसे। **न** = नहीं, समान, उपमार्थक। **अप-गाः** = दूर जाना, दूर जानना। **असः** = हो। ॥ **5** ॥

पदार्थ :- परि = सभी तरफ (उपसर्ग)। **त्वा =** तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **परि-तत्नुना =** परिव्याप्त द्वारा (परि = सभी तरफ, उपसर्ग, तन् = विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना)। **इक्षुणा =** स्वादिष्ट (इक्ष = स्वाद लेना)। **अगाम् =** भ्रमण किया, गया, प्राप्त किया, स्तुति की (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अग् = जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, गति करना, घूमना, कुटिल गति करना, टेढ़ा जाना, लेना, ग्रहण करना, गम् = जाना, जानना, पाना, गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना)। **अवि-द्विषे =** अविद्वेष में, विद्वेष हीन में (अ-नही, वि- विशेष, द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)। **यथा =** जिससे, जैसे, जिस प्रकार। **माम् =** मुझको (सर्वनाम)। **कामिनी =** कामना, इच्छा (कम् - चाहना, इच्छा करना)। **असः =** हो (अस् - होना)। **यथा =** जिससे, जैसे, जिस प्रकार। **मत् =** मुझसे (सर्वनाम)। **न =** नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **अप-गाः =** दूर जाना, दूर जानना (अप = दूर, नीचे, अपकार, गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गम् - जाना, जानना, पाना)। **असः =** हो (अस् - होना)॥ **5**॥

35 दीर्घायुप्राप्ति सूक्त - 7 (35)

151. यत् आ अबध्नन् दाक्षायणाः हिरण्यम्, शतानीकाय सुमनस्यमानाः।
तत् मे आ बध्नामि शतशारदाय, आयुष्मान् जरदष्टिः यथा सम्॥ 1॥

मन्त्रार्थ- सुमनस्यमानाः सुमनस्यमान **दाक्षायणाः** दाक्षायणों ने **यत्** जिस **हिरण्यम्** हिरण्य को **शतानीकाय** शतानीक के लिए **आ अबध्नन्** बाँधा था, **वह** उसको **यथा** जैसे, यथायोग्य **सम् जरदष्टिः** सम्यक् जरदष्टि **आयुष्मान्** आयुष्मान् **मे** मैं **शतशारदाय** शत शरद के लिए **आ बध्नामि** बाँधता हूँ॥ **1**॥

भावार्थ- दक्ष जनों ने हिरण्य अर्थात् प्रकाश को अच्छे मन वाले तथा शतानीक अर्थात् सैकड़ो अनीक या प्राण वाले के लिए बाँधा था। उस दिव्य ज्योति को धारण कर ही हम सौ वर्ष की आयु तक सक्रिय जीवन प्राप्त कर सकते हैं।

पदार्थ :- यत् = जो। **आ =** समन्तात्, सम्पूर्णतः (उपसर्ग)। **अबध्नन्** = बाँधा (बध - बांधना, बद्ध करना, हिंसा करना, मारना, वध करना, घृणा करना)। **दाक्षायणा =** दाक्षायणों ने (दक्ष - समृद्ध होना, दक्ष होना, शीघ्र कार्य करना)। **हिरण्यम् =** हिरण्य का (हिरण - प्रकाश होना, दीप्त होना, शब्द करना, ध्वनि होना)। **शतानीकाय =** शतानीक के लिए (शतम् = सौ, अन - जीना, समर्थ होना, जाना)। **सुमनस्यमानाः =** सुमनस्यमान (सु - अच्छा, सुन्दर, मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना)। **तत् =** वह, उसको। **मे =** मेरे लिए, मेरा, हमारा। **आ =** समन्तात्, सम्पूर्णतः (उपसर्ग)। **बध्नामि** = बाँधता हूँ (बन्ध - बांधना, बध - बांधना, बद्ध करना, हिंसा करना, मारना, वध करना, घृणा करना)। **शतशारदाय =** शत शरद के लिए (शतम् = सौ, शृ - सुनना)। **आयुष्मान् =** आयुष्मान (अय - जाना, आयुस् - जीवनम्)। **जरदष्टि =** जरदष्टि (जृ - वृद्ध होना, जीर्ण होना, अश् - व्याप्त होना, खाना, भोगना)। **यथा =** जैसे। **सम् =** सम्यक्, भलीभाँति॥ **1**॥

152. न एनम् रक्षांसि न पिशाचाः सहन्ते,
देवानाम् ओजः प्रथमजम् हि एतत्।
यो बिभर्ति दाक्षायणम् हिरण्यम्,
सः जीवेषु कृणुते दीर्घम् आयुः॥ 2॥

मन्त्रार्थ- एनम् इसको, **न** नहीं **रक्षांसि** रक्षक, **न** नहीं **पिशाचाः** पिशाच **सहन्ते** हे सक्षम, **देवानाम्** देवों का **एतत्** यह **ओजः** ओज **हि** ही **प्रथमजम्** प्रथम (है)। **यो** जो **दाक्षायणम्** दाक्षायण **हिरण्यम्** हिरण्य को **बिभर्ति** भरण करता है, **स** वह **जीवेषु** जीवों में **दीर्घम्** दीर्घ **आयुः** आयु **कृणुते** करता है॥ **2**॥

भावार्थ- देवों का ओज ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। देवत्व का भरण-पोषण करने वाला दीर्घायु प्राप्त करता है। रक्ष धातुका अर्थ रक्षा करना है। रक्षा करने में समर्थ को रक्षः या रक्षस् कहा जाता है। वे केवल अपनी रक्षा करते रहें या समाज के रक्षक बनें, इससे उनका महत्व समझा जाता है। पिश धातु का अर्थ टुकड़े टुकड़े करना, चीरना, व्यवस्था करना है।

इन गुणों क्षमताओं से सम्पन्न लोगों को पिशाच कह सकते हैं। ऐसे रक्षस् या पिशाच भी देवत्व के गुणों की उपेक्षा करने पर नहीं तर पाते हैं। रक्षस् तथा पिशाच क्षमतावान् तथा समर्थ होने को व्यक्त करते हैं। वे इन गुणों का सदुपयोग करें या दुरुपयोग, यह व्यक्ति विशेष के स्वभाव पर निर्भर है। परन्तु चाहे चीरने की शक्ति हो या व्यवस्था करने की क्षमता हो अथवा रक्षा करने की शक्ति हो, इन सबसे से अधिक महत्वपूर्ण है देवत्व का गुण ॥ 2 ॥

पदार्थ :- न = नहीं। **एनम् =** इसको, इसे (सर्वनाम)। **रक्षांसि =** रक्षक (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना)। **न =** नहीं। **पिशाचाः =** पिशाच (पिश - टुकड़े टुकड़े करना, चीरना, व्यवस्था करना)। **सहन्ते =** हे सक्षम, समर्थ, तृप्त, सन्तुष्ट, प्रतिरोध करने वाले (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)। **देवानाम् =** देवों का (दिव्, देव् = चमकना, तेजस्वी होना, विद्वान होना)। **ओजः =** ओज (ओज - शक्तिमान् होना, जीना, बढ़ना)। **प्रथमजम् =** प्रथम उत्पन्न (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)। **हि =** ही। **एतत् =** यह। **यो =** जो। **विभर्ति =** भरण करना (भृ - भरण पोषण, धारण करना)। **दाक्षायणम् =** दाक्षायण को (दा, दद् = देना)। **हिरण्यम् =** हिरण्य का (हिरण - प्रकाश होना, दीप्त होना, शब्द करना, ध्वनि होना)। **सः =** वह। **जीवेषु =** जीवों में (जीव् = जीवन होना, प्राणवान् होना, प्राण धारण करना, जीवन धारण करना)। **कृणुते =** करता है (कृ = करना)। **दीर्घम् =** दीर्घ, बड़ा (दृह - बढ़ना, वृद्धिगत होना)। **आयुः =** आयु (अय = जाना, आयुस् - जीवनम्) ॥ 2 ॥

153 . अपाम् तेजः ज्योतिः ओजः बलम् च वनस्पतीनाम् उत वीर्याणि।
इन्द्रे-इव इन्द्रियाणि अधि धारयामः अस्मिन तत् दक्षमाणः बिभरत् हिरण्यम् ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ :- अपाम् = अपा को, पालकों का। **तेजः =** तेज। **ज्योतिः =** प्रकाश। **ओजः =** ओज। **बलम् =** बल को। **च =** और। **वनस्पतीनाम् =** वनस्पतियों का। **उत** = ही, भी, ओर। **वीर्याणि =** वीरकर्मों को, पराक्रमों को। **इन्द्रे-इव =** इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान के समान। **इन्द्रियाणि =** इन्द्रिय समूह, परम ऐश्वर्यवान् समूह। **अधि =** अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार। **धारयामः =** धारण करने वाले को। **अस्मिन =** इस, इसमें। **तत् =** वह, उस को। **दक्षमाणः =** दक्षमाण को। **बिभरत् =** भरण, धारण किया। **हिरण्यम् =** प्रकाशमान, शब्दमय को ॥ 3 ॥

पदार्थ :- अपाम् = अपा को, पालकों का (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना)। **तेजः =** तेज (तिज्, तेज् = चमकना, चमकाना, पैना करना, प्रभाव होना, तीक्ष्ण करना)। **ज्योतिः =** प्रकाश (ज्युत - कान्तिमान् होना, चमकना, प्रकाशित होना)। **ओजः =** ओज (ओज - शक्तिमान् होना, जीवित होना, बढ़ना)। **बलम् =** बल को (बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना)। **च =** और (अव्यय)। **वनस्पतीनाम् =** वनस्पतियों का (वन - शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, आपद्ग्रस्त होना, अलग करना, मिलाना, स्मरण करना, बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, याचना करना, मांगना, दुःख देना, उद्योग-धन्धा करना, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **वीर्याणि =** वीरकर्मों को, पराक्रमों को (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)। **इन्द्रे-इव =** इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान के समान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना, इव = समान, की भाँति, के समान (अव्यय))। **इन्द्रियाणि =** इन्द्रिय समूह, परम ऐश्वर्यवान् समूह (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **अधि =** अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **धारयामः =** धारण करने वाले को (धाः = पोषण करना, रक्षण करना, देना, दान करना, धार बाँधना, धारा होना, धृ = धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना, स्थिर रहना, धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)। **अस्मिन =** इस, इसमें (सर्वनाम)। **तत् =** वह, उस को (सर्वनाम)। **दक्षमाणः =** दक्षमाण को (दक्ष् - बढ़ना, समृद्ध होना, शीघ्र कार्य करना, चतुर होना, दक्ष होना, चलना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मार डालना)। **बिभरत् =** भरण, धारण किया (भृ- भरना, भरण करना, धारण करना)। **हिरण्यम् =** प्रकाशमान, शब्दमय को (हिरण - प्रकाश होना, दीप्त होना, शब्द करना, ध्वनि होना, हि = गति करना, रण् = शब्द करना, जाना, पण् = स्तुति करना, व्यवहार करना) ॥ 3 ॥

154 . समानाम् मासाम् ऋतुभिः त्वा वयम्, सम्वत्सरस्य पयसा पिपर्मि।

इन्द्राग्नी विश्वे देवाः ते, अनु मन्यन्ताम् अहृणीयमानाः ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ :- समानाम् = समान। **मासाम्** = मासा को, रूपान्तरण करने, मापन करने वाले को। **ऋतुभिः** = ऋतुओं द्वारा। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा। **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग। **सम्वत्सरस्य** = सम्वत्सर के। **पयसा** = पयस् द्वारा, विस्तार द्वारा, गतिशील, प्रवाहमान द्वारा। **पिपर्मि** = पूर्ण किया। **इन्द्राग्नी** = इन्द्र तथा अग्नि, परम ऐश्वर्यवान तथा प्रगतिशील, अग्रणी। **विश्वे** = सभी। **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **अनु** = पश्चात्, पीछे, अनुकूल। **मन्यन्ताम्** = जानें, समझें, विचार करें, स्वीकार करें, मानें। **अहृणीयमानाः** = अक्रोधी, क्रोध न करने वाला।

पदार्थ :- समानाम् = समान (सम - सब (सर्वनाम)। सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, सम = न घबराना, एक समान रहना, अन् - प्राण होना, जीवन होना, श्वास लेना)। **मासाम्** = मासा को, रूपान्तरण करने, मापन करने वाले को (मस् = रूपान्तरण करना, मापन करना, मापना)। **ऋतुभिः** = ऋतुओं द्वारा (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **सम्वत्सरस्य** = सम्वत्सर के (सम् - सम्यक्, सम् - न घबराना, एक समान रहना, वद् - बोलना, कहना, सृ - चलना, सरकना)। **पयसा** = पयस् द्वारा, विस्तार द्वारा, गतिशील, प्रवाहमान द्वारा (पय् = जाना, जानना, पाना, बहना, पयस् = विस्तार करना, फैलाना)। **पिपर्मि** = पूर्ण किया (पृ-पूर्ण करना, भरना)। **इन्द्राग्नी** = इन्द्र तथा अग्नि, परम ऐश्वर्यवान तथा प्रगतिशील, अग्रणी (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना, अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना, पीना)। **विश्वे** = सभी (सर्वनाम)। **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **अनु** = पश्चात्, पीछे, अनुकूल (उपसर्ग)। **मन्यन्ताम्** = जानें, समझें, विचार करें, स्वीकार करें, मानें (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **अहृणीयमानाः** = अक्रोधी, क्रोध न करने वाला (अ = नही, हृणी - लज्जित होना, क्रोध करना)।**। 4 ॥**

इति प्रथमम् काण्डम्

ॐ

द्वितीयम् काण्डम्

7 अनुवाक - 1

36 परमधाम सूक्त - 1 (1)

155. वेनः तत् पश्यत् परमम् गुहा यत्, यत्र विश्वम् भवति एकरूपम्॥
इदम् पृश्निः अदुहत् जायमानाः, स्वः-विदः अभि अनूषत व्राः॥ 1॥

मन्त्रार्थ - **वेनः** = विद्वान्, कान्तिमान् **तत्** = वह, उस को **पश्यत्** = देखो, देखता है **परमम्** = परम, अत्यन्त, उच्चतम, प्रमुखतम को **गुहा** = गुह्य, गुहा **यत्** = जिसे, जो **यत्र** = जहाँ **विश्वम्** = सबको, सब विश्व को **भवति** = होता है **एकरूपम्** = एक रूप को **इदम्** = यह, इसको **पृश्निः** = प्रश्नकर्ता **अदुहत्** = अदुह, दुहा **जायमानाः** = उत्पन्न करने वाला **स्वः** = उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि या जगत् **विदः** = विद्वान् **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा **अनूषत** = स्तुति की **व्राः** = वरणीय॥ 1॥

भावार्थ - उस निहित गुह्य सत्य स्वरूप परमात्मा को विद्वान् ही देख पाते हैं। वी धातु व्यापक अर्थों वाली है। जानना, व्यापना, पाना आदि इसके प्रमुख अर्थ हैं। वेन का अर्थ सामान्यतः विद्वान् ही लिया गया है। उस परम सत्य स्वरूप परमात्मा का अनुभव हो जाने पर विश्व एक नीड अर्थात् एक आश्रय जैसा प्रतीत होने लगता है। नीड का अर्थ आश्रय या घोसला भी होता है। नीड शब्द का प्रयोग विराट में लघुता का अनुभव कराने के लिए हुआ है। विश्व-परिवार या विश्व ग्राम से बहुत आगे बढ़कर सम्पूर्ण सृष्टि के एक नीड हो जाने का अनुभव है। परमात्मा का अनुभव हो जाने पर तो उसके अतिरिक्त सबकुछ अति सूक्ष्म ही प्रतीत होता है।

पदार्थ - **वेनः** = विद्वान्, कान्तिमान् (वेन - मिलाना, अलग करना, रक्षा करना, जाना, समझना, जानना, स्मरण करना, सारासार विचार करना, तारतम्य देखना, वाद्य यन्त्र बजाना, बाजा हाथ में लेना)। **तत्** = वह, उस को (सर्वनाम)। **पश्यत्** = देखो, देखता है (पश्-दृश् = देखना)। **परमम्** = परम, अत्यन्त, उच्चतम, प्रमुखतम (सर्वनाम)। **गुहा** = गुह्य, गुहा (गुह् - आच्छादन करना, छिपाना, ढकना, गति करना, जाना, जानना, हिंसा करना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **यत्र** = जहाँ (सर्वनाम)। **विश्वम्** = सबको, सब विश्व को (विश्व - सब कुछ)। **भवति** = होता है (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **एकरूपम्** = एक रूप को (एक = एक, एक - विचार करना, रूप - बनाना, आकार बनाना, रचना करना, मन में रुपाकृति लाना)। **इदम्** = यह, इसको (सर्वनाम)। **पृश्निः** = प्रश्नकर्ता (पृश् - पृच्छ - पूछना, जानने की इच्छा करना, प्रश्न करना, पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सींचना, सींचना, सहन करना)। **अदुहत्** = अदुह, दुहा (अ - नहीं, दुह् - दूध निकालना, दोहना, रिक्त करना, लेना, खींचना)। **जायमानाः** = उत्पन्न करने वाला (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **स्वः** = उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि या जगत् (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **विदः** = विद्वान् (विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)। **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **अनूषत** = स्तुति की (अनु = पश्चात्, पीछे, उष-ऊष - ताप देना, जलाना, हिंसा करना, रोग होना, नू - प्रशंसा करना, स्तुति करना)। **व्राः** = वरणीय (वृ - पसन्द करना, नियोजित करना, आच्छादित करना, सेवा करना, परिचर्या करना, चुनना, छांटना रंगना, पसन्द करना, नियोजित करना, नियमित करना, आच्छादित करना, ढंकना, हटाना, ढकना, घेरना)॥ 1॥

156. प्र तत् वोचेत् अमृतस्य विद्वान्, गन्धर्वो धाम परमम् गुहा यत्।
त्रीणि पदानि निहिता गुहा अस्य, यः तानि वेद सः पितुः पिता असत्॥ 2॥

मन्त्रार्थ - **तत्** उस **अमृतस्य** अमृत का **गन्धर्वो** गन्धर्व, गतिशीलता, विद्वता को धारण करने वाले **विद्वान्** विद्वान्,

धाम धारण करने योग्य **परमम्** = परम, अत्यन्त, उच्चतम, प्रमुखतम को **गुहा** गुह्य **यत्** = जिसे, जो **प्र वोचेत्** कहे, प्रवचन करे। **अस्य** इसके **त्रीणि** तीन **पदानि** पद **गुहा** गुह्य में **निहिता** स्थित (हैं), **यः** जो **तानि** उन को **वेद** जानता है, **सः** वह **पितुः** पिता का **पिता** पिता **असत्** हो गया है **॥ 2 ॥**

भावार्थ - परमात्मा के सत्य स्वरूप को विद्वान् ही बता सकते हैं। पहले भी कहा जा चुका है कि उस परमात्मा के तीन पद तो मूल परम चेतन रूप में सर्वदा स्थित रहते हैं, मात्र एक पद ही सृष्टि के रूप में व्यक्त होता है। उस अव्यक्त मूल स्वरूप को जो जान लेता है, वह तो पिता का भी पिता हो जाता है अर्थात् स्वयम् ब्रह्म-रूप हो जाता है **॥ 2 ॥**

पदार्थ - **प्र वोचेत्** = कहे, प्रवचन करे (प्र - प्रकृष्ट, वच्-वद् - कहना)। **तत्** = उस। **अमृतम्** = अमृत को (मृ - मरना)। **विद्वान्** = विद्वान् (विद् - जानना)। **गन्धर्वो** = गन्धर्व, गतिशीलता, विद्वता को धारण करने वाला (गम् + धृ, गम् = जाना, जानना, पाना, धृ = धारण करना, गन्ध् = गन्ध होना, शोभित होना, मांगना, जाना)। **धाम** = धारण करने योग्य (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)। **परमम्** = परम, अत्यन्त, उच्चतम, प्रमुखतम (सर्वनाम)। **गुहा** = गुह्य, गुहा (गुह् - आच्छादन करना, छिपाना, ढकना, गति करना, जाना, जानना, हिंसा करना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **त्रीणि** = तीन। **पदानि** = पद (पद् - चलना)। **निहिता** = स्थित (नि - निरन्तर, निश्चित, हि - जाना)। **गुहा** = गुह्य में (गुह् - आच्छादन करना, जाना)। **अस्य** = इसका (सर्वनाम)। **यः** = जो। **तानि** = उन को। **वेद** = जानता है (विद् - जानना)। **सः** = वह। **पितुः** = पिता का (पि - जाना, जानना, पाना, पा- पालन करना, रक्षा करना)। **पिता** = पिता (पि - जाना, जानना, पाना, पा- पालन करना, रक्षा करना)। **असत्** = हो गया है (अस् - होना) **॥ 2 ॥**

157. स नः पिता जनिता स उत बन्धुः, धामानि वेद भुवनानि विश्वा।
यो देवानाम् नामधः एकः एव तम्, सम्-प्रश्नम् भुवना यन्ति सर्वा॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - **स** = वह, उसने **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा **पिता** = पिता, पालन करने वाला, पिता **जनिता** = उत्पन्न करने वाला **सः** = वह, उसने **उत** = ही, भी, ओर **बन्धुः** = बन्धु, बन्धन करने वाला, बाँधने वाला **धामानि** = धामों को **वेद** = ज्ञान, जानो, जानता है **भुवनानि** = भुवों का, वर्तमान का **विश्वा** = विश्व, सभी, सब **यो** = जो। **देवानाम्** = देवों का **नामधः** = नाम धारण करने वाले **एकः** = एक **एव** = ही **तम्** = उसको, उसे **सम्-प्रश्नम्** = सम्-प्रश्न को **भुवना** = हो रहा, वर्तमान **यन्ति** = प्राप्त होते हैं, नियमन-नियन्त्रण करते हैं **सर्वा** = सभी **॥ 3 ॥**

पदार्थ - **स** = वह, उसने (सर्वनाम)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **पिता** = पिता, पालन करने वाला, पिता (पि - जाना, जानना, पाना, पा- पालन करना, रक्षा करना)। **जनिता** = उत्पन्न करने वाला (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **सः** = वह, उसने (सर्वनाम)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **बन्धुः** = बन्धु, बन्धन करने वाला, बाँधने वाला (बध्-बन्ध् = बाँधना, बद्ध करना, हिंसा करना, मारना, वध करना, घृणा करना)। **धामानि** = धामों को (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)। **वेद** = ज्ञान, जानो, जानता है (विद् = जानना, समझना, विद्यमान होना)। **भुवनानि** = भुवों का, वर्तमान का (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **विश्वा** = विश्व, सभी, सब (सर्वनाम)। **यो** = जो। **देवानाम्** = देवों का (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **नामधः** = नाम धारण करने वाले (नाम - नाम होना, नाम रखना, नम् = नमन करना, सम्मान करना, शब्द करना)। **एकः** = एक (संख्या)। **एव** = ही (अव्यय)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **सम्-प्रश्नम्** = सम्-प्रश्न को (सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, पृष्-पृश् - पूँछना, प्रश्न करना)। **भुवना** = हो रहा, वर्तमान (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **यन्ति** = प्राप्त होते हैं, नियमन-नियन्त्रण करते हैं (यम् = रोकना, स्वाधीन रखना, आवरण करना, पोषण करना, नियमन करना, यन -उद्धार करना, या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, जानना)। **सर्वा** = सभी (सर्वनाम) **॥ 3 ॥**

158. परि द्यावापृथिवी सद्यः आयम् उप आ-तिष्ठे प्रथम-जाम् ऋतस्य।
वाचम् इव वक्तरि भुवने-स्थाः धास्युः एषः ननु एषः अग्निः॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ :- परि = सभी तरफ। **द्यावापृथिवी =** अग्रगामी विस्तार, प्रकाश, द्यावा और पृथिवी। **सद्यः =** शीघ्र, तत्काल, तत्क्षण, अभी का, गम्य। **आयम् =** यह। **उप =** समीप। **आ-तिष्ठे =** प्रतिष्ठित होता, ठहरता हूं। **प्रथम-जाम् =** प्रथम उत्पन्न को। **ऋतस्य =** ऋत का। **वाचम् =** वाणी को। **इव =** समान, की भाँति, के समान। **वक्तरि =** वक्ता, बोलने वाला। **भुवने-स्थाः =** भुवन में स्थित हो। **धास्युः =** पोषण करने वाला। **एषः =** यह। **ननु =** निश्चय ही। **एषः =** यह। **अग्निः =** अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान्।। **4** ।।

पदार्थ :-परि = सभी तरफ (उपसर्ग)। **द्यावापृथिवी =** अग्रगामी विस्तार, प्रकाश, द्यावा और पृथिवी (द्यु - आगे जाना, समीप जाना, द्युत् -दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, द्यै = तिरस्कार करना, पृथु = विस्तार होना, फेंकना, उड़ाना, भेजना, प्रेरणा करना)। **सद्यः =** शीघ्र, तत्काल, तत्क्षण, अभी का, गम्य (सद्यो = शीघ्र, तत्काल, तत्क्षण, अभी का (सर्वनाम), सद् - जाना, चलना, शक्तिहीन होना, म्लान होना, सूखना, मुर्झाना, भग्न करना, नष्ट करना)। **आयम् =** यह (सर्वनाम)। **उप =** समीप (उपसर्ग)। **आ-तिष्ठे =** प्रतिष्ठित होता, ठहरता हूं (आ - भलीभाँति, तिष्ठ - ठहरना, स्थित होना) **प्रथम-जाम् =** प्रथम उत्पन्न को (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना, जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना)। **ऋतस्य =** ऋत का (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)। **वाचम् =** वाणी को (वच - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)। **इव =** समान, की भाँति, के समान (अव्यय)। **वक्तरि =** वक्ता, बोलने वाला (वच् - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)। **भुवने-स्थाः =** भुवन में स्थित हो (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना, अस् - होना, स्था - स्थित होना, ठहरना)। **धास्युः =** पोषण करने वाला (धा = पोषण करना, रक्षण करना, देना, दान करना, धार बाँधना, धारा होना)। **एषः =** यह (सर्वनाम)। **ननु =** निश्चय ही (अव्यय)। **एषः =** यह (सर्वनाम)। **अग्निः =** अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)।। **4** ।।

159. परि विश्वा भुवनानि आयम् ऋतस्य तन्तुम् विततम् दृशे कम्।
यत्र देवाः अमृतम् आनशानाः, समाने योनौ अधि ऐरयन्त।। 5 ।।

मन्त्रार्थ - परि = सभी तरफ **विश्वा =** सब **भुवनानि =** भुवनों को **आयम् =** यह **ऋतस्य =** ऋत का **तन्तुम् =** तन्तु को **विततम् =** विस्तृत **दृशे =** देखने के लिए **कम् =** किसको **यत्र =** जहाँ **देवाः =** विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने **अमृतम् =** अमृत को **आनशानाः =** अशन करते हुए **समाने =** समान **योनौ =** योनि में, मिलाने अलग करने, बन्धन, सम्बन्ध में, सम्बन्धियों में **अधि =** अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार **ऐरयन्त =** प्राप्त होते हैं **।। 5 ।।**

भावार्थ - परमात्मा ही हमारा अपना है। वही हमारा भाई है तथा उत्पन्न करने वाला माता-पिता भी है। वही सम्पूर्ण सृष्टि संचालन का विधान बनाने वाला है। वही है जो सभी भुवनों को जानता है, अन्य किसी की सामर्थ्य इतनी नहीं है कि सब कुछ जान सके। जीव का ज्ञान सीमित ही होता है। जहाँ हम रहते है तथा जितना हम जानते हैं, वह तो हमारे लिए पहला धाम है ही, उसके अतिरिक्त जो सृष्टि है, वह दूसरा धाम कहा जा सकता है। इन दोनों धामों के अतिरिक्त जो कुछ है, वह परमात्मा का शुद्ध चेतन मूल स्वरूप है, वही तीसरा धाम है। उसको जानकर, उसका अनुभव कर ही अमृत तत्व का पान कर सकते हैं।। 5 ।।

पदार्थ - परि = सभी तरफ (उपसर्ग)। **विश्वा =** सब। **भुवनानि =** भुवनों को (भू - होना)। **आयम् =** यह (सर्वनाम)। **ऋतस्य =** ऋत का (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)। **तन्तुम् =** तन्तु को (तन् = विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना)। **विततम् =** विस्तृत (वि - विशेष, तन् - विस्तार करना, वर्णन करना, शब्द करना, आश्रय देना, वित्त - देना, दान करना, धर्म में व्यय करना)। **दृशे =** देखने के लिए (दृश्-पश्य -देखना)। **कम् =** किसको (सर्वनाम)। **यत्र =** जहाँ। **देवाः =** विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **अमृतम् =** अमृत को (अ - नहीं, मृ - मरना)। **आनशानाः =** अशन करते हुए (आ - समन्तात, सम्यक्, अन्- चेतन होना, प्राण होना, जीवन होना, समर्थ होना, जाना, शान - तीक्ष्म करना, पैना करना, धार रखना, शण - दान करना, जाना, जानना, शब्द करना)। **समाने =** समान (सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, सम = न घबराना, एक समान रहना, अन् - प्राण होना, जीवन होना,

श्वास लेना)। **योनौ** = योनि में, मिलाने अलग करने, बन्धन, सम्बन्ध में, सम्बन्धियों में (यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, बांधना, बन्धन करना, गूंथना, बन्धन होना, संयोग-वियोग करना)। **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **ऐरयन्त** = प्राप्त होते हैं (इर् - ईर्ष्या करना, ऋ-इर्य - जाना, चलना, फैलाना, ईर - जाना, प्रेरणा करना) ॥ 5 ॥

37 भुवनपति सूक्त - 2 (2)

160. दिव्यो गन्धर्वो भुवनस्य यः पतिः, एकः एव नमस्यो विक्षु ईड्यः।
तम् त्वा यौमि ब्रह्मणा दिव्य देव, नमः ते अस्तु दिवि ते सधस्थम् ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ :- दिव्यो = दिव में, दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय में। **गन्धर्वो** = गतिशीलता, विद्वता को धारण करने वाला।। **भुवनस्य** = भुवन का, वर्तमान का। **यः** = जो। **पतिः** = ऐश्वर्यवान्, स्वामी। **एकः** = एक। **एव** = ही। **नमस्यो** = नमन करने योग्य। **विक्षु** = विवेकशीलों में। **ईड्यः** = स्तुत्य। **तम्** = उसको, उसे। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा। **यौमि** = संयुक्त करता हूँ, मिलाता हूँ, सम्बन्धित करता हूँ। **ब्रह्मणा** = ब्रह्म द्वारा। **दिव्य** = दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय। **देव** = देव, विद्वान्, तेजस्वी, दिव्यस्वरूप। **नमः** = नमन। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **अस्तु** = हो। **दिवि** = दिव्यता में, दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय में। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **सधस्थम्** = सहस्थ, सहस्थित, साथ स्थित को।। **1** ॥

पदार्थ :- दिव्यो = दिव में, दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय में (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)। **गन्धर्वो** = गतिशीलता, विद्वता को धारण करने वाला (गम् + धृ, गम् = जाना, जानना, पाना, धृ = धारण करना, गन्ध् = गन्ध होना, शोभित होना, मांगना, जाना)। **भुवनस्य** = भुवन का, वर्तमान का (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **यः** = जो (सर्वनाम)। **पतिः** = ऐश्वर्यवान्, स्वामी (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **एकः** = एक (संख्या)। **एव** = ही (अव्यय)। **नमस्यो** = नमन करने योग्य (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **विक्षु** = विवेकशीलों में (विक् - विवेक करना, तारतम्य देखना, पृथक् करना, पृथक् होना)। **ईड्यः** = स्तुत्य (ईड - प्रशंसा करना, स्तुति करना)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **यौमि** = संयुक्त करता हूँ, मिलाता हूँ, सम्बन्धित करता हूँ (यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, बांधना, बन्धन करना, गूंथना, बन्धन होना, संयोग-वियोग करना)। **ब्रह्मणा** = ब्रह्म द्वारा (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **दिव्य** = दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)। **देव** = देव, विद्वान्, तेजस्वी, दिव्यस्वरूप (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **नमः** = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **अस्तु** = हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **दिवि** = दिव्यता में, दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय में (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **सधस्थम्** = सहस्थ, सहस्थित, साथ स्थित को (सध = साथ (अव्यय), सद् = जाना, जानना, पाना, पहुँचना)।। **1** ॥

161. दिवि स्पृष्टो यजतः सूर्यत्वक्, अवयाता हरसो दैव्यस्य।
मृडात् गन्धर्वो भुवनस्य यः पतिः, एक एव नमस्यः सुशेवाः ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ :- दिवि = दिव्यता में, दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय में। **स्पृष्टो** = स्पर्श किये हुए। **यजतः** = यजन करो। **सूर्यत्वक्** = सूर्य, उत्पन्न करने वाला, उत्पन्नकर्ता, ऐश्वर्यवान्। **अवयाता** = दूर जाने वाला। **हरसो** = हर का। **दैव्यस्य** = दिव्य के लिए। **मृडात्** = सुखी करें। **गन्धर्वो** = गतिशीलता, विद्वता को धारण करने वाला। **भुवनस्य** = भुवन का, वर्तमान

का। **यः** = जो। **पतिः** = ऐश्वर्यवान्, स्वामी। **एकः** = एक । **एव** = ही। **नमस्यः** = नमन करने योग्य। **सुशेवाः** = उत्तम कल्याण, उत्तम सुख।। **2** ।।

पदार्थ :-दिवि = दिव्यता में, दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय में (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)। **स्पृष्टो** = स्पर्श किये हुए (स्पृश - स्पर्श करना, छूना, संयोग करना हाथ से लेना, कंपन करना)। **यजतः** = यजन करो (यज - यज्ञ करना, हवन करना, देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना, संयोग करना)। **सूर्यत्वक्** = सूर्य, उत्पन्न करने वाला, उत्पन्नकर्ता, ऐश्वर्यवान् (सुर - ऐश्वर्य होना, अद्‌भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना, सू - उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, ऐश्वर्य होना, त्वच् - आच्छादित करना, लपेटना, ढांकना)। **अवयाता** = दूर जाने वाला (अव = नीचे, दूर, प्राप्त, या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, यत् - यत्न करना, प्रयास करना, उद्योग करना, दुःख देना, छाया-आच्छादन करना, रोकना)। **हरसो** = हर का (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)। **दैव्यस्य** = दिव्य के लिए (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **मृडात्** = सुखी करें (मृड - सुखी होना, सुख देना)। **गन्धर्वो** = गतिशीलता, विद्वता को धारण करने वाला (गम् + धृ, गम् = जाना, जानना, पाना, धृ = धारण करना, गन्ध् = गन्ध होना, शोभित होना, मांगना, जाना)। **भुवनस्य** = भुवन का, वर्तमान का (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **यः** = जो (सर्वनाम)। **पतिः** = ऐश्वर्यवान्, स्वामी (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **एकः** = एक (संख्या)। **एव** = ही (अव्यय)। **नमस्यः** = नमन करने योग्य (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **सुशेवाः** = उत्तम कल्याण, उत्तम सुख (सु - अच्छा, सुन्दर, शेव् - सेचन, घर्षण, सेवा करना, शिव् = कल्याण होना, सुख होना)।। **2** ।।

162. अनवद्याभिः सम् उ जग्मे आभिः अप्सरासु अपि गन्धर्वः आसीत्।
समुद्रे आसाम् सदनम् मे आहुः यतः सद्यः आ च परा च यन्ति।। 3 ।।

मन्त्रार्थ :- **अनवद्याभिः** = अनवद्य द्वारा, अवोद्य द्वारा। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति। **उ** = निश्चय ही, भी । **जग्मे** = गम्य, जाने योग्य, गतिशील के लिए। **आभिः** = इनसे, इनके द्वारा, इनके साथ। **अप्सरासु** = अप्स के रस, पालन रक्षण करने वालों की गति में। **अपि** = भी, निकट। **गन्धर्वः** = गतिशीलता, विद्वता को धारण करने वाला। **आसीत्** = था। **समुद्रे** = समुद्र में। **आसाम्** = इनका। **सदनम्** = सदन को, स्थान को। **मे** = मेरा, मेरे लिए। **आहुः** = आदान-प्रदान किया हुआ, आहुत, आह्वान किये, बुलाये हुए, व्याप्त। **यतः** = जिससे। **सद्यः** = शीघ्र, तत्काल, तत्क्षण, अभी का, गम्य। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम। **च** = और। **परा** = परम्, परे, पीछे, विपरीत। **च** = और। **यन्ति** = प्राप्त होते हैं, नियमन-नियन्त्रण, पोषण करते हैं।। **3** ।।

पदार्थ :- **अनवद्याभिः** = अनवद्य द्वारा, अवोद्य द्वारा (अन् - नहीं, अ - नहीं, वद् - बोलना, कहना, समझना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **उ** = निश्चय ही, भी (निपात, अव्यय)। **जग्मे** = गम्य, जाने योग्य, गतिशील के लिए (जग् = गति करना, लेना, घर्षण करना)। **आभिः** = इनसे, इनके द्वारा, इनके साथ (सर्वनाम)। **अप्सरासु** = अप्स के रस, पालन रक्षण करने वालों की गति में (अप = जाना, जानना, पाना, पालन करना, रस् - स्वाद लेना, शब्द करना, प्रीति करना, सृ - गति करना, सरकना, जाना, जानना, पाना)। **अपि** = भी, निकट (अव्यय)। **गन्धर्वः** = गतिशीलता, विद्वता को धारण करने वाला (गम् + धृ, गम् = जाना, जानना, पाना, धृ = धारण करना, गन्ध् = गन्ध होना, शोभित होना, मांगना, जाना)। **आसीत्** = था (अस् - होना)। **समुद्रे** = समुद्र में (सम् = सम्यक्, भलीभांति। उन्द - आर्द्र होना, गीला होना)। **आसाम्** = इनका (सर्वनाम)। **सदनम्** = सदन को, स्थान को (सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)। **मे** = मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **आहुः** = आदान-प्रदान किया हुआ, आहुत, आह्वान किये, बुलाये हुए, व्याप्त (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, अह - फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, हु - दान करना, आदान-प्रदान करना)। **यतः** = जिससे (सर्वनाम)। **सद्यः** = शीघ्र, तत्काल, तत्क्षण, अभी का, गम्य (सद्यो = शीघ्र, तत्काल, तत्क्षण, अभी का (सर्वनाम), सद् - जाना, चलना, शक्तिहीन होना, म्लान होना, सूखना, मुर्झाना, भग्न करना, नष्ट करना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण,

आगम (उपसर्ग)। **च** = और (अव्यय)। **परा** = परम्, परे, पीछे, विपरीत (अव्यय)। **च** = और (अव्यय)। **यन्ति** = प्राप्त होते हैं, नियमन-नियन्त्रण, पोषण करते हैं (यम् = रोकना, स्वाधीन रखना, आवरण करना, पोषण करना, नियमन करना, यन - उद्धार करना, या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, जानना)।**। 3 ।।**

163. अभ्रिये दिद्युत् नक्षत्रिये याः विश्व-वसुम् गन्धर्वम् सचध्वे।
ताभ्यः वः देवीः नमः इत् कृणोमि।। 4 ।।

मन्त्रार्थ :- अभ्रिये = भरा, पूर्ण। **दिद्युत्** = प्रकाशित किया। **नक्षत्रिये** = नक्षत्रियों के लिए, नक्षत्र-विदों के लिए। **याः** = जो। **विश्व-वसुम्** = विश्ववसु को। **गन्धर्वम्** = गतिशीलता, विद्वता को धारण करने वाले को। **सचध्वे** = अभिसिञ्चन, सेवा करते हैं। **ताभ्यः** = उनके लिए, उनसे। **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग । **देवीः** = दिव्यगुणयुक्त। **नमः** = नमन। **इत्** = ही। **कृणोमि** = करता हूँ।**। 4 ।।**

पदार्थ :- अभ्रिये = भरा, पूर्ण (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, भृ = भरना, भरण करना)। **दिद्युत्** = प्रकाशित किया (द्युत - चमकना, प्रकाशित होना)। **नक्षत्रिये** = नक्षत्रियों के लिए, नक्षत्र-विदों के लिए (नक्ष - जाना, आना, पहुंचना, जानना, पाना)। **याः** = जो (सर्वनाम)। **विश्व-वसुम्** = विश्ववसु को (विश्वः = सभी, वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)। **गन्धर्वम्** = गतिशीलता, विद्वता को धारण करने वाले को (गम् + धृ, गम् = जाना, जानना, पाना, धृ = धारण करना, गन्ध् = गन्ध होना, शोभित होना, मांगना, जाना)। **सचध्वे** = अभिसिञ्चन, सेवा करते हैं (सच् = सिञ्चन करना, सेवा करना, सन्तुष्ट करना, जानना, पूर्णतया समझना, सम्बन्धी होना)। **ताभ्यः** = उनके लिए, उनसे (सर्वनाम)। **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **देवीः** = दिव्यगुणयुक्त (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **नमः** = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **इत्** = ही (अव्यय)। **कृणोमि** = करता हूँ (कृ = करना)।**। 4 ।।**

164. याः क्लन्दाः तमिषीचयः अक्ष-कामाः मनः-मुहः।
ताभ्यः गन्धर्व-पत्नीभ्यः अप्सराभ्यः अकरम् नमः।। 5 ।।

मन्त्रार्थ :- याः = जो। **क्लन्दाः** = क्रन्दन करने , पुकारने वाली। **तमिषीचयः** = इच्छा को सींचने वाले। **अक्ष-कामाः** = अक्ष को चाहना वाली। **मनः-मुहः** = मन-मुह, मन को मोहित करने वाली है। **ताभ्यः** = उनके लिए, उनसे। **गन्धर्व-पत्नीभ्यः** = गन्धर्व की पत्नी के लिए। **अप्सराभ्यः** = अप्सरा के लिए। **अकरम्** = किया, कर्महीन को, न करने वाले को । **नमः** = नमन।**। 5 ।।**

पदार्थ :- याः = जो (सर्वनाम)। **क्लन्दाः** = क्रन्दन करने , पुकारने वाली (क्लन्द - विकल होना, दुःखी होना, चञ्चल होना, क्रन्दन करना, रोना, पुकारना, बुलाना, आह्लाद होना, सन्तोष करना)। **तमिषीचयः** = इच्छा को सींचने वाले (तम - इच्छा करना, चाहना, मानसिक या शारीरिक व्यथा से दुःखित होना, अन्धकार होना, ग्लानि होना, सिच् - छिड़कना, प्रोक्षण करना, छींटा देना, सींचना)। **अक्ष-कामाः** = अक्ष को चाहना वाली (अक्ष - खेलना, देखना, एकत्र होना, व्याप्त होना, इच्छितार्थ होना, पैठना, कम् - चाहना, इच्छा करना)। **मनः-मुहः** = मन-मुह, मन को मोहित करने वाली है (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना, मुह् - मोहना, मोहित होना, मुग्ध होना)। **ताभ्यः** = उनके लिए, उनसे (सर्वनाम)। **गन्धर्व-पत्नीभ्यः** = गन्धर्व की पत्नी के लिए (गम् = जाना, जानना, पाना, धृ = धारण करना, गन्ध् = गन्ध होना, शोभित होना, मांगना, जाना, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **अप्सराभ्यः** = अप्सरा के लिए (अप = जाना, जानना, पाना, पालन करना, सृ - गति करना, सरकना, जाना, जानना, पाना)। **अकरम्** = किया, कर्महीन को, न करने वाले को (अ = नहीं, उपसर्ग, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, कृ = करना)। **नमः** = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)।**। 5 ।।**

38 आस्रवाभेषज सूक्त -3 (3)

165. अदः यत् अव-धावति अवत्-कम् अधि पर्वतात्।
तत् ते कृणोमि भेषजम् सु-भेषजम् यथा अससि॥ 1॥

मन्त्रार्थ :- अदः = खाने वाला। **यत्** = जिसे, जो। **अव-धावति** = नीचे दौड़ता है। **अवत्-कम्** = रक्षा करने वाले, पालन करने वाले को। **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार। **पर्वतात्** = पर्वत, पर्वतों से। **तत्** = वह, उस को। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **कृणोमि** = करता हूँ। **भेषजम्** = भेषज को, औषधि को। **सु-भेषजम्** = उत्तम भेषज, औषधि को। **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार। **अससि** = हो॥ **1॥**

पदार्थ :- अदः = खाने वाला (अद् - खाना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **अव-धावति** = नीचे दौड़ता है (अव = नीचे, दूर, प्राप्त, धाव - जाना, भागना, स्वच्छ करना, निर्मल करना, धोना, स्वच्छ होना)। **अवत्-कम्** = रक्षा करने वाले, पालन करने वाले को (अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)। **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **पर्वतात्** = पर्वत, पर्वतों से (पर्व् - पूर्ण करना, पूरा करना, भरना, विभाग करना)। **तत्** = वह, उस को (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **कृणोमि** = करता हूँ (कृ = करना)। **भेषजम्** = भेषज को, औषधि को (भिषज् - रोग मुक्त करना, चिकित्सा करना, नष्ट करना, भेष - डरना, जाना, जानना, पाना)। **सु-भेषजम्** = उत्तम भेषज, औषधि को (सु - सुन्दर, अच्छा, भिषज् - रोग मुक्त करना, चिकित्सा करना, नष्ट करना, भेष - डरना, जाना, जानना, पाना)। **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार (अव्यय)। **अससि** = हो (अस् - होना)॥ **1॥**

166. आत् अङ्ग कुवित् अङ्ग शतम् या भेषजानि ते।
तेषाम् असि त्वम् उत्-तमम् अनास्रवम् अरोगणम्॥ 2॥

मन्त्रार्थ :- आत् = भी, अथ, अब, इसके अनन्तर। **अङ्ग** = अङ्ग, विद्वान्, प्रगतिशील, पाने वाला। **कुवित्** = बहुत। **अङ्ग** = अङ्ग, विद्वान्, प्रगतिशील, पाने वाला। **शतम्** = सौ। **या** = जो। **भेषजानि** = भेषज, औषधि है। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **तेषाम्** = उनका। **असि** = हो। **त्वम्** = तुम। **उत्-तमम्** = उत्तर को, तैरने-पार जाने को। **अनास्रवम्** = न टपकने वाला, न सकने वाला। **अरोगणम्** = अरोग को॥ **2॥**

पदार्थ :- आत् = भी, अथ, अब, इसके अनन्तर (अव्यय)। **अङ्ग** = अङ्ग, विद्वान्, प्रगतिशील, पाने वाला (अंग् = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)। **कुवित्** = बहुत (अव्यय)। **अङ्ग** = अङ्ग, विद्वान्, प्रगतिशील, पाने वाला (अंग् = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)। **शतम्** = सौ (संख्या, सर्वनाम)। **या** = जो (सर्वनाम)। **भेषजानि** = भेषज, औषधि है (भिषज् - रोग मुक्त करना, चिकित्सा करना, नष्ट करना, भेष - डरना, जाना, जानना, पाना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **तेषाम्** = उनका (सर्वनाम)। **असि** = हो (अस् - होना)। **त्वम्** = तुम (सर्वनाम)। **उत्-तमम्** = उत्तर को, तैरने-पार जाने को (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, तॄ, तॄ = तैरना, पार जाना)। **अनास्रवम्** = न टपकने वाला, न सरकने वाला (अन् - नहीं, आ - समन्तात्, पूर्णतः, स्रु = जाना, जानना, पाना, सरकना, टपकना, झरना, चूना)। **अरोगणम्** = अरोग को (रुज् - हिंसा करना, रोग होना, कष्ट होना, टूटना)॥ **2॥**

167. नीचैः खनन्ति असुराः अरुः-स्राणम् इदम् महत्।
तत् आ-स्रावस्य भेषजम् तत् उ रोगम् अनीनशत्। 3॥

मन्त्रार्थ :- नीचैः = निम्न, चाकरी, नीच। **खनन्ति** = खनन करते हैं, खोदते हैं। **असुराः** = असुर, ऐश्वर्यहीन, उत्पन्न-सृजन नहीं करने वाला, प्रकाश देने वाला। **अरुः-स्राणम्** = हिंसा को पिघलाने वाला। **इदम्** = यह, इसको। **महत्** = महान्। **तत्** = वह, उस को। **आ-स्रावस्य** = पूर्णतः स्रवित को। **भेषजम्** = भेषज को, औषधि को। **तत्** = वह, उस को। **उ** = निश्चय ही, भी। **रोगम्** = रोग को। **अनीनशत्** = स्पन्दनशील, चेतन, प्राणवान् का नाश किया॥ **3॥**

पदार्थ :- नीचैः = निम्न, चाकरी (नीच् - निम्न होना, चाकरी करना)। **खनन्ति** = खनन करते हैं, खोदते हैं (खन् = खनन करना, खोदना)। **असुराः** = असुर, ऐश्वर्यहीन, उत्पन्न-सृजन नहीं करने वाला, प्रकाश देने वाला (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना,

सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्‌भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना)। **अरुः-स्राणम्** = हिंसा को पिघलाने वाला (ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, स्नै – पक्व करना, पकाना, पिघलाना)। **इदम्** = यह, इसको (सर्वनाम)। **महत्** = महान् (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना)। **तत्** = वह, उस को (सर्वनाम)। **आ-स्रावस्य** = पूर्णतः स्रवित को (आ - समन्तात्, पूर्णतः, स्रु = जाना, जानना, पाना)। **भेषजम्** = भेषज को, औषधि को (भिषज् - रोग मुक्त करना, चिकित्सा करना, नष्ट करना, भेष - डरना, जाना, जानना, पाना)। **तत्** = वह, उस को (सर्वनाम)। **उ** = निश्चय ही, भी (निपात, अव्यय)। **रोगम्** = रोग को (रुज् - हिंसा करना, रोग होना, कष्ट होना, टूटना)। **अनीनशत्** = स्पन्दनशील, चेतन, प्राणवान् का नाश किया (अ = भूतकालिक क्रिया (उपसर्ग) अन् = नहीं (उपसर्ग)। अन् = प्राण होना, चेतन होना, श्वास लेना, स्पन्दन करना, हलचल करना, जीवन होना, समर्थ होना, जाना, नश् - नष्ट होना, अदृश्य होना)।। **3** ।।

168. उप-जीकाः उत् भरन्ति समुद्रात् अधि भेषजम्।
तत् आ-स्रावस्य भेषजम् तत् उ रोगम् अशीशमत्।। 4 ।।

मन्त्रार्थ :- उप-जीकाः = उपजीक (उप - समीप, जि-सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)। **उत्** = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)। **भरन्ति** = धारण-पोषण करते हैं (भृ = पूर्ण करना, भरना, धारण-पोषण करना)। **समुद्रात्** = समुद्र से (सम् = सम्यक्, भलीभांति। उन्द - आर्द्र होना, गीला होना)। **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **भेषजम्** = भेषज को, औषधि को (भिषज् - रोग मुक्त करना, चिकित्सा करना, नष्ट करना, भेष - डरना, जाना, जानना, पाना)। **तत्** = वह, उस को (सर्वनाम)। **आ-स्रावस्य** = पूर्णतः स्रवित को (आ - समन्तात्, पूर्णतः, स्रु = जाना, जानना, पाना)। **भेषजम्** = भेषज को, औषधि को (भिषज् - रोग मुक्त करना, चिकित्सा करना, नष्ट करना, भेष - डरना, जाना, जानना, पाना)। **तत्** = वह, उस को (सर्वनाम)। **उ** = निश्चय ही, भी (निपात, अव्यय)। **रोगम्** = रोग को (रुज् - हिंसा करना, रोग होना, कष्ट होना, टूटना)। **अशीशमत्** = शान्त कर दिया है (अ = भूतकालिक क्रिया (उपसर्ग) अ = नहीं, शी- सोना, शयन करना, शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)।। **4** ।।

पदार्थ :- उप-जीकाः = उपजीक (उप - समीप, जि-सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)। **उत्** = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)। **भरन्ति** = धारण-पोषण करते हैं (भृ = पूर्ण करना, भरना, धारण-पोषण करना)। **समुद्रात्** = समुद्र से (सम् = सम्यक्, भलीभांति। उन्द - आर्द्र होना, गीला होना)। **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **भेषजम्** = भेषज को, औषधि को (भिषज् - रोग मुक्त करना, चिकित्सा करना, नष्ट करना, भेष - डरना, जाना, जानना, पाना)। **तत्** = वह, उस को (सर्वनाम)। **आ-स्रावस्य** = पूर्णतः स्रवित को (आ - समन्तात्, पूर्णतः, स्रु = जाना, जानना, पाना)। **भेषजम्** = भेषज को, औषधि को (भिषज् - रोग मुक्त करना, चिकित्सा करना, नष्ट करना, भेष - डरना, जाना, जानना, पाना)। **तत्** = वह, उस को (सर्वनाम)। **उ** = निश्चय ही, भी (निपात, अव्यय)। **रोगम्** = रोग को (रुज् - हिंसा करना, रोग होना, कष्ट होना, टूटना)। **अशीशमत्** = शान्त कर दिया है (अ = भूतकालिक क्रिया (उपसर्ग) अ = नहीं, शी- सोना, शयन करना, शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)।। **4** ।।

169. अरुः-स्राणम् इदम् महत् पृथिव्याः अधि उत्-भृतम्।
तत् आ-स्रावस्य भेषजम् तत् उ रोगम् अनीनशत्।। 5 ।।

मन्त्रार्थ :- अरुः-स्राणम् = हिंसा को पिघलाने वाला। **इदम्** = यह, इसको। **महत्** = महान्। **पृथिव्याः** = पृथ्वी योग्य, पृथिवी के। **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार। **उत्-भृतम्** = उच्च भरण करने वाले।

तत् = वह, उस को। **आ-स्रावस्य** = पूर्णतः स्रवित को। **भेषजम्** = भेषज को, औषधि को। **तत्** = वह, उस को। **उ** = निश्चय ही, भी। **रोगम्** = रोग को। **अनीनशत्** = स्पन्दनशील, चेतन, प्राणवान् का नाश किया।।**1 5**।।

पदार्थ :- **अरुः-स्राणम्** = हिंसा को पिघलाने वाला (ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, स्रै – पक्व करना, पकाना, पिघलाना)। **इदम्** = यह, इसको (सर्वनाम)। **महत्** = महान् (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना)। **पृथिव्याः** = पृथ्वी योग्य, पृथिवी के (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)। **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **उत्-भृतम्** = उच्च भरण करने वाले (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, भृ - भरण-पोषण, धारण करना)। **तत्** = वह, उस को (सर्वनाम)। **आ-स्रावस्य** = पूर्णतः स्रवित को (आ - समन्तात्, पूर्णतः, स्रु = जाना, जानना, पाना)। **भेषजम्** = भेषज को, औषधि को (भिषज् - रोग मुक्त करना, चिकित्सा करना, नष्ट करना, भेष - डरना, जाना, जानना, पाना)। **तत्** = वह, उस को (सर्वनाम)। **उ** = निश्चय ही, भी (निपात, अव्यय)। **रोगम्** = रोग को (रुज् - हिंसा करना, रोग होना, कष्ट होना, टूटना)। **अनीनशत्** = स्पन्दनशील, चेतन, प्राणवान् का नाश किया (अ = भूतकालिक क्रिया (उपसर्ग) अन् = नहीं (उपसर्ग)। अन् = प्राण होना, चेतन होना, श्वास लेना, स्पन्दन करना, हलचल करना, जीवन होना, समर्थ होना, जाना, नश् - नष्ट होना, अदृश्य होना)।।**1 5**।।

170. शम् नः भवन्तु अपः ओषधयः शिवाः।
इन्द्रस्य वज्रः अप हन्तु रक्षसः आरात् वि-सृष्टाः इषवः पतन्तु रक्षसाम्।। 6 ।।

मन्त्रार्थ :- **शम्** = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा। **भवन्तु** = हों, हो जायें। **अपः** = पालन करने वाला, पालक, रक्षक्। **ओषधयः** = ओषधियाँ। **शिवाः** = कल्याणकारी। **इन्द्रस्य** = इन्द्र का, परम ऐश्वर्यशाली का। **वज्रः** = वज्र, गतिमान। **अप** = दूर, नीचे, अपकार। **हन्तु** = हनन करे, मारे। **रक्षसः** = रक्षा करने वाले, रक्षस्। **आरात्** = दूर से, समीप। **वि-सृष्टाः** = विशेष सृजित। **इषवः** = इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि, निरन्तर कर्मशील। **पतन्तु** = गिरायें, उड़ायें। **रक्षसाम्** = रक्षा को।। **6** ।।

पदार्थ :- **शम्** = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी (शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **भवन्तु** = हों, हो जायें (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **अपः** = पालन करने वाला, पालक, रक्षक् (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना)। **ओषधयः** = ओषधियाँ (उषध्- ओषध् - जानना, रोग मुक्त करना, चिकित्सा)। **शिवाः** = कल्याणकारी (शिव् = कल्याण करना)। **इन्द्रस्य** = इन्द्र का, परम ऐश्वर्यशाली का (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **वज्रः** = वज्र, गतिमान (वज् - गति करना, जाना, हस्त - देना, लेना, ग्रहण करना)। **अप** = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। **हन्तु** = हनन करे, मारे (हन् - मारना)। **रक्षसः** = रक्षा करने वाले, रक्षस् (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना)। **आरात्** = दूर से, समीप (अव्यय)। **वि-सृष्टाः** = विशेष सृजित (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग), सृज् - छोड़ना, त्याग करना, विविध रूप से उत्पन्न करना, रचना करना)। **इषवः** = इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि, निरन्तर कर्मशील (इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना)। **पतन्तु** = गिरायें, उड़ायें (पत् = जाना, उड़ना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **रक्षसाम्** = रक्षा को (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना)।।**6** ।।

39 दीर्घायुप्राप्त सूक्त -4 (4)

171. दीर्घायु-त्वाय बृहते रणाय अरिष्यन्तः दक्षमाणाः सदा एव।
मणिम् विस्कन्ध-दूषणम् जङ्गिडम् बिभृमः वयम्।। 1 ।।

मन्त्रार्थ :- **दीर्घायुत्वाय** = दीर्घ आयु के लिए, **बृहते** = महान्, बड़ा, बृहत् के लिए, **रणाय** = रण, शब्द के लिए, **अरिष्यन्तः** = अहिंसा करते हुए, हिंसा न करते हुए, **दक्षमाणाः** = दक्ष, वृद्धि करते हुए, **सदा** = सदा, सर्व काल में। **एव** = ही, **मणिम्** = मणि, शब्द को, **विस्कन्ध-दूषणम्** = विशेष स्कन्ध दूषित को। **जङ्गिडम्** = जाते हैं, जानते हैं, हनन

करते हैं, हिंसा करते हैं **बिभृमः** = भरण, धारण करें, **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग।**। 1 ।।**

पदार्थ :- दीर्घायु-त्वाय = दीर्घ आयु के लिए (दृह - बढ़ना, वृद्धिगत होना, यु = मिलना, अलग करना)। **बृहते** = महान्, बड़ा, बृहत् के लिए (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **रणाय** = रण, शब्द के लिए (रण् - शब्द करना, ध्वनि करना, जाना)। **अरिष्यन्तः** = अहिंसा करते हुए, हिंसा न करते हुए (अ - नहीं, रिष्- हिंसा करना, मार डालना, दुःख देना, मारने का यत्न करना)। **दक्षमाणाः** = दक्ष, वृद्धि करते हुए (दक्ष् - बढ़ना, समृद्ध होना, शीघ्र कार्य करना, चतुर होना, दक्ष होना, चलना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मार डालना)। **सदा** = सदा, सर्व काल में। **एव** = ही (अव्यय)। **मणिम्** = मणि, शब्द को (मण् - शब्द करना)। **विस्कन्ध-दूषणम्** = विशेष स्कन्ध दूषित को (वि - विशेष, स्कन्द = जाना, सूखना, दूष् =दूषित होना, दूषित करना)। **जङ्गिडम्** = जाते हैं, जानते हैं, हनन करते हैं, हिंसा करते हैं (जङ्घ् - गति करना, जाना, जानना, पाना, **गड्** – बहना, झरना, सींचना, टपकाना)। **बिभृमः** = भरण, धारण करें (भृ- भरना, भरण करना, धारण करना)। **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)।**। 1 ।।**

172. जङ्गिडः जम्भात् विशरात् व्स्किन्धात् अभि-शोचनात्।
मणिः सहस्र-वीर्यः परि नः पातु विश्वतः ।। 2 ।।

मन्त्रार्थ :- जङ्गिडः = जाते हैं, जानते हैं, **जम्भात्** = गर्व से, नाश से, **विशरात्** = विशेष हिंसा से, **विस्कन्धात्** = विशेष स्कन्ध, **अभिशोचनात्** = प्रमुख शोचकर्ता, **मणिः** = मणि, शब्द, **सहस्रवीर्यः** = हजार वीरता युक्त, **परि** = सभी तरफ, **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा, **पातु** = पालन करो, रक्षा करो, **विश्वतः** = सबसे, विश्व से।**। 2 ।।**

पदार्थ :- जङ्गिडः = जाते हैं, जानते हैं (जङ्घ् - गति करना, जाना, जानना, पाना)। **जम्भात्** = गर्व से, नाश से (जम्भ् - नाश करना, गर्व करना, आलस्य होना)। **विशरात्** = विशेष हिंसा से (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग),। शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, शृ - मार डालना, दुःख देना, पीड़ा करना, फटना, हिंसा करना, मारना)। **विस्कन्धात्** = विशेष स्कन्ध (वि - विशेष, स्कन्द = जाना, सूखना)। **अभिशोचनात्** = प्रमुख शोचकर्ता (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग), शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना, शुद्ध - पवित्र करना, दुःख मानना, शोक करना)। **मणिः** = मणि, शब्द (मण् - शब्द करना)। **सहस्रवीर्यः** = हजार वीरता युक्त (सहस्र = हजार, वीर - वीर होना, पराक्रम करना)। **परि** = सभी तरफ (उपसर्ग)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **पातु** = पालन करो, रक्षा करो (पा = पालन करना, बचाना)। **विश्वतः** = सबसे, विश्व से (सर्वनाम)।**। 2 ।।**

173. अयम् वि-स्कन्धम् सहते अयम् बाधते अत्त्रिणः।
अयम् नः विश्व-भेषजः जङ्गिडः पातु अंहसः ।। 3 ।।

मन्त्रार्थ :- अयम् = यह, **विस्कन्धम्** = विशेष स्कन्ध को, **सहते** = सक्षम, समर्थ, सन्तुष्ट, सहन करते हैं, **अयम्** = यह, **बाधते** = बाधित करता है, दुःख देता है, **अत्त्रिणः** = अतिशय गमनशील के लिए, जानने वाले के लिए, **अयम्** = यह, **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा, **विश्व-भेषजः** = विश्वभेषज, सभी औषधियाँ, **जङ्गिडः** = जाते हैं, जानते हैं, **पातु** = पालन करो, रक्षा करो, **अंहसः** = प्रकाशमान।**। 3 ।।**

पदार्थ :- अयम् = यह (सर्वनाम)। **विस्कन्धम्** = विशेष स्कन्ध को (वि - विशेष, स्कन्द = जाना, सूखना)। **सहते** = सक्षम, समर्थ, सन्तुष्ट, सहन करते हैं (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)। **अयम्** = यह (सर्वनाम)। **बाधते** = बाधित करता है, दुःख देता है (बाध - रोकना, अटकाव करना, बाधा देना, दुःख देना)। **अत्त्रिणः** = अतिशय गमनशील के लिए, जानने वाले के लिए (अत् = जाना, सतत गति करना, जानना, पाना, अद् - खाना)। **अयम्** = यह (सर्वनाम)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **विश्व-भेषजः** = विश्वभेषज, सभी औषधियाँ (विश्वः = सभी। भिषज् - रोग मुक्त करना, चिकित्सा करना, नष्ट करना, भेष - डरना, जाना, जानना, पाना)। **जङ्गिडः** = जाते हैं, जानते हैं (जङ्घ् - गति करना, जाना, जानना, पाना)। **पातु** = पालन करो, रक्षा करो (पा = पालन करना, बचाना)। **अंहसः** = प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति

करना, मथना)।**। 3 ।।**

174. देवैः दत्तेन मणिना जङ्गिडेन मयोभुवा।
वि-स्कन्धम् सर्वा रक्षांसि व्यायामे सहामहे।। 4 ।।

मन्त्रार्थ :- देवैः = देवों द्वारा, देवों के साथ, **दत्तेन** = दिया हुआ, **मणिना** = मणि, शब्द, **जङ्गिडेन** = जाते हैं, जानते हैं, **मयोभुवा** = विद्वान्, गति से होने वाले, ज्ञान से होने वाले, **विस्कन्धम्** = विशेष स्कन्ध को, **सर्वा** = सब, सभी, **रक्षांसि** = रक्षक, **व्यायामे** = व्यय करते हो, **सहामहे** = सक्षम, समर्थ, तृप्त, सन्तुष्ट होते हैं।**। 4 ।।**

पदार्थ :- देवैः = देवों द्वारा, देवों के साथ (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **दत्तेन** = दिया हुआ (दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)। **मणिना** = मणि, शब्द (मण् - शब्द करना)। **जङ्गिडेन** = जाते हैं, जानते हैं (जङ्घ् - गति करना, जाना, जानना, पाना)। **मयोभुवा** = विद्वान्, गति से होने वाले, ज्ञान से होने वाले (मय् - जाना, जानना, पाना)। **विस्कन्धम्** = विशेष स्कन्ध को (वि - विशेष, स्कन्द = जाना, सूखना)। **सर्वा** = सब, सभी (सर्वनाम)। **रक्षांसि** = रक्षक (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना)। **व्यायामे** = व्यय करते हो (वि - विशेष, इ-अय् - जाना, जानना, पाना, व्यय - आच्छादन करना, उपयोग होना, खर्च होना, नाश होना)। **सहामहे** = सक्षम, समर्थ, तृप्त, सन्तुष्ट होते हैं (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)**।। 4 ।।**

175. शणः च मा जङ्गिडः च विस्कन्धात् अभि रक्षताम्।
अरण्यात् अन्यः आ-भृतः कृष्याः अन्यः रसेभ्यः।। 5 ।।

मन्त्रार्थ :- शणः = दानी, विद्वान्, **च** = और, **मा** = मुझे, **जङ्गिडः** = जाते हैं, जानते हैं, **च** = और, **विस्कन्धात्** = विशेष स्कन्ध, **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, **रक्षताम्** = रक्षा करो, बचाओ, **अरण्यात्** = प्रगतिशील, विद्वान्, गति, ज्ञान युक्त, **अन्यः** = कोई और, इतर, अन्य, **आभृतः** = परिपूर्ण है, **कृष्याः** = कृषि से, **अन्यः** = कोई और, इतर, अन्य, **रसेभ्यः** = रस द्वारा **।। 5 ।।**

पदार्थ :- शणः = दानी, विद्वान् (शण् - देना, दान करना, जाना, शब्द करना, तीक्ष्ण करना)। **च** = और (अव्यय)। **मा** = मुझे (मा-माम् - सर्वनाम)। **जङ्गिडः** = जाते हैं, जानते हैं (जङ्घ् - गति करना, जाना, जानना, पाना)। **च** = और (अव्यय)। **विस्कन्धात्** = विशेष स्कन्ध (वि - विशेष, स्कन्द = जाना, सूखना)। **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **रक्षताम्** = रक्षा करो, बचाओ (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना)। **अरण्यात्** = प्रगतिशील, विद्वान्, गति, ज्ञान युक्त (ऋ-अर् = जाना, जानना, पाना, महत्व दिखाना, शब्द करना, ध्वनि करना, हिंसा करना, रण - शब्द करना, जाना)। **अन्यः** = कोई और, इतर, अन्य (सर्वनाम)। **आभृतः** = परिपूर्ण है (आ - समन्तात्, पूर्णतः, भृ - भरण करना, पूर्ण करना)। **कृष्याः** = कृषि से (कृष् = विलेखन, कर्षण करना, खींचना, आकर्षण होना, रेखा करना)। **अन्यः** = कोई और, इतर, अन्य (सर्वनाम)। **रसेभ्यः** = रस द्वारा (रस् = शब्द करना, स्वाद लेना, प्यार करना)**।। 5 ।।**

176. कृत्या-दूषिः अयम् मणिः अयो अराति-दूषिः।
अथो सहस्वान् जङ्गिडः प्र नः आयूंषि तारिषत्।। 6 ।।

मन्त्रार्थ :- कृत्या-दूषिः = कृत्य दूषित। **अयम्** = यह। **मणिः** = मणि, शब्द। **अयो** = प्रगतिशील, विद्वान्, गति, ज्ञान। **अराति-दूषिः** = अदानी दोषी। **अथो** = अब, इसके पश्चात्, इसके अनन्तर। **सहस्वान्** = सहनशील, सक्षम, समर्थ, तृप्त, सन्तुष्ठ। **जङ्गिडः** = जाते हैं, जानते हैं। **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा। **आयूंषि** = आयु। **तारिषत्** = चाहा, तार दिया, पार किया।**। 6 ।।**

पदार्थ :- कृत्या-दूषिः = कृत्य दूषित (कृ - करना, कृत - कतरना, काटना, दूष् =दूषित होना, दूषित करना)। **अयम्** = यह (सर्वनाम)। **मणिः** = मणि, शब्द (मण् - शब्द करना)। **अयो** = प्रगतिशील, विद्वान्, गति, ज्ञान (अ - नहीं, अय् = जाना, जानना, पाना)। **अराति-दूषिः** = अदानी दोषी (अ - नहीं, रा = देना, दूष् =दूषित होना, दूषित करना)। **अथो** = अब, इसके पश्चात्, इसके अनन्तर (अव्यय)। **सहस्वान्** = सहनशील, सक्षम, समर्थ, तृप्त, सन्तुष्ठ (सह =

शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)। **जङ्गिडः =** जाते हैं, जानते हैं (जङ्घ् - गति करना, जाना, जानना, पाना)। **प्र =** प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **आयूंषि =** आयु (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अय = जाना, जानना, पाना, गति करना, आय - शब्द करना, शासन करना, यु = मिलना, अलग करना)। **तारिषत् =** चाहा, तार दिया, पार किया (तृ - पार जाना, पर तीर को जाना, जल पर तैरना, जीतना, जल के पार जाना, तृष - प्यास लगना, इच्छा करना, उत्कण्ठित होना, चाहना)॥ **6**॥

40 इन्द्रशौर्य सूक्त - 5 (5)

177. इन्द्र जुषस्व प्र वह, आ याहि शूरः हरिभ्याम्।
पिबा सुतस्य मतेः इह, मधोः चकानः चारुः मदाय॥ 1॥

मन्त्रार्थ :- इन्द्र = परम ऐश्वर्यशाली **जुषस्व =** सेवा करो, सन्तुष्ट करो **प्र =** प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक **वह =** वहन करो, ले जाओ **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण **याहि =** जायें, प्राप्त हों, प्राप्त करें **शूरः =** वीर, पराक्रमी **हरिभ्याम् =** हरण करने वाले के लिए, हरि-युगल के लिए **पिबा =** पियो, पान करें **सुतस्य =** सुत का **मतेः =** मति, मननशक्ति **इह =** इसमें, यहां, यह **मधोः =** मधु का **चकानः =** तृप्त करते हुए, तृप्त होते हुए **चारुः =** चारु **मदाय =** हर्ष के लिए, तृप्ति के लिए॥ **1**॥

पदार्थ :- इन्द्र = परम ऐश्वर्यशाली (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **जुषस्व =** सेवा करो, सन्तुष्ट करो (जुष् = विचार करना, सेवा करना, सेवन करना, विवेक होना, विवेचना करना, प्रीति करना, चाहना, दुलारना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना)। **प्र =** प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **वह =** वहन करो, ले जाओ (वह् = वहन करना ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग)। **याहि =** जायें, प्राप्त हों, प्राप्त करें (या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)। **शूरः =** वीर, पराक्रमी (शूर - पराक्रमी होना, शूरवीर होना, वीरता दिखाना)। **हरिभ्याम् =** हरण करने वाले के लिए, हरि-युगल के लिए (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)। **पिबा =** पियो, पान करें (पी-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)। **सुतस्य =** सुत का (सु - उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना)। **मतेः =** मति, मननशक्ति (मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना)। **इह =** इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **मधोः =** मधु का (मध् = मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना, मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)। **चकानः =** तृप्त करते हुए, तृप्त होते हुए (चक् = तृप्त होना, सन्तुष्ट होना, चकमा देना, धोखा करना)। **चारुः =** चारु (चर - जाना, खाना, आचरण करना, संशय होना)। **मदाय =** हर्ष के लिए, तृप्ति के लिए (मद - हर्षित होना, तृप्त करना, समाधान करना)॥ **1**॥

178. इन्द्र जठरम् नव्यः न, पृणस्व मधोः दिवो न।
अस्य सुतस्य स्वः न उप, त्वा मदाः सुवाचो अगुः॥ 2॥

मन्त्रार्थ :- इन्द्र = परम ऐश्वर्यशाली **जठरम् =** जठर को **नव्यः =** नवीन, स्तुतियोग्य **न =** नहीं, समान, उपमार्थक **पृणस्व =** पूर्ण करो **मधोः =** मधु का **दिवो =** दिव, स्तुतिकर्ता, तेजस्वी, ज्योतिर्मय **न =** नहीं, समान, उपमार्थक **अस्य =** इसका **सुतस्य =** सुत का **स्वः =** उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि या जगत् **न =** नहीं, समान, उपमार्थक **उप =** समीप **त्वा =** तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **मदाः =** मद, हर्ष, तृप्ति **सुवाचो =** उत्तम वाणी **अगुः =** गया॥ **2**॥

पदार्थ :- इन्द्र = परम ऐश्वर्यशाली (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **जठरम् =** जठर को (जठ् - धारण करना)। **नव्यः =** नवीन, स्तुतियोग्य (नु-नव् - प्रशंसा करना, स्तुति करना, नूतन होना, नया होना)। **न =** नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **पृणस्व =** पूर्ण करो (पृ - पूर्ण करना, भरना, पालन करना)। **मधोः =** मधु का (मध् = मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना, मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)। **दिवो =** दिव, स्तुतिकर्ता, तेजस्वी, ज्योतिर्मय (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)। **न =** नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **अस्य =** इसका (सर्वनाम)।

सुतस्य = सुत का (सु - उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्‌भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना)। **स्वः** = उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि या जगत् (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **न** = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **उप** = समीप (उपसर्ग)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **मदाः** = मद, हर्ष, तृप्ति (मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)। **सुवाचो** = उत्तम वाणी (सु = उत्तम, अच्छा, वच - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)। **अगुः** = गया (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, गम् = जाना, जानना, पाना) ॥ **2** ॥

179. इन्द्रः तुराषाट् मित्रो वृत्रम्, यो जघान यतीः न।
बिभेद बलम् भृगुः न, ससहे शत्रून् मदे सोमस्य ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ :- **इन्द्रः** = परम ऐश्वर्यशाली **तुराषाट्** = शीघ्रकारी, शीघ्रगामी **मित्रो** = मित्र **वृत्रम्** = वृत्र, हिंसा को **यो** = जो (सर्वनाम)। **जघान** = हिंसा की, मार दिया, हनन किया **यतीः** = यत्न करने वाला **न** = नहीं, समान, उपमार्थक **बिभेद** = भेदन किया **बलम्** = बल को **भृगुः** = भृगु **न** = नहीं, समान, उपमार्थक **ससहे** = सक्षम, समर्थ, तृप्त, सन्तुष्ट हुआ **शत्रून्** = शत्रुओं को **मदे** = मद में, आनन्द में **सोमस्य** = सोम का ॥ **3** ॥

पदार्थ :- **इन्द्रः** = परम ऐश्वर्यशाली (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **तुराषाट्** = शीघ्रकारी, शीघ्रगामी (तुर्-तुरण् = शीघ्रता करना)। **मित्रो** = मित्र (मिद् - स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, नरम होना, मृदुल होना)। **वृत्रम्** = वृत्र, हिंसा को (वृ - वरण करना, आच्छादन करना, स्वीकार करना, वृत् - वर्तना, वर्तमान होना वरण करना, सेवा करना, चमकना, बोलना, हिंसा करना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **जघान** = हिंसा की, मार दिया, हनन किया (हन्-घ्न - हिंसा करना)। **यतीः** = यत्न करने वाला (यत - यत्न करना, उद्योग करना, निश्चय करना, ठहराना)। **न** = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **बिभेद** = भेदन किया (भिद् - भेदना, भेदन करना, भाग करना)। **बलम्** = बल को (बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना)। **भृगुः** = भृगु (भृ - भरण-पोषण, धारण करना, भृज् - भूँजना, तलना, सेंकना, भृग् = चमकना, तेज होना, जानना, गु - शब्द करना, मनन करना)। **न** = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **ससहे** = सक्षम, समर्थ, तृप्त, सन्तुष्ट हुआ (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना)। **शत्रून्** = शत्रुओं को (शी-शद्-शत् - जीर्ण होना, गिरना, गिराना)। **मदे** = मद में, आनन्द में (मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)। **सोमस्य** = सोम का (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्‌भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना, सो–स्य, सय - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना) ॥ **3** ॥

180. आ त्वा विशन्तु सुतासः इन्द्र पृणस्व कुक्षी विड्ढि शक्र धिया आ इहि आ नः।
श्रुधी हवम् गिरो मे जुषस्व आ इन्द्र स्वयुक्-युभिः मत्स्व इह महे रणाय ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ :- **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम, **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा, **विशन्तु** = प्रवेश करें, **सुतासः** = सन्तान, ऐश्वर्यवान्, उत्पन्न हुए, **इन्द्र** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान, **पृणस्व** = पूर्ण करो, **कुक्षी** = पूर्ण करने वाले, भरने वाले, **विड्ढि** = शब्द, परिहास करने वाला, शाप देने वाला, **शक्र** = शक्तिवान्, समर्थ, **धिया** = धारणा द्वारा, बुद्धि द्वारा, **आ** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा, **इहि** = आओ, जानों, **आ** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा, **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा, **श्रुधी** = सुनो, सुनता है, **हवम्** = दान को, आह्वान को, दान करने योग्य, लेने योग्य, तृप्त करने योग्य, **गिरो** = वाणियाँ, बोध, सिञ्चन, **मे** = मेरा, मेरे लिए, **जुषस्व** = सेवा करो, सन्तुष्ट करो, **आ** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा, **इन्द्र** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान, **स्वयुग्भिः** = स्वयुक्ति द्वारा, **मत्स्व** = हर्षित हो, तृप्त हो, **इह** = इसमें, यहां, यह, **महे** = पूजा करने के लिए, हे महान्, पूज्य, महिमावान्, महान्, **रणाय** = रण, शब्द के लिए ॥ **4** ॥

पदार्थ :- **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **विशन्तु** = प्रवेश करें (विश् - घुसना भीतर जाना, चारो ओर फैलाना)। **सुतासः** = सन्तान, ऐश्वर्यवान्, उत्पन्न हुए (सु - उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्‌भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना)। **इन्द्र** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम

ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **पृणस्व** = पूर्ण करो (पृ - पूर्ण करना, भरना, पालन करना)। **कुक्षी** = पूर्ण करने वाले, भरने वाले (कुक्ष् = पूर्ण करना, भरना)। **विड्ढि** = शब्द, परिहास करने वाला, शाप देने वाला (विट् = शब्द करना, परिहास करना, शाप देना)। **शक्र** = शक्तिवान्, समर्थ (शक् - शक्तिमान् होना, समर्थ होना, सक्षम होना, कर सकना, सहना, सहन करना)। **धिया** = धारणा द्वारा, बुद्धि द्वारा (धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना, धि = धारण करना, युक्त होना)। **आ** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **इहि** = आओ, जानों (इ = जाना, जानना, पाना)। **आ** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **श्रुधी** = सुनो, सुनता है (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)। **हवम्** = दान को, आह्वान को, दान करने योग्य, लेने योग्य, तृप्त करने योग्य (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **गिरो** = वाणियाँ, बोध, सिञ्चन (गृ - सींचना, गीला करना, समझना, जानना, गृ - शब्द करना)। **मे** = मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **जुषस्व** = सेवा करो, सन्तुष्ट करो (जुष् = विचार करना, सेवा करना, सेवन करना, विवेक होना, विवेचना करना, प्रीति करना, चाहना, दुलारना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना)। **आ** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **इन्द्र** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **स्वयुग्भिः** = स्वयुक्ति द्वारा (स्व = अपना, निज (सर्वनाम)। युज - जुड़ना, मिलाप करना, मन एकाग्र करना, एकत्र करना)। **मत्स्व** = हर्षित हो, तृप्त हो (मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना, मद् - आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)। **इह** = इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **महे** = पूजा करने के लिए, हे महान्, पूज्य, महिमावान्, महान् (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना)। **रणाय** = रण, शब्द के लिए (रण् - शब्द करना, ध्वनि करना, जाना)।। **4 ।।**

181. इन्द्रस्य नु प्र वोचम् वीर्याणि यानि चकार प्रथमानि वज्री।
अहन् अहिम् अनु अपः ततर्द प्र वक्षणः अभिनत् पर्वतानाम्।। 5 ।।

मन्त्रार्थ :- इन्द्रस्य = इन्द्र का, परम ऐश्वर्यशाली का, **नु** = निश्चय ही, शीघ्र ही, **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक, **वोचम्** = बोलो, कहो, **वीर्याणि** = वीरकर्मों को, पराक्रमों को, **यानि** = जो, **चकार** = तृप्त करने वाले, **प्रथमानि** = प्रथम, विस्तार, **वज्री** = वज्री, वज्र युक्त, गतिमान, **अहन्** = व्याप्त, व्यापक, **अहिम्** = व्यापक को, **अनु** = पश्चात्, पीछे, अनुकूल, **अपः** = पालन करने वाला, पालक, रक्षक्, **ततर्द** = दुःख दिया, हिंसा करता हुआ, **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक, **वक्षणः** = वक्षना, पालन, रक्षा, **अभिनत्** = सर्वथा, नत, विनत, विनम्र, **पर्वतानाम्** = पर्वतों को **।। 5 ।।**

पदार्थ :- इन्द्रस्य = इन्द्र का, परम ऐश्वर्यशाली का (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **नु** = निश्चय ही, शीघ्र ही (अव्यय)। **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **वोचम्** = बोलो, कहो (वच् - बोलना, कहना)। **वीर्याणि** = वीरकर्मों को, पराक्रमों को (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)। **यानि** = जो (सर्वनाम)। **चकार** = तृप्त करने वाले (कृ = करना)। **प्रथमानि** = प्रथम, विस्तार (प्रथ् - प्रसिद्ध होना, विस्तार करना, फैलना, फैलाना)। **वज्री** = वज्री, वज्र युक्त, गतिमान (वज् - गति करना, जाना)। **अहन्** = व्याप्त, व्यापक (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अह् = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना)। **अहिम्** = व्यापक को (अह् = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना)। **अनु** = पश्चात्, पीछे, अनुकूल (उपसर्ग)। **अपः** = पालन करने वाला, पालक, रक्षक् (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना)। **ततर्द** = दुःख दिया, हिंसा करता हुआ (तर्द - मार डालना, दुःख देना)। **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **वक्षणः** = वक्षना, पालन, रक्षा (वक्ष = क्रोध करना, बटोरना, ढेर करना, वक्ष = पालन करना, रक्षा करना)। **अभिनत्** = सर्वथा, नत, विनत, विनम्र (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, नम् - नमना, नमन करना)। **पर्वतानाम्** = पर्वतों को (पर्व् - पूर्ण करना, पूरा करना, भरना, विभाग करना) **।। 5 ।।**

182. अहन् अहिम् पर्वते शिश्रियाणाम् त्वष्टा अस्मै वज्रम् स्वर्यम् ततक्ष।
वाश्राः इव धेनवः स्यन्दमानाः अञ्जः समुद्रम् अव जग्मु आपः।। 6 ।।

मन्त्रार्थ :- अहन् = व्याप्त, व्यापक, **अहिम्** = व्यापक को **पर्वते** = पर्वत में, पर्वत पर, **शिश्रियाणाम्** = सेवा करने

वाले, आश्रय देने वाले को, **त्वष्टा** = त्वष्ट, प्रकाशक, सूक्ष्म करने वाला, **अस्मै** = इसके लिए, हमको, हमारे लिए, **वज्रम्** = वज्र, गतिमान को, **स्वर्यम्** = शब्द करने वाले को, दोष लगाने वाले, **ततक्ष** = आच्छादित करने वाले, **वाश्राः** = प्रगतिशील, व्याप्त करते हुए, व्याप्त होते हुए, प्रकाश करते हुए, **इव** = समान, की भाँति, के समान, **धेनवः** = धेनु, प्रिय, पालन करने वाले, **स्यन्दमानाः** = स्यन्दमानों के लिए, **अञ्जः** = स्वच्छता, प्रकाश, **समुद्रम्** = समुद्र को, **अव** = नीचे, दूर, प्राप्त, **जग्मु** = गये **आपः** = आप, व्याप्त, व्यापक।**। 6 ।।**

पदार्थ :- **अहन्** = व्याप्त, व्यापक (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अह् = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना)। **अहिम्** = व्यापक को (अह् = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना)। **पर्वते** = पर्वत में, पर्वत पर (पर्व् - पूर्ण करना, पूरा करना, भरना, विभाग करना)। **शिश्रियाणाम्** = सेवा करने वाले, आश्रय देने वाले को (श्री = सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना)। **त्वष्टा** = त्वष्ट, प्रकाशक, सूक्ष्म करने वाला (त्वक्ष् = छीलना, रेतना, त्विष् = प्रकाशित होना, चमकना)। **अस्मै** = इसके लिए, हमको, हमारे लिए (सर्वनाम)। **वज्रम्** = वज्र, गतिमान को (वज् - गति करना, जाना)। **स्वर्यम्** = शब्द करने वाले को, दोष लगाने वाले (स्वर् - शब्द करना, दोष लगाना, निन्दा करना)। **ततक्ष** = आच्छादित करने वाले (तक्ष - आच्छादित करना, छीलना, बोलना, हिंसा करना)। **वाश्राः** = प्रगतिशील, व्याप्त करते हुए, व्याप्त होते हुए, प्रकाश करते हुए (वश - प्रकाश करना, इच्छा करना, चाहना, वा - गति करना, बहना। श्रा = परिपक्व करना, पकाना, रांधना, उबालना, स्वेदन करना)। **इव** = समान, की भाँति, के समान (अव्यय)। **धेनवः** = धेनु, प्रिय, पालन करने वाले (धिन - प्रेम करना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना, धी - बुद्धि होना, धे - पालना, पीना)। **स्यन्दमानाः** = स्यन्दमानों के लिए (स्यन्द = टपकना, झरना, चूना, सींचना, छींटा देना, जाना)। **अञ्जः** = स्वच्छता, प्रकाश (अञ्ज - स्वच्छ करना, प्रकाशित होना, जाना)। **समुद्रम्** = समुद्र को (सम् = सम्यक्, भलीभांति। उन्द - आर्द्र होना, गीला होना)। **अव** = नीचे, दूर, प्राप्त (अव्यय)। **जग्मु** = गये (जग् = गति करना, लेना, घर्षण करना)। **आपः** = आप, व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)।**। 6 ।।**

183. वृषयमानः अवृणीत सोमम् त्रिकद्रुकेषु अपिबत् सुतस्य।
आ सायकम् मघवा अदत्त वज्रम् अहन् एनम् प्रथमजाम् अहीनाम्।। 7 ।।

मन्त्रार्थ :- **वृषयमानः** = पराक्रमी का, **अवृणीत** = वरण किया, **सोमम्** = सोम को, उत्पन्नकर्ता को, ऐश्वर्यवान् को, **त्रिकद्रुकेषु** = तीन भ्रमों में, त्रिकद्रों में, **अपिबत्** = पिया, पान किया, **सुतस्य** = सुत का, **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम, **सायकम्** = अन्त करने वाले को, बाँधने वाले को, **मघवा** = मघवान्, ऐश्वर्यवान्, धनवान्, **अदत्त** = दिया, **वज्रम्** = वज्र, गतिमान को, **अहन्** = व्याप्त, व्यापक, **एनम्** = इसको, इसे, **प्रथमजाम्** = प्रथम उत्पन्न को, **अहीनाम्** = अनेक अहि को, अगतिशील, अविद्वानों को, वृद्धिहीनों को, व्यापकों को।**। 7 ।।**

पदार्थ :- **वृषयमानः** = पराक्रमी का (वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना या पीड़ा करना, दुःख देना, पीड़ित करना)। **अवृणीत** = वरण किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, वृ = वरण करना)। **सोमम्** = सोम को, उत्पन्नकर्ता को, ऐश्वर्यवान् को (सु = उत्पन्न करना, अद्भुत सामर्थ्य, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना। सू = प्रेरणा देना। सो–स्य, सय् - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना)। **त्रिकद्रुकेषु** = तीन भ्रमों में, त्रिकद्रों में (त्रि - तीन (संख्या), कद - भ्रमित होना, घबरा जाना, व्याकुल होना)। **अपिबत्** = पिया, पान किया (अ - नहीं, पी-पिब् = पीना, पान करना)। **सुतस्य** = सुत का (सु = उत्तम, अच्छा, सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **सायकम्** = अन्त करने वाले को, बाँधने वाले को (सय, सो–स्य - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना। सि - बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना)। **मघवा** = मघवान्, ऐश्वर्यवान्, धनवान् (मघ् = ऐश्वर्य होना, धन होना)। **अदत्त** = दिया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)।

वज्रम् = वज्र, गतिमान को (वज् - गति करना, जाना)। **अहन्** = व्याप्त, व्यापक (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अह् = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना)। **एनम्** = इसको, इसे (सर्वनाम)। **प्रथमजाम्** = प्रथम उत्पन्न को (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना, जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना)। **अहीनाम्** = अनेक अहि को, अगतिशील, अविद्वानों को, वृद्धिहीनों को, व्यापकों को (अ - नहीं, हि - जाना, जानना, पाना, बढ़ना, भेजना, अह् = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना)।। **7** ।।

8 अनुवाक - 2

41 सपत्नहा अग्नि सूक्त - 1 (6)

184. समाः त्वा अग्ने ऋतवः वर्द्धयन्तु सम् वत्सराः ऋषयः यानि सत्या। सम् दिव्येन दीदिहि रोचनेन विश्वाः आ भाहि प्रदिशः चतस्रः ।। 1 ।।

मन्त्रार्थ :- **समाः** = सम विभाग, सम्वत्सर, शरद्, वर्ष **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **अग्ने** = हे अग्नि **ऋतवः** = सार्वभौम नियम, ऋत **वर्द्धयन्तु** = बढ़ो **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **वत्सराः** = वाणी से चलने वाले **ऋषयः** = ऋषिगण **यानि** = जो **सत्या** = सत्य **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **दिव्येन** = दिव्य द्वारा, तेजस्वी, ज्योतिर्मय द्वारा। **दीदिहि** = रूप बनाओ **रोचनेन** = प्रकाश का **विश्वाः** = विश्व, सभी, सब **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण **भाहि** = प्रकाश करो, प्रकाशित हो **प्रदिशः** = प्रदिश, दिशाएं **चतस्रः** = चार ।। **1** ।।

भावार्थ :- अग्निस्वरूप परमात्मा से प्रार्थना की गयी है कि ऋतु, वर्ष, दिशाएं समभाव से प्रकाशित हों।

पदार्थ :- **समाः** = सम विभाग, सम्वत्सर, शरद्, वर्ष, (सम - सब, सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, सम = न घबराना, एक समान रहना, अन् - प्राण होना, जीवन होना, श्वास लेना)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **अग्ने** = हे अग्नि (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **ऋतवः** = सार्वभौम नियम, ऋत (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)। **वर्द्धयन्तु** = बढ़ो (वृध् = बढ़ना, चमकना, बोलना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **वत्सराः** = वाणी से चलने वाले (वद् = कहना, बोलना, सृ - चलना, सरकना)। **ऋषयः** = ऋषिगण (ऋष् - जानना, जाना, पाना, अन्तदृष्टि होना, अन्तर्गमन करना, सूक्ष्मता से भीतर देखना)। **यानि** = जो (सर्वनाम)। **सत्या** = सत्य (सत् = होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **दिव्येन** = दिव्य द्वारा, तेजस्वी, ज्योतिर्मय द्वारा (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)। **दीदिहि** = रूप बनाओ (दिह् = रूप बनाना, बढ़ना, वृद्धि करना)। **रोचनेन** = प्रकाश द्वारा, रोचकता से (रुच् = रुचना, प्रकाशित होना, प्रसन्न होना)। **विश्वाः** = विश्व, सभी, सब (सर्वनाम)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग)। **भाहि** = प्रकाश करो, प्रकाशित हो (भा् - प्रकाशित होना, चमकना)। **प्रदिशः** = प्रदिश, दिशाएं (प्र - प्रकृष्ट, दिश् - दिखाना, दिखाना, समझाना, कहना, देना)। **चतस्रः** = चार (संख्या), याचक, चलित, गतिमान (चतुः-चतस्रः = चार (संख्या), चत् - चलना, जाना, जानना, पाना, याचना करना, मांगना) ।। **1** ।।

185. सम् च इध्यस्व अग्ने प्र च वर्धय इमम् उत् च तिष्ठ महते सौभगाय। मा ते रिषन् उपसत्तारः अग्ने ब्रह्माणः ते यशसः सन्तु मा अन्ये ।। 2 ।।

मन्त्रार्थ :- **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **च** = और **इध्यस्व** = गति, ज्ञान, प्रकाश करो **अग्ने** = हे अग्नि **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक **च** = और **वर्धय** = बढ़ाओ **इमम्** = इसको **उत्** = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च **च** = और **तिष्ठ** = उठो, ठहरो, खड़े हो **महते** = महत् के लिए, महान्, पूज्य के लिए **सौभगाय** = सौभाग्य के लिए **मा** = नहीं, मत **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **रिषन्** = हिंसक **उपसत्तारः** = सत्य, नित्य, विद्वान्, प्रतिष्ठित, गतिशील, गन्तव्य **अग्ने** = हे अग्नि **ब्रह्माणः** = बृहत्, ब्रह्ममय **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **यशसः** = यश, कीर्ति **सन्तु** = हों **मा** = नहीं, मत **अन्ये** = अन्य ।। **2** ।।

भावार्थ :- हे अग्निस्वरूप परमात्मा, हम प्रार्थना करते हैं कि महत् सौभाग्य के लिए हमारा बोध करो, विवेक-बुद्धि प्रदान करो। हमें प्रकाश प्रदान करो। तुम्हारी उपसत्ता हिंसा न करे। अग्नि स्वरूप ब्रह्म का यश प्राप्त हो।। **2 ।।**

पदार्थ - **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **च** = और। **इध्यस्व** = गति, ज्ञान, प्रकाश (इ - जाना, जानना, पाना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)। **अग्ने** = हे अग्नि (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **च** = और। **वर्धय** = बढ़ाओ (वृध् = बढ़ना, चमकना, बोलना)। **इमम्** = इसको (सर्वनाम)। **उत्** = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (उपसर्ग)। **च** = और। **तिष्ठ** = उठो, ठहरो, खड़े हो (तिष्ठ् = ठहरना, खड़ा होना)। **महते** = महत् के लिए, महान्, पूज्य के लिए (मह् - पूजा करना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना)। **सौभगाय** = सौभाग्य के लिए (सु - अच्छा, सुन्दर, सु = उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, सींचना, भग् -भज् - सेवा करना, सेवन करना, दान करना, अलग करना)। **मा** = नहीं, मत (अव्यय)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **रिषन्** = हिंसक (रिश्-रिष - हिंसा करना, मार डालना या दुःख देना, मारने का यत्न करना)। **उपसत्तारः** = सत्य, नित्य, विद्वान्, प्रतिष्ठित, गतिशील, गन्तव्य (उप - समीप, सत् - होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना, सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)। **अग्ने** = हे अग्नि (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **ब्रह्माणः** = ब्रह्ममय (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **यशसः** = यश, कीर्ति (यश् - प्रख्यात होना, कीर्ति होना, व्याप्त होना, फैलना)। **सन्तु** = हों (अस् - होना)। **मा** = नहीं, मत (अव्यय)। **अन्ये** = अन्य, कोई और, इतर (सर्वनाम) **।। 2 ।।**

186. त्वाम् अग्ने वृणते ब्राह्मणाः इमे शिवः अग्ने सम् वरणे भवा नः ।।
सपत्नहा अग्ने अभिमातिजित् भव स्वे गये जागृहि अप्रयुच्छन् ।। 3 ।।

मन्त्रार्थ :- **त्वाम्** = तुमको, तुम्हारी **अग्ने** = हे अग्नि **वृणते** = वरण करता है **ब्राह्मणाः** = ब्रह्म का, विराट, महान् का **इमे** = यह, इस, ये **शिवः** = कल्याणकारी **अग्ने** = हे अग्नि **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **वरणे** = वरण **भवा** = हो, हो जाये **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा **सपत्नहा** = सपत्नघाती **अग्ने** = हे अग्नि **अभिमातिजित्** = अभिमान को जीतने वाला **भव** = हो **स्वे** = अपने लिए, अपने साथ **गये** = गय, गायन, वाणी, गति, ज्ञान में **जागृहि** = जाग्रत हो **अप्रयुच्छन्** = प्रमाद न करते हुए **।। 3 ।।**

भावार्थ :- हे अग्नि स्वरूप परमात्मा, तुमको ब्रह्मवेत्ता वरण करते हैं। इस प्रकार सम्यक् वरण में हमारे लिए कल्याणकारी बनो। सपत्न का हनन करने वाले तथा अभिमान को जीतने वाले प्रमाद न करते हुए अपने गायन, वाणी, गति, ज्ञान में जाग्रत हो।

पदार्थ- **त्वाम्** = तुमको, तुम्हारी (सर्वनाम)। **अग्ने** = हे अग्नि (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **वृणते** = वरण करता है (वृ = वरण करना, वृण - परित्याग करना, आनन्द करना, उत्साह करना)। **ब्राह्मणाः** = ब्रह्म का, विराट, महान् का (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **इमे** = यह, इस, ये (सर्वनाम)। **शिवः** = कल्याणकारी (शिव् = कल्याण करना)। **अग्ने** = हे अग्नि (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **वरणे** = वरण (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, पसन्द करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **भवा** = हो, हो जाये (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **सपत्नहा** = सपत्नघाती (सप् = पूर्ण ज्ञान होना, पत् = ऐश्वर्य होना, निम्नगति करना, गिरना, हन - मार डालना, प्राप्त करना)। **अग्ने** = हे अग्नि (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **अभिमातिजित्** = अभिमान को जीतने वाला (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, मा = मान करना, मापना, जि - जीतना, जय होना)। **भव** = हो (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **स्वे** = अपने लिए, अपने साथ (सर्वनाम)। **गये** = गय, गायन, वाणी, गति, ज्ञान

में (गै - शब्द, ध्वनि करना, गायन करना)। **जागृहि =** जाग्रत हो (जागृ - जगना, नींद न लेना)। **अप्रयुच्छन् =** प्रमाद न करते हुए (युच्छ् = प्रमाद करना, असावधान होना) **॥ 3 ॥**

187. क्षत्रेण अग्ने स्वेन सम् रभस्व मित्रेण अग्ने मित्रधा यतस्व।
सजातानाम् मध्यमेस्थाः राज्ञाम् अग्ने विहव्यः दीदिहि इह ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ :- क्षत्रेण = क्षत्र द्वारा, रक्षा द्वारा **अग्ने =** हे अग्नि **स्वेन =** अपने **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति **रभस्व =** आनन्दित हो, उपक्रम करो **मित्रेण =** मित्र द्वारा **अग्ने =** हे अग्नि **मित्रधा =** मित्रों का पोषक, मित्रों का धारक **यतस्व =** यत्न करो **सजातानाम् =** सम्बन्धी **मध्यमेस्थाः =** मध्यस्थ **राज्ञाम् =** राजा को **अग्ने =** हे अग्नि **विहव्यः =** विशेष हव्य **दीदिहि =** रूप बनाओ **इह =** इसमें, यहां, यह **॥ 4 ॥**

भावार्थ :- हे अग्नि स्वरूप परमात्मा, क्षत्र द्वारा, रक्षण द्वारा आनन्दित हो। मित्रों द्वारा मित्रधेय में यत्न करो। सजातों-सम्बन्धितों के मध्यस्थ चलो। विशेष हव्य राजा जैसा रूप बनाओ।

पदार्थ :- क्षत्रेण = क्षत्र द्वारा, रक्षा द्वारा (क्षत्, क्षद् = खाना, कूटना, ढकना, मार डालना, रक्षा करना)। **अग्ने =** हे अग्नि (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **स्वेन =** अपने (सर्वनाम)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **रभस्व =** आनन्दित हो, उपक्रम करो (रभ - आनन्दित होना, प्रसन्न होना)। **मित्रेण =** मित्र द्वारा (मिद् - स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, नरम होना, मृदुल होना)। **अग्ने =** हे अग्नि (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **मित्रधा =** मित्रों का पोषक, मित्रों का धारक (मिद् - स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, नरम होना, मृदुल होना, धा-धि-धी - धारण करना, पहनना, पोषण करना, रक्षण करना, देना)। **यतस्व =** यत्न करो (यत -यत्न करना, उद्योग करना, निश्चय करना, ठहराना)। **सजातानाम् =** सम्बन्धी (स - साथ, सहित, सज्, संज = सम्बन्धी होना, आलिंगन करना, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **मध्यमेस्थाः =** मध्यस्थ (सर्वनाम)। **अग्ने =** हे अग्नि (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **विहव्यः =** विशेष हव्य (वि - विशेष, हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)।)। **दीदिहि =** रूप बनाओ (दिह् = रूप बनाना, बढ़ना, वृद्धि करना)। **इह =** इसमें, यहां, यह (सर्वनाम) **॥ 4 ॥**

188. अति निहः अति सृधः अति अचित्तीः अति द्विषः।
विश्वा हि अग्ने दुरिता तर त्वम् अथ अस्मभ्यम् सहवीरम् रयिम् दाः ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ :- अति = बहुत, अत्यधिक **निहः =** हिंसक **अति =** बहुत, अत्यधिक **सृधः =** रूंधने वाला, मर्दन करने वाला **अति =** बहुत, अत्यधिक **अचित्तीः =** अचित्ती, चेतन, आदर **अति =** बहुत, अत्यधिक **द्विषः =** द्वेष करने वाला **विश्वा =** विश्व, सभी, सब **हि =** ही, निश्चय **अग्ने =** हे अग्नि **दुरिता =** बुराई, दुःख **तर =** तैरने वाला **त्वम् =** तुम **अथ =** अब, इसके अनन्तर **अस्मभ्यम् =** हमारे लिए, असमान के लिए, समान नहीं रहने वाले के लिए **सहवीरम् =** सहवीर को, सक्षम, समर्थ, तृप्त, सन्तुष्ट वीर को **रयिम् =** विद्या, ज्ञान **दाः =** दानी, दो **॥ 5 ॥**

भावार्थ :- हे अग्नि स्वरूप परमात्मा, जो अतिवादी है, जो लोग हिंसा, मर्दन, दान न देना जैसे दुर्भावों में अति करते हैं, ऐसे सभी दुष्टों को सहन करो। इसमें परमात्मा ही समर्थ है। हमारे लिए साथ में रहकर वीरता दिखाने वाले दानी लोगों को दो। **अति निहः अति सृधः अति अचित्तीः अति द्विषः** जैसे शब्दों के श्लेष अलंकार से दो विपरीत अर्थ हो सकते हैं। निह का अर्थ हिंसक तथा अहिंसक दोनो हो सकता है। नि-निः उपसर्ग सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनो अर्थों में प्रयोग होता है। इसी प्रकार सृध शब्द का अर्थ प्रगतिशील तथा रूँधने एवम् मर्दन करने वाला दोनो हो सकता है। सृध धातु दोनो अर्थों में प्रयोग होती है। मन्त्र का भाव यह है कि हमारे विचारों तथा कार्यों में सन्तुलन होना चाहिए। हमें अतिवादी नहीं होना चाहिए। अति शब्द का बार-बार प्रयोग इस भाव को बल प्रदान करता है। **॥ 5 ॥**

पदार्थ :- अति = बहुत, अत्यधिक (उपसर्ग, अव्यय)। **निहः =** हिंसक (नि - विना, बाहर, निश्चित रूप से, हन् - हिंसा करना)। **अति =** बहुत, अत्यधिक (उपसर्ग, अव्यय)। **सृधः =** प्रगतिशील, रूंधने वाला, मर्दन करने वाला (सृध्

- रुन्धन करना, सम्पीडन करना, मर्दन करना, सृ - जाना, सरकना, बहना, टपकना)। **अति =** बहुत, अत्यधिक (उपसर्ग, अव्यय)। **अचित्तीः =** अचित्ती, चेतन, आदर (अच् - मरना, जाना, चलना, आदर करना, मांगना, अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, चित - चेतन होना, सम्यक् जानना, चिन्तन करना, विचार करना, सन्देह करना, स्मरण करना)। **अति =** बहुत, अत्यधिक (उपसर्ग, अव्यय)। **द्विषः =** द्वेष करने वाला (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)। **विश्वा =** विश्व, सभी, सब (सर्वनाम)। **हि =** ही, निश्चय (अव्यय)। **अग्ने =** हे अग्नि (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **दुरिता =** बुराई, दुःख (दुः = बुरा, अनुचित, कठिन, दु-दुर् = जाना, दूर जाना, दुःख होना, दुःख भोगना, तप्त करना, जलना, जलाना)। **तर =** तैरने वाला (तॄ - पार जाना, पर तीर को जाना, जल पर तैरना, जीतना, जल के पार जाना)। **त्वम् =** तुम (सर्वनाम)। **अथ =** अब, इसके अनन्तर (अव्यय)। **अस्मभ्यम् =** हमारे लिए, असमान के लिए, समान नहीं रहने वाले के लिए (असमभ्यम् = हमारे लिए (सर्वनाम)। अ - नहीं, सम = न घबराना, एक समान रहना, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **सहवीरम् =** सहवीर को, सक्षम, समर्थ, तृप्त, सन्तुष्ट वीर को (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ठ होना, वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)। **रयिम् =** विद्या, ज्ञान (रय्-रि, री - चलना, जाना, जानना, पाना, री-रै - शब्द करना)। **दाः =** दानी, दो (दा, दद् = देना) **॥ 5 ॥**

42 शापमोचन सूक्त -2 (7)

189. अघ-द्विष्टा देव-जाता वीरुत् शपथ-योपनी।
आपः मलम्-इव प्र अनैक्षीत् सर्वान् मत् शपथान् अधि ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ :- अघ-द्विष्टा = पाप-द्वेषी, पाप से द्वेष करने वाले **देव-जाता =** देवजात, देव से उत्पन्न **वीरुत् =** वीरता करते हुए, पराक्रम करते हुए **शपथ-योपनी =** शपथ-योपनी, शपथ से बाँधने वाला, शपथ से अलग करने वाला **आपः =** आप, व्याप्त, व्यापक **मलम्-इव =** मल के समान **प्र =** प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक **अनैक्षीत् =** न देखते हुए **सर्वान् =** सभी को **मत् =** मुझसे **शपथान् =** शपथों को **अधि =** अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार **॥ 1 ॥**

पदार्थ :- अघ-द्विष्टा = पाप-द्वेषी, पाप से द्वेष करने वाले (अघ - पाप करना, अपराध करना, द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)। **देव-जाता =** देवजात, देव से उत्पन्न (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना, जन - उत्पन्न होना)। **वीरुत् =** वीरता करते हुए, पराक्रम करते हुए (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)। **शपथ-योपनी =** शपथ-योपनी, शपथ से बाँधने वाला, शपथ से अलग करने वाला (शप् = शपथ लेना, प्रतिज्ञा करना, शाप देना, निन्दा करना, यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, बांधना, बन्धन करना, गूंथना, बन्धन होना, संयोग-वियोग करना, युप – चित्त वैक्लव्य होना, घबरा जाना)। **आपः =** आप, व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)। **मलम्-इव =** मल के समान (मल = धारण करना, घर्षण करना, इव = समान, की भाँति, के समान (अव्यय))। **प्र =** प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **अनैक्षीत् =** न देखते हुए (अन् - नही, आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, ईक्ष् - देखना)। **सर्वान् =** सभी को (सर्वनाम)। **मत् =** मुझसे (सर्वनाम)। **शपथान् =** शपथों को (शप् = शपथ लेना, प्रतिज्ञा करना, शाप देना, निन्दा करना)। **अधि =** अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग) **॥ 1 ॥**

190. यः च सापत्नः शपथः जाम्याः शपथः च यः।
ब्रह्मा यत् मन्युतः शपात् सर्वम् तत् नः अधः-पदम् ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ :- यः = जो **च =** और **सापत्नः =** ऐश्वर्यवान् **शपथः =** शपथ **जाम्याः =** खिलाने वाले, भोजन करने वाले **शपथः =** शपथ **च =** और **यः =** जो **ब्रह्मा =** ब्रह्म, महान्, बृहत् **यत् =** जिसे, जो **मन्युतः =** मन्यु से, गर्व विचार से **शपात् =** शपथ से, शपथ द्वारा **सर्वम् =** सब **तत् =** वह, उस को **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा **अधः-पदम् =** अधस्पद को, निम्न पद को **॥ 2 ॥**

पदार्थ :- यः = जो (सर्वनाम)। **च =** और (अव्यय)। **सापत्नः =** ऐश्वर्यवान् (स - सहित, साथ, आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग), पत् = जाना, उड़ना, पतन होना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **शपथः =** शपथ (शप् = शपथ लेना, प्रतिज्ञा करना, शाप देना, निन्दा करना)। **जाम्याः =** खिलाने वाले, भोजन करने वाले (जम् - खाना, निगलना)। **शपथः =** शपथ (शप् = शपथ लेना, प्रतिज्ञा करना, शाप देना, निन्दा करना)। **च =** और (अव्यय)। **यः =** जो (सर्वनाम)। **ब्रह्मा =** ब्रह्म, महान्, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **यत् =** जिसे, जो (सर्वनाम)। **मन्युतः =** मन्यु से, गर्व विचार से (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **शपात् =** शपथ से, शपथ द्वारा (शप् = शपथ लेना, प्रतिज्ञा करना, शाप देना, निन्दा करना)। **सर्वम् =** सब (सर्वनाम)। **तत् =** वह, उस को (सर्वनाम)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **अधः-पदम् =** अधस्पद को, निम्न पद को (अधः = नीचे, अव्यय, अधः - अधर् - न्यून करना, जीतना, निम्न गति करना, पद् - चलना) **॥ 2 ॥**

191. दिवः मूलम् अव-ततम् पृथिव्याः अधि उत्-ततम्।
तेन सहस्र-काण्डेन परि नः पाहि विश्वतः ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ :- दिवः = दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय **मूलम् =** मूल को **अव-ततम् =** अवतत को, अवतन को, रक्षा-विस्तार को **पृथिव्याः =** पृथ्वी योग्य, पृथिवी के **अधि =** अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार **उत्-ततम् =** उत्तन को, उत्कृष्ट विस्तार को **तेन =** उससे, उसके द्वारा **सहस्र-काण्डेन** = हजार काण्डों द्वारा **परि =** सभी तरफ **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा **पाहि =** पालन करो, रक्षा करो **विश्वतः =** सबसे, विश्व से **॥ 3 ॥**

पदार्थ :- दिवः = दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)। **मूलम् =** मूल को (मूल् = बोना, उगना, उत्पन्न होना)। **अव-ततम् =** अवतत को, अवतन को, रक्षा-विस्तार को (अव = नीचे, दूर, प्राप्त, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, तन् = विस्तार करना)। **पृथिव्याः =** पृथ्वी योग्य, पृथिवी के (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)। **अधि =** अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **उत्-ततम् =** उत्तन को, उत्कृष्ट विस्तार को (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, तन् = विस्तार करना)। **तेन =** उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **सहस्र-काण्डेन** = हजार काण्डों द्वारा (सहस्र = हजार (संख्या), कण्ड् - विभाग करना, अलग करना, दुःख-आनन्द में लीन होना, बढ़ना)। **परि =** सभी तरफ (उपसर्ग)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **पाहि =** पालन करो, रक्षा करो (पा - पालन, रक्षण करना)। **विश्वतः =** सबसे, विश्व से (सर्वनाम) **॥ 3 ॥**

192. परि माम् परि मे प्र-जाम् परि नः पाहि यत् धनम्।
अरातिः नः मा तारीत् मा नः तारिषुः अभि-मातयः ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ :- परि = सभी तरफ **माम् =** मुझको **परि =** सभी तरफ **मे =** मेरा, मेरे लिए **प्र-जाम् =** प्रजा को **परि =** सभी तरफ **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा **पाहि =** पालन करो, रक्षा करो **यत् =** जिसे, जो **धनम् =** धन को **अरातिः =** अदानी **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा **मा =** नहीं, मत **तारीत् =** तारते हुए, पार करते हुए **मा =** नहीं, मत **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा **तारिषुः =** चाहने वालों द्वारा, तारकों द्वारा **अभि-मातयः =** अभिमान, अभिमापन **॥ 4 ॥**

पदार्थ :- परि = सभी तरफ (उपसर्ग)। **माम् =** मुझको (सर्वनाम)। **परि =** सभी तरफ (उपसर्ग)। **मे =** मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **प्र-जाम् =** प्रजा को (प्र - बहुत, प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **परि =** सभी तरफ (उपसर्ग)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **पाहि =** पालन करो, रक्षा करो (पा - पालन, रक्षण करना)। **यत् =** जिसे, जो (सर्वनाम)। **धनम् =** धन को (धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)। **अरातिः =** अदानी (अ - नहीं, रा = देना, रम् - रमना, रमण करना, रम जाना, रत होना, क्रीडा करना, प्रिय होना, मूल्यवान होना)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **मा =** नहीं, मत (अव्यय)। **तारीत् =** तारते

हुए, पार करते हुए (तृ - पार जाना, पर तीर को जाना, जल पर तैरना, जीतना, जल के पार जाना)। **मा =** नहीं, मत (अव्यय)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **तारिषुः =** चाहने वालों द्वारा, तारकों द्वारा (तृ - पार जाना, पर तीर को जाना, जल पर तैरना, जीतना, जल के पार जाना, तृष - प्यास लगना, इच्छा करना, उत्कण्ठित होना, चाहना)। **अभि-मातयः =** अभिमान, अभिमापन (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, मा = मान करना, मापना) **॥ 4 ॥**

193. शप्तारम् एतु शपथः यः सु-हार्त् तेन नः सह।
चक्षुः-मन्त्रस्य दुः-हार्दः पृष्टीः अपि शृणीमसि ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ :- शप्तारम् = शपथ कर्ता को, शपथी को **एतु =** प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे **शपथः =** शपथ **यः =** जो **सु-हार्त् =** सु-हार्द से, उत्तम हार्द द्वारा **तेन =** उससे, उसके द्वारा **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा **सह =** साथ, सहित **चक्षुः-मन्त्रस्य =** चक्षु-मन्त्र का, मन्त्र-दृष्टा का **दुः-हार्दः =** दुः-हृदयी, दुःहार्दी **पृष्टीः =** पृष्टी, अभिसिञ्चिक, पूछने वाला **अपि =** भी, निकट **शृणीमसि =** सुनते हैं **॥ 5 ॥**

पदार्थ :- शप्तारम् = शपथ कर्ता को, शपथी को (शप् = शपथ लेना, प्रतिज्ञा करना, शाप देना, निन्दा करना)। **एतु =** प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना, इच्छा करना, प्रेरणा करना, ए - जाना, फैलना, व्यापना, गर्भवती होना, इच्छा करना, चाहना, खाना, उड़ाना, फेंकना, भेजना, प्रेरणा करना)। **शपथः =** शपथ (शप् = शपथ लेना, प्रतिज्ञा करना, शाप देना, निन्दा करना)। **यः =** जो (सर्वनाम)। **सु-हार्त् =** सु-हार्द से, उत्तम हार्द द्वारा (सु - उत्तम, अच्छा, हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, लेना, ग्रहण करना, नष्ट करना)। **तेन =** उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **सह =** साथ, सहित (सर्वनाम)। **चक्षुः-मन्त्रस्य =** चक्षु-मन्त्र का, मन्त्र-दृष्टा का (चक्ष् - स्पष्ट बोलना, कहना, देखना, मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना, मन्त्र = मन्त्रणा करना, विचार करना, गुप्त भाषण करना)। **दुः-हार्दः =** दुः-हृदयी, दुःहार्दी (दुः = बुरा, अनुचित, कठिन, हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, लेना, ग्रहण करना, नष्ट करना)। **पृष्टीः =** पृष्टी, अभिसिञ्चिक, पूछने वाला (पृश्-पृच्छ - पूछना, जानने की इच्छा करना, प्रश्न करना, पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सींचना, सहन करना)। **अपि =** भी, निकट (अव्यय)। **शृणीमसि =** सुनते हैं (श्रु-शृण् = सुनना) **॥ 5 ॥**

43 क्षेत्रिय रोगनाशन सूक्त -3 (8)

194. उत् अगाताम् भगवती वि-चृतौ नाम तारके।
वि क्षेत्रियस्य मुञ्चताम् अधमम् पाशम् उत्-तमम् ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ :- उत् = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च **अगाताम् =** हों, अग्रणी हों **भगवती =** हे भगवती **वि-चृतौ =** विचृत-द्वय, विशेष-प्रकाशकों, विशेष गूँथने वालों, विशेष एकत्र करने वालों, विशेष संगठनकर्ताओं **नाम =** नाम वाले **तारके =** तारकों के लिए, तारने वालों के लिए, पार कराने वालों के लिए **वि =** विशेष, विना, विलोम **क्षेत्रियस्य =** क्षेत्रिय का **मुञ्चताम् =** मुक्त करें, कहें **अधमम् =** अधम को, शब्दकर्ता को, प्रकाशकर्ता को **पाशम् =** पाश को, दिखाने वालें को, बन्धन को **उत्-तमम् =** उत्तम को, श्रेष्ठ-इच्छा, शुभ-इच्छा को **॥ 1 ॥**

पदार्थ :- उत् = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)। **अगाताम् =** हों, अग्रणी हों (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अग् = जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, गति करना, घूमना, कुटिल गति करना, टेढ़ा जाना, लेना, ग्रहण करना, गम् = जाना, जानना, पाना, गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना)। **भगवती =** हे भगवती (भग्-भज् = सेवा करना, सेवन करना, सेवित होना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)। **वि-चृतौ =** विचृत-द्वय, विशेष-प्रकाशकों, विशेष गूँथने वालों, विशेष एकत्र करने वालों, विशेष

संगठनकर्ताओं (वि = विशेष, विपरीत, वृत् - प्रकाशित करना, चमकाना, जलाना, एकत्र कर बाँधना, गूँथना, हिंसा करना)। **नाम** = नाम वाले (अव्यय)। **तारके** = तारकों के लिए, तारने वालों के लिए, पार कराने वालों के लिए (तॄ - पार जाना, पर तीर को जाना, जल पर तैरना, जीतना, जल के पार जाना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **क्षेत्रियस्य** = क्षेत्रिय का (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)। **मुञ्चताम्** = मुक्त करें, कहें (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अधमम्** = अधम को, शब्दकर्ता को, प्रकाशकर्ता को, (अधम - निम्न (सर्वनाम)। अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, धम् - शब्द करना, प्रकाश करना, आग को फूंकना, तीव्र करना)। **पाशम्** = पाश को, दिखाने वालें को, बन्धन को (पश् - देखना, पश - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना)। **उत्-तमम्** = उत्तम को, श्रेष्ठ-इच्छा, शुभ-इच्छा को (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, तम् - अन्धकार होना, इच्छा करना, चाहना, मानसिक या शारीरिक व्यथा से दुःखित होना) **॥ 1 ॥**

195. अप इयम् रात्री उच्छतु अप उच्छन्तु अभि-कृत्वरीः।
वीरुत् क्षेत्रिय-नाशनी अप क्षेत्रियम् उच्छतु ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ :- **मन्त्रार्थ** :- **अप** = दूर, नीचे, अपकार, **इयम्** = यह, इसको, **रात्री** = रात्री, दानी, अनुदान, **उच्छतु** = पूर्ण करे, समाप्त करे, **अप** = दूर, नीचे, अपकार, **उच्छन्तु** = पूर्ण करें, समाप्त करे, **अभि-कृत्वरीः** = अभि-कृत्वरी, विशेष करने वाली, **वीरुत्** = वीरता करते हुए, पराक्रम करते हुए, **क्षेत्रिय-नाशनी** = क्षेत्रिय-विनाशिका, क्षेत्रीय नाश करने वाली, **अप** = दूर, नीचे, अपकार, **क्षेत्रियम्** = क्षेत्रिय को, **उच्छतु** = पूर्ण करे, समाप्त करे **॥ 2 ॥**

पदार्थ :- **अप** = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। **इयम्** = यह, इसको (सर्वनाम)। **रात्री** = रात्री, दानी, अनुदान (रा - देना, मिल जाना)। **उच्छतु** = पूर्ण करे, समाप्त करे (उच्छ - पूरा करना, समाप्त करना, छोड़ना, बाँधना, जकड़ कर बांधना)। **अप** = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। **उच्छन्तु** = पूर्ण करें, समाप्त करे (उच्छ - पूरा करना, समाप्त करना, छोड़ना, बाँधना, जकड़ कर बांधना)। **अभि-कृत्वरीः** = अभि-कृत्वरी, विशेष करने वाली (अभि - अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, कृ - करना, कृत - कतरना, काटना)। **वीरुत्** = वीरता करते हुए, पराक्रम करते हुए (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)। **क्षेत्रिय-नाशनी** = क्षेत्रिय-विनाशिका, क्षेत्रीय नाश करने वाली (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना, नश् - नष्ट होना, अदृश्य होना)। **अप** = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। **क्षेत्रियम्** = क्षेत्रिय को (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)। **उच्छतु** = पूर्ण करे, समाप्त करे (उच्छ - पूरा करना, समाप्त करना, छोड़ना, बाँधना, जकड़ कर बांधना) **॥ 2 ॥**

196. बभ्रोः अर्जुन-काण्डस्य यवस्य ते पलाल्या तिलस्य तिल-पिञ्ज्या।
वीरुत् क्षेत्रिय-नाशनी अप क्षेत्रियम् उच्छतु ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ :- **बभ्रोः** = हे भरण-पोषण करने वाले **अर्जुन-काण्डस्य** = अर्जुन-काण्ड का, लाभ-काण्ड का, प्राप्ति-काण्ड का **यवस्य ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **पलाल्या** = फलित-पुष्पित से, शुद्धता द्वारा **तिलस्य** = तिल का **तिल-पिञ्ज्या** = तिल-पिञ्ज्य द्वारा **वीरुत्** = वीरता करते हुए, पराक्रम करते हुए **क्षेत्रिय-नाशनी** = क्षेत्रिय-विनाशिका, क्षेत्रीय नाश करने वाली **अप** = दूर, नीचे, अपकार **क्षेत्रियम्** = क्षेत्रिय को **उच्छतु** = पूर्ण करे, समाप्त करे **॥ 3 ॥**

पदार्थ :- **बभ्रोः** = हे भरण-पोषण करने वाले (भृ = भरण-पोषण, धारण करना)। **अर्जुन-काण्डस्य** = अर्जुन-काण्ड का, लाभ-काण्ड का, प्राप्ति-काण्ड का (अर्ज - लाभ करना, प्राप्त करना, पाना, कण्ड् - विभाग करना, अलग करना, दुःख-आनन्द में लीन होना, बढ़ना)। **यवस्य ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **पलाल्या** = फलित-पुष्पित से, शुद्धता द्वारा (पल् - जाना, फलित- पुष्पित होना, फल देना, काटना, गिराना, उढ़ाना, शुद्ध करना)। **तिलस्य** = तिल का (तिल् - स्निग्ध होना, तेल होना, तेल लगाना, चिकना होना)। **तिल-पिञ्ज्या** = तिल-पिञ्ज्य द्वारा (तिल् - स्निग्ध होना, तेल होना, तेल लगाना, चिकना होना, पिज्-पिञ्ज - मार डालना, दुःख देना, बलवान् होना, लेना, ग्रहण करना, रहना, वसति करना)। **वीरुत्** = वीरता करते हुए, पराक्रम करते हुए (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)। **क्षेत्रिय-नाशनी** = क्षेत्रिय-विनाशिका, क्षेत्रीय नाश करने वाली (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना,

नश् - नष्ट होना, अदृश्य होना)। **अप** = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। **क्षेत्रियम्** = क्षेत्रिय को (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)। **उच्छतु** = पूर्ण करे, समाप्त करे (उच्छ - पूरा करना, समाप्त करना, छोड़ना, बाँधना, जकड़ कर बांधना) ॥ 3 ॥

197. नमः ते लाङ्गलेभ्यः नमः ईषा-युगेभ्यः।
वीरुत क्षेत्रिय-नाशनी अप क्षेत्रियम् उच्छतु ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ :- नमः = नमन, **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए, **लाङ्गलेभ्यः** = लाङ्गलों के लिए, लाङ्गलों से, दानों के लिए, ग्रहणों के लिए, **नमः** = नमन, **ईषा-युगेभ्यः** = ईषा-युगों के लिए, ईषा-युगों से, ईषा-युक्तों के लिए, **वीरुत्** = वीरता करते हुए, पराक्रम करते हुए, **क्षेत्रिय-नाशनी** = क्षेत्रिय-विनाशिका, क्षेत्रीय नाश करने वाली, **अप** = दूर, नीचे, अपकार, **क्षेत्रियम्** = क्षेत्रिय को, **उच्छतु** = पूर्ण करे, समाप्त करे ॥ 4 ॥

पदार्थ :- नमः = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **लाङ्गलेभ्यः** = लाङ्गलों के लिए, लाङ्गलों से, दानों के लिए, ग्रहणों के लिए (ला = लेना, ग्रहण करना, देना, दान देना)। **नमः** = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **ईषा-युगेभ्यः** = ईषा-युगों के लिए, ईषा-युगों से, ईषा-युक्तों के लिए (इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना, यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, युज - जुड़ना, मिलाप करना, मन एकाग्र करना, एकत्र करना, युगि - छोड़ देना, त्याग करना)। **वीरुत्** = वीरता करते हुए, पराक्रम करते हुए (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)। **क्षेत्रिय-नाशनी** = क्षेत्रिय-विनाशिका, क्षेत्रीय नाश करने वाली (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना, नश् - नष्ट होना, अदृश्य होना)। **अप** = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। **क्षेत्रियम्** = क्षेत्रिय को (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)। **उच्छतु** = पूर्ण करे, समाप्त करे (उच्छ - पूरा करना, समाप्त करना, छोड़ना, बाँधना, जकड़ कर बांधना) ॥ 4 ॥

198. नमः सनिस्रस-अक्षेभ्यः नमः सम्-देश्येभ्यः।
नमः क्षेत्रस्य पतये वीरुत् क्षेत्रिय-नाशनी अप क्षेत्रियम् उच्छतु ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ :- नमः = नमन, **सनिस्रस-अक्षेभ्यः** = सनिस्रस-अक्षों के लिए, सनिस्रस-अक्षों से, **नमः** = नमन, **सम्-देश्येभ्यः** = सम्यक्-देश्यों के लिए, सम्यक्-देश्यों से, **नमः** = नमन, **क्षेत्रस्य** = क्षेत्र का, **पतये** = पति के लिए, ऐश्वर्य के लिए, **वीरुत्** = वीरता करते हुए, पराक्रम करते हुए, **क्षेत्रिय-नाशनी** = क्षेत्रिय-विनाशिका, क्षेत्रीय नाश करने वाली, **अप** = दूर, नीचे, अपकार, **क्षेत्रियम्** = क्षेत्रिय को, **उच्छतु** = पूर्ण करे, समाप्त करे ॥ 5 ॥

पदार्थ :- नमः = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **सनिस्रस-अक्षेभ्यः** = सनिस्रस-अक्षों के लिए, सनिस्रस-अक्षों से (सन् - दान करना, सेवा करना, पूजा करना, सत्कार करना, अक्ष् - खेलना, देखना, व्याप्त होना, एकत्र होना)। **नमः** = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **सम्-देश्येभ्यः** = सम्यक्-देश्यों के लिए, सम्यक्-देश्यों से (सम् = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग), दिश - दिखाना, समझाना, आज्ञा करना)। **नमः** = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **क्षेत्रस्य** = क्षेत्र का (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)। **पतये** = पति के लिए, ऐश्वर्य के लिए (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **वीरुत्** = वीरता करते हुए, पराक्रम करते हुए (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)। **क्षेत्रिय-नाशनी** = क्षेत्रिय-विनाशिका, क्षेत्रीय नाश करने वाली (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना, नश् - नष्ट होना, अदृश्य होना)। **अप** = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। **क्षेत्रियम्** = क्षेत्रिय को (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)। **उच्छतु** = पूर्ण करे, समाप्त करे (उच्छ - पूरा करना, समाप्त करना, छोड़ना, बाँधना, जकड़ कर बांधना) ॥ 5 ॥

44 दीर्घायुप्राप्ति सूक्त - 4 (9)

199. दश-वृक्ष मुञ्च इमम् रक्षसः ग्राह्याः अधि या एनम् जग्राह पर्व-सु।
अथो एनम् वनस्पते जीवानाम् लोकम् उत् नय॥ 1॥

मन्त्रार्थ :- दश-वृक्ष = हे दश-वृक्ष **मुञ्च** = मुक्त करें **इमम्** = इसको **रक्षसः** = रक्षा करने वाला, रक्षस् **ग्राह्याः** = सिञ्चन, बोध, ज्ञान, शब्द, वाणी, ग्रहण करने वाला **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार **या** = जो **एनम्** = इसको, इसे **जग्राह** = गृहण किया **पर्व-सु** = पर्वतों में, पर्वतों पर **अथो** = अब, इसके बाद, इसके अनन्तर **एनम्** = इसको, इसे **वनस्पते** = वनस्पति, विद्वान् **जीवानाम्** = जीवों को **लोकम्** = लोक को, दर्शन को, प्रकाश को, वाणी को **उत्** = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च **नय** = ले जाओ॥ **1॥**

पदार्थ :- दश-वृक्ष = हे दश-वृक्ष (दश = दश, दस, (संख्या), वृक्ष - वरण करना, आच्छादन करना)। **मुञ्च** = मुक्त करें (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **इमम्** = इसको (सर्वनाम)। **रक्षसः** = रक्षा करने वाला, रक्षस् (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना)। **ग्राह्याः** = सिञ्चन, बोध, ज्ञान, शब्द, वाणी, ग्रहण करने वाला (ग्रह = ग्रहण करना, लेना, स्वीकार करना)। **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **या** = जो (सर्वनाम)। **एनम्** = इसको, इसे (सर्वनाम)। **जग्राह** = गृहण किया (गृह् - ग्रह् - ग्रहण करना, लेना, स्वीकार करना)। **पर्व-सु** = पर्वतों में, पर्वतों पर (पर्व् - पूर्ण करना, पूरा करना, भरना, विभाग करना)। **अथो** = अब, इसके बाद, इसके अनन्तर (अव्यय)। **एनम्** = इसको, इसे (सर्वनाम)। **वनस्पते** = वनस्पति, विद्वान् (वन - शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, आपद्ग्रस्त होना, अलग करना, मिलाना, स्मरण करना, बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, याचना करना, मांगना, दुःख देना, उद्योग-धन्धा करना, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **जीवानाम्** = जीवों को (जीव् = जीवन होना, प्राणवान् होना, प्राण धारण करना, जीवन धारण करना)। **लोकम्** = लोक को, दर्शन को, प्रकाश को, वाणी को (लोक् = देखना, प्रकाशित होना, बोलना)। **उत्** = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)। **नय** = ले जाओ (नी - नय - जाना, हिलना, पहुँचना, संरक्षण करना) **॥1॥**

200. आ अगात् उत् अगात् अयम् जीवानाम् व्रातम् अपि अगात्।
अभूत् उ पुत्राणाम् पिता नृणाम् च भगवत्-तमः॥ 2॥

मन्त्रार्थ :- आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **अगात्** = भ्रमण किया, गया, प्राप्त किया, स्तुति की **उत्** = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च **अगात्** = भ्रमण किया, गया, प्राप्त किया, स्तुति की **अयम्** = यह **जीवानाम्** = जीवों को **व्रातम्** = व्रात को **अपि** = भी, निकट **अगात्** = भ्रमण किया, गया, प्राप्त किया, स्तुति की **अभूत्** = हो गया, हुआ **उ** = निश्चय ही, भी **पुत्राणाम्** = पुत्रों को **पिता** = पिता, पालन करने वाला, पिता **नृणाम्** = नरों का **च** = और **भगवत्-तमः** = सर्वश्रेष्ठ भगवत, परम भगवत॥ **2॥**

पदार्थ :- आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **अगात्** = भ्रमण किया, गया, प्राप्त किया, स्तुति की (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अग् = जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, गति करना, घूमना, कुटिल गति करना, टेढ़ा जाना, लेना, ग्रहण करना, गम् = जाना, जानना, पाना, गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना)। **उत्** = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)। **अगात्** = भ्रमण किया, गया, प्राप्त किया, स्तुति की (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अग् = जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, गति करना, घूमना, कुटिल गति करना, टेढ़ा जाना, लेना, ग्रहण करना, गम् = जाना, जानना, पाना, गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना)। **अयम्** = यह (सर्वनाम)। **जीवानाम्** = जीवों को (जीव् = जीवन होना, प्राणवान् होना, प्राण धारण करना, जीवन धारण करना)। **व्रातम्** = व्रात को (वृत् = रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ = नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना, नियमित करना)। **अपि** = भी, निकट (अव्यय)। **अगात्** = भ्रमण किया, गया, प्राप्त किया, स्तुति की (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अग् = जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, गति करना, घूमना, कुटिल गति करना, टेढ़ा जाना, लेना, ग्रहण करना, गम् = जाना,

जानना, पाना, गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना)। **अभूत्** = हो गया, हुआ (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **उ** = निश्चय ही, भी (निपात, अव्यय)। **पुत्राणाम्** = पुत्रों को (पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)। **पिता** = पिता, पालन करने वाला, पिता (पि - जाना, जानना, पाना, पा- पालन करना, रक्षा करना)। **नृणाम्** = नरों का (नृ- ले जाना)। **च** = और (अव्यय)। **भगवत्-तमः** = सर्वश्रेष्ठ भगवत, परम भगवत (भग्-भज् = सेवा करना, सेवन करना, सेवित होना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना) **॥ 2 ॥**

201. अधि-इतीः अधि अगात् अयम् अधि जीव-पुरा अगन्।
शतम् हि अस्य भिषजः सहस्रम् उत वीरुधः ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ :- अधि-इतीः = उच्च गति, गति, ज्ञान, प्रकाश वाला **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार **अगात्** = भ्रमण किया, गया, प्राप्त किया, स्तुति की **अयम्** = यह **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार **जीव-पुरा** = जीव-पुरा, पुरा-जीव **अगन्** = गये, गतिमान **शतम्** = सौ **हि** = ही, निश्चय **अस्य** = इसका **भिषजः** = भिषज, चिकित्सक **सहस्रम्** = सहस्र को, बहुतों को **उत** = ही, भी, ओर **वीरुधः** = वीरता को धारण करने वाला, पराक्रमी **॥ 3 ॥**

पदार्थ :- अधि-इतीः = उच्च गति, गति, ज्ञान, प्रकाश वाला (अधि = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग), इ - जाना, जानना, पाना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)। **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **अगात्** = भ्रमण किया, गया, प्राप्त किया, स्तुति की (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अग् = जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, गति करना, घूमना, कुटिल गति करना, टेढ़ा जाना, लेना, ग्रहण करना, गम् = जाना, जानना, पाना, गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना)। **अयम्** = यह (सर्वनाम)। **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **जीव-पुरा** = जीव-पुरा, पुरा-जीव (जीव् - जीवन होना, प्राणवान् होना, प्राण धारण करना, जीवन धारण करना, पुरा = पहले (अव्यय))। **अगन्** = गये, गतिमान (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, गम् - जाना, अग् = जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, गति करना, घूमना, कुटिल गति करना, टेढ़ा जाना, लेना, ग्रहण करना)। **शतम्** = सौ (संख्या, सर्वनाम)। **हि** = ही, निश्चय (अव्यय)। **अस्य** = इसका (सर्वनाम)। **भिषजः** = भिषज, चिकित्सक (भिषज - चिकित्सा करना)। **सहस्रम्** = सहस्र को, बहुतों को (सहस्र = हजार (संख्या))। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **वीरुधः** = वीरता को धारण करने वाला, पराक्रमी (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना) **॥ 3 ॥**

202. देवाः ते चीतिम् अविदन् ब्रह्माणः उत वीरुधः।
चीतिम् ते विश्वे देवाः अविदन् भूम्याम् अधि ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ :- देवाः = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **चीतिम् चीतिम्** = चीति को, चेतना को **अविदन्** = नहीं जानते हुए, अज्ञानी, जान लिया, पा लिया **ब्रह्माणः** = ब्रह्माण, वृद्धिशील, उद्यमशील, शब्दकर्ता **उत** = ही, भी, ओर **वीरुधः** = वीरता को धारण करने वाला, पराक्रमी **चीतिम्** = चीति को, चेतना को **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **विश्वे** = सभी **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने **अविदन्** = नहीं जानते हुए, अज्ञानी, जान लिया, पा लिया **भूम्याम्** = भूमि में, भूमि पर **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार **॥ 4 ॥**

पदार्थ :- देवाः = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **चीतिम् चीतिम्** = चीति को, चेतना को (चि - चुनना, एकत्र करना, चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, सम्यक् ज्ञान होना, स्मरण करना, शंका

करना, सन्देह करना)। **अविदन्** = नहीं जानते हुए, अज्ञानी, जान लिया, पा लिया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, विद् - समझना, जानना, वास करना, जीवन होना, विद्यमान होना, रहना, जानना, समझना)। **ब्रह्माणः** = ब्रह्माण, वृद्धिशील, उद्यमशील, शब्दकर्ता (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **वीरुधः** = वीरता को धारण करने वाला, पराक्रमी (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)। **चीतिम्** = चीति को, चेतना को (चि - चुनना, एकत्र करना, चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, सम्यक् ज्ञान होना, स्मरण करना, शंका करना, सन्देह करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **विश्वे** = सभी (सर्वनाम)। **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **अविदन्** = नहीं जानते हुए, अज्ञानी, जान लिया, पा लिया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, विद् - समझना, जानना, वास करना, जीवन होना, विद्यमान होना, रहना, जानना, समझना)। **भूम्याम्** = भूमि में, भूमि पर (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग) **॥ 4 ॥**

203. यः चकार सः निः करत् सः एव सुभिषक्-तमः।
सः एव तुभ्यम् भेषजानि कृण्वत् भिषजा शुचिः ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ :- यः = जो **चकार** = किया **सः** = वह, उसने **निः** = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर **करत्** = करते हुए **सः** = वह, उसने **एव** = ही **सुभिषक्-तमः** = हे सर्वश्रेष्ठ भेषज, हे सर्वश्रेष्ठ औषधि **सः** = वह, उसने **एव** = ही **तुभ्यम्** = तुम्हारे लिए **भेषजानि** = भेषजों, औषधियों को **कृण्वत्** = करे, करते हुए, कर्म करते हुए **भिषजा** = चिकित्सक **शुचिः** = पवित्रता, शुद्धता **॥ 5 ॥**

पदार्थ :- यः = जो (सर्वनाम)। **चकार** = किया (कृ = करना)। **सः** = वह, उसने (सर्वनाम)। **निः** = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग)। **करत्** = करते हुए (कृ - करना)। **सः** = वह, उसने (सर्वनाम)। **एव** = ही (अव्यय)। **सुभिषक्-तमः** = हे सर्वश्रेष्ठ भेषज, हे सर्वश्रेष्ठ औषधि (सु = उत्तम, सुष्ठु, अच्छा, सुन्दर (उपसर्ग), भिषज् - रोग मुक्त करना, चिकित्सा करना, नष्ट करना, भेष - डरना, जाना, जानना, पाना)। **सः** = वह, उसने (सर्वनाम)। **एव** = ही (अव्यय)। **तुभ्यम्** = तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **भेषजानि** = भेषजों, औषधियों को (भिषज् - रोग मुक्त करना, चिकित्सा करना, नष्ट करना, भेष - डरना, जाना, जानना, पाना)। **कृण्वत्** = करे, करते हुए, कर्म करते हुए (कृ = करना)। **भिषजा** = चिकित्सक (भिषज - चिकित्सा करना)। **शुचिः** = पवित्रता, शुद्धता (शुच्-शुक्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना) **॥ 5 ॥**

45 पाशमोचन सूक्त - 5 (10)

204. क्षेत्रियात् त्वा निः-ऋत्याः जामि-शंसात् द्रुहः मुञ्चामि वरुणस्य पाशात्।
अनागसम् ब्रह्मणा त्वा कृणोमि शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम् ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ :- क्षेत्रियात् = क्षेत्रिय से **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **निः-ऋत्याः** = निः-ऋत्यों **जामि-शंसात्** = जामि-शंस से, भोजन-स्तुति से **द्रुहः** = द्रोह करने वाला **मुञ्चामि** = कहता हूँ **वरुणस्य** = वरुण का **पाशात्** = पाश से, दिखाने वाले से, बन्धन से **अनागसम्** = निष्पाप, निर्दोष, अपराध रहित, निष्पाप, निर्दोष को **ब्रह्मणा** = ब्रह्म द्वारा **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **कृणोमि** = करता हूँ **शिवे** = कल्याणकारी में **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **द्यावापृथिवी** = अग्रगामी विस्तार, प्रकाश, द्यावा और पृथिवी **उभे** = दोनों, पूर्णता **स्ताम्** = स्तुति करें, प्रशंसा करें **॥ 1 ॥**

पदार्थ :- क्षेत्रियात् = क्षेत्रिय से (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **निः-ऋत्याः** = निः-ऋत्यों (निः = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग), ऋ - जाना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना, पहुँचाना, गति करना, जाना, जानना, पाना, शब्द करना, व्याप्त होना, मिलाना, महत्व दिखाना, हिंसा करना)। **जामि-शंसात्** = जामि-शंस से, भोजन-स्तुति से (जम् = खाना, निगलना, जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **द्रुहः** = द्रोह करने वाला (द्रुह - द्वेष करना, मारने के लिए प्रयत्न करना)। **मुञ्चामि** = कहता हूँ (मुञ्च् = मुक्त करना, त्याग करना, बोलना, कहना, गर्व करना)। **वरुणस्य** = वरुण का (वर - इच्छा

करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **पाशात्** = पाश से, दिखाने वाले से, बन्धन से (पश् - देखना, पश - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना)। **अनागसम्** = निष्पाप, निर्दोष, अपराध रहित, निष्पाप, निर्दोष को (अन्- नही, आ - समन्तात, सम्यक्, अग- कुटिल चाल चलना, अनुचित आचरण करना, जाना, घूमना, टेढ़ा जाना, टेढ़े रास्ते से जाना, लेना, ग्रहण करना)। **ब्रह्मणा** = ब्रह्म द्वारा (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **कृणोमि** = करता हूँ (कृ = करना)। **शिवे** = कल्याणकारी में (शिव - कल्याण करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **द्यावापृथिवी** = अग्रगामी विस्तार, प्रकाश, द्यावा और पृथिवी (द्यु - आगे जाना, समीप जाना, द्युत् -दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, द्यै = तिरस्कार करना, पृथु = विस्तार होना, फेंकना, उड़ाना, भेजना, प्रेरणा करना)। **उभे** = दोनों, पूर्णता (उभय - दोनो, उभ् - पूर्ण करना, भरना)। **स्ताम्** = स्तुति करें, प्रशंसा करें (स्तु - प्रशंसा करना, स्तुति करना, पूजा करना, अर्चा करना, सेवा करना, भजन करना) **॥ 1 ॥**

205. शम् ते अग्निः सह अत्-भिः अस्तु शम् सोमः सह ओषधीभिः।
एव अहम् त्वाम् क्षेत्रियात् निः-ऋत्याः जामि-शंसात् द्रुहः मुञ्चामि वरुणस्य पाशात्।
अनागसम् ब्रह्मणा त्वा कृणोमि शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम्॥ 2॥

मन्त्रार्थ :- शम् = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **अग्निः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् **सह** = साथ, सहित **अत्-भिः** = सतत गमनीयों से, सतत् गमनीयों द्वारा **अस्तु** = हो **शम्** = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी **सोमः** = सृजन-ऐश्वर्य-अन्तकर्ता, ऐश्वर्यवान्, सृष्टिकर्ता **सह** = साथ, सहित **ओषधीभिः** = ओषधियों द्वारा **एव** = ही **अहम्** = मैं **त्वाम्** = तुमको, तुम्हारी **क्षेत्रियात्** = क्षेत्रिय से **निः-ऋत्याः** = निः-ऋत्यों **जामि-शंसात्** = जामि-शंस से, भोजन-स्तुति से **द्रुहः** = द्रोह करने वाला **मुञ्चामि** = कहता हूँ **वरुणस्य** = वरुण का **पाशात्** = पाश से, दिखाने वाले से, बन्धन से **अनागसम्** = निष्पाप, निर्दोष, अपराध रहित, निष्पाप, निर्दोष को **ब्रह्मणा** = ब्रह्म द्वारा **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **कृणोमि** = करता हूँ **शिवे** = कल्याणकारी में **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **द्यावापृथिवी** = अग्रगामी विस्तार, प्रकाश, द्यावा और पृथिवी **उभे** = दोनों, पूर्णता **स्ताम्** = स्तुति करें, प्रशंसा करें **॥ 2 ॥**

पदार्थ :- शम् = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी (शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **अग्निः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **सह** = साथ, सहित (सर्वनाम)। **अत्-भिः** = सतत गमनीयों से, सतत् गमनीयों द्वारा (अत् = सतत गति होना)। **अस्तु** = हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **शम्** = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी (शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)। **सोमः** = सृजन-ऐश्वर्य-अन्तकर्ता, ऐश्वर्यवान्, सृष्टिकर्ता, (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामथ्य, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना। सू = प्रेरणा देना। सो–स्य, सय - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना)। **सह** = साथ, सहित (सर्वनाम)। **ओषधीभिः** = ओषधियों द्वारा (उषध्-ओषध् = चिकित्सा करना, रोग मुक्त करना)। **एव** = ही (अव्यय)। **अहम्** = मैं (सर्वनाम)। **त्वाम्** = तुमको, तुम्हारी (सर्वनाम)। **क्षेत्रियात्** = क्षेत्रिय से (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)। **निः-ऋत्याः** = निः-ऋत्यों (निः = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग), ऋ - जाना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना, पहुँचाना, गति करना, जाना, जानना, पाना, शब्द करना, व्याप्त होना, मिलाना, महत्व दिखाना, हिंसा करना)। **जामि-शंसात्** = जामि-शंस से, भोजन-स्तुति से (जम् = खाना, निगलना, जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **द्रुहः** = द्रोह करने वाला (द्रुह - द्वेष करना, मारने के लिए प्रयत्न करना)। **मुञ्चामि** = कहता हूँ (मुञ्च् = मुक्त करना, त्याग करना, बोलना, कहना, गर्व करना)। **वरुणस्य** = वरुण का (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **पाशात्** = पाश से, दिखाने वाले से, बन्धन से (पश् - देखना,

पश - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना)। **अनागसम्** = निष्पाप, निर्दोष, अपराध रहित, निष्पाप, निर्दोष को (अन्- नही, आ - समन्तात, सम्यक्, अग- कुटिल चाल चलना, अनुचित आचरण करना, जाना, घूमना, टेढ़ा जाना, टेढ़े रास्ते से जाना, लेना, ग्रहण करना)। **ब्रह्मणा** = ब्रह्म द्वारा (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **कृणोमि** = करता हूँ (कृ = करना)। **शिवे** = कल्याणकारी में (शिव - कल्याण करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **द्यावापृथिवी** = अग्रगामी विस्तार, प्रकाश, द्यावा और पृथिवी (द्यु - आगे जाना, समीप जाना, द्युत् -दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, द्यै = तिरस्कार करना, पृथु = विस्तार होना, फेंकना, उड़ाना, भेजना, प्रेरणा करना)। **उभे** = दोनों, पूर्णता (उभय - दोनो, उभ् - पूर्ण करना, भरना)। **स्ताम्** = स्तुति करें, प्रशंसा करें (स्तु - प्रशंसा करना, स्तुति करना, पूजा करना, अर्चा करना, सेवा करना, भजन करना) **॥ 2 ॥**

206. शम् ते वातः अन्तरिक्षे वयः धात् शम् ते भवन्तु प्र-दिशः चतस्रः।
एव अहम् त्वाम् क्षेत्रियात् निः-ऋत्याः जामि-शंसात् द्रुहः मुञ्चामि वरुणस्य पाशात्।
अनागसम् ब्रह्मणा त्वा कृणोमि शिवे ते द्यावा-पृथिवी उभे स्ताम् ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ :- **शम्** = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **वातः** = वात, वायु के समान तीव्र गति वाले **अन्तरिक्षे** = अन्तरिक्ष में **वयः** = वय, रचना **धात्** = धारण करे **शम्** = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **भवन्तु** = हों, हो जायें **प्र-दिशः** = प्रदिश, दिशा **चतस्रः** = चार **एव** = ही **अहम्** = मैं **त्वाम्** = तुमको, तुम्हारी **क्षेत्रियात्** = क्षेत्रिय से **निः-ऋत्याः** = निः-ऋत्यों **जामि-शंसात्** = जामि-शंस से, भोजन-स्तुति से **द्रुहः** = द्रोह करने वाला **मुञ्चामि** = कहता हूँ **वरुणस्य** = वरुण का **पाशात्** = पाश से, दिखाने वाले से, बन्धन से **अनागसम्** = निष्पाप, निर्दोष, अपराध रहित, निष्पाप, निर्दोष को **ब्रह्मणा** = ब्रह्म द्वारा **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **कृणोमि** = करता हूँ **शिवे** = कल्याणकारी में **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **द्यावापृथिवी** = अग्रगामी विस्तार, प्रकाश, द्यावा और पृथिवी **उभे** = दोनों, पूर्णता **स्ताम्** = स्तुति करें, प्रशंसा करें **॥ 3 ॥**

पदार्थ :- **शम्** = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी (शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **वातः** = वात, वायु के समान तीव्र गति वाले (वात - सुखी होना, आनन्द करना, सेवा करना, जाना, वा - गति करना, बहना, पवन की भाँति चलना)। **अन्तरिक्षे** = अन्तरिक्ष में (अन्तः - बीच में, इक्ष् - स्वाद लेना, ईक्ष् -देखना)। **वयः** = वय, रचना (वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वा - गति करना, बहना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण करना, घेरना, भेजना, खाना, वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना)। **धात्** = धारण करे (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)। **शम्** = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी (शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **भवन्तु** = हों, हो जायें (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **प्र-दिशः** = प्रदिश, दिशा (प्र - प्रकृष्ट, दिश् - दिखाना, दिखाना, समझाना, कहना, देना)। **चतस्रः** = चार (संख्या)। **एव** = ही (अव्यय)। **अहम्** = मैं (सर्वनाम)। **त्वाम्** = तुमको, तुम्हारी (सर्वनाम)। **क्षेत्रियात्** = क्षेत्रिय से (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)। **निः-ऋत्याः** = निः-ऋत्यों (निः = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग), ऋ - जाना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना, पहुँचाना, गति करना, जाना, जानना, पाना, शब्द करना, व्याप्त होना, मिलाना, महत्व दिखाना, हिंसा करना)। **जामि-शंसात्** = जामि-शंस से, भोजन-स्तुति से (जम् = खाना, निगलना, जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **द्रुहः** = द्रोह करने वाला (द्रुह - द्वेष करना, मारने के लिए प्रयत्न करना)। **मुञ्चामि** = कहता हूँ (मुञ्च् = मुक्त करना, त्याग करना, बोलना, कहना, गर्व करना)। **वरुणस्य** = वरुण का (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **पाशात्** = पाश से, दिखाने वाले से, बन्धन से (पश् - देखना, पश - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना)। **अनागसम्** = निष्पाप, निर्दोष,

अपराध रहित, निष्पाप, निर्दोष को (अन्- नही, आ - समन्तात, सम्यक्, अग- कुटिल चाल चलना, अनुचित आचरण करना, जाना, घूमना, टेढ़ा जाना, टेढ़े रास्ते से जाना, लेना, ग्रहण करना)। **ब्रह्मणा** = ब्रह्म द्वारा (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **कृणोमि** = करता हूँ (कृ = करना)। **शिवे** = कल्याणकारी में (शिव - कल्याण करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **द्यावापृथिवी** = अग्रगामी विस्तार, प्रकाश, द्यावा और पृथिवी (द्यु - आगे जाना, समीप जाना, द्युत् -दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, द्यै = तिरस्कार करना, पृथु = विस्तार होना, फेंकना, उड़ाना, भेजना, प्रेरणा करना)। **उभे** = दोनों, पूर्णता (उभय - दोनो, उभ् - पूर्ण करना, भरना)। **स्ताम्** = स्तुति करें, प्रशंसा करें (स्तु - प्रशंसा करना, स्तुति करना, पूजा करना, अर्चा करना, सेवा करना, भजन करना) **॥ 3 ॥**

207. इमा याः देवीः प्र-दिशः चतस्रः वात-पत्नीः अभि सूर्यः वि-चष्टे।
एव अहम् त्वाम् क्षेत्रियात् निः-ऋत्याः जामि-शंसात् द्रुहः मुञ्चामि वरुणस्य पाशात्।
अनागसम् ब्रह्मणा त्वा कृणोमि शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम् ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ :- इमा = यह, इसको **याः** = जो **देवीः** = दिव्यगुणयुक्त **प्र-दिशः** = प्रदिश, दिशा **चतस्रः** = चार **वात-पत्नीः** = वात-पत्नी **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा **सूर्यः** = सूर्य, उत्पन्न करने वाला, उत्पन्नकर्ता, ऐश्वर्यवान् **वि-चष्टे** = विशेष खाते हैं, विशेष बोलते, विशेष देखते हैं **एव** = ही **अहम्** = मैं **त्वाम्** = तुमको, तुम्हारी **क्षेत्रियात्** = क्षेत्रिय से **निः-ऋत्याः** = निः-ऋत्यों **जामि-शंसात्** = जामि-शंस से, भोजन-स्तुति से **द्रुहः** = द्रोह करने वाला **मुञ्चामि** = कहता हूँ **वरुणस्य** = वरुण का **पाशात्** = पाश से, दिखाने वाले से, बन्धन से **अनागसम्** = निष्पाप, निर्दोष, अपराध रहित, निष्पाप, निर्दोष को **ब्रह्मणा** = ब्रह्म द्वारा **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **कृणोमि** = करता हूँ **शिवे** = कल्याणकारी में **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **द्यावापृथिवी** = अग्रगामी विस्तार, प्रकाश, द्यावा और पृथिवी **उभे** = दोनों, पूर्णता **स्ताम्** = स्तुति करें, प्रशंसा करें **॥ 4 ॥**

पदार्थ :- इमा = यह, इसको (सर्वनाम)। **याः** = जो (सर्वनाम)। **देवीः** = दिव्यगुणयुक्त (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **प्र-दिशः** = प्रदिश, दिशा (प्र - प्रकृष्ट, दिश् - दिखाना, दिखाना, समझाना, कहना, देना)। **चतस्रः** = चार (संख्या)। **वात-पत्नीः** = वात-पत्नी (वात - सुखी होना, आनन्द करना, सेवा करना, जाना, वा - गति करना, बहना, पवन की भाँति चलना, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **सूर्यः** = सूर्य, उत्पन्न करने वाला, उत्पन्नकर्ता, ऐश्वर्यवान् (सुर - ऐश्वर्य होना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना, सू - उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, ऐश्वर्य होना)। **वि-चष्टे** = विशेष खाते हैं, विशेष बोलते, विशेष देखते हैं (वि = विशेष, विविध, विना, विलोम (उपसर्ग), चष् - खाना, बोलना, देखना)। **एव** = ही (अव्यय)। **अहम्** = मैं (सर्वनाम)। **त्वाम्** = तुमको, तुम्हारी (सर्वनाम)। **क्षेत्रियात्** = क्षेत्रिय से (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)। **निः-ऋत्याः** = निः-ऋत्यों (निः = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग), ऋ - जाना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना, पहुँचाना, गति करना, जाना, जानना, पाना, शब्द करना, व्याप्त होना, मिलाना, महत्व दिखाना, हिंसा करना)। **जामि-शंसात्** = जामि-शंस से, भोजन-स्तुति से (जम् = खाना, निगलना, जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **द्रुहः** = द्रोह करने वाला (द्रुह - द्वेष करना, मारने के लिए प्रयत्न करना)। **मुञ्चामि** = कहता हूँ (मुञ्च् = मुक्त करना, त्याग करना, बोलना, कहना, गर्व करना)। **वरुणस्य** = वरुण का (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **पाशात्** = पाश से, दिखाने वाले से, बन्धन से (पश् - देखना, पश - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना)। **अनागसम्** = निष्पाप, निर्दोष, अपराध रहित, निष्पाप, निर्दोष को (अन्- नही, आ - समन्तात, सम्यक्, अग- कुटिल चाल चलना, अनुचित आचरण करना, जाना, घूमना, टेढ़ा जाना, टेढ़े रास्ते से जाना, लेना, ग्रहण करना)। **ब्रह्मणा** = ब्रह्म द्वारा (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **कृणोमि** = करता हूँ (कृ = करना)। **शिवे** = कल्याणकारी में (शिव - कल्याण करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **द्यावापृथिवी** = अग्रगामी

विस्तार, प्रकाश, द्यावा और पृथिवी (द्यु - आगे जाना, समीप जाना, द्युत् -दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, द्यै = तिरस्कार करना, पृथु = विस्तार होना, फेंकना, उड़ाना, भेजना, प्रेरणा करना)। **उभे =** दोनों, पूर्णता (उभय - दोनो, उभ् - पूर्ण करना, भरना)। **स्ताम् =** स्तुति करें, प्रशंसा करें (स्तु - प्रशंसा करना, स्तुति करना, पूजा करना, अर्चा करना, सेवा करना, भजन करना) **॥ 4 ॥**

208. तासु त्वा अन्तः जरसि आ दधामि प्र यक्ष्मः एतु निः-ऋति पराचैः।
एव अहम् क्षेत्रियात् निः-ऋत्याः जामि-शंसात् द्रुहः मुञ्चामि वरुणस्य पाशात्।
अनागसम् ब्रह्मणा त्वा कृणोमि शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम् ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ :- तासु = उन सब में **त्वा =** तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **अन्तः =** बीच में, भीतर **जरसि =** जीर्ण, वृद्ध, वर्धित, परिपक्व में **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **दधामि =** धारण करता हूँ **प्र =** प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक **यक्ष्मः =** पूज्य, श्रेष्ठ **एतु =** प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे **निः-ऋति =** निः-ऋति **पराचैः =** दूसरी ओर **एव =** ही **अहम् =** मैं **क्षेत्रियात् =** क्षेत्रिय से **निः-ऋत्याः =** निः-ऋत्यों **जामि-शंसात् =** जामि-शंस से, भोजन-स्तुति से **द्रुहः =** द्रोह करने वाला **मुञ्चामि =** कहता हूँ **वरुणस्य =** वरुण का **पाशात् =** पाश से, दिखाने वाले से, बन्धन से **अनागसम् =** निष्पाप, निर्दोष, अपराध रहित, निष्पाप, निर्दोष को **ब्रह्मणा** = ब्रह्म द्वारा **त्वा =** तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **कृणोमि =** करता हूँ **शिवे =** कल्याणकारी में **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **द्यावापृथिवी =** अग्रगामी विस्तार, प्रकाश, द्यावा और पृथिवी **उभे =** दोनों, पूर्णता **स्ताम् =** स्तुति करें, प्रशंसा करें **॥ 5 ॥**

पदार्थ :- तासु = उन सब में (सर्वनाम)। **त्वा =** तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **अन्तः =** बीच में, भीतर (उपसर्ग, सर्वनाम)। **जरसि =** जीर्ण, वृद्ध, वर्धित, परिपक्व में (जृ - वृद्ध होना, जीर्ण होना)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **दधामि =** धारण करता हूँ (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)। **प्र =** प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **यक्ष्मः =** पूज्य, श्रेष्ठ (यक्ष = पूजा करना, पूजना, सत्कार करना)। **एतु =** प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना, इच्छा करना, प्रेरणा करना, ए - जाना, फैलना, व्यापना, गर्भवती होना, इच्छा करना, चाहना, खाना, उड़ाना, फेंकना, भेजना, प्रेरणा करना)। **निः-ऋति =** निः-ऋति (निः = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग), ऋ - जाना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना, पहुँचाना, गति करना, जाना, जानना, पाना, शब्द करना, व्याप्त होना, मिलाना, महत्व दिखाना, हिंसा करना)। **पराचैः =** दूसरी ओर (परा - परम, परे, पीछे, विपरीत, अव्यय)। **एव =** ही (अव्यय)। **अहम् =** मैं (सर्वनाम)। **क्षेत्रियात् =** क्षेत्रिय से (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)। **निः-ऋत्याः =** निः-ऋत्यों (निः = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग), ऋ - जाना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना, पहुँचाना, गति करना, जाना, जानना, पाना, शब्द करना, व्याप्त होना, मिलाना, महत्व दिखाना, हिंसा करना)। **जामि-शंसात् =** जामि-शंस से, भोजन-स्तुति से (जम् = खाना, निगलना, जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **द्रुहः =** द्रोह करने वाला (द्रुह - द्वेष करना, मारने के लिए प्रयत्न करना)। **मुञ्चामि =** कहता हूँ (मुञ्च् = मुक्त करना, त्याग करना, बोलना, कहना, गर्व करना)। **वरुणस्य =** वरुण का (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **पाशात् =** पाश से, दिखाने वाले से, बन्धन से (पश् - देखना, पश - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना)। **अनागसम् =** निष्पाप, निर्दोष, अपराध रहित, निष्पाप, निर्दोष को (अन्- नही, आ - समन्तात, सम्यक्, अग- कुटिल चाल चलना, अनुचित आचरण करना, जाना, घूमना, टेढ़ा जाना, टेढ़े रास्ते से जाना, लेना, ग्रहण करना)। **ब्रह्मणा** = ब्रह्म द्वारा (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **त्वा =** तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **कृणोमि =** करता हूँ (कृ = करना)। **शिवे =** कल्याणकारी में (शिव - कल्याण करना)। **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **द्यावापृथिवी =** अग्रगामी विस्तार, प्रकाश, द्यावा और पृथिवी (द्यु - आगे जाना, समीप जाना, द्युत् -दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, द्यै = तिरस्कार करना, पृथु = विस्तार होना, फेंकना, उड़ाना, भेजना, प्रेरणा करना)। **उभे =** दोनों, पूर्णता (उभय - दोनो, उभ् - पूर्ण करना, भरना)। **स्ताम् =** स्तुति करें, प्रशंसा करें (स्तु - प्रशंसा करना, स्तुति करना, पूजा करना, अर्चा करना, सेवा करना, भजन करना) **॥ 5 ॥**

209. अमुक्थाः यक्ष्मात् दुः-इतात् अवद्यात् द्रुहः पाशात् ग्राह्याः च उत् अमुक्थाः।
एव अहम् त्वाम् क्षेत्रियात् निः-ऋत्याः जामि-शंसात् द्रुहः मुञ्चामि वरुणस्य पाशात्।
अनागसम् ब्रह्मणा त्वा कृणोमि शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम्॥ 6॥

मन्त्रार्थ :- अमुक्थाः = बन्धनहीन, बन्धन-रहित **यक्ष्मात्** = यक्ष्मा से **दुः-इतात्** = अनुचित गति से, अनुचित ज्ञान से **अवद्यात्** = न बोलने योग्य से **द्रुहः** = द्रोह करने वाला **पाशात्** = पाश से, दिखाने वाले से, बन्धन से **ग्राह्याः** = सिञ्चन, बोध, ज्ञान, शब्द, वाणी, ग्रहण द्वारा **च** = और **उत्** = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च **अमुक्थाः** = बन्धनहीन, बन्धन-रहित **एव** = ही **अहम्** = मैं **त्वाम्** = तुमको, तुम्हारी **क्षेत्रियात्** = क्षेत्रिय से **निः-ऋत्याः** = निः-ऋत्यों **जामि-शंसात्** = जामि-शंस से, भोजन-स्तुति से **द्रुहः** = द्रोह करने वाला **मुञ्चामि** = कहता हूँ **वरुणस्य** = वरुण का **पाशात्** = पाश से, दिखाने वाले से, बन्धन से **अनागसम्** = निष्पाप, निर्दोष, अपराध रहित, निष्पाप, निर्दोष को **ब्रह्मणा** = ब्रह्म द्वारा **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **कृणोमि** = करता हूँ **शिवे** = कल्याणकारी में **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **द्यावापृथिवी** = अग्रगामी विस्तार, प्रकाश, द्यावा और पृथिवी **उभे** = दोनों, पूर्णता **स्ताम्** = स्तुति करें, प्रशंसा करें **॥ 6॥**

पदार्थ :- अमुक्थाः = बन्धनहीन, बन्धन-रहित (अ - नहीं, मु = बाँधना)। **यक्ष्मात्** = यक्ष्मा से (यक्ष = पूजा करना, पूजना, सत्कार करना)। **दुः-इतात्** = अनुचित गति से, अनुचित ज्ञान से (दुः = बुरा, अनुचित, कठिन, इ - जाना, जानना, पाना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)। **अवद्यात्** = न बोलने योग्य से (अ = नहीं, वद् - बोलना, कहना)। **द्रुहः** = द्रोह करने वाला (द्रुह - द्वेष करना, मारने के लिए प्रयत्न करना)। **पाशात्** = पाश से, दिखाने वाले से, बन्धन से (पश् - देखना, पश - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना)। **ग्राह्याः** = सिञ्चन, बोध, ज्ञान, शब्द, वाणी, ग्रहण द्वारा (ग्रह = ग्रहण करना, लेना, स्वीकार करना)। **च** = और (अव्यय)। **उत्** = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)। **अमुक्थाः** = बन्धनहीन, बन्धन-रहित (अ - नहीं, मु = बाँधना)। **एव** = ही (अव्यय)। **अहम्** = मैं (सर्वनाम)। **त्वाम्** = तुमको, तुम्हारी (सर्वनाम)। **क्षेत्रियात्** = क्षेत्रिय से (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)। **निः-ऋत्याः** = निः-ऋत्यों (निः = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग), ऋ - जाना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना, पहुँचाना, गति करना, जाना, जानना, पाना, शब्द करना, व्याप्त होना, मिलाना, महत्व दिखाना, हिंसा करना)। **जामि-शंसात्** = जामि-शंस से, भोजन-स्तुति से (जम् = खाना, निगलना, जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **द्रुहः** = द्रोह करने वाला (द्रुह - द्वेष करना, मारने के लिए प्रयत्न करना)। **मुञ्चामि** = कहता हूँ (मुञ्च् = मुक्त करना, त्याग करना, बोलना, कहना, गर्व करना)। **वरुणस्य** = वरुण का (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **पाशात्** = पाश से, दिखाने वाले से, बन्धन से (पश् - देखना, पश - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना)। **अनागसम्** = निष्पाप, निर्दोष, अपराध रहित, निष्पाप, निर्दोष को (अन्- नही, आ - समन्तात, सम्यक्, अग- कुटिल चाल चलना, अनुचित आचरण करना, जाना, घूमना, टेढ़ा जाना, टेढ़े रास्ते से जाना, लेना, ग्रहण करना)। **ब्रह्मणा** = ब्रह्म द्वारा (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **कृणोमि** = करता हूँ (कृ = करना)। **शिवे** = कल्याणकारी में (शिव - कल्याण करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **द्यावापृथिवी** = अग्रगामी विस्तार, प्रकाश, द्यावा और पृथिवी (द्यु - आगे जाना, समीप जाना, द्युत् -दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, द्यै = तिरस्कार करना, पृथु = विस्तार होना, फेंकना, उड़ाना, भेजना, प्रेरणा करना)। **उभे** = दोनों, पूर्णता (उभय - दोनो, उभ् - पूर्ण करना, भरना)। **स्ताम्** = स्तुति करें, प्रशंसा करें (स्तु - प्रशंसा करना, स्तुति करना, पूजा करना, अर्चा करना, सेवा करना, भजन करना) **॥ 6॥**

210. अहाः अरातिम् अविदः स्योनम् अपि अभूः भद्रे सु-कृतस्य लोके।
एव अहम् त्वाम् क्षेत्रियात् निः-ऋत्याः जामि-शंसात् द्रुहः मुञ्चामि वरुणस्य पाशात्।
अनागसम् ब्रह्मणा त्वा कृणोमि शिवे ते द्यावा-पृथिवी उभे स्ताम्॥ 7॥

मन्त्रार्थ :- अहाः = हे व्यापक, हे विस्तृत **अरातिम्** = अदानी को **अविदः** = रक्षाविद्, रक्षा विशेषज्ञ, विशेष न जानने

वाले, अविद्वान् **स्योनम्** = सुख को **अपि** = भी, निकट **अभूः** = अभू, हो गया, हुआ, न होने वाला **भद्रे** = कल्याण में **सु-कृतस्य** = सुकृत का **लोके** = लोक में **एव** = ही **अहम्** = मैं **त्वाम्** = तुमको, तुम्हारी **क्षेत्रियात्** = क्षेत्रिय से **निः-ऋत्याः** = निः-ऋत्यों **जामि-शंसात्** = जामि-शंस से, भोजन-स्तुति से **द्रुहः** = द्रोह करने वाला **मुञ्चामि** = कहता हूँ **वरुणस्य** = वरुण का **पाशात्** = पाश से, दिखाने वाले से, बन्धन से **अनागसम्** = निष्पाप, निर्दोष, अपराध रहित, निष्पाप, निर्दोष को **ब्रह्मणा** = ब्रह्म द्वारा **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **कृणोमि** = करता हूँ **शिवे** = कल्याणकारी में **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **द्यावापृथिवी** = अग्रगामी विस्तार, प्रकाश, द्यावा और पृथिवी **उभे** = दोनों, पूर्णता **स्ताम्** = स्तुति करें, प्रशंसा करें **॥ 7 ॥**

पदार्थ :- अहाः = हे व्यापक, हे विस्तृत (अह - फैलना, विस्तृत होना, व्यापना)। **अरातिम्** = अदानी को (अ - नहीं, रा = देना, रम् - रमना, रमण करना, रम जाना, रत होना, क्रीडा करना, प्रिय होना, मूल्यवान होना)। **अविदः** = रक्षाविद्, रक्षा विशेषज्ञ, विशेष न जानने वाले, अविद्वान् (अ - नहीं, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, ज्ञा - जानना, समझना)। **स्योनम्** = सुख को (स्योन् = सुख होना, सुख देना)। **अपि** = भी, निकट (अव्यय)। **अभूः** = अभू, हो गया, हुआ, न होने वाला (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **भद्रे** = कल्याण में (भदि-भन्द् = सुख होना, शुभ कर्म करना, कल्याण होना)। **सु-कृतस्य** = सुकृत का (सु = उत्तम, अच्छा, उपसर्ग, कृ = करना)। **लोके** = लोक में (लोक् = देखना, प्रकाशित होना, बोलना)। **एव** = ही (अव्यय)। **अहम्** = मैं (सर्वनाम)। **त्वाम्** = तुमको, तुम्हारी (सर्वनाम)। **क्षेत्रियात्** = क्षेत्रिय से (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)। **निः-ऋत्याः** = निः-ऋत्यों (निः = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग), ऋ - जाना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना, पहुँचाना, गति करना, जाना, जानना, पाना, शब्द करना, व्याप्त होना, मिलाना, महत्व दिखाना, हिंसा करना)। **जामि-शंसात्** = जामि-शंस से, भोजन-स्तुति से (जम् = खाना, निगलना, जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **द्रुहः** = द्रोह करने वाला (द्रुह - द्वेष करना, मारने के लिए प्रयत्न करना)। **मुञ्चामि** = कहता हूँ (मुञ्च् = मुक्त करना, त्याग करना, बोलना, कहना, गर्व करना)। **वरुणस्य** = वरुण का (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **पाशात्** = पाश से, दिखाने वाले से, बन्धन से (पश् - देखना, पश - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना)। **अनागसम्** = निष्पाप, निर्दोष, अपराध रहित, निष्पाप, निर्दोष को (अन्- नही, आ - समन्तात, सम्यक्, अग- कुटिल चाल चलना, अनुचित आचरण करना, जाना, घूमना, टेढ़ा जाना, टेढ़े रास्ते से जाना, लेना, ग्रहण करना)। **ब्रह्मणा** = ब्रह्म द्वारा (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **कृणोमि** = करता हूँ (कृ = करना)। **शिवे** = कल्याणकारी में (शिव - कल्याण करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **द्यावापृथिवी** = अग्रगामी विस्तार, प्रकाश, द्यावा और पृथिवी (द्यु - आगे जाना, समीप जाना, द्युत् -दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, द्यै = तिरस्कार करना, पृथु = विस्तार होना, फेंकना, उड़ाना, भेजना, प्रेरणा करना)। **उभे** = दोनों, पूर्णता (उभय - दोनो, उभ् - पूर्ण करना, भरना)। **स्ताम्** = स्तुति करें, प्रशंसा करें (स्तु - प्रशंसा करना, स्तुति करना, पूजा करना, अर्चा करना, सेवा करना, भजन करना) **॥ 7 ॥**

211. सूर्यम् ऋतम् तमसः ग्राह्याः अधि देवाः मुञ्चन्तः असृजन् निः-एनसः।
एव अहम् त्वाम् क्षेत्रियात् निः-ऋत्याः जामि-शंसात् द्रुहः मुञ्चामि वरुणस्य पाशात्।
अनागसम् ब्रह्मणा त्वा कृणोमि शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम् ॥ 8 ॥

मन्त्रार्थ :- सूर्यम् = सूर्य को, उत्पन्न करने वाले, उत्पन्नकर्ता, ऐश्वर्यवान् को **ऋतम्** = सार्वभौम नियम, सत्य, ऋत को **तमसः** = तमस्, अन्धकार, इच्छा, दुःख से, का **ग्राह्याः** = सिञ्चन, बोध, ज्ञान, शब्द, वाणी, ग्रहण द्वारा **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने **मुञ्चन्तः** = मुक्त करते हुए **असृजन्** = सृजन किया, असृजनशील **निः-एनसः** = निरन्तर प्रकाशित करने वाले **एव** = ही **अहम्** = मैं **त्वाम्** = तुमको, तुम्हारी **क्षेत्रियात्** = क्षेत्रिय से **निः-ऋत्याः** = निः-ऋत्यों **जामि-शंसात्** = जामि-शंस से, भोजन-स्तुति से **द्रुहः**

= द्रोह करने वाला **मुञ्चामि** = कहता हूँ **वरुणस्य** = वरुण का **पाशात्** = पाश से, दिखाने वाले से, बन्धन से **अनागसम्** = निष्पाप, निर्दोष, अपराध रहित, निष्पाप, निर्दोष को **ब्रह्मणा** = ब्रह्म द्वारा**त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **कृणोमि** = करता हूँ **शिवे** = कल्याणकारी में **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **द्यावापृथिवी** = अग्रगामी विस्तार, प्रकाश, द्यावा और पृथिवी **उभे** = दोनों, पूर्णता **स्ताम्** = स्तुति करें, प्रशंसा करें **॥ 8 ॥**

पदार्थ :- सूर्यम् = सूर्य को, उत्पन्न करने वाले, उत्पन्नकर्ता, ऐश्वर्यवान् को (सुर - ऐश्वर्य होना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना, सू - उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, ऐश्वर्य होना)। **ऋतम्** = सार्वभौम नियम, सत्य, ऋत को (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)। **तमसः** = तमस्, अन्धकार, इच्छा, दुःख से, का (तम् - अन्धकार होना, इच्छा करना, चाहना, मानसिक या शारीरिक व्यथा से दुःखित होना)। **ग्राह्याः** = सिञ्चन, बोध, ज्ञान, शब्द, वाणी, ग्रहण द्वारा (ग्रह = ग्रहण करना, लेना, स्वीकार करना)। **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **मुञ्चन्तः** = मुक्त करते हुए (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **असृजन्** = सृजन किया, असृजनशील (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, सृज्- सृजन करना, रचना करना, बनाना, विविध रूप से उत्पादन करना)। **निः-एनसः** = निरन्तर प्रकाशित करने वाले (निः = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग), आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, इन-एन = प्रकाशित करना, दोष होना, मिश्रण करना, विभाजन करना, अलग करना, मिलाना)। **एव** = ही (अव्यय)। **अहम्** = मैं (सर्वनाम)। **त्वाम्** = तुमको, तुम्हारी (सर्वनाम)। **क्षेत्रियात्** = क्षेत्रिय से (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)। **निः-ऋत्याः** = निः-ऋत्यों (निः = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग), ऋ - जाना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना, पहुँचाना, गति करना, जाना, जानना, पाना, शब्द करना, व्याप्त होना, मिलाना, महत्व दिखाना, हिंसा करना)। **जामि-शंसात्** = जामि-शंस से, भोजन-स्तुति से (जम् = खाना, निगलना, जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **द्रुहः** = द्रोह करने वाला (द्रुह - द्वेष करना, मारने के लिए प्रयत्न करना)। **मुञ्चामि** = कहता हूँ (मुञ्च् = मुक्त करना, त्याग करना, बोलना, कहना, गर्व करना)। **वरुणस्य** = वरुण का (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **पाशात्** = पाश से, दिखाने वाले से, बन्धन से (पश् - देखना, पश - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना)। **अनागसम्** = निष्पाप, निर्दोष, अपराध रहित, निष्पाप, निर्दोष को (अन्- नही, आ - समन्तात, सम्यक्, अग- कुटिल चाल चलना, अनुचित आचरण करना, जाना, घूमना, टेढ़ा जाना, टेढ़े रास्ते से जाना, लेना, ग्रहण करना)। **ब्रह्मणा** = ब्रह्म द्वारा (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **कृणोमि** = करता हूँ (कृ = करना)। **शिवे** = कल्याणकारी में (शिव - कल्याण करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **द्यावापृथिवी** = अग्रगामी विस्तार, प्रकाश, द्यावा और पृथिवी (द्यु - आगे जाना, समीप जाना, द्युत् -दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, द्यै = तिरस्कार करना, पृथु = विस्तार होना, फेंकना, उड़ाना, भेजना, प्रेरणा करना)। **उभे** = दोनों, पूर्णता (उभय - दोनो, उभ् - पूर्ण करना, भरना)। **स्ताम्** = स्तुति करें, प्रशंसा करें (स्तु - प्रशंसा करना, स्तुति करना, पूजा करना, अर्चा करना, सेवा करना, भजन करना) **॥ 8 ॥**

9 अनुवाक - 3

46 श्रेयः प्राप्ति सूक्त - 6 (11)

212. दूष्याः दूषिः असि हेत्याः हेतिः असि मेन्याः मेनिः असि। आप्नुहि श्रेयांसम् अति समम् क्राम ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ :- दूष्याः = गतिशील, विद्वान्, परिश्रमी, दूषक **दूषिः** = गतिशील, विद्वान्, परिश्रमी, दूषक **असि** = हो **हेत्याः** = हेति, गति, ज्ञान, प्राप्ति, वृद्धि, प्रेरणा वाला **हेतिः** = हेति, गति, ज्ञान, प्राप्ति, वृद्धि, प्रेरणा **असि** = हो **मेन्याः** = ग्रहण करने वाला, हिंसा करने वाला **मेनिः** = ग्रहणीय, हिंसक **असि** = हो **आप्नुहि** = पायें, व्याप्त हों **श्रेयांसम्** = श्रेयांस

को **अति** = बहुत, अत्यधिक **समम्** = समान को **क्राम** = आगे बढ़ाये ॥ 1 ॥

पदार्थ :- दूष्याः = गतिशील, विद्वान्, परिश्रमी, दूषक (दू = जाना, जानना, पाना, सुगन्ध लेना, श्रम करना, जलना, तप्त होना, दुःख होना, दुःख देना, दूष् = दूषित होना, दूषित करना)। **दूषिः** = गतिशील, विद्वान्, परिश्रमी, दूषक (दू = जाना, जानना, पाना, सुगन्ध लेना, श्रम करना, जलना, तप्त होना, दुःख होना, दुःख देना, दूष् = दूषित होना, दूषित करना)। **असि** = हो (अस् - होना)। **हेत्याः** = हेति, गति, ज्ञान, प्राप्ति, वृद्धि, प्रेरणा वाला (हि - गति, वृद्धि, प्रेरणा करना, जाना, जानना, पाना)। **हेतिः** = हेति, गति, ज्ञान, प्राप्ति, वृद्धि, प्रेरणा (हि - गति, वृद्धि, प्रेरणा करना, जाना, जानना, पाना)। **असि** = हो (अस् - होना)। **मेन्याः** = ग्रहण करने वाला, हिंसा करने वाला (मी-मे - ग्रहण करना, प्रतिदान लेना, शीघ्र समझना, मारना, मार डालना या दुःख देना, देहत्याग करना)। **मेनिः** = ग्रहणीय, हिंसक (मी-मे - ग्रहण करना, प्रतिदान लेना, शीघ्र समझना, मारना, मार डालना या दुःख देना, देहत्याग करना)। **असि** = हो (अस् - होना)। **आप्नुहि** = पायें, व्याप्त हों (आप् - जाना, पाना, व्याप्त होना)। **श्रेयांसम्** = श्रेयांस को (श्री = सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना, श्री-श्रीण = पकाना, रांधना)। **अति** = बहुत, अत्यधिक (उपसर्ग, अव्यय)। **समम्** = समान को (सम - परिणाम होना, रूपान्तर होना, सम - विकल न होना, एक समान रहना)। **क्राम** = आगे बढ़ाये (क्रम् = चलना, निर्भयता से चलना, रक्षा करना, बढ़ना) ॥ 1 ॥

213. स्रक्त्यः असि प्रति-सरः असि प्रति-अभिचरणः असि। आप्नुहि श्रेयांसम् अति समम् क्राम ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ :- स्रक्त्यः = गतिशील **असि** = हो **प्रति-सरः** = प्रतिसर, प्रगतिशील **असि** = हो **प्रति-अभिचरणः** = प्रत्येक अभि-चरण करता है, प्रति-अभिचरण करने वाला **असि** = हो **आप्नुहि** = पायें, व्याप्त हों **श्रेयांसम्** = श्रेयांस को **अति** = बहुत, अत्यधिक **समम्** = समान को **क्राम** = आगे बढ़ाये ॥ 2 ॥

पदार्थ :- स्रक्त्यः = गतिशील (सृ - जाना, सरकना)। **असि** = हो (अस् - होना)। **प्रति-सरः** = प्रतिसर, प्रगतिशील (प्रति - सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में, सृ = जाना, जानना, पाना, पहुंचना)। **असि** = हो (अस् - होना)। **प्रति-अभिचरणः** = प्रत्येक अभि-चरण करता है, प्रति-अभिचरण करने वाला (प्रति - सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में, अभि = सभी ओर, सर्वथा, चर - जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)। **असि** = हो (अस् - होना)। **आप्नुहि** = पायें, व्याप्त हों (आप् - जाना, पाना, व्याप्त होना)। **श्रेयांसम्** = श्रेयांस को (श्री = सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना, श्री-श्रीण = पकाना, रांधना)। **अति** = बहुत, अत्यधिक (उपसर्ग, अव्यय)। **समम्** = समान को (सम - परिणाम होना, रूपान्तर होना, सम - विकल न होना, एक समान रहना)। **क्राम** = आगे बढ़ाये (क्रम् = चलना, निर्भयता से चलना, रक्षा करना, बढ़ना) ॥ 2 ॥

214. प्रति तम् अभि चर यः अस्मान् द्वेष्टि यम् वयम् द्विष्मः। आप्नुहि श्रेयांसम् अति समम् क्राम ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ :- प्रति = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में **तम्** = उसको, उसे **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा **चर** = चलने वाला **यः** = जो **अस्मान्** = हमें, हमको **द्वेष्टि** = द्वेष करता है **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं **आप्नुहि** = पायें, व्याप्त हों **श्रेयांसम्** = श्रेयांस को **अति** = बहुत, अत्यधिक **समम्** = समान को **क्राम** = आगे बढ़ाये ॥ 3 ॥

पदार्थ :- प्रति = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **चर** = चलने वाला (चर -जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)। **यः** = जो (सर्वनाम)। **अस्मान्** = हमें, हमको (सर्वनाम)। **द्वेष्टि** = द्वेष करता है (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)। **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ (सर्वनाम)। **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना, मत्सर करना)। **आप्नुहि** = पायें, व्याप्त हों (आप् - जाना, पाना, व्याप्त होना)। **श्रेयांसम्** = श्रेयांस को (श्री = सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना,

आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना, श्री-श्रीण = पकाना, रांधना)। **अति =** बहुत, अत्यधिक (उपसर्ग, अव्यय)। **समम्** = समान को (सम - परिणाम होना, रूपान्तर होना, सम - विकल न होना, एक समान रहना)। **क्राम =** आगे बढ़ाये (क्रम् = चलना, निर्भयता से चलना, रक्षा करना, बढ़ना) **॥ 3 ॥**

215. सूरिः असि वर्चः-धाः असि तनू-पानः असि।
आप्नुहि श्रेयांसम् अति समम् क्राम ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ :- सूरिः = उत्पन्नकर्ता, ऐश्वर्यवान् **असि =** हो **वर्चः-धाः =** वर्च धारण करने वाला, प्रकाश धारण करने वाला, प्रकाश का पोषण करने वाला **असि =** हो **तनू-पानः =** विस्तार, वृद्धि के रक्षक, पालनकर्ता **असि =** हो **आप्नुहि =** पायें, व्याप्त हों **श्रेयांसम् =** श्रेयांस को **अति =** बहुत, अत्यधिक **समम्** = समान को **क्राम =** आगे बढ़ाये **॥ 4 ॥**

पदार्थ :- सूरिः = उत्पन्नकर्ता, ऐश्वर्यवान् (सुर - ऐश्वर्य होना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना, सू - उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, ऐश्वर्य होना)। **असि =** हो (अस् - होना)। **वर्चः-धाः =** वर्च धारण करने वाला, प्रकाश धारण करने वाला, प्रकाश का पोषण करने वाला (वर्च - प्रकाशित होना, चमकना, धा - धारण करना, पहनना, पोषण करना, धाः = पोषण करना, रक्षण करना, देना, दान करना, धार बाँधना, धारा होना)। **असि =** हो (अस् - होना)। **तनू-पानः =** विस्तार, वृद्धि के रक्षक, पालनकर्ता (तन् = विस्तार करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना, पा = पालन करना, रक्षा करना)। **असि =** हो (अस् - होना)। **आप्नुहि =** पायें, व्याप्त हों (आप् - जाना, पाना, व्याप्त होना)। **श्रेयांसम् =** श्रेयांस को (श्री = सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना, श्री-श्रीण = पकाना, रांधना)। **अति =** बहुत, अत्यधिक (उपसर्ग, अव्यय)। **समम्** = समान को (सम - परिणाम होना, रूपान्तर होना, सम - विकल न होना, एक समान रहना)। **क्राम =** आगे बढ़ाये (क्रम् = चलना, निर्भयता से चलना, रक्षा करना, बढ़ना) **॥ 4 ॥**

216. शुक्रः असि भ्राजः असि स्वः असि ज्योतिः असि।
आप्नुहि श्रेयांसम् अति समम् क्राम ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ :- शुक्रः = शुक्र, शुद्ध, पवित्र, पावन, पवित्रकर्ता, शीघ्रकारी **असि =** हो **भ्राजः =** प्रकाशमान् **असि =** हो **स्वः =** उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि **असि =** हो **ज्योतिः =** प्रकाश **असि =** हो **आप्नुहि =** पायें, व्याप्त हों **श्रेयांसम् =** श्रेयांस को **अति =** बहुत, अत्यधिक **समम्** = समान को **क्राम =** आगे बढ़ाये **॥ 5 ॥**

पदार्थ :- शुक्रः = शुक्र, शुद्ध, पवित्र, पावन, पवित्रकर्ता, शीघ्रकारी (शुक्-शुच्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)। **असि =** हो (अस् - होना)। **भ्राजः =** प्रकाशमान् (भ्राज् = चमकना, प्रकाशित होना। भ्रज् = चमकना, प्रकाशित होना, प्रकाश करना, भूँजना, तलना, सेंकना)। **असि =** हो (अस् - होना)। **स्वः =** उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना)। **असि =** हो (अस् - होना)। **ज्योतिः =** प्रकाश (ज्युत - कान्तिमान् होना, चमकना, प्रकाशित होना)। **असि =** हो (अस् - होना)। **आप्नुहि =** पायें, व्याप्त हों (आप् - जाना, पाना, व्याप्त होना)। **श्रेयांसम् =** श्रेयांस को (श्री = सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना, श्री-श्रीण = पकाना, रांधना)। **अति =** बहुत, अत्यधिक (उपसर्ग, अव्यय)। **समम्** = समान को (सम - परिणाम होना, रूपान्तर होना, सम - विकल न होना, एक समान रहना)। **क्राम =** आगे बढ़ाये (क्रम् = चलना, निर्भयता से चलना, रक्षा करना, बढ़ना) **॥ 5 ॥**

47 शत्रुनाशन सूक्त -7 (12)

217. द्यावापृथिवी उरु अन्तरिक्षम् क्षेत्रस्य पत्नी उरु-गायः अद्भुतः।
उत अन्तरिक्षम् उरु वात-गोपम् ते इह तप्यन्ताम् मयि तप्यमाने ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ :- द्यावापृथिवी = अग्रगामी विस्तार, प्रकाश, द्यावा और पृथिवी **उरु =** बहुत, विराट **अन्तरिक्षम् =** अन्तरिक्ष, आकाश, अन्तर्दर्शी **क्षेत्रस्य =** क्षेत्र का **पत्नी =** ऐश्वर्यवती **उरु-गायः =** बहुत गतिशील, निरन्तर गति, व्यापक स्तुति

अद्भुतः = खाद्य **उत** = ही, भी, ओर **अन्तरिक्षम्** = अन्तरिक्ष, आकाश, अन्तर्दर्शी **उरु** = बहुत, विराट **वात-गोपम्** = वात-गोप को, वायु-रक्षक को **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **इह** = इसमें, यहां, यह **तप्यन्ताम्** = तप्त हों **मयि** = मुझमें **तप्यमाने** = तप्तमान ॥ 1 ॥

पदार्थ :- द्यावापृथिवी = अग्रगामी विस्तार, प्रकाश, द्यावा और पृथिवी (द्यु - आगे जाना, समीप जाना, द्युत् -दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, द्यै = तिरस्कार करना, पृथु = विस्तार होना, फेंकना, उड़ाना, भेजना, प्रेरणा करना)। **उरु** = बहुत, विराट (अव्यय, सर्वनाम)। **अन्तरिक्षम्** = अन्तरिक्ष, आकाश, अन्तर्दर्शी (अन्तः - बीच में, इक्ष् - स्वाद लेना, ईक्ष् -देखना)। **क्षेत्रस्य** = क्षेत्र का (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)। **पत्नी** = ऐश्वर्यवती (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **उरु-गायः** = बहुत गतिशील, निरन्तर गति, व्यापक स्तुति (उरु - बहुत, अधिक (सर्वनाम), उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना, गा = चलना, जाना, गान करना)। **अद्भुतः** = खाद्य (अद् = खाना, आत्मसात् करना, अ - नहीं, दा - देना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **अन्तरिक्षम्** = अन्तरिक्ष, आकाश, अन्तर्दर्शी (अन्तः - बीच में, इक्ष् - स्वाद लेना, ईक्ष् -देखना)। **उरु** = बहुत, विराट (अव्यय, सर्वनाम)। **वात-गोपम्** = वात-गोप को, वायु-रक्षक को (वात - सुखी होना, आनन्द करना, सेवा करना, जाना, वा - गति करना, बहना, पवन की भाँति चलना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, गुप् = रक्षा करना, चमकना, बोलना, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **इह** = इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **तप्यन्ताम्** = तप्त हों (तप - ऐश्वर्य होना, तपना, दाह होना, तप करना, तप्त होना, तप्त करना, जलना, जलाना, तृषा होना)। **मयि** = मुझमें (सर्वनाम)। **तप्यमाने** = तप्तमान (तप - ऐश्वर्य होना, तपना, दाह होना, तप करना, तप्त होना, तप्त करना, जलना, जलाना, तृषा होना) ॥ 1 ॥

218. इदम् देवाः शृणुत ये यज्ञियाः स्थ भरत्-वाजः मह्यम् उक्थानि शंसति। पाशे सः बद्धः दुः-इते नि युज्यताम् यः अस्माकम् मनः इदम् हिनस्ति ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ :- इदम् = यह, इसको **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने **शृणुत** = सुनो **ये** = जो **यज्ञियाः** = यजनीय **स्थ** = स्थित, हो **भरत्-वाजः** = भरत-वाज युक्त, विद्यावान् का भरण करते हुए **मह्यम्** = मेरे लिए **उक्थानि** = उक्ति, कथन **शंसति** = स्तुति करो, प्रशंसा करो **पाशे** = पाश में, देखने में, बन्धन में **सः** = वह, उसने **बद्धः** = बँधा हुआ **दुः-इते** = दुर्गति में, अनुचित ज्ञान में **नि** = निश्चित, निरन्तर **युज्यताम्** = युक्त हो, नियुक्त हो **यः** = जो **अस्माकम्** = हमारा **मनः** = मन **इदम्** = यह, इसको **हिनस्ति** = हिंसा करो, बढाओ, वृद्धि करो ॥ 2 ॥

पदार्थ :- इदम् = यह, इसको (सर्वनाम)। **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **शृणुत** = सुनो (श्रु-शृण् = सुनना)। **ये** = जो (सर्वनाम)। **यज्ञियाः** = यजनीय (यज - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना, संयोग करना)। **स्थ** = स्थित, हो (स्था- स्थित होना, ठहरना)। **भरत्-वाजः** = भरत-वाज युक्त, विद्यावान् का भरण करते हुए (भृ = पूर्ण करना, भरना, धारण-पोषण करना, वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना, वा - गति करना, बहना, वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण करना, घेरना, भेजना, खाना, वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना)। **मह्यम्** = मेरे लिए (सर्वनाम)। **उक्थानि** = उक्ति, कथन (उक् - उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना)। **शंसति** = स्तुति करो, प्रशंसा करो (शंस् = इच्छा करना, स्तुति करना, प्रशंसा करना)। **पाशे** = पाश में, देखने में, बन्धन में (पश् - देखना, पश - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना)। **सः** = वह, उसने (सर्वनाम)। **बद्धः** = बँधा हुआ (बध्-बन्ध् = बाँधना, बद्ध करना, हिंसा करना, मारना, वध करना, घृणा करना)। **दुः-इते** = दुर्गति में, अनुचित ज्ञान में (दुः = बुरा, अनुचित, कठिन, इ - जाना, जानना, पाना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)। **नि** = निश्चित, निरन्तर (अव्यय)। **युज्यताम्** = युक्त हो, नियुक्त हो (यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, बांधना, बन्धन करना, गूंथना, युज - जुड़ना, मिलाप करना, मन एकाग्र करना, एकत्र करना)। **यः** = जो (सर्वनाम)। **अस्माकम्** = हमारा (सर्वनाम)। **मनः** = मन (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)।

इदम् = यह, इसको (सर्वनाम)। **हिनस्ति** = हिंसा करो, बढाओ, वृद्धि करो (हि - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना, हिंस = मारना, बध करना, दुःख देना, सताना) ॥ 2 ॥

219. इदम् इन्द्र शृणुहि सोम-प यत् त्वा हृदा शोचता जोहवीमि।
वृश्चामि तम् कुलिशेन-इव वृक्षम् यः अस्माकम् मनः इदम् हिनस्ति ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ :- इदम् = यह, इसको **इन्द्र** = हे इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान **शृणुहि** = सुनो **सोम-प** = सृजन-ऐश्वर्य-अन्तकर्ता सोम का पालक, रक्षक **यत्** = जिसे, जो **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **हृदा** = हृदय **शोचता** = शोच द्वारा, शुद्धता द्वारा **जोहवीमि** = दान करता हूँ, आदान-प्रदान करता हूँ, आह्वान करता हूँ **वृश्चामि** = काटता हूँ, छेदता हूँ **तम्** = उसको, उसे **कुलिशेन-इव** = कुलिश के समान, कुल के समान **वृक्षम्** = वृक्ष को **यः** = जो **अस्माकम्** = हमारा **मनः** = मन **इदम्** = यह, इसको **हिनस्ति** = हिंसा करो, बढाओ, वृद्धि करो ॥ 3 ॥

पदार्थ :- इदम् = यह, इसको (सर्वनाम)। **इन्द्र** = हे इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **शृणुहि** = सुनो (श्रु-शृण् = सुनना)। **सोम-प** = सृजन-ऐश्वर्य-अन्तकर्ता सोम का पालक, रक्षक (सु = उत्पन्न करना, अद्भुत सामर्थ्य, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना। सू = प्रेरणा देना। सो–स्य, सय् - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना। पा - रक्षा करना, पालन करना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **हृदा** = हृदय (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, लेना, ग्रहण करना, नष्ट करना)। **शोचता** = शोच द्वारा, शुद्धता द्वारा (शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना, शुद्ध - पवित्र करना, दुःख मानना, शोक करना)। **जोहवीमि** = दान करता हूँ, आदान-प्रदान करता हूँ, आह्वान करता हूँ (हू-जुहू = दान करना, आदान-प्रदान करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **वृश्चामि** = काटता हूँ, छेदता हूँ (व्रश्च = कतरना, छेद करना, रेतना, छीलना)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **कुलिशेन-इव** = कुलिश के समान, कुल के समान (कुल् = आवरण होना, एकत्र करना, अपने के समान वर्तना, सजातीयता से रहना, गिनना)। **वृक्षम्** = वृक्ष को (वृक्ष - वरण करना, आच्छादन करना)। **यः** = जो (सर्वनाम)। **अस्माकम्** = हमारा (सर्वनाम)। **मनः** = मन (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **इदम्** = यह, इसको (सर्वनाम)। **हिनस्ति** = हिंसा करो, बढाओ, वृद्धि करो (हि - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना, हिंस = मारना, बध करना, दुःख देना, सताना) ॥ 3 ॥

220. अशीति-भिः तिसृ-भिः साम-गेभिः आदित्येभिः वसु-भिः अङ्गिरः-भिः।
इष्टापूर्तम् अवतु नः पितृणाम् आ अमुम् ददे हरसा दैव्येन ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ :- अशीति-भिः = अशीतियों द्वारा, अशयनों, व्याप्तों, व्यापकों द्वारा **तिसृ-भिः** = तीन द्वारा **साम-गेभिः** = साम-गान द्वारा **आदित्येभिः** = आदित्यों द्वारा, अदिति-अक्षय-अविनाशी द्वारा **वसु-भिः** = वसुओं द्वारा **अङ्गिरः-भिः** = विद्वानों, गतिशीलों, पाने वालों द्वारा **इष्टापूर्तम्** = विद्या, इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि की पूर्ति को **अवतु** = रक्षा करो **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा **पितृणाम्** = पितरों का **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **अमुम्** = इसको **ददे** = दिया, दान किया **हरसा** = हर द्वारा **दैव्येन** = दिव्य द्वारा ॥ 4 ॥

पदार्थ :- अशीति-भिः = अशीतियों द्वारा, अशयनों, व्याप्तों, व्यापकों द्वारा (अ - नहीं, शी - शयन करना, अश् = भोजन करना, व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना)। **तिसृ-भिः** = तीन द्वारा (संख्या)। **साम-गेभिः** = साम-गान द्वारा (साम - शान्त करना, समाधान करना, सान्त्वना देना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)। **आदित्येभिः** = आदित्यों द्वारा, अदिति-अक्षय-अविनाशी द्वारा (अ - नहीं, दी = क्षय होना, नष्ट होना, अद् = खाना)। **वसु-भिः** = वसुओं द्वारा (वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)। **अङ्गिरः-भिः** = विद्वानों, गतिशीलों, पाने वालों द्वारा (अंग् = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)। **इष्टापूर्तम्** = विद्या, इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि की पूर्ति को (इष् - इच्छा करना,

चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना, पूर् - पूर्ण करना, भरना)। **अवतु =** रक्षा करो (अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **पितृणाम् =** पितरों का (पा - रक्षा करना, पालन करना, पि-जाना, स्थानान्तर करना)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **अमुम् =** इसको (सर्वनाम)। **ददे =** दिया, दान किया (दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)। **हरसा =** हर द्वारा (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)। **दैव्येन =** दिव्य द्वारा (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना) **॥ 4 ॥**

221. द्यावापृथिवी अनु मा आ दीधीथाम् विश्वे देवासः अनु मा आ रभध्वम्।
अङ्गिरसः पितरः सोम्यासः पापम् आ ऋच्छतु अप-कामस्य कर्ता ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ :- द्यावापृथिवी = अग्रगामी विस्तार, प्रकाश, द्यावा और पृथिवी **अनु =** पश्चात्, पीछे, अनुकूल **मा =** नहीं, मत **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **दीधीथाम् =** दीधित हो, धारण हो, प्रकाशित हो **विश्वे =** सभी **देवासः =** विद्वान्, दिव्यगुणी, देवगण **अनु =** पश्चात्, पीछे, अनुकूल **मा =** नहीं, मत **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **रभध्वम् =** आनन्दित हो, उपक्रम करो **अङ्गिरसः =** विद्वान्, प्रगतिशील, पाने वाला **पितरः =** गतिशील, ज्ञानी, पालन करने वाले **सोम्यासः =** ऐश्वर्यवान् **पापम् =** पाप को **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **ऋच्छतु =** जायें, पायें, पहुँचायें, मिलायें **अप-कामस्य =** अप-काम का **कर्ता =** करने वाला **॥ 5 ॥**

पदार्थ :- द्यावापृथिवी = अग्रगामी विस्तार, प्रकाश, द्यावा और पृथिवी (द्यु - आगे जाना, समीप जाना, द्युत् -दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, द्यै = तिरस्कार करना, पृथु = विस्तार होना, फेंकना, उड़ाना, भेजना, प्रेरणा करना)। **अनु =** पश्चात्, पीछे, अनुकूल (उपसर्ग)। **मा =** नहीं, मत (अव्यय)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **दीधीथाम् =** दीधित हो, धारण हो, प्रकाशित हो (दीध - चमकना, प्रकाशित होना, खेलना, क्रीडा करना, धि - पास रखना या होना, युक्त होना, धारण करना)। **विश्वे =** सभी (सर्वनाम)। **देवासः =** विद्वान्, दिव्यगुणी, देवगण (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **अनु =** पश्चात्, पीछे, अनुकूल (उपसर्ग)। **मा =** नहीं, मत (अव्यय)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **रभध्वम् =** आनन्दित हो, उपक्रम करो (रभ - कार्य आरम्भ करना, आनन्दित होना, प्रसन्न होना)। **अङ्गिरसः =** विद्वान्, प्रगतिशील, पाने वाला (अंग् = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)। **पितरः =** गतिशील, ज्ञानी, पालन करने वाले (पि - जाना, जानना, पाना, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **सोम्यासः =** ऐश्वर्यवान् (सु = उत्पन्न करना, अद्भुत सामर्थ्य, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना। सू = प्रेरणा देना। सो–स्य, सय् - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना)। **पापम् =** पाप को (पाप् - पाप करना, अपराध करना, दुष्ट आचरण करना)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **ऋच्छतु =** जायें, पायें, पहुँचायें, मिलायें (ऋच्छ् - जाना, जानना, प्राप्त करना, मिलाना)। **अप-कामस्य =** अप-काम का (अप = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग), कम - चाहना, इच्छा करना)। **कर्ता =** करने वाला (कृ - करना) **॥ 5 ॥**

222. अति-इव यः मरुतः मन्यते नः ब्रह्म वा यः निन्दिषत् क्रियमाणम्।
तपूंषि तस्मै वृजिनानि सन्तु ब्रह्म-द्विषम् द्यौः अभि-संतपाति ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ :- अति-इव = अधिक के समान, अत्यधिक **यः =** जो **मरुतः =** मरणशील का, मरुत् का **मन्यते =** मानते हैं **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा **ब्रह्म =** ब्रह्म, महान्, बड़ा, बृहत् **वा =** अथवा **यः =** जो **निन्दिषत् =** निन्दा करता है **क्रियमाणम् =** क्रियमाण को **तपूंषि =** तप **तस्मै =** उसके लिए **वृजिनानि =** वृजिनों को, वृजिनों ने **सन्तु =** हों **ब्रह्म-द्विषम् =** ब्रह्मद्वेषी को **द्यौः =** अग्रगामी, प्रकाशवान्, विद्वान्, द्यौ, प्रकाशयुक्त, अग्रगामी **अभि-संतपाति =** अभि-संताप **॥ 6 ॥**

पदार्थ :- अति-इव = अधिक के समान, अत्यधिक (अति - अधिक, बहुत (अव्यय), इव = समान, की भाँति, के

समान (अव्यय))। **यः** = जो (सर्वनाम)। **मरुतः** = मरणशील का, मरुत् का (मृ = मरना, देहत्याग करना)। **मन्यते** = मानते हैं (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **ब्रह्म** = ब्रह्म, महान्, बड़ा, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **वा** = अथवा (अव्यय)। **यः** = जो (सर्वनाम)। **निन्दिषत्** = निन्दा करता है (निन्द् - निन्दा करना)। **क्रियमाणम्** = क्रियमाण को (कृ - करना)। **तपूंषि** = तप (तप - ऐश्वर्य होना, तपना, दाह होना, तप करना, तप्त होना, तप्त करना, जलना, जलाना, तृषा होना)। **तस्मै** = उसके लिए (सर्वनाम)। **वृजिनानि** = वृजिनों को, वृजिनों ने (वृज् = छोड़ना, त्यागना, वर्जित करना)। **सन्तु** = हों (अस् - होना)। **ब्रह्म-द्विषम्** = ब्रह्मद्वेषी को (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)। **द्यौः** = अग्रगामी, प्रकाशवान्, विद्वान्, द्यौ, प्रकाशयुक्त, अग्रगामी (द्युत् = प्रकाशित होना, द्यु = अभिगमन करना, आक्रमण करना, आगे जाना, समीप जाना, प्रकाश होना, जानना)। **अभि-संतपाति** = अभि-संताप (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग), सम् - सम्यक्, तप - ऐश्वर्य होना, तपना, दाह होना, तप करना, तप्त होना, तप्त करना, जलना, जलाना, तृषा होना) **॥ 6 ॥**

223. सप्त प्राणान् अष्टौ मन्यः तान् ते वृश्चामि ब्रह्मणा।
अयाः यमस्य सदनम् अग्नि-दूतः अरम्-कृतः ॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ :- सप्त = सात **प्राणान्** = प्राणों को **अष्टौ** = आठ, दीप्तिमान्, ग्राही, गतिशील, विद्वान् **मन्यः** = विचारणीय **तान्** = उनको **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **वृश्चामि** = काटता हूँ, छेदता हूँ **ब्रह्मणा** = ब्रह्म द्वारा **अयाः** = गति, प्रेरणा द्वारा **यमस्य** = यम का **सदनम्** = सदन को, स्थान को **अग्नि-दूतः** = अग्नि-दूत, ऊर्ध्वगामी विद्वान्, अग्रणी परिश्रमी **अरम्-कृतः** = प्रगतिशील, विद्वान् द्वारा किया हुआ **॥ 7 ॥**

पदार्थ :- सप्त = सात (संख्या)। **प्राणान्** = प्राणों को (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अन- जीवन होना, चेतन होना, प्रा- पूर्ण करना, तृप्त करना)। **अष्टौ** = आठ, दीप्तिमान्, ग्राही, गतिशील, विद्वान् (अष्ट - आठ, (संख्या), अष् - ग्रहण करना, जाना, जानना, पाना, चमकना, प्रकाश करना)। **मन्यः** = विचारणीय (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **तान्** = उनको (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **वृश्चामि** = काटता हूँ, छेदता हूँ (व्रश्च = कतरना, छेद करना, रेतना, छीलना)। **ब्रह्मणा** = ब्रह्म द्वारा (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **अयाः** = गति, प्रेरणा द्वारा (अय् = जाना, जानना, पाना)। **यमस्य** = यम का (यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)। **सदनम्** = सदन को, स्थान को (सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)। **अग्नि-दूतः** = अग्नि-दूत, ऊर्ध्वगामी विद्वान्, अग्रणी परिश्रमी (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना, दू = जाना, जानना, पाना, सुगन्ध लेना, श्रम करना, जलना, तप्त होना, दुःख होना, दुःख देना)। **अरम्-कृतः** = प्रगतिशील, विद्वान् द्वारा किया हुआ (ऋ-अर् = जाना, जानना, पाना, महत्व दिखाना, शब्द करना, ध्वनि करना, हिंसा करना, कृ = करना) **॥ 7 ॥**

224. आ दधामि ते पदम् सम्-इद्धे जात-वेदसि।
अग्निः शरीरम् वेवेष्टु असुम् वाक् अपि गच्छतु ॥ 8 ॥

मन्त्रार्थ :- आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **दधामि** = धारण करता हूँ **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **पदम्** = पद को **सम्-इद्धे** = सम्यक् प्रकाशित में **जात-वेदसि** = जात को जानता है, उत्पन्न होने वालों को जानता है **अग्निः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् **शरीरम्** = शरीर को **वेवेष्टु** = व्याप्त हो **असुम्** = असु को, ऐश्वर्यवान् को, उत्पन्न करने वाले को **वाक्** = वाणी **अपि** = भी, निकट **गच्छतु** = जाओ, जाये **॥ 8 ॥**

पदार्थ :- आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **दधामि** = धारण करता हूँ (दध - धारण करना, पालन

करना, देना, अर्पण करना)। **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **पदम् =** पद को (पद् - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना)। **सम्-इद्धे =** सम्यक् प्रकाशित में (सम् = सम्यक्, भलीभांति, इत् - इन्ध = प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना, प्रकाश करना)। **जात-वेदसि =** जात को जानता है, उत्पन्न होने वालों को जानता है (जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जा-ज्ञा - जानना, विद् - जानना)। **अग्निः =** अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **शरीरम् =** शरीर को (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, शृ - मार डालना, दुःख देना, पीड़ा करना, फटना, हिंसा करना, मारना, श्रि - सेवा करना, आश्रय करना)। **वेवेष्टु** = व्याप्त हो (विष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना, व्यापना, फैलना, प्रसृत होना)। **असुम् =** असु को, ऐश्वर्यवान् को, उत्पन्न करने वाले को (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना)। **वाक् =** वाणी (वच, वद - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)। **अपि =** भी, निकट (अव्यय)। **गच्छतु =** जाओ, जाये (गम्, गच्छ् = जाना) **॥ 8 ॥**

48. दीर्घायु प्राप्ति सूक्त - 8 (13)

225. आयुः-दाः अग्ने जरसम् वृणानो घृतप्रतीको घृतपृष्ठो।
अग्ने घृतम् पीत्वा मधु चारु गव्यम् पिता-इव पुत्रान् अभि रक्षतात् इमम् ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ :- आयुः-दाः = आयु देने वाला, आयुदाता **अग्ने =** हे अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् **जरसम् =** जीर्ण, वृद्ध, वर्धित, परिपक्व को **वृणानो =** वरण करने वाला **घृतप्रतीको =** घृत-प्रतीक, प्रकाशगामी **घृतपृष्ठो =** घृत-पृष्ठ, प्रकाशमान पृष्ठ **अग्ने =** हे अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् **घृतम् =** घृत को, प्रकाशमान को **पीत्वा =** पीकर **मधु =** मीठा, मधु **चारु =** चारु **गव्यम् =** गव्य, कहने योग्य, कथनीय को **पिता-इव =** पिता के समान **पुत्रान् =** पुत्रों को **अभि =** अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा **रक्षतात् =** रक्षा करो, बचाओ **इमम् =** इसको **॥ 1 ॥**

पदार्थ :- आयुः-दाः = आयु देने वाला, आयुदाता (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अय = जाना, जानना, पाना, गति करना, आय - शब्द करना, शासन करना, यु = मिलना, अलग करना, दा - दान करना, देना)। **अग्ने =** हे अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **जरसम् =** जीर्ण, वृद्ध, वर्धित, परिपक्व को (जृ - वृद्ध होना, जीर्ण होना)। **वृणानो =** वरण करने वाला (वृ = वरण करना, वृण - परित्याग करना, आनन्द करना, उत्साह करना)। **घृतप्रतीको =** घृत-प्रतीक, प्रकाशगामी (घृ - चमकना, प्रकाश करना, सिञ्चन करना, गीला करना, टपकना, बूंद बूंद गिरना, क्षरित होना, क्षरण होना, झरना, घर्षण होना, नाश होना, शब्द होना। प्र - प्रकृष्ट, अधिक, तिक् - गति करना, चाल चलना, दुःख देने का प्रयास करना, तीक् - जाना, जानना, पाना)। **घृतपृष्ठो =** घृत-पृष्ठ, प्रकाशमान पृष्ठ (घृ - चमकना, प्रकाश करना, सिञ्चन करना, गीला करना, टपकना, बूंद बूंद गिरना, क्षरित होना, क्षरण होना, झरना, घर्षण होना, नाश होना, शब्द होना, पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना, स्था-तिष्ठ - स्थित होना, ठहरना, बैठना, पृश्-पृच्छ - पूछना, जानने की इच्छा करना, प्रश्न करना, पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सींचना, सहन करना)। **अग्ने =** हे अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **घृतम् =** घृत को, प्रकाशमान को (घृ - चमकना, प्रकाश करना, सिञ्चन करना, गीला करना, टपकना, बूंद बूंद गिरना, क्षरित होना, क्षरण होना, झरना, घर्षण होना, नाश होना, शब्द होना)। **पीत्वा =** पीकर (पी-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)। **मधु =** मीठा, मधु (मध् = मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना, मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)। **चारु =** चारु (चर -जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना। चार - संशय होना, निश्चय करना)। **गव्यम् =** गव्य, कहने योग्य, कथनीय को (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)। **पिता-इव =** पिता के समान (पा = रक्षा करना, पालन करना, पि = जाना, जानना, पाना, इव - की तरह, समान, भाँति)। **पुत्रान् =** पुत्रों

को (पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)। **अभि =** अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **रक्षतात् =** रक्षा करो, बचाओ (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना)। **इमम् =** इसको (सर्वनाम) **॥ 1 ॥**

226. परि धत्त न वर्चसा इमम् जरा-मृत्युम् कृणुत दीर्घम् आयुः।
बृहस्पतिः प्र अयच्छत् वासः एतत् सोमाय राज्ञे परि-धातवै उ ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ :- परि = सभी तरफ **धत्त =** धारण, पोषण करो **न =** नहीं, समान, उपमार्थक **वर्चसा =** प्रकाश द्वारा, तेज द्वारा **इमम् =** इसको **जरा-मृत्युम् =** जरा-मृत्यु को, जीर्ण-मृत्यु को **कृणुत =** करो **दीर्घम् =** दीर्घ को, विशाल को **आयुः =** आयु **बृहस्पतिः =** बृहस्पति, महान्, बृहत् का स्वामी **प्र =** प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक **अयच्छत् =** दिया **वासः =** घर, निवास **एतत् =** यह **सोमाय =** सोम के लिए **राज्ञे =** हे प्रकाशित होने वाले, हे राजा **परि-धातवै =** परि-धारण के लिए, सब ओर से धारण करने के लिए **उ =** निश्चय ही, भी **॥ 2 ॥**

पदार्थ :- परि = सभी तरफ (उपसर्ग)। **धत्त =** धारण, पोषण करो (धा = धारण, पोषण, रक्षण, दान करना)। **न =** नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **वर्चसा =** प्रकाश द्वारा, तेज द्वारा (वर्च - प्रकाशित होना, चमकना)। **इमम् =** इसको (सर्वनाम)। **जरा-मृत्युम् =** जरा-मृत्यु को, जीर्ण-मृत्यु को, (जृ - वृद्ध होना, जीर्ण होना, मृ = मरना, देहत्याग करना)। **कृणुत =** करो (कृ - करना)। **दीर्घम् =** दीर्घ को, विशाल को (दृह - बढ़ना, वृद्धिगत होना)। **आयुः =** आयु (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अय = जाना, जानना, पाना, ग़ति करना, आय - शब्द करना, शासन करना, यु = मिलना, अलग करना)। **बृहस्पतिः =** बृहस्पति, महान्, बृहत् का स्वामी (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना, पत् - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना, नीचे जाना, गिरना, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **प्र =** प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **अयच्छत् =** दिया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, यच्छ - देना, दान करना)। **वासः =** घर, निवास (वस् = रहना, निवास करना)। **एतत् =** यह (सर्वनाम)। **सोमाय =** सोम के लिए (सु = उत्पन्न करना, अद्भुत सामर्थ्य, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना। सू = प्रेरणा देना। सो–स्य, सय् - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना)। **राज्ञे =** हे प्रकाशित होने वाले, हे राजा (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **परि-धातवै =** परि-धारण के लिए, सब ओर से धारण करने के लिए (परि = सभी तरफ, उपसर्ग, धा = धारण करना)। **उ =** निश्चय ही, भी (निपात, अव्यय) **॥ 2 ॥**

227. परि इदम् वासः अधिथाः स्वस्तये अभूः गृष्टीनाम् अभिशस्ति-पाः उ।
शतम् च जीव शरदः पुरूचीः रायः च पोषम् उप-संव्ययस्व ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ :- परि = सभी तरफ **इदम् =** यह, इसको **वासः =** घर, निवास **अधिथाः =** अधारित, धारण किया **स्वस्तये =** कल्याण के लिए, सुख के लिए **अभूः =** अभू, हो गया, हुआ, न होने वाला **गृष्टीनाम् =** गृष्टियों को, वाणी, बोध, अभिसिंचक को **अभिशस्ति-पाः =** हिंसा से रक्षा करने वाला, सर्वथा विनती, स्तुति, निन्दा से रक्षा करने वाला **उ =** निश्चय ही, भी **शतम् =** सौ **च =** और **जीव =** जीव **शरदः =** शरद् **पुरूचीः =** बहुत स्तुति करते हुए, एकत्र करते हुए, परिपूर्ण, अग्रगामी, अग्रणी स्तुति करने वाला **रायः =** गति, विद्या, वाणी **च =** और **पोषम् =** पोषण करने वाले **उप-संव्ययस्व =** उप-संव्यय करो, उप-सम्यक् व्यय करो **॥ 3 ॥**

पदार्थ :- परि = सभी तरफ (उपसर्ग)। **इदम् =** यह, इसको (सर्वनाम)। **वासः =** घर, निवास (वस् = रहना, निवास करना)। **अधिथाः =** अधारित, धारण किया (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)। **स्वस्तये =** कल्याण के लिए, सुख के लिए (सु - अच्छा, अस् - होना, स्वस्ति = कल्याण)। **अभूः =** अभू, हो गया, हुआ, न होने वाला (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **गृष्टीनाम् =** गृष्टियों को, वाणी, बोध, अभिसिंचक को (गृ = सींचना, गीला करना, घर्षण करना, जानना, समझना, खाना, निगलना, शब्द करना, गृ - शब्द करना, गा-गै = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना)। **अभिशस्ति-पाः =** हिंसा से रक्षा करने वाला, सर्वथा विनती, स्तुति, निन्दा से रक्षा करने वाला (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा,

शष् = हिंसा करना, मारना, निन्दा करना, अभिशस् = विनती करना, प्रार्थना करना, शंस् = चाहना, स्तुति करना, पा - रक्षा करना, पालन करना)। **उ** = निश्चय ही, भी (निपात, अव्यय)। **शतम्** = सौ (संख्या, सर्वनाम)। **च** = और (अव्यय)। **जीव** = जीव (जीव् - जीवन होना, प्राणवान् होना, प्राण धारण करना, जीवन धारण करना)। **शरदः** = शरद् (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मारना, श्रि - सेवा करना, आश्रय करना)। **पुरूचीः** = बहुत स्तुति करते हुए, एकत्र करते हुए, परिपूर्ण, अग्रगामी, अग्रणी स्तुति करने वाला (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, पृ - पूर्ण करना, भरना, पालन करना, रक्षा करना, तृप्त करना, उच् - एकत्र करना, उच्-वद् - कहना, बोलना)। **रायः** = गति, विद्या, वाणी (रा-देना, लेना, ग्रहण करना, रय् = जाना, जानना, पाना, रै = शब्द करना)। **च** = और (अव्यय)। **पोषम्** = पोषण करने वाले (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, पूष - बढ़ना, अधिक होना, पोषण करना)। **उप-संव्ययस्व** = उप-संव्यय करो, उप-सम्यक् व्यय करो (उप - समीप, सम् = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग), वि - विशेष, इ-अय् - जाना, जानना, पाना, व्यय - आच्छादन करना, उपयोग होना, खर्च होना, नाश होना) ॥ 3 ॥

228. आ इहि अश्मानम् आ तिष्ठ अश्मा भवतु ते तनूः।
कृण्वन्तु विश्वे देवाः आयुः ते शरदः शतम् ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ :- आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **इहि** = आओ, जानों **अश्मानम्** = व्याप्त, व्यापक, प्राप्त **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **तिष्ठ** = उठो, ठहरो, खड़े हो **अश्मा** = व्याप्त, व्यापक, प्राप्त **भवतु** = हो, हो जाये **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **तनूः** = विस्तार, शरीर **कृण्वन्तु** = करो **विश्वे** = सभी **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने **आयुः** = आयु **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **शरदः** = शरद **शतम्** = सौ ॥ 4 ॥

पदार्थ :- आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **इहि** = आओ, जानों (इ = जाना, जानना, पाना)। **अश्मानम्** = व्याप्त, व्यापक, प्राप्त (अश् = भोजन करना, व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **तिष्ठ** = उठो, ठहरो, खड़े हो (तिष्ठ् = ठहरना, खड़ा होना)। **अश्मा** = व्याप्त, व्यापक, प्राप्त (अश् = भोजन करना, व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना)। **भवतु** = हो, हो जाये (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **तनूः** = विस्तार, शरीर (तन् = विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना)। **कृण्वन्तु** = करो (कृ = करना)। **विश्वे** = सभी (सर्वनाम)। **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **आयुः** = आयु (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अय = जाना, जानना, पाना, ग़ति करना, आय - शब्द करना, शासन करना, यु = मिलना, अलग करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **शरदः** = शरद् (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मारना, श्रि - सेवा करना, आश्रय करना)। **शतम्** = सौ (संख्या, सर्वनाम) ॥ 4 ॥

229. यस्य ते वासः प्रथम-वास्यम् हरामः तम् त्वा विश्वे अवन्तु देवाः।
तम् त्वा भ्रातरः सुवृधा वर्धमानम् अनु जायन्ताम् बहवः सु-जातम् ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ :- यस्य = जिसका **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **वासः** = घर, निवास **प्रथम-वास्यम्** = प्रथम वासयोग्य, विस्तार-वासमय, प्रथम-वास्य को **हरामः** = हरने वाला **तम्** = उसको, उसे **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **विश्वे** = सभी **अवन्तु** = प्रकाशित करें, रक्षा करें **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने **तम्** = उसको, उसे **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **भ्रातरः** = भ्रातर, भरण करने वाला **सुवृधा** = सुवृद्धि **वर्धमानम्** = बढ़ते हुए, वृद्धि करते हुए को **अनु** = पश्चात्, पीछे, अनुकूल **जायन्ताम्** = उत्पन्न हों **बहवः** = बहुत **सु-जातम्** = सुजात को, उत्तम जन को ॥ 5 ॥

पदार्थ :- यस्य = जिसका (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **वासः** = घर, निवास (वस् = रहना,

निवास करना)। **प्रथम-वास्यम्** = प्रथम वासयोग्य, विस्तार-वासमय, प्रथम-वास्य को (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना, वस् = रहना, निवास करना)। **हरामः** = हरने वाला (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **विश्वे** = सभी (सर्वनाम)। **अवन्तु** = प्रकाशित करें, रक्षा करें (अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, प्रकाश करना)। **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **भ्रातरः** = भ्रातर, भरण करने वाला (भृ = भरण करना)। **सुवृधा** = सुवृद्धि (सु - अच्छा (उपसर्ग), वृध - बढ़ना, अधिक होना)। **वर्धमानम्** = बढ़ते हुए, वृद्धि करते हुए को (वृध् = बढ़ना, चमकना, बोलना)। **अनु** = पश्चात्, पीछे, अनुकूल (उपसर्ग)। **जायन्ताम्** = उत्पन्न हों (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **बहवः** = बहुत (सर्वनाम)। **सु-जातम्** = सुजात को, उत्तम जन को (सु = उत्तम, अच्छा (उपसर्ग), जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना) **॥ 5 ॥**

49. दस्यु-नाशन सूक्त - 14

230. निः-सालाम् धृष्णुम् धिषणम् एक-वाद्याम् जिघत्-स्वम्।
सर्वाः चण्डस्य नप्त्यः नाशयामः सदान्वाः ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - **निः-सालाम्** = निरन्तर प्रगतिशील, निरन्तर-विद्वान् को **धृष्णुम्** = विजय, गर्व को **धिषणम्** = वाणी को **एक-वाद्याम्** = एक-वाद्या को, एक-वाणी युक्त को, एक-वक्ता को **जिघत्-स्वम्** = स्व-हिंसा करता है, अपनी हिंसा करता है **सर्वाः** = सभी **नप्त्यः** = प्राप्त करने वाले, विद्वान् **नाशयामः** = नाश करने वाला, विनाश करने वाला **सदान्वाः** = सदान्वा **॥ 1 ॥**

पदार्थ - **निः-सालाम्** = निरन्तर प्रगतिशील, निरन्तर-विद्वान् को (निः = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग), षल् = जाना, सरकना, कांपना, थरथराना)। **धृष्णुम्** = विजय, गर्व को (धृष् = जीतना, गर्व करना, धृष्टता करना, अभिमान करना, स्वयम् को बड़ा समझना, चतुरता दिखाना, वञ्चना करना)। **धिषणम्** = वाणी को (धिष् = शब्द करना, बोलना)। **एक-वाद्याम्** = एक-वाद्या को, एक-वाणी युक्त को, एक-वक्ता को (वद् - बोलना, कहना, समझाना)। **जिघत्-स्वम्** = स्व-हिंसा करता है, अपनी हिंसा करता है (स्वम् = अपने को, स्वयम् को (सर्वनाम), हन्-घ्न-जिघ्न् - हिंसा करना)। **सर्वाः** = सभी (सर्वनाम)। **नप्त्यः** = प्राप्त करने वाले, विद्वान् (नप - पहुंचना, जानना, पाना, शब्द करना, झंकार करना, चमकना)। **नाशयामः** = नाश करने वाला, विनाश करने वाला (नश् - नष्ट होना, अदृश्य होना)। **सदान्वाः** = सदान्वा (स - सहित, साथ, दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना) **॥ 1 ॥**

231. निः वः गो-स्थात् अजामसि निः अक्षात् निः उप-आनसात्।
निः वः मगुन्द्याः दुहितरः गृहेभ्यः चातयामहे ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - **निः** = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **गो-स्थात्** = गोष्ठ से, शब्द करने वालों, मननशीलों, उपदेशकों के स्थान से **अजामसि** = भक्षण किया **निः** = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर **अक्षात्** = अक्ष से, खेल से, व्यापकता से **निः** = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर **उप-आनसात्** = उप-आनस से, उप-सम्यक् कुटिलता से, उप-सम्यक्-नमनता से **निः** = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **मगुन्द्याः** = हे मगुन्द्या **दुहितरः** = दुहितर, दुहने वाला, दुहने वाली **गृहेभ्यः** = घरों के लिए, गृहों द्वारा **चातयामहे** = नाश करते हैं, याचना करते हैं **॥ 2 ॥**

पदार्थ - **निः** = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग)। **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **गो-स्थात्** = गोष्ठ से, शब्द करने वालों, मननशीलों, उपदेशकों के स्थान से (गोष्ठ - मिलकर रहना, बटोरना, एकत्र करना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, स्था - स्थित होना, ठहरना)। **अजामसि** = भक्षण किया (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, जम - खाना, भक्षण करना)। **निः** = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग)। **अक्षात्** = अक्ष से, खेल से, व्यापकता से (अक्ष - खेलना, देखना, एकत्र होना, व्याप्त होना, इच्छितार्थ होना,

पैठना)। **निः** = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग)। **उप-आनसात्** = उप-आनस से, उप-सम्यक् कुटिलता से, उप-सम्यक्-नमनता से (उप = समीप (उपसर्ग), आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अन्- चेतन होना, प्राण होना, जीवन होना, समर्थ होना, जाना, नस् - कुटिल होना, वक्र होना, नमना)। **निः** = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग)। **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **मगुन्द्याः** = हे मगुन्द्या (मग् = लेना, ग्रहण करना)। **दुहितरः** = दुहितर, दुहने वाला, दुहने वाली (दुह - दूध निकालना, दोहना, रिक्त करना, लेना, खींचना)। **गृहेभ्यः** = घरों के लिए, गृहों द्वारा (गृह् - लेना, स्वीकार करना, निवास करना)। **चातयामहे** = नाश करते हैं, याचना करते हैं (चात्-चातय - नाश होना, नाश करना, चत - मांगना, याचना करना, जाना) **॥ 2 ॥**

232. असौ यः अधरात् गृहः तत्र सन्तु अराय्यः।
तत्र सेदिः नि उच्यतु सर्वाः च यातु-धान्यः ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - **असौ** = यह **यः** = जो **अधरात्** = अधरों से, जय से, धारण न करने से **गृहः** = गृह **तत्र** = वहाँ **सन्तु** = हों **अराय्यः** = अदान, गतिहीन, शब्दहीन, हिंसक, गतिशील, व्यापक **तत्र** = वहाँ **सेदिः** = हिंसक, प्रगतिशील **नि** = निश्चित, निरन्तर **उच्यतु** = एकत्र करो, सम्बन्ध करो **सर्वाः** = सभी **च** = और **यातु-धान्यः** = यातुधान के योग्य **॥ 3 ॥**

पदार्थ - **असौ** = यह (सर्वनाम)। **यः** = जो (सर्वनाम)। **अधरात्** = अधरों से, जय से, धारण न करने से (अधर् - न्यून करना, जीतना, निम्न गति करना, अ - नहीं, धृ - धारण करना)। **गृहः** = गृह (गृह - लेना, स्वीकार करना, निवास करना, पत- श्री मान् होना, अमानवी पराक्रम करना)। **तत्र** = वहाँ (सर्वनाम)। **सन्तु** = हों (अस् - होना)। **अराय्यः** = अदान, गतिहीन, शब्दहीन, हिंसक, गतिशील, व्यापक (अ - नहीं, रा-देना, लेना, ग्रहण करना, रय् = जाना, जानना, पाना, रै = शब्द करना, ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना)। **तत्र** = वहाँ (सर्वनाम)। **सेदिः** = हिंसक, प्रगतिशील (सिद् = हिंसा करना, अवसाद होना, जाना, जानना, पाना, सिध् = जाना, जानना, पाना, सिद्ध होना, जीत होना, पूर्ण होना)। **नि** = निश्चित, निरन्तर (अव्यय)। **उच्यतु** = एकत्र करो, सम्बन्ध करो (उच् = एकत्र होना)। **सर्वाः** = सभी (सर्वनाम)। **च** = और (अव्यय)। **यातु-धान्यः** = यातुधान के योग्य (या - जाना, यत् - यत्न करना, प्रयास करना, उद्योग करना, दुःख देना, छाया-आच्छादन करना, रोकना, धा = धारण करना) **॥ 3 ॥**

233. भूत-पतिः निः अजतु इन्द्रः च इतः सदान्वाः।
गृहस्य बुध्ने आसीनाः ताः इन्द्रः वज्रेण अधि तिष्ठतु ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - **भूत-पतिः** = भूत-पति, हो गये ऐश्वर्यवान् **निः** = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर **अजतु** = अज हो, अजन्मा, प्रगतिशील **इन्द्रः** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान **च** = और **इतः** = यहां से **सदान्वाः** = सदान्वा **गृहस्य** = गृह का **बुध्ने** = बोध में **आसीनाः** = आसीन **ताः** = वे **इन्द्रः** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान **वज्रेण** = वज्र, गतिमान द्वारा **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार **तिष्ठतु** = उठो, ठहरो, खड़े हो **॥ 4 ॥**

पदार्थ - **भूत-पतिः** = भूत-पति, हो गये ऐश्वर्यवान् (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **निः** = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग)। **अजतु** = अज हो, अजन्मा, प्रगतिशील (अ - नहीं, जन् = उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, अज - जाना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना)। **इन्द्रः** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **च** = और (अव्यय)। **इतः** = यहां से (सर्वनाम्)। **सदान्वाः** = सदान्वा (स - सहित, साथ, दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना)। **गृहस्य** = गृह का (गृह - लेना, स्वीकार करना, निवास करना, पत- श्री मान् होना, अमानवी पराक्रम करना)। **बुध्ने** = बोध में (बुध् - बोध होना, बोध करना, जानना, समझना)। **आसीनाः** = आसीन (अस् - होना, आस् - बैठना, उपस्थित होना, विद्यमान होना, जीवित रहना, होना)। **ताः** = वे (सर्वनाम)। **इन्द्रः** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **वज्रेण** = वज्र, गतिमान द्वारा (वज् - गति करना, जाना)। **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **तिष्ठतु** = उठो, ठहरो, खड़े हो (तिष्ठ् = ठहरना,

खड़ा होना) ॥ 4 ॥

234. यदि स्थ क्षेत्रियाणाम् यदि वा पुरुष-इषिताः।
यदि स्थ दस्युभ्यः जाताः नश्यत इतः सदान्वाः ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ - **यदि** = यदि **स्थ** = स्थित, हो **क्षेत्रियाणाम्** = क्षेत्रियों का **यदि** = यदि **वा** = अथवा **पुरुष-इषिताः** = पुरुष-इच्छा, परिपूर्ण गति, अग्रगामी दृष्टि युक्त, अग्रणी ज्ञानी **यदि** = यदि **स्थ** = स्थित, हो **दस्युभ्यः** = दस्युओं के लिए, रक्षणीयों के लिए, विनाशियों के लिए **जाताः** = उत्पन्न हुए **नश्यत** = नष्ट हो जाओ, लुप्त हो जाओ, अदृश्य हो जाओ **इतः** = यहां से **सदान्वाः** = सदान्वा ॥ 5 ॥

पदार्थ - **यदि** = यदि (अव्यय)। **स्थ** = स्थित, हो (स्था- स्थित होना, ठहरना)। **क्षेत्रियाणाम्** = क्षेत्रियों का (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)। **यदि** = यदि (अव्यय)। **वा** = अथवा (अव्यय)। **पुरुष-इषिताः** = पुरुष-इच्छा, परिपूर्ण गति, अग्रगामी दृष्टि युक्त, अग्रणी ज्ञानी (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, पृ - पूर्ण करना, भरना, पालन करना, रक्षा करना, तृप्त करना, इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना)। **यदि** = यदि (अव्यय)। **स्थ** = स्थित, हो (स्था- स्थित होना, ठहरना)। **दस्युभ्यः** = दस्युओं के लिए, रक्षणीयों के लिए, विनाशियों के लिए (दस् - रक्षण, पालन, स्थापन करना, देखना, नष्ट होना, नष्ट करना, डसना)। **जाताः** = उत्पन्न हुए (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **नश्यत** = नष्ट हो जाओ, लुप्त हो जाओ, अदृश्य हो जाओ (नश् - नष्ट होना, अदृश्य होना)। **इतः** = यहां से (सर्वनाम्)। **सदान्वाः** = सदान्वा (स - सहित, साथ, दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना) ॥ 5 ॥

235. परि धामानि आसाम् आशुः गाष्ठाम्-इव असरन्।
अजैषम् सर्वान् आजीम् वः नश्यत इतः सदान्वाः ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ -**परि** = सभी तरफ **धामानि** = धामों को **आसाम्** = आस को, होने को **आशुः** = तीव्र गति युक्त, व्यापक **गाष्ठाम्-इव** = शब्द, वाणी, वचन के समान **असरन्** = अप्रवाहित होते हुए, गया, ज्ञान, गति, प्राप्ति, प्रवाह हुआ **अजैषम्** = जीत लिया, विजय की **सर्वान्** = सभी को **आजीम्** = सम्यक् गति, ज्ञान, स्थापन को, विजयों को **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **नश्यत** = नष्ट हो जाओ, लुप्त हो जाओ, अदृश्य हो जाओ **इतः** = यहां से **सदान्वाः** = सदान्वा ॥ 6 ॥

पदार्थ - **परि** = सभी तरफ (उपसर्ग)। **धामानि** = धामों को (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)। **आसाम्** = आस को, होने को (अस् - होना, आस् - बैठना, उपस्थित होना, विद्यमान होना, जीवित रहना, होना)। **आशुः** = तीव्र गति युक्त, व्यापक (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, अश् = भोजन करना)। **गाष्ठाम्-इव** = शब्द, वाणी, वचन के समान (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, इव = समान, की भाँति, के समान (अव्यय))। **असरन्** = अप्रवाहित होते हुए, गया, ज्ञान, गति, प्राप्ति, प्रवाह हुआ (अ = नहीं, उपसर्ग, अ- भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना)। **अजैषम्** = जीत लिया, विजय की (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)। **सर्वान्** = सभी को (सर्वनाम)। **आजीम्** = सम्यक् गति, ज्ञान, स्थापन को, विजयों को (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना, अज् - जाना, स्थापन करना, दौड़ाना, फेकना)। **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **नश्यत** = नष्ट हो जाओ, लुप्त हो जाओ, अदृश्य हो जाओ (नश् - नष्ट होना, अदृश्य होना)। **इतः** = यहां से (सर्वनाम्)। **सदान्वाः** = सदान्वा (स - सहित, साथ, दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना) ॥ 6 ॥

50. अभय-प्राप्ति सूक्त - 15

236. यथा द्यौः च पृथिवी च, न बिभीतो न रिष्यतः।

एवा मे प्राण मा बिभेः ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार **द्यौः** = अग्रगामी, प्रकाशवान्, विद्वान्, द्यौ, प्रकाशयुक्त, अग्रगामी **च** = और **पृथिवी** = पृथ्वी, विस्तृत भूमि, विस्तार **च** = और **न** = नहीं, समान, उपमार्थक **बिभीतो** = भयभीत, डरने वाला **न** = नहीं, समान, उपमार्थक **रिष्यतः** = हिंसा करने वाले **एवा** = ही **मे** = मेरा, मेरे लिए **प्राण** = हे प्राण **मा** = नहीं, मत **बिभेः** = भेदन करने वाला ॥ 1 ॥

पदार्थ - **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार (अव्यय)। **द्यौः** = अग्रगामी, प्रकाशवान्, विद्वान्, द्यौ, प्रकाशयुक्त, अग्रगामी (द्युत् = प्रकाशित होना, द्यु = अभिगमन करना, आक्रमण करना, आगे जाना, समीप जाना, प्रकाश होना, जानना)। **च** = और (अव्यय)। **पृथिवी** = पृथ्वी, विस्तृत भूमि, विस्तार (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)। **च** = और (अव्यय)। **न** = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **बिभीतो** = भयभीत, डरने वाला (भी = भय होना, डरना)। **न** = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **रिष्यतः** = हिंसा करने वाले (रिश्-रिष - हिंसा करना, मार डालना या दुःख देना, मारने का यत्न करना)। **एवा** = ही (अव्यय)। **मे** = मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **प्राण** = हे प्राण (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अन- जीवन होना, चेतन होना, प्रा- पूर्ण करना, तृप्त करना)। **मा** = नहीं, मत (अव्यय)। **बिभेः** = भेदन करने वाला (भिद् - भेदना, भेदन करना, भाग करना, हिस्सा करना, चीरना, तोड़ना) ॥ 1 ॥

237. यथा अहः च रात्री च, न बिभीतो न रिष्यतः।
एवा मे प्राण मा बिभेः ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार **अहः** = व्यापक **च** = और **रात्री** = रात्री, दानी, अनुदान **च** = और **न** = नहीं, समान, उपमार्थक **बिभीतो** = भयभीत, डरने वाला **न** = नहीं, समान, उपमार्थक **रिष्यतः** = हिंसा करने वाले **एवा** = ही **मे** = मेरा, मेरे लिए **प्राण** = हे प्राण **मा** = नहीं, मत **बिभेः** = भेदन करने वाला ॥ 2 ॥

पदार्थ - **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार (अव्यय)। **अहः** = व्यापक (अह् = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना)। **च** = और (अव्यय)। **रात्री** = रात्री, दानी, अनुदान (रा - देना, मिल जाना)। **च** = और (अव्यय)। **न** = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **बिभीतो** = भयभीत, डरने वाला (भी = भय होना, डरना)। **न** = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **रिष्यतः** = हिंसा करने वाले (रिश्-रिष - हिंसा करना, मार डालना या दुःख देना, मारने का यत्न करना)। **एवा** = ही (अव्यय)। **मे** = मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **प्राण** = हे प्राण (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अन- जीवन होना, चेतन होना, प्रा- पूर्ण करना, तृप्त करना)। **मा** = नहीं, मत (अव्यय)। **बिभेः** = भेदन करने वाला (भिद् - भेदना, भेदन करना, भाग करना, हिस्सा करना, चीरना, तोड़ना) ॥ 2 ॥

238. यथा सूर्यः च चन्द्रः च, न बिभीतो न रिष्यतः।
एवा मे प्राण मा बिभेः ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार **सूर्यः** = सूर्य, उत्पन्न करने वाला, उत्पन्नकर्ता, ऐश्वर्यवान् **च** = और **चन्द्रः** = आनन्दप्रद, प्रकाशमान **च** = और **न** = नहीं, समान, उपमार्थक **बिभीतो** = भयभीत, डरने वाला **न** = नहीं, समान, उपमार्थक **रिष्यतः** = हिंसा करने वाले **एवा** = ही **मे** = मेरा, मेरे लिए **प्राण** = हे प्राण **मा** = नहीं, मत **बिभेः** = भेदन करने वाला ॥ 3 ॥

पदार्थ - **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार (अव्यय)। **सूर्यः** = सूर्य, उत्पन्न करने वाला, उत्पन्नकर्ता, ऐश्वर्यवान् (सुर - ऐश्वर्य होना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना, सू - उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, ऐश्वर्य होना)। **च** = और (अव्यय)। **चन्द्रः** = आनन्दप्रद, प्रकाशमान (चन्द्र - आनन्द होना, चमकना)। **च** = और (अव्यय)। **न** = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **बिभीतो** = भयभीत, डरने वाला (भी = भय होना, डरना)। **न** = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **रिष्यतः** = हिंसा करने वाले (रिश्-रिष - हिंसा करना, मार डालना या दुःख देना, मारने का यत्न करना)। **एवा** = ही (अव्यय)। **मे** = मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **प्राण** = हे प्राण (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अन- जीवन होना, चेतन होना, प्रा-

पूर्ण करना, तृप्त करना)। **मा** = नहीं, मत (अव्यय)। **बिभेः** = भेदन करने वाला (भिद् - भेदना, भेदन करना, भाग करना, हिस्सा करना, चीरना, तोड़ना) ॥ **3** ॥

239. यथा ब्रह्म च क्षत्रम् च, न बिभीतो न रिष्यतः।
एवा मे प्राण मा बिभेः ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार **ब्रह्म** = ब्रह्म, महान्, बड़ा, बृहत् **च** = और **क्षत्रम्** = क्षत्र को, रक्षा को **च** = और **न** = नहीं, समान, उपमार्थक **बिभीतो** = भयभीत, डरने वाला **न** = नहीं, समान, उपमार्थक **रिष्यतः** = हिंसा करने वाले **एवा** = ही **मे** = मेरा, मेरे लिए **प्राण** = हे प्राण **मा** = नहीं, मत **बिभेः** = भेदन करने वाला ॥ **4** ॥

पदार्थ - **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार (अव्यय)। **ब्रह्म** = ब्रह्म, महान्, बड़ा, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **च** = और (अव्यय)। **क्षत्रम्** = क्षत्र को, रक्षा को (क्षत्, क्षद् = खाना, कूटना, ढकना, मार डालना, रक्षा करना)। **च** = और (अव्यय)। **न** = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **बिभीतो** = भयभीत, डरने वाला (भी = भय होना, डरना)। **न** = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **रिष्यतः** = हिंसा करने वाले (रिश्-रिष - हिंसा करना, मार डालना या दुःख देना, मारने का यत्न करना)। **एवा** = ही (अव्यय)। **मे** = मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **प्राण** = हे प्राण (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अन- जीवन होना, चेतन होना, प्रा- पूर्ण करना, तृप्त करना)। **मा** = नहीं, मत (अव्यय)। **बिभेः** = भेदन करने वाला (भिद् - भेदना, भेदन करना, भाग करना, हिस्सा करना, चीरना, तोड़ना) ॥ **4** ॥

240. यथा सत्यम् च अनृतम् च, न बिभीतो न रिष्यतः।
एवा मे प्राण मा बिभेः ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ - **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार **सत्यम्** = सत्य को **च** = और **अनृतम्** = अनृत को, ऋतहीन को **च** = और **न** = नहीं, समान, उपमार्थक **बिभीतो** = भयभीत, डरने वाला **न** = नहीं, समान, उपमार्थक **रिष्यतः** = हिंसा करने वाले **एवा** = ही **मे** = मेरा, मेरे लिए **प्राण** = हे प्राण **मा** = नहीं, मत **बिभेः** = भेदन करने वाला ॥ **5** ॥

पदार्थ - **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार (अव्यय)। **सत्यम्** = सत्य को (सत् = होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना)। **च** = और (अव्यय)। **अनृतम्** = अनृत को, ऋतहीन को (अन् - नहीं, ऋत - चलना, जाना, फैलाना, संचलन करना, सदाचरण करना)। **च** = और (अव्यय)। **न** = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **बिभीतो** = भयभीत, डरने वाला (भी = भय होना, डरना)। **न** = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **रिष्यतः** = हिंसा करने वाले (रिश्-रिष - हिंसा करना, मार डालना या दुःख देना, मारने का यत्न करना)। **एवा** = ही (अव्यय)। **मे** = मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **प्राण** = हे प्राण (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अन- जीवन होना, चेतन होना, प्रा- पूर्ण करना, तृप्त करना)। **मा** = नहीं, मत (अव्यय)। **बिभेः** = भेदन करने वाला (भिद् - भेदना, भेदन करना, भाग करना, हिस्सा करना, चीरना, तोड़ना) ॥ **5** ॥

241. यथा भूतम् च भव्यम् च, न बिभीतो न रिष्यतः।
एवा मे प्राण मा बिभेः ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ - **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार **भूतम्** = भूत को, हो गये को **च** = और **भव्यम्** = भव्य को, होने वाले को **च** = और **न** = नहीं, समान, उपमार्थक **बिभीतो** = भयभीत, डरने वाला **न** = नहीं, समान, उपमार्थक **रिष्यतः** = हिंसा करने वाले **एवा** = ही **मे** = मेरा, मेरे लिए **प्राण** = हे प्राण **मा** = नहीं, मत **बिभेः** = भेदन करने वाला ॥ **6** ॥

पदार्थ - **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार (अव्यय)। **भूतम्** = भूत को, हो गये को (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **च** = और (अव्यय)। **भव्यम्** = भव्य को, होने वाले को (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **च** = और (अव्यय)। **न** = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **बिभीतो** = भयभीत, डरने वाला (भी = भय होना, डरना)। **न** = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **रिष्यतः** = हिंसा करने वाले (रिश्-रिष - हिंसा करना, मार डालना या दुःख देना, मारने का यत्न करना)। **एवा** = ही (अव्यय)। **मे** = मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **प्राण**

= हे प्राण (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अन- जीवन होना, चेतन होना, प्रा- पूर्ण करना, तृप्त करना)। **मा =** नहीं, मत (अव्यय)। **बिभेः =** भेदन करने वाला (भिद् - भेदना, भेदन करना, भाग करना, हिस्सा करना, चीरना, तोड़ना) **॥ 6 ॥**

51. अभय-प्राप्ति सूक्त - 16

242. प्राणापानौ मृत्योः, मा पातम् स्वाहा ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - **प्राणापानौ =** प्राण- अपान में **मृत्योः =** मृत्यु का **मा =** नहीं, मत **पातम् =** रक्षा करो, पालन करो **स्वाहा =** अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार **॥ 1 ॥**

पदार्थ - **प्राणापानौ =** प्राण- अपान में (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अन- जीवन होना, चेतन होना, प्रा- पूर्ण करना, तृप्त करना, अप - निम्न)। **मृत्योः =** मृत्यु का (मृ = मरना, देहत्याग करना)। **मा =** नहीं, मत (अव्यय)। **पातम् =** रक्षा करो, पालन करो (पा = रक्षा करना, पालन करना)। **स्वाहा =** अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार (सु = उत्तम, अच्छा, स्व - अपना, अह् = व्याप्त होना, फैलना, विस्तृत होना) **॥ 1 ॥**

243. द्यावापृथिवी उपश्रुत्या, मा पातम् स्वाहा ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - **द्यावापृथिवी =** हे अग्रगामी विस्तार, प्रकाश, द्यावा और पृथिवी **उपश्रुत्या =** हे उपश्रुत्य **मा =** नहीं, मत **पातम् =** रक्षा करो, पालन करो **स्वाहा =** अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार **॥ 2 ॥**

पदार्थ - **द्यावापृथिवी =** हे अग्रगामी विस्तार, प्रकाश, द्यावा और पृथिवी (द्यु - आगे जाना, समीप जाना, द्युत् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, द्यै = तिरस्कार करना, पृथु = विस्तार होना, फेंकना, उड़ाना, भेजना, प्रेरणा करना)। **उपश्रुत्या =** हे उपश्रुत्य (उप - समीप, श्रृ = सुनना, श्रवण करना, जाना)। **मा =** नहीं, मत (अव्यय)। **पातम् =** रक्षा करो, पालन करो (पा = रक्षा करना, पालन करना)। **स्वाहा =** अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार (सु = उत्तम, अच्छा, स्व - अपना, अह् = व्याप्त होना, फैलना, विस्तृत होना) **॥ 2 ॥**

244. सूर्य चक्षुषा, मा पाहि स्वाहा ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - **सूर्य =** हे सूर्य, उत्पन्न करने वाला, उत्पन्नकर्ता, ऐश्वर्यवान् **चक्षुषा =** हे नेत्रों, दृष्टि, स्पष्ट वाणी **मा =** नहीं, मत **पाहि =** पालन करो, रक्षा करो **स्वाहा =** अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार **॥ 3 ॥**

पदार्थ - **सूर्य =** हे सूर्य, उत्पन्न करने वाला, उत्पन्नकर्ता, ऐश्वर्यवान् (सुर - ऐश्वर्य होना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना, सू - उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, ऐश्वर्य होना)। **चक्षुषा =** हे नेत्रों, दृष्टि, स्पष्ट वाणी (चक्ष् - स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)। **मा =** नहीं, मत (अव्यय)। **पाहि =** पालन करो, रक्षा करो (पा - पालन, रक्षण करना)। **स्वाहा =** अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार (सु = उत्तम, अच्छा, स्व - अपना, अह् = व्याप्त होना, फैलना, विस्तृत होना) **॥ 3 ॥**

245. अग्ने वैश्वानर विश्वैः मा देवैः, पाहि स्वाहा ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - **अग्ने =** हे अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् **वैश्वानर =** हे विश्वनायक **विश्वैः =** विश्व द्वारा, सभी द्वारा, सभी के साथ **मा =** नहीं, मत **देवैः =** देवों द्वारा, देवों के साथ **पाहि =** पालन करो, रक्षा करो **स्वाहा =** अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार **॥ 4 ॥**

पदार्थ - **अग्ने =** हे अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **वैश्वानर =** हे विश्वनायक (विश्व - सब, नृ - चलना, ले जाना, विनय होना)। **विश्वैः =** विश्व द्वारा, सभी द्वारा, सभी के साथ (सर्वनाम)। **मा =** नहीं, मत (अव्यय)। **देवैः =** देवों द्वारा, देवों के साथ (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **पाहि =** पालन करो, रक्षा करो (पा - पालन, रक्षण करना)। **स्वाहा =** अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार (सु = उत्तम, अच्छा, स्व - अपना, अह् = व्याप्त होना, फैलना, विस्तृत होना) **॥ 4 ॥**

246. विश्वम्-भर विश्वेन, मा भरसा पाहि स्वाहा ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ - **विश्वम्-भर =** हे सबका भरण करने वाले, विश्व का भरण करने वाले **विश्वेन =** सभी से, सभी द्वारा **मा =** नहीं, मत **भरसा =** भरण द्वारा, पोषण के साथ **पाहि =** पालन करो, रक्षा करो **स्वाहा =** अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार ॥ **5** ॥

पदार्थ - **विश्वम्-भर =** हे सबका भरण करने वाले, विश्व का भरण करने वाले (विश्व - सब कुछ, भृ = पूर्ण करना, भरना, धारण-पोषण करना)। **विश्वेन =** सभी से, सभी द्वारा (सर्वनाम)। **मा =** नहीं, मत (अव्यय)। **भरसा =** भरण द्वारा, पोषण के साथ (भृ = पूर्ण करना, भरना, धारण-पोषण करना)। **पाहि =** पालन करो, रक्षा करो (पा - पालन, रक्षण करना)। **स्वाहा =** अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार (सु = उत्तम, अच्छा, स्व - अपना, अह् = व्याप्त होना, फैलना, विस्तृत होना) ॥ **5** ॥

52. सूक्त (17)

247. ओजो असि ओजो मे दाः स्वाहा ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - **ओजो =** ओज **असि =** हो **ओजो =** ओज **मे =** मेरा, मेरे लिए **दाः =** दानी, दो **स्वाहा =** अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार ॥ **1** ॥

पदार्थ - **ओजो =** ओज (ओज - शक्तिमान् होना, जीना, बढ़ना)। **असि =** हो (अस् - होना)। **ओजो =** ओज (ओज - शक्तिमान् होना, जीना, बढ़ना)। **मे =** मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **दाः =** दानी, दो (दा, दद् = देना)। **स्वाहा =** अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार (सु = उत्तम, अच्छा, स्व - अपना, अह् = व्याप्त होना, फैलना, विस्तृत होना) ॥ **1** ॥

248. सहो असि सहो मे दाः स्वाहा ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - **सहो =** सक्षम, समर्थ, तृप्त, सन्तुष्ट **असि =** हो **सहो =** सक्षम, समर्थ, तृप्त, सन्तुष्ट **मे =** मेरा, मेरे लिए **दाः =** दानी, दो **स्वाहा =** अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार ॥ **2** ॥

पदार्थ - **सहो =** सक्षम, समर्थ, तृप्त, सन्तुष्ट (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)। **असि =** हो (अस् - होना)। **सहो =** सक्षम, समर्थ, तृप्त, सन्तुष्ट (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)। **मे =** मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **दाः =** दानी, दो (दा, दद् = देना)। **स्वाहा =** अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार (सु = उत्तम, अच्छा, स्व - अपना, अह् = व्याप्त होना, फैलना, विस्तृत होना) ॥ **2** ॥

249. बलम् असि बलम् मे दाः स्वाहा ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - **बलम् =** बल को **असि =** हो **बलम् =** बल को **मे =** मेरा, मेरे लिए **दाः =** दानी, दो **स्वाहा =** अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार ॥ **3** ॥

पदार्थ - **बलम् =** बल को (बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना)। **असि =** हो (अस् - होना)। **बलम् =** बल को (बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना)। **मे =** मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **दाः =** दानी, दो (दा, दद् = देना)। **स्वाहा =** अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार (सु = उत्तम, अच्छा, स्व - अपना, अह् = व्याप्त होना, फैलना, विस्तृत होना) ॥ **3** ॥

250. आयुः असि आयुः मे दाः स्वाहा ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - **आयुः =** आयु **असि =** हो **आयुः =** आयु **मे =** मेरा, मेरे लिए **दाः =** दानी, दो **स्वाहा =** अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार ॥ **4** ॥

पदार्थ - **आयुः =** आयु (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अय = जाना, जानना, पाना, ग़ति करना, आय - शब्द करना, शासन करना, यु = मिलना, अलग करना)। **असि =** हो (अस् - होना)। **आयुः =** आयु (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अय = जाना, जानना, पाना, ग़ति करना, आय - शब्द करना, शासन करना, यु = मिलना, अलग करना)। **मे =**

मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **दाः** = दानी, दो (दा, दद् = देना)। **स्वाहा** = अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार (सु = उत्तम, अच्छा, स्व - अपना, अह् = व्याप्त होना, फैलना, विस्तृत होना) ॥ **4** ॥

251. श्रोत्रम् असि श्रोतम् मे दाः स्वाहा ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ - **श्रोत्रम्** = श्रोत्र, कर्ण, कान **असि** = हो **श्रोत्रम्** = श्रोत्र, कर्ण, कान **मे** = मेरा, मेरे लिए **दाः** = दानी, दो **स्वाहा** = अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार ॥ **5** ॥

पदार्थ - **श्रोत्रम्** = श्रोत्र, कर्ण, कान (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)। **असि** = हो (अस् - होना)। **श्रोत्रम्** = श्रोत्र, कर्ण, कान (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)। **मे** = मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **दाः** = दानी, दो (दा, दद् = देना)। **स्वाहा** = अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार (सु = उत्तम, अच्छा, स्व - अपना, अह् = व्याप्त होना, फैलना, विस्तृत होना) ॥

252. चक्षुः असि चक्षुः मे दाः स्वाहा ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ - **चक्षुः** = दृष्टि, वाणी **असि** = हो **चक्षुः** = दृष्टि, वाणी **मे** = मेरा, मेरे लिए **दाः** = दानी, दो **स्वाहा** = अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार ॥ **6** ॥

पदार्थ - **चक्षुः** = दृष्टि, वाणी (चक्ष् - स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)। **असि** = हो (अस् - होना)। **चक्षुः** = दृष्टि, वाणी (चक्ष् - स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)। **मे** = मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **दाः** = दानी, दो (दा, दद् = देना)। **स्वाहा** = अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार (सु = उत्तम, अच्छा, स्व - अपना, अह् = व्याप्त होना, फैलना, विस्तृत होना) ॥ **6** ॥

253. परिपाणम् असि परिपाणम् मे दाः स्वाहा ॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ - **परिपाणम्** = परिपाण को, परिरक्षण करने वाले को, परिपालक को **असि** = हो **परिपाणम्** = परिपाण को, परिरक्षण करने वाले को, परिपालक को **मे** = मेरा, मेरे लिए **दाः** = दानी, दो **स्वाहा** = अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार ॥ **7** ॥

पदार्थ - **परिपाणम्** = परिपाण को, परिरक्षण करने वाले को, परिपालक को (परि = सभी तरफ, उपसर्ग, पा - रक्षा करना, पा-पिब - पीना, प्राशन करना, सूखना, संरक्षण करना)। **असि** = हो (अस् - होना)। **परिपाणम्** = परिपाण को, परिरक्षण करने वाले को, परिपालक को (परि = सभी तरफ, उपसर्ग, पा - रक्षा करना, पा-पिब - पीना, प्राशन करना, सूखना, संरक्षण करना)। **मे** = मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **दाः** = दानी, दो (दा, दद् = देना)। **स्वाहा** = अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार (सु = उत्तम, अच्छा, स्व - अपना, अह् = व्याप्त होना, फैलना, विस्तृत होना) ॥ **7** ॥

10 अनुवाक - 4

53. सूक्त (18)

254. भ्रातृव्य-क्षयणम् असि, भ्रातृव्य-चातनम् मे दाः स्वाहा ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ :- **भ्रातृव्य-क्षयणम्** = भ्रातृव्य-क्षयण को, भरण-निवास को **असि** = हो **भ्रातृव्य-चातनम्** = भ्रातृव्य-चातन को, भरण-याचन को **मे** = मेरा, मेरे लिए **दाः** = दानी, दो **स्वाहा** = अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार ॥ **1** ॥

पदार्थ :- **भ्रातृव्य-क्षयणम्** = भ्रातृव्य-क्षयण को, भरण-निवास को (भृ - भरण करना, क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना, निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)। **असि** = हो (अस् - होना)। **भ्रातृव्य-चातनम्** = भ्रातृव्य-चातन को, भरण-याचन को (भृ - भरण करना, चात्-चातय - नाश होना, नाश करना, चत - मांगना, याचना करना, जाना)। **मे** = मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **दाः** = दानी, दो (दा, दद् = देना)। **स्वाहा** = अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार (सु = उत्तम, अच्छा, स्व - अपना, अह् = व्याप्त होना, फैलना, विस्तृत होना) ॥ **1** ॥

255. सपत्न-क्षयणम् असि, सपत्न-चातनम् मे दाः स्वाहा ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ :- **सपत्न-क्षयणम्** = सपत्न-क्षयण को, ऐश्वर्य-निवास को **असि** = हो **सपत्न-चातनम्** = सपत्न-चातन को, ऐश्वर्य-याचन को **मे** = मेरा, मेरे लिए **दाः** = दानी, दो **स्वाहा** = अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार ॥ **2** ॥

पदार्थ :- **सपत्न-क्षयणम्** = सपत्न-क्षयण को, ऐश्वर्य-निवास को (पत् = गिरना, शक्तिमान होना, ऐश्वर्य होना,

क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना, निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)। **असि =** हो (अस् - होना)। **सपत्न-चातनम् =** सपत्न-चातन को, ऐश्वर्य-याचन को (पत् = गिरना, शक्तिमान होना, ऐश्वर्य होना, चात्-चातय - नाश होना, नाश करना, चत - मांगना, याचना करना, जाना)। **मे =** मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **दाः =** दानी, दो (दा, दद् = देना)। **स्वाहा =** अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार (सु = उत्तम, अच्छा, स्व - अपना, अह् = व्याप्त होना, फैलना, विस्तृत होना) **॥ 2 ॥**

256. अराय-क्षयणम् असि, अराय-चातनम् मे दाः स्वाहा ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ :- अराय-क्षयणम् = अराय-क्षयण को, अराय-निवास को **असि =** हो **अराय-चातनम् =** अराय-चातन को, अराय-याचन को **मे =** मेरा, मेरे लिए **दाः =** दानी, दो **स्वाहा =** अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार **॥ 3 ॥**

पदार्थ :- अराय-क्षयणम् = अराय-क्षयण को, अराय-निवास को (अ - नहीं, अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, रा-देना, लेना, ग्रहण करना, रय् - जाना, जानना, पाना, रै - शब्द करना, क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना, निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)। **असि =** हो (अस् - होना)। **अराय-चातनम् =** अराय-चातन को, अराय-याचन को (अ - नहीं, अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, रा-देना, लेना, ग्रहण करना, रय् - जाना, जानना, पाना, रै - शब्द करना, चात्-चातय - नाश होना, नाश करना, चत - मांगना, याचना करना, जाना)। **मे =** मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **दाः =** दानी, दो (दा, दद् = देना)। **स्वाहा =** अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार (सु = उत्तम, अच्छा, स्व - अपना, अह् = व्याप्त होना, फैलना, विस्तृत होना) **॥ 3 ॥**

257. पिशाच-क्षयणम् असि, पिशाच-चातनम् मे दाः स्वाहा ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ :- पिशाच-क्षयणम् = पिशाच-क्षयण को, प्रकाश-निवास को **असि =** हो **पिशाच-चातनम् =** पिशाच-चातन को, प्रकाश-याचन को **मे =** मेरा, मेरे लिए **दाः =** दानी, दो **स्वाहा =** अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार **॥ 4 ॥**

पदार्थ :- पिशाच-क्षयणम् = पिशाच-क्षयण को, प्रकाश-निवास को (पिश् - जाना, प्रकाश होना, चीरना, टुकड़े करना, क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना, निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)। **असि =** हो (अस् - होना)। **पिशाच-चातनम् =** पिशाच-चातन को, प्रकाश-याचन को (पिश् - जाना, प्रकाश होना, चीरना, टुकड़े करना, चात्-चातय - नाश होना, नाश करना, चत - मांगना, याचना करना, जाना)। **मे =** मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **दाः =** दानी, दो (दा, दद् = देना)। **स्वाहा =** अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार (सु = उत्तम, अच्छा, स्व - अपना, अह् = व्याप्त होना, फैलना, विस्तृत होना) **॥ 4 ॥**

258. सदान्वा-क्षयणम् असि, सदान्वा-चातनम् मे दाः स्वाहा ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ :- सदान्वा-क्षयणम् = सदान-क्षयण को, सदान-निवास को **असि =** हो **सदान्वा-चातनम् =** सदान-चातन को, सदान-याचन को **मे =** मेरा, मेरे लिए **दाः =** दानी, दो **स्वाहा =** अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार **॥ 5 ॥**

पदार्थ :- सदान्वा-क्षयणम् = सदान्व-क्षयण को, सदान्व-निवास को (स - सहित, साथ, दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना, क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना, निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)। **असि =** हो (अस् - होना)। **सदान्वा-चातनम् =** सदान्व-चातन को, सदान्व-याचन को (स - सहित, साथ, दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना, चात्-चातय - नाश होना, नाश करना, चत - मांगना, याचना करना, जाना)। **मे =** मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **दाः =** दानी, दो (दा, दद् = देना)। **स्वाहा =** अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार (सु = उत्तम, अच्छा, स्व - अपना, अह् = व्याप्त होना, फैलना, विस्तृत होना) **॥ 5 ॥**

54. सूक्त (19)

259. अग्ने यत् ते तपः, तेन तम् प्रति तप।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - अग्ने = हे अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् **यत् =** जिसे, जो **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **तपः =** तप **तेन =** उससे, उसके द्वारा **तम् =** उसको, उसे **प्रति =** प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में **तप =** तप **यो =**

जो **अस्मान्** = हमें, हमको **द्वेष्टि** = द्वेष करता है **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं ॥ 1 ॥

पदार्थ - **अग्ने** = हे अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **तपः** = तप (तप - ऐश्वर्य होना, तपना, दाह होना, तप करना, तप्त होना, तप्त करना, जलना, जलाना, तृषा होना)। **तेन** = उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग)। **तप** = तप (तप - ऐश्वर्य होना, तपना, दाह होना, तप करना, तप्त होना, तप्त करना, जलना, जलाना, तृषा होना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **अस्मान्** = हमें, हमको (सर्वनाम)। **द्वेष्टि** = द्वेष करता है (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)। **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ (सर्वनाम)। **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना, मत्सर करना) ॥ 1 ॥

260. अग्ने यत् ते हरः, तेन तम् प्रति हर।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - **अग्ने** = हे अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् **यत्** = जिसे, जो **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **हरः** = हर **तेन** = उससे, उसके द्वारा **तम्** = उसको, उसे **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में **हर** = हर, हरने वाला, ले जाने वाला, पहुँचाने वाला **यो** = जो **अस्मान्** = हमें, हमको **द्वेष्टि** = द्वेष करता है **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं ॥ 2 ॥

पदार्थ - **अग्ने** = हे अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **हरः** = हर (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)। **तेन** = उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग)। **हर** = हर, हरने वाला, ले जाने वाला, पहुँचाने वाला (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **अस्मान्** = हमें, हमको (सर्वनाम)। **द्वेष्टि** = द्वेष करता है (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)। **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ (सर्वनाम)। **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना, मत्सर करना) ॥ 2 ॥

261. अग्ने यत् ते अर्चिः, तेन तम् प्रति अर्च।
यो अस्मान द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - **अग्ने** = हे अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् **यत्** = जिसे, जो **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **अर्चिः** = अर्चना, पूजा, सेवा, मान **तेन** = उससे, उसके द्वारा **तम्** = उसको, उसे **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में **अर्च** = पूजते हैं, पूजा **यो** = जो **अस्मान्** = हमें, हमको **द्वेष्टि** = द्वेष करता है **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं ॥ 3 ॥

पदार्थ - **अग्ने** = हे अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **अर्चिः** = अर्चना, पूजा, सेवा, मान (अर्च - पूजा करना, मान करना, सेवा करना)। **तेन** = उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग)। **अर्च** = पूजते हैं, पूजा (अर्च - पूजा करना, मान करना, सेवा करना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **अस्मान्** = हमें, हमको (सर्वनाम)। **द्वेष्टि** = द्वेष करता है (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)। **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ (सर्वनाम)। **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना, मत्सर करना) ॥ 3 ॥

262. अग्ने यत् ते शोचिः, तेन तम् प्रति शोच।

यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - **अग्ने** = हे अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् **यत्** = जिसे, जो **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **शोचिः** = शुद्ध, पवित्र **तेन** = उससे, उसके द्वारा **तम्** = उसको, उसे **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में **शोच** = शोचता है, शुद्ध करता है **यो** = जो **अस्मान्** = हमें, हमको **द्वेष्टि** = द्वेष करता है **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं ॥ 4 ॥

पदार्थ - **अग्ने** = हे अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **शोचिः** = शुद्ध, पवित्र (शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना, शुद्ध - पवित्र करना, दुःख मानना, शोक करना)। **तेन** = उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग)। **शोच** = शोचता है, शुद्ध करता है (शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना, शुद्ध - पवित्र करना, दुःख मानना, शोक करना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **अस्मान्** = हमें, हमको (सर्वनाम)। **द्वेष्टि** = द्वेष करता है (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)। **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ (सर्वनाम)। **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना, मत्सर करना) ॥ 4 ॥

263. अग्ने यत् ते तेजः, तेन तम् अतेजसम् कृणु।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ - **अग्ने** = हे अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् **यत्** = जिसे, जो **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **तेजः** = तेज, चमक **तेन** = उससे, उसके द्वारा **तम्** = उसको, उसे **अतेजसम्** = तेज-हीन के समान, अतेजस्वी **कृणु** = करो **यो** = जो **अस्मान्** = हमें, हमको (सर्वनाम)। **द्वेष्टि** = द्वेष करता है **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं ॥ 5 ॥

पदार्थ - **अग्ने** = हे अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **तेजः** = तेज, चमक (तिज्, तेज् = चमकना, चमकाना, पैना करना, प्रभाव होना, तीक्ष्ण करना)। **तेन** = उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **अतेजसम्** = तेज-हीन के समान, अतेजस्वी (अ - नहीं, उपसर्ग, तिज्, तेज् = चमकना, चमकाना, पैना करना, प्रभाव होना, तीक्ष्ण करना)। **कृणु** = करो (कृ = करना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **अस्मान्** = हमें, हमको (सर्वनाम)। **द्वेष्टि** = द्वेष करता है (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)। **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ (सर्वनाम)। **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना, मत्सर करना) ॥ 5 ॥

55. शत्रुनाशन सूक्त - 20

264. वायो यत् ते तपः, तेन तम् प्रति तप।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - **वायो** = हे वायु, हे प्रवाहमान **यत्** = जिसे, जो **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **तपः** = तप **तेन** = उससे, उसके द्वारा **तम्** = उसको, उसे **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में **तप** = तप **यो** = जो **अस्मान्** = हमें, हमको **द्वेष्टि** = द्वेष करता है **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं ॥ 1 ॥

पदार्थ - **वायो** = हे वायु, हे प्रवाहमान (वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वा = गति करना, पवन की भाँति बहना, जाना, जानना, पाना, गन्ध होना, प्रवाहित होना, प्रवाहित करना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण करना, घेरना, भेजना, खाना, वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **तपः** = तप (तप - ऐश्वर्य होना, तपना, दाह होना, तप करना, तप्त होना, तप्त करना,

जलना, जलाना, तृषा होना)। **तेन** = उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग)। **तप** = तप (तप - ऐश्वर्य होना, तपना, दाह होना, तप करना, तप्त होना, तप्त करना, जलना, जलाना, तृषा होना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **अस्मान्** = हमें, हमको (सर्वनाम)। **द्वेष्टि** = द्वेष करता है (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)। **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ (सर्वनाम)। **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना, मत्सर करना) **॥ 1 ॥**

265. वायो यत् ते हरः, तेन तम् प्रति हर।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - **वायो** = हे वायु, हे प्रवाहमान **यत्** = जिसे, जो **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **हरः** = हर **तेन** = उससे, उसके द्वारा **तम्** = उसको, उसे **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में **हर** = हर, हरने वाला, ले जाने वाला, पहुँचाने वाला **यो** = जो **अस्मान्** = हमें, हमको **द्वेष्टि** = द्वेष करता है **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं **॥ 2 ॥**

पदार्थ - **वायो** = हे वायु, हे प्रवाहमान (वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वा = गति करना, पवन की भाँति बहना, जाना, जानना, पाना, गन्ध होना, प्रवाहित होना, प्रवाहित करना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण करना, घेरना, भेजना, खाना, वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **हरः** = हर (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)। **तेन** = उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग)। **हर** = हर, हरने वाला, ले जाने वाला, पहुँचाने वाला (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **अस्मान्** = हमें, हमको (सर्वनाम)। **द्वेष्टि** = द्वेष करता है (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)। **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ (सर्वनाम)। **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना, मत्सर करना) **॥ 2 ॥**

266. वायो यत् ते अर्चिः, तेन तम् प्रति अर्च।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - **वायो** = हे वायु, हे प्रवाहमान **यत्** = जिसे, जो **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **अर्चिः** = अर्चना, पूजा, सेवा, मान **तेन** = उससे, उसके द्वारा **तम्** = उसको, उसे **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में **अर्च** = पूजते हैं, पूजा **यो** = जो **अस्मान्** = हमें, हमको **द्वेष्टि** = द्वेष करता है **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं **॥ 3 ॥**

पदार्थ - **वायो** = हे वायु, हे प्रवाहमान (वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वा = गति करना, पवन की भाँति बहना, जाना, जानना, पाना, गन्ध होना, प्रवाहित होना, प्रवाहित करना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण करना, घेरना, भेजना, खाना, वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **अर्चिः** = अर्चना, पूजा, सेवा, मान (अर्च - पूजा करना, मान करना, सेवा करना)। **तेन** = उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग)। **अर्च** = पूजते हैं, पूजा (अर्च - पूजा करना, मान करना, सेवा करना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **अस्मान्** = हमें, हमको (सर्वनाम)। **द्वेष्टि** = द्वेष करता है (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)। **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ (सर्वनाम)। **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना, मत्सर करना) **॥ 3 ॥**

267. वायो यत् ते शोचिः, तेन तम् प्रति शोच।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - **वायो** = हे वायु, हे प्रवाहमान **यत्** = जिसे, जो **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **शोचिः** = शुद्ध, पवित्र **तेन**

= उससे, उसके द्वारा **तम्** = उसको, उसे **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में **शोच** = शोचता है, शुद्ध करता है **यो** = जो **अस्मान्** = हमें, हमको **द्वेष्टि** = द्वेष करता है **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं ॥ **4** ॥

पदार्थ - **वायो** = हे वायु, हे प्रवाहमान (वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वा = गति करना, पवन की भाँति बहना, जाना, जानना, पाना, गन्ध होना, प्रवाहित होना, प्रवाहित करना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण करना, घेरना, भेजना, खाना, वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **शोचिः** = शुद्ध, पवित्र (शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना, शुद्ध - पवित्र करना, दुःख मानना, शोक करना)। **तेन** = उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग)। **शोच** = शोचता है, शुद्ध करता है (शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना, शुद्ध - पवित्र करना, दुःख मानना, शोक करना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **अस्मान्** = हमें, हमको (सर्वनाम)। **द्वेष्टि** = द्वेष करता है (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)। **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ (सर्वनाम)। **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना, मत्सर करना) ॥ **4** ॥

268. वायो यत् ते तेजः, तेन तम् अतेजसम् कृणु।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ - **वायो** = हे वायु, हे प्रवाहमान **यत्** = जिसे, जो **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **तेजः** = तेज, चमक **तेन** = उससे, उसके द्वारा **तम्** = उसको, उसे **अतेजसम्** = तेज-हीन के समान, अतेजस्वी **कृणु** = करो **यो** = जो **अस्मान्** = हमें, हमको **द्वेष्टि** = द्वेष करता है **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं ॥ **5** ॥

पदार्थ - **वायो** = हे वायु, हे प्रवाहमान (वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वा = गति करना, पवन की भाँति बहना, जाना, जानना, पाना, गन्ध होना, प्रवाहित होना, प्रवाहित करना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण करना, घेरना, भेजना, खाना, वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **तेजः** = तेज, चमक (तिज्, तेज् = चमकना, चमकाना, पैना करना, प्रभाव होना, तीक्ष्ण करना)। **तेन** = उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **अतेजसम्** = तेज-हीन के समान, अतेजस्वी (अ - नहीं, उपसर्ग, तिज्, तेज् = चमकना, चमकाना, पैना करना, प्रभाव होना, तीक्ष्ण करना)। **कृणु** = करो (कृ = करना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **अस्मान्** = हमें, हमको (सर्वनाम)। **द्वेष्टि** = द्वेष करता है (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)। **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ (सर्वनाम)। **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना, मत्सर करना) ॥ **5** ॥

56. शत्रुनाशन सूक्त - 21

269. सूर्य यत् ते तपः, तेन तम् प्रति तप।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - **सूर्य** = हे सूर्य, उत्पन्न करने वाला, उत्पन्नकर्ता, ऐश्वर्यवान् **यत्** = जिसे, जो **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **तपः** = तप **तेन** = उससे, उसके द्वारा **तम्** = उसको, उसे **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में **तप** = तप **यो** = जो **अस्मान्** = हमें, हमको **द्वेष्टि** = द्वेष करता है **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं ॥ **1** ॥

पदार्थ - **सूर्य** = हे सूर्य, उत्पन्न करने वाला, उत्पन्नकर्ता, ऐश्वर्यवान् (सुर - ऐश्वर्य होना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना, सू - उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, ऐश्वर्य होना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **तपः** = तप (तप - ऐश्वर्य होना, तपना, दाह होना, तप करना, तप्त होना, तप्त करना, जलना, जलाना, तृषा होना)। **तेन** = उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **प्रति** = प्रतिकार,

सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग)। **तप** = तप (तप - ऐश्वर्य होना, तपना, दाह होना, तप करना, तप्त होना, तप्त करना, जलना, जलाना, तृषा होना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **अस्मान्** = हमें, हमको (सर्वनाम)। **द्वेष्टि** = द्वेष करता है (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)। **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ (सर्वनाम)। **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना, मत्सर करना) **॥ 1 ॥**

270. सूर्य यत् ते हरः, तेन तम् प्रति हर।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - **सूर्य** = हे सूर्य, उत्पन्न करने वाला, उत्पन्नकर्ता, ऐश्वर्यवान् **यत्** = जिसे, जो **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **हरः** = हर **तेन** = उससे, उसके द्वारा **तम्** = उसको, उसे **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में **हर** = हर, हरने वाला, ले जाने वाला, पहुँचाने वाला **यो** = जो **अस्मान्** = हमें, हमको **द्वेष्टि** = द्वेष करता है **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं **॥ 2 ॥**

पदार्थ - **सूर्य** = हे सूर्य, उत्पन्न करने वाला, उत्पन्नकर्ता, ऐश्वर्यवान् (सुर - ऐश्वर्य होना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना, सू - उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, ऐश्वर्य होना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **हरः** = हर (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)। **तेन** = उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग)। **हर** = हर, हरने वाला, ले जाने वाला, पहुँचाने वाला (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **अस्मान्** = हमें, हमको (सर्वनाम)। **द्वेष्टि** = द्वेष करता है (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)। **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ (सर्वनाम)। **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना, मत्सर करना) **॥ 2 ॥**

271. सूर्य यत् ते अर्चिः, तेन तम् प्रति अर्च।
यो अस्मान द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - **सूर्य** = हे सूर्य, उत्पन्न करने वाला, उत्पन्नकर्ता, ऐश्वर्यवान् **यत्** = जिसे, जो **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **अर्चिः** = अर्चना, पूजा, सेवा, मान **तेन** = उससे, उसके द्वारा **तम्** = उसको, उसे **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में **अर्च** = पूजते हैं, पूजा **यो** = जो **अस्मान्** = हमें, हमको **द्वेष्टि** = द्वेष करता है **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं **॥ 3 ॥**

पदार्थ - **सूर्य** = हे सूर्य, उत्पन्न करने वाला, उत्पन्नकर्ता, ऐश्वर्यवान् (सुर - ऐश्वर्य होना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना, सू - उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, ऐश्वर्य होना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **अर्चिः** = अर्चना, पूजा, सेवा, मान (अर्च - पूजा करना, मान करना, सेवा करना)। **तेन** = उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग)। **अर्च** = पूजते हैं, पूजा (अर्च - पूजा करना, मान करना, सेवा करना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **अस्मान्** = हमें, हमको (सर्वनाम)। **द्वेष्टि** = द्वेष करता है (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)। **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ (सर्वनाम)। **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना, मत्सर करना) **॥ 3 ॥**

272. सूर्य यत् ते शोचिः, तेन तम् प्रति शोच।
यो अस्मान द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - **सूर्य** = हे सूर्य, उत्पन्न करने वाला, उत्पन्नकर्ता, ऐश्वर्यवान् **यत्** = जिसे, जो **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **शोचिः** = शुद्ध, पवित्र **तेन** = उससे, उसके द्वारा **तम्** = उसको, उसे **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में **शोच** = शोचता है, शुद्ध करता है **यो** = जो **अस्मान्** = हमें, हमको **द्वेष्टि** = द्वेष करता है **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं **॥ 4 ॥**

पदार्थ - **सूर्य** = हे सूर्य, उत्पन्न करने वाला, उत्पन्नकर्ता, ऐश्वर्यवान् (सुर - ऐश्वर्य होना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना, सू - उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, ऐश्वर्य होना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **शोचिः** = शुद्ध, पवित्र (शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना, शुद्ध - पवित्र करना, दुःख मानना, शोक करना)। **तेन** = उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग)। **शोच** = शोचता है, शुद्ध करता है (शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना, शुद्ध - पवित्र करना, दुःख मानना, शोक करना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **अस्मान्** = हमें, हमको (सर्वनाम)। **द्वेष्टि** = द्वेष करता है (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)। **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ (सर्वनाम)। **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना, मत्सर करना) **॥ 4 ॥**

273. सूर्य यत् ते तेजः, तेन तम् अतेजसम् कृणु।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ - **सूर्य** = हे सूर्य, उत्पन्न करने वाला, उत्पन्नकर्ता, ऐश्वर्यवान् **यत्** = जिसे, जो **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **तेजः** = तेज, चमक **तेन** = उससे, उसके द्वारा **तम्** = उसको, उसे **अतेजसम्** = तेज-हीन के समान, अतेजस्वी **कृणु** = करो **यो** = जो **अस्मान्** = हमें, हमको **द्वेष्टि** = द्वेष करता है **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं **॥ 5 ॥**

पदार्थ - **सूर्य** = हे सूर्य, उत्पन्न करने वाला, उत्पन्नकर्ता, ऐश्वर्यवान् (सुर - ऐश्वर्य होना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना, सू - उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, ऐश्वर्य होना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **तेजः** = तेज, चमक (तिज्, तेज् = चमकना, चमकाना, पैना करना, प्रभाव होना, तीक्ष्ण करना)। **तेन** = उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **अतेजसम्** = तेज-हीन के समान, अतेजस्वी (अ - नहीं, उपसर्ग, तिज्, तेज् = चमकना, चमकाना, पैना करना, प्रभाव होना, तीक्ष्ण करना)। **कृणु** = करो (कृ = करना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **अस्मान्** = हमें, हमको (सर्वनाम)। **द्वेष्टि** = द्वेष करता है (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)। **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ (सर्वनाम)। **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना, मत्सर करना) **॥ 5 ॥**

57. शत्रुनाशन सूक्त - 22

274. चन्द्र यत् ते तपः, तेन तम् प्रति तप।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - **चन्द्र** = हे आनन्दप्रद, प्रकाशमान **यत्** = जिसे, जो **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **तपः** = तप **तेन** = उससे, उसके द्वारा **तम्** = उसको, उसे **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में **तप** = तप **यो** = जो **अस्मान्** = हमें, हमको **द्वेष्टि** = द्वेष करता है **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं **॥ 1 ॥**

पदार्थ - **चन्द्र** = हे आनन्दप्रद, प्रकाशमान (चन्द्र - आनन्द होना, चमकना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **तपः** = तप (तप - ऐश्वर्य होना, तपना, दाह होना, तप करना, तप्त होना, तप्त करना, जलना, जलाना, तृषा होना)। **तेन** = उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग)। **तप** = तप (तप - ऐश्वर्य होना, तपना, दाह होना, तप करना, तप्त होना, तप्त करना, जलना, जलाना, तृषा होना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **अस्मान्** = हमें, हमको (सर्वनाम)। **द्वेष्टि** = द्वेष करता है (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)। **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ (सर्वनाम)। **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना, मत्सर करना) **॥ 1 ॥**

275. चन्द्र यत् ते हरः, तेन तम् प्रति हर।

यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - **चन्द्र** = हे आनन्दप्रद, प्रकाशमान **यत्** = जिसे, जो **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **हरः** = हर **तेन** = उससे, उसके द्वारा **तम्** = उसको, उसे **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में **हर** = हर, हरने वाला, ले जाने वाला, पहुँचाने वाला **यो** = जो **अस्मान्** = हमें, हमको **द्वेष्टि** = द्वेष करता है **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं ॥ 2 ॥

पदार्थ - **चन्द्र** = हे आनन्दप्रद, प्रकाशमान (चन्द्र - आनन्द होना, चमकना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **हरः** = हर (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)। **तेन** = उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग)। **हर** = हर, हरने वाला, ले जाने वाला, पहुँचाने वाला (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **अस्मान्** = हमें, हमको (सर्वनाम)। **द्वेष्टि** = द्वेष करता है (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)। **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ (सर्वनाम)। **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना, मत्सर करना) ॥ 2 ॥

276. चन्द्र यत् ते अर्चिः, तेन तम् प्रति अर्च।
यो अस्मान द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - **चन्द्र** = हे आनन्दप्रद, प्रकाशमान **यत्** = जिसे, जो **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **अर्चिः** = अर्चना, पूजा, सेवा, मान **तेन** = उससे, उसके द्वारा **तम्** = उसको, उसे **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में **अर्च** = पूजते हैं, **यो** = जो **अस्मान्** = हमें, हमको **द्वेष्टि** = द्वेष करता है **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं ॥ 3 ॥

पदार्थ - **चन्द्र** = हे आनन्दप्रद, प्रकाशमान (चन्द्र - आनन्द होना, चमकना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **अर्चिः** = अर्चना, पूजा, सेवा, मान (अर्च - पूजा करना, मान करना, सेवा करना)। **तेन** = उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग)। **अर्च** = पूजते हैं, (अर्च - पूजा करना, मान करना, सेवा करना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **अस्मान्** = हमें, हमको (सर्वनाम)। **द्वेष्टि** = द्वेष करता है (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)। **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ (सर्वनाम)। **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना, मत्सर करना) ॥ 3 ॥

277. चन्द्र यत् ते शोचिः, तेन तम् प्रति शोच।
यो अस्मान द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - **चन्द्र** = हे आनन्दप्रद, प्रकाशमान **यत्** = जिसे, जो **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **शोचिः** = शुद्ध, पवित्र **तेन** = उससे, उसके द्वारा **तम्** = उसको, उसे **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में **शोच** = शोचता है, शुद्ध करता है **यो** = जो **अस्मान्** = हमें, हमको **द्वेष्टि** = द्वेष करता है **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं ॥ 4 ॥

पदार्थ - **चन्द्र** = हे आनन्दप्रद, प्रकाशमान (चन्द्र - आनन्द होना, चमकना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **शोचिः** = शुद्ध, पवित्र (शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना, शुद्ध - पवित्र करना, दुःख मानना, शोक करना)। **तेन** = उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग)। **शोच** = शोचता है, शुद्ध करता है (शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना, शुद्ध - पवित्र करना, दुःख मानना, शोक करना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **अस्मान्** = हमें, हमको (सर्वनाम)। **द्वेष्टि** = द्वेष करता है (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)। **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ (सर्वनाम)। **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना, मत्सर करना) ॥ 4 ॥

278. चन्द्र यत् ते तेजः, तेन तम् अतेजसम् कृणु।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ - **चन्द्र** = हे आनन्दप्रद, प्रकाशमान **यत्** = जिसे, जो **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **तेजः** = तेज, चमक **तेन** = उससे, उसके द्वारा **तम्** = उसको, उसे **अतेजसम्** = तेज-हीन के समान, अतेजस्वी **कृणु** = करो **यो** = जो **अस्मान्** = हमें, हमको **द्वेष्टि** = द्वेष करता है **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं ॥ 5 ॥

पदार्थ - **चन्द्र** = हे आनन्दप्रद, प्रकाशमान (चन्द्र - आनन्द होना, चमकना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **तेजः** = तेज, चमक (तिज्, तेज् = चमकना, चमकाना, पैना करना, प्रभाव होना, तीक्ष्ण करना)। **तेन** = उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **अतेजसम्** = तेज-हीन के समान, अतेजस्वी (अ - नहीं, उपसर्ग, तिज्, तेज् = चमकना, चमकाना, पैना करना, प्रभाव होना, तीक्ष्ण करना)। **कृणु** = करो (कृ = करना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **अस्मान्** = हमें, हमको (सर्वनाम)। **द्वेष्टि** = द्वेष करता है (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)। **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ (सर्वनाम)। **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना, मत्सर करना) ॥ 5 ॥

58. शत्रुनाशन सूक्त - 23

279. आपो यत् वः तपः, तेन तम् प्रति तपत।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - **आपो** = आप, व्याप्त, व्यापक **यत्** = जिसे, जो **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **तपः** = तप **तेन** = उससे, उसके द्वारा **तम्** = उसको, उसे **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में **तपत** = तप करो **यो** = जो **अस्मान्** = हमें, हमको **द्वेष्टि** = द्वेष करता है **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं ॥ 1 ॥

पदार्थ - **आपो** = आप, व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **तपः** = तप (तप - ऐश्वर्य होना, तपना, दाह होना, तप करना, तप्त होना, तप्त करना, जलना, जलाना, तृषा होना)। **तेन** = उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग)। **तपत** = तप करो (तप - ऐश्वर्य होना, तपना, दाह होना, तप करना, तप्त होना, तप्त करना, जलना, जलाना, तृषा होना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **अस्मान्** = हमें, हमको (सर्वनाम)। **द्वेष्टि** = द्वेष करता है (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)। **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ (सर्वनाम)। **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना, मत्सर करना) ॥ 1 ॥

280. आपो यत् वो हरः, तेन तम् प्रति हरत।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - **आपो** = आप, व्याप्त, व्यापक **यत्** = जिसे, जो **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **हरः** = हर **तेन** = उससे, उसके द्वारा **तम्** = उसको, उसे **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में **हरत** = हरो, हर लो **यो** = जो **अस्मान्** = हमें, हमको **द्वेष्टि** = द्वेष करता है **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं ॥ 2 ॥

पदार्थ - **आपो** = आप, व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **हरः** = हर (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)। **तेन** = उससे,

उसके द्वारा (सर्वनाम)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग)। **हरत** = हरो, हर लो (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **अस्मान्** = हमें, हमको (सर्वनाम)। **द्वेष्टि** = द्वेष करता है (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)। **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ (सर्वनाम)। **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना, मत्सर करना) ॥ **2** ॥

281. आपो यत् वो अर्चिः, तेन तम् प्रति अर्चत।
यो अस्मान द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - **आपो** = आप, व्याप्त, व्यापक **यत्** = जिसे, जो **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **अर्चिः** = अर्चना, पूजा, सेवा, मान **तेन** = उससे, उसके द्वारा **तम्** = उसको, उसे **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में **अर्चत** = अर्चना करो, सम्मान करो, सेवा करो **यो** = जो **अस्मान्** = हमें, हमको **द्वेष्टि** = द्वेष करता है **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं ॥ **3** ॥

पदार्थ - **आपो** = आप, व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **अर्चिः** = अर्चना, पूजा, सेवा, मान (अर्च - पूजा करना, मान करना, सेवा करना)। **तेन** = उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग)। **अर्चत** = अर्चना करो, सम्मान करो, सेवा करो (अर्च - पूजा करना, मान करना, सेवा करना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **अस्मान्** = हमें, हमको (सर्वनाम)। **द्वेष्टि** = द्वेष करता है (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)। **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ (सर्वनाम)। **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना, मत्सर करना) ॥ **3** ॥

282. आपो यत् वः शोचिः, तेन तम् प्रति शोचत।
यो अस्मान द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - **आपो** = आप, व्याप्त, व्यापक **यत्** = जिसे, जो **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **शोचिः** = शुद्ध, पवित्र **तेन** = उससे, उसके द्वारा **तम्** = उसको, उसे **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में **शोचत** = पवित्र करो, शुद्ध करो **यो** = जो **अस्मान्** = हमें, हमको **द्वेष्टि** = द्वेष करता है **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं ॥ **4** ॥

पदार्थ - **आपो** = आप, व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **शोचिः** = शुद्ध, पवित्र (शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना, शुद्ध - पवित्र करना, दुःख मानना, शोक करना)। **तेन** = उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग)। **शोचत** = पवित्र करो, शुद्ध करो (शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना, शुद्ध - पवित्र करना, दुःख मानना, शोक करना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **अस्मान्** = हमें, हमको (सर्वनाम)। **द्वेष्टि** = द्वेष करता है (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)। **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ (सर्वनाम)। **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना, मत्सर करना) ॥ **4** ॥

283. आपो यत् वः तेजः, तेन तम् अतेजसम् कृणुत।
यो अस्मान् द्वेष्टि, यम् वयम् द्विष्मः ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ - **आपो** = आप, व्याप्त, व्यापक **यत्** = जिसे, जो **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **तेजः** = तेज, चमक **तेन** = उससे, उसके द्वारा **तम्** = उसको, उसे **अतेजसम्** = तेज-हीन के समान, अतेजस्वी **कृणुत** = करो **यो** = जो **अस्मान्** = हमें, हमको **द्वेष्टि** = द्वेष करता है **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ **वयम्** =

हम, हम सब, हम लोग **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं॥ **5**॥

पदार्थ - **आपो** = आप, व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **तेजः** = तेज, चमक (तिज्, तेज् = चमकना, चमकाना, पैना करना, प्रभाव होना, तीक्ष्ण करना)। **तेन** = उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **अतेजसम्** = तेज-हीन के समान, अतेजस्वी (अ - नहीं, उपसर्ग, तिज्, तेज् = चमकना, चमकाना, पैना करना, प्रभाव होना, तीक्ष्ण करना)। **कृणुत** = करो (कृ = करना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **अस्मान्** = हमें, हमको (सर्वनाम)। **द्वेष्टि** = द्वेष करता है (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)। **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ (सर्वनाम)। **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना, मत्सर करना)॥ **5**॥

59. शत्रुनाशन सूक्त - 24

284. शेरभक शेरभ पुनः, वो यन्तु,
यातवः पुनः, हेतिः किमीदिनः।
यस्य स्थ तम् अत्त, यो वः प्र-अहैत्
तम् अत्त, स्वा मांसानि अत्त॥ 1॥

मन्त्रार्थ - **शेरभक** = हे शेरभक **शेरभ** = हे शेरभ **पुनः** = फिर **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **यन्तु** = नियमन-नियन्त्रण, पोषण करो, उद्धार करो, प्राप्त करो **यातवः** = यातना देने वाले, प्रगति करने वाले, यत्न करने वाले, दुःख देने वाले **पुनः** = फिर **हेतिः** = हेति, गति, ज्ञान, प्राप्ति, वृद्धि, प्रेरणा **किमीदिनः** = यह क्या है, ऐसे भाव वाले, जिज्ञासु **यस्य** = जिसका **स्थ** = स्थित, हो **तम्** = उसको, उसे **अत्त** = खाओ **यो** = जो **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **प्र-अहैत्** = प्र-हित किया, प्रकृष्ट प्रेरित किया **तम्** = उसको, उसे **अत्त** = खाओ **स्वा** = उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि या जगत्, स्वः **मांसानि** = मांसों को **अत्त** = खाओ॥ **1**॥

पदार्थ - **शेरभक** = हे शेरभक (शिर् - शीर्ष होना, मुख्य होना, उच्च होना, होना, सोना, बैठना, शृ -सुनना, जाना, जानना, पाना, शेल = गति करना, कम्पन करना)। **शेरभ** = हे शेरभ (शिर् - शीर्ष होना, मुख्य होना, उच्च होना, होना, सोना, बैठना, शृ -सुनना, जाना, जानना, पाना, शेल = गति करना, कम्पन करना)। **पुनः** = फिर (अव्यय)। **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **यन्तु** = नियमन-नियन्त्रण, पोषण करो, उद्धार करो, प्राप्त करो (यम् = रोकना, स्वाधीन रखना, आवरण करना, पोषण करना, नियमन करना, यन - उद्धार करना, या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, जानना)। **यातवः** = यातना देने वाले, प्रगति करने वाले, यत्न करने वाले, दुःख देने वाले (या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, यत् - यत्न करना, प्रयास करना, उद्योग करना, दुःख देना)। **पुनः** = फिर (अव्यय)। **हेतिः** = हेति, गति, ज्ञान, प्राप्ति, वृद्धि, प्रेरणा (हि - गति, वृद्धि, प्रेरणा करना, जाना, जानना, पाना)। **किमीदिनः** = यह क्या है, ऐसे भाव वाले, जिज्ञासु (किम् - क्या (सर्वनाम), इदम् - यह, इसको (सर्वनाम))। **यस्य** = जिसका (सर्वनाम)। **स्थ** = स्थित, हो (स्था- स्थित होना, ठहरना)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **अत्त** = खाओ (अद् - खाना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **प्र-अहैत्** = प्र-हित किया, प्रकृष्ट प्रेरित किया (प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग), अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, हि - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **अत्त** = खाओ (अद् - खाना)। **स्वा** = उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि या जगत्, स्वः (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **मांसानि** = मांसों को (मस् = रूपान्तरण करना, मापन करना, मापना)। **अत्त** = खाओ (अद् - खाना)॥ **1**॥

285. शेवृधक शेवृध पुनः, वो यन्तु,
यातवः पुनः, हेतिः किमीदिनः।

यस्य स्थ तम् अत्त, यो वः प्र-अहैत्
तम् अत्त, स्वा मांसानि अत्त ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - **शेवृधक** = हे शेवृधक **शेवृध** = हे शेवृध **पुनः** = फिर **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **यन्तु** = नियमन-नियन्त्रण, पोषण करो, उद्धार करो, प्राप्त करो **यातवः** = यातना देने वाले, प्रगति करने वाले, यत्न करने वाले, दुःख देने वाले **पुनः** = फिर **हेतिः** = हेति, गति, ज्ञान, प्राप्ति, वृद्धि, प्रेरणा **किमीदिनः** = यह क्या है, ऐसे भाव वाले, जिज्ञासु **यस्य** = जिसका **स्थ** = स्थित, हो **तम्** = उसको, उसे **अत्त** = खाओ **यो** = जो **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **प्र-अहैत्** = प्र-हित किया, प्रकृष्ट प्रेरित किया **तम्** = उसको, उसे **अत्त** = खाओ **स्वा** = उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि या जगत्, स्वः **मांसानि** = मांसों को **अत्त** = खाओ ॥ **2** ॥

पदार्थ - **शेवृधक** = हे शेवृधक (शेव - सेचन, घर्षण, सेवा करना, सभा में होना, पवित्र होना, जाना)। **शेवृध** = हे शेवृध (शेव - सेचन, घर्षण, सेवा करना, सभा में होना, पवित्र होना, जाना)। **पुनः** = फिर (अव्यय)। **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **यन्तु** = नियमन-नियन्त्रण, पोषण करो, उद्धार करो, प्राप्त करो (यम् = रोकना, स्वाधीन रखना, आवरण करना, पोषण करना, नियमन करना, यन - उद्धार करना, या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, जानना)। **यातवः** = यातना देने वाले, प्रगति करने वाले, यत्न करने वाले, दुःख देने वाले (या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, यत् - यत्न करना, प्रयास करना, उद्योग करना, दुःख देना)। **पुनः** = फिर (अव्यय)। **हेतिः** = हेति, गति, ज्ञान, प्राप्ति, वृद्धि, प्रेरणा (हि - गति, वृद्धि, प्रेरणा करना, जाना, जानना, पाना)। **किमीदिनः** = यह क्या है, ऐसे भाव वाले, जिज्ञासु (किम् - क्या (सर्वनाम), इदम् - यह, इसको (सर्वनाम))। **यस्य** = जिसका (सर्वनाम)। **स्थ** = स्थित, हो (स्था- स्थित होना, ठहरना)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **अत्त** = खाओ (अद् - खाना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **प्र-अहैत्** = प्र-हित किया, प्रकृष्ट प्रेरित किया (प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग), अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, हि - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **अत्त** = खाओ (अद् - खाना)। **स्वा** = उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि या जगत्, स्वः (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **मांसानि** = मांसों को (मस् = रूपान्तरण करना, मापन करना, मापना)। **अत्त** = खाओ (अद् - खाना) ॥ **2** ॥

286. म्रोक अनुम्रोक पुनः, वो यन्तु,
यातवः पुनः, हेतिः किमीदिनः।
यस्य स्थ तम् अत्त, यो वः प्र-अहैत्
तम् अत्त, स्वा मांसानि अत्त ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - **म्रोक** = हे म्रोक **अनुम्रोक** = हे अनुम्रोक **पुनः** = फिर **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **यन्तु** = नियमन-नियन्त्रण, पोषण करो, उद्धार करो, प्राप्त करो **यातवः** = यातना देने वाले, प्रगति करने वाले, यत्न करने वाले, दुःख देने वाले **पुनः** = फिर **हेतिः** = हेति, गति, ज्ञान, प्राप्ति, वृद्धि, प्रेरणा **किमीदिनः** = यह क्या है, ऐसे भाव वाले, जिज्ञासु **यस्य** = जिसका **स्थ** = स्थित, हो **तम्** = उसको, उसे **अत्त** = खाओ **यो** = जो **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **प्र-अहैत्** = प्र-हित किया, प्रकृष्ट प्रेरित किया **तम्** = उसको, उसे **अत्त** = खाओ **स्वा** = उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि या जगत्, स्वः **मांसानि** = मांसों को **अत्त** = खाओ ॥ **3** ॥

पदार्थ - **म्रोक** = हे म्रोक (म्रुच् = जाना, स्थानान्तर करना, म्लुच् = जाना, स्थानान्तर करना)। **अनुम्रोक** = हे अनुम्रोक (अनु = पश्चात्, पीछे, अनुकूल (उपसर्ग), म्रुच् = जाना, स्थानान्तर करना, म्लुच् = जाना, स्थानान्तर करना)। **पुनः** = फिर (अव्यय)। **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **यन्तु** = नियमन-नियन्त्रण, पोषण करो, उद्धार करो, प्राप्त करो (यम् = रोकना, स्वाधीन रखना, आवरण करना, पोषण करना, नियमन करना, यन - उद्धार करना, या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, जानना)। **यातवः** = यातना देने वाले, प्रगति करने वाले, यत्न करने वाले, दुःख देने वाले (या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, यत् - यत्न करना, प्रयास करना, उद्योग करना,

दुःख देना)। **पुनः** = फिर (अव्यय)। **हेतिः** = हेति, गति, ज्ञान, प्राप्ति, वृद्धि, प्रेरणा (हि - गति, वृद्धि, प्रेरणा करना, जाना, जानना, पाना)। **किमीदिनः** = यह क्या है, ऐसे भाव वाले, जिज्ञासु (किम् - क्या (सर्वनाम), इदम् - यह, इसको (सर्वनाम))। **यस्य** = जिसका (सर्वनाम)। **स्थ** = स्थित, हो (स्था- स्थित होना, ठहरना)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **अत्त** = खाओ (अद् - खाना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **प्र-अहैत्** = प्र-हित किया, प्रकृष्ट प्रेरित किया (प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग), अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, हि - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **अत्त** = खाओ (अद् - खाना)। **स्वा** = उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि या जगत्, स्वः (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **मांसानि** = मांसों को (मस् = रूपान्तरण करना, मापन करना, मापना)। **अत्त** = खाओ (अद् - खाना) **॥ 3 ॥**

287. सर्प अनुसर्प पुनः, वो यन्तु,
यातवः पुनः, हेतिः किमीदिनः।
यस्य स्थ तम् अत्त, यो वः प्र-अहैत्
तम् अत्त, स्वा मांसानि अत्त ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - **सर्प** = हे सर्प **अनुसर्प** = हे अनुसर्प **पुनः** = फिर **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **यन्तु** = नियमन-नियन्त्रण, पोषण करो, उद्धार करो, प्राप्त करो **यातवः** = यातना देने वाले, प्रगति करने वाले, यत्न करने वाले, दुःख देने वाले **पुनः** = फिर **हेतिः** = हेति, गति, ज्ञान, प्राप्ति, वृद्धि, प्रेरणा **किमीदिनः** = यह क्या है, ऐसे भाव वाले, जिज्ञासु **यस्य** = जिसका **स्थ** = स्थित, हो **तम्** = उसको, उसे **अत्त** = खाओ **यो** = जो **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **प्र-अहैत्** = प्र-हित किया, प्रकृष्ट प्रेरित किया **तम्** = उसको, उसे **अत्त** = खाओ **स्वा** = उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि या जगत्, स्वः **मांसानि** = मांसों को **अत्त** = खाओ **॥ 4 ॥**

पदार्थ - **सर्प** = हे सर्प (सृप् - जाना, सरकना, जानना, पाना, चलना)। **अनुसर्प** = हे अनुसर्प (अनु = अनुकूल, पश्चात्, सृप् - जाना, सरकना, जानना, पाना, चलना)। **पुनः** = फिर (अव्यय)। **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **यन्तु** = नियमन-नियन्त्रण, पोषण करो, उद्धार करो, प्राप्त करो (यम् = रोकना, स्वाधीन रखना, आवरण करना, पोषण करना, नियमन करना, यन - उद्धार करना, या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, जानना)। **यातवः** = यातना देने वाले, प्रगति करने वाले, यत्न करने वाले, दुःख देने वाले (या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, यत् - यत्न करना, प्रयास करना, उद्योग करना, दुःख देना)। **पुनः** = फिर (अव्यय)। **हेतिः** = हेति, गति, ज्ञान, प्राप्ति, वृद्धि, प्रेरणा (हि - गति, वृद्धि, प्रेरणा करना, जाना, जानना, पाना)। **किमीदिनः** = यह क्या है, ऐसे भाव वाले, जिज्ञासु (किम् - क्या (सर्वनाम), इदम् - यह, इसको (सर्वनाम))। **यस्य** = जिसका (सर्वनाम)। **स्थ** = स्थित, हो (स्था- स्थित होना, ठहरना)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **अत्त** = खाओ (अद् - खाना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **प्र-अहैत्** = प्र-हित किया, प्रकृष्ट प्रेरित किया (प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग), अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, हि - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **अत्त** = खाओ (अद् - खाना)। **स्वा** = उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि या जगत्, स्वः (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **मांसानि** = मांसों को (मस् = रूपान्तरण करना, मापन करना, मापना)। **अत्त** = खाओ (अद् - खाना) **॥ 4 ॥**

288. जूर्णि पुनः, वो यन्तु,
यातवः पुनः, हेतिः किमीदिनः।
यस्य स्थ तम् अत्त, यो वः प्र-अहैत्
तम् अत्त, स्वा मांसानि अत्त ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ - **जूर्णि** = हे वेगवान् **पुनः** = फिर **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम

लोग **यन्तु** = नियमन-नियन्त्रण, पोषण करो, उद्धार करो, प्राप्त करो **यातवः** = यातना देने वाले, प्रगति करने वाले, यत्न करने वाले, दुःख देने वाले **पुनः** = फिर **हेतिः** = हेति, गति, ज्ञान, प्राप्ति, वृद्धि, प्रेरणा **किमीदिनः** = यह क्या है, ऐसे भाव वाले, जिज्ञासु **यस्य** = जिसका **स्थ** = स्थित, हो **तम्** = उसको, उसे **अत्त** = खाओ **यो** = जो **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **प्र-अहैत्** = प्र-हित किया, प्रकृष्ट प्रेरित किया **तम्** = उसको, उसे **अत्त** = खाओ **स्वा** = उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि या जगत्, स्वः **मांसानि** = मांसों को **अत्त** = खाओ **॥ 5 ॥**

पदार्थ - **जूर्णि** = हे वेगवान् (जु - जाना, शीघ्र जाना, भागना)। **पुनः** = फिर (अव्यय)। **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **यन्तु** = नियमन-नियन्त्रण, पोषण करो, उद्धार करो, प्राप्त करो (यम् = रोकना, स्वाधीन रखना, आवरण करना, पोषण करना, नियमन करना, यन - उद्धार करना, या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, जानना)। **यातवः** = यातना देने वाले, प्रगति करने वाले, यत्न करने वाले, दुःख देने वाले (या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, यत् - यत्न करना, प्रयास करना, उद्योग करना, दुःख देना)। **पुनः** = फिर (अव्यय)। **हेतिः** = हेति, गति, ज्ञान, प्राप्ति, वृद्धि, प्रेरणा (हि - गति, वृद्धि, प्रेरणा करना, जाना, जानना, पाना)। **किमीदिनः** = यह क्या है, ऐसे भाव वाले, जिज्ञासु (किम् - क्या (सर्वनाम), इदम् - यह, इसको (सर्वनाम))। **यस्य** = जिसका (सर्वनाम)। **स्थ** = स्थित, हो (स्था- स्थित होना, ठहरना)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **अत्त** = खाओ (अद् - खाना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **प्र-अहैत्** = प्र-हित किया, प्रकृष्ट प्रेरित किया (प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग), अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, हि - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **अत्त** = खाओ (अद् - खाना)। **स्वा** = उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि या जगत्, स्वः (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **मांसानि** = मांसों को (मस् = रूपान्तरण करना, मापन करना, मापना)। **अत्त** = खाओ (अद् - खाना) **॥ 5 ॥**

289. उपब्दे पुनः, वो यन्तु,
यातवः पुनः, हेतिः किमीदिनः।
यस्य स्थ तम् अत्त, यो वः प्र-अहैत्
तम् अत्त, स्वा मांसानि अत्त ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ - **उपब्दे** = हे उप-वद, हे शब्दकर्ता **पुनः** = फिर **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **यन्तु** = नियमन-नियन्त्रण, पोषण करो, उद्धार करो, प्राप्त करो **यातवः** = यातना देने वाले, प्रगति करने वाले, यत्न करने वाले, दुःख देने वाले **पुनः** = फिर **हेतिः** = हेति, गति, ज्ञान, प्राप्ति, वृद्धि, प्रेरणा **किमीदिनः** = यह क्या है, ऐसे भाव वाले, जिज्ञासु **यस्य** = जिसका **स्थ** = स्थित, हो **तम्** = उसको, उसे **अत्त** = खाओ **यो** = जो **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **प्र-अहैत्** = प्र-हित किया, प्रकृष्ट प्रेरित किया **तम्** = उसको, उसे **अत्त** = खाओ **स्वा** = उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि या जगत्, स्वः **मांसानि** = मांसों को **अत्त** = खाओ **॥ 6 ॥**

पदार्थ - **उपब्दे** = हे उप-वद, हे शब्दकर्ता (उप = समीप (उपसर्ग), वद - कहना, समझाना)। **पुनः** = फिर (अव्यय)। **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **यन्तु** = नियमन-नियन्त्रण, पोषण करो, उद्धार करो, प्राप्त करो (यम् = रोकना, स्वाधीन रखना, आवरण करना, पोषण करना, नियमन करना, यन - उद्धार करना, या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, जानना)। **यातवः** = यातना देने वाले, प्रगति करने वाले, यत्न करने वाले, दुःख देने वाले (या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, यत् - यत्न करना, प्रयास करना, उद्योग करना, दुःख देना)। **पुनः** = फिर (अव्यय)। **हेतिः** = हेति, गति, ज्ञान, प्राप्ति, वृद्धि, प्रेरणा (हि - गति, वृद्धि, प्रेरणा करना, जाना, जानना, पाना)। **किमीदिनः** = यह क्या है, ऐसे भाव वाले, जिज्ञासु (किम् - क्या (सर्वनाम), इदम् - यह, इसको (सर्वनाम))। **यस्य** = जिसका (सर्वनाम)। **स्थ** = स्थित, हो (स्था- स्थित होना, ठहरना)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **अत्त** = खाओ (अद् - खाना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **प्र-अहैत्** = प्र-हित किया, प्रकृष्ट प्रेरित किया (प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग), अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग,

हि - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **अत्त** = खाओ (अद् - खाना)। **स्वा** = उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि या जगत्, स्वः (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **मांसानि** = मांसों को (मस् = रूपान्तरण करना, मापन करना, मापना)। **अत्त** = खाओ (अद् - खाना) ॥ 6 ॥

290. अर्जुनि पुनः, वो यन्तु,
यातवः पुनः, हेतिः किमीदिनः।
यस्य स्थ तम् अत्त, यो वः प्र-अहैत्
तम् अत्त, स्वा मांसानि अत्त ॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ - **अर्जुनि** = हे अजुनि **पुनः** = फिर **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **यन्तु** = नियमन-नियन्त्रण, पोषण करो, उद्धार करो, प्राप्त करो **यातवः** = यातना देने वाले, प्रगति करने वाले, यत्न करने वाले, दुःख देने वाले **पुनः** = फिर **हेतिः** = हेति, गति, ज्ञान, प्राप्ति, वृद्धि, प्रेरणा **किमीदिनः** = यह क्या है, ऐसे भाव वाले, जिज्ञासु **यस्य** = जिसका **स्थ** = स्थित, हो **तम्** = उसको, उसे **अत्त** = खाओ **यो** = जो **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **प्र-अहैत्** = प्र-हित किया, प्रकृष्ट प्रेरित किया **तम्** = उसको, उसे **अत्त** = खाओ **स्वा** = उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि या जगत्, स्वः **मांसानि** = मांसों को **अत्त** = खाओ ॥ 7 ॥

पदार्थ - **अर्जुनि** = हे अजुनि (अर्ज - लाभ करना, प्राप्त करना, पाना)। **पुनः** = फिर (अव्यय)। **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **यन्तु** = नियमन-नियन्त्रण, पोषण करो, उद्धार करो, प्राप्त करो (यम् = रोकना, स्वाधीन रखना, आवरण करना, पोषण करना, नियमन करना, यन - उद्धार करना, या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, जानना)। **यातवः** = यातना देने वाले, प्रगति करने वाले, यत्न करने वाले, दुःख देने वाले (या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, यत् - यत्न करना, प्रयास करना, उद्योग करना, दुःख देना)। **पुनः** = फिर (अव्यय)। **हेतिः** = हेति, गति, ज्ञान, प्राप्ति, वृद्धि, प्रेरणा (हि - गति, वृद्धि, प्रेरणा करना, जाना, जानना, पाना)। **किमीदिनः** = यह क्या है, ऐसे भाव वाले, जिज्ञासु (किम् - क्या (सर्वनाम), इदम् - यह, इसको (सर्वनाम))। **यस्य** = जिसका (सर्वनाम)। **स्थ** = स्थित, हो (स्था- स्थित होना, ठहरना)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **अत्त** = खाओ (अद् - खाना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **प्र-अहैत्** = प्र-हित किया, प्रकृष्ट प्रेरित किया (प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग), अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, हि - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **अत्त** = खाओ (अद् - खाना)। **स्वा** = उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि या जगत्, स्वः (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **मांसानि** = मांसों को (मस् = रूपान्तरण करना, मापन करना, मापना)। **अत्त** = खाओ (अद् - खाना) ॥ 7 ॥

291. भरूजि पुनः, वो यन्तु,
यातवः पुनः, हेतिः किमीदिनः।
यस्य स्थ तम् अत्त, यो वः प्र-अहैत्
तम् अत्त, स्वा मांसानि अत्त ॥ 8 ॥

मन्त्रार्थ - **भरूजि** = हे भरूजि **पुनः** = फिर **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **यन्तु** = नियमन-नियन्त्रण, पोषण करो, उद्धार करो, प्राप्त करो **यातवः** = यातना देने वाले, प्रगति करने वाले, यत्न करने वाले, दुःख देने वाले **पुनः** = फिर **हेतिः** = हेति, गति, ज्ञान, प्राप्ति, वृद्धि, प्रेरणा **किमीदिनः** = यह क्या है, ऐसे भाव वाले, जिज्ञासु **यस्य** = जिसका **स्थ** = स्थित, हो **तम्** = उसको, उसे **अत्त** = खाओ **यो** = जो **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **प्र-अहैत्** = प्र-हित किया, प्रकृष्ट प्रेरित किया **तम्** = उसको, उसे **अत्त** = खाओ **स्वा** = उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि या जगत्, स्वः **मांसानि** = मांसों को **अत्त** = खाओ ॥ 8 ॥

पदार्थ - **भरूजि** = हे भरूजि (भृ = धारण करना, पोषण करना)। **पुनः** = फिर (अव्यय)। **वो** = तुम सबको, तुम

सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **यन्तु** = नियमन-नियन्त्रण, पोषण करो, उद्धार करो, प्राप्त करो (यम् = रोकना, स्वाधीन रखना, आवरण करना, पोषण करना, नियमन करना, यन - उद्धार करना, या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, जानना)। **यातवः** = यातना देने वाले, प्रगति करने वाले, यत्न करने वाले, दुःख देने वाले (या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, यत् - यत्न करना, प्रयास करना, उद्योग करना, दुःख देना)। **पुनः** = फिर (अव्यय)। **हेतिः** = हेति, गति, ज्ञान, प्राप्ति, वृद्धि, प्रेरणा (हि - गति, वृद्धि, प्रेरणा करना, जाना, जानना, पाना)। **किमीदिनः** = यह क्या है, ऐसे भाव वाले, जिज्ञासु (किम् - क्या (सर्वनाम), इदम् - यह, इसको (सर्वनाम))। **यस्य** = जिसका (सर्वनाम)। **स्थ** = स्थित, हो (स्था- स्थित होना, ठहरना)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **अत्त** = खाओ (अद् - खाना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **प्र-अहैत्** = प्र-हित किया, प्रकृष्ट प्रेरित किया (प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग), अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, हि - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **अत्त** = खाओ (अद् - खाना)। **स्वा** = उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि या जगत्, स्वः (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **मांसानि** = मांसों को (मस् = रूपान्तरण करना, मापन करना, मापना)। **अत्त** = खाओ (अद् - खाना) ॥ **8** ॥

60. पृश्निपर्णी सूक्त - 25

292. शम् नः देवीः पृश्निपर्णी,
अशम् निः-ऋत्यै अकः।
उग्रा हि कण्व-जम्भनी,
ताम् अभक्षि सहस्वतीम्॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - **शम्** = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा **देवीः** = दिव्यगुणयुक्त **पृश्निपर्णी** = प्रश्नपर्णी, अभिसिञ्चन का भरण करने वाले **अशम्** = अशान्त को **निः-ऋत्यै** = निः-ऋत्य के लिए **अकः** = प्रगतिशील, कुटिल **उग्रा** = उग्र **हि** = ही, निश्चय **कण्व-जम्भनी** = कण्व-जम्भनी, शब्द-विनाशी **ताम्** = उसको **अभक्षि** = भक्षण किया, ग्रहण किया **सहस्वतीम्** = सहनशील को, समर्थ को ॥ **1** ॥

पदार्थ - **शम्** = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी (शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **देवीः** = दिव्यगुणयुक्त (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **पृश्निपर्णी** = प्रश्नपर्णी, अभिसिञ्चन का भरण करने वाले (पृश् - पृच्छ - पूछना, जानने की इच्छा करना, प्रश्न करना, पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सहन करना, पर्ण - हरा करना, हरा होना, पृ - पूर्ण करना, भरण करना)। **अशम्** = अशान्त को (अ - नहीं, शम् - शान्त होना, शमन करना)। **निः-ऋत्यै** = निः-ऋत्य के लिए (निः = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग), ऋ - जाना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना, पहुँचाना, गति करना, जाना, जानना, पाना, शब्द करना, व्याप्त होना, मिलाना, महत्व दिखाना, हिंसा करना)। **अकः** = प्रगतिशील, कुटिल (अक् - जाना, जानना पाना, टेढ़ा जाना, कुटिल गति करना)। **उग्रा** = उग्र (उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना, उग् - उग्र - उग्र होना, तेज होना)। **हि** = ही, निश्चय (अव्यय)। **कण्व-जम्भनी** = कण्व-जम्भनी, शब्द-विनाशी (कण् - शब्द करना, लघु होना, कण बनाना, जम्भ् - नाश करना, गर्व करना, आलस्य होना)। **ताम्** = उसको (सर्वनाम)। **अभक्षि** = भक्षण किया, ग्रहण किया (अ - नहीं, अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, भक्ष - खाना, ग्रहण करना)। **सहस्वतीम्** = सहनशील को, समर्थ को (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना) ॥ **1** ॥

293. सहमाना इयम् प्रथमा,
प्रश्निपर्णी अजायत।

तया अहम् दुः-नाम्नाम्,
शिरः वृश्चामि शकुनेः-इव ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - सहमाना = सहमान **इयम् =** यह, इसको **प्रथमा =** प्रथम **प्रश्निपर्णी =** प्रश्नपर्णी, अभिसिञ्चन का भरण करने वाले **अजायत =** उत्पन्न हुए **तया =** उसके द्वारा **अहम् =** मैं **दुः-नाम्नाम् =** दुः-नाम्ना को, अनुचित नाम वाले को **शिरः =** शिर, सुनने वाला, तीक्ष्ण, कल्याणकारी **वृश्चामि** = काटता हूँ, छेदता हूँ **शकुनेः-इव =** शकुनि के समान, सक्षम, समर्थ के समान **॥ 2 ॥**

पदार्थ - सहमाना = सहमान (सह = साथ, सहित, सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)। **इयम् =** यह, इसको (सर्वनाम)। **प्रथमा =** प्रथम (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)। **प्रश्निपर्णी =** प्रश्नपर्णी, अभिसिञ्चन का भरण करने वाले (पृश् - पृच्छ - पूछना, जानने की इच्छा करना, प्रश्न करना, पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सहन करना, पर्ण - हरा करना, हरा होना, पृ - पूर्ण करना, भरण करना)। **अजायत =** उत्पन्न हुए (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, जन् - उत्पन्न होना)। **तया =** उसके द्वारा (सर्वनाम)। **अहम् =** मैं (सर्वनाम)। **दुः-नाम्नाम् =** दुः-नाम्ना को, अनुचित नाम वाले को (दुः = बुरा, अनुचित, कठिन, नाम - नाम होना, नाम रखना, नम् = नमन करना, सम्मान करना, शब्द करना)। **शिरः =** शिर, सुनने वाला, तीक्ष्ण, कल्याणकारी (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, शि = तेज करना, तीक्ष्ण करना, कल्याण करना)। **वृश्चामि** = काटता हूँ, छेदता हूँ (व्रश्च = कतरना, छेद करना, रेतना, छीलना)। **शकुनेः-इव =** शकुनि के समान, सक्षम, समर्थ के समान (शक् - सक्षम होना, कर सकना, सहना, सहन करना) **॥ 2 ॥**

294. अरायम् असृक्-पावानम्,
यः च स्फातिम् जिहीर्षति।
गर्भ-अदम् कण्वम् नाशय,
पृश्निपर्णि सहस्व च ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - अरायम् = अदान, गतिहीन, शब्दहीन, हिंसक, गतिशील, व्यापक को **असृक्-पावानम् =** असृक को पवित्र करने वाले, विद्वान का पालन किया **यः =** जो **च =** और **स्फातिम्** = स्थूल को **जिहीर्षति =** हरण करता है **गर्भ-अदम् =** गर्भ-अदक को, गर्भ-भक्षक को **कण्वम् =** कण्व, शब्दकर्ता को **नाशय =** नाश करने वाली, विनाशिका **पृश्निपर्णि =** प्रश्नपर्णी, अभिसिञ्चन का भरण करने वाले **सहस्व =** सहनशील, समर्थ बनो **च =** और **॥ 3 ॥**

पदार्थ - अरायम् = अदान, गतिहीन, शब्दहीन, हिंसक, गतिशील, व्यापक को (अ - नहीं, रा-देना, लेना, ग्रहण करना, रय् = जाना, जानना, पाना, रै = शब्द करना, ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना)। **असृक्-पावानम् =** असृक को पवित्र करने वाले, विद्वान का पालन किया (अ - नहीं, उपसर्ग, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, सृ = जाना, सरकना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना, पा = पालन करना, रक्षा करना)। **यः =** जो (सर्वनाम)। **च =** और (अव्यय)। **स्फातिम्** = स्थूल को (स्फाय्-स्फी = मोटा होना, स्थूल होना, बढ़ना)। **जिहीर्षति =** हरण करता है (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)। **गर्भ-अदम् =** गर्भ-अदक को, गर्भ-भक्षक को (गृह् - ग्रहण करना, लेना, गृ = सींचना, गीला करना, घर्षण करना, जानना, समझना, खाना, निगलना, शब्द करना, गल्भ् - जाना, जानना, पाना, ज्ञान होना, चतुर होना, साहस होना, धैर्य रखना, गृभ्-गर्भ् - अन्दर होना, अन्तःवास करना, अद् - खाना)। **कण्वम् =** कण्व, शब्दकर्ता को (कण् - शब्द करना, लघु होना, कण बनाना)। **नाशय =** नाश करने वाली, विनाशिका (नश् - नष्ट होना, अदृश्य होना)। **पृश्निपर्णि =** प्रश्नपर्णी, अभिसिञ्चन का भरण करने वाले (पृश् - पृच्छ - पूछना, जानने की इच्छा करना, प्रश्न करना, पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सहन करना, पर्ण - हरा करना, हरा होना, पृ - पूर्ण करना, भरण करना)। **सहस्व =** सहनशील, समर्थ बनो (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)। **च =** और (अव्यय) **॥ 3 ॥**

295. गिरिम् एनान् आ वेशय,

कण्वान् जीवित-योपनान्।
तान् त्वम् देवि पृश्निपर्णि,
अग्निः-इव अनु-दहन् इहि॥ 4॥

मन्त्रार्थ - **गिरिम्** = गिरि को, स्तुति, वाणी, बोध, सिञ्चन को **एनान्** = इनको **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **वेशय** = प्रविष्ट होने वाला **कण्वान्** = शब्द करने वाला **जीवित-योपनान्** = जीवन-योपनों को **तान्** = उनको **त्वम्** = तुम **देवि** = देवी, तेजस्विनी **पृश्निपर्णि** = प्रश्नपर्णी, अभिसिञ्चन का भरण करने वाले **अग्निः-इव** = अग्नि के समान, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् के समान **अनु-दहन्** = अनुकूल-दहन करते हुए **इहि** = आओ, जानों॥ **4**॥

पदार्थ - **गिरिम्** = गिरि को, स्तुति, वाणी, बोध, सिञ्चन को (गृ - सींचना, गीला करना, समझना, जानना, गृ - शब्द करना)। **एनान्** = इनको (सर्वनाम)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **वेशय** = प्रविष्ट होने वाला (विश - घुसना, भीतर जाना, धंसना, चारों ओर फैलना)। **कण्वान्** = शब्द करने वाला (कण् - शब्द करना, लघु होना, कण बनाना)। **जीवित-योपनान्** = जीवन-योपनों को (जीव् = जीवन होना, प्राणवान् होना, प्राण धारण करना, जीवन धारण करना, यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, बांधना, बन्धन करना, गूंथना, बन्धन होना, संयोग-वियोग करना, युप - चित्त वैक्लव्य होना, घबरा जाना)। **तान्** = उनको (सर्वनाम)। **त्वम्** = तुम (सर्वनाम)। **देवि** = देवी, तेजस्विनी (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **पृश्निपर्णि** = प्रश्नपर्णी, अभिसिञ्चन का भरण करने वाले (पृश् - पृच्छ - पूछना, जानने की इच्छा करना, प्रश्न करना, पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सहन करना, पर्ण - हरा करना, हरा होना, पृ - पूर्ण करना, भरण करना)। **अग्निः-इव** = अग्नि के समान, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् के समान (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना, इव = समान, की भाँति, के समान (अव्यय))। **अनु-दहन्** = अनुकूल-दहन करते हुए (अनु = पश्चात्, पीछे, अनुकूल (उपसर्ग), दह् - जलाना, नष्ट करना, दुःख देना)। **इहि** = आओ, जानों (इ = जाना, जानना, पाना)॥ **4**॥

296. पराचः एनान् प्र नुद,
कण्वान् जीवित-योपनान्।
तमांसि यत्र गच्छन्ति तत्,
क्रव्य-अदः अजीगमम्॥ 5॥

मन्त्रार्थ - **पराचः** = दूसरी ओर करने वाला **एनान्** = इनको **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक **नुद** = भेजें **कण्वान्** = शब्द करने वाला **जीवित-योपनान्** = जीवन-योपनों को **तमांसि** = तमस् **यत्र** = जहाँ **गच्छन्ति** = जाते हैं **तत्** = वह, उस को **क्रव्य-अदः** = क्रव्याद, निर्दय खाने वाला **अजीगमम्** = गतिमान् को, वेग से जाने वाले को॥ **5**॥

पदार्थ - **पराचः** = दूसरी ओर करने वाला (परा - परम, परे, पीछे, विपरीत, अव्यय)। **एनान्** = इनको (सर्वनाम)। **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **नुद** = भेजें (नुद् = भेजना, प्रेरणा करना, जाना)। **कण्वान्** = शब्द करने वाला (कण् - शब्द करना, लघु होना, कण बनाना)। **जीवित-योपनान्** = जीवन-योपनों को (जीव् = जीवन होना, प्राणवान् होना, प्राण धारण करना, जीवन धारण करना, यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, बांधना, बन्धन करना, गूंथना, बन्धन होना, संयोग-वियोग करना, युप - चित्त वैक्लव्य होना, घबरा जाना)। **तमांसि** = तमस् (तम - इच्छा करना, चाहना, मानसिक या शारीरिक व्यथा से दुःखित होना, अन्धकार होना)। **यत्र** = जहाँ (सर्वनाम)। **गच्छन्ति** = जाते हैं (गम्-गच्छ् = जाना, जानना, पाना)। **तत्** = वह, उस को (सर्वनाम)। **क्रव्य-अदः** = क्रव्याद, निर्दय खाने वाला (क्रू, क्रूर् = निर्दय होना, कृ - करना, अद् - खाना)। **अजीगमम्** = गतिमान् को, वेग से जाने वाले को (अज - जाना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना)॥ **5**॥

61. पशुसंवर्धन सूक्त - 26

297. आ इह यन्तु पशवः ये परा-ईयुः,
वायुः येषाम् सह-चारम् जुजोष।
त्वष्टा येषाम् रूप-धेयानि वेद अस्मिन्,
तान् गोस्थे सविता नि यच्छतु॥ 1॥

मन्त्रार्थ - **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **इह** = इसमें, यहां, यह **यन्तु** = नियमन-नियन्त्रण, पोषण करो, उद्धार करो, प्राप्त करो **पशवः** = पशु, बन्धन, दृष्टा, देखने वाले **ये** = जो **परा-ईयुः** = परम् प्राप्त करते हैं **वायुः** = गतिशील, रचनात्मक शक्ति, वायु **येषाम्** = जिनका **सह-चारम्** = सह-चार को **जुजोष** = विचार, सेवा, स्नेह करता है **त्वष्टा** = त्वष्ट, प्रकाशक, सूक्ष्म करने वाला **येषाम्** = जिनका **रूप-धेयानि** = रूप-धारणा में **वेद** = ज्ञान, जानो, जानता है **अस्मिन्** = इस, इसमें **तान्** = उनको **गोस्थे** = शब्द-स्थित **सविता** = सृष्टिकर्ता, उत्पन्न करने वाला, ऐश्वर्यवान् तथा ऐश्वर्य देने वाला **नि** = निश्चित, निरन्तर **यच्छतु** = दो, प्रदान करो॥ **1**॥

पदार्थ - **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **इह** = इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **यन्तु** = नियमन-नियन्त्रण, पोषण करो, उद्धार करो, प्राप्त करो (यम् = रोकना, स्वाधीन रखना, आवरण करना, पोषण करना, नियमन करना, यन - उद्धार करना, या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, जानना)। **पशवः** = पशु, बन्धन, दृष्टा, देखने वाले (पश् - देखना, पश - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना)। **ये** = जो (सर्वनाम)। **परा-ईयुः** = परम् प्राप्त करते हैं (परा = परम्, परे, पीछे, विपरीत (अव्यय), ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना)। **वायुः** = गतिशील, रचनात्मक शक्ति, वायु (वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वा = गति करना, पवन की भाँति बहना, जाना, जानना, पाना, गन्ध होना, प्रवाहित होना, प्रवाहित करना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण करना, घेरना, भेजना, खाना, वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना)। **येषाम्** = जिनका (सर्वनाम)। **सह-चारम्** = सह-चार को (सह = साथ, सहित (सर्वनाम), चर - जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना। चार - संशय होना, निश्चय करना)। **जुजोष** = विचार, सेवा, स्नेह करता है (जुष - विचार करना, सेवा करना, चाहना, दुलारना)। **त्वष्टा** = त्वष्ट, प्रकाशक, सूक्ष्म करने वाला (त्वक्ष् = छीलना, रेतना, त्विष् = प्रकाशित होना, चमकना)। **येषाम्** = जिनका (सर्वनाम)। **रूप-धेयानि** = रूप-धारणा में (रूप - बनाना, आकार बनाना, रचना करना, मन में रुपाकृति लाना, धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना, धि = धारण करना, युक्त होना)। **वेद** = ज्ञान, जानो, जानता है (विद् = जानना, समझना, विद्यमान होना)। **अस्मिन्** = इस, इसमें (सर्वनाम)। **तान्** = उनको (सर्वनाम)। **गोस्थे** = शब्द-स्थित (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, स्था - स्थित होना, ठहरना)। **सविता** = सृष्टिकर्ता, उत्पन्न करने वाला, ऐश्वर्यवान् तथा ऐश्वर्य देने वाला (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)। **नि** = निश्चित, निरन्तर (अव्यय)। **यच्छतु** = दो, प्रदान करो (यच्छ = देना)॥ **1**॥

298. इमम् गो-स्थम् पशवः सम् स्रवन्तु,
बृहस्पतिः आ नयतु प्र-जानन्।
सिनीवाली नयतु आ अग्रम् एषाम्,
आ-जग्मुषः अनुमते नि यच्छ॥ 2॥

मन्त्रार्थ - **इमम्** = इसको (सर्वनाम)। **गो-स्थम्** = शब्द-स्थित को **पशवः** = पशु, बन्धन, दृष्टा, देखने वाले **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **स्रवन्तु** = अभिसिञ्चन करें, स्रवित हों **बृहस्पतिः** = बृहस्पति, महान्, बृहत् का स्वामी **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **नयतु** = ले चलो **प्र-जानन्** = प्रजनन करने वाले **सिनीवाली** = बांधने वाली, बन्धन का आच्छादन, विस्तार करने वाली **नयतु** = ले चलो **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **अग्रम्** = अग्र, आगे **एषाम्** = इनका **आ-जग्मुषः** = आने वाले **अनुमते** = हे अनुमते, हे अनुकूल मन, अनुकूल विचार युक्त **नि** = निश्चित, निरन्तर **यच्छ** = दो, प्रदान करो॥ **2**॥

पदार्थ - **इमम्** = इसको (सर्वनाम)। **गो-स्थम्** = शब्द-स्थित को (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, स्था - स्थित होना, ठहरना)। **पशवः** = पशु, बन्धन, दृष्टा, देखने वाले (पश् - देखना, पश - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **स्रवन्तु** = अभिसिञ्चन करें, स्रवित हों (स्रु = जाना, जानना, पाना, सृ - जाना, सरकना, बहना, टपकना)। **बृहस्पतिः** = बृहस्पति, महान्, बृहत् का स्वामी (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना, पत् - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना, नीचे जाना, गिरना, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **नयतु** = ले चलो (नय - जाना, हिलना, पहुँचना, संरक्षण करना)। **प्र-जानन्** = प्रजनन करने वाले (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, जन् = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **सिनीवाली** = बांधने वाली, बन्धन का आच्छादन, विस्तार करने वाली (सि - बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना, वल् - आच्छादन करना, चलना, विस्तार करना, प्रसार करना)। **नयतु** = ले चलो (नय - जाना, हिलना, पहुँचना, संरक्षण करना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **अग्रम्** = अग्र, आगे (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **एषाम्** = इनका (सर्वनाम)। **आ-जग्मुषः** = आने वाले (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, जग् - जाना, गति करना, लेना, ग्रहण करना, आ-जग् - आना)। **अनुमते** = हे अनुमते, हे अनुकूल मन, अनुकूल विचार युक्त (अनु - अनुकूल, पश्चात्, मन् - मनन करना, विचार करना)। **नि** = निश्चित, निरन्तर (अव्यय)। **यच्छ** = दो, प्रदान करो (यच्छ = देना) **॥ 2 ॥**

299. सम् सम् स्रवन्तु पशवः
सम् अश्वाः सम् उ पुरुषाः।
सम् धान्यस्य या स्फातिः,
सम्-स्राव्येण हविषा जुहोमि ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **स्रवन्तु** = अभिसिञ्चन करें, स्रवित हों **पशवः** = पशु, बन्धन, दृष्टा, देखने वाले **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **अश्वाः** = अश्व, तीव्र गति युक्त, व्यापक **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **उ** = निश्चय ही, भी **पुरुषाः** = पुरुष, परिपूर्ण, अग्रगामी, अग्रणी **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **धान्यस्य** = धान्य का, धारण करने योग्य का, गति, शब्द करने योग्य का **या** = जो **स्फातिः** = स्थूल, वृद्धि **सम्-स्राव्येण** = सम्यक्-प्रवाह द्वारा, सम्यक् प्रगति से **हविषा** = हविष् द्वारा, दान व आदान-प्रदान द्वारा **जुहोमि** = दान करते हैं, आदान-प्रदान करते हैं **॥ 3 ॥**

पदार्थ - **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **स्रवन्तु** = अभिसिञ्चन करें, स्रवित हों (स्रु = जाना, जानना, पाना, सृ - जाना, सरकना, बहना, टपकना)। **पशवः** = पशु, बन्धन, दृष्टा, देखने वाले (पश् - देखना, पश - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **अश्वाः** = अश्व, तीव्र गति युक्त, व्यापक (अश् - व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **उ** = निश्चय ही, भी (निपात, अव्यय)। **पुरुषाः** = पुरुष, परिपूर्ण, अग्रगामी, अग्रणी (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, पृ - पूर्ण करना, भरना, पालन करना, रक्षा करना, तृप्त करना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **धान्यस्य** = धान्य का, धारण करने योग्य का, गति, शब्द करने योग्य का (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना, धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)। **या** = जो (सर्वनाम)। **स्फातिः** = स्थूल, वृद्धि (स्फाय्-स्फी = मोटा होना, स्थूल होना, बढ़ना)। **सम्-स्राव्येण** = सम्यक्-प्रवाह द्वारा, सम्यक् प्रगति से (सम् = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग), स्रु = जाना, जानना, पाना, सृ - जाना, सरकना, बहना, टपकना)। **हविषा** = हविष् द्वारा, दान व आदान-प्रदान द्वारा (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **जुहोमि** = दान करते हैं, आदान-प्रदान करते हैं (हु-जुहु = दान करना, आदान-प्रदान करना, ग्रहण करना, तृप्त करना, जु - जाना, शीघ्र

जाना, भागना) ॥ 3 ॥

300. सम् सिञ्चामि गवाम् क्षीरम्
सम् आज्येन बलम् रसम्।
सम्-सिक्ताः अस्माकम् वीराः,
ध्रुवाः गावः मयि गो-पतौ ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **सिञ्चामि** = सिञ्चन करता हूँ **गवाम्** = गवा को, गौ को **क्षीरम्** = क्षीर को, निवास, क्षति, क्षय को **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **आज्येन** = विद्या द्वारा, आज्य द्वारा, सम्यक् गति, ज्ञान द्वारा **बलम्** = बल को **रसम्** = रस को **सम्-सिक्ताः** = अस्पष्ट शब्द **अस्माकम्** = हमारा **वीराः** = वीर **ध्रुवाः** = ध्रुव, अचल, स्थिर, अविचल गतिशील, अविचल विद्वान् **गावः** = शब्द, वाणी, वचन **मयि** = मुझमें **गो-पतौ** = शब्दकर्ता, मननशील, उपदेशक ॥ 4 ॥

पदार्थ - **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **सिञ्चामि** = सिञ्चन करता हूँ (सिञ्च् - सिञ्चन करना)। **गवाम्** = गवा को, गौ को (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, गम् = जाना)। **क्षीरम्** = क्षीर को, निवास, क्षति, क्षय को (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना, क्षी - क्षीण होना, हिंसा करना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **आज्येन** = विद्या द्वारा, आज्य द्वारा, सम्यक् गति, ज्ञान द्वारा (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अज् - जाना, स्थापन करना, दौड़ाना, फेकना, जि- जीतना, सर्वोत्कर्ष से रहना, ज्या-वृद्ध होना)। **बलम्** = बल को (बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना)। **रसम्** = रस को (रस - स्वाद लेना, चखना, प्रीति करना, प्यार करना)। **सम्-सिक्ताः** = अस्पष्ट शब्द (सम् = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग), सिक्-सिङ्क्-सिज-सिञ्ज - अस्पष्ट शब्द करना)। **अस्माकम्** = हमारा (सर्वनाम)। **वीराः** = वीर (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)। **ध्रुवाः** = ध्रुव, अचल, स्थिर, अविचल गतिशील, अविचल विद्वान् (ध्रुव् = अचल होना, स्थिर होना, जाना, गति करना, जानना, पाना)। **गावः** = शब्द, वाणी, वचन (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)। **मयि** = मुझमें (सर्वनाम)। **गो-पतौ** = शब्दकर्ता, मननशील, उपदेशक (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, गुप् = रक्षा करना, चमकना, बोलना, पत् - श्री मान् होना, अमानवी पराक्रम करना) ॥ 4 ॥

301. आ हरामि गवाम् क्षीरम्,
आ अहार्षम् धान्यम् रसम्।
आ-हृताः अस्माकम् वीराः,
आ पत्नीः इदम् अस्तकम् ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ - **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **हरामि** = हरो, ले जाओ **गवाम्** = गवा को, गौ को **क्षीरम्** = क्षीर को, निवास, क्षति, क्षय को **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **अहार्षम्** = व्यापक ऋषि, सर्वव्यापी को जानने वाले **धान्यम्** = धान्य को, धारण करने योग्य को, गति, शब्द करने योग्य को **रसम्** = रस को **आ-हृताः** = सम्यक् हृदय वाला **अस्माकम्** = हमारा **वीराः** = वीर **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **पत्नीः** = ऐश्वर्यवती **इदम्** = यह, इसको **अस्तकम्** = प्रकाश, निवास, होने वाला ॥ 5 ॥

पदार्थ - **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **हरामि** = हरो, ले जाओ (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)। **गवाम्** = गवा को, गौ को (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, गम् = जाना)। **क्षीरम्** = क्षीर को, निवास, क्षति, क्षय को (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना, क्षी - क्षीण होना, हिंसा करना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **अहार्षम्** = व्यापक ऋषि, सर्वव्यापी को जानने वाले (अह-ऋषम्, अह - फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, ऋष - अन्तर्गमन करना, अन्तर्दृष्टि

होना, जाना, पाना, जानना)। **धान्यम् =** धान्य को, धारण करने योग्य को, गति, शब्द करने योग्य को (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना, धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)। **रसम् =** रस को (रस - स्वाद लेना, चखना, प्रीति करना, प्यार करना)। **आ-हृताः** = सम्यक् हृदय वाला (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, लेना, ग्रहण करना, नष्ट करना)। **अस्माकम् =** हमारा (सर्वनाम)। **वीराः =** वीर (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **पत्नीः =** ऐश्वर्यवती (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **इदम् =** यह, इसको (सर्वनाम)। **अस्तकम् =** प्रकाश, निवास, होने वाला (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना) **॥ 5 ॥**

11 अनुवाक - 5

62 शत्रुपराजय सूक्त - 1 (27)

302. न इत् शत्रुः प्राशम् जयाति,
सहमाना अभिभूः असि।
प्राशम् प्रतिप्राशः जहि,
अरसान् कृणु ओषधे ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ :- न = नहीं, समान, उपमार्थक **इत् =** ही **शत्रुः =** शत्रु **प्राशम् =** शीघ्रगामी को **जयाति =** जय करो **सहमाना =** सहमान **अभिभूः =** सभी ओर, सर्वथा होने वाला **असि =** हो **प्राशम् =** शीघ्रगामी को **प्रतिप्राशः =** प्रतिपाश को, प्रति-शीघ्रगामी को **जहि =** हनन करो, नष्ट करो **अरसान् =** अरसों को, रसहीनों को **कृणु =** करो **ओषधे =** हे ओषधि **॥ 1 ॥**

पदार्थ :- न = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **इत् =** ही (अव्यय)। **शत्रुः =** शत्रु (शी-शद्-शत् - जीर्ण होना, गिरना, गिराना)। **प्राशम् =** शीघ्रगामी को (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, प्रा - पूर्ण करना, भरना, अश - व्याप्त होना, पहुंचना, पाना)। **जयाति =** जय करो (जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सबसे बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)। **सहमाना =** सहमान (सह = साथ, सहित, सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)। **अभिभूः =** सभी ओर, सर्वथा होने वाला (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, भू - होना)। **असि =** हो (अस् - होना)। **प्राशम् =** शीघ्रगामी को (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, प्रा - पूर्ण करना, भरना, अश - व्याप्त होना, पहुंचना, पाना)। **प्रतिप्राशः =** प्रतिपाश को, प्रति-शीघ्रगामी को (प्रति - प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग), प्र - प्रकृष्ट, अधिक, प्रा - पूर्ण करना, भरना, अश - व्याप्त होना, पहुंचना, पाना)। **जहि =** हनन करो, नष्ट करो (जह - हिंसा करना, चलना, फैलना, जहा – परित्याग करना, छोड़ना)। **अरसान् =** अरसों को, रसहीनों को (अ - नहीं, रस् - स्वाद लेना, प्रीति करना, शब्द करना)। **कृणु =** करो (कृ = करना)। **ओषधे =** हे ओषधि (उषध्-ओषध् - चिकित्सा करना, रोगमुक्त करना) **॥ 1 ॥**

303. सुपर्णः त्वा अनु अविन्दत्,
सूकरः त्वा अखनत् नसा।
प्राशम् प्रतिप्राशः जहि,
अरसान् कृणु ओषधे ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - सुपर्णः = सुपर्ण, उत्तम पर्ण वाले **त्वा =** तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **अनु =** पश्चात्, पीछे, अनुकूल **अविन्दत् =** प्राप्त किया **सूकरः =** उत्पत्ति-सृजन, ऐश्वर्य करने वाला **त्वा =** तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **अखनत् =** दुःख दिया, खनन किया, खोदा **नसा =** कुटिल, वक्र **प्राशम् =** शीघ्रगामी को **प्रतिप्राशः =** प्रति-प्राश, प्रति-शीघ्रगामी को **जहि =** हनन करो, प्रगति करो, व्याप्त हो, नष्ट करो **अरसान् =** अरसों को, रसहीनों को **कृणु =** करो **ओषधे =** हे ओषधि **॥ 2 ॥**

पदार्थ - **सुपर्णः** = सुपर्ण, उत्तम पर्ण वाले (सु - उत्तम, श्रेष्ठ, पर्ण - हरा करना, हरा होना, पृ - पूर्ण करना, भरना)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **अनु** = पश्चात्, पीछे, अनुकूल (उपसर्ग)। **अविन्दत्** = प्राप्त किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, विन्द्-विद् = लाभ होना, प्राप्त करना, पाना, सम्पादित करना)। **सूकरः** = उत्पत्ति-सृजन, ऐश्वर्य करने वाला (सू - जन्म देना, उत्पन्न करना, सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **अखनत्** = दुःख दिया, खनन किया, खोदा (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, खन - दुःख देना, खनन करना)। **नसा** = कुटिल, वक्र (नस् - कुटिल होना, वक्र होना, नमना)। **प्राशम्** = शीघ्रगामी को (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, प्रा - पूर्ण करना, भरना, अश - व्याप्त होना, पहुंचना, पाना)। **प्रतिप्राशः** = प्रति-प्राश, प्रति-शीघ्रगामी को (प्रति = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग), प्र - प्रकृष्ट, अधिक, प्रा - पूर्ण करना, भरना, अश - व्याप्त होना, पहुंचना, पाना)। **जहि** = हनन करो, प्रगति करो, व्याप्त हो, नष्ट करो (जह - हिंसा करना, चलना, फैलना, जहा – परित्याग करना, छोड़ना)। **अरसान्** = अरसों को, रसहीनों को (अ - नहीं, रस् - स्वाद लेना, प्रीति करना, शब्द करना)। **कृणु** = करो (कृ = करना)। **ओषधे** = हे ओषधि (उषध्-ओषध् - चिकित्सा करना, रोगमुक्त करना) **॥ 2 ॥**

304. इन्द्रः ह चक्रे त्वा,
बाहौ असुरेभ्यः स्तरीतवे।
प्राशम् प्रतिप्राशः जहि,
अरसान् कृणु ओषधे ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - **इन्द्रः** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान **ह** = ही, निश्चय ही **चक्रे** = किया **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **बाहौ** = बाहु, भुजा, हाथ, प्रयास करने वाले युगल **असुरेभ्यः** = असुरों के लिए, ऐश्वर्यहीनों, उत्पन्न-सृजन नहीं करने वालों, प्रकाश देने वालों के लिए **स्तरीतवे** = आच्छादित होते हो, हिंसा करते हो **प्राशम्** = शीघ्रगामी को **प्रतिप्राशः** = प्रति-प्राश, प्रति-शीघ्रगामी को **जहि** = हनन करो, प्रगति करो, व्याप्त हो, नष्ट करो **अरसान्** = अरसों को, रसहीनों को **कृणु** = करो **ओषधे** = हे ओषधि **॥ 3 ॥**

पदार्थ - **इन्द्रः** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **ह** = ही, निश्चय ही (अव्यय)। **चक्रे** = किया (कृ - करना)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **बाहौ** = बाहु, भुजा, हाथ, प्रयास करने वाले युगल (बाह् - प्रयास करना, बह् - बहना, गति करना, बाहर होना, परे हो जाना, हिंसा करना)। **असुरेभ्यः** = असुरों के लिए, ऐश्वर्यहीनों, उत्पन्न-सृजन नहीं करने वालों, प्रकाश देने वालों के लिए (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना)। **स्तरीतवे** = आच्छादित होते हो, हिंसा करते हो (स्तृ - फैलाना, ढकना, पूर्ण करना, हिंसा करना)। **प्राशम्** = शीघ्रगामी को (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, प्रा - पूर्ण करना, भरना, अश - व्याप्त होना, पहुंचना, पाना)। **प्रतिप्राशः** = प्रति-प्राश, प्रति-शीघ्रगामी को (प्रति = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग), प्र - प्रकृष्ट, अधिक, प्रा - पूर्ण करना, भरना, अश - व्याप्त होना, पहुंचना, पाना)। **जहि** = हनन करो, प्रगति करो, व्याप्त हो, नष्ट करो (जह - हिंसा करना, चलना, फैलना, जहा – परित्याग करना, छोड़ना)। **अरसान्** = अरसों को, रसहीनों को (अ - नहीं, रस् - स्वाद लेना, प्रीति करना, शब्द करना)। **कृणु** = करो (कृ = करना)। **ओषधे** = हे ओषधि (उषध्-ओषध् - चिकित्सा करना, रोगमुक्त करना) **॥ 3 ॥**

305. पाटाम् इन्द्रः वि आश्नात्,
असुरेभ्यः स्तरीतवे।
प्राशम् प्रतिप्राशः जहि,
अरसान् कृणु ओषधे ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - **पाटाम्** = प्रगति, स्थानान्तर, आच्छादन, चमक, शब्द को **इन्द्रः** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान **वि** = विशेष, विना, विलोम **आश्नात्** = सम्यक् व्याप्त, व्यापक, प्राप्त हुआ **असुरेभ्यः** = असुरों के लिए, ऐश्वर्यहीनों, उत्पन्न-सृजन नहीं करने वालों, प्रकाश देने वालों के लिए **स्तरीतवे** = आच्छादित होते हो, हिंसा करते हो **प्राशम्** = शीघ्रगामी को **प्रतिप्राशः** = प्रति-प्राश, प्रति-शीघ्रगामी को **जहि** = हनन करो, प्रगति करो, व्याप्त हो, नष्ट करो **अरसान्** = अरसों को, रसहीनों को **कृणु** = करो **ओषधे** = हे ओषधि **॥ 4 ॥**

पदार्थ - **पाटाम्** = प्रगति, स्थानान्तर, आच्छादन, चमक, शब्द को (पट् - जाना, स्थानान्तर करना, आच्छादन करना, गूंथना, लपेटना, हिस्से करना, चमकना, बोलना)। **इन्द्रः** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **आश्नात्** = सम्यक् व्याप्त, व्यापक, प्राप्त हुआ (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अश् = भोजन करना, व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना)। **असुरेभ्यः** = असुरों के लिए, ऐश्वर्यहीनों, उत्पन्न-सृजन नहीं करने वालों, प्रकाश देने वालों के लिए (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना)। **स्तरीतवे** = आच्छादित होते हो, हिंसा करते हो (स्तृ - फैलाना, ढकना, पूर्ण करना, हिंसा करना)। **प्राशम्** = शीघ्रगामी को (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, प्रा - पूर्ण करना, भरना, अश - व्याप्त होना, पहुंचना, पाना)। **प्रतिप्राशः** = प्रति-प्राश, प्रति-शीघ्रगामी को (प्रति = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग), प्र - प्रकृष्ट, अधिक, प्रा - पूर्ण करना, भरना, अश - व्याप्त होना, पहुंचना, पाना)। **जहि** = हनन करो, प्रगति करो, व्याप्त हो, नष्ट करो (जह - हिंसा करना, चलना, फैलना, जहा – परित्याग करना, छोड़ना)। **अरसान्** = अरसों को, रसहीनों को (अ - नहीं, रस् - स्वाद लेना, प्रीति करना, शब्द करना)। **कृणु** = करो (कृ = करना)। **ओषधे** = हे ओषधि (उषध्-ओषध् - चिकित्सा करना, रोगमुक्त करना) **॥ 4 ॥**

306. तया अहम् शत्रून् साक्षे,
इन्द्रः सालावृकान्-इव।
प्राशम् प्रतिप्राशः जहि,
अरसान् कृणु ओषधे ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ - **तया** = उसके द्वारा **अहम्** = मैं **शत्रून्** = शत्रुओं को **साक्षे** = साक्षता है, खेल, क्रीडा, दृष्टि, एकत्रीकरण, समूह, व्यापक करता है **इन्द्रः** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान **सालावृकान्-इव** = साल-वृकों के समान **प्राशम्** = शीघ्रगामी को **प्रतिप्राशः** = प्रति-प्राश, प्रति-शीघ्रगामी को **जहि** = हनन करो, प्रगति करो, व्याप्त हो, नष्ट करो **अरसान्** = अरसों को, रसहीनों को **कृणु** = करो **ओषधे** = हे ओषधि **॥ 5 ॥**

पदार्थ - **तया** = उसके द्वारा (सर्वनाम)। **अहम्** = मैं (सर्वनाम)। **शत्रून्** = शत्रुओं को (शी-शद्-शत् - जीर्ण होना, गिरना, गिराना)। **साक्षे** = साक्षता है, खेल, क्रीडा, दृष्टि, एकत्रीकरण, समूह, व्यापक करता है (स = सहित, साथ (उपसर्ग), अक्ष - खेलना, देखना, एकत्र होना, व्याप्त होना, इच्छितार्थ होना, पैठना)। **इन्द्रः** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **सालावृकान्-इव** = साल-वृकों के समान (सल् - जाना, सरकना, कांपना, थरथराना, वृक - लेना, स्वीकार करना, छीन लेना, चीरना, फाड़ना, वृच- हिंसा करना, इव = समान, की भाँति, के समान (अव्यय))। **प्राशम्** = शीघ्रगामी को (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, प्रा - पूर्ण करना, भरना, अश - व्याप्त होना, पहुंचना, पाना)। **प्रतिप्राशः** = प्रति-प्राश, प्रति-शीघ्रगामी को (प्रति = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग), प्र - प्रकृष्ट, अधिक, प्रा - पूर्ण करना, भरना, अश - व्याप्त होना, पहुंचना, पाना)। **जहि** = हनन करो, प्रगति करो, व्याप्त हो, नष्ट करो (जह - हिंसा करना, चलना, फैलना, जहा – परित्याग करना, छोड़ना)। **अरसान्** = अरसों को, रसहीनों को (अ - नहीं, रस् - स्वाद लेना, प्रीति करना, शब्द करना)। **कृणु** = करो (कृ = करना)। **ओषधे** = हे ओषधि (उषध्-ओषध् - चिकित्सा करना, रोगमुक्त

करना)॥ 5॥

307. रुद्र जलाष-भेषज,
नील-शिखण्ड कर्म-कृत्।
प्राशम् प्रति-प्राशः जहि,
अरसान् कृणु ओषधे॥ 6॥

मन्त्रार्थ - **रुद्र** = हे रुद्र, करुणाशील, रुदन करने वाले, रुदन कराने वाले **जलाष-भेषज** = हे जलाष-भेषज, हे जल-औषधि **नील-शिखण्ड** = हे नील-शिखण्ड **कर्म-कृत्** = कर्मों को करने वाले, कर्मों को करते हुए **प्राशम्** = शीघ्रगामी को **प्रतिप्राशः** = प्रति-प्राश, प्रति-शीघ्रगामी को **जहि** = हनन करो, प्रगति करो, व्याप्त हो, नष्ट करो **अरसान्** = अरसों को, रसहीनों को **कृणु** = करो **ओषधे** = हे ओषधि॥ 6॥

पदार्थ - **रुद्र** = हे रुद्र, करुणाशील, रुदन करने वाले, रुदन कराने वाले (रुद् = रुदन् करना, रोना, रोते-रोते कहना, रुलाना, करुण होना)। **जलाष-भेषज** = हे जलाष-भेषज, हे जल-औषधि (जल् = तीक्ष्ण होना, उष्ण होना, तेजस्वी होना या करना, पैना करना, श्रीमान् होना, धनवान् होना, सम्पन्न होना, आर्द्र होना, ढांकना, निवारण करना, जाल से ढांकना, प्यास बुझाना, दूर करना, भिषज् - रोग मुक्त करना, चिकित्सा करना, नष्ट करना, भेष - डरना, जाना, जानना, पाना)। **नील-शिखण्ड** = हे नील-शिखण्ड (नील = रंगना, रंगाना, नीलरंग लगाना, शिखण्ड = निर्बीज होना, निष्फल होना)। **कर्म-कृत्** = कर्मों को करने वाले, कर्मों को करते हुए (कृ - करना)। **प्राशम्** = शीघ्रगामी को (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, प्रा - पूर्ण करना, भरना, अश - व्याप्त होना, पहुंचना, पाना)। **प्रतिप्राशः** = प्रति-प्राश, प्रति-शीघ्रगामी को (प्रति = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग), प्र - प्रकृष्ट, अधिक, प्रा - पूर्ण करना, भरना, अश - व्याप्त होना, पहुंचना, पाना)। **जहि** = हनन करो, प्रगति करो, व्याप्त हो, नष्ट करो (जह - हिंसा करना, चलना, फैलना, जहा – परित्याग करना, छोड़ना)। **अरसान्** = अरसों को, रसहीनों को (अ - नहीं, रस् - स्वाद लेना, प्रीति करना, शब्द करना)। **कृणु** = करो (कृ = करना)। **ओषधे** = हे ओषधि (उषध्-ओषध् - चिकित्सा करना, रोगमुक्त करना)॥ 6॥

308. तस्य प्राशम् त्वम् जहि,
यः नः इन्द्र अभि-दासति।
अधि नः ब्रूहि शक्तिभिः,
प्राशि माम् उत्-तरम् कृधि॥ 7॥

मन्त्रार्थ - **तस्य** = उसका **प्राशम्** = शीघ्रगामी को **त्वम्** = तुम **जहि** = हनन करो, प्रगति करो, व्याप्त हो, नष्ट करो **यः** = जो **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा **इन्द्र** = हे इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान **अभि-दासति** = सर्वथा दान करता है **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा **ब्रूहि** = कहो **शक्तिभिः** = शक्तियों, सक्षमताओं, सामर्थ्यों द्वारा, से **प्राशि** = शीघ्रगामी **माम्** = मुझको **उत्-तरम्** = उत्तर को, तैरने-पार जाने को **कृधि** = करो॥ 7॥

पदार्थ - **तस्य** = उसका (सर्वनाम)। **प्राशम्** = शीघ्रगामी को (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, प्रा - पूर्ण करना, भरना, अश - व्याप्त होना, पहुंचना, पाना)। **त्वम्** = तुम (सर्वनाम)। **जहि** = हनन करो, प्रगति करो, व्याप्त हो, नष्ट करो (जह - हिंसा करना, चलना, फैलना, जहा – परित्याग करना, छोड़ना)। **यः** = जो (सर्वनाम)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **इन्द्र** = हे इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **अभि-दासति** = सर्वथा दान करता है (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, दास् - देना, दान करना)। **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **ब्रूहि** = कहो (ब्रू = कहना, बोलना)। **शक्तिभिः** = शक्तियों, सक्षमताओं, सामर्थ्यों द्वारा, से (शक् - सक्षम होना, कर सकना, सहना, सहन करना)। **प्राशि** = शीघ्रगामी (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, प्रा - पूर्ण करना, भरना, अश - व्याप्त होना, पहुंचना, पाना)। **माम्** = मुझको

(सर्वनाम)। **उत्-तरम्** = उत्तर को, तैरने-पार जाने को (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, तृ, तृ = तैरना, पार जाना)। **कृधि** = करो (कृ = करना) ॥ **7** ॥

63 दीर्घायु-प्राप्ति सूक्त - 2 (28)

309. तुभ्यम् एव जरिमन् वर्धताम् अयम्,
मा इमम् अन्ये मृत्यवः हिंसिषुः शतम् ये।
माता-इव पुत्रम् प्र-मनाः उपस्थे,
मित्रः एनम् मित्रियात् पातु अहंसः ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - **तुभ्यम्** = तुम्हारे लिए **एव** = ही **जरिमन्** = जरितृ, जीर्ण, वृद्ध, वर्धित, परिपक्व को **वर्धताम्** = बढ़ाओ **अयम्** = यह **मा** = नहीं, मत **इमम्** = इसको **अन्ये** = अन्य, कोई और, इतर **मृत्यवः** = मृत्यु **हिंसिषुः** = हिंसा करें **शतम्** = सौ **ये** = जो **माता-इव** = माता के समान, मान करने वाले के समान **पुत्रम्** = पुत्र को **प्र-मनाः** = प्रमना, प्रकृष्ट आनन्द, प्रकृष्ट आनन्द वाला **उपस्थे** = उपस्थ में, सनिकट, समीप स्थित में **मित्रः** = मित्र **एनम्** = इसको, इसे **मित्रियात्** = मित्र सम्बन्धी **पातु** = पालन करो, रक्षा करो **अहंसः** = प्रकाशमान ॥ **1** ॥

पदार्थ - **तुभ्यम्** = तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **एव** = ही (अव्यय)। **जरिमन्** = जरितृ, जीर्ण, वृद्ध, वर्धित, परिपक्व को (जृ - वृद्ध होना, जीर्ण होना)। **वर्धताम्** = बढ़ाओ (वृध् = बढ़ना, चमकना, बोलना)। **अयम्** = यह (सर्वनाम)। **मा** = नहीं, मत (अव्यय)। **इमम्** = इसको (सर्वनाम)। **अन्ये** = अन्य, कोई और, इतर (सर्वनाम)। **मृत्यवः** = मृत्यु (मृ = मरना, देहत्याग करना)। **हिंसिषुः** = हिंसा करें (हिंस् - हिंसा करना, मारना, बध करना, दुःख देना, सताना)। **शतम्** = सौ (संख्या, सर्वनाम)। **ये** = जो (सर्वनाम)। **माता-इव** = माता के समान, मान करने वाले के समान (मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना, इव = समान, की भाँति, के समान (अव्यय))। **पुत्रम्** = पुत्र को (पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)। **प्र-मनाः** = प्रमना, प्रकृष्ट आनन्द, प्रकृष्ट आनन्द वाला (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, मद् - आनन्द करना)। **उपस्थे** = उपस्थ में, सनिकट, समीप स्थित में (उप = समीप, स्थ = स्थित)। **मित्रः** = मित्र (मिद् - स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, मृदुल होना)। **एनम्** = इसको, इसे (सर्वनाम)। **मित्रियात्** = मित्र सम्बन्धी (मिद् - स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, मृदुल होना)। **पातु** = पालन करो, रक्षा करो (पा = पालन करना, बचाना)। **अहंसः** = प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना) ॥ **1** ॥

310. मित्रः एनम् वरुणः वा रिशादाः,
जरा-मृत्युम् कृणुताम् सम्-विदानौ।
तत् अग्निः होता वयुनानि विद्वान्,
विश्वा देवानाम् जनिम विवक्ति ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - **मित्रः** = मित्र **एनम्** = इसको, इसे **वरुणः** = वरणीय, वरण करने वाला **वा** = अथवा **रिशादाः** = हिंसानाशक **जरा-मृत्युम्** = जरा-मृत्यु को **कृणुताम्** = करो **सम्-विदानौ** = विद्वान् युगल **तत्** = वह, उस को **अग्निः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् **होता** = आह्वान्, ग्रहण, दान करने वाले **वयुनानि** = रचनाशील **विद्वान्** = विद्वान्, जानने वाला, ज्ञानी **विश्वा** = विश्व, सभी, सब **देवानाम्** = देवों का **जनिम** = उत्पन्न, उत्पत्ति करें **विवक्ति** = विशेष उक्ति, कथन, बोलता है, कहता है ॥ **2** ॥

पदार्थ - **मित्रः** = मित्र (मिद् - स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, मृदुल होना)। **एनम्** = इसको, इसे (सर्वनाम)। **वरुणः** = वरणीय, वरण करने वाला (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **वा** = अथवा (अव्यय)। **रिशादाः** = हिंसानाशक (रिश्-रिष - हिंसा करना, मार डालना या दुःख देना, मारने का यत्न करना, अद् = नष्ट करना, खाना, दा

- देना)। **जरा-मृत्युम् =** जरा-मृत्यु को (जृ - वृद्ध होना, जीर्ण होना, मृ = मरना, देहत्याग करना)। **कृणुताम् =** करो (कृ = करना)। **सम्-विदानौ =** विद्वान् युगल (सम् - सम्यक्, सम् - न घबराना, एक समान रहना, विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)। **तत् =** वह, उस को (सर्वनाम)। **अग्निः =** अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **होता =** आह्वान्, ग्रहण, दान करने वाले (हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)। **वयुनानि =** रचनाशील (वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वा - गति करना, बहना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण करना, घेरना, भेजना, खाना, वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना)। **विद्वान् =** विद्वान्, जानने वाला, ज्ञानी (विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना, विद्यमान होना, विचार करना, जीवन होना)। **विश्वा =** विश्व, सभी, सब (सर्वनाम)। **देवानाम् =** देवों का (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **जनिम =** उत्पन्न, उत्पत्ति करें (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **विवक्ति =** विशेष उक्ति, कथन, बोलता है, कहता है (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग), वच् - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना) **॥ 2 ॥**

311. त्वम् ईशिषे पशूनाम् पार्थिवानाम्,
ये जाताः उत वा ये जनित्राः।
मा इमम् प्राणः हासीत् मो अपानः,
मा इमम् मित्राः वधिषुः मो अमित्राः ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - त्वम् = तुम **ईशिषे =** ऐश्वर्य, अधिकार हो, शासन करे **पशूनाम् =** पशुओं का, दृष्टा का, बन्धन का **पार्थिवानाम् =** पार्थिवों का **ये =** जो **जाताः =** उत्पन्न हुए **उत =** ही, भी, ओर **वा =** अथवा **ये =** जो **जनित्राः =** उत्पन्न करने वाला **मा =** नहीं, मत **इमम् =** इसको **प्राणः =** प्राण **हासीत् =** छोड़ा जाता है, परित्याग करता है, हंसता है, हंसाता है **मो =** बन्धन **अपानः =** अपान, पालक, रक्षक, पान न करने वाला **मा =** नहीं, मत **इमम् =** इसको **मित्राः =** मित्र **वधिषुः =** वध करो **मो =** बन्धन **अमित्राः =** अमित्र, अस्नेही **॥ 3 ॥**

पदार्थ - त्वम् = तुम (सर्वनाम)। **ईशिषे =** ऐश्वर्य, अधिकार हो, शासन करे (ईश = ऐश्वर्य-अधिकार होना)। **पशूनाम् =** पशुओं का, दृष्टा का, बन्धन का (पश्-दृश् = देखना, पश - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना)। **पार्थिवानाम् =** पार्थिवों का (पृथ - फेंकना, उड़ाना, प्रेरणा करना, भेजना, व्याप्त होना)। **ये =** जो (सर्वनाम)। **जाताः =** उत्पन्न हुए (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **उत =** ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **वा =** अथवा (अव्यय)। **ये =** जो (सर्वनाम)। **जनित्राः =** उत्पन्न करने वाला (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **मा =** नहीं, मत (अव्यय)। **इमम् =** इसको (सर्वनाम)। **प्राणः =** प्राण (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अन- जीवन होना, चेतन होना, प्रा- पूर्ण करना, तृप्त करना)। **हासीत् =** छोड़ा जाता है, परित्याग करता है, हंसता है, हंसाता है (हा - छोड़ना, परित्याग करना, जाना, चलना, हस - हंसना, ठट्ठा करना)। **मो =** बन्धन (मू = बाँधना)। **अपानः =** अपान, पालक, रक्षक, पान न करने वाला (अ - नहीं। अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना। पा-पान - पीना, पान करना)। **मा =** नहीं, मत (अव्यय)। **इमम् =** इसको (सर्वनाम)। **मित्राः =** मित्र (मिद् - स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, मृदुल होना)। **वधिषुः =** वध करो (वध्-हन् = मारना)। **मो =** बन्धन (मू = बाँधना)। **अमित्राः =** अमित्र, अस्नेही (अ = नहीं, मिद् = प्रीति करना, स्नेह करना) **॥ 3 ॥**

312. द्यौः त्वा पिता पृथिवी माता,
जरामृत्युम् कृणुताम् संविदाने।
यथा जीवाः अदितेः उपस्थे,

प्राणापानाभ्याम् गुपितः शतम् हिमाः ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - **द्यौः** = अग्रगामी, प्रकाशवान्, विद्वान्, द्यौ, प्रकाशयुक्त, अग्रगामी **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **पिता** = पिता, पालन करने वाला, पिता **पृथिवी** = पृथ्वी, विस्तृत भूमि, विस्तार **माता** = माता, मान करने वाला **जरामृत्युम्** = जरा-मृत्यु को **कृणुताम्** = करो **संविदाने** = विद्वान् में **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार **जीवाः** = जीव **अदितेः** = अक्षय, अविनाशी का **उपस्थे** = उपस्थ में, सनिकट, समीप स्थित में **प्राणापानाभ्याम्** = प्राण-अपानों द्वारा, के लिए, से **गुपितः** = प्रकाश वाला, चमकने वाला, रक्षा करने वाला **शतम्** = सौ **हिमाः** = हिम, गतिवान्, गति-वृद्धि, शीतल ॥ **4** ॥

पदार्थ - **द्यौः** = अग्रगामी, प्रकाशवान्, विद्वान्, द्यौ, प्रकाशयुक्त, अग्रगामी (द्युत् = प्रकाशित होना, द्यु = अभिगमन करना, आक्रमण करना, आगे जाना, समीप जाना, प्रकाश होना, जानना)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **पिता** = पिता, पालन करने वाला, पिता (पि - जाना, जानना, पाना, पा- पालन करना, रक्षा करना)। **पृथिवी** = पृथ्वी, विस्तृत भूमि, विस्तार (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)। **माता** = माता, मान करने वाला (मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना)। **जरामृत्युम्** = जरा-मृत्यु को (जृ - वृद्ध होना, जीर्ण होना, मृ = मरना, देहत्याग करना)। **कृणुताम्** = करो (कृ = करना)। **संविदाने** = विद्वान् में (सम् - सम्यक्, सम् - न घबराना, एक समान रहना, विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)। **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार (अव्यय)। **जीवाः** = जीव (जीव् = जीवन होना, प्राणवान् होना, प्राण धारण करना, जीवन धारण करना)। **अदितेः** = अक्षय, अविनाशी का (अ - नहीं (उपसर्ग), अद् = खाना, दी = नष्ट होना)। **उपस्थे** = उपस्थ में, सनिकट, समीप स्थित में (उप = समीप, स्थ = स्थित)। **प्राणापानाभ्याम्** = प्राण-अपानों द्वारा, के लिए, से (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अन- जीवन होना, चेतन होना, प्रा- पूर्ण करना, तृप्त करना, अप - निम्न)। **गुपितः** = प्रकाश वाला, चमकने वाला, रक्षा करने वाला (गुप् - प्रकाश होना, चमकना, रक्षा करना)। **शतम्** = सौ (संख्या, सर्वनाम)। **हिमाः** = हिम, गतिवान्, गति-वृद्धि, शीतल (हि - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना, हिम - शीत होना) ॥ **4** ॥

313. इमम् अग्ने आयुषे वर्चसे नय,
प्रियम् रेतः वरुण मित्र-राजन्।
माता-इव अस्मै अदिते शर्म यच्छ,
विश्वे देवाः जरत्-अष्टिः यथा असत् ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ - **इमम्** = इसको **अग्ने** = हे अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् **आयुषे** = आयु के लिए **वर्चसे** = प्रकाश के लिए, तेज के लिए **नय** = ले जाओ **प्रियम्** = प्रिय को **रेतः** = रेतस्, विद्या, प्रगति **वरुण** = हे वरणीय, वरण करने वाला **मित्र-राजन्** = हे मित्र-राजन्, प्रकाशित होने वाले मित्र **माता-इव** = समान, की भाँति, के समान **अस्मै** = इसके लिए, हमको, हमारे लिए **अदिते** = अक्षय, अविनाशी का **शर्म** = सुख, सम्मान, समृद्धि **यच्छ** = दो, प्रदान करो **विश्वे** = सभी **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने **जरत्-अष्टिः** = हे जीर्ण-दीप्तिमान्, परिपक्व विद्वान् **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार **असत्** = हो जाये ॥ **5** ॥

पदार्थ - **इमम्** = इसको (सर्वनाम)। **अग्ने** = हे अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **आयुषे** = आयु के लिए (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अय = जाना, जानना, पाना, गति करना, आय - शब्द करना, शासन करना, यु = मिलना, अलग करना)। **वर्चसे** = प्रकाश के लिए, तेज के लिए (वर्च - प्रकाशित होना, चमकना)। **नय** = ले जाओ (नी - नय - जाना, हिलना, पहुँचना, संरक्षण करना)। **प्रियम्** = प्रिय को (प्री = स्नेह करना, प्यार करना, तृप्त करना, सन्तुष्ट करना, चाहना)। **रेतः** = रेतस्, विद्या, प्रगति (रि - जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, री - गति करना, झरना-टपकना, लेना, शब्द करना, सुनना)। **वरुण** = हे वरणीय, वरण करने वाला (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **मित्र-राजन्** = हे मित्र-राजन्, प्रकाशित होने वाले मित्र (मिद् - स्निग्ध

होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, नरम होना, मृदुल होना, राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **माता-इव** = समान, की भाँति, के समान (अव्यय)। **अस्मै** = इसके लिए, हमको, हमारे लिए (सर्वनाम)। **अदिते** = अक्षय, अविनाशी का (अ - नहीं (उपसर्ग), अद् = खाना, दी = नष्ट होना)। **शर्म** = सुख, सम्मान, समृद्धि (शर्म् = सुख होना, श्रीमान् होना, सम्मानित होना)। **यच्छ** = दो, प्रदान करो (यच्छ = देना)। **विश्वे** = सभी (सर्वनाम)। **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **जरत्-अष्टिः** = हे जीर्ण-दीप्तिमान्, परिपक्व विद्वान् (जृ - वृद्ध होना, जीर्ण होना, अष् - ग्रहण करना, जाना, जानना, पाना, चमकना, प्रकाश करना)। **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार (अव्यय)। **असत्** = हो जाये (अस् = होना) **॥ 5 ॥**

64 दीर्घायुष्य सूक्त - 3 (29)

314. पार्थिवस्य रसे देवाः,
भगस्य तन्वः बले।
आयुष्यम् अस्मै अग्निः,
सूर्याः वर्चः आ धात् बृहस्पतिः ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - **पार्थिवस्य** = पार्थिव, पृथ्वी का **रसे** = रस **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने **भगस्य** = सेवनीय, सेवायोग्य का **तन्वः** = विस्तार, वृद्धि **बले** = बल में **आयुष्यम्** = आयुष्य को, आयु को **अस्मै** = इसके लिए, हमको, हमारे लिए **अग्निः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् **सूर्याः** = सूर्य, उत्पन्न करने वाला, उत्पन्नकर्ता, ऐश्वर्यवान् **वर्चः** = प्रकाश **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **धात्** = धारण करे **बृहस्पतिः** = बृहस्पति, महान्, बृहत् का स्वामी **॥ 1 ॥**

पदार्थ - **पार्थिवस्य** = पार्थिव, पृथ्वी का (पृथ - फेंकना, उड़ाना, प्रेरणा करना, भेजना, व्याप्त होना)। **रसे** = रस (रस् = शब्द करना, स्वाद लेना, प्यार करना)। **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **भगस्य** = सेवनीय, सेवायोग्य का (भग्-भज् = सेवा करना, सेवन करना, सेवित होना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)। **तन्वः** = विस्तार, वृद्धि (तन् = विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना)। **बले** = बल में (बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना)। **आयुष्यम्** = आयुष्य को, आयु को (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अय = जाना, जानना, पाना, गति करना, आय - शब्द करना, शासन करना, यु = मिलना, अलग करना)। **अस्मै** = इसके लिए, हमको, हमारे लिए (सर्वनाम)। **अग्निः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **सूर्याः** = सूर्य, उत्पन्न करने वाला, उत्पन्नकर्ता, ऐश्वर्यवान् (सुर - ऐश्वर्य होना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना, सू - उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, ऐश्वर्य होना)। **वर्चः** = प्रकाश (वर्च - प्रकाशित होना, चमकना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **धात्** = धारण करे (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)। **बृहस्पतिः** = बृहस्पति, महान्, बृहत् का स्वामी (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना, पत् - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना, नीचे जाना, गिरना, पा - पालन करना, रक्षा करना) **॥ 1 ॥**

315. आयुः अस्मै धेहि जातवेदः,
प्रजाम् त्वष्टः अधि-निधेहि अस्मै।
रायः पोषम् सवितः आ सुव अस्मै,
शतम् जीवाति शरदः तव अयम् ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - **आयुः** = आयु **अस्मै** = इसके लिए, हमको, हमारे लिए **धेहि** = धारण करें **जातवेदः** = विद्वान्, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले **प्रजाम्** = प्रजा को **त्वष्टः** = त्वष्ट, प्रकाशक **अधि-निधेहि** = अधिक धारण करें **अस्मै** = इसके लिए, हमको, हमारे लिए **रायः** = गति, विद्या, वाणी **पोषम्** = पोषण करने वाले **सवितः** = ऐश्वर्य युक्त, उत्पन्न करने वाले **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **सुव** = उत्पन्न करो, ऐश्वर्य दो, फेंक दो, भेज दो **अस्मै** = इसके लिए, हमको, हमारे लिए **शतम्** = सौ **जीवाति** = जीते रहें **शरदः** = शरद् **तव** = तुम्हारा **अयम्** = यह **॥ 2 ॥**

पदार्थ - **आयुः** = आयु (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अय = जाना, जानना, पाना, ग़ति करना, आय - शब्द करना, शासन करना, यु = मिलना, अलग करना)। **अस्मै** = इसके लिए, हमको, हमारे लिए (सर्वनाम)। **धेहि** = धारण करें (धा-धि-धी - धारण करना, पहनना, पोषण करना, रक्षण करना, देना)। **जातवेदः** = विद्वान्, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले (जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जा-ज्ञा - जानना, विद् - जानना)। **प्रजाम्** = प्रजा को (प्र - बहुत, प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **त्वष्टः** = त्वष्ट, प्रकाशक (त्वक्ष् = छीलना, रेतना, त्विष् = प्रकाशित होना, चमकना)। **अधि-निधेहि** = अधिक धारण करें (अधि = अधिगत, अधिक, उच्च, पूर्णतः, नि- निश्चित, नितराम्, निरन्तर, धा-धि-धी - धारण करना, पहनना, पोषण करना, रक्षण करना, देना)। **अस्मै** = इसके लिए, हमको, हमारे लिए (सर्वनाम)। **रायः** = गति, विद्या, वाणी (रा-देना, लेना, ग्रहण करना, रय् = जाना, जानना, पाना, रै = शब्द करना)। **पोषम्** = पोषण करने वाले (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, पूष - बढ़ना, अधिक होना, पोषण करना)। **सवितः** = ऐश्वर्य युक्त, उत्पन्न करने वाले (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **सुव** = उत्पन्न करो, ऐश्वर्य दो, फेंक दो, भेज दो (सु = उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, सू- भेजना, उड़ाना)। **अस्मै** = इसके लिए, हमको, हमारे लिए (सर्वनाम)। **शतम्** = सौ (संख्या, सर्वनाम)। **जीवाति** = जीते रहें (जीव् = जीवन होना, प्राणवान् होना, प्राण धारण करना, जीवन धारण करना)। **शरदः** = शरद् (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मारना, श्रि - सेवा करना, आश्रय करना)। **तव** = तुम्हारा (सर्वनाम)। **अयम्** = यह (सर्वनाम) **॥ 2 ॥**

316. आशीः नः ऊर्जम् उत सौप्रजाः-त्वम्,
दक्षम् धत्तम् द्रविणम् स-चेतसौ।
जयम् क्षेत्राणि सहसा अयम् इन्द्र,
कृण्वानः अन्यान् अधरान् स-पत्नान् ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - **आशीः** = तीव्र गति युक्त, व्यापक **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा **ऊर्जम्** = ऊर्जा को **उत** = ही, भी, ओर **सौप्रजाः-त्वम्** = सौप्रजा वाले **दक्षम्** = दक्ष को **धत्तम्** = धारण, पोषण को **द्रविणम्** = द्रविण को, प्रवाही, प्रगतिशील, द्रवणशील, वेगवान् को, प्रवाहमान को **स-चेतसौ** = समान चित्त वाले **जयम्** = जय को, विजय करे **क्षेत्राणि** = क्षेत्रों को **सहसा** = सहः के लिए, सक्षम के लिए, समर्थ के लिए, तृप्त के लिए, सन्तुष्ट के लिए **अयम्** = यह **इन्द्र** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान **कृण्वानः** = करने वाला, करते हुए **अन्यान्** = अन्यों को **अधरान्** = अधरों को, जय को, धारण न करने को (अधर् - न्यून करना, जीतना, निम्न गति करना, अ - नहीं, धृ - धारण करना)। **स-पत्नान्** = सपत्नों को, ऐश्वर्यवान को (स - सहित, साथ। पत् = जाना, उड़ना, पतन होना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना) **॥ 3 ॥**

पदार्थ - **आशीः** = तीव्र गति युक्त, व्यापक (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, अश् = भोजन करना)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **ऊर्जम्** = ऊर्जा को (ऊर्ज् = प्राण होना, चेतन होना, बल होना, ऊर्जा होना, शक्तिमान होना, पराक्रमी होना, चलना, जाना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **सौप्रजाः-त्वम्** = सौप्रजा वाले (सु - अच्छा, सुन्दर, सु = उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, सींचना, प्र - प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न करना, त्वम् = तुम (सर्वनाम))। **दक्षम्** = दक्ष को (दक्ष् - बढ़ना, समृद्ध होना, शीघ्र कार्य करना, चतुर होना, दक्ष होना, चलना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मार डालना)। **धत्तम्** = धारण, पोषण को (धा = धारण, पोषण, रक्षण, दान करना)। **द्रविणम्** = द्रविण को, प्रवाही, प्रगतिशील, द्रवणशील,

वेगवान् को, प्रवाहमान को (द्रु - पिघलना, बहना, चलना, जाना, जानना, पाना, अनुसरण करना)। **स-चेतसौ =** समान चित्त वाले (चित - विचार करना, चिन्तन करना, स्मरण करना)। **जयम् =** जय को, विजय करे (जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सबसे बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)। **क्षेत्राणि =** क्षेत्रों को (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)। **सहसा =** सहः के लिए, सक्षम के लिए, समर्थ के लिए, तृप्त के लिए, सन्तुष्ट के लिए (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)। **अयम् =** यह (सर्वनाम)। **इन्द्र =** इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **कृण्वानः =** करने वाला, करते हुए (कृ = करना)। **अन्यान् =** अन्यों को (सर्वनाम)। **अधरान् =** अधरों को, जय को, धारण न करने को (अधर् - न्यून करना, जीतना, निम्न गति करना, अ - नहीं, धृ - धारण करना)। **स-पत्नान् =** सपत्नों को, ऐश्वर्यवान को (स - सहित, साथ। पत् = जाना, उड़ना, पतन होना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना) **॥ 3 ॥**

317. इन्द्रेण दत्तः वरुणेन शिष्टः,
मरुत्-भिः उग्रः प्र-हितः नः आ अगन्।
एषः वाम् द्यावापृथिवी,
उपस्थे मा क्षुधत् मा तृषत् ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - **इन्द्रेण =** इन्द्र द्वारा, परम ऐश्वर्य द्वारा **दत्तः =** देने वाला **वरुणेन =** वरुण द्वारा, वरण के द्वारा **शिष्टः =** शिष्ट, प्रयोजन वाला, अनुशासन वाला **मरुत्-भिः =** मरणशीलों द्वारा, मरुतों द्वारा **उग्रः =** उग्र, वक्तागण, समूह, सम्बन्धी **प्र-हितः =** प्रहित वाला, प्रकृष्ट हित, प्रकृष्ट वृद्धि वाला **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **अगन् =** गये, गतिमान **एषः =** यह **वाम् =** तुम दोनों को **द्यावापृथिवी =** अग्रगामी विस्तार, प्रकाश, द्यावा और पृथिवी **उपस्थे =** उपस्थ में, सनिकट, समीप स्थित में **मा =** नहीं, मत **क्षुधत् =** गतिशील, शब्दकर्ता, चूर्ण, लघु, सूक्ष्म **मा =** नहीं, मत **तृषत् =** प्यास, इच्छा **॥ 4 ॥**

पदार्थ - **इन्द्रेण =** इन्द्र द्वारा, परम ऐश्वर्य द्वारा (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **दत्तः =** देने वाला (दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)। **वरुणेन =** वरुण द्वारा, वरण के द्वारा (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **शिष्टः =** शिष्ट, प्रयोजन वाला, अनुशासन वाला (शिष् - प्रयोजन करना, शेष रखना, अनुशासन करना, आशीर्वाद देना, हिंसा करना)। **मरुत्-भिः =** मरणशीलों द्वारा, मरुतों द्वारा (मृ = मरना, देहत्याग करना)। **उग्रः =** उग्र, वक्तागण, समूह, सम्बन्धी (उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना)। **प्र-हितः =** प्रहित वाला, प्रकृष्ट हित, प्रकृष्ट वृद्धि वाला (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, हि - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **अगन् =** गये, गतिमान (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, गम् - जाना, अग् = जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, गति करना, घूमना, कुटिल गति करना, टेढ़ा जाना, लेना, ग्रहण करना)। **एषः =** यह (सर्वनाम)। **वाम् =** तुम दोनों को (सर्वनाम)। **द्यावापृथिवी =** अग्रगामी विस्तार, प्रकाश, द्यावा और पृथिवी (द्यु - आगे जाना, समीप जाना, द्युत् -दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, द्यै = तिरस्कार करना, पृथु = विस्तार होना, फेंकना, उड़ाना, भेजना, प्रेरणा करना)। **उपस्थे =** उपस्थ में, सनिकट, समीप स्थित में (उप = समीप, स्थ = स्थित)। **मा =** नहीं, मत (अव्यय)। **क्षुधत् =** गतिशील, शब्दकर्ता, चूर्ण, लघु, सूक्ष्म (क्षु - जाना, जानना, पाना, शब्द करना, क्षुद् - चूर्ण करना, कूटना, पीसना)। **मा =** नहीं, मत (अव्यय)। **तृषत् =** प्यास, इच्छा (तृष् = तृषा होना, प्यासा होना, इच्छा करना, चाहना) **॥ 4 ॥**

318. ऊर्जम् अस्मै ऊर्जस्वती धत्तम्,
पयः अस्मै पयस्वती धत्तम्।
ऊर्जम् अस्मै द्यावापृथिवी अधाताम्,

विश्वे देवाः मरुतः ऊर्जम् आपः ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ - **ऊर्जम्** = ऊर्जा को **अस्मै** = इसके लिए, हमको, हमारे लिए **ऊर्जस्वती** = ऊर्जायुक्त, ऊर्जावान् **धत्तम्** = धारण, पोषण को **पयः** = ज्ञान, रक्षण, गतिशील, प्रवाहमान, प्रवाहपूर्ण **अस्मै** = इसके लिए, हमको, हमारे लिए **पयस्वती** = विस्तृत, विस्तारयुक्त, गतिशील, प्रवाहमान **धत्तम्** = धारण, पोषण को **ऊर्जम्** = ऊर्जा को **अस्मै** = इसके लिए, हमको, हमारे लिए **द्यावापृथिवी** = अग्रगामी विस्तार, प्रकाश, द्यावा और पृथिवी **अधाताम्** = धारण किया **विश्वे** = सभी **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने **मरुतः** = मरणशील का, मरुत् का **ऊर्जम्** = ऊर्जा को **आपः** = आप, व्याप्त, व्यापक ॥ 5 ॥

पदार्थ - **ऊर्जम्** = ऊर्जा को (ऊर्ज् = प्राण होना, चेतन होना, बल होना, ऊर्जा होना, शक्तिमान होना, पराक्रमी होना, चलना, जाना)। **अस्मै** = इसके लिए, हमको, हमारे लिए (सर्वनाम)। **ऊर्जस्वती** = ऊर्जायुक्त, ऊर्जावान् (ऊर्ज् = प्राण होना, चेतन होना, बल होना, ऊर्जा होना, शक्तिमान होना, पराक्रमी होना, चलना, जाना)। **धत्तम्** = धारण, पोषण को (धा = धारण, पोषण, रक्षण, दान करना)। **पयः** = ज्ञान, रक्षण, गतिशील, प्रवाहमान, प्रवाहपूर्ण (पय् - गति करना, रक्षण करना, ज्ञान, गमन, प्राप्ति करना, पि - जाना, जानना, पाना, पा- पालन करना, रक्षा करना)। **अस्मै** = इसके लिए, हमको, हमारे लिए (सर्वनाम)। **पयस्वती** = विस्तृत, विस्तारयुक्त, गतिशील, प्रवाहमान (पय् = जाना, जानना, पाना, बहना, पयस् = विस्तार करना, फैलाना)। **धत्तम्** = धारण, पोषण को (धा = धारण, पोषण, रक्षण, दान करना)। **ऊर्जम्** = ऊर्जा को (ऊर्ज् = प्राण होना, चेतन होना, बल होना, ऊर्जा होना, शक्तिमान होना, पराक्रमी होना, चलना, जाना)। **अस्मै** = इसके लिए, हमको, हमारे लिए (सर्वनाम)। **द्यावापृथिवी** = अग्रगामी विस्तार, प्रकाश, द्यावा और पृथिवी (द्यु - आगे जाना, समीप जाना, द्युत् -दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, द्यै = तिरस्कार करना, पृथु = विस्तार होना, फेंकना, उड़ाना, भेजना, प्रेरणा करना)। **अधाताम्** = धारण किया (अधः = नीचे, अव्यय, धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)। **विश्वे** = सभी (सर्वनाम)। **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **मरुतः** = मरणशील का, मरुत् का (मृ = मरना, देहत्याग करना)। **ऊर्जम्** = ऊर्जा को (ऊर्ज् = प्राण होना, चेतन होना, बल होना, ऊर्जा होना, शक्तिमान होना, पराक्रमी होना, चलना, जाना)। **आपः** = आप, व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना) ॥ 5 ॥

319. शिवाभिः ते हृदयम् तर्पयामि,
अनमीवः मोदिषीष्ठाः सु-वर्चाः।
सवासिनौ पिबताम् मन्थम् एतम्,
अश्विनो रूपम् परिधाय मायाम् ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ - **शिवाभिः** = शिवों द्वारा, कल्याणकारियों द्वारा **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **हृदयम्** = हृदय को **तर्पयामि** = तृप्त करो **अनमीवः** = निरोगी, रोगमुक्त, शब्दहीन, निःशब्द **मोदिषीष्ठाः** = आनन्द दो **सु-वर्चाः** = सुन्दर तेजस्वी **सवासिनौ** = वासी को, निवास को **पिबताम्** = पियो, पान करें **मन्थम्** = मन्थन को **एतम्** = यह, इसको **अश्विनो** = अश्वी का, तीव्र गति युक्त, व्यापक का **रूपम्** = रचना, आकार, रूप को **परिधाय** = परिधि के लिए **मायाम्** = माया को ॥ 6 ॥

पदार्थ - **शिवाभिः** = शिवों द्वारा, कल्याणकारियों द्वारा (शिव् - कल्याण करना, शि - तीक्ष्ण करना, पैना करना, पतला करना, सुनना, शी = सोना, शयन करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **हृदयम्** = हृदय को (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)। **तर्पयामि** = तृप्त करो (तृप् = तृप्त होना, तृप्त करना)। **अनमीवः** = निरोगी, रोगमुक्त, शब्दहीन, निःशब्द (अन् - नहीं, अम् - गति करना, जानना, जाना, पाना, शब्द करना, खाना, सेवा करना, रोग होना)। **मोदिषीष्ठाः** = आनन्द दो (मुद् = आनन्द होना, एकत्र करना)। **सु-वर्चाः** = सुन्दर तेजस्वी (सु - अच्छा, सुन्दर, वर्च -प्रकाशित होना, चमकना)। **सवासिनौ** = वासी को, निवास को (स = सहित, साथ (उपसर्ग), वस् = रहना, निवास करना)। **पिबताम्** = पियो, पान करें (पी-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण

करना)। **मन्थम्** = मन्थन को (मन्थ = बिलोना, मथना, पीड़ा देना, हिंसा करना)। **एतम्** = यह, इसको (सर्वनाम)। **अश्विनो** = अश्वी का, तीव्र गति युक्त, व्यापक का (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)। **रूपम्** = रचना, आकार, रूप को (रूप - बनाना, आकार बनाना, रचना करना, मन में रुपाकृति लाना)। **परिधाय** = परिधि के लिए (परि = सभी ओर, उपसर्ग, धा = धारण करना)। **मायाम्** = माया को (मय् - जाना, क्लिष्ट कार्य करना, मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना) ॥ 6 ॥

320. इन्द्रः एताम् ससृजे विद्धः अग्रे ऊर्जाम्,
स्वधाम् अजराम् सा ते एषा।
तया त्वम् जीव शरदः सुवर्चाः,
मा ते आ सुस्रोत् भिषजः ते अक्रन् ॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ - **इन्द्रः** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान **एताम्** = इनको, ये **ससृजे** = सृजन किया **विद्धः** = विद्ध, विद्वान् **अग्रे** = अग्र, आगे, पहले **ऊर्जाम्** = ऊर्जा, बल, प्राण, चेतना को **स्वधाम्** = स्वधा को **अजराम्** = अजरा को, जरा-हीन को **सा** = वह **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **एषा** = यह **तया** = उसके द्वारा **त्वम्** = तुम **जीव** = जीव **शरदः** = शरद् **सुवर्चाः** = सुन्दर तेजस्वी **मा** = नहीं, मत **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **सुस्रोत्** = उत्तम अभिसिञ्चित, स्रवित **भिषजः** = चिकित्सक **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **अक्रन्** = किया ॥ 7 ॥

पदार्थ - **इन्द्रः** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **एताम्** = इनको, ये (सर्वनाम)। **ससृजे** = सृजन किया (सृज् - छोड़ना, त्याग करना, विविध रूप से उत्पन्न करना, सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना)। **विद्धः** = विद्ध, विद्वान् (विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना, दा - देना)। **अग्रे** = अग्र, आगे, पहले (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **ऊर्जाम्** = ऊर्जा, बल, प्राण, चेतना को (ऊर्ज् = प्राण होना, चेतन होना, बल होना, ऊर्जा होना, शक्तिमान होना, पराक्रमी होना, चलना, जाना)। **स्वधाम्** = स्वधा को (स्व = निज, अपना, धा = धारण करना, पहनना, पोषण करना, रक्षण करना, धि - पास रखना या होना, युक्त होना)। **अजराम्** = अजरा को, जरा-हीन को (अ = नहीं, जृ - जीर्ण होना, वृद्ध होना)। **सा** = वह (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **एषा** = यह (सर्वनाम)। **तया** = उसके द्वारा (सर्वनाम)। **त्वम्** = तुम (सर्वनाम)। **जीव** = जीव (जीव् - जीवन होना, प्राणवान् होना, प्राण धारण करना, जीवन धारण करना)। **शरदः** = शरद् (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मारना, श्रि - सेवा करना, आश्रय करना)। **सुवर्चाः** = सुन्दर तेजस्वी (सु - अच्छा, सुन्दर, वर्च -प्रकाशित होना, चमकना)। **मा** = नहीं, मत (अव्यय)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **सुस्रोत्** = उत्तम अभिसिञ्चित, स्रवित (सु - उत्तम, अच्छा, स्रु = जाना, जानना, पाना, सृ - जाना, सरकना, बहना, टपकना)। **भिषजः** = चिकित्सक (भिषज - चिकित्सा करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **अक्रन्** = किया (अ = नहीं, उपसर्ग, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, कृ = करना) ॥ 7 ॥

65 कामिनी-मनो-अभिमुखीकरण सूक्त - 4 (30)

321. यथा इदम् भूम्याः अधि,
तृणम् वातः मथायति।
एव मथ्नामि ते मनः,
यथा माम् कामिनी असः,
यथा मत् न अपगाः असः ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार **इदम्** = यह, इसको **भूम्याः** = भूमि का, भूम्य, उत्पन्न योग्य **अधि**

= अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार **तृणम्** = अंकुर, तृण, घास, शब्द को **वातः** = वात, वायु के समान तीव्र गति वाले **मथायति** = मथता है **एव** = ही **मथ्नामि** = मथता हूँ **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **मनः** = मन **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार **माम्** = मुझको **कामिनी** = कामिनी, इच्छा करने वाली **असः** = हो **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार **मत्** = मुझसे **न** = नहीं, समान, उपमार्थक **अपगाः** = अपगामी, दूर जाने वाले **असः** = हो **॥ 1 ॥**

पदार्थ - **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार (अव्यय)। **इदम्** = यह, इसको (सर्वनाम)। **भूम्याः** = भूमि का, भूम्य, उत्पन्न योग्य (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **तृणम्** = अंकुर, तृण, घास, शब्द को (तृण् - घास चरना, खाना, शब्द करना, अंकुरित होना)। **वातः** = वात, वायु के समान तीव्र गति वाले (वात - सुखी होना, आनन्द करना, सेवा करना, जाना, वा - गति करना, बहना, पवन की भाँति चलना)। **मथायति** = मथता है (मथ् - मथना, विलोडन करना, विचार करना)। **एव** = ही (अव्यय)। **मथ्नामि** = मथता हूँ (मथ् - मथना, विलोडन करना, विचार करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **मनः** = मन (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार (अव्यय)। **माम्** = मुझको (सर्वनाम)। **कामिनी** = कामिनी, इच्छा करने वाली (कम - चाहना, इच्छा करना)। **असः** = हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार (अव्यय)। **मत्** = मुझसे (सर्वनाम)। **न** = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **अपगाः** = अपगामी, दूर जाने वाले (अप = दूर, नीचे, अपकार, गम् - जाना, जानना, पाना)। **असः** = हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना) **॥ 1 ॥**

322. सम् च इत् नयाथः अश्विना,
कामिना सम् च वक्षथः।
सम् वाम् भगासो अग्मत,
सम् चित्तानि सम् उ व्रता ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **च** = और **इत्** = ही **नयाथः** = ले जाओ **अश्विना** = अश्विन् द्वारा, तीव्र गति युक्त, व्यापक द्वारा **कामिना** = कामिनी, इच्छा करने वाली **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **च** = और **वक्षथः** = रक्षा करो, पालन करो **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **वाम्** = तुम दोनों को **भगासो** = सेवक, दानी **अग्मत** = गये, पाया, प्राप्त हुए **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **चित्तानि** = चित्त या चेतना, ज्ञान **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **उ** = निश्चय ही, भी **व्रता** = व्रत वाला **॥ 2 ॥**

पदार्थ - **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **च** = और (अव्यय)। **इत्** = ही (अव्यय)। **नयाथः** = ले जाओ (नी = ले जाना)। **अश्विना** = अश्विन् द्वारा, तीव्र गति युक्त, व्यापक द्वारा (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)। **कामिना** = कामिनी, इच्छा करने वाली (कम - चाहना, इच्छा करना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **च** = और (अव्यय)। **वक्षथः** = रक्षा करो, पालन करो (वक्ष = क्रोध करना, बटोरना, ढेर करना। वक्ष = पालन करना, रक्षा करना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **वाम्** = तुम दोनों को (सर्वनाम)। **भगासो** = सेवक, दानी (भग्-भज् = सेवा करना, सेवन करना, सेवित होना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)। **अग्मत** = गये, पाया, प्राप्त हुए (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अग् = जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, गति करना, घूमना, कुटिल गति करना, टेढ़ा जाना, लेना, ग्रहण करना, गम् = जाना, जानना, पाना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **चित्तानि** = चित्त या चेतना, ज्ञान (चि - चुनना, एकत्र करना, चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, सम्यक् ज्ञान होना, स्मरण करना, शंका करना, सन्देह करना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **उ** = निश्चय ही, भी (निपात, अव्यय)। **व्रता**

= व्रत वाला (वृत् = रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ = नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना) ॥ 2 ॥

323. यत् सु-पर्णाः विवक्षवः,
अनमीवाः विवक्षवः ।
यत् मे गच्छतात् हवम्,
शल्यः इव कुल्मलम् यथा ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - **यत्** = जिसे, जो **सु-पर्णाः** = सुपर्ण, उत्तम पर्ण वाले **विवक्षवः** = विवक्षा की, विशेष क्रोध, एकत्र, पालन-रक्षण किया **अनमीवाः** = निरोगी, रोगमुक्त, शब्दहीन, निःशब्द **विवक्षवः** = विवक्षा की, विशेष क्रोध, एकत्र, पालन-रक्षण किया **यत्** = जिसे, जो **मे** = मेरा, मेरे लिए **गच्छतात्** = जाओ **हवम्** = दान को, आह्वान को, दान करने योग्य, लेने योग्य, तृप्त करने योग्य **शल्यः** = शल्य, गति, स्तुति वाला **इव** = समान, की भाँति, के समान **कुल्मलम्** = कुत्सित धारणा को **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार ॥ 3 ॥

पदार्थ - **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **सु-पर्णाः** = सुपर्ण, उत्तम पर्ण वाले (सु - उत्तम, श्रेष्ठ, पर्ण - हरा करना, हरा होना, पृ - पूर्ण करना, भरना)। **विवक्षवः** = विवक्षा की, विशेष क्रोध, एकत्र, पालन-रक्षण किया (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग), वक्ष = क्रोध करना, बटोरना, ढेर करना, वक्ष = पालन करना, रक्षा करना)। **अनमीवाः** = निरोगी, रोगमुक्त, शब्दहीन, निःशब्द (अन् - नहीं, अम् - गति करना, जानना, जाना, पाना, शब्द करना, खाना, सेवा करना, रोग होना)। **विवक्षवः** = विवक्षा की, विशेष क्रोध, एकत्र, पालन-रक्षण किया (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग), वक्ष = क्रोध करना, बटोरना, ढेर करना, वक्ष = पालन करना, रक्षा करना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **मे** = मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **गच्छतात्** = जाओ (गम्-गच्छ् = जाना)। **हवम्** = दान को, आह्वान को, दान करने योग्य, लेने योग्य, तृप्त करने योग्य (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **शल्यः** = शल्य, गति, स्तुति वाला (शल् - गति करना, जाना, जानना, पाना, चुभना, विस्मरण होना, प्रशंसा करना, स्तुति करना)। **इव** = समान, की भाँति, के समान (अव्यय)। **कुल्मलम्** = कुत्सित धारणा को (कु - कुत्सित, अनुचित (उपसर्ग), मल = धारण करना, घर्षण करना)। **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार (अव्यय) ॥ 3 ॥

324. यत् अन्तरम् यत् बाह्यम्,
यत् बाह्यम् तत् अन्तरम् ।
कन्यानाम् विश्व-रूपाणाम्,
मनः गृभाय ओषधे ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - **यत्** = जिसे, जो **अन्तरम्** = प्राणवान् को, अन्तर को, भीतर को **यत्** = जिसे, जो **बाह्यम्** = बाह्य को, बाहर को **यत्** = जिसे, जो **बाह्यम्** = बाह्य को, बाहर को **तत्** = वह, उस को **अन्तरम्** = प्राणवान् को, अन्तर को, भीतर को **कन्यानाम्** = कन्याओं का, प्रकाशयोग्यों का **विश्व-रूपाणाम्** = विश्वरूपों का **मनः** = मन **गृभाय** = गृभ के लिए, ग्रहण करने वाले, वाणी, बोध, अभिसिंचन करने वाले के लिए **ओषधे** = हे ओषधि ॥ 4 ॥

पदार्थ - **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **अन्तरम्** = प्राणवान् को, अन्तर को, भीतर को (अन् = प्राणवान् होना, अन्त् - बाँधना, हिंसा करना, चलना, अन्तर, भीतर, इतर, अन्य (अव्यय))। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **बाह्यम्** = बाह्य को, बाहर को (बाह् - प्रयास करना, बह् - बहना, गति करना, बाहर होना, परे हो जाना, हिंसा करना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **बाह्यम्** = बाह्य को, बाहर को (बाह् - प्रयास करना, बह् - बहना, गति करना, बाहर होना, परे हो जाना, हिंसा करना)। **तत्** = वह, उस को (सर्वनाम)। **अन्तरम्** = प्राणवान् को, अन्तर को, भीतर को (अन् = प्राणवान् होना, अन्त् - बाँधना, हिंसा करना, चलना, अन्तर, भीतर, इतर, अन्य (अव्यय))। **कन्यानाम्** = कन्याओं का, प्रकाशयोग्यों का (कन् - व्याप्त होना, प्रकाश करना, प्रीति करना, तृप्त होना, जाना, जानना, पाना, चाहना)। **विश्व-रूपाणाम्** = विश्वरूपों का (विश्व

- सब कुछ, रूप - आकार बनाना, रचना करना)। **मनः =** मन (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **गृभाय =** गृभ के लिए, ग्रहण करने वाले, वाणी, बोध, अभिसिंचन करने वाले के लिए (गृह् - ग्रहण करना, लेना, स्वीकार करना, निवास करना, गृ = सींचना, गीला करना, घर्षण करना, जानना, समझना, खाना, निगलना, शब्द करना, गृभ्-गर्भ् - ग्रहण करना, लेना, अन्दर होना, अन्तःवास करना)। **ओषधे =** हे ओषधि (उषध्-ओषध् - चिकित्सा करना, रोगमुक्त करना) **॥ 4 ॥**

325. आ इयम् अगन् पति-कामा,
जनि-कामः अहम् आ अगमम्।
अश्वः कनिक्रदत् यथा भगेन,
अहम् सह आ अगमम् ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ - **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **इयम् =** यह, इसको **अगन् =** गये, गतिमान **पति-कामा =** ऐश्वर्यवान्-कामना, स्वामी-कामना **जनि-कामः =** जन-काम वाला, जन की कामना वाला **अहम् =** मैं **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **अगमम् =** गये, अगम को **अश्वः =** अश्व, तीव्र गति युक्त, व्यापक **कनिक्रदत् =** प्रकाश करते हुए, व्याप्त होते हुए **यथा =** जिससे, जैसे, जिस प्रकार **भगेन =** सेवनीय, सेवायोग्य द्वारा **अहम् =** मैं **सह =** साथ, सहित **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **अगमम् =** गये, अगम को **॥ 5 ॥**

पदार्थ - **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **इयम् =** यह, इसको (सर्वनाम)। **अगन् =** गये, गतिमान (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, गम् - जाना, अग् = जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, गति करना, घूमना, कुटिल गति करना, टेढ़ा जाना, लेना, ग्रहण करना)। **पति-कामा =** ऐश्वर्यवान्-कामना, स्वामी-कामना (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना, कम - चाहना, इच्छा करना)। **जनि-कामः =** जन-काम वाला, जन की कामना वाला (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना, कम - चाहना, इच्छा करना)। **अहम् =** मैं (सर्वनाम)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **अगमम् =** गये, अगम को (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अग् = जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, गति करना, घूमना, कुटिल गति करना, टेढ़ा जाना, लेना, ग्रहण करना, गम् = जाना, जानना, पाना)। **अश्वः =** अश्व, तीव्र गति युक्त, व्यापक (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)। **कनिक्रदत् =** प्रकाश करते हुए, व्याप्त होते हुए (कन् - व्याप्त होना, प्रकाश करना, प्रीति करना, जाना, जानना, पाना, क्रन्द - पुकारना, जोर से बुलाना, रोना, क्रन्द - घबराना, दुःखी होना, क्रन्द - निरन्तर होना, बुलाना, पुकारना, कृ - करना)। **यथा =** जिससे, जैसे, जिस प्रकार (अव्यय)। **भगेन =** सेवनीय, सेवायोग्य द्वारा (भग्-भज् = सेवा करना, सेवन करना, सेवित होना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)। **अहम् =** मैं (सर्वनाम)। **सह =** साथ, सहित (सर्वनाम)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **अगमम् =** गये, अगम को (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अग् = जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, गति करना, घूमना, कुटिल गति करना, टेढ़ा जाना, लेना, ग्रहण करना, गम् = जाना, जानना, पाना) **॥ 5 ॥**

66 कृमिजम्भन सूक्त - 5 (31)

326. इन्द्रस्य या मही दृषत्,
क्रिमेः विश्वस्य तर्हणी।
तया पिनष्मि सम् क्रिमीन्,
दृषदा खल्वान् इव ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - **इन्द्रस्य =** इन्द्र का, परम ऐश्वर्यशाली का **या =** जो **मही =** मही, महिमावान्, महान् **दृषत् =** देखते

हुए, देखता है **क्रिमेः** = कृमियों **विश्वस्य** = विश्व का, सभी का **तर्हणी** = तर्हणी, हिंसा करने वाली, दुःख देने वाली **तया** = उसके द्वारा **पिनष्मि** = पीसता हूँ **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **क्रिमीन्** = कृमियों को **दृषदा** = देखने वाला **खल्वान्** = खल्वान्, भ्रमणशील **इव** = समान, की भाँति, के समान **॥ 1 ॥**

पदार्थ - **इन्द्रस्य** = इन्द्र का, परम ऐश्वर्यशाली का (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **या** = जो (सर्वनाम)। **मही** = मही, महिमावान्, महान् (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना)। **दृषत्** = देखते हुए, देखता है (दृश्-पश्य -देखना)। **क्रिमेः** = कृमियों (कृ - करना)। **विश्वस्य** = विश्व का, सभी का (सर्वनाम)। **तर्हणी** = तर्हणी, हिंसा करने वाली, दुःख देने वाली (तृह् = मार डालना, दुःख देना)। **तया** = उसके द्वारा (सर्वनाम)। **पिनष्मि** = पीसता हूँ (पिनष्-पिष = चूर्ण करना, पीसना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **क्रिमीन्** = कृमियों को (कृ - करना)। **दृषदा** = देखने वाला (दृश्-पश्य -देखना)। **खल्वान्** = खल्वान्, भ्रमणशील (खल् - संचय करना, चलना, भ्रमण करना)। **इव** = समान, की भाँति, के समान (अव्यय) **॥ 1 ॥**

327. दृष्टम् अदृष्टम् अतृहम्,
अथो कुरूरुम् अतृहम्।
अल्गण्डून् सर्वान् शलुनान्,
क्रिमीन् वचसा जम्भयामसि ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - **दृष्टम्** = दृष्टि को **अदृष्टम्** = अदृष्टि को **अतृहम्** = अतृही, हिंसा न करने वाले को **अथो** = अब, इसके बाद, इसके अनन्तर **कुरूरुम्** = कृमियों को **अतृहम्** = अतृही, हिंसा न करने वाले को **अल्गण्डून्** = अल्गों को **सर्वान्** = सभी को **शलुनान्** = शलुनों द्वारा, प्रगतिशीलों द्वारा, स्तुतियों से **क्रिमीन्** = कृमियों को **वचसा** = वचन द्वारा **जम्भयामसि** = गर्व करता हुआ, नाश करता हुआ, आलस्य करता हुआ **॥ 2 ॥**

पदार्थ - **दृष्टम्** = दृष्टि को (दृश्-पश्य -देखना)। **अदृष्टम्** = अदृष्टि को (दृश्-पश्य -देखना)। **अतृहम्** = अतृही, हिंसा न करने वाले को (तृह् = मार डालना, दुःख देना)। **अथो** = अब, इसके बाद, इसके अनन्तर (अव्यय)। **कुरूरुम्** = कृमियों को (कृ- करना)। **अतृहम्** = अतृही, हिंसा न करने वाले को (तृह् = मार डालना, दुःख देना)। **अल्गण्डून्** = अल्गों को (अल् = समापन होना, पर्याप्त होना, शब्द करना, ध्वनि करना, सहन करना, समर्थ होना, भूषित करना, निवारण करना)। **सर्वान्** = सभी को (सर्वनाम)। **शलुनान्** = शलुनों द्वारा, प्रगतिशीलों द्वारा, स्तुतियों से (शल् - गति करना, जाना, जानना, पाना, चुभना, विस्मरण होना, श्लाघा करना, प्रशंसा करना, स्तुति करना)। **क्रिमीन्** = कृमियों को (कृ - करना)। **वचसा** = वचन द्वारा (वच् - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)। **जम्भयामसि** = गर्व करता हुआ, नाश करता हुआ, आलस्य करता हुआ (जम्भ् - नाश करना, गर्व करना, आलस्य होना) **॥ 2 ॥**

328. अल्गण्डून् हन्मि महता वधेन,
दूनाः अदूना अरसाः अभूवन्।
शिष्टान् अशिष्टान् नि तरामि वाचा,
यथा क्रिमीणाम् नकिः उत्-शिषातैः ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - **अल्गण्डून्** = अल्गों को **हन्मि** = मारता हूँ **महता** = महान् **वधेन** = वध से, वध द्वारा **दूनाः** = दूना, जर्जर, पीड़ित **अदूना** = अदूना, जर्जर-हीन, पीड़ा-हीन **अरसाः** = अरसों, रसहीनों **अभूवन्** = हो जायें, हों **शिष्टान्** = शिष्टों को, प्रयोजनों को, अनुशासनों को **अशिष्टान्** = अशिष्टों को, अप्रयोजनों को, अनुशासन-हीनों को **नि** = निश्चित, निरन्तर **तरामि** = पार करता हूँ **वाचा** = वाणी से **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार **क्रिमीणाम्** = कृमियों का **नकिः** = नष्ट, विनाशक **उत्-शिषातैः** = शिषा करता हूँ, हिंसा करता हूँ **॥ 3 ॥**

पदार्थ - **अल्गण्डून्** = अल्गों को (अल् = समापन होना, पर्याप्त होना, शब्द करना, ध्वनि करना, सहन करना, समर्थ

होना, भूषित करना, निवारण करना)। **हन्मि =** मारता हूँ (हन् - मारना)। **महता =** महान् (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना)। **वधेन =** वध से, वध द्वारा (वध्-हन् = मारना)। **दूनाः** = दूना, जर्जर, पीड़ित (दू = दुःख में जर्जर होना, दुःख सहन करना, दुःख देना, पीड़ा करना)। **अदूना** = अदूना, जर्जर-हीन, पीड़ा-हीन (अ - नहीं, उपसर्ग, दू = दुःख में जर्जर होना, दुःख सहन करना, दुःख देना, पीड़ा करना)। **अरसाः =** अरसों, रसहीनों (अ - नहीं, रस् - स्वाद लेना, प्रीति करना, शब्द करना)। **अभूवन् =** हो जायें, हों (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **शिष्टान् =** शिष्टों को, प्रयोजनों को, अनुशासनों को (शिष् - प्रयोजन करना, शेष रखना, अनुशासन करना, आशीर्वाद देना, हिंसा करना)। **अशिष्टान् =** अशिष्टों को, अप्रयोजनों को, अनुशासन-हीनों को (अ = नहीं, शिष् - प्रयोजन करना, शेष रखना, अनुशासन करना, आशीर्वाद देना, हिंसा करना)। **नि =** निश्चित, निरन्तर (अव्यय)। **तरामि =** पार करता हूँ (तृ - पार जाना, पर तीर को जाना, जल पर तैरना, जीतना, जल के पार जाना)। **वाचा =** वाणी से (वच - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)। **यथा =** जिससे, जैसे, जिस प्रकार (अव्यय)। **क्रिमीणाम् =** कृमियों का (कृ - करना)। **नकिः =** नष्ट, विनाशक (नक् - नक्क् = नष्ट होना, नष्ट करना)। **उत्-शिषातैः =** शिषा करता हूँ, हिंसा करता हूँ (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, प्र - प्रकृष्ट, अधिक, शिष् - प्रयोजन करना, शेष रखना, अनुशासन करना, आशीर्वाद देना, हिंसा करना) **॥ 3 ॥**

329. अनु-आन्त्र्यम् शीर्षण्यम्,
अथो पार्ष्टेयम् क्रिमीन्।
अवस्कवम् वि-अध्वरम् क्रिमीन्,
वचसा जम्भयामसि ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - अनु-आन्त्र्यम् = अनु-जीवन को, अनु-श्वास को **शीर्षण्यम् =** शीर्षण्य को **अथो =** अब, इसके बाद, इसके अनन्तर **पार्ष्टेयम्** = बन्धन को, धारण को **क्रिमीन् =** कृमियों को **अवस्कवम् =** अवस्कव को **वि-अध्वरम् =** विशेष अध्वर, अहिंसक, अवर्णनीय को **क्रिमीन् =** कृमियों को **वचसा =** वचन द्वारा **जम्भयामसि =** गर्व करता हुआ, नाश करता हुआ, आलस्य करता हुआ **॥ 4 ॥**

पदार्थ - अनु-आन्त्र्यम् = अनु-जीवन को, अनु-श्वास को (अनु = अनुकूल, पश्चात्, अन् - प्राणवान् होना, जीवन होना, श्वास लेना)। **शीर्षण्यम् =** शीर्षण्य को (शीर्ष = शीर्ष होना, मुख्य होना, उच्च होना)। **अथो =** अब, इसके बाद, इसके अनन्तर (अव्यय)। **पार्ष्टेयम्** = बन्धन को, धारण को (पाष् = बांधना, फांस लगाना, धारण करना, सहना)। **क्रिमीन् =** कृमियों को (कृ - करना)। **अवस्कवम् =** अवस्कव को (अव = नीचे, दूर, प्राप्त (अव्यय), स्कु = कूदना, फुदकना, उड़ाना, ऊपर उठाना, आच्छादित करना, ढकना)। **वि-अध्वरम् =** विशेष अध्वर, अहिंसक, अवर्णनीय को (वि - विशेष, अ - नहीं, ध्वृ-ध्वर् = हिंसा करना, टेढ़ा करना, झुकाना, मार डालना, वर्णन करना)। **क्रिमीन् =** कृमियों को (कृ - करना)। **वचसा** = वचन द्वारा (वच् - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)। **जम्भयामसि =** गर्व करता हुआ, नाश करता हुआ, आलस्य करता हुआ (जम्भ् - नाश करना, गर्व करना, आलस्य होना) **॥ 4 ॥**

330. ये क्रिमयः पर्वतेषु वनेषु,
ओषधीषु पशुषु अप्सु अन्तः।
ये अस्माकम् तन्वम् आ-विविशुः,
सर्वम् तत् हन्मि जनिम क्रिमीणाम् ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ - ये = जो **क्रिमयः =** अनेक कृमि **पर्वतेषु =** पर्वतों में **वनेषु =** वाणी में, वनों में **ओषधीषु =** ओषधियों में **पशुषु =** पशुओं में दृष्टों में, बन्धनों में **अप्सु =** पालन-रक्षण में **अन्तः =** बीच में, भीतर **ये =** जो **अस्माकम् =** हमारा **तन्वम् =** तन्व को, विस्तार को **आ-विविशुः =** आ-प्रविशों में **सर्वम् =** सब **तत् =** वह, उस को **हन्मि =** मारता हूँ **जनिम**

= उत्पन्न, उत्पत्ति करें **क्रिमीणाम्** = कृमियों का ॥ **5** ॥

पदार्थ - **ये** = जो (सर्वनाम)। **क्रिमयः** = अनेक कृमि (कृ - करना)। **पर्वतेषु** = पर्वतों में (पर्व् - पूर्ण करना, पूरा करना, भरना, विभाग करना)। **वनेषु** = वाणी में, वनों में (वन - शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, आपद्ग्रस्त होना, अलग करना, मिलाना, स्मरण करना, बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, याचना करना, मांगना, दुःख देना, उद्योग-धन्धा करना)। **ओषधीषु** = ओषधियों में (उषध्-ओषध् = चिकित्सा करना, रोग मुक्त करना)। **पशुषु** = पशुओं में दृष्टों में, बन्धनों में (पश्-दृश् = देखना, पश - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना)। **अप्सु** = पालन-रक्षण में (अप = जाना, जानना, पाना, पालन करना)। **अन्तः** = बीच में, भीतर (उपसर्ग, सर्वनाम)। **ये** = जो (सर्वनाम)। **अस्माकम्** = हमारा (सर्वनाम)। **तन्वम्** = तन्व को, विस्तार को (तन् = विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना)। **आ-विविशुः** = आ-प्रविशों में (आ- समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, वि - विशेष, विश् = प्रवेश करना, फैलना)। **सर्वम्** = सब (सर्वनाम)। **तत्** = वह, उस को (सर्वनाम)। **हन्मि** = मारता हूँ (हन् - मारना)। **जनिम** = उत्पन्न, उत्पत्ति करें (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **क्रिमीणाम्** = कृमियों का (कृ - करना) ॥ **5** ॥

12 अनुवाक - 6

67 कृमिनाशन सूक्त - 1 (32)

331. उदयन् आदित्यः क्रिमीन् हन्तु,
निम्रोचन् हन्तु रश्मिभिः।
ये अन्तः क्रिमयः गवि ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ :- **उदयन्** = उदय होता हुआ **आदित्यः** = अदिति से उत्पन्न, अक्षय-अविनाशी से उत्पन्न **क्रिमीन्** = कृमियों को **हन्तु** = मारो **निम्रोचन्** = गतिशील हुआ **हन्तु** = मारो **रश्मिभिः** = किरणों से **ये** = जो **अन्तः** = बीच में, भीतर **क्रिमयः** = कृमि **गवि** = वाणी, ज्ञान में ॥ **1** ॥

पदार्थ :- **उदयन्** = उदय होता हुआ (उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, यत - यत्न करना, उद्योग करना, निश्चय करना, ठहराना)। **आदित्यः** = अदिति से उत्पन्न, अक्षय-अविनाशी से उत्पन्न (अ - नहीं, अद् - खाना, नष्ट करना, दी = क्षय होना, नष्ट होना)। **क्रिमीन्** = कृमियों को (कृ - करना)। **हन्तु** = मारो (हन् - मारना)। **निम्रोचन्** = गतिशील हुआ (नि - निश्चित, नितराम्, निरन्तर, म्रुच् - जाना, स्थानान्तर करना)। **हन्तु** = मारो (हन् - मारना)। **रश्मिभिः** = किरणों से (रश् - विकिरण होना, किरण निकलना)। **ये** = जो (सर्वनाम)। **अन्तः** = बीच में, भीतर (उपसर्ग, सर्वनाम)। **क्रिमयः** = कृमि (कृ - करना)। **गवि** = वाणी, ज्ञान में (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, गम् = जाना, जानना, पाना) ॥ **1** ॥

332. विश्व-रूपम् चतुः अक्षम्,
क्रिमिम् सारङ्गम् अर्जुनम्।
शृणामि अस्य पृष्टीः,
अपि वृश्चामि यत् शिरः ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - **विश्व-रूपम्** = विश्वरूप को **चतुः** = चार **अक्षम्** = अक्ष को, खेल, क्रीडा, दृष्टि, एकत्रीकरण, समूह, व्यापक को **क्रिमिम्** = कृमियों को **सारङ्गम्** = सारङ्ग को, वीर विद्वान् को **अर्जुनम्** = अजुन को **शृणामि** = शृणों को **अस्य** = इसका **पृष्टीः,** = पृष्टी, अभिसिञ्चिक, पूछने वाला **अपि** = भी, निकट **वृश्चामि** = काटता हूँ, छेदता हूँ **यत्** = जिसे, जो **शिरः** = शिर, सुनने वाला, तीक्ष्ण, कल्याणकारी ॥ **2** ॥

पदार्थ - **विश्व-रूपम्** = विश्वरूप को (विश्व - सब कुछ, रूप - आकार बनाना, रचना करना)। **चतुः** = चार (संख्या)। **अक्षम्** = अक्ष को, खेल, क्रीडा, दृष्टि, एकत्रीकरण, समूह, व्यापक को (अक्ष - खेलना, देखना, एकत्र होना, व्याप्त होना, इच्छितार्थ होना, पैठना)। **क्रिमिम्** = कृमियों को (कृ - करना)। **सारङ्गम्** = सारङ्ग को, वीर विद्वान् को (स - सहित, साथ, ऋ-अर् = जाना, जानना, पाना, महत्व दिखाना, शब्द करना, ध्वनि करना, हिंसा करना, सार् = अधिक बल होना, दुर्बल होना, गम् = जाना, जानना, पाना)। **अर्जुनम्** = अजुन को (अर्ज - लाभ करना, प्राप्त करना, पाना)। **शृणामि** = शृणों को (शृ = मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना)। **अस्य** = इसका (सर्वनाम)। **पृष्टीः,** = पृष्टी, अभिसिञ्चिक, पूछने वाला (पृश्-पृच्छ - पूछना, जानने की इच्छा करना, प्रश्न करना, पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सींचना, सहन करना)। **अपि** = भी, निकट (अव्यय)। **वृश्चामि** = काटता हूँ, छेदता हूँ (व्रश्च = कतरना, छेद करना, रेतना, छीलना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **शिरः** = शिर, सुनने वाला, तीक्ष्ण, कल्याणकाारी (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, शि = तेज करना, तीक्ष्ण करना, कल्याण करना) **॥ 2 ॥**

333. अत्रि-वत् वः क्रिमयः,
हन्मि कण्ववत् जमदग्निवत्।
अगस्त्यस्य ब्रह्मणा,
सम् पिनष्मि अहम् क्रिमीन्॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - **अत्रि-वत्** = अत्रि के समान, सतत गमनशील, जानने वाला के समान **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **क्रिमयः** = कृमि **हन्मि** = मारता हूँ **कण्ववत्** = कण्व के समान **जमदग्निवत्** = अग्नि-भोज युक्त, अग्नि-भोज के समान **अगस्त्यस्य** = अगस्त्य का, अगमनीय का **ब्रह्मणा** = ब्रह्म द्वारा **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **पिनष्मि** = पीसता हूँ **अहम्** = मैं **क्रिमीन्** = कृमियों को **॥ 3 ॥**

पदार्थ - **अत्रि-वत्** = अत्रि के समान, सतत गमनशील, जानने वाला के समान (अत् = सतत गति होना, जानना, पाना)। **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **क्रिमयः** = कृमि (कृ - करना)। **हन्मि** = मारता हूँ (हन् - मारना)। **कण्ववत्** = कण्व के समान (कण् - शब्द करना, लघु होना, कण बनाना)। **जमदग्निवत्** = अग्नि-भोज युक्त, अग्नि-भोज के समान (जम् = खाना, निगलना, अग् = ऊर्ध्व गति करना, अग्रणी होना, तेजस्वी होना, चमकना, जानना, पहुंचना, पाना)। **अगस्त्यस्य** = अगस्त्य का, अगमनीय का (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अग् = जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, गति करना, घूमना, कुटिल गति करना, टेढ़ा जाना, लेना, ग्रहण करना, गम् = जाना, जानना, पाना)। **ब्रह्मणा** = ब्रह्म द्वारा (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **पिनष्मि** = पीसता हूँ (पिनष्-पिष = चूर्ण करना, पीसना)। **अहम्** = मैं (सर्वनाम)। **क्रिमीन्** = कृमियों को (कृ - करना) **॥ 3 ॥**

334. हतः राजा क्रिमीणाम्,
उत एषाम् स्थपतिः हतः।
हतः हत-माता क्रिमिः,
हत-भ्राता हत-स्वसा॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - **हतः** = मारा गया **राजा** = राजा **क्रिमीणाम्** = कृमियों का **उत** = ही, भी, ओर **एषाम्** = इनका **स्थपतिः** = स्थपति, ऐश्वर्य-पति **हतः** = मारा गया **हतः** = मारा गया **हत-माता** = हत-माता **क्रिमिः** = कृमि **हत-भ्राता** = हत-भ्राता **हत-स्वसा** = हत-स्वसा **॥ 4 ॥**

पदार्थ - **हतः** = मारा गया (हन् - मारना)। **राजा** = राजा (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **क्रिमीणाम्** = कृमियों का (कृ - करना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **एषाम्** = इनका (सर्वनाम)। **स्थपतिः** = स्थपति, ऐश्वर्य-पति (स्था - स्थित होना, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **हतः**

= मारा गया (हन् - मारना)। **हतः** = मारा गया (हन् - मारना)। **हत-माता** = हत-माता (हन् - मारना, मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना)। **क्रिमिः** = कृमि (कृ - करना)। **हत-भ्राता** = हत-भ्राता (हन् - मारना, भृ = भरण करना)। **हत-स्वसा** = हत-स्वसा (हन् - मारना, सू- ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, पराक्रम होना) ॥ 4 ॥

335. हतासः अस्य वेशसः,
हतासः परि-वेशसः।
अथो ये क्षुल्लकाः इव,
सर्वे ते क्रिमयः हताः ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ - **हतासः** = हतास, मारे गये **अस्य** = इसका **वेशसः** = वेशस, सूचना, प्रेरणा, प्रवेश करने वाला **हतासः** = हतास, मारे गये **परि-वेशसः** = परिवेश, सूचना, प्रेरणा, प्रवेश करने वाला **अथो** = अब, इसके बाद, इसके अनन्तर **ये** = जो **क्षुल्लकाः** = क्षुल्लका, प्रगतिशील, कर्तनशील **इव** = समान, की भाँति, के समान **सर्वे** = सब **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **क्रिमयः** = कृमि **हताः** = हता, मारे गये ॥ 5 ॥

पदार्थ - **हतासः** = हतास, मारे गये (हन् - मारना)। **अस्य** = इसका (सर्वनाम)। **वेशसः** = वेशस, सूचना, प्रेरणा, प्रवेश करने वाला (विश्-सूचना देना, प्रेरणा देना, प्रवेश करना)। **हतासः** = हतास, मारे गये (हन् - मारना)। **परि-वेशसः** = परिवेश, सूचना, प्रेरणा, प्रवेश करने वाला (परि = सभी तरफ (उपसर्ग), विश्-सूचना देना, प्रेरणा देना, प्रवेश करना)। **अथो** = अब, इसके बाद, इसके अनन्तर (अव्यय)। **ये** = जो (सर्वनाम)। **क्षुल्लकाः** = क्षुल्लका, प्रगतिशील, कर्तनशील (क्षु - जाना, जानना, पाना, शब्द करना, व्यर्थ बोलना, वितण्डा करना, छींकना, खखारना, क्षुर् - काटना, चीरना, रेखा खींचना)। **इव** = समान, की भाँति, के समान (अव्यय)। **सर्वे** = सब (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **क्रिमयः** = कृमि (कृ - करना)। **हताः** = हता, मारे गये (हन् - मारना) ॥ 5 ॥

336. प्र ते शृणामि शृङ्गे,
याभ्याम् वि-तुदायसि।
भिनद्मि ते कुषुम्भम्,
यः ते विषधानः ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ - **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **शृणामि** = शृणों को **शृङ्गे** = हे शृङ्ग **याभ्याम्** = जिसके लिए **वि-तुदायसि** = दुःख देता है **भिनद्मि** = भेदता हूँ **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **कुषुम्भम्** = कुषुम्भ को **यः** = जो **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **विषधानः** = विषधान, विष-धारण करने वाला ॥ 6 ॥

पदार्थ - **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **शृणामि** = शृणों को (शृ = मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना)। **शृङ्गे** = हे शृङ्ग (श्रु-शृण् = सुनना, जाना, शृ = मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना)। **याभ्याम्** = जिसके लिए (सर्वनाम)। **वि-तुदायसि** = दुःख देता है (वि - विशेष, तुद् - दुःख देना, दुःखी होना, पीड़ा होना, घाव करना)। **भिनद्मि** = भेदता हूँ (भिद्-भिन्द् - भेदना, भेदन करना, भाग करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **कुषुम्भम्** = कुषुम्भ को (कुष् = बाहर निकालना, रगड़ कर निकालना, चमकना, परीक्षा करना, कसौटी पर घिसकर परीक्षा करना, कुषुभ् = छोड़ना, फेंकना, चमकना, बोलना)। **यः** = जो (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **विषधानः** = विषधान, विष-धारण करने वाला (विश् - प्रवेश, सूचना, प्रेरणा करना। विष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना, धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना, धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना) ॥ 6 ॥

68 यक्ष्मविबर्हण सूक्त - 2 (33)

337. अक्षीभ्याम् ते नासिकाभ्याम्,

कर्णाभ्याम् छुबुकात् अधि।
यक्ष्मम् शीर्षण्यम् मस्तिष्कात्,
जिह्वायाः वि वृहामि ते॥ 1॥

मन्त्रार्थ - **अक्षीभ्याम् =** अक्षी द्वारा, अक्षी के लिए, अक्षी से **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **नासिकाभ्याम् =** नासिका युगल के लिए **कर्णाभ्याम् =** कर्मशील के लिए, कर्म के लिए **छुबुकात्** = छुबुक से **अधि =** अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार **यक्ष्मम् =** पूज्य, श्रेष्ठ को **शीर्षण्यम् =** शीर्षण्य को **मस्तिष्कात् =** मस्तिष्क से **जिह्वायाः =** जिह्वा का **वि =** विशेष, विना, विलोम **वृहामि =** उद्यम करता हूँ, यत्न करता हूँ **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **॥ 1 ॥**

पदार्थ - **अक्षीभ्याम् =** अक्षी द्वारा, अक्षी के लिए, अक्षी से (अक्ष - खेलना, देखना, एकत्र होना, व्याप्त होना, इच्छितार्थ होना, पैठना, अ = नहीं, उपसर्ग, क्षि - क्षय होना, नष्ट होना)। **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **नासिकाभ्याम् =** नासिका युगल के लिए (नास - श्वास लेना, शब्द करना, ध्वनि करना)। **कर्णाभ्याम् =** कर्मशील के लिए, कर्म के लिए (कृ = करना)। **छुबुकात्** = छुबुक से (चुब् = मर्दन करना, दीनतापूर्वक प्रार्थना करना)। **अधि =** अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **यक्ष्मम् =** पूज्य, श्रेष्ठ को (यक्ष = पूजा करना, पूजना, सत्कार करना)। **शीर्षण्यम् =** शीर्षण्य को (शीर्ष = शीर्ष होना, मुख्य होना, उच्च होना)। **मस्तिष्कात् =** मस्तिष्क से (मस् = रूपान्तरण करना, मापन करना, मापना, मस्त् - धारण करना, सहना, सहन करना, समर्थ होना)। **जिह्वायाः =** जिह्वा का (जिह = जाना, जानना, पाना)। **वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **वृहामि =** उद्यम करता हूँ, यत्न करता हूँ (वृह् = उद्यम करना, यत्न करना)। **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम) **॥ 1 ॥**

338. ग्रीवाभ्यः ते उष्णिहाभ्यः,
कीकसाभ्यः अनूक्यात्।
यक्ष्मम् दोषण्यम् अंसाभ्याम्,
बाहुभ्याम् वि वृहामि ते॥ 2॥

मन्त्रार्थ - **ग्रीवाभ्यः =** ग्रीवाओं के लिए, ग्रीवाओं से **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **उष्णिहाभ्यः =** उष्णिहों से, उष्णिहों के लिए **कीकसाभ्यः =** कीकसों से, विद्वानों के लिए **अनूक्यात् =** अनूक्य से, अनुकूल शब्द से **यक्ष्मम् =** पूज्य, श्रेष्ठ को **दोषण्यम् =** दोषों को **अंसाभ्याम् =** अंसों के लिए, साथी के लिए, बाँटने वाले के लिए, विभाजक के लिए **बाहुभ्याम् =** दोनों बाहुओं द्वारा, के लिए, दोनों बाहुओं के लिए, प्रयासों के लिए, प्रयास करने वालों के लिए **वि =** विशेष, विना, विलोम **वृहामि =** उद्यम करता हूँ, यत्न करता हूँ **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **॥ 2 ॥**

पदार्थ - **ग्रीवाभ्यः =** ग्रीवाओं के लिए, ग्रीवाओं से (गृ = सींचना, समझना, जानना,खाना, निगलना, शब्द करना, बोलना, समझाना, बताना, गीला करना, घर्षण करना)। **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **उष्णिहाभ्यः =** उष्णिहों से, उष्णिहों के लिए (उषस् = प्रभात होना, उष - हिंसा करना, जलना, जलाना, ताप देना)। **कीकसाभ्यः =** कीकसों से, विद्वानों के लिए (कि = जानना, समझना)। **अनूक्यात् =** अनूक्य से, अनुकूल शब्द से (अनु = अनुकूल, पश्चात्, उच - सम्बन्ध होना, एकत्र होना)। **यक्ष्मम् =** पूज्य, श्रेष्ठ को (यक्ष = पूजा करना, पूजना, सत्कार करना)। **दोषण्यम् =** दोषों को (दुः-दुष् - दूषित होना)। **अंसाभ्याम् =** अंसों के लिए, साथी के लिए, बाँटने वाले के लिए, विभाजक के लिए (अंस् - विभाग करना, बाँटना, साथ होना)। **बाहुभ्याम् =** दोनों बाहुओं द्वारा, के लिए, दोनों बाहुओं के लिए, प्रयासों के लिए, प्रयास करने वालों के लिए (बाह् - प्रयास करना, बह् - बहना, गति करना, बाहर होना, परे हो जाना, हिंसा करना)। **वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **वृहामि =** उद्यम करता हूँ, यत्न करता हूँ (वृह् = उद्यम करना, यत्न करना)। **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम) **॥ 2 ॥**

339. हृदयात् ते परि क्लोम्नः,
हलीक्ष्णात् पार्श्वाभ्याम्।

यक्ष्मम् मतस्नाभ्याम् प्लीन्हः
यक्नः ते वि वृहामसि॥ 3॥

मन्त्रार्थ - **हृदयात्** = हृदय से **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **परि** = सभी तरफ **क्लोम्नः** = कोमल, गतिशील, ज्ञानी **हलीक्ष्णात्** = हलिक्ष्ण, कृषक से **पार्श्वाभ्याम्** = पार्श्व युगल द्वारा, के लिए, से **यक्ष्मम्** = पूज्य, श्रेष्ठ को **मतस्नाभ्याम्** = मतस्नों द्वारा, मननशीलों द्वारा **प्लीन्हः** = प्लीहा **यक्नः** = यक्न **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **वि** = विशेष, विना, विलोम **वृहामसि** = उद्यम करता हूँ, यत्न करता हूँ॥ **3**॥

पदार्थ - **हृदयात्** = हृदय से (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **परि** = सभी तरफ (उपसर्ग)। **क्लोम्नः** = कोमल, गतिशील, ज्ञानी (क्लव् - जाना, जानना, पाना, डरना)। **हलीक्ष्णात्** = हलिक्ष्ण, कृषक से (हल = जोतना, हल चलाना)। **पार्श्वाभ्याम्** = पार्श्व युगल द्वारा, के लिए, से (सर्वनाम)। **यक्ष्मम्** = पूज्य, श्रेष्ठ को (यक्ष = पूजा करना, पूजना, सत्कार करना)। **मतस्नाभ्याम्** = मतस्नों द्वारा, मननशीलों द्वारा (मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना)। **प्लीन्हः** = प्लीहा (प्ली = जाना)। **यक्नः** = यक्न (या - जाना, जानना, पाना, यज् - देवपूजा, संगतिकरण, दान करना, कृ = करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **वृहामसि** = उद्यम करता हूँ, यत्न करता हूँ (वृह् = उद्यम करना, यत्न करना)॥ **3**॥

340. आन्त्रेभ्यः ते गुदाभ्यः,
वनिष्ठोः उदरात् अधि।
यक्ष्मम् कुक्षिभ्याम् प्लाशेः,
नाभ्याः वि वृहामि ते॥ 4॥

मन्त्रार्थ - **आन्त्रेभ्यः** = आन्त्रों के लिए, आन्त्रों से, जीवन के लिए, से **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **गुदाभ्यः** = खेल, क्रीडाएं के लिए, से **वनिष्ठोः** = वनिष्ठ **उदरात्** = उदर से, आद्र करने वाले से, आद्रता को देने वाले से **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार **यक्ष्मम्** = पूज्य, श्रेष्ठ को **कुक्षिभ्याम्** = कुक्षियों के लिए, पूर्ण करने वालों के लिए, भरने वालों के लिए **प्लाशेः** = प्लाशी **नाभ्याः** = नाभि **वि** = विशेष, विना, विलोम **वृहामि** = उद्यम करता हूँ, यत्न करता हूँ **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए॥ **4**॥

पदार्थ - **आन्त्रेभ्यः** = आन्त्रों के लिए, आन्त्रों से, जीवन के लिए, से (अन् - प्राणवान् होना, जीवन होना, श्वास लेना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **गुदाभ्यः** = खेल, क्रीडाएं के लिए, से (गुद् - खेलना, क्रीडा करना)। **वनिष्ठोः** = वनिष्ठ (वन - शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, आपद्ग्रस्त होना, अलग करना, मिलाना, स्मरण करना, बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, याचना करना, मांगना, दुःख देना, उद्योग-धन्धा करना)। **उदरात्** = उदर से, आद्र करने वाले से, आद्रता को देने वाले से (उ - ही, उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना, द्री - आदर करना, सम्मान करना, सत्कार करना, अर् - ऋ - जाना, फैलाना)। **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **यक्ष्मम्** = पूज्य, श्रेष्ठ को (यक्ष = पूजा करना, पूजना, सत्कार करना)। **कुक्षिभ्याम्** = कुक्षियों के लिए, पूर्ण करने वालों के लिए, भरने वालों के लिए (कुक्ष् = पूर्ण करना, भरना)। **प्लाशेः** = प्लाशी (प्र+अशि, प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना। प्लु = जाना, उड़ना, तैरना, कूदना। पल = जाना, भागना। पल = काटना, कतरना, शुद्ध करना, स्वच्छ करना, गिराना, उड़ना। पल = रक्षा करना)। **नाभ्याः** = नाभि (नभ - नष्ट होना, दुःख देना या मार डालना, हिंसा करना, मध्य में स्थित होना, केन्द्र होना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **वृहामि** = उद्यम करता हूँ, यत्न करता हूँ (वृह् = उद्यम करना, यत्न करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)॥ **4**॥

341. ऊरुभ्याम् ते अष्ठीवत्-भ्याम्,

पार्ष्णिभ्याम् प्र-पदाभ्याम्।
यक्ष्मम् भसद्यम् श्रोणिभ्याम्,
भासदम् भंससः वि वृहामि ते॥ 5॥

मन्त्रार्थ - **ऊरुभ्याम्** = निरन्तर गति, विस्तार करने वाले द्वारा, के लिए, से **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **अष्ठीवत्-भ्याम्** = अस्थियों द्वारा, के लिए, से **पार्ष्णिभ्याम्** = पार्ष्णियों द्वारा, प्रगतिशील योग्य, अभिसिञ्चन योग्य द्वारा, के लिए, से **प्र-पदाभ्याम्** = प्रपद द्वारा, के लिए, से **यक्ष्मम्** = पूज्य, श्रेष्ठ को **भसद्यम्** = भसद्य को **श्रोणिभ्याम्** = श्रोणियुगल के लिए **भासदम्** = भासद को **भंससः** = भोजन करने वाले, भासित होने वाले **वि** = विशेष, विना, विलोम **वृहामि** = उद्यम करता हूँ, यत्न करता हूँ **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए॥ **5**॥

पदार्थ - **ऊरुभ्याम्** = निरन्तर गति, विस्तार करने वाले द्वारा, के लिए, से (उरु - बहुत, अधिक, उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना, ऊ - शब्द करना, ध्वनि करना, विश्वास करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **अष्ठीवत्-भ्याम्** = अस्थियों द्वारा, के लिए, से (अस् - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **पार्ष्णिभ्याम्** = पार्ष्णियों द्वारा, प्रगतिशील योग्य, अभिसिञ्चन योग्य द्वारा, के लिए, से (पृष = जाना, सरल होना। पृष = प्रोक्षण करना, सींचना, सहन करना, पीड़ा करना, दुःख देना, थकना, पीड़ित होना)। **प्र-पदाभ्याम्** = प्रपद द्वारा, के लिए, से (पद् - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना, प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग))। **यक्ष्मम्** = पूज्य, श्रेष्ठ को (यक्ष = पूजा करना, पूजना, सत्कार करना)। **भसद्यम्** = भसद्य को (भस - खाना, चमकना, दोष लगाना, निन्दा करना)। **श्रोणिभ्याम्** = श्रोणियुगल के लिए (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)। **भासदम्** = भासद को (भस - खाना, चमकना, दोष लगाना, निन्दा करना)। **भंससः** = भोजन करने वाले, भासित होने वाले (भस - खाना, चमकना, दोष लगाना, निन्दा करना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **वृहामि** = उद्यम करता हूँ, यत्न करता हूँ (वृह् = उद्यम करना, यत्न करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)॥ **5**॥

342. अस्थिभ्यः ते मज्जभ्यः,
स्नावभ्यः धमनिभ्यः।
यक्ष्मम् पाणिभ्याम् अंगुलिभ्यः,
नखेभ्यः वि वृहामि ते॥ 6॥

मन्त्रार्थ - **अस्थिभ्यः** = अस्थियों के लिए **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **मज्जभ्यः** = मज्ज के लिए, शुद्धि के लिए **स्नावभ्यः** = स्नायु के लिए **धमनिभ्यः** = धमनियों के लिए, वाद्य बजाने के लिए, धौंकने, फूँकने के लिए **यक्ष्मम्** = पूज्य, श्रेष्ठ को **पाणिभ्याम्** = पाणि, शब्द, स्तुति, व्यापारी के लिए **अंगुलिभ्यः** = अंगुलियों, प्रगतिशीलों, विद्वानों के लिए **नखेभ्यः** = नखों के लिए **वि** = विशेष, विना, विलोम **वृहामि** = उद्यम करता हूँ, यत्न करता हूँ **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए॥ **6**॥

पदार्थ - **अस्थिभ्यः** = अस्थियों के लिए (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, स्था- स्थित होना, ठहरना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **मज्जभ्यः** = मज्ज के लिए, शुद्धि के लिए (मज्ज - शुद्ध करना, स्नान करना)। **स्नावभ्यः** = स्नायु के लिए (स्ना - स्नान करना, शुद्ध होना)। **धमनिभ्यः** = धमनियों के लिए, वाद्य बजाने के लिए, धौंकने, फूँकने के लिए (धम्-ध्मा - चलना, जाना, जानना, पाना, वाद्य बजाना, धौंकना, फूँकना, मुंह से वंशी आदि वाद्य बजाना, आग सुलगाना, आग लगाना, प्रदीप्त करना, जलाना)। **यक्ष्मम्** = पूज्य, श्रेष्ठ को (यक्ष = पूजा करना, पूजना, सत्कार करना)। **पाणिभ्याम्** = पाणि, शब्द, स्तुति, व्यापारी के लिए (पण् - शब्द करना, स्तुति करना, प्रशंसा करना, उद्योग-व्यापार करना, व्यवहार करना)। **अंगुलिभ्यः** = अंगुलियों, प्रगतिशीलों, विद्वानों के लिए (अंग् = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)। **नखेभ्यः** = नखों के लिए (नख - जाना, जानना, पाना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **वृहामि** = उद्यम करता हूँ, यत्न करता हूँ (वृह् = उद्यम करना, यत्न करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)॥ **6**॥

343. अङ्गे-अङ्गे लोम्नि-लोम्नि,
यः ते पर्वणि-पर्वणि।
यक्ष्मम् त्वचस्यम् ते वयम् कश्यपस्य,
वि-बर्हेण विष्वञ्चम् वि वृहामसि॥ 7॥

मन्त्रार्थ - **अङ्गे-अङ्गे** = अंग-अंग में, प्रगतिशील, विद्वान् में **लोम्नि-लोम्नि** = लोम-लोम में **यः** = जो **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **पर्वणि-पर्वणि** = पर्व-पर्व में **यक्ष्मम्** = पूज्य, श्रेष्ठ को **त्वचस्यम्** = त्वचा, चर्म, खाल में **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग **कश्यपस्य** = कश्यप का **वि-बर्हेण** = वि-बर्ह, विशेष श्रेष्ठ द्वारा **विष्वञ्चम्** = विश्व को, सभी को **वि** = विशेष, विना, विलोम **वृहामसि** = उद्यम करता हूँ, यत्न करता हूँ॥ 7॥

पदार्थ - **अङ्गे-अङ्गे** = अंग-अंग में, प्रगतिशील, विद्वान् में (अंग् = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)। **लोम्नि-लोम्नि** = लोम-लोम में (लू = काटना, कतरना, चीरना, लुम-लोम - लोम होना, रु - शब्द करना, जाना, चलना, जानना, पाना)। **यः** = जो (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **पर्वणि-पर्वणि** = पर्व-पर्व में (पर्व् - पूर्ण करना, पूरा करना, भरना, विभाग करना)। **यक्ष्मम्** = पूज्य, श्रेष्ठ को (यक्ष = पूजा करना, पूजना, सत्कार करना)। **त्वचस्यम्** = त्वचा, चर्म, खाल में (त्वच - आच्छादित करना, लपेटना, ढांकना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **कश्यपस्य** = कश्यप का (कश - प्रकाश होना, शासन करना, दण्ड देना, प्रकाश करना, गति करना, चलना)। **वि-बर्हेण** = वि-बर्ह, विशेष श्रेष्ठ द्वारा (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग), बर्ह् - श्रेष्ठ होना, प्रधान होना, प्रयास करना, उद्यम-व्यवसाय करना, खेलना, बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **विष्वञ्चम्** = विश्व को, सभी को (विष्ण-विष् -विविष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना, व्यापना, फैलना, प्रसृत होना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **वृहामसि** = उद्यम करता हूँ, यत्न करता हूँ (वृह् = उद्यम करना, यत्न करना)॥ 7॥

69 पशुगण सूक्त - 3 (34)

344. यः ईशे पशुपतिः पशूनाम्,
चतुः-पदाम् उत यः द्वि-पदाम्।
निः-क्रीतः सः यज्ञियम् भागम् एतु,
रायः पोषा यजमानम् सचन्ताम्॥ 1॥

मन्त्रार्थ - **यः** = जो **ईशे** = अधिकार किया, शासन किया, शासन करता है **पशुपतिः** = पशुपति **पशूनाम्** = पशुओं का, दृष्टा का, बन्धन का **चतुः-पदाम्** = चतुष्पद को, चार-पद को **उत** = ही, भी, ओर **यः** = जो **द्वि-पदाम्** = द्वि-पद को, दो-पद को **निः-क्रीतः** = निष्क्रीत **सः** = वह, उसने **यज्ञियम्** = यजनीय को, यजनकर्ता को **भागम्** = सेवा, दान, भोजन, भाग को **एतु** = प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे **रायः** = गति, विद्या, वाणी **पोषा** = पोषण करने वाला **यजमानम्** = यजमान को, यजनकर्ता को **सचन्ताम्** = अभिसिञ्चन करें॥ 1॥

पदार्थ - **यः** = जो (सर्वनाम)। **ईशे** = अधिकार किया, शासन किया, शासन करता है (ईश - अधिकार होना)। **पशुपतिः** = पशुपति (पश् - देखना, पश - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना, पत- श्रीमान् होना, शक्तिमान होना, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **पशूनाम्** = पशुओं का, दृष्टा का, बन्धन का (पश्-दृश् = देखना, पश - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना)। **चतुः-पदाम्** = चतुष्पद को, चार-पद को (चतुः = चार (संख्या), पद् - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **यः** = जो (सर्वनाम)। **द्वि-पदाम्** = द्वि-पद को, दो-पद को (द्वि = दो, संख्या, पद् - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना)। **निः-क्रीतः** = निष्क्रीत (नि- निश्चित, नितराम्, निरन्तर, कृ- करना)। **सः** = वह, उसने (सर्वनाम)। **यज्ञियम्** = यजनीय को, यजनकर्ता को (यज - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना,

संयोग करना)। **भागम्** = सेवा, दान, भोजन, भाग को (भज् = सेवा करना, दान करना, भोजन पकाना, भज - अंश या भाग होना)। **एतु** = प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना, इच्छा करना, प्रेरणा करना, ए - जाना, फैलना, व्यापना, गर्भवती होना, इच्छा करना, चाहना, खाना, उड़ाना, फेंकना, भेजना, प्रेरणा करना)। **रायः** = गति, विद्या, वाणी (रा-देना, लेना, ग्रहण करना, रय् = जाना, जानना, पाना, रै = शब्द करना)। **पोषा** = पोषण करने वाला (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, पूष - बढ़ना, अधिक होना, पोषण करना)। **यजमानम्** = यजमान को, यजनकर्ता को (यज - देवपूजा करना, अर्पण करना, संगति करना, दान करना)। **सचन्ताम्** = अभिसिञ्चन करें (सच् = सिञ्चन करना, सेवा करना, सन्तुष्ट करना, जानना, पूर्णतया समझना, सम्बन्धी होना)॥ **1**॥

345. प्र-मुञ्चन्तः भुवनस्य रेतः,
गातुम् धत्त यजमानाय देवाः।
उप-आकृतम् शशमानम् यत् अस्थात्,
प्रियम् देवानाम् अपि एतु पाथः॥ 2॥

मन्त्रार्थ - **प्र-मुञ्चन्तः** = मुक्त करते हुए **भुवनस्य** = भुवन का, वर्तमान का **रेतः** = रेतस्, विद्या, प्रगति **गातुम्** = स्तुति को, गान, गाय, गायक, गाने वाले को **धत्त** = धारण, पोषण करो **यजमानाय** = यजमान के लिए **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने **उप-आकृतम्** = उप-आकृति को **शशमानम्** = कूर्दन करने वाले को **यत्** = जिसे, जो **अस्थात्** = स्थित हैं **प्रियम्** = प्रिय को **देवानाम्** = देवों का **अपि** = भी, निकट **एतु** = प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे **पाथः** = पाथ, मार्ग॥ **2**॥

पदार्थ - **प्र-मुञ्चन्तः** = मुक्त करते हुए (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **भुवनस्य** = भुवन का, वर्तमान का (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **रेतः** = रेतस्, विद्या, प्रगति (रि - जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, री - गति करना, झरना-टपकना, लेना, शब्द करना, सुनना)। **गातुम्** = स्तुति को, गान, गाय, गायक, गाने वाले को (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गम् - जाना, जानना, पाना)। **धत्त** = धारण, पोषण करो (धा = धारण, पोषण, रक्षण, दान करना)। **यजमानाय** = यजमान के लिए (यज = देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना, संयोग करना)। **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **उप-आकृतम्** = उप-आकृति को (उप = समीप (उपसर्ग), आ = समन्तात्, सम्पूर्ण, कृ - करना)। **शशमानम्** = कूर्दन करने वाले को (शश् - कूर्दन करना, कूदना, उछलना, कूदते हुए चलना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **अस्थात्** = स्थित हैं (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, स्था- स्थित होना, ठहरना)। **प्रियम्** = प्रिय को (प्री = स्नेह करना, प्यार करना, तृप्त करना, सन्तुष्ट करना, चाहना)। **देवानाम्** = देवों का (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **अपि** = भी, निकट (अव्यय)। **एतु** = प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना, इच्छा करना, प्रेरणा करना, ए - जाना, फैलना, व्यापना, गर्भवती होना, इच्छा करना, चाहना, खाना, उड़ाना, फेंकना, भेजना, प्रेरणा करना)। **पाथः** = पाथ, मार्ग (पथ् - जाना, उड़ाना, फैंकना, त्यागना)॥ **2**॥

346. ये बध्यमानम् अनु दीध्यानाः,
अनु-ऐक्षन्त मनसा चक्षुषा च।
अग्निः तान् अग्रे प्र मुमोक्तु,
देवः विश्वकर्मा प्रजया सम्-रराणः॥ 3॥

मन्त्रार्थ - **ये** = जो **बध्यमानम्** = बध्यमान को **अनु** = पश्चात्, पीछे, अनुकूल **दीध्यानाः** = प्रकाशमान **अनु-ऐक्षन्त** = देख रहे हैं **मनसा** = मन से, मन द्वारा **चक्षुषा** = नेत्रों द्वारा, दृष्टि द्वारा, स्पष्ट वाणी द्वारा **च** = और **अग्निः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् **तान्** = उनको **अग्रे** = अग्र, आगे, पहले **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक **मुमोक्तु** = मुक्त करो **देवः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण **विश्वकर्मा** = हे विश्वकर्मा, विश्वकर्मा, सभी कर्म करने वाला **प्रजया** = प्रजा के साथ, प्रजा द्वारा **सम्-रराणः** = सम्यक् दानी, शब्द करता हुआ **॥ 3 ॥**

पदार्थ - **ये** = जो (सर्वनाम)। **बध्यमानम्** = बध्यमान को (बध्-बन्ध् = बाँधना, बद्ध करना, हिंसा करना, मारना, वध करना, घृणा करना)। **अनु** = पश्चात्, पीछे, अनुकूल (उपसर्ग)। **दीध्यानाः** = प्रकाशमान (दीध - चमकना, प्रकाशित होना, खेलना, क्रीडा करना)। **अनु-ऐक्षन्त** = देख रहे हैं (अनु = पश्चात्, पीछे, अनुकूल (उपसर्ग), ईक्ष - देखना, अवलोकन करना)। **मनसा** = मन से, मन द्वारा (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **चक्षुषा** = नेत्रों द्वारा, दृष्टि द्वारा, स्पष्ट वाणी द्वारा (चक्ष् - स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)। **च** = और (अव्यय)। **अग्निः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **तान्** = उनको (सर्वनाम)। **अग्रे** = अग्र, आगे, पहले (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **मुमोक्तु** = मुक्त करो (मुच् = मुक्त करना, त्याग करना, बोलना, कहना, गर्व करना)। **देवः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **विश्वकर्मा** = हे विश्वकर्मा, विश्वकर्मा, सभी कर्म करने वाला (विश्व = सभी, कृ = करना)। **प्रजया** = प्रजा के साथ, प्रजा द्वारा (प्र - प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न करना)। **सम्-रराणः** = सम्यक् दानी, शब्द करता हुआ (सम् - सम्यक्, भलीभाँति, रा - देना, मिल जाना, रण - शब्द करना, जाना, रन् - अलग करना, मिलाना) **॥ 3 ॥**

347. ये ग्राम्याः पशवः विश्वरूपः,
विरूपाः सन्तो बहुधा एक रूपाः।
वायुः तान् अग्रे प्र मुमोक्तु,
देवः प्रजापतिः प्रजया सम्-रराणः ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - **ये** = जो **ग्राम्याः** = ग्रामों वाले **पशवः** = पशु, बन्धन, दृष्टा, देखने वाले **विश्वरूपः** = विश्वरूप **विरूपाः** = विरूप, भिन्न भिन्न रूप **सन्तो** = सन्त **बहुधा** = बहुत प्रकार से **एक** = एक **रूपाः** = रचना, आकार, रूप **वायुः** = गतिशील, रचनात्मक शक्ति, वायु **तान्** = उनको **अग्रे** = अग्र, आगे, पहले **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक **मुमोक्तु** = मुक्त करो **देवः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण **प्रजापतिः** = प्रजापति, प्रजा का रक्षक, पालक **प्रजया** = प्रजा के साथ, प्रजा द्वारा **सम्-रराणः** = सम्यक् दानी, शब्द करता हुआ **॥ 4 ॥**

पदार्थ - **ये** = जो (सर्वनाम)। **ग्राम्याः** = ग्रामों वाले (ग्राम - बुलाना, बुद्धिपूर्वक कहना, एकत्र होना)। **पशवः** = पशु, बन्धन, दृष्टा, देखने वाले (पश् - देखना, पश - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना)। **विश्वरूपः** = विश्वरूप (विश्व - सब कुछ, रूप - आकार बनाना, रचना करना)। **विरूपाः** = विरूप, भिन्न भिन्न रूप (वि - विशेष, रूप् - आकार बनाना, रचना करना, रूप बनाना)। **सन्तो** = सन्त (सन् - दान करना, सेवा करना, पूजा करना, सत्कार करना)। **बहुधा** = बहुत प्रकार से (सर्वनाम)। **एक** = एक (संख्या)। **रूपाः** = रचना, आकार, रूप (रूप - बनाना, आकार बनाना, रचना करना, मन में रुपाकृति लाना)। **वायुः** = गतिशील, रचनात्मक शक्ति, वायु (वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वा = गति करना, पवन की भाँति बहना, जाना, जानना, पाना, गन्ध होना, प्रवाहित होना, प्रवाहित करना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण करना, घेरना, भेजना, खाना, वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना)। **तान्** = उनको (सर्वनाम)। **अग्रे** = अग्र, आगे, पहले (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **मुमोक्तु** = मुक्त करो (मुच् = मुक्त करना, त्याग करना, बोलना, कहना, गर्व करना)। **देवः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति

करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **प्रजापतिः** = प्रजापति, प्रजा का रक्षक, पालक (प्र - प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न करना, पत - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना)। **प्रजया** = प्रजा के साथ, प्रजा द्वारा (प्र - प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न करना)। **सम्-रराणः** = सम्यक् दानी, शब्द करता हुआ (सम् - सम्यक्, भलीभाँति, रा - देना, मिल जाना, रण - शब्द करना, जाना, रन् - अलग करना, मिलाना) ॥ 4 ॥

348. प्रजानन्तः प्रति गृह्णन्तु पूर्वे,
प्राणम् अङ्गेभ्यः परि आचरन्तम्।
दिवम् गच्छ प्रति तिष्ठा शरीरैः,
स्वर्गम् याहि पथिभिः देवयानैः ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ - **प्रजानन्तः** = हे प्रजानन **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में **गृह्णन्तु** = ग्रहण करें, स्वीकार करें **पूर्वे** = पूर्व में, पूर्ण में **प्राणम्** = प्राण को **अङ्गेभ्यः** = अंगों के लिए, प्रगतिशीलों के लिए, विद्वान् के लिए **परि** = सभी तरफ **आचरन्तम्** = आचरण करो **दिवम्** = दिव को, तेजस्वी को **गच्छ** = जाओ **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में **तिष्ठा** = ठहरो, स्थित हो, ठहरो, खड़े हो **शरीरैः** = शरीरों द्वारा **स्वर्गम्** = स्वर्ग को **याहि** = जायें, प्राप्त हों, प्राप्त करें **पथिभिः** = पथियों द्वारा, यात्रियों द्वारा, मार्गो द्वारा **देवयानैः** = देवयानों द्वारा ॥ 5 ॥

पदार्थ - **प्रजानन्तः** = हे प्रजानन (प्र - प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न करना)। **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग)। **गृह्णन्तु** = ग्रहण करें, स्वीकार करें (गृह- लेना, स्वीकार करना, निवास करना)। **पूर्वे** = पूर्व में, पूर्ण में (पूर्व = पूर्व, पहले, सर्वनाम, पूर्व - पूर्ण करना, भरना, निवास करना, आश्चर्य करना, आमन्त्रण करना)। **प्राणम्** = प्राण को (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अन- जीवन होना, चेतन होना, प्रा- पूर्ण करना, तृप्त करना)। **अङ्गेभ्यः** = अंगों के लिए, प्रगतिशीलों के लिए, विद्वान् के लिए (अंग् = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)। **परि** = सभी तरफ (उपसर्ग)। **आचरन्तम्** = आचरण करो (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, चर् - चलना, विचरण करना, आ-चर् - आचरण करना)। **दिवम्** = दिव को, तेजस्वी को (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)। **गच्छ** = जाओ (गम्-गच्छ् = जाना)। **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग)। **तिष्ठा** = ठहरो, स्थित हो, ठहरो, खड़े हो (तिष्ठ् = ठहरना, खड़ा होना)। **शरीरैः** = शरीरों द्वारा (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, शृ - मार डालना, दुःख देना, पीड़ा करना, फटना, हिंसा करना, मारना, श्रि - सेवा करना, आश्रय करना)। **स्वर्गम्** = स्वर्ग को (सु = उत्तम (उपसर्ग), सू - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, पराक्रम होना, स्वृ-स्वर् = शब्द करना, गम् - जाना)। **याहि** = जायें, प्राप्त हों, प्राप्त करें (या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)। **पथिभिः** = पथियों द्वारा, यात्रियों द्वारा, मार्गो द्वारा (पथ, पन्थ् - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना, घूमना, फेंकना, त्यागना)। **देवयानैः** = देवयानों द्वारा (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना, या - जाना, जानना, प्राप्त होना, पहुँचना) ॥ 5 ॥

70 विश्वकर्मा सूक्त - 4 (35)

349. ये भक्षयन्तो न वसूनि आनृधुः,
यान् अग्नयो अनु-अतप्यन्त धिष्ण्याः।
या तेषाम् अवया दुः-इष्टिः सु-इष्टिम्,
नः ताम् कृणवत् विश्वकर्मा ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - **ये** = जो **भक्षयन्तो** = भक्षण करते हुए **न** = नहीं, समान, उपमार्थक **वसूनि** = वसुओं को **आनृधुः** = वृद्धि करते हैं **यान्** = जाता हुआ **अग्नयो** = अग्निगण, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान्, अग्नियाँ **अनु-अतप्यन्त** = अतप्त करें **धिष्ण्याः** = वाणी का **या** = जो **तेषाम्** = उनका **अवया** = संरक्षण **दुः-इष्टिः** = अनुचित उत्तम विद्या, इच्छा, गति, ज्ञान,

प्राप्ति, दृष्टि वाले **सु-इष्टिम्** = उत्तम विद्या, इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि को **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा **ताम्** = उसको **कृणवत्** = करता है, कर्मशील, श्रोता, विद्वान् **विश्वकर्मा** = हे विश्वकर्मा, विश्वकर्मा, सभी कर्म करने वाला ॥ 1 ॥

पदार्थ - **ये** = जो (सर्वनाम)। **भक्षयन्तो** = भक्षण करते हुए (भक्ष - खाना, ग्रहण करना)। **न** = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **वसूनि** = वसुओं को (वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)। **आनृधुः** = वृद्धि करते हैं (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), ऋध् - वृद्धि होना, वृद्धि करना, समृद्धि होना, ऐश्वर्य होना, आनन्दित करना, पूर्ण करना)। **यान्** = जाता हुआ (या - जाना)। **अग्नयो** = अग्निगण, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान्, अग्नियाँ (अग् = जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, गति करना, भ्रमण करना, घूमना, टेढ़ा जाना, लेना, ग्रहण करना)। **अनु-अतप्यन्त** = अतप्त करें (अनु = पश्चात्, पीछे, अनुकूल (उपसर्ग), अ = नहीं, तप् - ऐश्वर्य होना, तप करना, तप्त होना, तप्त करना, जलना, दाह होना, जलाना, तृषा होना)। **धिष्ण्याः** = वाणी का (धिष् = शब्द करना, बोलना)। **या** = जो (सर्वनाम)। **तेषाम्** = उनका (सर्वनाम)। **अवया** = संरक्षण (अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, प्रकाश करना)। **दुः-इष्टिः** = अनुचित उत्तम विद्या, इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि वाले (दुः = बुरा, अनुचित (उपसर्ग, अव्यय), इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना)। **सु-इष्टिम्** = उत्तम विद्या, इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि को (सु = उत्तम, सुष्ठु, अच्छा, सुन्दर (उपसर्ग), इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **ताम्** = उसको (सर्वनाम)। **कृणवत्** = करता है, कर्मशील, श्रोता, विद्वान् (कृ = करना, कृण् - सुनना, करना, हिंसा करना)। **विश्वकर्मा** = हे विश्वकर्मा, विश्वकर्मा, सभी कर्म करने वाला (विश्व = सभी, कृ = करना) ॥ 1 ॥

350. यज्ञपतिम् ऋषयः एनसा आहुः,
निः-भक्तम् प्रजाः अनु-तप्यमानम्।
मथव्यान् स्तोकान् अप यान् रराध,
सम् नः तेभिः सृजतु विश्वकर्मा ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - **यज्ञपतिम्** = यजनपति को, दिव्यगुण सम्पन्न यजनपति को **ऋषयः** = ऋषिगण **एनसा** = प्रकाश द्वारा **आहुः** = आदान-प्रदान किया हुआ, आहुत, आह्वान किये, बुलाये हुए, व्याप्त **निः-भक्तम्** = निर्भक्त को, सेवित को **प्रजाः** = प्रजा **अनु-तप्यमानम्** = अनु-तप्यमान को, अनुताप को **मथव्यान्** = मन्थन करने वाले को **स्तोकान्** = स्तुतिकर्ता **अप** = दूर, नीचे, अपकार **यान्** = जाता हुआ **रराध** = शुद्ध, निर्दोष निर्णय, वृद्धि किया **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा **तेभिः** = उनके द्वारा **सृजतु** = सृजन करो **विश्वकर्मा** = हे विश्वकर्मा, विश्वकर्मा, सभी कर्म करने वाला ॥ 2 ॥

पदार्थ - **यज्ञपतिम्** = यजनपति को, दिव्यगुण सम्पन्न यजनपति को (यज - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना, पत् - ऐश्वर्य होना)। **ऋषयः** = ऋषिगण (ऋष् - जानना, जाना, पाना, अन्तदृष्टि होना, अन्तर्गमन करना, सूक्ष्मता से भीतर देखना)। **एनसा** = प्रकाश द्वारा (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, इन-एन = प्रकाशित करना, दोष होना, मिश्रण करना, विभाजन करना, अलग करना, मिलाना)। **आहुः** = आदान-प्रदान किया हुआ, आहुत, आह्वान किये, बुलाये हुए, व्याप्त (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, अह - फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, हु - दान करना, आदान-प्रदान करना)। **निः-भक्तम्** = निर्भक्त को, सेवित को (निः = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग), भग्-भज् = सेवा करना, सेवन करना, सेवित होना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)। **प्रजाः** = प्रजा (प्र - प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न करना)। **अनु-तप्यमानम्** = अनु-तप्यमान को, अनुताप को (अनु = पश्चात्, पीछे, अनुकूल (उपसर्ग), तप् - ऐश्वर्य होना, तप करना, तप्त होना, तप्त करना, जलना, दाह होना, जलाना, तृषा होना)। **मथव्यान्** = मन्थन करने वाले को (मथ् - मथना, विलोडन

करना, विचार करना)। **स्तोकान्** = स्तुतिकर्ता (स्तु = स्तुति, पूजा, सेवा करना, स्तुच - सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना, प्रकाशित होना, चमकना, तेजस्वी होना)। **अप** = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। **यान्** = जाता हुआ (या - जाना)। **रराध** = शुद्ध, निर्दोष निर्णय, वृद्धि किया (रध - शुद्ध होना, निर्दोष होना, पूर्ण करना, समाप्त करना, परिपक्व होना, अपकार करना, हिंसा करना, राध - बढ़ना, निर्णय करना, सिद्ध होना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **तेभिः** = उनके द्वारा (सर्वनाम)। **सृजतु** = सृजन करो (सृज् - छोड़ना, त्याग करना, विविध रूप से उत्पन्न करना, रचना करना)। **विश्वकर्मा** = हे विश्वकर्मा, विश्वकर्मा, सभी कर्म करने वाला (विश्व = सभी, कृ = करना) **॥ 2 ॥**

351. अदान्यान् सोमपान् मन्यमानो,
यज्ञस्य विद्वान् सम्-अये न धीरः।
यत् एनः चकृवान् बद्धः एष तम्,
विश्वकर्मन् प्र मुञ्चा स्वस्तये ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - **अदान्यान्** = अदानियों **सोमपान्** = सोमपालक को, सोमपान करने वाले को **मन्यमानो** = मानते हुए **यज्ञस्य** = यज्ञ का **विद्वान्** = विद्वान्, जानने वाला, ज्ञानी **सम्-अये** = प्रगतिशील, विद्वान्, समानता में, सम्यक् जाता है, प्राप्त करता है **न** = नहीं, समान, उपमार्थक **धीरः** = धीर **यत्** = जिसे, जो **एनः** = यह **चकृवान्** = चक्रवान्, गोलाकार घूमने वाले **बद्धः** = बँधा हुआ **एष** = यह **तम्** = उसको, उसे **विश्वकर्मन्** = विश्वकर्मा, सभी कर्म, सभी कर्म करने वाले द्वारा **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक **मुञ्चा** = मुक्त करो **स्वस्तये** = कल्याण के लिए, सुख के लिए **॥ 3 ॥**

पदार्थ - **अदान्यान्** = अदानियों (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, दा - देना, सौंपना)। **सोमपान्** = सोमपालक को, सोमपान करने वाले को (सु = उत्पन्न करना, अद्भुत सामर्थ्य, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना। सू = प्रेरणा देना। सो–स्य, सय् - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना। पा - पालन-रक्षण करना)। **मन्यमानो** = मानते हुए (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **यज्ञस्य** = यज्ञ का (यज - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना)। **विद्वान्** = विद्वान्, जानने वाला, ज्ञानी (विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना, विद्यमान होना, विचार करना, जीवन होना)। **सम्-अये** = प्रगतिशील, विद्वान्, समानता में, सम्यक् जाता है, प्राप्त करता है (सम् - सम्यक् रूप से, भलीभाँति, स - सहित, साथ, अय् = जाना, जानना, पाना, मय् - जाना, जानना, पाना, सम - परिणाम होना, रूपान्तर होना। सम - विकल न होना, एक समान रहना)। **न** = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **धीरः** = धीर (धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना, धि = धारण करना, युक्त होना, धृ - धारण करना, सहना, स्थिर रहना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **एनः** = यह (सर्वनाम)। **चकृवान्** = चक्रवान्, गोलाकार घूमने वाले (चकृ = चक्रण करना, गोलाकार घूमना)। **बद्धः** = बँधा हुआ (बध्-बन्ध् = बाँधना, बद्ध करना, हिंसा करना, मारना, वध करना, घृणा करना)। **एष** = यह (सर्वनाम)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **विश्वकर्मन्** = विश्वकर्मा, सभी कर्म, सभी कर्म करने वाले द्वारा (विश्व - सभी, कृ - करना)। **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **मुञ्चा** = मुक्त करो (मुच् - घर्षण करना, ऐश्वर्य होना, पूजा करना, बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना, प्रसन्न होना)। **स्वस्तये** = कल्याण के लिए, सुख के लिए (सु - अच्छा, अस् - होना, स्वस्ति = कल्याण) **॥ 3 ॥**

352. घोराः ऋषयो नमो अस्तु एभ्यः चक्षुः,
यत् एषाम् मनसः च सत्यम्।
बृहस्पतये महिष द्युमत् नमो,
विश्वकर्मन् नमः ते पाहि अस्मान् ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - **घोराः** = घोर **ऋषयो** = ऋषिगण **नमो** = नमन **अस्तु** = हो **एभ्यः** = इनके लिए **चक्षुः** = दृष्टि, वाणी, आँख **यत्** = जिसे, जो **एषाम्** = इनका **मनसः** = मन का **च** = और **सत्यम्** = सत्य को **बृहस्पतये** = बृहस्पति के लिए **महिष** = हे महिष, महिमावान्, महान्, पूजित, सम्मानित **द्युमत्** = अग्रगामी हुआ, प्रकाशमान हुआ **नमो** = नमन **विश्वकर्मन्** = विश्वकर्मा, सभी कर्म, सभी कर्म करने वाले द्वारा **नमः** = नमन **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **पाहि** = पालन करो, रक्षा करो **अस्मान्** = हमें, हमको **॥ 4 ॥**

पदार्थ - **घोराः** = घोर (घुर् = भयंकर होना, चमकना, घोर् = चतुराई से चलना)। **ऋषयो** = ऋषिगण (ऋष् - जानना, जाना, पाना, अन्तदृष्टि होना, अन्तर्गमन करना, सूक्ष्मता से भीतर देखना)। **नमो** = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **अस्तु** = हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **एभ्यः** = इनके लिए (सर्वनाम)। **चक्षुः** = दृष्टि, वाणी, आँख (चक्ष् - स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **एषाम्** = इनका (सर्वनाम)। **मनसः** = मन का (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **च** = और (अव्यय)। **सत्यम्** = सत्य को (सत् = होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना)। **बृहस्पतये** = बृहस्पति के लिए (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना, पत् - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना, नीचे जाना, गिरना, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **महिष** = हे महिष, महिमावान्, महान्, पूजित, सम्मानित (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना)। **द्युमत्** = अग्रगामी हुआ, प्रकाशमान हुआ (द्युत् = प्रकाशित होना, द्यु = अभिगमन करना, आक्रमण करना, आगे जाना, समीप जाना)। **नमो** = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **विश्वकर्मन्** = विश्वकर्मा, सभी कर्म, सभी कर्म करने वाले द्वारा (विश्व - सभी, कृ - करना)। **नमः** = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **पाहि** = पालन करो, रक्षा करो (पा - पालन, रक्षण करना)। **अस्मान्** = हमें, हमको (सर्वनाम) **॥ 4 ॥**

353. यज्ञस्य चक्षुः प्रभृतिः मुखम् च,
वाचा श्रोत्रेण मनसा जुहोमि।
इमम् यज्ञम् विततम् विश्वकर्मणा,
देवा यन्तु सुमनस्यमानाः ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ - **यज्ञस्य** = यजन का **चक्षुः** = दृष्टि, वाणी, आँख **प्रभृतिः** = परिपूर्ण **मुखम्** = मुख को **च** = और **वाचा** = वाणी से **श्रोत्रेण** = श्रोत से, कानों से **मनसा** = मन द्वारा **जुहोमि** = दान करते हैं, आदान-प्रदान करते हैं **इमम्** = इसको **यज्ञम्** = यजन को **विततम्** = विस्तृत को **विश्वकर्मणा** = विश्वकर्मा द्वारा, सभी कर्म द्वारा, सभी कर्म करने वाले द्वारा **देवा** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण **यन्तु** = नियमन-नियन्त्रण, पोषण करो, उद्धार करो, प्राप्त करो **सुमनस्यमानाः** = सुमनस्यमान, सुमतिवान्, सुबुमान **॥ 5 ॥**

पदार्थ - **यज्ञस्य** = यजन का (यज - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना)। **चक्षुः** = दृष्टि, वाणी, आँख (चक्ष् - स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)। **प्रभृतिः** = परिपूर्ण (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, भृ - भरण करना)। **मुखम्** = मुख को (जाना, खाना, मुख् - मुख्य होना, जाना, खाना)। **च** = और (अव्यय)। **वाचा** = वाणी से (वच - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)। **श्रोत्रेण** = श्रोत से, कानों से (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)। **मनसा** = मन द्वारा (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **जुहोमि** = दान करते हैं, आदान-प्रदान करते हैं (हु-जुहु = दान करना, आदान-प्रदान करना, ग्रहण करना, तृप्त करना, जु - जाना, शीघ्र जाना, भागना)। **इमम्** = इसको (सर्वनाम)। **यज्ञम्** = यजन को (यज - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना)। **विततम्** = विस्तृत को (वि - विशेष, तन् - विस्तार करना, वर्णन करना, शब्द करना, आश्रय देना, वित्त - देना, दान करना, धर्म में व्यय करना)। **विश्वकर्मणा** = विश्वकर्मा

द्वारा, सभी कर्म द्वारा, सभी कर्म करने वाले द्वारा (विश्व - सभी, कृ - करना)। **देवा =** विद्वान्, तेजस्वी, देवगण (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **यन्तु =** नियमन-नियन्त्रण, पोषण करो, उद्धार करो, प्राप्त करो (यम् = रोकना, स्वाधीन रखना, आवरण करना, पोषण करना, नियमन करना, यन - उद्धार करना, या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, जानना)। **सुमनस्यमानाः =** सुमनस्यमान, सुमतिवान्, सुबुमान (सु = उत्तम, सुन्दर, अच्छा। मन - मनन करना, जानना, समझना, स्वीकार करना, अभ्यास करना, स्थिर होना, गर्व होना) **॥5॥**

71 पतिवेदन सूक्त - 5 (36)

354. आ नो अग्ने सुमतिम् सम्-भलो गमेत्,
इमाम् कुमारीम् सह नो भगेन।
जुष्टा वरेषु समनेषु वल्गुः,
ओषम् पत्या सौभगम् अस्तु अस्यै॥ 1॥

मन्त्रार्थ - आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा **अग्ने =** हे अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् **सुमतिम् =** सुमति को, सुबुद्धि को **सम्-भलो** = सम्यक् विद्वान् **गमेत् =** जायें **इमाम् =** इसको, इस **कुमारीम् =** कुमारी, इच्छुक को **सह =** साथ, सहित **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा **भगेन =** सेवनीय, सेवायोग्य द्वारा **जुष्टा =** विचार, प्रीति, सेवा किया हुआ **वरेषु =** वरों में **समनेषु =** समनों में, समान मन वालों में **वल्गुः =** प्रगतिशील, विद्वान् **ओषम् =** ऊष्म को **पत्या =** ऐश्वर्यवान् **सौभगम् =** सौभाग्य को, सौभग को **अस्तु =** हो **अस्यै =** इसके लिए **॥1॥**

पदार्थ - आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **अग्ने =** हे अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **सुमतिम् =** सुमति को, सुबुद्धि को (सु = उत्तम, सुन्दर, अच्छा। मन - मनन करना, जानना, समझना, स्वीकार करना, अभ्यास करना, स्थिर होना, गर्व होना)। **सम्-भलो** = सम्यक् विद्वान् (सम् - सम्यक्, भलीभांति, भल् = जाना, काटना, धारण करना, बोलना, गाली देना, स्तुति करना, व्याख्यान करना, स्वीकार करना)। **गमेत् =** जायें (गम् = जाना, जानना, पाना)। **इमाम् =** इसको, इस (सर्वनाम)। **कुमारीम् =** कुमारी, इच्छुक को (कुमार - खेलना, बालक के समान क्रीडा करना, कुम् = चाहना, इच्छा करना)। **सह =** साथ, सहित (सर्वनाम)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **भगेन =** सेवनीय, सेवायोग्य द्वारा (भग्-भज् = सेवा करना, सेवन करना, सेवित होना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)। **जुष्टा =** विचार, प्रीति, सेवा किया हुआ (जुष् = विचार करना, सेवा करना, सेवन करना, विवेक होना, विवेचना करना, प्रीति करना, चाहना, दुलारना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना)। **वरेषु =** वरों में (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **समनेषु =** समनों में, समान मन वालों में (स - सहित, साथ, सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना)। **वल्गुः =** प्रगतिशील, विद्वान् (वल - आच्छादित करना, ढकना, घेरना, संचलन करना, जाना, प्रसार करना, विस्तार करना, गम् - जाना)। **ओषम् =** ऊष्म को (उषस् = प्रभात होना, उष - हिंसा करना, जलना, ऊष् = जलाना, ताप देना, ऊष्म करना, रोग होना, पीडा होना, एकत्र होना)। **पत्या =** ऐश्वर्यवान् (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **सौभगम् =** सौभाग्य को, सौभग को (सु - अच्छा, सुन्दर, सु = उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, सींचना, भग् -भज् - सेवा करना, सेवन करना, दान करना, अलग करना)। **अस्तु =** हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **अस्यै =** इसके लिए (सर्वनाम) **॥1॥**

355. सोमजुष्टम् ब्रह्मजुष्टम्,
अर्यम्णा सम्भृतम् भगम्।
धातुः देवस्य सत्येन,

कृणोमि पतिवेदनम् ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - सोमजुष्टम् = सृजन-ऐश्वर्य-अन्तकर्ता की सेवा को, सोम की सेवा को सृजन-ऐश्वर्य-अन्तकर्ता, ऐश्वर्यवान्, सृष्टिकर्ता की सेवा को **ब्रह्मजुष्टम् =** ब्रह्म सेवक को, महान्, बड़ा, बृहत् सेवी को **अर्यम्णा =** अर्यमा **सम्भृतम् =** भरण-पोषण करने को, सम्यक् धारण को **भगम् =** भग को, सेवा को **धातुः =** धातु, धाता का, धारण करने वाले का **देवस्य =** देव का **सत्येन =** सत्य द्वारा **कृणोमि =** करता हूँ **पतिवेदनम् =** ऐश्वर्यवान् का बोध कराने वाले **॥ 2 ॥**

पदार्थ - सोमजुष्टम् = सृजन-ऐश्वर्य-अन्तकर्ता की सेवा को, सोम की सेवा को सृजन-ऐश्वर्य-अन्तकर्ता, ऐश्वर्यवान्, सृष्टिकर्ता की सेवा को (सु - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू - प्रेरणा देना। सो–स्य, सय - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना, जुष् = विचार करना, सेवा करना, सेवन करना, विवेक होना, विवेचना करना, प्रीति करना, चाहना, दुलारना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना)। **ब्रह्मजुष्टम् =** ब्रह्म सेवक को, महान्, बड़ा, बृहत् सेवी को (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना, जुष् = विचार करना, सेवा करना, सेवन करना, विवेक होना, विवेचना करना, प्रीति करना, चाहना, दुलारना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना)। **अर्यम्णा =** अर्यमा (ऋ - जाना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना, पहुँचाना, अर्-ऋ - गति करना, जाना, जानना, पाना, शब्द करना, व्याप्त होना, मिलाना, महत्व दिखाना, हिंसा करना)। **सम्भृतम् =** भरण-पोषण करने को, सम्यक् धारण को (सम् - सम्यक्, भलीभांति, भृ - भरण-पोषण, धारण करना)। **भगम् =** भग को, सेवा को (भग्-भज् = सेवा करना, सेवन करना, सेवित होना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)। **धातुः =** धातु, धाता का, धारण करने वाले का (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)। **देवस्य =** देव का (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **सत्येन =** सत्य द्वारा (सत् = होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना)। **कृणोमि =** करता हूँ (कृ = करना)। **पतिवेदनम् =** ऐश्वर्यवान् का बोध कराने वाले (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना, विद् = जानना) **॥ 2 ॥**

356. इयम् अग्ने नारी पतिम् विदेष्ट,
सोमो हि राजा सुभगाम् कृणोति।
सुवाना पुत्रान् महिषी भवाति,
गत्वा पतिम् सुभगा वि राजतु ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - इयम् = यह, इसको **अग्ने =** हे अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् **नारी =** नारी **पतिम् =** पति को, अधिपति, रक्षक, पालक **विदेष्ट =** समझायें, ज्ञान दें **सोमो =** सृजन-ऐश्वर्य-अन्तकर्ता, ऐश्वर्यवान्, सृष्टिकर्ता **हि =** ही, निश्चय **राजा =** राजा **सुभगाम् =** सुभगा को, सुन्दर गति, ज्ञान वाले को, उत्तम सेवित, भजनीय को **कृणोति =** करता है **सुवाना =** उत्पन्न कर्ता, उत्तम शब्द कर्ता, श्रेष्ठ सेवा करने वाले **पुत्रान् =** पुत्रों को **महिषी =** पूजित, सम्मानित की भाँति (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना)। **भवाति =** होता है (भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **गत्वा =** जाकर (गम् = जाना, जानना, पाना)। **पतिम् =** पति को, अधिपति, रक्षक, पालक (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **सुभगा =** सुभगा, सुन्दर गति, ज्ञान वाले, उत्तम सेवित, भजनीय **वि =** विशेष, विना, विलोम **राजतु =** विशेष प्रकाशित **॥ 3 ॥**

पदार्थ - इयम् = यह, इसको (सर्वनाम)। **अग्ने =** हे अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **नारी =** नारी (नृ - नम्र होना, विनय होना, कोमल होना, मृदु होना, चलना, ले जाना)। **पतिम् =** पति को, अधिपति, रक्षक, पालक (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **विदेष्ट =** समझायें, ज्ञान दें (विद - समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर

रहना)। **सोमो =** सृजन-ऐश्वर्य-अन्तकर्ता, ऐश्वर्यवान्, सृष्टिकर्ता, (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामथ्य, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना। सू = प्रेरणा देना। सो–स्य, सय - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना)। **हि =** ही, निश्चय (अव्यय)। **राजा =** राजा (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **सुभगाम् =** सुभगा को, सुन्दर गति, ज्ञान वाले को, उत्तम सेवित, भजनीय को (सु - उत्तम, अच्छा, भग्-भज् = सेवा करना, सेवन करना, सेवित होना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अलग करना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)। **कृणोति =** करता है (कृ = करना)। **सुवाना =** उत्पन्न कर्ता, उत्तम शब्द कर्ता, श्रेष्ठ सेवा करने वाले (सु = उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, सू- भेजना, उड़ाना, सु - उत्तम, अच्छा, वन - शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, आपद्ग्रस्त होना, अलग करना, मिलाना, स्मरण करना, बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, याचना करना, मांगना, दुःख देना, उद्योग-धन्धा करना)। **पुत्रान् =** पुत्रों को (पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)। **महिषी =** पूजित, सम्मानित की भाँति (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना)। **भवाति =** होता है (भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **गत्वा =** जाकर (गम् = जाना, जानना, पाना)। **पतिम् =** पति को, अधिपति, रक्षक, पालक (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **सुभगा =** सुभगा, सुन्दर गति, ज्ञान वाले, उत्तम सेवित, भजनीय (सु - उत्तम, अच्छा, भग्-भज् = सेवा करना, सेवन करना, सेवित होना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अलग करना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)। **वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **राजतु =** विशेष प्रकाशित (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना) **॥ 3 ॥**

357. यथा अखरो मघवन् चारुः,
एष प्रियो मृगाणाम् सुषदा बभूव।
एव आ भगस्य जुष्टा इयम् अस्तु नारी,
सम्-प्रिया पत्या अवि-राधयन्ती ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - यथा = जिससे, जैसे, जिस प्रकार **अखरो =** दुःख देने वाले, खनन करने वाले, खोदने वाले **मघवन् =** धनवान्, ऐश्वर्यवान् **चारुः =** चारु **एष =** यह **प्रियो =** प्रिय **मृगाणाम् =** मृगों का, अन्वेषियों का **सुषदा =** सद्विद्या, सुपथ **बभूव =** हो गये **एव =** ही **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **भगस्य =** भग का, सेवा का **जुष्टा =** विचार, प्रीति, सेवा किया हुआ **इयम् =** यह, इसको **अस्तु =** हो **नारी =** नारी **सम्-प्रिया =** सम्यक् प्रिय **पत्या =** ऐश्वर्यवान् **अवि-राधयन्ती =** विशेष शुद्ध, निर्दोष निर्णय, वृद्धि करते रहें **॥ 4 ॥**

पदार्थ - यथा = जिससे, जैसे, जिस प्रकार (अव्यय)। **अखरो =** दुःख देने वाले, खनन करने वाले, खोदने वाले (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, खन - दुःख देना, खनन करना)। **मघवन् =** धनवान्, ऐश्वर्यवान् (मघ् = धन होना, ऐश्वर्य होना)। **चारुः =** चारु (चर -जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना। चार - संशय होना, निश्चय करना)। **एष =** यह (सर्वनाम)। **प्रियो =** प्रिय (प्री = स्नेह करना, प्यार करना, तृप्त करना, सन्तुष्ट करना, चाहना)। **मृगाणाम् =** मृगों का, अन्वेषियों का (मृग् - अन्वेषण करना, खोजना, आखेट करना)। **सुषदा =** सद्विद्या, सुपथ (सु - अच्छा, सुन्दर, सद् = जाना, जानना)। **बभूव =** हो गये (भू = होना, प्राप्त होना)। **एव =** ही (अव्यय)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **भगस्य =** भग का, सेवा का (भग्-भज् = सेवा करना, सेवन करना, सेवित होना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)। **जुष्टा =** विचार, प्रीति, सेवा किया हुआ (जुष् = विचार करना, सेवा करना, सेवन करना, विवेक होना, विवेचना करना, प्रीति करना, चाहना, दुलारना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना)। **इयम् =** यह, इसको (सर्वनाम)। **अस्तु =** हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **नारी =** नारी (नृ - नम्र

होना, विनय होना, कोमल होना, मृदु होना, चलना, ले जाना)। **सम्-प्रिया** = सम्यक् प्रिय (सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग) प्री = स्नेह करना, प्यार करना, तृप्त करना, सन्तुष्ट करना, चाहना)। **पत्या** = ऐश्वर्यवान् (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **अवि-राधयन्ती** = विशेष शुद्ध, निर्दोष निर्णय, वृद्धि करते रहें (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग), रध - शुद्ध होना, निर्दोष होना, पूर्ण करना, समाप्त करना, परिपक्व होना, अपकार करना, हिंसा करना, राध - बढ़ना, निर्णय करना, सिद्ध होना) ॥ 4 ॥

358. भगस्य नावम् आ रोह,
पूर्णाम् अनुप-दस्वतीम्।
तया उप-प्रतारय,
यो वरः प्रतिकाम्यः ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ - **भगस्य** = भग का, सेवा का **नावम्** = नाव को, तैरने वाले को **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **रोह** = चढ़ें, बढ़ें **पूर्णाम्** = पूर्ण को **अनुप-दस्वतीम्** = नाशहीन **तया** = उसके द्वारा **उप-प्रतारय** = तार दे **यो** = जो **वरः** = वर **प्रतिकाम्यः** = प्रतिकाम, प्रत्येक कामना ॥ 5 ॥

पदार्थ - **भगस्य** = भग का, सेवा का (भग्-भज् = सेवा करना, सेवन करना, सेवित होना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)। **नावम्** = नाव को, तैरने वाले को (नौ - तैरना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **रोह** = चढ़ें, बढ़ें (रुह - बढ़ना, चढ़ना, बीज से उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना)। **पूर्णाम्** = पूर्ण को (पृ - पूर् - पूर्ण करना, भरना, तृप्त करना, आनन्द करना, सन्तोष होना, आनन्द होना, पूर्ण होना)। **अनुप-दस्वतीम्** = नाशहीन (अन् - नहीं, उप = समीप (उपसर्ग), दस् - रक्षण, पालन, स्थापन करना, देखना, नष्ट होना, नष्ट करना, डसना)। **तया** = उसके द्वारा (सर्वनाम)। **उप-प्रतारय** = तार दे (उप = समीप (उपसर्ग), प्र - प्रकृष्ट, अधिक, तृ - पार जाना, तैरना, जीतना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **वरः** = वर (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, पसन्द करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **प्रतिकाम्यः** = प्रतिकाम, प्रत्येक कामना (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (अव्यय), कम - चाहना, इच्छा करना) ॥ 5 ॥

359. आ क्रन्दय धनपते,
वरम् आमनसम् कृणु।
सर्वम् प्रदक्षिणम् कृणु,
यो वरः प्रतिकाम्यः ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ - **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **क्रन्दय** = क्रन्दन करो **धनपते** = हे धन-पति **वरम्** = वर को **आमनसम्** = सम्यक् मन को **कृणु** = करो **सर्वम्** = सब **प्रदक्षिणम्** = प्रदक्षिण को **कृणु** = करो **यो** = जो **वरः** = वर **प्रतिकाम्यः** = प्रतिकाम, प्रत्येक कामना ॥ 6 ॥

पदार्थ - **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **क्रन्दय** = क्रन्दन करो (क्रन्द् - रोना, पुकारना, दुःख होना)। **धनपते** = हे धन-पति (धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **वरम्** = वर को (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, पसन्द करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **आमनसम्** = सम्यक् मन को (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **कृणु** = करो (कृ = करना)। **सर्वम्** = सब (सर्वनाम)। **प्रदक्षिणम्** = प्रदक्षिण को (प्र - प्रकृष्ट, दक्ष् - बढ़ना, समृद्ध होना, शीघ्र कार्य करना, चतुर होना, दक्ष होना, चलना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मार डालना)। **कृणु** = करो (कृ = करना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **वरः** = वर

(वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, पसन्द करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **प्रतिकाम्यः** = प्रतिकाम, प्रत्येक कामना (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (अव्यय), कम - चाहना, इच्छा करना) **॥ 6 ॥**

360. इदम् हिरण्यम् गुल्गुलु,
अयम् औक्षो अथो भगः।
एते पतिभ्यः त्वाम् अदुः,
प्रतिकामाय वेत्तवे ॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ - **इदम्** = यह, इसको **हिरण्यम्** = प्रकाशमान, शब्दमय **गुल्गुलु** = खाने वाले, भक्षण करने वाले **अयम्** = यह **औक्षो** = सिञ्चन करने वाला **अथो** = अब, इसके बाद, इसके अनन्तर **भगः** = भग, सेवा, सेवित, सेवनीय **एते** = यह **पतिभ्यः** = पति को, अधिपति, रक्षक, पालक **त्वाम्** = तुमको, तुम्हारी **अदुः** = खाया **प्रतिकामाय** = प्रतिकाम, प्रत्येक कामना के लिए **वेत्तवे** = विद्वानों में **॥ 7 ॥**

पदार्थ - **इदम्** = यह, इसको (सर्वनाम)। **हिरण्यम्** = प्रकाशमान, शब्दमय (हिरण - प्रकाश होना, दीप्त होना, शब्द करना, ध्वनि होना)। **गुल्गुलु** = खाने वाले, भक्षण करने वाले (गुल् = खाना, भक्षण करना, निगलना)। **अयम्** = यह (सर्वनाम)। **औक्षो** = सिञ्चन करने वाला (उक्ष् - सिंचन करना, स्वच्छ करना)। **अथो** = अब, इसके बाद, इसके अनन्तर (अव्यय)। **भगः** = भग, सेवा, सेवित, सेवनीय (भग्-भज् = सेवा करना, सेवन करना, सेवित होना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)। **एते** = यह (सर्वनाम)। **पतिभ्यः** = पति को, अधिपति, रक्षक, पालक (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **त्वाम्** = तुमको, तुम्हारी (सर्वनाम)। **अदुः** = खाया (अद् = खाना, ग्रहण करना, आत्मसात् करना, नष्ट करना)। **प्रतिकामाय** = प्रतिकाम, प्रत्येक कामना के लिए (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (अव्यय), कम - चाहना, इच्छा करना)। **वेत्तवे** = विद्वानों में (विद् = जानना, समझना, विद्यमान होना) **॥ 7 ॥**

361. आ ते नयतु सविता नयतु,
पतिः यः प्रतिकाम्यः।
त्वम् अस्यै धेहि ओषधे ॥ 8 ॥

मन्त्रार्थ - **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **नयतु** = ले चलो **सविता** = सृष्टिकर्ता, उत्पन्न करने वाला, ऐश्वर्यवान् तथा ऐश्वर्य देने वाला **नयतु** = ले चलो **पतिः** = पति, अधिपति, रक्षक, पालक **यः** = जो **प्रतिकाम्यः** = प्रतिकाम, प्रत्येक कामना **त्वम्** = तुम **अस्यै** = इसके लिए **धेहि** = धारण करें **ओषधे** = हे ओषधि **॥ 8 ॥**

पदार्थ - **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **नयतु** = ले चलो (नय - जाना, हिलना, पहुँचना, संरक्षण करना)। **सविता** = सृष्टिकर्ता, उत्पन्न करने वाला, ऐश्वर्यवान् तथा ऐश्वर्य देने वाला (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)। **नयतु** = ले चलो (नय - जाना, हिलना, पहुँचना, संरक्षण करना)। **पतिः** = पति, अधिपति, रक्षक, पालक (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **यः** = जो (सर्वनाम)। **प्रतिकाम्यः** = प्रतिकाम, प्रत्येक कामना (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (अव्यय), कम - चाहना, इच्छा करना) **त्वम्** = तुम (सर्वनाम)। **अस्यै** = इसके लिए (सर्वनाम)। **धेहि** = धारण करें (धा-धि-धी - धारण करना, पहनना, पोषण करना, रक्षण करना, देना)। **ओषधे** = हे ओषधि (उषध्-ओषध् - चिकित्सा करना, रोगमुक्त करना) **॥ 8 ॥**

इति द्वितीयम् काण्डम्

ॐ

तृतीयम् काण्डम्

13 अनुवाक - 1

72. शत्रुसेना सम्मोहन सूक्त - 1

362. अग्निः नः शत्रून् प्रति एतु विद्वान्,
प्रतिदहन् अभिशस्तिम् अरातिम्।
सः सेनाम् मोहयतु परेषाम्,
निःहस्तान् च कृणवत् जातवेदाः॥ 1॥

मन्त्रार्थ - **अग्निः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा **शत्रून्** = शत्रुओं को **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में **एतु** = प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे **विद्वान्** = विद्वान्, जानने वाला, ज्ञानी **प्रतिदहन्** = जलाते हुए **अभिशस्तिम्** = सर्वथा विनती, स्तुति, निन्दा करने वाले को **अरातिम्** = अदानी को **सः** = वह, उसने **सेनाम्** = सेना को **मोहयतु** = मोहित, भ्रमित कर दें **परेषाम्** = परायों का, दूसरों का, दूसरे के साथ **निःहस्तान्** = निःहस्तों को **च** = और **कृणवत्** = करता है, कर्मशील, श्रोता, विद्वान् **जातवेदाः** = विद्वान्, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले॥ 1॥

पदार्थ - **अग्निः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **शत्रून्** = शत्रुओं को (शी-शद्-शत् - जीर्ण होना, गिरना, गिराना)। **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग)। **एतु** = प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना, इच्छा करना, प्रेरणा करना, ए - जाना, फैलना, व्यापना, गर्भवती होना, इच्छा करना, चाहना, खाना, उड़ाना, फेंकना, भेजना, प्रेरणा करना)। **विद्वान्** = विद्वान्, जानने वाला, ज्ञानी (विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना, विद्यमान होना, विचार करना, जीवन होना)। **प्रतिदहन्** = जलाते हुए (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में, दह् - जलाना, नष्ट करना, दुःख देना)। **अभिशस्तिम्** = सर्वथा विनती, स्तुति, निन्दा करने वाले को (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, शष् = हिंसा करना, मारना, निन्दा करना, अभिशस् = विनती करना, प्रार्थना करना, शंस् = चाहना, स्तुति करना)। **अरातिम्** = अदानी को (अ - नहीं, रा = देना, रम् - रमना, रमण करना, रम जाना, रत होना, क्रीडा करना, प्रिय होना, मूल्यवान होना)। **सः** = वह, उसने (सर्वनाम)। **सेनाम्** = सेना को (सि–सिन् = बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना)। **मोहयतु** = मोहित, भ्रमित कर दें (मुह् - मोहना, मोहित होना, मुग्ध होना, बुद्धिभ्रष्ट होना)। **परेषाम्** = परायों का, दूसरों का, दूसरे के साथ (सर्वनाम)। **निःहस्तान्** = निःहस्तों को (निः = निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग)। हन = मार डालना, प्राप्त करना, जाना, किसी प्रकार समाप्त करना)। **च** = और (अव्यय)। **कृणवत्** = करता है, कर्मशील, श्रोता, विद्वान् (कृ = करना, कृण् - सुनना, करना, हिंसा करना)। **जातवेदाः** = विद्वान्, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले (जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जा-ज्ञा - जानना, विद् - जानना)॥ 1॥

363. यूयम् उग्राः मरुत ईदृशे स्थ,
अभि प्र इत मृणत सहध्वम्।
अमीमृणन् वसवो नाथिताः इमे,
अग्निः हि एषाम् दूतः प्रति-एतु विद्वान्॥ 2॥

मन्त्रार्थ - **यूयम्** = तुम दोनों **उग्राः** = उग्र **मरुतः** = मरुत्, मरणशील **ईदृशे** = समदर्शी **स्थ** = स्थित, हो **अभि**

= अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक **इत** = पाये, गति, ज्ञान, प्रकाश प्राप्त किया **मृणत** = हिंसा करो **सहध्वम्** = साथ को, प्रतिरोध करो **अमीमृणन्** = अमीमृण करते हुए, शब्द-हिंसा करते हुए **वसवो** = वसुगण, निवास करने वाले, वास देने वाले **नाथिताः** = नाथने वाले **इमे** = यह, इस, ये **अग्निः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् **हि** = ही, निश्चय **एषाम्** = इनका **दूतः** = गतिशील, विद्वान्, परिश्रमी, दुःखदायी **प्रति-एतु** = प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे **विद्वान्** = विद्वान्, जानने वाला, ज्ञानी **॥ 2 ॥**

पदार्थ - **यूयम्** = तुम दोनों (सर्वनाम)। **उग्राः** = उग्र (उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना, उग् - उग्र - उग्र होना, तेज होना)। **मरुतः** = मरुत्, मरणशील (मृ = मरना, देहत्याग करना)। **ईदृशे** = समदर्शी (ई - समान, इस प्रकार, वैदिक उपसर्ग, दृक्ष्-दृश् -देखना)। **स्थ** = स्थित, हो (स्था- स्थित होना, ठहरना)। **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **इत** = पाये, गति, ज्ञान, प्रकाश प्राप्त किया (इ - जाना, जानना, पाना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)। **मृणत** = हिंसा करो (मृण् - हिंसा करना, मारना, छिद्र करना)। **सहध्वम्** = साथ को, प्रतिरोध करो (सह = साथ, सहित (सर्वनाम), सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)। **अमीमृणन्** = अमीमृण करते हुए, शब्द-हिंसा करते हुए (अम = जाना, जानना, शब्द करना, सेवा करना, मृण् - हिंसा करना, मारना, छिद्र करना)। **वसवो** = वसुगण, निवास करने वाले, वास देने वाले (वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)। **नाथिताः** = नाथने वाले (नाथ - याचना करना, रोगी होना, श्रीमान् होना, आशीर्वाद देना, स्वस्ति-वाचन करना) **इमे** = यह, इस, ये (सर्वनाम)। **अग्निः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **हि** = ही, निश्चय (अव्यय)। **एषाम्** = इनका (सर्वनाम)। **दूतः** = गतिशील, विद्वान्, परिश्रमी, दुःखदायी (दू = जाना, जानना, पाना, सुगन्ध लेना, श्रम करना, जलना, तप्त होना, दुःख होना, दुःख देना)। **प्रति-एतु** = प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, अव्यय, आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना, इच्छा करना, प्रेरणा करना, ए - जाना, फैलना, व्यापना, गर्भवती होना, इच्छा करना, चाहना, खाना, उड़ाना, फेंकना, भेजना, प्रेरणा करना)। **विद्वान्** = विद्वान्, जानने वाला, ज्ञानी (विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना, विद्यमान होना, विचार करना, जीवन होना) **॥ 2 ॥**

364. अमित्र-सेनाम् मघवन्,
अस्मान् शत्रु-यतीम् अभि।
युवम् तान् इन्द्र वृत्रहन्,
अग्निः च दहतम् प्रति॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - **अमित्र-सेनाम्** = अमित्र-सेना को, अस्नेही-सेना को **मघवन्** = धनवान्, ऐश्वर्यवान् **अस्मान्** = हमें, हमको **शत्रु-यतीम्** = शत्रुता को **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा **युवम्** = तुमको **तान्** = उसको **इन्द्र** = हे इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान **वृत्रहन्** = हिंसा का हनन करने वाले **अग्निः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् **च** = और **दहतम्** = जलाते हैं **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में **॥ 3 ॥**

पदार्थ - **अमित्र-सेनाम्** = अमित्र-सेना को, अस्नेही-सेना को (अ = नहीं, मिद् = प्रीति करना, स्नेह करना, सि–सिन् = बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना)। **मघवन्** = धनवान्, ऐश्वर्यवान् (मघ् = धन होना, ऐश्वर्य होना)। **अस्मान्** = हमें, हमको (सर्वनाम)। **शत्रु-यतीम्** = शत्रुता को (शी-शद्-शत् - जीर्ण होना, गिरना, गिराना)। **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **युवम्** = तुमको (सर्वनाम)। **तान्** = उसको (सर्वनाम)। **इन्द्र** = हे इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **वृत्रहन्** = हिंसा का हनन करने वाले (वृ - वरण करना, आच्छादन करना, स्वीकार करना, वृत् - वर्तना, वर्तमान होना वरण करना, सेवा करना, चमकना, बोलना, हिंसा करना,

हन् - हिंसा करना)। **अग्निः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **च** = और (अव्यय)। **दहतम्** = जलाते हैं (दह् - जलाना, नष्ट करना, दुःख देना)। **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग) ॥ 3 ॥

365. प्र-सूतः इन्द्र प्रवता हरिभ्याम्,
प्र ते वज्रः प्र-मृणन् एतु शत्रून्।
जहि प्रतीचः अनूचः पराचः विष्वक्,
सत्वम् कृणुहि चित्तम् एषाम् ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - **प्र-सूतः** = उत्पन्न **इन्द्र** = हे इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान **प्रवता** = प्रवदा, प्रवक्ता, प्रकृष्ट बोलने वाला **हरिभ्याम्** = हरि-युगल द्वारा, हरि-युगल के लिए, हरि-युगल से **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **वज्रः** = वज्र, गतिमान **प्र-मृणन्** = प्रकृष्ट हिंसा करता हुआ, हिंसक **एतु** = प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे **शत्रून्** = शत्रुओं को **जहि** = हनन करो, प्रगति करो, व्याप्त हो, नष्ट करो **प्रतीचः** = प्रति मान, पूजा, शोभा **अनूचः** = अनूच, अनुसम्बन्ध, अनुसंगठन, अनुवाची **पराचः** = पराच **विष्वक्** = विश्वक, व्यापक **सत्वम्** = सत्व को, सत्य को **कृणुहि** = करो **चित्तम्** = चित्त या चेतना, ज्ञान **एषाम्** = इनका ॥ 4 ॥

पदार्थ - **प्र-सूतः** = उत्पन्न (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना)। **इन्द्र** = हे इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **प्रवता** = प्रवदा, प्रवक्ता, प्रकृष्ट बोलने वाला (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, वद - कहना, समझाना)। **हरिभ्याम्** = हरि-युगल द्वारा, हरि-युगल के लिए, हरि-युगल से (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)। **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **वज्रः** = वज्र, गतिमान (वज् - गति करना, जाना, हस्त - देना, लेना, ग्रहण करना)। **प्र-मृणन्** = प्रकृष्ट हिंसा करता हुआ, हिंसक (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, मृण् - हिंसा करना, मारना, छिद्र करना)। **एतु** = प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना, इच्छा करना, प्रेरणा करना, ए - जाना, फैलना, व्यापना, गर्भवती होना, इच्छा करना, चाहना, खाना, उड़ाना, फेंकना, भेजना, प्रेरणा करना)। **शत्रून्** = शत्रुओं को (शी-शद्-शत् - जीर्ण होना, गिरना, गिराना)। **जहि** = हनन करो, प्रगति करो, व्याप्त हो, नष्ट करो (जह - हिंसा करना, चलना, फैलना, जहा – परित्याग करना, छोड़ना)। **प्रतीचः** = प्रति मान, पूजा, शोभा (प्रति = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग), अञ्च-अंच - झुकना, टेढ़ा करना, जाना, पूजा करना, मान करना, संवारना, शोभित करना, मांगना, चाहना, प्रकट करना, न्यूनाधिक देखना, अस्पष्ट बोलना)। **अनूचः** = अनूच, अनुसम्बन्ध, अनुसंगठन, अनुवाची (अनु = अनुकूल, पश्चात्, उच - सम्बन्ध होना, एकत्र होना, अञ्च-अंच - झुकना, टेढ़ा करना, जाना, पूजा करना, मान करना, संवारना, शोभित करना, मांगना, चाहना, प्रकट करना, न्यूनाधिक देखना, अस्पष्ट बोलना)। **पराचः** = पराच (परा = पीछे, विपरीत (उपसर्ग), अञ्च-अंच - झुकना, टेढ़ा करना, जाना, पूजा करना, मान करना, संवारना, शोभित करना, मांगना, चाहना, प्रकट करना, न्यूनाधिक देखना, अस्पष्ट बोलना)। **विष्वक्** = विश्वक, व्यापक (विष्ण-विष् -विविष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना, व्यापना, फैलना, प्रसृत होना)। **सत्वम्** = सत्व को, सत्य को (सत् - होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना)। **कृणुहि** = करो (कृ = करना)। **चित्तम्** = चित्त या चेतना, ज्ञान (चि - चुनना, एकत्र करना, चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, सम्यक् ज्ञान होना, स्मरण करना, शंका करना, सन्देह करना)। **एषाम्** = इनका (सर्वनाम) ॥ 4 ॥

366. इन्द्र सेनाम् मोहय अमित्राणाम्।
अग्नेः वातस्य ध्राज्या तान्,
विषूचः वि नाशय ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ - **इन्द्र** = हे इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान **सेनाम्** = सेना को **मोहय** = मोहित, भ्रमित करो **अमित्राणाम्** = अमित्रों का, अस्नेही जनों का **अग्नेः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् **वातस्य** = वात का **ध्राज्या** =

गतिमान, ज्ञानी **तान्** = उसको **विषूचः** = विसूच **वि** = विशेष, विना, विलोम **नाशय** = नाश करो, विनाश करो **॥ 5 ॥**

पदार्थ - **इन्द्र** = हे इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **सेनाम्** = सेना को (सि–सिन् = बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना)। **मोहय** = मोहित, भ्रमित करो (मुह् - मोहना, मोहित होना, मुग्ध होना, बुद्धिभ्रष्ट होना)। **अमित्राणाम्** = अमित्रों का, अस्नेही जनों का (अ = नहीं, मिद् = स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, नरम होना, मृदुल होना)। **अग्नेः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **वातस्य** = वात का (वात - सुखी होना, आनन्द करना, सेवा करना, जाना, वा - गति करना, बहना, पवन की भाँति चलना)। **ध्राज्या** = गतिमान, ज्ञानी (ध्रज् - जाना, जानना, पाना)। **तान्** = उसको (सर्वनाम)। **विषूचः** = विसूच (विष - सींचना, प्रोक्षण करना, सूच - सूचना करना, बात कहना, जताना, दूसरे की न्यूनता दिखाना। सु - उत्पन्न करना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **नाशय** = नाश करो, विनाश करो (नश् - नष्ट होना, अदृश्य होना) **॥ 5 ॥**

367. इन्द्रः सेनाम् मोहयतु,
मरुतः घ्नन्तु ओजसा।
चक्षूंषिः अग्निः आ दत्ताम्,
पुनः एतु पराजिता ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ - **इन्द्रः** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान **सेनाम्** = सेना को **मोहयतु** = मोहित, भ्रमित करो **मरुतः** = मरणशील का, मरुत् का **घ्नन्तु** = हनन करें, नष्ट करें **ओजसा** = ओज द्वारा **चक्षूंषिः** = नेत्रों का, दृष्टियों का, स्पष्ट वाणियों का **अग्निः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **दत्ताम्** = दान को **पुनः** = फिर **एतु** = प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे **पराजिता** = पराजित **॥ 6 ॥**

पदार्थ - **इन्द्रः** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **सेनाम्** = सेना को (सि–सिन् = बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना)। **मोहयतु** = मोहित, भ्रमित करो (मुह् - मोहना, मोहित होना, मुग्ध होना, बुद्धिभ्रष्ट होना)। **मरुतः** = मरणशील का, मरुत् का (मृ = मरना, देहत्याग करना)। **घ्नन्तु** = हनन करें, नष्ट करें (हन् - मारना)। **ओजसा** = ओज द्वारा (ओज - शक्तिमान् होना, जीवित होना, बढ़ना)। **चक्षूंषिः** = नेत्रों का, दृष्टियों का, स्पष्ट वाणियों का (चक्ष् - स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)। **अग्निः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **दत्ताम्** = दान को (दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)। **पुनः** = फिर (अव्यय)। **एतु** = प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना, इच्छा करना, प्रेरणा करना, ए - जाना, फैलना, व्यापना, गर्भवती होना, इच्छा करना, चाहना, खाना, उड़ाना, फेंकना, भेजना, प्रेरणा करना)। **पराजिता** = पराजित (परा - परम, परे, पीछे, विपरीत, अव्यय, जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना) **॥ 6 ॥**

73. शत्रुसेना सम्मोहन सूक्त - 2

368. अग्निः नः दूतः प्रति-एतु विद्वान्,
प्रति-दहन् अभि-शस्तिम् अरातिम्।
सः चित्तानि मोहयतु परेषाम्,
निः-हस्तान् च कृणवत् जातवेदाः ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - **अग्निः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा **दूतः** = गतिशील, विद्वान्, परिश्रमी, दुःखदायी **प्रति-एतु** = प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे **विद्वान्** = विद्वान्, जानने वाला, ज्ञानी **प्रति-दहन्** = जलाते हुए **अभि-शस्तिम्** = सर्वथा विनती, स्तुति, निन्दा करने वाले को **अरातिम्** = अदानी को **सः** = वह,

उसने **चित्तानि** = चित्त या चेतना, ज्ञान **मोहयतु** = मोहित, भ्रमित करो **परेषाम्** = परायों का, दूसरों का, दूसरे के साथ **निः-हस्तान्** = निःहस्तों को **च** = और **कृणवत्** = करता है, कर्मशील, श्रोता, विद्वान् **जातवेदाः** = विद्वान्, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले **॥ 1 ॥**

पदार्थ - **अग्निः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **दूतः** = गतिशील, विद्वान्, परिश्रमी, दुःखदायी (दू = जाना, जानना, पाना, सुगन्ध लेना, श्रम करना, जलना, तप्त होना, दुःख होना, दुःख देना)। **प्रति-एतु** = प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, अव्यय, आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना, इच्छा करना, प्रेरणा करना, ए - जाना, फैलना, व्यापना, गर्भवती होना, इच्छा करना, चाहना, खाना, उड़ाना, फेंकना, भेजना, प्रेरणा करना)। **विद्वान्** = विद्वान्, जानने वाला, ज्ञानी (विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना, विद्यमान होना, विचार करना, जीवन होना)। **प्रति-दहन्** = जलाते हुए (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में, दह् - जलाना, नष्ट करना, दुःख देना)। **अभि-शस्तिम्** = सर्वथा विनती, स्तुति, निन्दा करने वाले को (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, शष् = हिंसा करना, मारना, निन्दा करना, अभिशस् = विनती करना, प्रार्थना करना, शंस् = चाहना, स्तुति करना)। **अरातिम्** = अदानी को (अ - नहीं, रा = देना, रम् - रमना, रमण करना, रम जाना, रत होना, क्रीडा करना, प्रिय होना, मूल्यवान होना)। **सः** = वह, उसने (सर्वनाम)। **चित्तानि** = चित्त या चेतना, ज्ञान (चि - चुनना, एकत्र करना, चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, सम्यक् ज्ञान होना, स्मरण करना, शंका करना, सन्देह करना)। **मोहयतु** = मोहित, भ्रमित करो (मुह् - मोहना, मोहित होना, मुग्ध होना, बुद्धिभ्रष्ट होना)। **परेषाम्** = परायों का, दूसरों का, दूसरे के साथ (सर्वनाम)। **निः-हस्तान्** = निःहस्तों को (निः = निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग)। हन = मार डालना, प्राप्त करना, जाना, किसी प्रकार समाप्त करना)। **च** = और (अव्यय)। **कृणवत्** = करता है, कर्मशील, श्रोता, विद्वान् (कृ = करना, कृण् - सुनना, करना, हिंसा करना)। **जातवेदाः** = विद्वान्, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले (जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जा-ज्ञा - जानना, विद् - जानना) **॥ 1 ॥**

369. अयम् अग्निः अमूमुहत्,
यानि चित्तानि वः हृदि।
वि वः धमतु ओकसः,
प्र वः धमतु सर्वतः ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - **अयम्** = यह **अग्निः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् **अमूमुहत्** = मोहित किया, भ्रमित किया **यानि** = जो **चित्तानि** = चित्त या चेतना, ज्ञान **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **हृदि** = हृद् में, हृदय में **वि** = विशेष, विना, विलोम **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **धमतु** = वाद्य बजाओ, धौंको, फूँको **ओकसः** = निवास, आह्वान **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **धमतु** = वाद्य बजाओ, धौंको, फूँको **सर्वतः** = सब ओर से **॥ 2 ॥**

पदार्थ - **अयम्** = यह (सर्वनाम)। **अग्निः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **अमूमुहत्** = मोहित किया, भ्रमित किया (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, मुह् - मोहना, मोहित होना, मुग्ध होना, बुद्धिभ्रष्ट होना)। **यानि** = जो (सर्वनाम)। **चित्तानि** = चित्त या चेतना, ज्ञान (चि - चुनना, एकत्र करना, चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, सम्यक् ज्ञान होना, स्मरण करना, शंका करना, सन्देह करना)। **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **हृदि** = हृद् में, हृदय में (हृ - प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **धमतु** = वाद्य बजाओ, धौंको, फूँको (धम्-ध्मा - चलना, जाना, जानना, पाना, वाद्य बजाना, धौंकना, फूँकना, मुंह से वंशी आदि वाद्य बजाना,

आग सुलगाना, आग लगाना, प्रदीप्त करना, जलाना)। **ओकसः** = निवास, आह्वान (ओक - निवास करना)। **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **धमतु** = वाद्य बजाओ, धौंको, फूँको (धम्-ध्मा - चलना, जाना, जानना, पाना, वाद्य बजाना, धौंकना, फूँकना, मुंह से वंशी आदि वाद्य बजाना, आग सुलगाना, आग लगाना, प्रदीप्त करना, जलाना)। **सर्वतः** = सब ओर से (अव्यय) **॥ 2 ॥**

370. इन्द्र चित्तानि मोहयन्,
अर्वाङ् आकूत्या चर।
अग्नेः वातस्य ध्राज्या,
तान् विषूचो वि नाशय ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - **इन्द्र** = हे इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान **चित्तानि** = चित्त या चेतना, ज्ञान **मोहयन्** = मोहित करते हुए **अर्वाङ्** = अभिमुख, गतिशील, शब्दकर्ता **आकूत्या** = सम्यक् वाणियों द्वारा, शब्दों द्वारा **चर** = चलने वाला **अग्नेः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् **वातस्य** = वात का **ध्राज्या** = गतिमान, ज्ञानी **तान्** = उसको **विषूचो** = विसूच **वि** = विशेष, विना, विलोम **नाशय** = नाश करो, विनाश करो **॥ 3 ॥**

पदार्थ - **इन्द्र** = हे इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **चित्तानि** = चित्त या चेतना, ज्ञान (चि - चुनना, एकत्र करना, चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, सम्यक् ज्ञान होना, स्मरण करना, शंका करना, सन्देह करना)। **मोहयन्** = मोहित करते हुए (मुह् - मोहना, मोहित होना, मुग्ध होना, बुद्धिभ्रष्ट होना)। **अर्वाङ्** = अभिमुख, गतिशील, शब्दकर्ता (ऋ - जाना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना, पहुँचाना, अर्-ऋ - गति करना, जाना, जानना, पाना, शब्द करना, व्याप्त होना, मिलाना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, अर्व - गति करना, जाना, चलना, जानना, पाना, पहुँचना, हिंसा करना)। **आकूत्या** = सम्यक् वाणियों द्वारा, शब्दों द्वारा (आ = समन्तात्, सम्पूर्ण, कू - शब्द करना)। **चर** = चलने वाला (चर -जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)। **अग्नेः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **वातस्य** = वात का (वात - सुखी होना, आनन्द करना, सेवा करना, जाना, वा - गति करना, बहना, पवन की भाँति चलना)। **ध्राज्या** = गतिमान, ज्ञानी (ध्रज् - जाना, जानना, पाना)। **तान्** = उसको (सर्वनाम)। **विषूचो** = विसूच (विष - सींचना, प्रोक्षण करना, सूच - सूचना करना, बात कहना, जताना, दूसरे की न्यूनता दिखाना। सु - उत्पन्न करना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **नाशय** = नाश करो, विनाश करो (नश् - नष्ट होना, अदृश्य होना) **॥ 3 ॥**

371. वि आकूतयः एषाम् इत,
अथो चित्तानि मुह्यत।
अथो यत् अद्य एषाम् हृदि,
तत् एषाम् परि निः जहि ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - **वि** = विशेष, विना, विलोम **आकूतयः** = सम्यक् वाणी वाले, विद्वान् **एषाम्** = इनका **इत** = पाये, गति, ज्ञान, प्रकाश प्राप्त किया **अथो** = अब, इसके बाद, इसके अनन्तर **चित्तानि** = चित्त या चेतना, ज्ञान **मुह्यत** = मोहित, भ्रमित करो **अथो** = अब, इसके बाद, इसके अनन्तर **यत्** = जिसे, जो **अद्य** = आज **एषाम्** = इनका **हृदि** = हृद् में, हृदय में **तत्** = वह, उस को **एषाम्** = इनका **परि** = सभी तरफ **निः** = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर **जहि** = हनन करो, प्रगति करो, व्याप्त हो, नष्ट करो **॥ 4 ॥**

पदार्थ - **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **आकूतयः** = सम्यक् वाणी वाले, विद्वान् (आ = समन्तात्, सम्पूर्ण, कू - शब्द करना)। **एषाम्** = इनका (सर्वनाम)। **इत** = पाये, गति, ज्ञान, प्रकाश प्राप्त किया (इ - जाना, जानना, पाना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)। **अथो** = अब, इसके बाद, इसके अनन्तर (अव्यय)। **चित्तानि** = चित्त या चेतना, ज्ञान (चि - चुनना, एकत्र करना, चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, सम्यक् ज्ञान होना, स्मरण

करना, शंका करना, सन्देह करना)। **मुह्यत** = मोहित, भ्रमित करो (मुह् - मोहना, मोहित होना, मुग्ध होना, बुद्धिभ्रष्ट होना)। **अथो** = अब, इसके बाद, इसके अनन्तर (अव्यय)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **अद्य** = आज (अव्यय)। **एषाम्** = इनका (सर्वनाम)। **हृदि** = हृद् में, हृदय में (हृ - प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना)। **तत्** = वह, उस को (सर्वनाम)। **एषाम्** = इनका (सर्वनाम)। **परि** = सभी तरफ (उपसर्ग)। **निः** = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग)। **जहि** = हनन करो, प्रगति करो, व्याप्त हो, नष्ट करो (जह - हिंसा करना, चलना, फैलना, जहा – परित्याग करना, छोड़ना) **॥ 4 ॥**

372. अमीषाम् चित्तानि प्रति-मोहयन्ती,
गृहाण अङ्गानि अप्वे परा इहि।
अभि प्र इहि निः दह हृत्-सु शोकैः,
ग्राह्या अमित्रान् तमसा विध्य शत्रून् ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ - **अमीषाम्** = शब्द, गति, सेवा युक्त, अतुल्य, अहिंसक इच्छा को **चित्तानि** = चित्त या चेतना, ज्ञान **प्रति** = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में **मोहयन्ती** = मोह, भूल, भ्रम करते हुए **गृहाण** = गृहस्थ, गृह, घर **अङ्गानि** = विद्वान्, गतिशील, पाने वाला **अप्वे** = पालन करने वालों में **परा** = परम, परे, पीछे, विपरीत **इहि** = आओ, जानों **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक **इहि** = आओ, जानों **निः** = बिना, बाहर, निश्चित **दह** = जलाओ **हृत्** = हृदय **सु** = अच्छा **शोकैः** = शोक या चिन्ता से **ग्राह्या** = सिञ्चन, बोध, ज्ञान, शब्द, वाणी, ग्रहण द्वारा **अमित्रान्** = अमित्रों को, अस्नेही जनों को **तमसा** = इच्छा से, दुःख से, अन्धकार से **विध्य** = वेधन योग्य, वेधन करके **शत्रून्** = शत्रुओं को **॥ 5 ॥**

पदार्थ - **अमीषाम्** = शब्द, गति, सेवा युक्त, अतुल्य, अहिंसक इच्छा को (अम् = गति, शब्द, सेवा करना, रोग होना, अ - नहीं, मा = मापना, नापना, तौलना, मि - फेकना, स्थापना करना, रक्षा करना, मी - हिंसा करना, मारना)। **चित्तानि** = चित्त या चेतना, ज्ञान (चि - चुनना, एकत्र करना, चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, सम्यक् ज्ञान होना, स्मरण करना, शंका करना, सन्देह करना)। **प्रति** = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (अव्यय)। **मोहयन्ती** = मोह, भूल, भ्रम करते हुए (मुह् - मोहना, मोहित होना, मुग्ध होना, बुद्धिभ्रष्ट होना)। **गृहाण** = गृहस्थ, गृह, घर (गृह - लेना, स्वीकार करना, निवास करना)। **अङ्गानि** = विद्वान्, गतिशील, पाने वाला (अंग् = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)। **अप्वे** = पालन करने वालों में (अप् = जाना, जानना, पाना, पालन करना)। **परा** = परम, परे, पीछे, विपरीत (अव्यय)। **इहि** = आओ, जानों (इ = जाना, जानना, पाना)। **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **इहि** = आओ, जानों (इ = जाना, जानना, पाना)। **निः** = बिना, बाहर, निश्चित (उपसर्ग)। **दह** = जलाओ (दह् - जलाना, नष्ट करना, दुःख देना)। **हृत्** = हृदय (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, लेना, ग्रहण करना, नष्ट करना)। **सु** = अच्छा (उपसर्ग)। **शोकैः** = शोक या चिन्ता से (शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना, दुःख मानना, शोक करना)। **ग्राह्या** = सिञ्चन, बोध, ज्ञान, शब्द, वाणी, ग्रहण द्वारा (गृ = सींचना, समझना, जानना, खाना, निगलना, शब्द करना, बोलना, समझाना, बताना, गीला करना, घर्षण करना, ग्रह - लेना, स्वीकार करना)। **अमित्रान्** = अमित्रों को, अस्नेही जनों को (अ = नहीं, मिद् = स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, नरम होना, मृदुल होना, मा - मापना, मान करना)। **तमसा** = इच्छा से, दुःख से, अन्धकार से (तम - इच्छा करना, चाहना, मानसिक या शारीरिक व्यथा से दुःखित होना, अन्धकार होना)। **विध्य** = वेधन योग्य, वेधन करके (विध - विधान करना, वेध करना, वेधन करना, ताडना)। **शत्रून्** = शत्रुओं को (शी-शद्-शत् - जीर्ण होना, गिरना, गिराना) **॥ 5 ॥**

373. असौ या सेना मरुतः परेषाम्,
अस्मान् आ एति अभि ओजसा स्पर्धमाना।
ताम् विध्यत तमसा अपव्रतेन,

यथा एषाम् अन्यो अन्यम् न जानात् ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ - **असौ** = यह **या** = जो **सेना** = सेना **मरुतः** = मरणशील, मरुतों का **परेषाम्** = परायों का, दूसरों का, दूसरे के साथ **अस्मान्** = हमें, हमको **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण **एति** = जाता है, प्राप्त होता है, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करता है **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा **ओजसा** = ओज द्वारा **स्पर्धमाना** = स्पर्धमान **ताम्** = उसको **विध्यत** = वेधन करो, विधान करो **तमसा** = इच्छा से, दुःख से, अन्धकार से **अपव्रतेन** = पालन-रक्षण के लिए व्रत लेने वाला **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार **एषाम्** = इनका **अन्यो** = कोई और, इतर, अन्य **अन्यम्** = अन्य, कोई और, इतर **न** = नहीं, समान, उपमार्थक **जानात्** = जानो ॥ **6** ॥

पदार्थ - **असौ** = यह (सर्वनाम)। **या** = जो (सर्वनाम)। **सेना** = सेना (सि–सिन् = बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना)। **मरुतः** = मरणशील, मरुतों का (मृ = मरना, देहत्याग करना)। **परेषाम्** = परायों का, दूसरों का, दूसरे के साथ (सर्वनाम)। **अस्मान्** = हमें, हमको (सर्वनाम)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग)। **एति** = जाता है, प्राप्त होता है, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करता है (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना, इच्छा करना, प्रेरणा करना)। **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **ओजसा** = ओज द्वारा (ओज - शक्तिमान् होना, जीवित होना, बढ़ना)। **स्पर्धमाना** = स्पर्धमान (स्पर्ध - स्पर्धा करना, जीतने की इच्छा करना, स्पृ - प्रीति करना, सेवा करना, चलना, पालना, जाना, मान - पूजा करना, सम्मान करना, श्रेष्ठ होना, शोध करना)। **ताम्** = उसको (सर्वनाम)। **विध्यत** = वेधन करो, विधान करो (विध - विधान करना, वेध करना, वेधन करना, ताडना)। **तमसा** = इच्छा से, दुःख से, अन्धकार से (तम - इच्छा करना, चाहना, मानसिक या शारीरिक व्यथा से दुःखित होना, अन्धकार होना)। **अपव्रतेन** = पालन-रक्षण के लिए व्रत लेने वाला (अप = पालन करना, वृ - वरण करना)। **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार। **एषाम्** = इनका (सर्वनाम)। **अन्यो** = कोई और, इतर, अन्य (सर्वनाम)। **अन्यम्** = अन्य, कोई और, इतर (सर्वनाम)। **न** = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **जानात्** = जानो (ज्ञा-जा - जानना, समझना, जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना) ॥ **6** ॥

74. स्वराजपुनः स्थापन सूक्त - 3

374. अचिक्रदत् स्वपाः इह भुवत्,
अग्ने वि अचस्व रोदसी उरूची।
युञ्जन्तु त्वा मरुतो विश्ववेदसः,
आ अमुम् नय नमसा रातहव्यम् ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - **अचिक्रदत्** = किया, पल्लवित हुआ **स्वपाः** = सुपालक, सुरक्षक **इह** = इसमें, यहां, यह **भुवत्** = होता है **अग्ने** = हे अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् **वि** = विशेष, विना, विलोम **अचस्व** = प्रगतिशील, गतिशील बनो, सम्मान करो **रोदसी** = प्रकाश देने वाले, वाणी, गति की सामर्थ्य से युक्त, करुणाशील, रोने वाले, रुलाने वाले **उरूची** = अति संग्रहकर्ता, बहुत एकत्र करने वाले **युञ्जन्तु** = नियोजित करें, जोड़ें **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **मरुतो** = मरणशील का, मरुत् का **विश्ववेदसः** = सर्वज्ञ, सबको जानने वाले **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **अमुम्** = इसको **नय** = ले जाओ **नमसा** = नमन द्वारा **रातहव्यम्** = दिया गया हवि को, दान किया हुआ हवि को, दान किया हुआ देय, प्रदत्त दान को ॥ **1** ॥

पदार्थ - **अचिक्रदत्** = किया, पल्लवित हुआ (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, चिकृ - गति करना, पल्लवित होना, कृ - करना)। **स्वपाः** = सुपालक, सुरक्षक (सु - उत्तम, सुन्दर, स्व = निज, अपना, अप् - पालन करना)। **इह** = इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **भुवत्** = होता है (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **अग्ने** = हे अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **अचस्व** = प्रगतिशील, गतिशील बनो, सम्मान करो (अच् = जाना, चलना, आदर करना, मांगना)। **रोदसी** = प्रकाश देने वाले, वाणी, गति की

सामर्थ्य से युक्त, करुणाशील, रोने वाले, रुलाने वाले (रुद् - रोना, रुलाना, करुण होना, रु शब्द करना, जाना, चलना, जानना, पाना)। **उरूची =** अति संग्रहकर्ता, बहुत एकत्र करने वाले (उरु - बहुत, अधिक (सर्वनाम), उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना, उच् एकत्र करना)। **युञ्जन्तु =** नियोजित करें, जोड़ें (यु मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, बांधना, बन्धन करना, गूंथना, युज -जुड़ना, मिलाप करना, मन एकाग्र करना, एकत्र करना)। **त्वा =** तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **मरुतो =** मरणशील का, मरुत् का (मृ = मरना, देहत्याग करना)। **विश्ववेदसः =** सर्वज्ञ, सबको जानने वाले (विश्व सब, विद-समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **अमुम् =** इसको (सर्वनाम)। **नय =** ले जाओ (नी - नय - जाना, हिलना, पहुँचना, संरक्षण करना)। **नमसा =** नमन द्वारा (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **रातहव्यम् =** दिया गया हवि को, दान किया हुआ हवि को, दान किया हुआ देय, प्रदत्त दान को। (रा - देना, मिल जाना, हु = देना, आदान-प्रदान करना) **॥ 1 ॥**

375. दूरे चित् सन्तम् अरुषासः,
इन्द्रम् आ च्यावयन्तु सख्याय विप्रम्।
यत् गायत्रीम् बृहतीम् अर्कम्,
अस्मै सौत्रामणया दधृषन्त देवाः ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - दूरे = दूर **चित् =** भी, ही **सन्तम् =** सन्त को, सेवाभावी को, दानी को **अरुषासः =** अहिंसक अथवा रोष-रहित, प्रगतिशील, व्यापक **इन्द्रम् =** इन्द्र को, परम ऐश्वर्यवान् को **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **च्यावयन्तु =** प्रसन्न करें, पार करें, प्राप्त करें **सख्याय =** सखाभाव, मित्रता के लिए, मित्र के लिए, सखा के लिए **विप्रम् =** विशेष पूर्ण करने वाले को **यत् =** जिसे, जो **गायत्रीम् =** गायत्री, गान, स्तुति को **बृहतीम् =** महान्, बड़ा, बृहत् को **अर्कम् =** अर्क, स्तोता, प्रशंसक को **अस्मै =** इसके लिए, हमको, हमारे लिए **सौत्रामणया =** सुरक्षक, सुपालक, सुपोषक **दधृषन्त =** जीतता है, गर्व करता है, धृष्टता करता है **देवाः =** देव **॥ 2 ॥**

पदार्थ - दूरे = दूर (अव्यय)। **चित् =** भी, ही (अव्यय)। **सन्तम् =** सन्त को, सेवाभावी को, दानी को (सन् - दान करना, सेवा करना, पूजा करना, सत्कार करना)। **अरुषासः =** अहिंसक अथवा रोष-रहित, प्रगतिशील, व्यापक (अ - नहीं, ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, रुष् - हिंसा करना, मार डालना, दुःख देना, मारने का यत्न करना)। **इन्द्रम् =** इन्द्र को, परम ऐश्वर्यवान् को (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **च्यावयन्तु =** प्रसन्न करें, पार करें, प्राप्त करें (च्यु - हँसना, सहना, सहन करना, तैरना, गिरना, भटकना, जाना, जानना, पाना)। **सख्याय =** सखाभाव, मित्रता के लिए, मित्र के लिए, सखा के लिए (सख् = मित्र होना)। **विप्रम् =** विशेष पूर्ण करने वाले को (वि = विशेष, विना, विलोम, प्रा - पूर्ण करना)। **यत् =** जिसे, जो (सर्वनाम)। **गायत्रीम् =** गायत्री, गान, स्तुति को (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गम् - जाना, जानना, पाना)। **बृहतीम् =** महान्, बड़ा, बृहत् को (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **अर्कम् =** अर्क, स्तोता, प्रशंसक को (अर्क - प्रशंसा करना, स्तुति करना, ग्रहण करना)। **अस्मै =** इसके लिए, हमको, हमारे लिए (सर्वनाम)। **सौत्रामणया =** सुरक्षक, सुपालक, सुपोषक (सु - अच्छा, सुन्दर, उत्तम, त्रै = पालन करना, रक्षा करना, पोषण करना)। **दधृषन्त =** जीतता है, गर्व करता है, धृष्टता करता है (धृष् = जीतना, गर्व करना, धृष्टता करना, अभिमान करना, स्वयम् को बड़ा समझना, चतुरता दिखाना, वञ्चना करना)। **देवाः =** देव (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना) **॥ 2 ॥**

376. अत्-भ्यः त्वा राजा वरुणो ह्वयतु,
सोमः त्वा ह्वयतु पर्वतेभ्यः।
इन्द्रः त्वा ह्वयतु विट्भ्यः आभ्यः,

श्येनो भूत्वा विशः आ पत इमाः ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - **अत्-भ्यः** = अदों के लिए, खाद्य पदार्थों के लिए **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **राजा** = राजा **वरुणो** = वरणीय, वरण करने वाला **ह्वयतु** = पुकारें, आह्वान करें, आदान-प्रदान करें **सोमः** = सृजन-ऐश्वर्य-अन्तकर्ता, ऐश्वर्यवान्, सृष्टिकर्ता **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **ह्वयतु** = पुकारें, आह्वान करें, आदान-प्रदान करें **पर्वतेभ्यः**= पर्वत के लिए **इन्द्रः** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **ह्वयतु** = पुकारें, आह्वान करें, आदान-प्रदान करें **विट्भ्यः** = शब्द, परिहास, शाप के लिए **आभ्यः** = उससे **श्येनो** = श्येन, प्रगतिशील, तीव्रगामी **भूत्वा** = होकर **विशः** = प्रविष्ट हो **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **पत** ऐश्वर्य **इमाः** = यह, इसको ॥ 3 ॥

पदार्थ - **अत्-भ्यः** = अदों के लिए, खाद्य पदार्थों के लिए (अद् = खाना, आत्मसात् करना)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **राजा** = राजा (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **वरुणो** = वरणीय, वरण करने वाला (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **ह्वयतु** = पुकारें, आह्वान करें, आदान-प्रदान करें (हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)। **सोमः** = सृजन-ऐश्वर्य-अन्तकर्ता, ऐश्वर्यवान्, सृष्टिकर्ता (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामथ्य, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना। सू = प्रेरणा देना। सो–स्य, सय - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **ह्वयतु** = पुकारें, आह्वान करें, आदान-प्रदान करें (हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)। **पर्वतेभ्यः**= पर्वत के लिए (पर्व् - पूर्ण करना, पूरा करना, भरना, विभाग करना)। **इन्द्रः** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **ह्वयतु** = पुकारें, आह्वान करें, आदान-प्रदान करें (हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)। **विट्भ्यः** = शब्द, परिहास, शाप के लिए (विट् = शब्द करना, परिहास करना, शाप देना)। **आभ्यः** = उससे (सर्वनाम)। **श्येनो** = श्येन, प्रगतिशील, तीव्रगामी (श्यै - चलना, जाना, तैरना)। **भूत्वा** = होकर (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **विशः** = प्रविष्ट हो (विश - घुसना, भीतर जाना, धंसना, चारों ओर फैलना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **पत** ऐश्वर्य (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **इमाः** = यह, इसको (सर्वनाम) ॥ 3 ॥

377. श्येनो हव्यम् नयतु आ परस्मात्,
अन्यक्षेत्रे अपरुद्धम् चरन्तम्।
अश्विना पन्थाम् कृणुताम् सुगम् ते,
इमम् सजाताः अभिसंविशध्वम् ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - **श्येनो** = श्येन, प्रगतिशील, तीव्रगामी **हव्यम्** = आदान-प्रदान करने योग्य को, हव्य को, देय को **नयतु** = ले जाओ **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **परस्मात्** = पर से, अन्य से **अन्यक्षेत्रे** = अन्य-क्षेत्र में **अपरुद्धम्** = अप-रुद्ध को **चरन्तम्** = विचरण करने वाले को **अश्विना** = अश्विन् द्वारा, तीव्र गति युक्त, व्यापक द्वारा **पन्थाम्** = पथ को, मार्ग को **कृणुताम्** = करो **सुगम्** = सुगामी को, उत्तम प्रगतिशील को **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **इमम्** = इसको **सजाताः** = सम्बन्धी **अभिसंविशध्वम्** = प्रमुख सम्यक् प्रवेश करो ॥ 4 ॥

पदार्थ - **श्येनो** = श्येन, प्रगतिशील, तीव्रगामी (श्यै - चलना, जाना, तैरना)। **हव्यम्** = आदान-प्रदान करने योग्य को, हव्य को, देय को (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **नयतु** = ले जाओ (नी - नय - जाना, हिलना, पहुँचना, संरक्षण करना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **परस्मात्** = पर से, अन्य से (सर्वनाम)। **अन्यक्षेत्रे** = अन्य-क्षेत्र में (अन्य = कोई और, इतर, अन्य (सर्वनाम), क्षि - जाना,

चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)। **अपरुद्धम् =** अप-रुद्ध को (अप = दूर, नीचे, अपकार, रुद् = रुदन् करना, रोना, रोते-रोते कहना, रुलाना, करुण होना)। **चरन्तम् =** विचरण करने वाले को (चर -जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)। **अश्विना =** अश्विन् द्वारा, तीव्र गति युक्त, व्यापक द्वारा (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)। **पन्थाम् =** पथ को, मार्ग को (पथ, पन्थ् - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना, घूमना, फेंकना, त्यागना)। **कृणुताम् =** करो (कृ = करना)। **सुगम् =** सुगामी को, उत्तम प्रगतिशील को (सु = उत्तम, अच्छा (उपसर्ग), गम् - जाना, जानना, पाना)। **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **इमम् =** इसको (सर्वनाम)। **सजाताः =** सम्बन्धी (स - साथ, सहित, सज्, संज = सम्बन्धी होना, आलिंगन करना, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **अभिसंविशध्वम्** = प्रमुख सम्यक् प्रवेश करो (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग), सम् - सम्यक्, विश् - घुसना भीतर जाना, चारो ओर फैलाना) **॥ 4 ॥**

378. ह्वयन्तु त्वा प्रतिजनाः,
प्रति मित्राः अवृषत।
इन्द्राग्नी विश्वे देवाः,
ते विशि क्षेमम् अदीधरन्॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ - ह्वयन्तु = पुकारें, आह्वान करें, आदान-प्रदान करें **त्वा =** तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **प्रतिजनाः =** जन, लोग, उत्पन्न हुए, उत्पन्न करने वाले के सम्बन्ध में **प्रति =** प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में **मित्राः =** मित्र **अवृषत =** सिंचित किया, प्रोक्षित किया, पराक्रम किया **इन्द्राग्नी =** इन्द्र तथा अग्नि, परम ऐश्वर्यवान तथा प्रगतिशील, अग्रणी **विश्वे =** सभी **देवाः=** विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **विशि =** विश में, प्रवेशी में **क्षेमम् =** क्षेम को **अदीधरन् =** धारण किया **॥ 5 ॥**

पदार्थ - ह्वयन्तु = पुकारें, आह्वान करें, आदान-प्रदान करें (हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)। **त्वा =** तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **प्रतिजनाः =** जन, लोग, उत्पन्न हुए, उत्पन्न करने वाले के सम्बन्ध में (प्रति = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग), जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **प्रति =** प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग)। **मित्राः =** मित्र (मिद् - स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, नरम होना, मृदुल होना)। **अवृषत =** सिंचित किया, प्रोक्षित किया, पराक्रम किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना या पीड़ा करना, दुःख देना, पीड़ित करना)। **इन्द्राग्नी =** इन्द्र तथा अग्नि, परम ऐश्वर्यवान तथा प्रगतिशील, अग्रणी (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना, अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना, पीना)। **विश्वे =** सभी (सर्वनाम)। **देवाः=** विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **विशि =** विश में, प्रवेशी में (विश - भीतर जाना, चारों ओर फैलना, विश - घुसना, भीतर जाना, धंसना)। **क्षेमम् =** क्षेम को (क्षि - निवास करना, जाना, जानना, पाना, क्षेम् = कल्याण होना)। **अदीधरन् =** धारण किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, धृ = धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना, स्थिर रहना) **॥ 5 ॥**

379. यः ते हवम् विवदत्,
सजातो यः च निष्ट्यः।
अपाञ्चम् इन्द्र तम् कृत्वा,
अथ इमम् इह अव गमय॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ - **यः** = जो **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **हवम्** = दान को, आह्वान को, दान करने योग्य, लेने योग्य, तृप्त करने योग्य **विवदत्** = विशेष बोलने वाला **सजातो** = सम्बन्धी **यः** = जो **च** = और। **निष्ट्यः** = निष्ट्य, प्राप्य, शब्द **अपाञ्चम्** = अपाञ्च को, अपमान को **इन्द्र** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान **तम्** = उसको, उसे **कृत्वा** = करके, करने के अनन्तर, करने के बाद **अथ** = अब, इसके अनन्तर **इमम्** = इसको **इह** = इसमें, यहां, यह **अव** = नीचे, दूर, प्राप्त **गमय** = जाओ ॥ **6** ॥

पदार्थ - **यः** = जो (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **हवम्** = दान को, आह्वान को, दान करने योग्य, लेने योग्य, तृप्त करने योग्य (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **विवदत्** = विशेष बोलने वाला (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग), वद - कहना, समझाना)। **सजातो** = सम्बन्धी (स - साथ, सहित, सज्, संज = सम्बन्धी होना, आलिंगन करना, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **यः** = जो (सर्वनाम)। **च** = और। **निष्ट्यः** = निष्ट्य, प्राप्य, शब्द (निष - प्राप्त करना, ले जाना, स्त्यै - शब्द करना, ध्वनि करना)। **अपाञ्चम्** = अपाञ्च को, अपमान को (अप = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग), अञ्च-अंच - झुकना, टेढ़ा करना, जाना, पूजा करना, मान करना, संवारना, शोभित करना, मांगना, चाहना, प्रकट करना, न्यूनाधिक देखना, अस्पष्ट बोलना)। **इन्द्र** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **कृत्वा** = करके, करने के अनन्तर, करने के बाद (कृ - करना, कृत - कतरना, काटना)। **अथ** = अब, इसके अनन्तर (अव्यय)। **इमम्** = इसको (सर्वनाम)। **इह** = इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **अव** = नीचे, दूर, प्राप्त (अव्यय)। **गमय** = जाओ (गम् = जाना, जानना, पाना) ॥ **6** ॥

75. राजासंवरण सूक्त - 4

380. आ त्वा गन् राष्ट्रम् सह वर्चसा उत् इहि,
प्राङ् विशाम् पतिः एकराट् त्वम् वि राज।
सर्वाः त्वा राजन् प्रदिशो ह्वयन्तु,
उपसद्यो नमस्यो भव इह ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **गन्** = गतिमान, जाने वाले **राष्ट्रम्** = राष्ट्र को **सह** = साथ, सहित **वर्चसा** = प्रकाश द्वारा, तेज द्वारा **उत्** = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च **इहि** = आओ, जानों **प्राङ्** = प्राक्, पहले, पूर्व दिशा **विशाम्** = प्रवेशी को **पतिः** = ऐश्वर्यवान्, स्वामी **एकराट्** = एक वाचक, एक विद्वान् **त्वम्** = तुम **वि** = विशेष, विविध, विना, विलोम **राज** = हे राजन्, हे प्रकाशित होने वाले **सर्वाः** = सभी **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **राजन्** = हे राजन्, प्रकाशित होने वाले **प्रदिशो** = प्रदिश, दिशा **ह्वयन्तु** = पुकारें, आह्वान करें, आदान-प्रदान करें **उपसद्यो** = उपसद, सत्य, नित्य, विद्वान्, प्रतिष्ठित, गतिशील, गन्तव्य **नमस्यो** = नमन करने योग्य **भव** = हो **इह** = इसमें, यहां, यह ॥ **1** ॥

पदार्थ - **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **गन्** = गतिमान, जाने वाले (गम् = जाना, जानना, पाना)। **राष्ट्रम्** = राष्ट्र को (रास = शब्द करना। राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **सह** = साथ, सहित (सर्वनाम)। **वर्चसा** = प्रकाश द्वारा, तेज द्वारा (वर्च - प्रकाशित होना, चमकना)। **उत्** = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)। **इहि** = आओ, जानों (इ = जाना, जानना, पाना)। **प्राङ्** = प्राक्, पहले, पूर्व दिशा (अव्यय)। **विशाम्** = प्रवेशी को (विश - भीतर जाना, चारों ओर फैलना, विश - घुसना, भीतर जाना, धंसना)। **पतिः** = ऐश्वर्यवान्, स्वामी (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **एकराट्** = एक वाचक, एक विद्वान् (एक = एक, रट् = बोलना, सम्भाषण करना)। **त्वम्** = तुम (सर्वनाम)। **वि** = विशेष, विविध, विना, विलोम (उपसर्ग)। **राज** = हे राजन्, हे प्रकाशित होने वाले (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **सर्वाः** = सभी (सर्वनाम)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **राजन्** = हे राजन्, प्रकाशित होने वाले (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **प्रदिशो** = प्रदिश, दिशा (प्र -

प्रकृष्ट, दिश् - दिखाना, दिखाना, समझाना, कहना, देना)। **ह्वयन्तु =** पुकारें, आह्वान करें, आदान-प्रदान करें (हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)। **उपसद्यो =** उपसद, सत्य, नित्य, विद्वान्, प्रतिष्ठित, गतिशील, गन्तव्य (उप - समीप, सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)। **नमस्यो =** नमन करने योग्य (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना, ते - तुम्हारे लिए, तुमको)। **भव =** हो (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **इह =** इसमें, यहां, यह (सर्वनाम) **॥ 1 ॥**

381. त्वाम् विशो वृणताम् राज्याय,
त्वाम् इमाः प्रदिशो पञ्च देवीः।
वर्ष्मन् राष्ट्रस्य ककुदि श्रयस्व,
ततो न उग्रो वि भजा वसूनि ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - **त्वाम् =** तुमको, तुम्हारी **विशो =** सभी विश, प्रतिष्ठित, प्रवेशी **वृणताम् =** वरण करें **राज्याय =** राज्य के लिए **त्वाम् =** तुमको, तुम्हारी **इमाः =** यह, इसको **प्रदिशो =** प्रदिश, दिशा **पञ्च =** पाँच **देवीः =** दिव्यगुणयुक्त **वर्ष्मन् =** पराक्रम **राष्ट्रस्य =** राष्ट्र में, शब्द में, प्रकाश में **ककुदि =** ककुद में, गर्वित, चञ्चल, प्यास में **श्रयस्व =** सेवा करो, आश्रय, प्राप्त हो **ततो =** अतः, इसलिए, उससे, उसके अनन्तर **न =** नहीं, समान, उपमार्थक **उग्रो =** उग्र **वि =** विशेष, विना, विलोम **भजा =** सेवा करो, सेवा में लगाओ **वसूनि =** वसुओं को **॥ 2 ॥**

पदार्थ - **त्वाम् =** तुमको, तुम्हारी (सर्वनाम)। **विशो =** सभी विश, प्रतिष्ठित, प्रवेशी (विश - भीतर जाना, चारों ओर फैलना)। **वृणताम् =** वरण करें (वृ = वरण करना, वृण - परित्याग करना, आनन्द करना, उत्साह करना)। **राज्याय =** राज्य के लिए (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **त्वाम् =** तुमको, तुम्हारी (सर्वनाम)। **इमाः =** यह, इसको (सर्वनाम)। **प्रदिशो =** प्रदिश, दिशा (प्र - प्रकृष्ट, दिश् - दिखाना, दिखाना, समझाना, कहना, देना)। **पञ्च =** पाँच (पञ्च - पाँच, संख्या)। **देवीः =** दिव्यगुणयुक्त (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **वर्ष्मन् =** पराक्रम (वर्ष् = बरसना, सींचना, अति पराक्रम करना, हिंसा करना, क्लेश देना, उत्पीड़न करना)। **राष्ट्रस्य =** राष्ट्र में, शब्द में, प्रकाश में (रास = शब्द करना। राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **ककुदि =** ककुद में, गर्वित, चञ्चल, प्यास में (कक् = गर्व करना, चञ्चल होना, प्यासा होना)। **श्रयस्व =** सेवा करो, आश्रय, प्राप्त हो (श्री = सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना, श्री-श्रीण = पकाना, रांधना)। **ततो =** अतः, इसलिए, उससे, उसके अनन्तर (सर्वनाम)। **न =** नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **उग्रो =** उग्र (उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना, उग् - उग्र - उग्र होना, तेज होना)। **वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **भजा =** सेवा करो, सेवा में लगाओ (भग्-भज् = सेवा करना, सेवन करना, सेवित होना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)। **वसूनि =** वसुओं को (वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना) **॥ 2 ॥**

382. अच्छ त्वा यन्तु हविनः सजाताः,
अग्निः दूतो अजिरः सम् चरातै।
जायाः पुत्राः सुमनसो भवन्तु,
बहुम् बलिम् प्रति पश्यासा उग्रः ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - **अच्छ =** अच्छा, निर्मल करो **त्वा =** तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **यन्तु =** नियमन-नियन्त्रण, पोषण करो, उद्धार करो, प्राप्त करो **हविनः =** हवि, दान, देय, तर्पण, आह्वान करने वाले **सजाताः =** सम्बन्धी **अग्निः =** अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् **दूतो =** गतिशील, विद्वान्, परिश्रमी, दुःखदायी **अजिरः =** गतिमान, जरा रहित, अहिंसक को **सम् =** सम्यक्

रूप से, भली भाँति **चरातै** = विचरण करे **जायाः** = उत्पन्न होते हो **पुत्राः** = पुत्रगण **सुमनसो** = अच्छे मन वाला **भवन्तु** = हों, हो जायें **बहुम्** = बहुत को **बलिम्** = बलि को, बलवान् को **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में **पश्यासा** = देखें **उग्रः** = उग्र ॥ 3 ॥

पदार्थ - **अच्छ** = अच्छा, निर्मल करो (अच्छ् - अच्छा होना, निर्मल करना)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **यन्तु** = नियमन-नियन्त्रण, पोषण करो, उद्धार करो, प्राप्त करो (यम् = रोकना, स्वाधीन रखना, आवरण करना, पोषण करना, नियमन करना, यन - उद्धार करना, या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, जानना)। **हविनः** = हवि, दान, देय, तर्पण, आह्वान करने वाले (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **सजाताः** = सम्बन्धी (स - साथ, सहित, सज्, संज = सम्बन्धी होना, आलिंगन करना, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **अग्निः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **दूतो** = गतिशील, विद्वान्, परिश्रमी, दुःखदायी (दू = जाना, जानना, पाना, सुगन्ध लेना, श्रम करना, जलना, तप्त होना, दुःख होना, दुःख देना)। **अजिरः** = गतिमान, जरा रहित, अहिंसक को (अज - जाना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना, जृ - जीर्ण होना, वृद्ध होना, जिरि - हिंसा करना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **चरातै** = विचरण करे (चर -जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)। **जायाः** = उत्पन्न होते हो (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **पुत्राः** = पुत्रगण (पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)। **सुमनसो** = अच्छे मन वाला (सु = उत्तम, सुन्दर, अच्छा (उपसर्ग), मन - मनन करना, जानना, समझना, स्वीकार करना, अभ्यास करना, स्थिर होना, गर्व होना)। **भवन्तु** = हों, हो जायें (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **बहुम्** = बहुत को (सर्वनाम)। **बलिम्** = बलि को, बलवान् को (बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना)। **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग)। **पश्यासा** = देखें (पश्-दृश् = देखना)। **उग्रः** = उग्र (उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना, उग् - उग्र - उग्र होना, तेज होना) ॥ 3 ॥

383. अश्विना त्वा अग्रे मित्रावरुणा उभा,
विश्वे देवा मरुतः त्वा ह्वयन्तु।
अधा मनो वसुदेयाय कृणुष्व,
ततो न उग्रो वि भजा वसूनि ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - **अश्विना** = अश्विन् द्वारा, तीव्र गति युक्त, व्यापक द्वारा **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **अग्रे** = अग्र, आगे, पहले **मित्रावरुणा** = मित्र और वरुण, स्नेही तथा वरणीय **उभा** = दोनों, पूर्णता **विश्वे** = सभी **देवा** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने **मरुतः** = मरणशील का, मरुत् का **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **ह्वयन्तु** = पुकारें, आह्वान करें, आदान-प्रदान करें **अधा** = अथ, अब, इसके अनन्तर **मनो** = मन **वसुदेयाय** = वसु-दाता के लिए, वास देने वाले दानी के लिए **कृणुष्व** = कीजिये **ततो** = अतः, इसलिए, उससे, उसके अनन्तर **न** = नहीं, समान, उपमार्थक **उग्रो** = उग्र **वि** = विशेष, विना, विलोम **भजा** = सेवा करो, सेवा में लगाओ **वसूनि** = वसुओं को ॥ 4 ॥

पदार्थ - **अश्विना** = अश्विन् द्वारा, तीव्र गति युक्त, व्यापक द्वारा (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **अग्रे** = अग्र, आगे, पहले (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **मित्रावरुणा** = मित्र और वरुण, स्नेही तथा वरणीय (मिद् - स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, नरम होना, मृदुल होना, वृ = वरण करना, अपनाना, पसन्द करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **उभा** = दोनों, पूर्णता (उभय - दोनो, उभ् - पूर्ण करना, भरना)। **विश्वे** = सभी (सर्वनाम)। **देवा** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न

होना, खेलना)। **मरुतः** = मरणशील का, मरुत् का (मृ = मरना, देहत्याग करना)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **ह्वयन्तु** = पुकारें, आह्वान करें, आदान-प्रदान करें (हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)। **अधा** = अथ, अब, इसके अनन्तर (अव्यय)। **मनो** = मन (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **वसुदेयाय** = वसु-दाता के लिए, वास देने वाले दानी के लिए (वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना, दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना)। **कृणुष्व** = कीजिये (कृ - करना)। **ततो** = अतः, इसलिए, उससे, उसके अनन्तर (सर्वनाम)। **न** = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **उग्रो** = उग्र (उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना, उग् - उग्र - उग्र होना, तेज होना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **भजा** = सेवा करो, सेवा में लगाओ (भग्-भज् = सेवा करना, सेवन करना, सेवित होना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)। **वसूनि** = वसुओं को (वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना) **॥ 4 ॥**

384. आ प्र द्रव परमस्याः परावतः,
शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम्।
तत् अयम् राजा वरुणः तथा आह,
सः त्वा अयम् अह्वत्,
सः उप इदम् आ इहि ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ - **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक **द्रव** = प्रवाही, ज्ञान **परमस्याः** = अत्यन्त, उच्चतम, प्रमुखतम का, परम का **परावतः** = रक्षा करो, पालन करो **शिवे** = कल्याणकारी में **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **द्यावापृथिवी** = अग्रगामी विस्तार, प्रकाश, द्यावा और पृथिवी **उभे** = दोनों, पूर्णता **स्ताम्** = हों, प्रकाशमान हों **तत्** = वह, उस को **अयम्** = यह **राजा** = राजा **वरुणः** = वरणीय, वरण करने वाला **तथा** = उसी प्रकार **आह** = व्याप्त किया, कहा **सः** = वह, उसने **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **अयम्** = यह **अह्वत्** = व्यापक हुए, आह्वान किया **सः** = वह, उसने **उप** = समीप **इदम्** = यह, इसको **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **इहि** = आओ, जानों **॥ 5 ॥**

पदार्थ - **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **द्रव** = प्रवाही, ज्ञान (द्रु - पिघलना, बहना, चलना, जाना, जानना, पाना, अनुसरण करना)। **परमस्याः** = अत्यन्त, उच्चतम, प्रमुखतम का, परम का (सर्वनाम)। **परावतः** = रक्षा करो, पालन करो (परावतः - पराया, लौटा हुआ, अव्यय, परा - परम, परे, पीछे, विपरीत (अव्यय) अव् - रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)। **शिवे** = कल्याणकारी में (शिव - कल्याण करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **द्यावापृथिवी** = अग्रगामी विस्तार, प्रकाश, द्यावा और पृथिवी (द्यु - आगे जाना, समीप जाना, द्युत् -दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, द्यै = तिरस्कार करना, पृथु = विस्तार होना, फेंकना, उड़ाना, भेजना, प्रेरणा करना)। **उभे** = दोनों, पूर्णता (उभय - दोनो, उभ् - पूर्ण करना, भरना)। **स्ताम्** = हों, प्रकाशमान हों (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **तत्** = वह, उस को (सर्वनाम)। **अयम्** = यह (सर्वनाम)। **राजा** = राजा (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **वरुणः** = वरणीय, वरण करने वाला (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **तथा** = उसी प्रकार (अव्यय)। **आह** = व्याप्त किया, कहा (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, अह - फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, ह्वे = शब्द करना)। **सः** = वह, उसने (सर्वनाम)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **अयम्** = यह (सर्वनाम)। **अह्वत्** = व्यापक हुए, आह्वान किया (अ - नहीं, हु - दान करना, आदान-प्रदान करना, ह्वे - आह्वान करना, बुलाना, पुकारना, अह् = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना)। **सः**

= वह, उसने (सर्वनाम)। **उप** = समीप (उपसर्ग)। **इदम्** = यह, इसको (सर्वनाम)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **इहि** = आओ, जानों (इ = जाना, जानना, पाना) ॥ **5** ॥

385. इन्द्र-इन्द्र मनुष्याः परा इहि सम्,
हि अज्ञास्था वरुणैः संविदानः।
सः त्वा अयम् अह्वत् स्वे सधस्थे,
सः देवान् यक्षत् सः उ कल्पयात् विशः ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ - **इन्द्र-इन्द्र** = हे इन्द्र-हे इन्द्र, हे परम ऐश्वर्यशाली, हे परम ऐश्वर्यमान **मनुष्याः** = मनुष्यों को **परा** = परम्, परे, पीछे, विपरीत **इहि** = आओ, जानों **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **हि** = ही, निश्चय **अज्ञास्था** = अज्ञानी, ज्ञान प्राप्त किया **वरुणैः** = वरुण **संविदानः** = विद्वान् **सः** = वह, उसने **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **अयम्** = यह **अह्वत्** = व्यापक हुए, आह्वान किया **स्वे** = अपने लिए, अपने साथ **सधस्थे** = सहस्थान, सहगामी, साथ में **सः** = वह, उसने **देवान्** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों को **यक्षत्** = पूजा की **सः** = वह, उसने **उ** = निश्चय ही, भी। **कल्पयात्** = कल्पना करता है, बनाता है, रचना करता है **विशः** = प्रतिष्ठित हो ॥ **6** ॥

पदार्थ - **इन्द्र-इन्द्र** = हे इन्द्र-हे इन्द्र, हे परम ऐश्वर्यशाली, हे परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **मनुष्याः** = मनुष्यों को (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **परा** = परम्, परे, पीछे, विपरीत (अव्यय)। **इहि** = आओ, जानों (इ = जाना, जानना, पाना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **हि** = ही, निश्चय (अव्यय)। **अज्ञास्था** = अज्ञानी, ज्ञान प्राप्त किया (अ = नहीं, अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, ज्ञा = जानना)। **वरुणैः** = वरुण (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **संविदानः** = विद्वान् (सम् - सम्यक्, सम् - न घबराना, एक समान रहना, विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)। **सः** = वह, उसने (सर्वनाम)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **अयम्** = यह (सर्वनाम)। **अह्वत्** = व्यापक हुए, आह्वान किया (अ - नहीं, हु - दान करना, आदान-प्रदान करना, ह्वे - आह्वान करना, बुलाना, पुकारना, अह् = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना)। **स्वे** = अपने लिए, अपने साथ (सर्वनाम)। **सधस्थे** = सहस्थान, सहगामी, साथ में (सध = साथ (अव्यय), सद् = जाना, जानना, पाना, पहुँचना)। **सः** = वह, उसने (सर्वनाम)। **देवान्** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों को (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **यक्षत्** = पूजा की (यक्ष = पूजा करना, पूजना, सत्कार करना)। **सः** = वह, उसने (सर्वनाम)। **उ** = निश्चय ही, भी। **कल्पयात्** = कल्पना करता है, बनाता है, रचना करता है (कल्प् - कल्पना करना, विचार करना, बनाना, रचना करना, शक्तिमान होना, समर्थ होना)। **विशः** = प्रतिष्ठित हो (विश - भीतर जाना, चारों ओर फैलना, विश - घुसना, भीतर जाना, धंसना) ॥ **6** ॥

386. पथ्या रेवतीः बहुधा विरूपाः,
सर्वाः सम्-गत्य वरीयः ते अक्रन्।
ताः त्वा सर्वाः संविदाना ह्वयन्तु,
दशमीम् उग्रः सुमना वश इह ॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ - **पथ्या** = पथ्य, पाथेय **रेवतीः** = गतिशीलता **बहुधा** = बहुत प्रकार से **विरूपाः** = विरूप, भिन्न भिन्न रूप **सर्वाः** = सभी **सम्-गत्य** = सम्यक् गतिशील **वरीयः** = वरीय **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **अक्रन्** = किया **ताः** = वे **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **सर्वाः** = सभी **संविदाना** = सम्यक् विद्वान् **ह्वयन्तु** = पुकारें, आह्वान करें, आदान-प्रदान करें **दशमीम्** = दशमी, दसवीं **उग्रः** = उग्र, वक्तागण, समूह, सम्बन्धी **सुमना** = सुन्दर मन वाले **वश** = वश, इच्छा **इह** = इसमें, यहां, यह ॥ **7** ॥

पदार्थ - **पथ्या** = पथ्य, पाथेय (पथ, पन्थ् - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना, घूमना, फेंकना, त्यागना)। **रेवतीः** = गतिशीलता (रिव् = उड़ना, तैरना, बहना, रा - देना, रि - जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, री - गति करना, झरना-टपकना, लेना, शब्द करना, सुनना)। **बहुधा** = बहुत प्रकार से (सर्वनाम)। **विरूपाः** = विरूप, भिन्न भिन्न रूप (वि - विशेष, रूप् - आकार बनाना, रचना करना, रूप बनाना)। **सर्वाः** = सभी (सर्वनाम)। **सम्-गत्य** = सम्यक् गतिशील (सम् = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग), गम् = जाना, जानना, पाना)। **वरीयः** = वरीय (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **अक्रन्** = किया (अ = नहीं, उपसर्ग, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, कृ = करना)। **ताः** = वे (सर्वनाम)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **सर्वाः** = सभी (सर्वनाम)। **संविदाना** = सम्यक् विद्वान् (सम् - सम्यक्, सम् - न घबराना, एक समान रहना, विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)। **ह्वयन्तु** = पुकारें, आह्वान करें, आदान-प्रदान करें (हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)। **दशमीम्** = दशमी, दसवीं (दश = दश, दस, संख्या)। **उग्रः** = उग्र, वक्तागण, समूह, सम्बन्धी (उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना)। **सुमना** = सुन्दर मन वाले (सु = उत्तम, सुन्दर, अच्छा। मन - मनन करना, जानना, समझना, स्वीकार करना, अभ्यास करना, स्थिर होना, गर्व होना)। **वश** = वश, इच्छा (वश् = इच्छा करना, चाहना, चमकना)। **इह** = इसमें, यहां, यह (सर्वनाम) **॥ 7 ॥**

76. राजा और राजकृत सूक्त - 5

387. आ अयम् अगन् पर्णमणिः, बली बलेन प्रमृणन् सपत्नान्। ओजो देवानाम् पयः ओषधीनाम्, वर्चसा मा जिन्वतु अप्रयावन् ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **अयम्** = यह **अगन्** = गये, गतिमान **पर्णमणिः** = पर्णमणि **बली** = बल युक्त **बलेन** = बल द्वारा **प्रमृणन्** = प्रकृष्ट हिंसा करता हुआ, हिंसक **सपत्नान्** = सपत्नों को, ऐश्वर्यवान को **ओजो** = ओज **देवानाम्** = देवों का **पयः** = ज्ञान, रक्षण, गतिशील, प्रवाहमान, प्रवाहपूर्ण **ओषधीनाम्** = ओषधियों का **वर्चसा** = प्रकाश द्वारा, तेज द्वारा **मा** = नहीं, मत **जिन्वतु** = सन्तुष्ट करता है, प्रकाशित होता है **अप्रयावन्** = अप्रयाव को **॥ 1 ॥**

पदार्थ - **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **अयम्** = यह (सर्वनाम)। **अगन्** = गये, गतिमान (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, गम् - जाना, अग् = जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, गति करना, घूमना, कुटिल गति करना, टेढ़ा जाना, लेना, ग्रहण करना)। **पर्णमणिः** = पर्णमणि (पर्ण - हरा करना, हरा होना, पृ - पूर्ण करना, भरण करना, मण् - शब्द करना)। **बली** = बल युक्त (बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना)। **बलेन** = बल द्वारा (बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना)। **प्रमृणन्** = प्रकृष्ट हिंसा करता हुआ, हिंसक (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, मृण् - हिंसा करना, मारना, छिद्र करना)। **सपत्नान्** = सपत्नों को, ऐश्वर्यवान को (स - सहित, साथ। पत् = जाना, उड़ना, पतन होना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **ओजो** = ओज (ओज - शक्तिमान् होना, जीवित होना, बढ़ना)। **देवानाम्** = देवों का (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **पयः** = ज्ञान, रक्षण, गतिशील, प्रवाहमान, प्रवाहपूर्ण (पय् - गति करना, रक्षण करना, ज्ञान, गमन, प्राप्ति करना, पि - जाना, जानना, पाना, पा- पालन करना, रक्षा करना)। **ओषधीनाम्** = ओषधियों का (उषध्-ओषध् = चिकित्सा करना, रोग मुक्त करना)। **वर्चसा** = प्रकाश द्वारा, तेज द्वारा (वर्च - प्रकाशित होना, चमकना)। **मा** = नहीं, मत (अव्यय)। **जिन्वतु** = सन्तुष्ट करता है, प्रकाशित होता है (जिन्व् = सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना, आनन्द होना, मुक्त करना, प्रकाशित होना, बोलना)। **अप्रयावन्** = अप्रयाव को (अ - नहीं, प्र - प्रकृष्ट, अधिक,

यव - उपसंहार करना, विराम देना, समाप्त करना। यु - मिलाना, अलग करना, बाँधना, घृणा करना) **॥ 1 ॥**

388. मयि क्षत्रम् पर्णमणे,
मयि धारयतात् रयिम्।
अहम् राष्ट्रस्य अभीवर्गे,
निजो भूयासम् उत्तमः ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - **मयि** = मुझमें **क्षत्रम्** = क्षत्र को, रक्षा को **पर्णमणे** = हे पर्णमणि **मयि** = मुझमें **धारयतात्** = धार द्वारा **रयिम्** = विद्या, ज्ञान को **अहम्** = मैं **राष्ट्रस्य** = राष्ट्र में, शब्द में, प्रकाश में **अभीवर्गे** = सर्वथा सन्मुखता से वर्तमान **निजो** = शुद्ध-कर्ता **भूयासम्** = हो जाऊँ **उत्तमः** = उत्तम, श्रेष्ठ-इच्छा, शुभ-इच्छा **॥ 2 ॥**

पदार्थ - **मयि** = मुझमें (सर्वनाम)। **क्षत्रम्** = क्षत्र को, रक्षा को (क्षत्, क्षद् = खाना, कूटना, ढकना, मार डालना, रक्षा करना)। **पर्णमणे** = हे पर्णमणि (पर्ण - हरा करना, हरा होना, पृ - पूर्ण करना, भरण करना, मण् - शब्द करना)। **मयि** = मुझमें (सर्वनाम)। **धारयतात्** = धार द्वारा (धाः = पोषण करना, रक्षण करना, देना, दान करना, धार बाँधना, धारा होना, धृ = धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना, स्थिर रहना, धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)। **रयिम्** = विद्या, ज्ञान को (रय्-रि, री - चलना, जाना, जानना, पाना, री-रै - शब्द करना)। **अहम्** = मैं (सर्वनाम)। **राष्ट्रस्य** = राष्ट्र में, शब्द में, प्रकाश में (रास = शब्द करना। राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **अभीवर्गे** = सर्वथा सन्मुखता से वर्तमान (अभि - अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, वृत् = रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ = नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना)। **निजो** = शुद्ध-कर्ता (नि - निश्चित, निरन्तर, निज्-निञ्ज् - शुद्ध करना, निर्मल करना)। **भूयासम्** = हो जाऊँ (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **उत्तमः** = उत्तम, श्रेष्ठ-इच्छा, शुभ-इच्छा (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, तम् - अन्धकार होना, इच्छा करना, चाहना, मानसिक या शारीरिक व्यथा से दुःखित होना) **॥ 2 ॥**

389. यम् निदधुः वनस्पतौ,
गुह्यम् देवाः प्रियम् मणिम्।
तम् अस्मभ्यम् सह आयुषा,
देवा ददतु भर्तवे ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ **निदधुः** = निश्चित, निरन्तर धारण किया **वनस्पतौ** = वनस्पति, विद्वान् **गुह्यम्** = गुह्य, गुहायोग्य **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने **प्रियम्** = प्रिय को **मणिम्** = मणि, शब्द **तम्** = उसको, उसे **अस्मभ्यम्** = हमारे लिए **सह** = साथ, सहित **आयुषा** = आयु द्वारा, जीवन द्वारा **देवा** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने **ददतु** = देता है **भर्तवे** = भरण, पोषण, भरण-पोषण के लिए **॥ 3 ॥**

पदार्थ - **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ (सर्वनाम)। **निदधुः** = निश्चित, निरन्तर धारण किया (नि- निश्चित, नितराम्, निरन्तर, दध-धा - धारण करना)। **वनस्पतौ** = वनस्पति, विद्वान् (वन - शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, आपद्ग्रस्त होना, अलग करना, मिलाना, स्मरण करना, बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, याचना करना, मांगना, दुःख देना, उद्योग-धन्धा करना, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **गुह्यम्** = गुह्य, गुहायोग्य (गुह् - आच्छादन करना, छिपाना, ढकना, गति करना, जाना, जानना, हिंसा करना)। **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **प्रियम्** = प्रिय को (प्री = स्नेह करना, प्यार करना, तृप्त करना, सन्तुष्ट करना, चाहना)। **मणिम्** = मणि, शब्द (मण् - शब्द करना)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **अस्मभ्यम्** = हमारे लिए (सर्वनाम)। **सह** = साथ, सहित (सर्वनाम)। **आयुषा** = आयु द्वारा, जीवन द्वारा (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अय =

जाना, जानना, पाना, गति करना, आय - शब्द करना, शासन करना, यु = मिलना, अलग करना)। **देवा** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **ददतु** = देता है (दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)। **भर्तवे** = भरण, पोषण, भरण-पोषण के लिए (भृ = भरण, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना, धारण करना) **॥ 3 ॥**

390. सोमस्य पर्णः सहः उग्रम् आ अगन्,
इन्द्रेण दत्तो वरुणेन शिष्टः।
तम् प्रियासम् बहु रोचमानो,
दीर्घायुत्वाय शतशारदाय ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - **सोमस्य** = सृजन-ऐश्वर्य-अन्तकर्ता, ऐश्वर्यवान्, सृष्टिकर्ता **पर्णः** = पर्ण **सहः** = साथ, सहित **उग्रम्** = उग्र को **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **अगन्** = गये, गतिमान **इन्द्रेण** = इन्द्र द्वारा, परम ऐश्वर्य द्वारा **दत्तो** = दिया हुआ **वरुणेन** = वरणीय, वरण करने के लिए **शिष्टः** = शिष्ट, प्रयोजन, अनुशासन वाला **तम्** = उसको, उसे **प्रियासम्** = प्रिय को **बहु** = बहुत **रोचमानो** = रुचि, प्रकाशमान् हुआ **दीर्घायुत्वाय** = दीर्घ आयु वाला **शतशारदाय** = शत शरद के लिए **॥ 4 ॥**

पदार्थ - **सोमस्य** = सृजन-ऐश्वर्य-अन्तकर्ता, ऐश्वर्यवान्, सृष्टिकर्ता, (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामथ्य, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना। सू = प्रेरणा देना। सो–स्य, सय - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना)। **पर्णः** = पर्ण (पर्ण - हरा करना, हरा होना, पृ - पूर्ण करना, भरण करना)। **सहः** = साथ, सहित (सर्वनाम)। **उग्रम्** = उग्र को (उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना, उग् - उग्र - उग्र होना, तेज होना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **अगन्** = गये, गतिमान (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, गम् - जाना, अग् = जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, गति करना, घूमना, कुटिल गति करना, टेढ़ा जाना, लेना, ग्रहण करना)। **इन्द्रेण** = इन्द्र द्वारा, परम ऐश्वर्य द्वारा (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **दत्तो** = दिया हुआ (दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)। **वरुणेन** = वरणीय, वरण करने के लिए (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **शिष्टः** = शिष्ट, प्रयोजन, अनुशासन वाला (शिष् - प्रयोजन करना, शेष रखना, अनुशासन करना, आशीर्वाद देना, हिंसा करना)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **प्रियासम्** = प्रिय को (प्री = स्नेह करना, प्यार करना, तृप्त करना, सन्तुष्ट करना, चाहना)। **बहु** = बहुत (सर्वनाम)। **रोचमानो** = रुचि, प्रकाशमान् हुआ (रुच् = रुचना, प्रकाशित होना, प्रसन्न होना)। **दीर्घायुत्वाय** = दीर्घ आयु वाला (दृह - बढ़ना, वृद्धिगत होना)। **शतशारदाय** = शत शरद के लिए (शतम् = सौ, शार - निर्बल होना या करना, आसक्त होना या करना, शृ - सुनना) **॥ 4 ॥**

391. आ मा अरुक्षत् पर्णमणिः,
महया अरिष्टतातये।
यथा अहम् उत्तरो असानि,
अर्यम्णः उत् सम्-विदः ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ - **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **मा** = नहीं, मत **अरुक्षत्** = बढ़ा, चढ़ा **पर्णमणिः** = पर्णमणि **महया** = पूज्या, महिमावान्, महान् **अरिष्टतातये** = अहिंसक, गतिशील, व्यापक का विस्तार करने वाले, अरिष्टता का चुम्बन करने वाले **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार **अहम्** = मैं **उत्तरो** = उत्तर, उत्तर दिशा **असानि** = हो जाऊँ **अर्यम्णः** = अर्यमा का **उत्** = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च **सम्-विदः** = सम्यक् विद्वान् **॥ 5 ॥**

पदार्थ - **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **मा** = नहीं, मत (अव्यय)। **अरुक्षत्** = बढ़ा, चढ़ा (अ

- भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, रुह् = ऊपर चढ़ना, बढ़ना)। **पर्णमणिः =** पर्णमणि (पर्ण - हरा करना, हरा होना, पृ - पूर्ण करना, भरण करना, मण् - शब्द करना)। **मह्या =** पूज्या, महिमावान्, महान् (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना)। **अरिष्टतातये =** अहिंसक, गतिशील, व्यापक का विस्तार करने वाले, अरिष्टता का चुम्बन करने वाले (अ - नहीं, ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, रिष- हिंसा करना, मार डालना, दुःख देना, मारने का यत्न करना, तन् - विस्तार करना, तय - चुम्बन करना)। **यथा =** जिससे, जैसे, जिस प्रकार (अव्यय)। **अहम् =** मैं (सर्वनाम)। **उत्तरो =** उत्तर, उत्तर दिशा (सर्वनाम)। **असानि =** हो जाऊँ (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **अर्यम्णः =** अर्यमा का (ऋ - जाना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना, पहुँचाना, अर्-ऋ - गति करना, जाना, जानना, पाना, शब्द करना, व्याप्त होना, मिलाना, महत्व दिखाना, हिंसा करना)। **उत् =** भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)। **सम्-विदः =** सम्यक् विद्वान् (सम् - सम्यक्, सम् - न घबराना, एक समान रहना, विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना) **॥ 5 ॥**

392. ये धीवानो रथकाराः,
कर्मारा ये मनीषिणः।
उपस्तीन् पर्ण मह्यम् त्वम्,
सर्वान् कृणु अभितो जजान्॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ - **ये =** जो **धीवानो =** धीरवान्, धारण करने वाले **रथकाराः =** रथकार **कर्मारा =** कर्मशील **ये =** जो **मनीषिणः =** मनीषियों का **उपस्तीन् =** उपस्तीनों को **पर्ण =** पर्ण **मह्यम् =** मेरे लिए **त्वम् =** तुम **सर्वान् =** सभी को **कृणु =** करो **अभितो =** अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा **जजान् =** लोगों को **॥ 6 ॥**

पदार्थ - **ये =** जो (सर्वनाम)। **धीवानो =** धीरवान्, धारण करने वाले (धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना, धि = धारण करना, युक्त होना, धृ - धारण करना, सहना, स्थिर रहना)। **रथकाराः =** रथकार (रम - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना, कृ - करना)। **कर्मारा =** कर्मशील (कृ-करना)। **ये =** जो (सर्वनाम)। **मनीषिणः =** मनीषियों का (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **उपस्तीन् =** उपस्तीनों को (उप - समीप, स्तु = स्तुति करना, प्रशंसा करना)। **पर्ण =** पर्ण (पर्ण - हरा करना, हरा होना, पृ - पूर्ण करना, भरण करना)। **मह्यम् =** मेरे लिए (सर्वनाम)। **त्वम् =** तुम (सर्वनाम)। **सर्वान् =** सभी को (सर्वनाम)। **कृणु =** करो (कृ = करना)। **अभितो =** अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (सर्वनाम)। **जजान् =** लोगों को (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना) **॥ 6 ॥**

393. ये राजानो राजकृतः,
सूता ग्रामण्यः च ये।
उपस्तीन् पर्ण मह्यम् त्वम्,
सर्वान् कृणु अभितो जजान्॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ - **ये =** जो **राजानो =** राजा **राजकृतः =** राजकृत हैं **सूता =** सुत, ऐश्वर्यवान **ग्रामण्यः =** ग्रामण्य **च =** और **ये =** जो **उपस्तीन् =** उपस्तीनों को **पर्ण =** पर्ण **मह्यम् =** मेरे लिए **त्वम् =** तुम **सर्वान् =** सभी को **कृणु =** करो **अभितो =** अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा **जजान् =** लोगों को **॥ 7 ॥**

पदार्थ - **ये =** जो (सर्वनाम)। **राजानो =** राजा (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **राजकृतः =** राजकृत हैं (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना, कृ = करना)। **सूता =** सुत, ऐश्वर्यवान (सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना)। **ग्रामण्यः =** ग्रामण्य (ग्राम - बुलाना, बुद्धिपूर्वक

कहना, एकत्र होना)। **च** = और (अव्यय)। **ये** = जो (सर्वनाम)। **उपस्तीन्** = उपस्तीनों को (उप - समीप, स्तु = स्तुति करना, प्रशंसा करना)। **पर्ण** = पर्ण (पर्ण - हरा करना, हरा होना, पृ - पूर्ण करना, भरण करना)। **मह्यम्** = मेरे लिए (सर्वनाम)। **त्वम्** = तुम (सर्वनाम)। **सर्वान्** = सभी को (सर्वनाम)। **कृणु** = करो (कृ = करना)। **अभितो** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (सर्वनाम)। **जजान्** = लोगों को (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना) **॥ 7 ॥**

394. पर्ण असि तनूपानः,
सयोनिः वीरो वीरेण मया।
संवत्सरस्य तेजसा,
तेन बध्नामि त्वा मणे ॥ 8 ॥

मन्त्रार्थ - **पर्ण** = पर्ण **असि** = हो **तनूपानः** = विस्तार, वृद्धि के रक्षक, पालनकर्ता **सयोनिः** = बन्धन, मिलन, सम्बन्ध सहित **वीरो** = पराक्रमी, वीर **वीरेण** = वीर द्वारा **मया** = मेरे द्वारा **संवत्सरस्य** = सम्वत्सर के लिए **तेजसा** = तेज द्वारा, तेज के साथ **तेन** = उससे, उसके द्वारा **बध्नामि** = बाँधता हूँ **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **मणे** = हे मणि, हे शब्दकर्ता **॥ 8 ॥**

पदार्थ - **पर्ण** = पर्ण (पर्ण - हरा करना, हरा होना, पृ - पूर्ण करना, भरण करना)। **असि** = हो (अस् - होना)। **तनूपानः** = विस्तार, वृद्धि के रक्षक, पालनकर्ता (तन् = विस्तार करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना, पा = पालन करना, रक्षा करना)। **सयोनिः** = बन्धन, मिलन, सम्बन्ध सहित (स - सहित, साथ, युन्-यु - बांधना, बन्धन करना, गूंथना, यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, संयोग-वियोग करना)। **वीरो** = पराक्रमी, वीर (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)। **वीरेण** = वीर द्वारा (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)। **मया** = मेरे द्वारा (सर्वनाम)। **संवत्सरस्य** = सम्वत्सर के लिए (सम् - सम्यक्, सम् - न घबराना, एक समान रहना, वद् - बोलना, कहना, सृ - चलना, सरकना)। **तेजसा** = तेज द्वारा, तेज के साथ (तिज्, तेज् = चमकना, चमकाना, पैना करना, प्रभाव होना, तीक्ष्ण करना)। **तेन** = उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **बध्नामि** = बाँधता हूँ (बध - बांधना, बद्ध करना, हिंसा करना, मारना, वध करना, घृणा करना)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **मणे** = हे मणि, हे शब्दकर्ता (मण् - शब्द करना) **॥ 8 ॥**

14. अनुवाक - 2

77- शत्रुनाशन सूक्त - 6

395. पुमान् पुंसः परिजातो,
अश्वत्थः खदिरात् अधि।
सः हन्तु शत्रून् मामकान् यान्,
अहम् द्वेष्मि ये च माम् ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - **पुमान्** = पवित्रता युक्त, रक्षक **पुंसः** = अभिवर्धन **परिजातो** = परिजात **अश्वत्थः** = अश्वत्थ, तीव्र गति युक्त, व्यापक **खदिरात्** = खाने से, हिंसा से **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार **सः** = वह, उसने **हन्तु** = हनन करे, मारे **शत्रून्** = शत्रुओं को **मामकान्** = मेरे **यान्** = जाता हुआ **अहम्** = मैं **द्वेष्मि** = द्वेष करते हैं **ये** = जो **च** = और **माम्** = मुझको **॥ 1 ॥**

पदार्थ - **पुमान्** = पवित्रता युक्त, रक्षक (पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)। **पुंसः** = अभिवर्धन (पुंस = बढ़ना, बढ़ाना)। **परिजातो** = परिजात (परि = सभी ओर, उपसर्ग, जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **अश्वत्थः** = अश्वत्थ, तीव्र गति युक्त, व्यापक (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)। **खदिरात्** = खाने से, हिंसा

से (खद् = खाना, मार डालना, सताना, स्थिर रहना)। **अधि =** अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **सः =** वह, उसने (सर्वनाम)। **हन्तु =** हनन करे, मारे (हन् - मारना)। **शत्रून् =** शत्रुओं को (शी-शद्-शत् - जीर्ण होना, गिरना, गिराना)। **मामकान् =** मेरे (सर्वनाम)। **यान् =** जाता हुआ (या - जाना)। **अहम् =** मैं (सर्वनाम)। **द्वेष्मि =** द्वेष करते हैं (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना, मत्सर करना)। **ये =** जो (सर्वनाम)। **च =** और (अव्यय)। **माम् =** मुझको (सर्वनाम) **॥ 1 ॥**

396. तान् अश्वत्थ निः शृणीहि,
शत्रून् वैबाध-दोधतः।
इन्द्रेण वृत्रघ्ना मेदी,
मित्रेण वरुणेन च ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - तान् = उनको **अश्वत्थ =** अश्वत्थ, तीव्र गति युक्त, व्यापक **निः =** बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर **शृणीहि =** सुनो, संहार करो **शत्रून् =** शत्रुओं को **वैबाध-दोधतः =** विबाध-कम्पन करने वाला, विबाध-दोहन करने वाला **इन्द्रेण =** इन्द्र द्वारा, परम ऐश्वर्य द्वारा **वृत्रघ्ना =** वृत्र-हनन करे, वृत्रों का नाश करे **मेदी =** मेद है, स्नेह है **मित्रेण =** मित्रों द्वारा **वरुणेन =** वरणों द्वारा, वरण करने वालों द्वारा **च =** और **॥ 2 ॥**

पदार्थ - तान् = उनको (सर्वनाम) **अश्वत्थ =** अश्वत्थ, तीव्र गति युक्त, व्यापक (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना) **निः =** बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग)। **शृणीहि =** सुनो, संहार करो (शृ = सुनना, श्रवण करना, जाना, शृ = मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना)। **शत्रून् =** शत्रुओं को (शी-शद्-शत् - जीर्ण होना, गिरना, गिराना)। **वैबाध-दोधतः =** विबाध-कम्पन करने वाला, विबाध-दोहन करने वाला (वि - विशेष, बाध् - रोकना, अटकाव करना, बाधा देना, दुःख देना, दुह - दूध निकालना, दोहना, रिक्त करना, लेना, खींचना, धू - कम्पन करना, नोचना, कम्पित करना, काँपना, कम्पाना, कम्पित होना, हिलाना, क्षोभित करना)। **इन्द्रेण =** इन्द्र द्वारा, परम ऐश्वर्य द्वारा (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **वृत्रघ्ना =** वृत्र-हनन करे, वृत्रों का नाश करे (वृ - वरण करना, आच्छादन करना, स्वीकार करना, वृत् - वर्तना, वर्तमान होना वरण करना, सेवा करना, चमकना, बोलना, हिंसा करना, हन् - मारना)। **मेदी =** मेद है, स्नेह है (मेद् - समझना, जानना, मेधा होना, हिंसा करना, मार डालना, दुःख देना, पीड़ा करना, मिद् - स्नेह करना)। **मित्रेण =** मित्रों द्वारा (मिद् - स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, नरम होना, मृदुल होना)। **वरुणेन =** वरणों द्वारा, वरण करने वालों द्वारा (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **च =** और (अव्यय) **॥ 2 ॥**

397. यथा अश्वत्थ निः-अभनो,
अन्तः महति अर्णवे।
एव तान् सर्वान् निः भङ्गधि,
यान् अहम् द्वेष्मि ये च माम् ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - यथा = जिससे, जैसे, जिस प्रकार **अश्वत्थ =** अश्वत्थ, तीव्र गति युक्त, व्यापक **निः-अभनो =** निः-अभय, निर्भय, भय-हीन, भय-मुक्त **अन्तः =** बीच में, भीतर **महति =** महत् में , महान् होता है, पूज्य होता है **अर्णवे =** अर्णव, गतिशील, विद्वान्, गति, ज्ञान युक्त, रतिहीन, प्राप्त होने वाले, अहिंसक **एव =** ही **तान् =** उनको **सर्वान् =** सभी को **निः =** बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर **भङ्गधि =** भङ्ग करो, प्रकाश करो, भञ्जन करो **यान् =** जाता हुआ **अहम् =** मैं **द्वेष्मि =** द्वेष करते हैं **ये =** जो **च =** और **माम् =** मुझको **॥ 3 ॥**

पदार्थ - यथा = जिससे, जैसे, जिस प्रकार (अव्यय)। **अश्वत्थ =** अश्वत्थ, तीव्र गति युक्त, व्यापक (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना,

भोजन करना)। **निः-अभनो =** निः-अभय, निर्भय, भय-हीन, भय-मुक्त (निः = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग), अ - नहीं, भी = भय होना, डरना, घबराना)। **अन्तः =** बीच में, भीतर (अव्यय, उपसर्ग, सर्वनाम) **महति =** महत् में , महान् होता है, पूज्य होता है (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना)। **अर्णवे =** अर्णव, गतिशील, विद्वान्, गति, ज्ञान युक्त, रतिहीन, प्राप्त होने वाले, अहिंसक (अर्-ऋ - गति करना, जाना, जानना, पाना, शब्द करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, जाना, जानना, पाना, दुर्गति होना)। **एव =** ही (अव्यय)। **तान् =** उनको (सर्वनाम)। **सर्वान् =** सभी को (सर्वनाम)। **निः =** बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग)। **भङ्गधि =** भङ्ग करो, प्रकाश करो, भञ्जन करो (भञ्ज् = प्रकाशित होना, चमकना, बोलना, कहना, हिंसा करना, गति करना, खेलना, भञ्जन करना, नष्ट करना)। **यान् =** जाता हुआ (या - जाना)। **अहम् =** मैं (सर्वनाम)। **द्वेष्मि =** द्वेष करते हैं (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना, मत्सर करना)। **ये =** जो (सर्वनाम)। **च =** और (अव्यय)। **माम् =** मुझको (सर्वनाम) **॥ 3 ॥**

398. यः सहमानः चरसि,
सासहान इव ऋषभः।
तेन अश्वत्थ त्वया वयम्,
सपत्नान् सहिषीमहि ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - यः = जो **सहमानः =** सहमान **चरसि =** विचरण करते हो **सासहान =** सक्षम, समर्थ, तृप्त, सन्तुष्ट **इव =** समान, की भाँति, के समान **ऋषभः =** ऋषभ **तेन =** उससे, उसके द्वारा **अश्वत्थ =** अश्वत्थ, तीव्र गति युक्त, व्यापक **त्वया =** तुम्हारे द्वारा, तुमसे **वयम् =** हम, हम सब, हम लोग **सपत्नान् =** सपत्नों को, ऐश्वर्यवान को **सहिषीमहि =** अत्यन्त सहनशील, समर्थ हो **॥ 4 ॥**

पदार्थ - यः = जो (सर्वनाम)। **सहमानः =** सहमान (सह = साथ, सहित, सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)। **चरसि =** विचरण करते हो (चर -जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)। **सासहान =** सक्षम, समर्थ, तृप्त, सन्तुष्ट (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना)। **इव =** समान, की भाँति, के समान (अव्यय)। **ऋषभः =** ऋषभ (ऋष् - जानना, जाना, पाना, अन्तदृष्टि होना, अन्तर्गमन करना, सूक्ष्मता से भीतर देखना, भा - प्रकाश होना)। **तेन =** उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **अश्वत्थ =** अश्वत्थ, तीव्र गति युक्त, व्यापक (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)। **त्वया =** तुम्हारे द्वारा, तुमसे (सर्वनाम)। **वयम् =** हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **सपत्नान् =** सपत्नों को, ऐश्वर्यवान को (स - सहित, साथ। पत् = जाना, उड़ना, पतन होना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **सहिषीमहि =** अत्यन्त सहनशील, समर्थ हो (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना) **॥ 4 ॥**

399. सिनातु एनान् निः-ऋतिः,
मृत्योः पाशैः अमोक्यैः।
अश्वत्थ शत्रून् मामकान्,
यान् अहम् द्वेष्मि ये च माम् ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ - सिनातु = बांधो, विस्तार करो **एनान् =** इनको **निः-ऋतिः =** निः-ऋति, निरन्तर गतिशील **मृत्योः =** मृत्यु का **पाशैः =** पाशों द्वारा, दिखाने वालों द्वारा, बन्धनों द्वारा **अमोक्यैः =** अमोचित से **अश्वत्थ =** अश्वत्थ, तीव्र गति युक्त, व्यापक **शत्रून् =** शत्रुओं को **मामकान् =** मेरे **यान् =** जाता हुआ **अहम् =** मैं **द्वेष्मि =** द्वेष करते हैं **ये =** जो **च =** और **माम् =** मुझको **॥ 5 ॥**

पदार्थ - सिनातु = बांधो, विस्तार करो (सि - बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना, वल् - आच्छादन करना, चलना,

विस्तार करना, प्रसार करना)। **एनान्** = इनको (सर्वनाम)। **निः-ऋतिः** = निः-ऋति, निरन्तर गतिशील (निः = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग), ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)। **मृत्योः** = मृत्यु का (मृ = मरना, देहत्याग करना)। **पाशैः** = पाशों द्वारा, दिखाने वालों द्वारा, बन्धनों द्वारा (पश् - देखना, पश - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना)। **अमोक्यैः** = अमोचित से (अ - नहीं, उपसर्ग, अ - भूतकालिक उपसर्ग, मुच - बोलना, कहना, पीसना, ठगना, मुच - छोड़ना, द्रव्यादि देना, प्रसन्न होना)। **अश्वत्थ** = अश्वत्थ, तीव्र गति युक्त, व्यापक (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)। **शत्रून्** = शत्रुओं को (शी-शद्-शत् - जीर्ण होना, गिरना, गिराना)। **मामकान्** = मेरे (सर्वनाम)। **यान्** = जाता हुआ (या - जाना)। **अहम्** = मैं (सर्वनाम)। **द्वेष्मि** = द्वेष करते हैं (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना, मत्सर करना)। **ये** = जो (सर्वनाम)। **च** = और (अव्यय)। **माम्** = मुझको (सर्वनाम) **॥ 5 ॥**

400. यथा अश्वत्थ वानस्पत्यान्,
आरोहन् कृणुषे अधरान्।
एव मे शत्रोः मूर्धानम्,
विष्वक् भिन्द्धि सहस्व च ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ - **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार **अश्वत्थ** = अश्वत्थ, तीव्र गति युक्त, व्यापक **वानस्पत्यान्** = वनस्पतिजन्यों द्वारा **आरोहन्** = ऊपर चढ़ो, चढ़ना, बढ़ना **कृणुषे** = करता है **अधरान्** = अधरों को, जय को, धारण न करने को **एव** = ही **मे** = मेरा, मेरे लिए **शत्रोः** = शत्रु का **मूर्धानम्** = उच्च **विष्वक्** = विश्व, व्याप्त **भिन्द्धि** = भेदन करो **सहस्व** = सहनशील, समर्थ बनो **च** = और **॥ 6 ॥**

पदार्थ - **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार (अव्यय)। **अश्वत्थ** = अश्वत्थ, तीव्र गति युक्त, व्यापक (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)। **वानस्पत्यान्** = वनस्पतिजन्यों द्वारा (वन - शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, आपद्ग्रस्त होना, अलग करना, मिलाना, स्मरण करना, बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, याचना करना, मांगना, दुःख देना, उद्योग-धन्धा करना, पत् = जाना, उड़ना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **आरोहन्** = ऊपर चढ़ो, चढ़ना, बढ़ना (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, रुह् = ऊपर चढ़ना, बढ़ना)। **कृणुषे** = करता है (कृ = करना)। **अधरान्** = अधरों को, जय को, धारण न करने को (अधर् - न्यून करना, जीतना, निम्न गति करना, अ - नहीं, धृ - धारण करना)। **एव** = ही (अव्यय)। **मे** = मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **शत्रोः** = शत्रु का (शी-शद्-शत् - जीर्ण होना, गिरना, गिराना)। **मूर्धानम्** = उच्च (मुर् - घेरना, लपेटना, मूर्द्ध- उच्च होना)। **विष्वक्** = विश्व, व्याप्त (विष्ण-विष् -विविष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना, व्यापना, फैलना, प्रसृत होना)। **भिन्द्धि** = भेदन करो (भिद्-भिन्द् - भेदना, भेदन करना, भाग करना)। **सहस्व** = सहनशील, समर्थ बनो (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)। **च** = और (अव्यय) **॥ 6 ॥**

401. ते अधराञ्चः प्र प्लवन्ताम्,
छिन्ना नौः इव बन्धनात्।
न वैबाध-प्रणुत्तानाम्,
पुनः अस्ति निवर्तनम् ॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ - **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **अधराञ्चः** = अधोगति वाला **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक **प्लवन्ताम्** = प्लवन करती हैं, तैरती हैं **छिन्ना** = छिन्न **नौः-इव** = हम दोनों के समान **बन्धनात्** = बन्धन से **न** = नहीं, समान, उपमार्थक **वैबाध-प्रणुत्तानाम्** = विबाधक-प्रेरणाओं का, विशेष बाधा करने वाली प्रेरणाओं का **पुनः** = फिर **अस्ति** = है **निवर्तनम्** = नि-वर्तन को, वरण को, वर्ताव को **॥ 7 ॥**

पदार्थ - ते = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **अधराञ्चः =** अधोगति वाला (अधः = नीचे (अव्यय), अञ्च- अंच - झुकना, टेढ़ा करना, जाना, पूजा करना, मान करना, संवारना, शोभित करना, मांगना, चाहना, प्रकट करना, न्यूनाधिक देखना, अस्पष्ट बोलना)। **प्र =** प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **प्लवन्ताम् =** प्लवन करती हैं, तैरती हैं (प्लु - जाना, उड़ना, तैरना, कूदना)। **छिन्ना =** छिन्न (छिद्- छेदना, काटना, छिन्न-भिन्न करना)। **नौः-इव =** हम दोनों के समान (नौ = हम दोनों, इव = समान, की भाँति, के समान, अव्यय)। **बन्धनात् =** बन्धन से (बध्-बन्ध् = बाँधना, बद्ध करना, हिंसा करना, मारना, वध करना, घृणा करना)। **न =** नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **वैबाध-प्रणुत्तानाम् =** विबाधक-प्रेरणाओं का, विशेष बाधा करने वाली प्रेरणाओं का (वि - विशेष, बाध् - रोकना, अटकाव करना, बाधा देना, दुःख देना, प्र - प्रकृष्ट, अधिक, णुद् - नुद् = प्रेरणा करना, भेजना, जाना)। **पुनः =** फिर (अव्यय)। **अस्ति =** है (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **निवर्तनम् =** नि-वर्तन को, वरण को, वर्ताव को (निः - विना, बाहर, निश्चित, वृत् = रहना, होना, वर्ताव करना, चमकना, बोलना, वरण करना, सेवा करना) **॥ 7 ॥**

402. प्र एनान् नुदे मनसा,
प्र चित्तेन उत ब्रह्मणा।
प्र एनान् वृक्षस्य शाखया,
अश्वत्थस्य नुदामहे ॥ 8 ॥

मन्त्रार्थ - प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक **एनान् =** इनको **नुदे =** भेजता हूँ, प्राप्त करता हूँ, जाता हूँ **मनसा =** मन से, मन द्वारा **प्र =** प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक **चित्तेन =** चित्त या चेतना, ज्ञान द्वारा **उत** = ही, भी, ओर **ब्रह्मणा** = ब्रह्म द्वारा **प्र =** प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक **एनान् =** इनको **वृक्षस्य =** वृक्ष का **शाखया =** शाखा द्वारा **अश्वत्थस्य =** अश्वत्थ का, तीव्र गति युक्त, व्यापक का **नुदामहे =** भेजते हैं, प्रेरित करते हैं **॥ 8 ॥**

पदार्थ - प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **एनान् =** इनको (सर्वनाम)। **नुदे =** भेजता हूँ, प्राप्त करता हूँ, जाता हूँ (नुद् = भेजना, प्रेरणा करना, जाना)। **मनसा =** मन से, मन द्वारा (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **प्र =** प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **चित्तेन =** चित्त या चेतना, ज्ञान द्वारा (चि - चुनना, एकत्र करना, चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, सम्यक् ज्ञान होना, स्मरण करना, शंका करना, सन्देह करना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **ब्रह्मणा** = ब्रह्म द्वारा (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **प्र =** प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **एनान् =** इनको (सर्वनाम)। **वृक्षस्य =** वृक्ष का (वृक्ष - वरण करना, आच्छादन करना)। **शाखया =** शाखा द्वारा (शाख् = व्याप्त होना, फैलना, शाखा निकलना)। **अश्वत्थस्य =** अश्वत्थ का, तीव्र गति युक्त, व्यापक का (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)। **नुदामहे =** भेजते हैं, प्रेरित करते हैं (नुद् = भेजना, प्रेरणा करना, जाना) **॥ 8 ॥**

78. यक्ष्मनाशन सूक्त - 7

403. हरिणस्य रघुष्यदो,
अधि शीर्षणि भेषजम्।
सः क्षेत्रियम् विषाणया,
विषूचीनम् अनीनशत् ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - हरिणस्य = हरिण का **रघुष्यदो** = शासन-प्रगति करने वाला **अधि =** अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार **शीर्षणि =** शीर्ष में **भेषजम् =** भेषज को, औषधि को **सः =** वह, उसने **क्षेत्रियम् =** क्षेत्रिय को

विषाणया = विषान द्वारा **विषूचीनम्** = विषूचियों को, विसूचियों को **अनीनशत्** = नष्ट करे ॥ **1** ॥

पदार्थ - **हरिणस्य** = हरिण का (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)। **रघुष्यदो** = शासन-प्रगति करने वाला (रघ - स्वाद लेना, रुचि लेना, शासन करना, स्यन्द = टपकना, झरना, चूना, सींचना, छींटा देना, जाना)। **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **शीर्षणि** = शीर्ष में (शीर्ष = शीर्ष होना, मुख्य होना, उच्च होना)। **भेषजम्** = भेषज को, औषधि को (भिषज् - रोग मुक्त करना, चिकित्सा करना, नष्ट करना, भेष - डरना, जाना, जानना, पाना)। **सः** = वह, उसने (सर्वनाम)। **क्षेत्रियम्** = क्षेत्रिय को (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)। **विषाणया** = विषान द्वारा (वि = विशेष, विविध, विना, विलोम (उपसर्ग), विश् - प्रवेश, सूचना, प्रेरणा करना, विष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना)। **विषूचीनम्** = विषूचियों को, विसूचियों को (वि = विशेष, विविध, विना, विलोम (उपसर्ग), विष - सींचना, प्रोक्षण करना, सूच - सूचना करना, बात कहना, जताना, दूसरे की न्यूनता दिखाना)। **अनीनशत्** = नष्ट करे (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अ - नहीं, अन् - प्राण होना, चेतन होना, श्वास लेना, स्पन्दन करना, हलचल करना, जीवन होना, समर्थ होना, जाना, नश् - नष्ट होना, अदृश्य होना) ॥ **1** ॥

404. अनु त्वा हरिणो वृषा,
पत्-भिः चतुर्भिः अक्रमीत्।
विषाणे वि स्य गुष्पितम्,
यत् अस्य क्षेत्रियम् हृदि ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - **अनु** = पश्चात्, पीछे, अनुकूल **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **हरिणो** = हरिण, हरने वाला, ले जाने वाला, पहुँचाने वाला **वृषा** = पराक्रमी **पत्-भिः** = पतियों द्वारा (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **चतुर्भिः** = चार द्वारा (संख्या)। **अक्रमीत्** = आक्रान्त किया, वृद्धि की, रक्षा की **विषाणे** = विषान में **वि** = विशेष, विना, विलोम **स्य** = वह, बन्धन **गुष्पितम्,** = विस्तार को, गुष्पित को, शब्दज्ञानी को **यत्** = जिसे, जो **अस्य** = इसका **क्षेत्रियम्** = क्षेत्रिय को **हृदि** = हृद् में, हृदय में ॥ **2** ॥

पदार्थ - **अनु** = पश्चात्, पीछे, अनुकूल (उपसर्ग)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **हरिणो** = हरिण, हरने वाला, ले जाने वाला, पहुँचाने वाला (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)। **वृषा** = पराक्रमी (वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना या पीड़ा करना, दुःख देना, पीड़ित करना)। **पत्-भिः** = पतियों द्वारा (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **चतुर्भिः** = चार द्वारा (संख्या)। **अक्रमीत्** = आक्रान्त किया, वृद्धि की, रक्षा की (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अ = नहीं, उपसर्ग, क्रम् = जाना, बढ़ना, रक्षा करना)। **विषाणे** = विषान में (वि = विशेष, विविध, विना, विलोम (उपसर्ग), विश् - प्रवेश, सूचना, प्रेरणा करना, विष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **स्य** = वह, बन्धन (स्य - वैदिक सर्वनाम्, सि = बाँधना)। **गुष्पितम्,** = विस्तार को, गुष्पित को, शब्दज्ञानी को (गुल्फ = घुटने के बल चलना, विस्तार करना, फैलाना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, पि - जाना, जानना, पाना, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **अस्य** = इसका (सर्वनाम)। **क्षेत्रियम्** = क्षेत्रिय को (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)। **हृदि** = हृद् में, हृदय में (हृ - प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना) ॥ **2** ॥

405. अदो यत् अव-रोचते,
चतुः-पक्षम् इव छदिः।
तेना ते सर्वम् क्षेत्रियम्,
अङ्गेभ्यः नाशयामसि ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - **अदो** = खाने वाला **यत्** = जिसे, जो **अव-रोचते** = अव-रुचता है, अव-प्रकाश करता है **चतुः-पक्षम्** = चतुः-पक्ष को, चतुर्पक्ष को **इव** = समान, की भाँति, के समान **छदिः** = आच्छादन, आवरण, बल **तेना ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **सर्वम्** = सब **क्षेत्रियम्** = क्षेत्रिय को **अङ्गेभ्यः** = अंगों के लिए, प्रगतिशीलों, विद्वानों के लिए **नाशयामसि** = नाश करता हूँ, विनाश करता हूँ ॥ 3 ॥

पदार्थ - **अदो** = खाने वाला (अद् - खाना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **अव-रोचते** = अव-रुचता है, अव-प्रकाश करता है (अव = नीचे, दूर, प्राप्त (अव्यय), रुच् = रुचना, प्रकाशित होना, प्रसन्न होना)। **चतुः-पक्षम्** = चतुः-पक्ष को, चतुर्पक्ष को (चतुः = चार (संख्या), पक्ष् - पक्ष होना, पक्ष लेना, किसी एक पक्ष को ग्रहण करना, विभाग करना, ग्रहण करना, स्वीकार करना)। **इव** = समान, की भाँति, के समान (अव्यय)। **छदिः** = आच्छादन, आवरण, बल (छद् - आच्छादित करना, ढकना, हटाना, छिपाना, बचाना, बलवान् होना या करना)। **तेना ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **सर्वम्** = सब (सर्वनाम)। **क्षेत्रियम्** = क्षेत्रिय को (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)। **अङ्गेभ्यः** = अंगों के लिए, प्रगतिशीलों, विद्वानों के लिए (अंग् = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)। **नाशयामसि** = नाश करता हूँ, विनाश करता हूँ (नश् - नष्ट होना, अदृश्य होना) ॥ 3 ॥

406. अमू ये दिवि सुभगे,
विचृतौ नाम तारके।
वि क्षेत्रियस्य मुञ्चताम्,
अधमम् पाशम् उत्तमम् ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - **अमू** = यह **ये** = जो **दिवि** = दिव्यता में, दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय में **सुभगे** = उत्तम सेवित, भजनीय **विचृतौ** = विशेष प्रकाशित करने वाले युगल **नाम** = नाम वाले **तारके** = तारक, तारने वाले, पार कराने वाले **वि** = विशेष, विना, विलोम **क्षेत्रियस्य** = क्षेत्रिय का **मुञ्चताम्** = मुक्त करें, कहें **अधमम्** = अधम को, शब्दकर्ता को, प्रकाशकर्ता को **पाशम्** = पाश को, दिखाने वालें को, बन्धन को **उत्तमम्** = उत्तम को, श्रेष्ठ-इच्छा, शुभ-इच्छा को ॥ 4 ॥

पदार्थ - **अमू** = यह (सर्वनाम)। **ये** = जो (सर्वनाम)। **दिवि** = दिव्यता में, दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय में (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)। **सुभगे** = उत्तम सेवित, भजनीय (सु - उत्तम, अच्छा, भग्-भज् = सेवा करना, सेवन करना, सेवित होना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अलग करना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)। **विचृतौ** = विशेष प्रकाशित करने वाले युगल (वि - विशेष, चृत् - प्रकाशित करना, एकत्र करना, गूँथना, हिंसा करना)। **नाम** = नाम वाले (अव्यय)। **तारके** = तारक, तारने वाले, पार कराने वाले (तृ - पार जाना, पर तीर को जाना, जल पर तैरना, जीतना, जल के पार जाना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **क्षेत्रियस्य** = क्षेत्रिय का (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)। **मुञ्चताम्** = मुक्त करें, कहें (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अधमम्** = अधम को, शब्दकर्ता को, प्रकाशकर्ता को (अधम - निम्न (सर्वनाम)। अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, धम् - शब्द करना, प्रकाश करना, आग को फूंकना, तीव्र करना)। **पाशम्** = पाश को, दिखाने वालें को, बन्धन को (पश् - देखना, पश - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना)। **उत्तमम्** = उत्तम को, श्रेष्ठ-इच्छा, शुभ-इच्छा को (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, तम् - अन्धकार होना, इच्छा करना, चाहना, मानसिक या शारीरिक व्यथा से दुःखित होना) ॥ 4 ॥

407. आपः इत् वा उ भेषजीः,
आपो अमीव-चातनीः।
आपो विश्वस्य भेषजीः,
ताः त्वा मुञ्चन्तु क्षेत्रियात् ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ - **आपः** = आप, व्याप्त, व्यापक **इत्** = ही **वा** = अथवा **उ** = निश्चय ही, भी **भेषजीः** = औषधि युक्त **आपो** = आप, व्याप्त, व्यापक **अमीव-चातनीः** = शब्द, गति, सेवा युक्त, अहिंसक **आपो** = आप, व्याप्त, व्यापक **विश्वस्य** = विश्व का, सभी का **भेषजीः** = औषधि युक्त **ताः** = वे **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **मुञ्चन्तु** = मुक्त करें, कहें **क्षेत्रियात्** = क्षेत्रिय से ॥ 5 ॥

पदार्थ - **आपः** = आप, व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)। **इत्** = ही (अव्यय)। **वा** = अथवा (अव्यय)। **उ** = निश्चय ही, भी (निपात, अव्यय)। **भेषजीः** = औषधि युक्त (भिषज् - रोग मुक्त करना, चिकित्सा करना, नष्ट करना, भेष - डरना, जाना, जानना, पाना)। **आपो** = आप, व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)। **अमीव-चातनीः** = शब्द, गति, सेवा युक्त, अहिंसक (अम् = गति, शब्द, सेवा करना, रोग होना, अ + मा, अ - नहीं, मा = मापना, नापना, तौलना, मि - फेकना, स्थापना करना, रक्षा करना, मी - हिंसा करना, मारना, वच् - बोलना, कहना)। **आपो** = आप, व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)। **विश्वस्य** = विश्व का, सभी का (सर्वनाम)। **भेषजीः** = औषधि युक्त (भिषज् - रोग मुक्त करना, चिकित्सा करना, नष्ट करना, भेष - डरना, जाना, जानना, पाना)। **ताः** = वे (सर्वनाम)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **मुञ्चन्तु** = मुक्त करें, कहें (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **क्षेत्रियात्** = क्षेत्रिय से (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना) ॥ 5 ॥

408. यत् आसुतेः क्रियमाणायाः,
क्षेत्रियम् त्वा वि-आनशे।
वेद अहम् तस्य भेषजम्,
क्षेत्रियम् नाशयामि त्वत् ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ - **यत्** = जिसे, जो **आसुतेः** = आसुत में, आसव किये हुए में, ऐश्वर्यवान् में, उत्पन्न करने वाले में **क्रियमाणायाः** = क्रियमाण द्वारा **क्षेत्रियम्** = क्षेत्रिय को **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **वि-आनशे** = विशेष प्राणवान्, व्याप्त, विनाशकारी हो गया है **वेद** = ज्ञान, जानो, जानता है **अहम्** = मैं **तस्य** = उसका **भेषजम्** = भेषज को, औषधि को **क्षेत्रियम्** = क्षेत्रिय को **नाशयामि** = नाश करता हूँ, विनाश करता हूँ **त्वत्** = तुमसे ॥ 6 ॥

पदार्थ - **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **आसुतेः** = आसुत में, आसव किये हुए में, ऐश्वर्यवान् में, उत्पन्न करने वाले में (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना)। **क्रियमाणायाः** = क्रियमाण द्वारा (कृ - करना)। **क्षेत्रियम्** = क्षेत्रिय को (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **वि-आनशे** = विशेष प्राणवान्, व्याप्त, विनाशकारी हो गया है (वि - विशेष, आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, आगम, अन् - प्राण होना, जीवन होना, नश् - नष्ट होना, समाप्त होना)। **वेद** = ज्ञान, जानो, जानता है (विद् = जानना, समझना, विद्यमान होना)। **अहम्** = मैं (सर्वनाम)। **तस्य** = उसका (सर्वनाम)। **भेषजम्** = भेषज को, औषधि को (भिषज् - रोग मुक्त करना, चिकित्सा करना, नष्ट करना, भेष - डरना, जाना, जानना, पाना)। **क्षेत्रियम्** = क्षेत्रिय को (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)। **नाशयामि** = नाश करता हूँ, विनाश करता हूँ (नश् - नष्ट होना, अदृश्य होना)। **त्वत्** = तुमसे (सर्वनाम) ॥ 6 ॥

409. अपवासे नक्षत्राणाम्,
अपवासे उषसाम् उत।
अप अस्मत् सर्वम् दुर्भूतम्,

अप क्षेत्रियम् उच्छतु ॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ - **अपवासे** = अपवास में **नक्षत्राणाम्** = नक्षत्रों का **अपवासे** = अपवास में **उषसाम्** = प्रभातों का **उत** = ही, भी, ओर **अप** = दूर, नीचे, अपकार **अस्मत्** = हमसे **सर्वम्** = सब **दुर्भूतम्** = दुर्भूत को **अप** = दूर, नीचे, अपकार **क्षेत्रियम्** = क्षेत्रिय को **उच्छतु** = पूर्ण करे, समाप्त करे ॥ 7 ॥

पदार्थ - **अपवासे** = अपवास में (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना, अप = दूर, नीचे, अपकार, अप = पालन करना, वस् = रहना, निवास करना)। **नक्षत्राणाम्** = नक्षत्रों का (नक्ष - जाना, आना, पहुंचना, जानना, पाना)। **अपवासे** = अपवास में (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना, अप = दूर, नीचे, अपकार, अप = पालन करना, वस् = रहना, निवास करना)। **उषसाम्** = प्रभातों का (उषस् = प्रभात होना, उष - हिंसा करना, जलना, जलाना, ताप देना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **अप** = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। **अस्मत्** = हमसे (सर्वनाम)। **सर्वम्** = सब (सर्वनाम)। **दुर्भूतम्** = दुर्भूत को (दुः = बुरा, अनुचित, कठिन, भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **अप** = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। **क्षेत्रियम्** = क्षेत्रिय को (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)। **उच्छतु** = पूर्ण करे, समाप्त करे (उच्छ - पूरा करना, समाप्त करना, छोड़ना, बाँधना, जकड़ कर बांधना) ॥ 7 ॥

79. राष्ट्रधारण सूक्त - 8

410. आ यातु मित्रः ऋतुभिः कल्पमानः,
सम्-वेशयन् पृथिवीम् उस्रियाभिः।
अथ अस्मभ्यम् वरुणो वायुः अग्निः,
बृहत् राष्ट्रम् सम्-वेश्यम् दधातु ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **यातु** = प्राप्त हो, जाये **मित्रः** = मित्र **ऋतुभिः** = ऋतुओं द्वारा **कल्पमानः** = समर्थ, रचनाशील **सम्-वेशयन्** = सम्यक् प्रवेश करते हुए **पृथिवीम्** = पृथिवी को **उस्रियाभिः** = उस्रियों, प्रभातकर्ताओं, तपाने वालों द्वारा **अथ** = अब, इसके अनन्तर **अस्मभ्यम्** = हमारे लिए **वरुणो** = वरणीय, वरण करने वाला **वायुः** = गतिशील, रचनात्मक शक्ति, वायु **अग्निः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् **बृहत्** = महान्, बड़ा, विराट, बृहत् **राष्ट्रम्** = राष्ट्र को **सम्-वेश्यम्** = सम्यक् प्रवेशी को **दधातु** = धारण करे ॥ 1 ॥

पदार्थ - **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **यातु** = प्राप्त हो, जाये (या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)। **मित्रः** = मित्र (मिद् - स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, मृदुल होना)। **ऋतुभिः** = ऋतुओं द्वारा (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)। **कल्पमानः** = समर्थ, रचनाशील (कल्प् - कल्पना करना, विचार करना, बनाना, रचना करना, शक्तिमान होना, समर्थ होना)। **सम्-वेशयन्** = सम्यक् प्रवेश करते हुए (सम् - सम्यक्, भलीभाँति, विश् - घुसना भीतर जाना, चारो ओर फैलाना)। **पृथिवीम्** = पृथिवी को (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)। **उस्रियाभिः** = उस्रियों, प्रभातकर्ताओं, तपाने वालों द्वारा (उषस् - प्रभात होना, उष - जलना, हिंसा करना, रोग होना)। **अथ** = अब, इसके अनन्तर (अव्यय)। **अस्मभ्यम्** = हमारे लिए (सर्वनाम)। **वरुणो** = वरणीय, वरण करने वाला (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **वायुः** = गतिशील, रचनात्मक शक्ति, वायु (वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वा = गति करना, पवन की भाँति बहना, जाना, जानना, पाना, गन्ध होना, प्रवाहित होना, प्रवाहित करना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण करना, घेरना, भेजना, खाना, वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना)। **अग्निः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **बृहत्** = महान्, बड़ा, विराट, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **राष्ट्रम्** = राष्ट्र को (रास = शब्द करना। राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **सम्-वेश्यम्** = सम्यक् प्रवेशी को (सम् -

सम्यक्, भलीभाँति, विश् - घुसना भीतर जाना, चारो ओर फैलाना)। **दधातु =** धारण करे (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना) **॥ 1 ॥**

411. धाता रातिः सविता इदम् जुषन्ताम्,
इन्द्रः त्वष्टा प्रति हर्यन्तु मे वचः।
हुवे देवीम् अदितिम् शूर-पुत्राम्,
सजातानाम् मध्य-मेष्ठा यथा असानि ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - **धाता =** धारण करने वाला **रातिः =** अनुदान **सविता =** सृष्टिकर्ता, उत्पन्न करने वाला, ऐश्वर्यवान् तथा ऐश्वर्य देने वाला **इदम् =** यह, इसको **जुषन्ताम् =** सेवा करें **इन्द्रः =** इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान **त्वष्टा =** त्वष्ट, प्रकाशक, सूक्ष्म करने वाला **प्रति =** प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में **हर्यन्तु =** प्रकाश करें, गति करें, इच्छा करें, हरण करें **मे =** मेरा, मेरे लिए **वचः =** वचन **हुवे =** आह्वान करते हैं, दान करते हैं, आदान-प्रदान करते हैं, तृप्ति करते हैं **देवीम् =** देवियों को **अदितिम् =** अक्षय, अविनाशी को **शूर-पुत्राम् =** शूर पुत्रों का, वीर पुत्रों का, पराक्रमी पुत्रों का **सजातानाम् =** सम्बन्धियों का **मध्य-मेष्ठा =** मध्यमस्थ, मध्यम स्थित **यथा =** जिससे, जैसे, जिस प्रकार **असानि =** हो जाऊँ **॥ 2 ॥**

पदार्थ - **धाता =** धारण करने वाला (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)। **रातिः =** अनुदान (रा - देना, मिल जाना)। **सविता =** सृष्टिकर्ता, उत्पन्न करने वाला, ऐश्वर्यवान् तथा ऐश्वर्य देने वाला (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)। **इदम् =** यह, इसको (सर्वनाम)। **जुषन्ताम् =** सेवा करें (जुष् = विचार करना, सेवा करना, सेवन करना, विवेक होना, विवेचना करना, प्रीति करना, चाहना, दुलारना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना)। **इन्द्रः =** इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **त्वष्टा =** त्वष्ट, प्रकाशक, सूक्ष्म करने वाला (त्वक्ष् = छीलना, रेतना, त्विष् = प्रकाशित होना, चमकना)। **प्रति =** प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग)। **हर्यन्तु =** प्रकाश करें, गति करें, इच्छा करें, हरण करें (हर्य् - चलना, जाना, इच्छा करना, चाहना, प्रकाशित होना, सूखना, हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना)। **मे =** मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **वचः =** वचन (वच् - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)। **हुवे =** आह्वान करते हैं, दान करते हैं, आदान-प्रदान करते हैं, तृप्ति करते हैं (हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)। **देवीम् =** देवियों को (दिव् = चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **अदितिम् =** अक्षय, अविनाशी को (अ - नहीं (उपसर्ग), अद् = खाना, दी = नष्ट होना)। **शूर-पुत्राम् =** शूर पुत्रों का, वीर पुत्रों का, पराक्रमी पुत्रों का (शूर - पराक्रमी होना, शूरवीर होना, वीरता दिखाना, पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)। **सजातानाम् =** सम्बन्धियों का (स - साथ, सहित, सज्, संज = सम्बन्धी होना, आलिंगन करना, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **मध्य-मेष्ठा =** मध्यमस्थ, मध्यम स्थित (मध्यम (सर्वनाम))। **यथा =** जिससे, जैसे, जिस प्रकार (अव्यय)। **असानि =** हो जाऊँ (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना) **॥ 2 ॥**

412. हुवे सोमम् सवितारम् नमोभिः विश्वान्,
आदित्यान् अहम् उत्तरत्वे।
अयम् अग्निः दीदयत् दीर्घम् एव,
सजातैः इद्धो अप्रतिब्रुवद्भिः ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - **हुवे =** आह्वान करते हैं, दान करते हैं, आदान-प्रदान करते हैं, तृप्ति करते हैं **सोमम् =** सृजन-ऐश्वर्य-अन्तकर्ता, ऐश्वर्यवान्, सृष्टिकर्ता को **सवितारम् =** सविता, सृष्टिकर्ता, ऐश्वर्यवान् को, उत्पन्न करने वाले का **नमोभिः =** बहुशः नमन द्वारा **विश्वान् =** सभी को **आदित्यान् =** आदित्यों को, अक्षय-अविनाशी को **अहम् =** मैं **उत्तरत्वे =** उत्तर

के लिए, उत्तर दिशा के लिए, तैरने-पार जाने के लिए **अयम् =** यह **अग्निः =** अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् **दीदयत् =** दिया **दीर्घम् =** दीर्घ को, विशाल को **एव =** ही **सजातैः =** सम्बन्धियों द्वारा, से **इद्धो =** प्राप्त, गति, ज्ञान, प्रकाश को धारण करने वाला **अप्रतिब्रुवद्भिः =** अप्रतिकूल वचनों द्वारा, अनुकूल वचनों द्वारा **॥ 3 ॥**

पदार्थ - हुवे = आह्वान करते हैं, दान करते हैं, आदान-प्रदान करते हैं, तृप्ति करते हैं (हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)। **सोमम् =** सृजन-ऐश्वर्य-अन्तकर्ता, ऐश्वर्यवान्, सृष्टिकर्ता को (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामथ्य, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना। सू = प्रेरणा देना। सो–स्य, सय - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना)। **सवितारम् =** सविता, सृष्टिकर्ता, ऐश्वर्यवान् को, उत्पन्न करने वाले का (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)। **नमोभिः =** बहुशः नमन द्वारा (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **विश्वान् =** सभी को (विश् = भीतर जाना, सभी तरह फैलना)। **आदित्यान् =** आदित्यों को, अक्षय-अविनाशी को (अ - नहीं, अद् - खाना, नष्ट करना, दी = क्षय होना, नष्ट होना)। **अहम् =** मैं (सर्वनाम)। **उत्तरत्वे =** उत्तर के लिए, उत्तर दिशा के लिए, तैरने-पार जाने के लिए (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, तृ, तृ = तैरना, पार जाना)। **अयम् =** यह (सर्वनाम)। **अग्निः =** अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **दीदयत् =** दिया (दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)। **दीर्घम् =** दीर्घ को, विशाल को (दृह - बढ़ना, वृद्धिगत होना)। **एव =** ही (अव्यय)। **सजातैः =** सम्बन्धियों द्वारा, से (स - साथ, सहित, सज्, संज = सम्बन्धी होना, आलिंगन करना, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **इद्धो =** प्राप्त, गति, ज्ञान, प्रकाश को धारण करने वाला (इ - जाना, जानना, पाना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)। **अप्रतिब्रुवद्भिः =** अप्रतिकूल वचनों द्वारा, अनुकूल वचनों द्वारा (अ - नहीं, प्रति - प्रतिकार, समान, समकक्ष, ब्रू - कहना, बोलना) **॥ 3 ॥**

413. इह इत् असाथ न परो गमाथ,
ईर्यो गोपाः पुष्टपतिः वः आ अजत्।
अस्मै कामाय उप कामिनीः,
विश्वे वो देवाः उपसंयन्तु ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - इह = इसमें, यहां, यह **इत् =** ही **असाथ =** रहो **न =** नहीं, समान, उपमार्थक **परो =** अन्य, पार, परे **गमाथ =** जाओ **ईर्यो =** प्रेरित, कम्पित, प्राप्त करने वाले **गोपाः =** रक्षक, गो के, शब्द करने वालों, मननशीलों, उपदेशकों के पालक-रक्षक **पुष्टपतिः =** पुष्ट ऐश्वर्यवान्, पुष्ट स्वामी **वः =** तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **अजत् =** गतिशील करें **अस्मै =** इसके लिए, हमको, हमारे लिए **कामाय =** काम के लिए, कामना के लिए, इच्छा के लिए **उप =** समीप **कामिनीः =** कामना युक्त, इच्छा युक्त **विश्वे =** सभी **वो =** तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **देवाः =** विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने **उपसंयन्तु =** भली-भाँति नियमन-नियन्त्रण, पोषण, उद्धार, प्राप्त करो **॥ 4 ॥**

पदार्थ - इह = इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **इत् =** ही (अव्यय)। **असाथ =** रहो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **न =** नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **परो =** अन्य, पार, परे (अव्यय)। **गमाथ =** जाओ (गम् = जाना, जानना, पाना)। **ईर्यो =** प्रेरित, कम्पित, प्राप्त करने वाले (ईर् = कम्पन करना, जाना, जानना, पाना, फेकना, प्रेरणा करना)। **गोपाः =** रक्षक, गो के, शब्द करने वालों, मननशीलों, उपदेशकों के पालक-रक्षक (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, गुप् = रक्षा करना, चमकना, बोलना, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **पुष्टपतिः =** पुष्ट ऐश्वर्यवान्, पुष्ट स्वामी (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, रक्षण करना, वृद्धि करना, विभाग करना, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **वः =** तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **अजत् =** गतिशील करें

(अज - जाना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना)। **अस्मै** = इसके लिए, हमको, हमारे लिए (सर्वनाम)। **कामाय** = काम के लिए, कामना के लिए, इच्छा के लिए (कम - चाहना, इच्छा करना)। **उप** = समीप (उपसर्ग)। **कामिनीः** = कामना युक्त, इच्छा युक्त (कम - चाहना, इच्छा करना)। **विश्वे** = सभी (सर्वनाम)। **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **उपसंयन्तु** = भली-भाँति नियमन-नियन्त्रण, पोषण, उद्धार, प्राप्त करो (उप - समीप, सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, यम् = रोकना, स्वाधीन रखना, आवरण करना, पोषण करना, नियमन करना, यन - उद्धार करना, या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, जानना) **॥ 4 ॥**

414. सम् वो मनांसि सम् व्रता,
सम् आकूतीः नमामसि।
अमी ये विव्रता स्थन,
तान् वः सम् नमयामसि ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ - **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **मनांसि** = मन **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **व्रता** = व्रत वाला **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **आकूतीः** = वाणी, शब्द **नमामसि** = नमन करता हूँ **अमी** = शब्द, गति, सेवा युक्त, अतुल्य, अहिंसक **ये** = जो **विव्रता** = विशेष व्रत, व्यवहार **स्थन** = स्थित हैं **तान्** = उनको **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **नमयामसि** = नमन करता हूँ **॥ 5 ॥**

पदार्थ - **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **मनांसि** = मन (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **व्रता** = व्रत वाला (वृत् = रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ = नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **आकूतीः** = वाणी, शब्द (आ = समन्तात्, सम्पूर्ण, कू - शब्द करना)। **नमामसि** = नमन करता हूँ (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **अमी** = शब्द, गति, सेवा युक्त, अतुल्य, अहिंसक (अम् = गति, शब्द, सेवा करना, रोग होना, अ - नहीं, मा = मापना, नापना, तौलना, मि - फेकना, स्थापना करना, रक्षा करना, मी - हिंसा करना, मारना)। **ये** = जो (सर्वनाम)। **विव्रता** = विशेष व्रत, व्यवहार (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग), वृत् - वर्तन करना, वर्ताव करना, रहना, होना, वरण करना, स्वीकार करना, हिंसा करना, सेवा करना, चमकना, बोलना)। **स्थन** = स्थित हैं (स्था- स्थित होना, ठहरना)। **तान्** = उनको (सर्वनाम)। **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **नमयामसि** = नमन करता हूँ (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना) **॥ 5 ॥**

415. अहम् गृभ्णामि मनसा मनांसि,
मम चित्तम् अनु चित्तेभिः आ इत।
मम वशेषु हृदयानि वः कृणोमि,
मम यातम् अनुवर्त्मानः आ इत ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ - **अहम्** = मैं **गृभ्णामि** = गृभ-युक्त करता हूँ **मनसा** = मन से, मन द्वारा **मनांसि** = मन **मम** = मेरा **चित्तम्** = चित्त या चेतना, ज्ञान **अनु** = पश्चात्, पीछे, अनुकूल **चित्तेभिः** = चित्तों या चेतनाओं द्वारा **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **इत** = पाये, गति, ज्ञान, प्रकाश प्राप्त किया **मम** = मेरा **वशेषु** = वशों पर, इच्छाओं में **हृदयानि** = हृदयों ने, हृदयों को **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **कृणोमि** = करता हूँ **मम** = मेरा

यातम् = प्राप्त, गत, गया हुआ **अनुवर्त्मानः** = अनुवर्तमान, अनुकूल वर्तमान **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **इत** = पाये, गति, ज्ञान, प्रकाश प्राप्त किया ॥ **6** ॥

पदार्थ - **अहम्** = मैं (सर्वनाम)। **गृभ्णामि** = गृभ-युक्त करता हूँ (गृह् - ग्रहण करना, लेना, स्वीकार करना, निवास करना, गृ = सींचना, गीला करना, घर्षण करना, जानना, समझना, खाना, निगलना, शब्द करना, गृभ्-गर्भ् - ग्रहण करना, लेना, अन्दर होना, अन्तःवास करना)। **मनसा** = मन से, मन द्वारा (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **मनांसि** = मन (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **मम** = मेरा (सर्वनाम)। **चित्तम्** = चित्त या चेतना, ज्ञान (चि - चुनना, एकत्र करना, चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, सम्यक् ज्ञान होना, स्मरण करना, शंका करना, सन्देह करना)। **अनु** = पश्चात्, पीछे, अनुकूल (उपसर्ग)। **चित्तेभिः** = चित्तों या चेतनाओं द्वारा (चि - चुनना, एकत्र करना, चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, सम्यक् ज्ञान होना, स्मरण करना, शंका करना, सन्देह करना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **इत** = पाये, गति, ज्ञान, प्रकाश प्राप्त किया (इ - जाना, जानना, पाना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)। **मम** = मेरा (सर्वनाम)। **वशेषु** = वशों पर, इच्छाओं में (वश् = इच्छा करना, चाहना, चमकना)। **हृदयानि** = हृदयों ने, हृदयों को (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)। **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **कृणोमि** = करता हूँ (कृ = करना)। **मम** = मेरा (सर्वनाम)। **यातम्** = प्राप्त, गत, गया हुआ (या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)। **अनुवर्त्मानः** = अनुवर्तमान, अनुकूल वर्तमान (अनु = अनुकूल, पश्चात्, वृत - वर्तमान होना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **इत** = पाये, गति, ज्ञान, प्रकाश प्राप्त किया (इ - जाना, जानना, पाना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना) ॥ **6** ॥

80. दुःखनाशन सूक्त - 9

416. कर्शफस्य विशफस्य,
द्यौः पिता पृथिवी माता।
यथा अभिचक्र देवाः,
तथा अप कृणुता पुनः ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - **कर्शफस्य** = कर्शफ का, शपथ, गति, ज्ञान का **विशफस्य** = वि-शफ का **द्यौः** = अग्रगामी, प्रकाशवान्, विद्वान्, द्यौ, प्रकाशयुक्त, अग्रगामी **पिता** = पिता, पालन करने वाला, पिता **पृथिवी** = पृथ्वी, विस्तृत भूमि, विस्तार **माता** = माता, मान करने वाला **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार **अभिचक्र** = अभिमुख किया, सभी ओर चक्रण किया **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने **तथा** = उसी प्रकार **अप** = दूर, नीचे, अपकार **कृणुता** = करो **पुनः** = फिर ॥ **1** ॥

पदार्थ - **कर्शफस्य** = कर्शफ का, शपथ, गति, ज्ञान का (कृ = करना, शप् = शपथ लेना, प्रतिज्ञा करना, शाप देना, निन्दा करना, शब - गति करना, जाना, जानना, पाना)। **विशफस्य** = वि-शफ का (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग), शप् = शपथ लेना, प्रतिज्ञा करना, शाप देना, निन्दा करना, शब - गति करना, जाना, जानना, पाना)। **द्यौः** = अग्रगामी, प्रकाशवान्, विद्वान्, द्यौ, प्रकाशयुक्त, अग्रगामी (द्युत् = प्रकाशित होना, द्यु = अभिगमन करना, आक्रमण करना, आगे जाना, समीप जाना, प्रकाश होना, जानना)। **पिता** = पिता, पालन करने वाला, पिता (पि - जाना, जानना, पाना, पा- पालन करना, रक्षा करना)। **पृथिवी** = पृथ्वी, विस्तृत भूमि, विस्तार (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)। **माता** = माता, मान करने वाला (मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना)। **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार (अव्यय)। **अभिचक्र** = अभिमुख किया, सभी ओर चक्रण किया (अभि - अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, कृ = करना, चकृ = चक्रण करना, गोलाकार घूमना)। **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव्

= तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **तथा =** उसी प्रकार (अव्यय)। **अप =** दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। **कृणुता =** करो (कृ - करना)। **पुनः =** फिर (अव्यय) **॥ 1 ॥**

417. अश्रेष्माणो अधारयन्,
तथा तत् मनुना कृतम्।
कृणोमि वध्रि विष्कन्धम्,
मुष्क-आबर्हो गवाम् इव ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - **अश्रेष्माणो =** श्रीहीन, श्रेयहीन, अव्यापक, आश्रयहीन **अधारयन् =** धारण किया **तथा =** उसी प्रकार **तत् =** वह, उस को **मनुना =** मनु द्वारा, विचार द्वारा, मनन द्वारा **कृतम् =** कृतित्व, किया हुआ **कृणोमि =** करता हूँ **वध्रि =** वध करता हूँ **विष्कन्धम् =** विष्कन्ध को **मुष्क-आबर्हो =** मुष्क-आबर्ह, सम्यक् गति-वृद्धिशील **गवाम् =** गवा को, गौ को **इव =** समान, की भाँति, के समान **॥ 2 ॥**

पदार्थ - **अश्रेष्माणो =** श्रीहीन, श्रेयहीन, अव्यापक, आश्रयहीन (अ = नहीं, श्री = सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना)। **अधारयन् =** धारण किया (अ - भूतकालिक उपसर्ग, धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)। **तथा =** उसी प्रकार (अव्यय)। **तत् =** वह, उस को (सर्वनाम)। **मनुना =** मनु द्वारा, विचार द्वारा, मनन द्वारा (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **कृतम् =** कृतित्व, किया हुआ (कृ = करना)। **कृणोमि =** करता हूँ (कृ = करना)। **वध्रि =** वध करता हूँ (वध्-हन् = मारना)। **विष्कन्धम् =** विष्कन्ध को (विष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना, व्यापना, फैलना, प्रसृत होना, वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग), स्कन्द = जाना, सूखना)। **मुष्क-आबर्हो =** मुष्क-आबर्ह, सम्यक् गति-वृद्धिशील (मुष् = चुराना, चोरी करना, मुष्क = जाना, घर्षण करना, आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, बर्ह् - श्रेष्ठ होना, प्रधान होना, प्रयास करना, उद्यम-व्यवसाय करना, खेलना, बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **गवाम् =** गवा को, गौ को (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, गम् = जाना)। **इव =** समान, की भाँति, के समान (अव्यय) **॥ 2 ॥**

418. पिशङ्गे सूत्रे खृगलम्,
तत् आ बध्नन्ति वेधसः।
श्रवस्युम् शुष्मम् काबवम्,
वध्रिम् कृण्वन्तु बन्धुरः ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - **पिशङ्गे =** पिशङ्ग में, प्रकाश, विखण्डन में **सूत्रे =** सूत्र में, सूत में, ऐश्वर्यवान में **खृगलम् =** खृगल को **तत् =** वह, उस को **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **बध्नन्ति =** बाँधते हैं **वेधसः =** विद्वान्, विधान करने वाले **श्रवस्युम् =** श्रवस्यु को, श्रवणशील, प्रगतिशील को **शुष्मम् =** शुष्म को, सुखाने वाले को **काबवम् =** काबव को, प्रशंसा, स्तुति, वर्ण को **वध्रिम् =** वध करे, वध को **कृण्वन्तु =** करो **बन्धुरः =** बन्धुर, बन्धन करने वाला, बाँधने वाला **॥ 3 ॥**

पदार्थ - **पिशङ्गे =** पिशङ्ग में, प्रकाश, विखण्डन में (पिश् - जाना, प्रकाश होना, चीरना, टुकड़े करना, जाना, बोलना)। **सूत्रे =** सूत्र में, सूत में, ऐश्वर्यवान में (सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना)। **खृगलम् =** खृगल को (खृ = जाना, प्रकाश करना)। **तत् =** वह, उस को (सर्वनाम)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **बध्नन्ति =** बाँधते हैं (बध्-बन्ध् = बाँधना, बद्ध करना, हिंसा करना, मारना, वध करना, घृणा करना)। **वेधसः =** विद्वान्, विधान करने वाले (विध् = विधान करना, वेधना, वेध करना, ताडना करना)। **श्रवस्युम् =** श्रवस्यु को, श्रवणशील, प्रगतिशील को (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)। **शुष्मम् =** शुष्म को, सुखाने वाले को (शुष् - सुखाना, बल)। **काबवम् =** काबव को, प्रशंसा, स्तुति, वर्ण को (कबृ = शृङ्गार करना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, रंग देना, रंगना)। **वध्रिम् =** वध करे, वध को (वध्-हन् = मारना)। **कृण्वन्तु =** करो (कृ = करना)। **बन्धुरः =** बन्धुर, बन्धन करने वाला, बाँधने वाला

(बध्-बन्ध् = बाँधना, बद्ध करना, हिंसा करना, मारना, वध करना, घृणा करना) ॥ 3 ॥

419. येना श्रवस्यवः चरथ,
देवाः इव असुर-मायया।
शुनाम् कपिः इव दूषणो,
बन्धुरा काबवस्य च ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - **येना** = जिस **श्रवस्यवः** = विद्वान्, श्रवणशील, प्रगतिशील **चरथ** = विचरण करें **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने **इव** = समान, की भाँति, के समान **असुर-मायया** = असुर-माया द्वारा, प्रकाश-माया, ऐश्वर्यहीन-माया द्वारा **शुनाम्** = प्रगतिशीलों, विद्वानों को **कपिः** = कम्पन करने वाले, कम्पित करने वाले **इव** = समान, की भाँति, के समान **दूषणो** = दूषन, गतिशील, विद्वान्, परिश्रमी, दूषक **बन्धुरा** = बन्धुर, बन्धन करने वाला, बाँधने वाला **काबवस्य** = काबव का, प्रशंसा, स्तुति, वर्ण का **च** = और ॥ 4 ॥

पदार्थ - **येना** = जिस (सर्वनाम)। **श्रवस्यवः** = विद्वान्, श्रवणशील, प्रगतिशील (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)। **चरथ** = विचरण करें (चर -जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)। **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **इव** = समान, की भाँति, के समान (अव्यय)। **असुर-मायया** = असुर-माया द्वारा, प्रकाश-माया, ऐश्वर्यहीन-माया द्वारा (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना, मय् - जाना, क्लिष्ट कार्य करना, मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना)। **शुनाम्** = प्रगतिशीलों, विद्वानों को (शुन = जाना, जानना, पाना)। **कपिः** = कम्पन करने वाले, कम्पित करने वाले (कप्-कम्प् = कम्पन करना, चलना, सहना)। **इव** = समान, की भाँति, के समान (अव्यय)। **दूषणो** = दूषन, गतिशील, विद्वान्, परिश्रमी, दूषक (दू = जाना, जानना, पाना, सुगन्ध लेना, श्रम करना, जलना, तप्त होना, दुःख होना, दुःख देना, दूष् = दूषित होना, दूषित करना)। **बन्धुरा** = बन्धुर, बन्धन करने वाला, बाँधने वाला (बध्-बन्ध् = बाँधना, बद्ध करना, हिंसा करना, मारना, वध करना, घृणा करना)। **काबवस्य** = काबव का, प्रशंसा, स्तुति, वर्ण का (कबृ = शृङ्गार करना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, रंग देना, रंगना)। **च** = और (अव्यय) ॥ 4 ॥

420. दुष्ट्यै हि त्वा भत्स्यामि,
दूषयिष्यामि काबवम्।
उदाशवो रथा इव,
शपथेभिः सरिष्यथ ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ - **दुष्ट्यै** = दुष्टों के लिए **हि** = ही, निश्चय **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **भत्स्यामि** = प्रकाश करता हूँ, निन्दा करता हूँ **दूषयिष्यामि** = गतिशील, विद्वान्, परिश्रम करता हूँ **काबवम्** = काबव को, प्रशंसा, स्तुति, वर्ण को **उदाशवो** = उत्कृष्ट आशुकारी, तीव्रगामी **रथा** = रथ **इव** = समान, की भाँति, के समान **शपथेभिः** = शपथों द्वारा **सरिष्यथ** = प्रवाहमान करें, ले जायें ॥ 5 ॥

पदार्थ - **दुष्ट्यै** = दुष्टों के लिए (दुः = बुरा, अनुचित, कठिन)। **हि** = ही, निश्चय (अव्यय)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **भत्स्यामि** = प्रकाश करता हूँ, निन्दा करता हूँ (भस् = चमकना, दोष लगाना, निन्दा करना)। **दूषयिष्यामि** = गतिशील, विद्वान्, परिश्रम करता हूँ (दू = जाना, जानना, पाना, सुगन्ध लेना, श्रम करना, जलना, तप्त होना, दुःख होना, दुःख देना, दूष् = दूषित होना, दूषित करना)। **काबवम्** = काबव को, प्रशंसा, स्तुति, वर्ण को (कबृ = शृङ्गार करना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, रंग देना, रंगना)। **उदाशवो** = उत्कृष्ट आशुकारी, तीव्रगामी (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर,

उच्च, आ- समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, अश् = तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना, व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, शव् - जाना, जानना, पाना, विकार होना)। **रथा =** रथ (रम - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना)। **इव =** समान, की भाँति, के समान (अव्यय)। **शपथेभिः =** शपथों द्वारा (शप् = शपथ लेना, प्रतिज्ञा करना, शाप देना, निन्दा करना)। **सरिष्यथ =** प्रवाहमान करें, ले जायें (सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना, स - साथ, सहित, रस् - स्वाद लेना, प्रीति करना, शब्द करना) **॥ 5 ॥**

421. एकशतम् विष्कन्धानि,
विष्ठिता पृथिवीम् अनु।
तेषाम् त्वाम् अग्रे उत् जहरुः,
मणिम् विष्कन्ध-दूषणम् ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ - एकशतम् = एकशत को, एक सौ को, विचारशील सौ को **विष्कन्धानि =** विष्कन्ध में **विष्ठिता =** विस्थित **पृथिवीम् =** पृथ्वी, विस्तृत भूमि, विस्तार को **अनु =** पश्चात्, पीछे, अनुकूल **तेषाम् =** उनका **त्वाम् =** तुमको, तुम्हारी **अग्रे =** अग्र, आगे, पहले **उत् =** भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च **जहरुः =** हनन, त्याग करने वाले **मणिम् =** मणि, शब्द को **विष्कन्ध-दूषणम् =** विष्कन्ध-दूषण को **॥ 6 ॥**

पदार्थ - एकशतम् = एकशत को, एक सौ को, विचारशील सौ को (एक = एक संख्या, एक - विचार करना, शत - सौ)। **विष्कन्धानि =** विष्कन्ध में (विष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना, व्यापना, फैलना, प्रसृत होना, वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग), स्कन्द = जाना, सूखना)। **विष्ठिता =** विस्थित (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग), स्था - ठहरना, स्थिर होना)। **पृथिवीम् =** पृथ्वी, विस्तृत भूमि, विस्तार को (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)। **अनु =** पश्चात्, पीछे, अनुकूल (उपसर्ग)। **तेषाम् =** उनका (सर्वनाम)। **त्वाम् =** तुमको, तुम्हारी (सर्वनाम)। **अग्रे =** अग्र, आगे, पहले (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **उत् =** भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)। **जहरुः =** हनन, त्याग करने वाले (जह - हिंसा करना, चलना, फैलना, जहा – परित्याग करना, छोड़ना)। **मणिम् =** मणि, शब्द को (मण् - शब्द करना)। **विष्कन्ध-दूषणम् =** विष्कन्ध-दूषण को (विष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना, व्यापना, फैलना, प्रसृत होना, वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग), स्कन्द = जाना, सूखना, दू = जाना, जानना, पाना, सुगन्ध लेना, श्रम करना, जलना, तप्त होना, दुःख होना, दुःख देना, दूष् = दूषित होना, दूषित करना) **॥ 6 ॥**

81. रायस्पोषप्राप्ति सूक्त - 10

422. प्रथमा ह वि उवास,
सा धेनुः अभवत् यमे।
सा नः पयस्वती दुहाम्,
उत्तराम्-उत्तराम् समाम् ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - प्रथमा = प्रथम **ह** = ही, निश्चय ही **वि =** विशेष, विना, विलोम **उवास =** उषा **सा =** वह **धेनुः =** धेनु, प्रिय, पालन करने वाले **अभवत् =** हुआ **यमे =** यम में **सा =** वह **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा **पयस्वती =** विस्तृत, विस्तारयुक्त, गतिशील, प्रवाहमान **दुहाम् =** दुहा को **उत्तराम्-उत्तराम् =** उत्तर-उत्तर को **समाम् =** समत्व **॥ 1 ॥**

पदार्थ - प्रथमा = प्रथम (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)। **ह** = ही, निश्चय ही (अव्यय)। **वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **उवास =** उषा (उषस् = प्रभात होना, उष - हिंसा करना, जलना, जलाना, ताप देना)। **सा =** वह (सर्वनाम)। **धेनुः =** धेनु, प्रिय, पालन करने वाले (धिन - प्रेम करना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना, धी - बुद्धि होना, धे

- पालना, पीना)। **अभवत्** = हुआ (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना)। **यमे** = यम में (यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)। **सा** = वह (सर्वनाम)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **पयस्वती** = विस्तृत, विस्तारयुक्त, गतिशील, प्रवाहमान (पय् = जाना, जानना, पाना, बहना, पयस् = विस्तार करना, फैलाना)। **दुहाम्** = दुहा को (दुह - दूध निकालना, दोहना, रिक्त करना, लेना, खींचना)। **उत्तराम्-उत्तराम्** = उत्तर-उत्तर को (सर्वनाम)। **समाम्** = समत्व (सम - सब (सर्वनाम)। सम = समान होना, सम विभाग करना, न घबराना, परिणाम होना) ॥ **1** ॥

423. याम् देवाः प्रति-नन्दन्ति,
रात्रिम् धेनुम् उप-आयतीम्।
संवत्सरस्य या पत्नी,
सा नो अस्तु सुमङ्गली ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - **याम्** = जिसको **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने **प्रति-नन्दन्ति** = आनन्द प्राप्त करते हैं, प्रशंसा करते हैं **रात्रिम्** = राति को, अनुदान को **धेनुम्** = धेनु को, प्रिय को, पालन करने वाले को **उप-आयतीम्** = समीप प्राप्तकर्ता को, समीप शासक को, समीप शब्दकर्ता को **संवत्सरस्य** = सम्वत्सर के लिए **या** = जो **पत्नी** = ऐश्वर्यवती **सा** = वह **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा **अस्तु** = हो **सुमङ्गली** = सुमङ्गल, प्रगतिशील युक्त ॥ **2** ॥

पदार्थ - **याम्** = जिसको (सर्वनाम)। **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **प्रति-नन्दन्ति** = आनन्द प्राप्त करते हैं, प्रशंसा करते हैं (प्रति = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग), नन्द = आनन्द पाना, प्रसन्न होना, वृद्धि होना)। **रात्रिम्** = राति को, अनुदान को (रा - देना, मिल जाना)। **धेनुम्** = धेनु को, प्रिय को, पालन करने वाले को (धिन - प्रेम करना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना, धी - बुद्धि होना, धे - पालना, पीना)। **उप-आयतीम्** = समीप प्राप्तकर्ता को, समीप शासक को, समीप शब्दकर्ता को (उप = समीप (उपसर्ग), आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग), अय - गति करना, चलना, जाना, आय - शब्द करना, शासन करना, यत - यत्न करना, उद्योग करना, निश्चय करना, ठहराना)। **संवत्सरस्य** = सम्वत्सर के लिए (सम् - सम्यक्, सम् - न घबराना, एक समान रहना, वद् - बोलना, कहना, सृ - चलना, सरकना)। **या** = जो (सर्वनाम)। **पत्नी** = ऐश्वर्यवती (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **सा** = वह (सर्वनाम)। **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **अस्तु** = हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **सुमङ्गली** = सुमङ्गल, प्रगतिशील युक्त (सु = सुन्दर, अच्छा (उपसर्ग), मङ्ग - जाना) ॥ **2** ॥

424. संवत्सरस्य प्रतिमाम्,
याम् त्वा रात्रि उप-आस्महे।
सा नः आयुष्मतीम् प्रजाम्,
रायः पोषेण सम् सृज ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - **संवत्सरस्य** = सम्वत्सर का **प्रतिमाम्** = प्रतिमा को, प्रति-मान **याम्** = जिसको **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **रात्रि** = रात्रि, अनुदान **उप-आस्महे** = समीप होते हैं, समीप बैठते हैं, समीप जाते हैं **सा** = वह **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा **आयुष्मतीम्** = आयुष्यमती को **प्रजाम्** = प्रजा को **रायः** = गति, विद्या, वाणी **पोषेण** = पुष्टि द्वारा, पुष्टिकर्ता द्वारा **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **सृज** = सृजन करो ॥ **3** ॥

पदार्थ - **संवत्सरस्य** = सम्वत्सर का (सम् - सम्यक्, सम् - न घबराना, एक समान रहना, वद् - बोलना, कहना, सृ - चलना, सरकना)। **प्रतिमाम्** = प्रतिमा को, प्रति-मान (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में, मा - मापना, तुलना करना)। **याम्** = जिसको (सर्वनाम)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **रात्रि** = रात्रि, अनुदान (रा - देना, मिल

जाना)। **उप-आस्महे** = समीप होते हैं, समीप बैठते हैं, समीप जाते हैं (उप = समीप (उपसर्ग), अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, आस् - बैठना, उपस्थित होना, विद्यमान होना, जीवित रहना, होना)। **सा** = वह (सर्वनाम)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **आयुष्मतीम्** = आयुष्यमती को (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अय = जाना, जानना, पाना, गति करना, आय - शब्द करना, शासन करना, यु = मिलना, अलग करना)। **प्रजाम्** = प्रजा को (प्र - बहुत, प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **रायः** = गति, विद्या, वाणी (रा-देना, लेना, ग्रहण करना, रय् = जाना, जानना, पाना, रै = शब्द करना)। **पोषेण** = पुष्टि द्वारा, पुष्टिकर्ता द्वारा (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, पूष - बढ़ना, अधिक होना, पोषण करना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **सृज** = सृजन करो (सृज् - छोड़ना, त्याग करना, विविध रूप से उत्पन्न करना, रचना करना) **॥ 3 ॥**

425. इयम् एव सा या प्रथमा वि-औच्छत्,
आसु इतरासु चरति प्र-विष्टा।
महान्तो अस्याम् महिमानो अन्तः,
वधूः जिगाय नवगत् जनित्री ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - **इयम्** = यह, इसको **एव** = ही **सा** = वह **या** = जो **प्रथमा** = प्रथम **वि-औच्छत्** = विशेष पूर्ण करता है **आसु** = उपस्थित, विद्यमान **इतरासु** = अन्यों में, अन्यों पर **चरति** = विचरण करता है **प्र-विष्टा** = प्रविष्ट **महान्तो** = महानता युक्त **अस्याम्** = इसमें **महिमानो** = महिमावान्, महत्व से युक्त **अन्तः** = बीच में, भीतर **वधूः** = वधू **जिगाय** = स्तुति करता है, प्रगति करता है **नवगत्** = नव-वाणी, नव-गति **जनित्री** = उत्पादक, उत्पन्न कर्ता **॥ 4 ॥**

पदार्थ - **इयम्** = यह, इसको (सर्वनाम)। **एव** = ही (अव्यय)। **सा** = वह (सर्वनाम)। **या** = जो (सर्वनाम)। **प्रथमा** = प्रथम (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)। **वि-औच्छत्** = विशेष पूर्ण करता है (वि - विशेष, उच्छ = पूरा करना, समाप्त करना, छोड़ना, बाँधना)। **आसु** = उपस्थित, विद्यमान (अस् - होना, आस् - बैठना, उपस्थित होना, विद्यमान होना, जीवित रहना)। **इतरासु** = अन्यों में, अन्यों पर (सर्वनाम, अव्यय)। **चरति** = विचरण करता है (चर -जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)। **प्र-विष्टा** = प्रविष्ट (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, विश = घुसना, भीतर जाना, धंसना, चारो ओर फैलना)। **महान्तो** = महानता युक्त (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना)। **अस्याम्** = इसमें (सर्वनाम)। **महिमानो** = महिमावान्, महत्व से युक्त (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना)। **अन्तः** = बीच में, भीतर (उपसर्ग, सर्वनाम)। **वधूः** = वधू (वध्-हन् = मारना, प्राप्त करना, जाना, किसी प्रकार समाप्त करना)। **जिगाय** = स्तुति करता है, प्रगति करता है (गा-जिगा - स्तुति करना, प्रशंसा करना, जाना, जानना, पाना)। **नवगत्** = नव-वाणी, नव-गति (नव = नौ (संख्या), गु - अस्पष्ट बोलना, शब्द करना, मनन करना, गम्-गच्छ - जाना, इष्टार्थ सिद्ध होना)। **जनित्री** = उत्पादक, उत्पन्न कर्ता (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना) **॥ 4 ॥**

426. वानस्पत्या ग्रावाणो घोषम् अक्रत,
हविः कृण्वन्तः परिवत्सरीणम्।
एक-अष्टके सुप्रजसः सुवीरा,
वयम् स्याम पतयो रयीणाम् ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ - **वानस्पत्या** = वनस्पतिजन्य **ग्रावाणो** = सिञ्चन, बोध, ज्ञान, शब्द करने वाले **घोषम्** = घोष को **अक्रत** = किया, नहीं किया हुआ **हविः** = हवि, दान, देय, तर्पण **कृण्वन्तः** = करने वाले **परिवत्सरीणम्** = परिवत्सर युक्त को, परिवत् चलने वाले को, परि के समान चलने वाले को, पूर्ण करने वाले के समान चलने वाले को **एक-अष्टके** = हे एक-व्याप्त, हे एक-दीप्तिमान् **सुप्रजसः** = उत्तम सन्तान युक्त **सुवीरा** = उत्तम वीर, सुवीर **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग **स्याम** = हों **पतयो** = ऐश्वर्यवान् स्वामी **रयीणाम्** = विद्या, गतिशीलता का **॥ 5 ॥**

पदार्थ - वानस्पत्या = वनस्पतिजन्य (वन - शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, आपद्ग्रस्त होना, अलग करना, मिलाना, स्मरण करना, बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, याचना करना, मांगना, दुःख देना, उद्योग-धन्धा करना, पत् = जाना, उड़ना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **ग्रावाणो =** सिञ्चन, बोध, ज्ञान, शब्द करने वाले (गृ = सींचना, समझना, जानना,खाना, निगलना, शब्द करना, बोलना, समझाना, बताना, गीला करना, घर्षण करना)। **घोषम् =** घोष को (घुष् - घोषणा करना, शब्द करना, प्रशंसा करना)। **अक्रत =** किया, नहीं किया हुआ (अ = नहीं, उपसर्ग, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, कृ = करना)। **हविः =** हवि, दान, देय, तर्पण (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **कृण्वन्तः =** करने वाले (कृ = करना)। **परिवत्सरीणम् =** परिवत्सर युक्त को, परिवत् चलने वाले को, परि के समान चलने वाले को, पूर्ण करने वाले के समान चलने वाले को (परि = सभी तरफ, उपसर्ग, पृ - भरना, पूर्ण करना, वद् = कहना, बोलना, सृ - चलना, सरकना)। **एक-अष्टके =** हे एक-व्याप्त, हे एक-दीप्तिमान् (एक = एक (संख्या), अष् - ग्रहण करना, जाना, जानना, पाना, चमकना, प्रकाश करना, अश् = भोजन करना, अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना)। **सुप्रजसः =** उत्तम सन्तान युक्त (सु - सुन्दर, अच्छा, जन् = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **सुवीरा =** उत्तम वीर, सुवीर (सु - अच्छा, सुन्दर, वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)। **वयम् =** हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **स्याम =** हों (अस् - होना)। **पतयो =** ऐश्वर्यवान् स्वामी (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **रयीणाम् =** विद्या, गतिशीलता का (रय्-रि, री - चलना, जाना, जानना, पाना, री-रै - शब्द करना) ॥ 5 ॥

427. इडायाः पदम् घृतवत् सरीसृपम्,
जातवेदः प्रति हव्या गृभाय।
ये ग्राम्याः पशवो विश्वरूपाः,
तेषाम् सप्तानाम् मयि रन्तिः अस्तु ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ - इडायाः = इडा का, स्तुतियोग्य का, स्तुतिकर्ता का **पदम् =** पद को **घृतवत् =** प्रकाशमान **सरीसृपम् =** सरीसृप को **जातवेदः =** विद्वान्, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले **प्रति =** प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में **हव्या =** दान योग्य **गृभाय =** गृभ के लिए, ग्रहण करने वाले, वाणी, बोध, अभिसिंचन करने वाले के लिए **ये =** जो **ग्राम्याः =** ग्रामों वाले **पशवो =** पशु, बन्धन, दृष्टा, देखने वाला **विश्वरूपाः =** विश्वरूप **तेषाम् =** उनका **सप्तानाम् =** सप्तानों का, सात प्रकार का **मयि =** मुझमें **रन्तिः =** रन्ति, रमण, प्रसन्न **अस्तु =** हो ॥ 6 ॥

पदार्थ - इडायाः = इडा का, स्तुतियोग्य का, स्तुतिकर्ता का (इड - धारण करना, घर्षण करना, छेदन करना, ईड् = स्तुति करना)। **पदम् =** पद को (पद् - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना)। **घृतवत् =** प्रकाशमान (घृ - चमकना, प्रकाश करना, सिञ्चन करना, गीला करना, टपकना, बूंद बूंद गिरना, क्षरित होना, क्षरण होना, झरना, घर्षण होना, नाश होना, शब्द होना)। **सरीसृपम् =** सरीसृप को (सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना, स - साथ, सहित, रस् - स्वाद लेना, प्रीति करना, शब्द करना)। **जातवेदः =** विद्वान्, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले (जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जा-ज्ञा - जानना, विद् - जानना)। **प्रति =** प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग)। **हव्या =** दान योग्य (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **गृभाय =** गृभ के लिए, ग्रहण करने वाले, वाणी, बोध, अभिसिंचन करने वाले के लिए (गृह् - ग्रहण करना, लेना, स्वीकार करना, निवास करना, गृ = सींचना, गीला करना, घर्षण करना, जानना, समझना, खाना, निगलना, शब्द करना, गृभ्-गर्भ् - ग्रहण करना, लेना, अन्दर होना, अन्तःवास करना)। **ये =** जो (सर्वनाम)। **ग्राम्याः =** ग्रामों वाले (ग्राम - बुलाना, बुद्धिपूर्वक कहना, एकत्र होना)। **पशवो =** पशु, बन्धन, दृष्टा, देखने वाला (पश् - देखना, पश - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना)। **विश्वरूपाः =** विश्वरूप (विश्व - सब कुछ, रूप - आकार बनाना, रचना करना)। **तेषाम् =** उनका (सर्वनाम)। **सप्तानाम् =** सप्तानों का, सात प्रकार का (सप्त - सात, सप - पूर्ण होना, पूर्ण ज्ञान

होना, पूरा समझना, पूर्णतया जानना, संसक्त होना, संलग्न होना, मिलाप होना)। **मयि =** मुझमें (सर्वनाम)। **रन्तिः =** रन्ति, रमण, प्रसन्न (रन् = अलग करना, मिलाना। रम् = रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना)। **अस्तु =** हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना) **॥ 6 ॥**

428. आ मा पुष्टे च पोषे च,
रात्रि देवानाम् सुमतौ स्याम।
पूर्णा दर्वे परा पत,
सुपूर्णा पुनः आ पत।
सर्वान् यज्ञान् सम् भुञ्जती,
इषम् ऊर्जम् नः आ भर ॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ : आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **मा =** नहीं, मत **पुष्टे =** पुष्ट में, पोषित में **च =** और **पोषे =** पोषण में, पोषण करने वाले में **च =** और **रात्रि =** रात्रि **देवानाम् =** विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों का **सुमतौ =** सुमति में, सुबुद्धि में **स्याम =** हों **पूर्णा** = पूर्ण **दर्वे** = विद्वान् **परा** = परम्, परे, पीछे, विपरीत **पत्** = ऐश्वर्य हो **सुपूर्णा** = अच्छी तरह पूर्ण **पुनः** = फिर। **आपत** = ऐश्वर्य होकर आओ **सर्वान् =** सभी को **यज्ञान् =** यज्ञों को, यजनों को **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति **भुञ्जती =** भक्षण, भोग, पालन करती हुई **इषम्** = इच्छा, प्रगति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि को **ऊर्जम् =** ऊर्जा को **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **भर =** पोषण करो, भरो, पूर्ण करो **॥ 7 ॥**

भावार्थ : जो ऐश्वर्यवान् हैं, वे विद्वान् बनें। जो विद्वान् हैं, वे ऐश्वर्यवान् बनें। विद्या और ऐश्वर्य से युक्त लोग बार-बार आयें। दया, प्रीति, सरलता, युक्त लोगों के समान विद्या, इच्छा, ऊर्जा का आदान-प्रदान करते रहें। अच्छे समाज की सुन्दर भावना है **॥ 7 ॥**

पदार्थ : आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **मा =** नहीं, मत (अव्यय)। **पुष्टे =** पुष्ट में, पोषित में (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, रक्षण करना, वृद्धि करना, विभाग करना)। **च =** और (अव्यय)। **पोषे =** पोषण में, पोषण करने वाले में (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, पूष - बढ़ना, अधिक होना, पोषण करना)। **च =** और (अव्यय)। **रात्रि =** रात्रि (रा - देना, मिल जाना)। **देवानाम् =** विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों का (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **सुमतौ =** सुमति में, सुबुद्धि में (सु - सुन्दर, अच्छा, सु - उत्पन्न करना, पैदा करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, मन - मनन करना, जानना, समझना, स्वीकार करना, अभ्यास करना, स्थिर होना, गर्व होना)। **स्याम =** हों (अस् - होना)। **पूर्णा** = पूर्ण (पृ - पूर्ण करना, भरना)। **दर्वे** = विद्वान् (दर्व् = जाना, जानना)। **परा =** परम्, परे, पीछे, विपरीत (अव्यय)। **पत्** = ऐश्वर्य हो (पत् = जाना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **सुपूर्णा** = अच्छी तरह पूर्ण (पृ - पूर्ण करना, भरना)। **पुनः** = फिर। **आपत** = ऐश्वर्य होकर आओ (आ + पत् = जाना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **सर्वान् =** सभी को (सर्वनाम)। **यज्ञान् =** यज्ञों को, यजनों को (यज् = देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **भुञ्जती =** भक्षण, भोग, पालन करती हुई (भुज - संरक्षण करना, पालन करना, खाना, भक्षण करना)। **इषम्** = इच्छा, प्रगति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि को (इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना)। **ऊर्जम् =** ऊर्जा को (ऊर्ज् = प्राण होना, चेतन होना, बल होना, ऊर्जा होना, शक्तिमान होना, पराक्रमी होना, चलना, जाना)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **भर =** पोषण करो, भरो, पूर्ण करो (भृ = धारण-पोषण करना, पूर्ण करना) **॥ 7 ॥**

429. आ अयम् अगन् संवत्सरः,
पतिः एक-अष्टके तव।
सा नः आयुष्मतीम् प्रजाम्,

रायः पोषेण सम् सृज ॥ 8 ॥

मन्त्रार्थ - **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **अयम्** = यह **अगन्** = गये, गतिमान **संवत्सरः** = सम्वत्सर **पतिः** = ऐश्वर्यवान्, स्वामी **एक-अष्टके** = हे एक-व्याप्त, हे एक-दीप्तिमान् **तव** = तुम्हारा **सा** = वह **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा **आयुष्मतीम्** = आयुष्यमती को **प्रजाम्** = प्रजा को **रायः** = गति, विद्या, वाणी **पोषेण** = पुष्टि द्वारा, पुष्टिकर्ता द्वारा **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **सृज** = सृजन करो ॥ 8 ॥

पदार्थ - **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **अयम्** = यह (सर्वनाम)। **अगन्** = गये, गतिमान (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, गम् - जाना, अग् = जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, गति करना, घूमना, कुटिल गति करना, टेढ़ा जाना, लेना, ग्रहण करना)। **संवत्सरः** = सम्वत्सर (सम् - सम्यक्, सम् - न घबराना, एक समान रहना, वद् - बोलना, कहना, सृ - चलना, सरकना)। **पतिः** = ऐश्वर्यवान्, स्वामी (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **एक-अष्टके** = हे एक-व्याप्त, हे एक-दीप्तिमान् (एक = एक (संख्या), अष् - ग्रहण करना, जाना, जानना, पाना, चमकना, प्रकाश करना, अश् = भोजन करना, अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना)। **तव** = तुम्हारा (सर्वनाम)। **सा** = वह (सर्वनाम)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **आयुष्मतीम्** = आयुष्यमती को (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अय = जाना, जानना, पाना, गति करना, आय - शब्द करना, शासन करना, यु = मिलना, अलग करना)। **प्रजाम्** = प्रजा को (प्र - बहुत, प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **रायः** = गति, विद्या, वाणी (रा-देना, लेना, ग्रहण करना, रय् = जाना, जानना, पाना, रै = शब्द करना)। **पोषेण** = पुष्टि द्वारा, पुष्टिकर्ता द्वारा (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, पूष - बढ़ना, अधिक होना, पोषण करना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **सृज** = सृजन करो (सृज् - छोड़ना, त्याग करना, विविध रूप से उत्पन्न करना, रचना करना) ॥ 8 ॥

430. ऋतून् यजे ऋतुपतीन्,
आर्तवान् उत हायनान्।
समाः संवत्सरान् मासान्,
भूतस्य पतये यजे ॥ 9 ॥

मन्त्रार्थ - **ऋतून्** = ऋतुओं को **यजे** = यजन करता है **ऋतुपतीन्** = ऋतु-पतियों को, ऋतु ऐश्वर्यवानों को **आर्तवान्** = सम्यक् वचन, वाणी, गति, प्राप्ति युक्त **उत** = ही, भी, ओर **हायनान्** = पूजा, सेवा, शब्द, त्याग करने वालों को **समाः** = सम विभाग, सम्वत्सर, शरद्, वर्ष **संवत्सरान्** = सम्वत्सरों को **मासान्** = मासों को, रूपान्तरण करने, मापन करने वाले को **भूतस्य** = भूत का, उत्पन्न हुए का **पतये** = पति के लिए, ऐश्वर्य के लिए **यजे** = यजन करता है ॥ 9 ॥

पदार्थ - **ऋतून्** = ऋतुओं को (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)। **यजे** = यजन करता है (यज - देवपूजा करना, अर्पण करना, संगति करना, दान करना)। **ऋतुपतीन्** = ऋतु-पतियों को, ऋतु ऐश्वर्यवानों को (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **आर्तवान्** = सम्यक् वचन, वाणी, गति, प्राप्ति युक्त (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अर् - ऋ - गति, ज्ञान, प्राप्ति करना, फैलाना, शब्द करना, ध्वनि करना, महत्व प्रदर्शन करना, हिंसा करना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **हायनान्** = पूजा, सेवा, शब्द, त्याग करने वालों को (हय - जाना, पूजा करना, सेवा करना, शब्द करना, हा - त्याग करना, चलना, जाना)। **समाः** = सम विभाग, सम्वत्सर, शरद्, वर्ष, (सम - सब (सर्वनाम)। सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, सम = न घबराना, एक समान रहना, अन् - प्राण होना, जीवन होना, श्वास लेना)। **संवत्सरान्** = सम्वत्सरों को (सम् - सम्यक्, सम् - न घबराना, एक समान रहना, वद् - बोलना, कहना, सृ - चलना, सरकना)। **मासान्** = मासों को, रूपान्तरण करने, मापन करने वाले को (मस् = रूपान्तरण करना, मापन करना, मापना)। **भूतस्य** = भूत का, उत्पन्न हुए का (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **पतये** = पति के लिए, ऐश्वर्य के लिए (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **यजे**

= यजन करता है (यज - देवपूजा करना, अर्पण करना, संगति करना, दान करना) ॥ 9 ॥

431. ऋतुभ्यः त्वा आर्तवेभ्यो,
मात्-भ्यः संवत्सरेभ्यः।
धात्रे विधात्रे सम्-ऋधे,
भूतस्य पतये यजे ॥ 10 ॥

मन्त्रार्थ - **ऋतुभ्यः** = ऋतुओं के लिए, ऋतुओं से **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **आर्तवेभ्यो** = सम्यक् वचन, वाणी, गति, प्राप्ति के लिए **मात्-भ्यः** = माताओं के लिए **संवत्सरेभ्यः** = सम्वत्सरों के लिए **धात्रे** = धारण करने वाला **विधात्रे** = विधान करने वाला, विशेष धारण करने वाला **सम्-ऋधे** = समृद्धि में, वृद्धिगत, समृद्ध **भूतस्य** = भूत का, उत्पन्न हुए का **पतये** = पति के लिए, ऐश्वर्य के लिए **यजे** = यजन करता है ॥ 10 ॥

पदार्थ - **ऋतुभ्यः** = ऋतुओं के लिए, ऋतुओं से (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **आर्तवेभ्यो** = सम्यक् वचन, वाणी, गति, प्राप्ति के लिए (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अर् - ऋ - गति, ज्ञान, प्राप्ति करना, फैलाना, शब्द करना, ध्वनि करना, महत्व प्रदर्शन करना, हिंसा करना)। **मात्-भ्यः** = माताओं के लिए (मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना)। **संवत्सरेभ्यः** = सम्वत्सरों के लिए (सम् - सम्यक्, सम् - न घबराना, एक समान रहना, वद् - बोलना, कहना, सृ - चलना, सरकना)। **धात्रे** = धारण करने वाला (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)। **विधात्रे** = विधान करने वाला, विशेष धारण करने वाला (वि - विशेष, विध् - विधान करना, वेधना, वेध करना, ताडना करना, धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)। **सम्-ऋधे** = समृद्धि में, वृद्धिगत, समृद्ध (सम् = सम्यक्, भलीभांति, ऋध् -वृद्धि होना, वृद्धि करना, समृद्धि होना, ऐश्वर्य होना, आनन्दित करना, पूर्ण करना)। **भूतस्य** = भूत का, उत्पन्न हुए का (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **पतये** = पति के लिए, ऐश्वर्य के लिए (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **यजे** = यजन करता है (यज - देवपूजा करना, अर्पण करना, संगति करना, दान करना) ॥ 10 ॥

432. इडया जुह्वतो वयम्,
देवान् घृतवता यजे।
गृहान् अलुभ्यतो वयम्,
सम् विशेम उप गोमतः ॥ 11 ॥

मन्त्रार्थ - **इडया** = धारण, घर्षण, छेदन, स्तुति द्वारा **जुह्वतो** = दान करने वाले, आदान-प्रदान करने वाले **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग **देवान्** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों को **घृतवता** = घृतवती, घृतयुक्त, प्रकाशयुक्त **यजे** = यजन करता है **गृहान्** = घरों को **अलुभ्यतो** = अलोभी, लोभ से हीन **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **विशेम** = विश, प्रतिष्ठित, प्रवेश करें **उप** = समीप **गोमतः** = गोयुक्त का, गो के मत वाले, शब्द करने वालों, मननशीलों, उपदेशकों से युक्त ॥ 11 ॥

पदार्थ - **इडया** = धारण, घर्षण, छेदन, स्तुति द्वारा (इड - धारण करना, घर्षण करना, छेदन करना, ईड् = स्तुति करना)। **जुह्वतो** = दान करने वाले, आदान-प्रदान करने वाले (हु-जुहु = दान करना, आदान-प्रदान करना, ग्रहण करना, तृप्त करना, जु - जाना, शीघ्र जाना, भागना)। **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **देवान्** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों को (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **घृतवता** = घृतवती, घृतयुक्त, प्रकाशयुक्त (घृ - चमकना, प्रकाश करना, सिञ्चन करना, गीला करना, टपकना, बूंद बूंद गिरना, क्षरित होना, क्षरण होना, झरना, घर्षण होना, नाश होना, शब्द होना)। **यजे** = यजन करता है (यज - देवपूजा करना, अर्पण करना, संगति करना, दान करना)। **गृहान्** = घरों को (गृह - लेना, स्वीकार करना, निवास करना)।

अलुभ्यतो = अलोभी, लोभ से हीन (अ - नहीं, लुभ् = आशा करना, अभिकाङ्क्षा करना, चाहना, लोभ करना, लुभ् = दीन होना, मतिभ्रंश होना, भ्रान्त होना)। **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **विशेम** = विश, प्रतिष्ठित, प्रवेश करें (विश - भीतर जाना, चारों ओर फैलना)। **उप** = समीप (उपसर्ग)। **गोमतः** = गोयुक्त का, गो के मत वाले, शब्द करने वालों, मननशीलों, उपदेशकों से युक्त (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना) ॥ 11 ॥

433. एक-अष्टका तपसा तप्यमाना जजान,
गर्भम् महिमानम् इन्द्रम्।
तेन देवा वि असहन्त शत्रून्,
हन्ता दस्यूनाम् अभवत् शचीपतिः ॥ 12 ॥

मन्त्रार्थ - **एक-अष्टका** = एक-व्याप्त, एक-दीप्तिमान् **तपसा** = तप द्वारा **तप्यमाना** = तप्यमान **जजान** = उत्पन्न किया **गर्भम्** = गर्भ को **महिमानम्** = महिमावान् को, महत्व से युक्त को **इन्द्रम्** = इन्द्र को, परम ऐश्वर्यशाली को **तेन** = उससे, उसके द्वारा **देवा** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने **वि** = विशेष, विना, विलोम **असहन्त** = असहन, असक्षम, असमर्थ, अतृप्त, असन्तुष्ट किया **शत्रून्** = शत्रुओं को **हन्ता** = मारने वाला **दस्यूनाम्** = दस्युओं को, मारने वालों को **अभवत्** = हुआ **शचीपतिः** = उत्तम वाणी वाला ऐश्वर्यवान्, स्वामी ॥ 12 ॥

पदार्थ - **एक-अष्टका** = एक-व्याप्त, एक-दीप्तिमान् (एक = एक (संख्या), अष् - ग्रहण करना, जाना, जानना, पाना, चमकना, प्रकाश करना, अश् = भोजन करना, अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना)। **तपसा** = तप द्वारा (तप - ऐश्वर्य होना, तपना, दाह होना, तप करना, तप्त होना, तप्त करना, जलना, जलाना, तृषा होना)। **तप्यमाना** = तप्यमान (तप - ऐश्वर्य होना, तपना, दाह होना, तप करना, तप्त होना, तप्त करना, जलना, जलाना, तृषा होना)। **जजान** = उत्पन्न किया (उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन- उत्पन्न करना)। **गर्भम्** = गर्भ को (गृह् - ग्रहण करना, लेना, गृ = सींचना, गीला करना, घर्षण करना, जानना, समझना, खाना, निगलना, शब्द करना, गल्भ् - जाना, जानना, पाना, ज्ञान होना, चतुर होना, साहस होना, धैर्य रखना, गृभ्-गर्भ् - अन्दर होना, अन्तःवास करना)। **महिमानम्** = महिमावान् को, महत्व से युक्त को (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना)। **इन्द्रम्** = इन्द्र को, परम ऐश्वर्यशाली को (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **तेन** = उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **देवा** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **असहन्त** = असहन, असक्षम, असमर्थ, अतृप्त, असन्तुष्ट किया (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)। **शत्रून्** = शत्रुओं को (शी-शद्-शत् - जीर्ण होना, गिरना, गिराना)। **हन्ता** = मारने वाला (हन् - मारना)। **दस्यूनाम्** = दस्युओं को, मारने वालों को (दस् - रक्षण, पालन, स्थापन करना, देखना, नष्ट होना, नष्ट करना, डसना)। **अभवत्** = हुआ (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना)। **शचीपतिः** = उत्तम वाणी वाला ऐश्वर्यवान्, स्वामी (शच- स्पष्ट बोलना, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना) ॥ 12 ॥

434. इन्द्रपुत्रे सोमपुत्रे,
दुहिता असि प्रजापतेः।
कामान् अस्माकम् पूरय,
प्रति गृहणाहि नो हविः ॥ 13 ॥

मन्त्रार्थ - **इन्द्रपुत्रे** = हे इन्द्र पुत्र, हे पराक्रमी पुत्र **सोमपुत्रे** = हे सोम-पुत्र, हे सृजन-ऐश्वर्य-अन्तकर्ता पुत्र, हे सृष्टिकर्ता पुत्र **दुहिता** = दुही हुई, दुहने वाली **असि** = हो **प्रजापतेः** = प्रजा का पालन करने वाले का **कामान्** =

कामनाओं, इच्छाओं को **अस्माकम्** = हमारा **पूरय** = पूर्ण करो **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में **गृहणाहि** = ग्रहण करो, स्वीकार करो **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा **हविः** = हवि, दान, देय, तर्पण ॥ **13** ॥

पदार्थ - **इन्द्रपुत्रे** = हे इन्द्र पुत्र, हे पराक्रमी पुत्र (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना, पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)। **सोमपुत्रे** = हे सोम-पुत्र, हे सृजन-ऐश्वर्य-अन्तकर्ता पुत्र, हे सृष्टिकर्ता पुत्र (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामथ्य, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना। सू = प्रेरणा देना। सो–स्य, सय - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना, पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)। **दुहिता** = दुही हुई, दुहने वाली (दुह - दूध निकालना, दोहना, रिक्त करना, लेना, खींचना)। **असि** = हो (अस् - होना)। **प्रजापतेः** = प्रजा का पालन करने वाले का (प्र - प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न करना, पत - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना)। **कामान्** = कामनाओं, इच्छाओं को (कम - चाहना, इच्छा करना)। **अस्माकम्** = हमारा (सर्वनाम)। **पूरय** = पूर्ण करो (पूर् = पूर्ण करना, भरना, पूर्ण होना)। **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग)। **गृहणाहि** = ग्रहण करो, स्वीकार करो (गृह- लेना, स्वीकार करना, निवास करना)। **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **हविः** = हवि, दान, देय, तर्पण (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना) ॥ **13** ॥

15. अनुवाक - 3

82. दीर्घायुप्राप्ति सूक्त - 11

435. मुञ्चामि त्वा हविषा जीवनाय कम्,
अज्ञात्-यक्ष्मात् उत राज-यक्ष्मात्।
ग्राहि जग्राह यदि एतत् एनम्,
तस्याः इन्द्राग्नी प्र मुमुक्तम् एनम् ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - **मुञ्चामि** = कहता हूँ **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **हविषा** = हविष से, दान व आदान-प्रदान द्वारा **जीवनाय** = जीवन के लिए **कम्** = किसको **अज्ञात्-यक्ष्मात्** = अज्ञात-यक्ष्म से **उत** = ही, भी, ओर **राज-यक्ष्मात्** = राज-यक्ष्म से **ग्राहि** = ग्रहणीय, ग्रहण योग्य **जग्राह** = गृहण किया, जाना **यदि** = यदि **एतत्** = यह **एनम्** = इसको, इसे **तस्याः** = उसका **इन्द्राग्नी** = इन्द्र और अग्नि **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक **मुमुक्तम्** = मुक्त किया **एनम्** = इसको, इसे ॥ **1** ॥

पदार्थ - **मुञ्चामि** = कहता हूँ (मुञ्च् = मुक्त करना, त्याग करना, बोलना, कहना, गर्व करना)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **हविषा** = हविष से, दान व आदान-प्रदान द्वारा (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **जीवनाय** = जीवन के लिए (जीव - जीवन होना, प्राणवान् होना)। **कम्** = किसको (सर्वनाम)। **अज्ञात्-यक्ष्मात्** = अज्ञात-यक्ष्म से (अ - नहीं, ज्ञा - जानना, यक्ष - पूजा करना, पूजना, सत्कार करना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **राज-यक्ष्मात्** = राज-यक्ष्म से (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना, यक्ष - पूजा करना, पूजना, सत्कार करना)। **ग्राहि** = ग्रहणीय, ग्रहण योग्य (ग्रह - लेना, स्वीकार करना, गृह - ग्रहण करना)। **जग्राह** = गृहण किया, जाना (ग्रह - लेना, स्वीकार करना, गृह् - ग्रहण करना, लेना, गृ = सींचना, गीला करना, घर्षण करना, जानना, समझना, खाना, निगलना, शब्द करना)। **यदि** = यदि (अव्यय)। **एतत्** = यह (सर्वनाम)। **एनम्** = इसको, इसे (सर्वनाम)। **तस्याः** = उसका (सर्वनाम)। **इन्द्राग्नी** = इन्द्र और अग्नि (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना, अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना, पीना)। **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **मुमुक्तम्** = मुक्त किया (मुच् = मुक्त करना, त्याग करना, बोलना, कहना, गर्व करना)। **एनम्** = इसको, इसे (सर्वनाम) ॥ **1** ॥

436. यदि क्षितायुः यदि वा परा-इतः,
यदि मृत्योः अन्तिकम् नि-इतः एव।

तम् आ हरामि निः-ऋतेः उपस्थात्,
अस्पार्शम् एनम् शतशारदाय ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - **यदि** = यदि **क्षितायुः** = निवास, क्षति, क्षय वाले को **यदि** = यदि **वा** = अथवा **परा-इतः** = परम् गति, ज्ञान, प्रकाश प्राप्त करने वाले **यदि** = यदि **मृत्योः** = मृत्यु का **अन्तिकम्** = निकट, समीप **नि-इतः** = निरन्तर गति, ज्ञान, प्रकाश प्राप्त करने वाला **एव** = ही **तम्** = उसको, उसे **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **हरामि** = ले जाता हूँ **निः-ऋतेः** = निः-ऋत में, निरन्तर गतिशील में **उपस्थात्** = समीप स्थित हो, उपस्थ से, समीपस्थ से, निकटस्थ से **अस्पार्शम्** = प्रीति किया **एनम्** = इसको, इसे **शतशारदाय** = शत शरद के लिए ॥ 2 ॥

पदार्थ - **यदि** = यदि (अव्यय)। **क्षितायुः** = निवास, क्षति, क्षय वाले को (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)। **यदि** = यदि (अव्यय)। **वा** = अथवा (अव्यय)। **परा-इतः** = परम् गति, ज्ञान, प्रकाश प्राप्त करने वाले (परा = परम्, परे, पीछे, विपरीत (अव्यय), इ - जाना, जानना, पाना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)। **यदि** = यदि (अव्यय)। **मृत्योः** = मृत्यु का (मृ = मरना, देहत्याग करना)। **अन्तिकम्** = निकट, समीप (अव्यय, सर्वनाम)। **नि-इतः** = निरन्तर गति, ज्ञान, प्रकाश प्राप्त करने वाला (नि = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग), इ - जाना, जानना, पाना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)। **एव** = ही (अव्यय)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **हरामि** = ले जाता हूँ (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)। **निः-ऋतेः** = निः-ऋत में, निरन्तर गतिशील में (निः = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग), ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)। **उपस्थात्** = समीप स्थित हो, उपस्थ से, समीपस्थ से, निकटस्थ से (उप - समीप, स्था = स्थित होना)। **अस्पार्शम्** = प्रीति किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, स्पृ - प्रीति करना, सेवा करना, सन्तुष्ट करना, पालन करना, चलना)। **एनम्** = इसको, इसे (सर्वनाम)। **शतशारदाय** = शत शरद के लिए (शतम् = सौ, शार - निर्बल होना या करना, आसक्त होना या करना, शृ - सुनना) ॥ 2 ॥

437. सहस्र-अक्षेण शत-वीर्येण शत-आयुषा,
हविषा आ अहार्षम् एनम्।
इन्द्रो यथा एनम् शरदो नयाति,
अति विश्वस्य दुःइतस्य पारम् ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - **सहस्र-अक्षेण** = सहस्र अक्ष द्वारा, अक्ष के साथ, खेल, क्रीड़ा, दृष्टि द्वारा **शत-वीर्येण** = सौ-पराक्रम से, सौ-सामर्थ्य द्वारा **शत-आयुषा** = शतायु द्वारा, शत-जीवन द्वारा **हविषा** = हविष् द्वारा, दान व आदान-प्रदान द्वारा **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **अहार्षम्** = व्यापक ऋषि, सर्वव्यापी को जानने वाले **एनम्** = इसको, इसे **इन्द्रो** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार **एनम्** = इसको, इसे **शरदो** = शरद् **नयाति** = ले जाता हूँ **अति** = बहुत, अत्यधिक **विश्वस्य** = विश्व का, सभी का **दुःइतस्य** = दुरित का, दुः-गति, ज्ञान, प्रकाश का **पारम्** = पार ॥ 3 ॥

पदार्थ - **सहस्र-अक्षेण** = सहस्र अक्ष द्वारा, अक्ष के साथ, खेल, क्रीड़ा, दृष्टि द्वारा (सहस्र = हजार (संख्या), अक्ष् - खेलना, देखना, व्याप्त होना, एकत्र होना)। **शत-वीर्येण** = सौ-पराक्रम से, सौ-सामर्थ्य द्वारा (शत = सौ, वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)। **शत-आयुषा** = शतायु द्वारा, शत-जीवन द्वारा (शत = सौ, आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अय = जाना, जानना, पाना, गति करना, आय - शब्द करना, शासन करना, यु = मिलना, अलग करना)। **हविषा** = हविष् द्वारा, दान व आदान-प्रदान द्वारा (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **अहार्षम्** = व्यापक ऋषि, सर्वव्यापी को जानने वाले (अह-ऋषम्, अह - फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, ऋष - अन्तर्गमन करना, अन्तर्दृष्टि होना, जाना, पाना, जानना)। **एनम्** = इसको, इसे (सर्वनाम)। **इन्द्रो** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **यथा** = जिससे,

जैसे, जिस प्रकार (अव्यय)। **एनम्** = इसको, इसे (सर्वनाम)। **शरदो** = शरद् (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मारना, श्रि - सेवा करना, आश्रय करना)। **नयाति** = ले जाता हूँ (नी = ले जाना)। **अति** = बहुत, अत्यधिक (उपसर्ग, अव्यय)। **विश्वस्य** = विश्व का, सभी का (सर्वनाम)। **दुःइतस्य** = दुरित का, दुः-गति, ज्ञान, प्रकाश का (इ - जाना, जानना, पाना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)। **पारम्** = पार (पार - कार्य पूर्ण करना, पृ - पूर्ण करना, पालन-पोषण करना, प्रेम करना) ॥ 3 ॥

438. शतम् जीव शरदो वर्धमानः,
शतम् हेमन्तान् शतम् उ वसन्तान्।
शतम् ते इन्द्रो अग्निः सविता बृहस्पतिः,
शत-आयुषा हविषा आ अहार्षम् एनम् ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - **शतम्** = सौ **जीव** = जीव **शरदो** = शरद् **वर्धमानः** = बढ़ता हुआ **शतम्** = सौ **हेमन्तान्** = हेमन्तों को, हिम, गतिवान्, गति-वृद्धि, शीतल का **शतम्** = सौ **उ** = निश्चय ही, भी **वसन्तान्** = वसन्तों का, वसते हुए, वास करते हुए, वास करने वालों का **शतम्** = सौ **ते** = व्यापक ऋषि, सर्वव्यापी को जानने वाले **इन्द्रो** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान **अग्निः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् **सविता** = सृष्टिकर्ता, उत्पन्न करने वाला, ऐश्वर्यवान् तथा ऐश्वर्य देने वाला **बृहस्पतिः** = बृहस्पति, महान्, बृहत् का स्वामी **शत-आयुषा** = शतायु द्वारा, शत-जीवन द्वारा **हविषा** = हविष् द्वारा, दान व आदान-प्रदान द्वारा **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **अहार्षम्** = व्यापक ऋषि, सर्वव्यापी को जानने वाले **एनम्** = इसको, इसे ॥ 4 ॥

पदार्थ - **शतम्** = सौ (संख्या, सर्वनाम)। **जीव** = जीव (जीव् - जीवन होना, प्राणवान् होना, प्राण धारण करना, जीवन धारण करना)। **शरदो** = शरद् (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मारना, श्रि - सेवा करना, आश्रय करना)। **वर्धमानः** = बढ़ता हुआ (वृध् = बढ़ना, चमकना, बोलना)। **शतम्** = सौ (संख्या, सर्वनाम)। **हेमन्तान्** = हेमन्तों को, हिम, गतिवान्, गति-वृद्धि, शीतल का (हि - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना, हिम - शीत होना)। **शतम्** = सौ (संख्या, सर्वनाम)। **उ** = निश्चय ही, भी (निपात, अव्यय)। **वसन्तान्** = वसन्तों का, वसते हुए, वास करते हुए, वास करने वालों का (वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)। **शतम्** = सौ (संख्या, सर्वनाम)। **ते** = व्यापक ऋषि, सर्वव्यापी को जानने वाले (अह-ऋषम्, अह - फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, ऋष - अन्तर्गमन करना, अन्तर्दृष्टि होना, जाना, पाना, जानना)। **इन्द्रो** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **अग्निः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **सविता** = सृष्टिकर्ता, उत्पन्न करने वाला, ऐश्वर्यवान् तथा ऐश्वर्य देने वाला (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)। **बृहस्पतिः** = बृहस्पति, महान्, बृहत् का स्वामी (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना, पत् - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना, नीचे जाना, गिरना, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **शत-आयुषा** = शतायु द्वारा, शत-जीवन द्वारा (शत = सौ, आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अय = जाना, जानना, पाना, गति करना, आय - शब्द करना, शासन करना, यु = मिलना, अलग करना)। **हविषा** = हविष् द्वारा, दान व आदान-प्रदान द्वारा (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **अहार्षम्** = व्यापक ऋषि, सर्वव्यापी को जानने वाले (अह-ऋषम्, अह - फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, ऋष - अन्तर्गमन करना, अन्तर्दृष्टि होना, जाना, पाना, जानना)। **एनम्** = इसको, इसे (सर्वनाम) ॥ 4 ॥

439. प्र विशतम् प्राणापानौ,
अनड्वाहौ-इव व्रजम्।
वि अन्ये यन्तु मृत्यवो,

यान् आहुः इतरान् शतम् ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ - **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक **विशतम्** = प्रवेश करते हैं **प्राणापानौ** = प्राण- अपान में **अनड्वाहौ-इव** = युगल अनडवाह, अपतनशील, पतित न होने वाले को वहन करने वाले, अव्यापक को वहन करने वाले, उद्यम-प्रयास न करने वाले को वहन करने वाले, अधिकार में न लेने वाले को वहन करने वाले के समान **व्रजम्** = प्रगतिशील, पूर्ण सिद्ध को **वि** = विशेष, विना, विलोम **अन्ये** = अन्य, कोई और, इतर **यन्तु** = नियमन-नियन्त्रण, पोषण करो, उद्धार करो, प्राप्त करो **मृत्यवो** = मृत्यु के लिए **यान्** = जाता हुआ **आहुः** = आदान-प्रदान किया हुआ, आहुत, आह्वान किये, बुलाये हुए, व्याप्त **इतरान्** = अन्यों का **शतम्** = सौ ॥ 5 ॥

पदार्थ - **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **विशतम्** = प्रवेश करते हैं (विश - घुसना, भीतर जाना, धंसना, चारों ओर फैलना)। **प्राणापानौ** = प्राण- अपान में (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अन- जीवन होना, चेतन होना, प्रा- पूर्ण करना, तृप्त करना, अप - निम्न)। **अनड्वाहौ-इव** = युगल अनडवाह, अपतनशील, पतित न होने वाले को वहन करने वाले, अव्यापक को वहन करने वाले, उद्यम-प्रयास न करने वाले को वहन करने वाले, अधिकार में न लेने वाले को वहन करने वाले के समान (अ - नहीं, नड् - गिरना, पतन होना, अन् - नहीं, अड् - व्याप्त होना, उद्यम करना, प्रयत्न करना, अधिकार में लाना, वह् - वहन करना, ले जाना, इव = समान, की भाँति, के समान (अव्यय))। **व्रजम्** = प्रगतिशील, पूर्ण सिद्ध को (व्रज = जाना, पूर्ण करना, सिद्ध करना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **अन्ये** = अन्य, कोई और, इतर (सर्वनाम)। **यन्तु** = नियमन-नियन्त्रण, पोषण करो, उद्धार करो, प्राप्त करो (यम् = रोकना, स्वाधीन रखना, आवरण करना, पोषण करना, नियमन करना, यन - उद्धार करना, या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, जानना)। **मृत्यवो** = मृत्यु के लिए (मृ = मरना, देहत्याग करना)। **यान्** = जाता हुआ (या - जाना)। **आहुः** = आदान-प्रदान किया हुआ, आहुत, आह्वान किये, बुलाये हुए, व्याप्त (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, अह - फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, हु - दान करना, आदान-प्रदान करना)। **इतरान्** = अन्यों का (सर्वनाम, अव्यय)। **शतम्** = सौ (संख्या, सर्वनाम) ॥ 5 ॥

440. इह एव स्तम् प्राणापानौ,
मा अप गातम् इतो युवम्।
शरीरम् अस्य अङ्गानि,
जरसे वहतम् पुनः ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ - **इह** = इसमें, यहां, यह **एव** = ही **स्तम्** = हो **प्राणापानौ** = प्राण- अपान में **मा** = नहीं, मत **अप** = दूर, नीचे, अपकार **गातम् इतो** = यहां से **युवम्** = तुमको **शरीरम्** = शरीर को **अस्य** = इसका **अङ्गानि** = विद्वान्, प्रगतिशील, पाने वाले **जरसे** = जीर्ण, वृद्ध, वर्धित, परिपक्व में **वहतम्** = वहन करते हो, लाते हो, वहन करने वाले को **पुनः** = फिर ॥ 6 ॥

पदार्थ - **इह** = इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **एव** = ही (अव्यय)। **स्तम्** = हो (अस् - होना)। **प्राणापानौ** = प्राण- अपान में (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अन- जीवन होना, चेतन होना, प्रा- पूर्ण करना, तृप्त करना, अप - निम्न)। **मा** = नहीं, मत (अव्यय)। **अप** = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। **गातम् इतो** = यहां से (सर्वनाम्)। **युवम्** = तुमको (सर्वनाम)। **शरीरम्** = शरीर को (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, शृ - मार डालना, दुःख देना, पीड़ा करना, फटना, हिंसा करना, मारना, श्रि - सेवा करना, आश्रय करना)। **अस्य** = इसका (सर्वनाम)। **अङ्गानि** = विद्वान्, प्रगतिशील, पाने वाले (अंग् = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)। **जरसे** = जीर्ण, वृद्ध, वर्धित, परिपक्व में (जृ - वृद्ध होना, जीर्ण होना)। **वहतम्** = वहन करते हो, लाते हो, वहन करने वाले को (वह् = वहन करना, ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)। **पुनः** = फिर (अव्यय) ॥ 6 ॥

441. जरायै त्वा परि ददामि,
जरायै नि धुवामि त्वा।

जरा त्वा भद्रा नेष्ट वि अन्ये यन्तु,
मृत्युवो यान् आहुः इतरान् शतम् ॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ - **जरायै** = जीर्ण, वृद्ध या परिपक्व आयु वाले **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **परि** = सभी तरफ **ददामि** = देता हूँ **जरायै** = जीर्ण, वृद्ध या परिपक्व आयु वाले **नि** = निश्चित, निरन्तर **धुवामि** = कम्पित करता हूँ **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **जरा** = जीर्ण, वृद्ध, वर्धित, परिपक्व **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **भद्रा** = कल्याणकारी **नेष्ट** = प्राप्त करो **वि** = विशेष, विना, विलोम **अन्ये** = अन्य, कोई और, इतर **यन्तु** = नियमन-नियन्त्रण, पोषण करो, उद्धार करो, प्राप्त करो **मृत्युवो** = मृत्यु के लिए **यान्** = जाता हुआ **आहुः** = आदान-प्रदान किया हुआ, आहुत, आह्वान किये, बुलाये हुए, व्याप्त **इतरान्** = अन्यों का **शतम्** = सौ ॥ 7 ॥

पदार्थ - **जरायै** = जीर्ण, वृद्ध या परिपक्व आयु वाले (जृ - वृद्ध होना, जीर्ण होना, अय - जाना, जानना, पाना)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **परि** = सभी तरफ (उपसर्ग)। **ददामि** = देता हूँ (दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)। **जरायै** = जीर्ण, वृद्ध या परिपक्व आयु वाले (जृ - वृद्ध होना, जीर्ण होना, अय - जाना, जानना, पाना)। **नि** = निश्चित, निरन्तर (अव्यय)। **धुवामि** = कम्पित करता हूँ (धू = नोचना, कम्पित करना, काँपना)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **जरा** = जीर्ण, वृद्ध, वर्धित, परिपक्व (जृ - वृद्ध होना, जीर्ण होना)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **भद्रा** = कल्याणकारी (भदि-भन्द् = सुख होना, शुभ कर्म करना, कल्याण होना)। **नेष्ट** = प्राप्त करो (निष - प्राप्त करना, ले जाना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **अन्ये** = अन्य, कोई और, इतर (सर्वनाम)। **यन्तु** = नियमन-नियन्त्रण, पोषण करो, उद्धार करो, प्राप्त करो (यम् = रोकना, स्वाधीन रखना, आवरण करना, पोषण करना, नियमन करना, यन - उद्धार करना, या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, जानना)। **मृत्युवो** = मृत्यु के लिए (मृ = मरना, देहत्याग करना)। **यान्** = जाता हुआ (या - जाना)। **आहुः** = आदान-प्रदान किया हुआ, आहुत, आह्वान किये, बुलाये हुए, व्याप्त (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, अह - फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, हु - दान करना, आदान-प्रदान करना)। **इतरान्** = अन्यों का (सर्वनाम, अव्यय)। **शतम्** = सौ (संख्या, सर्वनाम) ॥ 7 ॥

442. अभि त्वा जरिमा अहित,
गाम् उक्षणम्-इव रज्वा।
यः त्वा मृत्युः अभि-अधत्त,
जायमानम् सुपाशया।
तम् ते सत्यस्य हस्ताभ्याम्,
उत् अमुञ्चत् बृहस्पतिः ॥ 8 ॥

मन्त्रार्थ - **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **जरिमा** = जरितृ, जीर्ण, वृद्ध, वर्धित, परिपक्व करता हूँ **अहित** = हित, गति, वृद्धि की **गाम्** = गान, गाय, गायक को **उक्षणम्-इव** = प्रोक्षण, स्वच्छ, दृढ़, सिञ्चन करने वाले के समान **रज्वा** = रज्जु **यः** = जो **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **मृत्युः** = मृत्यु **अभि-अधत्त** = अभि-धारण किया **जायमानम्** = उत्पन्न होने वालों को **सुपाशया** = सुपाश द्वारा, सुन्दर पाश द्वारा, सुन्दर दिखाने वाले द्वारा, उत्तम बन्धन द्वारा **तम्** = उसको, उसे **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **सत्यस्य** = सत्य का **हस्ताभ्याम्** = दोनों हस्त द्वारा, के लिए, से **उत्** = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च **अमुञ्चत्** = मुक्त किया, मोचित किया, त्याग किया **बृहस्पतिः** = बृहस्पति, महान्, बृहत् का स्वामी ॥ 8 ॥

पदार्थ - **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **जरिमा** = जरितृ, जीर्ण, वृद्ध, वर्धित, परिपक्व करता हूँ (जृ - वृद्ध होना, जीर्ण होना)। **अहित** = हित, गति, वृद्धि की (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, हि - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना)। **गाम्** = गान, गाय, गायक को (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गम् - जाना, जानना, पाना)। **उक्षणम्-**

इव = प्रोक्षण, स्वच्छ, दृढ़, सिञ्चन करने वाले के समान (उक्ष् - प्रोक्षण करना, सिञ्चन करना, स्वच्छ करना, दृढ़ करना, दृढ़ होना, इव = समान, की भाँति, के समान (अव्यय))। **रज्वा** = रज्जु (रज - रज होना, धूल होना, सूक्ष्म होना, रंग देना, रंगना, लीन होना)। **यः** = जो (सर्वनाम)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **मृत्युः** = मृत्यु (मृ = मरना, देहत्याग करना)। **अभि-अधत्त** = अभि-धारण किया (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, धा = धारण् करना)। **जायमानम्** = उत्पन्न होने वालों को (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **सुपाशया** = सुपाश द्वारा, सुन्दर पाश द्वारा, सुन्दर दिखाने वाले द्वारा, उत्तम बन्धन द्वारा (सु - सुन्दर, अच्छा, पश् - देखना, पश - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **सत्यस्य** = सत्य का (सत् = होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना)। **हस्ताभ्याम्** = दोनों हस्त द्वारा, के लिए, से (हस्त -देना, लेना, ग्रहण करना)। **उत्** = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)। **अमुञ्चत्** = मुक्त किया, मोचित किया, त्याग किया (अ - नहीं, मुञ्च् - घर्षण करना, मोचन करना, त्यागना, ऐश्वर्य होना, प्रसन्न होना)। **बृहस्पतिः** = बृहस्पति, महान्, बृहत् का स्वामी (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना, पत् - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना, नीचे जाना, गिरना, पा - पालन करना, रक्षा करना) **॥ 8 ॥**

83. शालानिर्माण सूक्त - 12

443. इह एव ध्रुवाम् मिनोमि शालाम्,
क्षेमे तिष्ठाति घृतम् उक्षमाणा।
ताम् त्वा शाले सर्ववीराः सुवीरा,
अरिष्टवीरा उप सम् चरेम॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - **इह** = इसमें, यहां, यह **एव** = ही **ध्रुवाम्** = ध्रुव, अचल, स्थिर, अविचल गतिशील, अविचल विद्वान् को **मिनोमि** = प्रक्षेपण करता हूँ, स्थापन करता हूँ, रक्षा करता हूँ **शालाम्** = शाला को, प्रगतिशील, स्तुत्य को **क्षेमे** = क्षेम में **तिष्ठाति** = प्रतिष्ठित होता हूँ, स्थित हूँ, ठहरा हूँ, खड़ा हूँ **घृतम्** = घृत को, प्रकाशमान को **उक्षमाणा** = प्रोक्षण, स्वच्छ, दृढ़, सिञ्चन किया, करने वाला **ताम्** = उसको **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **शाले** = हे शाल! प्रगतिशील, स्तुत्य **सर्ववीराः** = सर्ववीर **सुवीरा** = अच्छे वीर, सुवीर **अरिष्टवीरा** = अरिष्ट-वीर, अहिंसक वीर, गतिशील, व्यापक को जानने, प्राप्त करने वाले वीर **उप** = समीप **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **चरेम** = विचरण करें, आचरण करें **॥ 1 ॥**

पदार्थ - **इह** = इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **एव** = ही (अव्यय)। **ध्रुवाम्** = ध्रुव, अचल, स्थिर, अविचल गतिशील, अविचल विद्वान् को (ध्रुव् = अचल होना, स्थिर होना, जाना, गति करना, जानना, पाना)। **मिनोमि** = प्रक्षेपण करता हूँ, स्थापन करता हूँ, रक्षा करता हूँ (मि - प्रक्षेपण करना, स्थापन करना, रक्षा करना, फेंकना, फैलाना)। **शालाम्** = शाला को, प्रगतिशील, स्तुत्य को (शल् - जाना, चुभना, आच्छादित करना, शल् - गति करना, विस्मरण होना, शल - प्रशंसा करना, स्तुति करना)। **क्षेमे** = क्षेम में (क्षि - निवास करना, जाना, जानना, पाना, क्षेम् = कल्याण होना)। **तिष्ठाति** = प्रतिष्ठित होता हूँ, स्थित हूँ, ठहरा हूँ, खड़ा हूँ (तिष्ठ् = ठहरना, खड़ा होना)। **घृतम्** = घृत को, प्रकाशमान को (घृ - चमकना, प्रकाश करना, सिञ्चन करना, गीला करना, टपकना, बूंद बूंद गिरना, क्षरित होना, क्षरण होना, झरना, घर्षण होना, नाश होना, शब्द होना)। **उक्षमाणा** = प्रोक्षण, स्वच्छ, दृढ़, सिञ्चन किया, करने वाला (उक्ष् - प्रोक्षण करना, सिञ्चन करना, स्वच्छ करना, दृढ़ करना, दृढ़ होना)। **ताम्** = उसको (सर्वनाम)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **शाले** = हे शाल! प्रगतिशील, स्तुत्य (शल् - जाना, चुभना, आच्छादित करना, शल् - गति करना, विस्मरण होना, शल - प्रशंसा करना, स्तुति करना)। **सर्ववीराः** = सर्ववीर (सर्व = सब (सर्वनाम), वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)। **सुवीरा** = अच्छे वीर, सुवीर (सु - अच्छा, सुन्दर, वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)। **अरिष्टवीरा** = अरिष्ट-वीर, अहिंसक वीर, गतिशील, व्यापक को जानने, प्राप्त करने वाले वीर (अ - नहीं, ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, रिष- हिंसा करना, मार डालना, दुःख देना, मारने का यत्न करना, वीर - शूरवीर होना,

पराक्रमी होना, पराक्रम करना)। **उप** = समीप (उपसर्ग)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **चरेम** = विचरण करें, आचरण करें (चर -जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना) **॥ 1 ॥**

444. इह एव ध्रुवा प्रति तिष्ठ शाले,
अश्वावती गोमती सूनृतावती।
ऊर्जस्वती घृतवती पयस्वती,
उत् श्रयस्व महते सौभगाय ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - **इह** = इसमें, यहां, यह **एव** = ही **ध्रुवा** = ध्रुव, अचल, स्थिर, अविचल गतिशील **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में **तिष्ठ** = उठो, ठहरो, खड़े हो **शाले** = हे शाल! प्रगतिशील, स्तुत्य **अश्वावती** = अश्वयुक्त, अश्व, तीव्र गति युक्त, व्यापकता युक्त **गोमती** = गोयुक्त, गो के मत वाली, शब्द करने वालों, मननशीलों, उपदेशकों से युक्त **सूनृतावती** = उत्पत्ति-सृजन युक्त **ऊर्जस्वती** = ऊर्जावान् **घृतवती** = घृतवती, घृतयुक्त, प्रकाशयुक्त **पयस्वती** = विस्तृत, विस्तारयुक्त, गतिशील, प्रवाहमान **उत्** = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च **श्रयस्व** = सेवा करो, आश्रय, प्राप्त हो **महते** = महत् के लिए, महान्, पूज्य के लिए **सौभगाय** = सौभाग्य के लिए **॥ 2 ॥**

पदार्थ - **इह** = इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **एव** = ही (अव्यय)। **ध्रुवा** = ध्रुव, अचल, स्थिर, अविचल गतिशील (ध्रुव् = अचल होना, स्थिर होना, जाना, गति करना, जानना, पाना)। **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग)। **तिष्ठ** = उठो, ठहरो, खड़े हो (तिष्ठ् = ठहरना, खड़ा होना)। **शाले** = हे शाल! प्रगतिशील, स्तुत्य (शल् - जाना, चुभना, आच्छादित करना, शल् - गति करना, विस्मरण होना, शल - प्रशंसा करना, स्तुति करना)। **अश्वावती** = अश्वयुक्त, अश्व, तीव्र गति युक्त, व्यापकता युक्त (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)। **गोमती** = गोयुक्त, गो के मत वाली, शब्द करने वालों, मननशीलों, उपदेशकों से युक्त (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, गोम - लीपना, पोतना)। **सूनृतावती** = उत्पत्ति-सृजन युक्त (सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, नृ = ले जाना)। **ऊर्जस्वती** = ऊर्जावान् (ऊर्ज् = प्राण होना, चेतन होना, बल होना, ऊर्जा होना, शक्तिमान होना, पराक्रमी होना, चलना, जाना)। **घृतवती** = घृतवती, घृतयुक्त, प्रकाशयुक्त (घृ - चमकना, प्रकाश करना, सिञ्चन करना, गीला करना, टपकना, बूंद बूंद गिरना, क्षरित होना, क्षरण होना, झरना, घर्षण होना, नाश होना, शब्द होना)। **पयस्वती** = विस्तृत, विस्तारयुक्त, गतिशील, प्रवाहमान (पय् = जाना, जानना, पाना, बहना, पयस् = विस्तार करना, फैलाना)। **उत्** = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)। **श्रयस्व** = सेवा करो, आश्रय, प्राप्त हो (श्री = सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना, श्री-श्रीण = पकाना, रांधना)। **महते** = महत् के लिए, महान्, पूज्य के लिए (मह - पूजा करना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना)। **सौभगाय** = सौभाग्य के लिए (सु - अच्छा, सुन्दर, सु = उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, सींचना, भग् -भज् - सेवा करना, सेवन करना, दान करना, अलग करना, सो–स्य, सय - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना) **॥ 2 ॥**

445. धरुणी असि शाले,
बृहत्-छन्दाः पूतिधान्या।
आ त्वा वत्सो गमेत् आ कुमारः,
आ धेनवः सायम् आस्पन्दमानाः ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - **धरुणी** = धारणकर्ता, धारण करने वाली **असि** = हो **शाले** = हे शाल! प्रगतिशील, स्तुत्य **बृहत्-छन्दाः** = बृहत् छन्द **पूतिधान्या** = पवित्रता धारण करने योग्य, रक्षा-धारण योग्य **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **वत्सो** = बोलने वाले **गमेत्** = जायें **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **कुमारः** = कुमार, चाहने वाले, इच्छुक **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **धेनवः** = धेनु, प्रिय, पालन करने वाले **सायम्** = सन्ध्या,

सायंकाल **आस्पन्दमानाः** = आस्पन्दमान, सम्यक् स्पन्दन करने वाले ॥ 3 ॥

पदार्थ - **धरुणी** = धारणकर्ता, धारण करने वाली (धृ = धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना, स्थिर रहना)। **असि** = हो (अस् - होना)। **शाले** = हे शाल! प्रगतिशील, स्तुत्य (शल् - जाना, चुभना, आच्छादित करना, शल् - गति करना, विस्मरण होना, शल - प्रशंसा करना, स्तुति करना)। **बृहत्-छन्दाः** = बृहत् छन्द (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना, छन्द् - बल-प्राण होना, आच्छादन करना, ग्रहण करना, अर्जन करना)। **पूतिधान्या** = पवित्रता धारण करने योग्य, रक्षा-धारण योग्य (पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना, धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना, धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **वत्सो** = बोलने वाले (वद् - वच्- बोलना)। **गमेत्** = जायें (गम् = जाना, जानना, पाना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **कुमारः** = कुमार, चाहने वाले, इच्छुक (कुमार - खेलना, बालक के समान क्रीडा करना, कुम् = चाहना, इच्छा करना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **धेनवः** = धेनु, प्रिय, पालन करने वाले (धिन - प्रेम करना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना, धी - बुद्धि होना, धे - पालना, पीना)। **सायम्** = सन्ध्या, सायंकाल (अव्यय)। **आस्पन्दमानाः** = आस्पन्दमान, सम्यक् स्पन्दन करने वाले (स्पन्द = कांपना, थरथराना, सरकना, जाना) ॥ 3 ॥

446. इमाम् शालाम् सविता वायुः इन्द्रो,
बृहस्पतिः नि मिनोतु प्रजानन्।
उक्षन्तु उद्ना मरुतो घृतेन,
भगो नो राजा नि कृषिम् तनोतु ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - **इमाम्** = इसको, इस **शालाम्** = शाला को, प्रगतिशील, स्तुत्य को **सविता** = सृष्टिकर्ता, उत्पन्न करने वाला, ऐश्वर्यवान् तथा ऐश्वर्य देने वाला **वायुः** = गतिशील, रचनात्मक शक्ति, वायु **इन्द्रो** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान **बृहस्पतिः** = बृहस्पति, महान्, बृहत् का स्वामी **नि** = निश्चित, निरन्तर **मिनोतु** = प्रक्षेपण करे, स्थापन करे, रक्षा करे **प्रजानन्** = प्रजनन करने वाले **उक्षन्तु** = प्रोक्षण, स्वच्छ, दृढ़, सिञ्चन करें **उद्ना** = उदारता से, उदारता द्वारा **मरुतो** = मरणशील का, मरुत् का **घृतेन** = अभिसिञ्चित द्वारा, प्रकाशमान द्वारा **भगो** = भग, सेवा, सेवित, सेवनीय **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा **राजा** = राजा **नि** = निश्चित, निरन्तर **कृषिम्** = कृषि, कर्षण को **तनोतु** = विस्तृत करे ॥ 4 ॥

पदार्थ - **इमाम्** = इसको, इस (सर्वनाम)। **शालाम्** = शाला को, प्रगतिशील, स्तुत्य को (शल् - जाना, चुभना, आच्छादित करना, शल् - गति करना, विस्मरण होना, शल - प्रशंसा करना, स्तुति करना)। **सविता** = सृष्टिकर्ता, उत्पन्न करने वाला, ऐश्वर्यवान् तथा ऐश्वर्य देने वाला (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)। **वायुः** = गतिशील, रचनात्मक शक्ति, वायु (वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वा = गति करना, पवन की भाँति बहना, जाना, जानना, पाना, गन्ध होना, प्रवाहित होना, प्रवाहित करना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण करना, घेरना, भेजना, खाना, वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना)। **इन्द्रो** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **बृहस्पतिः** = बृहस्पति, महान्, बृहत् का स्वामी (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना, पत् - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना, नीचे जाना, गिरना, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **नि** = निश्चित, निरन्तर (अव्यय)। **मिनोतु** = प्रक्षेपण करे, स्थापन करे, रक्षा करे (मि - प्रक्षेपण करना, स्थापन करना, रक्षा करना)। **प्रजानन्** = प्रजनन करने वाले (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, जन् = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **उक्षन्तु** = प्रोक्षण, स्वच्छ, दृढ़, सिञ्चन करें (उक्ष् - प्रोक्षण करना, सिञ्चन करना, स्वच्छ करना, दृढ़ करना, दृढ़ होना)। **उद्ना** = उदारता से, उदारता द्वारा (उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, इ = जाना, उदि - उन्द् = भिगोना, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना)। **मरुतो** = मरणशील का, मरुत् का (मृ = मरना, देहत्याग

करना)। **घृतेन** = अभिसिञ्चित द्वारा, प्रकाशमान द्वारा (घृ - चमकना, प्रकाश करना, सिञ्चन करना, गीला करना, टपकना, बूंद बूंद गिरना, क्षरित होना, क्षरण होना, झरना, घर्षण होना, नाश होना, शब्द होना)। **भगो** = भग, सेवा, सेवित, सेवनीय (भग्-भज् = सेवा करना, सेवन करना, सेवित होना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)। **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **राजा** = राजा (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **नि** = निश्चित, निरन्तर (अव्यय)। **कृषिम्** = कृषि, कर्षण को (कृष् = विलेखन, कर्षण करना, खींचना, आकर्षण होना, रेखा करना)। **तनोतु** = विस्तृत करे (तन् = विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना) **॥ 4 ॥**

447. मानस्य पत्नि शरणा स्योना,
देवी देवेभिः निमिता असि अग्रे।
तृणम् वसाना सुमनाः असः त्वम्,
अथ अस्मभ्यम् सहवीरम् रयिम् दाः ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ - **मानस्य** = मानस, मन सम्बन्धी, मान का **पत्नि** = ऐश्वर्यवती **शरणा** = शरण **स्योना** = सुख **देवी** = हे देवी **देवेभिः** = देवों द्वारा **निमिता** = निमिता, निरन्तर स्नेह देने वाली **असि** = हो **अग्रे** = अग्र, आगे, पहले **तृणम्** = अंकुर, तृण, घास, शब्द को **वसाना** = स्नेहपूर्वक निवास करने तथा वास देने वाले **सुमनाः** = अच्छे मन वाले **असः** = अस, प्रकाश, गति, प्रक्षेप वाले **त्वम्** = तुम **अथ** = अब, इसके अनन्तर **अस्मभ्यम्** = हमारे लिए **सहवीरम्** = सहवीर को, सक्षम, समर्थ, तृप्त, सन्तुष्ट वीर को **रयिम्** = विद्या, ज्ञान को **दाः** = दानी, दो **॥ 5 ॥**

पदार्थ - **मानस्य** = मानस, मन सम्बन्धी, मान का (मन् - मनन करना, समझना, जानना, मान - पूजा करना, सम्मान करना, श्रेष्ठ होना, शोध करना)। **पत्नि** = ऐश्वर्यवती (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **शरणा** = शरण (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मारना, श्रि - सेवा करना, आश्रय करना)। **स्योना** = सुख (स्योन् = सुख होना, सुख देना)। **देवी** = हे देवी (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **देवेभिः** = देवों द्वारा (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **निमिता** = निमिता, निरन्तर स्नेह देने वाली (नि- निश्चित, नितराम्, निरन्तर, मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना। मिद् - स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, नरम होना, मृदुल होना)। **असि** = हो (अस् - होना)। **अग्रे** = अग्र, आगे, पहले (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **तृणम्** = अंकुर, तृण, घास, शब्द को (तृण् - घास चरना, खाना, शब्द करना, अंकुरित होना)। **वसाना** = स्नेहपूर्वक निवास करने तथा वास देने वाले (वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)। **सुमनाः** = अच्छे मन वाले (सु = उत्तम, सुन्दर, अच्छा। मन - मनन करना, जानना, समझना, स्वीकार करना, अभ्यास करना, स्थिर होना, गर्व होना)। **असः** = अस, प्रकाश, गति, प्रक्षेप वाले (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **त्वम्** = तुम (सर्वनाम)। **अथ** = अब, इसके अनन्तर (अव्यय)। **अस्मभ्यम्** = हमारे लिए (सर्वनाम)। **सहवीरम्** = सहवीर को, सक्षम, समर्थ, तृप्त, सन्तुष्ट वीर को (सह - साथ, सह = सहना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना, वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)। **रयिम्** = विद्या, ज्ञान को (रय्-रि, री - चलना, जाना, जानना, पाना, री-रै - शब्द करना)। **दाः** = दानी, दो (दा, दद् = देना) **॥ 5 ॥**

448. ऋतेन स्थूणाम् अधि रोह वंश उग्रो,
विराजन् अप वृङ्क्ष्व शत्रून्।
मा ते रिषन् उप-सत्तारो गृहाणाम्,

शाले शतम् जीवेम शरदः सर्ववीराः ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ - **ऋतेन** = ऋत द्वारा **स्थूणाम्** = स्थूणों का **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार **रोह** = चढ़ें, बढ़ें **वंश** = हे वंश **उग्रो** = उग्र, वक्तागण, समूह, सम्बन्धी **विराजन्** = हे विराजमान, हे विशेष प्रकाशमान **अप** = दूर, नीचे, अपकार **वृङ्क्ष्व** = त्याग करो, वर्जित करो **शत्रून्** = शत्रुओं को **मा** = नहीं, मत **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **रिषन्** = हिंसक, हिंसा करते हुए **उप-सत्तारो** = सत्य, प्रतिष्ठित, प्रगतिशील **गृहाणाम्** = गृहस्थों, गृहों का, घरों का **शाले** = हे शाल! प्रगतिशील, स्तुत्य **शतम्** = सौ **जीवेम** = जीवित रहें **शरदः** = शरद् **सर्ववीराः** = सर्ववीर **॥ 6 ॥**

पदार्थ - **ऋतेन** = ऋत द्वारा (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)। **स्थूणाम्** = स्थूणों का (स्था - स्थित होना, ठहरना)। **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **रोह** = चढ़ें, बढ़ें (रुह - बढ़ना, चढ़ना, बीज से उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना)। **वंश** = हे वंश (वंश् - बढ़ना, ऊँचा होना, उठना, ऊपर चढ़ना)। **उग्रो** = उग्र, वक्तागण, समूह, सम्बन्धी (उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना)। **विराजन्** = हे विराजमान, हे विशेष प्रकाशमान (वि = विशेष, विना, विलोम,राज् = प्रकाशित होना)। **अप** = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। **वृङ्क्ष्व** = त्याग करो, वर्जित करो (वृज् = छोड़ना, त्यागना, वर्जित करना)। **शत्रून्** = शत्रुओं को (शी-शद्-शत् - जीर्ण होना, गिरना, गिराना)। **मा** = नहीं, मत (अव्यय)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **रिषन्** = हिंसक, हिंसा करते हुए (रिश्-रिष - हिंसा करना, मार डालना या दुःख देना, मारने का यत्न करना)। **उप-सत्तारो** = सत्य, प्रतिष्ठित, प्रगतिशील (उप - समीप, सत् - होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना)। **गृहाणाम्** = गृहस्थों, गृहों का, घरों का (गृह - लेना, स्वीकार करना, निवास करना)। **शाले** = हे शाल! प्रगतिशील, स्तुत्य (शल् - जाना, चुभना, आच्छादित करना, शल् - गति करना, विस्मरण होना, शल - प्रशंसा करना, स्तुति करना)। **शतम्** = सौ (संख्या, सर्वनाम)। **जीवेम** = जीवित रहें (जीव् = जीवन होना, प्राणवान् होना, प्राण धारण करना, जीवन धारण करना)। **शरदः** = शरद् (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मारना, श्रि - सेवा करना, आश्रय करना)। **सर्ववीराः** = सर्ववीर (सर्व = सब (सर्वनाम), वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना) **॥ 6 ॥**

449. आ इमाम् कुमारः तरुणः,
आ वत्सो जगता सहः।
आ इमाम् परिस्रुतः कुम्भः,
आ दध्नः कलशैः अगुः ॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ - **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **इमाम्** = इसको, इस **कुमारः** = कुमार, चाहने वाले, इच्छुक **तरुणः** = तरुण, पार कराने वाले **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **वत्सो** = बोलने वाले **जगता** = संसार, गतिशील **सहः** = सक्षम, समर्थ, तृप्त, सन्तुष्ट **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **इमाम्** = इसको, इस **परिस्रुतः** = सर्वत्रगामी, विद्वान् **कुम्भः** = कुम्भ **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **दध्नः** = धारण करने वाले, धारण करते हैं **कलशैः** = कलश **अगुः** = गया, अगतिशील **॥ 7 ॥**

पदार्थ - **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **इमाम्** = इसको, इस (सर्वनाम)। **कुमारः** = कुमार, चाहने वाले, इच्छुक (कुमार - खेलना, बालक के समान क्रीडा करना, कुम् = चाहना, इच्छा करना)। **तरुणः** = तरुण, पार कराने वाले (तॄ - पार जाना, पर तीर को जाना, जल पर तैरना, जीतना, जल के पार जाना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **वत्सो** = बोलने वाले (वद् - वच्- बोलना)। **जगता** = संसार, गतिशील (जग् = गति करना, लेना, घर्षण करना)। **सहः** = सक्षम, समर्थ, तृप्त, सन्तुष्ट (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **इमाम्** = इसको, इस (सर्वनाम)। **परिस्रुतः** = सर्वत्रगामी, विद्वान् (परिः-परि = सभी ओर, परितः (उपसर्ग)। स्रु = जाना, बहना, जानना, पाना)। **कुम्भः** = कुम्भ (कुम्भ् = आच्छादन करना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **दध्नः** = धारण

करने वाले, धारण करते हैं (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)। **कलशैः** = कलश (कल - गणना, करना, गिनना, गति करना, शब्द करना, स्वाद लेना, धारण-घर्षण-मन्थन करना, भेदना, छेदन करना)। **अगुः** = गया, अगतिशील (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अग् = जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, गति करना, घूमना, कुटिल गति करना, टेढ़ा जाना, लेना, ग्रहण करना, गम् = जाना, जानना, पाना) **॥ 7 ॥**

450. पूर्णम् नारि प्र भर कुम्भम् एतम्,
घृतस्य धाराम् अमृतेन सम्-भृताम्।
इमाम् पातृन् अमृतेन आ सम् अङ्ग्धि,
इष्टापूर्तम् अभि रक्षाति एनाम् ॥ 8 ॥

मन्त्रार्थ - **पूर्णम्** = पूर्ण को **नारि** = नारी **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक **भर** = पोषण करो, भरो, पूर्ण करो **कुम्भम्** = कुम्भ को **एतम्** = यह, इसको **घृतस्य** = घृत का, प्रकाश का **धाराम्** = धारा को **अमृतेन** = अमृत द्वारा **सम्-भृताम्** = सम्भृत में, सम्यक् भरण पर **इमाम्** = इसको, इस **पातृन्** = पात्र, रक्षक, पालक **अमृतेन** = अमृत द्वारा **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **अङ्ग्धि** = विद्वान्, प्रगतिशील को धारण करने वाला **इष्टापूर्तम्** = विद्या, इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि की पूर्ति को **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा **रक्षाति** = रक्षा करे **एनाम्** = प्रकाशित करने वाले को **॥ 8 ॥**

पदार्थ - **पूर्णम्** = पूर्ण को (पृ - पूर् - पूर्ण करना, भरना, तृप्त करना, आनन्द करना, सन्तोष होना, आनन्द होना, पूर्ण होना)। **नारि** = नारी (नृ - नम्र होना, विनय होना, कोमल होना, मृदु होना, चलना, ले जाना)। **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **भर** = पोषण करो, भरो, पूर्ण करो (भृ = धारण-पोषण करना, पूर्ण करना)। **कुम्भम्** = कुम्भ को (कुम्भ् = आच्छादन करना)। **एतम्** = यह, इसको (सर्वनाम)। **घृतस्य** = घृत का, प्रकाश का (घृ - चमकना, प्रकाश करना, सिञ्चन करना, गीला करना, टपकना, बूंद बूंद गिरना, क्षरित होना, क्षरण होना, झरना, घर्षण होना, नाश होना, शब्द होना)। **धाराम्** = धारा को (धाः = पोषण करना, रक्षण करना, देना, दान करना, धार बाँधना, धारा होना)। **अमृतेन** = अमृत द्वारा (अ - नहीं, मृ = मरना, देहत्याग करना)। **सम्-भृताम्** = सम्भृत में, सम्यक् भरण पर (सम् = सम्यक्, भलीभांति, भृ - धारण करना, भरण-पोषण करना)। **इमाम्** = इसको, इस (सर्वनाम)। **पातृन्** = पात्र, रक्षक, पालक (पा = रक्षा करना, पालन करना)। **अमृतेन** = अमृत द्वारा (अ - नहीं, मृ = मरना, देहत्याग करना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **अङ्ग्धि** = विद्वान्, प्रगतिशील को धारण करने वाला (अंग् = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)। **इष्टापूर्तम्** = विद्या, इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि की पूर्ति को (इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना, पूर् - पूर्ण करना, भरना)। **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **रक्षाति** = रक्षा करे (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना)। **एनाम्** = प्रकाशित करने वाले को (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, इन-एन = प्रकाशित करना, दोष होना, मिश्रण करना, विभाजन करना, अलग करना, मिलाना) **॥ 8 ॥**

451. इमाः आपः प्र भरामि,
अयक्ष्मा यक्ष्म-नाशनीः।
गृहान् उप प्र सीदामि,
अमृतेन सह अग्निना ॥ 9 ॥

मन्त्रार्थ - **इमाः** = ये **आपः** = आप, व्याप्त, व्यापक **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक **भरामि** = धारण करता हूँ, भरण करता हूँ **अयक्ष्मा** = प्रगतिशील, समर्थ, विद्वान्, अश्रेष्ठ, अपूज्य, पूजा न करने वाला **यक्ष्म-नाशनीः** = यक्ष-नाश करने वाली, यक्ष-विनाशिका **गृहान्** = घरों को **उप** = समीप **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक **सीदामि** = सीदता हूँ, बैठता हूँ, संचरण करता हूँ, प्रतिष्ठित होता हूँ **अमृतेन** = अमृत द्वारा **सह** = साथ, सहित **अग्निना** = अग्नि द्वारा, अग्नि के साथ **॥ 9 ॥**

पदार्थ - **इमाः** = ये (सर्वनाम)। **आपः** = आप, व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)। **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **भरामि** = धारण करता हूँ, भरण करता हूँ (भृ = पूर्ण करना, भरना, धारण-पोषण करना)। **अयक्ष्मा** = प्रगतिशील, समर्थ, विद्वान्, अश्रेष्ठ, अपूज्य, पूजा न करने वाला (अ - नहीं, यक्ष् - श्रेष्ठ होना, पूज्य होना, पूजा करना, अय् = जाना, जानना, पाना, क्षम् - क्षमा करना, समर्थ होना, सहन करना, रोकना)। **यक्ष्म-नाशनीः** = यक्ष-नाश करने वाली, यक्ष-विनाशिका (यक्ष = पूजा करना, पूजना, सत्कार करना, नश् - नष्ट होना, अदृश्य होना)। **गृहान्** = घरों को (गृह - लेना, स्वीकार करना, निवास करना)। **उप** = समीप (उपसर्ग)। **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **सीदामि** = सीदता हूँ, बैठता हूँ, संचरण करता हूँ, प्रतिष्ठित होता हूँ (सीद - जाना, चलना, शक्तिहीन होना, म्लान होना, खिन्न होना, सूखना, शुष्क होना, मुर्झाना, भग्न करना, नष्ट करना)। **अमृतेन** = अमृत द्वारा (अ - नहीं, मृ = मरना, देहत्याग करना)। **सह** = साथ, सहित (सर्वनाम)। **अग्निना** = अग्नि द्वारा, अग्नि के साथ (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना) ॥ **9** ॥

84. आपो देवता सूक्त - 13

452. यत् अदः सम्-प्रयतीः,
अहौ अनदता हते।
तस्मात् आ नद्यो नाम स्थ,
ता वो नामानि सिन्धवः ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - **यत्** = जिसे, जो **अदः** = खाने वाला **सम्-प्रयतीः** = सम्प्रयती, सम्यक् प्रयत्न करने वाला **अहौ** = दो व्यापक **अनदता** = नाद किया, शब्द किया **हते** = मारे गये, हत में **तस्मात्** = उससे **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **नद्यो** = नदियाँ **नाम** = नाम वाले **स्थ** = स्थित, हो **ता** = वे, वह, वे दोनो **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **नामानि** = नाम **सिन्धवः** = सिन्धु-समूह ॥ **1** ॥

पदार्थ - **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **अदः** = खाने वाला (अद् - खाना)। **सम्-प्रयतीः** = सम्प्रयती, सम्यक् प्रयत्न करने वाला (सम् = सम्यक्, भलीभांति, प्र - प्रकृष्ट, अधिक, यत् = यत्न करना, निश्चय करना, यन् - उद्धार करना, यम् - आवरण करना, पोषण करना, नियमन करना, या = जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)। **अहौ** = दो व्यापक (अह् = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना)। **अनदता** = नाद किया, शब्द किया (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, नद् - शब्द करना, झंकार करना, चमकना)। **हते** = मारे गये, हत में (हन् - मारना)। **तस्मात्** = उससे (सर्वनाम)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **नद्यो** = नदियाँ (नद् - शब्द करना, झंकार करना, चमकना)। **नाम** = नाम वाले (अव्यय)। **स्थ** = स्थित, हो (स्था- स्थित होना, ठहरना)। **ता** = वे, वह, वे दोनो (सर्वनाम)। **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **नामानि** = नाम (नाम - नाम होना, नाम रखना, नम् = नमन करना, सम्मान करना, शब्द करना)। **सिन्धवः** = सिन्धु-समूह (सिध - सिद्ध होना, पूर्ण होना, जाना, जानना, पाना, अध्ययन करना, दीक्षा देना, शुभ कार्य करना, सिञ् - बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना) ॥ **1** ॥

453. यत् प्रेषिता वरुणेन,
आत् शीभम् सम्-अवल्गत।
तत् आप्नोत् इन्द्रो वो यतीः,
तस्मात् आपो अनु ष्ठन ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - **यत्** = जिसे, जो **प्रेषिता** = प्रेषित, भेजा हुआ **वरुणेन** = वरुण द्वारा, वरुण से **आत्** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण **शीभम्** = स्तुति को, प्रशंसा को **सम्-अवल्गत** = सम्यक् प्रगति की, सम्यक् आच्छादन किया **तत्** = वह, उस को **आप्नोत्** = व्याप्त, व्यापक हुआ **इन्द्रो** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **यतीः** = यत्न करने वाला **तस्मात्** = उससे **आपो** = आप, व्याप्त, व्यापक **अनु** = पश्चात्,

पीछे, अनुकूल **ष्ठन** = स्थित हैं ॥ 2 ॥

पदार्थ - **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **प्रेषिता** = प्रेषित, भेजा हुआ (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, इष्-ईष् - जाना, जानना, पाना, देना, प्रेष् - जाना, जानना, पाना, आना, भेजना)। **वरुणेन** = वरुण द्वारा, वरुण से (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **आत्** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग)। **शीभम्** = स्तुति को, प्रशंसा को (शी = सोना, शयन करना, शीभ - प्रशंसा करना, स्तुति करना, आत्म-स्तुति करना)। **सम्-अवल्गत** = सम्यक् प्रगति की, सम्यक् आच्छादन किया (सम् - सम्यक्, भलीभांति, अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, वल - आच्छादित करना, ढकना, घेरना, संचलन करना, जाना, प्रसार करना, विस्तार करना)। **तत्** = वह, उस को (सर्वनाम)। **आप्नोत्** = व्याप्त, व्यापक हुआ (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)। **इन्द्रो** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **यतीः** = यत्न करने वाला (या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, जानना, यत - यत्न करना, उद्योग करना, निश्चय करना, ठहराना)। **तस्मात्** = उससे (सर्वनाम)। **आपो** = आप, व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)। **अनु** = पश्चात्, पीछे, अनुकूल (उपसर्ग)। **ष्ठन** = स्थित हैं (स्था- स्थित होना, ठहरना) ॥ 2 ॥

454. अपकामम् स्यन्दमानाः,
अवीवरत वो हि कम्।
इन्द्रो वः शक्तिभिः देवीः,
तस्मात् वाः नाम वो हितम् ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - **अपकामम्** = अपकाम को, निम्न कामना को **स्यन्दमानाः** = स्यन्दमान **अवीवरत** = वरण किया, इच्छा की **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **हि** = ही, निश्चय **कम्** = किसको **इन्द्रो** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **शक्तिभिः** = शक्तियों द्वारा, सक्षमताओं, सामर्थ्यों से **देवीः** = दिव्यगुणयुक्त **तस्मात्** = उससे **वाः** = प्रवाहमान, प्रगतिशील **नाम** = नाम वाले **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **हितम्** = हित, गति, वृद्धि को ॥ 3 ॥

पदार्थ - **अपकामम्** = अपकाम को, निम्न कामना को (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना। अप = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग), कम् = कामना करना, चाहना, इच्छा करना। कामम् = कामना, स्वेच्छा अनुसार, माना कि (अव्यय))। **स्यन्दमानाः** = स्यन्दमान (स्यन्द = टपकना, झरना, चूना, सींचना, छींटा देना, जाना)। **अवीवरत** = वरण किया, इच्छा की (अ - नहीं, अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, पसन्द करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **हि** = ही, निश्चय (अव्यय)। **कम्** = किसको (सर्वनाम)। **इन्द्रो** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **शक्तिभिः** = शक्तियों द्वारा, सक्षमताओं, सामर्थ्यों से (शक् - सक्षम होना, कर सकना, सहना, सहन करना)। **देवीः** = दिव्यगुणयुक्त (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **तस्मात्** = उससे (सर्वनाम)। **वाः** = प्रवाहमान, प्रगतिशील (वा - गति करना, बहना, वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण करना, घेरना, भेजना, खाना, वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना)। **नाम** = नाम वाले (अव्यय)। **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **हितम्** = हित, गति, वृद्धि को (हि - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना) ॥ 3 ॥

455. एको वो देवो अपि अतिष्ठत्,
स्यन्दमाना यथावशम्।

उत् आनिषुः महीः इति,
तस्मात् उदकम् उच्यते ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - **एको** = एक **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **देवो** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण **अपि** = भी, निकट **अतिष्ठत्** = ठहरा, स्थित हुआ **स्यन्दमाना** = स्यन्दमान **यथावशम्** = यथावश, जैसा भी वश है **उत्** = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च **आनिषुः** = सम्यक् चेतना, सम्यक् जीवन **महीः** = मही, महिमावान्, महान् **इति** = ऐसा, यह, इसी प्रकार **तस्मात्** = उससे **उदकम्** = उदक, उच्च गति, आद्रता को **उच्यते** = उच्चारण करते हैं, कहते हैं ॥ **4** ॥

पदार्थ - **एको** = एक (संख्या)। **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **देवो** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **अपि** = भी, निकट (अव्यय)। **अतिष्ठत्** = ठहरा, स्थित हुआ (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, तिष्ठ् - ठहरना, स्थित होना)। **स्यन्दमाना** = स्यन्दमान (स्यन्द = टपकना, झरना, चूना, सींचना, छींटा देना, जाना)। **यथावशम्** = यथावश, जैसा भी वश है (अव्यय)। **उत्** = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)। **आनिषुः** = सम्यक् चेतना, सम्यक् जीवन (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), अन् - चेतन होना, प्राण होना, जीवन होना, समर्थ होना, जाना)। **महीः** = मही, महिमावान्, महान् (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना)। **इति** = ऐसा, यह, इसी प्रकार (अव्यय)। **तस्मात्** = उससे (सर्वनाम)। **उदकम्** = उदक, उच्च गति, आद्रता को (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, अक् - जाना, टेढ़ा जाना, उच्च, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना)। **उच्यते** = उच्चारण करते हैं, कहते हैं (उक् - उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना) ॥ **4** ॥

456. आपो भद्रा घृतम् इत् आपः आसन्,
अग्नीषोमौ बिभृति आपः इत् ताः।
तीव्रो रसो मधुपृचाम् अरम्-गमः,
आ मा प्राणेन सह वर्चसा गमेत् ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ - **आपो** = आप, व्याप्त, व्यापक **भद्रा** = कल्याणकारी **घृतम्** = घृत को, प्रकाशमान को **इत्** = ही **आपः** = आप, व्याप्त, व्यापक **आसन्** = बैठे हुए, थे **अग्नीषोमौ** = अग्नि और सोम **बिभृति** = भरण करते हैं, पोषण करते हैं **आपः** = आप, व्याप्त, व्यापक **इत्** = ही **ताः** = वे **तीव्रो** = तीव्र, स्थूल **रसो** = रस **मधुपृचाम्** = मधु-संयमी को, मधुर-तपस्वी को **अरम्-गमः** = उच्च प्रगतिशील, विद्वान् **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **मा** = नहीं, मत **प्राणेन** = प्राण द्वारा **सह** = साथ, सहित **वर्चसा** = प्रकाश द्वारा, तेज द्वारा **गमेत्** = जाओ, प्रगतिशील हो, गतिमान हो ॥ **5** ॥

पदार्थ - **आपो** = आप, व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)। **भद्रा** = कल्याणकारी (भदि-भन्द् = सुख होना, शुभ कर्म करना, कल्याण होना)। **घृतम्** = घृत को, प्रकाशमान को (घृ - चमकना, प्रकाश करना, सिञ्चन करना, गीला करना, टपकना, बूंद बूंद गिरना, क्षरित होना, क्षरण होना, झरना, घर्षण होना, नाश होना, शब्द होना)। **इत्** = ही (अव्यय)। **आपः** = आप, व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)। **आसन्** = बैठे हुए, थे (अस् - होना, आस् - बैठना, उपस्थित होना, विद्यमान होना, जीवित रहना, होना)। **अग्नीषोमौ** = अग्नि और सोम (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना, सु = उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना)। **बिभृति** = भरण करते हैं, पोषण करते हैं (भृ- भरना, भरण करना, धारण करना)। **आपः** = आप, व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)। **इत्** = ही (अव्यय)। **ताः** = वे (सर्वनाम)। **तीव्रो** = तीव्र, स्थूल (तीव् = मोटा, स्थूल होना, रोगी होना)। **रसो** = रस (रस - स्वाद लेना, चखना, प्रीति करना, प्यार करना)। **मधुपृचाम्** = मधु-संयमी को, मधुर-तपस्वी को (मध् = मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना, मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना,

पृच् = संयम करना, तपस्या करना, स्पर्श करना, संयोग करना, मिलना)। **अरम्-गमः** = उच्च प्रगतिशील, विद्वान् (ऋ-अर् = जाना, जानना, पाना, महत्व दिखाना, शब्द करना, ध्वनि करना, हिंसा करना, गम् = जाना, जानना, पाना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **मा** = नहीं, मत (अव्यय)। **प्राणेन** = प्राण द्वारा (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अन- जीवन होना, चेतन होना, प्रा- पूर्ण करना, तृप्त करना)। **सह** = साथ, सहित (सर्वनाम)। **वर्चसा** = प्रकाश द्वारा, तेज द्वारा (वर्च - प्रकाशित होना, चमकना)। **गमेत्** = जाओ, प्रगतिशील हो, गतिमान हो (गम् = जाना, जानना, पाना) **॥ 5 ॥**

457. आत् इत् पश्यामि उत वा शृणोमि,
आ मा घोषो गच्छति वाङ् मा आसाम्।
मन्ये भेजानो अमृतस्य तर्हि,
हिरण्यवर्णाः अतृपम् यदा वः ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ - **आत्** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण **इत्** = ही **पश्यामि** = देखता हूँ **उत** = ही, भी, ओर **वा** = अथवा **शृणोमि** = सुनता हूँ **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **मा** = नहीं, मत **घोषो** = घोष **गच्छति** = जाता है **वाङ्** = वाणी **मा** = नहीं, मत **आसाम्** = इनका **मन्ये** = मानता हूँ **भेजानो** = संरक्षण करने वाले, पालन करने वाले, चिकित्सा करने वाले **अमृतस्य** = अमृत का **तर्हि** = तब, तो **हिरण्यवर्णाः** = हिरण्य-वरण वाला, प्रकाशमान, शब्दमय वर्ण वाला **अतृपम्** = तृप्त हुआ, प्रसन्न, शान्त हुआ **यदा** = जब **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **॥ 6 ॥**

पदार्थ - **आत्** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग)। **इत्** = ही (अव्यय)। **पश्यामि** = देखता हूँ (पश्-दृश् = देखना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **वा** = अथवा (अव्यय)। **शृणोमि** = सुनता हूँ (श्रु-शृण् = सुनना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **मा** = नहीं, मत (अव्यय)। **घोषो** = घोष (घुष् - घोषणा करना, शब्द करना, प्रशंसा करना)। **गच्छति** = जाता है (गम्, गच्छ् = जाना)। **वाङ्** = वाणी (वच, वद - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)। **मा** = नहीं, मत (अव्यय)। **आसाम्** = इनका (सर्वनाम)। **मन्ये** = मानता हूँ (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **भेजानो** = संरक्षण करने वाले, पालन करने वाले, चिकित्सा करने वाले (भी - डरना, भज - देना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भाज - देना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना)। **अमृतस्य** = अमृत का (अ - नहीं, मृ = मरना, देहत्याग करना)। **तर्हि** = तब, तो (अव्यय)। **हिरण्यवर्णाः** = हिरण्य-वरण वाला, प्रकाशमान, शब्दमय वर्ण वाला (हिरण - प्रकाश होना, दीप्त होना, शब्द करना, ध्वनि होना, वृ - वरण करना, स्वीकार करना, वर्ण - वर्णन करना, चमकना, आज्ञा करना, प्रेरणा करना, भेजना, रंगना)। **अतृपम्** = तृप्त हुआ, प्रसन्न, शान्त हुआ (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, तृप - तृप्त होना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, शीत होना, शान्त होना, प्रेम करना)। **यदा** = जब (सर्वनाम)। **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम) **॥ 6 ॥**

458. इदम् वः आपो हृदयम्,
अयम् वत्सः ऋतावरीः।
इह इत्थम् आ इत शक्वरीः,
यत्र इदम् वेशयामि वः ॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ - **इदम्** = यह, इसको **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **आपो** = आप, व्याप्त, व्यापक **हृदयम्** = हृदय को **अयम्** = यह **वत्सः** = बोलने वाले **ऋतावरीः** = ऋत का रक्षक **इह** = इसमें, यहां, यह **इत्थम्** = इस प्रकार **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **इत** = पाये, गति, ज्ञान, प्रकाश प्राप्त किया **शक्वरीः** = शक्तिवान्, क्षमयुक्त, सामर्थ्ययुक्त **यत्र** = जहाँ **इदम्** = यह, इसको **वेशयामि** = प्रवेश करता हूँ **वः** = तुम सबको, तुम

सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग ॥ 7 ॥

पदार्थ - **इदम्** = यह, इसको (सर्वनाम)। **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **आपो** = आप, व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)। **हृदयम्** = हृदय को (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)। **अयम्** = यह (सर्वनाम)। **वत्सः** = बोलने वाले (वद् - वच्- बोलना)। **ऋतावरीः** = ऋत का रक्षक (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना, अव - रक्षा करना)। **इह** = इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **इत्थम्** = इस प्रकार (अव्यय)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **इत** = पाये, गति, ज्ञान, प्रकाश प्राप्त किया (इ - जाना, जानना, पाना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)। **शक्वरीः** = शक्तिवान्, क्षमयुक्त, सामर्थ्ययुक्त (शक् - शक्तिमान् होना, समर्थ होना, सक्षम होना, कर सकना, सहना, सहन करना)। **यत्र** = जहाँ (सर्वनाम)। **इदम्** = यह, इसको (सर्वनाम)। **वेशयामि** = प्रवेश करता हूँ (विश - भीतर जाना, चारों ओर फैलना)। **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम) ॥ 7 ॥

85. गोष्ठ सूक्त - 14

459. सम् वो गोष्ठेन सुषदा,
सम् रय्या सम् सुभूत्या।
अहः जातस्य यत् नाम तेना,
वः सम् सृजामसि ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **गोष्ठेन** = गोष्ठ द्वारा, गो के स्थान, शब्द करने वालों, मननशीलों, उपदेशकों के समूह से **सुषदा** = सद्विद्या, सुपथ **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **रय्या** = विद्या, ज्ञान **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **सुभूत्या** = सुभूत द्वारा, उत्तम उत्पन्न द्वारा **अहः** = व्यापक **जातस्य** = उत्पन्न हुए का **यत्** = जिसे, जो **नाम** = नाम वाले **तेना** = उससे, उसके द्वारा **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **सृजामसि** = त्याग, रचना, उत्पन्न करते हैं ॥ 1 ॥

पदार्थ - **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **गोष्ठेन** = गोष्ठ द्वारा, गो के स्थान, शब्द करने वालों, मननशीलों, उपदेशकों के समूह से (गोष्ठ - मिलकर रहना, एकत्र करना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, स्था - स्थित होना, ठहरना)। **सुषदा** = सद्विद्या, सुपथ (सु - अच्छा, सुन्दर, सद् = जाना, जानना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **रय्या** = विद्या, ज्ञान (रय्-रि, री - चलना, जाना, जानना, पाना, री-रै - शब्द करना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **सुभूत्या** = सुभूत द्वारा, उत्तम उत्पन्न द्वारा (सु = अच्छा (उपसर्ग), भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **अहः** = व्यापक (अह् = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना)। **जातस्य** = उत्पन्न हुए का (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **नाम** = नाम वाले (अव्यय)। **तेना** = उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **सृजामसि** = त्याग, रचना, उत्पन्न करते हैं (सृज - त्याग करना, उत्पन्न करना, रचना करना) ॥ 1 ॥

460. सम् वः सृजतु अर्यमा,
सम् पूषा सम् बृहस्पतिः।
सम् इन्द्रो यो धनञ्जयो,
मयि पुष्यत यत् वसु ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **सृजतु** = सृजन करें **अर्यमा** = अर्यमा, ज्ञानी **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **पूषा** = पोषण करने वाला, पोषणकर्ता **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **बृहस्पतिः** = बृहस्पति, महान्, बृहत् का स्वामी **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **इन्द्रो** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान **यो** = जो **धनञ्जयो** = धन जीतने वाले **मयि** = मुझमें **पुष्यत** = पुष्ट, पोषित करो **यत्** = जिसे, जो **वसु** = वसु, निवास करने, वास देने वाले ॥ 2 ॥

पदार्थ - **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **सृजतु** = सृजन करें (सृज् - छोड़ना, त्याग करना, विविध रूप से उत्पन्न करना, रचना करना)। **अर्यमा** = अर्यमा, ज्ञानी (ऋ - जाना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना, पहुँचाना, अर्-ऋ - गति करना, जाना, जानना, पाना, शब्द करना, व्याप्त होना, मिलाना, महत्व दिखाना, हिंसा करना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **पूषा** = पोषण करने वाला, पोषणकर्ता (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, पूष - बढ़ना, अधिक होना, पोषण करना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **बृहस्पतिः** = बृहस्पति, महान्, बृहत् का स्वामी (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना, पत् - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना, नीचे जाना, गिरना, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **इन्द्रो** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **धनञ्जयो** = धन जीतने वाले (धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना, जि - जीतना, पराभव करना)। **मयि** = मुझमें (सर्वनाम)। **पुष्यत** = पुष्ट, पोषित करो (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, रक्षण करना, वृद्धि करना, विभाग करना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **वसु** = वसु, निवास करने, वास देने वाले (वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना) ॥ 2 ॥

461. सम्-जग्मानाः अबिभ्युषीः,
अस्मिन् गोष्ठे करीषिणीः।
बिभ्रतीः सोम्यम् मधु,
अनमीवाः उप एतन ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - **सम्-जग्मानाः** = सम्यक् गतिमान, सम्यक् जाने योग्य **अबिभ्युषीः** = निर्भयी **अस्मिन्** = इस, इसमें **गोष्ठे** = गोष्ठ में, गो के स्थान में, शब्द करने वालों, मननशीलों, उपदेशकों के समूह में **करीषिणीः** = करते हुए **बिभ्रतीः** = भरण, धारण करती हुई **सोम्यम्** = सौम्य को, ऐश्वर्य को **मधु** = मीठा, मधु **अनमीवाः** = निरोगी, रोगमुक्त, शब्दहीन, निःशब्द **उप** = समीप **एतन** = प्राप्त हो, आओ ॥ 3 ॥

पदार्थ - **सम्-जग्मानाः** = सम्यक् गतिमान, सम्यक् जाने योग्य (सम् - सम्यक्, जग् = गति करना, लेना, घर्षण करना)। **अबिभ्युषीः** = निर्भयी (अ - नहीं, भी - डरना)। **अस्मिन्** = इस, इसमें (सर्वनाम)। **गोष्ठे** = गोष्ठ में, गो के स्थान में, शब्द करने वालों, मननशीलों, उपदेशकों के समूह में (गोष्ठ - मिलकर रहना, एकत्र करना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, स्था - स्थित होना, ठहरना)। **करीषिणीः** = करते हुए (कृ - करना)। **बिभ्रतीः** = भरण, धारण करती हुई (भृ- भरना, भरण करना, धारण करना)। **सोम्यम्** = सौम्य को, ऐश्वर्य को (सु = उत्पन्न करना, अद्भुत सामर्थ्य, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना। सू = प्रेरणा देना। सो–स्य, सय् - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना)। **मधु** = मीठा, मधु (मध् = मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना, मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)। **अनमीवाः** = निरोगी, रोगमुक्त, शब्दहीन, निःशब्द (अन् - नहीं, अम् - गति करना, जानना, जाना, पाना, शब्द करना, खाना, सेवा करना, रोग होना)। **उप** = समीप (उपसर्ग)। **एतन** = प्राप्त हो, आओ (इ = जाना, पाना) ॥ 3 ॥

462. इह एव गावः आ इतन,

इहो शका-इव पुष्यत।
इह एव उत प्र जायध्वम्,
मयि सम्-ज्ञानम् अस्तु वः ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - **इह** = इसमें, यहां, यह **एव** = ही **गावः** = शब्द, वाणी, वचन **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **इतन** = पाये, गति, ज्ञान, प्रकाश प्राप्त किया **इहो** = गये **शका-इव** = सक्षम, समर्थ के समान **पुष्यत** = पुष्ट, पोषित करो **इह** = इसमें, यहां, यह **एव** = ही **उत** = ही, भी, ओर **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक **जायध्वम्** = उत्पन्न हो **मयि** = मुझमें **सम्-ज्ञानम्** = सम्-ज्ञान को, संज्ञान को, सम्यक् ज्ञान को **अस्तु** = हो **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग ॥ **4** ॥

पदार्थ - **इह** = इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **एव** = ही (अव्यय)। **गावः** = शब्द, वाणी, वचन (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **इतन** = पाये, गति, ज्ञान, प्रकाश प्राप्त किया (इ - जाना, जानना, पाना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)। **इहो** = गये (इ = जाना, जानना, पाना)। **शका-इव** = सक्षम, समर्थ के समान (शक् - सक्षम होना, कर सकना, सहना, सहन करना, इव = समान, की भाँति, के समान (अव्यय))। **पुष्यत** = पुष्ट, पोषित करो (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, रक्षण करना, वृद्धि करना, विभाग करना)। **इह** = इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **एव** = ही (अव्यय)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **जायध्वम्** = उत्पन्न हो (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **मयि** = मुझमें (सर्वनाम)। **सम्-ज्ञानम्** = सम्-ज्ञान को, संज्ञान को, सम्यक् ज्ञान को (सम् - सम्यक्, भलीभाँति, ज्ञा = जानना)। **अस्तु** = हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम) ॥ **4** ॥

463. शिवो वो गोष्ठो भवतु,
शारिशाकेव पुष्यत।
इह एव उत प्र जायध्वम्,
मया वः सृजामसि ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ - **शिवो** = कल्याणकारी **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **गोष्ठो** = गोष्ठ, गो के स्थान, शब्द करने वाले, मननशील, उपदेशकों के समूह **भवतु** = हो, हो जाये **शारिशाकेव** = शारि-शाका के समान, प्रगति-शक्तिदाता के समान **पुष्यत** = पुष्ट, पोषित करो **इह** = इसमें, यहां, यह **एव** = ही **उत** = ही, भी, ओर **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक **जायध्वम्** = उत्पन्न हो **मया** = मेरे द्वारा **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **सृजामसि** = त्याग, रचना, उत्पन्न करते हैं ॥ **5** ॥

पदार्थ - **शिवो** = कल्याणकारी (शिव् = कल्याण करना)। **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **गोष्ठो** = गोष्ठ, गो के स्थान, शब्द करने वाले, मननशील, उपदेशकों के समूह (गोष्ठ - मिलकर रहना, एकत्र करना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, स्था - स्थित होना, ठहरना)। **भवतु** = हो, हो जाये (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **शारिशाकेव** = शारि-शाका के समान, प्रगति-शक्तिदाता के समान (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, शृ - मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना, शक्-शक्व - शक्तिमान् होना, समर्थ होना, सकना, इव = समान, की भाँति, के समान (अव्यय))। **पुष्यत** = पुष्ट, पोषित करो (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, रक्षण करना, वृद्धि करना, विभाग करना)। **इह** = इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **एव** = ही (अव्यय)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **जायध्वम्** = उत्पन्न हो (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **मया** = मेरे द्वारा (सर्वनाम)। **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **सृजामसि** = त्याग, रचना,

उत्पन्न करते हैं (सृज - त्याग करना, उत्पन्न करना, रचना करना) ॥ 5 ॥

464. मया गावो गोपतिना सचध्वम्,
अयम् वो गोष्ठः इह पोषयिष्णुः।
रायः पोषेण बहुला भवन्तीः,
जीवा जीवन्तीः उप वः सदेम ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ - **मया** = मेरे द्वारा **गावो** = शब्द, वाणी, वचन **गोपतिना** = गोपति द्वारा, सुरक्षा, शब्द करने वाले, मननशील, उपदेशक द्वारा **सचध्वम्** = अभिसिञ्चन हो **अयम्** = यह **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **गोष्ठः** = गोष्ठ, गो के स्थान, शब्द करने वाले, मननशील, उपदेशकों के समूह **इह** = इसमें, यहां, यह **पोषयिष्णुः** = पोषण करे **रायः** = गति, विद्या, वाणी **पोषेण** = पुष्टि द्वारा, पुष्टिकर्ता द्वारा **बहुला** = बहुल **भवन्तीः** = होते हुए **जीवा** = जीव **जीवन्तीः** = जीवित रहते हुए **उप** = समीप **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **सदेम** = स्थित हों ॥ 6 ॥

पदार्थ - **मया** = मेरे द्वारा (सर्वनाम)। **गावो** = शब्द, वाणी, वचन (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)। **गोपतिना** = गोपति द्वारा, सुरक्षा, शब्द करने वाले, मननशील, उपदेशक द्वारा (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, गुप् = रक्षा करना, चमकना, बोलना, पत् - श्री मान् होना, अमानवी पराक्रम करना)। **सचध्वम्** = अभिसिञ्चन हो (सच् = सिञ्चन करना, सेवा करना, सन्तुष्ट करना, जानना, पूर्णतया समझना, सम्बन्धी होना)। **अयम्** = यह (सर्वनाम)। **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **गोष्ठः** = गोष्ठ, गो के स्थान, शब्द करने वाले, मननशील, उपदेशकों के समूह (गोष्ठ - मिलकर रहना, एकत्र करना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, स्था - स्थित होना, ठहरना)। **इह** = इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **पोषयिष्णुः** = पोषण करे (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, पूष - बढ़ना, अधिक होना, पोषण करना)। **रायः** = गति, विद्या, वाणी (रा-देना, लेना, ग्रहण करना, रय् = जाना, जानना, पाना, रै = शब्द करना)। **पोषेण** = पुष्टि द्वारा, पुष्टिकर्ता द्वारा (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, पूष - बढ़ना, अधिक होना, पोषण करना)। **बहुला** = बहुल (सर्वनाम)। **भवन्तीः** = होते हुए (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **जीवा** = जीव (जीव् - जीवन होना, प्राणवान् होना, प्राण धारण करना, जीवन धारण करना)। **जीवन्तीः** = जीवित रहते हुए (जीव् = जीवन होना, प्राणवान् होना, प्राण धारण करना, जीवन धारण करना)। **उप** = समीप (उपसर्ग)। **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **सदेम** = स्थित हों (सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना) ॥ 6 ॥

86. वाणिज्य सूक्त - 15

465. इन्द्रम् अहम् वणिजम् चोदयामि,
स नः आ एतु पुरएता नो अस्तु।
नुदन् अरातिम् परिपन्थिनम् मृगम्,
सः ईशानो धनदाः अस्तु मह्यम् ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - **इन्द्रम्** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान को **अहम्** = मैं **वणिजम्** = शब्द, प्रेरणा करने वाले को **चोदयामि** = प्रेरित करता हूँ, प्रेरण करता हूँ **स** = वह, उसने **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **एतु** = प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे **पुरएता** = अग्र-गमनशील **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा **अस्तु** = हो **नुदन्** = भेजे, प्रेरणा दे **अरातिम्** = अदानी को **परिपन्थिनम्** = परिपन्थी को, सब ओर से धारण करने वाले को **मृगम्** = मृग, अन्वेषी को **सः** = वह, उसने **ईशानो** = अधिकार करने वाला, शासन करने वाला **धनदाः** = धन देने वाले **अस्तु** = हो **मह्यम्** = मेरे लिए ॥ 1 ॥

पदार्थ - **इन्द्रम्** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान को (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **अहम्** = मैं (सर्वनाम)। **वणिजम्** = शब्द, प्रेरणा करने वाले को (वण् - शब्द करना, नुद् = भेजना, प्रेरणा करना, जाना)। **चोदयामि** = प्रेरित करता हूँ, प्रेरण करता हूँ (चुद - प्रेरणा करना, पूछना, प्रश्न करना, प्रार्थना करना)। **स** = वह, उसने (सर्वनाम)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **एतु** = प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना, इच्छा करना, प्रेरणा करना, ए - जाना, फैलना, व्यापना, गर्भवती होना, इच्छा करना, चाहना, खाना, उड़ाना, फेंकना, भेजना, प्रेरणा करना)। **पुरएता** = अग्र-गमनशील (पुरो = पहले, अव्यय, आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना, इच्छा करना, प्रेरणा करना, ए - जाना, फैलना, व्यापना, गर्भवती होना, इच्छा करना, चाहना, खाना, उड़ाना, फेंकना, भेजना, प्रेरणा करना)। **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **अस्तु** = हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **नुदन्** = भेजे, प्रेरणा दे (नुद् = भेजना, प्रेरणा करना, जाना)। **अरातिम्** = अदानी को (अ - नहीं, रा = देना, रम् - रमना, रमण करना, रम जाना, रत होना, क्रीडा करना, प्रिय होना, मूल्यवान होना)। **परिपन्थिनम्** = परिपन्थी को, सब ओर से धारण करने वाले को (परि = सभी तरफ, उपसर्ग, पन्थ् - जाना, घूमना)। **मृगम्** = मृग, अन्वेषी को (मृग् - अन्वेषण करना, खोजना, आखेट करना)। **सः** = वह, उसने (सर्वनाम)। **ईशानो** = अधिकार करने वाला, शासन करने वाला (ईश = ऐश्वर्य-अधिकार होना)। **धनदाः** = धन देने वाले (धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना, जि - जीतना, पराभव करना, दा - देना, दान करना)। **अस्तु** = हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **मह्यम्** = मेरे लिए (सर्वनाम) **॥ 1 ॥**

466. ये पन्थानो बहवो देवयानाः,
अन्तरा द्यावापृथिवी सम्-चरन्ति।
ते मा जुषन्ताम् पयसा घृतेन,
यथा क्रीत्वा धनम् आहराणि ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - **ये** = जो **पन्थानो** = पथ, मार्ग **बहवो** = बहुत **देवयानाः** = देवयान **अन्तरा** = प्राणवान्, अन्तर, भीतर **द्यावापृथिवी** = अग्रगामी विस्तार, प्रकाश, द्यावा और पृथिवी **सम्-चरन्ति** = सम्यक् विचरण करते हैं, सम्यक् चलते हैं **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **मा** = नहीं, मत **जुषन्ताम्** = सेवा करें **पयसा** = पयस् द्वारा, विस्तार द्वारा, गतिशील, प्रवाहमान द्वारा **घृतेन** = अभिसिञ्चित द्वारा, प्रकाशमान द्वारा (घृ - चमकना, प्रकाश करना, सिञ्चन करना, गीला करना, टपकना, बूंद बूंद गिरना, क्षरित होना, क्षरण होना, झरना, घर्षण होना, नाश होना, शब्द होना)। **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार (अव्यय)। **क्रीत्वा** = क्रय द्वारा (क्री - खरीदना, बदले में लेना, जीतना)। **धनम्** = धन को (धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)। **आहराणि** = आहरण में (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, अह - फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, हृ = हरण करना, ले जाना) **॥ 2 ॥**

पदार्थ - **ये** = जो (सर्वनाम)। **पन्थानो** = पथ, मार्ग (पथ, पन्थ् - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना, घूमना, फेंकना, त्यागना)। **बहवो** = बहुत (सर्वनाम)। **देवयानाः** = देवयान (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना, या - जाना, जानना, प्राप्त होना, पहुँचना)। **अन्तरा** = प्राणवान्, अन्तर, भीतर (अन् = प्राण होना, अन्त् - बाँधना, हिंसा करना, चलना, अन्तः - बीच में, अन्तर, भीतर, इतर, अन्य (अव्यय))। **द्यावापृथिवी** = अग्रगामी विस्तार, प्रकाश, द्यावा और पृथिवी (द्यु - आगे जाना, समीप जाना, द्युत् -दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, द्यै = तिरस्कार करना, पृथु = विस्तार होना, फेंकना, उड़ाना, भेजना, प्रेरणा करना)। **सम्-चरन्ति** = सम्यक् विचरण करते हैं, सम्यक् चलते हैं (सम् - सम्यक्, चर - जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **मा** = नहीं, मत (अव्यय)। **जुषन्ताम्** = सेवा करें (जुष् = विचार करना, सेवा करना, सेवन करना, विवेक होना, विवेचना करना, प्रीति करना, चाहना, दुलारना,

सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना)। **पयसा** = पयस् द्वारा, विस्तार द्वारा, गतिशील, प्रवाहमान द्वारा (पय् = जाना, जानना, पाना, बहना, पयस् = विस्तार करना, फैलाना)। **घृतेन** = अभिसिञ्चित द्वारा, प्रकाशमान द्वारा (घृ - चमकना, प्रकाश करना, सिञ्चन करना, गीला करना, टपकना, बूंद बूंद गिरना, क्षरित होना, क्षरण होना, झरना, घर्षण होना, नाश होना, शब्द होना)। **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार (अव्यय)। **क्रीत्वा** = क्रय द्वारा (क्री - खरीदना, बदले में लेना, जीतना)। **धनम्** = धन को (धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)। **आहराणि** = आहरण में (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, अह - फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, हृ = हरण करना, ले जाना) **॥ 2 ॥**

467. इध्मेन अग्ने इच्छमानो घृतेन,
जुहोमि हव्यम् तरसे बलाय।
यावत् ईशे ब्रह्मणा वन्दमानः,
इमाम् धियम् शतसेयाय देवीम् ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - **इध्मेन** = प्रकाशक, गति, ज्ञान, प्रकाश द्वारा **अग्ने** = हे अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् **इच्छमानो** = इच्छा करने वाला **घृतेन** = अभिसिञ्चित द्वारा, प्रकाशमान द्वारा **जुहोमि** = दान करते हैं, आदान-प्रदान करते हैं **हव्यम्** = आदान-प्रदान करने योग्य को, हव्य को, देय को **तरसे** = तरण के लिए, पार करने, वेगवान्, जीतने के लिए **बलाय** = बल के लिए **यावत्** = जितना, जब तक **ईशे** = अधिकार किया, शासन किया, शासन करता है **ब्रह्मणा** = ब्रह्म द्वारा **वन्दमानः** = वन्दमान, वन्दन करने वाले **इमाम्** = इसको, इस **धियम्** = धारणा शक्ति, बुद्धि को **शतसेयाय** = शत-सेय के लिए **देवीम्** = देवियों को **॥ 3 ॥**

पदार्थ - **इध्मेन** = प्रकाशक, गति, ज्ञान, प्रकाश द्वारा (इ - जाना, जानना, पाना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)। **अग्ने** = हे अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **इच्छमानो** = इच्छा करने वाला (इच्छ = इच्छा करना, कामना करना, चाहना)। **घृतेन** = अभिसिञ्चित द्वारा, प्रकाशमान द्वारा (घृ - चमकना, प्रकाश करना, सिञ्चन करना, गीला करना, टपकना, बूंद बूंद गिरना, क्षरित होना, क्षरण होना, झरना, घर्षण होना, नाश होना, शब्द होना)। **जुहोमि** = दान करते हैं, आदान-प्रदान करते हैं (हु-जुहु = दान करना, आदान-प्रदान करना, ग्रहण करना, तृप्त करना, जु - जाना, शीघ्र जाना, भागना)। **हव्यम्** = आदान-प्रदान करने योग्य को, हव्य को, देय को (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **तरसे** = तरण के लिए, पार करने, वेगवान्, जीतने के लिए (तृ - पार जाना, पर तीर को जाना, जल पर तैरना, जीतना, जल के पार जाना)। **बलाय** = बल के लिए (बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना)। **यावत्** = जितना, जब तक (सर्वनाम)। **ईशे** = अधिकार किया, शासन किया, शासन करता है (ईश - अधिकार होना)। **ब्रह्मणा** = ब्रह्म द्वारा (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **वन्दमानः** = वन्दमान, वन्दन करने वाले (वन्द् = स्तुति करना, प्रणाम करना, वन्दना करना, प्रशंसा करना)। **इमाम्** = इसको, इस (सर्वनाम)। **धियम्** = धारणा शक्ति, बुद्धि को (धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना, धि = धारण करना, युक्त होना)। **शतसेयाय** = शत-सेय के लिए (शतम् = सौ, सय्, सो, स्य = विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना)। **देवीम्** = देवियों को (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना) **॥ 3 ॥**

468. इमाम् अग्ने शरणिम् मीमृषो,
नो यम् अध्वानम् अगाम दूरम्।
शुनम् नो अस्तु प्रपणो विक्रयः,
च प्रतिपणः फलिनम् मा कृणोतु।
इदम् हव्यम् सम्-विदानौ जुषेथाम् शुनम्,

नो अस्तु चरितम् उत्थितम् च ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - **इमाम्** = इसको, इस **अग्ने** = हे अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् **शरणिम्** = शरणि को **मीमृषो** = सहन, क्षमा, विचार किया **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ **अध्वानम्** = अकम्पन को, मार्ग को **अगाम** = भ्रमण किया, गया, प्राप्त किया, स्तुति की **दूरम्** = दूर **शुनम्** = प्रगतिशील, विद्वान् को **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा **अस्तु** = हो **प्रपणो** = प्रपणिगण, स्तुतिकर्ता, उद्योगी, व्यवहारी **विक्रयः** = विशेष आदान-प्रदान करने वाला, विक्री करने वाला **च** = और **प्रतिपणः** = प्रतिपण, प्रत्येक स्तुतिकर्ता, उद्योगी, व्यवहारी **फलिनम्** = फल को **मा** = नहीं, मत **कृणोतु** = करो **इदम्** = यह, इसको **हव्यम्** = आदान-प्रदान करने योग्य को, हव्य को, देय को **सम्-विदानौ** = युगल विद्वान् **जुषेथाम्** = विचारशील हो, सेवाशील हो, प्रसन्नता देने वाला हो **शुनम्** = प्रगतिशील, विद्वान् को **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा **अस्तु** = हो **चरितम्** = चरित को, विचरण करने वाले को **उत्थितम्** = उत्थित को, उठे हुए को **च** = और **॥ 4 ॥**

पदार्थ - **इमाम्** = इसको, इस (सर्वनाम)। **अग्ने** = हे अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **शरणिम्** = शरणि को (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मारना, श्रि - सेवा करना, आश्रय करना)। **मीमृषो** = सहन, क्षमा, विचार किया (मृष - सहन करना, क्षमा करना, मृश - विचार करना, स्पर्श करना, देखना)। **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ (सर्वनाम)। **अध्वानम्** = अकम्पन को, मार्ग को (अ - नहीं, धू = कम्पन करना, अधु = चलना, विचरण करना)। **अगाम** = भ्रमण किया, गया, प्राप्त किया, स्तुति की (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अग् = जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, गति करना, घूमना, कुटिल गति करना, टेढ़ा जाना, लेना, ग्रहण करना, गम् = जाना, जानना, पाना, गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना)। **दूरम्** = दूर (अव्यय)। **शुनम्** = प्रगतिशील, विद्वान् को (शुन = जाना, जानना, पाना)। **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **अस्तु** = हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **प्रपणो** = प्रपणिगण, स्तुतिकर्ता, उद्योगी, व्यवहारी (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, पण् = व्यवहार करना, उद्योग करना, व्यापार करना, स्तुति करना)। **विक्रयः** = विशेष आदान-प्रदान करने वाला, विक्री करने वाला (वि = विशेष, विविध, विना, विलोम (उपसर्ग), क्री- खरीदना, बदले में लेना)। **च** = और (अव्यय)। **प्रतिपणः** = प्रतिपण, प्रत्येक स्तुतिकर्ता, उद्योगी, व्यवहारी (प्रति = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग), पण् = व्यवहार करना, उद्योग करना, व्यापार करना, स्तुति करना)। **फलिनम्** = फल को (फल् - फलित होना, उत्पन्न होना, जाना, विभाग करना)। **मा** = नहीं, मत (अव्यय)। **कृणोतु** = करो (कृ = करना)। **इदम्** = यह, इसको (सर्वनाम)। **हव्यम्** = आदान-प्रदान करने योग्य को, हव्य को, देय को (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **सम्-विदानौ** = युगल विद्वान् (सम् - सम्यक्, सम् - न घबराना, एक समान रहना, विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)। **जुषेथाम्** = विचारशील हो, सेवाशील हो, प्रसन्नता देने वाला हो (जुष् = विचार करना, सेवा करना, सेवन करना, विवेक होना, विवेचना करना, प्रीति करना, चाहना, दुलारना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना)। **शुनम्** = प्रगतिशील, विद्वान् को (शुन = जाना, जानना, पाना)। **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **अस्तु** = हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **चरितम्** = चरित को, विचरण करने वाले को (चर - जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)। **उत्थितम्** = उत्थित को, उठे हुए को (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, तिष्ठ् = ठहरना, उत् - तिष्ठ् - उठना, खड़े होना)। **च** = और (अव्यय) **॥ 4 ॥**

469. येन धनेन प्रपणम् चरामि,
धनेन देवा धनम् इच्छमानः।
तत् मे भूयो भवतु मा कनीयो,
अग्ने सातघ्नो देवान् हविषा नि षेध ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ - **येन** = जिससे, जिसके द्वारा **धनेन** = धन द्वारा **प्रपणम्** = प्रपणिगण, स्तुतिकर्ता, उद्योगी, व्यवहारी को **चरामि** = विचरण करता हूँ **धनेन** = धन द्वारा **देवा** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण **धनम्** = धन को **इच्छमानः** = इच्छा करने वाला **तत्** = वह, उस को **मे** = मेरा, मेरे लिए **भूयो** = पुनः, बहुत, अतिशय **भवतु** = हो, हो जाये **मा** = नहीं, मत **कनीयो** = कनीय, प्रकाश करने वाला **अग्ने** = हे अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् **सातघ्नो** = सातघ्न वाले **देवान्** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों को **हविषा** = हविष् द्वारा, दान व आदान-प्रदान द्वारा **नि** = निश्चित, निरन्तर **षेध** = सिद्ध हो **॥ 5 ॥**

पदार्थ - **येन** = जिससे, जिसके द्वारा (सर्वनाम)। **धनेन** = धन द्वारा (धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)। **प्रपणम्** = प्रपणिगण, स्तुतिकर्ता, उद्योगी, व्यवहारी को (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, पण् = व्यवहार करना, उद्योग करना, व्यापार करना, स्तुति करना)। **चरामि** = विचरण करता हूँ (चर -जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)। **धनेन** = धन द्वारा (धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)। **देवा** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **धनम्** = धन को (धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)। **इच्छमानः** = इच्छा करने वाला (इच्छ = इच्छा करना, कामना करना, चाहना)। **तत्** = वह, उस को (सर्वनाम)। **मे** = मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **भूयो** = पुनः, बहुत, अतिशय (अव्यय)। **भवतु** = हो, हो जाये (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **मा** = नहीं, मत (अव्यय)। **कनीयो** = कनीय, प्रकाश करने वाला (कन् - व्याप्त होना, प्रकाश करना, प्रीति करना, तृप्त होना, जाना, जानना, पाना, चाहना)। **अग्ने** = हे अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **सातघ्नो** = सातघ्न वाले (स - सहित, साथ, अत् = सतत् गति करना, हन् = मार डालना, प्राप्त करना, जाना, किसी प्रकार समाप्त करना)। **देवान्** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों को (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **हविषा** = हविष् द्वारा, दान व आदान-प्रदान द्वारा (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **नि** = निश्चित, निरन्तर (अव्यय)। **षेध** = सिद्ध हो (सिध् = जाना, सिद्ध होना) **॥ 5 ॥**

470. येन धनेन प्रपणम् चरामि,
धनेन देवा धनम् इच्छमानः।
तस्मिन् मे इन्द्रो रुचिम् आ दधातु,
प्रजापतिः सविता सोमो अग्निः ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ - **येन** = जिससे, जिसके द्वारा **धनेन** = धन द्वारा **प्रपणम्** = प्रपणिगण, स्तुतिकर्ता, उद्योगी, व्यवहारी को **चरामि** = विचरण करता हूँ **धनेन** = धन द्वारा **देवा** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण **धनम्** = धन को **इच्छमानः** = इच्छा करने वाला **तस्मिन्** = उसमें **मे** = मेरा, मेरे लिए **इन्द्रो** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान **रुचिम्** = रुचि को, प्रकाश को **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **दधातु** = धारण करे **प्रजापतिः** = प्रजापति, प्रजा का रक्षक, पालक **सविता** = सृष्टिकर्ता, उत्पन्न करने वाला, ऐश्वर्यवान् तथा ऐश्वर्य देने वाला **सोमो** = सृजन-ऐश्वर्य-अन्तकर्ता, ऐश्वर्यवान्, सृष्टिकर्ता **अग्निः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् **॥ 6 ॥**

पदार्थ - **येन** = जिससे, जिसके द्वारा (सर्वनाम)। **धनेन** = धन द्वारा (धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)। **प्रपणम्** = प्रपणिगण, स्तुतिकर्ता, उद्योगी, व्यवहारी को (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, पण् = व्यवहार करना, उद्योग करना, व्यापार करना, स्तुति करना)। **चरामि** = विचरण करता हूँ (चर -जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)। **धनेन** = धन द्वारा (धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)। **देवा** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण (दिव्

= तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **धनम्** = धन को (धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)। **इच्छमानः** = इच्छा करने वाला (इच्छ = इच्छा करना, कामना करना, चाहना)। **तस्मिन्** = उसमें (सर्वनाम)। **मे** = मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **इन्द्रो** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **रुचिम्** = रुचि को, प्रकाश को (रुच् - रुचना, प्रीति होना, प्रसन्न होना, उत्साह होना, प्रकाशित होना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **दधातु** = धारण करे (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)। **प्रजापतिः** = प्रजापति, प्रजा का रक्षक, पालक (प्र - प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न करना, पत - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना)। **सविता** = सृष्टिकर्ता, उत्पन्न करने वाला, ऐश्वर्यवान् तथा ऐश्वर्य देने वाला (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)। **सोमो** = सृजन-ऐश्वर्य-अन्तकर्ता, ऐश्वर्यवान्, सृष्टिकर्ता (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामथ्य, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना। सू = प्रेरणा देना। सो–स्य, सय - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना)। **अग्निः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना) ॥ 6 ॥

471. उप त्वा नमसा वयम्,
होतः वैश्वानर स्तुमः।
स नः प्रजासु आत्मसु,
गोषु प्राणेषु जागृहि ॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ - **उप** = समीप **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **नमसा** = नमन द्वारा **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग **होतः** = आह्वान्, ग्रहण, दान करने वाले **वैश्वानर** = विश्वनायक **स्तुमः** = स्तुति करते हैं **स** = वह, उसने **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा **प्रजासु** = प्रजाओं में, प्राणियों में **आत्मसु** = आत्माओं के लिए **गोषु** = गो में, शब्द करने वालों, मननशीलों, उपदेशकों में **प्राणेषु** = प्राणों के लिए **जागृहि** = जाग्रत हो ॥ 7 ॥

पदार्थ - **उप** = समीप (उपसर्ग)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **नमसा** = नमन द्वारा (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **होतः** = आह्वान्, ग्रहण, दान करने वाले (हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)। **वैश्वानर** = विश्वनायक (विश्व - सब, नृ - चलना, ले जाना, विनय होना)। **स्तुमः** = स्तुति करते हैं (स्तु - स्तुति करना, प्रशंसा करना, अर्चा करना, सेवा करना, भजन करना)। **स** = वह, उसने (सर्वनाम)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **प्रजासु** = प्रजाओं में, प्राणियों में (प्र - बहुत, प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जन्म होना)। **आत्मसु** = आत्माओं के लिए (आत् = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (वैदिक उपसर्ग), आत् - होना, चिरन्तन होना, नित्य होना, चेतन होना, मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना, अत् - सतत गमन करना, निरन्तर चलना, सतत चलना, जानना, पाना)। **गोषु** = गो में, शब्द करने वालों, मननशीलों, उपदेशकों में (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)। **प्राणेषु** = प्राणों के लिए (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अन- जीवन होना, चेतन होना, प्रा- पूर्ण करना, तृप्त करना)। **जागृहि** = जाग्रत हो (जागृ - जगना, नींद न लेना) ॥ 7 ॥

472. विश्वाहा ते सदम् इत् भरेम,
अश्वाय इव तिष्ठते जातवेदः।
रायः पोषेण सम् इषा मदन्तो,
मा ते अग्ने प्रतिवेशा रिषाम ॥ 8 ॥

मन्त्रार्थ - **विश्वाहा** = सभी, सबका हनन करने वाला **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **सदम्** = बैठने वाले को, सदन,

स्थान को **इत्** = ही **भरेम** = भरण करते हैं **अश्वाय** = अश्व के लिए, अश्व, तीव्र गति युक्त, व्यापक **इव** = समान, की भाँति, के समान **तिष्ठते** = स्थित है, ठहरा है, खड़ा है **जातवेदः** = विद्वान्, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले **रायः** = गति, विद्या, वाणी **पोषेण** = पुष्टि द्वारा, पुष्टिकर्ता द्वारा **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **इषा** = इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि **मदन्तो** = हर्षित, तृप्त **मा** = नहीं, मत **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **अग्ने** = हे अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् **प्रतिवेशा** = प्रवेशी, प्रतिष्ठित **रिषाम** = हिंसा करें ॥ 8 ॥

पदार्थ - **विश्वाहा** = सभी, सबका हनन करने वाला (विश्व = सब, (सर्वनाम)। हन् - मारना, हिंसा करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **सदम्** = बैठने वाले को, सदन, स्थान को (सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)। **इत्** = ही (अव्यय)। **भरेम** = भरण करते हैं (भृ = पूर्ण करना, भरना, धारण-पोषण करना)। **अश्वाय** = अश्व के लिए, अश्व, तीव्र गति युक्त, व्यापक (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)। **इव** = समान, की भाँति, के समान (अव्यय)। **तिष्ठते** = स्थित है, ठहरा है, खड़ा है (तिष्ठ् = ठहरना, खड़ा होना)। **जातवेदः** = विद्वान्, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले (जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जा-ज्ञा - जानना, विद् - जानना)। **रायः** = गति, विद्या, वाणी (रा-देना, लेना, ग्रहण करना, रय् = जाना, जानना, पाना, रै = शब्द करना)। **पोषेण** = पुष्टि द्वारा, पुष्टिकर्ता द्वारा (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, पूष - बढ़ना, अधिक होना, पोषण करना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **इषा** = इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि (इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना)। **मदन्तो** = हर्षित, तृप्त (मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)। **मा** = नहीं, मत (अव्यय)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **अग्ने** = हे अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **प्रतिवेशा** = प्रवेशी, प्रतिष्ठित (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में, विश - भीतर जाना, चारों ओर फैलना, विश - घुसना, भीतर जाना, धंसना)। **रिषाम** = हिंसा करें (रिश्-रिष - हिंसा करना, मार डालना या दुःख देना, मारने का यत्न करना) ॥ 8 ॥

16. अनुवाक - 4

87. कल्याणार्थ-प्रार्थना सूक्त - 16

473. प्रातः अग्निम् प्रातः इन्द्रम् हवामहे,
प्रातः मित्रावरुणा प्रातः अश्विना।
प्रातः भगम् पूषणम् ब्रह्मणः पतिम्,
प्रातः सोमम् उत रुद्रम् हवामहे ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ- **प्रातः** प्रातः **अग्निम्** अग्नि का, **प्रातः** प्रातः **इन्द्रम्** इन्द्र, **प्रातः** प्रातः **मित्रावरुणा** मित्र-वरुण, **प्रातः** प्रातः **अश्विना** अश्विना का **हवामहे** आह्वान करते हैं। **प्रातः** प्रातः **भगम्** भग, **पूषणम्** पूषण, **ब्रह्मणः-पतिम्** ब्रह्मण-पति, **प्रातः** प्रातः **सोमम्** सोम, **प्रातः** प्रातः **रुद्रम्** रुद्र का **हवामहे** आह्वान करते हैं ॥ 1 ॥

भावार्थ- भग्-भज् धातु का अर्थ देना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना आदि हैं। भगवन्त होने का शाब्दिक अर्थ इन गुणों क्षमताओं से युक्त होना है। वेद तथा अन्य अध्यात्म साहित्य में इसका भावार्थ आध्यात्मिक गुणों से युक्त होना लिया जाता है। प्रातःकाल विभिन्न देवशक्तियों का स्मरण, आह्वान करने का सन्देश है।

पदार्थ :- प्रातः = प्रातः, सुबह, सवेरे। **अग्निम्** = अग्नि को, ऊर्ध्वगामी को (अग् - अगि = गति करना, आगे जाना)। **प्रातः** = प्रातः, सुबह, सवेरे। **इन्द्रम्** = इन्द्र को (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **हवामहे** = आह्वान करते हैं, आदान- प्रदान करते हैं (हु = देना, आदान-प्रदान करना, ह्वे - आह्वान करना)। **प्रातः** = प्रातः, सुबह, सवेरे। **मित्रावरुणा** = मित्र-वरुण का (मित्र + वरुण, मिद् = प्रीत होना, वृ = वरण करना, अपनाना, पसन्द करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)।

प्रातः = प्रातः, सुबह, सवेरे। **अश्विना** = व्यापक (अश = व्यापक होना)। **प्रातः** = प्रातः, सुबह, सवेरे। **भगम्** = भग (भग्-भज् = देना, दान करना, पकाना, अलग करना, भजन करना)। **पूषणम्** = पोषण करने वाला (पूष - बढ़ना, अधिक होना, पोषण करना, पालन करना)। **ब्रह्मणः** = ब्रह्मन् का (बृह् = बढ़ना, बड़ा होना, जानना)। **पतिम्** = ऐश्वर्यवान्, स्वामी को (पत् = ऐश्वर्य होना)। **सोमम्** = सोम को, ऐश्वर्यमय (सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना)। **उत्** = ही। **रुद्रम्** = रुद्र को (रुद् - रोना, रोते-रोते कहना)। **हवामहे** = आह्वान करते हैं (हु = देना, आदान-प्रदान करना, ह्वे - आह्वान करना) ॥ 1 ॥

474. प्रातः जितम् भगम् उग्रम् हवामहे,
वयम् पुत्रम् अदितेः यो विधर्ता।
आध्रः चित् यम् मन्यमानः तुरः चित्,
राजा चित् यम् भगम् भक्षि इति आह ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ- वयम् हम **प्रातः** प्रातः काल **जितम्** जीतने वाले **अदितेः** अदिति के **पुत्रम्** पुत्र **भगम्** भग का **हवामहे** आह्वान करते हैं **यो** जो **विधर्ता** विधर्ता (है)। **यम्** जिसको **मन्यमानः** मानते हुए **आध्रः** आध्र **चित्** भी, **तुरः** तुर (शीघ्रगामी) **चित्** भी, **राजा** राजा **चित्** भी **यम्** जिस **भगम्** भग को **भक्षि** भक्षि **इति** ऐसा **आह** कहते हैं ॥ 2 ॥

भावार्थ- भग्-भज् धातु का अर्थ देना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना आदि हैं। भगवन्त होने का शाब्दिक अर्थ इन गुणों क्षमताओं से युक्त होना है। वेद तथा अन्य अध्यात्म साहित्य में इसका भावार्थ आध्यात्मिक गुणों से युक्त होना लिया जाता है। इस अर्थ में ही वेद में भग परमात्मा का वाचक है। भग विधर्ता अर्थात् विशेष रूप से धारण करने वाला है। आध्र का अर्थ भी धारण करने वाला है। आध्र, तुर, राजा भी कहने का भाव है कि सक्षम समर्थ लोग भी जिस भग अर्थात् परमात्मा को मानते हैं। भक्षि शब्द भी भग के समान भग-भज धातु का ही क्रिया रूप है। इसका अर्थ भग प्रदान करो, ऐसा होना चाहिए। विद्वानों ने भक्षि का भावार्थ उदय करो, ऐसा भी किया है।

पदार्थ :- प्रातः = प्रातः, सुबह, सवेरे। **जितम्** = जीतने वाले को (जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)। **भगम्** = भग का (भग्-भज् = देना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजना, भजन करना)। **उग्रम्** = उग्र को। **हवामहे** = आह्वान करते हैं (हु = देना, आदान-प्रदान करना, ह्वे - आह्वान करना)। **वयम्** = हम सब, हम लोग। **पुत्रम्** = पुत्र को (पु - रक्षा करना, श्वास लेना)। **अदितेः** = अविनाशी के (अद् = खाना, अ - नहीं, दी = नष्ट होना)। **यो** = जो। **विधर्ता** = विशेष धारण करने वाले (धृ = धारण करना)। **आध्रः** = तृप्त, सन्तुष्ट (ध्रै - तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)। **चित्** = भी। **यम्** = जिसको। **मन्यमानः** = मानते हुए (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना)। **तुरः** = शीघ्रकारी, शीघ्रगामी (तुर् = शीघ्रता करना)। **राजा** = राजा (राज - दीप्त होना, शोभित होना)। **यम्** = जिसको। **भगम्** = भग को (भग्-भज् = देना, दान करना, भजना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)। **भक्षि** = ग्रहण करो, प्रदान करो (भक्ष - खाना, ग्रहण करना, भग्-भज् = देना, दान करना, भजना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)। **इति** = ऐसा। **आह** = व्याप्त किया, कहा (अह - फैलना, विस्तृत होना, व्यापना) ॥ 2 ॥

475. भग प्रणेतः भग सत्यराधो,
भग इमाम् धियम् उत् अव ददत् नः।
भग प्र नो जनय गोभिः अश्वैः,
भग प्र नृभिः नृवन्तः स्याम ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ- भग भग **प्रणेतः** प्रणेता (है), **भग** भग **सत्यराधो** सत्यराध (है)। **भग** हे भग, **नः** हमको **ददत्** देते हुए **इमाम्** इस **धियम्** बुद्धि को **अव** रक्षित करो, बढ़ाओ। **भग** हे भग, **नो** हमको **गोभिः** गो (तथा) **अश्वैः** अश्वों द्वारा **जनय** उत्पन्न

करो। **भग** हे भग, (हम) **नृभिः** नरों द्वारा (नरों के साथ) **नृवन्तः** नृवन्त (नरों से युक्त) **स्याम** हों ॥ 3 ॥

भावार्थ- भग्-भज् धातु का अर्थ देना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना आदि हैं। भगवन्त होने का शाब्दिक अर्थ इन गुणों क्षमताओं से युक्त होना है। वेद तथा अन्य अध्यात्म साहित्य में इसका भावार्थ आध्यात्मिक गुणों से युक्त होना लिया जाता है। इस अर्थ में ही वेद में भग परमात्मा का वाचक है। नरों के साथ रहते हुए नृवन्त होने की भावना में सामाजिकता का सन्देश है ॥ 3 ॥

पदार्थ :- भग = भग (भग्-भज् = देना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)। **प्रणेतः =** प्रणेता (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, नी = ले जाना, पहुँचाना)। **सत्यराधो =** सत्य की वृद्धि करने वाले (सत् = सत्य होना, अस्तित्व होना, राध - सिद्ध होना, बढ़ना, निर्णय करना)। **इमाम् =** इसको। **धियम् =** धारणा शक्ति, बुद्धि को (धी = बुद्धि, (प्रज्ञा) होना, धि = धारण करना)। **उत् =** ही। **अव =** रक्षा करो, बढ़ाओ (अव् = रक्षा करना)। **ददत् =** दान करने वाले (दद - दान करना, देना, त्याग करना)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा। **प्र =** अधिक। **नो =** हमको। **जनय =** उत्पन्न करो (जन - उत्पन्न होना, प्रकट होना)। **गोभिः =** गायों के साथ (गु - अस्पष्ट बोलना, शब्द करना, मनन करना, गा-गम् - जाना, गमन करना)। **अश्वैः =** अश्वो के साथ (अश - फैलाना, व्यापना, पहुँचना, पाना, प्राप्त करना, संग्रह करना, बटोरना, राशि करना, ढेर करना)। **नृभिः =** नरों द्वारा (नृ - ले जाना)। **नृवन्तः =** नृवन्त, नरों से युक्त (नृ- ले जाना)। **स्याम =** हों (अस् - होना) ॥ 3 ॥

476. उत इदानीम् भगवन्तः स्याम,
उत प्रपित्वे उत मध्ये अह्नाम्,
उत उदितौ मघवन् सूर्यस्य,
वयम् देवानाम् सुमतौ स्याम ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ- उत इदानीम् अब **भगवन्तः** भगवन्त **स्याम** हों। **मघवन्** हे मघवन्, **वयम्** हम **अह्नाम्** दिन के **प्रपित्वे** जाने पर (सायंकाल या रात्रि), **उत** भी, **मध्ये** मध्य में, **उत** भीं, **सूर्यस्य** सूर्य के **उदितौ** उदय में (प्रातःकाल) **उत** भी **देवानाम्** देवों की **सुमतौ** सुमति में **स्याम** रहें ॥ 4 ॥

भावार्थ - इस मन्त्र में भावना है कि हम सर्वदा - सर्वकाल में देवों की सुमति में रहें, दिव्य गुणों के अनुसार आचरण करें। सायंकाल, प्रातः काल तथा मध्य दिवस में देवों में सुमति में रहने की भावना से त्रिकाल सन्ध्या का सन्देश ग्रहण किया गया प्रतीत होता है। भग्-भज् धातु का अर्थ देना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना आदि हैं। भगवन्त होने का शाब्दिक अर्थ इन गुणों क्षमताओं से युक्त होना है। वेद तथा अन्य अध्यात्म साहित्य में इसका भावार्थ आध्यात्मिक गुणों से युक्त होना लिया जाता है ॥ 4 ॥

पदार्थ :- उत = भी। **इदानीम् =** अब, इस समय। **भगवन्तः =** भगवन्त (भग्-भज = देना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)। **स्याम =** हों (अस् - होना)। **उत =** भी। **प्रपित्वे =** जाने पर (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, पि = जाना, जानना, पाना)। **उत् =** भी। **मध्ये =** बीच में। **अह्नाम् =** (सूर्य के) व्याप्त होने के समय अर्थात् दिन में (अह - फैलना, विस्तृत होना, व्यापना)। **उत =** भी। **उदितौ =** उदय में प्रातःकाल (उत् - ऊपर, इ = जाना)। **मघवन् =** ऐश्वर्यवान् (मघ् = ऐश्वर्य होना)। **सूर्यस्य =** सूर्य का (सुर् = प्रकाश होना, ऐश्वर्य होना)। **वयम् =** हम सब, हम लोग। **देवानाम् =** देवों का (दिव्, देव् = चमकना, तेजस्वी होना, विद्वान होना)। **सुमतौ =** सुमति में (सु - अच्छा, मन् - मनन करना, विचार करना)। **स्याम =** हों (अस् - होना) ॥ 4 ॥

477. भगः एव भगवान् अस्तु देवः,
तेन वयम् भगवन्तः स्याम।
तम् त्वा भग सर्वः इत् जोहवीमि,

स नो भग पुर एता भव इह ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ- भग भग (सेवनीय, सेवायोग्य) **एव** ही **भगवान्** भगवान् **अस्तु** हो, **तेन** उससे **वयम्** हम **देवः** देव **भगवन्तः** भगवन्त **स्याम** हो जायें। **भग** हे भग, **तम्** उस **त्वा** तुमको **सर्वः** सब **इत्** ही **जोहवीमि** आह्वान करते हैं, **स** वह **भग** भग **नो** हमारे लिए **इह** यहाँ **पुर** आगे **एता** जाने वाले **भव** हो ॥ 5 ॥

भावार्थ - भग-भज धातु का अर्थ सेवा करना है, अतः भग का अर्थ सेवा तथा सेवायोग्य होता है। इस अर्थ में भग ईश्वर को कहा गया है, भगवान् शब्द भी इसी प्रकार बनता है। सभी उपासक उसका ही आह्वान करते हैं ॥ 5 ॥

पदार्थ :- भग = सेवनीय, सेवायोग्य (भग्-भज् = सेवा करना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)। **एव =** ही। **भगवान् =** भगवान् (भग्-भज् – सेवा करना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)। **अस्तु =** हो (अस् - होना)। **देवः =** देवगण, विद्वान्, तेजस्वी (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना)। **तेन =** उसके द्वारा। **वयम् =** हम सब, हम लोग। **भगवन्तः =** भगवन्त (भग्-भज् = सेवा करना, देना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)। **स्याम =** हों। **तम् =** उसको। **त्वा =** तुमको, तुम्हें, तुम्हारे। **भग =** सेवनीय, सेवायोग्य (भग्-भज् = सेवा करना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)। **सर्वः =** सब। **इत् =** ही। **जोहवीमि =** आह्वान करते हैं (हू = आदान-प्रदान करना)। **स =** वह। **नो =** हमारा। **पुर =** आगे जाने वाले (पुर - अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना)। **एता =** जाने वाले (अ + इत्, इ - जाना)। **भव =** हो (भू = होना)। **इह =** यहाँ (इस जीवन में, इस संसार में) ॥ 5 ॥

478. सम्-अध्वराय उषसो नमन्त,
दधिक्रावा इव शुचये पदाय।
अर्वाचीनम् वसुविदम् भगम् मे,
रथम् इव अश्वा वाजिनः आ वहन्तु ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ - **शुचये** पवित्र **पदाय** पद के लिए **दधिक्रावा** दधिक्रावा के **इव** समान **सम्-अध्वराय** सम्यक् अध्वर के लिये **उषसो** उषायें **नमन्त** नमन करें। **मे =** मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **अर्वाचीनम्** अर्वाचीन **वसुविदम्** वसुविद् **भगम्** भग को **वाजिनः** वाजिन **अश्वा** अश्व **रथम्** रथ के **इव** समान **आ वहन्तु** वहन करें ॥ 6 ॥

भावार्थ- संसार के लिए मंगलकामना है ॥ 6 ॥

पदार्थ :- सम् = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **अध्वराय =** अध्वर, अहिंसक के लिये (अ - नहीं, ध्वृ-ध्वर् = हिंसा करना, टेढ़ा करना, झुकाना, मार डालना, वर्णन करना)। **उषसो =** उषायें (उषस् - प्रभात होना, पौ फटना)। **नमन्त =** नमन करें (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **दधि =** धारण कर्ता (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)। **क्रावा** = क्रावा के (क्रमु - निर्भयता से जाना, रक्षण करना, बढ़ना, वृद्धिंगत होना)। **इव =** समान। **शुचये =** पवित्र (शुच -शुद्ध होना, पवित्र होना)। **पदाय =** पद के लिए (पद - स्थानान्तर करना)। **अर्वाचीनम् =** अर्वाचीन (अर्व - मार डालना, दुःख देना, सताना)। **वसुविदम् =** वसुविद् (वसु = निश्चल, सीधा होना, वस् = आच्छादन, दया-प्रीति-हिंसा-अपहरण (दया-प्रीति-हिंसा-अपहरण) करना)। **भगम् =** भग को (भग्-भज् = देना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)। **मे =** मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **रथम् =** रथ के (रथ् = जाना, ले जाना)। **इव =** समान। **अश्वा =** अश्व (अश - फैलाना, व्यापना, पहुँचना, पाना, प्राप्त करना)। **वाजिनः =** वाजिन (वाज् = बल होना, गति करना, जानना, पाना)। **आ =** उपसर्ग। **वहन्तु =** वहन करें (वह - बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना) ॥ 6 ॥

479. अश्वावतीः गोमतीः नः उषासो,

वीरवतीः सदम् उच्छन्तु भद्राः।
घृतम् दुहाना विश्वतः प्रपीता,
यूयम् पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ 7॥

मन्त्रार्थ- **उषासो** उषा **नः** हमारे लिए **अश्वावतीः** अश्वयुक्त, **गोमतीः** गोयुक्त, **वीरवतीः** वीरयुक्त, **भद्राः** भद्र **सदम्** सदन **उच्छन्तु** प्रदान करें (पूरा करें)। तुम **घृतम्** घृत को **दुहाना** दुहने वाले, **विश्वतः** विश्व से **प्रपीता** पान किये गये **यूयम्** तुम **सदा** सदा **स्वस्तिभिः** स्वस्तियों द्वारा **नः** हमारा **पात** पालन करो॥ 7॥

भावार्थ- शुभ प्रभात की कामना है॥ 7॥

पदार्थ :- अश्वावतीः = अश्वयुक्त (अश - फैलाना, व्यापना, पहुँचना, पाना, प्राप्त करना, संग्रह करना, बटोरना, राशि करना, ढेर करना)। **गोमतीः** = गोयुक्त (गोम - लीपना, पोतना)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा। **उषासो** = उषा (उषस् = प्रभात होना)। **वीरवतीः** = वीरयुक्त (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)। **सदम्** = सदन (सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)। **उच्छन्तु** = पूर्ण करें (उच्छ - पूरा करना)। **भद्राः** = भद्र (भदि- भन्द - शुभ कर्म करना, सुखी होना)। **घृतम्** = प्रकाशमान को (घृ = सींचना, चमकना, प्रकाशित होना)। **दुहाना** = दुहने वाले (दुह - दूध निकालना, दोहना, रिक्त करना, लेना, खेंचना)। **विश्वतः** = सबसे, विश्व से। **प्रपीता** = पान किये गये (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, पी- पीना, प्राशन करना)। **यूयम्** = तुम दोनों। **पात** = पालन करो (पा = रक्षा करना, पालन करना)। **स्वस्तिभिः** = स्वस्तियों द्वारा (स्वस्ति = कल्याण)। **सदा** = सदा, सर्व काल में। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा॥ 7॥

88. कृषि सूक्त - 17

480. सीरा युञ्जन्ति कवयो,
युगा वि तन्वते पृथक्।
धीरा देवेषु सुम्नयौ॥ 1॥

मन्त्रार्थ - **सीरा** = प्रगतिशील, विद्वान् **कवयो** = कवि **युञ्जन्ति** = नियोजित करते हैं, जोड़ते हैं **धीरा** = धीर जन, धैर्यवान् जन, धीर लोग **युगा** = युगों को **देवेषु** = देवों में **सुम्नयौ** = सुविचार अथवा सृजन, रचनाशीलता द्वारा **पृथक्** = अलग **वि** = विशेष **तन्वते** = विस्तार करते हैं॥ 1॥

भावार्थ - प्रगतिशील, विद्वान् कवि नियोजित करते हैं, जोड़ते हैं। धैर्यवान् जन युगों को देवों में सुविचार अथवा सृजन, रचनाशीलता द्वारा पृथक् विस्तार करते हैं॥ 1॥

पदार्थ - **सीरा** = प्रगतिशील, विद्वान् (सृ = जाना, सरकना)। **युञ्जन्ति** = नियोजित करते हैं, जोड़ते हैं (यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, बांधना, बन्धन करना, गूंथना, युज - जुड़ना, मिलाप करना, मन एकाग्र करना, एकत्र करना)। **कवयो** = बोलने वाले, कवि (कु, कव् = शब्द करना, कविता करना, वर्णन करना, चित्र खींचना)। **युगा** = युग, युक्त कीजिये (यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, युज - जुड़ना, मिलाप करना, मन एकाग्र करना, एकत्र करना, युगि - छोड़ देना, त्याग करना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **तन्वते** = विस्तार करता है (तन्- तनु = विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना)। **पृथक्** = अलग (अव्यय)। **धीरा** = धीर जन, धैर्यवान् जन, धीर लोग (धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना, धृ - धारण करना, सहना, स्थिर रहना)। **देवेषु** = देवों में (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **सुम्नयौ** = सुविचार अथवा सृजन, रचनाशीलता द्वारा (मन - मनन करना, जानना, समझना, स्वीकार करना, अभ्यास करना, स्थिर होना, गर्व होना)॥ 1॥

481. युनक्त सीरा वि युगा तनोत,
कृते योनौ वपत इह बीजम्।
विराजः श्नुष्टिः सभराः असत् नो,

नेदीयः इत् सृण्यः पक्वम् आ यवन् ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - **सीरा =** हे प्रगतिशील, विद्वान् **युनक्त =** नियुक्त करो **युगा =** युगों को **वि =** विशेष **तनोत =** विस्तार करो **कृते =** कृत **योनौ =** योनि में, मिलाने अलग करने में, सम्बन्ध में, स्थान में **इह =** यहाँ **बीजम् =** बीज को **वपत =** बोओ **विराजः =** विराजमान, प्रकाशमान **श्नुष्टिः =** दान योग्य, प्राप्त होने योग्य **सभराः =** समान भरण-पोषण, धारण करने वाले **असत् =** हो जाये **नो =** हमारे लिए, हमारा **नेदीयः =** निन्दनीय, निकट रखने योग्य **इत् =** ही **सृण्यः =** सृण्य, प्रगतिशील, विद्वान् **पक्वम् =** पक्व, पका हुआ **आ-यवन् =** प्राप्त करे ॥ 2 ॥

भावार्थ - हे प्रगतिशील, विद्वान्, नियुक्त करो। युगों को विस्तार करो। यहाँ कृत योनि में, मिलाने अलग करने में, सम्बन्ध में, स्थान में बीज को बोओ। स्तुतियां, वाणियाँ और श्रुष्टि अर्थात् श्रुति, वाणी तथा सभर अर्थात् समान भरण-पोषण, धारण करने वाले हो जायें। हमारे लिए निन्दनीय, निकट रखने योग्य ही सृण्य अर्थात् प्रगतिशील, विद्वान् परिपक्व होता है। यहाँ श्लेष की छटा दर्शनीय है। सृ का अर्थ है सरकना, गति करना। सृण्य का भावार्थ निन्दनीय के लिए दूर करने तथा निकट रखने योग्य के लिए प्रगतिशील, विद्वान् परिपक्व होना है। जो निन्दनीय है, वह तो पक्व होता है, पकता है तथा जो निकट रखने योग्य है, वह प्रगतिशील, विद्वान् परिपक्व होता है ॥ 2 ॥

पदार्थ - **युनक्त =** नियुक्त करता है (युङ्क् - मिलाप करना, एकत्र करना, जुड़ना, युज - जुड़ना, मिलाप करना, एकत्र करना, चित्त स्थिर करना, मन को रोकना, मन एकाग्र करना, युगि - छोड़ देना, त्याग करना, यु - बांधना, बन्धन करना, गूंथना)। **सीरा =** प्रगतिशील, विद्वान् (सृ = जाना, सरकना)। **वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **युगा =** युग, युक्त कीजिये (यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, युज - जुड़ना, मिलाप करना, मन एकाग्र करना, एकत्र करना, युगि - छोड़ देना, त्याग करना)। **तनोत =** विस्तार करो (तन् = विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना)। **कृते =** कृत के लिए (कृ - करना)। **योनौ =** योनि में, मिलाने अलग करने में (यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, बांधना, बन्धन करना, गूंथना, बन्धन होना, संयोग-वियोग करना)। **वपत =** बोता है (वप - बीज बोना, उत्पन्न करना, बुनना, अन्नादि काटना, बाल काटना)। **इह =** इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **बीजम् =** बीज (बिज्-बीज् - उगना, अंकुरण करना)। **विराजः =** विराजमान, प्रकाशमान (वि = विशेष, विना, विलोम, राज् = प्रकाशित होना)। **श्नुष्टिः =** दान योग्य, प्राप्त होने योग्य (शण - देना, दान करना, जाना, शब्द करना। शो - तीक्ष्ण करना, पैना करना, पैनाना, शान धरना, छील के पैना करना, अश् = भोजन करना, व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना)। **सभराः =** भरण-पोषण, धारण करने वाले (स - सहित, साथ, भृ - भरण-पोषण, धारण करना)। **असत् =** हो जाये (अस् = होना)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **नेदीयः =** निन्दनीय, निकट रखने योग्य (निद = निन्दा करना, समीप जाना)। **इत् =** ही (अव्यय)। **सृण्यः =** सृण्य को, प्रगतिशील, विद्वान् को (सृ = जाना, सरकना)। **पक्वम् =** पक्व, पका हुआ (पच् = पकाना, व्यक्त करना, प्रसिद्ध करना, जीर्ण होना)। **आ-यवन् =** आये, प्राप्त करे (यु = मिलाना, अलग करना, यव = समाप्त करना, उपसंहार करना) ॥ 2 ॥

482. लाङ्गलम् पवीरवत्,
सुशीमम् सोमसत्सरु।
उत् इत् वपतु गाम् अविम् प्रस्थावत्,
रथवाहनम् पीवरीम् च प्रफर्व्यम् ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - **तत् =** वह **सोमसत्सरु =** सोम का पालन करने, ले जाने वाले **पवीरवत् =** पवित्र, पालन, रक्षा करने वाले की भाँति **लाङ्गलम् =** लाङ्गल को **सुशीमम् =** कल्याण, सुख को **गाम् =** गान, गाय, गायक, गाने वाले को **अविम् =** अवि को, रक्षक को **प्रफर्व्यम् =** गमनीय को **च =** और **पीवरीम् =** पीवरी को, सेवा, सिञ्चन, वपन, प्रकाश करने वाले को **प्रस्थावत् =** प्रस्था के समान, प्रकृष्ट स्थिति के समान **रथवाहनम् =** रथ को वहन करने वाले को **उत् =** ही, उत्कृष्ट, उच्च **वपतु =** उत्पन्न करे ॥ 3 ॥

भावार्थ - वह सोम अर्थात् ऐश्वर्यवान् सृष्टिकर्ता तथा अन्त करने वाले परमात्मा की अनुभूति को जीवन में पालन करने, ले जाने वाले पवित्र, पालन, रक्षा करने वाले की भाँति लाङ्गल, कल्याण, सुख, गान, गाय, गायक, रक्षक, गमनीय और सेवा, सिञ्चन, वपन, प्रकाश करने वाले रथ को वहन करने वाले **को** प्रस्थावत् अर्थात् प्रतिष्ठा के समान ही उत्कृष्ट, उच्चता से बोता है **॥ 3 ॥**

पदार्थ - **लाङ्गलम् =** लाङ्गल को (ला = लेना, ग्रहण करना, देना, दान देना)। **पवीरवत् =** पवित्र, पालन, रक्षा करने वाले की भाँति (पु - पालन करना, रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)। **सुशीमम् =** कल्याण, सुख (सु - अच्छा, सुन्दर, शी = सोना, शयन करना, शिव् = कल्याण होना, सुख होना)। **सोमसत्सरु =** सोम का पालन करने, ले जाने वाले (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना, सद् - बैठना, जाना, चलना, शक्तिहीन होना, म्लान होना, सूखना, मुर्झाना, भग्न करना, नष्ट करना, त्सर् = कुटिल गति करना, टेढ़ा जाना, छद्म गति करना)। **उत् =** ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (उपसर्ग)। **इत् =** ही (अव्यय)। **वपतु =** वपन करे, उत्पन्न करे (वप - बीज बोना, उत्पन्न करना, बुनना, अन्नादि काटना, बाल काटना)। **गाम् =** गान, गाय, गायक, गाने वाले को (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गम् - जाना, जानना, पाना)। **अविम् =** अवि को, रक्षक को (अ - नहीं, वि - विशेष, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)। **प्रस्थावत् =** प्रस्था के समान, प्रकृष्ट स्थिति के समान (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, स्थ = स्थित होना, ठहरना)। **रथवाहनम् =** रथ वहन करने वाले (रथ = जाना, ले जाना, वह् = वहन करना ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)। **पीवरीम् =** पीवरी को, सेवा, सिञ्चन, वपन, प्रकाश करने वाले को (पिव् - सेवा करना, सिंचन करना, बीज बोना, प्रकाश करना, पी-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना, पीव - पुष्ट होना, मोटा होना)। **च =** और। **प्रफर्व्यम् =** गमनीय को (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, फर्व - जाना, जानना, पाना) **॥ 3 ॥**

483. इन्द्रः सीताम् नि गृह्णातु,
ताम् पूषा अभि रक्षतु।
सा नः पयस्वती दुहाम्,
उत्तराम्-उत्तराम् समाम् ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - **इन्द्रः =** इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान **सीताम् =** सीता को **नि =** निश्चित, निरन्तर **गृह्णातु =** गृहण करें, ग्रहण करें **ताम् =** उसको **पूषा =** पोषण करने वाला, पोषणकर्ता **अभि =** अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा **रक्षतु =** रक्षा करो, बचाओ **सा =** वह **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा **पयस्वती =** विस्तृत, विस्तारयुक्त, गतिशील, प्रवाहमान **दुहाम् =** दुहा को **उत्तराम्-उत्तराम् =** उत्तर-उत्तर को **समाम् =** समत्व **॥ 4 ॥**

पदार्थ - **इन्द्रः =** इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **सीताम् =** सीता को (सि = बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना)। **नि =** निश्चित, निरन्तर (अव्यय)। **गृह्णातु =** गृहण करें, ग्रहण करें (गृह्- लेना, स्वीकार करना, निवास करना)। **ताम् =** उसको (सर्वनाम)। **पूषा =** पोषण करने वाला, पोषणकर्ता (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, पूष - बढ़ना, अधिक होना, पोषण करना)। **अभि =** अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **रक्षतु =** रक्षा करो, बचाओ (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना)। **सा =** वह (सर्वनाम)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **पयस्वती =** विस्तृत, विस्तारयुक्त, गतिशील, प्रवाहमान (पय् = जाना, जानना, पाना, बहना, पयस् = विस्तार करना, फैलाना)। **दुहाम् =** दुहा को (दुह् - दूध निकालना, दोहना, रिक्त करना, लेना, खींचना)। **उत्तराम्-उत्तराम् =** उत्तर-उत्तर को (सर्वनाम)। **समाम् =** समत्व (सम - सब (सर्वनाम)। सम = समान होना, सम विभाग करना, न घबराना, परिणाम होना) **॥ 4 ॥**

484. शुनम् सु-फालाः वि तुदन्तु भूमिम्,

शुनम् कीनाशाः अनु यन्तु वाहान्।
शुनासीरा हविषा तोशमाना,
सुपिप्पलाः ओषधीः कर्तम् अस्मै॥ 5॥

मन्त्रार्थ - **सु** = उत्तम **फालाः** = फलयुक्त **शुनम्** = प्रगतिशील **भूमिम्** = भूमि को **वि** = विशेष **तुदन्तु** = प्रगति करें, कर्षण करें **कीनाशाः** = विद्वान् **शुनम्** = प्रगतिशील, विद्वान् को **वाहान्** = वहन करने वाले **अनु** = पश्चात्, पीछे, अनुकूल **यन्तु** = पोषण करें, उद्धार करें, प्राप्त करें नियमन-नियन्त्रण करें **शुनासीरा** = प्रगतिशील, विद्वान् **तोशमाना** = तुष्ट करने वाले **सुपिप्पलाः** = उत्तम प्रयाण करने, प्रेरणा करने वाले **हविषा** = हविष, दान व आदान-प्रदान द्वारा **अस्मै** = हमारे लिए **ओषधीः** = ओषधी **कर्तम्** = करो॥ **5॥**

भावार्थ - उत्तम फलयुक्त प्रगतिशील भूमि को विशेष कर्षण करें। विद्वान् ही प्रगतिशील, विद्वान् को वहन करनें वालों द्वारा अभिमुख पोषण करें, उद्धार करें, प्राप्त करें, नियमन-नियन्त्रण करें। प्रगतिशील, विद्वान्, तुष्ट करने वाले, उत्तम प्रयाण करने, प्रेरणा करनें वाले दान व आदान-प्रदान द्वारा हमारे लिए ओषधी का कर्त्तन करें॥ **5॥**

पदार्थ - **शुनम्** = प्रगतिशील, विद्वान् को (शुन = जाना, जानना, पाना)। **सु** = अच्छा (उपसर्ग)। **फालाः** = फल को (फल् - फलित होना, उत्पन्न होना, जाना, विभाग करना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **तुदन्तु** = प्रगति करें, कर्षण करें (तुद् - दुःख देना, दुःखी होना, पीड़ा होना, घाव करना, तु - गति, वृद्धि, हिंसा करना)। **भूमिम्** = भूमि को (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **शुनम्** = प्रगतिशील, विद्वान् को (शुन = जाना, जानना, पाना)। **कीनाशाः** = विद्वान् (कि - जानना)। **अनु** = पश्चात्, पीछे, अनुकूल (उपसर्ग)। **यन्तु** = पोषण करो, उद्धार करो, प्राप्त करो नियमन-नियन्त्रण करो (यम् = रोकना, स्वाधीन रखना, आवरण करना, पोषण करना, नियमन करना, यन -उद्धार करना, या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, जानना)। **वाहान्** = वहन करने वाले (वह् = वहन करना ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)। **शुनासीरा** = प्रगतिशील, विद्वान् (शुन = जाना, सृ = जाना, सरकना)। **हविषा** = हविष से, दान व आदान-प्रदान द्वारा (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **तोशमाना** = तुष्ट करने वाले (तुष् - सन्तुष्ट करना, तृप्त करना, प्रसन्न करना)। **सुपिप्पलाः** = अच्छे, प्रयाण करने, प्रेरणा करने वाले (सु - सुन्दर, अच्छा, (पिल् - चलना, प्रयाण करना, प्रेरणा करना)। **ओषधीः** = ओषधी (उषध् - चिकित्सा करना, रोग मुक्त करना)। **कर्तम्** = करो (कृ - करना)। **अस्मै** = हमारा, हममें, हमारे लिए (सर्वनाम)॥ **5॥**

485. शुनम् वाहाः शुनम्,
नरः कृषतु लाङ्गलम्।
शुनम् वरत्रा बध्यन्ताम्,
शुनम् अष्ट्राम् उत् इङ्गय॥ 6॥

मन्त्रार्थ - **शुनम्** = प्रगतिशील, विद्वान् को **वाहाः** = वहन करने वाले **शुनम्** = प्रगतिशील, विद्वान् को **नरः** = नर **कृषतु** = कृष करो, कर्षण करो **लाङ्गलम्** = लाङ्गल को, दान को, ग्रहण को **शुनम्** = प्रगतिशील, विद्वान् को **वरत्रा** = वरण करने वाले **बध्यन्ताम्** = बाँधें **शुनम्** = प्रगतिशील, विद्वान् को **अष्ट्राम्** = अष्ट्रों को **उत्** = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च **इङ्गय** = प्रेरित करे॥ **6॥**

पदार्थ - **शुनम्** = प्रगतिशील, विद्वान् को (शुन = जाना, जानना, पाना)। **वाहाः** = वहन करने वाले (वह् = वहन करना ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)। **शुनम्** = प्रगतिशील, विद्वान् को (शुन = जाना, जानना, पाना)। **नरः** = नर (नृ - नम्र होना, विनय होना, कोमल होना, मृदु होना, चलना, ले जाना)। **कृषतु** = कृष करो, कर्षण करो (कृष् = विलेखन, कर्षण करना, खींचना, आकर्षण होना, रेखा करना)। **लाङ्गलम्** = लाङ्गल को, दान को, ग्रहण को (ला = लेना, ग्रहण करना, देना, दान देना)। **शुनम्** = प्रगतिशील, विद्वान् को (शुन = जाना, जानना, पाना)। **वरत्रा** = वरण करने वाले (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, पसन्द करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)।

बध्यन्ताम् = बाँधें (बध - बांधना, बद्ध करना, हिंसा करना, मारना, वध करना, घृणा करना)। **शुनम्** = प्रगतिशील, विद्वान् को (शुन = जाना, जानना, पाना)। **अष्ट्राम्** = अष्ट्रों को (अष् = जाना, टहलना, ग्रहण करना, लेना, चमकना)। **उत्** = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)। **इङ्गय** = प्रेरित करे (इ = जाना, जानना, पाना, प्रेरित करना)॥ 6॥

486. शुनासीरा इह स्म मे जुषेथाम्,
यत् दिवि चक्रथुः पयः,
तेन इमाम् उप सिञ्चतम्॥ 7॥

मन्त्रार्थ - **शुनासीरा** = शुनासीर, मुक्त गति वाला, मुक्त-बन्धन वाला **इह** = इसमें, यहां, यह **स्म** = है **मे** = मेरा, मेरे लिए **जुषेथाम्** = विचारशील हो, सेवाशील हो, प्रसन्नता देने वाला हो **यत्** = जिसे, जो **दिवि** = दिव्यता में, दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय में **चक्रथुः** = चक्रण किया किया, चक्रण किया **पयः** = ज्ञान, रक्षण, गतिशील, प्रवाहमान, प्रवाहपूर्ण **तेन** = उससे, उसके द्वारा **इमाम्** = इसको, इस **उप** = समीप **सिञ्चतम्** = सिञ्चन करे॥ 7॥

पदार्थ - **शुनासीरा** = शुनासीर, मुक्त गति वाला, मुक्त-बन्धन वाला (शून = अलग करना, मिलाना, मुक्त होना, रिक्त होना, शून्य होना, सि = बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना, सृ = जाना, सरकना)। **इह** = इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **स्म** = है (अस् - होना)। **मे** = मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **जुषेथाम्** = विचारशील हो, सेवाशील हो, प्रसन्नता देने वाला हो (जुष् = विचार करना, सेवा करना, सेवन करना, विवेक होना, विवेचना करना, प्रीति करना, चाहना, दुलारना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **दिवि** = दिव्यता में, दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय में (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)। **चक्रथुः** = चक्रण किया किया, चक्रण किया (कृ = करना, चकृ = चक्रण करना, गोलाकार घूमना)। **पयः** = ज्ञान, रक्षण, गतिशील, प्रवाहमान, प्रवाहपूर्ण (पय् - गति करना, रक्षण करना, ज्ञान, गमन, प्राप्ति करना, पि - जाना, जानना, पाना, पा- पालन करना, रक्षा करना)। **तेन** = उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **इमाम्** = इसको, इस (सर्वनाम)। **उप** = समीप (उपसर्ग)। **सिञ्चतम्** = सिञ्चन करे (सिञ्च् - सिञ्चन करना)॥ 7॥

487. सीते वन्दामहे त्वा,
अर्वाची सुभगे भव।
यथा नः सुमनाः असो,
यथा नः सुफला भुवः॥ 8॥

मन्त्रार्थ - **सीते** = हे सीता **वन्दामहे** = वन्दना करते हैं **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **अर्वाची** = प्रगतिशील, व्यापक, शब्दकर्ता, विद्वान्, हिंसक **सुभगे** = अच्छी सेवा, भजन, उत्तम सेवित, भजनीय में **भव** = हो **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा **सुमनाः** = अच्छे मन वाले **असो** = अस् का, ऐश्वर्यवान् का, उत्पन्न करने वाले का **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा **सुफला** = सुफल वाला **भुवः** = होने वाला॥ 8॥

पदार्थ - **सीते** = हे सीता (सि = बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना)। **वन्दामहे** = वन्दना करते हैं (वन्द् = स्तुति करना, प्रणाम करना, वन्दना करना, प्रशंसा करना)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **अर्वाची** = प्रगतिशील, व्यापक, शब्दकर्ता, विद्वान्, हिंसक (ऋ - जाना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना, पहुँचाना, अर्-ऋ - गति करना, जाना, जानना, पाना, शब्द करना, व्याप्त होना, मिलाना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, अर्व - गति करना, जाना, चलना, जानना, पाना, पहुँचना, हिंसा करना)। **सुभगे** = अच्छी सेवा, भजन, उत्तम सेवित, भजनीय में (सु - उत्तम, अच्छा, भग्- भज् = सेवा करना, सेवन करना, सेवित होना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अलग करना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)। **भव** = हो (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना,

कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **यथा =** जिससे, जैसे, जिस प्रकार (अव्यय)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **सुमनाः =** अच्छे मन वाले (सु = उत्तम, सुन्दर, अच्छा। मन - मनन करना, जानना, समझना, स्वीकार करना, अभ्यास करना, स्थिर होना, गर्व होना)। **असो =** अस् का, ऐश्वर्यवान् का, उत्पन्न करने वाले का (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना)। **यथा =** जिससे, जैसे, जिस प्रकार (अव्यय)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **सुफला =** सुफल वाला (सु = उत्तम, सुन्दर, अच्छा, उपसर्ग, फल् - फलित होना, उत्पन्न होना, जाना, विभाग करना)। **भुवः =** होने वाला (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना) **॥ 8 ॥**

488. घृतेन सीता मधुना सम् अक्ता,
विश्वैः देवैः अनु-मता मरुद्भिः।
सा नः सीते पयसा अभि आ-ववृत्स्व,
ऊर्जस्वती घृतवत् पिन्वमाना ॥ 9 ॥

मन्त्रार्थ - सीता = सीता, सम्बन्धित **घृतेन =** अभिसिञ्चित द्वारा, प्रकाशमान द्वारा **मधुना =** मधु द्वारा **विश्वैः =** विश्व द्वारा, सभी द्वारा **देवैः =** देवों द्वारा **अनु =** अनुकूल **मता =** मत **मरुद्भिः =** मरणशीलों द्वारा, मरुतों द्वारा **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति **अक्ता =** गतिमान **सा =** वह **नः =** हमको **सीते =** सीता, सम्बन्धित **पयसा =** पयस् द्वारा, विस्तार द्वारा, प्रगतिशील, प्रवाहमान द्वारा **अभि =** अभिमुख, विशेष **आ =** समन्तात्, सम्यक् **ववृत्स्व =** वर्तमान हो, बर्ताव करे **ऊर्जस्वती =** ऊर्जायुक्त, ऊर्जावान् **घृतवत् =** प्रकाशमान की तरह **पिन्वमानाः =** सिञ्चन, सेवा करने वाले **॥ 9 ॥**

भावार्थ - सीता अर्थात् सम्बन्धित नारी घृत **अर्थात्** अभिसिञ्चित, प्रकाशमान, मधु द्वारा तथा सभी देवों द्वारा। अनुमत नारी मरुत् अर्थात् मरणशीलों, विशेषतः मनुष्यों द्वारा सम्यक् गतिमान् हो, वेग से जाये॥ सीता अर्थात् सम्बन्धित नारी ऊर्जायुक्त, ऊर्जावान नारी, विस्तार द्वारा, प्रगतिशील, प्रवाहमान द्वारा सिञ्चन, सेवा करने वाली हमको पयस् द्वारा, विस्तार द्वारा, प्रगतिशील, प्रवाहमान द्वारा अभिमुख होकर समन्तात्, सम्यक् वर्तमान हो, बर्ताव करे **॥ 9 ॥**

पदार्थ - घृतेन = अभिसिञ्चित द्वारा, प्रकाशमान द्वारा (घृ -गीला करना, बूंद बूंद गिरना, टपकना, क्षरित होना, सिञ्चन करना, सींचना, टपकना, क्षरण होना, झरना, चमकना, प्रकाश करना, घर्षण होना, नाश होना, शब्द होना)। **सीता =** सीता (सि = बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़नो)। **मधुना =** मधु द्वारा (मध् = मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **अक्ता =** गतिमान (अक् - जाना, जानना पाना, टेढ़ा जाना, कुटिल गति करना, वक्रगति करना)। **विश्वैः =** विश्व द्वारा, सभी द्वारा (सर्वनाम)। **देवैः =** देवों द्वारा (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **अनु =** पश्चात्, पीछे, अनुकूल (उपसर्ग)। **मता =** मत (मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना)। **मरुद्भिः =** मरणशीलों द्वारा, मरुतों द्वारा (मृ = मरना, देहत्याग करना)। **सा =** वह, उसने (सर्वनाम)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **सीते =** सीते (सि =बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़नो)। **पयसा =** पयस् द्वारा, विस्तार द्वारा, गतिशील, प्रवाहमान द्वारा (पय् = जाना, जानना, पाना, बहना, पयस् = विस्तार करना, फैलाना)। **अभि =** अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग)। **ववृत्स्व =** दूर किया (वृत् - रहना, होना, बर्ताव करना, त्याग करना, हटाना, आच्छादित करना)। **ऊर्जस्वती =** ऊर्जायुक्त, ऊर्जावान् करते हुए (ऊर्ज् = प्राण होना, चेतन होना, बल होना, ऊर्जा होना, शक्तिमान होना, पराक्रमी होना, चलना, जाना)। **घृतवत् =** प्रकाशमान की तरह (घृ -गीला करना, बूंद बूंद गिरना, टपकना, क्षरित होना, सिञ्चन करना, सींचना, टपकना, क्षरण होना, झरना, चमकना, प्रकाश करना, घर्षण होना, नाश होना, शब्द होना)। **पिन्वमानाः =** सिञ्चन, सेवा करने वाले (पिन्व = सेवा करना, सेचन करना, प्रोक्षण करना) **॥ 9 ॥**

89. वनस्पति सूक्त - 18

489. इमाम् खनामि ओषधिम्,
वीरुधाम् बलवत्-तमाम्।
यया सपत्नीम् बाधते,
यया सम्-विन्दते पतिम्॥ 1॥

मन्त्रार्थ - **इमाम्** = इसको, इस **खनामि** = खनन करता हूँ, खोदता हूँ **ओषधिम्** = ओषधि को **वीरुधाम्** = वीरता को धारण करने वालों को, पराक्रमियों का **बलवत्-तमाम्** = बलवती-इच्छा को **यया** = जिससे **सपत्नीम्** = ऐश्वर्यवान् को **बाधते** = बाधित करता है, दुःख देता है **यया** = जिससे **सम्-विन्दते** = सम्-विन्दता है, सम्यक् प्राप्त करता है **पतिम्** = ऐश्वर्यवान्, स्वामी को॥ 1॥

पदार्थ - **इमाम्** = इसको, इस (सर्वनाम)। **खनामि** = खनन करता हूँ, खोदता हूँ (खन् = खनन करना, खोदना)। **ओषधिम्** = ओषधि को (ओषध्, उषध् = रोगमुक्त करना)। **वीरुधाम्** = वीरता को धारण करने वालों को, पराक्रमियों का (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)। **बलवत्-तमाम्** = बलवती-इच्छा को (बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना, तम - इच्छा करना, चाहना, मानसिक या शारीरिक व्यथा से दुःखित होना, अन्धकार होना)। **यया** = जिससे (सर्वनाम)। **सपत्नीम्** = ऐश्वर्यवान् को (स - सहित, साथ, पत् = जाना, उड़ना, पतन होना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **बाधते** = बाधित करता है, दुःख देता है (बाध - रोकना, अटकाव करना, बाधा देना, दुःख देना)। **यया** = जिससे (सर्वनाम)। **सम्-विन्दते** = सम्-विन्दता है, सम्यक् प्राप्त करता है (सम् = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग), विन्द - लाभ होना, प्राप्त करना, सम्पादित करना)। **पतिम्** = ऐश्वर्यवान्, स्वामी को (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)॥ 1॥

490. उत्तानपर्णे सुभगे,
देवजूते सहस्वति।
सपत्नीम् मे परा णुद,
पतिम् मे केवलम् कृधि॥ 2॥

मन्त्रार्थ - **उत्तानपर्णे** = उत्तान-पर्ण में, उच्च विस्तार-पर्ण में **सुभगे** = अच्छी सेवा, भजन, उत्तम सेवित, भजनीय में **देवजूते** = देवजूत में, देव-प्रगति में **सहस्वति** = हे सहनशील, समर्थवान् **सपत्नीम्** = ऐश्वर्यवान् को **मे** = मेरा, मेरे लिए **परा** = परम्, परे, पीछे, विपरीत **णुद** = भेजें **पतिम्** = ऐश्वर्यवान्, स्वामी को **मे** = मेरा, मेरे लिए **केवलम्** = केवल, सेवा, सिंचन को **कृधि** = करो॥ 2॥

पदार्थ - **उत्तानपर्णे** = उत्तान-पर्ण में, उच्च विस्तार-पर्ण में (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, तन् = तानना, विस्तार करना, पर्ण - हरा करना, हरा होना, पृ - पूर्ण करना, भरण करना)। **सुभगे** = अच्छी सेवा, भजन, उत्तम सेवित, भजनीय में (सु - उत्तम, अच्छा, भग्-भज् = सेवा करना, सेवन करना, सेवित होना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अलग करना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)। **देवजूते** = देवजूत में, देव-प्रगति में (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना, जु - जाना, शीघ्र जाना, भागना)। **सहस्वति** = हे सहनशील, समर्थवान् (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)। **सपत्नीम्** = ऐश्वर्यवान् को (स - सहित, साथ, पत् = जाना, उड़ना, पतन होना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **मे** = मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **परा** = परम्, परे, पीछे, विपरीत (अव्यय)। **णुद** = भेजें (नुद् = भेजना, प्रेरणा करना, जाना)। **पतिम्** = ऐश्वर्यवान्, स्वामी को (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **मे** = मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **केवलम्** = केवल, सेवा, सिंचन को (केव् - सेवा करना, सिंचन करना, घर्षण करना, रिक्त होना)। **कृधि** = करो (कृ = करना)॥ 2॥

491. नहि ते नाम जग्राह,

नो अस्मिन् रमसे पतौ।
पराम् एव परावतम्,
सपत्नीम् गमयामसि॥ 3॥

मन्त्रार्थ - **नहि** = नहीं **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **नाम** = नाम वाले **जग्राह** = गृहण किया **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा **अस्मिन्** = इस, इसमें **रमसे** = रमण कर **पतौ** = पति **पराम्** = पर को, अन्य को **एव** = ही **परावतम्** = परावत को, रक्षक को, पालक को **सपत्नीम्** = ऐश्वर्यवान् को **गमयामसि** = जाती हैं, प्राप्त करती हैं॥ **3**॥

पदार्थ - **नहि** = नहीं (अव्यय)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **नाम** = नाम वाले (अव्यय)। **जग्राह** = गृहण किया (गृह् - ग्रह् - ग्रहण करना, लेना, स्वीकार करना)। **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **अस्मिन्** = इस, इसमें (सर्वनाम)। **रमसे** = रमण कर (रम - रमना, क्रीडा करना, खेलना)। **पतौ** = पति (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **पराम्** = पर को, अन्य को (सर्वनाम)। **एव** = ही (अव्यय)। **परावतम्** = परावत को, रक्षक को, पालक को (परावतः - पराया, लौटा हुआ, अव्यय, परा - परम, परे, पीछे, विपरीत (अव्यय) अव् - रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)। **सपत्नीम्** = ऐश्वर्यवान् को (स - सहित, साथ, पत् = जाना, उड़ना, पतन होना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **गमयामसि** = जाती हैं, प्राप्त करती हैं (गम् = जाना, जानना, पाना)॥ **3**॥

492. उत्तरा अहम् उत्तरे,
उत्तरा इत् उत्तराभ्यः।
अधः सपत्नी या मम,
अधरा सा अधराभ्यः॥ 4॥

मन्त्रार्थ - **उत्तरा** = अधिक उत्तम, श्रेष्ठतर **अहम्** = मैं **उत्तरे** = उत्तर में, उत्तर दिशा में **उत्तरा** = अधिक उत्तम, श्रेष्ठतर **इत्** = ही **उत्तराभ्यः** = उत्तरों के लिए **अधः** = नीचे **सपत्नी** = ऐश्वर्यवान् **या** = जो **मम** = मेरा **अधरा** = अधर, जय, धारण न करने वाला **सा** = वह **अधराभ्यः** = अधरों के लिए, जय, धारण न करने वालों के लिए॥ **4**॥

पदार्थ - **उत्तरा** = अधिक उत्तम, श्रेष्ठतर (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, तृ, तृ = तैरना, पार जाना)। **अहम्** = मैं (सर्वनाम)। **उत्तरे** = उत्तर में, उत्तर दिशा में (सर्वनाम)। **उत्तरा** = अधिक उत्तम, श्रेष्ठतर (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, तृ, तृ = तैरना, पार जाना)। **इत्** = ही (अव्यय)। **उत्तराभ्यः** = उत्तरों के लिए (सर्वनाम)। **अधः** = नीचे (अव्यय)। **सपत्नी** = ऐश्वर्यवान् (स - सहित, साथ, पत् = जाना, उड़ना, पतन होना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **या** = जो (सर्वनाम)। **मम** = मेरा (सर्वनाम)। **अधरा** = अधर, जय, धारण न करने वाला (अधर् - न्यून करना, जीतना, निम्न गति करना, अ - नहीं, धृ - धारण करना)। **सा** = वह (सर्वनाम)। **अधराभ्यः** = अधरों के लिए, जय, धारण न करने वालों के लिए (अधर् - न्यून करना, जीतना, निम्न गति करना, अ - नहीं, धृ - धारण करना)॥ **4**॥

493. अहम् अस्मि सहमाना,
अथो त्वम् असि सासहिः।
उभे सहस्वती भूत्वा,
सपत्नीम् मे सहावहै॥ 5॥

मन्त्रार्थ - **अहम्** = मैं **अस्मि** = हूँ **सहमाना** = सहमान **अथो** = अब, इसके बाद, इसके अनन्तर **त्वम्** = तुम **असि** = हो **सासहिः** = सक्षम, समर्थ, तृप्त, सन्तुष्ट, सहने वाले **उभे** = दोनों, पूर्णता **सहस्वती** = सहनशील, समर्थवान् **भूत्वा** = होकर **सपत्नीम्** = ऐश्वर्यवान् को **मे** = मेरा, मेरे लिए **सहावहै** = सहनशील, सक्षम, समर्थ, तृप्त, सन्तुष्ट करें॥ **5**॥

पदार्थ - **अहम्** = मैं (सर्वनाम)। **अस्मि** = हूँ (सर्वनाम)। **सहमाना** = सहमान (सह = साथ, सहित, सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)। **अथो** = अब, इसके बाद, इसके अनन्तर (अव्यय)। **त्वम्** = तुम (सर्वनाम)। **असि** = हो (अस् - होना)। **सासहिः** = सक्षम, समर्थ, तृप्त, सन्तुष्ट, सहने

वाले (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना)। **उभे** = दोनों, पूर्णता (उभय - दोनो, उभ् - पूर्ण करना, भरना)। **सहस्वती** = सहनशील, समर्थवान् (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)। **भूत्वा** = होकर (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **सपत्नीम्** = ऐश्वर्यवान् को (स - सहित, साथ, पत् = जाना, उड़ना, पतन होना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **मे** = मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **सहावहै** = सहनशील, सक्षम, समर्थ, तृप्त, सन्तुष्ट करें (सह = शक्तिमान् करना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना) ॥ 5 ॥

494. अभि ते अधाम् सहमानाम्,
उप ते अधाम् सहीयसीम्।
माम् अनु प्र ते मनो वत्सम् गौः-इव,
धावतु पथा वाः-इव धावतु ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ - **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **अधाम्** = धारण करता हूँ **सहमानाम्** = सहमान को **उप** = समीप **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **अधाम्** = धारण करता हूँ **सहीयसीम्** = अत्यन्त सहनशील, समर्थ को **माम्** = मुझको **अनु** = पश्चात्, पीछे, अनुकूल **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **मनो** = मन **वत्सम्** = बोलने वाले को **गौः-इव** = शाब्दिक, मननशील, उपदेशक के समान **धावतु** = दौड़ता है **पथा** = पथ **वाः-इव** = प्रवाहमान, प्रगतिशील के समान **धावतु** = दौड़ता है ॥ 6 ॥

पदार्थ - **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **अधाम्** = धारण करता हूँ (अधः = नीचे, अव्यय, धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)। **सहमानाम्** = सहमान को (सह = साथ, सहित, सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)। **उप** = समीप (उपसर्ग)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **अधाम्** = धारण करता हूँ (अधः = नीचे, अव्यय, धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)। **सहीयसीम्** = अत्यन्त सहनशील, समर्थ को (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)। **माम्** = मुझको (सर्वनाम)। **अनु** = पश्चात्, पीछे, अनुकूल (उपसर्ग)। **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **मनो** = मन (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **वत्सम्** = बोलने वाले को (वद् -वच्- बोलना)। **गौः-इव** = शाब्दिक, मननशील, उपदेशक के समान (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, इव = समान, की भाँति, के समान, अव्यय)। **धावतु** = दौड़ता है (धाव - जाना, भागना, स्वच्छ करना, निर्मल करना, धोना, स्वच्छ होना)। **पथा** = पथ (पथ, पन्थ् - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना, घूमना, फेंकना, त्यागना)। **वाः-इव** = प्रवाहमान, प्रगतिशील के समान (वा - गति करना, बहना, वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण करना, घेरना, भेजना, खाना, वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना, इव = समान, की भाँति, के समान, अव्यय)। **धावतु** = दौड़ता है (धाव - जाना, भागना, स्वच्छ करना, निर्मल करना, धोना, स्वच्छ होना) ॥ 6 ॥

90. अजरक्षत्र सूक्त - 19

495. सम्-शितम् मे इदम् ब्रह्म,
सम्-शितम् वीर्यम बलम्।
सम्-शितम् क्षत्रम् अजरम् अस्तु,
जिष्णुः येषाम् अस्मि पुरोहितः ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - **सम्-शितम्** = सम्-शित को, भलीभांति तीक्ष्ण, श्रुति को **मे** = मेरा, मेरे लिए **इदम्** = यह, इसको **ब्रह्म** = ब्रह्म, महान्, बड़ा, बृहत् **सम्-शितम्** = सम्-शित को, भलीभांति तीक्ष्ण, श्रुति को **वीर्यम** = पराक्रम को, वीरता को **बलम्** = बल को **सम्-शितम्** = सम्-शित को, भलीभांति तीक्ष्ण, श्रुति को **क्षत्रम्** = क्षत्र को, रक्षा को **अजरम्** = जरा-हीन को **अस्तु** = हो **जिष्णुः** = जीतने वाला, जयाभिलाषी, जय की इच्छा वाला **येषाम्** = जिनका **अस्मि** = हूँ **पुरोहितः** = पुरोहित ॥ 1 ॥

पदार्थ - **सम्-शितम्** = सम्-शित को, भलीभांति तीक्ष्ण, श्रुति को (सम् - सम्यक्, भलीभांति, शि = तीक्ष्ण करना, पैना करना, छील के पैना करना, पतला करना, सुनना)। **मे** = मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **इदम्** = यह, इसको (सर्वनाम)। **ब्रह्म** = ब्रह्म, महान्, बड़ा, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **सम्-शितम्** = सम्-शित को, भलीभांति तीक्ष्ण, श्रुति को (सम् - सम्यक्, भलीभांति, शि = तीक्ष्ण करना, पैना करना, छील के पैना करना, पतला करना, सुनना)। **वीर्यम** = पराक्रम को, वीरता को (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)। **बलम्** = बल को (बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना)। **सम्-शितम्** = सम्-शित को, भलीभांति तीक्ष्ण, श्रुति को (सम् - सम्यक्, भलीभांति, शि = तीक्ष्ण करना, पैना करना, छील के पैना करना, पतला करना, सुनना)। **क्षत्रम्** = क्षत्र को, रक्षा को (क्षत्, क्षद् = खाना, कूटना, ढकना, मार डालना, रक्षा करना)। **अजरम्** = जरा-हीन को (अ = नहीं, जृ - जीर्ण होना, वृद्ध होना)। **अस्तु** = हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **जिष्णुः** = जीतने वाला, जयाभिलाषी, जय की इच्छा वाला (जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)। **येषाम्** = जिनका (सर्वनाम)। **अस्मि** = हूँ (सर्वनाम)। **पुरोहितः** = पुरोहित (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, हि - चलना, जाना, जानना, पाना) ॥ 1 ॥

496. सम् अहम् एषाम् राष्ट्रम् स्यामि,
सम् ओजो वीर्यम् बलम्।
वृश्चामि शत्रूणाम् बाहून्,
अनेन हविषा अहम् ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **अहम्** = मैं **एषाम्** = इनका **राष्ट्रम्** = राष्ट्र को **स्यामि** = अन्त करता हूँ, नष्ट करता हूँ **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **ओजो** = ओज **वीर्यम्** = पराक्रम को, वीरता को **बलम्** = बल को **वृश्चामि** = काटता हूँ, छेदता हूँ **शत्रूणाम्** = शत्रुओं का **बाहून्** = बाहुओं को, भुजाओं, हाथों, प्रयास करने वाले युगलों को **अनेन** = इसके द्वारा **हविषा** = हविष् द्वारा, दान व आदान-प्रदान द्वारा **अहम्** = मैं ॥ 2 ॥

पदार्थ - **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **अहम्** = मैं (सर्वनाम)। **एषाम्** = इनका (सर्वनाम)। **राष्ट्रम्** = राष्ट्र को (रास = शब्द करना। राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **स्यामि** = अन्त करता हूँ, नष्ट करता हूँ (सो-स्य = अन्त करना, नष्ट करना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **ओजो** = ओज (ओज - शक्तिमान् होना, जीवित होना, बढ़ना)। **वीर्यम्** = पराक्रम को, वीरता को (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)। **बलम्** = बल को (बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना)। **वृश्चामि** = काटता हूँ, छेदता हूँ (व्रश्च = कतरना, छेद करना, रेतना, छीलना)। **शत्रूणाम्** = शत्रुओं का (शी-शद्-शत् - जीर्ण होना, गिरना, गिराना)। **बाहून्** = बाहुओं को, भुजाओं, हाथों, प्रयास करने वाले युगलों को (बाह् - प्रयास करना, बह् - बहना, गति करना, बाहर होना, परे हो जाना, हिंसा करना)। **अनेन** = इसके द्वारा (सर्वनाम)। **हविषा** = हविष् द्वारा, दान व आदान-प्रदान द्वारा (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **अहम्** = मैं (सर्वनाम) ॥ 2 ॥

497. नीचैः पद्यन्ताम् अधरे भवन्तु,
ये नः सूरिम् मघवानम् पृतन्यान्।

क्षिणामि ब्रह्मणा अमित्रान्,
उत् नयामि स्वान् अहम् ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - **नीचैः** = निम्न वाले, चाकरी वाले **पद्यन्ताम्** = पदों को, भूषणों को **अधरे** = अधर में, जय, धारण न करने वाले में **भवन्तु** = हों, हो जायें **ये** = जो **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा **सूरिम्** = उत्पन्नकर्ता, ऐश्वर्यवान् को **मघवानम्** = धनवान्, ऐश्वर्यवान् को **पृतन्यान्** = व्यापकों का, शक्तिमानों का, समर्थ बलवानों का **क्षिणामि** = निवास, हिंसा करता हूँ **ब्रह्मणा** = ब्रह्म द्वारा **अमित्रान्** = अमित्रों को, अस्नेही जनों को **उत्** = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च **नयामि** = ले जाता हूँ **स्वान्** = स्व को **अहम्** = मैं ॥ 3 ॥

पदार्थ - **नीचैः** = निम्न वाले, चाकरी वाले (नीच् - निम्न होना, चाकरी करना)। **पद्यन्ताम्** = पदों को, भूषणों को (पद् - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना)। **अधरे** = अधर में, जय, धारण न करने वाले में (अधर् - न्यून करना, जीतना, निम्न गति करना, अ - नहीं, धृ - धारण करना)। **भवन्तु** = हों, हो जायें (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **ये** = जो (सर्वनाम)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **सूरिम्** = उत्पन्नकर्ता, ऐश्वर्यवान् को (सुर - ऐश्वर्य होना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना, सू - उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, ऐश्वर्य होना)। **मघवानम्** = धनवान्, ऐश्वर्यवान् को (मघ् = धन होना, ऐश्वर्य होना)। **पृतन्यान्** = व्यापकों का, शक्तिमानों का, समर्थ बलवानों का (पृत -व्याप्त होना, जीवन होना, बलपूर्वक निकालना, पृ = पूर्ण करना)। **क्षिणामि** = निवास, हिंसा करता हूँ (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना, क्षिण् = हिंसा करना)। **ब्रह्मणा** = ब्रह्म द्वारा (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **अमित्रान्** = अमित्रों को, अस्नेही जनों को (अ = नहीं, मिद् = स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, नरम होना, मृदुल होना)। **उत्** = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)। **नयामि** = ले जाता हूँ (नी = ले जाना, नय - जाना, हिलना, पहुँचना, संरक्षण करना)। **स्वान्** = स्व को (स्व - अपना)। **अहम्** = मैं (सर्वनाम) ॥ 3 ॥

498. तीक्ष्णीयांसः परशोः,
अग्नेः तीक्ष्णतरा उत।
इन्द्रस्य वज्रात् तीक्ष्णीयांसो,
येषाम् अस्मि पुरोहितः ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - **तीक्ष्णीयांसः** = अत्यन्त तीक्ष्ण, प्रतिष्ठा, प्रतीक्षा **परशोः** = तीक्ष्ण, सन्तुष्ट करने वाला, हिंसा करने वाला, सिञ्चन करने वाला, दुःख देने वाला **अग्नेः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् **तीक्ष्णतरा** = उत्तम तीक्ष्ण, प्रतिष्ठा, प्रतीक्षा **उत** = ही, भी, ओर **इन्द्रस्य** = इन्द्र का, परम ऐश्वर्यशाली का **वज्रात्** = वज्र, गतिमान से **तीक्ष्णीयांसो** = अत्यन्त तीक्ष्ण, प्रतिष्ठा, प्रतीक्षा **येषाम्** = जिनका **अस्मि** = हूँ **पुरोहितः** = पुरोहित ॥ 4 ॥

पदार्थ - **तीक्ष्णीयांसः** = अत्यन्त तीक्ष्ण, प्रतिष्ठा, प्रतीक्षा (तीक्ष् = बैठना, ठहरना, तीक्ष्ण होना)। **परशोः** = तीक्ष्ण, सन्तुष्ट करने वाला, हिंसा करने वाला, सिञ्चन करने वाला, दुःख देने वाला (पृ - तृप्त करना, सन्तुष्ट करना, पृ - किसी कृत्य में आसक्त रहना, पृष - प्रोक्षण करना, सींचना, सहन करना, पीड़ा करना, दुःख देना, थकना, पीड़ित होना, शि - तीक्ष्ण करना, पैना करना, पतला करना, सुनना)। **अग्नेः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **तीक्ष्णतरा** = उत्तम तीक्ष्ण, प्रतिष्ठा, प्रतीक्षा (तीक्ष् = बैठना, ठहरना, तीक्ष्ण होना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **इन्द्रस्य** = इन्द्र का, परम ऐश्वर्यशाली का (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **वज्रात्** = वज्र, गतिमान से (वज् - गति करना, जाना)। **तीक्ष्णीयांसो** = अत्यन्त तीक्ष्ण, प्रतिष्ठा, प्रतीक्षा (तीक्ष् = बैठना, ठहरना, तीक्ष्ण होना)। **येषाम्** = जिनका (सर्वनाम)। **अस्मि** = हूँ (सर्वनाम)। **पुरोहितः** = पुरोहित (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, हि - चलना, जाना, जानना, पाना) ॥ 4 ॥

499. एषाम् अहम् आयुधा सम् स्यामि,

एषाम् राष्ट्रम् सुवीरम् वर्धयामि।
एषाम् क्षत्रम् अजरम् अस्तु जिष्णुः,
एषाम् चित्तम् विश्वे अवन्तु देवाः॥ 5॥

मन्त्रार्थ - **एषाम्** = इनका **अहम्** = मैं **आयुधा** = आयुध **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **स्यामि** = अन्त करता हूँ, नष्ट करता हूँ **एषाम्** = इनका **राष्ट्रम्** = राष्ट्र को **सुवीरम्** = उत्तम वीर को **वर्धयामि** = वृद्धि करता हूँ, बढ़ता हूँ **एषाम्** = इनका **क्षत्रम्** = क्षत्र को, रक्षा को **अजरम्** = जरा-हीन को **अस्तु** = हो **जिष्णुः** = जीतने वाला, जयाभिलाषी, जय की इच्छा वाला **एषाम्** = इनका **चित्तम्** = चित्त या चेतना, ज्ञान **विश्वे** = सभी **अवन्तु देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने॥ **5**॥

पदार्थ - **एषाम्** = इनका (सर्वनाम)। **अहम्** = मैं (सर्वनाम)। **आयुधा** = आयुध (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, युध - युद्ध करना, प्रहार करना, काटना, अय = जाना, जानना, पाना, गति करना, आय - शब्द करना, शासन करना, यु = मिलना, अलग करना, धा - धारण करना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **स्यामि** = अन्त करता हूँ, नष्ट करता हूँ (सो-स्य = अन्त करना, नष्ट करना)। **एषाम्** = इनका (सर्वनाम)। **राष्ट्रम्** = राष्ट्र को (रास = शब्द करना। राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **सुवीरम्** = उत्तम वीर को (सु - अच्छा, सुन्दर, वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)। **वर्धयामि** = वृद्धि करता हूँ, बढ़ता हूँ (वृध् = बढ़ना, चमकना, बोलना)। **एषाम्** = इनका (सर्वनाम)। **क्षत्रम्** = क्षत्र को, रक्षा को (क्षत्, क्षद् = खाना, कूटना, ढकना, मार डालना, रक्षा करना)। **अजरम्** = जरा-हीन को (अ = नहीं, जृ - जीर्ण होना, वृद्ध होना)। **अस्तु** = हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **जिष्णुः** = जीतने वाला, जयाभिलाषी, जय की इच्छा वाला (जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)। **एषाम्** = इनका (सर्वनाम)। **चित्तम्** = चित्त या चेतना, ज्ञान (चि - चुनना, एकत्र करना, चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, सम्यक् ज्ञान होना, स्मरण करना, शंका करना, सन्देह करना)। **विश्वे** = सभी (सर्वनाम)। **अवन्तु देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)॥ **5**॥

500. उत हर्षन्ताम् मघवन् वाजिनानि,
उत् वीराणाम् जयताम् एतु घोषः।
पृथक् घोषाः उलुलयः, केतुमन्तः उत् ईरताम्,
देवाः इन्द्र-ज्येष्ठा, मरुतो यन्तु सेनया॥ 6॥

मन्त्रार्थ - **उत** = ही, भी, ओर **हर्षन्ताम्** = आनन्दित हों **मघवन्** = धनवान्, ऐश्वर्यवान् **वाजिनानि** = वाजयुक्त, विद्यायुक्त, गतियुक्त **उत्** = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च **वीराणाम्** = वीरों का **जयताम्** = विजयों का **एतु** = प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे **घोषः** = घोष **पृथक्** = अलग **घोषाः** = घोष **उलुलयः** = गतिशील **केतुमन्तः** = ज्ञानी, निवास, परामर्श युक्त **उत्** = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च **ईरताम्** = प्रेरित करो, कम्पित करो **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने **इन्द्र-ज्येष्ठा** = इन्द्र-ज्येष्ठ **मरुतो** = मरणशील का, मरुत् का **यन्तु** = नियमन-नियन्त्रण, पोषण करो, उद्धार करो, प्राप्त करो **सेनया** = सेना द्वारा॥ **6**॥

पदार्थ - **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **हर्षन्ताम्** = आनन्दित हों (हृष - हृष्ट होना, सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना, झूठ बोलना, मिथ्या बोलना)। **मघवन्** = धनवान्, ऐश्वर्यवान् (मघ् = धन होना, ऐश्वर्य होना)। **वाजिनानि** = वाजयुक्त, विद्यायुक्त, गतियुक्त (वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना)। **उत्** = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)। **वीराणाम्** = वीरों का (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)। **जयताम्** = विजयों का (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)। **एतु** = प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना, इच्छा करना, प्रेरणा करना, ए - जाना, फैलना, व्यापना, गर्भवती होना, इच्छा करना, चाहना, खाना, उड़ाना, फेंकना, भेजना, प्रेरणा करना)। **घोषः** = घोष (घुष्

- घोषणा करना, शब्द करना, प्रशंसा करना)। **पृथक्** = अलग (अव्यय)। **घोषाः** = घोष (घुष् - घोषणा करना, शब्द करना, प्रशंसा करना)। **उलुलयः** = गतिशील (उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना)। **केतुमन्तः** = ज्ञानी, निवास, परामर्श युक्त (केत - बुलाना, आमन्त्रित करना, परामर्श देना, सम्मुख वार्ता करना, कित् - जानना, निवास करना, रोग निवारण करना)। **उत्** = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)। **ईरताम्** = प्रेरित करो, कम्पित करो (ईर् = कम्पन करना, जाना, जानना, पाना, फेकना, प्रेरणा करना)। **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **इन्द्र-ज्येष्ठा** = इन्द्र-ज्येष्ठ (इन्द = परम ऐश्वर्यवान् होना, ज्या - जीर्ण होना, पुराना होना, वृद्ध होना, बर्द्धित होना, बड़ा होना, जि - जय होना, जीतना)। **मरुतो** = मरणशील का, मरुत् का (मृ = मरना, देहत्याग करना)। **यन्तु** = नियमन-नियन्त्रण, पोषण करो, उद्धार करो, प्राप्त करो (यम् = रोकना, स्वाधीन रखना, आवरण करना, पोषण करना, नियमन करना, यन - उद्धार करना, या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, जानना)। **सेनया** = सेना द्वारा (सि–सिन् = बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना) **॥ 6 ॥**

501. प्र इता जयता नर,
उग्रा वः सन्तु बाहवो।
तीक्ष्ण-इषवः अबल-धन्वनः हत,
उग्र आयुधाः अबलान् उग्र-बाहवः ॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ - **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक **इता** = पाये, गति, ज्ञान, प्रकाश प्राप्त किया **जयता** = जीतें **नर** = नर **उग्रा** = उग्र **वः** = तुम लोग, तुम्हारा, तुमको, तुम सबका, तुम सबको, तुम सबके लिए। **सन्तु** = हों **बाहवो** = प्रयास करने वाले **तीक्ष्ण** = प्रतिष्ठा, प्रतीक्षा **इषवः** = इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि **अबल** = बलहीन **धन्वनः** = गति, शब्द करने वाले का **हत** = मारा गया **उग्र** = उग्र **आयुधाः** = आयुध **अबलान्** = अबलों को, बलहीनों को **उग्र** = उग्र **बाहवः** = प्रयास करने वाले **॥ 7 ॥**

पदार्थ - **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **इता** = पाये, गति, ज्ञान, प्रकाश प्राप्त किया (इ - जाना, जानना, पाना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)। **जयता** = जीतें (जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सबसे बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)। **नर** = नर (नृ - नम्र होना, विनय होना, कोमल होना, मृदु होना, चलना, ले जाना)। **उग्रा** = उग्र (उग् - उग्र - उग्र होना, तेज होना)। **वः** = तुम लोग, तुम्हारा, तुमको, तुम सबका, तुम सबको, तुम सबके लिए। **सन्तु** = हों (अस् - होना)। **बाहवो** = प्रयास करने वाले (बाह् - प्रयास करना, बह् - बहना, गति करना, बाहर होना, परे हो जाना, हिंसा करना)। **तीक्ष्ण** = प्रतिष्ठा, प्रतीक्षा (तीक्ष् = बैठना, ठहरना, तीक्ष्ण होना)। **इषवः** = इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि (इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना)। **अबल** = बलहीन (अ - नहीं, अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना)। **धन्वनः** = गति, शब्द करने वाले का (धन्व - जाना, जानना, पाना, धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)। **हत** = मारा गया (हन् - मारना)। **उग्र** = उग्र (उग् - उग्र - उग्र होना, तेज होना)। **आयुधाः** = आयुध (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, युध - युद्ध करना, प्रहार करना, काटना)। **अबलान्** = अबलों को, बलहीनों को (अ - नहीं, अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना)। **उग्र** = उग्र (उग् - उग्र - उग्र होना, तेज होना)। **बाहवः** = प्रयास करने वाले (बाह् - प्रयास करना, बह् - बहना, गति करना, बाहर होना, परे हो जाना, हिंसा करना) **॥ 7 ॥**

502. अवसृष्टा परा पत,
शरव्ये ब्रह्म-संशिते।
जय अमित्रान् प्र पद्यस्व जहि एषाम्,

वरम्-वरम् मा अमीषाम् मोचि कः चन ॥ 8 ॥

मन्त्रार्थ - अवसृष्टा = अवसर्जन किया हुआ, अवसर्जन करने वाला। **परापत** = परागति से ऊपर उठो। **शरव्ये =** शरव्य के लिए। **ब्रह्म-संशिते =** ब्रह्मसंशित के लिए। **जय =** विजय **अमित्रान् =** अमित्रों को, अस्नेही जनों को **प्र =** प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक **पद्यस्व =** चलो **जहि =** हनन करो, नष्ट करो **एषाम् =** इनका **वरम्-वरम् =** सभी वर को **मा =** नहीं, मत **अमीषाम् =** शब्द, गति, सेवा युक्त, अतुल्य, अहिंसक इच्छा को **मोचि =** मोचित करता है, छोड़ता है, प्रसन्नता देता है **कः =** कौन **चन =** ही ॥ 8 ॥

पदार्थ - अवसृष्टा = अवसर्जन किया हुआ, अवसर्जन करने वाला (अव = नीचे, दूर, प्राप्त, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, सृज् - रचना करना, बनाना, उत्पादन करना, त्याग करना)। **परापत =** परागति से ऊपर उठो (पत् = ऐश्वर्य होना, जाना, जानना, पाना, नीचे गति करना, परा = परम, परे, पीछे, विपरीत (अव्यय))। **शरव्ये =** शरव्य के लिए (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, शृ - मार डालना, दुःख देना, पीड़ा करना, फटना, हिंसा करना, मारना, श्रि - सेवा करना, आश्रय करना)। **ब्रह्म-संशिते =** ब्रह्मसंशित के लिए (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना, सम् - सम्यक्, भलीभाँति, शि - तीक्ष्ण करना, पैना करना, पतला करना, सुनना)। **जय =** विजय (जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सबसे बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)। **अमित्रान् =** अमित्रों को, अस्नेही जनों को (अ = नहीं, मित् = प्रीति करना, स्नेह करना)। **प्र =** प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **पद्यस्व =** चलो (पद् - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना)। **जहि =** हनन करो, नष्ट करो (जह - हिंसा करना, चलना, फैलना, जहा – परित्याग करना, छोड़ना)। **एषाम् =** इनका (सर्वनाम)। **वरम्-वरम् =** सभी वर को (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, पसन्द करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **मा =** नहीं, मत (अव्यय)। **अमीषाम् =** शब्द, गति, सेवा युक्त, अतुल्य, अहिंसक इच्छा को (अम् = गति, शब्द, सेवा करना, रोग होना, अ - नहीं, मा = मापना, नापना, तौलना, मि - फेकना, स्थापना करना, रक्षा करना, मी - हिंसा करना, मारना)। **मोचि =** मोचित करता है, छोड़ता है, प्रसन्नता देता है (मुच - बोलना, कहना, पीसना, ठगना, मुच - छोड़ना, द्रव्यादि देना, प्रसन्न होना)। **कः =** कौन (सर्वनाम)। **चन =** ही ॥ 8 ॥

91. वनस्पति सूक्त - 20

503. अयम् ते योनिः ऋत्वियो,
यतो जातो अरोचथाः।
तम् जानन् अग्ने आ रोह,
अधा नो वर्धया रयिम् ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ : अयम् यह **ते** तुम्हारे लिए **ऋत्वियो** ऋतु-सम्बन्धी **योनिः** बन्ध है **यतो** जिससे **अरोचथा** प्रकाश **जातो** उत्पन्न हुआ। **अग्ने** हे अग्नि! **तम्** उसको **जानन्** जानते हुए **आ रोह** ऊपर चढ़ो, **अधा** अब **नो** हमारे लिए **रयिम्** विद्या को **वर्द्धया** बढ़ाओ ॥ 1 ॥

भावार्थ : ऊर्ध्वचेता विद्वान् (अग्नि) के लिए प्रकाश को उत्पन्न करने वाला ही ऋतुबन्ध है। ऋतु के अनुसार उसी प्रकाशजनक के बन्धन में रहो अर्थात् सभी ऋतुओं में यथोचित उपासना करते रहें। इस प्रकाश के मूल परमात्मा को जानते हुए उपासना करने से उन्नति करें तथा समाज में विद्या का प्रसार करें ॥ 1 ॥

पदार्थ : अयम् = यह। **ते** = तुम्हारा, तुम्हारे लिए। **योनिः** = बन्धन (युञ् = बन्धन होना)। **ऋत्वियो** = ऋतु सम्बन्धी (ऋ = जाना, जानना, ऋतु)। **यतः** = जिससे। **जातः** = उत्पन्न (जन् = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **अरोचथा** = प्रकाश हुआ (रुच् = प्रकाश होना)। **तम्** = उसको। **जानन्** = जानते हुए (ज्ञा - जानना, समझना)। **अग्ने** = हे अग्नि! (अग् = गति करना, आगे जाना)। **आरोह** = ऊपर चढ़ो (रुह् = ऊपर चढ़ना)। **अधा** = अब। **नो** (नः) = हमारा। **वर्धया** = बढ़ाओ (वृध - बढ़ना)। **रयिम्** = विद्या को (रय् = जाना, जानना, पाना) ॥ 1 ॥

504. अग्ने अच्छा वद इह, नः प्रत्यङ् नः सुमना भव।
प्र नो यच्छ विशाम् पते, धनदा असि नो त्वम्॥ 2॥

मन्त्रार्थ :- अग्ने = हे अग्नि! **अच्छा** - अच्छा, स्वच्छ, निर्मल **वद्** - बोलो **इह** - यहाँ **नः** - हमारे लिए **प्रत्यङ्** - प्रत्येक **नः** हमारे **सुमना** - सुमन वाले, सुन्दर मन वाले **भव** - हो **प्र** - प्रकृष्ट, अधिक **नो** - हमारे लिए **यच्छ** - दो **विशाम्** = विशा, प्रतिष्ठित, प्रवेशी को **पते =** पति **धनदा** - धन देने वाले **असि** - हो **नो** - हमारे लिए **त्वम्** - तुम॥ **2॥**

भावार्थ :- अग्नि परमात्मा ही विजेता तथा दाता है। वह हमारे अनुकूल हो तो सब अनुकूल होगा। यही भावना इसमें व्यक्त की गयी है॥ **2॥**

पदार्थ :- अग्ने = हे अग्नि! (अग् = ऊर्ध्व गति करना, अग्रणी होना, तेजस्वी होना, चमकना, जानना, पहुंचना, पाना)। **अच्छा =** अच्छा, श्रेष्ठ, सुन्दर, स्वच्छ, निर्मल (अच्छ् - अच्छा होना, निर्मल करना)। **वद =** बोलो, कहो (वद् - बोलना, कहना)। **इह =** इसमें, यहां। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा। **प्रत्यङ् =** प्रत्येक (अव्यय)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा। **सुमना** - सुमन वाले, सुन्दर मन वाले (सु = सुन्दर, अच्छा, मन् - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना)। **भव =** हो (भू = होना)। **प्र =** अधिक। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा। **यच्छ** - दो (यच्छ = देना)। **विशाम् =** विशा, प्रतिष्ठित, प्रवेशी को (विश - भीतर जाना, चारों ओर फैलना, विश - घुसना, भीतर जाना, धंसना)। **पते =** पति (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **धनदा** - धन देने वाले (धन् - उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)। **असि =** हो (अस् - होना)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा। **त्वम् =** तुम॥ **2॥**

505. प्र नो यच्छतु अर्यमा, प्र भगः प्र बृहस्पतिः।
प्र देवीः प्र उत सूनृता, रयिम् देवी दधातु मे॥ 3॥

मन्त्रार्थ :- प्र = अधिक, **नो** - हमारे लिए, **यच्छतु** - प्रदान करे, **अर्यमा** - अर्यमा, **प्र =** अधिक, **भगः =** भग **प्र =** अधिक, **बृहस्पतिः** - बृहस्पति। **प्र =** अधिक, **देवीः =** दिव्यगुणयुक्त **प्र =** अधिक **उत** = ही, भी, ओर **सूनृता =** सुनृता, उत्पत्ति-सृजन को ले जाने वाली **रयिम् =** विद्या, ज्ञान को **देवी** - देवी, दिव्य शक्ति, **दधातु** - धारण करे, **मे** - मेरा, मेरे लिए॥ **3॥**

भावार्थ :- उपासना से परमात्मा की अनुभूति होने पर परमात्मा से हमें बहुत अनुदान प्राप्त होता है। विभिन्न नामों से परमात्मा की ही स्तुति की गयी है। विभिन्न नामों, गुणों को परमात्मा की दिव्य शक्तियाँ भी माना जाता है जो हमें अनेक अनुदान प्रदान करती हैं॥ **3॥**

पदार्थ :- प्र = अधिक (उपसर्ग)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा। **यच्छतु** - प्रदान करे (यच्छ = देना)। **अर्यमा** - अर्यमा (ऋ - जाना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना, पहुँचाना, अर्-ऋ - गति करना, जाना, जानना, पाना, शब्द करना, व्याप्त होना, मिलाना, महत्व दिखाना, हिंसा करना)। **प्र =** अधिक (उपसर्ग)। **भगः =** भग (भग्-भज् = सेवा करना, सेवन करना, सेवित होना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)। **प्र =** अधिक (उपसर्ग)। **बृहस्पतिः =** विराट, महान् (बृह् - बोलना, अधिक होना, बढ़ना, वृद्धि होना)। **प्र =** अधिक (उपसर्ग)। **देवीः =** दिव्यगुणयुक्त (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **प्र =** अधिक (उपसर्ग)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **सूनृता =** सुनृता, उत्पत्ति-सृजन को ले जाने वाली (सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, नृ = ले जाना)। **रयिम् =** विद्या, ज्ञान को (रय्-रि, री - चलना, जाना, जानना, पाना, री-रै - शब्द करना)। **देवी =** दिव्यगुणयुक्त (दिव् = प्रकाशित होना, स्तुति करना)। **दधातु =** धारण करे (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)। **मे =** मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)॥ **3॥**

506. सोमम् राजानम् अवसे, अग्निम् गीर्भिः हवामहे।
आदित्यम् विष्णुम् सूर्यम्, ब्रह्माणम् च बृहस्पतिम्॥ 4॥

मन्त्रार्थ :- अवसे - रक्षा के लिए **सोमम्** - सोम को **राजानम्** - राजा को **अग्निम्** - अग्नि को **गीर्भिः =** वाणियों,

बोध, सिञ्चन द्वारा **आदित्यम्** - आदित्य को **विष्णुम्** - विष्णु को **सूर्यम्** - सूर्य को **ब्रह्माणम्** - ब्राह्मण को, बृहद् को, बड़े को **च** - और **बृहस्पतिम्** - बृहस्पति को **हवामहे** - आह्वान करते हैं, पुकारते हैं **॥ 4 ॥**

भावार्थ :- हम रक्षण-पालन के लिए परमात्मा को पुकारते हैं। उसे विभिन्न नामों से पुकारा जाता है। अनेक नाम विशिष्ट गुणों के स्मरण के लिए हैं। आ-रभ् धातु के प्रयोग से कार्य आरम्भ करने का भाव प्रमुख है। कोई भी कार्य आरम्भ करते समय परमात्मा का स्मरण, आह्वान करना ही चाहिए **॥ 4 ॥**

पदार्थ :- सोमम् = सोम को, ऐश्वर्यवान् को (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना)। **राजानम् =** राजा को (राज् = चमकना, प्रकाशित-शोभित होना)। **अवसे =** रक्षा के लिए (अव् = रक्षा करना)। **अग्निम् =** अग्नि को, ऊर्ध्वगामी, तेजस्वी, विद्वान् को (अग् - जाना, जानना, पाना)। **गीर्भिः =** वाणियों, बोध, सिञ्चन द्वारा (गृ-गृण् = शब्द करना, सिञ्चन करना, घर्षण करना, जानना, समझना, निगलना, बहिर्गमन करना, गृ - शब्द करना, गा-गै = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना)। **हवामहे** = आह्वान करते हैं, आदान- प्रदान करते हैं (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **आदित्यम् =** अक्षय, अविनाशी से उत्पन्न को, आदित्य को, अदिति से उत्पन्न को (अ - नहीं, दी = क्षय होना, नष्ट होना, अद् = खाना)। **विष्णुम् =** विष्णु को (विष् = व्याप्त होना)। **सूर्यम् =** सूर्य को (सुर् = ऐश्वर्य, प्रकाश होना)। **ब्रह्माणम् =** ब्राह्मण को, बृहद् को, बड़े को (बृह् = बढ़ना, बड़ा होना, जानना)। **च =** और। **बृहस्पतिम् =** बृहस्पति को (बृह् - बोलना, अधिक होना, बढ़ना, वृद्धि होना) **॥ 4 ॥**

507. त्वम् नो अग्ने अग्निभिः,
ब्रह्म यज्ञम् च वर्धय।
त्वम् नो देव दातवे,
रयिम् दानाय चोदय ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ - त्वम् = तुम **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा **अग्ने =** हे अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् **अग्निभिः =** अग्नियों, ऊर्ध्वगामियों, तेजस्वियों, विद्वानों द्वारा, अग्नियों के साथ **ब्रह्म =** ब्रह्म, महान्, बड़ा, बृहत् **यज्ञम् =** यजन को **च =** और **वर्धय =** बढ़ो, बढ़ाओ **त्वम् =** तुम **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा **देव =** देव, विद्वान्, तेजस्वी, दिव्यस्वरूप **दातवे =** देने वाले **रयिम् =** विद्या, ज्ञान को **दानाय =** दान के लिए **चोदय =** प्रेरित करो, प्रेरणा दो **॥ 5 ॥**

पदार्थ - त्वम् = तुम (सर्वनाम)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **अग्ने =** हे अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **अग्निभिः =** अग्नियों, ऊर्ध्वगामियों, तेजस्वियों, विद्वानों द्वारा, अग्नियों के साथ (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **ब्रह्म =** ब्रह्म, महान्, बड़ा, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **यज्ञम् =** यजन को (यज - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना)। **च =** और (अव्यय)। **वर्धय =** बढ़ो, बढ़ाओ (वृध् = बढ़ना, चमकना, बोलना)। **त्वम् =** तुम (सर्वनाम)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **देव =** देव, विद्वान्, तेजस्वी, दिव्यस्वरूप (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **दातवे =** देने वाले (दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना)। **रयिम् =** विद्या, ज्ञान को (रय्-रि, री - चलना, जाना, जानना, पाना, री-रै - शब्द करना)। **दानाय =** दान के लिए (दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना)। **चोदय =** प्रेरित करो, प्रेरणा दो (चुद - प्रेरणा करना, पूछना, प्रश्न करना, प्रार्थना करना) **॥ 5 ॥**

508. इन्द्रवायू उभौ इह, सुहवा इह हवामहे।
यथा नः सर्वः इत् जनो सम्-गत्याम्,
सुमनाः असद् दान-कामः च नः भुवत् ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ- इन्द्रवायू इन्द्र तथा वायु **इह** यहाँ **सुहवा** सुन्दर आह्वान द्वारा **इह** यहाँ **हवामहे** आह्वान करते हैं। **यथा** जैसे **नः** हमारे **सर्वः** सब **इत्** ही **जनो** जन **सङ्गत्याम्** संगमन (सम्मेलन, सभा, समाज) में **सुमनाः** सुन्दर मन वाले **असद्** हैं **दान** = दान **कामः** = कामना, इच्छा **च** = और **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा **भुवत्** = होता हैं ॥ 6 ॥

भावार्थ - इन्द्रवायू इन्द्र तथा वायु अर्थात् ऐश्वर्यवान् तथा प्रवाहमान रचनाशील। परमात्मा के दो गुणों अथवा दो दिव्य शक्तियों का स्मरण तथा आह्वान किया गया है। इस प्रकार स्मरण तथा आह्वान करने का आशय इन गुणों को स्वयम् धारण करना तथा इसके लिए परमात्मा की कृपा पाने की कामना है ॥ 6 ॥

पदार्थ - **इन्द्रवायू** = इन्द्र तथा वायु (इन्द् - परम ऐश्वर्य होना, वा -गति करना, बहना, वे - बुनना, रचना करना)। **इह** = यहाँ। **उभौ** = दोनों, पूर्णता (उभय - दोनो, उभ् - पूर्ण करना, भरना)। **सुहवा** = सुन्दर आह्वान द्वारा (ह्वे - आह्वान करना)। **इह** = यहाँ। **हवामहे** = आह्वान करते हैं (ह्वे - आह्वान करना)। **यथा** = जैसे। **नः** = हमारे। **सर्वः** = सब। **इत्** = ही। **जनो** = जन (जन् - उत्पन्न करना या होना)। **सङ्गत्याम्** = संगमन में (सम् - सम्यक्, गम् - जाना, सम्-गम्, सङ्गम् - मिलना, साथ चलना)। **सुमनाः** = सुन्दर मन वाले (सु - सुन्दर, अच्छा, मन् - जानना, विचार करना)। **असद्** = हुआ है (अस् - होना)। **दान** = दान (दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना)। **कामः** = कामना, इच्छा (कम - चाहना, इच्छा करना)। **च** = और (अव्यय)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **भुवत्** = होता हैं (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना) ॥ 6 ॥

509. अर्यमणम् बृहस्पतिम्, इन्द्रम् दानाय चोदय।
वातम् विष्णुम् सरस्वतीम्, सवितारम् च वाजिनम्॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ :- अर्यमणम् - अर्यमण को **बृहस्पतिम्** - बृहस्पति को **इन्द्रम्** - इन्द्र को **वातम्** - वायु के समान तीव्र गति वाले, वात को **विष्णुम्** - विष्णु को **सरस्वतीम्** - सरस्वती को **सवितारम्** - सविता को **च** - और **वाजिनम्** - वाजिन को **दानाय** - दान के लिए **चोदय** - प्रेरित कीजिए ॥ 7 ॥

भावार्थ :- देव शक्तियों को, प्रमुख लोगों को दान के लिए प्रेरित करना आवश्यक है। देने की भावना होना महत्वपूर्ण है ॥ 7 ॥

पदार्थ :- अर्यमणम् = अर्यमण को (ऋ - जाना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना, पहुँचाना, अर्-ऋ - गति करना, जाना, जानना, पाना, शब्द करना, व्याप्त होना, मिलाना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, मण् - अस्पष्ट शब्द करना, कहना)। **बृहस्पतिम्** = बृहस्पति को (बृह् - बोलना, अधिक होना, बढ़ना, वृद्धि होना)। **इन्द्रम्** = इन्द्र को (इन्द् - परम ऐश्वर्य होना)। **दानाय** = दान के लिए (दा - देना, दान करना)। **चोदय** = प्रेरित कीजिए (चुद् - प्रेरणा करना, पूछना, प्रश्न करना, प्रार्थना करना)। **वातम्** = वायु के समान तीव्र गति वाले, वात को (वात - सुखी होना, आनन्द करना, सेवा करना, जाना, वा - गति करना, बहना, पवन की भाँति चलना)। **विष्णुम्** = विष्णु को (विष् = व्यापक होना)। **सरस्वतीम्** = सरस्वती को (सृ - जाना, जानना, पाना)। **सवितारम्** = सविता को (सु = उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना या करना)। **च** = और। **वाजिनम्** = बल, गति, विद्या युक्त को (वाज् = बल होना, गति करना, जानना, पाना) ॥ 7 ॥

510. वाजस्य नु प्रसवे सम् बभूविम्, इमा च विश्वा भुवनानि अन्तः।
उत अदित्सन्तम् दापयतु प्रजानन्, रयिम् च नः सर्ववीरम् नि यच्छ॥ 8 ॥

मन्त्रार्थ - **वाजस्य** = विद्या का, गति का **नु** = ही, भी **प्रसवे** = उत्पन्नकर्ता में, उत्पन्न करे **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **बभूविम्** = हो गये **इमा** = यह, इसको **च** = और **विश्वा** = विश्व, सभी, सब **भुवनानि** = भुवों का, वर्तमान का **अन्तः** = बीच में, भीतर **उत** = ही, भी, ओर **अदित्सन्तम्** = अक्षय, अविनाशी **दापयतु** = दान करे **प्रजानन्** = प्रजनन करने वाले **रयिम्** = विद्या, ज्ञान को **च** = और **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा **सर्ववीरम्** = सर्ववीर को **नि** = निश्चित, निरन्तर **यच्छ** - दो ॥ 8 ॥

पदार्थ - **वाजस्य** = विद्या का, गति का (वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना, वा - गति करना, बहना, वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण

करना, घेरना, भेजना, खाना, वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना)। **नु =** ही, भी (निपात, अव्यय)। **प्रसवे =** उत्पन्नकर्ता में, उत्पन्न करे (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **बभूविम् =** हो गये (भू = होना, प्राप्त होना)। **इमा =** यह, इसको (सर्वनाम)। **च =** और (अव्यय)। **विश्वा =** विश्व, सभी, सब (सर्वनाम)। **भुवनानि =** भुवों का, वर्तमान का (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **अन्तः =** बीच में, भीतर (उपसर्ग, सर्वनाम)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **अदित्सन्तम् =** अक्षय, अविनाशी (अ - नहीं, अद् = खाना, दी = नष्ट होना)। **दापयतु =** दान करे (दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना)। **प्रजानन् =** प्रजनन करने वाले (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, जन् = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **रयिम् =** विद्या, ज्ञान को (रय्-रि, री - चलना, जाना, जानना, पाना, री-रै - शब्द करना)। **च =** और (अव्यय)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **सर्ववीरम् =** सर्ववीर को (सर्व = सब (सर्वनाम), वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)। **नि =** निश्चित, निरन्तर (अव्यय)। **यच्छ** - दो (यच्छ = देना) **॥ 8 ॥**

511. दुह्राम् मे पञ्च प्रदिशो,
दुह्राम् उर्वीः यथाबलम्।
प्र आपेयम् सर्वाः आकूतीः,
मनसा हृदयेन च ॥ 9 ॥

मन्त्रार्थ - **दुह्राम् =** दुहें, दोहन करें **मे =** मेरा, मेरे लिए **पञ्च =** पाँच **प्रदिशो** = प्रदिश, दिशा **दुह्राम् =** दुहें, दोहन करें **उर्वीः =** सहनशील, समर्थ, विस्तृत, गतिशील, समर्थ, बहु-दुःखदायी **यथाबलम् =** बल के अनुसार **प्र =** प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक **आपेयम् =** प्राप्ति, व्याप्ति, व्यापकता दें **सर्वाः =** सभी **आकूतीः =** वाणी, शब्द **मनसा =** मन से, मन द्वारा **हृदयेन =** हृदय द्वारा **च =** और **॥ 9 ॥**

पदार्थ - **दुह्राम् =** दुहें, दोहन करें (दुह् - दूध निकालना, दोहना, रिक्त करना, लेना, खींचना)। **मे =** मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **पञ्च =** पाँच (पञ्च - पाँच, संख्या)। **प्रदिशो** = प्रदिश, दिशा (प्र - प्रकृष्ट, दिश् - दिखाना, दिखाना, समझाना, कहना, देना)। **दुह्राम् =** दुहें, दोहन करें (दुह् - दूध निकालना, दोहना, रिक्त करना, लेना, खींचना)। **उर्वीः =** सहनशील, समर्थ, विस्तृत, गतिशील, समर्थ, बहु-दुःखदायी (उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना, उर्व - सहना, समर्थ होना, मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना)। **यथाबलम् =** बल के अनुसार (यथा = जिससे, जैसे, जिस प्रकार (अव्यय), बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना)। **प्र =** प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **आपेयम् =** प्राप्ति, व्याप्ति, व्यापकता दें (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)। **सर्वाः =** सभी (सर्वनाम)। **आकूतीः =** वाणी, शब्द (आ = समन्तात्, सम्पूर्ण, कू - शब्द करना)। **मनसा =** मन से, मन द्वारा (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **हृदयेन =** हृदय द्वारा (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)। **च =** और (अव्यय) **॥ 9 ॥**

512. गोसनिम् वाचम् उदेयम्,
वर्चसा मा अभि-उदिहि।
आ रुन्धाम् सर्वतो वायुः,
त्वष्टा पोषम् दधातु मे ॥ 10 ॥

मन्त्रार्थ - **गोसनिम् =** शब्द करने वाले को, मननशील, उपदेशक की सेवा को **वाचम् =** वाणी को **उदेयम् =** उदय करता है **वर्चसा =** प्रकाश द्वारा, तेज द्वारा **मा =** नहीं, मत **अभि-उदिहि =** अभि-उदित हो **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **रुन्धाम् =** रोकें **सर्वतो** = सब ओर से **वायुः =** गतिशील, रचनात्मक शक्ति, वायु **त्वष्टा =** त्वष्ट, प्रकाशक,

सूक्ष्म करने वाला **पोषम्** = पोषण करने वाले **दधातु** = धारण करे **मे** = मेरा, मेरे लिए ॥ **10** ॥

पदार्थ - **गोसनिम्** = शब्द करने वाले को, मननशील, उपदेशक की सेवा को (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, सन् - सेवा करना, दान करना, सत्कार करना, पूजा करना)। **वाचम्** = वाणी को (वच - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)। **उदेयम्** = उदय करता है (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, इ = जाना)। **वर्चसा** = प्रकाश द्वारा, तेज द्वारा (वर्च - प्रकाशित होना, चमकना)। **मा** = नहीं, मत (अव्यय)। **अभि-उदिहि** = अभि-उदित हो (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग), उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, इ = जाना, उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, उदि - उन्द् = भिगोना, गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **रुन्धाम्** = रोकें (रुन्ध-रुण् = रोकना, घेर लेना, घेरना)। **सर्वतो** = सब ओर से (अव्यय)। **वायुः** = गतिशील, रचनात्मक शक्ति, वायु (वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वा = गति करना, पवन की भाँति बहना, जाना, जानना, पाना, गन्ध होना, प्रवाहित होना, प्रवाहित करना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण करना, घेरना, भेजना, खाना, वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना)। **त्वष्टा** = त्वष्ट, प्रकाशक, सूक्ष्म करने वाला (त्वक्ष् = छीलना, रेतना, त्विष् = प्रकाशित होना, चमकना)। **पोषम्** = पोषण करने वाले (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, पूष - बढ़ना, अधिक होना, पोषण करना)। **दधातु** = धारण करे (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)। **मे** = मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम) ॥ **10** ॥

17. अनुवाक - 5

92. शान्ति सूक्त - 21

513. ये अग्नयः अप्सु अन्तः, ये वृत्रे ये पुरुषे ये अश्मसु।
यः आविवेश ओषधीः, यः वनस्पतीन् तेभ्यः, अग्निभ्यः हुतम् अस्तु एतत् ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ :- **ये** = जो **अग्नयः** = अग्निगण, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान, अग्नियाँ **अप्सु** = पालन-रक्षण में **अन्तः** = बीच में, भीतर **ये** = जो **वृत्रे** = वृत्र में **ये** = जो **पुरुषे** = पुरुष में **ये** = जो **अश्मसु** = व्याप्त, व्यापक, प्राप्त में **यः** = जो **आविवेश** = प्रवेश किया **ओषधीः** = ओषधी **यः** = जो **वनस्पतीन्** = वनस्पतियों को **तेभ्यः** = उनके लिए **अग्निभ्यः** = अग्नियों, ऊर्ध्वगामियों, तेजस्वियों, विद्वानों के लिए **हुतम्** = प्रदान किये गये को, दानयुक्त, आदान-प्रदान, तृप्ति युक्त को **अस्तु** = हो **एतत्** = यह ॥ **1** ॥

पदार्थ :- **ये** = जो (सर्वनाम)। **अग्नयः** = अग्निगण, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान, अग्नियाँ (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **अप्सु** = पालन-रक्षण में (अप = जाना, जानना, पाना, पालन करना)। **अन्तः** = बीच में, भीतर (उपसर्ग, सर्वनाम)। **ये** = जो (सर्वनाम)। **वृत्रे** = वृत्र में (वृ - वरण करना, आच्छादन करना, स्वीकार करना, वृत् - वर्तना, वर्तमान होना वरण करना, सेवा करना, चमकना, बोलना, हिंसा करना)। **ये** = जो (सर्वनाम)। **पुरुषे** = पुरुष में (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, पृ - पूर्ण करना, भरना, पालन करना, रक्षा करना, तृप्त करना)। **ये** = जो (सर्वनाम)। **अश्मसु** = व्याप्त, व्यापक, प्राप्त में (अश् = भोजन करना, व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना)। **यः** = जो (सर्वनाम)। **आविवेश** = प्रवेश किया (आ- समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, वि - विशेष, विश् = प्रवेश करना, फैलना)। **ओषधीः** = ओषधी (उषध् - चिकित्सा करना, रोग मुक्त करना)। **यः** = जो (सर्वनाम)। **वनस्पतीन्** = वनस्पतियों को (वन - शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, आपद्ग्रस्त होना, अलग करना, मिलाना, स्मरण करना, बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, याचना करना, मांगना, दुःख देना, उद्योग-धन्धा करना, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **तेभ्यः** = उनके लिए (सर्वनाम)। **अग्निभ्यः** = अग्नियों, ऊर्ध्वगामियों, तेजस्वियों, विद्वानों के लिए (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **हुतम्** = प्रदान किये गये को, दानयुक्त, आदान-प्रदान, तृप्ति युक्त को (हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना,

ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)। **अस्तु =** हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **एतत् =** यह (सर्वनाम) **॥ 1 ॥**

514. यः सोमे अन्तः यो गोषु अन्तः,
यः आविष्टो वयः-सु यो मृगेषु।
यः आविवेश द्विपदः यः चतुष्पदः तेभ्यो,
अग्निभ्यो हुतम् अस्तु एतत् ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - **यः =** जो **सोमे =** सोम में, सौम्यता में, श्रद्धा व उपकार की भावना में **अन्तः =** बीच में, भीतर **यो =** जो **गोषु =** गो में, शब्द करने वालों, मननशीलों, उपदेशकों में **अन्तः =** बीच में, भीतर **यः =** जो **आविष्टो =** प्रवेश करने वाले, प्रवेश करते हुए **वयः-सु यो =** जो **मृगेषु =** मृगों में, अन्वेषियों पर **यः =** जो **आविवेश =** प्रवेश किया **द्विपदः =** द्विपद वाला **यः =** जो **चतुष्पदः =** चार पैर वाले **तेभ्यो =** उनके लिए **अग्निभ्यो =** अग्नियों, ऊर्ध्वगामियों, तेजस्वियों, विद्वानों के लिए **हुतम् =** प्रदान किये गये को, दानयुक्त, आदान-प्रदान, तृप्ति युक्त को **अस्तु =** हो **एतत् =** यह **॥ 2 ॥**

पदार्थ - **यः =** जो (सर्वनाम)। **सोमे =** सोम में, सौम्यता में, श्रद्धा व उपकार की भावना में (सु = उत्पन्न करना, अद्भुत सामर्थ्य, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना। सू = प्रेरणा देना। सो–स्य, सय् - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना)। **अन्तः =** बीच में, भीतर (उपसर्ग, सर्वनाम)। **यो =** जो (सर्वनाम)। **गोषु =** गो में, शब्द करने वालों, मननशीलों, उपदेशकों में (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)। **अन्तः =** बीच में, भीतर (उपसर्ग, सर्वनाम)। **यः =** जो (सर्वनाम)। **आविष्टो =** प्रवेश करने वाले, प्रवेश करते हुए (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, वि - विशेष, विश् = प्रवेश करना, फैलना)। **वयः-सु यो =** जो (सर्वनाम)। **मृगेषु =** मृगों में, अन्वेषियों पर (मृग् - अन्वेषण करना, खोजना, आखेट करना)। **यः =** जो (सर्वनाम)। **आविवेश =** प्रवेश किया (आ- समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, वि - विशेष, विश् = प्रवेश करना, फैलना)। **द्विपदः =** द्विपद वाला (द्वि = दो, संख्या, पद - स्थानान्तर करना, चलना, जाना)। **यः =** जो (सर्वनाम)। **चतुष्पदः =** चार पैर वाले (चतुः - चार, संख्या, पद - चलना, स्थानान्तर करना)। **तेभ्यो =** उनके लिए (सर्वनाम)। **अग्निभ्यो =** अग्नियों, ऊर्ध्वगामियों, तेजस्वियों, विद्वानों के लिए (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **हुतम् =** प्रदान किये गये को, दानयुक्त, आदान-प्रदान, तृप्ति युक्त को (हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)। **अस्तु =** हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **एतत् =** यह (सर्वनाम) **॥ 2 ॥**

515. यः इन्द्रेण सरथम् याति,
देवो वैश्वानरः उत विश्वदाव्यः।
यम् जोहवीमि पृतनासु सासहिम् तेभ्यो,
अग्निभ्यो हुतम् अस्तु एतत् ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - **यः =** जो **इन्द्रेण =** इन्द्र द्वारा, परम ऐश्वर्य द्वारा **सरथम् =** सरथ को, ले जाने वाले को, रमने वाले को **याति =** जाता है **देवो =** विद्वान्, तेजस्वी, देवगण **वैश्वानरः =** विश्वनायक **उत =** ही, भी, ओर **विश्वदाव्यः =** विश्वदाव्य **यम् =** जिसे, जिसको, जहाँ **जोहवीमि =** दान करता हूँ, आदान-प्रदान करता हूँ **पृतनासु =** व्यापक, बलों में **सासहिम् =** सक्षम, समर्थ, तृप्त, सन्तुष्ट, सहने वाले को **तेभ्यो =** उनके लिए **अग्निभ्यो =** अग्नियों, ऊर्ध्वगामियों, तेजस्वियों, विद्वानों के लिए **हुतम् =** प्रदान किये गये को, दानयुक्त, आदान-प्रदान, तृप्ति युक्त को **अस्तु =** हो **एतत् =** यह **॥ 3 ॥**

पदार्थ - **यः =** जो (सर्वनाम)। **इन्द्रेण =** इन्द्र द्वारा, परम ऐश्वर्य द्वारा (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **सरथम् =** सरथ को, ले जाने वाले को, रमने वाले को (स - सहित, साथ, रम् = रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित

करना, क्रीडा करना, खेलना, सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना)। **याति =** जाता है (या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)। **देवो =** विद्वान्, तेजस्वी, देवगण (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **वैश्वानरः =** विश्वनायक (विश्व - सब, नृ - चलना, ले जाना, विनय होना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **विश्वदाव्यः =** विश्वदाव्य (विश्व - सभी, दह् = जलाना, नष्ट करना, दुःख देना, दग्ध करना)। **यम् =** जिसे, जिसको, जहाँ (सर्वनाम)। **जोहवीमि =** दान करता हूँ, आदान-प्रदान करता हूँ (हू-जुहू = दान करना, आदान-प्रदान करना)। **पृतनासु =** व्यापक, बलों में (पृत -व्याप्त होना, जीवन होना, बलपूर्वक निकालना, पृ = पूर्ण करना)। **सासहिम् =** सक्षम, समर्थ, तृप्त, सन्तुष्ट, सहने वाले को (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना)। **तेभ्यो =** उनके लिए (सर्वनाम)। **अग्निभ्यो =** अग्नियों, ऊर्ध्वगामियों, तेजस्वियों, विद्वानों के लिए (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **हुतम् =** प्रदान किये गये को, दानयुक्त, आदान-प्रदान, तृप्ति युक्त को (हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)। **अस्तु =** हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **एतत् =** यह (सर्वनाम) **॥ 3 ॥**

516. यो देवो विश्वात् यम् उ कामम् आहुः,
यम् दातारम् प्रतिगृह्णन्तम् आहुः।
यो धीरः शक्रः परिभूः अदाभ्यः तेभ्यो,
अग्निभ्यो हुतम् अस्तु एतत् ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - यो = जो **देवो =** विद्वान्, तेजस्वी, देवगण **विश्वात् =** विश्व, सभी, सब से **यम् =** जिसे, जिसको, जहाँ **उ =** निश्चय ही, भी **कामम् =** कामना, इच्छा को **आहुः =** आदान-प्रदान किया हुआ, आहुत, आह्वान किये, बुलाये हुए, व्याप्त **यम् =** जिसे, जिसको, जहाँ **दातारम् =** देने वाले को **प्रतिगृह्णन्तम् =** भीतर धारण करने वाले को **आहुः =** आदान-प्रदान किया हुआ, आहुत, आह्वान किये, बुलाये हुए, व्याप्त **यो =** जो **धीरः =** धीर **शक्रः =** शक्तिवान्, समर्थ **परिभूः =** सबसे बढ़कर, सर्वत्र रहने वाला **अदाभ्यः =** अनिन्दकों, अहिंसकों के लिए, अदानियों के लिए, नहीं खाने वालों के लिए **तेभ्यो =** उनके लिए **अग्निभ्यो =** अग्नियों, ऊर्ध्वगामियों, तेजस्वियों, विद्वानों के लिए **हुतम् =** प्रदान किये गये को, दानयुक्त, आदान-प्रदान, तृप्ति युक्त को **अस्तु =** हो **एतत् =** यह **॥ 4 ॥**

पदार्थ - यो = जो (सर्वनाम)। **देवो =** विद्वान्, तेजस्वी, देवगण (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **विश्वात् =** विश्व, सभी, सब से (सर्वनाम)। **यम् =** जिसे, जिसको, जहाँ (सर्वनाम)। **उ =** निश्चय ही, भी (निपात, अव्यय)। **कामम् =** कामना, इच्छा को (कम् - चाहना, इच्छा करना)। **आहुः =** आदान-प्रदान किया हुआ, आहुत, आह्वान किये, बुलाये हुए, व्याप्त (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, अह - फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, हु - दान करना, आदान-प्रदान करना)। **यम् =** जिसे, जिसको, जहाँ (सर्वनाम)। **दातारम् =** देने वाले को (दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना)। **प्रतिगृह्णन्तम् =** भीतर धारण करने वाले को (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, अव्यय, गृभ्, गर्भ् = गर्भ होना, धारण करना)। **आहुः =** आदान-प्रदान किया हुआ, आहुत, आह्वान किये, बुलाये हुए, व्याप्त (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, अह - फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, हु - दान करना, आदान-प्रदान करना)। **यो =** जो (सर्वनाम)। **धीरः =** धीर (धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना, धि = धारण करना, युक्त होना, धृ - धारण करना, सहना, स्थिर रहना)। **शक्रः =** शक्तिवान्, समर्थ (शक् - शक्तिमान् होना, समर्थ होना, सक्षम होना, कर सकना, सहना, सहन करना)। **परिभूः =** सबसे बढ़कर, सर्वत्र रहने वाला (परि = सभी तरफ, उपसर्ग, भू- होना)। **अदाभ्यः =** अनिन्दकों, अहिंसकों के लिए, अदानियों के लिए, नहीं खाने वालों के लिए (अ - नहीं (उपसर्ग), दभ - निन्दा करना, हिंसा करना, आज्ञा देना, दा - देना, अद् - खाना)। **तेभ्यो =** उनके लिए (सर्वनाम)। **अग्निभ्यो =** अग्नियों, ऊर्ध्वगामियों, तेजस्वियों, विद्वानों के लिए (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **हुतम् =** प्रदान किये गये को, दानयुक्त, आदान-प्रदान, तृप्ति युक्त को (हु - दान

करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)। **अस्तु** = हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **एतत्** = यह (सर्वनाम) **॥ 4 ॥**

517. यम् त्वा होतारम् मनसा अभि सम्-विदुः,
त्रयोदश भौवनाः पञ्च मानवाः।
वर्चोधसे यशसे सूनृतावते तेभ्यो,
अग्निभ्यो हुतम् अस्तु एतत् ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ - **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **होतारम्** = हवन करने वाले को, आह्वान्, ग्रहण, दान करने वाले को **मनसा** = मन से, मन द्वारा **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा **सम्-विदुः** = सम्यक् विद्वान् **त्रयोदश** = तेरह **भौवनाः** = भौवन, भुवन-सम्बन्धी **पञ्च** = पाँच **मानवाः** = मानव, मन सम्बन्धी **वर्चोधसे** = प्रकाश धारण करने वाले के लिए **यशसे** = यश, कीर्ति के लिए **सूनृतावते** = उत्पत्ति-सृजन युक्त के लिए **तेभ्यो** = उनके लिए **अग्निभ्यो** = अग्नियों, ऊर्ध्वगामियों, तेजस्वियों, विद्वानों के लिए **हुतम्** = प्रदान किये गये को, दानयुक्त, आदान-प्रदान, तृप्ति युक्त को **अस्तु** = हो **एतत्** = यह **॥ 5 ॥**

पदार्थ - **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ (सर्वनाम)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **होतारम्** = हवन करने वाले को, आह्वान्, ग्रहण, दान करने वाले को (हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)। **मनसा** = मन से, मन द्वारा (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **सम्-विदुः** = सम्यक् विद्वान् (सम् = सम्यक् रूप से, भली भाँति, उपसर्ग, विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)। **त्रयोदश** = तेरह (संख्या)। **भौवनाः** = भौवन, भुवन-सम्बन्धी (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **पञ्च** = पाँच (पञ्च - पाँच, संख्या)। **मानवाः** = मानव, मन सम्बन्धी (मन् - मनन करना, समझना, जानना, मान - पूजा करना, सम्मान करना, श्रेष्ठ होना, शोध करना)। **वर्चोधसे** = प्रकाश धारण करने वाले के लिए (वर्च् = प्रकाशित होना, चमकना)। **यशसे** = यश, कीर्ति के लिए (यश् - प्रख्यात होना, कीर्ति होना, व्याप्त होना, फैलना)। **सूनृतावते** = उत्पत्ति-सृजन युक्त के लिए (सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, नृ = ले जाना)। **तेभ्यो** = उनके लिए (सर्वनाम)। **अग्निभ्यो** = अग्नियों, ऊर्ध्वगामियों, तेजस्वियों, विद्वानों के लिए (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **हुतम्** = प्रदान किये गये को, दानयुक्त, आदान-प्रदान, तृप्ति युक्त को (हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)। **अस्तु** = हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **एतत्** = यह (सर्वनाम) **॥ 5 ॥**

518. उक्ष-अन्नाय वशा-अन्नाय,
सोमपृष्ठाय वेधसे।
वैश्वानर-ज्येष्ठेभ्यः तेभ्यो,
अग्निभ्यो हुतम् अस्तु एतत् ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ - **उक्ष-अन्नाय** = प्रोक्षण, सिञ्चन, दृढ़ करने वाले अन्न के लिए **वशा-अन्नाय** = इच्छाओं वाले अन्न के लिए **सोमपृष्ठाय** = सोमपृष्ठ के लिए **वेधसे** = विधान करते हो, वेधस् के लिए, विधान करने वाले के लिए **वैश्वानर-ज्येष्ठेभ्यः** = विश्वनायक ज्येष्ठों के लिए **तेभ्यो** = उनके लिए **अग्निभ्यो** = अग्नियों, ऊर्ध्वगामियों, तेजस्वियों, विद्वानों के लिए **हुतम्** = प्रदान किये गये को, दानयुक्त, आदान-प्रदान, तृप्ति युक्त को **अस्तु** = हो **एतत्** = यह **॥ 6 ॥**

पदार्थ - **उक्ष-अन्नाय =** प्रोक्षण, सिञ्चन, दृढ़ करने वाले अन्न के लिए (उक्ष् - प्रोक्षण करना, सिञ्चन करना, स्वच्छ करना, दृढ़ करना, दृढ़ होना, अन् - जीवन होना, प्राणवान् होना, समर्थ होना, जाना, अद् = खाना)। **वशा-अन्नाय =** इच्छाओं वाले अन्न के लिए (वश् = इच्छा करना, चाहना, चमकना, अन् - जीवन होना, प्राणवान् होना, समर्थ होना, जाना, अद् = खाना)। **सोमपृष्ठाय =** सोमपृष्ठ के लिए (सु = उत्पन्न करना, अद्भुत सामर्थ्य, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना। सू = प्रेरणा देना। सो–स्य, सय् - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना। पी-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना। पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना, स्था-तिष्ठ - स्थित होना, ठहरना, बैठना, पृश् = प्रश्न करना, पूछना, पृश्, पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सींचना, सहन करना)। **वेधसे =** विधान करते हो, वेधस् के लिए, विधान करने वाले के लिए (विध् = विधान करना, वेधना, वेध करना, ताडना करना)। **वैश्वानर-ज्येष्ठेभ्यः =** विश्वनायक ज्येष्ठों के लिए (विश्व - सब, नृ - चलना, ले जाना, विनय होना, ज्या - जीर्ण होना, पुराना होना, वृद्ध होना, बर्द्धित होना, बड़ा होना, जि - जय होना, जीतना)। **तेभ्यो =** उनके लिए (सर्वनाम)। **अग्निभ्यो =** अग्नियों, ऊर्ध्वगामियों, तेजस्वियों, विद्वानों के लिए (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **हुतम् =** प्रदान किये गये को, दानयुक्त, आदान-प्रदान, तृप्ति युक्त को (हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)। **अस्तु =** हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **एतत् =** यह (सर्वनाम) **॥ 6 ॥**

519. दिवम् पृथिवीम् अनु अन्तरिक्षम्
ये विद्युतम् अनु-सम्-चरन्ति।
ये दिक्षु अन्तः ये वाते अन्तः तेभ्यो,
अग्निभ्यो हुतम् अस्तु एतत् ॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ - **दिवम् =** दिव को, तेजस्वी को **पृथिवीम् =** पृथिवी को **अनु =** पश्चात्, पीछे, अनुकूल **अन्तरिक्षम् =** अन्तरिक्ष, आकाश, अन्तर्दर्शी **ये =** जो **विद्युतम् =** विशेष प्रकाशमान को **अनु-सम्-चरन्ति =** अनुसरण करते हैं, अनुकूल आचरण करते हैं **ये =** जो **दिक्षु =** दिशाओं में **अन्तः =** बीच में, भीतर **ये =** जो **वाते =** वात में **अन्तः =** बीच में, भीतर **तेभ्यो =** उनके लिए **अग्निभ्यो =** अग्नियों, ऊर्ध्वगामियों, तेजस्वियों, विद्वानों के लिए **हुतम् =** प्रदान किये गये को, दानयुक्त, आदान-प्रदान, तृप्ति युक्त को **अस्तु =** हो **एतत् =** यह **॥ 7 ॥**

पदार्थ - **दिवम् =** दिव को, तेजस्वी को (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)। **पृथिवीम् =** पृथिवी को (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)। **अनु =** पश्चात्, पीछे, अनुकूल (उपसर्ग)। **अन्तरिक्षम् =** अन्तरिक्ष, आकाश, अन्तर्दर्शी (अन्तः - बीच में, इक्ष् - स्वाद लेना, ईक्ष् -देखना)। **ये =** जो (सर्वनाम)। **विद्युतम् =** विशेष प्रकाशमान को (वि - विशेष। द्युत् -दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना)। **अनु-सम्-चरन्ति =** अनुसरण करते हैं, अनुकूल आचरण करते हैं, (अनु = पश्चात्, पीछे, अनुकूल (उपसर्ग), सम् = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग), चर - जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)। **ये =** जो (सर्वनाम)। **दिक्षु =** दिशाओं में (दिश् - दिखाना, समझाना, आज्ञा करना, कहना, बोलना, देना, पारितोषिक देना, अतिरचना करना)। **अन्तः =** बीच में, भीतर (उपसर्ग, सर्वनाम)। **ये =** जो (सर्वनाम)। **वाते =** वात में (वात - सुखी होना, आनन्द करना, सेवा करना, जाना, वा - गति करना, बहना, पवन की भाँति चलना)। **अन्तः =** बीच में, भीतर (उपसर्ग, सर्वनाम)। **तेभ्यो =** उनके लिए (सर्वनाम)। **अग्निभ्यो =** अग्नियों, ऊर्ध्वगामियों, तेजस्वियों, विद्वानों के लिए (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **हुतम् =** प्रदान किये गये को, दानयुक्त, आदान-प्रदान, तृप्ति युक्त को (हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)। **अस्तु =** हो (अस - होना, रहना, जाना,

लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **एतत्** = यह (सर्वनाम) ॥ **7** ॥

520. हिरण्यपाणिम् सवितारम् इन्द्रम्,
बृहस्पतिम् वरुणम् मित्रम् अग्निम्।
विश्वान् देवान् अङ्गिरसो हवामहे,
इमम् क्रव्यादम् शमयन्तु अग्निम् ॥ 8 ॥

मन्त्रार्थ - **हिरण्यपाणिम्** = हिरण्यपाणि को, प्रकाश की स्तुति करने वाले को **सवितारम्** = सविता, सृष्टिकर्ता, ऐश्वर्यवान् को, उत्पन्न करने वाले का **इन्द्रम्** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान को **बृहस्पतिम्** = बृहस्पति, महान्, बृहत् का स्वामी को **वरुणम्** = वरणीय, वरण करने वाले को **मित्रम्** = मित्र को **अग्निम्** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् को **विश्वान्** = सभी को **देवान्** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों को **अङ्गिरसो** = विद्वान्, प्रगतिशील, पाने वाला **हवामहे** = आह्वान करते हैं, आदान- प्रदान करते हैं **इमम्** = इसको **क्रव्यादम्** = क्रव्याद, निर्दय खाने वाला **शमयन्तु** = कल्याण, शान्ति, शमन करें **अग्निम्** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् को ॥ **8** ॥

पदार्थ - **हिरण्यपाणिम्** = हिरण्यपाणि को, प्रकाश की स्तुति करने वाले को (हिरण - प्रकाश होना, दीप्त होना, शब्द करना, ध्वनि होना। पण् = स्तुति करना, व्यवहार करना)। **सवितारम्** = सविता, सृष्टिकर्ता, ऐश्वर्यवान् को, उत्पन्न करने वाले का (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)। **इन्द्रम्** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान को (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **बृहस्पतिम्** = बृहस्पति, महान्, बृहत् का स्वामी को (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना, पत् - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना, नीचे जाना, गिरना, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **वरुणम्** = वरणीय, वरण करने वाले को (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **मित्रम्** = मित्र को (मिद् - स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, मृदुल होना)। **अग्निम्** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् को (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **विश्वान्** = सभी को (विश् = भीतर जाना, सभी तरह फैलना)। **देवान्** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों को (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **अङ्गिरसो** = विद्वान्, प्रगतिशील, पाने वाला (अंग् = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)। **हवामहे** = आह्वान करते हैं, आदान- प्रदान करते हैं (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **इमम्** = इसको (सर्वनाम)। **क्रव्यादम्** = क्रव्याद, निर्दय खाने वाला (क्रू, क्रूर् = निर्दय होना, निर्दयता करना, कृ - करना, अद् - खाना)। **शमयन्तु** = कल्याण, शान्ति, शमन करें (शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)। **अग्निम्** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् को (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना) ॥ **8** ॥

521. शान्तो अग्निः क्रव्यात्,
शान्तः पुरुष-रेषणः।
अथो यो विश्वदाव्यः,
तम् क्रव्यादम् अशीशमम् ॥ 9 ॥

मन्त्रार्थ - **शान्तो** = शान्त **अग्निः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् **क्रव्यात्** = करणीय, क्रूर, निर्दयता से **शान्तः** = शान्त **पुरुष-रेषणः** = पुरुष-रेषण, प्रधान हिंसक, रक्षक-हिंसक **अथो** = अब, इसके बाद, इसके अनन्तर **यो** = जो **विश्वदाव्यः** = विश्वदाव्य **तम्** = उसको, उसे **क्रव्यादम्** = क्रव्याद, निर्दय खाने वाला **अशीशमम्** = कल्याण, शान्ति, शमन किया ॥ **9** ॥

पदार्थ - **शान्तो** = शान्त (शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना,

सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)। **अग्निः =** अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **क्रव्यात् =** करणीय, क्रूर, निर्दयता से (क्रू, क्रूर् = निर्दय होना, निर्दयता करना, कृ - करना)। **शान्तः =** शान्त (शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)। **पुरुष-रेषणः =** पुरुष-रेषण, प्रधान हिंसक, रक्षक-हिंसक (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, पृ - पूर्ण करना, भरना, पालन करना, रक्षा करना, तृप्त करना, रिश्-रिष - हिंसा करना, मार डालना या दुःख देना, मारने का यत्न करना)। **अथो =** अब, इसके बाद, इसके अनन्तर (अव्यय)। **यो =** जो (सर्वनाम)। **विश्वदाव्यः =** विश्वदाव्य (विश्व - सभी, दह् = जलाना, नष्ट करना, दुःख देना, दग्ध करना)। **तम् =** उसको, उसे (सर्वनाम)। **क्रव्यादम् =** क्रव्याद, निर्दय खाने वाला (क्रू, क्रूर् = निर्दय होना, निर्दयता करना, कृ - करना, अद् - खाना)। **अशीशमम् =** कल्याण, शान्ति, शमन किया (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना) **॥ 9 ॥**

522. ये पर्वताः सोमपृष्ठा,
आपः उत्तान-शीवरीः।
वातः पर्जन्यः आत् अग्निः,
ते क्रव्यादम् अशीशमन् ॥ 10 ॥

मन्त्रार्थ - ये = जो **पर्वताः =** पर्वत, पर्वतों ने **सोमपृष्ठा =** सोमपृष्ठ **आपः =** आप, व्याप्त, व्यापक **उत्तान-शीवरीः =** विस्तृत शयन करने वाले **वातः =** वात **पर्जन्यः =** पोषण उत्पन्न करने वाले, पर्जन्य **आत् =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण **अग्निः =** अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **क्रव्यादम् =** क्रव्याद, निर्दय खाने वाला **अशीशमन् =** कल्याण, शान्ति, शमन किया **॥ 10 ॥**

पदार्थ - ये = जो (सर्वनाम)। **पर्वताः =** पर्वत, पर्वतों ने (पर्व् - पूर्ण करना, पूरा करना, भरना, विभाग करना)। **सोमपृष्ठा =** सोमपृष्ठ (सु = उत्पन्न करना, अद्भुत सामर्थ्य, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना। सू = प्रेरणा देना। सो–स्य, सय् - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना। पी-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना। पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना, स्था-तिष्ठ - स्थित होना, ठहरना, बैठना, पृश् = प्रश्न करना, पूछना, पृश्, पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सींचना, सहन करना)। **आपः =** आप, व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)। **उत्तान-शीवरीः =** विस्तृत शयन करने वाले (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, तन् = तानना, विस्तार करना, शी = सोना, शयन करना)। **वातः =** वात (वात - सुखी होना, आनन्द करना, सेवा करना, जाना, वा - गति करना, बहना, पवन की भाँति चलना)। **पर्जन्यः =** पोषण उत्पन्न करने वाले, पर्जन्य (पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना, तृप्त करना, जन् = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **आत् =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग)। **अग्निः =** अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **क्रव्यादम् =** क्रव्याद, निर्दय खाने वाला (क्रू, क्रूर् = निर्दय होना, निर्दयता करना, कृ - करना, अद् - खाना)। **अशीशमन् =** कल्याण, शान्ति, शमन किया (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना) **॥ 10 ॥**

93. वर्चः प्राप्ति सूक्त - 22

523. हस्ति-वर्चसम् प्रथताम् बृहत् यशो,
अदित्या यत् तन्वः सम्-बभूव।

तत् सर्वे सम् अदुः मह्यम् एतत्,
विश्वे देवाः अदितिः सजोषाः ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - **हस्ति-वर्चसम्** = हस्ति-वर्चस को, हस्ति-प्रकाश वाले का **प्रथताम्** = विस्तार करे **बृहत्** = महान्, बड़ा, विराट, बृहत् **यशो** = यश, कीर्ति **अदित्या** = अक्षय, अविनाशी **यत्** = जिसे, जो **तन्वः** = विस्तार **सम्-बभूव** = सम्यक् हो गये **तत्** = वह, उस को **सर्वे** = सब **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **अदुः** = खाया **मह्यम्** = मेरे लिए **एतत्** = यह **विश्वे** = सभी **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने **अदितिः** = अक्षय, अविनाशी **सजोषाः** = विचारशील, विवेकवान्, प्रीति करने वाले ॥ 1 ॥

पदार्थ - **हस्ति-वर्चसम्** = हस्ति-वर्चस को, हस्ति-प्रकाश वाले का (हस्त - देना, लेना, ग्रहण करना, वर्च - प्रकाशित होना, चमकना)। **प्रथताम्** = विस्तार करे (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)। **बृहत्** = महान्, बड़ा, विराट, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **यशो** = यश, कीर्ति (यश् - प्रख्यात होना, कीर्ति होना, व्याप्त होना, फैलना)। **अदित्या** = अक्षय, अविनाशी (अ - नहीं (उपसर्ग), दी = नष्ट होना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **तन्वः** = विस्तार (तन्-तनु = विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना)। **सम्-बभूव** = सम्यक् हो गये (सम् = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग), भू = होना, प्राप्त होना)। **तत्** = वह, उस को (सर्वनाम)। **सर्वे** = सब (सर्वनाम)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **अदुः** = खाया (अद् = खाना, ग्रहण करना, आत्मसात् करना, नष्ट करना)। **मह्यम्** = मेरे लिए (सर्वनाम)। **एतत्** = यह (सर्वनाम)। **विश्वे** = सभी (सर्वनाम)। **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **अदितिः** = अक्षय, अविनाशी (अ - नहीं (उपसर्ग), अद् = खाना, दी = नष्ट होना)। **सजोषाः** = विचारशील, विवेकवान्, प्रीति करने वाले (स - साथ, सहित, जुष् = प्रसन्न करना, सन्तुष्ट करना, चाहना, दुलार करना, प्रीति करना, विचार करना, विवेक-विवेचना करना, हिंसा करना, सेवा करना) ॥ 1 ॥

524. मित्रः च वरुणः च,
इन्द्रो रुद्रः च चेततु।
देवासो विश्वधायसः,
ते मा अञ्जन्तु वर्चसा ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - **मित्रः** = मित्र **च** = और **वरुणः** = वरणीय, वरण करने वाला **च** = और **इन्द्रो** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान **रुद्रः** = करुणाशील, रुदन करने वाले, रुदन कराने वाले **च** = और **चेततु** = चेतन करें **देवासो** = विद्वान्, दिव्यगुणी, देवगण **विश्वधायसः** = सम्पूर्ण को धारण करने वाले **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **मा** = नहीं, मत **अञ्जन्तु** = जाओ, स्वच्छ करो, प्रकाश करो **वर्चसा** = प्रकाश द्वारा, तेज द्वारा ॥ 2 ॥

पदार्थ - **मित्रः** = मित्र (मिद् - स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, मृदुल होना)। **च** = और (अव्यय)। **वरुणः** = वरणीय, वरण करने वाला (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **च** = और (अव्यय)। **इन्द्रो** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **रुद्रः** = करुणाशील, रुदन करने वाले, रुदन कराने वाले (रुद् = रुदन् करना, रोना, रोते-रोते कहना, रुलाना, करुण होना)। **च** = और (अव्यय)। **चेततु** = चेतन करें (चि - चुनना, एकत्र करना, चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, सम्यक् ज्ञान होना, स्मरण करना, शंका करना, सन्देह करना)। **देवासो** = विद्वान्, दिव्यगुणी, देवगण (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **विश्वधायसः** = सम्पूर्ण को धारण करने वाले (विश्व - सब कुछ, धा - धारण करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **मा** = नहीं, मत (अव्यय)। **अञ्जन्तु** = जाओ, स्वच्छ करो, प्रकाश करो (अञ्ज - स्वच्छ करना, प्रकाशित होना, जाना)। **वर्चसा** = प्रकाश द्वारा, तेज द्वारा (वर्च - प्रकाशित होना, चमकना) ॥ 2 ॥

525. येन हस्ती वर्चसा सम्-बभूव,
येन राजा मनुष्येषु अप्सु अन्तः।
येन देवा देवताम् अग्रे आयन् तेन माम्,
अद्य वर्चसा अग्ने वर्चस्विनम् कृणु॥ 3॥

मन्त्रार्थ - **येन** = जिससे, जिसके द्वारा **हस्ती** = हाथ वाला, हस्ती, दानी, ग्राही **वर्चसा** = प्रकाश द्वारा, तेज द्वारा **सम्-बभूव** = सम्यक् हो गये **येन** = जिससे, जिसके द्वारा **राजा** = राजा **मनुष्येषु** = मनुष्यों में, विचारशीलों में **अप्सु** = पालन-रक्षण में **अन्तः** = बीच में, भीतर **येन** = जिससे, जिसके द्वारा **देवा** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण **देवताम्** = दिव्य यत्न करने वाले को, दिव्यता करो **अग्रे** = अग्र, आगे, पहले **आयन्** = प्राप्त किया, प्राप्त करने वाले, शासक करने वाले, शब्द करने वाले **तेन** = उससे, उसके द्वारा **माम्** = मुझको **अद्य** = आज **वर्चसा** = प्रकाश द्वारा, तेज द्वारा **अग्ने** = हे अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् **वर्चस्विनम्** = वर्चस्वी को **कृणु** = करो॥ 3॥

पदार्थ - **येन** = जिससे, जिसके द्वारा (सर्वनाम)। **हस्ती** = हाथ वाला, हस्ती, दानी, ग्राही (हस्त - देना, लेना, ग्रहण करना)। **वर्चसा** = प्रकाश द्वारा, तेज द्वारा (वर्च - प्रकाशित होना, चमकना)। **सम्-बभूव** = सम्यक् हो गये (सम् = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग), भू = होना, प्राप्त होना)। **येन** = जिससे, जिसके द्वारा (सर्वनाम)। **राजा** = राजा (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **मनुष्येषु** = मनुष्यों में, विचारशीलों में (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **अप्सु** = पालन-रक्षण में (अप = जाना, जानना, पाना, पालन करना)। **अन्तः** = बीच में, भीतर (उपसर्ग, सर्वनाम)। **येन** = जिससे, जिसके द्वारा (सर्वनाम)। **देवा** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **देवताम्** = दिव्य यत्न करने वाले को, दिव्यता करो (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना, यत - यत्न करना, उद्योग करना, निश्चय करना, ठहराना)। **अग्रे** = अग्र, आगे, पहले (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **आयन्** = प्राप्त किया, प्राप्त करने वाले, शासक करने वाले, शब्द करने वाले (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अय्-ई - जाना, आय - शब्द करना, शासन करना)। **तेन** = उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **माम्** = मुझको (सर्वनाम)। **अद्य** = आज (अव्यय)। **वर्चसा** = प्रकाश द्वारा, तेज द्वारा (वर्च - प्रकाशित होना, चमकना)। **अग्ने** = हे अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **वर्चस्विनम्** = वर्चस्वी को (वर्च - प्रकाशित होना, चमकना)। **कृणु** = करो (कृ = करना)॥ 3॥

526. यत् ते वर्चो जातवेदो,
बृहत् भवति आहुतेः।
यावत् सूर्यस्य वर्च,
आसुरस्य च हस्तिनः।
तावत् मे अश्विना वर्चः,
आ धत्ताम् पुष्करस्रजा॥ 4॥

मन्त्रार्थ - **यत्** = जिसे, जो **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **वर्चो** = प्रकाश **जातवेदो** = विद्वान्, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले **बृहत्** = महान्, बड़ा, विराट, बृहत् **भवति** = होता है **आहुतेः** = आहुति में, दान, आदान-प्रदान, आह्वान, व्यापकता में **यावत्** = जितना, जब तक **सूर्यस्य** = सूर्य, उत्पन्न करने वाला, उत्पन्नकर्ता, ऐश्वर्यवान् का **वर्चः** = प्रकाश **आसुरस्य** = आसुर का **च** = और **हस्तिनः** = हस्ति वाले का **तावत्** = तब तक **मे** = मेरा, मेरे लिए **अश्विना** = अश्विन् द्वारा, तीव्र गति युक्त, व्यापक द्वारा **वर्चः** = प्रकाश **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **धत्ताम्** = धारण,

पोषण करें **पुष्करस्रजा** = पुष्टरचना, पुष्ट रचना करने वाले ॥ 4 ॥

पदार्थ - **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **वर्चो** = प्रकाश (वर्च - प्रकाशित होना, चमकना)। **जातवेदो** = विद्वान्, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले (जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जा-ज्ञा - जानना, विद् - जानना)। **बृहत्** = महान्, बड़ा, विराट, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **भवति** = होता है (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **आहुतेः** = आहुति में, दान, आदान-प्रदान, आह्वान, व्यापकता में (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, अह - फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, हु - दान करना, आदान-प्रदान करना, ह्वे = शब्द करना, आह्वान करना, बुलाना)। **यावत्** = जितना, जब तक (सर्वनाम)। **सूर्यस्य** = सूर्य, उत्पन्न करने वाला, उत्पन्नकर्ता, ऐश्वर्यवान् का (सुर - ऐश्वर्य होना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना, सू - उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, ऐश्वर्य होना)। **वर्चः** = प्रकाश (वर्च - प्रकाशित होना, चमकना)। **आसुरस्य** = आसुर का (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना, सुर - अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, चमकना)। **च** = और (अव्यय)। **हस्तिनः** = हस्ति वाले का (हस्त - देना, लेना, ग्रहण करना)। **तावत्** = तब तक (सर्वनाम)। **मे** = मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **अश्विना** = अश्विन् द्वारा, तीव्र गति युक्त, व्यापक द्वारा (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)। **वर्चः** = प्रकाश (वर्च - प्रकाशित होना, चमकना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **धत्ताम्** = धारण, पोषण करें (धा = धारण, पोषण, रक्षण, दान करना)। **पुष्करस्रजा** = पुष्टरचना, पुष्ट रचना करने वाले (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, रक्षण करना, वृद्धि करना, विभाग करना, सृज् = रचना करना) ॥ 4 ॥

527. यावत् चतस्रः प्रदिशः,
चक्षुः यावत् सम्-अश्नुते।
तावत् सम्-एतु इन्द्रियम्,
मयि तत् हस्ति-वर्चसम् ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ - **यावत्** = जितना, जब तक **चतस्रः** = चार **प्रदिशः** = प्रदिश, दिशा **चक्षुः** = दृष्टि, वाणी, आँख **यावत्** = जितना, जब तक **सम्-अश्नुते** = सम्-व्याप्त होता है, भोजन करता है, भोग करता है, प्राप्त करता है **तावत्** = तब तक **सम्-एतु** = सम्यक्-प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे **इन्द्रियम्** = इन्द्रिय को, परम ऐश्वर्यवान् को **मयि** = मुझमें **तत्** = वह, उस को **हस्ति-वर्चसम्** = हस्ति-वर्चस को, हस्ति-प्रकाश वाले का ॥ 5 ॥

पदार्थ - **यावत्** = जितना, जब तक (सर्वनाम)। **चतस्रः** = चार (संख्या)। **प्रदिशः** = प्रदिश, दिशा (प्र - प्रकृष्ट, दिश् - दिखाना, दिखाना, समझाना, कहना, देना)। **चक्षुः** = दृष्टि, वाणी, आँख (चक्ष् - स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)। **यावत्** = जितना, जब तक (सर्वनाम)। **सम्-अश्नुते** = सम्-व्याप्त होता है, भोजन करता है, भोग करता है, प्राप्त करता है (सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, अश् = भोजन करना, व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना)। **तावत्** = तब तक (सर्वनाम)। **सम्-एतु** = सम्यक्-प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे (सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना, इच्छा करना, प्रेरणा करना, ए - जाना, फैलना, व्यापना, गर्भवती होना, इच्छा करना, चाहना, खाना, उड़ाना, फेंकना, भेजना, प्रेरणा करना)। **इन्द्रियम्** = इन्द्रिय को, परम ऐश्वर्यवान् को (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **मयि** = मुझमें (सर्वनाम)। **तत्** = वह, उस को (सर्वनाम)। **हस्ति-वर्चसम्** = हस्ति-वर्चस को, हस्ति-प्रकाश वाले का (हस्त - देना, लेना, ग्रहण करना, वर्च - प्रकाशित होना, चमकना) ॥ 5 ॥

528. हस्ती मृगाणाम् सुषदाम्,

अतिष्ठावान् बभूव हि।
तस्य भगेन वर्चसा,
अभि सिञ्चामि माम् अहम्॥ 6॥

मन्त्रार्थ - **हस्ती** = हाथ वाला, हस्ती, दानी, ग्राही **मृगाणाम्** = मृगों का, अन्वेषियों का **सुषदाम्** = सद्विद्या, सुपथ को **अतिष्ठावान्** = ठहरा, स्थित हुआ **बभूव** = हो गये **हि** = ही, निश्चय **तस्य** = उसका **भगेन** = सेवनीय, सेवायोग्य द्वारा **वर्चसा** = प्रकाश द्वारा, तेज द्वारा **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा **सिञ्चामि** = सिञ्चन करता हूँ **माम्** = मुझको **अहम्** = मैं॥ 6॥

पदार्थ - **हस्ती** = हाथ वाला, हस्ती, दानी, ग्राही (हस्त - देना, लेना, ग्रहण करना)। **मृगाणाम्** = मृगों का, अन्वेषियों का (मृग् - अन्वेषण करना, खोजना, आखेट करना)। **सुषदाम्** = सद्विद्या, सुपथ को (सु - अच्छा, सुन्दर, सद् = जाना, जानना)। **अतिष्ठावान्** = ठहरा, स्थित हुआ (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, तिष्ठ् - ठहरना, स्थित होना)। **बभूव** = हो गये (भू = होना, प्राप्त होना)। **हि** = ही, निश्चय (अव्यय)। **तस्य** = उसका (सर्वनाम)। **भगेन** = सेवनीय, सेवायोग्य द्वारा (भग्-भज् = सेवा करना, सेवन करना, सेवित होना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)। **वर्चसा** = प्रकाश द्वारा, तेज द्वारा (वर्च - प्रकाशित होना, चमकना)। **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **सिञ्चामि** = सिञ्चन करता हूँ (सिञ्च् - सिञ्चन करना)। **माम्** = मुझको (सर्वनाम)। **अहम्** = मैं (सर्वनाम)॥ 6॥

94. वीरप्रसूति सूक्त - 23

529. येन वेहत् बभूविथ,
नाशयामसि तत् त्वत्।
इदम् तत् अन्यत्र त्वत्,
अप दूरे नि दध्मसि॥ 1॥

मन्त्रार्थ - **येन** = जिससे, जिसके द्वारा **वेहत्** = प्रयत्न, निश्चय **बभूविथ** = हो गये **नाशयामसि** = नाश करती हैं, विनाश करती हैं **तत्** = वह, उस को **त्वत्** = तुमसे **इदम्** = यह, इसको **तत्** = वह, उस को **अन्यत्र** = अन्य स्थान पर **त्वत्** = तुमसे **अप** = दूर, नीचे, अपकार **दूरे** = दूर **नि** = निश्चित, निरन्तर **दध्मसि** = धारण करते हो॥ 1॥

पदार्थ - **येन** = जिससे, जिसके द्वारा (सर्वनाम)। **वेहत्** = प्रयत्न, निश्चय (वेह = यत्न करना, निश्चय करना, ठहराना)। **बभूविथ** = हो गये (भू = होना, प्राप्त होना)। **नाशयामसि** = नाश करती हैं, विनाश करती हैं (नश् - नष्ट होना, अदृश्य होना)। **तत्** = वह, उस को (सर्वनाम)। **त्वत्** = तुमसे (सर्वनाम)। **इदम्** = यह, इसको (सर्वनाम)। **तत्** = वह, उस को (सर्वनाम)। **अन्यत्र** = अन्य स्थान पर (अव्यय)। **त्वत्** = तुमसे (सर्वनाम)। **अप** = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। **दूरे** = दूर (अव्यय)। **नि** = निश्चित, निरन्तर (अव्यय)। **दध्मसि** = धारण करते हो (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)॥ 1॥

530. आ ते योनिम् गर्भः एतु,
पुमान् बाणः इव इषुधिम्।
आ वीरो अत्र जायताम्,
पुत्रः ते दश-मास्यः॥ 2॥

मन्त्रार्थ - **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **योनिम्** = योनि को, बन्धन, मिलन को, सम्बन्ध को **गर्भः** = गर्भ **एतु** = प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे **पुमान्** = पवित्रता युक्त, रक्षक **बाणः** = बाणयुक्त, शब्दयुक्त, वाणी युक्त **इव** = समान, की भाँति, के समान **इषुधिम्** = विद्या, इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि धारण

करने वाले को **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **वीरो** = वीर **अत्र** = यहाँ **जायताम्** = उत्पन्न हो **पुत्रः** = पुत्र **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **दश-मास्यः** = दशमान ॥ **2** ॥

पदार्थ - **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **योनिम्** = योनि को, बन्धन, मिलन को, सम्बन्ध को (युन्-यु - बांधना, बन्धन करना, गूंथना। यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, संयोग-वियोग करना)। **गर्भः** = गर्भ (गृह् - ग्रहण करना, लेना, गृ = सींचना, गीला करना, घर्षण करना, जानना, समझना, खाना, निगलना, शब्द करना, गल्भ् - जाना, जानना, पाना, ज्ञान होना, चतुर होना, साहस होना, धैर्य रखना, गृभ्-गर्भ् - अन्दर होना, अन्तःवास करना)। **एतु** = प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना, इच्छा करना, प्रेरणा करना, ए - जाना, फैलना, व्यापना, गर्भवती होना, इच्छा करना, चाहना, खाना, उड़ाना, फेंकना, भेजना, प्रेरणा करना)। **पुमान्** = पवित्रता युक्त, रक्षक (पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)। **बाणः** = बाणयुक्त, शब्दयुक्त, वाणी युक्त (बण् शब्द करना)। **इव** = समान, की भाँति, के समान (अव्यय)। **इषुधिम्** = विद्या, इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि धारण करने वाले को (इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना, धि - धारण करना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **वीरो** = वीर (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)। **अत्र** = यहाँ (अव्यय)। **जायताम्** = उत्पन्न हो (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **पुत्रः** = पुत्र (पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **दश-मास्यः** = दशमान (दश = दश, दस, संख्या, मस् = रूपान्तरण करना, मापन करना, मापना) ॥ **2** ॥

531. पुमांसम् पुत्रम् जनय,
तम् पुमान् अनु जायताम्।
भवासि पुत्राणाम् माता,
जातानाम् जनयाः च यान्॥ 3॥

मन्त्रार्थ - **पुमांसम्** = पवित्रता युक्त, रक्षक को **पुत्रम्** = पुत्र को **जनय** = उत्पन्न करो **तम्** = उसको, उसे **पुमान्** = पवित्रता युक्त, रक्षक **अनु** = पश्चात्, पीछे, अनुकूल **जायताम्** = उत्पन्न हो **भवासि** = होते हो **पुत्राणाम्** = पुत्रगणों का **माता** = माता, मान करने वाला **जातानाम्** = उत्पन्न हुओं का **जनयाः** = उत्पन्न करने वाले **च** = और **यान्** = जाता हुआ ॥ **3** ॥

पदार्थ - **पुमांसम्** = पवित्रता युक्त, रक्षक को (पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)। **पुत्रम्** = पुत्र को (पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)। **जनय** = उत्पन्न करो (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **पुमान्** = पवित्रता युक्त, रक्षक (पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)। **अनु** = पश्चात्, पीछे, अनुकूल (उपसर्ग)। **जायताम्** = उत्पन्न हो (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **भवासि** = होते हो (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **पुत्राणाम्** = पुत्रगणों का (पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)। **माता** = माता, मान करने वाला (मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना)। **जातानाम्** = उत्पन्न हुओं का (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **जनयाः** = उत्पन्न करने वाले (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **च** = और (अव्यय)। **यान्** = जाता हुआ (या - जाना) ॥ **3** ॥

532. यानि भद्राणि बीजानि,
ऋषभा जनयन्ति च।
तैः त्वम् पुत्रम् विन्दस्व,

सा प्रसूः धेनुका भव ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - **यानि** = जो **भद्राणि** = भद्रों, कल्याणकारियों को **बीजानि** = बीजों को **ऋषभा** = ऋषभगण **जनयन्ति** = उत्पन्न करते हैं **च** = और **तैः** = उनके द्वारा, उन सब द्वारा **त्वम्** = तुम **पुत्रम्** = पुत्र को **विन्दस्व** = प्राप्त हो **सा** = वह **प्रसूः** = उत्पन्न करने वाला **धेनुका** = धेनुका, पालन करने वाले **भव** = हो ॥ 4 ॥

पदार्थ - **यानि** = जो (सर्वनाम)। **भद्राणि** = भद्रों, कल्याणकारियों को (भदि-भन्द - सुख होना, शुभ कर्म करना, कल्याण होना)। **बीजानि** = बीजों को (बिज्-बीज् - उगना, अंकुरण करना)। **ऋषभा** = ऋषभगण (ऋष् - जानना, जाना, पाना, अन्तदृष्टि होना, अन्तर्गमन करना, सूक्ष्मता से भीतर देखना, भा - प्रकाश होना)। **जनयन्ति** = उत्पन्न करते हैं (जन-उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **च** = और (अव्यय)। **तैः** = उनके द्वारा, उन सब द्वारा (सर्वनाम)। **त्वम्** = तुम (सर्वनाम)। **पुत्रम्** = पुत्र को (पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)। **विन्दस्व** = प्राप्त हो (विन्द - लाभ होना, प्राप्त करना, सम्पादित करना)। **सा** = वह (सर्वनाम)। **प्रसूः** = उत्पन्न करने वाला (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना)। **धेनुका** = धेनुका, पालन करने वाले (धिन - प्रेम करना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना, धी - बुद्धि होना, धे - पालना, पीना)। **भव** = हो (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना) ॥ 4 ॥

533. कृणोमि ते प्राजापत्यम्,
आ योनिम् गर्भ एतुः ते।
विन्दस्व त्वम् पुत्रम् नारि यः तुभ्यम्,
शम् असत् शम् उ तस्मै त्वम् भव ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ - **कृणोमि** = करता हूँ **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **प्राजापत्यम्** = प्रजापति से उत्पन्न, पालन करने वाले से उत्पन्न को **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **योनिम्** = योनि को, बन्धन, मिलन को, सम्बन्ध को **गर्भः** = गर्भ **एतु** = प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **विन्दस्व** = प्राप्त हो **त्वम्** = तुम **पुत्रम्** = पुत्र को **नारि** = नारी **यः** = जो **तुभ्यम्** = तुम्हारे लिए **शम्** = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी **असत्** = असत्य **शम्** = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी **उ** = निश्चय ही, भी **तस्मै** = उसके लिए **त्वम्** = तुम **भव** = हो ॥ 5 ॥

पदार्थ - **कृणोमि** = करता हूँ (कृ = करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **प्राजापत्यम्** = प्रजापति से उत्पन्न, पालन करने वाले से उत्पन्न को (प्र - प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न करना, पत - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **योनिम्** = योनि को, बन्धन, मिलन को, सम्बन्ध को (युन्-यु - बांधना, बन्धन करना, गूंथना। यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, संयोग-वियोग करना)। **गर्भः** = गर्भ (गृह् - ग्रहण करना, लेना, गृ = सींचना, गीला करना, घर्षण करना, जानना, समझना, खाना, निगलना, शब्द करना, गल्भ् - जाना, जानना, पाना, ज्ञान होना, चतुर होना, साहस होना, धैर्य रखना, गृभ्-गर्भ् - अन्दर होना, अन्तःवास करना)। **एतु** = प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना, इच्छा करना, प्रेरणा करना, ए - जाना, फैलना, व्यापना, गर्भवती होना, इच्छा करना, चाहना, खाना, उड़ाना, फेंकना, भेजना, प्रेरणा करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **विन्दस्व** = प्राप्त हो (विन्द - लाभ होना, प्राप्त करना, सम्पादित करना)। **त्वम्** = तुम (सर्वनाम)। **पुत्रम्** = पुत्र को (पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)। **नारि** = नारी (नृ - नम्र होना, विनय होना, कोमल होना, मृदु होना, चलना, ले जाना)। **यः** = जो (सर्वनाम)। **तुभ्यम्** = तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **शम्** = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी (शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)। **असत्** = असत्य (अ = नहीं, सत् = होना, सत्य होना)। **शम्** = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी (शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)। **उ** = निश्चय ही, भी (निपात, अव्यय)। **तस्मै** = उसके लिए (सर्वनाम)। **त्वम्** = तुम (सर्वनाम)। **भव** = हो (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना,

कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना) ॥ 5 ॥

534. यासाम् द्यौः पिता पृथिवी माता,
समुद्रो मूलम् वीरुधाम् बभूव।
ताः त्वा पुत्र-विद्याय दैवीः,
प्र अवन्तु ओषधयः ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ - **यासाम्** = जिन सब के **द्यौः** = अग्रगामी, प्रकाशवान्, विद्वान्, द्यौ, प्रकाशयुक्त, अग्रगामी **पिता** = पिता, पालन करने वाला, पिता **पृथिवी** = पृथ्वी, विस्तृत भूमि, विस्तार **माता** = माता, मान करने वाला **समुद्रो** = समुद्र **मूलम्** = मूल को **वीरुधाम्** = वीरता को धारण करने वालों का, पराक्रमियों का **बभूव** = हो गये **ताः** = वे **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **पुत्र-विद्याय** = पुत्र-विद्या के लिए **दैवीः** = दिव्य **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक **अवन्तु** = प्रकाशित करें, रक्षा करें **ओषधयः** = ओषधियाँ ॥ 6 ॥

पदार्थ - **यासाम्** = जिन सब के (सर्वनाम)। **द्यौः** = अग्रगामी, प्रकाशवान्, विद्वान्, द्यौ, प्रकाशयुक्त, अग्रगामी (द्युत् = प्रकाशित होना, द्यु = अभिगमन करना, आक्रमण करना, आगे जाना, समीप जाना, प्रकाश होना, जानना)। **पिता** = पिता, पालन करने वाला, पिता (पि - जाना, जानना, पाना, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **पृथिवी** = पृथ्वी, विस्तृत भूमि, विस्तार (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)। **माता** = माता, मान करने वाला (मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना)। **समुद्रो** = समुद्र (सम् = सम्यक्, भलीभांति, उन्द - आर्द्र होना, गीला होना)। **मूलम्** = मूल को (मूल् = बोना, उगना, उत्पन्न होना)। **वीरुधाम्** = वीरता को धारण करने वालों का, पराक्रमियों का (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)। **बभूव** = हो गये (भू = होना, प्राप्त होना)। **ताः** = वे (सर्वनाम)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **पुत्र-विद्याय** = पुत्र-विद्या के लिए (पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना, विद् - समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना, विद्यमान होना, विचार करना, जीवन होना)। **दैवीः** = दिव्य (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **अवन्तु** = प्रकाशित करें, रक्षा करें (अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, प्रकाश करना)। **ओषधयः** = ओषधियाँ (उषध्- ओषध् - जानना, रोग मुक्त करना, चिकित्सा) ॥ 6 ॥

95. समृद्धिप्राप्ति सूक्त - 24

535. पयस्वतीः ओषधयः,
पयस्वत् मामकम् वचः।
अथो पयस्वतीनाम्,
आ भरे अहम् सहस्रशः ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - **पयस्वतीः** = विस्तृत, विस्तारयुक्त, गतिशील, प्रवाहमान **ओषधयः** = ओषधियाँ **पयस्वत्** = विस्तार युक्त, गतिशील, प्रवाहमान युक्त **मामकम्** = मेरे **वचः** = वचन **अथो** = अब, इसके बाद, इसके अनन्तर **पयस्वतीनाम्** = विस्तृतों को, विस्तारयुक्तों, गतिशीलों, प्रवाहमानों को **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **भरे** = भरण करते हैं **अहम्** = मैं **सहस्रशः** = सहस्रों ॥ 1 ॥

पदार्थ - **पयस्वतीः** = विस्तृत, विस्तारयुक्त, गतिशील, प्रवाहमान (पय् = जाना, जानना, पाना, बहना, पयस् = विस्तार करना, फैलाना)। **ओषधयः** = ओषधियाँ (उषध्- ओषध् - जानना, रोग मुक्त करना, चिकित्सा)। **पयस्वत्** = विस्तार युक्त, गतिशील, प्रवाहमान युक्त (पय् = जाना, जानना, पाना, बहना, पयस् = विस्तार करना, फैलाना)। **मामकम्** = मेरे (सर्वनाम)। **वचः** = वचन (वच् - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)। **अथो** = अब, इसके

बाद, इसके अनन्तर (अव्यय)। **पयस्वतीनाम् =** विस्तृतों को, विस्तारयुक्तों, गतिशीलों, प्रवाहमानों को (पय् = जाना, जानना, पाना, बहना, पयस् = विस्तार करना, फैलाना)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **भरे =** भरण करते हैं (भृ = पूर्ण करना, भरना, धारण-पोषण करना)। **अहम् =** मैं (सर्वनाम)। **सहस्त्रशः =** सहस्त्रों (सहस्त्र - हजार) **॥ 1 ॥**

536. वेद अहम् पयस्वन्तम्,
चकार धान्यम् बहु।
सम्-भृत्वा नाम यो देवः,
तम् वयम् हवामहे,
यो-यो अयज्वनः गृहे ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - वेद = ज्ञान, जानो, जानता है **अहम् =** मैं **पयस्वन्तम् =** विस्तृत को, विस्तारयुक्त, गतिशील, प्रवाहमान को **चकार =** तृप्त करने वाले **धान्यम् =** धारण करने योग्य, गति, शब्द करने योग्य **बहु =** बहुत **सम्-भृत्वा =** सम्भृत, सम्यक् भरण करने वाले **नाम =** नाम वाले **यो =** जो **देवः =** देव **तम् =** उसको, उसे **वयम् =** हम, हम सब, हम लोग **हवामहे** = आह्वान करते हैं, आदान- प्रदान करते हैं **यो-यो =** जो-जो **अयज्वनः =** यजन न करने वाले, यजनहीन **गृहे =** गृह में, घर में **॥ 2 ॥**

पदार्थ - वेद = ज्ञान, जानो, जानता है (विद् = जानना, समझना, विद्यमान होना)। **अहम् =** मैं (सर्वनाम)। **पयस्वन्तम् =** विस्तृत को, विस्तारयुक्त, गतिशील, प्रवाहमान को (पय् = जाना, जानना, पाना, बहना, पयस् = विस्तार करना, फैलाना)। **चकार =** तृप्त करने वाले (कृ = करना)। **धान्यम् =** धारण करने योग्य, गति, शब्द करने योग्य (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना, धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)। **बहु =** बहुत (सर्वनाम)। **सम्-भृत्वा =** सम्भृत, सम्यक् भरण करने वाले (सम् = सम्यक्, भलीभांति, भृ - धारण करना, भरण-पोषण करना)। **नाम =** नाम वाले (अव्यय)। **यो =** जो (सर्वनाम)। **देवः =** देव (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **तम् =** उसको, उसे (सर्वनाम)। **वयम् =** हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **हवामहे** = आह्वान करते हैं, आदान- प्रदान करते हैं (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **यो-यो =** जो-जो (सर्वनाम)। **अयज्वनः =** यजन न करने वाले, यजनहीन (अ - नहीं, यज् - देव-पूजन, संगतिकरण, दान करना)। **गृहे =** गृह में, घर में (गृह - लेना, स्वीकार करना, निवास करना) **॥ 2 ॥**

537. इमा याः पञ्च प्रदिशो,
मानवीः पञ्च कृष्टयः।
वृष्टे शापम् नदीः इव,
इह स्फातिम् सम्-आवहान् ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - इमा = यह, इसको **याः =** जो **पञ्च =** पाँच **प्रदिशो** = प्रदिश, दिशा **मानवीः =** मानव से उत्पन्न **पञ्च =** पाँच **कृष्टयः =** कृष्टय, कर्षण, रेखांकन **वृष्टे =** वृष्टि में, पर **शापम् =** शाप को **नदीः =** नदी **इव =** समान, की भाँति, के समान **इह =** इसमें, यहां, यह **स्फातिम्** = स्थूल को **सम्-आवहान् =** वहन करती है, सम्यक् ले जाती है **॥ 3 ॥**

पदार्थ - इमा = यह, इसको (सर्वनाम)। **याः =** जो (सर्वनाम)। **पञ्च =** पाँच (पञ्च - पाँच, संख्या)। **प्रदिशो** = प्रदिश, दिशा (प्र - प्रकृष्ट, दिश् - दिखाना, दिखाना, समझाना, कहना, देना)। **मानवीः =** मानव से उत्पन्न (मन् - मनन करना, समझना, जानना, मान - पूजा करना, सम्मान करना, श्रेष्ठ होना, शोध करना)। **पञ्च =** पाँच (पञ्च - पाँच, संख्या)। **कृष्टयः =** कृष्टय, कर्षण, रेखांकन (कृष् = विलेखन, कर्षण करना, रेखा करना)। **वृष्टे =** वृष्टि में, पर (वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना,

प्रोक्षण करना, मार डालना या पीड़ा करना, दुःख देना, पीड़ित करना)। **शापम्** = शाप को (शप् = शपथ करना, सौगन्ध खाना, प्रतिज्ञा करना, शाप देना, गाली देना)। **नदीः** = नदी (नद् - शब्द करना, झंकार करना, चमकना)। **इव** = समान, की भाँति, के समान (अव्यय)। **इह** = इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **स्फातिम्** = स्थूल को (स्फाय्-स्फी - मोटा होना, स्थूल होना, बढ़ना)। **सम्-आवहान्** = वहन करती है, सम्यक् ले जाती है (सम् = सम्यक्, भलीभांति, आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, वह् = ले जाना, वहन करना) ॥ 3 ॥

538. उत् उत्सम् शतधारम्,
सहस्रधारम् अक्षितम्।
एव अस्माक इदम् धान्यम्,
सहस्रधारम् अक्षितम् ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - **उत्** = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च **उत्सम्** = उत्स को, उत्कृष्ट सृजन को **शतधारम्** = सैकड़ों धाराओं वाला **सहस्रधारम्** = सहस्र धारा वाले को **अक्षितम्** = अक्षित को, व्याप्त को, अविनाशी को **एव** = ही **अस्माक** = हमारा **इदम्** = यह, इसको **धान्यम्** = धारण करने योग्य, गति, शब्द करने योग्य **सहस्रधारम्** = सहस्र धारा वाले को **अक्षितम्** = अक्षित को, व्याप्त को, अविनाशी को ॥ 4 ॥

पदार्थ - **उत्** = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)। **उत्सम्** = उत्स को, उत्कृष्ट सृजन को (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, सु = उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना)। **शतधारम्** = सैकड़ों धाराओं वाला (शत = सौ, धाः - धारा होना, धार बाँधना)। **सहस्रधारम्** = सहस्र धारा वाले को (सहस्र = हजार, धाः - धारा होना, धार बाँधना)। **अक्षितम्** = अक्षित को, व्याप्त को, अविनाशी को (अ = नहीं, अक्ष - खेलना, देखना, एकत्र होना, व्याप्त होना, इच्छितार्थ होना, पैठना, क्षि - क्षय होना, नष्ट होना)। **एव** = ही (अव्यय)। **अस्माक** = हमारा (सर्वनाम)। **इदम्** = यह, इसको (सर्वनाम)। **धान्यम्** = धारण करने योग्य, गति, शब्द करने योग्य (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना, धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)। **सहस्रधारम्** = सहस्र धारा वाले को (सहस्र = हजार, धाः - धारा होना, धार बाँधना)। **अक्षितम्** = अक्षित को, व्याप्त को, अविनाशी को (अ = नहीं, अक्ष - खेलना, देखना, एकत्र होना, व्याप्त होना, इच्छितार्थ होना, पैठना, क्षि - क्षय होना, नष्ट होना) ॥ 4 ॥

539. शत-हस्त समाहर,
सहस्रहस्त सम् किर।
कृतस्य कार्यस्य च इह,
स्फातिम् सम्-आवह ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ - **शत-हस्त** = हे शत-हस्त **समाहर** = सम्यक् दीजिए **सहस्रहस्त** = हे सहस्र-हस्त **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **किर** = विक्षेपी, अल्पायु, हिंसक **कृतस्य** = किये हुए का **कार्यस्य** = कार्य का, किये जाने वाले का **च** = और **इह** = इसमें, यहां, यह **स्फातिम्** = स्थूल को **सम्-आवह** = वहन कराओ सम्यक् ले जाओ ॥ 5 ॥

पदार्थ - **शत-हस्त** = हे शत-हस्त (शत = सौ (सर्वनाम), हस्त - देना, लेना, ग्रहण करना)। **समाहर** = सम्यक् दीजिए (सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, ह्व = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, लेना, ग्रहण करना, नष्ट करना)। **सहस्रहस्त** = हे सहस्र-हस्त (सहस्र = हजार, हस्त - देना, लेना, ग्रहण करना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **किर** = विक्षेपी, अल्पायु, हिंसक (कृ-किर् - फेंक देना, विक्षेप करना, छिड़कना, वयहानि होना, हिंसा करना)। **कृतस्य** = किये हुए का (कृ = करना)। **कार्यस्य** = कार्य का, किये जाने वाले का (कृ - करना)। **च** = और (अव्यय)। **इह** = इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **स्फातिम्** = स्थूल को (स्फाय्-स्फी - मोटा होना, स्थूल होना, बढ़ना)। **सम्-आवह** = वहन कराओ सम्यक् ले जाओ (सम् = सम्यक्, भलीभांति, आ -

सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, वह् = ले जाना, वहन करना) ॥ 5 ॥

540. तिस्त्रो मात्रा गन्धर्वाणाम्,
चतस्त्रो गृहपत्न्याः ।
तासाम् या स्फातिमत्-तमा,
तया त्वा अभि मृशामसि ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ - **तिस्त्रो** = तीन **मात्रा** = माता द्वारा **गन्धर्वाणाम्** = गतिशीलता, विद्वता को धारण करने वालों का **चतस्त्रो** = चार **गृहपत्न्याः** = गृह पत्नियाँ **तासाम्** = उनका **या** = जो **स्फातिमत्-तमा** = अत्यन्त स्थूल **तया** = उसके द्वारा **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा **मृशामसि** = विचार करते हैं, स्पर्श करते हैं ॥ 6 ॥

पदार्थ - **तिस्त्रो** = तीन (संख्या)। **मात्रा** = माता द्वारा (मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना)। **गन्धर्वाणाम्** = गतिशीलता, विद्वता को धारण करने वालों का (गम् + धृ, गम् = जाना, जानना, पाना, धृ = धारण करना)। **चतस्त्रो** = चार (संख्या)। **गृहपत्न्याः** = गृह पत्नियाँ (गृह - लेना, स्वीकार करना, निवास करना, पत् - श्री मान् होना, अमानवी पराक्रम करना)। **तासाम्** = उनका (सर्वनाम)। **या** = जो (सर्वनाम)। **स्फातिमत्-तमा** = अत्यन्त स्थूल (स्फाय्-स्फी - मोटा होना, स्थूल होना, बढ़ना)। **तया** = उसके द्वारा (सर्वनाम)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **मृशामसि** = विचार करते हैं, स्पर्श करते हैं (मृश - विचार करना, स्पर्श करना, देखना) ॥ 6 ॥

541. उप-ऊहः च सम्-ऊहः च,
क्षत्तारौ ते प्रजापते ।
तौ इह आ वहताम् स्फातिम्,
बहुम् भूमानम् अक्षितम् ॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ - **उप-ऊहः** = उपोह, उप-तर्क करने वाले, उप-विचार करने वाले **च** = और **सम्-ऊहः** = सम्यक्-तर्क करने वाले, सम्यक्-विचार करने वाले **च** = और **क्षत्तारौ** = युगल क्षत्तार **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **प्रजापते** = हे प्रजा का पालन करने वाले **तौ** = वे दो **इह** = इसमें, यहां, यह **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **वहताम्** = वहन करें **स्फातिम्** = स्थूल को **बहुम्** = बहुत को **भूमानम्** = उत्पन्न होने वाले को **अक्षितम्** = अक्षित को, व्याप्त को, अविनाशी को ॥ 7 ॥

पदार्थ - **उप-ऊहः** = उपोह, उप-तर्क करने वाले, उप-विचार करने वाले (उप - समीप (उपसर्ग), ऊह् = परिकल्पना करना, तर्क करना)। **च** = और (अव्यय)। **सम्-ऊहः** = सम्यक्-तर्क करने वाले, सम्यक्-विचार करने वाले (सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, ऊह् = परिकल्पना करना, तर्क करना)। **च** = और (अव्यय)। **क्षत्तारौ** = युगल क्षत्तार (क्षत्, क्षद् = खाना, कूटना, ढकना, मार डालना, रक्षा करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **प्रजापते** = हे प्रजा का पालन करने वाले (प्र - प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न करना, पत - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना)। **तौ** = वे दो (सर्वनाम)। **इह** = इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **वहताम्** = वहन करें (वह् = वहन करना, ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)। **स्फातिम्** = स्थूल को (स्फाय्-स्फी - मोटा होना, स्थूल होना, बढ़ना)। **बहुम्** = बहुत को (सर्वनाम)। **भूमानम्** = उत्पन्न होने वाले को (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **अक्षितम्** = अक्षित को, व्याप्त को, अविनाशी को (अ = नहीं, अक्ष - खेलना, देखना, एकत्र होना, व्याप्त होना, इच्छितार्थ होना, पैठना, क्षि - क्षय होना, नष्ट होना) ॥ 7 ॥

96. कामबाण सूक्त - 25

542. उत्-तुदः त्वा उत् तुदतु,

मा धृथाः शयने स्वे।
इषुः कामस्य या भीमा,
तया विध्यामि त्वा हृदि॥ 1॥

मन्त्रार्थ - **उत्-तुदः** = दुःख देने वाले **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **उत्** = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च **तुदतु** = दुःखी करें **मा** = नहीं, मत **धृथाः** = आदर करे **शयने** = शयन में **स्वे** = अपने लिए, अपने साथ **इषुः** = विद्या, इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि **कामस्य** = कामना, इच्छा का **या** = जो **भीमा** = भयंकर **तया** = उसके द्वारा **विध्यामि** = वेधन करता हूँ, विधान करता हूँ **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **हृदि** = हृद् में, हृदय में॥ **1॥**

पदार्थ - **उत्-तुदः** = दुःख देने वाले (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, तुद् - दुःख देना, दुःखी होना, पीड़ा होना, घाव करना)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **उत्** = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)। **तुदतु** = दुःखी करें (तुद् - दुःख देना, दुःखी होना, पीड़ा होना, घाव करना)। **मा** = नहीं, मत (अव्यय)। **धृथाः** = आदर करे (दृ = आदर करना, सत्कार करना, धृ - रहना, स्थिर रहना, धारण करना, पास रखना, युक्त होना)। **शयने** = शयन में (शी-शय् = शयन करना, सोना)। **स्वे** = अपने लिए, अपने साथ (सर्वनाम)। **इषुः** = विद्या, इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि (इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना)। **कामस्य** = कामना, इच्छा का (कम् - चाहना, इच्छा करना)। **या** = जो (सर्वनाम)। **भीमा** = भयंकर (भी - डरना)। **तया** = उसके द्वारा (सर्वनाम)। **विध्यामि** = वेधन करता हूँ, विधान करता हूँ (विध - विधान करना, वेध करना, वेधन करना, ताडना)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **हृदि** = हृद् में, हृदय में (हृ - प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना)॥ **1॥**

543. आधीपर्णाम् कामशल्याम्,
इषुम् सङ्कल्प-कुल्मलाम्।
ताम् सुसंनताम् कृत्वा,
कामो विध्यतु त्वा हृदि॥ 2॥

मन्त्रार्थ - **आधीपर्णाम्** = आधीपर्णों का, सम्यक् धारण किये हुए पर्णों का **कामशल्याम्** = काम-शल्यों का, गतियों, स्तुतियों का **इषुम्** = विद्या, इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि को **सङ्कल्प-कुल्मलाम्** = संकल्प-कुल्मलों का **ताम्** = उसको **सुसंनताम्** = सुन्दर सम्यक् नतों का **कृत्वा** = करके, करने के अनन्तर, करने के बाद **कामो** = कामना, इच्छा **विध्यतु** = वेधन करो, विधान करो **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **हृदि** = हृद् में, हृदय में॥ **2॥**

पदार्थ - **आधीपर्णाम्** = आधीपर्णों का, सम्यक् धारण किये हुए पर्णों का (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना, पर्ण - हरा करना, हरा होना, पृ - पूर्ण करना, भरण करना)। **कामशल्याम्** = काम-शल्यों का, गतियों, स्तुतियों का (कम - चाहना, इच्छा करना, शल् - गति करना, जाना, जानना, पाना, चुभना, विस्मरण होना, प्रशंसा करना, स्तुति करना)। **इषुम्** = विद्या, इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि को (इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना)। **सङ्कल्प-कुल्मलाम्** = संकल्प-कुल्मलों का (सम् - सम्यक्, कल्प - शक्तिमान होना, समर्थ होना, कल्पना करना, विचार करना, कुल् = आवरण होना, एकत्र करना, बटोरना, अपने के समान वर्तना, सजातीयता से रहना, गिनना)। **ताम्** = उसको (सर्वनाम)। **सुसंनताम्** = सुन्दर सम्यक् नतों का (सु - सुन्दर, अच्छा, सम् - सम्यक्, नम् - नमना, नमस्कार करना, सम्मान देना)। **कृत्वा** = करके, करने के अनन्तर, करने के बाद (कृ - करना, कृत - कतरना, काटना)। **कामो** = कामना, इच्छा (कम् - चाहना, इच्छा करना)। **विध्यतु** = वेधन करो, विधान करो (विध - विधान करना, वेध करना, वेधन करना, ताडना)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **हृदि** = हृद् में, हृदय में (हृ - प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना)॥ **2॥**

544. या प्लीहानम् शोषयति,
कामस्य इषुः सुसंनता।
प्राचीन-पक्षा वि-ओषा तया,
विध्यामि त्वा हृदि॥ 3॥

मन्त्रार्थ - **या** = जो **प्लीहानम्** = प्लीहा को **शोषयति** = शुष्क करे **कामस्य** = कामना, इच्छा का **इषुः** = विद्या, इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि **सुसंनता** = सुन्दर सम्यक् नत **प्राचीन-पक्षा** = प्राचीन-पक्ष **वि-ओषा** = विशेष ऊष्म वाले **तया** = उसके द्वारा **विध्यामि** = वेधता हूँ, विधान करता हूँ **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **हृदि** = हृद् में, हृदय में॥ 3॥

पदार्थ - **या** = जो (सर्वनाम)। **प्लीहानम्** = प्लीहा को (प्ली = जाना)। **शोषयति** = शुष्क करे (शूष् - उत्पन्न करना, शुष् - सूखना, सुखाना)। **कामस्य** = कामना, इच्छा का (कम् - चाहना, इच्छा करना)। **इषुः** = विद्या, इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि (इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना)। **सुसंनता** = सुन्दर सम्यक् नत (सु - सुन्दर, अच्छा, सम् - सम्यक्, नम् - नमना, नमस्कार करना, सम्मान देना)। **प्राचीन-पक्षा** = प्राचीन-पक्ष (प्राचीन = प्राचीन, पहले, पूर्व कालीन (अव्यय), पक्ष् - पक्ष होना, पक्ष लेना, किसी एक पक्ष को ग्रहण करना, विभाग करना, ग्रहण करना, स्वीकार करना)। **वि-ओषा** = विशेष ऊष्म वाले (वि = विशेष, विविध, विना, विलोम (उपसर्ग), उष - हिंसा करना, जलना)। **तया** = उसके द्वारा (सर्वनाम)। **विध्यामि** = वेधता हूँ, विधान करता हूँ (विध - विधान करना, वेध करना, वेधन करना, ताडना)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **हृदि** = हृद् में, हृदय में (हृ - प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना)॥ 3॥

545. शुचा विद्धा वि-ओषया,
शुष्क-आस्या अभि सर्प मा।
मृदुः निमन्युः केवली,
प्रियवादिनी अनुव्रता॥ 4॥

मन्त्रार्थ - **शुचा** = पवित्र **विद्धा** = वेधन करने वाले, ताड़न वाले **वि-ओषया** = विशेष दहन द्वारा **शुष्क-आस्या** = शुष्क आस्य **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा **सर्प** = सर्प, जाओ **मा** = नहीं, मत **मृदुः** = मृदु **निमन्युः** = निमन्यु, निरन्तर गर्व विचार **केवली** = केवली, सेवा, सिंचन **प्रियवादिनी** = प्रियवादी **अनुव्रता** = अनुव्रत, अनुकूल व्यवहार करने वाला॥ 4॥

पदार्थ - **शुचा** = पवित्र (शुच्-शुक्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)। **विद्धा** = वेधन करने वाले, ताड़न वाले (विध् - विधान करना, वेधना, वेध करना, ताडना करना)। **वि-ओषया** = विशेष दहन द्वारा (वि = विशेष, विविध, विना, विलोम (उपसर्ग), उष - हिंसा करना, जलना)। **शुष्क-आस्या** = शुष्क आस्य (शुष् - सुखाना, बल, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, आस् - बैठना, उपस्थित होना, विद्यमान होना, जीवित रहना, होना)। **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **सर्प** = सर्प, जाओ (सृप् - जाना, सरकना, जानना, पाना, चलना)। **मा** = नहीं, मत (अव्यय)। **मृदुः** = मृदु (मृद = पीसना, कूटना, चूर्ण करना, कोमल बनाना)। **निमन्युः** = निमन्यु, निरन्तर गर्व विचार (नि - निश्चित, निरन्तर, मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **केवली** = केवली, सेवा, सिंचन (केव् - सेवा करना, सिंचन करना, घर्षण करना, रिक्त होना)। **प्रियवादिनी** = प्रियवादी (प्री = स्नेह करना, प्यार करना, तृप्त करना, सन्तुष्ट करना, चाहना, वद् - बोलना)। **अनुव्रता** = अनुव्रत, अनुकूल व्यवहार करने वाला (अनु = अनुकूल, पश्चात्, वृत् = रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना)॥ 4॥

546. आ अजामि त्वा अजन्या,

परि मातुः अथो पितुः।
यथा मम क्रतौ असो,
मम चित्तम् उप-आयसि॥ 5॥

मन्त्रार्थ - **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **अजामि** = जाता हूँ, फेंकता हूँ **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **अजन्या** = प्रगतिशील द्वारा **परि** = सभी तरफ **मातुः** = माता का **अथो** = अब, इसके बाद, इसके अनन्तर **पितुः** = पिता का, गति, ज्ञान का **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार **मम** = मेरा **क्रतौ** = युगल कर्मशील **असो** = अस् का, ऐश्वर्यवान् का, उत्पन्न करने वाले का **मम** = मेरा **चित्तम्** = चित्त या चेतना, ज्ञान **उप-आयसि** = समीप आये॥ **5**॥

पदार्थ - **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **अजामि** = जाता हूँ, फेंकता हूँ (अज - जाना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **अजन्या** = प्रगतिशील द्वारा (अज - जाना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना)। **परि** = सभी तरफ (उपसर्ग)। **मातुः** = माता का (मा = मान करना, मापना)। **अथो** = अब, इसके बाद, इसके अनन्तर (अव्यय)। **पितुः** = पिता का, गति, ज्ञान का (पा - रक्षा करना, पालन करना, पि = गति करना, जाना, जानना, पाना)। **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार (अव्यय)। **मम** = मेरा (सर्वनाम)। **क्रतौ** = युगल कर्मशील (कृ = करना)। **असो** = अस् का, ऐश्वर्यवान् का, उत्पन्न करने वाले का (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना)। **मम** = मेरा (सर्वनाम)। **चित्तम्** = चित्त या चेतना, ज्ञान (चि - चुनना, एकत्र करना, चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, सम्यक् ज्ञान होना, स्मरण करना, शंका करना, सन्देह करना)। **उप-आयसि** = समीप आये (उप - समीप, आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अय - गति करना, चलना, जाना)॥ **5**॥

547. वि अस्यै मित्रावरुणौ,
हृदः चित्तानि अस्यतम्।
अथ एनाम् अक्रतुम् कृत्वा,
मम एव कृणुतम् वशे॥ 6॥

मन्त्रार्थ - **वि** = विशेष, विना, विलोम **अस्यै** = इसके लिए **मित्रावरुणौ** = मित्र और वरुण, स्नेही तथा वरणीय **हृदः** = हृदय **चित्तानि** = चित्त या चेतना, ज्ञान **अस्यतम्** = प्रक्षेपित करो, दूर करो **अथ** = अब, इसके अनन्तर **एनाम्** = प्रकाशित करने वाले को **अक्रतुम्** = अकृत को **कृत्वा** = करके, करने के अनन्तर, करने के बाद **मम** = मेरा **एव** = ही **कृणुतम्** = करो **वशे** = वश में, इच्छा में॥ **6**॥

पदार्थ - **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **अस्यै** = इसके लिए (सर्वनाम)। **मित्रावरुणौ** = मित्र और वरुण, स्नेही तथा वरणीय (मिद् - स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, नरम होना, मृदुल होना, वृ = वरण करना, अपनाना, पसन्द करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **हृदः** = हृदय (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, लेना, ग्रहण करना, नष्ट करना)। **चित्तानि** = चित्त या चेतना, ज्ञान (चि - चुनना, एकत्र करना, चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, सम्यक् ज्ञान होना, स्मरण करना, शंका करना, सन्देह करना)। **अस्यतम्** = प्रक्षेपित करो, दूर करो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **अथ** = अब, इसके अनन्तर (अव्यय)। **एनाम्** = प्रकाशित करने वाले को (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, इन-एन = प्रकाशित करना, दोष होना, मिश्रण करना, विभाजन करना, अलग करना, मिलाना)। **अक्रतुम्** = अकृत को (अ = नहीं, उपसर्ग, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, कृ = करना)। **कृत्वा** = करके, करने के अनन्तर, करने के बाद (कृ - करना, कृत - कतरना, काटना)। **मम** = मेरा (सर्वनाम)। **एव** = ही (अव्यय)। **कृणुतम्** = करो (कृ = करना)। **वशे** = वश में, इच्छा में (वश् = इच्छा करना, चाहना, चमकना)॥ **6**॥

18. अनुवाक - 6

97. दिक्षु आत्मरक्षा सूक्त - 26

548. ये अस्याम् स्थ प्राच्याम् दिशि हेतयो,
नाम देवाः तेषाम् वो अग्निः इषवः।
ते नो मृडत ते नो अधि ब्रूत तेभ्यो,
वो नमः तेभ्यो वः स्वाहा॥ 1॥

मन्त्रार्थ - **ये** = जो **अस्याम्** = इसमें **स्थ** = स्थित, हो **प्राच्याम्** = प्राची को, पूर्व को **दिशि** = दिशा में **हेतयो** = हेतियाँ, गतियाँ, ज्ञान, वृद्धियाँ, प्राप्तियाँ, प्रेरणाएँ **नाम** = नाम वाले **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने **तेषाम्** = उनका **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **अग्निः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् **इषवः** = इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि, निरन्तर कर्मशील **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा **मृडत** = सुखी करो **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार **ब्रूत** = कहो **तेभ्यो** = उनके लिए **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **नमः** = नमन **तेभ्यो** = उनके लिए **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **स्वाहा** = अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार॥ **1**॥

पदार्थ - **ये** = जो (सर्वनाम)। **अस्याम्** = इसमें (सर्वनाम)। **स्थ** = स्थित, हो (स्था- स्थित होना, ठहरना)। **प्राच्याम्** = प्राची को, पूर्व को (प्राक् = पहले, सर्वनाम)। **दिशि** = दिशा में (दिश - दिखाना, समझाना, आज्ञा करना, कहना, बोलना, देना, पारितोषिक देना, अतिरचना करना)। **हेतयो** = हेतियाँ, गतियाँ, ज्ञान, वृद्धियाँ, प्राप्तियाँ, प्रेरणाएँ (हि - गति, वृद्धि, प्रेरणा करना)। **नाम** = नाम वाले (अव्यय)। **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **तेषाम्** = उनका (सर्वनाम)। **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **अग्निः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **इषवः** = इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि, निरन्तर कर्मशील (इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **मृडत** = सुखी करो (मृड - सुखी होना, सुख देना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **ब्रूत** = कहो (ब्रू - कहना, बोलना)। **तेभ्यो** = उनके लिए (सर्वनाम)। **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **नमः** = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **तेभ्यो** = उनके लिए (सर्वनाम)। **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **स्वाहा** = अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार (सु = उत्तम, अच्छा, स्व - अपना, अह् = व्याप्त होना, फैलना, विस्तृत होना)॥ **1**॥

549. ये अस्याम् स्थ दक्षिणायाम् दिशि अविष्यवो,
नाम देवाः तेषाम् वो काम इषवः।
ते नो मृडत ते नो अधि ब्रूत तेभ्यो,
वो नमः तेभ्यो वः स्वाहा॥ 2॥

मन्त्रार्थ - **ये** = जो **अस्याम्** = इसमें **स्थ** = स्थित, हो **दक्षिणायाम्** = दक्षिणा को **दिशि** = दिशा में **अविष्यवो** = संहारक, रक्षकों को अलग करने वाले, रक्षकों के संहारक **नाम** = नाम वाले **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने **तेषाम्** = उनका **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **काम** = कामना, इच्छा **इषवः** = इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि, निरन्तर कर्मशील **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा **मृडत**

= सुखी करो **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार **ब्रूत** = कहो **तेभ्यो** = उनके लिए **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **नमः** = नमन **तेभ्यो** = उनके लिए **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **स्वाहा** = अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार **॥ 2 ॥**

पदार्थ - **ये** = जो (सर्वनाम)। **अस्याम्** = इसमें (सर्वनाम)। **स्थ** = स्थित, हो (स्था- स्थित होना, ठहरना)। **दक्षिणायाम्** = दक्षिणा को (दक्ष् - बढ़ना, समृद्ध होना, शीघ्र कार्य करना, चतुर होना, दक्ष होना, चलना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मार डालना)। **दिशि** = दिशा में (दिश - दिखाना, समझाना, आज्ञा करना, कहना, बोलना, देना, पारितोषिक देना, अतिरचना करना)। **अविष्यवो** = संहारक, रक्षकों को अलग करने वाले, रक्षकों के संहारक (अ+वि+ष्यवः, अविः+यवः, अवि+ष्यवः, अ = नहीं, वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग), अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, यव = समाप्त करना, उपसंहार करना, यु = मिलाना, अलग करना)। **नाम** = नाम वाले (अव्यय)। **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **तेषाम्** = उनका (सर्वनाम)। **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **काम** = कामना, इच्छा (कम् - चाहना, इच्छा करना)। **इषवः** = इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि, निरन्तर कर्मशील (इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **मृडत** = सुखी करो (मृड - सुखी होना, सुख देना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **ब्रूत** = कहो (ब्रू - कहना, बोलना)। **तेभ्यो** = उनके लिए (सर्वनाम)। **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **नमः** = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **तेभ्यो** = उनके लिए (सर्वनाम)। **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **स्वाहा** = अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार (सु = उत्तम, अच्छा, स्व - अपना, अह् = व्याप्त होना, फैलना, विस्तृत होना) **॥ 2 ॥**

550. ये अस्याम् स्थ प्रतीच्याम् दिशि वैराजा,
नाम देवाः तेषाम् वः आपः इषवः।
ते नो मृडत ते नो अधि ब्रूत तेभ्यो,
वो नमः तेभ्यो वः स्वाहा ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - **ये** = जो **अस्याम्** = इसमें **स्थ** = स्थित, हो **प्रतीच्याम्** = प्रतीची को, पश्चिम को **दिशि** = दिशा में **वैराजा** = वैराजा, विशेष राजा **नाम** = नाम वाले **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने **तेषाम्** = उनका **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **आपः** = आप, व्याप्त, व्यापक **इषवः** = इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि, निरन्तर कर्मशील **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा **मृडत** = सुखी करो **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार **ब्रूत** = कहो **तेभ्यो** = उनके लिए **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **नमः** = नमन **तेभ्यो** = उनके लिए **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **स्वाहा** = अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार **॥ 3 ॥**

पदार्थ - **ये** = जो (सर्वनाम)। **अस्याम्** = इसमें (सर्वनाम)। **स्थ** = स्थित, हो (स्था- स्थित होना, ठहरना)। **प्रतीच्याम्** = प्रतीची को, पश्चिम को (सर्वनाम)। **दिशि** = दिशा में (दिश - दिखाना, समझाना, आज्ञा करना, कहना, बोलना, देना, पारितोषिक देना, अतिरचना करना)। **वैराजा** = वैराजा, विशेष राजा (वि - विशेष, राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **नाम** = नाम वाले (अव्यय)। **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **तेषाम्** = उनका (सर्वनाम)। **वः** = तुम

सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **आपः** = आप, व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)। **इषवः** = इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि, निरन्तर कर्मशील (इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **मृडत** = सुखी करो (मृड - सुखी होना, सुख देना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **ब्रूत** = कहो (ब्रू - कहना, बोलना)। **तेभ्यो** = उनके लिए (सर्वनाम)। **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **नमः** = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **तेभ्यो** = उनके लिए (सर्वनाम)। **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **स्वाहा** = अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार (सु = उत्तम, अच्छा, स्व - अपना, अह् = व्याप्त होना, फैलना, विस्तृत होना) **॥ 3 ॥**

551. ये अस्याम् स्थ उदीच्याम् दिशि प्र-विध्यन्तो,
नाम देवाः तेषाम वो वातः इषवः।
ते नो मृडत ते नो अधि ब्रूत तेभ्यो,
वो नमः तेभ्यो वः स्वाहा॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - **ये** = जो **अस्याम्** = इसमें **स्थ** = स्थित, हो **उदीच्याम्** = उदीची को **दिशि** = दिशा में **प्र-विध्यन्तो** = प्रावधान करते हैं, प्र-वेधन करते हैं **नाम** = नाम वाले **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने **तेषाम्** = उनका **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **वातः** = वात, वायु के समान तीव्र गति वाले **इषवः** = इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि, निरन्तर कर्मशील **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा **मृडत** = सुखी करो **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार **ब्रूत** = कहो **तेभ्यो** = उनके लिए **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **नमः** = नमन **तेभ्यो** = उनके लिए **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **स्वाहा** = अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार **॥ 4 ॥**

पदार्थ - **ये** = जो (सर्वनाम)। **अस्याम्** = इसमें (सर्वनाम)। **स्थ** = स्थित, हो (स्था- स्थित होना, ठहरना)। **उदीच्याम्** = उदीची को (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, इ = जाना, उदि - उन्द् = भिगोना, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना)। **दिशि** = दिशा में (दिश - दिखाना, समझाना, आज्ञा करना, कहना, बोलना, देना, पारितोषिक देना, अतिरचना करना)। **प्र-विध्यन्तो** = प्रावधान करते हैं, प्र-वेधन करते हैं (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, विध - विधान करना, वेध करना, वेधन करना, ताडना)। **नाम** = नाम वाले (अव्यय)। **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **तेषाम्** = उनका (सर्वनाम)। **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **वातः** = वात, वायु के समान तीव्र गति वाले (वा - गति करना, बहना, पवन की भाँति चलना)। **इषवः** = इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि, निरन्तर कर्मशील (इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **मृडत** = सुखी करो (मृड - सुखी होना, सुख देना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **ब्रूत** = कहो (ब्रू - कहना, बोलना)। **तेभ्यो** = उनके लिए (सर्वनाम)। **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **नमः** = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **तेभ्यो** = उनके लिए (सर्वनाम)। **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **स्वाहा** = अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार (सु = उत्तम, अच्छा, स्व - अपना, अह् = व्याप्त होना, फैलना, विस्तृत होना) **॥ 4 ॥**

552. ये अस्याम् स्थ ध्रुवायाम् दिशि नि-लिम्पा,
नाम देवाः तेषाम् वः ओषधीः इषवः।
ते नो मृडत ते नो अधि ब्रूत तेभ्यो,
वो नमः तेभ्यो वः स्वाहा॥ 5॥

मन्त्रार्थ - **ये** = जो **अस्याम्** = इसमें **स्थ** = स्थित, हो **ध्रुवायाम्** = ध्रुव, अचल, स्थिर, अविचल गतिशील को **दिशि** = दिशा में **नि-लिम्पा** = निरन्तर लिप्त होने वाला **नाम** = नाम वाले **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने **तेषाम्** = उनका **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **ओषधीः** = ओषधी **इषवः** = इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि, निरन्तर कर्मशील **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा **मृडत** = सुखी करो **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार **ब्रूत** = कहो **तेभ्यो** = उनके लिए **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **नमः** = नमन **तेभ्यो** = उनके लिए **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **स्वाहा** = अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार॥ **5**॥

पदार्थ - **ये** = जो (सर्वनाम)। **अस्याम्** = इसमें (सर्वनाम)। **स्थ** = स्थित, हो (स्था- स्थित होना, ठहरना)। **ध्रुवायाम्** = ध्रुव, अचल, स्थिर, अविचल गतिशील को (ध्रुव् = अचल होना, स्थिर होना, जाना, गति करना, जानना, पाना)। **दिशि** = दिशा में (दिश - दिखाना, समझाना, आज्ञा करना, कहना, बोलना, देना, पारितोषिक देना, अतिरचना करना)। **नि-लिम्पा** = निरन्तर लिप्त होने वाला (नि - निश्चित, निरन्तर, लिम्प = लीपना, पोतना, विलेपन करना, बढ़ाना, अधिक करना)। **नाम** = नाम वाले (अव्यय)। **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **तेषाम्** = उनका (सर्वनाम)। **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **ओषधीः** = ओषधी (उषध् - चिकित्सा करना, रोग मुक्त करना)। **इषवः** = इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि, निरन्तर कर्मशील (इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **मृडत** = सुखी करो (मृड - सुखी होना, सुख देना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **ब्रूत** = कहो (ब्रू - कहना, बोलना)। **तेभ्यो** = उनके लिए (सर्वनाम)। **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **नमः** = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **तेभ्यो** = उनके लिए (सर्वनाम)। **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **स्वाहा** = अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार (सु = उत्तम, अच्छा, स्व - अपना, अह् = व्याप्त होना, फैलना, विस्तृत होना)॥ **5**॥

553. ये अस्याम् स्थ ऊर्ध्वायाम् दिशि अवस्वन्तो,
नाम देवाः तेषाम् वो बृहस्पतिः इषवः।
ते नो मृडत ते नो अधि ब्रूत तेभ्यो,
वो नमः तेभ्यो वः स्वाहा॥ 6॥

मन्त्रार्थ - **ये** = जो **अस्याम्** = इसमें **स्थ** = स्थित, हो **ऊर्ध्वायाम्** = ऊर्ध्व, उच्च, ऊपर को **दिशि** = दिशा में **अवस्वन्तो** = रक्षा करने वाले **नाम** = नाम वाले **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने **तेषाम्** = उनका **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **बृहस्पतिः** = बृहस्पति, महान्, बृहत् का स्वामी **इषवः** = इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि, निरन्तर कर्मशील **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा **मृडत** = सुखी करो **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च,

ऊपर, पूर्णतः, अधिकार **ब्रूत** = कहो **तेभ्यो** = उनके लिए **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **नमः** = नमन **तेभ्यो** = उनके लिए **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **स्वाहा** = अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार ॥ 6 ॥

पदार्थ - **ये** = जो (सर्वनाम)। **अस्याम्** = इसमें (सर्वनाम)। **स्थ** = स्थित, हो (स्था- स्थित होना, ठहरना)। **ऊर्ध्वायाम्** = ऊर्ध्व, उच्च, ऊपर को (सर्वनाम)। **दिशि** = दिशा में (दिश - दिखाना, समझाना, आज्ञा करना, कहना, बोलना, देना, पारितोषिक देना, अतिरचना करना)। **अवस्वन्तो** = रक्षा करने वाले (अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)। **नाम** = नाम वाले (अव्यय)। **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **तेषाम्** = उनका (सर्वनाम)। **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **बृहस्पतिः** = बृहस्पति, महान्, बृहत् का स्वामी (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना, पत् - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना, नीचे जाना, गिरना, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **इषवः** = इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि, निरन्तर कर्मशील (इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **मृडत** = सुखी करो (मृड - सुखी होना, सुख देना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **ब्रूत** = कहो (ब्रू - कहना, बोलना)। **तेभ्यो** = उनके लिए (सर्वनाम)। **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **नमः** = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **तेभ्यो** = उनके लिए (सर्वनाम)। **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **स्वाहा** = अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार (सु = उत्तम, अच्छा, स्व - अपना, अह् = व्याप्त होना, फैलना, विस्तृत होना) ॥ 6 ॥

98. शत्रु निवारण सूक्त - 27

554. प्राची दिक् अग्निः अधिपतिः,
असितो रक्षिता आदित्या इषवः।
तेभ्यो नमो अधिपतिभ्यो नमो,
रक्षितृभ्यो नमः इषुभ्यो नमः एभ्यो अस्तु।
यो अस्मान् द्वेष्टि यम् वयम् द्विष्मः,
तम् वो जम्भे दध्मः ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - **प्राची** = प्राची, पूर्व दिशा **दिक्** = दिशा **अग्निः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् **अधिपतिः** = अधिपति **असितो** = अ-प्रकाशित **रक्षिता** = रक्षा करने वाले, रक्षक **आदित्या** = अदिति, अक्षय-अविनाशी, अदिति से उत्पन्न, अक्षय-अविनाशी से उत्पन्न **इषवः** = इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि, निरन्तर कर्मशील **तेभ्यो** = उनके लिए **नमो** = नमन **अधिपतिभ्यो** = अधिपतियों के लिए **नमो** = नमन **रक्षितृभ्यो** = रक्षकों के लिए **नमः** = नमन **इषुभ्यो** = इच्छाओं, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि, निरन्तर कर्मशीलों के लिए **नमः** = नमन **एभ्यो** = इनके लिए **अस्तु** = हो **यो** = जो **अस्मान्** = हमें, हमको **द्वेष्टि** = द्वेष करता है **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं **तम्** = उसको, उसे **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **जम्भे** = गर्व करते हैं, नाश करते हैं **दध्मः** = धारण करते हैं, धरते हैं ॥ 1 ॥

पदार्थ - **प्राची** = प्राची, पूर्व दिशा (सर्वनाम)। **दिक्** = दिशा (दिश - दिखाना, समझाना, आज्ञा करना, कहना, बोलना, देना, पारितोषिक देना, अतिरचना करना)। **अग्निः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **अधिपतिः** = अधिपति (अधि = अधिगत, अधिक,

उच्च, पूर्णतः, पत् - ऐश्वर्य होना, उड़ना, गिरना)। **असितो** = अ-प्रकाशित (अ = नहीं, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **रक्षिता** = रक्षा करने वाले, रक्षक (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना)। **आदित्या** = अदिति, अक्षय-अविनाशी, अदिति से उत्पन्न, अक्षय-अविनाशी से उत्पन्न (अ - नहीं, अद् - खाना, नष्ट करना, दी = क्षय होना, नष्ट होना)। **इषवः** = इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि, निरन्तर कर्मशील (इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना)। **तेभ्यो** = उनके लिए (सर्वनाम)। **नमो** = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **अधिपतिभ्यो** = अधिपतियों के लिए (अधि = अधिगत, अधिक, उच्च, पूर्णतः, पत् - ऐश्वर्य होना, उड़ना, गिरना)। **नमो** = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **रक्षितृभ्यो** = रक्षकों के लिए (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना)। **नमः** = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **इषुभ्यो** = इच्छाओं, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि, निरन्तर कर्मशीलों के लिए (इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना)। **नमः** = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **एभ्यो** = इनके लिए (सर्वनाम)। **अस्तु** = हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **अस्मान्** = हमें, हमको (सर्वनाम)। **द्वेष्टि** = द्वेष करता है (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)। **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ (सर्वनाम)। **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना, मत्सर करना)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **जम्भे** = गर्व करते हैं, नाश करते हैं (जम्भ् - नाश करना, गर्व करना, आलस्य होना)। **दध्मः** = धारण करते हैं, धरते हैं (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना) **॥ 1 ॥**

555. दक्षिणा दिक् इन्द्रो अधिपतिः,
तिरश्चि-राजी रक्षिता पितरः इषवः।
तेभ्यो नमो अधिपतिभ्यो नमो,
रक्षितृभ्यो नमः इषुभ्यो नमः एभ्यो अस्तु।
यो अस्मान् द्वेष्टि यम् वयम् द्विष्मः,
तम् वो जम्भे दध्मः ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - **दक्षिणा** = समृद्धि **दिक्** = दिशा **इन्द्रो** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान **अधिपतिः** = अधिपति **तिरश्चि-राजी** = तिरछी राजी, तिर्यक-प्रकाश **रक्षिता** = रक्षा करने वाले, रक्षक **पितरः** = गतिशील, ज्ञानी, पालन करने वाले **इषवः** = इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि, निरन्तर कर्मशील **तेभ्यो** = उनके लिए **नमो** = नमन **अधिपतिभ्यो** = अधिपतियों के लिए **नमो** = नमन **रक्षितृभ्यो** = रक्षकों के लिए **नमः** = नमन **इषुभ्यो** = इच्छाओं, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि, निरन्तर कर्मशीलों के लिए **नमः** = नमन **एभ्यो** = इनके लिए **अस्तु** = हो **यो** = जो **अस्मान्** = हमें, हमको **द्वेष्टि** = द्वेष करता है **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं **तम्** = उसको, उसे **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **जम्भे** = गर्व करते हैं, नाश करते हैं **दध्मः** = धारण करते हैं, धरते हैं **॥ 2 ॥**

पदार्थ - **दक्षिणा** = समृद्धि (दक्ष् - बढ़ना, समृद्ध होना, शीघ्र कार्य करना, चतुर होना, दक्ष होना, चलना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मार डालना)। **दिक्** = दिशा (दिश - दिखाना, समझाना, आज्ञा करना, कहना, बोलना, देना, पारितोषिक देना, अतिरचना करना)। **इन्द्रो** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **अधिपतिः** = अधिपति (अधि = अधिगत, अधिक, उच्च, पूर्णतः, पत् - ऐश्वर्य होना, उड़ना, गिरना)। **तिरश्चि-राजी** = तिरछी राजी, तिर्यक-प्रकाश (तिरश्चा = तिरछा, तिर्यक् (अव्यय), राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **रक्षिता** = रक्षा करने वाले, रक्षक (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना)। **पितरः** = गतिशील, ज्ञानी, पालन करने वाले (पि - जाना, जानना, पाना, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **इषवः** = इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि, निरन्तर

कर्मशील (इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना)। **तेभ्यो** = उनके लिए (सर्वनाम)। **नमो** = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **अधिपतिभ्यो** = अधिपतियों के लिए (अधि = अधिगत, अधिक, उच्च, पूर्णतः, पत् - ऐश्वर्य होना, उड़ना, गिरना)। **नमो** = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **रक्षितृभ्यो** = रक्षकों के लिए (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना)। **नमः** = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **इषुभ्यो** = इच्छाओं, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि, निरन्तर कर्मशीलों के लिए (इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना)। **नमः** = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **एभ्यो** = इनके लिए (सर्वनाम)। **अस्तु** = हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **अस्मान्** = हमें, हमको (सर्वनाम)। **द्वेष्टि** = द्वेष करता है (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)। **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ (सर्वनाम)। **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना, मत्सर करना)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **जम्भे** = गर्व करते हैं, नाश करते हैं (जम्भ् - नाश करना, गर्व करना, आलस्य होना)। **दध्मः** = धारण करते हैं, धरते हैं (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना) **॥ 2 ॥**

556. प्रतीची दिक् वरुणो अधिपतिः,
पृदाकू रक्षिता अन्नम् इषवः,
तेभ्यो नमो अधिपतिभ्यो नमो,
रक्षितृभ्यो नमः इषुभ्यो नमः एभ्यो अस्तु।
यो अस्मान् द्वेष्टि यम् वयम् द्विष्मः,
तम् वो जम्भे दध्मः ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - **प्रतीची** = प्रतिकूल, पीछे, पश्चिम **दिक्** = दिशा **वरुणो** = वरणीय, वरण करने वाला **अधिपतिः** = अधिपति **पृदाकू** = पूर्ण करने वाले **रक्षिता** = रक्षा करने वाले, रक्षक **अन्नम्** = अन्न को **इषवः** = इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि, निरन्तर कर्मशील **तेभ्यो** = उनके लिए **नमो** = नमन **अधिपतिभ्यो** = अधिपतियों के लिए **नमो** = नमन **रक्षितृभ्यो** = रक्षकों के लिए **नमः** = नमन **इषुभ्यो** = इच्छाओं, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि, निरन्तर कर्मशीलों के लिए **नमः** = नमन **एभ्यो** = इनके लिए **अस्तु** = हो **यो** = जो **अस्मान्** = हमें, हमको **द्वेष्टि** = द्वेष करता है **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं **तम्** = उसको, उसे **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **जम्भे** = गर्व करते हैं, नाश करते हैं **दध्मः** = धारण करते हैं, धरते हैं **॥ 3 ॥**

पदार्थ - **प्रतीची** = प्रतिकूल, पीछे, पश्चिम (सर्वनाम)। **दिक्** = दिशा (दिश - दिखाना, समझाना, आज्ञा करना, कहना, बोलना, देना, पारितोषिक देना, अतिरचना करना)। **वरुणो** = वरणीय, वरण करने वाला (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **अधिपतिः** = अधिपति (अधि = अधिगत, अधिक, उच्च, पूर्णतः, पत् - ऐश्वर्य होना, उड़ना, गिरना)। **पृदाकू** = पूर्ण करने वाले (पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना)। **रक्षिता** = रक्षा करने वाले, रक्षक (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना)। **अन्नम्** = अन्न को (अन् - जीवन होना, प्राणवान् होना, समर्थ होना, जाना, अद् = खाना)। **इषवः** = इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि, निरन्तर कर्मशील (इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना)। **तेभ्यो** = उनके लिए (सर्वनाम)। **नमो** = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **अधिपतिभ्यो** = अधिपतियों के लिए (अधि = अधिगत, अधिक, उच्च, पूर्णतः, पत् - ऐश्वर्य होना, उड़ना, गिरना)। **नमो** = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **रक्षितृभ्यो** = रक्षकों के लिए (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना)। **नमः** = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **इषुभ्यो** = इच्छाओं, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि, निरन्तर कर्मशीलों के लिए (इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना,

चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना)। **नमः** = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **एभ्यो** = इनके लिए (सर्वनाम)। **अस्तु** = हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **अस्मान्** = हमें, हमको (सर्वनाम)। **द्वेष्टि** = द्वेष करता है (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)। **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ (सर्वनाम)। **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना, मत्सर करना)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **जम्भे** = गर्व करते हैं, नाश करते हैं (जम्भ् - नाश करना, गर्व करना, आलस्य होना)। **दध्मः** = धारण करते हैं, धरते हैं (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना) **॥ 3 ॥**

557. उदीची दिक् सोमो अधिपतिः,
स्वजो रक्षिता अशनिः इषवः,
तेभ्यो नमो अधिपतिभ्यो नमो,
रक्षितृभ्यो नमः इषुभ्यो नमः एभ्यो अस्तु।
यो अस्मान् द्वेष्टि यम् वयम् द्विष्मः,
तम् वो जम्भे दध्मः ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - उदीची = उदीची **दिक्** = दिशा **सोमो** = सृजन-ऐश्वर्य-अन्तकर्ता, ऐश्वर्यवान्, सृष्टिकर्ता **अधिपतिः** = अधिपति **स्वजो** = स्वयं उत्पन्न होने वाला **रक्षिता** = रक्षा करने वाले, रक्षक **अशनिः** = अशनि, खाने वाले, व्याप्त होने वाले **इषवः** = इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि, निरन्तर कर्मशील **तेभ्यो** = उनके लिए **नमो** = नमन **अधिपतिभ्यो** = अधिपतियों के लिए **नमो** = नमन **रक्षितृभ्यो** = रक्षकों के लिए **नमः** = नमन **इषुभ्यो** = इच्छाओं, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि, निरन्तर कर्मशीलों के लिए **नमः** = नमन **एभ्यो** = इनके लिए **अस्तु** = हो **यो** = जो **अस्मान्** = हमें, हमको **द्वेष्टि** = द्वेष करता है **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं **तम्** = उसको, उसे **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **जम्भे** = गर्व करते हैं, नाश करते हैं **दध्मः** = धारण करते हैं, धरते हैं **॥ 4 ॥**

पदार्थ - उदीची = उदीची (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, इ = जाना, उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, उदि - उन्द् = भिगोना, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना)। **दिक्** = दिशा (दिश - दिखाना, समझाना, आज्ञा करना, कहना, बोलना, देना, पारितोषिक देना, अतिरचना करना)। **सोमो** = सृजन-ऐश्वर्य-अन्तकर्ता, ऐश्वर्यवान्, सृष्टिकर्ता (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामथ्य, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना। सू = प्रेरणा देना। सो–स्य, सय - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना)। **अधिपतिः** = अधिपति (अधि = अधिगत, अधिक, उच्च, पूर्णतः, पत् - ऐश्वर्य होना, उड़ना, गिरना)। **स्वजो** = स्वयं उत्पन्न होने वाला (स्व = अपना, निज, सर्वनाम, जन - उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **रक्षिता** = रक्षा करने वाले, रक्षक (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना)। **अशनिः** = अशनि, खाने वाले, व्याप्त होने वाले (अ = नहीं, अश् = भोजन करना, अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, अश् = भोजन करना)। **इषवः** = इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि, निरन्तर कर्मशील (इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना)। **तेभ्यो** = उनके लिए (सर्वनाम)। **नमो** = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **अधिपतिभ्यो** = अधिपतियों के लिए (अधि = अधिगत, अधिक, उच्च, पूर्णतः, पत् - ऐश्वर्य होना, उड़ना, गिरना)। **नमो** = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **रक्षितृभ्यो** = रक्षकों के लिए (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना)। **नमः** = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **इषुभ्यो** = इच्छाओं, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि, निरन्तर कर्मशीलों के लिए (इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना,

चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना)। **नमः** = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **एभ्यो** = इनके लिए (सर्वनाम)। **अस्तु** = हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **अस्मान्** = हमें, हमको (सर्वनाम)। **द्वेष्टि** = द्वेष करता है (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)। **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ (सर्वनाम)। **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना, मत्सर करना)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **जम्भे** = गर्व करते हैं, नाश करते हैं (जम्भ् - नाश करना, गर्व करना, आलस्य होना)। **दध्मः** = धारण करते हैं, धरते हैं (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना) **॥ 4 ॥**

558. ध्रुवा दिक् विष्णुः अधिपतिः,
कल्माष-ग्रीवो रक्षिता वीरुधः इषवः,
तेभ्यो नमो अधिपतिभ्यो नमो,
रक्षितृभ्यो नमः इषुभ्यो नमः एभ्यो अस्तु।
यो अस्मान् द्वेष्टि यम् वयम् द्विष्मः,
तम् वो जम्भे दध्मः ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ - **ध्रुवा** = ध्रुव, अचल, स्थिर, अविचल गतिशील, अविचल विद्वान् **दिक्** = दिशा **विष्णुः** = व्यापक, विष्णु ने **अधिपतिः** = अधिपति **कल्माष-ग्रीवो** = सृजन-विनाशक-ग्रीवा **रक्षिता** = रक्षा करने वाले, रक्षक **वीरुधः** = वीरता को धारण करने वाला, पराक्रमी **इषवः** = इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि, निरन्तर कर्मशील **तेभ्यो** = उनके लिए **नमो** = नमन **अधिपतिभ्यो** = अधिपतियों के लिए **नमो** = नमन **रक्षितृभ्यो** = रक्षकों के लिए **नमः** = नमन **इषुभ्यो** = इच्छाओं, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि, निरन्तर कर्मशीलों के लिए **नमः** = नमन **एभ्यो** = इनके लिए **अस्तु** = हो **यो** = जो **अस्मान्** = हमें, हमको **द्वेष्टि** = द्वेष करता है **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं **तम्** = उसको, उसे **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **जम्भे** = गर्व करते हैं, नाश करते हैं **दध्मः** = धारण करते हैं, धरते हैं **॥ 5 ॥**

पदार्थ - **ध्रुवा** = ध्रुव, अचल, स्थिर, अविचल गतिशील, अविचल विद्वान् (ध्रुव् = अचल होना, स्थिर होना, जाना, गति करना, जानना, पाना)। **दिक्** = दिशा (दिश - दिखाना, समझाना, आज्ञा करना, कहना, बोलना, देना, पारितोषिक देना, अतिरचना करना)। **विष्णुः** = व्यापक, विष्णु ने (विष्ण-विष् -विविष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना, व्यापना, फैलना, प्रसृत होना, वी = जाना, व्यापना, घेरना, आक्रमण करना, गर्भवती होना, इच्छा करना, फेंकना, भेजना, दौड़ाना, खाना, भक्षण करना। सम - घेरना, घेर लेना, लपेटना)। **अधिपतिः** = अधिपति (अधि = अधिगत, अधिक, उच्च, पूर्णतः, पत् - ऐश्वर्य होना, उड़ना, गिरना)। **कल्माष-ग्रीवो** = सृजन-विनाशक-ग्रीवा (कल - गणना, करना, गिनना, गति करना, शब्द करना, स्वाद लेना, धारण-घर्षण-मन्थन करना, भेदना, छेदन करना, मष् - हिंसा करना, गृ = सींचना, समझना, जानना,खाना, निगलना, शब्द करना, बोलना, समझाना, बताना, गीला करना, घर्षण करना)। **रक्षिता** = रक्षा करने वाले, रक्षक (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना)। **वीरुधः** = वीरता को धारण करने वाला, पराक्रमी (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)। **इषवः** = इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि, निरन्तर कर्मशील (इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना)। **तेभ्यो** = उनके लिए (सर्वनाम)। **नमो** = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **अधिपतिभ्यो** = अधिपतियों के लिए (अधि = अधिगत, अधिक, उच्च, पूर्णतः, पत् - ऐश्वर्य होना, उड़ना, गिरना)। **नमो** = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **रक्षितृभ्यो** = रक्षकों के लिए (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना)। **नमः** = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **इषुभ्यो** = इच्छाओं, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि, निरन्तर कर्मशीलों के लिए (इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर

करना)। **नमः** = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **एभ्यो** = इनके लिए (सर्वनाम)। **अस्तु** = हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **अस्मान्** = हमें, हमको (सर्वनाम)। **द्वेष्टि** = द्वेष करता है (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)। **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ (सर्वनाम)। **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना, मत्सर करना)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **जम्भे** = गर्व करते हैं, नाश करते हैं (जम्भ् - नाश करना, गर्व करना, आलस्य होना)। **दध्मः** = धारण करते हैं, धरते हैं (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना) **॥ 5 ॥**

559. ऊर्ध्वा दिक् बृहस्पतिः अधिपतिः,
श्वित्रो रक्षिता वर्षम् इषवः,
तेभ्यो नमो अधिपतिभ्यो नमो,
रक्षितृभ्यो नमः इषुभ्यो नमः एभ्यो अस्तु।
यो अस्मान् द्वेष्टि यम् वयम् द्विष्मः,
तम् वो जम्भे दध्मः ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ - **ऊर्ध्वा** = उच्च, ऊपर, ऊर्ध्व **दिक्** = दिशा **बृहस्पतिः** = बृहस्पति, महान्, बृहत् का स्वामी **अधिपतिः** = अधिपति **श्वित्रो** = श्वित्र, शुभ्र **रक्षिता** = रक्षा करने वाले, रक्षक **वर्षम्** = वर्ष को **इषवः** = इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि, निरन्तर कर्मशील **तेभ्यो** = उनके लिए **नमो** = नमन **अधिपतिभ्यो** = अधिपतियों के लिए **नमो** = नमन **रक्षितृभ्यो** = रक्षकों के लिए **नमः** = नमन **इषुभ्यो** = इच्छाओं, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि, निरन्तर कर्मशीलों के लिए **नमः** = नमन **एभ्यो** = इनके लिए **अस्तु** = हो **यो** = जो **अस्मान्** = हमें, हमको **द्वेष्टि** = द्वेष करता है **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं **तम्** = उसको, उसे **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **जम्भे** = गर्व करते हैं, नाश करते हैं **दध्मः** = धारण करते हैं, धरते हैं **॥ 6 ॥**

पदार्थ - **ऊर्ध्वा** = उच्च, ऊपर, ऊर्ध्व (सर्वनाम)। **दिक्** = दिशा (दिश - दिखाना, समझाना, आज्ञा करना, कहना, बोलना, देना, पारितोषिक देना, अतिरचना करना)। **बृहस्पतिः** = बृहस्पति, महान्, बृहत् का स्वामी (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना, पत् - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना, नीचे जाना, गिरना, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **अधिपतिः** = अधिपति (अधि = अधिगत, अधिक, उच्च, पूर्णतः, पत् - ऐश्वर्य होना, उड़ना, गिरना)। **श्वित्रो** = श्वित्र, शुभ्र (श्वित - श्वेत होना, शुभ्र होना)। **रक्षिता** = रक्षा करने वाले, रक्षक (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना)। **वर्षम्** = वर्ष को (वर्ष् = गीला होना, वर्षा होना)। **इषवः** = इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि, निरन्तर कर्मशील (इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना)। **तेभ्यो** = उनके लिए (सर्वनाम)। **नमो** = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **अधिपतिभ्यो** = अधिपतियों के लिए (अधि = अधिगत, अधिक, उच्च, पूर्णतः, पत् - ऐश्वर्य होना, उड़ना, गिरना)। **नमो** = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **रक्षितृभ्यो** = रक्षकों के लिए (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना)। **नमः** = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **इषुभ्यो** = इच्छाओं, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि, निरन्तर कर्मशीलों के लिए (इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना)। **नमः** = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **एभ्यो** = इनके लिए (सर्वनाम)। **अस्तु** = हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **अस्मान्** = हमें, हमको (सर्वनाम)। **द्वेष्टि** = द्वेष करता है (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)। **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ (सर्वनाम)। **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **द्विष्मः** = द्वेष करते हैं (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना, मत्सर करना)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **जम्भे** = गर्व करते हैं, नाश करते हैं (जम्भ्

- नाश करना, गर्व करना, आलस्य होना)। **दधमः** = धारण करते हैं, धरते हैं (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना) **॥ 6 ॥**

99. पशुपोषण सूक्त - 28

560. एक-एकया एषा सृष्ट्या सम् बभूव,
यत्र गाः असृजन्त भूतकृतो विश्वरूपाः।
यत्र विजायते यमिनी अप-ऋतुः,
सा पशून् क्षिणाति रिफती रुशती॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - **एक-एकया** = एक-एक द्वारा **एषा** = यह **सृष्ट्या** = सृजनशील द्वारा **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **बभूव** = हो गये **यत्र** = जहाँ **गाः** = गान, गाय, गायक, गाने वाले **असृजन्त** = सृजन किया **भूतकृतो** = भूत-कृत, हुए द्वारा किया गया **विश्वरूपाः** = विश्वरूप **यत्र** = जहाँ **विजायते** = विशेषकर जन्म लेता है **यमिनी** = नियमन-नियन्त्रण, पोषण करने वाली **अप-ऋतुः** = अप-ऋतु **सा** = वह **पशून्** = पशुओं को, दृष्टा को, बन्धन को **क्षिणाति** = निवास करता है **रिफती** = हिंसक **रुशती** = हिंसक **॥ 1 ॥**

पदार्थ - **एक-एकया** = एक-एक द्वारा (एक - संख्या)। **एषा** = यह (सर्वनाम)। **सृष्ट्या** = सृजनशील द्वारा (सृज् - छोड़ना, त्याग करना, विविध रूप से उत्पन्न करना, रचना करना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **बभूव** = हो गये (भू = होना, प्राप्त होना)। **यत्र** = जहाँ (सर्वनाम)। **गाः** = गान, गाय, गायक, गाने वाले (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गम् - जाना, जानना, पाना)। **असृजन्त** = सृजन किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, सृज् - सृजन करना, रचना करना, बनाना, विविध रूप से उत्पादन करना)। **भूतकृतो** = भूत-कृत, हुए द्वारा किया गया (भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना, कृ = करना)। **विश्वरूपाः** = विश्वरूप (विश्व - सब कुछ, रूप - आकार बनाना, रचना करना)। **यत्र** = जहाँ (सर्वनाम)। **विजायते** = विशेषकर जन्म लेता है (वि - विशेष, जन् - जन्म लेना, उत्पन्न होना)। **यमिनी** = नियमन-नियन्त्रण, पोषण करने वाली (यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)। **अप-ऋतुः** = अप-ऋतु (अप = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग), ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)। **सा** = वह (सर्वनाम)। **पशून्** = पशुओं को, दृष्टा को, बन्धन को (पश्-दृश् = देखना, पश - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना)। **क्षिणाति** = निवास करता है (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)। **रिफती** = हिंसक (रिफ् = बोलना, कहना, युद्ध करना, दोष लगाना, निन्दा करना, दुःख देना, पीड़ा करना, देना, आत्मप्रशंसा या प्रस्तुति करना, रिम्फ = निन्दा करना, हिंसा करना)। **रुशती** = हिंसक (रुश् - हिंसा करना) **॥ 1 ॥**

561. एषा पशून् सम् क्षिणाति,
क्रव्यात् भूत्वा वि-अद्वरी।
उत एनाम् ब्रह्मणे दद्यात्,
तथा स्योना शिवा स्यात्॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - **एषा** = यह **पशून्** = पशुओं को, दृष्टा को, बन्धन को **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **क्षिणाति** = निवास करता है **क्रव्यात्** = करणीय से, क्रूर, निर्दयता से **भूत्वा** = होकर **वि-अद्वरी** = वि-अद्वर, विशेष खाने वाले, विशेष आत्मसात् करने वाले **उत** = ही, भी, ओर **एनाम्** = प्रकाशित करने वाले को **ब्रह्मणे** = ब्रह्म के लिए, महान् के लिए **दद्यात्** = दिया **तथा** = उसी प्रकार **स्योना** = सुख **शिवा** = कल्याणकारी **स्यात्** = हो जाती है **॥ 2 ॥**

पदार्थ - **एषा** = यह (सर्वनाम)। **पशून्** = पशुओं को, दृष्टा को, बन्धन को (पश्-दृश् = देखना, पश - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **क्षिणाति** = निवास करता

है (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)। **क्रव्यात्** = करणीय से, क्रूर, निर्दयता से (क्रू, क्रूर् = निर्दय होना, निर्दयता करना, कृ - करना)। **भूत्वा** = होकर (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **वि-अद्वरी** = वि-अद्वर, विशेष खाने वाले, विशेष आत्मसात् करने वाले (वि - विशेष, अद् = खाना, भोग करना, ग्रहण करना, आत्मसात् करना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **एनाम्** = प्रकाशित करने वाले को (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, इन-एन = प्रकाशित करना, दोष होना, मिश्रण करना, विभाजन करना, अलग करना, मिलाना)। **ब्रह्मणे** = ब्रह्म के लिए, महान् के लिए (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **दद्यात्** = दिया (दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)। **तथा** = उसी प्रकार (अव्यय)। **स्योना** = सुख (स्योन् = सुख होना, सुख देना)। **शिवा** = कल्याणकारी (शिव् = कल्याण करना)। **स्यात्** = हो जाती है (अस् = होना) **॥ 2 ॥**

562. शिवा भव पुरुषेभ्यो,
गोभ्यो अश्वेभ्यः शिवा।
शिवा अस्मै सर्व अस्मै,
क्षेत्राय शिवा नः इह एधि॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - **शिवा** = कल्याणकारी **भव** = हो **पुरुषेभ्यो** = पुरुषों के लिए, परिपूर्णों, अग्रगामियों, अग्रणियों के लिए **गोभ्यो** = शब्दकर्ताओं, मननशीलों के लिए **अश्वेभ्यः** = अश्वों, तीव्र गति युक्त, व्यापकों के लिए **शिवा** = कल्याणकारी **शिवा** = कल्याणकारी **अस्मै** = इसके लिए, हमको, हमारे लिए **सर्व** = सब, सभी **अस्मै** = इसके लिए, हमको, हमारे लिए **क्षेत्राय** = क्षेत्र के लिए **शिवा** = कल्याणकारी **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा **इह** = इसमें, यहां, यह **एधि** = जाता है **॥ 3 ॥**

पदार्थ - **शिवा** = कल्याणकारी (शिव् = कल्याण करना)। **भव** = हो (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **पुरुषेभ्यो** = पुरुषों के लिए, परिपूर्णों, अग्रगामियों, अग्रणियों के लिए (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, पृ - पूर्ण करना, भरना, पालन करना, रक्षा करना, तृप्त करना)। **गोभ्यो** = शब्दकर्ताओं, मननशीलों के लिए (गु - अस्पष्ट बोलना, शब्द करना, मनन करना)। **अश्वेभ्यः** = अश्वों, तीव्र गति युक्त, व्यापकों के लिए (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)। **शिवा** = कल्याणकारी (शिव् = कल्याण करना)। **शिवा** = कल्याणकारी (शिव् = कल्याण करना)। **अस्मै** = इसके लिए, हमको, हमारे लिए (सर्वनाम)। **सर्व** = सब, सभी (सर्वनाम)। **अस्मै** = इसके लिए, हमको, हमारे लिए (सर्वनाम)। **क्षेत्राय** = क्षेत्र के लिए (क्षि - जाना, चलना, जानना, पाना निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)। **शिवा** = कल्याणकारी (शिव् = कल्याण करना)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **इह** = इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **एधि** = जाता है (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, इ - जाना, एध - बढ़ना) **॥ 3 ॥**

563. इह पुष्टिः इह रसः इह,
सहस्त्रसातमा भव।
पशून् यमिनि पोषय॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - **इह** = इसमें, यहां, यह **पुष्टिः** = पुष्टि, पोषण **इह** = इसमें, यहां, यह **रसः** = रस **इह** = इसमें, यहां, यह **सहस्त्रसातमा** = सहस्त्र-सेवाभावी, हजार दानी, सत्कार करने वाले **भव** = हो **पशून्** = पशुओं को, दृष्टा को, बन्धन को **यमिनि** = नियमन-नियन्त्रण, पोषण करने वाली **पोषय** = पोषण करो **॥ 4 ॥**

पदार्थ - **इह** = इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **पुष्टिः** = पुष्टि, पोषण (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, रक्षण करना, वृद्धि करना, विभाग करना)। **इह** = इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **रसः** = रस (रस - स्वाद लेना, चखना, प्रीति करना, प्यार करना)। **इह** = इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **सहस्त्रसातमा** = सहस्त्र-सेवाभावी, हजार दानी, सत्कार करने

वाले (सहस्र = हजार, सन = सेवा करना, चाकरी करना, सन = दान करना, सेवा करना, पूजा करना, सत्कार करना)। **भव =** हो (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **पशून् =** पशुओं को, दृष्टा को, बन्धन को (पश्-दृश् = देखना, पश - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना)। **यमिनि =** नियमन-नियन्त्रण, पोषण करने वाली (यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)। **पोषय =** पोषण करो (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, पूष - बढ़ना, अधिक होना, पोषण करना) **॥ 4 ॥**

564. यत्रा सुहार्दः सुकृतो मदन्ति,
विहाय रोगम् तन्वः स्वायाः।
तम् लोकम् यमिनी अभि-सम्-बभूव,
सा नो मा हिंसीत् पुरुषान् पशून् च ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ - यत्रा = जहाँ **सुहार्दः =** सुहृदयी, उत्तम हृदय वाला **सुकृतो =** सुकृत, उत्तम कर्म वाले **मदन्ति =** आनन्दित करते हैं, हर्षित होते हैं, तृप्त होते हैं **विहाय =** विहाय, विशेष त्याग **रोगम् =** रोग को **तन्वः =** विस्तार **स्वायाः =** स्वयम्, अपने **तम् =** उसको, उसे **लोकम् =** लोक को, दर्शन को, प्रकाश को, वाणी को **यमिनी =** नियमन-नियन्त्रण, पोषण करने वाली **अभि-सम्-बभूव =** हो गया है **सा =** वह **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा **मा =** नहीं, मत **हिंसीत् =** हिंसा करे **पुरुषान् =** पुरुषों को, परिपूर्ण, अग्रगामी, अग्रणी को **पशून् =** पशुओं को, दृष्टा को, बन्धन को **च =** और **॥ 5 ॥**

पदार्थ - यत्रा = जहाँ (अव्यय)। **सुहार्दः =** सुहृदयी, उत्तम हृदय वाला (सु = उत्तम, अच्छा, उपसर्ग, हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)। **सुकृतो =** सुकृत, उत्तम कर्म वाले (सु = उत्तम, अच्छा, उपसर्ग, कृ = करना)। **मदन्ति =** आनन्दित करते हैं, हर्षित होते हैं, तृप्त होते हैं (मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)। **विहाय =** विहाय, विशेष त्याग (वि - विशेष, हा - त्याग करना, चलना, जाना)। **रोगम् =** रोग को (रुज् - हिंसा करना, रोग होना, कष्ट होना, टूटना)। **तन्वः =** विस्तार (तन्-तनु = विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना)। **स्वायाः =** स्वयम्, अपने (स्व - अपना)। **तम् =** उसको, उसे (सर्वनाम)। **लोकम् =** लोक को, दर्शन को, प्रकाश को, वाणी को (लोक् = देखना, प्रकाशित होना, बोलना)। **यमिनी =** नियमन-नियन्त्रण, पोषण करने वाली (यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)। **अभि-सम्-बभूव =** हो गया है (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग), सम् = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग), भू = होना, प्राप्त होना)। **सा =** वह (सर्वनाम)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **मा =** नहीं, मत (अव्यय)। **हिंसीत् =** हिंसा करे (हिंस् = हिंसा करना, मारना, सताना)। **पुरुषान् =** पुरुषों को, परिपूर्ण, अग्रगामी, अग्रणी को (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना)। **पशून् =** पशुओं को, दृष्टा को, बन्धन को (पश्-दृश् = देखना, पश - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना)। **च =** और (अव्यय) **॥ 5 ॥**

565. यत्रा सुहार्दाम् सुकृताम्,
अग्निहोत्र-हुताम् यत्र लोकः।
तम् लोकम् यमिनी अभि-सम्-बभूव,
सा नो मा हिंसीत् पुरुषान् पशून् च ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ - यत्रा = जहाँ **सुहार्दाम् =** सुहृदयी, उत्तम हृदय वाले को **सुकृताम् =** सुकृत, उत्तम कर्म वाले को **अग्निहोत्र-हुताम् =** अग्नि-होत्र-हुत को, अग्नि-होत्र-आदान-प्रदान को **यत्र =** जहाँ **लोकः =** लोक **तम् =** उसको, उसे **लोकम् =** लोक को, दर्शन को, प्रकाश को, वाणी को **यमिनी =** नियमन-नियन्त्रण, पोषण करने वाली **अभि-सम्-बभूव =** हो गया है **सा =** वह **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा **मा =** नहीं, मत **हिंसीत् =** हिंसा करे **पुरुषान् =** पुरुषों को,

परिपूर्ण, अग्रगामी, अग्रणी को **पशून्** = पशुओं को, दृष्टा को, बन्धन को **च** = और ॥ **6** ॥

पदार्थ - **यत्रा** = जहाँ (अव्यय)। **सुहार्दाम्** = सुहृदयी, उत्तम हृदय वाले को (सु = उत्तम, अच्छा, उपसर्ग, हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)। **सुकृताम्** = सुकृत, उत्तम कर्म वाले को (सु = उत्तम, अच्छा, उपसर्ग, कृ = करना)। **अग्निहोत्र-हुताम्** = अग्नि-होत्र-हुत को, अग्नि-होत्र-आदान-प्रदान को (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना, हु = दान करना, आदान-प्रदान करना)। **यत्र** = जहाँ (अव्यय)। **लोकः** = लोक (लोक् = देखना, प्रकाशित होना, बोलना)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **लोकम्** = लोक को, दर्शन को, प्रकाश को, वाणी को (लोक् = देखना, प्रकाशित होना, बोलना)। **यमिनी** = नियमन-नियन्त्रण, पोषण करने वाली (यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)। **अभि-सम्-बभूव** = हो गया है (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग), सम् = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग), भू = होना, प्राप्त होना)। **सा** = वह (सर्वनाम)। **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **मा** = नहीं, मत (अव्यय)। **हिंसीत्** = हिंसा करे (हिंस् = हिंसा करना, मारना, सताना)। **पुरुषान्** = पुरुषों को, परिपूर्ण, अग्रगामी, अग्रणी को (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना)। **पशून्** = पशुओं को, दृष्टा को, बन्धन को (पश्-दृश् = देखना, पश - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना)। **च** = और (अव्यय) ॥ **6** ॥

100. अवि सूक्त - 29

566. यत् राजानो विभजन्त इष्टापूर्तस्य,
षोडशम् यमस्य अमी सभासदः।
अविः तस्मात् प्र मुञ्चति,
दत्तः शितिपात् स्वधा ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - **यत्** = जिसे, जो **राजानो** = राजा **विभजन्त** = विशेष भजन करो, विशेष सेवा करो **इष्टापूर्तस्य** = इष्टा-पूर्ति का, विद्या, इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि की पूर्ति का **षोडशम्** = सोलह को **यमस्य** = यम का **अमी** = शब्द, गति, सेवा युक्त, अतुल्य, अहिंसक **सभासदः** = सभासद, सभा में स्थित होने वाला, सभा में उपस्थित होने वाला **अविः** = रक्षक **तस्मात्** = उससे **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक **मुञ्चति** = मुक्त करता है **दत्तः** = दिया हुआ **शितिपात्** = शिति-पालक **स्वधा** = अपनत्व, आत्मीयता को धारण करना, स्वधा ॥ **1** ॥

पदार्थ - **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **राजानो** = राजा (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **विभजन्त** = विशेष भजन करो, विशेष सेवा करो (वि - विशेष, भग्-भज् = सेवा करना, सेवन करना, सेवित होना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)। **इष्टापूर्तस्य** = इष्टा-पूर्ति का, विद्या, इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि की पूर्ति का (इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना, पूर् - पूर्ण करना, भरना)। **षोडशम्** = सोलह को (संख्या, सर्वनाम)। **यमस्य** = यम का (यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)। **अमी** = शब्द, गति, सेवा युक्त, अतुल्य, अहिंसक (अम् = गति, शब्द, सेवा करना, रोग होना, अ - नहीं, मा = मापना, नापना, तौलना, मि - फेकना, स्थापना करना, रक्षा करना, मी - हिंसा करना, मारना)। **सभासदः** = सभासद, सभा में स्थित होने वाला, सभा में उपस्थित होने वाला (स - सहित, भा - प्रकाश होना, सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)। **अविः** = रक्षक (अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)। **तस्मात्** = उससे (सर्वनाम)। **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **मुञ्चति** = मुक्त करता है (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **दत्तः** = दिया हुआ (दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)। **शितिपात्** = शिति-पालक (शि = तीक्ष्ण करना, पैना करना, पतला करना, सुनना, पा = पालन करना, बचाना)। **स्वधा** = अपनत्व, आत्मीयता को धारण करना, स्वधा (स्व

= निज, अपना, धा = धारण करना, पहनना, पोषण करना, रक्षण करना) **॥ 1 ॥**

567. सर्वान् कामान् पूरयति,
आभवन् प्रभवन् भवन्।
आकूतिप्रो अविः दत्तः,
शितिपात् उप दस्यति॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - **सर्वान्** = सभी को **कामान्** = कामनाओं, इच्छाओं को **पूरयति** = पवित्र करता है, रक्षा करता है **आभवन्** = सम्यक् होते हुए **प्रभवन्** = प्रकृष्ट होते हुए **भवन्** = होते हुए **आकूतिप्रो** = आकूति-पूर्ण, वाणी-तृप्त, शब्द-पूर्ण **अविः** = रक्षक **दत्तः** = दिया हुआ **शितिपात्** = शिति-पालक **उप** = समीप **दस्यति** = रक्षा करता है, विनाश करता है **॥ 2 ॥**

पदार्थ - **सर्वान्** = सभी को (सर्वनाम)। **कामान्** = कामनाओं, इच्छाओं को (कम - चाहना, इच्छा करना)। **पूरयति** = पवित्र करता है, रक्षा करता है (पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)। **आभवन्** = सम्यक् होते हुए (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **प्रभवन्** = प्रकृष्ट होते हुए (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **भवन्** = होते हुए (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **आकूतिप्रो** = आकूति-पूर्ण, वाणी-तृप्त, शब्द-पूर्ण (प्रा - पूर्ण करना, भरना, प्रा - तृप्त करना, आ = समन्तात्, सम्पूर्ण, कू - शब्द करना)। **अविः** = रक्षक (अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)। **दत्तः** = दिया हुआ (दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)। **शितिपात्** = शिति-पालक (शि = तीक्ष्ण करना, पैना करना, पतला करना, सुनना, पा = पालन करना, बचाना)। **उप** = समीप (उपसर्ग)। **दस्यति** = रक्षा करता है, विनाश करता है (दस् - रक्षण, पालन, स्थापन करना, देखना, नष्ट होना, नष्ट करना, डसना) **॥ 2 ॥**

568. यो ददाति शितिपादम्,
अविम् लोकेन सम्-मितम्।
सः नाकम् अभ्यारोहति यत्र शुल्को,
न क्रियते अबलेन बलीयसे॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - **यो** = जो **ददाति** = देता है **शितिपादम्** = शिति-पाद को **अविम्** = अवि को, रक्षक को **लोकेन** = लोक से, लोक द्वारा **सम्-मितम्** = सम्मित को, सम्यक् मानित, सम्यक् प्रीति करने वाले को **सः** = वह, उसने **नाकम्** = नाक, अक रहित, अकुटिल, अविचल **अभ्यारोहति** = अभ्यारोहण करता है, सर्वथा बढता-चढ़ता है **यत्र** = जहाँ **शुल्को** = शुल्क **न** = नहीं, समान, उपमार्थक **क्रियते** = किया जाता है **अबलेन** = अबल से, बलहीन द्वारा **बलीयसे** = बल युक्त के लिए **॥ 3 ॥**

पदार्थ - **यो** = जो (सर्वनाम)। **ददाति** = देता है (दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)। **शितिपादम्** = शिति-पाद को (शि = तीक्ष्ण करना, पैना करना, पतला करना, सुनना, पद् - चलना, जाना, भूषित होना)। **अविम्** = अवि को, रक्षक को (अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)। **लोकेन** = लोक से, लोक द्वारा (लोक् = देखना, प्रकाशित होना, बोलना)। **सम्-मितम्** = सम्मित को, सम्यक् मानित, सम्यक् प्रीति करने वाले को (सम् - सम्यक्, भलीभाँति, मिद् - स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, नरम होना, मृदुल होना)। **सः** = वह, उसने (सर्वनाम)। **नाकम्** = नाक, अक रहित, अकुटिल, अविचल (नक् - नक्क् = नष्ट होना, नष्ट करना, न - नहीं, अक् - जाना, कुटिल गति करना, नश्-नक्क - नाश होना)। **अभ्यारोहति** = अभ्यारोहण करता है, सर्वथा बढता-चढ़ता है (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, आ - समन्तात्, पूर्णतः, रुह - बढ़ना, ऊपर जाना, चढ़ना, बीज से उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना)। **यत्र** = जहाँ (सर्वनाम)। **शुल्को** = शुल्क (शुल्क

- कर लगाना, उत्पत्ति कर देना, उत्पन्न करना, कहना, प्रीति करना, मिलाना, छोड़ देना, मुक्त कर देना)। **न** = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **क्रियते** = किया जाता है (कृ - करना)। **अबलेन** = अबल से, बलहीन द्वारा (अ - नहीं, बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना)। **बलीयसे** = बल युक्त के लिए (बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना) **॥ 3 ॥**

569. पञ्च-अपूपम् शितिपादम्,
अविम् लोकेन सम्-मितम्।
प्र-दाता उप जीवति,
पितृणाम लोके अक्षितम् ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - **पञ्च-अपूपम्** = पाँच-पालक-रक्षक, पाँच-अपवित्र **शितिपादम्** = शिति-पाद को **अविम्** = अवि को, रक्षक को **लोकेन** = लोक से, लोक द्वारा **सम्-मितम्** = सम्मित को, सम्यक् मानित, सम्यक् प्रीति करने वाले को **प्र-दाता** = प्रदाता, प्रकृष्ट देने वाला **उप** = समीप **जीवति** = जीता है **पितृणाम** = पितरों का **लोके** = लोक में **अक्षितम्** = अक्षित को, अविनाशी को **॥ 4 ॥**

पदार्थ - **पञ्च-अपूपम्** = पाँच-पालक-रक्षक, पाँच-अपवित्र (पञ्च - पाँच, संख्या, अप = जाना, जानना, पाना, पालन करना, अ = नहीं, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)। **शितिपादम्** = शिति-पाद को (शि = तीक्ष्ण करना, पैना करना, पतला करना, सुनना, पद् - चलना, जाना, भूषित होना)। **अविम्** = अवि को, रक्षक को (अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)। **लोकेन** = लोक से, लोक द्वारा (लोक् = देखना, प्रकाशित होना, बोलना)। **सम्-मितम्** = सम्मित को, सम्यक् मानित, सम्यक् प्रीति करने वाले को (सम् - सम्यक्, भलीभाँति, मिद् - स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, नरम होना, मृदुल होना)। **प्र-दाता** = प्रदाता, प्रकृष्ट देने वाला (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना)। **उप** = समीप (उपसर्ग)। **जीवति** = जीता है (जीव् - जीवन होना, प्राणवान् होना, प्राण धारण करना, जीवन धारण करना)। **पितृणाम** = पितरों का (पा - रक्षा करना, पालन करना, पि-जाना, स्थानान्तर करना)। **लोके** = लोक में (लोक् = देखना, प्रकाशित होना, बोलना)। **अक्षितम्** = अक्षित को, अविनाशी को (अ = नहीं, क्षि - क्षय होना, नष्ट होना) **॥ 4 ॥**

570. पञ्चापूपम् शितिपादम्,
अविम् लोकेन सम्-मितम्।
प्र दाता उप जीवति,
सूर्यामासयोः अक्षितम् ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ - **पञ्चापूपम्** = पाँच-पालक-रक्षक, पाँच-अपवित्र **शितिपादम्** = शिति-पाद को **अविम्** = अवि को, रक्षक को **लोकेन** = लोक से, लोक द्वारा **सम्-मितम्** = सम्मित को, सम्यक् मानित, सम्यक् प्रीति करने वाले को **प्र-दाता** = प्रदाता, प्रकृष्ट देने वाला **उप** = समीप **जीवति** = जीता है **सूर्यामासयोः** = सूर्य और मास **अक्षितम्** = अक्षित को, अविनाशी को **॥ 5 ॥**

पदार्थ - **पञ्चापूपम्** = पाँच-पालक-रक्षक, पाँच-अपवित्र (पञ्च - पाँच, संख्या, अप = जाना, जानना, पाना, पालन करना, अ = नहीं, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)। **शितिपादम्** = शिति-पाद को (शि = तीक्ष्ण करना, पैना करना, पतला करना, सुनना, पद् - चलना, जाना, भूषित होना)। **अविम्** = अवि को, रक्षक को (अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)। **लोकेन** = लोक से, लोक द्वारा (लोक् = देखना, प्रकाशित होना, बोलना)। **सम्-मितम्** = सम्मित को, सम्यक् मानित, सम्यक् प्रीति करने वाले को (सम् - सम्यक्, भलीभाँति, मिद् - स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, नरम होना, मृदुल होना)। **प्र-दाता** = प्रदाता, प्रकृष्ट देने वाला (प्र - प्रकृष्ट,

अधिक, दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना)। **उप** = समीप (उपसर्ग)। **जीवति** = जीता है (जीव् - जीवन होना, प्राणवान् होना, प्राण धारण करना, जीवन धारण करना)। **सूर्यामासयोः** = सूर्य और मास (सुर - ऐश्वर्य होना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना, सू - उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, ऐश्वर्य होना, मस् = रूपान्तरण करना, मापन करना, मापना)। **अक्षितम्** = अक्षित को, अविनाशी को (अ = नहीं, क्षि - क्षय होना, नष्ट होना) ॥ **5** ॥

571. इरा-इव न उप दस्यति,
समुद्रः इव पयो महत्।
देवौ सवासिनौ इव,
शितिपात् न उप दस्यति ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ - **इरा-इव** = ईर्ष्या के समान **न** = नहीं, समान, उपमार्थक **उप** = समीप **दस्यति** = रक्षा करता है, विनाश करता है **समुद्रः** = समुद्र **इव** = इसमें, यहां, यह **पयो** = ज्ञान, रक्षण, गतिशील, प्रवाहमान, प्रवाहपूर्ण **महत्** = महान् **देवौ** = देव-युगल **सवासिनौ** = स-वासी युगल **इव** = इसमें, यहां, यह **शितिपात्** = शिति-पालक **न** = नहीं, समान, उपमार्थक **उप** = समीप **दस्यति** = रक्षा करता है, विनाश करता है ॥ **6** ॥

पदार्थ - **इरा-इव** = ईर्ष्या के समान (इर् - ईर्ष्या करना, मत्सर करना, इव = इसमें, यहां, यह (सर्वनाम))। **न** = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **उप** = समीप (उपसर्ग)। **दस्यति** = रक्षा करता है, विनाश करता है (दस् - रक्षण, पालन, स्थापन करना, देखना, नष्ट होना, नष्ट करना, डसना)। **समुद्रः** = समुद्र (सम् = सम्यक्, भलीभांति, उन्द - आर्द्र होना, गीला होना)। **इव** = इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **पयो** = ज्ञान, रक्षण, गतिशील, प्रवाहमान, प्रवाहपूर्ण (पय् - गति करना, रक्षण करना, ज्ञान, गमन, प्राप्ति करना, पि - जाना, जानना, पाना, पा- पालन करना, रक्षा करना)। **महत्** = महान् (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना)। **देवौ** = देव-युगल (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **सवासिनौ** = स-वासी युगल (स = सहित, वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)। **इव** = इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **शितिपात्** = शिति-पालक (शि = तीक्ष्ण करना, पैना करना, पतला करना, सुनना, पा = पालन करना, बचाना)। **न** = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **उप** = समीप (उपसर्ग)। **दस्यति** = रक्षा करता है, विनाश करता है (दस् - रक्षण, पालन, स्थापन करना, देखना, नष्ट होना, नष्ट करना, डसना) ॥ **6** ॥

572. कः इदम् कस्मा अदात्,
कामो कामाय अदात्।
कामो दाता कामः प्रतिग्रहीता,
कामः समुद्रम् आ विवेश।
कामेन त्वा प्रति गृह्णामि
काम एतत् ते ॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ :- **कः** = कौन, किसने। **इदम्** = यह, इसको **कस्मा** = किसलिए, किसके लिए **अदात्** = दिया **कामः** = कामनाएँ **कामाय** = कामनाओं के लिए **अदात्** = दिया **कामः** = कामनाएँ **दाता** = देने वाला **कामः** = कामनाएँ **प्रतिग्रहीता** = प्रतिग्रहण करने वाला **कामः** = कामनाएँ **समुद्रम्** = समुद्र को **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **विवेश** = प्रविष्ट हुआ, प्रवेश किया **कामेन** = कामना से **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में **गृह्णामि** = गृहण करता हूँ **कामः** = कामनाएँ **एतत्** = यह। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए, तुम्हारी ॥ **7** ॥

भावार्थ :- काम अथवा कामना ही सभी कर्मों के मूल में होता है। कामना ही न हो तो कोई भी किसी तरह का कर्म करेगा ही नहीं। अतः काम महत्वपूर्ण है, इसकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। काम अथवा कामना को विवेकपूर्ण होना चाहिए।

यह सर्वश्रेष्ठ मार्ग है कि काम को परमात्मा के प्रति समर्पित कर दिया जाये, हमारी कामना महान् उद्देश्य के प्रति समर्पित हों, उसी से प्रेरित हों तो निकृष्ट कामना तथा कर्मों तथा उसके दुष्परिणामों से बच सकते हैं ॥ 7 ॥

पदार्थ :- कः = कौन, किसने। **इदम्** = यह, इसको (सर्वनाम)। **कस्मा** = किसलिए, किसके लिए (सर्वनाम)। **अदात्** = दिया (दा = देना)। **कामः** = कामनाएँ (कम् - कामना करना, इच्छा करना, चाहना)। **कामाय** = कामनाओं के लिए (काम = कामनाएँ)। **अदात्** = दिया (दा = देना)। **कामः** = कामनाएँ (कम् - कामना करना, इच्छा करना, चाहना)। **दाता** = देने वाला (दा - दान करना, देना)। **कामः** = कामनाएँ (कम् - कामना करना, इच्छा करना, चाहना)। **प्रतिग्रहीता** = प्रतिग्रहण करने वाला (प्रति = सम्बन्ध में, ग्रह - ग्रहण करना, लेना, स्वीकार करना)। **कामः** = कामनाएँ (कम् - कामना करना, इच्छा करना, चाहना)। **समुद्रम्** = समुद्र को (सम् = सम्यक्, भलीभांति, सम् - न घबराना, एक समान रहना, उत् - उच्च, ऊपर, उत्कृष्ट, रा - दान करना, देना, उन्द - आर्द्र होना, गीला होना, द्रु - पिघलना, बहना, चलना, जाना, जानना, पाना, अनुसरण करना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **विवेश** = प्रविष्ट हुआ, प्रवेश किया (सम् - सम्यक्, वि - विशेष, विश् - प्रवेश करना, अन्तर्गमन करना, सूचना करना, प्रेरणा करना)। **कामेन** = कामना से (कम - चाहना, इच्छा करना)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग)। **गृह्णामि** = गृहण करता हूँ (गृह्- लेना, स्वीकार करना, निवास करना)। **कामः** = कामनाएँ (कम् - कामना करना, इच्छा करना, चाहना)। **एतत्** = यह। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए, तुम्हारी ॥ 7 ॥

573. भूमिः त्वा प्रति गृह्णातु,
अन्तरिक्षम् इदम् महत्।
मा अहम् प्राणेन मा आत्मना,
मा प्रजया प्रतिगृह्य वि राधिषि ॥ 8 ॥

मन्त्रार्थ - भूमिः = भूमि **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में **गृह्णातु** = ले, स्वीकार करे **अन्तरिक्षम्** = अन्तरिक्ष, आकाश, अन्तर्दर्शी **इदम्** = यह, इसको **महत्** = महान् **मा** = नहीं, मत **अहम्** = मैं **प्राणेन** = प्राण द्वारा **मा** = नहीं, मत **आत्मना** = आत्मा द्वारा **मा** = नहीं, मत **प्रजया** = प्रजा के साथ, प्रजा द्वारा **प्रतिगृह्य** = प्रतिग्रहण, ग्रहण के सम्बन्ध में **वि** = विशेष, विना, विलोम **राधिषि** = शुद्ध, निर्दोष निर्णय, वृद्धि, सिद्ध करतें हो ॥ 8 ॥

पदार्थ - भूमिः = भूमि (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग)। **गृह्णातु** = ले, स्वीकार करे (गृह - लेना, स्वीकार करना, निवास करना)। **अन्तरिक्षम्** = अन्तरिक्ष, आकाश, अन्तर्दर्शी (अन्तः - बीच में, इक्ष् - स्वाद लेना, ईक्ष् -देखना)। **इदम्** = यह, इसको (सर्वनाम)। **महत्** = महान् (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना)। **मा** = नहीं, मत (अव्यय)। **अहम्** = मैं (सर्वनाम)। **प्राणेन** = प्राण द्वारा (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अन- जीवन होना, चेतन होना, प्रा- पूर्ण करना, तृप्त करना)। **मा** = नहीं, मत (अव्यय)। **आत्मना** = आत्मा द्वारा (आत् = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (वैदिक उपसर्ग), आत् - होना, चिरन्तन होना, नित्य होना, चेतन होना, मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना, अत् - सतत गमन करना, निरन्तर चलना, सतत चलना, जानना, पाना)। **मा** = नहीं, मत (अव्यय)। **प्रजया** = प्रजा के साथ, प्रजा द्वारा (प्र - प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न करना)। **प्रतिगृह्य** = प्रतिग्रहण, ग्रहण के सम्बन्ध में (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, अव्यय, गृह् = ग्रहण करना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **राधिषि** = शुद्ध, निर्दोष निर्णय, वृद्धि, सिद्ध करतें हो (रध - शुद्ध होना, निर्दोष होना, पूर्ण करना, समाप्त करना, परिपक्व होना, अपकार करना, हिंसा करना, राध - बढ़ना, निर्णय करना, सिद्ध होना) ॥ 8 ॥

101. सांमनस्य सूक्त - 30

574. सहृदयम् साम्-मनस्यम्,

अवि-द्वेषम् कृणोमि वः।
अन्यो अन्यम् अभि हर्यत,
वत्सम् जातम् इव अघ्नया॥ 1॥

मन्त्रार्थ - **सहृदयम्** = सहृदय को **साम्-मनस्यम्** = साम-मन वाले को **अवि-द्वेषम्** = अवि-द्वेष को **कृणोमि** = करता हूँ **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **अन्यो** = कोई और, इतर, अन्य **अन्यम्** = अन्य, कोई और, इतर को **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा **हर्यत** = हर्यत, प्रकाश करने वाले, गतिशील, इच्छुक, चाहने वाले, हरण करने योग्य **वत्सम्** = बोलने वाले को **जातम्** = उत्पन्न हुआ, उत्पन्न हुए को **इव** = समान, की भाँति, के समान **अघ्नया** = अहिंसक, अहिंसनीय॥ 1॥

पदार्थ - **सहृदयम्** = सहृदय को (स = सहित, साथ, हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)। **साम्-मनस्यम्** = साम-मन वाले को (साम - शान्त करना, समाधान करना, सान्त्वना देना, मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **अवि-द्वेषम्** = अवि-द्वेष को (अ = नहीं, वि - विशेष, द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)। **कृणोमि** = करता हूँ (कृ = करना)। **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **अन्यो** = कोई और, इतर, अन्य (सर्वनाम)। **अन्यम्** = अन्य, कोई और, इतर को (सर्वनाम)। **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **हर्यत** = हर्यत, प्रकाश करने वाले, गतिशील, इच्छुक, चाहने वाले, हरण करने योग्य (हर्य् - चलना, जाना, इच्छा करना, चाहना, प्रकाशित होना, सूखना, हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना)। **वत्सम्** = बोलने वाले को (वद् -वच्- बोलना)। **जातम्** = उत्पन्न हुआ, उत्पन्न हुए को (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **इव** = समान, की भाँति, के समान (अव्यय)। **अघ्नया** = अहिंसक, अहिंसनीय (घ्न्, हन् = हिंसा करना)॥ 1॥

575. अनुव्रतः पितुः पुत्रो,
मात्रा भवतु सम्-मनाः।
जाया पत्ये मधुमतीम्,
वाचम् वदतु शन्तिवाम्॥ 2॥

मन्त्रार्थ - **अनुव्रतः** = अनुव्रती, अनुव्रतधारी **पितुः** = पिता का, गति, ज्ञान का **पुत्रो** = पुत्र **मात्रा** = माता द्वारा **भवतु** = हो, हो जाये **सम्-मनाः** = सम्यक् मन वाले **जाया** = उत्पन्न करने वाली **पत्ये** = ऐश्वर्यवान् के लिए, ऐश्वर्य में **मधुमतीम्** = मधुयुक्त को **वाचम्** = वाणी को **वदतु** = बोलो **शन्तिवाम्** = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी॥ 2॥

पदार्थ - **अनुव्रतः** = अनुव्रती, अनुव्रतधारी (अनु = पश्चात्, पीछे, वृत् - रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ - नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना)। **पितुः** = पिता का, गति, ज्ञान का (पा - रक्षा करना, पालन करना, पि = गति करना, जाना, जानना, पाना)। **पुत्रो** = पुत्र (पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)। **मात्रा** = माता द्वारा (मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना)। **भवतु** = हो, हो जाये (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **सम्-मनाः** = सम्यक् मन वाले (सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना)। **जाया** = उत्पन्न करने वाली (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **पत्ये** = ऐश्वर्यवान् के लिए, ऐश्वर्य में (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **मधुमतीम्** = मधुयुक्त को (मध् = मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना, मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)। **वाचम्** = वाणी को (वच - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)। **वदतु** = बोलो (वद - कहना, समझाना)। **शन्तिवाम्** = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी (शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना

देना, विचार करना, सहन करना) ॥ 2 ॥

576. मा भ्राता भ्रातरम् द्विक्षत्,
मा स्वसारम् उत स्वसा।
सम्यञ्चः सव्रता भूत्वा,
वाचम् वदत भद्रया ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - **मा** = नहीं, मत **भ्राता** = भ्राता **भ्रातरम्** = भ्राता को **द्विक्षत्** = द्वेष करे **मा** = नहीं, मत **स्वसारम्** = स्वगति, उत्तम गति, उत्तम गृह को **उत** = ही, भी, ओर **स्वसा** = स्वत्व, सृजन, ऐश्वर्य **सम्यञ्चः** = समीचीन, उपयुक्त **सव्रता** = व्रत वाले **भूत्वा** = होकर **वाचम्** = वाणी को **वदत** = बोलो **भद्रया** = भद्र, कल्याणकारी द्वारा ॥ 3 ॥

पदार्थ - **मा** = नहीं, मत (अव्यय)। **भ्राता** = भ्राता (भृ = भरण करना)। **भ्रातरम्** = भ्राता को (भृ = भरण करना)। **द्विक्षत्** = द्वेष करे (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)। **मा** = नहीं, मत (अव्यय)। **स्वसारम्** = स्वगति, उत्तम गति, उत्तम गृह को (सु = उत्तम, अच्छा, स्व - अपना, सृ = जाना, जानना, पाना, पहुंचना, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **स्वसा** = स्वत्व, सृजन, ऐश्वर्य (सू- ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, पराक्रम होना)। **सम्यञ्चः** = समीचीन, उपयुक्त (सर्वनाम्)। **सव्रता** = व्रत वाले (स = सहित, साथ, वृत् = रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ = नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना)। **भूत्वा** = होकर (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **वाचम्** = वाणी को (वच - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)। **वदत** = बोलो (वद - कहना, समझाना)। **भद्रया** = भद्र, कल्याणकारी द्वारा (भदि-भन्द् = सुख होना, शुभ कर्म करना, कल्याण होना) ॥ 3 ॥

577. येन देवा न वि-यन्ति,
नो च वि-द्विषते मिथः।
तत् कृण्मो ब्रह्म वो गृहे,
सम्-ज्ञानम् पुरुषेभ्यः ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - **येन** = जिससे, जिसके द्वारा **देवा** = देव **न** = नहीं, समान, उपमार्थक **वि-यन्ति** = विशेष उद्धार करते हैं, विशेष प्रेरणा करते हैं **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा **च** = और **वि-द्विषते** = विद्वेष करते हैं **मिथः** = मिथ, एकत्र, संयुक्त, प्रबुद्ध, ज्ञानी **तत्** = वह, उस को **कृण्मो** = करते हैं **ब्रह्म** = ब्रह्म, महान्, बड़ा, बृहत् **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **गृहे** = गृह में, घर में **सम्-ज्ञानम्** = सम्यक् ज्ञान को, सम्-ज्ञान को **पुरुषेभ्यः** = पुरुषों के लिए, परिपूर्ण, अग्रगामी, अग्रणी के लिए ॥ 4 ॥

पदार्थ - **येन** = जिससे, जिसके द्वारा (सर्वनाम)। **देवा** = देव (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **न** = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **वि-यन्ति** = विशेष उद्धार करते हैं, विशेष प्रेरणा करते हैं (वि = विशेष, यन - उद्धार करना, प्रेरणा करना)। **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **च** = और (अव्यय)। **वि-द्विषते** = विद्वेष करते हैं (वि = विशेष, द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)। **मिथः** = मिथ, एकत्र, संयुक्त, प्रबुद्ध, ज्ञानी (मिथ् - समझना, जानना, पीड़ा करना, दुःख देना, एकत्र करना, जोड़ना, जुड़ाना, संयुक्त करना)। **तत्** = वह, उस को (सर्वनाम)। **कृण्मो** = करते हैं (कृ = करना)। **ब्रह्म** = ब्रह्म, महान्, बड़ा, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **गृहे** = गृह में, घर में (गृह - लेना, स्वीकार करना, निवास करना)। **सम्-ज्ञानम्** = सम्यक् ज्ञान को, सम्-ज्ञान को (सम् = सम्यक्, भलीभांति, ज्ञा = जानना)। **पुरुषेभ्यः** = पुरुषों के लिए, परिपूर्ण, अग्रगामी, अग्रणी के लिए (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना,

मुख्य होना, अग्रसर होना, पृ - पूर्ण करना, भरना, पालन करना, रक्षा करना, तृप्त करना)॥ **4** ॥

578. ज्यायस्वन्तः चित्तिनो मा वि यौष्ट,
सम्-राधयन्तः सधुराः चरन्तः।
अन्यो अन्यस्मै वल्गु वदन्तः आ इत,
सध्रीचीनान् वः सम्-मनसः कृणोमि॥ 5॥

मन्त्रार्थ - **ज्यायस्वन्तः** = ज्याय-ध्वनि करते हुए, शब्द-वर्द्धन करते हुए **चित्तिनो** = चित्त या चेतना रखते हुए **मा** = नहीं, मत **वि** = विशेष, विना, विलोम **यौष्ट** = संयुक्त करो, मिलाओ, अलग करो **सम्-राधयन्तः** = सम्-राध करते हुए, सम्यक् शुद्ध, निर्दोष निर्णय, वृद्धि करते हुए **सधुराः** = सधुरा, समान व्याप्त करते हुए **चरन्तः** = विचरण करते हुए **अन्यो** = कोई और, इतर, अन्य **अन्यस्मै** = अन्य के लिए **वल्गु** = जाओ **वदन्तः** = बोलते हुए **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **इत** = पाये, गति, ज्ञान, प्रकाश प्राप्त किया **सध्रीचीनान्** = सध्रीचीनों को, सहस्थानों, सहगामियों को **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **सम्-मनसः** = सम्यक् मन से, सम्यक् मन द्वारा **कृणोमि** = करता हूँ॥ **5** ॥

पदार्थ - **ज्यायस्वन्तः** = ज्याय-ध्वनि करते हुए, शब्द-वर्द्धन करते हुए (ज्या - जीर्ण होना, पुराना होना, वृद्ध होना, बर्द्धित होना, बड़ा होना, स्वन - शब्द करना, ध्वनि करना, स्वन - संवारना, सजाना, अलंकृत करना, सुशोभित करना)। **चित्तिनो** = चित्त या चेतना रखते हुए (चि - चुनना, एकत्र करना, चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, सम्यक् ज्ञान होना, स्मरण करना, शंका करना, सन्देह करना)। **मा** = नहीं, मत (अव्यय)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **यौष्ट** = संयुक्त करो, मिलाओ, अलग करो (यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, बांधना, बन्धन करना, गूंथना, बन्धन होना, संयोग-वियोग करना)। **सम्-राधयन्तः** = सम्-राध करते हुए, सम्यक् शुद्ध, निर्दोष निर्णय, वृद्धि करते हुए (सम् - सम्यक्, भलीभाँति, रध - शुद्ध होना, निर्दोष होना, पूर्ण करना, समाप्त करना, परिपक्व होना, अपकार करना, हिंसा करना, राध - बढ़ना, निर्णय करना, सिद्ध होना)। **सधुराः** = सधुरा, समान व्याप्त करते हुए (स - सहित, साथ, धू - कम्पन करना, नोचना, कम्पित करना, काँपना, कम्पाना, कम्पित होना, हिलाना, क्षोभित करना, धुर् = मुख्य होना, धुरी होना, व्याप्त होना)। **चरन्तः** = विचरण करते हुए (चर - जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)। **अन्यो** = कोई और, इतर, अन्य (सर्वनाम)। **अन्यस्मै** = अन्य के लिए (अन्य = कोई और, इतर, अन्य, अस्मै = इसके लिए, हमको, हमारे लिए, सर्वनाम)। **वल्गु** = जाओ (वल्गु = जाना, फुदकते हुए चलना)। **वदन्तः** = बोलते हुए (वद - कहना, स्पष्ट कहना, बोलना, समझाना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **इत** = पाये, गति, ज्ञान, प्रकाश प्राप्त किया (इ - जाना, जानना, पाना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)। **सध्रीचीनान्** = सध्रीचीनों को, सहस्थानों, सहगामियों को (सद् = जाना, जानना, पाना, पहुँचना)। **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **सम्-मनसः** = सम्यक् मन से, सम्यक् मन द्वारा (सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना)। **कृणोमि** = करता हूँ (कृ = करना)॥ **5** ॥

579. समानी प्रपा सह वो अन्नभागः,
समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि।
सम्यञ्चो अग्निम् सपर्यत अरा,
नाभम् इव अभितः॥ 6॥

मन्त्रार्थ - **समानी** = हे समानी **प्रपा** = प्र-पालक हो **सह** = साथ, सहित **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **अन्नभागः** = अन्न-भाग **समाने** = समान में **योक्त्रे** = सम्बन्ध में, मेल करने, अलग करने में **सह** = साथ, सहित **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **युनज्मि** = जोड़ता

हूँ **सम्यञ्चो** = समीचीन, उपयुक्त **अग्निम्** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् को **सपर्यत** = सेवा करो **अरा** = अरों ने, अरों को, प्रगतिशील, गति, ज्ञान युक्त, रतिहीन, प्राप्त होने वाले, अदानी, दान न देने वाले, अहिंसक **नाभम्** = नाभि को **इव** = समान, की भाँति, के समान **अभितः** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा ॥ 6 ॥

पदार्थ - **समानी** = हे समानी (सम - सब (सर्वनाम), सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, सम = न घबराना, एक समान रहना, अन् - प्राण होना, जीवन होना, श्वास लेना)। **प्रपा** = प्र-पालक हो (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **सह** = साथ, सहित (सर्वनाम)। **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **अन्नभागः** = अन्न-भाग (अन् = प्राण होना, भज् = सेवा करना, भजन करना, भाग करना, अलग करना)। **समाने** = समान में (सम - सब (सर्वनाम), सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, सम = न घबराना, एक समान रहना, अन् - प्राण होना, जीवन होना, श्वास लेना)। **योक्त्रे** = सम्बन्ध में, मेल करने, अलग करने में (यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, बांधना, बन्धन करना, गूंथना, युज - जुड़ना, मिलाप करना, मन एकाग्र करना, एकत्र करना, योग करना, जोड़ना, मिलना, मिलाना, चित्त स्थिर रखना, बांधना एकत्र करना)। **सह** = साथ, सहित (सर्वनाम)। **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **युनज्मि** = जोड़ता हूँ (यु = बांधना, बन्धन करना, गूंथना)। **सम्यञ्चो** = समीचीन, उपयुक्त (सर्वनाम्)। **अग्निम्** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् को (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **सपर्यत** = सेवा करो (सपर - पूजा करना, सेवा करना)। **अरा** = अरों ने, अरों को, प्रगतिशील, गति, ज्ञान युक्त, रतिहीन, प्राप्त होने वाले, अदानी, दान न देने वाले, अहिंसक (अ - नहीं, अर्-ऋ - गति करना, जाना, जानना, पाना, शब्द करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, रा - दान करना, देना)। **नाभम्** = नाभि को (नभ - नष्ट होना, दुःख देना या मार डालना, हिंसा करना, मध्य में स्थित होना, केन्द्र होना)। **इव** = समान, की भाँति, के समान (अव्यय)। **अभितः** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (सर्वनाम) ॥ 6 ॥

580. सधीचीनान् वः सम्-मनसः कृणोमि,
एकश्नुष्टीन् सम्-वननेन सर्वान्।
देवाः इव अमृतम् रक्षमाणाः,
सायम्-प्रातः सौमनसो वो अस्तु ॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ - **सधीचीनान्** = सधीचीनों को, सहस्थानों, सहगामियों को **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **सम्-मनसः** = सम्यक् मन से, सम्यक् मन द्वारा **कृणोमि** = करता हूँ **एकश्नुष्टीन्** = एक-श्नुष्ट, एक-हिंसक **सम्-वननेन** = सम्-वनन द्वारा **सर्वान्** = सभी को **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने **इव** = समान, की भाँति, के समान **अमृतम्** = न मरने वाले, अमर, अमृत को **रक्षमाणाः** = रक्षा करते हुए, रक्षा करने वाले **सायम्-प्रातः** = सन्ध्या-प्रातः **सौमनसो** = अच्छे मन वाले, सद्भावना युक्त **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **अस्तु** = हो ॥ 7 ॥

पदार्थ - **सधीचीनान्** = सधीचीनों को, सहस्थानों, सहगामियों को (सद् = जाना, जानना, पाना, पहुँचना)। **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **सम्-मनसः** = सम्यक् मन से, सम्यक् मन द्वारा (सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना)। **कृणोमि** = करता हूँ (कृ = करना)। **एकश्नुष्टीन्** = एक-श्नुष्ट, एक-हिंसक (एक = एक संख्या, श्नथ् = हिंसा करना, मारना)। **सम्-वननेन** = सम्-वनन द्वारा (सम् - सम्यक्, भलीभाँति, वन - शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, आपद्ग्रस्त होना, अलग करना, मिलाना, स्मरण करना, बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, याचना करना, मांगना, दुःख देना, उद्योग-धन्धा करना)। **सर्वान्** = सभी को (सर्वनाम)। **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **इव** = समान, की भाँति, के समान (अव्यय)। **अमृतम्** = न मरने वाले, अमर, अमृत को (अ - नहीं, मृ = मरना)। **रक्षमाणाः** =

रक्षा करते हुए, रक्षा करने वाले (रक्ष = रक्षा करना, बचाना)। **सायम्-प्रातः =** सन्ध्या-प्रातः (सायम् = सन्ध्या, सायंकाल, प्रातः = प्रातः, अव्यय)। **सौमनसो =** अच्छे मन वाले, सद्भावना युक्त (सु - अच्छा, सुन्दर, मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना)। **वो =** तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **अस्तु =** हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना) **॥ 7 ॥**

102. यक्ष्मनाशन सूक्त - 31

581. वि देवा जरसा अवृतन्,
वि त्वम् अग्ने अरात्या।
वि अहम् सर्वेण पाप्मना,
वि यक्ष्मेण सम् आयुषा ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - **वि =** विशेष, विना, विलोम **देवा =** देव **जरसा =** जीर्ण, वृद्ध, वर्धित, परिपक्व से, द्वारा **अवृतन् =** वरण किया, आच्छादित किया **वि =** विशेष, विना, विलोम **त्वम् =** तुम **अग्ने =** हे अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् **अरात्या =** अदानी से, द्वारा **वि =** विशेष, विना, विलोम **अहम् =** मैं **सर्वेण =** सब द्वारा **पाप्मना =** पाप्मन् द्वारा **वि =** विशेष, विना, विलोम **यक्ष्मेण =** यक्ष्म द्वारा **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति **आयुषा =** आयु द्वारा, जीवन द्वारा **॥ 1 ॥**

पदार्थ - **वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **देवा =** देव (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **जरसा =** जीर्ण, वृद्ध, वर्धित, परिपक्व से, द्वारा (जृ - वृद्ध होना, जीर्ण होना)। **अवृतन् =** वरण किया, आच्छादित किया (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, वृ - वरण करना, आच्छादन करना, स्वीकार करना, वृत् - वर्तना, वर्तमान होना, वरण करना, सेवा करना, चमकना, बोलना, हिंसा करना)। **वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **त्वम् =** तुम (सर्वनाम)। **अग्ने =** हे अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **अरात्या =** अदानी से, द्वारा (रा = देना)। **वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **अहम् =** मैं (सर्वनाम)। **सर्वेण =** सब द्वारा (सर्वनाम)। **पाप्मना =** पाप्मन् द्वारा (पाप् - पाप करना, दुष्ट आचरण करना)। **वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **यक्ष्मेण =** यक्ष्म द्वारा (यक्ष = पूजा करना, पूजना, सत्कार करना)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **आयुषा =** आयु द्वारा, जीवन द्वारा (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अय = जाना, जानना, पाना, गति करना, आय - शब्द करना, शासन करना, यु = मिलना, अलग करना) **॥ 1 ॥**

582. वि आर्त्या पवमानो,
वि शक्रः पापकृत्यया।
वि अहम् सर्वेण पाप्मना,
वि यक्ष्मेण सम् आयुषा ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - **वि =** विशेष, विना, विलोम **आर्त्या =** सम्यक् वचन, वाणी, गति, प्राप्ति द्वारा, से **पवमानो =** पवित्र करने वाला, पालन-रक्षा करने वाला **वि =** विशेष, विना, विलोम **शक्रः =** शक्तिवान्, समर्थ **पापकृत्यया =** पाप-कृत्य से, द्वारा **वि =** विशेष, विना, विलोम **अहम् =** मैं **सर्वेण =** सब द्वारा **पाप्मना =** पाप्मन् द्वारा **वि =** विशेष, विना, विलोम **यक्ष्मेण =** यक्ष्म द्वारा **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति **आयुषा =** आयु द्वारा, जीवन द्वारा **॥ 2 ॥**

पदार्थ - **वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **आर्त्या =** सम्यक् वचन, वाणी, गति, प्राप्ति द्वारा, से (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अर् - ऋ - गति, ज्ञान, प्राप्ति करना, फैलाना, शब्द करना, ध्वनि करना, महत्व प्रदर्शन करना, हिंसा करना)। **पवमानो =** पवित्र करने वाला, पालन-रक्षा करने वाला (पु - पालन करना, रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना)। **वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **शक्रः =** शक्तिवान्, समर्थ (शक् - शक्तिमान् होना, समर्थ होना, सक्षम होना, कर सकना, सहना, सहन करना)। **पापकृत्यया =** पाप-कृत्य से, द्वारा (पाप् - पाप करना, दुष्ट आचरण करना,

कृ - करना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **अहम्** = मैं (सर्वनाम)। **सर्वेण** = सब द्वारा (सर्वनाम)। **पाप्मना** = पाप्मन् द्वारा (पाप् - पाप करना, दुष्ट आचरण करना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **यक्ष्मेण** = यक्ष्म द्वारा (यक्ष = पूजा करना, पूजना, सत्कार करना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **आयुषा** = आयु द्वारा, जीवन द्वारा (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अय = जाना, जानना, पाना, गति करना, आय - शब्द करना, शासन करना, यु = मिलना, अलग करना) **॥ 2 ॥**

583. वि ग्राम्याः पशवः आरण्यैः,
वि आपः तृष्णया असरन्।
वि अहम् सर्वेण पाप्मना,
वि यक्ष्मेण सम् आयुषा ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - **वि** = विशेष, विना, विलोम **ग्राम्याः** = ग्रामों वाले **पशवः** = पशु, बन्धन, दृष्टा, देखने वाले **आरण्यैः** = आरण्य, सम्यक् गमनीय, वचनीय **वि** = विशेष, विना, विलोम **आपः** = आप, व्याप्त, व्यापक **तृष्णया** = तृषा, प्यास, इच्छा, चाह द्वारा **असरन्** = गया, ज्ञान, गति, प्राप्ति, प्रवाह हुआ **वि** = विशेष, विना, विलोम **अहम्** = मैं **सर्वेण** = सब द्वारा **पाप्मना** = पाप्मन् द्वारा **वि** = विशेष, विना, विलोम **यक्ष्मेण** = यक्ष्म द्वारा **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **आयुषा** = आयु द्वारा, जीवन द्वारा **॥ 3 ॥**

पदार्थ - **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **ग्राम्याः** = ग्रामों वाले (ग्राम - बुलाना, बुद्धिपूर्वक कहना, एकत्र होना)। **पशवः** = पशु, बन्धन, दृष्टा, देखने वाले (पश् - देखना, पश - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना)। **आरण्यैः** = आरण्य, सम्यक् गमनीय, वचनीय (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अ - नहीं, रण् - शब्द करना, चलना, युद्ध करना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **आपः** = आप, व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)। **तृष्णया** = तृषा, प्यास, इच्छा, चाह द्वारा (तृष् = तृषा होना, प्यासा होना, इच्छा करना, चाहना)। **असरन्** = गया, ज्ञान, गति, प्राप्ति, प्रवाह हुआ (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **अहम्** = मैं (सर्वनाम)। **सर्वेण** = सब द्वारा (सर्वनाम)। **पाप्मना** = पाप्मन् द्वारा (पाप् - पाप करना, दुष्ट आचरण करना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **यक्ष्मेण** = यक्ष्म द्वारा (यक्ष = पूजा करना, पूजना, सत्कार करना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **आयुषा** = आयु द्वारा, जीवन द्वारा (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अय = जाना, जानना, पाना, गति करना, आय - शब्द करना, शासन करना, यु = मिलना, अलग करना) **॥ 3 ॥**

584. वि इमे द्यावापृथिवी इतो,
वि पन्थानो दिशम्-दिशम्।
वि अहम् सर्वेण पाप्मना,
वि यक्ष्मेण सम् आयुषा ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - **वि** = विशेष, विना, विलोम **इमे** = यह, इस, ये **द्यावापृथिवी** = अग्रगामी विस्तार, प्रकाश, द्यावा और पृथिवी **इतो** = यहां से **वि** = विशेष, विना, विलोम **पन्थानो** = पन्थान, पथ को, मार्ग **दिशम्-दिशम्** = प्रत्येक दिशा को, दिशा-दिशा को **वि** = विशेष, विना, विलोम **अहम्** = मैं **सर्वेण** = सब द्वारा **पाप्मना** = पाप्मन् द्वारा **वि** = विशेष, विना, विलोम **यक्ष्मेण** = यक्ष्म द्वारा **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **आयुषा** = आयु द्वारा, जीवन द्वारा **॥ 4 ॥**

पदार्थ - **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **इमे** = यह, इस, ये (सर्वनाम)। **द्यावापृथिवी** = अग्रगामी विस्तार, प्रकाश, द्यावा और पृथिवी (द्यु - आगे जाना, समीप जाना, द्युत् -दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, द्यै = तिरस्कार करना, पृथु = विस्तार होना, फेंकना, उड़ाना, भेजना, प्रेरणा करना)। **इतो** = यहां से (सर्वनाम्)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **पन्थानो** = पन्थान, पथ को, मार्ग (पथ, पन्थ् - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना, घूमना,

फेंकना, त्यागना)। **दिशम्-दिशम्** = प्रत्येक दिशा को, दिशा-दिशा को (दिश - दिखाना, समझाना, आज्ञा करना, कहना, बोलना, देना, पारितोषिक देना, अतिरचना करना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **अहम्** = मैं (सर्वनाम)। **सर्वेण** = सब द्वारा (सर्वनाम)। **पाप्मना** = पाप्मन् द्वारा (पाप् - पाप करना, दुष्ट आचरण करना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **यक्ष्मेण** = यक्ष्म द्वारा (यक्ष = पूजा करना, पूजना, सत्कार करना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **आयुषा** = आयु द्वारा, जीवन द्वारा (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अय = जाना, जानना, पाना, गति करना, आय - शब्द करना, शासन करना, यु = मिलना, अलग करना) **॥ 4 ॥**

585. त्वष्टा दुहित्रे वहतुम् युनक्ति,
इदम् विश्वम् भुवनम् वि याति।
वि अहम् सर्वेण पाप्मना,
वि यक्ष्मेण सम् आयुषा ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ - **त्वष्टा** = त्वष्ट, प्रकाशक, सूक्ष्म करने वाला **दुहित्रे** = दोहन में **वहतुम्** = वहन करने वाले को **युनक्ति** = नियुक्त करता है **इदम्** = यह, इसको **विश्वम्** = सबको, सब विश्व को **भुवनम्** = हो रहा, वर्तमान को **वि** = विशेष, विना, विलोम **याति** = जाता है **वि** = विशेष, विना, विलोम **अहम्** = मैं **सर्वेण** = सब द्वारा **पाप्मना** = पाप्मन् द्वारा **वि** = विशेष, विना, विलोम **यक्ष्मेण** = यक्ष्म द्वारा **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **आयुषा** = आयु द्वारा, जीवन द्वारा **॥ 5 ॥**

पदार्थ - **त्वष्टा** = त्वष्ट, प्रकाशक, सूक्ष्म करने वाला (त्वक्ष् = छीलना, रेतना, त्विष् = प्रकाशित होना, चमकना)। **दुहित्रे** = दोहन में (दुह् - दूध निकालना, दोहना, रिक्त करना, लेना, खींचना)। **वहतुम्** = वहन करने वाले को (वह् = वहन करना, ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)। **युनक्ति** = नियुक्त करता है (युङ्क् - मिलाप करना, एकत्र करना, जुड़ना, युज - जुड़ना, मिलाप करना, एकत्र करना, चित्त स्थिर करना, मन को रोकना, मन एकाग्र करना, युगि - छोड़ देना, त्याग करना, यु - बांधना, बन्धन करना, गूंथना)। **इदम्** = यह, इसको (सर्वनाम)। **विश्वम्** = सबको, सब विश्व को (विश्व - सब कुछ)। **भुवनम्** = हो रहा, वर्तमान को (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **याति** = जाता है (या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **अहम्** = मैं (सर्वनाम)। **सर्वेण** = सब द्वारा (सर्वनाम)। **पाप्मना** = पाप्मन् द्वारा (पाप् - पाप करना, दुष्ट आचरण करना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **यक्ष्मेण** = यक्ष्म द्वारा (यक्ष = पूजा करना, पूजना, सत्कार करना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **आयुषा** = आयु द्वारा, जीवन द्वारा (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अय = जाना, जानना, पाना, गति करना, आय - शब्द करना, शासन करना, यु = मिलना, अलग करना) **॥ 5 ॥**

586. अग्निः प्राणान् सम् दधाति,
चन्द्रः प्राणेन सम्-हितः।
वि अहम् सर्वेण पाप्मना,
वि यक्ष्मेण सम् आयुषा ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ - **अग्निः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् **प्राणान्** = प्राणों को **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **दधाति** = धारण करता है **चन्द्रः** = आनन्दप्रद, प्रकाशमान **प्राणेन** = प्राण द्वारा **सम्-हितः** = संहित, सम्यक् हित करने वाले **वि** = विशेष, विना, विलोम **अहम्** = मैं **सर्वेण** = सब द्वारा **पाप्मना** = पाप्मन् द्वारा **वि** = विशेष, विना, विलोम **यक्ष्मेण** = यक्ष्म द्वारा **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **आयुषा** = आयु द्वारा, जीवन द्वारा **॥ 6 ॥**

पदार्थ - **अग्निः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **प्राणान्** = प्राणों को (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अन- जीवन होना, चेतन होना, प्रा- पूर्ण करना, तृप्त करना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **दधाति** = धारण करता है (दध - धारण करना, पालन करना,

देना, अर्पण करना)। **चन्द्रः =** आनन्दप्रद, प्रकाशमान (चन्द्र - आनन्द होना, चमकना)। **प्राणेन =** प्राण द्वारा (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अन- जीवन होना, चेतन होना, प्रा- पूर्ण करना, तृप्त करना)। **सम्-हितः =** संहित, सम्यक् हित करने वाले (सम् = सम्यक्, भलीभाँति। हि = जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना)। **वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **अहम् =** मैं (सर्वनाम)। **सर्वेण =** सब द्वारा (सर्वनाम)। **पाप्मना =** पाप्मन् द्वारा (पाप् - पाप करना, दुष्ट आचरण करना)। **वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **यक्ष्मेण =** यक्ष्म द्वारा (यक्ष = पूजा करना, पूजना, सत्कार करना)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **आयुषा =** आयु द्वारा, जीवन द्वारा (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अय = जाना, जानना, पाना, गति करना, आय - शब्द करना, शासन करना, यु = मिलना, अलग करना) **॥ 6 ॥**

587. प्राणेन विश्वतो-वीर्यम्,
देवाः सूर्यम् सम् ऐरयन्।
वि अहम् सर्वेण पाप्मना,
वि यक्ष्मेण सम् आयुषा ॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ - प्राणेन = प्राण द्वारा **विश्वतो-वीर्यम् =** सबसे पराक्रमी को, विश्ववीर को **देवाः =** विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने **सूर्यम् =** सूर्य, उत्पन्न करने वाला, उत्पन्नकर्ता, ऐश्वर्यवान् को **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति **ऐरयन् =** प्रगति, विद्या, प्राप्ति, प्रेरणा करते हुए **वि =** विशेष, विना, विलोम **अहम् =** मैं **सर्वेण =** सब द्वारा **पाप्मना =** पाप्मन् द्वारा **वि =** विशेष, विना, विलोम **यक्ष्मेण =** यक्ष्म द्वारा **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति **आयुषा =** आयु द्वारा, जीवन द्वारा **॥ 7 ॥**

पदार्थ - प्राणेन = प्राण द्वारा (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अन- जीवन होना, चेतन होना, प्रा- पूर्ण करना, तृप्त करना)। **विश्वतो-वीर्यम् =** सबसे पराक्रमी को, विश्ववीर को (विश्वतः = सबसे, विश्व से, सर्वनाम, वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)। **देवाः =** विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **सूर्यम् =** सूर्य, उत्पन्न करने वाला, उत्पन्नकर्ता, ऐश्वर्यवान् को (सुर - ऐश्वर्य होना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना, सू - उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, ऐश्वर्य होना)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **ऐरयन् =** प्रगति, विद्या, प्राप्ति, प्रेरणा करते हुए (इर् - ईर्ष्या करना, ऋ-इर्य - जाना, चलना, फैलाना, ईर - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना)। **वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **अहम् =** मैं (सर्वनाम)। **सर्वेण =** सब द्वारा (सर्वनाम)। **पाप्मना =** पाप्मन् द्वारा (पाप् - पाप करना, दुष्ट आचरण करना)। **वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **यक्ष्मेण =** यक्ष्म द्वारा (यक्ष = पूजा करना, पूजना, सत्कार करना)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **आयुषा =** आयु द्वारा, जीवन द्वारा (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अय = जाना, जानना, पाना, गति करना, आय - शब्द करना, शासन करना, यु = मिलना, अलग करना) **॥ 7 ॥**

588. आयुष्मताम् आयुष्कृताम्,
प्राणेन जीव मा मृथाः।
वि अहम् सर्वेण पाप्मना,
वि यक्ष्मेण सम् आयुषा ॥ 8 ॥

मन्त्रार्थ - आयुष्मताम् = आयुष्मान को **आयुष्कृताम् =** आयुष्कृत को **प्राणेन =** प्राण द्वारा **जीव =** जीव **मा =** नहीं, मत **मृथाः =** देहत्याग करता हूँ **वि =** विशेष, विना, विलोम **अहम् =** मैं **सर्वेण =** सब द्वारा **पाप्मना =** पाप्मन् द्वारा **वि =** विशेष, विना, विलोम **यक्ष्मेण =** यक्ष्म द्वारा **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति **आयुषा =** आयु द्वारा, जीवन द्वारा **॥ 8 ॥**

पदार्थ - आयुष्मताम् = आयुष्मान को (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अय = जाना, जानना, पाना, गति करना, आय - शब्द करना, शासन करना, यु = मिलना, अलग करना)। **आयुष्कृताम् =** आयुष्कृत को (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अय = जाना, जानना, पाना, गति करना, आय - शब्द करना, शासन करना, यु = मिलना, अलग करना, कृ =

करना)। **प्राणेन =** प्राण द्वारा (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अन- जीवन होना, चेतन होना, प्रा- पूर्ण करना, तृप्त करना)। **जीव =** जीव (जीव् - जीवन होना, प्राणवान् होना, प्राण धारण करना, जीवन धारण करना)। **मा =** नहीं, मत (अव्यय)। **मृथाः =** देहत्याग करता हूँ (मृ = मरना, देहत्याग करना)। **वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **अहम् =** मैं (सर्वनाम)। **सर्वेण =** सब द्वारा (सर्वनाम)। **पाप्मना =** पाप्मन् द्वारा (पाप् - पाप करना, दुष्ट आचरण करना)। **वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **यक्ष्मेण =** यक्ष्म द्वारा (यक्ष = पूजा करना, पूजना, सत्कार करना)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **आयुषा =** आयु द्वारा, जीवन द्वारा (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अय = जाना, जानना, पाना, गति करना, आय - शब्द करना, शासन करना, यु = मिलना, अलग करना) **॥ 8 ॥**

589. प्राणेन प्राणताम् प्र अन,
इह एव भव मा मृथाः।
वि अहम् सर्वेण पाप्मना,
वि यक्ष्मेण सम् आयुषा ॥ 9 ॥

मन्त्रार्थ - **प्राणेन =** प्राण द्वारा **प्राणताम् =** प्राणियों को **प्र =** प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक **अन =** हे प्राण **इह =** इसमें, यहां, यह **एव =** ही **भव =** हो **मा =** नहीं, मत **मृथाः =** देहत्याग करता हूँ **वि =** विशेष, विना, विलोम **अहम् =** मैं **सर्वेण =** सब द्वारा **पाप्मना =** पाप्मन् द्वारा **वि =** विशेष, विना, विलोम **यक्ष्मेण =** यक्ष्म द्वारा **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति **आयुषा =** आयु द्वारा, जीवन द्वारा **॥ 9 ॥**

पदार्थ - **प्राणेन =** प्राण द्वारा (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अन- जीवन होना, चेतन होना, प्रा- पूर्ण करना, तृप्त करना)। **प्राणताम् =** प्राणियों को (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अन- जीवन होना, चेतन होना, प्रा- पूर्ण करना, तृप्त करना)। **प्र =** प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **अन =** हे प्राण (अन - प्राण होना, जीवन होना, समर्थ होना, जाना, जानना, पाना)। **इह =** इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **एव =** ही (अव्यय)। **भव =** हो (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **मा =** नहीं, मत (अव्यय)। **मृथाः =** देहत्याग करता हूँ (मृ = मरना, देहत्याग करना)। **वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **अहम् =** मैं (सर्वनाम)। **सर्वेण =** सब द्वारा (सर्वनाम)। **पाप्मना =** पाप्मन् द्वारा (पाप् - पाप करना, दुष्ट आचरण करना)। **वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **यक्ष्मेण =** यक्ष्म द्वारा (यक्ष = पूजा करना, पूजना, सत्कार करना)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **आयुषा =** आयु द्वारा, जीवन द्वारा (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अय = जाना, जानना, पाना, गति करना, आय - शब्द करना, शासन करना, यु = मिलना, अलग करना) **॥ 9 ॥**

590. उत् आयुषा सम् आयुषा,
उत् ओषधीनाम् रसेन।
वि अहम् सर्वेण पाप्मना,
वि यक्ष्मेण सम् आयुषा ॥ 10 ॥

मन्त्रार्थ - **उत् =** भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च **आयुषा =** आयु द्वारा, जीवन द्वारा **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति **आयुषा =** आयु द्वारा, जीवन द्वारा **उत् =** भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च **ओषधीनाम् =** ओषधियों का **रसेन =** रस द्वारा **वि =** विशेष, विना, विलोम **अहम् =** मैं **सर्वेण =** सब द्वारा **पाप्मना =** पाप्मन् द्वारा **वि =** विशेष, विना, विलोम **यक्ष्मेण =** यक्ष्म द्वारा **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति **आयुषा =** आयु द्वारा, जीवन द्वारा **॥ 10 ॥**

पदार्थ - **उत् =** भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)। **आयुषा =** आयु द्वारा, जीवन द्वारा (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अय = जाना, जानना, पाना, गति करना, आय - शब्द करना, शासन करना, यु = मिलना, अलग करना)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **आयुषा =** आयु द्वारा, जीवन द्वारा (आ - सम्यक्,

समन्तात्, पूर्णतः, अय = जाना, जानना, पाना, गति करना, आय - शब्द करना, शासन करना, यु = मिलना, अलग करना)। **उत्** = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)। **ओषधीनाम्** = ओषधियों का (उषध्-ओषध् = चिकित्सा करना, रोग मुक्त करना)। **रसेन** = रस द्वारा (रस् = शब्द करना, स्वाद लेना, प्यार करना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **अहम्** = मैं (सर्वनाम)। **सर्वेण** = सब द्वारा (सर्वनाम)। **पाप्मना** = पाप्मन् द्वारा (पाप् - पाप करना, दुष्ट आचरण करना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **यक्ष्मेण** = यक्ष्म द्वारा (यक्ष = पूजा करना, पूजना, सत्कार करना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **आयुषा** = आयु द्वारा, जीवन द्वारा (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अय = जाना, जानना, पाना, गति करना, आय - शब्द करना, शासन करना, यु = मिलना, अलग करना) **॥ 10 ॥**

591. आ पर्जन्यस्य वृष्ट्या,
उत् अस्थाम् अमृता वयम्।
वि अहम् सर्वेण पाप्मना,
वि यक्ष्मेण सम् आयुषा ॥ 11 ॥

मन्त्रार्थ - **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **पर्जन्यस्य** = पोषण उत्पन्न करने वाले, पर्जन्य का **वृष्ट्या** = वर्षा, सिञ्चन, पराक्रम **उत्** = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च **अस्थाम्** = स्थित हैं **अमृता** = अमृता, मृत्युहीन **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग **वि** = विशेष, विना, विलोम **अहम्** = मैं **सर्वेण** = सब द्वारा **पाप्मना** = पाप्मन् द्वारा **वि** = विशेष, विना, विलोम **यक्ष्मेण** = यक्ष्म द्वारा **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **आयुषा** = आयु द्वारा, जीवन द्वारा **॥ 11 ॥**

पदार्थ - **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **पर्जन्यस्य** = पोषण उत्पन्न करने वाले, पर्जन्य का (पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना, तृप्त करना, जन् = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **वृष्ट्या** = वर्षा, सिञ्चन, पराक्रम (वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना, दुःख देना, पीड़ित करना)। **उत्** = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)। **अस्थाम्** = स्थित हैं (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, स्था- स्थित होना, ठहरना)। **अमृता** = अमृता, मृत्युहीन (अ - नहीं, मृ - मरना)। **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **अहम्** = मैं (सर्वनाम)। **सर्वेण** = सब द्वारा (सर्वनाम)। **पाप्मना** = पाप्मन् द्वारा (पाप् - पाप करना, दुष्ट आचरण करना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **यक्ष्मेण** = यक्ष्म द्वारा (यक्ष = पूजा करना, पूजना, सत्कार करना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **आयुषा** = आयु द्वारा, जीवन द्वारा (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अय = जाना, जानना, पाना, गति करना, आय - शब्द करना, शासन करना, यु = मिलना, अलग करना) **॥ 11 ॥**

इति तृतीयम् काण्डम्

ॐ

चतुर्थम् काण्डम्

19. अनुवाक - 1

103. ब्रह्मविद्या सूक्त - 1

592. ब्रह्म जज्ञानम् प्रथमम् पुरस्तात्,
वि सीमतः सुरुचो वेनः आवः।
स बुध्न्याः उपमाः अस्य विष्ठाः,
सतः च योनिम् असतः च वि वः॥ 1॥

मन्त्रार्थ - **ब्रह्म** = ब्रह्म, महान्, बड़ा, विराट, बृहत् **जज्ञानम्** = उत्पन्न किया, जाना **प्रथमम्** = प्रथम को **पुरस्तात्** = पहले **वि** = विशेष, विना, विलोम **सीमतः** = सीमत **सुरुचो** = सुन्दर तेजस्वी **वेनः** = विद्वान्, कान्तिमान् **आवः** = रक्षक, रक्षा करो, पालन करो **स** = वह, उसने **बुध्न्या** = बोधमय, बोधयुक्त **उपमा** = उपमान, निकट मान-मापन **अस्य** = इसका **विष्ठाः** = स्थित हो **सतः** = सत्य **च** = और **योनिम्** = योनि को **असतः** = प्रकाशक से, हैं **च** = और **विवः** = वरण किया॥ 1॥

भावार्थ - विद्वान् सबसे पहले परमात्मा को जानने का प्रयास करते हैं। विशेष सीमा से उत्तम रुचि वाले वेन या विद्वान् रक्षा करते हैं। बुद्धिमान् इसके विशेष स्थित होने से उपमा देते हैं। सत् और असत् का योनि अर्थात् मिलने, अलग होने का कारण या स्थान का वरण किया॥ 1॥

पदार्थ - **ब्रह्म** = ब्रह्म, महान्, बड़ा, विराट, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **जज्ञानम्** = उत्पन्न किया, जाना (जन- उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, ज्ञा - जानना)। **प्रथमम्** = प्रथम को (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना, जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना)। पुरस्तात् = पहले (अव्यय)। वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **सीमतः** = सीमा से (सि = बाँधना, मर्यादा होना, सीमा होना)। **सुरुचो** = सुन्दर तेजस्वी (सु - अच्छा, सुन्दर, रुच् - रुचना, प्रीति होना, प्रसन्न होना, उत्साह होना, प्रकाशित होना)। **वेनः** = विद्वान्, कान्तिमान् (वेन - मिलाना, अलग करना, रक्षा करना, जाना, समझना, जानना, स्मरण करना, सारासार विचार करना, तारतम्य देखना, वाद्य यन्त्र बजाना, बाजा हाथ में लेना)। **आवः** = रक्षक, रक्षा करो, पालन करो (अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)। **स** = वह, उसने। **बुध्न्याः** = बोधमय, बोधयुक्त (बुध् - बोध होना, बोध करना, जानना, समझना)। **उपमाः** = उपमान, निकट मान-मापन (उप - सपीप, नम् - नमन करना, नमना, नत होना)। **अस्य** = इसका (सर्वनाम)। **विष्ठाः** = स्थित हो (वि - विशेष, स्था - स्थित होना, ठहरना)। **सतः** = सत्य (सत् = होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना)। **च** = और। **योनिम्** = योनि को (यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, बांधना, बन्धन करना, गूंथना, बन्धन होना, संयोग-वियोग करना)। **असतः** = प्रकाशक से, हैं (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **च** = और। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **वः** = तुम लोग, तुम्हारा, तुमको, तुम सबका, तुम सबको, तुम सबके लिए॥ 1॥

593. इयम् पित्र्या राष्ट्री एतु अग्रे,
प्रथमाय जनुषे भुवनेष्ठाः।
तस्मै एतम् सुरुचम् ह्वारम् अह्यम्,
घर्मम् श्रीणन्तु प्रथमाय धास्यवे॥ 2॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **इयम्** = यह, इसको (सर्वनाम)। **पित्र्या** = पितृ द्वारा, पितृ से (पा = रक्षा करना, पालन करना, पि = जाना, जानना, पाना)। **राष्ट्री** = राष्ट्री (रास = शब्द करना, राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **एतु** = प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना, इच्छा करना, प्रेरणा करना, ए - जाना, फैलना, व्यापना, गर्भवती होना, इच्छा करना, चाहना, खाना, उड़ाना, फेंकना, भेजना, प्रेरणा करना)। **अग्रे** = अग्र, आगे, पहले (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **प्रथमाय** = प्रथम के लिए, विस्तार करने वाले के लिए (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)। **जनुषे** = जनों द्वारा, लोगों द्वारा, जन्म द्वारा (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **भुवनेष्ठाः** = भुवन में स्थित होने वाला, वर्तमान में स्थित होने वाला (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना, स्था - स्थित होना, ठहरना)। **तस्मै** = उसके लिए (सर्वनाम)। **एतम्** = यह, इसको (सर्वनाम)। **सुरुचम्** = सुरुच को (सु - उत्तम, अच्छा, रुच् - रुचना, प्रीति होना, प्रसन्न होना, उत्साह होना, प्रकाशित होना)। **ह्वारम्** = कुटिल को (ह्वृ = वक्र होना, कुटिल होना, वरण करना, आच्छादन करना, निवास करना)। **अह्यम्** = प्राप्त करता है (अह् = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना, जाना, हिंसा करना)। **घर्मम्** = घर्म को, अभिसिंचित तथा प्रकाशित करने वाले को (घृ = सींचना, चमकना, प्रकाश होना)। **श्रीणन्तु** = पकायें, सेवा करें, आश्रित करें (श्री = सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना, श्री-श्रीण = पकाना, रांधना)। **प्रथमाय** = प्रथम के लिए, विस्तार करने वाले के लिए (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)। **धास्यवे** = धारण योग्य में, पोषण योग्य में (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना) **॥ 2 ॥**

594. प्र यो जज्ञे विद्वान् अस्य बन्धुः,
विश्वा देवानाम् जनिमा विवक्ति।
ब्रह्म ब्रह्मणः उत् जभार मध्यात्,
नीचैः उच्चैः स्वधाः अभि प्र तस्थौ ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **जज्ञे** = उत्पन्न हुए (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **विद्वान्** = विद्वान्, जानने वाला, ज्ञानी (विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना, विद्यमान होना, विचार करना, जीवन होना)। **अस्य** = इसका (सर्वनाम)। **बन्धुः** = बन्धु, बन्धन करने वाला, बाँधने वाला (बध्-बन्ध् = बाँधना, बद्ध करना, हिंसा करना, मारना, वध करना, घृणा करना)। **विश्वा** = विश्व, सभी, सब (सर्वनाम)। **देवानाम्** = देवों का (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **जनिमा** = उत्पन्न, उत्पत्ति (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **विवक्ति** = विशेष उक्ति, कथन, बोलता है, कहता है (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग), वच् - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)। **ब्रह्म** = ब्रह्म, महान्, बड़ा, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **ब्रह्मणः** = महान्, बड़ा, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **उत्** = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)। **जभार** = परिहास किया, विनोद किया, भरण किया (जभ् - परिहास करना, विनोद करना, मैथुन करना, भृ - भरण करना)। **मध्यात्** = मध्य से (सर्वनाम)। **नीचैः** = नीचे (नीच् - निम्न होना, चाकरी करना)। **उच्चैः** = ऊँचे (उच्च - ऊँचा, सर्वनाम)। **स्वधाः** = स्वधा, स्वयम्, धारण करने वाले, आत्मनिर्भर (स्व = निज, अपना, धा = धारण करना, पहनना, पोषण करना, रक्षण करना, धि - धारण करना, युक्त होना)। **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **तस्थौ** = स्थित किया है, स्थित हैं (तस - स्थापित होना, स्थापना करना, फेंकना, उड़ा देना, भेजना, खोदना, कुम्हलाना, स्था-तिष्ठ - स्थित होना, ठहरना) **॥ 3 ॥**

595. स हि दिवः स पृथिव्याः ऋतस्था,
मही क्षेमम् रोदसी अस्कभायत्।
महान् मही अस्कभायत् वि जातो,
द्याम् सद्म पार्थिवम् च रजः॥ 4॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **स** = सहित, साथ (उपसर्ग)। **हि** = ही, निश्चय (अव्यय)। **दिवः** = दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)। **स** = वह, उसने (सर्वनाम)। **पृथिव्याः** = पृथ्वी योग्य, पृथिवी द्वारा (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)। **ऋतस्था** = ऋत-स्थित है (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना, पत् = जाना, नीचे जाना, उड़ना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना, स्था - स्थित होना, ठहरना)। **मही** = मही, महिमावान्, महान् (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना)। **क्षेमम्** = क्षेम को (क्षि - निवास करना, जाना, जानना, पाना, क्षेम् = कल्याण होना)। **रोदसी** = प्रकाश देने वाले, वाणी, गति की सामर्थ्य से युक्त, करुणाशील, रोने वाले, रुलाने वाले (रुद् - रोना, रुलाना, करुण होना, रु - शब्द करना, जाना, चलना, जानना, पाना)। **अस्कभायत्** = स्थिर किया (स्कभि-स्कम्भ् - रोकना)। **महान्** = बड़े, पूज्य, महान् (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना)। **मही** = मही, महिमावान्, महान् (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना)। **अस्कभायत्** = स्थिर किया (स्कभि-स्कम्भ् - रोकना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **जातो** = उत्पन्न हुआ (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **द्याम्** = द्यु को, सबसे बढ़कर, विशिष्ट, प्रकाशमय (द्यु - आगे जाना, समीप जाना, द्युत् -दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, द्यै = तिरस्कार करना)। **सद्म** = आसन, उपवेशन, सदन, स्थान (सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)। **पार्थिवम्** = पार्थिव को, पृथ्वी को (पृथ - फेंकना, उड़ाना, प्रेरणा करना, भेजना, व्याप्त होना)। **च** = और (अव्यय)। **रजः** = रज (रज - रज होना, धूल होना, सूक्ष्म होना, रंग देना, रंगना, लीन होना)॥ **4**॥

596. स बुध्न्यात् आष्ट्र जनुषो अभि अग्रम्,
बृहस्पतिः देवता तस्य सम्राट्।
अहः यत् शुक्रम् ज्योतिषो जनिष्ट अथ,
द्युमन्तो वि वसन्तु विप्राः॥ 5॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **स** = वह, उसने (सर्वनाम)। **बुध्न्यात्** = बोधमय से, बोधयुक्त से (बुध् - बोध होना, बोध करना, जानना, समझना)। **आष्ट्र** = व्यापक हो जाते हैं (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना)। **जनुषो** = जन, लोग, उत्पन्न कर्ता (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **अग्रम्** = अग्र, आगे (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **बृहस्पतिः** = बृहस्पति, महान्, बृहत् का स्वामी (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना, पत् - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना, नीचे जाना, गिरना, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **देवता** = देवत्व, दिव्यता (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **तस्य** = उसका (सर्वनाम)। **सम्राट्** = सम्राट्, सम्यक् प्रकाशमान, सम्यक् बोलने वाला, सम्भाषण करने वाला (सम् - सम्यक्, भलीभाँति, रट् = बोलना, सम्भाषण करना, राज् = शोभित होना, प्रकाशित होना, चमकना)। **अहः** = व्यापक (अह् = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण

करना, समर्पण करना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **शुक्रम्** = शुक्र को, शुद्ध, पवित्र, पावन, पवित्रकर्ता को (शुक्-शुच्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)। **ज्योतिषो** = ज्योति का (ज्युत - कान्तिमान् होना, चमकना, प्रकाशित होना)। **जनिष्ट** = उत्पन्न हो (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **अथ** = अब, इसके अनन्तर (अव्यय)। **द्युमन्तो** = द्युमान्, आगे जाने वाले, अग्रगामी, तेजस्वी (द्युत् = प्रकाशित होना, द्यु = अभिगमन करना, आक्रमण करना, आगे जाना, समीप जाना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **वसन्तु** = वास करें (वस् = वसना, रहना, निवास करना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, दया-प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)। **विप्राः** = विशेष पूर्ण करने वाले (वि - विशेष, प्रा - पूर्ण करना) ॥ 5 ॥

597. नूनम् तत् अस्य काव्यो हिनोति,
महो देवस्य पूर्व्यस्य धाम।
एष जज्ञे बहुभिः साकम् इत्था,
पूर्वे अर्धे विषिते ससन् नु ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **नूनम्** = निश्चय ही (अव्यय)। **तत्** = वह, उस को (सर्वनाम)। **अस्य** = इसका (सर्वनाम)। **काव्यो** = काव्य (कु, कव् = शब्द करना, कविता करना, वर्णन करना, चित्र खींचना)। **हिनोति** = प्रेरणा देता है, गतिशीलता देता है, बढाता है, वृद्धि करता है (हि - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना)। **महो** = बड़े, महिमावान्, महान् (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना)। **देवस्य** = देव का (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **पूर्व्यस्य** = पूर्व का (पूर्व = पूर्व, पहले, सर्वनाम, पूर्व - पूर्ण करना, भरना, निवास करना, आश्चर्य करना, आमन्त्रण करना)। **धाम** = धारण करने योग्य (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)। **एष** = यह (सर्वनाम)। **जज्ञे** = उत्पन्न हुए (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **बहुभिः** = बहुतों द्वारा (सर्वनाम)। **साकम्** = साथ (अव्यय)। **इत्था** = इस प्रकार (अव्यय)। **पूर्वे** = पूर्व में, पूर्ण में (पूर्व = पूर्व, पहले, सर्वनाम, पूर्व - पूर्ण करना, भरना, निवास करना, आश्चर्य करना, आमन्त्रण करना)। **अर्धे** = आधे में, अर्ध में (अर्ध - आधा)। **विषिते** = विबन्धन में (वि - विशेष, सि - बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना)। **ससन्** = उत्पन्न होते हैं (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)। **नु** = निश्चय ही, शीघ्र ही (अव्यय) ॥ 6 ॥

598. यो अथर्वाणम् पितरम् देवबन्धुम्,
बृहस्पतिम् नमसा अव च गच्छात्।
त्वम् विश्वेषाम् जनिता यथा असः,
कविः देवो न दभायत् स्वधावान् ॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **यो** = जो (सर्वनाम)। **अथर्वाणम्** = अविचलित-अहिंसक! (अ - नहीं (उपसर्ग), थर्व - अस्थिर होना, हिंसा करना)। **पितरम्** = पितर को, पिता को, ज्ञानी को, पालन करने वाले को (पि - जाना, जानना, पाना, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **देवबन्धुम्** = देवबन्धु को (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना, बध्-बन्ध् = बाँधना, बद्ध करना, हिंसा करना, मारना, वध करना, घृणा करना)। **बृहस्पतिम्** = बृहस्पति को (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना, पत् - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना, नीचे जाना, गिरना, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **नमसा** = नमन द्वारा (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **अव** = नीचे, दूर, प्राप्त (अव्यय)। **च** = और (अव्यय)। **गच्छात्** = जानें (गम्-गच्छ् = जाना)। **त्वम्** = तुम (सर्वनाम)। **विश्वेषाम्** = सभी का, विश्व का (सर्वनाम)। **जनिता** = उत्पन्न करने वाला (जन-

उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार (अव्यय)। **असः** = हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **कविः** = ज्ञानी, कवि (कु - शब्द करना, कविता करना, वर्णन करना, चित्र खींचना)। **देवो** = देव (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **न** = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **दभायत्** = निन्दा करते हैं, हिंसा करते हैं (दभ - निन्दा करना, हिंसा करना)। **स्वधावान्** = स्वधा युक्त (स्व = निज, अपना, धा = धारण करना, पहनना, पोषण करना, रक्षण करना, धि - पास रखना या होना, युक्त होना) ॥ 7 ॥

104. सूक्त - 2

599. यः आत्मदा बलदा यस्य विश्व,
उपासते प्रशिषम् यस्य देवाः।
यः अस्य ईशे द्विपदः यः चतुष्पदः,
कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - **यः** = जो **आत्मदा** = आत्मदाता **बलदा** = बल देने वाला **यस्य** = जिसका **विश्व** = सभी। **उपासते** = उपासना करते है **प्रशिषम्** = प्रशिष को, प्रयोजन को, अनुशासन को **यस्य** = जिसका **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने **यः** = जो **अस्य** = इसका **ईशे** = अधिकार किया, शासन किया, शासन करता है **द्विपदः** = द्विपद वाला **यः** = जो **चतुष्पदः** = चार पैर वाले **कस्मै** = किसलिए, किसके लिए **देवाय** = देव के लिए **हविषा** = हविष से, दान व आदान-प्रदान द्वारा **विधेम** = विधान करें, विशेष रूप से धारण करें ॥ 1 ॥

पदार्थ - **यः** = जो (सर्वनाम)। **आत्मदा** = आत्मदाता (आत् - होना, चिरन्तन होना, नित्य होना, चेतन होना, अत् - सतत गमन करना, निरन्तर चलना, सतत चलना, जानना, पाना)। **बलदा** = बल देने वाला (बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना, दा - देना)। **यस्य** = जिसका (सर्वनाम)। **विश्व** = सभी। **उपासते** = उपासना करते है (उप - समीप, निकट, अस् - होना, आस् - बैठना, उपस्थित होना, विद्यमान होना, जीवित रहना, होना)। **प्रशिषम्** = प्रशिष को, प्रयोजन को, अनुशासन को (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, शिष् - प्रयोजन करना, शेष रखना, अनुशासन करना, आशीर्वाद देना, हिंसा करना)। **यस्य** = जिसका (सर्वनाम)। **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **यः** = जो (सर्वनाम)। **अस्य** = इसका (सर्वनाम)। **ईशे** = अधिकार किया, शासन किया, शासन करता है (ईश - अधिकार होना)। **द्विपदः** = द्विपद वाला (द्वि = दो, संख्या, पद - स्थानान्तर करना, चलना, जाना)। **यः** = जो (सर्वनाम)। **चतुष्पदः** = चार पैर वाले (चतुः - चार, संख्या, पद - चलना, स्थानान्तर करना)। **कस्मै** = किसलिए, किसके लिए (सर्वनाम)। **देवाय** = देव के लिए (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **हविषा** = हविष से, दान व आदान-प्रदान द्वारा (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **विधेम** = विधान करें, विशेष रूप से धारण करें (वि - विशेष, धा - धारण करना) ॥ 1 ॥

600. यः प्राणतो निमिषतो महित्वा,
एकः राजा जगतो बभूव।
यस्य छाया अमृतम् यस्य मृत्युः,
कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - **यः** = जो **प्राणतो** = प्राण से **निमिषतो** = निमिष से, सिञ्चन, प्रोक्षण से **महित्वा** = महित्व द्वारा, महत् होकर **एकः** = एक **राजा** = राजा **जगतो** = जगत् का, संसार का, गतिशील का **बभूव** = हो गये **यस्य** = जिसका **छाया** = छाया **अमृतम्** = न मरने वाला, अमर **यस्य** = जिसका **मृत्युः** = मृत्यु **कस्मै** = किसलिए, किसके लिए **देवाय** = देव

के लिए **हविषा** = हविष से, दान व आदान-प्रदान द्वारा **विधेम** = विधान करें, विशेष रूप से धारण करें ॥ 2 ॥

पदार्थ - **यः** = जो (सर्वनाम)। **प्राणतो** = प्राण से (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अन- जीवन होना, चेतन होना, प्रा- पूर्ण करना, तृप्त करना)। **निमिषतो** = निमिष से, सिञ्चन, प्रोक्षण से (नि- निश्चित, नितराम्, निरन्तर, मिष् = सिञ्चन करना, प्रोक्षण करना, घर्षण करना, स्पर्धा करना, विवाद करना, कलह करना, नि-मिष् - पलक झपकाना, आँख बन्द करना)। **महित्वा** = महित्व द्वारा, महत् होकर (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना)। **एकः** = एक (संख्या)। **राजा** = राजा (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **जगतो** = जगत् का, संसार का, गतिशील का (जग् = गति करना, लेना, घर्षण करना)। **बभूव** = हो गये (भू = होना, प्राप्त होना)। **यस्य** = जिसका (सर्वनाम)। **छाया** = छाया (छद् - आच्छादित करना, ढकना, हटाना, छिपाना, बचाना, बलवान् होना या करना, छा-छो - छाया करना, कतरना, काटना)। **अमृतम्** = न मरने वाला, अमर (अ - नहीं, मृ = मरना)। **यस्य** = जिसका (सर्वनाम)। **मृत्युः** = मृत्यु (मृ = मरना, देहत्याग करना)। **कस्मै** = किसलिए, किसके लिए (सर्वनाम)। **देवाय** = देव के लिए (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **हविषा** = हविष से, दान व आदान-प्रदान द्वारा (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **विधेम** = विधान करें, विशेष रूप से धारण करें (वि - विशेष, धा - धारण करना) ॥ 2 ॥

601. यम् क्रन्दसी अवतः चस्कभाने, भियसाने रोदसी अह्वयेथाम्।
यस्य असौ पन्था रजसो विमानः, कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - **यम्** = जिस **क्रन्दसी** = क्रन्दनयुक्त **अवतः** = रक्षा करो **चस्कभाने** = हे स्तम्भित करने वाले, हे स्थापित करने वाले **भियसाने** = हे भयभीत **रोदसी** = प्रकाश देने वाले, वाणी, गति की सामर्थ्य से युक्त, करुणाशील, रोने वाले, रुलाने वाले **अह्वयेथाम्** = व्यापक हुए, आह्वान किया **यस्य** = मन से **असौ** = यह **पन्था** = मार्ग **रजसो** = रजस् का **विमानः** = विशेष मान करने वाला **कस्मै** = किस **देवाय** = देव के लिये **हविषा** = हविष से **विधेम** = विधान करें, विशेष रूप से धारण करें ॥ 3 ॥

भावार्थ - रेजमाने पद का भावार्थ विद्वानों ने विविध प्रकार से किया है। रेज धातु का अर्थ प्रकाश करना तथा रि धातु का अर्थ गति करना होता है। अतः इसके दो अर्थ प्रकाशमान तथा गतिमान लेना उचित है। अधिसूर का भाव है सूर्य का भी कारण रूप महासूर्य, जो सूयों का भी जन्मदाता है ॥ 3 ॥

पदार्थ - **यम्** = जिसको। **क्रन्दसी** = क्रन्दनयुक्त (क्रन्द् - रोना, पुकारना, दुःख होना)। **अवतः** = रक्षा करो (अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)। **चस्कभाने** = हे स्तम्भित करने वाले, हे स्थापित करने वाले (स्कम्भ - हरकत करना, रोकना, प्रतिबन्ध करना, मूर्ख होना, पागल होना, मतिमन्त होना, स्कम्भ - स्थापित करना, स्थित करना, चष् - खाना, बोलना, देखना, चष्क् - व्यथित होना)। **भियसाने** = हे भयभीत (भी - भय होना, डर होना, डराना)। **रोदसी** = प्रकाश देने वाले, वाणी, गति की सामर्थ्य से युक्त, करुणाशील, रोने वाले, रुलाने वाले (रुद् - रोना, रुलाना, करुण होना, रु - शब्द करना, जाना, चलना, जानना, पाना)। **अह्वयेथाम्** = व्यापक हुए, आह्वान किया (अ - नहीं, हु - दान करना, आदान-प्रदान करना, ह्वे - आह्वान करना, बुलाना, पुकारना, अह् = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना)। **यस्य** = मन से (मन् - मनन करना, जानना)। **असौ** = यह (सर्वनाम)। **पन्था** = मार्ग (पथ, पन्थ् - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना, घूमना, फेंकना, त्यागना)। **रजसो** = रजस् का (रज - रज होना, धूल होना, सूक्ष्म होना, रंग देना, रंगना, लीन होना)। **विमानः** = विशेष मान करने वाला (वि - विशेष, मा - मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना)। **कस्मै** = किसके लिए। **देवाय** = देव के लिए (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **हविषा** = हविष से (हु - दान करना, आदान-प्रदान करना, ह्वे - आह्वान करना)। **विधेम** = विधान करें, विशेष रूप से धारण करें (वि - विशेष, धा - धारण करना) ॥ 3 ॥

602. यस्य द्यौः उर्वी पृथिवी च मही,

यस्य अदः उरु अन्तरिक्षम्,
यस्य असौ सूरो विततो महित्वा,
कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **यस्य** = जिसका (सर्वनाम)। **द्यौः** = अग्रगामी, प्रकाशवान्, विद्वान्, द्यौ, प्रकाशयुक्त, अग्रगामी (द्युत् = प्रकाशित होना, द्यु = अभिगमन करना, आक्रमण करना, आगे जाना, समीप जाना, प्रकाश होना, जानना)। **उर्वी** = सहनशील, समर्थ, विस्तृत, गतिशील, समर्थ, बहु-दुःखदायी (उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना, उर्व - सहना, समर्थ होना, मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना)। **पृथिवी** = पृथ्वी, विस्तृत भूमि, विस्तार (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)। **च** = और (अव्यय)। **मही** = मही, महिमावान्, महान् (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना)। **यस्य** = जिसका (सर्वनाम)। **अदः** = खाने वाला (अद् - खाना)। **उरु** = बहुत, विराट (अव्यय, सर्वनाम)। **अन्तरिक्षम्** = अन्तरिक्ष, आकाश, अन्तर्दर्शी (अन्तः - बीच में, इक्ष् - स्वाद लेना, ईक्ष् -देखना)। **यस्य** = जिसका (सर्वनाम)। **असौ** = यह (सर्वनाम)। **सूरो** = सूर्य (सुर - ऐश्वर्य होना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना, सू - उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, ऐश्वर्य होना)। **विततो** = विस्तृत, वर्णन- विस्तार (वि - विशेष, तन् - विस्तार करना, वर्णन करना, शब्द करना, आश्रय देना)। **महित्वा** = महित्व द्वारा, महत् होकर (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना)। **कस्मै** = किसलिए, किसके लिए (सर्वनाम)। **देवाय** = देव के लिए (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **हविषा** = हविष से (हु - दान करना, आदान-प्रदान करना, ह्वे - आह्वान करना)। **विधेम** = विधान करें, विशेष रूप से धारण करें (वि - विशेष, धा - धारण करना) **॥ 4 ॥**

603. यस्य विश्वे हिमवन्तो महित्वा,
समुद्रे यस्य रसाम् इत् आहुः।
इमाः च प्रदिशो यस्य बाहू,
कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ - **यस्य** = जिसका **विश्वे** = सभी **हिमवन्तो** = हिमवान्, गतिवान्, गति-वृद्धि युक्त, शीतल **महित्वा** = महित्व द्वारा, महत् होकर **समुद्रे** = समुद्र में **यस्य** = जिसका **रसाम्** = रस में **इत्** = ही **आहुः** = कहा, कहते हैं, आदान-प्रदान किया हुआ, आहुत, आह्वान किये, बुलाये हुए, व्याप्त **इमाः** = ये **च** = और **प्रदिशो** = प्रदिशा **यस्य** = जिसका **बाहू** = भुजा, हाथ, प्रयास करने वाले युगल **कस्मै** = किसलिए, किसके लिए **देवाय** = देव के लिए **हविषा** = हविष से, दान व आदान-प्रदान द्वारा **विधेम** = विधान करें, विशेष रूप से धारण करें **॥ 5 ॥**

पदार्थ - **यस्य** = जिसका (सर्वनाम)। **विश्वे** = सभी (सर्वनाम)। **हिमवन्तो** = हिमवान्, गतिवान्, गति-वृद्धि युक्त, शीतल (हि - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना, हिम - शीत होना)। **महित्वा** = महित्व द्वारा, महत् होकर (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना)। **समुद्रे** = समुद्र में (सम् = सम्यक्, भलीभांति, सम् - न घबराना, एक समान रहना, उत् - उच्च, ऊपर, उत्कृष्ट, रा - दान करना, देना, उन्द - आर्द्र होना, गीला होना, द्रु - पिघलना, बहना, चलना, जाना, जानना, पाना, अनुसरण करना)। **यस्य** = जिसका (सर्वनाम)। **रसाम्** = रस में (रस - स्वाद लेना, चखना, प्रीति करना, प्यार करना)। **इत्** = ही (अव्यय)। **आहुः** = कहा, कहते हैं, आदान-प्रदान किया हुआ, आहुत, आह्वान किये, बुलाये हुए, व्याप्त (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, अह - फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, हु - दान करना, आदान-प्रदान करना, ह्वे = शब्द करना, आह्वान करना, बुलाना)। **इमाः** = ये (सर्वनाम)। **च** = और (अव्यय)। **प्रदिशो** = प्रदिशा (प्र - प्रकृष्ट, दिश् - दिखाना, दिखाना, समझाना, कहना, देना)। **यस्य** = जिसका (सर्वनाम)। **बाहू** = भुजा, हाथ, प्रयास करने वाले युगल (बाह् - प्रयास

करना, बह् - बहना, गति करना, बाहर होना, परे हो जाना, हिंसा करना)। **कस्मै** = किसलिए, किसके लिए (सर्वनाम)। **देवाय** = देव के लिए (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **हविषा** = हविष से, दान व आदान-प्रदान द्वारा (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **विधेम** = विधान करें, विशेष रूप से धारण करें (वि - विशेष, धा - धारण करना) **॥ 5 ॥**

604. आपः अग्रे विश्वम् आवन् गर्भम् दधानाः अमृताः ऋतज्ञाः।
यासु देवीषु अधि देवः आसीत् कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ :- आपः = आप, व्याप्त, व्यापक **अग्रे** = अग्र, आगे, पहले **विश्वम्** = सबको, विश्व को **आवन्** = रक्षा की **गर्भम्** = गर्भ को **दधानाः** = धारण करने वाले **अमृताः** = अमृत **ऋतज्ञाः** = ऋत, सञ्चालन नियम को जानने वाले **यासु** = जिनमें **देवीषु** = देवियों में **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार **देवः** = देव, विद्वान्, तेजस्वी, दिव्यस्वरूप **आसीत्** = था **कस्मै** = किसलिए, किसके लिए **देवाय** = देव के लिए **हविषा** = हविष से, दान व आदान-प्रदान द्वारा **विधेम** = विधान करें, विशेष रूप से धारण करें **॥ 6 ॥**

भावार्थ :- जो विराट गतिशील विश्व को अपने गर्भ में धारण किये हुए है, अग्नि अर्थात् गतिस्वरूप ऊर्जा शक्ति को उत्पन्न करने वाला है, अतः समस्त प्रकृति तथा प्राणियों के एकमात्र प्राण अर्थात् अस्तित्व का आधार है, उस परमात्मा के लिए हम आदान -प्रदान तथा आह्वान करते हैं। विराट सृष्टि का आश्रय परमात्मा ही है। वह ऊर्जा तथा पदार्थ को उत्पन्न करने वाला तथा जीवों के प्राण तथा चेतना का कारण है। ऋत के अनुसार जब परमात्मा की प्राणशक्ति या चेतन आवेषण को धारण करने में सक्षम शरीर की रचना हो जाती है तो जीवन उत्पन्न हो जाता है। जीव का मन-मस्तिष्क परमात्मा से ही चेतन शक्ति प्राप्त करता है तथा उस चेतना का उपयोग कर शरीर की सहायता से कार्य करता है। अतः सभी कर्मो के लिए जीव का मन-मस्तिष्क ही उत्तरदायी होता है। जीव में निहित परमात्मा की चेतन शक्ति ही आत्मा है, अतः वह किसी कर्म के लिए उत्तरदायी नहीं है। जीव में कर्म लिप्त नहीं होता है तथा आत्मा उसके फल का भोक्ता भी नहीं है। न कर्म लिप्यते नरे (नर में कर्म लिप्त नहीं होता है।) **॥ 6 ॥**

पदार्थ- आपः = आप, व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)। **अग्रे** = अग्र, आगे, पहले (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **विश्वम्** = सबको, सब विश्व को। **आवन्** = रक्षा की (अ - भूतकालिक उपसर्ग, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)। **गर्भम्** = गर्भ को (गृह् - ग्रहण करना, लेना, गृ = सींचना, गीला करना, घर्षण करना, जानना, समझना, खाना, निगलना, शब्द करना, गल्भ् - जाना, जानना, पाना, ज्ञान होना, चतुर होना, साहस होना, धैर्य रखना, गृभ्-गर्भ् - अन्दर होना, अन्तःवास करना)। **दधानाः** = धारण करने वाले (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)। **अमृताः** = अमृत (अ - नहीं, मृ - मरना)। **ऋतज्ञाः** = ऋत, सञ्चालन नियम को जानने वाले (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)। **यासु** = जिनमें, प्रयास करने वाले (यासु - जिनमें (सर्वनाम), यस् - प्रयास करना, या - जाना, जानना, पाना)। **देवीषु** = देवियों में (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **देवः** = देव, विद्वान्, तेजस्वी, दिव्यस्वरूप (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **आसीत्** = था (अस् - होना)। **कस्मै** = किसलिए, किसके लिए (सर्वनाम)। **देवाय** = देव के लिए (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **हविषा** = हविष से, दान व आदान-प्रदान द्वारा (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **विधेम** = विधान करें, विशेष रूप से धारण करें (वि - विशेष, धा - धारण करना) **॥ 6 ॥**

605. हिरण्यगर्भः सम् अवर्तत अग्रे,
भूतस्य जातः पतिः एकः आसीत्।
स दाधार पृथिवीम् उत द्याम्,

कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ - **हिरण्यगर्भः** = प्रकाशगर्भ, प्रकाश, शब्द को गर्भ में रखने वाला **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **अवर्तत** = वर्तमान हुए **अग्रे** = अग्र, आगे, पहले **भूतस्य** = भूत का, उत्पन्न हुए का **जातः** = उत्पन्न **पतिः** = ऐश्वर्यवान् स्वामी **एकः** = एक **आसीत्** = था **स** = वह, उसने **दाधार** = धारण किया, स्थापित किया **पृथिवीम्** = पृथिवी को **उत** = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च **द्याम्** = द्यु को, सबसे बढ़कर, विशिष्ट, प्रकाशमय **कस्मै** = किसलिए, किसके लिए **देवाय** = देव के लिए **हविषा** = हविष से, दान व आदान-प्रदान द्वारा **विधेम** = विधान करें, विशेष रूप से धारण करें **॥ 7 ॥**

भावार्थ - सम्पूर्ण सृष्टि का मूल परमात्मा ही है तथा वही धारण एवम् पालनकरने वाला भी है। अतः हम उस परमात्मा के लिए आदान-प्रदान, आह्वान, प्रार्थना, उपासना करते हैं, किसी अन्य के लिए नहीं।

पदार्थ - **हिरण्यगर्भः** = प्रकाशगर्भ, प्रकाश, शब्द को गर्भ में रखने वाला (हिरण - प्रकाश करना, शब्द करना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **अवर्तत** = वर्तमान हुए (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, वृत् = वर्तना, वर्तमान होना)। **अग्रे** = अग्र, आगे, पहले (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **भूतस्य** = भूत का, उत्पन्न हुए का (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **जातः** = उत्पन्न (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **पतिः** = ऐश्वर्यवान् स्वामी (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **एकः** = एक (संख्या)। **आसीत्** = था (अस् - होना)। **स** = वह, उसने। **दाधार** = धारण किया, स्थापित किया (धृ - धारण करना)। **पृथिवीम्** = पृथिवी को (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)। **उत** = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (उपसर्ग)। **द्याम्** = द्यु को, सबसे बढ़कर, विशिष्ट, प्रकाशमय (द्यु - आगे जाना, समीप जाना, द्युत् -दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, द्यै = तिरस्कार करना)। **कस्मै** = किसलिए, किसके लिए (सर्वनाम)। **देवाय** = देव के लिए (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **हविषा** = हविष से, दान व आदान-प्रदान द्वारा (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **विधेम** = विधान करें, विशेष रूप से धारण करें (वि - विशेष, धा - धारण करना) **॥ 7 ॥**

606. आपः वत्सम् जनयन्तीः गर्भम् अग्रे सम् ऐरयन्।
तस्य उत जायमानस्य उल्बः आसीत् हिरण्ययः,
कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ 8 ॥

मन्त्रार्थ :- **आपः** = आप, व्याप्त, व्यापक **वत्सम्** = बोलने वाले को **जनयन्तीः** = उत्पन्न करने वाले **गर्भम्** = गर्भ को **अग्रे** = अग्र, आगे, पहले **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **ऐरयन्** = पाकर **तस्य** = उसका **उत** = ही, भी, ओर **जायमानस्य** = जायमान का, उत्पन्न करने वाला का **उल्बः** = गतिशील **आसीत्** = था **हिरण्ययः** = प्रकाशमान, गतिशील, स्तुति करने वाला **कस्मै** = किसलिए, किसके लिए **देवाय** = देव के लिए **हविषा** = हविष से, दान व आदान-प्रदान द्वारा **विधेम** = विधान करें, विशेष रूप से धारण करें **॥ 8 ॥**

भावार्थ :- जो विराट गतिशील विश्व को अपने गर्भ में धारण किये हुए है, अग्नि अर्थात् गतिस्वरूप ऊर्जा शक्ति को उत्पन्न करने वाला है, अतः समस्त प्रकति तथा प्राणियों के एकमात्र प्राण अर्थात् अस्तित्व का आधार है, उस परमात्मा के लिए हम आदान -प्रदान तथा आह्वान करते हैं। विराट सृष्टि का आश्रय परमात्मा ही है। वह ऊर्जा तथा पदार्थ को उत्पन्न करने वाला तथा जीवों के प्राण तथा चेतना का कारण है। ऋत के अनुसार जब परमात्मा की प्राणशक्ति या चेतन आवेषण को धारण करने में सक्षम शरीर की रचना हो जाती है तो जीवन उत्पन्न हो जाता है। जीव का मन -मस्तिष्क परमात्मा से ही चेतन शक्ति प्राप्त करता है तथा उस चेतना का उपयोग कर शरीर की सहायता से कार्य करता है। अतः सभी कर्मो के लिए जीव का मन-मस्तिष्क ही उत्तरदायी होता है। जीव में निहित परमात्मा की चेतन शक्ति ही आत्मा है, अतः वह किसी कर्म के लिए उत्तरदायी नहीं है। जीव में कर्म लिप्त नहीं होता है तथा आत्मा उसके फल का भोक्ता भी नहीं है। न

कर्म लिप्यते नरे (नर में कर्म लिप्त नहीं होता है।) ॥ 8 ॥

पदार्थ - आपः = आप, व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)। **वत्सम् =** बोलने वाले को (वद् -वच्- बोलना)। **जनयन्तीः =** उत्पन्न करने वाले (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **गर्भम् =** गर्भ को (गृह् - ग्रहण करना, लेना, गृ = सींचना, गीला करना, घर्षण करना, जानना, समझना, खाना, निगलना, शब्द करना, गल्भ् - जाना, जानना, पाना, ज्ञान होना, चतुर होना, साहस होना, धैर्य रखना, गृभ्-गर्भ् - अन्दर होना, अन्तःवास करना)। **अग्रे =** अग्र, आगे, पहले (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **ऐरयन् =** पाकर (इर् - ईर्ष्या करना, ऋ-इर्य - जाना, चलना, फैलाना, ईर - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना)। **तस्य =** उसका (सर्वनाम)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **जायमानस्य =** जायमान का, उत्पन्न करने वाला का (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **उल्बः =** गतिशील (उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना)। **आसीत् =** था (अस् - होना)। **हिरण्ययः =** प्रकाशमान, गतिशील, स्तुति करने वाला (हिरण - प्रकाश होना, दीप्त होना, शब्द करना, ध्वनि होना, हि = गति करना, रण् = शब्द करना, जाना)। **कस्मै =** किसलिए, किसके लिए (सर्वनाम)। **देवाय =** देव के लिए (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **हविषा =** हविष से, दान व आदान-प्रदान द्वारा (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **विधेम =** विधान करें, विशेष रूप से धारण करें (वि - विशेष, धा - धारण करना) ॥ 8 ॥

105. शत्रुनाशन सूक्त - 3

607. उत् इतः त्रयो अक्रमन्,
व्याघ्रः पुरुषो वृकः।
हिरुक् हि यन्ति सिन्धवो हिरुक् देवो,
वनस्पतिः हिरुक् नमन्तु शत्रवः ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - उत् = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)। **इतः =** यहां से (सर्वनाम्)। **त्रयो =** तीन (संख्या)। **अक्रमन् =** क्रमण किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अ = नहीं, उपसर्ग, क्रम् = जाना, बढ़ना, रक्षा करना)। **व्याघ्रः =** व्याघ्र, विशेष घ्राणयुक्त (वि - विशेष, घ्रा-जिघ्र = सूंघना, चूमना, अघ् = पाप, अपराध करना)। **पुरुषो =** पुरुष, परिपूर्ण, अग्रगामी, अग्रणी (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, पृ - पूर्ण करना, भरना, पालन करना, रक्षा करना, तृप्त करना)। **वृकः =** हिंसक, लुटेरे (वृक- लेना, स्वीकार करना, छीन लेना, चीरना, फाड़ना, वृच- हिंसा करना)। **हिरुक् =** प्रेरक (हि - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना)। **हि =** ही, निश्चय (अव्यय)। **यन्ति =** प्राप्त होते हैं, नियमन-नियन्त्रण, पोषण करते हैं (यम् = रोकना, स्वाधीन रखना, आवरण करना, पोषण करना, नियमन करना, यन - उद्धार करना, या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, जानना)। **सिन्धवो =** सिन्धु-समूह (सिध - सिद्ध होना, पूर्ण होना, जाना, जानना, पाना, अध्ययन करना, दीक्षा देना, शुभ कार्य करना, सि-सिञ् - बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना)। **हिरुक् =** प्रेरक (हि - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना)। **देवो =** देव (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **वनस्पतिः =** विद्वान्, वनस्पति (वन - शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, आपद्ग्रस्त होना, अलग करना, मिलाना, स्मरण करना, बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, याचना करना, मांगना, दुःख देना, उद्योग-धन्धा करना, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **हिरुक् =** प्रेरक (हि - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना)। **नमन्तु =** नमन करें (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **शत्रवः =** शत्रु (शी-शद्-शत् - जीर्ण होना, गिरना, गिराना) ॥ 1 ॥

608. परेण एतु पथा वृकः,
परमेण उत तस्करः।
परेण दत्वती रज्जुः,
परेण अघायुः अर्षतु॥ 2॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **परेण =** पर, परम द्वारा (पर = पराया, अन्य, दूसरा, परे, पश्चात्, बाद में (सर्वनाम))। **एतु =** प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना, इच्छा करना, प्रेरणा करना, ए - जाना, फैलना, व्यापना, गर्भवती होना, इच्छा करना, चाहना, खाना, उड़ाना, फेंकना, भेजना, प्रेरणा करना)। **पथा =** पथ (पथ, पन्थ् - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना, घूमना, फेंकना, त्यागना)। **वृकः =** हिंसक, लुटेरे (वृक - लेना, स्वीकार करना, छीन लेना, चीरना, फाड़ना, वृच- हिंसा करना)। **परमेण =** परम, अत्यन्त, उच्चतम, प्रमुखतम द्वारा (सर्वनाम)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **तस्करः =** तस्कर, रक्षक, खोदने, फेकने, उड़ाने वाले (तस् - रक्षा करना, स्थापना करना, भेजना, फेकना, उड़ाना, खोदना, कुम्हलाना)। **परेण =** पर, परम द्वारा (पर = पराया, अन्य, दूसरा, परे, पश्चात्, बाद में (सर्वनाम))। **दत्वती =** देने वाली, दान युक्त (दा, दद् - दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)। **रज्जुः =** रज्जु (रज - रज होना, धूल होना, सूक्ष्म होना, रंग देना, रंगना, लीन होना)। **परेण =** पर, परम द्वारा (पर = पराया, अन्य, दूसरा, परे, पश्चात्, बाद में (सर्वनाम))। **अघायुः =** पापी, अपराधी (अघ् = पाप, अपराध करना)। **अर्षतु =** अन्तर्गमन करो, अन्तर्दर्शन करो, ऋषित्व प्राप्त करो (ऋष् = जाना, जानना, पहुँचना, पाना, सूक्ष्मता से भीतर देखना, अन्तर्गमन करना) **॥ 2॥**

609. अक्ष्यौ च ते मुखम्,
च ते व्याघ्र जम्भयामसि।
आत् सर्वान् विंशतिम् नखान्॥ 3॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **अक्ष्यौ =** युगल अक्ष, खेल, क्रीडा, दृष्टि, समूह, व्यापक (अक्ष् - खेलना, देखना, व्याप्त होना, एकत्र होना)। **च =** और (अव्यय)। **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **मुखम् =** मुख को (जाना, खाना, मुख् - मुख्य होना, जाना, खाना)। **च =** और (अव्यय)। **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **व्याघ्र =** हे व्याघ्र (वि - विशेष, घ्रा-जिघ्र = सूंघना, चूमना, अघ् = पाप, अपराध करना)। **जम्भयामसि =** गर्व करते हैं, नाश करते हैं, आलस्य करते हैं (जम्भ् - नाश करना, गर्व करना, आलस्य होना)। **आत् =** चिरन्तन, नित्य (आत् - होना, चिरन्तन होना, नित्य होना, चेतन होना, अत् - सतत गमन करना, निरन्तर चलना, सतत चलना, जानना, पाना)। **सर्वान् =** सभी को (सर्वनाम)। **विंशतिम्** = बीस को (विंशति = बीस, संख्या)। **नखान् =** नखों को (नख - जाना, जानना, पाना) **॥ 3॥**

610. व्याघ्रम् दत्वताम् वयम्,
प्रथमम् जम्भयामसि।
आत् उ स्तेनम् अथो अहिम्,
यातुधानम् अथो वृकम्॥ 4॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **व्याघ्रम् =** व्याघ्र को, पापी, अपराधी को (वि - विशेष, घ्रा-जिघ्र = सूंघना, चूमना। अघ् = पाप, अपराध करना)। **दत्वताम् =** देने वाले को (दा, दद् - दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)। **वयम् =** हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **प्रथमम् =** प्रथम को (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)। **जम्भयामसि =** गर्व करते हैं, नाश करते हैं, आलस्य करते हैं (जम्भ् - नाश करना, गर्व करना, आलस्य होना)। **आत् =** चिरन्तन, नित्य (आत् - होना, चिरन्तन

होना, नित्य होना, चेतन होना, अत् - सतत गमन करना, निरन्तर चलना, सतत चलना, जानना, पाना)। **उ** = निश्चय ही, भी (निपात, अव्यय)। **स्तेनम्** = चोर को (स्तेन - चुराना, लूटना)। **अथो** = अब, इसके बाद, इसके अनन्तर (अव्यय)। **अहिम्** = व्यापक को (अह् = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना)। **यातुधानम्** = यातुधान को (या - जाना, यत् - यत्न करना, प्रयास करना, उद्योग करना, दुःख देना, छाया-आच्छादन करना, रोकना, धा = धारण करना)। **अथो** = अब, इसके बाद, इसके अनन्तर (अव्यय)। **वृकम्** = वृक को, हिंसक को, (वृक - लेना, स्वीकार करना, छीन लेना, चीरना, फाड़ना, वृच- हिंसा करना) **॥ 4 ॥**

611. यो अद्य स्तेनः आ-अयति,
स सम्-पिष्टो अप अयति।
पथाम् अपध्वंसेन एतु,
इन्द्रो वज्रेण हन्तु तम् ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **यो** = जो (सर्वनाम)। **अद्य** = आज (अव्यय)। **स्तेनः** = चोर (स्तेन - चुराना, लूटना)। **आ-अयति** = आता है (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग), अय - गति करना, चलना, जाना)। **स** = वह, उसने (सर्वनाम)। **सम्-पिष्टो** = पिष्ट, चूर्ण होने वाला, पिसने वाला (सम् = सम्यक्, भलीभांति, पिष् - पीसना, चूर्ण करना)। **अप** = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। **अयति** = जाता है (अय - गति करना, चलना, जाना)। **पथाम्** = पथ को (पथ, पन्थ् - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना, घूमना, फेंकना, त्यागना)। **अपध्वंसेन** = अप-ध्वंस करें (अप = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग), ध्वंस - चूर्ण होना या करना, जाना, नीचे गिरना, नष्ट होना)। **एतु** = प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना, इच्छा करना, प्रेरणा करना, ए - जाना, फैलना, व्यापना, गर्भवती होना, इच्छा करना, चाहना, खाना, उड़ाना, फेंकना, भेजना, प्रेरणा करना)। **इन्द्रो** = परम ऐश्वर्यवान् (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **वज्रेण** = वज्र, गतिमान द्वारा (वज् - गति करना, जाना)। **हन्तु** = हनन करे, मारे (हन् - मारना)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम) **॥ 5 ॥**

612. मूर्णा मृगस्य दन्ताः,
अपिशीर्णाः उ पृष्टयः।
निम्रुक् ते गोधा भवतु,
नीचा अयत् शशयुः मृगः ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **मूर्णा** = आकर्षित (मुर् - घेरना, लपेटना, आकर्षण होना, सुख होना)। **मृगस्य** = मृग, अन्वेषी का (मृग् - अन्वेषण करना, खोजना, आखेट करना)। **दन्ताः** = दन्त (दो = दान करना, दया करना, कतरना, विभाग करना)। **अपिशीर्णाः** = अपिशीर्ण, तीक्ष्ण होने वाले, कल्याण करने वाले (अपि = निकट, शि = तेज करना, तीक्ष्ण करना, कल्याण करना)। **उ** = निश्चय ही, भी (निपात, अव्यय)। **पृष्टयः** = अभिसिञ्चित, पूछने वाला (पृश्-पृच्छ - पूछना, जानने की इच्छा करना, प्रश्न करना, पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सींचना, सहन करना)। **निम्रुक्** = निरन्तर प्रगति करे (नि- निश्चित, नितराम्, निरन्तर, म्लुच् = जाना, स्थानान्तर करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **गोधा** = शब्द करने वाले, मननशील, उपदेशक को धारण करने वाले (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, धा - धारण करना)। **भवतु** = हो, हो जाये (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **नीचा** = निम्न, चाकरी (नीच् - निम्न होना, चाकरी करना)। **अयत्** = गति, ज्ञान, प्राप्ति, उद्धार, प्रेरणा करते हुए (अय् = जाना, जानना, पाना)। **शशयुः** = कूर्दन करने वाले, शयन करने वाले (शश - फुदकते हुए चलना, कूदते हुए जाना, शी = सोना, शयन करना)। **मृगः** = मृग, अन्वेषी (मृग् - अन्वेषण करना, खोजना, आखेट

करना)॥ 6 ॥

613. यत् सम्-यमो न वि यमो,
वि यमो यत् न सम्-यमः।
इन्द्रजाः सोमजाः आथर्वणम्,
असि व्याघ्रजम्भनम्॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - यत् = जिसे, जो (सर्वनाम)। **सम्-यमो =** सम्-यम, संयम (सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग), यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)। **न =** नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **यमो =** यम (यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)। **वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **यमो =** यम (यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)। **यत् =** जिसे, जो (सर्वनाम)। **न =** नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **सम् =** सम्-यम, संयम (सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग), यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)। **इन्द्रजाः =** इन्द्रजा, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान से उत्पन्न होने वाले (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **सोमजाः =** सोमजा, सृजन-ऐश्वर्य-अन्तकर्ता से उत्पन्न होने वाले, ऐश्वर्यवान्, सृष्टिकर्ता से उत्पन्न होने वाले (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामथ्य, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना, सो–स्य, सय - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **आथर्वणम् =** सम्यक् विचलन-हिंसा को (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, थर्व - अस्थिर होना, हिंसा करना)। **असि =** हो (अस् - होना)। **व्याघ्रजम्भनम् =** व्याघ्र-जम्भन को, पापी-विनाशक को, अपराधी-गर्वीले को (वि - विशेष, घ्रा-जिघ्र = सूंघना, चूमना, अघ् = पाप, अपराध करना, जम्भ् - नाश करना, गर्व करना, आलस्य होना)॥ 7 ॥

106. वाजीकरण सूक्त - 4

614. याम् त्वा गन्धर्वो,
अखनत् वरुणाय मृत-भ्रजे।
ताम् त्वा वयम् खनामसि,
ओषधिम् शेप-हर्षणीम्॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - याम् = जिसको (सर्वनाम)। **त्वा =** तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **गन्धर्वो =** गतिशीलता, विद्वता को धारण करने वाला (गम् + धृ, गम् = जाना, जानना, पाना, धृ = धारण करना, गन्ध् = गन्ध होना, शोभित होना, मांगना, जाना)। **अखनत् =** दुःख दिया, खनन किया, खोदा (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, खन - दुःख देना, खनन करना)। **वरुणाय =** वरुण के लिए (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **मृत-भ्रजे =** हे मृत-भ्रज, हे मृतभोजी (मृ = मरना, देहत्याग करना, भ्रज् = चमकना, प्रकाशित होना, प्रकाश करना, भूँजना, तलना, सेंकना)। **ताम् =** उसको (सर्वनाम)। **त्वा =** तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **वयम् =** हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **खनामसि =** खनन करते हैं, खोदते हैं (खन् = खनन करना, खोदना)। **ओषधिम् =** ओषधी को (उषध् - चिकित्सा करना, रोग मुक्त करना)। **शेप-हर्षणीम् =** शेप-हर्षणी को (शिप = क्षरण होना, काटने योग्य होना, हृष - हृष्ट होना, सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना, झूठ बोलना, मिथ्या बोलना)॥ 1 ॥

615. उत् उषाः उत् उ सूर्यः,
उत् इदम् मामकम् वचः।
उत् एजतु प्रजापतिः,
वृषा शुष्मेण वाजिना॥ 2॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **उत्** = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)। **उषाः** = प्रभात, ताप (उषस् = प्रभात होना, उष - हिंसा करना, जलना, जलाना, ताप देना)। **उत्** = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)। **उ** = निश्चय ही, भी (निपात, अव्यय)। **सूर्यः** = सूर्य, उत्पन्न करने वाला, उत्पन्नकर्ता, ऐश्वर्यवान् (सुर - ऐश्वर्य होना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना, सू - उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, ऐश्वर्य होना)। **उत्** = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)। **इदम्** = यह, इसको (सर्वनाम)। **मामकम्** = मेरा (सर्वनाम)। **वचः=** वचन (वच् - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)। **उत्** = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)। **एजतु** = चले, प्रकाशित हो (एज् - चलना, कम्पन करना, प्रकाशित होना, चमकना, झलकना)। **प्रजापतिः** = प्रजापति, प्रजा का रक्षक, पालक (प्र - प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न करना, पत - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना)। **वृषा** = पराक्रमी (वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना या पीड़ा करना, दुःख देना, पीड़ित करना)। **शुष्मेण** = शुष्म द्वारा, शुष्म से (शुष् = सूखना, शुष्क होना)। **वाजिना** = बलशाली, वेगवान, तीव्र गति वाले = वाजयुक्त, विद्यायुक्त, गतियुक्त (वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना, वा - गति करना, बहना)॥ 2॥

616. यथा स्म ते विरोहतो,
अभितप्तम्-इव अनति।
ततः ते शुष्मवत्-तरम्,
इयम् कृणोतु ओषधिः॥ 3॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार (अव्यय)। **स्म** = है (अस् - होना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **विरोहतो** = विरोहित, विरोहण करने वाला (वि = विशेष, विना, विलोम, रुह - बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना)। **अभितप्तम्-इव** = अभितप्त-समान को (अभि = सभी ओर, सर्वथा, तप - ऐश्वर्य होना, तपना, दाह होना, तप करना, तप्त होना, तप्त करना, जलना, जलाना, तृषा होना, इव = समान, की भाँति, के समान (अव्यय))। **अनति** = प्राणवान् करता है, पाता है, जाता है (अन - प्राण होना, जीवन होना, समर्थ होना, जाना, जानना, पाना)। **ततः** = अतः, इसलिए, उससे, उसके अनन्तर (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **शुष्मवत्-तरम्** = शुष्म-तर को (शुष् = सूखना, शुष्क होना, तॄ - पार जाना, पर तीर को जाना, जल पर तैरना, जीतना, जल के पार जाना)। **इयम्** = यह, इसको (सर्वनाम)। **कृणोतु** = करो (कृ = करना)। **ओषधिः** = ओषधी (उषध् - चिकित्सा करना, रोग मुक्त करना)॥ 3॥

617. उत् शुष्मा ओषधीनाम्,
सार ऋषभाणाम्।
सम् पुंसाम् इन्द्र वृष्ण्यम्,
अस्मिन् धेहि तनू-वशिन्॥ 4॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **उत् =** भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)। **शुष्मा =** शुष्म, सुखाने वाले (शुष् - सुखाना, बल)। **ओषधीनाम् =** ओषधियों का (उषध्-ओषध् = चिकित्सा करना, रोग मुक्त करना)। **सार =** हे सार (सार - कृश होना, लघुकाय होना, दुर्बल होना)। **ऋषभाणाम् =** ऋषभ में (ऋष् - जानना, जाना, पाना, अन्तदृष्टि होना, अन्तर्गमन करना, सूक्ष्मता से भीतर देखना, भा - प्रकाश होना)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **पुंसाम् =** पोषक को (पुंस = बढ़ना, बढ़ाना)। **इन्द्र =** इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **वृष्ण्यम् =** वर्षा करने वाले, पराक्रमी को (वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति में समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना, दुःख देना, पीड़ित करना)। **अस्मिन् =** इस, इसमें (सर्वनाम)। **धेहि =** धारण करें (धा-धि-धी - धारण करना, पहनना, पोषण करना, रक्षण करना, देना)। **तनू-वशिन् =** विस्तार-इच्छा, शरीर-वशी (तन् = विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना, वश् = इच्छा करना, चाहना, चमकना) **॥ 4 ॥**

618. अपाम् रसः प्रथमजो,
अथो वनस्पतीनाम्।
उत सोमस्य भ्राता असि,
उत आर्शम् असि वृष्ण्यम्॥ 5॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **अपाम् =** अपा को, पालकों का (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना)। **रसः =** रस (रस - स्वाद लेना, चखना, प्रीति करना, प्यार करना)। **प्रथमजो =** प्रथम उत्पन्न (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना, जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना)। **अथो =** अब, इसके पश्चात्, इसके अनन्तर (अव्यय)। **वनस्पतीनाम् =** वनस्पतियों का (वन - शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, आपद्ग्रस्त होना, अलग करना, मिलाना, स्मरण करना, बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, याचना करना, मांगना, दुःख देना, उद्योग-धन्धा करना, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **सोमस्य =** सोम का (सु = उत्पन्न करना, अद्भुत सामर्थ्य, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना। सू = प्रेरणा देना। सो–स्य, सय् - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना)। **भ्राता =** भ्राता (भृ = भरण करना)। **असि =** हो (अस् - होना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **आर्शम् =** ऋषि सम्बन्धी, ऋषिकृत को (ऋष् - जानना, जाना, पाना, अन्तदृष्टि होना, अन्तर्गमन करना, सूक्ष्मता से भीतर देखना)। **असि =** हो (अस् - होना)। **वृष्ण्यम् =** वर्षा करने वाले, पराक्रमी को (वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति में समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना, दुःख देना, पीड़ित करना) **॥ 5 ॥**

619. अद्य अग्ने अद्य सवितः,
अद्य देवी सरस्वति।
अद्य अस्य ब्रह्मणः पते,
धनुः-इव आ तानया पसः॥ 6॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **अद्य =** आज (अव्यय)। **अग्ने =** हे अग्नि (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **अद्य =** आज (अव्यय)। **सवितः =** ऐश्वर्य युक्त, उत्पन्न करने वाले (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)। **अद्य =** आज (अव्यय)। **देवी =** देवी, तेजस्विनी (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **सरस्वति =** सरस्वती (सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना, स - साथ, सहित, रस् - स्वाद लेना, प्रीति करना, शब्द करना)। **अद्य =**

आज (अव्यय)। **अस्य** = इसका (सर्वनाम)। **ब्रह्मणः** = महान्, बड़ा, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **पते** = हे पति (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **धनुः-इव** = धनवान्, गतिकारक के समान (धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना, इव = समान, की भाँति, के समान (अव्यय))। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **तानया** = विस्तार किया, आश्रय दिया, वाणी दी (तन् - विस्तार करना, आश्रय देना, शब्द करना, दुःख देना)। **पसः** = गति, विनाश, बन्धन, घर्षण (पष-पंस = नष्ट करना, तहस नहस करना। जाना, बांधना, फांस लगाना। धारण करना, घर्षण करना) **॥ 6 ॥**

620. आ अहम् तनोमि ते पसो,
अधि ज्याम्-इव धन्वनि।
क्रमस्व ऋशः इव रोहितम्,
अनव-ग्लायता सदा ॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **अहम्** = मैं (सर्वनाम)। **तनोमि** = विस्तार करता हूँ (तन् = विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **पसो** = गति, विनाश, बन्धन, घर्षण (पष-पंस = नष्ट करना, तहस नहस करना। जाना, बांधना, फांस लगाना। धारण करना, घर्षण करना)। **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **ज्याम्-इव** = ज्या, वृद्ध, जयी के समान (ज्या - जीर्ण होना, पुराना होना, वृद्ध होना, बर्द्धित होना, बड़ा होना, जि - जय होना, जीतना, इव = समान, की भाँति, के समान (अव्यय))। **धन्वनि** = गति, शब्द करने वाले (धन्व - जाना, जानना, पाना, धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)। **क्रमस्व** = आगे बढ़ाये (क्रम् = चलना, निर्भयता से चलना, रक्षा करना, बढ़ना)। **ऋशः** = ऋषि (ऋष् - जानना, जाना, पाना, अन्तदृष्टि होना, अन्तर्गमन करना, सूक्ष्मता से भीतर देखना)। **इव** = समान, की भाँति, के समान (अव्यय)। **रोहितम्** = रोहित को, बढ़े को, चढ़े को (रुह = बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना, बढ़ना, चढ़ना)। **अनव-ग्लायता** = अम्लानता, ग्लानि-हीन (अन् = नहीं (उपसर्ग), अव = नीचे, दूर, प्राप्त (अव्यय), ग्ला = मुरझाना, म्लान होना, ग्लानियुक्त होना, जम्हाई लेना)। **सदा** = सदा, सर्व काल में **॥ 7 ॥**

621. अश्वस्य अश्वतरस्य,
अजस्य पेत्वस्य च।
अथ ऋषभस्य ये वाजाः तान्,
अस्मिन् धेहि तनू-वशिन् ॥ 8 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **अश्वस्य** = अश्व का, तीव्र गति युक्त, व्यापक का (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)। **अश्वतरस्य** = अश्वतर का, अत्यन्त तीव्र गति युक्त, व्यापक का (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)। **अजस्य** = प्रगतिशील का, अजन्मा का (अज - जाना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना, अ - नहीं, जन् - जन्म होना)। **पेत्वस्य** = पीने वाले का, पान करने वाले का, पानकर्ता का (पी = पीना, पान करना)। **च** = और (अव्यय)। **अथ** = अब, इसके अनन्तर (अव्यय)। **ऋषभस्य** = ऋषभ का (ऋष् - जानना, जाना, पाना, अन्तदृष्टि होना, अन्तर्गमन करना, सूक्ष्मता से भीतर देखना)। **ये** = जो (सर्वनाम)। **वाजाः** = विद्या, गति (वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना, वा - गति करना, बहना)। **तान्** = उनको

(सर्वनाम)। **अस्मिन् =** इस, इसमें (सर्वनाम)। **धेहि =** धारण करें (धा-धि-धी - धारण करना, पहनना, पोषण करना, रक्षण करना, देना)। **तनू-वशिन् =** विस्तार-इच्छा, शरीर-वशी (तन् = विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना, वश् = इच्छा करना, चाहना, चमकना) ॥ **8** ॥

107. स्वापन सूक्त - 5

622. सहस्रशृङ्गो वृषभो,
यः समुद्रात् उत्-आचरत्।
तेना सहस्येन वयम्,
नि जनान् स्वापयामसि ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - सहस्रशृङ्गो = सहस्र शृङ्ग वाले (सहस्र = हजार, वल - आच्छादित करना, ढकना, घेरना, जाना, श्रु-शृण् = सुनना, जाना, शृ = मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना)। **वृषभो =** पराक्रमी (वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना या पीड़ा करना, दुःख देना, पीड़ित करना)। **यः =** जो (सर्वनाम)। **समुद्रात् =** समुद्र से (सम् = सम्यक्, भलीभांति। उन्द - आर्द्र होना, गीला होना)। **उत्-आचरत् =** उत्तम आचरण करने वाले (उत् = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय), आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, चर् - चलना, विचरण करना, आ-चर् - आचरण करना)। **तेना =** उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **सहस्येन =** सहनशील, समर्थ द्वारा (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)। **वयम् =** हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **नि =** निश्चित, निरन्तर (अव्यय)। **जनान् =** लोगों को (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **स्वापयामसि =** उत्तम पालन करते हैं (सु - अच्छा, स्व = निज, अपना, अप् - पालन करना) ॥ **1** ॥

623. न भूमिम् वातो अति वाति,
न अति पश्यति कः चन।
स्त्रियः च सर्वाः स्वापय,
शुनः च इन्द्र-सखा चरन् ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - न = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **भूमिम् =** भूमि को (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **वातो =** वात (वात - सुखी होना, आनन्द करना, सेवा करना, जाना, वा - गति करना, बहना, पवन की भाँति चलना)। **अति =** बहुत, अत्यधिक (उपसर्ग, अव्यय)। **वाति =** चलता है, वायु के समान तीव्र गति से बहता है (वात - सुखी होना, आनन्द करना, सेवा करना, जाना, वा - गति करना, बहना, पवन की भाँति चलना)। **न =** नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **अति =** बहुत, अत्यधिक (उपसर्ग, अव्यय)। **पश्यति =** देखता है (पश् = देखना)। **कः =** कौन (सर्वनाम)। **चन =** ही (अव्यय)। **स्त्रियः =** स्त्रिय, आच्छादित करने वाला (स्तृ = आच्छादित करना, ढकना)। **च =** और (अव्यय)। **सर्वाः =** सभी (सर्वनाम)। **स्वापय =** शयन करें (स्वप - सोना, निद्रा लेना)। **शुनः =** प्रगतिशील, विद्वान् (शुन = जाना, जानना, पाना)। **च =** और (अव्यय)। **इन्द्र-सखा =** इन्द्र-सखा, परम ऐश्वर्यशाली मित्र, परम ऐश्वर्यमान मित्र (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना, सख् = मित्र होना)। **चरन् =** विचरण करते हुए (चर -जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना) ॥ **2** ॥

624. प्रोष्ठेशयाः तल्पेशया,

नारीः याः वह्य-शीवरीः।
स्त्रियो याः पुण्यगन्धयः,
ताः सर्वाः स्वापयामसि॥ 3॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **प्रोष्ठेशयाः** = पूर्ण-शयन करने वाला (प्रुष् - सौम्य होना, स्निग्ध होना, चिकना होना, सिञ्चन करना, पूर्ण करना, शी-शय् = शयन करना, सोना)। **तल्पेशया** = तल-शयन करने वाला (तल् - पूर्ण होना, स्थापना करना, सिद्ध करना, शी-शय् = शयन करना, सोना)। **नारीः** = नारी (नृ - नम्र होना, विनय होना, कोमल होना, मृदु होना, चलना, ले जाना)। **याः** = जो (सर्वनाम)। **वह्य-शीवरीः** = वह्य-शीवरी, गति-शयन करने वाली (वह् = वहन करना, ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना, शी-शय् = शयन करना, सोना)। **स्त्रियो** = स्त्रिय, आच्छादित करने वाला (स्तृ = आच्छादित करना, ढकना)। **याः** = जो (सर्वनाम)। **पुण्यगन्धयः** = पुण्य-गन्ध वाला (पुण् - सहायता करना, शुभ करना, समूह बनाना, एकत्र करना, राशि करना, ढेर करना, गन्ध् = गन्ध होना, शोभित होना, मांगना, जाना)। **ताः** = वे (सर्वनाम)। **सर्वाः** = सभी (सर्वनाम)। **स्वापयामसि** = शयन करते हैं (स्वप - सोना, निद्रा लेना)॥ **3**॥

625. एजत्-एजत् अजग्रभम्,
चक्षुः प्राणम् अजग्रभम्।
अङ्गानि अजग्रभम् सर्वा,
रात्रीणाम् अति-शर्वरे॥ 4॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **एजत्-एजत्** = निरन्तर चलता ही रहता है, निरन्तर प्रकाशित होता है (एज् - चलना, कम्पन करना, प्रकाशित होना, चमकना, झलकना)। **अजग्रभम्** = गृहण किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, गृह् - ग्रहण करना, लेना, गृभ्-गर्भ् - अन्दर होना, अन्तःवास करना)। **चक्षुः** = दृष्टि, वाणी, आँख (चक्ष् - स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)। **प्राणम्** = प्राण को (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अन- जीवन होना, चेतन होना, प्रा- पूर्ण करना, तृप्त करना)। **अजग्रभम्** = गृहण किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, गृह् - ग्रहण करना, लेना, गृभ्-गर्भ् - अन्दर होना, अन्तःवास करना)। **अङ्गानि** = विद्वान्, प्रगतिशील, पाने वाले (अंग् = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)। **अजग्रभम्** = गृहण किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, गृह् - ग्रहण करना, लेना, गृभ्-गर्भ् - अन्दर होना, अन्तःवास करना)। **सर्वा** = सभी (सर्वनाम)। **रात्रीणाम्** = रात्री, दानी, अनुदान का (रा - देना, मिल जाना)। **अति-शर्वरे** = अति-शर्व से (अति = बहुत, अत्यधिक (उपसर्ग, अव्यय), शर्व - क्षत करना, घाव करना, मार डालना)॥ **4**॥

626. यः आस्ते यः चरति,
यः च तिष्ठन् विपश्यति।
तेषाम् सम् दध्मो अक्षीणि,
यथा इदम् हर्म्यम् तथा॥ 5॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **यः** = जो (सर्वनाम)। **आस्ते** = बैठे हुए, थे (अस् - होना, आस् - बैठना, उपस्थित होना, विद्यमान होना, जीवित रहना, होना)। **यः** = जो (सर्वनाम)। **चरति** = विचरण करता है (चर -जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)। **यः** = जो (सर्वनाम)। **च** = और (अव्यय)। **तिष्ठन्** = स्थित होता हुआ, ठहरा हुआ (तिष्ठ् = ठहरना, खड़ा होना)। **विपश्यति** = देखता है (वि = विशेष, विना, विलोम, पश् = देखना)। **तेषाम्** = उनका (सर्वनाम)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **दध्मो** = धारण करते हैं (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)। **अक्षीणि** = अक्षों को (अक्ष - खेलना, देखना, एकत्र होना, व्याप्त होना, इच्छितार्थ होना, पैठना)।

यथा = जिससे, जैसे, जिस प्रकार (अव्यय)। **इदम्** = यह, इसको (सर्वनाम)। **हर्म्यम्** = हरि को, हरण करने वाले को (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना, नष्ट करना)। **तथा** = उसी प्रकार (अव्यय) **॥ 5 ॥**

627. स्वप्तु माता स्वप्तु पिता,
स्वप्तु श्वा स्वप्तु विश्पतिः।
स्वपन्तु अस्यै ज्ञातयः,
स्वप्तु अयम् अभितो जनः ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **स्वप्तु** = सो जाये (स्वप - सोना, निद्रा लेना)। **माता** = माता, मान करने वाला (मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना)। **स्वप्तु** = सो जाये (स्वप - सोना, निद्रा लेना)। **पिता** = पिता, पालन करने वाला, पिता (पि - जाना, जानना, पाना, पा- पालन करना, रक्षा करना)। **स्वप्तु** = सो जाये (स्वप - सोना, निद्रा लेना)। **श्वा** = प्रगतिशील (शव-श्वा - जाना, भागना, दौड़ना, श्वित - श्वेत होना, शुभ्र होना)। **स्वप्तु** = सो जाये (स्वप - सोना, निद्रा लेना)। **विश्पतिः** = विश के स्वामी, रक्षक, सूचना, प्रेरणा, अन्तर्गमन करने वालों के रक्षक, स्वामी (विश - भीतर जाना, चारों ओर फैलना, पत् = ऐश्वर्य होना, रक्षक-स्वामी होना)। **स्वपन्तु** = सो जायें (स्वप - सोना, निद्रा लेना)। **अस्यै** = इसके लिए (सर्वनाम)। **ज्ञातयः** = ज्ञान वाले, जानने वाले (ज्ञा = जानना)। **स्वप्तु** = सो जाये (स्वप - सोना, निद्रा लेना)। **अयम्** = यह (सर्वनाम)। **अभितो** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (सर्वनाम)। **जनः** = जन (जन - उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना) **॥ 6 ॥**

628. स्वप्न स्वप्न-अभिकरणेन,
सर्वम् नि ष्वापया जनम्।
आ-उत्सूर्यम् अन्यान् स्वापय आ-व्युषम्,
जागृतात् अहम् इन्द्रः इव अरिष्टो अक्षितः ॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **स्वप्न-अभिकरणेन** = स्वप्न-अभिकरण द्वारा (स्वप - सोना, निद्रा लेना, अभि - अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, कृ - करना)। **स्वप्न** = स्वप्न (स्वप - सोना, निद्रा लेना)। **सर्वम्** = सब (सर्वनाम)। **नि** = निश्चित, निरन्तर (अव्यय)। **ष्वापया** = शयन करें (स्वप - सोना, निद्रा लेना)। **जनम्** = जन को (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **आ-उत्सूर्यम्** = सम्यक्-उत्सूर्य को (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग), उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, सुर - ऐश्वर्य होना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना, सू - उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, ऐश्वर्य होना)। **अन्यान्** = अन्यों को (सर्वनाम)। **स्वापय** = शयन करें (स्वप - सोना, निद्रा लेना)। **आ-व्युषम्** = आव्युष को, सम्यक् ताप को (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग), वि - विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग), उष - हिंसा करना, जलना, जलाना, ताप देना)। **जागृतात्** = जाग्रत से (जागृ - जगना, नींद न लेना)। **अहम्** = मैं (सर्वनाम)। **इन्द्रः** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **इव** = समान, की भाँति, के समान (अव्यय)। **अरिष्टो** = अहिंसक, गतिशील, व्यापक (अ - नहीं, ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, रिष- हिंसा करना, मार डालना, दुःख देना, मारने का यत्न करना)। **अक्षितः** = अक्षित, अक्षय, व्याप्त, अविनाशी (अ = नहीं, अक्ष - खेलना, देखना, एकत्र होना, व्याप्त होना, इच्छितार्थ होना, पैठना, क्षि - क्षय होना, नष्ट होना) **॥ 7 ॥**

20. अनुवाक - 2

108. विषघ्न सूक्त - 6

629. ब्राह्मणो जज्ञे प्रथमो,
दशशीर्षो दश-आस्यः।
स सोमम् प्रथमः पपौ,
स चकार अरसम् विषम्॥ 1॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **ब्राह्मणो** = महान्, बड़ा, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **जज्ञे** = उत्पन्न हुए (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **प्रथमो** = प्रथम, आदि, विस्तार (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)। **दशशीर्षो** = दस-शीर्ष वाले (दश - संख्या, शीर्ष = शीर्ष होना, मुख्य होना, उच्च होना)। **दश-आस्यः** = दस-आस्य (दश - दस, संख्या, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, आस् - बैठना, उपस्थित होना, विद्यमान होना, जीवित रहना, होना)। **स** = वह, उसने (सर्वनाम)। **सोमम्** = सोम को, उत्पन्नकर्ता को, ऐश्वर्यवान् को (सु = उत्पन्न करना, अद्भुत सामर्थ्य, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना। सू = प्रेरणा देना। सो–स्य, सय् - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना)। **प्रथमः** = प्रथम, पहला, विस्तार (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)। **पपौ** = पालन किया, रक्षण किया (पा - पालन करना, रक्षा करना)। **स** = वह, उसने (सर्वनाम) **चकार** = किया (कृ = करना)। **अरसम्** = अरस को, रसहीन को (अ - नहीं, रस् - स्वाद लेना, प्रीति करना, शब्द करना)। **विषम्** = विष को (विश् - प्रवेश, सूचना, प्रेरणा करना, विष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना) **॥ 1 ॥**

630. यावती द्यावापृथिवी वरिम्णा,
यावत् सप्त सिन्धवो वितष्ठिरे।
वाचम् विषस्य दूषणीम्,
ताम् इतो निः अवादिषम्॥ 2॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **यावती** = जितना, जब तक (सर्वनाम)। **द्यावापृथिवी** = अग्रगामी विस्तार, प्रकाश, द्यावा और पृथिवी (द्यु - आगे जाना, समीप जाना, द्युत् -दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, द्यै = तिरस्कार करना, पृथु = विस्तार होना, फेंकना, उड़ाना, भेजना, प्रेरणा करना)। **वरिम्णा** = इच्छा, चाह, आशा, वरण, रुचि, आच्छादन करने वाले (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, रुचना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **यावत्** = जितना, जब तक (सर्वनाम)। **सप्त** = पूर्ण, संलग्न (सप - पूर्ण होना, पूर्ण ज्ञान होना, पूरा समझना, पूर्णतया जानना, संसक्त होना, संलग्न होना, मिलाप होना)। **सिन्धवो** = सिन्धु-समूह (सिध - सिद्ध होना, पूर्ण होना, जाना, जानना, पाना, अध्ययन करना, दीक्षा देना, शुभ कार्य करना, सि-सिञ् - बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना)। **वितष्ठिरे** = वितस्थ हुए (वि - विशेष, तस् - स्थापन करना, रक्षा करना)। **वाचम्** = वाणी को (वच - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)। **विषस्य** = विष का (विश् - प्रवेश, सूचना, प्रेरणा करना, विष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना)। **दूषणीम्** = गतिशील, विद्वान्, परिश्रमी, दूषित को (दू = जाना, जानना, पाना, सुगन्ध लेना, श्रम करना, जलना, तप्त होना, दुःख होना, दुःख देना, दूष् = दूषित होना, दूषित करना)। **ताम्** = उसको (सर्वनाम)। **इतो** = पाये, गति, ज्ञान, प्रकाश प्राप्त किया (इ - जाना, जानना, पाना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)। **निः** = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग)। **अवादिषम्** = उच्चारण किया (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, वद् = कहना, स्पष्ट कहना, समझाना) **॥ 2 ॥**

631. सुपर्णः त्वा गरुत्मान्,
विष प्रथमम् आवयत्।
न अमीमदो न अरूरुपः,

उत अस्मा अभवः पितुः ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **सुपर्णः =** सुपर्ण, उत्तम पर्ण वाले (सु - उत्तम, श्रेष्ठ, पर्ण - हरा करना, हरा होना, पृ - पूर्ण करना, भरना)। **त्वा =** तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **गरुत्मान् =** गरुत्मान् (गृ = सींचना, गीला करना, घर्षण करना, जानना, समझना, खाना, निगलना, शब्द करना)। **विष =** हे विष (विश् - प्रवेश, सूचना, प्रेरणा करना, विष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना)। **प्रथमम् =** प्रथम को (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)। **आवयत् =** रक्षा की, भक्षण किया (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, अत् = खाना, नष्ट करना)। **न =** नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **अमीमदो =** शब्द, गति, सेवा युक्त, अतुल्य, अहिंसक न कर (अम् = गति, शब्द, सेवा करना, रोग होना, अ - नहीं, मा = मापना, नापना, तौलना, मि - फेकना, स्थापना करना, रक्षा करना, मी - हिंसा करना, मारना, मद् = आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)। **न =** नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **अरूरुपः =** विचलित किया (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, युप्-रुप्-लुप् = चित्त विकल होना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **अस्मा =** इस (सर्वनाम)। **अभवः =** हुआ (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना)। **पितुः =** पिता का, गति, ज्ञान का (पा - रक्षा करना, पालन करना, पि = गति करना, जाना, जानना, पाना) **॥ 3 ॥**

632. यः ते आस्यत् पञ्च-अङ्गुरिः,
वक्रात् चित् अधि धन्वनः।
अप-स्कम्भस्य शल्यात्,
निः अवोचम् अहम् विषम् ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **यः =** जो (सर्वनाम)। **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **आस्यत् =** आस्यता है, होता है (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **पञ्च-अङ्गुरिः =** पञ्च-अङ्गुरि वाला (पञ्च = पाँच, संख्या, अंग् = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)। **वक्रात् =** वक्र से, द्वारा (वच् - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)। **चित् =** चेतन, विचारशील, चुना गया, एकत्र (चि - चुनना, एकत्र करना, चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, सम्यक् ज्ञान होना, स्मरण करना, शंका करना, सन्देह करना)। **अधि =** अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **धन्वनः =** गति, शब्द करने वाले का (धन्व - जाना, जानना, पाना, धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)। **अप-स्कम्भस्य =** अप-स्कम्भ का (अप = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग), स्कम्भ - सक्रिय होना, क्रियाशील होना, रोकना, प्रतिबन्ध करना)। **शल्यात् =** शल्य द्वारा, गति, स्तुति युक्त से (शल् - गति करना, जाना, जानना, पाना, चुभना, विस्मरण होना, प्रशंसा करना, स्तुति करना)। **निः =** बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग)। **अवोचम् =** कहा, बोला (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, वच्-वद् - बोलना)। **अहम् =** मैं (सर्वनाम)। **विषम् =** विष को (विश् - प्रवेश, सूचना, प्रेरणा करना, विष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना) **॥ 4 ॥**

633. शल्याद् विषम् निः अवोचम्,
प्र-अञ्जनात् उत पर्णधेः।
अपाष्ठात् शृङ्गात् कुल्मलान्,
निः अवोचम् अहम् विषम् ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **शल्याद् =** शल्य द्वारा, गति, स्तुति युक्त से (शल् - गति करना, जाना, जानना, पाना, चुभना, विस्मरण होना, प्रशंसा करना, स्तुति करना)। **विषम् =** विष को (विश् - प्रवेश, सूचना, प्रेरणा करना, विष् - अलग करना, अभिषेक

करना, सींचना, व्याप्त होना)। **निः** = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग)। **अवोचम्** = कहा, बोला (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, वच्-वद् - बोलना)। **प्र-अञ्जनात्** = प्राञ्जन से, द्वारा, अधिक स्वच्छता, प्रकाश से (प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग), अञ्ज - स्वच्छ करना, प्रकाशित होना, जाना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **पर्णधेः** = पर्ण-धारण करने वाला (पर्ण - हरा करना, हरा होना, पृ - पूर्ण करना, भरण करना, धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)। **अपाष्ठात्** = अप-स्थित हैं से, द्वारा (अप = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग), अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, स्था- स्थित होना, ठहरना)। **शृङ्गात्** = शृङ्ग से (श्रु-शृण् = सुनना, जाना, शृ = मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना)। **कुल्मलान्** = कुल्मलों को (कुल् = आवरण होना, एकत्र करना, बटोरना, अपने के समान वर्तना, सजातीयता से रहना, गिनना)। **निः** = बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग)। **अवोचम्** = कहा, बोला (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, वच्-वद् - बोलना)। **अहम्** = मैं (सर्वनाम)। **विषम्** = विष को (विश् - प्रवेश, सूचना, प्रेरणा करना, विष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना) **॥ 5 ॥**

634. अरसः ते इषो शल्यो,
अथो ते अरसम् विषम्।
उत अरसस्य वृक्षस्य धनुः,
ते अरस अरसम् ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **अरसः** = अरस वाला, रसहीन वाला (अ - नहीं, रस् - स्वाद लेना, प्रीति करना, शब्द करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **इषो** = विद्या, ज्ञान, इच्छा, प्रगति, प्राप्ति (इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना)। **शल्यो** = शल्य, गति, स्तुति युक्त वाला (शल् - गति करना, जाना, जानना, पाना, चुभना, विस्मरण होना, प्रशंसा करना, स्तुति करना)। **अथो** = अब, इसके बाद, इसके अनन्तर (अव्यय)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **अरसम्** = अरस को, रसहीन को (अ - नहीं, रस् - स्वाद लेना, प्रीति करना, शब्द करना)। **विषम्** = विष को (विश् - प्रवेश, सूचना, प्रेरणा करना, विष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना) **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **अरसस्य** = अरस का, रसहीन का (अ - नहीं, रस् - स्वाद लेना, प्रीति करना, शब्द करना)। **वृक्षस्य** = वृक्ष का (वृक्ष - वरण करना, आच्छादन करना)। **धनुः** = धनवान्, गतिकारक (धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **अरस** = हे अरस, हे रसहीन (अ - नहीं, रस् - स्वाद लेना, प्रीति करना, शब्द करना)। **अरसम्** = अरस को, रसहीन को (अ - नहीं, रस् - स्वाद लेना, प्रीति करना, शब्द करना) **॥ 6 ॥**

635. ये अपीषन् ये अदिहन्,
ये आस्यन् ये अव-असृजन्।
सर्वे ते वध्रयः कृता,
वध्रिः विषगिरिः कृतः ॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **ये** = जो (सर्वनाम)। **अपीषन्** = पीसा, चूर्ण किया, नहीं पीसा हुआ (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अ - नहीं, पिष् = चूर्ण करना, पीसना, पालना)। **ये** = जो (सर्वनाम)। **अदिहन्** = बढ़ाया, बनाया (अ - नहीं (उपसर्ग), दिह्-दिग् = रूप बनाना, बढ़ना, जमाना, लीपना, पोतना)। **ये** = जो (सर्वनाम)। **आस्यन्** = आस्यते हैं, प्रक्षेपण करते हैं (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **ये** = जो (सर्वनाम)। **अव-असृजन्** = अव-सृजन किया (अव = नीचे, दूर, प्राप्त (अव्यय), अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, सृज्- सृजन करना, रचना करना, बनाना, विविध रूप से उत्पादन करना)। **सर्वे** = सब (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **वध्रयः**

= वध किया (वध्-हन् = मार डालना, प्राप्त करना, जाना, किसी प्रकार समाप्त करना)। **कृता** = किया हुआ, बनाया (कृ = करना)। **वध्रिः** = वध किया (वध्-हन् = मार डालना, प्राप्त करना, जाना, किसी प्रकार समाप्त करना)। **विषगिरिः** = विष-गिरि (विश् - प्रवेश, सूचना, प्रेरणा करना, विष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना, गृ - सींचना, गीला करना, समझना, जानना, गृ - शब्द करना)। **कृतः** = किया (कृ = करना) ॥ 7 ॥

636. वध्रयः ते खनितारो,
वध्रिः त्वम् असि ओषधे।
वध्रिः स पर्वतो गिरिः,
यतो जातम् इदम् विषम् ॥ 8 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **वध्रयः** = वध किया (वध्-हन् = मार डालना, प्राप्त करना, जाना, किसी प्रकार समाप्त करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **खनितारो** = खनित, खनन किया हुआ, खनन करने वाला, खोदने वाला (खन् = खनन करना, खोदना)। **वध्रिः** = वध किया (वध्-हन् = मार डालना, प्राप्त करना, जाना, किसी प्रकार समाप्त करना)। **त्वम्** = तुम (सर्वनाम)। **असि** = हो (अस् - होना)। **ओषधे** = हे ओषधि (उषध्-ओषध् - चिकित्सा करना, रोगमुक्त करना)। **वध्रिः** = वध किया (वध्-हन् = मार डालना, प्राप्त करना, जाना, किसी प्रकार समाप्त करना)। **स** = वह, उसने (सर्वनाम)। **पर्वतो** = पर्वत, पर्वतों ने (पर्व् - पूर्ण करना, पूरा करना, भरना, विभाग करना)। **गिरिः** = स्तुति, वाणी (गृ - सींचना, गीला करना, समझना, जानना, गृ - शब्द करना)। **यतो** = जिससे, जैसे (सर्वनाम)। **जातम्** = उत्पन्न हुआ, उत्पन्न हुए को (जन-उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **इदम्** = यह, इसको (सर्वनाम)। **विषम्** = विष को (विश् - प्रवेश, सूचना, प्रेरणा करना, विष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना) ॥ 8 ॥

109. विषनाशन सूक्त - 7

637. वाः इदम् वारयातै,
वरणावत्याम् अधि।
तत्र अमृतस्य आ-सिक्तम्,
तेना ते वारये विषम् ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **वाः** = प्रवाहमान, प्रगतिशील (वा - गति करना, बहना, वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण करना, घेरना, भेजना, खाना, वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना)। **इदम्** = यह, इसको (सर्वनाम)। **वारयातै** = वरण करे (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **वरणावत्याम्** = वरणा-वत को (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, पसन्द करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **तत्र** = वहाँ (सर्वनाम)। **अमृतस्य** = अमृत, अविनाशी का (अ - नहीं, मृ - मरना)। **आ-सिक्तम्** = आसिक्त को, सम्यक् अस्पष्टी को (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, पूर्णतः, सिक्-सिङ्क्-सिज-सिञ्ज - अस्पष्ट शब्द करना)। **तेना** = उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **वारये** = वरण करता हूँ (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **विषम्** = विष को (विश् - प्रवेश, सूचना, प्रेरणा करना, विष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना) ॥ 1 ॥

638. अरसम् प्राच्यम् विषम्,

अरसम् उत् उदीच्यम्।
अथ इदम् अधराच्यम्,
करम्भेण वि कल्पते॥ 2॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **अरसम् =** अरस को, रसहीन को (अ - नहीं, रस् - स्वाद लेना, प्रीति करना, शब्द करना)। **प्राच्यम् =** प्राची को, पूर्व दिशा को (प्राक् = पहले, सर्वनाम)। **विषम् =** विष को (विश् - प्रवेश, सूचना, प्रेरणा करना, विष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना)। **अरसम् =** अरस को, रसहीन को (अ - नहीं, रस् - स्वाद लेना, प्रीति करना, शब्द करना)। **उत् =** भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)। **उदीच्यम् =** उदीची को (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, इ = जाना, उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, उदि - उन्द् = भिगोना, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना)। **अथ =** अब, इसके अनन्तर (अव्यय)। **इदम् =** यह, इसको (सर्वनाम)। **अधराच्यम् =** अधराची को, अधोगामी को, जय, धारण न करने वाले को (अधर् - न्यून करना, जीतना, निम्न गति करना, अच - जाना, चलना, आदर करना, मांगना)। **करम्भेण =** करम्भ द्वारा, सामर्थ्य द्वारा (कृप् = कृपा करना, दया करना, सामर्थ्य होना, कल्पना करना, विचार करना, दुर्बल होना)। **वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **कल्पते =** कल्पना करे, बनाये, रचना करे (कल्प् - कल्पना करना, विचार करना, बनाना, रचना करना, शक्तिमान होना, समर्थ होना)॥ **2॥**

639. करम्भम् कृत्वा तिर्यम्,
पीबः-पाकम् उदारथिम्।
क्षुधा किल त्वा दुष्टनो,
जक्षिवान् स न रूरुपः॥ 3॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **करम्भम् =** करम्भ को, सामर्थ्य को (कृप् = कृपा करना, दया करना, सामर्थ्य होना, कल्पना करना, विचार करना, दुर्बल होना)। **कृत्वा =** करके, करने के अनन्तर, करने के बाद (कृ - करना, कृत - कतरना, काटना)। **तिर्यम् =** तिरछा, तिर्यक् (अव्यय)। **पीबः-पाकम् =** पीब-पाक को, पान युक्त-पाक को (पी-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना, पच = पकाना)। **उदारथिम् =** उदार को (उ - ही, उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, द्री - आदर करना, सम्मान करना, सत्कार करना, अर् - ऋ - जाना, फैलाना)। **क्षुधा =** क्षुधा (क्षुध् - भूख लगना)। **किल =** निश्चय ही (सर्वनाम)। **त्वा =** तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **दुष्टनो** = हे दुषित करने वाले (दुः = बुरा, अनुचित, कठिन)। **जक्षिवान् =** खाने वाले, हँसने वाले (जक्ष् - खाना, हँसना)। **स =** वह, उसने (सर्वनाम)। **न =** नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **रूरुपः =** विचलित किया (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, युप्-रुप्-लुप् = चित्त विकल होना)॥ **3॥**

640. वि ते मदम् मदावति,
शरम्-इव पातयामसि।
प्र त्वा चरुम्-इव येषन्तम्,
वचसा स्थापयामसि॥ 4॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **मदम् =** मद को, हर्ष को, तृप्ति को (मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)। **मदावति =** हे मद युक्त, हे तृप्ति युक्त (मद - हर्षित होना, तृप्त करना, समाधान करना)। **शरम्-इव =** सुनने वाले, सुनाने वाले, उपदेशक, मार्गदर्शक के समान (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मारना, इव = समान, की भाँति, के समान (अव्यय))। **पातयामसि =** पालन करते हैं (पा = रक्षा करना, पालन करना)। **प्र =** प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **त्वा =** तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **चरुम्-इव =**

विचरण करने वाले, विचरणशील के समान (चर - जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना, इव = समान, की भाँति, के समान (अव्यय))। **येषन्तम् =** प्रयत्न करते हुए (येष् = प्रयत्न करना, प्रमाद छोड़ना, आग्रह करना, चिपकना)। **वचसा =** वचन द्वारा (वच् - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)। **स्थापयामसि =** स्थिर करते हैं (स्था - स्थित होना, ठहरना) **॥ 4 ॥**

641. परि ग्रामम्-इव आचितम्,
वचसा स्थापयामसि।
तिष्ठा वृक्षः-इव स्थाम्नि,
अभ्रिखाते न रूरुपः ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - परि = परे, सभी ओर, साथ (उपसर्ग)। **ग्रामम्-इव =** ग्रामों के समान (ग्राम - बुलाना, बुद्धिपूर्वक कहना, एकत्र होना, इव = समान, की भाँति, के समान (अव्यय))। **आचितम् =** आ-चेतन, सम्यक् विचारशील, चुना गया, एकत्र को (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग), चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, सम्यक् ज्ञान होना, स्मरण करना, शंका करना, सन्देह करना)। **वचसा =** वचन द्वारा (वच् - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)। **स्थापयामसि =** स्थिर करते हैं (स्था - स्थित होना, ठहरना)। **तिष्ठा =** ठहरो, स्थित हो, ठहरो, खड़े हो (तिष्ठ् = ठहरना, खड़ा होना)। **वृक्षः =** वृक्ष के समान (वृक्ष - वरण करना, आच्छादन करना, इव = समान, की भाँति, के समान (अव्यय))। **स्थाम्नि =** स्थान में (स्था - स्थित होना, ठहरना)। **अभ्रिखाते =** खनन कर पूर्ण किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, भृ = भरना, भरण करना, खन् = खनन करना, खोदना)। **न =** नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **रूरुपः =** विचलित किया (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, युप्-रुप्-लुप् = चित्त विकल होना) **॥ 5 ॥**

642. पवस्तैः त्वा परि अक्रीणन्,
दूर्शेभिः अजिनैः उत।
प्र-क्रीः असि त्वम् ओषधे,
अभ्रिखाते न रूरुपः ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - पवस्तैः = पवित्र करने के लिए (पू - पवित्र करना)। **त्वा =** तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **परि =** परे, सभी ओर, साथ (उपसर्ग)। **अक्रीणन् =** क्रय किया, खरीद लिया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, क्री = खरीदना, बदले में लेना, जीतना)। **दूर्शेभिः =** दुष्टों के लिए (दू = दुःख में जर्जर होना, दुःख सहन करना, दुःख देना, पीड़ा करना)। **अजिनैः =** गतिमान्, वेग से जाने वाले के लिए (अज - जाना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **प्र-क्रीः =** खरीदा हुआ (प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग), क्री = खरीदना, बदले में लेना, जीतना)। **असि =** हो (अस् - होना)। **त्वम् =** तुम (सर्वनाम)। **ओषधे =** हे ओषधि (उषध्-ओषध् - चिकित्सा करना, रोगमुक्त करना)। **अभ्रिखाते =** खनन कर पूर्ण किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, भृ = भरना, भरण करना, खन् = खनन करना, खोदना)। **न =** नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **रूरुपः =** विचलित किया (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, युप्-रुप्-लुप् = चित्त विकल होना) **॥ 6 ॥**

643. अनाप्ता ये वः प्रथमा,
यानि कर्माणि चक्रिरे।
वीरान् नो अत्र मा दभन्,
तद् वः एतत् पुरो दधे ॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **अनाप्ता =** अगतिशील, अपालनशील (अन् - नहीं, अप = जाना, जानना, पाना, पालन करना)। **ये =** जो (सर्वनाम)। **वः =** तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **प्रथमा =** प्रथम (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)। **यानि =** जो (सर्वनाम)। **कर्माणि =** कर्मों को, कर्म (कृ - करना)। **चक्रिरे =** किया, करते हैं (कृ - करना)। **वीरान् =** वीरों को (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **अत्र =** यहाँ (अव्यय)। **मा =** नहीं, मत (अव्यय)। **दभन् =** निन्दक, हिंसक (दभ - निन्दा करना, हिंसा करना)। **तद् =** वह, उस को (सर्वनाम)। **वः =** तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **एतत् =** यह (सर्वनाम)। **पुरो =** पहले (अव्यय)। **दधे =** धारण करते हैं (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना) **॥ 7 ॥**

110. राज्याभिषेक सूक्त - 8

644. भूतो भूतेषु पयः आ दधाति,
स भूतानाम् अधिपतिः बभूव।
तस्य मृत्युः चरति राजसूयम्,
स राजा राज्यम् अनु मन्यताम् इदम्॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **भूतो =** भूत, हो गये (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **भूतेषु =** भूतो में (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **पयः =** ज्ञान, रक्षण, गतिशील, प्रवाहमान, प्रवाहपूर्ण (पय् - गति करना, रक्षण करना, ज्ञान, गमन, प्राप्ति करना, पि - जाना, जानना, पाना, पा- पालन करना, रक्षा करना)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **दधाति =** धारण करता है (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)। **स =** वह, उसने (सर्वनाम)। **भूतानाम् =** भूतों का, उत्पन्न हुओं का (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **अधिपतिः =** अधिपति (अधि = अधिगत, अधिक, उच्च, पूर्णतः, पत् - ऐश्वर्य होना, उड़ना, गिरना)। **बभूव =** हो गये (भू = होना, प्राप्त होना)। **तस्य =** उसका (सर्वनाम)। **मृत्युः =** मृत्यु (मृ = मरना, देहत्याग करना)। **चरति =** विचरण करता है (चर -जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)। **राजसूयम् =** राज-सूय को (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना, सू = गर्भ धारण करना, जन्म देना, उत्पन्न करना)। **स =** वह, उसने (सर्वनाम)। **राजा =** राजा (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **राज्यम् =** राज्य को (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **अनु =** पश्चात्, पीछे, अनुकूल (उपसर्ग)। **मन्यताम् =** जानें, समझें, विचार करें, स्वीकार करें, मानें (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **इदम् =** यह, इसको (सर्वनाम) **॥ 1 ॥**

645. अभि प्र इहि मा अप,
वेनः उग्रः चेत्ता सपत्नहा।
आ तिष्ठ मित्रवर्धन,
तुभ्यम् देवाः अधि ब्रुवन्॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **अभि =** अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **प्र =** प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **इहि =** आओ, जानों (इ = जाना, जानना, पाना)। **मा =** नहीं, मत (अव्यय)। **अप =** दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। **वेनः =**

विद्वान्, कान्तिमान् (वेन - मिलाना, अलग करना, रक्षा करना, जाना, समझना, जानना, स्मरण करना, सारासार विचार करना, तारतम्य देखना, वाद्य यन्त्र बजाना, बाजा हाथ में लेना)। **उग्रः =** उग्र, वक्तागण, समूह, सम्बन्धी (उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना)। **चेत्ता =** चेतना, चेताने वाला (चि - चुनना, एकत्र करना, चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, सम्यक् ज्ञान होना, स्मरण करना, शंका करना, सन्देह करना)। **सपत्नहा =** सपत्नघाती (सप् = पूर्ण ज्ञान होना, पत् = ऐश्वर्य होना, निम्नगति करना, गिरना, हन - मार डालना, प्राप्त करना)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **तिष्ठ =** उठो, ठहरो, खड़े हो (तिष्ठ् = ठहरना, खड़ा होना)। **मित्रवर्धन =** मित्र-वर्धन करते हुए (मिद् - स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, नरम होना, मृदुल होना, वृध् = बढ़ना, चमकना, बोलना)। **तुभ्यम् =** तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **देवाः =** विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **अधि =** अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **ब्रुवन् =** कहते हुए, बोलते हुए (ब्रू - कहना, बोलना) **॥ 2 ॥**

646. आ-तिष्ठन्तम् परि विश्वे अभूषन्,
श्रियम् वसानः चरति स्वरोचिः।
महत् तत् वृष्णो असुरस्य नाम,
आ विश्वरूपो अमृतानि तस्थौ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - आ-तिष्ठन्तम् = सम्यक् स्थित हों (तिष्ठ् = ठहरना, खड़ा होना, आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग))। **परि =** परे, सभी ओर, साथ (उपसर्ग)। **विश्वे =** सभी (सर्वनाम)। **अभूषन् =** भूषित किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, भूष् - भूषित करना, भूषित होना, शोभित होना, शोभित करना)। **श्रियम् =** श्रिय को, सेवित, परिपक्व, आश्रित, श्रेय युक्त को (श्रा = पकाना, रांधना, उबालना, स्वेदन करना, श्री = सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना, श्री-श्रीण = पकाना, रांधना)। **वसानः =** वास करते हुए, धारण करता हुआ (वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)। **चरति =** विचरण करता है (चर -जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)। **स्वरोचिः =** स्वयम् प्रकाशित (स्व - स्वयम्, अपना, रुच् - प्रकाश होना)। **महत् =** महान् (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना)। **तत् =** वह, उस को (सर्वनाम)। **वृष्णो =** वर्षा करने वाला, पराक्रमी (वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना, दुःख देना, पीड़ित करना)। **असुरस्य =** असुर का, प्रकाश देने वाले का (अ = नहीं, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना)। **नाम =** नाम वाले (नाम - नाम होना, नाम रखना, नम् = नमन करना, सम्मान करना, शब्द करना)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **विश्वरूपो =** विश्वरूप (विश्व - सब कुछ, रूप - आकार बनाना, रचना करना)। **अमृतानि =** अमृतों को (अ - नहीं, मृ - मरना)। **तस्थौ =** स्थित किया है, स्थित हैं (तस - स्थापित होना, स्थापना करना, फेंकना, उड़ा देना, भेजना, खोदना, कुम्हलाना, स्था-तिष्ठ - स्थित होना, ठहरना) **॥ 3 ॥**

647. व्याघ्रो अधि वैयाघ्रे,
वि क्रमस्व दिशो महीः।
विशः त्वा सर्वा वाञ्छन्तु,
आपो दिव्याः पयस्वतीः॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **व्याघ्रो =** पापी, अपराधी (वि - विशेष, घ्रा-जिघ्र = सूंघना, चूमना। अघ् = पाप, अपराध करना)। **अधि =** अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **वैयाघ्रे =** पापी, अपराधी में (वि - विशेष, घ्रा-जिघ्र = सूंघना, चूमना, अघ् = पाप, अपराध करना)। **वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **क्रमस्व =** आगे बढ़ाये (क्रम् = चलना, निर्भयता से चलना, रक्षा करना, बढ़ना)। **दिशो =** दिशायें, दिशाओं को (दिश - दिखाना, समझाना, आज्ञा करना, कहना, बोलना, देना, पारितोषिक देना, अतिरचना करना)। **महीः =** मही, महिमावान्, महान् (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना)। **विशः =** व्याप्त, प्रविष्ट, प्रवेशी (विश - भीतर जाना, चारों ओर फैलना, धंसना)। **त्वा =** तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **सर्वा =** सभी (सर्वनाम)। **वाञ्छन्तु =** वाञ्छा करें, इच्छा करें, चाहें (वाञ्छ् = इच्छा करना, चाहना)। **आपो =** आप, व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)। **दिव्याः =** दिव में, दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय में (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)। **पयस्वतीः =** विस्तृत, विस्तारयुक्त, गतिशील, प्रवाहमान (पय् = जाना, जानना, पाना, बहना, पयस् = विस्तार करना, फैलाना) **॥ 4 ॥**

648. याः आपो दिव्याः पयसा मदन्ति,
अन्तरिक्षे उत वा पृथिव्याम्,
तासाम् त्वा सर्वासाम् अपाम्,
अभि षिञ्चामि वर्चसा ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **याः =** जो (सर्वनाम)। **आपो =** आप, व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)। **दिव्याः =** दिव में, दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय में (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)। **पयसा =** पयस् द्वारा, विस्तार द्वारा, गतिशील, प्रवाहमान द्वारा (पय् = जाना, जानना, पाना, बहना, पयस् = विस्तार करना, फैलाना)। **मदन्ति =** आनन्दित करते हैं, हर्षित होते हैं, तृप्त होते हैं (मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)। **अन्तरिक्षे =** अन्तरिक्ष में (अन्तः - बीच में, इक्ष् - स्वाद लेना, ईक्ष् -देखना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **वा =** अथवा (अव्यय)। **पृथिव्याम् =** पृथ्वी पर (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)। **तासाम् =** उनका (सर्वनाम)। **त्वा =** तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **सर्वासाम् =** सभी में (सर्वनाम)। **अपाम् =** अपा को, पालकों का (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना)। **अभि =** अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **षिञ्चामि =** सिञ्चन करता हूँ (सिञ्च् - सिञ्चन करना)। **वर्चसा =** प्रकाश द्वारा, तेज द्वारा (वर्च - प्रकाशित होना, चमकना) **॥ 5 ॥**

649. अभि त्वा वर्चसा असिचन्,
आपो दिव्याः पयस्वतीः।
यथा असो मित्रवर्धनः तथा,
त्वा सविता करत् ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **अभि =** अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **त्वा =** तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **वर्चसा =** प्रकाश द्वारा, तेज द्वारा (वर्च - प्रकाशित होना, चमकना)। **असिचन् =** सिञ्चन किया, सिञ्चन नहीं करने वाला (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, सिञ्च् = सिञ्चन करना, सींचना, प्रोक्षण करना, छींटा मारना)। **आपो =**

आप, व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)। **दिव्याः** = दिव में, दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय में (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)। **पयस्वतीः** = विस्तृत, विस्तारयुक्त, गतिशील, प्रवाहमान (पय् = जाना, जानना, पाना, बहना, पयस् = विस्तार करना, फैलाना)। **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार (अव्यय)। **असो** = अस् का, ऐश्वर्यवान् का, उत्पन्न करने वाले का (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना)। **मित्रवर्धनः** = मित्र-वर्धन करते हुए (मिद् - स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, नरम होना, मृदुल होना, वृध् = बढ़ना, चमकना, बोलना)। **तथा** = उसी प्रकार (अव्यय)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **सविता** = सृष्टिकर्ता, उत्पन्न करने वाला, ऐश्वर्यवान् तथा ऐश्वर्य देने वाला (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)। **करत्** = करते हुए (कृ - करना)॥ **6** ॥

650. एना व्याघ्रम् परि-षस्वजानाः,
सिंहम् हिन्वन्ति महते सौभगाय।
समुद्रम् न सुभुवः तस्थिवांसम्,
मर्मृज्यन्ते द्वीपिनम् अप्सु अन्तः ॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **एना** = प्रकाशित करने वाले (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, इन-एन = प्रकाशित करना, दोष होना, मिश्रण करना, विभाजन करना, अलग करना, मिलाना)। **व्याघ्रम्** = व्याघ्र को, पापी, अपराधी को (वि - विशेष, घ्रा-जिघ्र = सूंघना, चूमना। अघ् = पाप, अपराध करना)। **परि-षस्वजानाः** = प्रगाढ़ आलिंगन करना (परि = सभी ओर, उपसर्ग, स्वज - आलिङ्गन करना, गले लगाना)। **सिंहम्** = सिंह को (सिंह् = हिंसा करना, गति करना)। **हिन्वन्ति** = संतृप्त करते हैं (हिन्व - तृप्त होना, शान्त होना)। **महते** = महत् के लिए, महान्, पूज्य के लिए (मह् - पूजा करना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना)। **सौभगाय** = सौभाग्य के लिए (सु - अच्छा, सुन्दर, सु = उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, सींचना, भग् -भज् - सेवा करना, सेवन करना, दान करना, अलग करना, सो–स्य, सय - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना)। **समुद्रम्** = समुद्र को (सम् = सम्यक्, भलीभांति। उन्द - आर्द्र होना, गीला होना)। **न** = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **सुभुवः** = सुभुव, उत्तम उत्पन्न होने वाले (सु = अच्छा (उपसर्ग), भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **तस्थिवांसम्** = स्थित हैं (तस - स्थापित होना, स्थापना करना, फेंकना, उड़ा देना, भेजना, खोदना, कुम्हलाना, स्था-तिष्ठ - स्थित होना, ठहरना)। **मर्मृज्यन्ते** = शुद्ध किया, पवित्र किया (मृज - स्वच्छ करना, धोना, पवित्र होना, संवारना, अलंकृत करना, मृज - धोना, स्वच्छ करना, संवारना)। **द्वीपिनम्** = द्वीप में (द्वि = दो, संख्या, पि = जाना, जानना, पाना)। **अप्सु** = पालन-रक्षण में (अप = जाना, जानना, पाना, पालन करना)। **अन्तः** = बीच में, भीतर (अव्यय, उपसर्ग, सर्वनाम)॥ **7** ॥

111. आञ्जन सूक्त - 9

651. आ इहि जीवम् त्रायमाणम्,
पर्वतस्य असि अक्ष्यम्।
विश्वेभिः देवैः दत्तम्,
परिधिः जीवनाय कम्॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **इहि** = आओ, जानों (इ = जाना, जानना, पाना)। **जीवम्** = जीव को (जीव् = जीवन होना, प्राणवान् होना, प्राण धारण करना, जीवन धारण करना)। **त्रायमाणम्** = त्रायमान को, रक्षा करने वाले को (त्रै = पालन करना, रक्षा करना, पोषण करना)। **पर्वतस्य** = पर्वत, पर्वतों का (पर्व् - पूर्ण करना, पूरा करना, भरना, विभाग करना)। **असि** = हो (अस् - होना)। **अक्ष्यम्** = अक्ष को, खेल, क्रीडा, दृष्टि, समूह, व्यापक को (अक्ष् - खेलना, देखना, व्याप्त होना, एकत्र होना)। **विश्वेभिः** = सबके द्वारा (सर्वनाम)। **देवैः** = देवों द्वारा, देवों के साथ (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **दत्तम्** = दिया हुआ (दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)। **परिधिः** = परिधि, घेरा, सब ओर से धारण करने वाला, परितः धारण (परि = सभी तरफ, उपसर्ग, धा = धारण करना)। **जीवनाय** = जीवन के लिए (जीव - जीवन होना, प्राणवान् होना)। **कम्** = किसको (सर्वनाम) **॥ 1 ॥**

652. परि-पाणम् पुरुषाणाम्,
परिपाणम् गवाम् असि।
अश्वानाम् अर्वताम्,
परिपाणाय तस्थिषे ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **परि-पाणम्** = परिपान को, परि-रक्षा को (परि = सभी तरफ (उपसर्ग), पा - रक्षा करना)। **पुरुषाणाम्** = पुरुषों का, पुरुषों में, परिपूर्ण, अग्रगामी, अग्रणी का (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, पृ - पूर्ण करना, भरना, पालन करना, रक्षा करना, तृप्त करना)। **परिपाणम्** = परिपान को, परि-रक्षा को (परि = सभी तरफ (उपसर्ग), पा - रक्षा करना)। **गवाम्** = गवा को, गौ को (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, गम् = जाना)। **असि** = हो (अस् - होना)। **अश्वानाम्** = अश्वों का, शीघ्रगामी, अश्व, तीव्र गति युक्त, व्यापक का (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)। **अर्वताम्** = अर्वत में, अर्वतों का, प्रगतिशील, व्यापक, शब्दकर्ता का (ऋ - जाना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना, पहुँचाना, अर्-ऋ - गति करना, जाना, जानना, पाना, शब्द करना, व्याप्त होना, मिलाना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, अर्व - गति करना, जाना, चलना, जानना, पाना, पहुँचना, हिंसा करना)। **परिपाणाय** = परिपान के लिए, परि-रक्षा के लिए (परि = सभी तरफ (उपसर्ग), पा - रक्षा करना)। **तस्थिषे** = स्थित रहता है (स्था-तिष्ठ - स्थित होना, ठहरना)।**॥ 2 ॥**

653. उत असि परि-पाणम्,
यातु-जम्भनम् आ-अञ्जन।
उत अमृतस्य त्वम् वेत्थ अथो असि,
जीव-भोजनम् अथो हरित-भेषजम् ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **असि** = हो (अस् - होना)। **परि-पाणम्** = परिपान को, परि-रक्षा को (परि = सभी तरफ (उपसर्ग), पा - रक्षा करना)। **यातु-जम्भनम्** = यत्न-जम्भन को, दुःख-नाशक को (यत् - यत्न करना, प्रयास करना, उद्योग करना, दुःख देना, जम्भ् - नाश करना, गर्व करना, आलस्य होना)। **आ-अञ्जन** = हे आञ्जन, हे प्रकाशक (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग), अञ्ज - स्वच्छ करना, प्रकाशित होना, जाना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **अमृतस्य** = अमृत, अविनाशी का (अ - नहीं, मृ - मरना)। **त्वम्** = तुम (सर्वनाम)। **वेत्थ** = जानें, जानते हो (विद् = जानना, समझना, विद्यमान होना)। **अथो** = अब, इसके बाद, इसके अनन्तर (अव्यय)। **असि** = हो (अस् - होना)। **जीव-भोजनम्** = जीव-भोजन को (जीव् - जीवन होना, प्राणवान् होना, प्राण धारण करना, जीवन

धारण करना, भुज - संरक्षण करना, पालन करना, खाना, भक्षण करना)। **अथो =** अब, इसके बाद, इसके अनन्तर (अव्यय)। **हरित-भेषजम् =** हरित-भेषज को, हरित-औषधि को (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना, भिषज् - रोग मुक्त करना, चिकित्सा करना, नष्ट करना) **॥ 3 ॥**

654. यस्य आ-अञ्जन प्रसर्पसि,
अङ्गम्-अङ्गम् परुः-परुः।
ततो यक्ष्मम् वि बाधसे,
उग्रो मध्यमशीः-इव ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - यस्य = जिसका (सर्वनाम)। **आ-अञ्जन =** हे आञ्जन, हे प्रकाशक (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग), अञ्ज - स्वच्छ करना, प्रकाशित होना, जाना)। **प्रसर्पसि =** प्राप्त करता है (प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग), सृप् - जाना, सरकना, जानना, पाना, चलना)। **अङ्गम्-अङ्गम् =** अंग-अंग को, प्रत्येक विद्वान्, प्रगतिशील, पाने वाले को (अंग् = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)। **परुः-परुः =** प्रत्येक परु, रक्षक (पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना)। **ततो =** अतः, इसलिए, उससे, उसके अनन्तर (सर्वनाम)। **यक्ष्मम् =** पूज्य, श्रेष्ठ को (यक्ष = पूजा करना, पूजना, सत्कार करना)। **वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **बाधसे =** बाधित करते हो (बाध - रोकना, अटकाव करना, बाधा देना, दुःख देना)। **उग्रो =** उग्र (उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना, उग् - उग्र - उग्र होना, तेज होना)। **मध्यमशीः-इव =** मध्यमशी की भाँति (मध्यम् = मध्य को (सर्वनाम), शी = स्वप्ने - निद्रायाम्, सोना, शयन करना, इव = समान, की भाँति, के समान, अव्यय) **॥ 4 ॥**

655. न एनम् प्र-आप्नोति शपथो,
न कृत्या न अभि शोचनम्।
न एनम् विष्कन्धम् अश्नुते,
यः त्वा बिभर्ति आ-अञ्जन ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - न = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **एनम् =** इसको, इसे (सर्वनाम)। **प्र-आप्नोति =** व्याप्त, व्यापक होता है (प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग), आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)। **शपथो =** शपथ (शप् = शपथ लेना, प्रतिज्ञा करना, शाप देना, निन्दा करना)। **न =** नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **कृत्या** = कृत्य द्वारा (कृ - करना)। **न =** नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **अभि =** अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **शोचनम् =** शोचन को, पवित्र को (शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना)। **न =** नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **एनम् =** इसको, इसे (सर्वनाम)। **विष्कन्धम् =** विस्कन्ध को (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग), स्कन्द = जाना, चलना, सूखना, सुखाना)। **अश्नुते =** व्याप्त होता है, भोजन करता है, भोग करता है, प्राप्त करता है (अश् = भोजन करना, व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना)। **यः =** जो (सर्वनाम)। **त्वा =** तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **बिभर्ति =** भरण, धारण करता है (भृ- भरना, भरण करना, धारण करना)। **आ-अञ्जन =** हे आञ्जन, हे प्रकाशक (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग), अञ्ज - स्वच्छ करना, प्रकाशित होना, जाना) **॥ 5 ॥**

656. असत्-मन्त्रात् दुः-स्वप्न्यात्,
दुः-कृतात् शमलात् उत।
दुः-हार्दः चक्षुषो घोरात्,
तस्मात् नः पाहि आ-अञ्जन ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **असत्-मन्त्रात् =** असत्-मन्त्रों से (अ - नहीं, सत् = होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना, मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना, मन्त्र = मन्त्रणा करना, विचार करना, गुप्त भाषण करना)। **दुः-स्वप्न्यात् =** दुःस्वप्नों से (दुः = बुरा, कठिन, स्वप् - सोना, निद्रा लेना)। **दुः-कृतात् =** दुष्कृत्य से (दुः = बुरा, कठिन, कृ - करना)। **शमलात् =** शान्ति से (शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **दुः-हार्दः =** दुः-हृदय वाले (दुः = बुरा, कठिन, हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)। **चक्षुषो =** चक्षुओं का (चक्ष् - स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)। **घोरात् =** घोर से (घुर् = भयंकर होना, चमकना)। **तस्मात् =** उससे (सर्वनाम)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **पाहि =** पालन करो, रक्षा करो (पा - पालन, रक्षण करना)। **आ-अञ्जन =** हे आञ्जन, हे प्रकाशक (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग), अञ्ज - स्वच्छ करना, प्रकाशित होना, जाना) **॥ 6 ॥**

657. इदम् विद्वान् आ अञ्जन
सत्यम् वक्ष्यामि न अनृतम्।
सनेयम् अश्वम् गाम् अहम्,
आत्मानम् तव पूरुष ॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ - **इदम् =** यह, इसको **विद्वान् =** विद्वान्, जानने वाला, ज्ञानी **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **अञ्जन =** स्वच्छता, प्रकाश **सत्यम् =** सत्य को **वक्ष्यामि =** पालन करूँगा, रक्षा करूँगा **न =** नहीं, समान **अनृतम् =** अनृत को **पूरुष =** हे पुरुष, परिपूर्ण, अग्रगामी, अग्रणी **तव =** तुम्हारा **अहम् =** मैं **आत्मानम् =** आत्मा को **अश्वम् =** तीव्र गति युक्त, व्यापक को **गाम् =** गान, गायक को **सनेयम् =** सेवन करूँ **॥ 7 ॥**

भावार्थ - ओषधी देवीः अर्थात् दिव्यगुणयुक्त माता के समान है, ऐसा तुम लोग कहो। हे पुरुष अर्थात् परिपूर्ण, अग्रणी जन, तुम्हारे द्वारा हमें प्राप्त निवास, अश्व अर्थात् तीव्र गति युक्त, व्यापक गान, आत्म चेतना को सेवन करूँ। यह आत्म-तत्व ही परमात्मा है, सर्वत्र व्याप्त चेतना है। औषधियों में भी इसी दिव्य चेतना से रोग दूर करने की शक्ति आ आती है, यही भावना रखकर उसे दिव्य माता कहा गया है **॥ 7 ॥**

पदार्थ - **इदम् =** यह, इसको (सर्वनाम)। **विद्वान् =** विद्वान्, जानने वाला, ज्ञानी (विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना, विद्यमान होना, विचार करना, जीवन होना)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **अञ्जन =** स्वच्छता, प्रकाश (अञ्ज - स्वच्छ करना, प्रकाशित होना, जाना)। **सत्यम् =** सत्य को (सत् = होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना)। **वक्ष्यामि =** पालन करूँगा, रक्षा करूँगा (वक्ष = पालन करना, रक्षा करना, वक्ष = क्रोध करना, बटोरना, ढेर करना)। **न =** नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **अनृतम् =** अनृत को (अन् - नहीं, ऋत - चलना, जाना, फैलाना, संचलन करना, सदाचरण करना)। **सनेयम् =** सनेय को (सन = सेवा करना, चाकरी करना, सन = दान करना, सेवा करना, पूजा करना, सत्कार करना)। **अश्वम् =** अश्व, तीव्र गति युक्त, व्यापक को (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)। **गाम् =** गान, गाय, गायक, गाने वाले को (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गम् - जाना, जानना, पाना)। **अहम् =** मैं (सर्वनाम)। **आत्मानम् =** आत्मा को (आत् - होना, चिरन्तन होना, नित्य होना, चेतन होना, अत् - सतत गमन करना, निरन्तर चलना, सतत चलना, जानना, पाना)। **तव =** तुम्हारा (सर्वनाम)। **पूरुष =** पुरुष, परिपूर्ण, अग्रगामी, अग्रणी (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, पृ - पूर्ण करना, भरना, पालन करना, रक्षा करना, तृप्त करना) **॥ 7 ॥**

658. त्रयो दासाः आ-अञ्जनस्य,

तक्मा बलासः आत् अहिः।
वर्षिष्ठः पर्वतानाम्,
त्रिककुत् नाम ते पिता॥ 8॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **त्रयो** = तीन (संख्या)। **दासाः** = दासों, दानियों, सेवाधर्मियों, सेवाभावियों (दास् - काटना, दान करना, सेवा करना)। **आ-अञ्जनस्य** = आञ्जन का, प्रकाशक का (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग), अञ्ज - स्वच्छ करना, प्रकाशित होना, जाना)। **तक्मा** = तक्मा, सहन करने वाला (तक - सहन करना, उपहास करना, ठठ्ठा करना)। **बलासः** = बलों ने (बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना)। **आत्** = भी, अथ, अब, इसके अनन्तर (अव्यय)। **अहिः** = व्यापक (अह् = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना)। **वर्षिष्ठः** = परम पराक्रमी (वर्ष् = बरसना, सींचना, अति पराक्रम करना, हिंसा करना, क्लेश देना, उत्पीड़न करना)। **पर्वतानाम्** = पर्वतों का (पर्व् - पूर्ण करना, पूरा करना, भरना, विभाग करना)। **त्रिककुत्** = त्रिककुद, तीन गर्वित, चञ्चल, प्यासा (त्रि = तीन, संख्या, कक् = गर्व करना, चञ्चल होना, प्यासा होना)। **नाम** = नाम वाले (नाम - नाम होना, नाम रखना, नम् = नमन करना, सम्मान करना, शब्द करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **पिता** = पिता, पालन करने वाला, पिता (पि - जाना, जानना, पाना, पा- पालन करना, रक्षा करना)॥ 8॥

659. यत् आ-अञ्जनम् त्रैककुदम्,
जातम् हिमवतः परि।
यातून् च सर्वान् जम्भयत्,
सर्वाः च यातुधान्यः॥ 9॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **आ-अञ्जनम्** = आञ्जन को, प्रकाशक को (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग), अञ्ज - स्वच्छ करना, प्रकाशित होना, जाना)। **त्रैककुदम्** = त्रिककुद को, तीन गर्वित, चञ्चल, प्यासा को (त्रि = तीन, संख्या, कक् = गर्व करना, चञ्चल होना, प्यासा होना)। **जातम्** = उत्पन्न हुआ, उत्पन्न हुए को (जन - उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **हिमवतः** = हिमवान्, गतिवान्, गति-वृद्धि युक्त, शीतल (हि - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना, हिम - शीत होना)। **परि** = सभी तरफ (उपसर्ग)। **यातून्** = यत्न करने वाले, दुःख देने वाले (यत् - यत्न करना, प्रयास करना, उद्योग करना, दुःख देना)। **च** = और (अव्यय)। **सर्वान्** = सभी को (सर्वनाम)। **जम्भयत्** = गर्व करे, नाश करे, आलस्य करे (जम्भ् - नाश करना, गर्व करना, आलस्य होना)। **सर्वाः** = सभी (सर्वनाम)। **च** = और (अव्यय)। **यातुधान्यः** = यातुधान के योग्य (यत् - यत्न करना, प्रयास करना, उद्योग करना, दुःख देना, छाया-आच्छादन करना, रोकना, धा = धारण करना)॥ 9॥

660. यदि वा असि त्रैककुदम्,
यदि यामुनम् उच्यसे।
उभे ते भद्रे नाम्नी ताभ्याम्,
नः पाहि आ-अञ्जन॥ 10॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **यदि** = यदि (अव्यय)। **वा** = अथवा (अव्यय)। **असि** = हो (अस् - होना)। **त्रैककुदम्** = त्रिककुद को, तीन गर्वित, चञ्चल, प्यासा को (त्रि = तीन, संख्या, कक् = गर्व करना, चञ्चल होना, प्यासा होना)। **यदि** = यदि (अव्यय)। **यामुनम्** = यमुना सम्बन्धी को, जाने वाले को, आवरण को (यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना,

नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)। **उच्यसे =** उच्चारण करता है, कहता है (उक् - उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना)। **उभे =** दोनों, पूर्णता (उभय - दोनो, उभ् - पूर्ण करना, भरना)। **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **भद्रे =** कल्याण में (भदि-भन्द् = सुख होना, शुभ कर्म करना, कल्याण होना)। **नाम्नी =** नाम वाला (नाम - नाम होना, नाम रखना, नम् = नमन करना, सम्मान करना, शब्द करना)। **ताभ्याम् =** उनके लिए (सर्वनाम)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **पाहि =** पालन करो, रक्षा करो (पा - पालन, रक्षण करना)। **आ-अञ्जन =** हे आञ्जन, हे प्रकाशक (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग), अञ्ज - स्वच्छ करना, प्रकाशित होना, जाना) **॥ 10 ॥**

112. शङ्खमणि सूक्त - 10

661. वातात् जातो अन्तरिक्षात्,
विद्युतो ज्योतिषः परि।
स नो हिरण्यजाः शङ्खः,
कृशनः पातु अंहसः ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - वातात् = सुख से, गति से, वात से (वात - सुखी होना, आनन्द करना, सेवा करना, जाना, वा - गति करना, बहना, पवन की भाँति चलना)। **जातो =** उत्पन्न हुआ (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **अन्तरिक्षात् =** अन्तरिक्ष, आकाश, अन्तर्दर्शी से (अन्तः - बीच में, इक्ष् - स्वाद लेना, ईक्ष् - देखना)। **विद्युतो =** विशेष प्रकाशमान का (वि - विशेष। द्युत् -दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना)। **ज्योतिषः =** ज्योति का (ज्युत - कान्तिमान् होना, चमकना, प्रकाशित होना)। **परि =** सभी तरफ (उपसर्ग)। **स =** वह, उसने (सर्वनाम)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **हिरण्यजाः =** हिरण्यजा, प्रकाश-उत्पन्न होने वाले, शब्द-गति वाले (हिरण - प्रकाश होना, दीप्त होना, शब्द करना, ध्वनि होना, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **शङ्खः =** सेवा वाला, ध्वनि वाला, शङ्ख (शङ्ख् - सेवा करना, ध्वनि करना)। **कृशनः =** कृशन (कृश - कृश होना, सूक्ष्म होना)। **पातु =** पालन करो, रक्षा करो (पा = पालन करना, बचाना)। **अंहसः =** प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना) **॥ 1 ॥**

662. यो अग्रतो रोचनानाम्,
समुद्रात् अधि जज्ञिषे।
शङ्खेन हत्वा रक्षांसि,
अत्त्रिणो वि षहामहे ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - यो = जो (सर्वनाम)। **अग्रतो =** अग्र, आगे (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **रोचनानाम् =** रुचियों का, प्रकाशों का (रुच् = रुचना, प्रकाशित होना, प्रसन्न होना)। **समुद्रात् =** समुद्र से (सम् = सम्यक्, भलीभांति। उन्द - आर्द्र होना, गीला होना)। **अधि =** अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **जज्ञिषे =** उत्पन्न होता है (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **शङ्खेन =** सेवा द्वारा, ध्वनि द्वारा, शङ्ख द्वारा (शङ्ख् - सेवा करना, ध्वनि करना)। **हत्वा =** हत्वा, हनन करने वाले (हन् - मारना)। **रक्षांसि =** रक्षक (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना)। **अत्त्रिणो =** सतत गमनशील, जानने वाले (अत् = सतत गति होना, जानना, पाना)। **वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **षहामहे =** सहनशील करते हैं, समर्थ करते हैं (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना) **॥ 2 ॥**

663. शङ्खेन अमीवाम् अमतिम्,
शङ्खेन उत सदान्वाः।
शङ्खो नो विश्वभेषजः,
कृशनः पातु अंहसः॥ 3॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **शङ्खेन** = सेवा द्वारा, ध्वनि द्वारा, शङ्ख द्वारा (शङ्ख् - सेवा करना, ध्वनि करना)। **अमीवाम्** = शब्द, गति, सेवा युक्त, अतुल्य, अहिंसक को (अम् = गति, शब्द, सेवा करना, रोग होना, अ - नहीं, मा = मापना, नापना, तौलना, मि - फेकना, स्थापना करना, रक्षा करना, मी - हिंसा करना, मारना)। **अमतिम्** = सेवाभावी विद्वान्, विचारहीन को (अम् = जाना, जानना, शब्द करना, सेवा करना, रोग होना, अ - नहीं, मन् - मानना, समझना, विचार करना)। **शङ्खेन** = सेवा द्वारा, ध्वनि द्वारा, शङ्ख द्वारा (शङ्ख् - सेवा करना, ध्वनि करना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **सदान्वाः** = सदान्व (स - सहित, साथ, दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना)। **शङ्खो** = सेवा, ध्वनि, शङ्ख (शङ्ख् - सेवा करना, ध्वनि करना)। **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **विश्वभेषजः** = विश्वभेषज, सभी औषधियाँ (विश्वः = सभी। भिषज् - रोग मुक्त करना, चिकित्सा करना, नष्ट करना, भेष - डरना, जाना, जानना, पाना)। **कृशनः** = कृशन (कृश - कृश होना, सूक्ष्म होना)। **पातु** = पालन करो, रक्षा करो (पा = पालन करना, बचाना)। **अंहसः** = प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना)॥ 3॥

664. दिवि जातः समुद्रजः,
सिन्धुतः परि आभृतः।
स नो हिरण्यजाः शङ्खः,
आयुः-प्रतरणो मणिः॥ 4॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **दिवि** = दिव्यता में, दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय में (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)। **जातः** = उत्पन्न (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **समुद्रजः** = समुद्र से उत्पन्न (सम् = सम्यक्, भलीभांति, उन्द - आर्द्र होना, गीला होना, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **सिन्धुतः** = सिन्धु (सिध - सिद्ध होना, पूर्ण होना, जाना, जानना, पाना, अध्ययन करना, दीक्षा देना, शुभ कार्य करना, सि-सिञ् - बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना)। **परि** = सभी तरफ (उपसर्ग)। **आभृतः** = परिपूर्ण है (आ - समन्तात्, पूर्णतः, भृ - भरण करना, पूर्ण करना)। **स** = वह, उसने (सर्वनाम)। **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **हिरण्यजाः** = हिरण्यजा, प्रकाश-उत्पन्न होने वाले, शब्द-गति वाले (हिरण - प्रकाश होना, दीप्त होना, शब्द करना, ध्वनि होना, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **शङ्खः** = सेवा, ध्वनि, शङ्ख (शङ्ख् - सेवा करना, ध्वनि करना)। **आयुः-प्रतरणो** = आयु-तारक (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अय = जाना, जानना, पाना, गति करना, आय - शब्द करना, शासन करना, यु = मिलना, अलग करना, प्र - प्रकृष्ट, अधिक, तृ - पार जाना, तैरना, जीतना)। **मणिः** = मणि, शब्द (मण् - शब्द करना)॥ 4॥

665. समुद्रात् जातो मणिः,
वृत्रात् जातो दिवाकरः।
सो अस्मान् सर्वतः,
पातु हेत्या देवासुरेभ्यः॥ 5॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - समुद्रात् = समुद्र से (सम् = सम्यक्, भलीभांति। उन्द - आर्द्र होना, गीला होना)। **जातो =** उत्पन्न हुआ (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **मणिः =** मणि, शब्द (मण् - शब्द करना)। **वृत्रात् =** वृत्रों से, आच्छादनों से (वृ - वरण करना, आच्छादन करना, स्वीकार करना, वृत् - वर्तना, वर्तमान होना वरण करना, सेवा करना, चमकना, बोलना, हिंसा करना)। **जातो =** उत्पन्न हुआ (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **दिवाकरः =** दिवाकर, दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय करने वाला (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना, कृ = करना)। **सो =** वह, उसने (सर्वनाम)। **अस्मान् =** हमें, हमको (सर्वनाम)। **सर्वतः =** सब ओर से (अव्यय)। **पातु =** पालन करो, रक्षा करो (पा = पालन करना, बचाना)। **हेत्या =** हेति द्वारा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, वृद्धि, प्रेरणा द्वारा (हि - गति, वृद्धि, प्रेरणा करना, जाना, जानना, पाना)। **देवासुरेभ्यः =** देव-असुरों के लिए, से (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना, अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना) **॥ 5 ॥**

666. हिरण्यानाम् एको असि,
सोमात् त्वम् अधि जज्ञिषे।
रथे त्वम् असि दर्शतः इषुधौ,
रोचनः त्वम् प्र णः आयूंसि तारिषत् ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - हिरण्यानाम् = हिरण्यों में, प्रकाशमानों, शब्दमयों में (हिरण - प्रकाश होना, दीप्त होना, शब्द करना, ध्वनि होना)। **एको =** एक (संख्या)। **असि =** हो (अस् - होना)। **सोमात् =** सोम से, ऐश्वर्यमय से (सु = उत्पन्न करना, अद्भुत सामर्थ्य, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना। सू = प्रेरणा देना। सो–स्य, सय् - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना)। **त्वम् =** तुम (सर्वनाम)। **अधि =** अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **जज्ञिषे =** उत्पन्न होता है (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **रथे =** रथ में (रम - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना)। **त्वम् =** तुम (सर्वनाम)। **असि =** हो (अस् - होना)। **दर्शतः =** देखने वाला, देखने से (दृश् - देखना)। **इषुधौ =** युगल विद्या, इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि धारण करने वाला (इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना, धि - धारण करना)। **रोचनः =** रुचि, प्रकाश करने वाले! (रुच् = रुचना, प्रकाशित होना)। **त्वम् =** तुम (सर्वनाम)। **प्र =** प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **णः =** हमारा, हमारे लिए, हमको (सर्वनाम)। **आयूंसि =** आयु (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अय = जाना, जानना, पाना, गति करना, आय - शब्द करना, शासन करना, यु = मिलना, अलग करना)। **तारिषत् =** चाहा, तार दिया, पार किया (तृ - पार जाना, पर तीर को जाना, जल पर तैरना, जीतना, जल के पार जाना, तृष - प्यास लगना, इच्छा करना, उत्कण्ठित होना, चाहना) **॥ 6 ॥**

667. देवानाम् अस्थि कृशनम् बभूव,
तत् आत्मन्-वत् चरति अप्सु अन्तः।
तत् ते बध्नामि आयुषे वर्चसे बलाय,
दीर्घायुत्वाय शत-शारदाय,
कार्शनः त्वा अभि रक्षतु ॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - देवानाम् = देवों का (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **अस्थि =** अस्थि, अस्तित्व का आधार (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, स्था- स्थित होना, ठहरना)। **कृशनम् =** कृशन को (कृश - कृश होना, सूक्ष्म होना)। **बभूव =** हो गये (भू = होना, प्राप्त होना)। **तत् =** वह, उस को (सर्वनाम)। **आत्मन्-वत् =** आत्मवत्, आत्मा के समान (आत् = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (वैदिक उपसर्ग), आत् - होना, चिरन्तन होना, नित्य होना, चेतन होना, मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना, अत् - सतत गमन करना, निरन्तर चलना, सतत चलना, जानना, पाना)। **चरति =** विचरण करता है (चर -जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)। **अप्सु =** पालन-रक्षण में (अप = जाना, जानना, पाना, पालन करना)। **अन्तः=** बीच में, भीतर (अव्यय, उपसर्ग, सर्वनाम) **तत् =** वह, उस को (सर्वनाम)। **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **बध्नामि =** बाँधता हूँ (बध - बांधना, बद्ध करना, हिंसा करना, मारना, वध करना, घृणा करना)। **आयुषे =** आयु के लिए (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अय = जाना, जानना, पाना, गति करना, आय - शब्द करना, शासन करना, यु = मिलना, अलग करना)। **वर्चसे =** प्रकाश के लिए, तेज के लिए (वर्च - प्रकाशित होना, चमकना)। **बलाय =** बल के लिए (बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना)। **दीर्घायुत्वाय =** दीर्घ आयु के लिए (दृह - बढ़ना, वृद्धिगत होना)। **शत-शारदाय =** शत शरद के लिए (शतम् = सौ, शार - निर्बल होना या करना, आसक्त होना या करना, शृ - सुनना)। **कार्शनः =** कृशन सम्बन्धी (कृश - कृश होना, सूक्ष्म होना)। **त्वा =** तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **अभि =** अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **रक्षतु =** रक्षा करो, बचाओ (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना) **॥ 7 ॥**

21. अनुवाक - 3

113. अनड्वान् सूक्त - 11

668. अनड्वान् दाधार पृथिवीम् उत् द्याम्,
अनड्वान् दाधार उरु अन्तरिक्षम्,
अनड्वान् दाधार प्रदिशः षड् उर्वीः,
अनड्वान् विश्वम् भुवनम् आ विवेश ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - अनड्वान् = अपतनशील, अनुद्यमी, व्याप्त न होने वाला (अ - नहीं, नड् - गिरना, पतन होना, अन् - नहीं, अड् - व्याप्त होना, उद्यम करना, प्रयत्न करना, अधिकार में लाना)। **दाधार =** धारण किया, स्थापित किया (धृ - धारण करना)। **पृथिवीम् =** पृथिवी को (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)। **उत् =** भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)। **द्याम् =** द्यु को, सबसे बढ़कर, विशिष्ट, प्रकाशमय (द्यु - आगे जाना, समीप जाना, द्युत् -दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, द्यै = तिरस्कार करना)। **अनड्वान् =** अपतनशील, अनुद्यमी, व्याप्त न होने वाला (अ - नहीं, नड् - गिरना, पतन होना, अन् - नहीं, अड् - व्याप्त होना, उद्यम करना, प्रयत्न करना, अधिकार में लाना)। **दाधार =** धारण किया, स्थापित किया (धृ - धारण करना)। **उरु =** बहुत, विराट (अव्यय, सर्वनाम)। **अन्तरिक्षम् =** अन्तरिक्ष, आकाश, अन्तर्दर्शी (अन्तः - बीच में, इक्ष् - स्वाद लेना, ईक्ष् -देखना)। **अनड्वान् =** अपतनशील, अनुद्यमी, व्याप्त न होने वाला (अ - नहीं, नड् - गिरना, पतन होना, अन् - नहीं, अड् - व्याप्त होना, उद्यम करना, प्रयत्न करना, अधिकार में लाना)। **दाधार =** धारण किया, स्थापित किया (धृ - धारण करना)। **प्रदिशः** = प्रदिश, दिशा (प्र - प्रकृष्ट, दिश् - दिखाना, दिखाना, समझाना, कहना, देना)। **षड् =** छह (संख्या, सर्वनाम)।

उर्वीः = सहनशील, समर्थ, विस्तृत, गतिशील, समर्थ, बहु-दुःखदायी (उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना, उर्व - सहना, समर्थ होना, मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना)। **अनड्वान्** = अपतनशील, अनुद्यमी, व्याप्त न होने वाला (अ - नहीं, नड् - गिरना, पतन होना, अन् - नहीं, अड् - व्याप्त होना, उद्यम करना, प्रयत्न करना, अधिकार में लाना)। **विश्वम्** = सबको, सब विश्व को (विश्व - सब कुछ)। **भुवनम्** = हो रहा, वर्तमान को (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **विवेश** = प्रविष्ट हुआ, प्रवेश किया (सम् - सम्यक्, वि - विशेष, विश् - प्रवेश करना, अन्तर्गमन करना, सूचना करना, प्रेरणा करना) ॥ 1 ॥

669. अनड्वान् इन्द्रः स पशुभ्यो वि चष्टे,
त्रयान् शक्रो वि मिमीते अध्वनः।
भूतम् भविष्यत् भुवना दुहानः,
सर्वा देवानाम् चरति व्रतानि ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **अनड्वान्** = अपतनशील, अनुद्यमी, व्याप्त न होने वाला (अ - नहीं, नड् - गिरना, पतन होना, अन् - नहीं, अड् - व्याप्त होना, उद्यम करना, प्रयत्न करना, अधिकार में लाना)। **इन्द्रः** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **स** = वह, उसने (सर्वनाम)। **पशुभ्यो** = पशुओं के लिए, बन्धन के लिए, दृष्टा के लिए (पश्-दृश् = देखना, पश - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **चष्टे** = खाते हैं, बोलते, देखते हैं (चष् - खाना, बोलना, देखना)। **त्रयान्** = त्रयों का, तीनों का (संख्या)। **शक्रो** = शक्तिवान्, समर्थ (शक् - शक्तिमान् होना, समर्थ होना, सक्षम होना, कर सकना, सहना, सहन करना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **मिमीते** = मान किया (मा-मि - नापना, तौलना, समाना)। **अध्वनः** = मार्ग (अधु = चलना, विचरण करना)। **भूतम्** = भूत को, हो गये को (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **भविष्यत्** = होने वाला, होना है (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **भुवना** = हो रहा, वर्तमान (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **दुहानः** = दुहने वाले (दुह - दूध निकालना, दोहना, रिक्त करना, लेना, खींचना)। **सर्वा** = सभी (सर्वनाम)। **देवानाम्** = देवों का (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **चरति** = विचरण करता है (चर -जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)। **व्रतानि** = व्रतों को (वृत् = रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ = नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना) ॥ 2 ॥

670. इन्द्रो जातो मनुष्येषु अन्तः,
घर्मः तप्तः चरति शोशुचानः।
सुप्रजाः सन् सः उत्-आरे न सर्षत्,
यो न अश्नीयात् अनडुहो विजानन् ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **इन्द्रो** = परम ऐश्वर्यवान् (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **जातो** = उत्पन्न हुआ (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **मनुष्येषु** = मनुष्यों में, विचारशीलों में (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **अन्तः** = बीच में, भीतर (अव्यय, उपसर्ग, सर्वनाम)। **घर्मः** = घर्म, अभिसिंचित तथा प्रकाशित करने वाले (घृ = सींचना, चमकना, प्रकाश होना)।

तप्तः = तपा हुआ (तप - ऐश्वर्य होना, तपना, दाह होना, तप करना, तप्त होना, तप्त करना, जलना, जलाना, तृषा होना)। **चरति =** विचरण करता है (चर -जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)। **शोशुचानः =** अत्यन्त प्रकाशमान, अत्यन्त प्रकाशित होते हुए, पवित्र करने वाले (शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना, पवित्र करना, दुःख मानना, शोक करना)। **सुप्रजाः =** अच्छे सन्तानवाले (सु - सुन्दर, अच्छा, जन् = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **सन्** = होते हुए (असन्, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **सः =** वह, उसने (सर्वनाम)। **उत्-आरे =** उत्कृष्ट गति, ज्ञान (उत् = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय), आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, रि = जाना, जानना, पाना, अर् - ऋ - गति, ज्ञान, प्राप्ति करना, फैलाना, शब्द करना, ध्वनि करना, महत्व प्रदर्शन करना, हिंसा करना)। **न =** नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **सर्षत् =** प्रगति करता है, प्राप्त करता है (सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना)। **यो =** जो (सर्वनाम)। **न =** नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **अश्नीयात् =** व्याप्त, व्यापक, प्राप्त से (अश् = भोजन करना, व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना)। **अनड्डहो =** व्याप्त नहीं होता है (अन् - नहीं, अड् - व्याप्त होना, उद्यम करना, प्रयत्न करना, अधिकार में लाना)। **विजानन् =** विशेष जानता हुआ (वि - विशेष, ज्ञा - जानना) **॥ 3 ॥**

671. अनड्वान् दुहे सुकृतस्य लोके आ एनम्,
प्याययति पवमानः पुरस्तात्।
पर्जन्यो धारा मरुतः ऊधो अस्य,
यज्ञो पयो दक्षिणा दोहो अस्य ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - अनड्वान् = अपतनशील, अनुद्यमी, व्याप्त न होने वाला (अ - नहीं, नड् - गिरना, पतन होना, अन् - नहीं, अड् - व्याप्त होना, उद्यम करना, प्रयत्न करना, अधिकार में लाना)। **दुहे =** दुहता है, दोहन के लिए (दुह् - दूध निकालना, दोहना, रिक्त करना, लेना, खींचना)। **सुकृतस्य =** सुकृत का (सु = उत्तम, अच्छा, उपसर्ग, कृ = करना)। **लोके =** लोक में (लोक् = देखना, प्रकाशित होना, बोलना)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **एनम् =** इसको, इसे (सर्वनाम)। **प्याययति =** बढ़ाओ (प्याय् = बढ़ना)। **पवमानः =** पवित्र करने वाला, पालन-रक्षा करने वाला (पु - पालन करना, रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना)। **पुरस्तात् =** पहले (अव्यय)। **पर्जन्यो =** पोषण उत्पन्न करने वाले, पर्जन्य (पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना, तृप्त करना, जन् = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **धारा =** धारण, पोषण, रक्षण (धाः = पोषण करना, रक्षण करना, देना, दान करना, धार बाँधना, धारा होना)। **मरुतः =** मरणशील का, मरुत् का (मृ = मरना, देहत्याग करना)। **ऊधो =** वाणी, शब्द, आद्र करने वाले (ऊ - शब्द करना, विश्वास करना, ऊ-अव् - रक्षा करना, उदि - उन्द् = भिगोना, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना)। **अस्य =** इसका (सर्वनाम)। **यज्ञो =** यजन (यज् = देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)। **पयो =** ज्ञान, रक्षण, गतिशील, प्रवाहमान, प्रवाहपूर्ण (पय् - गति करना, रक्षण करना, ज्ञान, गमन, प्राप्ति करना, पि - जाना, जानना, पाना, पा- पालन करना, रक्षा करना)। **दक्षिणा =** समृद्धि (दक्ष् - बढ़ना, समृद्ध होना, शीघ्र कार्य करना, चतुर होना, दक्ष होना, चलना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मार डालना)। **दोहो =** दोहन करने वाला (दुह - दूध निकालना, दोहना, रिक्त करना, लेना, खींचना)। **अस्य =** इसका (सर्वनाम) **॥ 4 ॥**

672. यस्य न ईशे यज्ञपतिः न यज्ञो,
न अस्य दाता ईशे न प्रतिग्रहीता।
यो विश्वजित् विश्वभृत् विश्वकर्मा,
घर्मम् नो ब्रूत यतमः चतुष्पात् ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - यस्य = जिसका (सर्वनाम)। **न =** नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **ईशे =** अधिकार किया, शासन किया, शासन करता है (ईश - अधिकार होना)। **यज्ञपतिः =** यज्ञपति, यजन का स्वामी, रक्षक (यज - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना, पत् - ऐश्वर्य होना)। **न =** नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **यज्ञो =** यजन (यज् = देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)। **न =** नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **अस्य =** इसका (सर्वनाम)। **दाता =** देने वाला (दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना)। **ईशे =** अधिकार किया, शासन किया, शासन करता है (ईश - अधिकार होना)। **न =** नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **प्रतिग्रहीता =** ग्रहण किया हुआ (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, अव्यय, गृह् = ग्रहण करना)। **यो =** जो (सर्वनाम)। **विश्वजित् =** विश्व को जीतने वाला (विश्व = सब, जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)। **विश्वभृत् =** सबका भरण-पोषण करने वाला, सबका भरण-पोषण करो (विश्व - सब, भृ = पूर्ण करना, भरना, धारण-पोषण करना)। **विश्वकर्मा** = हे विश्वकर्मा, विश्वकर्मा, सभी कर्म करने वाला (विश्व = सभी, कृ = करना)। **घर्मम् =** घर्म को, अभिसिंचित तथा प्रकाशित करने वाले को (घृ = सींचना, चमकना, प्रकाश होना)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **ब्रूत =** कहता है (ब्रू - कहना, बोलना)। **यतमः =** यत्न करने वाला (यत - यत्न करना, उद्योग करना, निश्चय करना, ठहराना)। **चतुष्पात् =** चार पैर वाले (चतुः - चार, संख्या, पद - चलना, स्थानान्तर करना) **॥ 5 ॥**

673. येन देवाः स्वः आरुरुहुः,
हित्वा शरीरम् अमृतस्य नाभिम्।
तेन गेष्म सुकृतस्य लोकम्,
घर्मस्य व्रतेन तपसा यशस्यवः ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - येन = जिससे, जिसके द्वारा (सर्वनाम)। **देवाः =** विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **स्वः =** उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना)। **आरुरुहुः =** बढ़ने वाले, चढ़ने वाले, बढ़ें, चढ़ें (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, रुह - बढ़ना, ऊपर जाना, चढ़ना, बीज से उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना)। **हित्वा =** बढ़ाकर, हित, गति, वृद्धि कर (हि - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना)। **शरीरम् =** शरीर को (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, शृ - मार डालना, दुःख देना, पीड़ा करना, फटना, हिंसा करना, मारना, श्रि - सेवा करना, आश्रय करना)। **अमृतस्य** = अमृत, अविनाशी का (अ - नहीं, मृ - मरना)। **नाभिम् =** नाभि को (नभ - नष्ट होना, दुःख देना या मार डालना, हिंसा करना, मध्य में स्थित होना, केन्द्र होना)। **तेन =** उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **गेष्म =** पता लगाते हैं, ढूँढ़ते हैं (गेष् = ढूँढ़ना, पता लगाना)। **सुकृतस्य =** सुकृत का (सु = उत्तम, अच्छा, उपसर्ग, कृ = करना)। **लोके =** लोक में (लोक् = देखना, प्रकाशित होना, बोलना)। **लोकम् =** लोक को, दर्शन को, प्रकाश को, वाणी को (लोक् = देखना, प्रकाशित होना, बोलना)। **घर्मस्य =** घर्म का, अभिसिञ्चन, प्रकाश का (घृ = सींचना, चमकना, प्रकाश होना)। **व्रतेन =** व्रत द्वारा (वृत् = रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ = नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना)। **तपसा =** तप द्वारा (तप - ऐश्वर्य होना, तपना, दाह होना, तप करना, तप्त होना, तप्त करना, जलना, जलाना, तृषा होना)। **यशस्यवः =** यश को चाहते हुए (यश् - प्रख्यात होना, कीर्ति होना, व्याप्त होना, फैलना) **॥ 6 ॥**

674. इन्द्रो रूपेण अग्निः वहेन,
प्रजापतिः परमेष्ठी विराट्।
विश्वानरे अक्रमत वैश्वानरे अक्रमत,

अनडुहि अक्रमत सो अदृंहयत सो अधारयत् ॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **इन्द्रो =** परम ऐश्वर्यवान् (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **रूपेण =** रचना, आकार, रूप द्वारा (रूप - रूप बनाना, आकार बनाना)। **अग्निः =** अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **वहेन =** वहन करने वाले द्वारा (वह् = वहन करना, ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)। **प्रजापतिः =** प्रजापति, प्रजा का रक्षक, पालक (प्र - प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न करना, पत - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना)। **परमेष्ठी =** परम् में स्थित (परम् = परन्तु, फिर, परम् (सर्वनाम)। **विराट् =** विराट, प्रकाशित, विशेष वक्ता (वि = विशेष, विना, विलोम, राज् = प्रकाशित होना, शोभित होना, चमकना, रट् - शब्द करना, बोलना, सम्भाषण करना)। **विश्वानरे =** विश्वनायक में (विश्व - सब, नृ - चलना, ले जाना, विनय होना)। **अक्रमत =** आक्रान्त किया, वृद्धि की, रक्षा की (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अ = नहीं, उपसर्ग, क्रम् = जाना, बढ़ना, रक्षा करना)। **वैश्वानरे =** विश्वनायक में (विश्व - सब, नृ - चलना, ले जाना, विनय होना)। **अक्रमत =** आक्रान्त किया, वृद्धि की, रक्षा की (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अ = नहीं, उपसर्ग, क्रम् = जाना, बढ़ना, रक्षा करना)। **अनडुहि =** अपतित होता है, व्यापक नहीं होता है (अ - नहीं, नड् - गिरना, पतन होना, अन् - नहीं, अड् - व्याप्त होना, उद्यम करना, प्रयत्न करना, अधिकार में लाना, वह् - वहन करना, ले जाना)। **अक्रमत =** आक्रान्त किया, वृद्धि की, रक्षा की (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अ = नहीं, उपसर्ग, क्रम् = जाना, बढ़ना, रक्षा करना)। **सो =** वह, उसने (सर्वनाम)। **अदृंहयत =** दृढ़ किया, बढ़ाया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, दृंह् = बढ़ना, दृढ़ होना, दृढ़ करना)। **सो =** वह, उसने (सर्वनाम)। **अधारयत् =** धारण किया (अ - भूतकालिक उपसर्ग, धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना) **॥ 7 ॥**

675. मध्यम् एतत् अनडुहो,
यत्र एष वहः आहितः।
एतावत् अस्य प्राचीनम्,
यावान् प्रत्यङ् सम्-आहितः ॥ 8 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **मध्यम् =** मध्य को (सर्वनाम)। **एतत् =** यह (सर्वनाम)। **अनडुहो =** व्याप्त नहीं होता है (अन् - नहीं, अड् - व्याप्त होना, उद्यम करना, प्रयत्न करना, अधिकार में लाना)। **यत्र =** जहाँ (सर्वनाम)। **एष =** यह (सर्वनाम)। **वहः =** वहन करो, ले जाओ (वह् = वहन करना, ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)। **आहितः =** व्याप्त, प्रगतिशील, वृद्धिशील (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, अह - फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, हि - चलना, जाना, जानना, पाना, वृद्धि करना)। **एतावत् =** इनके अनुसार (अव्यय)। **अस्य =** इसका (सर्वनाम)। **प्राचीनम् =** प्राचीन, पहले, पूर्व कालीन (अव्यय)। **यावान् =** गति, ज्ञान, प्राप्त करने वाले (या - जाना, जानना, पाना)। **प्रत्यङ् =** प्रत्येक (अव्यय)। **सम्-आहितः =** समाहित, सम्यक् ग्रहण किया गया (सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, अह - फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, हि - चलना, जाना, जानना, पाना, वृद्धि करना) **॥ 8 ॥**

676. यो वेद अनडुहो दोहान्,
सप्त अनुप-दस्वतः।
प्रजाम् च लोकम् च आप्नोति,
तथा सप्त-ऋषयो विदुः ॥ 9 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **यो =** जो (सर्वनाम)। **वेद =** ज्ञान, जानो, जानता है (विद् = जानना, समझना, विद्यमान होना)। **अनडुहो =** व्याप्त नहीं होता है (अन् - नहीं, अड् - व्याप्त होना, उद्यम करना, प्रयत्न करना, अधिकार में लाना)। **दोहान् =** दोहन

को (दुह - दूध निकालना, दोहना, रिक्त करना, लेना, खींचना)। **सप्त =** पूर्ण, संलग्न (सप - पूर्ण होना, पूर्ण ज्ञान होना, पूरा समझना, पूर्णतया जानना, संसक्त होना, संलग्न होना, मिलाप होना)। **अनुप-दस्वतः =** अविनाशी, क्षयहीन (अन् - नहीं, उप = समीप, उपसर्ग, दस् - रक्षण, पालन, स्थापन करना, देखना, नष्ट होना, नष्ट करना, डसना)। **प्रजाम् =** प्रजा को (प्र - बहुत, प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **च =** और (अव्यय)। **लोकम् =** लोक को, दर्शन को, प्रकाश को, वाणी को (लोक् = देखना, प्रकाशित होना, बोलना)। **च =** और (अव्यय)। **आप्नोति =** व्याप्त, व्यापक होता है (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)। **तथा =** उसी प्रकार (अव्यय)। **सप्त-ऋषयो =** सप्त-ऋषिगण (सप्त = सात (संख्या), ऋष् - जानना, जाना, पाना, अन्तदृष्टि होना, अन्तर्गमन करना, सूक्ष्मता से भीतर देखना)। **विदुः =** विद्वान् (विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना) **॥ 9 ॥**

677. पद्भिः सेदिम् अवक्रामन्,
इराम् जङ्घाभिः उत्-खिदन्।
श्रमेण अनड्वान् कीलालम्,
कीनाशः च अभि गच्छतः ॥ 10 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - पद्भिः = पदों द्वारा, पदों के साथ, भूषण के साथ (पद् - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना)। **सेदिम् =** हिंसा को, प्रगतिशील को (सिद् = हिंसा करना, अवसाद होना, जाना, जानना, पाना, सिध् = जाना, जानना, पाना, सिद्ध होना, जीत होना, पूर्ण होना)। **अवक्रामन् =** अवक्रम करने वाले, अवक्रमण करते हुए (अव = नीचे, दूर, प्राप्त, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, क्रम् = चलना, निर्भयता से चलना, रक्षा करना, बढ़ना, अवक्रमण करना, अतिक्रमण करना)। **इराम् =** इरा को, ईर्ष्या को (इर् - ईर्ष्या करना, मत्सर करना)। **जङ्घाभिः =** जङ्घाओं द्वारा, जानने वालों द्वारा (जङ्घ् - गति करना, जाना, जानना, पाना)। **उत् =** भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)। **खिदन् =** खेद करता हुआ, भय, सताता हुआ (खिद्-खेद् = भय दिखाना, सताना, दुःख देना)। **श्रमेण** = श्रम द्वारा, श्रम से (श्रम - थकना, श्रान्त होना, पीड़ित होना, दुःखित होना, तपश्चर्या करना, व्रत करना)। **अनड्वान् =** अपतनशील, अनुद्यमी, व्याप्त न होने वाला (अ - नहीं, नड् - गिरना, पतन होना, अन् - नहीं, अड् - व्याप्त होना, उद्यम करना, प्रयत्न करना, अधिकार में लाना)। **कीलालम् =** बाँधने वाला, कील लगाने वाला, भेजने वाला, खेलने वाला (कील् = बाँधना, कील लगाना, किल् = श्वेत होना, भेजना, खेलना)। **कीनाशः =** विद्वान् (कि - जानना)। **च =** और (अव्यय)। **अभि =** अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **गच्छतः =** जाओ (गम्-गच्छ् = जाना) **॥ 10 ॥**

678. द्वादश वा एता रात्रीः,
व्रत्याः आहुः प्रजापतेः।
तत्र उप ब्रह्म यो वेद,
तत् वा अनडुहो व्रतम् ॥ 11 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - द्वादश = बारह (द्वादश - बारह, संख्या)। **वा =** अथवा (अव्यय)। **एता =** ये (सर्वनाम)। **रात्रीः =** रात्री, दानी, अनुदान (रा - देना, मिल जाना)। **व्रत्याः =** व्रत योग्य (वृत् = रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ = नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना)। **आहुः =** आदान-प्रदान किया हुआ, आहुत, आह्वान किये, बुलाये हुए, व्याप्त (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, अह - फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, हु - दान करना, आदान-प्रदान करना)। **प्रजापतेः =** प्रजा का पालन करने वाले का (प्र - प्रकृष्ट, जन्

- उत्पन्न करना, पत - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना)। **तत्र =** वहाँ (सर्वनाम)। **उप =** समीप (उपसर्ग)। **ब्रह्म =** ब्रह्म, महान्, बड़ा, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना) **यो =** जो (सर्वनाम)। **वेद =** ज्ञान, जानो, जानता है (विद् = जानना, समझना, विद्यमान होना)। **तत् =** वह, उस को (सर्वनाम)। **वा =** अथवा (अव्यय)। **अनडुहो =** व्याप्त नहीं होता है (अन् - नहीं, अड् - व्याप्त होना, उद्यम करना, प्रयत्न करना, अधिकार में लाना)। **व्रतम् =** व्रत को (वृत् = रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ = नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना) **॥ 11 ॥**

679. दुहे सायम् दुहे प्रातः,
दुहे मध्यन्दिनम् परि।
दोहा ये अस्य सम्-यन्ति,
तान् विद्म अनुप-दस्वतः ॥ 12 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - दुहे = दुहता है, दोहन के लिए (दुह् - दूध निकालना, दोहना, रिक्त करना, लेना, खींचना)। **सायम् =** सन्ध्या, सायंकाल (अव्यय)। **दुहे =** दुहता है, दोहन के लिए (दुह् - दूध निकालना, दोहना, रिक्त करना, लेना, खींचना)। **प्रातः =** पूर्ण, तृप्त (प्रा- पूर्ण करना, तृप्त करना)। **दुहे =** दुहता है, दोहन के लिए (दुह् - दूध निकालना, दोहना, रिक्त करना, लेना, खींचना)। **मध्यन्दिनम् =** मध्य दिन को (मध्य - मध्य (सर्वनाम), दी = क्षय होना, ह्रास होना, नष्ट होना, झरना)। **परि =** परे, सभी ओर, साथ (उपसर्ग)। **दोहा =** दोहन करने वाला (दुह - दूध निकालना, दोहना, रिक्त करना, लेना, खींचना)। **ये =** जो (सर्वनाम)। **अस्य =** इसका (सर्वनाम)। **सम्-यन्ति =** सम्-प्राप्त होते हैं, नियमन-नियन्त्रण, पोषण करते हैं (सम् = सम्यक् रूप से, भली भाँति, उपसर्ग, यम् = रोकना, स्वाधीन रखना, आवरण करना, पोषण करना, नियमन करना, यन - उद्धार करना, या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, जानना)। **तान् =** उनको (सर्वनाम)। **विद्म =** विद्म, जानने वाले (विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना, विद्यमान होना, विचार करना) **अनुप-दस्वतः =** अविनाशी, क्षयहीन (अन् - नहीं, उप = समीप, उपसर्ग, दस् - रक्षण, पालन, स्थापन करना, देखना, नष्ट होना, नष्ट करना, डसना) **॥ 12 ॥**

114. रोहिणी वनस्पति सूक्त - 12

680. रोहणि असि रोहणी,
अस्थ्नः छिन्नस्य रोहणी।
रोहय इदम् अरुन्धति ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - रोहणि = हे रोहणि (रुह - बढ़ना, ऊपर जाना, चढ़ना, बीज से उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना)। **असि =** हो (अस् - होना)। **रोहणी =** रोहिणी, आरोहण करने वाली (रुह - बढ़ना, ऊपर जाना, चढ़ना, बीज से उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना)। **अस्थ्नः =** अस्थियों द्वारा (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, स्था- स्थित होना, ठहरना)। **छिन्नस्य =** छिन्न का (छिद् - छेदना, काटना, छिन्न-भिन्न करना)। **रोहणी =** रोहिणी, आरोहण करने वाली (रुह - बढ़ना, ऊपर जाना, चढ़ना, बीज से उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना)। **रोहय =** बढ़ा, चढ़ा (रुह - बढ़ना, ऊपर जाना, चढ़ना, बीज से उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना)। **इदम् =** यह, इसको (सर्वनाम)। **अरुन्धति** = हे अरुन्धति (अ - नहीं, रुध - बढ़ना, गर्व करना, चाहना, रोकना, कृपालु होना, दया करना, अनुमोदन देना, शोक करना, रोना) **॥ 1 ॥**

681. यत् ते रिष्टम् यत् ते द्युतम्,

अस्ति पेष्ट्रम् ते आत्मनि।
धाता तत् भद्रया पुनः,
सम् दधत् परुषा परुः॥ 2॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **रिष्टम्** = हिंसा करने वाले को (रिश्-रिष - हिंसा करना, मार डालना या दुःख देना, मारने का यत्न करना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **द्युतम्** = प्रकाशमान को (द्यु - आगे जाना, समीप जाना, द्युत् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, द्यै = तिरस्कार करना, पृथु = विस्तार होना, फेंकना, उड़ाना, भेजना, प्रेरणा करना)। **अस्ति** = है (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **पेष्ट्रम्** = निश्चित को, स्थित को (पेष् = ठहराना, निश्चय करना, चपलता से यत्न करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **आत्मनि** = आत्मा में (आत् = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (वैदिक उपसर्ग), आत् - होना, चिरन्तन होना, नित्य होना, चेतन होना, मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना, अत् - सतत गमन करना, निरन्तर चलना, सतत चलना, जानना, पाना)। **धाता** = धारण करने वाला (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)। **तत्** = वह, उस को (सर्वनाम)। **भद्रया** = भद्र, कल्याणकारी द्वारा (भदि-भन्द् = सुख होना, शुभ कर्म करना, कल्याण होना)। **पुनः** = फिर (अव्यय)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **दधत्** = धारण किया (धा-दध् - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)। **परुषा** = परुष (पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना)। **परुः** = परु, रक्षक (पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना)॥ 2॥

682. सम् ते मज्जा मज्ज्ञा,
भवतु सम् उ ते परुषा परुः।
सम् ते मांसस्य विस्रस्तम्,
सम् अस्थि अपि रोहतु॥ 3॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **मज्जा** = मज्जा, शुद्ध (मज्ज - शुद्ध करना, स्नान करना)। **मज्ज्ञा** = मज्जा, शुद्ध (मज्ज - शुद्ध करना, स्नान करना)। **भवतु** = हो, हो जाये (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **उ** = निश्चय ही, भी (निपात, अव्यय)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **परुषा** = परुष (पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना)। **परुः** = परु, रक्षक (पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **मांसस्य** = मास का (मस् = रूपान्तरण करना, मापन करना, मापना)। **विस्रस्तम्** = विस्रस्त को, विशेष सृजन को (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग), सृ = जाना, सरकना, सृज् - सृजन करना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **अस्थि** = अस्थि, अस्तित्व का आधार (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, स्था- स्थित होना, ठहरना)। **अपि** = भी, निकट (अव्यय)। **रोहतु** = बढ़ें, चढ़ें (रुह - बढ़ना, ऊपर जाना, चढ़ना, बीज से उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना)॥ 3॥

683. मज्जा मज्ज्ञा सम् धीयताम्,
चर्मणा चर्म रोहतु।
असृक् ते अस्थि रोहतु,

मांसम् मांसेन रोहतु ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - मज्जा = मज्जा, शुद्ध (मज्ज - शुद्ध करना, स्नान करना)। **मज्ज्ञा =** मज्जा, शुद्ध (मज्ज - शुद्ध करना, स्नान करना)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **धीयताम् =** धारण करो (धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि, प्रज्ञा होना)। **चर्मणा =** चर्म, आवरण द्वारा, से (चर्म् - चर्म होना, आवरण होना)। **चर्म =** चर्म, आवरण (चर्म् - चर्म होना, आवरण होना)। **रोहतु =** बढ़ें, चढ़ें (रुह - बढ़ना, ऊपर जाना, चढ़ना, बीज से उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना)। **असृक् =** गया, सरका (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, सृ = जाना, सरकना)। **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **अस्थि =** अस्थि, अस्तित्व का आधार (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, स्था- स्थित होना, ठहरना)। **रोहतु =** बढ़ें, चढ़ें (रुह - बढ़ना, ऊपर जाना, चढ़ना, बीज से उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना)। **मांसम् =** मांस को (मस् = रूपान्तरण करना, मापन करना, मापना)। **मांसेन =** मास द्वारा (मस् = रूपान्तरण करना, मापन करना, मापना)। **रोहतु =** बढ़ें, चढ़ें (रुह - बढ़ना, ऊपर जाना, चढ़ना, बीज से उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना) **॥ 4 ॥**

684. लोम लोम्ना सम् कल्पया,
त्वचा सम् कल्पया त्वचम्।
असृक् ते अस्थि रोहतु,
छिन्नम् सम् धेहि ओषधे ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - लोम = लोम (लुम-लोम - लोम होना)। **लोम्ना =** लोम द्वारा (लुम-लोम - लोम होना)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **कल्पया =** कल्पना कर, बनाकर, रचना कर (कल्प् - कल्पना करना, विचार करना, बनाना, रचना करना, शक्तिमान होना, समर्थ होना)। **त्वचा =** त्वचा, चर्म, खाल (त्वच - आच्छादित करना, लपेटना, ढांकना)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **कल्पया =** कल्पना कर, बनाकर, रचना कर (कल्प् - कल्पना करना, विचार करना, बनाना, रचना करना, शक्तिमान होना, समर्थ होना)। **त्वचम् =** त्वचा, चर्म, खाल को (त्वच - आच्छादित करना, लपेटना, ढांकना)। **असृक् =** गया, सरका (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, सृ = जाना, सरकना)। **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **अस्थि =** अस्थि, अस्तित्व का आधार (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, स्था- स्थित होना, ठहरना)। **रोहतु =** बढ़ें, चढ़ें (रुह - बढ़ना, ऊपर जाना, चढ़ना, बीज से उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना)। **छिन्नम् =** छिन्न (छिद्- छेदना, काटना, छिन्न-भिन्न करना)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **धेहि =** धारण करें (धा-धि-धी - धारण करना, पहनना, पोषण करना, रक्षण करना, देना)। **ओषधे =** हे ओषधि (उषध्-ओषध् - चिकित्सा करना, रोगमुक्त करना) **॥ 5 ॥**

685. सः उत्-तिष्ठ प्र इहि प्र द्रव,
रथः सुचक्रः सुपविः सुनाभिः।
प्रति तिष्ठ ऊर्ध्वः ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - स = वह, उसने (सर्वनाम)। **उत्-तिष्ठ =** उठो (उत् = ऊपर, तिष्ठ् = ठहरना, उत्-तिष्ठ् - उठना, खड़े होना)। **प्र =** प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **इहि =** आओ, जानों (इ = जाना, जानना, पाना)। **प्र =** प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **द्रव =** प्रवाही, ज्ञान (द्रु - पिघलना, बहना, चलना, जाना, जानना, पाना, अनुसरण करना)। **रथः =** रथ (रम - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना)। **सुचक्रः =** सुचक्र,

उत्तम चक्रण करने वाला (सु = उत्तम, सुष्ठु, अच्छा, सुन्दर (उपसर्ग), चकृ = चक्रण करना, गोलाकार घूमना)। **सुपविः** = सुपवि, उत्तम पवित्र करने वाला (सु = उत्तम, सुष्ठु, अच्छा, सुन्दर (उपसर्ग), पु - पालन करना, रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना)। **सुनाभिः** = सुनाभि (सु = उत्तम, सुष्ठु, अच्छा, सुन्दर (उपसर्ग), नभ - नष्ट होना, दुःख देना या मार डालना, हिंसा करना, मध्य में स्थित होना, केन्द्र होना)। **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग)। **तिष्ठ** = उठो, ठहरो, खड़े हो (तिष्ठ् = ठहरना, खड़ा होना)। **ऊर्ध्वः** = ऊर्ध्व, उच्च, ऊपर (सर्वनाम) **॥ 6 ॥**

686. यदि कर्तम् पतित्वा सम्-शश्रे,
यदि वा अश्मा प्रहृतो जघान।
ऋभू रथस्य-इव अङ्गानि,
सम् दधत् परुषा परुः ॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - यदि = यदि (अव्यय)। **कर्तम्** = कर्तन, छेदन को, कर्तन, छेदन करो (कृत् - काटना, छेदना, घेरना, कृ - करना)। **पतित्वा** = पति, अधिपति, रक्षक, पालक द्वारा (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **सम्-शश्रे** = संहार कर रहा है (सम् = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग), शृ = मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना)। **यदि** = यदि (अव्यय)। **वा** = अथवा (अव्यय)। **अश्मा** = व्याप्त, व्यापक, प्राप्त (अश् = भोजन करना, व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना)। **प्रहृतो** = प्रहृत, प्रकृष्ट हृदय वाला (प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग), हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, लेना, ग्रहण करना, नष्ट करना)। **जघान** = हिंसा की, मार दिया, हनन किया (हन्-घ्न - हिंसा करना)। **ऋभू** = ऋभू (ऋ - जाना, जानना, पाना, भा - प्रकाश होना)। **रथस्य-इव** = रमणीय के समान, रथ के समान (रम - रमना, रमण करना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना, इव = समान, की भाँति, के समान (अव्यय))। **अङ्गानि** = विद्वान्, प्रगतिशील, पाने वाले (अंग् = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **दधत्** = धारण किया (धा-दध् - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)। **परुषा** = परुष (पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना)। **परुः** = परु, रक्षक (पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना) **॥ 7 ॥**

115. रोग निवारण सूक्त - 13

687. उत देवाः अव-हितम्,
देवाः उत् नयथा पुनः।
उत आगः चक्रुषम् देवा,
देवा जीवयथा पुनः ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - उत = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **अव-हितम्** = अव-हित, अवगति, अव-वृद्धि को (अव = नीचे, दूर, प्राप्त (अव्यय), हि - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना)। **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **उत्** = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)। **नयथा** = ले जाओ (नी - नय - जाना, हिलना, पहुँचना, संरक्षण करना)। **पुनः** = फिर (अव्यय)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **आगः** = कुटिलता, आदान (आ = सम्यक्, समन्तात्, सम्पूर्ण, अग् - जाना, जानना, पाना, कुटिल गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **चक्रुषम्** = किये हुए को (कृ - करना)। **देवा** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति

करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **देवा** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **जीवयथा** = जीव युक्त करो (जीव् - जीवन होना, प्राणवान् होना, प्राण धारण करना, जीवन धारण करना)। **पुनः** = फिर (अव्यय) ॥ **1** ॥

688. द्वौ इमौ वातौ वातः,
आ सिन्धोः आ परावतः।
दक्षम् ते अन्यो आवातु,
वि अन्यो वातु यत् रपः ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **द्वौ** = दो, द्वय (संख्या)। **इमौ** = ये दो (सर्वनाम)। **वातौ** = वात युगल (वात - सुखी होना, आनन्द करना, सेवा करना, जाना, वा - गति करना, बहना, पवन की भाँति चलना)। **वातः** = वात, वायु के समान तीव्र गति वाले (वात - सुखी होना, आनन्द करना, सेवा करना, जाना, वा - गति करना, बहना, पवन की भाँति चलना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **सिन्धोः** = सिन्धु का (सिध - सिद्ध होना, पूर्ण होना, जाना, जानना, पाना, अध्ययन करना, दीक्षा देना, शुभ कार्य करना, सिञ् - बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **परावतः** = रक्षा करो, पालन करो (परावतः - पराया, लौटा हुआ, अव्यय, परा - परम, परे, पीछे, विपरीत (अव्यय) अव् - रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)। **दक्षम्** = दक्ष को (दक्ष् - बढ़ना, समृद्ध होना, शीघ्र कार्य करना, चतुर होना, दक्ष होना, चलना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मार डालना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **अन्यो** = कोई और, इतर, अन्य (सर्वनाम)। **आवातु** = आओ (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग), वात - सुखी होना, आनन्द करना, सेवा करना, जाना, वा - गति करना, बहना, पवन की भाँति चलना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **अन्यो** = कोई और, इतर, अन्य (सर्वनाम)। **वातु** = प्रवाहित हो, वायु के समान चलें (वात - सुखी होना, आनन्द करना, सेवा करना, जाना, वा - गति करना, बहना, पवन की भाँति चलना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **रपः** = वाणी (रप - स्पष्ट बोलना) ॥ **2** ॥

689. आ वात वाहि भेषजम्,
वि वात वाहि यत् रपः।
त्वम् हि विश्वभेषज,
देवानाम् दूतः ईयसे ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **वात** = वात, वायु के समान तीव्र गति वाले (वात - सुखी होना, आनन्द करना, सेवा करना, जाना, वा - गति करना, बहना, पवन की भाँति चलना)। **वाहि** = वहन करों (वह् = वहन करना ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)। **भेषजम्** = भेषज को, औषधि को (भिषज् - रोग मुक्त करना, चिकित्सा करना, नष्ट करना, भेष - डरना, जाना, जानना, पाना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **वात** = वात, वायु के समान तीव्र गति वाले (वात - सुखी होना, आनन्द करना, सेवा करना, जाना, वा - गति करना, बहना, पवन की भाँति चलना)। **वाहि** = वहन करों (वह् = वहन करना ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **रपः** = वाणी (रप - स्पष्ट बोलना) **त्वम्** = तुम (सर्वनाम)। **हि** = ही, निश्चय (अव्यय)। **विश्वभेषज** = हे विश्वभेषज!, हे सभी औषधियाँ! (विश्वः = सभी। भिषज् - रोग मुक्त करना, चिकित्सा करना, नष्ट करना, भेष - डरना, जाना, जानना, पाना)। **देवानाम्** = देवों का (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **दूतः** = गतिशील, विद्वान्, परिश्रमी, दुःखदायी (दू = जाना, जानना, पाना, सुगन्ध लेना, श्रम करना, जलना, तप्त होना, दुःख होना, दुःख देना)। **ईयसे** = जाते हो (ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना) ॥ **3** ॥

690. त्रायन्ताम् इमम् देवाः,
त्रायन्ताम् मरुताम् गणाः।
त्रायन्ताम् विश्वा भूतानि,
यथा अयम् अरपाः असत्॥ 4॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **त्रायन्ताम् =** रक्षा करें (त्रै = पालन करना, रक्षा करना, पोषण करना)। **इमम् =** इसको (सर्वनाम)। **देवाः =** विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **त्रायन्ताम् =** रक्षा करें (त्रै = पालन करना, रक्षा करना, पोषण करना)। **मरुताम् =** मरुतों का, मरणशीलों का (मृ = मरना, देहत्याग करना)। **गणाः =** गणक, गण, समूह (गण् - गिनना, शब्द करना, नापना, मानना, समझाना, समूह बनाना)। **त्रायन्ताम् =** रक्षा करें (त्रै = पालन करना, रक्षा करना, पोषण करना)। **विश्वा =** विश्व, सभी, सब (सर्वनाम)। **भूतानि =** भूतों को, उत्पन्न हुओं को (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **यथा =** जिससे, जैसे, जिस प्रकार (अव्यय)। **अयम् =** यह (सर्वनाम)। **अरपाः =** प्राप्त का रक्षक-पालक, गति-व्यवस्था का रक्षक (ऋ-अर् = जाना, जानना, पाना, महत्व दिखाना, शब्द करना, ध्वनि करना, हिंसा करना, रप - स्पष्ट बोलना, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **असत् =** हो जाये (अस् = होना)॥ **4**॥

691. आ त्वा अगमम् शंतातिभिः,
अथो अरिष्टतातिभिः।
दक्षम् ते उग्रम् आ अभारिषम्,
परा यक्ष्मम् सुवामि ते॥ 5॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **त्वा =** तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **अगमम् =** गये, अगम को (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अग् = जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, गति करना, घूमना, कुटिल गति करना, टेढ़ा जाना, लेना, ग्रहण करना, गम् = जाना, जानना, पाना)। **शंतातिभिः =** कल्याणकारी कर्मों द्वारा (शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)। **अथो =** अब, इसके बाद, इसके अनन्तर (अव्यय)। **अरिष्टतातिभिः =** अहिंसकों, गतिशीलों, व्यापक का विस्तार करने वालों, अरिष्टता का चुम्बन करने वालों द्वारा (अ - नहीं, ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, रिष- हिंसा करना, मार डालना, दुःख देना, मारने का यत्न करना, तन् - विस्तार करना, तय - चुम्बन करना)। **दक्षम् =** दक्ष को (दक्ष् - बढ़ना, समृद्ध होना, शीघ्र कार्य करना, चतुर होना, दक्ष होना, चलना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मार डालना)। **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **उग्रम् =** उग्र को (उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना, उग् - उग्र - उग्र होना, तेज होना)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **अभारिषम् =** हरण किया (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, हृ - प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, लेना, ग्रहण करना, नष्ट करना)। **परा =** परम्, परे, पीछे, विपरीत (अव्यय)। **यक्ष्मम् =** पूज्य, श्रेष्ठ को (यक्ष = पूजा करना, पूजना, सत्कार करना)। **सुवामि =** भेजता हूँ (सू = भेजना, उड़ाना, कार्य में लगाना)। **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)॥ **5**॥

692. अयम् मे हस्तो भगवान्,
अयम् मे भगवत्तरः।
अयम् मे विश्वभेषजो,

अयम् शिव-अभिमर्शनः ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **अयम्** = यह (सर्वनाम)। **मे** = मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **हस्तो** = हाथ (हस्त - देना, लेना, ग्रहण करना)। **भगवान्** = भगवान् (भग्-भज् = सेवा करना, सेवन करना, सेवित होना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)। **अयम्** = यह (सर्वनाम)। **मे** = मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **भगवत्तरः** = अत्यन्त सेवनीय, सेवायोग्य (भग्-भज् = सेवा करना, सेवन करना, सेवित होना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)। **अयम्** = यह (सर्वनाम)। **मे** = मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **विश्वभेषजो** = विश्वभेषज, सभी औषधियाँ (विश्वः = सभी, भिषज् - रोग मुक्त करना, चिकित्सा करना, नष्ट करना, भेष - डरना, जाना, जानना, पाना)। **अयम्** = यह (सर्वनाम)। **शिव-अभिमर्शनः** = शिव-अभिमर्श हो, कल्याणकारी-सभी ओर देखते हो, शिव-विचार करते हो, शिव-स्पर्श करते हो (शिव् = कल्याण करना, अभि = अभिमुख, सभी ओर, सर्वथा, मृश् - देखना, छूना, विचार करना) ॥ 6 ॥

693. हस्ताभ्याम् दश-शाखाभ्याम्,
जिह्वा वाचः पुरोगवी।
अनामयित्नुभ्याम् हस्ताभ्याम्,
ताभ्याम् त्वा अभि मृशामसि ॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **हस्ताभ्याम्** = दोनों हस्त द्वारा, के लिए, से (हस्त -देना, लेना, ग्रहण करना)। **दश-शाखाभ्याम्** = दश-शाखाओं द्वारा, के लिए, से (दश = दश, दस, संख्या, शाख् = व्याप्त होना, फैलना, शाखा निकलना)। **जिह्वा** = जिह्वा (जिह = जाना, जानना, पाना)। **वाचः** = वाणी (वच - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)। **पुरोगवी** = पुरोगामी, पुरोवाची, वाणी (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, गम् = जाना, जानना, पाना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)। **अनामयित्नुभ्याम्** = निरोगी, रोगमुक्त द्वारा, के लिए, से (अन्-आ-अमयित्नुभ्याम्, अन् - नहीं, आ - समन्तात्, पूर्णतः, अम् - गति करना, जानना, जाना, पाना, शब्द करना, खाना, सेवा करना, रोग होना)। **हस्ताभ्याम्** = दोनों हस्त द्वारा, के लिए, से (हस्त - देना, लेना, ग्रहण करना)। **ताभ्याम्** = उनके लिए (सर्वनाम)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **मृशामसि** = विचार करते हैं, स्पर्श करते हैं (मृश - विचार करना, स्पर्श करना, देखना) ॥ 7 ॥

116. स्वर्ज्योति प्राप्ति सूक्त - 14

694. अजो हि अग्नेः अजनिष्ट शोकात्,
सो अपश्यत् जनितारम् अग्रे।
तेन देवा देवताम् अग्रे आयन्,
तेन रोहान् रुरुहुः मेध्यासः ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - **अजो** = गतिमान, अजन्मा ने **हि** = ही, निश्चय **अग्नेः** = अग्नि की **शोकात्** = पवित्रता से **अजनिष्ट** = गतिमान, उत्पन्न किया **सो** = उसने **अग्रे** = पहले **जनितारम्** = उत्पन्न करने वाले को **अपश्यत्** = देखा **तेन** = उसके द्वारा **देवा** = देवगणों ने **देवताम्** = देवत्व को, दिव्यता को **अग्रे** = पहले **आयन्** = प्राप्त किया **तेन** = उसके द्वारा **मेध्यासः** = मेधावियों ने **रोहान्** = वृद्धि योग्य **रुरुहुः** = बढ़ें, चढ़ें ॥ 1 ॥

भावार्थ - अजन्मा परमात्मा ने ही अग्नि की पवित्रता से सम्पूर्ण जीव-निर्जीव, चराचर सृष्टि को उत्पन्न किया। यह सृष्टि उससे ही गतिमान है। जो उत्पन्न हुआ, उसने पहले उत्पन्न करने वाले परमात्मा को देखा। उसके द्वारा देवगणों ने

देवत्व को, दिव्यता को प्राप्त किया। उसके द्वारा मेधावियों ने वृद्धि को प्राप्त किया। तुम्हारे लिए आरण्य, सम्यक् गमनीय, वचनीय शरभ को अनुदिशा देता हूँ। उसके द्वारा चुनने वाले, एकत्र करने वाले विस्तार, वृद्धि करने वाले निश्चित, निरन्तर संचरण करें, प्रतिष्ठित हों। शुक् अर्थात् शुद्ध, पवित्रकर्ता, विद्वान् तुम्हारे लिए शरभ को पायें, पहुँचायें, मिलायें। शरभ शब्द को शृ धातु से व्युत्पन्न है। इस प्रकार शरभ का अर्थ सुनना, जाना, जानना, पाना है। इसका अर्थ सुनने वाला, सुनाने वाला है। ऐसे शरभ अर्थात् हमें सुनने वाले तथा हमको सुनाने वाले, परासर्श उपदेश देने वाले को पाने का अनुदेश है, निर्देश है। हम जिसको द्वेष करें, जो हमारे लिए हमारे लिए हानिकारक है, द्वेषयोग्य है, उसको तुम्हारे लिए विद्वान्, शुद्ध, पवित्रकर्ता, शीघ्रकारी पायें, पहुँचायें, मिलायें **॥ 1 ॥**

पदार्थ - अजो = गतिमान, अजन्मा (अ = नहीं, अज- जाना, गति करना, हांकना, दौड़ाना, फेंकन, जन - उत्पन्न करना)। **हि =** ही, निश्चय (अव्यय)। **अग्नेः =** अग्नि का (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **अजनिष्ट =** गतिमान, उत्पन्न किया (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अज- जाना, गति करना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना, जन - उत्पन्न करना)। **शोकात् =** पवित्रता से, शोक से (शुक्-शुच् - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना, शुच् - दुःख मानना, शोक करना)। **सो =** वह, उसने। **अपश्यत् =** देखा (पश् = देखना)। **जनितारम् =** उत्पन्न करने वाला (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **अग्रे =** अग्र, आगे, पहले (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **तेन =** उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **देवा =** विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **देवताम् =** देवत्व को, दिव्यता को (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **अग्रे =** अग्र, आगे, पहले (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **आयन् =** प्राप्त किया (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अय्-ई - जाना, आय - शब्द करना, शासन करना)। **तेन =** उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **रोहान् =** वृद्धि योग्य (रुह - बढ़ना, ऊपर जाना, चढ़ना, बीज से उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना)। **रुरुहुः =** बढ़ें, चढ़ें (रुह - बढ़ना, ऊपर जाना, चढ़ना, बीज से उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना)। **मेध्यासः =** मेधावी (मेधा - शीघ्र समझना, मेध् - समझना, जानना, सङ्गति करना, मेल करना, हिंसा करना) **॥ 1 ॥**

695. क्रमध्वम् अग्निना नाकम्,
उख्यान् हस्तेषु बिभ्रतः।
दिवः पृष्ठम् स्वः गत्वा,
मिश्रा देवेभिः आध्वम् ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - क्रमध्वम् = आगे बढ़ाये **अग्निना =** अग्नि द्वारा, अग्नि के साथ **नाकम् =** नाक, अक रहित, अकुटिल, अविचल **उख्यान् =** गति योग्य, गम्य, दाह योग्य **हस्तेषु =** हाथों में **बिभ्रतः =** भरण, धारण करते हुए **दिवः =** दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय **पृष्ठम् =** पृष्ठ को **स्वः =** उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि या जगत् **गत्वा =** जाकर **मिश्रा =** मिश्र **देवेभिः =** देवों द्वारा **आध्वम् =** संचरण करने वाले, कम्पन करने वाले **॥ 2 ॥**

पदार्थ - क्रमध्वम् = आगे बढ़ाये (क्रम् = चलना, निर्भयता से चलना, रक्षा करना, बढ़ना)। **अग्निना =** अग्नि द्वारा, अग्नि के साथ (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **नाकम् =** नाक, अक रहित, अकुटिल, अविचल (नक् - नक्क् = नष्ट होना, नष्ट करना, न - नहीं, अक् - जाना, कुटिल गति करना, नश्-नक्क -नाश होना)। **उख्यान् =** गति योग्य, गम्य, दाह योग्य (उख् - चलना, जाना, जलना)। **हस्तेषु =** हाथों में (हस्त -देना, लेना, ग्रहण करना)। **बिभ्रतः =** भरण, धारण करते हुए (भृ- भरना, भरण करना, धारण करना)। **दिवः =** दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)। **पृष्ठम् =** पृष्ठ को (पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना, स्था - स्थित होना, ठहरना, बैठना, पृश् = प्रश्न करना, पूंछना, पृश्, पृष्

= जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सींचना, सहन करना)। **स्वः =** उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि या जगत् (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **गत्वा =** जाकर (गम् = जाना, जानना, पाना)। **मिश्रा =** मिश्र (मिश्र - मिश्रित करना, एकत्र करना)। **देवेभिः =** देवों द्वारा (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **आध्वम् =** संचरण करने वाले, कम्पन करने वाले (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अधु - चलना, संचरण करना, धु-धू - कम्पन करना) **॥ 2 ॥**

696. पृष्ठात् पृथिव्याः अहम्,
अन्तरिक्षम् आ अरुहम्,
अन्तरिक्षात् दिवम् आ अरुहम्।
दिवो नाकस्य पृष्ठात्,
स्वः ज्योतिः अगाम् अहम् ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - पृष्ठात् = पृष्ठ से **पृथिव्या =** पृथ्वी योग्य, पृथिवी के **अहम् =** मैं **अन्तरिक्षम् =** अन्तरिक्ष या आकाश **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण **अरुहम् =** आरोहण किया, उत्पन्न हुआ, हिंसक को मारने वाला, गतिशील, व्यापक हुआ **अन्तरिक्षात् =** अन्तरिक्ष से **दिवम् =** दिव को, तेजस्वी को **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण **अरुहम् =** आरोहण किया, उत्पन्न हुआ, हिंसक को मारने वाला, गतिशील, व्यापक हुआ **दिवो =** दिव, स्तुतिकर्ता, तेजस्वी, ज्योतिर्मय **नाकस्य =** नाक, अक रहित, अकुटिल, अविचल का **पृष्ठात् =** पृष्ठ से **स्वः =** उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि या जगत् **ज्योतिः =** प्रकाश **अगाम् =** गया **अहम् =** मैं **॥ 3 ॥**

पदार्थ - पृथिव्या = पृथ्वी योग्य, पृथिवी के (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)। **अहम् =** मैं (सर्वनाम)। **अन्तरिक्षम् =** अन्तरिक्ष या आकाश (अन्तः - बीच में, अन् - प्राण होना, चेतन होना, जीवन होना, अन्त् - बाँधना, हिंसा करना, चलना, इक्ष् - स्वाद लेना, देखना)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग)। **अरुहम् =** आरोहण किया, उत्पन्न हुआ, हिंसक को मारने वाला, गतिशील, व्यापक हुआ (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, रुह् - बीज से उत्पन्न होना, जन्म होना, हन् - मारना, नष्ट करना, हिंसा करना)। **अन्तरिक्षात् =** अन्तरिक्ष से (अन्तः - बीच में, अन् - प्राण होना, चेतन होना, जीवन होना, अन्त् - बाँधना, हिंसा करना, चलना, इक्ष् - स्वाद लेना, देखना)। **दिवम् =** दिव को, तेजस्वी को (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग)। **अरुहम् =** आरोहण किया, उत्पन्न हुआ, हिंसक को मारने वाला, गतिशील, व्यापक हुआ (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, रुह् - बीज से उत्पन्न होना, जन्म होना, हन् - मारना, नष्ट करना, हिंसा करना)। **दिवो =** दिव, स्तुतिकर्ता, तेजस्वी, ज्योतिर्मय (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)। **नाकस्य =** नाक, अक रहित, अकुटिल, अविचल का (नक् - नक्क् = नष्ट होना, नष्ट करना, न - नहीं, अक् - जाना, कुटिल गति करना, नश्-नक्क -नाश होना)। **पृष्ठात् =** पृष्ठ से (पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना, स्था-तिष्ठ - स्थित होना, ठहरना, बैठना, पृश् = प्रश्न करना, पूंछना, पृश्, पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सींचना, सहन करना)। **स्वः =** उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि या जगत् (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **ज्योतिः =** प्रकाश (ज्युत - कान्तिमान् होना, चमकना, प्रकाशित होना)। **अगाम् =** गया (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अग् = जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, गति करना, घूमना, कुटिल गति करना, टेढ़ा जाना, लेना, ग्रहण करना, गम् = जाना, जानना, पाना)। **अहम् =** मैं (सर्वनाम) **॥ 3 ॥**

697. स्वः यन्तो न अप ईक्षन्ते,
आ द्याम् रोहन्ति रोदसी।

यज्ञम् ये विश्वतो धारम्,
सुविद्वांसो वि तेनिरे ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - **स्वः** = उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि या जगत् **यन्तो** = यन्त, संयमन करने वाले **न** = नहीं, समान, उपमार्थक **अप** = दूर, नीचे, अपकार **ईक्षन्ते** = देखते हैं **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण **द्याम्** = द्यु को, सबसे बढ़कर, विशिष्ट, प्रकाशमय **रोहन्ति** = बढ़ते हैं, चढ़ते हैं **रोदसी** = प्रकाश देने वाले, वाणी, गति की सामर्थ्य से युक्त, करुणाशील, रोने वाले, रुलाने वाले **यज्ञम्** = यजन को **ये** = जो **विश्वतो** = सबसे, विश्व से **धारम्** = धार को, धारण, पोषण, रक्षण करने वाले को **सुविद्वांसो** = उत्तम विद्वान् **वि** = विशेष, विना, विलोम **तेनिरे** = विस्तार किया ॥ 4 ॥

पदार्थ - **स्वः** = उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि या जगत् (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **यन्तो** = यन्त, संयमन करने वाले (यम् = रोकना, स्वाधीन रखना, आवरण करना, पोषण करना, नियमन करना, यन -उद्धार करना)। **न** = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। अप = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। **ईक्षन्ते** = देखते हैं (ईक्ष - देखना, अवलोकन करना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग)। **द्याम्** = द्यु को, सबसे बढ़कर, विशिष्ट, प्रकाशमय (द्यु - आगे जाना, समीप जाना, द्युत् -दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, द्यै = तिरस्कार करना)। **रोहन्ति** = बढ़ते हैं, चढ़ते हैं (रुह - बढ़ना, ऊपर जाना, चढ़ना, बीज से उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना)। **रोदसी** = प्रकाश देने वाले, वाणी, गति की सामर्थ्य से युक्त, करुणाशील, रोने वाले, रुलाने वाले (रुद् - रोना, रुलाना, करुण होना, रु - शब्द करना, जाना, चलना, जानना, पाना)। **यज्ञम्** = यजन को (यज - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना)। **ये** = जो। **विश्वतो** = सबसे, विश्व से (सर्वनाम)। **धारम्** = धार को, धारण, पोषण, रक्षण करने वाले को (धाः = पोषण करना, रक्षण करना, देना, दान करना, धार बाँधना, धारा होना, धृ = धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना, स्थिर रहना, धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)। **सुविद्वांसो** = उत्तम विद्वान् (सु = अच्छा (उपसर्ग), विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना, विद्यमान होना, विचार करना, जीवन होना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम। **तेनिरे** = विस्तार किया (तन् = विस्तार करना) ॥ 4 ॥

698. अग्ने प्र इहि प्रथमो देवतानाम्,
चक्षुः देवानाम् उत मानुषाणाम्।
इयक्षमाणा भृगुभिः सजोषाः,
स्वः यन्तु यजमानाः स्वस्ति ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ - **अग्ने** = हे अग्नि **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक **इहि** = आओ, जानों **प्रथमो** = प्रथम, आदि, विस्तार **देवतानाम्** = देवताओं का **चक्षुः** = आँख **देवानाम्** = देवों का **उत** = ही **मानुषाणाम्** = मानुषों का, मनन करने वालों का **इयक्षमाणा** = पूजते हुए, पूजने वाले **भृगुभिः** = भृगुओं द्वारा **सजोषाः** = विचारशील, विवेकवान्, प्रीति करने वाले **स्वः** = उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि या जगत् **यन्तु** = पोषण करो, उद्धार करें, रोकें, प्राप्त करें, नियमन-नियन्त्रण करें **यजमानाः** = यजमान **स्वस्ति** = कल्याण ॥ 5 ॥

पदार्थ - **अग्ने** = हे अग्नि (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **इहि** = आओ, जानों (इ = जाना, जानना, पाना)। **प्रथमो** = प्रथम, आदि, विस्तार (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना, जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना)। **देवतानाम्** = देवताओं का (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना, यत -यत्न करना, उद्योग करना, निश्चय करना, ठहराना)। **चक्षुः** = आँख (चक्ष् - स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)। **देवानाम्** = देवों का (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **उत** = ही (अव्यय)। मानुषाणाम् = मानुषों का, मनन करने वालों का (मन् - मनन करना, समझना, जानना, मान - पूजा करना, सम्मान करना, श्रेष्ठ होना, शोध करना)। **इयक्षमाणा** = पूजते हुए, पूजने वाले (इयक्ष - पूजा करना, श्रेष्ठ होना)। **भृगुभिः** = भृगुओं द्वारा (भृ - भरण-पोषण, धारण करना, भृज् - भूँजना, तलना, सेंकना, भृग् = चमकना, तेज होना, जानना, गु - शब्द करना, मनन करना)।

सजोषाः = विचारशील, विवेकवान्, प्रीति करने वाले (स - साथ, सहित, जुष् = प्रसन्न करना, सन्तुष्ट करना, चाहना, दुलार करना, प्रीति करना, विचार करना, विवेक-विवेचना करना, हिंसा करना, सेवा करना)। **स्वः =** उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि या जगत् (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **यन्तु =** पोषण करो, उद्धार करें, रोकें, प्राप्त करें, नियमन-नियन्त्रण करें (यम् = रोकना, स्वाधीन रखना, आवरण करना, पोषण करना, नियमन करना, यन -उद्धार करना, या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, जानना)। **यजमानाः =** यजमान (यज - देवपूजा करना, अर्पण करना, संगति करना, दान करना)। **स्वस्ति =** कल्याण (अव्यय) **॥ 5 ॥**

699. अजम् अनज्मि पयसा घृतेन,
दिव्यम् सुपर्णम् पयसम् बृहन्तम्।
तेन गेष्म सुकृतस्य लोकम्,
स्वः आरोहन्तः अभि नाकम् उत्तमम् ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - अजम् = अज, अजन्मा, प्रगतिशील को (अ - नहीं, जन् = उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, अज - जाना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना)। **अनज्मि =** जाता हूँ, स्वच्छ करता हूँ, प्रशंसा करता हूँ (अञ्ज् = जाना, स्वच्छ करना, प्रशंसा करना, विख्यात करना, चमकना, प्रकाशित होना, तैलमर्दन करना, अभ्यञ्जन करना, संवारना, सजाना)। **पयसा =** पयस् द्वारा, विस्तार द्वारा, गतिशील, प्रवाहमान द्वारा (पय् = जाना, जानना, पाना, बहना, पयस् = विस्तार करना, फैलाना)। **घृतेन =** अभिसिञ्चित द्वारा, प्रकाशमान द्वारा (घृ - चमकना, प्रकाश करना, सिञ्चन करना, गीला करना, टपकना, बूंद बूंद गिरना, क्षरित होना, क्षरण होना, झरना, घर्षण होना, नाश होना, शब्द होना)। **दिव्यम् =** दिव्य को, तेजस्वी, ज्योतिर्मय को (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)। **सुपर्णम् =** सुपर्ण को (सु - सुन्दर, अच्छा, पृ - पूर्ण करना, भरना)। **पयसम् =** पयस को, गति, विस्तार, प्रवाह को (पय् = जाना, जानना, पाना, बहना, पयस् = विस्तार करना, फैलाना)। **बृहन्तम् =** महान्, बृहत् को (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **तेन =** उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **गेष्म =** जाता हूँ (गम् - जाना, जानना, पाना)। **सुकृतस्य =** सुकृत का (सु = उत्तम, अच्छा, उपसर्ग, कृ = करना)। **लोकम् =** लोक को, दर्शन को, प्रकाश को, वाणी को (लोक् = देखना, प्रकाशित होना, बोलना)। **स्वः =** उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना)। **आरोहन्तः =** बढ़ें-चढ़ें, आरोहण करें (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, रुह् = ऊपर चढ़ना, बढ़ना)। **अभि =** अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **नाकम् =** नाक, अक रहित, अकुटिल, अविचल (नक् - नक्क् = नष्ट होना, नष्ट करना, न - नहीं, अक् - जाना, कुटिल गति करना, नश्-नक्क -नाश होना)। **उत्तमम् =** उत्तम को, श्रेष्ठ-इच्छा, शुभ-इच्छा को (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, तम् - अन्धकार होना, इच्छा करना, चाहना, मानसिक या शारीरिक व्यथा से दुःखित होना) **॥ 6 ॥**

700. पञ्च-ओदनम् पञ्चभिः अङ्गुलिभिः दर्व्या,
उत् हर पञ्च-धा एतम् ओदनम्।
प्राच्याम् दिशि शिरो अजस्य धेहि,
दक्षिणायाम् दिशि दक्षिणम् देहि पार्श्वम् ॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - पञ्च-ओदनम् = पाँच-ओदन को, पाँच-आद्र करने वाले को (पञ्च - पाँच, संख्या, उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना)। **पञ्चभिः =** पाँच द्वारा (पञ्च = पाँच, संख्या)। **अङ्गुलिभिः =** अंगुलियों के लिए, प्रगतिशीलों, विद्वानों के लिए (अंग् = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना,

जानना, पाना)। **दर्व्या =** गति, ज्ञान द्वारा (दर्व् = जाना, जानना, पाना)। **उत् =** भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)। **हर =** हर, हरने वाला, ले जाने वाला, पहुँचाने वाला (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)। **पञ्च-धा =** पाँच-धारण करो, पोषण करो, रक्षण करो, दान करो (पञ्च - पाँच, संख्या, धा - धारण करना, पहनना, पोषण करना, धाः = पोषण करना, रक्षण करना, देना, दान करना, धार बाँधना, धारा होना)। **एतम् =** यह, इसको (सर्वनाम)। **ओदनम् =** ओदन को, आद्र करने वाले को (उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना)। **प्राच्याम् =** प्राची को, पूर्व को (प्राक् = पहले, सर्वनाम)। **दिशि =** दिशा में (दिश - दिखाना, समझाना, आज्ञा करना, कहना, बोलना, देना, पारितोषिक देना, अतिरचना करना)। **शिरो =** शिर, सुनने वाला, तीक्ष्ण, कल्याणकारी (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, शि = तेज करना, तीक्ष्ण करना, कल्याण करना)। **अजस्य =** प्रगतिशील का, अजन्मा का (अज - जाना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना, अ - नहीं, जन् - जन्म होना)। **धेहि =** धारण करें (धा-धि-धी - धारण करना, पहनना, पोषण करना, रक्षण करना, देना)। **दक्षिणायाम् =** दक्षिण को (दक्ष् - बढ़ना, समृद्ध होना, शीघ्र कार्य करना, चतुर होना, दक्ष होना, चलना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मार डालना)। **दिशि =** दिशा में (दिश - दिखाना, समझाना, आज्ञा करना, कहना, बोलना, देना, पारितोषिक देना, अतिरचना करना)। **दक्षिणम् =** दक्षिण को (दक्ष् - बढ़ना, समृद्ध होना, शीघ्र कार्य करना, चतुर होना, दक्ष होना, चलना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मार डालना)। **देहि =** दो, दीजिये। (दा = देना, दान करना, रखना)। **पार्श्वम् =** पार्श्व को, निकट को (सर्वनाम) **॥ 7 ॥**

701. प्रतीच्याम् दिशि भसदम् अस्य धेहि,
उत्तरस्याम् दिशि उत्तरम् धेहि पार्श्वम्।
ऊर्ध्वायाम् दिशि अजस्य अनूकम् धेहि,
दिशि ध्रुवायाम् धेहि पाजस्यम्,
अन्तरिक्षे मध्यतो मध्यम् अस्य ॥ 8 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - प्रतीच्याम् = प्रतीची को, पश्चिम को (सर्वनाम)। **दिशि =** दिशा में (दिश - दिखाना, समझाना, आज्ञा करना, कहना, बोलना, देना, पारितोषिक देना, अतिरचना करना)। **भसदम् =** भसद को (भस - खाना, चमकना, दोष लगाना, निन्दा करना)। **अस्य =** इसका (सर्वनाम)। **धेहि =** धारण करें (धा-धि-धी - धारण करना, पहनना, पोषण करना, रक्षण करना, देना)। **उत्तरस्याम् =** उत्तर को, तैरने-पार जाने को (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, तृ, तृ = तैरना, पार जाना)। **दिशि =** दिशा में (दिश - दिखाना, समझाना, आज्ञा करना, कहना, बोलना, देना, पारितोषिक देना, अतिरचना करना)। **उत्तरम् =** उत्तर को, तैरने-पार जाने को (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, तृ, तृ = तैरना, पार जाना)। **धेहि =** धारण करें (धा-धि-धी - धारण करना, पहनना, पोषण करना, रक्षण करना, देना)। **पार्श्वम् =** पार्श्व को, निकट को (सर्वनाम)। **ऊर्ध्वायाम् =** उच्च, ऊपर, ऊर्ध्व को (सर्वनाम)। **दिशि =** दिशा में (दिश - दिखाना, समझाना, आज्ञा करना, कहना, बोलना, देना, पारितोषिक देना, अतिरचना करना)। **अजस्य =** प्रगतिशील का, अजन्मा का (अज - जाना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना, अ - नहीं, जन् - जन्म होना)। **अनूकम् =** पार्श्व को, पीछे को (अनु = पश्चात्, पीछे)। **धेहि =** धारण करें (धा-धि-धी - धारण करना, पहनना, पोषण करना, रक्षण करना, देना)। **दिशि =** दिशा में (दिश - दिखाना, समझाना, आज्ञा करना, कहना, बोलना, देना, पारितोषिक देना, अतिरचना करना)। **ध्रुवायाम् =** ध्रुव, अचल, स्थिर, अविचल गतिशील को (ध्रुव् = अचल होना, स्थिर होना, जाना, गति करना, जानना, पाना)। **धेहि =** धारण करें (धा-धि-धी - धारण करना, पहनना, पोषण करना, रक्षण करना, देना)। **पाजस्यम् =** रक्षक से जन्मे को (पा - रक्षा करना, पालन करना, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **अन्तरिक्षे =** अन्तरिक्ष में (अन्तः - बीच में, इक्ष् - स्वाद लेना, ईक्ष् -देखना)। **मध्यतो =** मध्य (सर्वनाम)। **मध्यम् =** मध्य को (सर्वनाम)। **अस्य =** इसका (सर्वनाम) **॥ 8 ॥**

702. शृतम् अजम् शृतया प्र ऊर्णुहि त्वचा,

सर्वैः अङ्गैः सम्-भृतम् विश्वरूपम्,
स उत् तिष्ठ इतो अभि नाकम् उत्तमम्,
पद्भिः चतुर्भिः प्रति तिष्ठ दिक्षु ॥ 9 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - शृतम् = शृत को, सुने को (शृ = सुनना, श्रवण करना, जाना)। **अजम् =** अज, अजन्मा, प्रगतिशील को (अ - नहीं, जन् = उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, अज - जाना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना)। **शृतया =** शृत द्वारा, श्रवण द्वारा (शृ = सुनना, श्रवण करना, जाना)। **प्र =** प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **ऊर्णुहि =** आवरण-आच्छादित करो (ऊर्ण = बुनना, आच्छादन करना, ढकना)। **त्वचा =** त्वचा, चर्म, खाल (त्वच - आच्छादित करना, लपेटना, ढांकना)। **सर्वैः =** सबके द्वारा (सर्वनाम)। **अङ्गैः =** अंगों, विद्वान्, गतिशील, पाने वालों द्वारा (अंग् = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)। **सम्-भृतम् =** सम्यक्-भरण-पोषण करने को (सम् = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग), भृ - भरण-पोषण, धारण करना)। **विश्वरूपम् =** विश्वरूप को (विश्व - सब कुछ, रूप - आकार बनाना, रचना करना)। **स =** वह, उसने (सर्वनाम)। **उत् =** भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)। **तिष्ठ =** उठो, ठहरो, खड़े हो (तिष्ठ् = ठहरना, खड़ा होना)। **इतो =** यहां से (सर्वनाम)। **अभि =** अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **नाकम् =** नाक, अक रहित, अकुटिल, अविचल (नक् - नक्क् = नष्ट होना, नष्ट करना, न - नहीं, अक् - जाना, कुटिल गति करना, नश्-नक्क -नाश होना)। **उत्तमम् =** उत्तम को, श्रेष्ठ-इच्छा, शुभ-इच्छा को (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, तम् - अन्धकार होना, इच्छा करना, चाहना, मानसिक या शारीरिक व्यथा से दुःखित होना)। **पद्भिः =** पदों द्वारा, पदों के साथ, भूषण के साथ (पद् - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना)। **चतुर्भिः =** चार द्वारा (संख्या)। **प्रति =** प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग)। **तिष्ठ =** उठो, ठहरो, खड़े हो (तिष्ठ् = ठहरना, खड़ा होना)। **दिक्षु =** दिशाओं में (दिश् - दिखाना, समझाना, आज्ञा करना, कहना, बोलना, देना, पारितोषिक देना, अतिरचना करना) **॥ 9 ॥**

117. वृष्टि सूक्त - 15

703. सम्-उत्पतन्तु प्रदिशो नभस्वतीः,
सम् अभ्राणि वातजूतानि यन्तु।
मह-ऋषभस्य नदतो नभस्वतो,
वाश्राः आपः पृथिवीम् तर्पयन्तु ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - सम्-उत्पतन्तु = समुत्पन्न हों (सम् = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग), उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **प्रदिशो =** प्रदिश, दिशा (प्र - प्रकृष्ट, दिश् - दिखाना, दिखाना, समझाना, कहना, देना)। **नभस्वतीः =** नभः युक्त (नभ् = मध्य में स्थित होना, केन्द्र होना, नष्ट होना, हिंसा करना, नप - पहुंचना, जानना, पाना, शब्द करना, झंकार करना, चमकना)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **अभ्राणि =** गति-शब्द करता है (अभ्र् = जाना, घूमना, मेघ-गति करना)। **वातजूतानि =** वायु के समान तीव्र गति वालों को, वातजूतों को (वात - सुखी होना, आनन्द करना, सेवा करना, जाना, जु - जाना, जल्दी जाना, भागना)। **यन्तु =** नियमन-नियन्त्रण, पोषण करो, उद्धार करो, प्राप्त करो (यम् = रोकना, स्वाधीन रखना, आवरण करना, पोषण करना, नियमन करना, यन - उद्धार करना, या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, जानना)। **मह-ऋषभस्य =** महान्-ऋषभ का (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, ऋष् - जानना, जाना, पाना, अन्तदृष्टि होना, अन्तर्गमन करना, सूक्ष्मता से भीतर देखना)। **नदतो** = शब्द, प्रकाश (नद् - शब्द करना, झंकार करना, चमकना)। **नभस्वतो =** नभः युक्त (नभ् = मध्य में स्थित होना, केन्द्र होना, नष्ट होना, हिंसा करना, नप - पहुंचना, जानना, पाना, शब्द करना, झंकार

करना, चमकना)। **वाश्राः =** प्रगतिशील, व्याप्त करते हुए, व्याप्त होते हुए, प्रकाश करते हुए (वश - प्रकाश करना, इच्छा करना, चाहना, वा - गति करना, बहना, श्रा = परिपक्व करना, पकाना, रांधना, उबालना, स्वेदन करना)। **आपः =** आप, व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)। **पृथिवीम् =** पृथिवी को (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)। **तर्पयन्तु =** तृप्त करें (तृप् = तृप्त होना, तृप्त करना) **॥ 1 ॥**

704. सम् ईक्षयन्तु तविषाः सुदानवो,
अपाम् रसाः ओषधीभिः सचन्ताम्।
वर्षस्य सर्गा महयन्तु भूमिम् पृथक्,
जायन्ताम् ओषधयो विश्व-रूपाः ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - सम् = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **ईक्षयन्तु =** देखें (ईक्ष - देखना, अवलोकन करना)। **तविषाः =** तविषा, गति, वृद्धि, हिंसा, प्रकाशमान (त्विष - प्रकाशित होना, चमकना, तव् - गति, वृद्धि, हिंसा करना)। **सुदानवो =** सुदानी (सु - उत्तम, अच्छा, दा, दद् = देना)। **अपाम् =** अपा को, पालकों का (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना)। **रसाः =** रसयुक्त (रस् - स्वाद लेना, शब्द करना, स्नेह होना)। **ओषधीभिः** = ओषधियों द्वारा (उषध्-ओषध् = चिकित्सा करना, रोग मुक्त करना)। **सचन्ताम् =** अभिसिञ्चन करें (सच् = सिञ्चन करना, सेवा करना, सन्तुष्ट करना, जानना, पूर्णतया समझना, सम्बन्धी होना)। **वर्षस्य =** वर्षा का (वर्ष् = बरसना, सींचना, अति पराक्रम करना, हिंसा करना, क्लेश देना, उत्पीड़न करना)। **सर्गा** = सृष्टि, सृजन (सृज् - छोड़ना, त्याग करना, विविध रूप से उत्पन्न करना, रचना करना)। **महयन्तु =** महान्, पूज्य, सम्मान करें (मह् - पूजा करना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना)। **भूमिम् =** भूमि को (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **पृथक् =** अलग (अव्यय)। **जायन्ताम् =** उत्पन्न हों (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **ओषधयो =** ओषधियाँ (उषध्- ओषध् - जानना, रोग मुक्त करना, चिकित्सा)। **विश्व-रूपाः =** विश्वरूप (विश्व - सब कुछ, रूप - आकार बनाना, रचना करना) **॥ 2 ॥**

705. सम् ईक्षयस्व गायतो नभांसि,
अपाम् वेगासः पृथक् उत् विजन्ताम्।
वर्षस्य सर्गा महयन्तु भूमिम् पृथक्,
जायन्ताम् वीरुधो विश्वरूपाः ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - सम् = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **ईक्षयस्व =** दिखाओ (ईक्ष - देखना, अवलोकन करना)। **गायतो =** गा रहे हैं, गायन कर रहे हैं (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना)। **नभांसि =** नभों में (नभ - नष्ट होना, दुःख देना या मार डालना, हिंसा करना, मध्य में स्थित होना, केन्द्र होना)। **अपाम् =** अपा को, पालकों का (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना)। **वेगासः =** वेगवान् (वी = जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, कान्ति होना, प्रकाश होना)। **पृथक् =** अलग (अव्यय)। **उत् =** भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)। **विजन्ताम्** = चलें, डरें (विज् = डरना, डर से कांपना, आपद्ग्रस्त होना, विपत्ति में पड़ना)। **वर्षस्य =** वर्षा का (वर्ष् = बरसना, सींचना, अति पराक्रम करना, हिंसा करना, क्लेश देना, उत्पीड़न करना)। **सर्गा** = सृष्टि, सृजन (सृज् - छोड़ना, त्याग करना, विविध रूप से उत्पन्न करना, रचना करना)। **महयन्तु =** महान्, पूज्य, सम्मान करें (मह् - पूजा करना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना)। **भूमिम् =** भूमि को (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **पृथक् =** अलग (अव्यय)। **जायन्ताम् =** उत्पन्न

हों (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **वीरुधो =** वीरता को धारण करने वाला, पराक्रमी (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)। **विश्वरूपाः =** विश्वरूप (विश्व - सब कुछ, रूप - आकार बनाना, रचना करना) **॥ 3 ॥**

706. गणाः त्वा उप गायन्तु,
मारुताः पर्जन्य घोषिणः पृथक्।
सर्गा वर्षस्य वर्षतो,
वर्षन्तु पृथिवीम् अनु ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - गणाः = गणक, गण, समूह (गण् - गिनना, शब्द करना, नापना, मानना, समझाना, समूह बनाना)। **त्वा =** तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **उप =** समीप (उपसर्ग)। **गायन्तु, मारुताः =** मारुतगण, मरणशील (मृ = मरना, देहत्याग करना)। **पर्जन्य =** पोषण उत्पन्न करने वाले, पर्जन्य (पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना, तृप्त करना, जन् = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **घोषिणः पृथक् =** अलग (अव्यय)। **सर्गा** = सृष्टि, सृजन (सृज् - छोड़ना, त्याग करना, विविध रूप से उत्पन्न करना, रचना करना)। **वर्षस्य वर्षतो, वर्षन्तु पृथिवीम् =** पृथिवी को (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)। **अनु =** पश्चात्, पीछे, अनुकूल (उपसर्ग) **॥ 4 ॥**

707. उत् ईरयत मरुतः समुद्रतः,
त्वेषो अर्को नभः उत् पातयाथ।
मह-ऋषभस्य नदतो नभस्वतो,
वाश्राः आपः पृथिवीम् तर्पयन्तु ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - उत् = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)। **ईरयत =** प्रेरणा करो, कम्पित करो (ईर् = कम्पन करना, जाना, जानना, पाना, फेकना, प्रेरणा करना)। **मरुतः =** मरणशील का, मरुत् का (मृ = मरना, देहत्याग करना)। **समुद्रतः =** समुद्र में (सम् = सम्यक्, भलीभांति, उन्द - आर्द्र होना, गीला होना)। **त्वेषो =** प्रकाशवान् (त्विष - प्रकाशित होना, चमकना)। **अर्को =** अर्क, प्रशंसा, स्तुति (अर्क - प्रशंसा करना, स्तुति करना, ग्रहण करना)। **नभः =** नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **उत् =** भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)। **पातयाथ =** रक्षा करें, पालन करें (पा = रक्षा करना, पालन करना)। **मह-ऋषभस्य =** महान् ऋषभ का (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, ऋष् - जानना, जाना, पाना, अन्तदृष्टि होना, अन्तर्गमन करना, सूक्ष्मता से भीतर देखना)। **नदतो** = शब्द करते हुए, प्रकाश करते हुए (नद् - शब्द करना, झंकार करना, चमकना)। **नभस्वतो =** नभः युक्त (नभ् = मध्य में स्थित होना, केन्द्र होना, नष्ट होना, हिंसा करना, नप - पहुंचना, जानना, पाना, शब्द करना, झंकार करना, चमकना)। **वाश्राः =** प्रगतिशील, व्याप्त करते हुए, व्याप्त होते हुए, प्रकाश करते हुए (वश - प्रकाश करना, इच्छा करना, चाहना, वा - गति करना, बहना। श्रा = परिपक्व करना, पकाना, रांधना, उबालना, स्वेदन करना)। **आपः =** आप, व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)। **पृथिवीम् =** पृथिवी को (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)। **तर्पयन्तु =** तृप्त करें (तृप् = तृप्त होना, तृप्त करना) **॥ 5 ॥**

708. अभि क्रन्द स्तनय अर्दय उदधिम्,
भूमिम् पर्जन्य पयसा सम् अङ्घि।
त्वया सृष्टम् बहुलम् आ एतु वर्षम्,

आशार-एषी कृशगुः एतु अस्तम्॥ 6॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **अभि =** अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **क्रन्द =** पुकारो (क्रन्द् - रोना, पुकारना, दुःख होना)। **स्तनय =** स्तुति करो (स्तु - स्तुति करना, प्रशंसा करना, अर्चा करना, सेवा करना, भजन करना)। **अर्दय =** मार दो, अर्दित करो (अर्द - मारना, बध करना)। **उदधिम् =** उदधि को, उदक को, उदक, आद्रता को धारण करने वाले को, आद्रक को धारण करने वाले को (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना, धि - धारण करना, रखना)। **भूमिम् =** भूमि को (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **पर्जन्य =** हे पोषण उत्पन्न करने वाले, पर्जन्य (पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना, तृप्त करना, जन् = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **पयसा =** पयस् द्वारा, विस्तार द्वारा, गतिशील, प्रवाहमान द्वारा (पय् = जाना, जानना, पाना, बहना, पयस् = विस्तार करना, फैलाना)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **अङ्घि =** गति करो, आरम्भ करो (अंघ् - गति करना, आरम्भ करना, शीघ्रता करना, अवरोध होना, निन्दा करना)। **त्वया =** तुम्हारे द्वारा, तुमसे (सर्वनाम)। **सृष्टम् =** सृजित को (सृज् - छोड़ना, त्याग करना, विविध रूप से उत्पन्न करना, रचना करना)। **बहुलम् =** बहुल को (सर्वनाम)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **एतु =** प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना, इच्छा करना, प्रेरणा करना, ए - जाना, फैलना, व्यापना, गर्भवती होना, इच्छा करना, चाहना, खाना, उड़ाना, फेंकना, भेजना, प्रेरणा करना)। **वर्षम् =** वर्ष को (वर्ष् = गीला होना, वर्षा होना)। **आशार-एषी =** आशार-एषी, आशा-चाहने वाला (आ- समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, शास् = आशीर्वाद देना, देना, भला चाहना, आशा करना, इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना)। **कृशगुः =** कृशगु, सूक्ष्म गतिशील (कृश - कृश होना, सूक्ष्म होना, गम् = जाना, जानना, पाना)। **एतु =** प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना, इच्छा करना, प्रेरणा करना, ए - जाना, फैलना, व्यापना, गर्भवती होना, इच्छा करना, चाहना, खाना, उड़ाना, फेंकना, भेजना, प्रेरणा करना)। **अस्तम् =** प्रकाशमान को (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)॥ **6॥**

709. सम् वो अवन्तु सुदानवः,
उत्साः अजगराः उत।
मरुद्भिः प्रच्युता मेघा,
वर्षन्तु पृथिवीम् अनु॥ 7॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **वो =** तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **अवन्तु =** प्रकाशित करें, रक्षा करें (अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, प्रकाश करना)। **सुदानवः =** सुदानी (सु - उत्तम, अच्छा, दा, दद् = देना)। **उत्साः =** उच्च स्थान से (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, सद् - बैठना, जाना, उत्-साद् - उखाड़ना, नाश करना)। **अजगराः =** अजगर, अग्राही, निगलने वाला, गतिहीन, गतिज्ञानी, विद्वान्, (अ - नहीं, जग् - जाना, लेना, अज - जाना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना, गृ - सींचना, घर्षण करना, समझना, जानना, गति होना, बहिर्गमन होना, खाना, निगलना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **मरुद्भिः =** मरणशीलों द्वारा, मरुतों द्वारा (मृ = मरना, देहत्याग करना)। **प्रच्युता =** प्रगति करने वाला (प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग), च्यु - जाना, गिरना, गिर पड़ना, भटकना)। **मेघा =** मेघा (मि - मिन् = रक्षा करना, मानना, फेंकना, फैलाना)। **वर्षन्तु =** बरसें, वर्षा करें (वर्ष् = बरसना, सींचना, अति पराक्रम करना, हिंसा करना, क्लेश देना, उत्पीड़न करना)। **पृथिवीम् =** पृथिवी को (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना,

भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)। **अनु** = पश्चात्, पीछे, अनुकूल (उपसर्ग) ॥ 7 ॥

710. आशाम्-आशाम् वि द्योतताम्,
वाता वान्तु दिशः-दिशः।
मरुद्भिः प्रच्युता मेघाः,
सम् यन्तु पृथिवीम् अनु ॥ 8 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - आशाम्-आशाम् = प्रत्येक आशा को, आशाओं को (आ- समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, शास् = आशीर्वाद देना, देना, भला चाहना, आशा करना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **द्योतताम्** = प्रकाशित करें (द्युत् = प्रकाशित होना, द्यु = अभिगमन करना, आक्रमण करना, आगे जाना, समीप जाना)। **वाता** = वात समूह (वात - सुखी होना, आनन्द करना, सेवा करना, जाना, वा - गति करना, बहना, पवन की भाँति चलना)। **वान्तु** = प्रगति करो, बहो (वा - गति करना, बहना, पवन की भाँति चलना)। **दिशः-दिशः** = प्रत्येक दिशा को, दिशाओं को (दिश - दिखाना, समझाना, आज्ञा करना, कहना, बोलना, देना, पारितोषिक देना, अतिरचना करना)। **मरुद्भिः** = मरणशीलों द्वारा, मरुतों द्वारा (मृ = मरना, देहत्याग करना)। **प्रच्युता** = प्रगति करने वाला (प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग), च्यु - जाना, गिरना, गिर पड़ना, भटकना)। **मेघाः** = मेघा (मि - मिन् = रक्षा करना, मानना, फेंकना, फैलाना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **यन्तु** = नियमन-नियन्त्रण, पोषण करो, उद्धार करो, प्राप्त करो (यम् = रोकना, स्वाधीन रखना, आवरण करना, पोषण करना, नियमन करना, यन - उद्धार करना, या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, जानना)। **पृथिवीम्** = पृथिवी को (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)। **अनु** = पश्चात्, पीछे, अनुकूल (उपसर्ग) ॥ 8 ॥

711. आपो विद्युत् अभ्रम्,
वर्षम् सम् वो अवन्तु,
सुदानवः उत्साः अजगराः उत।
मरुद्भिः प्रच्युता मेघाः,
प्र अवन्तु प्रथिवीम् अनु ॥ 9 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - आपो = आप, व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)। **विद्युत्** = विशेष प्रकाशमान (वि - विशेष। द्युत् -दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना)। **अभ्रम्** = भरण किया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, भृ = भरना, भरण करना)। **वर्षम्** = वर्ष को (वर्ष् = गीला होना, वर्षा होना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **अवन्तु** = प्रकाशित करें, रक्षा करें (अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, प्रकाश करना)। **सुदानवः** = सुदानी (सु - उत्तम, अच्छा, दा, दद् = देना)। **उत्साः** = उच्च स्थान से (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, सद् - बैठना, जाना, उत्-साद् - उखाड़ना, नाश करना)। **अजगराः** = अजगर, अग्राही, निगलने वाला, गतिहीन, गतिज्ञानी, विद्वान्, (अ - नहीं, जग् - जाना, लेना, अज - जाना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना, गृ - सींचना, घर्षण करना, समझना, जानना, गति होना, बहिर्गमन होना, खाना, निगलना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **मरुद्भिः** = मरणशीलों द्वारा, मरुतों द्वारा (मृ = मरना, देहत्याग करना)। **प्रच्युता** = प्रगति करने वाला (प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग), च्यु - जाना, गिरना, गिर पड़ना, भटकना)। **मेघाः** = मेघा (मि - मिन् = रक्षा करना, मानना, फेंकना, फैलाना)। **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **अवन्तु** = प्रकाशित करें, रक्षा करें (अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, प्रकाश करना)। **प्रथिवीम्** = पृथिवी को (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना,

प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)। **अनु** = पश्चात्, पीछे, अनुकूल (उपसर्ग) **॥ 9 ॥**

712. अपाम् अग्निः तनूभिः सम्-विदानो,
यः ओषधीनाम् अधिपा बभूव।
स नो वर्षम् वनुताम् जातवेदाः,
प्राणम् प्रजाभ्यो अमृतम् दिवः परि॥ 10 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **अपाम्** = अपा को, पालकों का (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना)। **अग्निः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **तनूभिः** = तनूओं द्वारा, विस्तारों द्वारा, वाणियों द्वारा (तन् = विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना)। **सम्-विदानो** = सम्यक् विद्वान्, सम्यक् दानी (सम् = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग), विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना, दा - देना)। **यः** = जो (सर्वनाम)। **ओषधीनाम्** = ओषधियों का (उषध्-ओषध् = चिकित्सा करना, रोग मुक्त करना)। **अधिपा** = अधिपालक, अधिरक्षक (अधि = अधिगत, अधिक, उच्च, पूर्णतः, पा - रक्षा-पालन करना)। **बभूव** = हो गये (भू = होना, प्राप्त होना)। **स** = वह, उसने (सर्वनाम)। **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **वर्षम्** = वर्ष को (वर्ष् = गीला होना, वर्षा होना)। **वनुताम्** = शब्द करें, सेवा करें, याचना करें (वन - शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, आपद्ग्रस्त होना, अलग करना, मिलाना, स्मरण करना, बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, याचना करना, मांगना, दुःख देना, उद्योग-धन्धा करना, वनु - याचना करना, मांगना)। **जातवेदाः** = विद्वान्, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले (जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जा-ज्ञा - जानना, विद् - जानना)। **प्राणम्** = प्राण को (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अन- जीवन होना, चेतन होना, प्रा- पूर्ण करना, तृप्त करना)। **प्रजाभ्यो** = प्रजा के लिए (प्र - प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न करना)। **अमृतम्** = न मरने वाले, अमर, अमृत को (अ - नहीं, मृ = मरना)। **दिवः** = दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)। **परि** = सभी तरफ (उपसर्ग) **॥ 10 ॥**

713. प्रजापतिः सलिलात् आ समुद्रात्,
आपः ईरयन् उदधिम् अर्दयाति।
प्र प्यायताम् वृष्णो अश्वस्य,
रेतो अर्वाङ् एतेन,
स्तनयित्नुना आ इहि॥ 11 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **प्रजापतिः** = प्रजापति, प्रजा का रक्षक, पालक (प्र - प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न करना, पत - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना)। **सलिलात्** = सलिल से (सल् - जाना, सरकना, कांपना, थरथराना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **समुद्रात्** = समुद्र से (सम् = सम्यक्, भलीभांति। उन्द - आर्द्र होना, गीला होना)। **आपः** = आप, व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)। **ईरयन्** = प्रेरणा करता हुआ, कम्पित करता हुआ (ईर् = कम्पन करना, जाना, जानना, पाना, फेकना, प्रेरणा करना)। **उदधिम्** = उदधि को, उदक को, उदक, आद्रता को धारण करने वाले को, आद्रक को धारण करने वाले को (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना, धि - धारण करना, रखना)। **अर्दयाति** = अर्दित करें (अर्द – मारना, बध करना)। **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **प्यायताम्** = बढ़ायें, आप्यायित हो (प्याय् = बढ़ना)। **वृष्णो** = वर्षा करने वाला, पराक्रमी (वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति

करने को समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना, दुःख देना, पीड़ित करना)। **अश्वस्य =** अश्व का, तीव्र गति युक्त, व्यापक का (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)। **रेतो =** रेतस्, विद्या, प्रगति, ज्ञान (रि - जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, री - गति करना, झरना-टपकना, लेना, शब्द करना, सुनना)। **अर्वाङ् =** अभिमुख, गतिशील, शब्दकर्ता (ऋ - जाना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना, पहुँचाना, अर्-ऋ - गति करना, जाना, जानना, पाना, शब्द करना, व्याप्त होना, मिलाना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, अर्व - गति करना, जाना, चलना, जानना, पाना, पहुँचना, हिंसा करना)। **एतेन =** इस द्वारा (सर्वनाम)। **स्तनयित्नुना =** गर्जन द्वारा (स्तन - मेघ की गर्जना होना, शब्द करना, ध्वनि करना)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **इहि =** आओ, जानों (इ = जाना, जानना, पाना) **॥ 11 ॥**

714. अपो निषिञ्चन् असुरः पिता नः श्वसन्तु गर्गराः,
अपाम् वरुण अव नीचीः अपः सृज।
वदन्तु पृश्निबाहवो, मण्डूकाः इरिणा अनु ॥ 12 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - अपो = पालन करने वाला (अप = जाना, जानना, पाना, पालन करना)। **निषिञ्चन् =** निरन्तर सिञ्चित करें (नि - निश्चित, नितराम्, निरन्तर, षिञ्च्-सिञ्च् - सेचन करना, सिञ्चन करना, सींचना)। **असुरः =** असुर, प्रकाश देने वाला, ऐश्वर्यहीन, उत्पन्न-सृजन नहीं करने वाला (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना)। **पिता =** पिता, पालन करने वाला, पिता (पि - जाना, जानना, पाना, पा- पालन करना, रक्षा करना)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **श्वसन्तु =** श्वास लें (श्वस् = श्वास लेना, श्वासोच्छ्वास करना, जीते रहना)। **गर्गराः =** शब्द करते हुए (गृ = सींचना, गीला करना, घर्षण करना, जानना, समझना, खाना, निगलना, शब्द करना)। **अपाम् =** अपा को, पालकों का (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना)। **वरुण =** वरुण (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **अव =** नीचे, दूर, प्राप्त (अव्यय)। **नीचीः =** नीचे, चाकरी में (नीच् - निम्न होना, चाकरी करना)। **अपः =** पालन करने वाला, पालक, रक्षक् (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना)। **सृज =** सृजन करो (सृज् - छोड़ना, त्याग करना, विविध रूप से उत्पन्न करना, रचना करना)। **वदन्तु =** बोलें (वद - कहना, स्पष्ट कहना, बोलना, समझाना)। **पृश्निबाहवो =** पृश्नि-बाहव, प्रश्न-प्रयास करने वाला (पृश् - पृच्छ - पूछना, जानने की इच्छा करना, प्रश्न करना, पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सहन करना, बाह् - प्रयास करना, बह् - बहना, गति करना, बाहर होना, परे हो जाना, हिंसा करना)। **मण्डूकाः =** मण्डूक, भूषक, विभाजक (मण्ड् - भूषित करना, विभाजन करना, लपेटना)। **इरिणा =** शब्द करें (इरण् - शब्द करना)। **अनु =** पश्चात्, पीछे, अनुकूल (उपसर्ग) **॥ 12 ॥**

715. सम्-वत्सरम् शशयाना,
ब्राह्मणा व्रतचारिणः।
वाचम् पर्जन्य जिन्विताम्,
प्र मण्डूकाः अवादिषुः ॥ 13 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - सम्-वत्सरम् = सम्वत्सर को (सम् - सम्यक्, सम् - न घबराना, एक समान रहना, वद् - बोलना, कहना, सृ - चलना, सरकना)। **शशयाना =** शयन करते हुए (शी = सोना, शयन करना)। **ब्राह्मणा =** ब्राह्मण, वृद्धिशील, उद्यमशील (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **व्रतचारिणः =** व्रतचारी (वृत् - रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना,

चर - जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)। **वाचम् =** वाणी को (वच - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)। **पर्जन्य =** पोषण उत्पन्न करने वाले, पर्जन्य (पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना, तृप्त करना, जन् = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **जिन्विताम् =** प्रसन्नता से युक्त (जिन्व् = सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना, आनन्द होना, मुक्त करना, प्रकाशित होना, बोलना)। **प्र =** प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **मण्डूकाः =** मण्डूक, भूषक, विभाजक (मण्ड् - भूषित करना, विभाजन करना, लपेटना)। **अवादिषुः =** बोलें, कहें (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, वद - कहना, स्पष्ट कहना, बोलना, समझाना) **॥ 13 ॥**

716. उप-प्रवद मण्डूकि,
वर्षम् आ वद तादुरि।
मध्ये ह्रदस्य प्लवस्व,
विगृह्य चतुरः पदः ॥ 14 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - उप-प्रवद = बोलें (उप = समीप, उपसर्ग, प्र - प्रकृष्ट, अधिक, वद - कहना, समझाना)। **मण्डूकि =** मण्डूक, भूषक, विभाजक (मण्ड् - भूषित करना, विभाजन करना, लपेटना)। **वर्षम् =** वर्ष को (वर्ष् = गीला होना, वर्षा होना)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **वद =** बोलो (वद - कहना, समझाना)। **तादुरि =** हे तादुरि (तड् = चमकना, बोलना)। **मध्ये =** मध्य में (सर्वनाम)। **ह्रदस्य =** ह्रदय का। (ह्र = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)। **प्लवस्व =** प्लवन करो, तैरो, प्रगति करो (प्लु - जाना, उड़ना, तैरना, कूदना)। **विगृह्य =** विशेष गृह, विशेष घर (वि - विशेष, गृह - लेना, स्वीकार करना, निवास करना)। **चतुरः =** चतुर, प्रगतिशील, गतिमान, याचक (चत् - चलना, जाना, जानना, पाना, याचना करना, मांगना)। **पदः =** पद (पद् - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना) **॥ 14 ॥**

717. खण्डखाइ खैमखाइ मध्ये तदुरि।
वर्षम् वनुध्वम् पितरो,
मरुताम् मनः इच्छत ॥ 15 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - खण्डखाइ = हे खण्डखा (खण्ड = टुकड़े करना, विभाग करना, खण्डित करना, मथना, बिलोना, कूटना)। **खैमखाइ =** हे खैमखा (खै-खाय् = स्थिर रहना, मार डालना, सताना, दुःख करना, खोदना)। **मध्ये =** मध्य में (सर्वनाम)। **तदुरि =** हे तदुरि (तड् = चमकना, बोलना)। **वर्षम् =** वर्ष को (वर्ष् = गीला होना, वर्षा होना)। **वनुध्वम् =** शब्द करो, सेवा करो (वन - शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, आपद्ग्रस्त होना, अलग करना, मिलाना, स्मरण करना, बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, याचना करना, मांगना, दुःख देना, उद्योग-धन्धा करन, वनु - याचना करना, मांगना)। **पितरो =** पितर, पालन करने वाले (पि - जाना, जानना, पाना, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **मरुताम् =** मरणशीलों का (मृ = मरना, देहत्याग करना)। **मनः =** मन (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **इच्छत =** इच्छा करो (इच्छ = इच्छा करना, कामना करना, चाहना) **॥ 15 ॥**

718. महान्तम् कोशम् उत् अच अभि षिञ्च,
सविद्युतम् भवतु वातु वातः।
तन्वताम् यज्ञम् बहुधा विसृष्टाः,
आनन्दिनीः ओषधयो भवन्तु ॥ 16 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **महान्तम्** = महान् को (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना)। **कोशम्** = कोश को (कुश् = आलिंगन करना, लपेटना, कोश होना, समाधान करना, सहना)। **उत्** = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)। **अच** = जाओ, आदर करो (अच् - मरना, जाना, चलना, आदर करना, मांगना)। **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **षिञ्च** = सिञ्चन करो (सिञ्च् - सिञ्चन करना)। **सविद्युतम्** = विशेष प्रकाश सहित (स = सहित, साथ (उपसर्ग), वि - विशेष, द्युत् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना)। **भवतु** = हो, हो जाये (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **वातु** = प्रवाहित हो, वायु के समान चलें (वात - सुखी होना, आनन्द करना, सेवा करना, जाना, वा - गति करना, बहना, पवन की भाँति चलना)। **वातः** = वात, वायु के समान तीव्र गति वाले (वात - सुखी होना, आनन्द करना, सेवा करना, जाना, वा - गति करना, बहना, पवन की भाँति चलना)। **तन्वताम्** = विस्तार करें (तन्-तनु = विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना)। **यज्ञम्** = यजन को (यज - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना)। **बहुधा** = बहुत प्रकार से (सर्वनाम)। **विसृष्टाः** = वि-सृष्टा, वि-सृजन करने वाला (वि = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग), सृज् - छोड़ना, त्याग करना, विविध रूप से उत्पन्न करना, रचना करना)। **आनन्दिनीः** = सम्यक् आनन्दित (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), नन्द् - आनन्द पाना, प्रसन्न होना, समृद्ध होना, वृद्धि होना)। **ओषधयो** = ओषधियाँ (उषध्- ओषध् - जानना, रोग मुक्त करना, चिकित्सा)। **भवन्तु** = हों, हो जायें (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना) **॥ 16 ॥**

22. अनुवाक - 4

118. सत्यानृतसमीक्षक सूक्त - 16

719. बृहन् एषाम् अधिष्ठाता अन्तिकात् इव पश्यति।
यः तायत् मन्यते चरन् सर्वम् देवाः इदम् विदुः ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ :- **बृहन्** = महान्, बड़ा, विराट, बृहत् द्वारा **एषाम्** = इनका **अधिष्ठाता** = अधिष्ठान, उच्च स्थान वाला **अन्तिकात्** = निकट से, समीप से **इव** = समान, की भाँति, के समान **पश्यति** = देखता है **यः** = जो **तायत्** = संरक्षण करता हुआ, विस्तार करता हुआ **मन्यते** = मानते हैं **चरन्** = विचरण करते हुए **सर्वम्** = सब कुछ **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने **इदम्** = यह, इसको **विदुः** = विद्वान् **॥ 1 ॥**

पदार्थ :- **बृहन्** = महान्, बड़ा, विराट, बृहत् द्वारा (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **एषाम्** = इनका (सर्वनाम)। **अधिष्ठाता** = अधिष्ठान, उच्च स्थान वाला (अधि - अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, पा लेना, स्था-तिष्ठ - ठहरना, स्थित होना)। **अन्तिकात्** = निकट से, समीप से (अव्यय)। **इव** = समान, की भाँति, के समान (अव्यय)। **पश्यति** = देखता है (पश् = देखना)। **यः** = जो (सर्वनाम)। **तायत्** = संरक्षण करता हुआ, विस्तार करता हुआ (ताय - संरक्षण करना, फैलाना, लम्बा करना)। **मन्यते** = मानते हैं (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **चरन्** = विचरण करते हुए (चर - जाना, खाना, आचरण करना)। **सर्वम्** = सब कुछ (सर्वनाम)। **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **इदम्** = यह, इसको (सर्वनाम)। **विदुः** = विद्वान् (विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना) **॥ 1 ॥**

720. यः तिष्ठति चरति यः च वञ्चति,
यो निलायम् चरति यः प्रतङ्कम्।
द्वौ सम्-निषद्य यत् मन्त्रयेते,

राजा तत् वेद वरुणः तृतीयः ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **यः =** जो (सर्वनाम)। **तिष्ठति =** स्थित है, ठहरा है, खड़ा है (तिष्ठ् = ठहरना, खड़ा होना)। **चरति =** विचरण करता है (चर -जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)। **यः =** जो (सर्वनाम)। **च =** और (अव्यय)। **वञ्चति =** वञ्चता है, जाता है (वञ्च = ठगना, फंसाना, जाना, वञ्चना करना)। **यो =** जो (सर्वनाम)। **निलायम्** = निलय को, निर्जन को (निल् = निर्जन होना, सुनसान होना, गहन वन होना, मिथ्याबोध होना, घना होना, दृढ़ होना, जमना, छिप जाना)। **चरति =** विचरण करता है (चर -जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)। **यः =** जो (सर्वनाम)। **प्रतङ्कम् =** प्रतङ्क को, विकट तङ्गी को (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, तङ्क = दुःख (तङ्गी) से दिन बिताना)। **द्वौ =** दो (संख्या)। **सम्-निषद्य =** बैठकर, स्थान, प्राप्य, लक्ष्य (सम् = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग), निष - प्राप्त करना, ले जाना, नि- निश्चय ही, निरन्तर, सद्-षद् - बैठना, स्थित होना, जाना)। **यत् =** जिसे, जो (सर्वनाम)। **मन्त्रयेते =** मन्त्रणा करते हैं (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना, मन्त्र = मन्त्रणा करना, विचार करना, गुप्त भाषण करना)। **राजा =** राजा (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **तत् =** वह, उस को (सर्वनाम)। **वेद =** ज्ञान, जानो, जानता है (विद् = जानना, समझना, विद्यमान होना)। **वरुणः =** वरणीय, वरण करने वाला (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **तृतीयः =** तृतीय, तीसरा (संख्या, सर्वनाम) **॥ 2 ॥**

721. उत इयम् भूमिः वरुणस्य राज्ञः,
उत असौ द्यौः बृहती दूरे-अन्ता।
उतो समुद्रौ वरुणस्य कुक्षी,
उत अस्मिन् अल्पे उदके निलीनः ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **इयम् =** यह, इसको (सर्वनाम)। **भूमिः =** भूमि (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **वरुणस्य =** वरुण का (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **राज्ञः =** प्रकाशित होने वाला, राजा का (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **असौ =** यह (सर्वनाम)। **द्यौः =** अग्रगामी, प्रकाशवान्, विद्वान्, द्यौ, प्रकाशयुक्त, अग्रगामी (द्युत् = प्रकाशित होना, द्यु = अभिगमन करना, आक्रमण करना, आगे जाना, समीप जाना, प्रकाश होना, जानना)। **बृहती =** महान्, बड़ा, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **दूरे-अन्ता =** दूरन्त, दूर-अन्तः, भीतर, अन्त करने वाले (दूरे = दूर (अव्यय), अन्तः = बीच में, अन्त् - अन्त होना, समाप्त होना, बाँधना, पाना, हिंसा करना)। **उतो =** उससे, वैसे ही, उसी प्रकार (अव्यय)। **समुद्रौ =** दो-समुद्र (सम् = सम्यक्, भलीभांति, उन्द - आर्द्र होना, गीला होना)। **वरुणस्य =** वरुण का (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **कुक्षी =** कुक्षी, पूर्ण करने वाले, भरने वाले (कुक्ष् = पूर्ण करना, भरना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **अस्मिन् =** इस, इसमें (सर्वनाम)। **अल्पे =** थोड़ा, न्यून (अव्यय)। **उदके =** उदक, उच्च गति, आद्रता में (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, अक् - जाना, टेढ़ा जाना, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना)। **निलीनः =** निलीन, मिलकर, संयुक्त होकर (नि = निश्चित, निरन्तर (अव्यय), ली = युक्त होना, प्राप्त होना, मिलना, कष्ट होना, पतला करना, गलाना) **॥ 3 ॥**

722. उत यो द्याम् अतिसर्पात् परस्तात्,

न स मुच्यातै वरुणस्य राज्ञः।
दिव स्पशः प्र चरन्ति इदम् अस्य,
सहस्र-अक्षाः अति पश्यन्ति भूमिम्॥ 4॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **द्याम्** = बहुत, अत्यधिक (उपसर्ग, अव्यय)। **अतिसर्पात्** = अतिक्रमण से (अति - अधिक, बहुत (अव्यय), सृप-सर्प - जाना, सरकना, गति करना)। **परस्तात्** = पर से, अन्य से, परे या पृथक् (सर्वनाम)। **न** = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **स** = वह, उसने (सर्वनाम)। **मुच्यातै** = मुक्त हो (मुच् - घर्षण करना, ऐश्वर्य होना, पूजा करना, बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना, प्रसन्न होना)। **वरुणस्य** = वरुण का (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **राज्ञः** = प्रकाशित होने वाला, राजा का (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **दिव** = दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)। **स्पशः** = ग्रहण, प्रसिद्ध, स्पर्श (स्पश - गृहण करना, लेना, छूना, संयुक्त करना, जोड़ना, रोकना, अवरोध करना, प्रसिद्ध करना, एकत्र करना, गुम्फित करना, जोड़ना)। **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **चरन्ति** = विचरण करते हैं, चलते हैं (चर - जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)। **इदम्** = यह, इसको (सर्वनाम)। **अस्य** = इसका (सर्वनाम)। **सहस्र-अक्षाः** = सहस्र-अक्ष, समूह, व्यापक (सहस्र = हजार (संख्या), अक्ष - खेलना, देखना, एकत्र होना, व्याप्त होना, इच्छितार्थ होना, पैठना)। **अति** = बहुत, अत्यधिक (उपसर्ग, अव्यय)। **पश्यन्ति** = देखते हैं (पश् - देखना)। **भूमिम्** = भूमि को (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)॥ **4**॥

723. सर्वम् तत् राजा वरुणो वि चष्टे,
यत् अन्तरा रोदसी यत् परस्तात्।
सम्-ख्याताः अस्य निमिषो जनानाम्
अक्षान्-इव श्वघ्नी नि मिनोति तानि॥ 5॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **सर्वम्** = सब (सर्वनाम)। **तत्** = वह, उस को (सर्वनाम)। **राजा** = राजा (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **वरुणो** = वरणीय, वरण करने वाला (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **चष्टे** = खाते हैं, बोलते, देखते हैं (चष् - खाना, बोलना, देखना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **अन्तरा** = प्राणवान्, अन्तर, भीतर (अन् = प्राण होना, अन्त् - बाँधना, हिंसा करना, चलना, अन्तः - बीच में, अन्तर, भीतर, इतर, अन्य (अव्यय)। **रोदसी** = प्रकाश देने वाले, वाणी, गति की सामर्थ्य से युक्त, करुणाशील, रोने वाले, रुलाने वाले (रुद् - रोना, रुलाना, करुण होना, रु - शब्द करना, जाना, चलना, जानना, पाना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **परस्तात्** = पर से, अन्य से, परे या पृथक् (सर्वनाम)। **न** = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **स** = वह, उसने (सर्वनाम)। **सम्-ख्याताः** = प्रख्यात करने वाले, खाने वाले, संचयी, भ्रमणशील (सम् = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग), खै - खाना, हिंसा करना, स्थिर रहना, खोदना, ख्या - प्रसिद्ध करना, कहना, व्याख्यान करना)। **अस्य** = इसका (सर्वनाम)। **निमिषो** = निमिष, सिञ्चन, प्रोक्षण (नि- निश्चित, नितराम्, निरन्तर, मिष् = सिञ्चन करना, प्रोक्षण करना, घर्षण करना, स्पर्धा करना, विवाद करना, कलह करना, नि-मिष् - पलक झपकाना, आँख बन्द करना)। **जनानाम्** = जनों का, उत्पन्न लोगों का (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **अक्षान्-इव** = अक्षों के समान, समूहों के समान, व्यापकों के समान (अक्ष - खेलना, देखना, एकत्र होना, व्याप्त होना, इच्छितार्थ होना, पैठना, इव = समान, की भाँति, के समान (अव्यय))।

श्वघ्नी = गतिशील हिंसक (शव-श्वा - जाना, भागना, दौड़ना, हन् - मारना)। **नि =** निश्चित, निरन्तर (अव्यय)। **मिनोति =** प्रक्षेपण करता है, स्थापन करता है, रक्षा करता है (मि - प्रक्षेपण करना, स्थापन करना, रक्षा करना, फेंकना, फैलाना)। **तानि =** वे, उन को (सर्वनाम)॥ **5** ॥

724. ये ते पाशा वरुण सप्त-सप्त,
त्रेधा तिष्ठन्ति विषिता रुशन्तः।
छिनन्तु सर्वे अनृतम् वदन्तम्,
यः सत्यवादी अति तम् सृजन्तु॥ 6॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - ये = जो (सर्वनाम)। **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **पाशा वरुण =** वरुण (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **सप्त-सप्त =** पूर्ण, संलग्न (सप - पूर्ण होना, पूर्ण ज्ञान होना, पूरा समझना, पूर्णतया जानना, संसक्त होना, संलग्न होना, मिलाप होना)। **त्रेधा =** तीन प्रकार से (त्रि = तीन, संख्या, सर्वनाम)। **तिष्ठन्ति विषिता रुशन्तः। छिनन्तु सर्वे =** सब (सर्वनाम)। **अनृतम् =** अनृत को, ऋतहीन को (अन् - नहीं, ऋत - चलना, जाना, फैलाना, संचलन करना, सदाचरण करना)। **वदन्तम्, यः =** जो (सर्वनाम)। **सत्यवादी अति =** बहुत, अत्यधिक (उपसर्ग, अव्यय)। **तम् =** उसको, उसे (सर्वनाम)। **सृजन्तु॥ 6॥**

725. शतेन पाशैः अभि धेहि वरुण एनम्,
मा ते मोचि अनृतवाङ् नृचक्षः।
आस्ताम् जाल्मः उदरम् श्रंशयित्वा,
कोशः-इव अबन्धः परिकृत्यमानः॥ 7॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - शतेन = सौ द्वारा। **पाशैः =** पाशों द्वारा, दिखाने वालों द्वारा, बन्धनों द्वारा (पश् - देखना, पश - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना)। **अभि =** अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **धेहि =** धारण करें (धा-धि-धी - धारण करना, पहनना, पोषण करना, रक्षण करना, देना)। **वरुण =** वरुण (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **एनम् =** इसको, इसे (सर्वनाम)। **मा =** नहीं, मत (अव्यय)। **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **मोचि =** मोचित करता है, छोड़ता है, प्रसन्नता देता है (मुच - बोलना, कहना, पीसना, ठगना, मुच - छोड़ना, द्रव्यादि देना, प्रसन्न होना)। **अनृतवाङ् नृचक्षः। आस्ताम् =** बैठे हुए, थे (अस् - होना, आस् - बैठना, उपस्थित होना, विद्यमान होना, जीवित रहना, होना)। **जाल्मः उदरम् =** उदर को, आद्र करने वाले को, आद्रता को देने वाले को (उ - ही, उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना, द्री - आदर करना, सम्मान करना, सत्कार करना, अर् - ऋ - जाना, फैलाना)। **श्रंशयित्वा, कोशः=** कोश (कुश् = आलिंगन करना, लपेटना, कोश होना, समाधान करना, सहना)।-**इव =** समान, की भाँति, के समान (अव्यय)। **अबन्धः परिकृत्यमानः॥ 7॥**

726. यः सम्-आम्यो वरुणो यो वि-आम्यो,
यः सम्-देश्यो वरुणो यो वि-देश्यः।
यः दैवो वरुणो यः च मानुषः॥ 9॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - यः = जो (सर्वनाम)। **सम्=** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)।-**आम्यो वरुणो =** वरणीय, वरण करने वाला (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना,

आच्छादित करना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **वि=** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)।-**आम्यो, यः** = जो (सर्वनाम)। **सम्=** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)।-**देश्यो वरुणो** = वरणीय, वरण करने वाला (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **यो** = जो (सर्वनाम)। **वि=** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)।-**देश्यः। यः** = जो (सर्वनाम)। **दैवो वरुणो** = वरणीय, वरण करने वाला (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **यः** = जो (सर्वनाम)। **च** = और (अव्यय)। **मानुषः** = मानुष, मनन करने वाले (मन् - मनन करना, समझना, जानना, मान - पूजा करना, सम्मान करना, श्रेष्ठ होना, शोध करना) **॥ 9 ॥**

727. तैः त्वा सर्वैः अभि ष्यामि पाशैः,
असौ आमुष्यायण अमुष्याः पुत्र।
तान् उ ते सर्वान्, अनु-सम्-दिशामि ॥ 10 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **तैः त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **सर्वैः अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **ष्यामि** = अन्त करता हूँ, नष्ट करता हूँ (सो-स्य = अन्त करना, नष्ट करना)। **पाशैः** = पाशों द्वारा, दिखाने वालों द्वारा, बन्धनों द्वारा (पश् - देखना, पश - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना)। **असौ** = यह (सर्वनाम)। **आमुष्यायण अमुष्याः पुत्र** = पुत्र (पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)। **तान्** = उनको (सर्वनाम)। **उ** = निश्चय ही, भी (निपात, अव्यय)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **सर्वान्** = सभी को (सर्वनाम)। **अनु** = पश्चात्, पीछे, अनुकूल (उपसर्ग)।-**सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)।-**दिशामि** = दिशा देता हूँ (दिश - दिखाना, समझाना, आज्ञा करना, कहना, बोलना, देना, पारितोषिक देना, अतिरचना करना) **॥ 10 ॥**

119. अपामार्ग सूक्त - 17

728. ईशानाम् त्वा भेषजानाम्,
उत्-जेषे आ रभामहे।
चक्रे सहस्र-वीर्यम्,
सर्वस्मा ओषधे त्वा ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **ईशानाम् त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **भेषजानाम्, उत्** = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)।-**जेषे आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **रभामहे। चक्रे** = किया (कृ - करना)। **सहस्र=** हजार (संख्या)।-**वीर्यम्** = पराक्रम को, वीरता को (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)। **सर्वस्मा ओषधे** = हे ओषधि (उषध्-ओषध् - चिकित्सा करना, रोगमुक्त करना)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम) **॥ 1 ॥**

729. सत्यजितम् शपथयावनीम्,
सहमानाम् पुनः-सराम्।
सर्वाः सम् अह्वि ओषधीः,
इतो नः पारयात् इति ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **सत्यजितम् शपथयावनीम्, सहमानाम् पुनः=** फिर (अव्यय)। -**सराम्। सर्वाः** = सभी (सर्वनाम)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **अह्वि ओषधीः** = ओषधी (उषध् - चिकित्सा करना, रोग मुक्त करना)। **इतो** = पाये, गति, ज्ञान, प्रकाश प्राप्त किया (इ - जाना, जानना, पाना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)। **नः** = हमको,

हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **पारयात् इति** = ऐसा, यह, इसी प्रकार (अव्यय) **॥ 2 ॥**

730. या शशाप शपनेन,
या अघम् मूरम् आदधे।
या रसस्य हरणाय जातम्,
आरेभे तोकम् अत्तु सा ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **या** = जो (सर्वनाम)। **शशाप शपनेन, या** = जो (सर्वनाम)। **अघम्** = पाप को (अघ - पाप करना, अपराध करना)। **मूरम् आदधे** = सम्यक् धारण करता हूँ, ग्रहण करता हूँ (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, दध् - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना, आ-दध् - ग्रहण करना, लेना)। **या** = जो (सर्वनाम)। **रसस्य** = रस का (रस - स्वाद लेना, चखना, प्रीति करना, प्यार करना)। **हरणाय जातम्** = उत्पन्न हुआ, उत्पन्न हुए को (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **आरेभे तोकम्** = तोक, गति, वृद्धि, हिंसा, बल, दान, निवास को (तु - गति, वृद्धि, हिंसा करना, तुज् - बल होना, दान करना, निवास करना, ग्रहण करना, चमकना)। **अत्तु** = खाये (अद् - खाना)। **सा** = वह (सर्वनाम) **॥ 3 ॥**

731. याम् ते चक्रुः आमे पात्रे,
याम् चक्रुः नीललोहिते।
आमे मांसे कृत्याम् याम्,
चक्रुः तया कृत्या-कृतो जहि ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **याम्** = जिसको (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **चक्रुः** = किया (कृ - करना)। **आमे पात्रे, याम्** = जिसको (सर्वनाम)। **चक्रुः** = किया (कृ - करना)। **नीललोहिते। आमे मांसे कृत्याम्** = कृत्य को (कृत - कतरना, काटना, कृ - करना)। **याम्** = जिसको (सर्वनाम)। **चक्रुः** = किया (कृ - करना)। **तया** = उसके द्वारा (सर्वनाम)। **कृत्या-कृतो** = किया (कृ = करना, कृत - कतरना, काटना)। **जहि ॥ 4 ॥**

732. दौः-ष्वप्न्यम् दौः-जीवित्यम्,
रक्षो अभ्वम् अराय्यः।
दुःणाम्नीः सर्वा दुः-वाचः,
ताः अस्मत् नाशयामसि ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **दौः-ष्वप्न्यम् दौः-जीवित्यम्, रक्षो** = रक्षा करने वाले, रक्षक (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना)। **अभ्वम् अराय्यः। दुःणाम्नीः सर्वा** = सभी (सर्वनाम)। **दुः-वाचः, ताः अस्मत् नाशयामसि ॥ 5 ॥**

733. क्षुधामारम् तृष्णामारम्,
अगोताम् अनप-त्यताम्।
अपामार्ग त्वया वयम् सर्वम्,
तत् अप मृज्महे ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **क्षुधामारम् तृष्णामारम्, अगोताम् अनप-त्यताम्। अपामार्ग त्वया वयम् सर्वम्, तत् अप मृज्महे ॥ 6 ॥**

734. तृष्णामारम् क्षुधामारम्,

अथो अक्ष-पराजयम्।
अपामार्ग त्वया वयम्,
सर्वम् तत् अप मृज्महे॥ 7॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - तृष्णामारम् क्षुधामारम्, अथो अक्ष-पराजयम्। अपामार्ग त्वया वयम्, सर्वम् तत् अप मृज्महे॥ 7॥

735. अपामार्गः ओषधीनाम्,
सर्वासाम् एकः इत् वशी।
तेन ते मृज्मः आ-स्थितम्,
अथ त्वम् अगदः चर॥ 8॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - अपामार्गः ओषधीनाम्, सर्वासाम् एकः इत् वशी। तेन ते मृज्मः आ-स्थितम्, अथ त्वम् अगदः चर॥ 8॥

120. अपामार्ग सूक्त - 18

736. समम् ज्योतिः सूर्येण,
अह्ना रात्री समावती।
कृणोमि सत्यम् ऊतये,
अरसाः सन्तु कृत्वरीः॥ 1॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - समम् ज्योतिः सूर्येण, अह्ना रात्री समावती। कृणोमि सत्यम् ऊतये, अरसाः सन्तु कृत्वरीः॥ 1॥

737. यो देवाः कृत्याम् कृत्वा,
हरात् अविदुषो गृहम्।
वत्सो धारुः-इव मातरम्,
तम् प्रत्यक् उप पद्यताम्॥ 2॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - यो देवाः कृत्याम् कृत्वा, हरात् अविदुषो गृहम्। वत्सो धारुः-इव मातरम्, तम् प्रत्यक् उप पद्यताम्॥ 2॥

738. अमा कृत्वा पाप्मानम्,
यः तेन अन्यम् जिघांसति।
अश्मानः तस्याम् दग्धायाम्,
बहुलाः फट् करिक्रति॥ 3॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - अमा कृत्वा पाप्मानम्, यः तेन अन्यम् जिघांसति। अश्मानः तस्याम् दग्धायाम्, बहुलाः फट् करिक्रति॥ 3॥

739. सहस्रधामन्, विशिखान्,

विग्रीवान् शायया त्वम्।
प्रति स्म चक्रुषे कृत्याम्,
प्रियाम् प्रियवते हर॥ 4॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - सहस्रधामन्, विशिखान्, विग्रीवान् शायया त्वम्। प्रति स्म चक्रुषे कृत्याम्, प्रियाम् प्रियवते हर॥ 4॥

740. अनया अहम् ओषध्या,
सर्वाः कृत्याः अदूदुषम्।
याम् क्षेत्रे चक्रुः याम् गोषु,
याम् वा ते पुरुषेषु॥ 5॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - अनया = इस द्वारा (सर्वनाम, स्त्रीलिंग)। **अहम्** = मैं (सर्वनाम)। **ओषध्या** = ओषधि का (ओषध्, उषध् = रोगमुक्त करना)। **सर्वाः** = सभी (सर्वनाम)। **कृत्याः अदूदुषम्। याम्** = जिसको (सर्वनाम)। **क्षेत्रे चक्रुः** = किया (कृ - करना)। **याम्** = जिसको (सर्वनाम)। **गोषु** = गो में, शब्द करने वालों, मननशीलों, उपदेशकों में (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)। **याम्** = जिसको (सर्वनाम)। **वा** = अथवा (अव्यय)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **पुरुषेषु॥ 5॥**

741. यः चकार न शशाक कर्तुम्,
शश्रे पादम् अङ्गुरिम्।
चकार भद्रम् अस्मभ्यम्,
आत्मने तपनम् तु सः॥ 6॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - यः = जो (सर्वनाम)। **चकार** = किया (कृ = करना)। **न** = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **शशाक कर्तुम्, शश्रे पादम्** = पाद को, चरण को (पद् - चलना, जाना, भूषित होना)। **अङ्गुरिम्। चकार** = किया (कृ = करना)। **भद्रम्** = कल्याणकारी को (भदि-भन्द् = सुख होना, शुभ कर्म करना, कल्याण होना)। **अस्मभ्यम्** = हमारे लिए (सर्वनाम)। **आत्मने** = आत्मा के लिए (आत् = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (वैदिक उपसर्ग), आत् - होना, चिरन्तन होना, नित्य होना, चेतन होना, मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना, अत् - सतत गमन करना, निरन्तर चलना, सतत चलना, जानना, पाना)। **तपनम् तु** = तो, परन्तु, अब (अव्यय)। **सः** = वह, उसने (सर्वनाम)॥ **6॥**

742. अपामार्गो अप मार्ष्टु,
क्षेत्रियम् शपथः च यः।
अप अह यातुधानीः,
अप सर्वाः अराय्यः॥ 7॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - अपामार्गो अप = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। **मार्ष्टु, क्षेत्रियम् शपथः च** = और (अव्यय)। **यः** = जो (सर्वनाम)। **अप** = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। **अह** = व्यापक (अह् = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना)। **यातुधानीः, अप** = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। **सर्वाः** = सभी (सर्वनाम)। **अराय्यः॥ 7॥**

743. अपमृज्य यातुधानान्,
अप सर्वाः अराय्यः।
अपामार्ग त्वया वयम्,
सर्वम् तत् अप मृज्महे॥ 8॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - अपमृज्य यातुधानान् = यातुधानों को (या - जाना, यत् - यत्न करना, प्रयास करना, उद्योग करना, दुःख देना, छाया-आच्छादन करना, रोकना, धा = धारण करना)। **अप =** दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। **सर्वाः =** सभी (सर्वनाम)। **अराय्यः। अपामार्ग =** अपामार्ग (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना। अप - दूर। मार्ग - ढूँढ़ना, शुद्ध करना)। **त्वया =** तुम्हारे द्वारा, तुमसे (सर्वनाम)। **वयम् =** हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **सर्वम् =** सब (सर्वनाम)। **तत् =** वह, उस को (सर्वनाम)। **अप =** दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। **मृज्महे॥ 8॥**

121. अपामार्ग सूक्त - 19

744. उतो असि अबन्धु-कृत्,
उतो असि नु जामि-कृत्।
उतो कृत्या-कृतः प्रजाम्,
नडम्-इव आ छिन्धि वार्षिकम्॥ 1॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - उतो = उससे, वैसे ही, उसी प्रकार (अव्यय)। **असि =** हो (अस् - होना)। **अबन्धु-कृत्, उतो =** उससे, वैसे ही, उसी प्रकार (अव्यय)। **असि =** हो (अस् - होना)। **नु =** ही, भी (निपात, अव्यय)। **जामि=** भोजन उत्पन्न होने वाले, भोजन करने वाले (जम् = खाना, निगलना, जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।-**कृत् =** किया (कृ = करना)। **उतो =** उससे, वैसे ही, उसी प्रकार (अव्यय)। **कृत्या-कृतः =** किया (कृ = करना)। **प्रजाम् =** प्रजा को (प्र - बहुत, प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **नडम्-इव आ =** समान, की भाँति, के समान (अव्यय)। **छिन्धि वार्षिकम्॥ 1॥**

745. ब्राह्मणेन परि-उक्ता, असि कण्वेन नार्षदेन।
सेना-इव एषि त्विषीमती न तत्र भयम्,
अस्ति यत्र प्र-आप्नोषि ओषधे॥ 2॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - ब्राह्मणेन परि = सभी तरफ (उपसर्ग)।-**उक्ता =** उक्ति, कथन (उक् - उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना)। **असि =** हो (अस् - होना)। **कण्वेन नार्षदेन। सेना-इव =** सेना के समान (सि–सिन् = बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना, इव = समान, की भाँति, के समान, अव्यय)। **एषि =** प्रयत्न करते हो, समीप जाते हो, आते हो, चाहते हो (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, एष - प्रयत्न करना, समीप जाना या आना, चाहना)। **त्विषीमती न =** नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **तत्र =** वहाँ (सर्वनाम)। **भयम्, अस्ति =** है (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **यत्र =** वहाँ (सर्वनाम)। **प्र-आप्नोषि ओषधे =** हे ओषधि (उषध्-ओषध् - चिकित्सा करना, रोगमुक्त करना)॥ **2॥**

746. अग्रम् एषि ओषधीनाम्,
ज्योतिषा-इव अभिदीपयन्।
उत त्राता असि पाकस्य,

अथो हन्ता असि रक्षसः ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - अग्रम् = अग्र, आगे (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **एषि =** प्रयत्न करते हो, समीप जाते हो, आते हो, चाहते हो (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति। इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना, एष - प्रयत्न करना, समीप जाना या आना, चाहना)। **ओषधीनाम् =** ओषधियों का (उषध्-ओषध् = चिकित्सा करना, रोग मुक्त करना)। **ज्योतिषा=** ज्योति द्वारा, प्रकाश द्वारा (ज्युत - कान्तिमान् होना, चमकना, प्रकाशित होना)।-**इव =** समान, की भाँति, के समान (अव्यय)। **अभिदीपयन्। उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **त्राता =** रक्षक, पालक, पोषक (त्रै = पालन करना, रक्षा करना, पोषण करना)। **असि =** हो (अस् - होना)। **पाकस्य, अथो =** अब, इसके बाद, इसके अनन्तर (अव्यय)। **हन्ता =** मारने वाला (हन् - मारना)। **असि =** हो (अस् - होना)। **रक्षसः =** रक्षा करने वाले, रक्षस् (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना) **॥ 3 ॥**

747. यत् अदो देवाः असुरान्,
त्वया अग्रे निः-अकुर्वत।
ततः त्वम् अधि ओषधे,
अपामार्गो अजायथाः ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - यत् = जिसे, जो (सर्वनाम)। **अदो देवाः =** विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **असुरान् =** असुरों को, ऐश्वर्यहीनों, उत्पन्न-सृजन नहीं करने वालों को, प्रकाश देने वालों को (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना)। **त्वया =** तुम्हारे द्वारा, तुमसे (सर्वनाम)। **अग्रे =** अग्र, आगे, पहले (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **निः-अकुर्वत। ततः =** अतः, इसलिए, उससे, उसके अनन्तर (सर्वनाम)। **त्वम् =** तुम (सर्वनाम)। **अधि =** अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **ओषधे =** हे ओषधि (उषध्-ओषध् - चिकित्सा करना, रोगमुक्त करना)। **अपामार्गो अजायथाः=** उत्पन्न हुए (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, जन् - उत्पन्न होना) **॥ 4 ॥**

748. वि-भिन्दती शतशाखा,
विभिन्दन् नाम ते पिता।
प्रत्यक् वि भिन्धि त्वम्,
तम् यो अस्मान् अभिदासति ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - वि-भिन्दती शतशाखा, विभिन्दन् नाम = नाम वाले (नाम - नाम होना, नाम रखना, नम् = नमन करना, सम्मान करना, शब्द करना)। **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **पिता =** पिता, पालन करने वाला, पिता (पि - जाना, जानना, पाना, पा- पालन करना, रक्षा करना)। **प्रत्यक् वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **भिन्धि त्वम् =** तुम (सर्वनाम)। **तम् =** उसको, उसे (सर्वनाम)। **यो =** जो (सर्वनाम)। **अस्मान् =** हमें, हमको (सर्वनाम)। **अभिदासति =** सर्वथा दान करता है (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, दास् - देना, दान करना) **॥ 5 ॥**

749. असत् भूम्याः सम् अभवत्,

तत् याम् एति महत् व्यचः।
तत् वै ततो विधूपायत्,
प्रत्यक् कर्त्तारम् ऋच्छतु॥ 6॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - असत् = हो जाये (अस् = होना)। **भूम्याः =** भूमि का, भूम्य, उत्पन्न योग्य (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **अभवत् =** हुआ (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना)। **तत् =** वह, उस को (सर्वनाम)। **याम् =** जिसको (सर्वनाम)। **एति =** जाता है, प्राप्त होता है, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करता है (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना, इच्छा करना, प्रेरणा करना)। **महत् =** महान् (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना)। **व्यचः =** व्याप्त (व्यच् - व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, ठगना, वि - विशेष, अच् - जाना, मरना, आदर करना, याचना करना)। **तत् =** वह, उस को (सर्वनाम)। **वै ततो =** अतः, इसलिए, उससे, उसके अनन्तर (सर्वनाम)। **विधूपायत्, प्रत्यक् कर्त्तारम् =** करने वाले को, कर्ता को (कृ - करना)। **ऋच्छतु =** जायें, पायें, पहुँचायें, मिलायें (ऋच्छ् - जाना, जानना, प्राप्त करना, मिलाना)॥ 6॥

750. प्रत्यङ् हि सम्-बभूविथ,
प्रतीचीन-फलः त्वम्।
सर्वान् मत् शपथान्,
अधि वरीयो यावय वधम्॥ 7॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - प्रत्यङ् = प्रत्येक (अव्यय)। **हि =** ही, निश्चय (अव्यय)। **सम्=** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **बभूविथ =** हो गये (भू = होना, प्राप्त होना)। **प्रतीचीन-फलः त्वम् =** तुम (सर्वनाम)। **सर्वान् =** सभी को (सर्वनाम)। **मत् =** मुझसे (सर्वनाम)। **शपथान्, अधि =** अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **वरीयो यावय वधम् =** वध को (वध्-हन् = मारना)॥ 7॥

751. शतेन मा परि पाहि,
सहस्रेण अभि रक्ष मा।
इन्द्र ते वीरुधाम् पते उग्रः,
ओज्मानम् आ दधत्॥ 8॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - शतेन = सौ द्वारा। **मा =** नहीं, मत (अव्यय)। **परि =** सभी तरफ (उपसर्ग)। **पाहि =** पालन करो, रक्षा करो (पा - पालन, रक्षण करना)। **सहस्रेण =** हजार द्वारा (संख्या)। **अभि =** अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **रक्ष =** रक्षा करो, बचाओ (रक्ष = रक्षा करना, बचाना)। **मा =** नहीं, मत (अव्यय)। **इन्द्र =** इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **वीरुधाम् पते उग्रः =** उग्र, वक्तागण, समूह, सम्बन्धी (उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना)। **ओज्मानम् =** ओजमान को (ओज - शक्तिमान् होना, जीवित होना, बढ़ना)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **दधत् =** धारण किया (धा-दध् - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)॥ 8॥

122. पिशाचक्षयण सूक्त - 20

752. आ पश्यति प्रति पश्यति,

परा पश्यति पश्यति।
दिवम् अन्तरिक्षम् आत् भूमिम्,
सर्वम् तत् देवि पश्यति॥ 1॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **पश्यति** = देखता है (पश् = देखना)। **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग)। **पश्यति** = देखता है (पश् = देखना)। **परा** = परम्, परे, पीछे, विपरीत (अव्यय)। **पश्यति** = देखता है (पश् = देखना)। **पश्यति** = देखता है (पश् = देखना)। **दिवम्** = दिव को, तेजस्वी को (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)। **अन्तरिक्षम्** = अन्तरिक्ष, आकाश, अन्तर्दर्शी (अन्तः - बीच में, इक्ष् - स्वाद लेना, ईक्ष् -देखना)। **आत्** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग)। **भूमिम्** = भूमि को (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **सर्वम् तत्** = वह, उस को (सर्वनाम)। **देवि** = देवी, तेजस्विनी (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **पश्यति** = देखता है (पश् = देखना)॥ **1**॥

मन्त्रार्थ -

753. तिस्रो दिवः तिस्रः पृथिवीः,
षट् च इमाः प्रदिशः पृथक्।
त्वया अहम् सर्वा भूतानि,
पश्यानि देवि ओषधे॥ 2॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **तिस्रो दिवः** = दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)। **तिस्रः** = तीन (संख्या)। **पृथिवीः** = पृथ्वी, विस्तृत भूमि, विस्तार (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)। **षट्** = छह (संख्या, सर्वनाम)। **च** = और (अव्यय)। **इमाः** = यह, इसको (सर्वनाम)। **प्रदिशः** = प्रदिश, दिशा (प्र - प्रकृष्ट, दिश् - दिखाना, दिखाना, समझाना, कहना, देना)। **पृथक्** = अलग (अव्यय)। **त्वया** = तुम्हारे द्वारा, तुमसे (सर्वनाम)। **अहम्** = मैं (सर्वनाम)। **सर्वा** = सभी (सर्वनाम)। **भूतानि** = भूतों को, उत्पन्न हुओं को (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **पश्यानि देवि** = देवी, तेजस्विनी (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **ओषधे** = हे ओषधि (उषध्-ओषध् - चिकित्सा करना, रोगमुक्त करना)॥ **2**॥

754. दिव्यस्य सुपर्णस्य,
तस्य ह असि कनीनिका।
सा भूमिम् आ रुरोहिथ,
वह्यम् श्रान्ता वधूः इव॥ 3॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **दिव्यस्य** = दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय का (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)। **सुपर्णस्य, तस्य** = उसका (सर्वनाम)। **ह** = ही, निश्चय ही (अव्यय)। **असि** = हो (अस् - होना)। **कनीनिका। सा** = वह (सर्वनाम)। **भूमिम्** = भूमि को (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना

करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **रुरोहिथ, वह्यम् श्रान्ता वधूः इव** = समान, की भाँति, के समान (अव्यय) ॥ 3 ॥

755. ताम् मे सहस्र-अक्षो देवो,
दक्षिणे हस्ते आ दधत्।
तया अहम् सर्वम् पश्यामि,
यः च शूद्रः उत आर्यः ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **ताम्** = उसको (सर्वनाम)। **मे** = मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **सहस्र-अक्षो देवो** = देव (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **दक्षिणे हस्ते** = हाथ में (हस्त - देना, लेना, ग्रहण करना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **दधत्** = धारण किया (धा-दध् - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)। **तया** = उसके द्वारा (सर्वनाम)। **अहम्** = मैं (सर्वनाम)। **सर्वम्** = सब (सर्वनाम)। **पश्यामि** = देखता हूँ (पश्-दृश् = देखना)। **यः** = जो (सर्वनाम)। **च** = और (अव्यय)। **शूद्रः** = शूद्र, शुद्ध करने वाला (शुक्-शुच्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **आर्यः ॥ 4 ॥**

756. आविः कृणुष्व रूपाणि,
मा आत्मानम् अप गूहथाः।
अथो सहस्र-चक्षो त्वम्,
प्रति पश्याः किमीदिनः ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **आविः** = रक्षक (अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)। **कृणुष्व** = कीजिये (कृ - करना)। **रूपाणि** = रचना, आकार, रूप (रूप - आकार बनाना, रचना करना, मन में रूपाकृति लाना)। **मा** = नहीं, मत (अव्यय)। **आत्मानम्** = आत्मा को (आत् - होना, चिरन्तन होना, नित्य होना, चेतन होना, अत् - सतत गमन करना, निरन्तर चलना, सतत चलना, जानना, पाना)। **अप** = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। **गूहथाः। अथो** = अब, इसके बाद, इसके अनन्तर (अव्यय)। **सहस्र=** हजार (संख्या)।-**चक्षो** = चक्षु अर्थात् नेत्रों से (चक्ष् = स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)। **त्वम्** = तुम (सर्वनाम)। **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग)। **पश्याः किमीदिनः ॥ 5 ॥**

757. दर्शय मा यातुधानान्,
दर्शय यातुधान्यः।
पिशाचान् सर्वान् दर्शय,
इति त्वा रभे ओषधे ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **दर्शय मा** = नहीं, मत (अव्यय)। **यातुधानान्** = यातुधानों को (या - जाना, यत् - यत्न करना, प्रयास करना, उद्योग करना, दुःख देना, छाया-आच्छादन करना, रोकना, धा = धारण करना)। **दर्शय यातुधान्यः** = यातुधान के योग्य (या - जाना, यत् - यत्न करना, प्रयास करना, उद्योग करना, दुःख देना, छाया-आच्छादन करना, रोकना, धा = धारण करना)। **पिशाचान् सर्वान्** = सभी को (सर्वनाम)। **दर्शय, इति** = ऐसा, यह, इसी प्रकार (अव्यय)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **रभे** = आनन्दित होते हैं, प्रसन्न होते हैं (रभ - आनन्दित होना, प्रसन्न होना)। **ओषधे** = हे ओषधि (उषध्-ओषध् - चिकित्सा करना, रोगमुक्त करना) ॥ 6 ॥

758. कश्यपस्य चक्षुः असि,

शुन्याः च चतुः-अक्ष्याः।
वीध्रे सूर्यम्-इव सर्पन्तम्,
मा पिशाचम् तिरः करः॥ 7॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **कश्यपस्य =** कश्यप का (कश - प्रकाश होना, शासन करना, दण्ड देना, प्रकाश करना, गति करना, चलना)। **चक्षुः =** दृष्टि, वाणी, आँख (चक्ष् - स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)। **असि =** हो (अस् - होना)। **शुन्याः च चतुः=** चार (संख्या)।-**अक्ष्याः। वीध्रे सूर्यम्=** सूर्य को, उत्पन्नकर्ता, ऐश्वर्यवान् को (सुर - ऐश्वर्य होना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना, सू - उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, ऐश्वर्य होना)।-**इव =** समान, की भाँति, के समान (अव्यय)। **सर्पन्तम्, मा =** नहीं, मत (अव्यय)। **पिशाचम् तिरः =** पार कराने वाले (तॄ - पार जाना, पर तीर को जाना, जल पर तैरना, जीतना, जल के पार जाना)। **करः =** करने वाला (कृ - करना)॥ **7॥**

759. उत् अग्रभम् परिपाणात्,
यातुधानम् किमीदिनम्।
तेन अहम् सर्वम् पश्यामि,
उत शूद्रम् उत आर्यम्॥ 8॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **उत् =** भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)। **अग्रभम् =** गर्भ हुआ, ग्रहण किया, अग्रभ को (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, गृ = सींचना, जानना, समझना, खाना, निगलना, शब्द करना, गृह् - गृभ्-गर्भ् - अन्तःवास करना, ग्रहण लेना, लेना, स्वीकार करना, अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **परिपाणात्, यातुधानम् =** यातुधान को (या - जाना, यत् - यत्न करना, प्रयास करना, उद्योग करना, दुःख देना, छाया-आच्छादन करना, रोकना, धा = धारण करना)। **किमीदिनम्** = यह क्या है, ऐसे भाव वाले को, जिज्ञासु को (किम् - क्या (सर्वनाम), इदम् - यह, इसको (सर्वनाम))। **तेन =** उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **अहम् =** मैं (सर्वनाम)। **सर्वम् =** सब (सर्वनाम)। **पश्यामि =** देखता हूँ (पश्-दृश् = देखना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **शूद्रम् =** शूद्र को, शुद्ध करने वाले को (शुक्-शुच्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **आर्यम्॥ 8॥**

760. यो अन्तरिक्षेण पतति,
दिवम् यः च अतिसर्पति।
भूमिम् यो मन्यते नाथम्,
तम् पिशाचम् प्र दर्शय॥ 9॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **यो =** जो (सर्वनाम)। **अन्तरिक्षेण =** अन्तरिक्ष द्वारा (अन्तः - बीच में, इक्ष् - स्वाद लेना, ईक्ष् -देखना)। **पतति =** गिरता है (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **दिवम् =** दिव को, तेजस्वी को (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)। **यः =** जो (सर्वनाम)। **च =** और (अव्यय)। **अतिसर्पति =** अधिक सरकता है, चलता है (अति - अधिक, बहुत (अव्यय), सृप-सर्प - जाना, सरकना, गति करना)। **भूमिम् =** भूमि को (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **यो =** जो (सर्वनाम)। **मन्यते =** मानते हैं (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **नाथम्, तम् =** उसको, उसे

(सर्वनाम)। **पिशाचम् प्र =** प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **दर्शय ॥ 9 ॥**

23. अनुवाक - 5

123. अपामार्ग सूक्त - 21

761. आ गावो अग्मन् उत भद्रम् अक्रन्,
सीदन्तु गोष्ठे रणयन्तु अस्मे।
प्रजावतीः पुरुरूपाः इह स्युः,
इन्द्राय पूर्वीः उषसो दुहानाः ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **गावो =** शब्द, वाणी, वचन (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)। **अग्मन् =** गये, पाया, प्राप्त हुए (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अग् = जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, गति करना, घूमना, कुटिल गति करना, टेढ़ा जाना, लेना, ग्रहण करना, गम् = जाना, जानना, पाना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **भद्रम् =** कल्याणकारी को (भदि-भन्द् = सुख होना, शुभ कर्म करना, कल्याण होना)। **अक्रन् =** किया (अ = नहीं, उपसर्ग, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, कृ = करना)। **सीदन्तु =** बैठें, संचरण करें, प्रतिष्ठित हों (सीद- जाना, चलना, शक्तिहीन होना, म्लान होना, खिन्न होना, सूखना, शुष्क होना, मुर्झाना, भग्न करना, नष्ट करना)। **गोष्ठे =** गोष्ठ में, गो के स्थान में, शब्द करने वालों, मननशीलों, उपदेशकों के समूह में (गोष्ठ - मिलकर रहना, एकत्र करना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, स्था - स्थित होना, ठहरना)। **रणयन्तु अस्मे =** हमारा, हममें, हमारे लिए (सर्वनाम)। **प्रजावतीः =** प्रजायुक्त, सन्तान वाली (प्र - बहुत, प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जन्म होना)। **पुरुरूपाः इह =** इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **स्युः** = हों (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **इन्द्राय =** इन्द्र के लिए, परम ऐश्वर्य के लिए (इदि-इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **पूर्वीः =** पूर्व (पूर्व = पूर्व, पहले, सर्वनाम, पूर्व - पूर्ण करना, भरना, निवास करना, आश्चर्य करना, आमन्त्रण करना)। **उषसो =** उषायें (उषस् - प्रभात होना, पौ फटना, उष - हिंसा करना, जलना, जलाना, ताप देना)। **दुहानाः =** दुहने वाले (दुह - दूध निकालना, दोहना, रिक्त करना, लेना, खींचना) ॥ 1 ॥

762. इन्द्रो यज्वने गृणते च शिक्षते,
उप इत् ददाति न स्वम् मुषायति।
भूयो-भूयो रयिम् इत् अस्य वर्धयन्,
अभिन्ने खिल्ये नि दधाति देवयुम् ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - इन्द्रो = परम ऐश्वर्यवान् (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **यज्वने गृणते च =** और (अव्यय)। **शिक्षते, उप =** समीप (उपसर्ग)। **इत् =** ही (अव्यय)। **ददाति =** देता है (दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)। **न =** नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **स्वम् =** अपने को, स्वयम् को (सर्वनाम)। **मुषायति। भूयो =** हो जाओ (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)।-**भूयो =** हो जाओ (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **रयिम् =** विद्या, ज्ञान को (रय्-रि, री - चलना, जाना, जानना, पाना, री-रै - शब्द करना)। **इत् =** ही (अव्यय)। **अस्य =** इसका (सर्वनाम)। **वर्धयन् =** बढ़ाता हुआ (वृध् = बढ़ना, चमकना, बोलना)। **अभिन्ने खिल्ये नि =** निश्चित, निरन्तर (अव्यय)। **दधाति =** धारण करता है (दध - धारण करना, पालन करना, देना,

अर्पण करना)। **देवयुम्** = देवयु को, देवयुक्त को (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना, यु - मिलाना, अलग करना, बाँधना, गूँथना, निन्दा करना, दोष लगाना, अपमान करना) ॥ 2 ॥

763. न ता नशन्ति न दभाति तस्करो,
न आसाम् आमित्रः व्यथिः आ दधर्षति।
देवान् च याभिः यजते ददाति च,
ज्योक् इत् ताभिः सचते गोपतिः सह ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **न** = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **ता** = वे, वह, वे दोनो (सर्वनाम)। **नशन्ति न** = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **दभाति तस्करो, न** = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **आसाम्** = आसीन हुए, बैठे (अस् - होना, आस् - बैठना, उपस्थित होना, विद्यमान होना, जीवित रहना, होना)। **आमित्रः व्यथिः** = व्यथित, व्यथा वाला (व्यथ - व्यथित होना, दुःखी होना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **दधर्षति** = जीतता है, गर्व करता है, धृष्टता करता है (धृष् = जीतना, गर्व करना, धृष्टता करना, अभिमान करना, स्वयम् को बड़ा समझना, चतुरता दिखाना, वञ्चना करना)। **देवान्** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों को (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **च** = और (अव्यय)। **याभिः** = जिसके द्वारा (सर्वनाम)। **यजते** = यजन करता है (यज - यज्ञ करना, हवन करना, देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना, संयोग करना)। **ददाति** = देता है (दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)। **च** = और (अव्यय)। **ज्योक्** = ज्योक्, सुदीर्घ, चिरकालीन, निरन्तर (ज्यु = गति होना। ज्या - जीर्ण होना, पुराना होना, वृद्ध होना, बर्द्धित होना, बड़ा होना, जि - जय होना, जीतना)। **इत्** = ही (अव्यय)। **ताभिः** = उनके द्वारा (सर्वनाम)। **सचते** = अभिसिञ्चन करता है (सच् = सिञ्चन करना, सेवा करना, सन्तुष्ट करना, जानना, पूर्णतया समझना, सम्बन्धी होना)। **गोपतिः** = शब्द करने वालों, मननशीलों, उपदेशकों के पालक-रक्षक (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, गुप् = रक्षा करना, चमकना, बोलना, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **सह** = साथ, सहित (सर्वनाम) ॥ 3 ॥

764. न ताः अर्वा रेणु-ककाटो अश्नुते,
न संस्कृतत्रम् उप यन्ति ताः अभि।
उरुगायम् अभयम् तस्य ताः अनु,
गावो मर्तस्य वि चरन्ति यज्वनः ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **न** = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **ताः** = वे (सर्वनाम)। **अर्वा** = प्रगतिशील, व्यापक, शब्दकर्ता (अर्व - गति करना, जाना, चलना, जानना, पाना, पहुँचना, हिंसा करना, ऋ - जाना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना, पहुँचाना, अर्-ऋ - गति करना, जाना, जानना, पाना, शब्द करना, व्याप्त होना, मिलाना, महत्व दिखाना, हिंसा करना)। **रेणु** = रेणु, गति, ज्ञान, वाणी (रि - जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, री - गति करना, झरना-टपकना, लेना, शब्द करना, सुनना)।-**ककाटो अश्नुते** = व्याप्त होता है, भोजन करता है, भोग करता है, प्राप्त करता है (अश् = भोजन करना, व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना)। **न** = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **संस्कृतत्रम् उप** = समीप (उपसर्ग)। **यन्ति** = प्राप्त होते हैं, नियमन-नियन्त्रण करते हैं (यम् = रोकना, स्वाधीन रखना, आवरण करना, पोषण करना, नियमन करना, यन -उद्धार करना, या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, जानना)। **ताः** = वे (सर्वनाम)। **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **उरुगायम् अभयम्** = अभय, भय-हीन, भय-मुक्त (अ - नहीं, भी = भय होना, डरना, घबराना)। **तस्य** = उसका (सर्वनाम)।

ताः = वे (सर्वनाम)। **अनु =** पश्चात्, पीछे, अनुकूल (उपसर्ग)। **गावो =** शब्द, वाणी, वचन (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)। **मर्तस्य =** मरणशील का (मृ = मरना, देहत्याग करना)। **वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **चरन्ति =** विचरण करते हैं, चलते हैं (चर - जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)। **यज्वनः ॥ 4 ॥**

765. गावो भगो गावः इन्द्रो मे इच्छात्,
गावः सोमस्य प्रथमस्य भक्षः।
इमा या गावः स जनास इन्द्रः,
इच्छामि हृदा मनसा चित् इन्द्रम् ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - गावो = शब्द, वाणी, वचन (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)। **भगो =** भग, सेवा, सेवनीय, सेवायोग्य (भग्-भज् = सेवा करना, सेवन करना, सेवित होना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)। **गावः =** शब्द, वाणी, वचन (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)। **इन्द्रो =** परम ऐश्वर्यवान् (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **मे =** मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **इच्छात्, गावः =** शब्द, वाणी, वचन (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)। **सोमस्य =** सोम का (सु = उत्पन्न करना, अद्भुत सामर्थ्य, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना। सू = प्रेरणा देना। सो–स्य, सय् - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना)। **प्रथमस्य भक्षः =** भक्षण करने वाला (भक्ष - खाना, ग्रहण करना)। **इमा=** यह, इसको (सर्वनाम)। **या =** जो (सर्वनाम)। **गावः =** शब्द, वाणी, वचन (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)। **स =** वह, उसने (सर्वनाम)। **जनास इन्द्रः =** इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **इच्छामि हृदा =** हृदय (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, लेना, ग्रहण करना, नष्ट करना)। **मनसा =** मन से, मन द्वारा (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **चित् =** भी, ही (अव्यय)। **इन्द्रम् =** इन्द्र को, परम ऐश्वर्यवान् को (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना) ॥ **5 ॥**

766. यूयम् गावो मेदयथा कृशम्,
चित् अश्रीरम् चित् कृणुथा सुप्रतीकम्।
भद्रम् गृहम् कृणुथ भद्रवाचो,
बृहत् वो वयः उच्यते सभासु ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - यूयम् = तुम दोनों (सर्वनाम)। **गावो =** शब्द, वाणी, वचन (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)। **मेदयथा कृशम्, चित् =** भी, ही (अव्यय)। **अश्रीरम् चित् =** भी, ही (अव्यय)। **कृणुथा सुप्रतीकम् =** उत्तम प्रतीक को (सु - उत्तम, अच्छा, जन् = उत्पन्न होना। प्र - प्रकृष्ट, अधिक। तिक्-तीक् - जाना)। **भद्रम् =** कल्याणकारी को (भदि-भन्द् = सुख होना, शुभ कर्म करना, कल्याण होना)। **गृहम् =** गृह को, घर को (गृह - लेना, स्वीकार करना, निवास करना)। **कृणुथ भद्रवाचो, बृहत् =** महान्, बड़ा, विराट, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **वो =** तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **वयः =** वय, रचना (वय = जाना, जानना, पाना,

उड़ना, वा - गति करना, बहना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण करना, घेरना, भेजना, खाना, वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना)। **उच्यते =** उच्चारण करते हैं, कहते हैं (उक् - उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना)। **सभासु ॥ 6 ॥**

767. प्रजावतीः सूयवसे रुशन्तीः, शुद्धाः अपः सुप्रपाणे पिबन्तीः।
मा व स्तेनः ईशत मा अघशंसो परि वो रुद्रस्य हेतिः वृणक्तु ॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ : प्रजावतीः = प्रजायुक्त, सन्तान वाली **सूयवसे =** सूयवस में **रुशन्तीः =** प्रकाश करती हुई **शुद्धाः =** शुद्ध, पवित्र **अपः =** पालन करने वाला, पालक, रक्षक **सुप्रपाणे =** उत्तम अधिक पीने योग्य में **पिबन्तीः =** पीती हुई **मा** = नहीं **वः =** तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **स्तेन** = चोर **ईशत** = ऐश्वर्य व अधिकार हो **मा** = नहीं **अघशंसो** = पापी, अपराधी **परि =** सभी तरफ **वो =** तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग **रुद्रस्य =** रुद्र, करुणाशील, रुदन करने वाले, रुदन कराने वाले का **हेतिः =** हेति, गति, ज्ञान, प्राप्ति, वृद्धि, प्रेरणा **वृणक्तु =** वरण करो **॥ 7 ॥**

भावार्थ : यजुर्वेद को कर्म प्रधान माना गया है। प्रथम मन्त्र में ही परमात्मा से कर्मशीलता, रचनाशीलता प्रदान करने के लिए प्रार्थना की गयी है। इसके लिए आवश्यक गति, बल, प्राणशक्ति देने के लिए कहा गया है। श्रेष्ठतम कर्म तथा परम ऐश्वर्य के लिए सेवा, दान आदि की भी आवश्यकता है तथा यह भी महत्वपूर्ण है कि ये सभी संसाधन अहिंसक हों अर्थात् किसी व्यक्ति को कष्ट पहुँचाकर प्राप्त न किये जायें। सबके सुख में ही अपना सुख निहित है। प्रजावती शब्द स्त्रीलिंग है, अतः स्पष्ट है कि निरोगी तथा गतिशीलता की कामना नारियों के लिए की गयी है। नारियों का स्वास्थ्य अच्छा हो, उनमें गतिशीलता हो, उनको घर तक सीमित न रखा जाए। परमात्मा से प्रार्थना है कि सुरक्षा स्थायी हो, सुनिश्चित हो। नारियों का इस प्रकार सम्मान करने वाले यजमान के मार्गदर्शकों-शुभचिन्तकों की रक्षा परमात्मा करे **॥ 7 ॥**

विशेष :- यजमान का शाब्दिक अर्थ है यजन करता हुआ। यज् धातु का अर्थ है देवपूजा, संगतिकरण, दान। अतः यजमान का अर्थ हुआ देवपूजा, संगतिकरण तथा दान करने वाला। ऐसे सज्जनों की रक्षा के लिए परमात्मा से प्रार्थना की गयी है। प्रयास हमें करना होगा तथा प्रार्थना से परमात्मा की सहायता मिलेगी। यजमानस्य पशून् पाहि का अर्थ है यजमान के पशुओं की रक्षा करो। पशु का सामान्य अर्थ घोड़े, गाय आदि मानना वेद की गरिमा-गम्भीरता के अनुकूल नहीं है। यजुर्वेद का प्रथम मन्त्र इतने साधारण भाव का सन्देश नहीं देता। पश्यति इति पशुः अर्थात् जो देखता है, वह पशु है। नेत्रों वाले सभी जीवों में देखने की क्षमता है, अतः सामान्य अर्थ में वे पशु हैं। परन्तु वेद में पशु का अर्थ विशेष दृष्टि वाले विद्वान् साधक ही हो सकता है। मन्त्रदृष्टा विद्वानों को ऋषि कहते हैं - **ऋषियो मन्त्र दृष्टारः**। पश्यन्ते यस्मिन् इति पशुः इस प्रकार विग्रह करने पर अर्थ होगा, जिसमें देखते हैं। यजमान अर्थात् साधक उपासक जिसमें अपनी दृष्टि केन्द्रित करते हैं, अर्थात् परमात्मा। यहां पशु का ऐसा ही उदात्त अर्थ स्वीकार करना उचित है। श्लेष के रूप में पशु के अर्थ परमात्मा, उपासक तथा प्राणी या संसाधन माने जा सकते हैं। वेद मन्त्रों की त्रिविधि अर्थ प्रक्रिया में तीनों ही अर्थ उपयुक्त हैं। पश बन्धने धातु से भी पशु शब्द बनता है। बन्धनों की रक्षा करने का भाव है कि परमात्मा के साथ हमारे सम्बन्ध बने रहें। इस बन्धन की रक्षा करना तो आवश्यक है ही **॥ 7 ॥**

पदार्थ : प्रजावतीः = प्रजायुक्त, सन्तान वाली (प्र + जन् = जन्म होना, उत्पन्न होना या करना)। **सूयवसे =** सूयवस में (सू = गर्भ धारण करना, जन्म देना, उत्पन्न करना, सु - उत्तम, श्रेष्ठ, यु = मिलाना, अलग करना, यव = समाप्त करना, उपसंहार करना)। **रुशन्तीः =** प्रकाश करती हुई (रुश् - हिंसा करना, रुंश - चमकना, प्रकाशित होना, बोलना)। **शुद्धाः =** शुद्ध, पवित्र (शुच्-शुक्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना,जाना)। **अपः =** पालन करने वाला, पालक, रक्षक् (अप = पालन करना, जाना, जानना, पाना)। **सुप्रपाणे =** उत्तम अधिक पीने योग्य में (सु - सुन्दर, अच्छा, प्र - प्रकृष्ट, अधिक, पा-पिब - पीना, प्राशन करना, सूखना, संरक्षण करना)। **पिबन्तीः =** पीती हुई (पी-पिब् - पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना)। **मा** = नहीं (अव्यय)। **वः =** तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **स्तेन** = चोर (स्तेन - चुराना, लूटना)। **ईशत** = ऐश्वर्य व अधिकार हो (ईश = ऐश्वर्य-अधिकार होना)। **मा** = नहीं (अव्यय)। **अघशंसो** = पापी, अपराधी (अघ् = पाप, अपराध करना)। **परि =** सभी तरफ (उपसर्ग)। **वो =** तुम सबको,

तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **रुद्रस्य =** रुद्र, करुणाशील, रुदन करने वाले, रुदन कराने वाले का (रुद् = रुदन करना, रुलाना)। **हेतिः =** हेति, गति, ज्ञान, प्राप्ति, वृद्धि, प्रेरणा (हि - गति, वृद्धि, प्रेरणा करना, जाना, जानना, पाना)। **वृणक्तु =** वरण करो (वृ = वरण करना, वृण - परित्याग करना, आनन्द करना, उत्साह करना)॥ **7** ॥

124. अमित्रक्षयण सूक्त - 22

768. इमम् इन्द्र वर्धय क्षत्रियम् मे,
इमम् विशाम् एकवृषम् कृणु त्वम्।
निः अमित्रान् अक्ष्णुहि अस्य सर्वान्,
तान् रन्धय अस्मै अहम् उत्तरेषु॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - इमम् = इसको (सर्वनाम)। **इन्द्र =** इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **वर्धय =** बढ़ो, बढ़ाओ (वृध् = बढ़ना, चमकना, बोलना)। **क्षत्रियम् मे =** मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **इमम् =** इसको (सर्वनाम)। **विशाम् =** प्रवेशी को (विश - भीतर जाना, चारों ओर फैलना, विश - घुसना, भीतर जाना, धंसना)। **एकवृषम् कृणु =** करो (कृ = करना)। **त्वम् =** तुम (सर्वनाम)। **निः =** बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग)। **अमित्रान् =** अमित्रों को, अस्नेही जनों को (अ = नहीं, मिद् = स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, नरम होना, मृदुल होना)। **अक्ष्णुहि अस्य =** इसका (सर्वनाम) **सर्वान् =** सभी को (सर्वनाम)। **तान् =** उनको (सर्वनाम)। **रन्धय अस्मै =** इसके लिए, हमको, हमारे लिए (सर्वनाम) **अहम् =** मैं (सर्वनाम)। **उत्तरेषु॥ 1 ॥**

769. आ इमम् भज ग्रामे अश्वेषु गोषु,
निः तम् भज यो अमित्रः अस्य।
वर्ष्म क्षत्राणाम् अयम् अस्तु राजा,
इन्द्र शत्रुम् रन्धय सर्वम् अस्मै॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **इमम् =** इसको (सर्वनाम)। **भज =** सेवा करो, सेवा में लगाओ (भग्-भज् = सेवा करना, सेवन करना, सेवित होना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)। **ग्रामे अश्वेषु =** अश्वों में, तीव्र गति युक्त, व्यापकों में (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)। **गोषु =** गो में, शब्द करने वालों, मननशीलों, उपदेशकों में (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)। **निः =** बिना, बाहर, निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग)। **तम् =** उसको, उसे (सर्वनाम)। **भज =** सेवा करो, सेवा में लगाओ (भग्-भज् = सेवा करना, सेवन करना, सेवित होना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)। **यो =** जो (सर्वनाम)। **अमित्रः अस्य =** इसका (सर्वनाम)। **वर्ष्म क्षत्राणाम् =** क्षत्रों का (क्षत्, क्षद् = खाना, कूटना, ढकना, मार डालना, रक्षा करना)। **अयम् =** यह (सर्वनाम)। **अस्तु =** हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **राजा =** राजा (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **इन्द्र =** इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **शत्रुम् =** शत्रु को (शी-शद्-शत् - जीर्ण होना, गिरना, गिराना)। **रन्धय सर्वम् =** सब (सर्वनाम)। **अस्मै =** इसके लिए, हमको, हमारे लिए (सर्वनाम)॥ **2** ॥

770. अयम् अस्तु धनपतिः धनानाम्,
अयम् विशाम् विश्पतिः अस्तु राजा।
अस्मिन् इन्द्र महि वर्चासि धेहि,
अवर्चसम् कृणुहि शत्रुम् अस्य॥ 3॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **अयम्** = यह (सर्वनाम)। **अस्तु** = हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **धनपतिः धनानाम्, अयम्** = यह (सर्वनाम)। **विशाम्** = प्रवेशी को (विश - भीतर जाना, चारों ओर फैलना, विश - घुसना, भीतर जाना, धंसना)। **विश्पतिः** = विश के स्वामी, रक्षक, सूचना, प्रेरणा, अन्तर्गमन करने वालों के रक्षक, स्वामी (विश - भीतर जाना, चारों ओर फैलना, पत् = ऐश्वर्य होना, रक्षक-स्वामी होना)। **अस्तु** = हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **राजा** = राजा (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **अस्मिन्** = इस, इसमें (सर्वनाम)। **इन्द्र** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **महि** = महत् को, पूज्य, महान्, पूजते हैं (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना)। **वर्चासि धेहि** = धारण करें (धा-धि-धी - धारण करना, पहनना, पोषण करना, रक्षण करना, देना)। **अवर्चसम् कृणुहि** = करो (कृ = करना)। **शत्रुम्** = शत्रु को (शी-शद्-शत् - जीर्ण होना, गिरना, गिराना)। **अस्य** = इसका (सर्वनाम)॥ **3**॥

771. अस्मै द्यावापृथिवी भूरि वामम्,
दुहाथाम् घर्मदुघे इव धेनू।
अयम् राजा प्रियः इन्द्रस्य भूयात्,
प्रियो गवाम् ओषधीनाम् पशूनाम्॥ 4॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **अस्मै** = इसके लिए, हमको, हमारे लिए (सर्वनाम)। **द्यावापृथिवी** = अग्रगामी विस्तार, प्रकाश, द्यावा और पृथिवी (द्यु - आगे जाना, समीप जाना, द्युत् -दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, द्यै = तिरस्कार करना, पृथु = विस्तार होना, फेंकना, उड़ाना, भेजना, प्रेरणा करना)। **भूरि** = बहुत (अव्यय, सर्वनाम)। **वामम्** = वाम को (वा = गति करना, पवन की भाँति बहना, जाना, जानना, पाना, गन्ध होना, प्रवाहित होना, प्रवाहित करना)। **दुहाथाम् घर्मदुघे इव** = समान, की भाँति, के समान (अव्यय)। **धेनू** = धेनु, प्रिय, पालन करने वाले (धिन - प्रेम करना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना, धी - बुद्धि होना, धे - पालना, पीना)। **अयम्** = यह (सर्वनाम)। **राजा** = राजा (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **प्रियः** = प्रिय (प्री = स्नेह करना, प्यार करना, तृप्त करना, सन्तुष्ट करना, चाहना)। **इन्द्रस्य** = इन्द्र का, परम ऐश्वर्यशाली का (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **भूयात्** = हो (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **प्रियो गवाम्** = गवा को, गौ को (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, गम् = जाना)। **ओषधीनाम्** = ओषधियों का (उषध्-ओषध् = चिकित्सा करना, रोग मुक्त करना)। **पशूनाम्** = पशुओं का, दृष्टा का, बन्धन का (पश्-दृश् = देखना, पश - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना)॥ **4**॥

772. युनज्मि ते उत्तर-वन्तम् इन्द्रम्,
येन जयन्ति न परा-जयन्ते।
यः त्वा करत् एक-वृषम् जनानाम्,
उत राज्ञाम् उत्तमम् मानवानाम्॥ 5॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **युनज्मि =** जोड़ता हूँ (यु = बांधना, बन्धन करना, गूंथना)। **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **उत्तर =** अधिक उत्तम, श्रेष्ठतर (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, तृ, तृ = तैरना, पार जाना)।-**वन्तम् इन्द्रम् =** इन्द्र को, परम ऐश्वर्यवान् को (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **येन =** जिससे, जिसके द्वारा (सर्वनाम)। **जयन्ति न =** नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **परा-जयन्ते। यः =** जो (सर्वनाम)। **त्वा =** तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **करत् =** करते हुए (कृ - करना)। **एक-वृषम् जनानाम् =** जनों का, उत्पन्न लोगों का (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **राज्ञाम् =** प्रकाशमान को, राजा को (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **उत्तमम् =** उत्तम को, श्रेष्ठ-इच्छा, शुभ-इच्छा को (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, तम् - अन्धकार होना, इच्छा करना, चाहना, मानसिक या शारीरिक व्यथा से दुःखित होना)। **मानवानाम्॥ 5॥**

773. उत्तरः त्वम् अधरे ते सपत्ना,
ये के च राजन् प्रतिशत्रवः ते।
एक-वृषः इन्द्र-सखा जिगीवान्,
शत्रू-यताम् आ भरा भोजनानि॥ 6॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **उत्तरः=** अधिक उत्तम, श्रेष्ठतर (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, तृ, तृ = तैरना, पार जाना)। **त्वम् =** तुम (सर्वनाम)। **अधरे ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **सपत्ना =** ऐश्वर्यवान् (स - सहित, साथ। पत् = जाना, उड़ना, पतन होना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **ये =** जो (सर्वनाम)। **के च =** और (अव्यय)। **राजन् =** हे राजन्, प्रकाशित होने वाले (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **प्रतिशत्रवः ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **एक-वृषः =** एक शक्तिशाली, एक ही पराक्रमी, विचारशील पराक्रमी (एक - एक संख्या, एक - विचार करना, वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना या पीड़ा करना, दुःख देना, पीड़ित करना)। **इन्द्र-सखा जिगीवान्, शत्रू-यताम् =** शत्रुता करो (शी-शद्-शत् - जीर्ण होना, गिरना, गिराना)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **भरा =** पोषण करो, भरण करो (भृ = पूर्ण करना, भरना, धारण-पोषण करना)। **भोजनानि =** भोजन (भुज - संरक्षण करना, पालन करना, खाना, भक्षण करना)॥ **6॥**

774. सिंह-प्रतीको विशो अद्धि सर्वा,
व्याघ्र-प्रतीको अव बाधस्व शत्रून्।
एकवृष इन्द्रसखा जिगीवान्,
शत्रूयताम् आ खिदा भोजनानि॥ 7॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **सिंह =** सिंह (सिंह् = हिंसा करना, गति करना)।-**प्रतीको विशो =** विश, प्रतिष्ठित, प्रवेशी (विश - भीतर जाना, चारों ओर फैलना)। **अद्धि =** खाओ, भोग करो, आत्मसात् करो, ग्रहण करो (अद् = खाना, भोग करना, ग्रहण करना, आत्मसात् करना)। **सर्वा =** सभी (सर्वनाम)। **व्याघ्र-प्रतीको अव =** नीचे, दूर, प्राप्त (अव्यय)। **बाधस्व =** बाधित करो (बाध - रोकना, अटकाव करना, बाधा देना, दुःख देना)। **शत्रून् =** शत्रुओं को (शी-शद्-शत् - जीर्ण होना, गिरना, गिराना)। **एकवृष =** एक शक्तिशाली, एक ही पराक्रमी, विचारशील पराक्रमी (एक - एक संख्या, एक - विचार करना, वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना या पीड़ा करना, दुःख देना, पीड़ित करना)। **इन्द्रसखा जिगीवान्, शत्रूयताम् =** शत्रुता करो (शी-शद्-शत् - जीर्ण होना, गिरना, गिराना)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **खिदा भोजनानि =** भोजन (भुज - संरक्षण करना, पालन करना, खाना, भक्षण करना)॥ **7॥**

125. पापमोचन सूक्त - 23

775. अग्नेः मन्वे प्रथमस्य प्रचेतसः,
पाञ्च-जनस्य बहुधा यम् इन्धते।
विशः-विशः प्रविशि-वांसम् ईमहे,
स नो मुञ्चतु अंहसः॥ 1॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - अग्नेः = अग्नि का (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **मन्वे =** मानता हूँ, जानता हूँ (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **प्रथमस्य प्रचेतसः =** प्रकृष्ट चेतना, विचार वाले (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, चेत् = विचार करना, चिन्तन करना)। **पाञ्च =** व्यक्त करने वाला (पञ्च् - व्यक्त करना, प्रसिद्ध करना, व्यवहार करना, प्रकाश करना)।-**जनस्य =** जन का (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **बहुधा =** बहुत प्रकार से (सर्वनाम)। **यम् =** जिसे, जिसको, जहाँ (सर्वनाम)। **इन्धते =** प्रकाशित होते हैं, प्रकाशित करते हैं (इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)। **विशः=** व्याप्त, प्रविष्ट, प्रवेशी (विश - भीतर जाना, चारों ओर फैलना, धंसना)।-**विशः=** व्याप्त, प्रविष्ट, प्रवेशी (विश - भीतर जाना, चारों ओर फैलना, धंसना)। **प्रविशि-वांसम् ईमहे =** जाते हैं, जानते हैं (ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना)। **स =** वह, उसने (सर्वनाम)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मुञ्चतु =** मुक्त करों (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः =** प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना)॥ 1॥

776. यथा हव्यम् वहसि जातवेदो,
यथा यज्ञम् कल्पयसि प्रजानन्।
एवा देवेभ्यः सुमतिम् नः आ वह,
स नो मुञ्चतु अंहसः॥ 2॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - यथा = जिससे, जैसे, जिस प्रकार (अव्यय)। **हव्यम् =** आदान-प्रदान करने योग्य को, हव्य को, देय को (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **वहसि =** वहन करते हो (वह् = वहन करना, ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)। **जातवेदो =** विद्वान्, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले (जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जा-ज्ञा - जानना, विद् - जानना)। **यथा =** जिससे, जैसे, जिस प्रकार (अव्यय)। **यज्ञम् =** यजन को (यज - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना)। **कल्पयसि प्रजानन् =** प्रजनन करने वाले (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, जन् = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **एवा =** ही (अव्यय)। **देवेभ्यः =** देवों के लिए (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **सुमतिम् =** सुमति को, सुबुद्धि को (सु = उत्तम, सुन्दर, अच्छा। मन - मनन करना, जानना, समझना, स्वीकार करना, अभ्यास करना, स्थिर होना, गर्व होना)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **वह =** वहन करो, ले जाओ (वह् = वहन करना, ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)। **स =** वह, उसने (सर्वनाम)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मुञ्चतु =** मुक्त करों (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः =** प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना)॥ 2॥

777. यामन्-यामन् उपयुक्तम्,
वहिष्ठम् कर्मन्-कर्मन् आ भगम्।

अग्निम् ईडे रक्षोहणम्,
यज्ञवृधम् घृत-आहुतम्,
स नो मुञ्चतु अंहसः ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **यामन्=** यमन करता हुआ (या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)।-**यामन् =** यमन करता हुआ (या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)। **उपयुक्तम्, वहिष्ठम् कर्मन्=** कर्म (कृ = करना)।-**कर्मन् =** कर्म (कृ = करना)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **भगम् =** भग को, सेवा को (भग्-भज् = सेवा करना, सेवन करना, सेवित होना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)। **अग्निम् =** अग्नि को, ऊर्ध्वगामी, तेजस्वी, विद्वान् को (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **ईडे =** स्तुति करता हूँ (ईड् = स्तुति करना)। **रक्षोहणम् =** रक्षा का विचार करने वाले को, रक्षकों का हनन करने वाले को (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना, ऊह् - अनुमान करना, विचार करना। हन - मार डालना, प्राप्त करना, जाना, समाप्त करना)। **यज्ञवृधम् घृत-आहुतम् =** आदान-प्रदान किया हुआ, आहुत, आह्वान किये, बुलाये हुए, व्याप्त (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, अह - फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, हु - दान करना, आदान-प्रदान करना, ह्वे = शब्द करना, आह्वान करना, बुलाना)। **स =** वह, उसने (सर्वनाम)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मुञ्चतु =** मुक्त करों (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः =** प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना) **॥ 3 ॥**

778. सुजातम् जात-वेदसम्,
अग्निम् वैश्वानरम् विभुम्।
हव्यवाहम् हवामहे,
स नो मुञ्चतु अंहसः ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **सुजातम् =** सुजात को, उत्तम जन को (सु = उत्तम, अच्छा (उपसर्ग), जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **जात =** उत्पन्न हुआ (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)।-**वेदसम्, अग्निम् =** अग्नि को, ऊर्ध्वगामी, तेजस्वी, विद्वान् को (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **वैश्वानरम् =** विश्वनायक को, विश्वजन को, वैश्वानर को (विश्व - सब, नृ - चलना, ले जाना, विनय होना)। **विभुम् =** विभू को (वि - विशेष, भू = होना, पाना, चिन्तन करना)। **हव्यवाहम् =** हव्य का वहन करने वाले को, आदान-प्रदान करने योग्य को ले जाने वाले को (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना, वह् - वहन करना, ले जाना)। **हवामहे** = आह्वान करते हैं, आदान- प्रदान करते हैं (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **स =** वह, उसने (सर्वनाम)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मुञ्चतु =** मुक्त करों (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः =** प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना) **॥ 4 ॥**

779. येन ऋषयो बलम् अद्योतयन् युजा,
येन असुराणाम् अयुवन्त मायाः।
येन अग्निना पणीन् इन्द्रो जिगाय,

स नो मुञ्चतु अंहसः ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **येन =** जिससे, जिसके द्वारा (सर्वनाम)। **ऋषयो =** ऋषिगण (ऋष् - जानना, जाना, पाना, अन्तदृष्टि होना, अन्तर्गमन करना, सूक्ष्मता से भीतर देखना) **बलम् =** बल को (बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना)। **अद्योतयन् युजा =** युक्त कीजिये (यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, बांधना, बन्धन करना, गूंथना, युज - जुड़ना, मिलाप करना, मन एकाग्र करना, एकत्र करना)। **येन =** जिससे, जिसके द्वारा (सर्वनाम)। **असुराणाम् =** असुरों का, ऐश्वर्यहीनों, उत्पन्न-सृजन नहीं करने वालों, प्रकाश देने वालों का (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना)। **अयुवन्त मायाः =** माया (मय् - जाना, क्लिष्ट कार्य करना, मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना)। **येन =** जिससे, जिसके द्वारा (सर्वनाम)। **अग्निना =** अग्नि द्वारा, अग्नि के साथ (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **पणीन् =** पणिगण, स्तुतिकर्ता, उद्योगी, व्यवहारियों को को (पण् = व्यवहार करना, उद्योग करना, व्यापार करना, स्तुति करना)। **इन्द्रो =** परम ऐश्वर्यवान् (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **जिगाय, स =** वह, उसने (सर्वनाम)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मुञ्चतु =** मुक्त करों (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः =** प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना) **॥ 5 ॥**

780. येन देवाः अमृतम् अनु-अविन्दन्,
येन ओषधीः मधुमतीः अकृण्वन्।
येन देवाः स्वः आ अभरन्,
स नो मुञ्चतु अंहसः ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **येन =** जिससे, जिसके द्वारा (सर्वनाम)। **देवाः =** विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **अमृतम् =** न मरने वाले, अमर, अमृत को (अ - नहीं, मृ = मरना)। **अनु =** पश्चात्, पीछे, अनुकूल (उपसर्ग)। **अविन्दन् =** नहीं जानते हुए, अज्ञानी, जान लिया, पा लिया (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, विद् - समझना, जानना, वास करना, जीवन होना, विद्यमान होना, रहना, जानना, समझना)। **येन =** जिससे, जिसके द्वारा (सर्वनाम)। **ओषधीः =** ओषधी (उषध् - चिकित्सा करना, रोग मुक्त करना)। **मधुमतीः =** मधुयुक्त (मध् = मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना, मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)। **अकृण्वन्। येन =** जिससे, जिसके द्वारा (सर्वनाम)। **देवाः =** विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **स्वः =** उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **अभरन् =** भरा, भरण किया (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, भृ = भरण करना, भरना)। **स =** वह, उसने (सर्वनाम)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मुञ्चतु =** मुक्त करों (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः =** प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना) **॥ 6 ॥**

781. यस्य इदम् प्रदिशि यत् विरोचते,
यत् जातम् जनितव्यम् च केवलम्।
स्तौमि अग्निम् नाथितो जोहवीमि,

स नो मुञ्चतु अंहसः ॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **यस्य =** जिसका (सर्वनाम)। **इदम् =** यह, इसको (सर्वनाम)। **प्रदिशि =** प्रदिश में (प्र - प्रकृष्ट, दिश् - दिखाना, दिखाना, समझाना, कहना, देना)। **यत् =** जिसे, जो (सर्वनाम)। **विरोचते, यत् =** जिसे, जो (सर्वनाम)। **जातम् =** उत्पन्न हुआ, उत्पन्न हुए को (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **जनितव्यम् च =** और (अव्यय)। **केवलम्। स्तौमि अग्निम् =** अग्नि को, ऊर्ध्वगामी, तेजस्वी, विद्वान् को (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **नाथितो जोहवीमि, स =** वह, उसने (सर्वनाम)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मुञ्चतु =** मुक्त करों (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः =** प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना) **॥ 7 ॥**

126. पापमोचन सूक्त - 24

782. इन्द्रस्य मन्महे शश्वत् इत् अस्य मन्महे,
वृत्रघ्न स्तोमाः उप मा इमे आ-अगुः।
यो दाशुषः सुकृतो हवम् एति,
स नो मुञ्चतु अंहसः ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **इन्द्रस्य =** इन्द्र का, परम ऐश्वर्यशाली का (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **मन्महे =** मानते हैं, विचार करते हैं (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **शश्वत् =** शश्वत (शश - फुदकते हुए चलना, कूदते हुए जाना। शश्व् - नित्य होना, सदैव रहना, शश्वत होना, शाश्वत होना)। **इत् =** ही (अव्यय)। **अस्य =** इसका (सर्वनाम)। **मन्महे =** मानते हैं, विचार करते हैं (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **वृत्रघ्न स्तोमाः =** स्तोम (स्तोम - पूज्य होना, प्रशंसा करना, स्तुति करना)। **उप =** समीप (उपसर्ग)। **मा =** नहीं, मत (अव्यय)। **इमे =** यह, इस, ये (सर्वनाम)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)।**अगुः =** गया, अगतिशील (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अग् = जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, गति करना, घूमना, कुटिल गति करना, टेढ़ा जाना, लेना, ग्रहण करना, गम् = जाना, जानना, पाना)। **यो =** जो (सर्वनाम)। **दाशुषः =** दानी (दश् = देना)। **सुकृतो =** सुकृत, उत्तम कर्म वाले (सु = उत्तम, अच्छा, उपसर्ग, कृ = करना)। **हवम् =** दान को, आह्वान को, दान करने योग्य, लेने योग्य, तृप्त करने योग्य (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **एति =** जाता है, प्राप्त होता है, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करता है (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना, इच्छा करना, प्रेरणा करना)। **स =** वह, उसने (सर्वनाम)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मुञ्चतु =** मुक्त करों (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः =** प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना) **॥ 1 ॥**

783. यः उग्रीणाम् उग्र-बाहुः ययुः,
यो दानवानाम् बलम् आ-रुरोज।
येन जिताः सिन्धवो येन गावः,
स नो मुञ्चतु अंहसः ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **यः =** जो (सर्वनाम)। **उग्रीणाम् उग्र =** उग्र, वक्तागण, समूह, सम्बन्धी (उच्-वद् - कहना, समझना, उच्

- एकत्र होना, सम्बन्ध होना)। **बाहुः =** प्रयास करने वाले (बाह् - प्रयास करना, बह् - बहना, गति करना, बाहर होना, परे हो जाना, हिंसा करना)। **ययुः =** पृथक् किया (यु = मिलाना, अलग करना)। **यो =** जो (सर्वनाम)। **दानवानाम् बलम् =** बल को (बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना)। **आ-रुरोज। येन =** जिससे, जिसके द्वारा (सर्वनाम)। **जिताः सिन्धवो =** सिन्धु-समूह (सिध - सिद्ध होना, पूर्ण होना, जाना, जानना, पाना, अध्ययन करना, दीक्षा देना, शुभ कार्य करना, सि-सिञ् - बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना)। **येन =** जिससे, जिसके द्वारा (सर्वनाम)। **गावः =** शब्द, वाणी, वचन (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना)। **स =** वह, उसने (सर्वनाम)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मुञ्चतु =** मुक्त करों (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः =** प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना) **॥ 2 ॥**

784. यः चर्षणि-प्रो वृषभः स्वः-वित्,
यस्मै ग्रावाणः प्र-वदन्ति नृम्णम्।
यस्य अध्वरः सप्त-होता मदिष्ठः,
स नो मुञ्चतु अंहसः ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - यः = जो (सर्वनाम)। **चर्षणि =** आनन्द, चेतना, विचार वाला (चृष्-चर्ष - आनन्द होना, चेतन होना, विचार करना)।-**प्रो** = पूर्ण, तृप्त (प्रा - पूर्ण करना, भरना, प्रा - तृप्त करना)। **वृषभः =** पराक्रमी (वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना या पीड़ा करना, दुःख देना, पीड़ित करना)। **स्वः=** उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना)।-**वित्** = विद्वान् (विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)। **यस्मै =** जिसके लिए (सर्वनाम)। **ग्रावाणः =** सिञ्चन, बोध, ज्ञान, शब्द, वाणी द्वारा (गृ = सींचना, समझना, जानना,खाना, निगलना, शब्द करना, बोलना, समझाना, बताना, गीला करना, घर्षण करना)। **प्र=** प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)।-**वदन्ति =** बोलते हैं (वद - कहना, स्पष्ट कहना, बोलना, समझाना)। **नृम्णम्=** नर, ले जाने वाले को (नृ - ले जाना)। **यस्य =** जिसका (सर्वनाम)। **अध्वरः =** अध्वर, अहिंसक, अवर्णनीय (अ - नहीं, ध्वृ-ध्वर् = हिंसा करना, टेढ़ा करना, झुकाना, वर्णन करना)। **सप्त=** पूर्ण, संलग्न (सप - पूर्ण होना, पूर्ण ज्ञान होना, पूरा समझना, पूर्णतया जानना, संसक्त होना, संलग्न होना, मिलाप होना)।-**होता =** आह्वान्, ग्रहण, दान करने वाले (हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)। **मदिष्ठः, स =** वह, उसने (सर्वनाम)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मुञ्चतु =** मुक्त करों (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः =** प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना) **॥ 3 ॥**

785. यस्य वशासः ऋषभासः उक्षणो,
यस्मै मीयन्ते स्वरवः स्वःविदे।
यस्मै शुक्रः पवते ब्रह्मशुम्भितः,
स नो मुञ्चतु अंहसः ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - यस्य = जिसका (सर्वनाम)। **वशासः ऋषभासः =** ऋषभगण (ऋष् - जानना, जाना, पाना, अन्तदृष्टि होना, अन्तर्गमन करना, सूक्ष्मता से भीतर देखना)। **उक्षणो, यस्मै =** जिसके लिए (सर्वनाम)। **मीयन्ते स्वरवः स्वः=** उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना)। **विदे =** जानता है, विद्वान् में (विद - शरीर की सुध रखना,

समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)। **यस्मै =** जिसके लिए (सर्वनाम)। **शुक्रः =** शुक्र, शुद्ध, पवित्र, पावन, पवित्रकर्ता, शीघ्रकारी (शुक्-शुच्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)। **पवते =** पवित्र करता है, पालन करता है, रक्षा करता है (पु - पालन करना, रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना)। **ब्रह्मशुम्भितः, स =** वह, उसने (सर्वनाम)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मुञ्चतु =** मुक्त करों (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः =** प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना) **॥ 4 ॥**

786. यस्य जुष्टिम् सोमिनः कामयन्ते,
यम् हवन्ते इषु-मन्तम् गो-इष्टौ।
यस्मिन् अर्कः शिश्रिये यस्मिन् ओजः,
स नो मुञ्चतु अंहसः ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - यस्य = जिसका (सर्वनाम)। **जुष्टिम् सोमिनः=** सोमिन, सोम वाले (सु = उत्पन्न करना, अद्भुत सामर्थ्य, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना। सू = प्रेरणा देना। सो–स्य, सय् - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना)। **कामयन्ते =** कामना, इच्छा करते हैं (कम - चाहना, इच्छा करना)। **यम् =** जिसे, जिसको, जहाँ (सर्वनाम)। **हवन्ते =** आह्वान करते हैं, आदान- प्रदान करते हैं (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **इषु=** विद्या, इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि (इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना)।-**मन्तम् गो-इष्टौ। यस्मिन् =** जिसमें (सर्वनाम)। **अर्कः =** अर्क, प्रशंसा, स्तुति (अर्क - प्रशंसा करना, स्तुति करना, ग्रहण करना)। **शिश्रिये =** सेवा करते हैं, आश्रय देते हैं (श्री = सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना)। **यस्मिन् =** जिसमें (सर्वनाम)। **ओजः =** ओज (ओज - शक्तिमान् होना, जीवित होना, बढ़ना)। **स =** वह, उसने (सर्वनाम)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मुञ्चतु =** मुक्त करों (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः =** प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना) **॥ 5 ॥**

787. यः प्रथमः कर्म-कृत्याय जज्ञे,
यस्य वीर्यम् प्रथमस्य अनु-बुद्धम्।
येन उत्-यतो वज्रो अभि-आयत अहिम्,
स नो मुञ्चतु अंहसः ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - यः= जो (सर्वनाम)। **प्रथमः =** प्रथम, पहला, विस्तार (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)। **कर्म=** कर्म, कार्य (कृ = करना)।-**कृत्याय जज्ञे =** उत्पन्न हुए (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **यस्य =** जिसका (सर्वनाम)। **वीर्यम् =** पराक्रम को, वीरता को (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)। **प्रथमस्य अनु=** पश्चात्, पीछे, अनुकूल (उपसर्ग)।-**बुद्धम्। येन =** जिससे, जिसके द्वारा (सर्वनाम)। **उत्=** भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)।-**यतो =** जिससे, जैसे (सर्वनाम)। **वज्रो अभि-आयत अहिम् =** व्यापक को (अह् = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना)। **स =** वह, उसने (सर्वनाम)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मुञ्चतु =** मुक्त करों (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः =** प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना) **॥ 6 ॥**

788. यः सम्-ग्रामान् नयति सम् युधे वशी,
यः पुष्टानि सम्-सृजति द्वयानि।

स्तौमि इन्द्रम् नाथितो जोहवीमि,
स नो मुञ्चतु अंहसः ॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - यः= जो (सर्वनाम)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)।-**ग्रामान् नयति =** ले जाता है (नी - नय - जाना, हिलना, पहुँचना, संरक्षण करना)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **युधे वशी =** वश, इच्छा (वश् = इच्छा करना, चाहना, चमकना)। **यः=** जो (सर्वनाम)। **पुष्टानि सम्=** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)।-**सृजति द्वयानि। स्तौमि इन्द्रम् =** इन्द्र को, परम ऐश्वर्यवान् को (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **नाथितो जोहवीमि, स =** वह, उसने (सर्वनाम)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मुञ्चतु =** मुक्त करों (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः =** प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना) **॥ 7 ॥**

127. पापमोचन सूक्त - 25

789. वायोः सवितुः विदथानि मन्महे,
यौ आत्मन्-वत् विशथो यौ च रक्षथः।
यौ विश्वस्य परिभू बभूवथुः,
तौ नो मुञ्चतम् अंहसः ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - वायोः = हे वायु, हे प्रवाहमान (वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वा = गति करना, पवन की भाँति बहना, जाना, जानना, पाना, गन्ध होना, प्रवाहित होना, प्रवाहित करना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण करना, घेरना, भेजना, खाना, वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना)। **सवितुः =** सविता का, उत्पादक, ऐश्वर्यवान्, उत्पन्न करने वाला (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)। **विदथानि =** विद्याएं, विद्वान् (विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)। **मन्महे =** मानते हैं, विचार करते हैं (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **यौ =** जो दोनों (सर्वनाम)। **आत्मन्=** आत्मा (आत् = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (वैदिक उपसर्ग), आत् - होना, चिरन्तन होना, नित्य होना, चेतन होना, मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना, अत् - सतत गमन करना, निरन्तर चलना, सतत चलना, जानना, पाना)।-**वत् विशथो यौ =** जो दोनों (सर्वनाम)। **च =** और (अव्यय)। **रक्षथः। यौ =** जो दोनों (सर्वनाम)। **विश्वस्य =** विश्व का, सभी का (सर्वनाम)। **परिभू =** चारों तरफ हों, व्याप्त हों (परि = सभी तरफ, उपसर्ग, भू = होना)। **बभूवथुः, तौ नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मुञ्चतम् =** मुक्त करो (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः =** प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना) **॥ 1 ॥**

790. ययोः सम्-ख्याता वरिमा पार्थिवानि,
याभ्याम् रजो युपितम् अन्तरिक्षे।
ययोः प्र-अयम् न अनु-आनशे कः चन,
तौ नो मुञ्चतम् अंहसः ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - ययोः = पृथक् किया (यु = मिलाना, अलग करना)। **सम्=** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)।-**ख्याता =** प्रख्यात करने वाले, खाने वाले, संचयी, भ्रमणशील (खै - खाना, हिंसा करना, स्थिर रहना, खोदना, ख्या - प्रसिद्ध

करना, कहना, व्याख्यान करना)। **वरिमा** = वरण (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, पसन्द करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **पार्थिवानि** = पार्थिव (पृथ - फेंकना, उड़ाना, प्रेरणा करना, भेजना, व्याप्त होना)। **याभ्याम्** = जिसके लिए (सर्वनाम)। **रजो युपितम् अन्तरिक्षे** = अन्तरिक्ष में (अन्तः - बीच में, इक्ष् - स्वाद लेना, ईक्ष् -देखना)। **ययोः** = पृथक् किया (यु = मिलाना, अलग करना)। **प्र=** प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)।-**अयम्** = यह (सर्वनाम)। **न** = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **अनु=** पश्चात्, पीछे, अनुकूल (उपसर्ग)।-**आनशे** = प्राणवान् होता है, नष्ट होता है (आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग), अन्- चेतन होना, प्राण होना, जीवन होना, समर्थ होना, जाना, नश - खो जाना, नष्ट होना, दिखाई नहीं देना)। **कः** = करो (कृ - करना - वैदिक प्रयोग)। **चन** = ही (अव्यय)। **तौ नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मुञ्चतम्** = मुक्त करो (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः** = प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना) **॥ 2 ॥**

791. तव व्रते नि विशन्ते जनासः,
त्वयि उत्-इते प्र ईरते चित्रभानो।
युवम् वायो सविता च भुवनानि,
रक्षथः तौ नो मुञ्चतम् अंहसः ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **तव** = तुम्हारा (सर्वनाम)। **व्रते** = वरण करने के लिए, व्रत के लिए, व्रत में (वृत् = रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ = नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना)। **नि** = निश्चित, निरन्तर (अव्यय)। **विशन्ते जनासः, त्वयि** = तुम में (सर्वनाम)। **उत्=** भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)।-**इते** = पाये, गति, ज्ञान, प्रकाश प्राप्त किया (इ - जाना, जानना, पाना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)। **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **ईरते** = प्रेरित करता है, कम्पित करता है (ईर् = प्रेरणा करना, कम्पन करना, जाना, जानना, पाना, फेकना)। **चित्रभानो** = हे चित्रभानु, आश्चर्यजनक प्रकाश वाले (चित्र् = चित्र बनाना, आश्चर्य करना, चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, स्मरण करना)। **युवम्** = तुमको (सर्वनाम)। **वायो** = हे वायु, हे प्रवाहमान (वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वा = गति करना, पवन की भाँति बहना, जाना, जानना, पाना, गन्ध होना, प्रवाहित होना, प्रवाहित करना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण करना, घेरना, भेजना, खाना, वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना)। **सविता** = सृष्टिकर्ता, उत्पन्न करने वाला, ऐश्वर्यवान् तथा ऐश्वर्य देने वाला (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)। **च** = और (अव्यय)। **भुवनानि** = भुवन, वर्तमान (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **रक्षथः तौ नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मुञ्चतम्** = मुक्त करो (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः** = प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना) **॥ 3 ॥**

792. अप इतो वायो सविता च दुष्कृतम्,
अप रक्षांसि शिमिदाम् च सेधतम्।
सम् हि ऊर्जया सृजथः सम् बलेन,
तौ नो मुञ्चतम् अंहसः ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **अप** = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। **इतो** = यहां से (सर्वनाम)। **वायो** = हे वायु, हे प्रवाहमान (वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वा = गति करना, पवन की भाँति बहना, जाना, जानना, पाना, गन्ध होना, प्रवाहित होना, प्रवाहित करना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण करना, घेरना, भेजना, खाना, वे - बुनना,

रचना करना, सृजन करना)। **सविता** = सृष्टिकर्ता, उत्पन्न करने वाला, ऐश्वर्यवान् तथा ऐश्वर्य देने वाला (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)। **च** = और (अव्यय)। **दुष्कृतम्, अप** = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। **रक्षांसि** = रक्षक (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना)। **शिमिदाम् च** = और (अव्यय)। **सेधतम्** = सिद्ध करे (सिध् = जाना, सिद्ध होना, जीत होना, पूर्ण होना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **हि** = ही, निश्चय (अव्यय)। **ऊर्जया सृजथः सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **बलेन** = बल द्वारा (बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना)। **तौ नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मुञ्चतम्** = मुक्त करो (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः** = प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना) **॥ 4 ॥**

793. रयिम् मे पोषम् सविता उत वायुः,
तनू दक्षम् आ सुवताम् सुशेवम्।
अयक्ष्मतातिम् महः इह धत्तम्,
तौ नो मुञ्चतम् अंहसः ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **रयिम्** = विद्या, ज्ञान को (रय्-रि, री - चलना, जाना, जानना, पाना, री-रै - शब्द करना)। **मे** = मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **पोषम्** = पोषण करने वाले (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, पूष - बढ़ना, अधिक होना, पोषण करना)। **सविता** = सृष्टिकर्ता, उत्पन्न करने वाला, ऐश्वर्यवान् तथा ऐश्वर्य देने वाला (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **वायुः** = गतिशील, रचनात्मक शक्ति, वायु (वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वा = गति करना, पवन की भाँति बहना, जाना, जानना, पाना, गन्ध होना, प्रवाहित होना, प्रवाहित करना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण करना, घेरना, भेजना, खाना, वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना)। **तनू** = विस्तार, शरीर (तन् = विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना)। **दक्षम्** = दक्ष को (दक्ष् - बढ़ना, समृद्ध होना, शीघ्र कार्य करना, चतुर होना, दक्ष होना, चलना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मार डालना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **सुवताम् सुशेवम्** = उत्तम कल्याण, सुख (सु - अच्छा, सुन्दर, शेव् - सेचन, घर्षण, सेवा करना, शिव् = कल्याण होना, सुख होना)। **अयक्ष्मतातिम् महः** = महान् (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना)। **इह** = इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **धत्तम्** = धारण, पोषण को (धा = धारण, पोषण, रक्षण, दान करना)। **तौ नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मुञ्चतम्** = मुक्त करो (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः** = प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना) **॥ 5 ॥**

794. प्र सुमतिम् सवितः वायो ऊतये,
महस्वन्तम् मत्सरम् मादयाथः।
अर्वाक् वामस्य प्रवतो नि यच्छतम्,
तौ नो मुञ्चतम् अंहसः ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **सुमतिम्** = सुमति को, सुबुद्धि को (सु = उत्तम, सुन्दर, अच्छा। मन - मनन करना, जानना, समझना, स्वीकार करना, अभ्यास करना, स्थिर होना, गर्व होना)। **सवितः** = ऐश्वर्य युक्त, उत्पन्न करने वाले (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)। **वायो** = हे वायु, हे प्रवाहमान (वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वा = गति करना, पवन की भाँति बहना, जाना, जानना, पाना, गन्ध

होना, प्रवाहित होना, प्रवाहित करना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण करना, घेरना, भेजना, खाना, वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना)। **ऊतये** = रक्षा के लिए (ऊ - शब्द करना, विश्वास करना, ऊ-अव् - रक्षा करना)। **महस्वन्तम् मत्सरम् मादयाथः। अर्वाक्** = प्रगतिशील, व्यापक, शब्दकर्ता (ऋ - जाना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना, पहुँचाना, अर्-ऋ - गति करना, जाना, जानना, पाना, शब्द करना, व्याप्त होना, मिलाना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, अर्व - गति करना, जाना, चलना, जानना, पाना, पहुँचना, हिंसा करना)। **वामस्य** = वाम का (वा = गति करना, पवन की भाँति बहना, जाना, जानना, पाना, गन्ध होना, प्रवाहित होना, प्रवाहित करना)। **प्रवतो नि** = निश्चित, निरन्तर (अव्यय)। **यच्छतम्** = प्रदान करें (यच्छ = देना)। **तौ नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मुञ्चतम्** = मुक्त करो (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः** = प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना) **॥ 6 ॥**

795. उप श्रेष्ठा नः आशिषो,
देवयोः धामन् अस्थिरन्।
स्तौमि देवम् सवितारम् च वायुम्,
तौ नो मुञ्चतम् अंहसः ॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **उप** = समीप (उपसर्ग)। **श्रेष्ठा नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **आशिषो** = विशेषताएं, आशीष (आ-शास् - आशा करना, इच्छा करना, शास् - शासन करना, आ- समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, शास् = आशीर्वाद देना, बोध करना, शासन करना, भला चाहना, आशा करना)। शिष् = शेष रहना, अधिक होना, विशेषता होना)। **देवयोः धामन्** = धाम, धारण करने योग्य (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)। **अस्थिरन्। स्तौमि देवम्** = देव को (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **सवितारम्** = सविता, सृष्टिकर्ता, ऐश्वर्यवान् को, उत्पन्न करने वाले का (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)। **च** = और (अव्यय)। **वायुम्** = वायु को (वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वा = गति करना, पवन की भाँति बहना, जाना, जानना, पाना, गन्ध होना, प्रवाहित होना, प्रवाहित करना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण करना, घेरना, भेजना, खाना, वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना)। **तौ नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मुञ्चतम्** = मुक्त करो (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः** = प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना) **॥ 7 ॥**

24. अनुवाक - 6

128. अमित्रक्षयण सूक्त - 26

796. मन्वे वाम् द्यावापृथिवी सुभोजसौ सचेतसौ ये अप्रथेथाम् अमिता योजनानि।
प्रतिष्ठे हि अभवतम् वसूनाम् ते नः मुञ्चतम् अंहसः ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ :- **मन्वे** = मानता हूँ, जानता हूँ **वाम्** = तुम दोनों को **द्यावापृथिवी** = अग्रगामी विस्तार, प्रकाश, द्यावा और पृथिवी **सुभोजसौ** = उत्तम भोजन, संरक्षण, पालन **सचेतसौ** = समान चित्त वाले **ये** = जो **अप्रथेथाम्** = प्रसिद्ध किया, प्रसिद्ध न करें, न फैलायें **अमिता** = अमित, अतुल्य, वाणी **योजनानि** = योजनों को, सम्बन्धों को **प्रतिष्ठे** = प्रतिष्ठित, प्रकृष्ट स्थित **हि** = ही, निश्चय **अभवतम्** = हुआ **वसूनाम्** = वसु द्वारा **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा **मुञ्चतम्** = मुक्त करो **अंहसः** = प्रकाशमान **॥ 1 ॥**

पदार्थ :- **मन्वे** = मानता हूँ, जानता हूँ (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **वाम्** = तुम दोनों को (सर्वनाम)। **द्यावापृथिवी** = अग्रगामी विस्तार, प्रकाश, द्यावा और पृथिवी (द्यु - आगे जाना, समीप जाना, द्युत् - दीप्त होना, चमकना,

प्रकाशित होना, द्यै = तिरस्कार करना, पृथु = विस्तार होना, फेंकना, उड़ाना, भेजना, प्रेरणा करना)। **सुभोजसौ =** उत्तम भोजन, संरक्षण, पालन (सु - सुन्दर, अच्छा, भुज - संरक्षण करना, पालन करना, खाना, भक्षण करना)। **सचेतसौ =** समान चित्त वाले (चित - विचार करना, चिन्तन करना, स्मरण करना)। **ये =** जो (सर्वनाम)। **अप्रथेथाम् =** प्रसिद्ध किया, प्रसिद्ध न करें, न फैलायें (प्रथ - प्रसिद्ध होना, फैलना, फैलाना)। **अमिता =** अमित, अतुल्य, वाणी (अ - नहीं, अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अम् - गति, शब्द, सेवा करना, मा - मापना, मान करना, मिद् = प्रीति करना, स्नेह करना)। **योजनानि =** योजनों को, सम्बन्धों को (युज - जुड़ना, मिलाप करना, मन एकाग्र करना, एकत्र करना, योग करना, जोड़ना, मिलना, मिलाना, चित्त स्थिर रखना, बांधना एकत्र करना)। **प्रतिष्ठे =** प्रतिष्ठित, प्रकृष्ट स्थित (प्रति - सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में, तिष्ठ-स्था - स्थित होना, ठहरना, प्रतीक्षा करना)। **हि =** ही, निश्चय (अव्यय)। **अभवतम् =** हुआ (भू - होना, रहना, उत्पन्न होना)। **वसूनाम् =** वसु द्वारा (वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)। **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **मुञ्चतम् =** मुक्त करो (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः =** प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना) **॥ 1 ॥**

797. प्रतिष्ठे हि अभवतम् वसूनाम्,
प्रवृद्धे देवी सुभगे उरूची,
द्यावापृथिवी भवतम् मे स्योने,
ते नो मुञ्चतम् अंहसः ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - प्रतिष्ठे = प्रतिष्ठित, प्रतिष्ठा में (प्रति - सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में, तिष्ठ-स्था - स्थित होना, ठहरना, प्रतीक्षा करना)। **हि =** ही, निश्चय (अव्यय)। **अभवतम् =** हुआ (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना)। **वसूनाम् =** वसुओं का (वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)। **प्रवृद्धे देवी =** हे देवी (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **सुभगे उरूची, द्यावापृथिवी =** अग्रगामी विस्तार, प्रकाश, द्यावा और पृथिवी (द्यु - आगे जाना, समीप जाना, द्युत् -दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, द्यै = तिरस्कार करना, पृथु = विस्तार होना, फेंकना, उड़ाना, भेजना, प्रेरणा करना)। **भवतम् =** होवें, बनें (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **मे =** मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **स्योने =** सुख में (स्योन् = सुख होना, सुख देना)। **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मुञ्चन्तु =** मुक्त करें, कहें (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः =** प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना) **॥ 2 ॥**

798. अ-सम्-तापे सुतपसौ हुवे अहम्,
उर्वी गम्भीरे कविभिः नमस्ये।
द्यावापृथिवी भवतम् मे स्योने,
ते नो मुञ्चतम् अंहसः ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - अ= नहीं (उपसर्ग)।-**सम्=** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)।-**तापे सुतपसौ हुवे =** आह्वान करते हैं, दान करते हैं, आदान-प्रदान करते हैं, तृप्ति करते हैं (हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)। **अहम् =** मैं (सर्वनाम)। **उर्वी =** सहनशील,

समर्थ, विस्तृत, गतिशील, समर्थ, बहु-दुःखदायी (उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना, उर्व - सहना, समर्थ होना, मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना)। **गम्भीरे कविभिः नमस्ये। द्यावापृथिवी =** अग्रगामी विस्तार, प्रकाश, द्यावा और पृथिवी (द्यु - आगे जाना, समीप जाना, द्युत् -दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, द्यै = तिरस्कार करना, पृथु = विस्तार होना, फेंकना, उड़ाना, भेजना, प्रेरणा करना)। **भवतम् =** होवें, बनें (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **मे =** मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **स्योने =** सुख में (स्योन् = सुख होना, सुख देना)। **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मुञ्चन्तु =** मुक्त करें, कहें (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः =** प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना) **॥ 3 ॥**

799. ये अमृतम् बिभृथो ये हवींषि,
ये स्रोत्या बिभृथो ये मनुष्यान्।
द्यावापृथिवी भवतम् मे स्योने,
ते नो मुञ्चतम् अंहसः ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - ये = जो (सर्वनाम)। **अमृतम् =** न मरने वाले, अमर, अमृत को (अ - नहीं, मृ = मरना)। **बिभृथो ये =** जो (सर्वनाम)। **हवींषि =** दानयोग्य, आदान-प्रदान योग्य, तृप्ति योग्य (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **ये =** जो (सर्वनाम)। **स्रोत्या बिभृथो ये =** जो (सर्वनाम)। **मनुष्यान् =** मनुष्यों को (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **द्यावापृथिवी =** अग्रगामी विस्तार, प्रकाश, द्यावा और पृथिवी (द्यु - आगे जाना, समीप जाना, द्युत् -दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, द्यै = तिरस्कार करना, पृथु = विस्तार होना, फेंकना, उड़ाना, भेजना, प्रेरणा करना)। **भवतम् =** होवें, बनें (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **मे =** मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **स्योने =** सुख में (स्योन् = सुख होना, सुख देना)। **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मुञ्चन्तु =** मुक्त करें, कहें (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः =** प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना) **॥ 4 ॥**

800. ये उस्रिया बिभृथो ये वनस्पतीन्,
ययोः वाम् विश्वा भुवनानि अन्तः।
द्यावापृथिवी भवतम् मे स्योने,
ते नो मुञ्चतम् अंहसः ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - ये = जो (सर्वनाम)। **उस्रिया =** उस्रिय, प्रभातकर्ता को, तपाने वाले को (उषस् - प्रभात होना, उष - जलना, हिंसा करना, रोग होना)। **बिभृथो ये =** जो (सर्वनाम)। **वनस्पतीन् =** वनस्पतियों को (वन - शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, आपद्ग्रस्त होना, अलग करना, मिलाना, स्मरण करना, बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, याचना करना, मांगना, दुःख देना, उद्योग-धन्धा करना, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **ययोः =** पृथक् किया (यु = मिलाना, अलग करना)। **वाम् =** तुम दोनों को (सर्वनाम)। **विश्वा =** विश्व, सभी, सब (सर्वनाम)। **भुवनानि =** भुवन, वर्तमान (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **अन्तः =** बीच में, भीतर (उपसर्ग, सर्वनाम)। **द्यावापृथिवी =** अग्रगामी विस्तार, प्रकाश, द्यावा और पृथिवी (द्यु - आगे जाना, समीप जाना, द्युत् -

दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, द्यै = तिरस्कार करना, पृथु = विस्तार होना, फेंकना, उड़ाना, भेजना, प्रेरणा करना)। **भवतम् =** होवें, बनें (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **मे =** मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **स्योने =** सुख में (स्योन् = सुख होना, सुख देना)। **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मुञ्चन्तु =** मुक्त करें, कहें (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः =** प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना)॥ **5**॥

801. ये कीलालेन तर्पयथो ये घृतेन याभ्याम्,
ऋते न किम् चन शक्नुवन्ति।
द्यावापृथिवी भवतम् मे स्योने,
ते नो मुञ्चतम् अंहसः॥ 6॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - ये = जो (सर्वनाम)। **कीलालेन तर्पयथो ये =** जो (सर्वनाम)। **घृतेन =** अभिसिञ्चित द्वारा, प्रकाशमान द्वारा (घृ - चमकना, प्रकाश करना, सिञ्चन करना, गीला करना, टपकना, बूंद बूंद गिरना, क्षरित होना, क्षरण होना, झरना, घर्षण होना, नाश होना, शब्द होना)। **याभ्याम्, =** जिसके लिए (सर्वनाम)। **ऋते =** ऋत में (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)। **न =** नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **किम् चन =** कुछ भी (सर्वनाम)। **शक्नुवन्ति। द्यावापृथिवी =** अग्रगामी विस्तार, प्रकाश, द्यावा और पृथिवी (द्यु - आगे जाना, समीप जाना, द्युत् -दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, द्यै = तिरस्कार करना, पृथु = विस्तार होना, फेंकना, उड़ाना, भेजना, प्रेरणा करना)। **भवतम् =** होवें, बनें (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **मे =** मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **स्योने =** सुख में (स्योन् = सुख होना, सुख देना)। **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मुञ्चन्तु =** मुक्त करें, कहें (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः =** प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना)॥ **6**॥

802. यत् मा इदम् अभिशोचति,
येन-येन वा कृतम् पौरषेयात् न दैवात्।
स्तौमि द्यावापृथिवी नाथितो जोहवीमि,
ते नो मुञ्चतम् अंहसः॥ 7॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - यत् = जिसे, जो (सर्वनाम)। **मा =** नहीं, मत (अव्यय)। **इदम् =** यह, इसको (सर्वनाम)। **अभिशोचति, येन=** जिससे, जिसके द्वारा (सर्वनाम)।-**येन =** जिससे, जिसके द्वारा (सर्वनाम)। **वा =** अथवा (अव्यय)। **कृतम् =** कृतित्व, किया हुआ (कृ = करना)। **पौरषेयात् न =** नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **दैवात्। स्तौमि द्यावापृथिवी =** अग्रगामी विस्तार, प्रकाश, द्यावा और पृथिवी (द्यु - आगे जाना, समीप जाना, द्युत् -दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, द्यै = तिरस्कार करना, पृथु = विस्तार होना, फेंकना, उड़ाना, भेजना, प्रेरणा करना)। **नाथितो जोहवीमि, ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मुञ्चन्तु =** मुक्त करें, कहें (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः =** प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना)॥ **7**॥

129. पापमोचन सूक्त - 27

803. मरुताम् मन्वे अधि मे ब्रुवन्तु,

प्र इमम् वाजम् वाजसाते अवन्तु।
आशून्-इव सुयमान् अह्वे ऊतये,
ते नो मुञ्चन्तु अंहसः॥ 1॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **मरुताम्** = मरुतों का, मरणशीलों का (मृ = मरना, देहत्याग करना)। **मन्वे** = मानता हूँ, जानता हूँ (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **मे** = मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **ब्रुवन्तु, प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **इमम्** = इसको (सर्वनाम)। **वाजम्** = विद्या को, गति को (वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना। वा - गति करना, बहना)। **वाजसाते अवन्तु। आशून्** = आशु, व्यापकता, भोजन, तीव्र गति युक्त, व्यापक (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, अश् = भोजन करना)।-**इव** = समान, की भाँति, के समान (अव्यय)। **सुयमान् अह्वे** = व्यापक हुए, आह्वान किया (अ - नहीं, हु - दान करना, आदान-प्रदान करना, ह्वे - आह्वान करना, बुलाना, पुकारना, अह् = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना)। **ऊतये** = रक्षा के लिए (ऊ - शब्द करना, विश्वास करना, ऊ-अव् - रक्षा करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मुञ्चन्तु** = मुक्त करें, कहें (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः** = प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना) **॥ 1 ॥**

804. उत्सम् अक्षितम् वि-अचन्ति ये सदा,
ये आ-सिञ्चन्ति रसम् ओषधीषु।
पुरो दधे मरुतः पृश्निमातॄन्,
ते नो मुञ्चन्तु अंहसः॥ 2॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **उत्सम्** = उत्स को, उत्कृष्ट सृजन को (सु = उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना)। **अक्षितम्** = अक्षित को, व्याप्त को, अविनाशी को (अ = नहीं, अक्ष - खेलना, देखना, एकत्र होना, व्याप्त होना, इच्छितार्थ होना, पैठना, क्षि - क्षय होना, नष्ट होना)। **वि-अचन्ति ये** = जो (सर्वनाम)। **सदा** = सदा, सर्व काल में। **ये** = जो (सर्वनाम)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)।-**सिञ्चन्ति** = सिञ्चन करते हैं (सिञ्च् - सिञ्चन करना)। **रसम्** = रस को (रस - स्वाद लेना, चखना, प्रीति करना, प्यार करना)। **ओषधीषु** = ओषधियों में (उषध्-ओषध् = चिकित्सा करना, रोग मुक्त करना)। **पुरो** = पहले (पुरो = पहले, अव्यय, पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना)। **दधे** = धारण करते हैं (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)। **मरुतः** = मरणशील का, मरुत् का (मृ = मरना, देहत्याग करना)। **पृश्निमातॄन्, ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मुञ्चन्तु** = मुक्त करें, कहें (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः** = प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना) **॥ 2 ॥**

805. पयो धेनूनाम् रसम् ओषधीनाम्,
जवम् अर्वताम् कवयो ये इन्वथ।
शग्मा भवन्तु मरुतो नः स्योनाः,
ते नो मुञ्चन्तु अंहसः॥ 3॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - पयो = ज्ञान, रक्षण, गतिशील, प्रवाहमान, प्रवाहपूर्ण (पय् - गति करना, रक्षण करना, ज्ञान, गमन, प्राप्ति करना, पि - जाना, जानना, पाना, पा- पालन करना, रक्षा करना)। **धेनूनाम् =** धेनुओं, प्रियों, पालन करने वालों का (धिन - प्रेम करना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना, धी - बुद्धि होना, धे - पालना, पीना)। **रसम् =** रस को (रस - स्वाद लेना, चखना, प्रीति करना, प्यार करना)। **ओषधीनाम् =** ओषधियों का (उषध्-ओषध् = चिकित्सा करना, रोग मुक्त करना)। **जवम् =** वेगवान् को (जु - जाना, वेग से जाना, दौड़ना, जल्दी जाना, भागना)। **अर्वताम् कवयो =** बोलने वाले, कवि (कु, कव् = शब्द करना, कविता करना, वर्णन करना, चित्र खींचना)। **ये =** जो (सर्वनाम)। **इन्वथ। शग्मा =** शक्ति-सामर्थ्य (शक् - शक्तिमान् होना, समर्थ होना, सक्षम होना, कर सकना, सहना, सहन करना)। **भवन्तु =** हों, हो जायें (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **मरुतो =** मरणशीलों का (मृ = मरना, देहत्याग करना)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **स्योनाः =** सुख (स्योन् = सुख होना, सुख देना)। **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मुञ्चन्तु =** मुक्त करें, कहें (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः =** प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना) **॥ 3 ॥**

806. अपः समुद्रात् दिवम् उत् वहन्ति,
दिवः पृथिवीम् अभि ये सृजन्ति।
ये अद्भिः ईशाना मरुतः चरन्ति,
ते नो मुञ्चन्तु अंहसः ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - अपः = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। **समुद्रात् =** समुद्र से (सम् = सम्यक्, भलीभांति। उन्द - आर्द्र होना, गीला होना)। **दिवम् =** दिव को, तेजस्वी को (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)। **उत् =** भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)। **वहन्ति =** वहन करते हैं (वह् = वहन करना, ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)। **दिवः =** दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)। **पृथिवीम् =** पृथिवी को (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)। **अभि =** अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **ये =** जो (सर्वनाम)। **सृजन्ति। ये =** जो (सर्वनाम)। **अद्भिः =** अदों द्वारा(अद् = खाना, भोग करना, ग्रहण करना, आत्मसात् करना)। **ईशाना =** अधिकार करने वाला, ऐश्वर्य वाला (ईश = ऐश्वर्य-अधिकार होना)। **मरुतः =** मरणशील का, मरुत् का (मृ = मरना, देहत्याग करना)। **चरन्ति =** विचरण करते हैं, चलते हैं (चर - जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)। **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मुञ्चन्तु =** मुक्त करें, कहें (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः =** प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना) **॥ 4 ॥**

807. ये कीलालेन तर्पयन्ति ये घृतेन,
ये वा वयो मेदसा सम्-सृजन्ति।
ये अद्भिः ईशाना मरुतो वर्षयन्ति,
ते नो मुञ्चन्तु अंहसः ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - ये = जो (सर्वनाम)। **कीलालेन तर्पयन्ति ये =** जो (सर्वनाम)। **घृतेन =** अभिसिञ्चित द्वारा, प्रकाशमान

द्वारा (घृ - चमकना, प्रकाश करना, सिञ्चन करना, गीला करना, टपकना, बूंद बूंद गिरना, क्षरित होना, क्षरण होना, झरना, घर्षण होना, नाश होना, शब्द होना)। **ये =** जो (सर्वनाम)। **वा =** अथवा (अव्यय)। **वयो =** रचनाशील (वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वा - गति करना, बहना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण करना, घेरना, भेजना, खाना, वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना)। **मेदसा सम्-सृजन्ति। ये =** जो (सर्वनाम)। **अद्भिः =** अदों द्वारा(अद् = खाना, भोग करना, ग्रहण करना, आत्मसात् करना)। **ईशाना =** अधिकार करने वाला, ऐश्वर्य वाला (ईश = ऐश्वर्य-अधिकार होना)। **मरुतो =** मरणशीलों का (मृ = मरना, देहत्याग करना)। **वर्षयन्ति, ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मुञ्चन्तु =** मुक्त करें, कहें (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः =** प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना) **॥ 5 ॥**

808. यदि इत् इदम् मरुतो मारुतेन,
यदि देवा दैव्येन ईदृक् आर।
यूयम् ईशिध्वे वसवः तस्य निष्कृतेः,
ते नो मुञ्चन्तु अंहसः ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - यदि = यदि (अव्यय)। **इत् =** ही (अव्यय)। **इदम् =** यह, इसको (सर्वनाम)। **मरुतो =** मरणशीलों का (मृ = मरना, देहत्याग करना)। **मारुतेन, यदि =** यदि (अव्यय)। **देवा =** विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **दैव्येन =** दिव्य द्वारा (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **ईदृक् आर। यूयम् =** तुम दोनों (सर्वनाम)। **ईशिध्वे वसवः =** वसुगण, निवास करने वाले, वास देने वाले (वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)। **तस्य =** उसका (सर्वनाम)। **निष्कृतेः, ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मुञ्चन्तु =** मुक्त करें, कहें (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः =** प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना) **॥ 6 ॥**

809. तिग्मम् अनीकम् विदितम् सहस्वत्,
मारुतम् शर्धः पृतनासु उग्रम्।
स्तौमि मरुतो नाथितो जोहवीमि,
ते नो मुञ्चन्तु अंहसः ॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - तिग्मम् = ज्ञानी, कूटचाल को (तिग् = जाना, जानना, पाना, कूटचाल चलना)। **अनीकम् =** स्पन्दनशील, चेतना, प्राण को (अन् - प्राण होना, चेतन होना, श्वास लेना, स्पन्दन करना, हलचल करना, जीवन होना, समर्थ होना, जाना)। **विदितम् सहस्वत्, मारुतम् शर्धः =** विजय, शर्द्ध, बल (शृध् - सहन करना, जीतना, शक्ति होना, सामर्थ्य होना)। **पृतनासु =** व्यापक, बलों में (पृत -व्याप्त होना, जीवन होना, बलपूर्वक निकालना, पृ = पूर्ण करना)। **उग्रम् =** उग्र को (उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना, उग् - उग्र - उग्र होना, तेज होना)। **स्तौमि मरुतो =** मरणशीलों का (मृ = मरना, देहत्याग करना)। **नाथितो जोहवीमि, ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मुञ्चन्तु =** मुक्त करें, कहें (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः =** प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना) **॥ 7 ॥**

130. पापमोचन सूक्त - 28

810. भवाशर्वौ मन्वे वाम् तस्य वित्तम्,
ययोः वाम् इदम् प्रदिशि यत् विरोचते।
यौ अस्य ईशाथे द्विपदो यौ चतुष्पदः,
तौ नो मुञ्चतम् अंहसः॥ 1॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **भवाशर्वौ मन्वे** = मानता हूँ, जानता हूँ (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **वाम्** = तुम दोनों को (सर्वनाम)। **तस्य** = उसका (सर्वनाम)। **वित्तम्** = वित्त को (वित्त - दान करना, धर्म में व्यय करना)। **ययोः** = पृथक् किया (यु = मिलाना, अलग करना)। **वाम्** = तुम दोनों को (सर्वनाम)। **इदम्** = यह, इसको (सर्वनाम)। **प्रदिशि** = प्रदिश में (प्र - प्रकृष्ट, दिश् - दिखाना, दिखाना, समझाना, कहना, देना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **विरोचते। यौ** = जो दोनों (सर्वनाम)। **अस्य** = इसका (सर्वनाम)। **ईशाथे द्विपदो यौ** = जो दोनों (सर्वनाम)। **चतुष्पदः** = चार पैर वाले (चतुः - चार, संख्या, पद - चलना, स्थानान्तर करना)। **तौ नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मुञ्चतम्** = मुक्त करो, कहो (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः** = प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना)॥ 1॥

811. ययोः अभि-अध्वे उत यत् दूरे चित्,
यौ विदितौ इषुभृताम् असिष्ठौ।
यौ अस्य ईशाथे द्विपदो यौ चतुष्पदः,
तौ नो मुञ्चतम् अंहसः॥ 2॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **ययोः** = पृथक् किया (यु = मिलाना, अलग करना)। **अभि=** अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)।-**अध्वे उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **दूरे** = दूर (अव्यय)। **चित्** = भी, ही (अव्यय)। **यौ** = जो दोनों (सर्वनाम)। **विदितौ इषुभृताम् असिष्ठौ। यौ** = जो दोनों (सर्वनाम)। **अस्य** = इसका (सर्वनाम)। **ईशाथे द्विपदो यौ** = जो दोनों (सर्वनाम)। **चतुष्पदः** = चार पैर वाले (चतुः - चार, संख्या, पद - चलना, स्थानान्तर करना)। **तौ नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मुञ्चतम्** = मुक्त करो, कहो (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः** = प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना)॥ 2॥

812. सहस्र-अक्षौ वृत्रहणा हुवे अहम्,
दूरेगव्यूती स्तुवन् एमि उग्रौ।
यौ अस्य ईशाथे द्विपदो यौ चतुष्पदः,
तौ नो मुञ्चतम् अंहसः॥ 3॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **सहस्र** = हजार (संख्या)। -**अक्षौ वृत्रहणा** = वृत्र (हिंसा) का हनन करने वाले (वृ - वरण करना, आच्छादन करना, स्वीकार करना, वृत् - वर्तना, वर्तमान होना वरण करना, सेवा करना, चमकना, बोलना, हिंसा करना, हन् - हिंसा करना)। **हुवे** = आह्वान करते हैं, दान करते हैं, आदान-प्रदान करते हैं, तृप्ति करते हैं (हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)। **अहम्** = मैं (सर्वनाम)। **दूरेगव्यूती स्तुवन् एमि** = जाता हूँ (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, इ - जाना, जानना,

पाना, प्रेरित करना)। **उग्रौ। यौ** = जो दोनों (सर्वनाम)। **अस्य** = इसका (सर्वनाम)। **ईशाथे द्विपदो यौ** = जो दोनों (सर्वनाम)। **चतुष्पदः** = चार पैर वाले (चतुः - चार, संख्या, पद - चलना, स्थानान्तर करना)। **तौ नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मुञ्चतम्** = मुक्त करो, कहो (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः** = प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना) **॥ 3 ॥**

813. यौ आरेभाथे बहु साकम् अग्रे,
प्र च इत् अस्राष्ट्रम् अभिभाम् जनेषु।
यौ अस्य ईशाथे द्विपदो यौ चतुष्पदः,
तौ नो मुञ्चतम् अंहसः ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **यौ** = जो दोनों (सर्वनाम)। **आरेभाथे बहु** = बहुत (सर्वनाम)। **साकम्** = साथ (अव्यय)। **अग्रे** = अग्र, आगे, पहले (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **च** = और (अव्यय)। **इत्** = ही (अव्यय)। **अस्राष्ट्रम् अभिभाम् जनेषु** = जनों में, लोगों में (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **यौ** = जो दोनों (सर्वनाम)। **अस्य** = इसका (सर्वनाम)। **ईशाथे द्विपदो यौ** = जो दोनों (सर्वनाम)। **चतुष्पदः** = चार पैर वाले (चतुः - चार, संख्या, पद - चलना, स्थानान्तर करना)। **तौ नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मुञ्चतम्** = मुक्त करो, कहो (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः** = प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना) **॥ 4 ॥**

814. ययोः वधात् न अप-पद्यते,
कः चन अन्तः देवेषु उत मानुषेषु।
यौ अस्य ईशाथे द्विपदो यौ चतुष्पदः,
तौ नो मुञ्चतम् अंहसः ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **ययोः** = पृथक् किया (यु = मिलाना, अलग करना)। **वधात् न** = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **अप-पद्यते, कः** = कौन (सर्वनाम)। **चन** = ही (अव्यय)। **अन्तः** = बीच में, भीतर (उपसर्ग, सर्वनाम)। **देवेषु** = देवों में (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **मानुषेषु** = मानुषों, मननशीलों में (मन् - मनन करना, समझना, जानना, मान - पूजा करना, सम्मान करना, श्रेष्ठ होना, शोध करना)। **यौ** = जो दोनों (सर्वनाम)। **अस्य** = इसका (सर्वनाम)। **ईशाथे द्विपदो यौ** = जो दोनों (सर्वनाम)। **चतुष्पदः** = चार पैर वाले (चतुः - चार, संख्या, पद - चलना, स्थानान्तर करना)। **तौ नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मुञ्चतम्** = मुक्त करो, कहो (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः** = प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना) **॥ 5 ॥**

815. यः कृत्याकृत मूलकृत् यातुधानो,
नि तस्मिन् धत्तम् वज्रम् उग्रौ।
यौ अस्य ईशाथे द्विपदो यौ चतुष्पदः,
तौ नो मुञ्चतम् अंहसः ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **यः** = जो (सर्वनाम)। **कृत्याकृत मूलकृत् यातुधानो, नि** = निश्चित, निरन्तर (अव्यय)। **तस्मिन्** = उसमें (सर्वनाम)। **धत्तम्** = धारण, पोषण को (धा = धारण, पोषण, रक्षण, दान करना)। **वज्रम्** = वज्र, गतिमान को (वज् - गति

करना, जाना)। **उग्रौ। यौ** = जो दोनों (सर्वनाम)। **अस्य** = इसका (सर्वनाम)। **ईशाथे द्विपदो यौ** = जो दोनों (सर्वनाम)। **चतुष्पदः** = चार पैर वाले (चतुः - चार, संख्या, पद - चलना, स्थानान्तर करना)। **तौ नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मुञ्चतम्** = मुक्त करो, कहो (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः** = प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना) **॥ 6 ॥**

816. अधि नो ब्रूतम् पृतनासु उग्रौ,
सम् वज्रेण सृजतम् यः किमीदी।
स्तौमि भवाशर्वौ नाथितो जोहवीमि,
तौ नो मुञ्चतम् अंहसः ॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **ब्रूतम् पृतनासु** = व्यापक, बलों में (पृत -व्याप्त होना, जीवन होना, बलपूर्वक निकालना, पृ = पूर्ण करना)। **उग्रौ, सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **वज्रेण** = वज्र, गतिमान द्वारा (वज् - गति करना, जाना)। **सृजतम् यः** = जो (सर्वनाम)। **किमीदी। स्तौमि भवाशर्वौ नाथितो जोहवीमि, तौ नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मुञ्चतम्** = मुक्त करो, कहो (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः** = प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना) **॥ 7 ॥**

131. पापमोचन सूक्त - 29

817. मन्वे वाम् मित्रावरुणौ ऋत-वृधौ,
सचेतसौ द्रुह्वणो यौ नुदेथे।
प्र सत्य-वानम् अवथो भरेषु,
तौ नो मुञ्चतम् अंहसः ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **मन्वे** = मानता हूँ, जानता हूँ (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **वाम्** = तुम दोनों को (सर्वनाम)। **मित्रावरुणौ** = मित्र और वरुण, स्नेही तथा वरणीय (मिद् - स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, नरम होना, मृदुल होना, वृ = वरण करना, अपनाना, पसन्द करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **ऋत=** ऋत, सञ्चालन नियम (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)।-**वृधौ, सचेतसौ** = समान चित्त वाले (चित - विचार करना, चिन्तन करना, स्मरण करना)। **द्रुह्वणो यौ** = जो दोनों (सर्वनाम)। **नुदेथे। प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **सत्य=** सत्य (सत् = होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना)।-**वानम् अवथो भरेषु, तौ नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मुञ्चतम्** = मुक्त करो, कहो (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः** = प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना) **॥ 1 ॥**

818. सचेतसौ द्रुह्वणो यौ नुदेथे,
प्र सत्य-वानम् अवथो भरेषु।
यौ गच्छथो नृचक्षसौ बभ्रुणा सुतम्,
तौ नो मुञ्चतम् अंहसः ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - सचेतसौ = समान चित्त वाले (चित - विचार करना, चिन्तन करना, स्मरण करना)। **द्रुह्वणो यौ =** जो दोनों (सर्वनाम)। **नुदेथे, प्र =** प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **सत्य=** सत्य (सत् = होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना)।-**वानम् अवथो भरेषु। यौ =** जो दोनों (सर्वनाम)। **गच्छथो नृचक्षसौ बभ्रुणा सुतम् =** ऐश्वर्यवान्, उत्पन्न हुए को (सु - उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना)। **तौ नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मुञ्चतम् =** मुक्त करो, कहो (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः =** प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना) **॥ 2 ॥**

819. यौ अङ्गिरसम् अवथो यौ अगस्तिम्,
मित्रावरुणा जमदग्निम् अत्रिम्।
यौ कश्यपम् अवथो यौ वसिष्ठम्,
तौ नो मुञ्चतम् अंहसः ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - यौ = जो दोनों (सर्वनाम)। **अङ्गिरसम् =** विद्वान्, प्रगतिशील, पाने वाला (अंग् = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)। **अवथो यौ =** जो दोनों (सर्वनाम)। **अगस्तिम्, मित्रावरुणा =** मित्र और वरुण, स्नेही तथा वरणीय (मिद् - स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, नरम होना, मृदुल होना, वृ = वरण करना, अपनाना, पसन्द करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **जमदग्निम् =** अग्नि-भोजी (जम् = खाना, निगलना, अग् = ऊर्ध्व गति करना, अग्रणी होना, तेजस्वी होना, चमकना, जानना, पहुंचना, पाना)। **अत्रिम्। यौ =** जो दोनों (सर्वनाम)। **कश्यपम् =** कश्य का पालन-रक्षण करने वाले, प्रकाशनीय, शासनीय का पालन-रक्षण करने वाले (कश् = शासन करना, दण्ड देना, प्रकाश करना, गति करना, चलना, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **अवथो यौ =** जो दोनों (सर्वनाम)। **वसिष्ठम् =** वसिष्ठ (वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)। **तौ नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मुञ्चतम् =** मुक्त करो, कहो (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः =** प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना) **॥ 3 ॥**

820. यौ श्याव-अश्वम् अवथो वध्रि-अश्वम्,
मित्रावरुणा पुरुमीढम् अत्रिम्।
यौ विमदम् अवथः सप्तवध्रिम्,
तौ नो मुञ्चतम् अंहसः ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - यौ = जो दोनों (सर्वनाम)। **श्याव-अश्वम् =** अश्व, तीव्र गति युक्त, व्यापक को (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)। **अवथो वध्रि-अश्वम्, मित्रावरुणा =** मित्र और वरुण, स्नेही तथा वरणीय (मिद् - स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, नरम होना, मृदुल होना, वृ = वरण करना, अपनाना, पसन्द करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **पुरुमीढम् =** पुरुमीढ, अग्रगामी विद्वान्, सिञ्चन-प्रोक्षण करने वाला (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, मि - प्रक्षेपण करना, स्थापन करना, रक्षा करना, मी = समझना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मिह् - सिञ्चन करना, प्रोक्षण करना, गीला करना)। **अत्रिम्। यौ =** जो दोनों (सर्वनाम)। **विमदम् अवथः सप्तवध्रिम्, तौ नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मुञ्चतम् =** मुक्त करो, कहो (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः =** प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना) **॥ 4 ॥**

821. यौ भरत्-वाजम् अवथो यौ गविष्ठिरम्,
विश्वामित्रम् वरुण मित्र कुत्सम्।
यौ कक्षीवन्तम् अवथः प्र उत कण्वम्,
तौ नो मुञ्चतम् अंहसः॥ 5॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - यौ = जो दोनों (सर्वनाम)। **भरत्=** भरण करने वाले, भरण करते हुए (भृ = पूर्ण करना, भरना, धारण-पोषण करना)।-**वाजम् =** विद्या को, गति को (वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना। वा - गति करना, बहना)। **अवथो यौ =** जो दोनों (सर्वनाम)। **गविष्ठिरम्, विश्वामित्रम् वरुण =** वरुण (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **मित्र =** हे मित्र (मिद् - स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, मृदुल होना)। **कुत्सम्। यौ =** जो दोनों (सर्वनाम)। **कक्षीवन्तम् =** कक्षीवान्, कक्षीयुक्त (कक्ष् - धारण करना, घर्षण करना)। **अवथः प्र =** प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **कण्वम्, तौ नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मुञ्चतम् =** मुक्त करो, कहो (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः =** प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना)॥ **5॥**

822. यौ मेध-अतिथिम् अवथो यौ त्रिशोकम्,
मित्रावरुणौ उशनाम् काव्यम् यौ।
यौ गोतमम् अवथः प्र उत मुद्गलम्,
तौ नो मुञ्चतम् अंहसः॥ 6॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - यौ = जो दोनों (सर्वनाम)। **मेध-अतिथिम् अवथो यौ =** जो दोनों (सर्वनाम)। **त्रिशोकम्, मित्रावरुणौ =** मित्र और वरुण, स्नेही तथा वरणीय (मिद् - स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, नरम होना, मृदुल होना, वृ = वरण करना, अपनाना, पसन्द करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **उशनाम् काव्यम् =** काव्य (कु, कव् = शब्द करना, कविता करना, वर्णन करना, चित्र खींचना)। **यौ =** जो दोनों (सर्वनाम)। **यौ =** जो दोनों (सर्वनाम)। **गोतमम् अवथः प्र =** प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **मुद्गलम्, तौ नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मुञ्चतम् =** मुक्त करो, कहो (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः =** प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना)॥ **6॥**

823. ययो रथः सत्यवर्त्म ऋजुरश्मिः,
मिथुया चरन्तम् अभियाति दूषयन्।
स्तौमि मित्रावरुणौ नाथितौ जोहवीमि,
तौ नो मुञ्चतम् अंहसः॥ 7॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - ययो = पृथक् किया (यु = मिलाना, अलग करना)। **रथः =** रथ (रम - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना)। **सत्यवर्त्म ऋजुरश्मिः, मिथुया चरन्तम् =** विचरण करने वाले को (चर -जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)। **अभियाति दूषयन्। स्तौमि मित्रावरुणौ =** मित्र और वरुण, स्नेही तथा वरणीय (मिद् - स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, नरम होना, मृदुल होना, वृ = वरण करना, अपनाना, पसन्द करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)।

नाथितौ जौहवीमि, तौ नो = हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मुञ्चतम्** = मुक्त करो, कहो (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः** = प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना)॥ **7**॥

132. राष्ट्रदेवी सूक्त - 30

824. अहम् रुद्रेभिः वसुभिः चरामि,
अहम् आदित्यैः उत विश्वदेवैः,
अहम् मित्रावरुणा उभा बिभर्मि,
अहम् इद्राग्नी अहम् अश्विना उभा॥ 1॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **अहम्** = मैं (सर्वनाम)। **रुद्रेभिः वसुभिः** = वसुओं द्वारा (वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)। **चरामि, अहम्** = मैं (सर्वनाम)। **आदित्यैः** = आदित्यगण द्वारा, अदिति-अक्षय-अविनाशी द्वारा (अ - नहीं, दी = क्षय होना, नष्ट होना, अद् = खाना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **विश्वदेवैः, अहम्** = मैं (सर्वनाम)। **मित्रावरुणा** = मित्र और वरुण, स्नेही तथा वरणीय (मिद् - स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, नरम होना, मृदुल होना, वृ = वरण करना, अपनाना, पसन्द करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **उभा** = दोनों, पूर्णता (उभय - दोनो, उभ् - पूर्ण करना, भरना)। **बिभर्मि, अहम्** = मैं (सर्वनाम)। **इद्राग्नी** = इन्द्र तथा अग्नि, परम ऐश्वर्यवान तथा प्रगतिशील, अग्रणी (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना, अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना, पीना)। **अहम्** = मैं (सर्वनाम)। **अश्विना** = अश्विन् द्वारा, तीव्र गति युक्त, व्यापक द्वारा (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)। **उभा** = दोनों, पूर्णता (उभय - दोनो, उभ् - पूर्ण करना, भरना)॥ **1**॥

825. अहम् राष्ट्री सम्-गमनी वसूनाम्,
चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्।
ताम् मा देवा वि अदधुः पुरुत्रा,
भूरिस्थात्राम् भूरि आ-वेशयन्तः॥ 2॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **अहम्** = मैं (सर्वनाम)। **राष्ट्री सम्-गमनी वसूनाम्, चिकितुषी प्रथमा** = प्रथम (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)। **यज्ञियानाम्** = यजनीय का, यजनकर्ता का (यज् - देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)। **ताम्** = उसको (सर्वनाम)। **मा** = नहीं, मत (अव्यय)। **देवा** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **अदधुः** = धारण किया (दध - धारण करना, पालन करना)। **पुरुत्रा** = अग्रगामी, अग्रणी (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना)। **भूरिस्थात्राम् भूरि** = बहुत (अव्यय, सर्वनाम)। **आ-वेशयन्तः॥ 2॥**

826. अहम् एव स्वयम् इदम् वदामि,
जुष्टम् देवानाम् उत मानुषाणाम्।
यम् कामये तम्-तम् उग्रम् कृणोमि,
तम् ब्रह्माणम् तम् ऋषिम् तम् सुमेधाम्॥ 3॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **अहम् =** मैं (सर्वनाम)। **एव =** ही (अव्यय)। **स्वयम् =** अपने आप (अव्यय)। **इदम् =** यह, इसको (सर्वनाम)। **वदामि, जुष्टम् =** सुविचारित सेवा को (जुष् = विचार करना, सेवा करना, सेवन करना, विवेक होना, विवेचना करना, प्रीति करना, चाहना, दुलारना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना)। **देवानाम् =** देवों का (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **मानुषाणाम् =** मानुषों का, मनन करने वालों का (मन् - मनन करना, समझना, जानना, मान - पूजा करना, सम्मान करना, श्रेष्ठ होना, शोध करना)। **यम् =** जिसे, जिसको (सर्वनाम)। **कामये तम्=** उसको, उसे (सर्वनाम)।-**तम्=** उसको, उसे (सर्वनाम)। **उग्रम् =** उग्र को (उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना, उग् - उग्र - उग्र होना, तेज होना)। **कृणोमि =** करता हूँ (कृ = करना)। **तम्=** उसको, उसे (सर्वनाम)। **ब्रह्माणम् =** ब्रह्ममय को (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **तम्=** उसको, उसे (सर्वनाम)। **ऋषिम् =** ऋषि को (ऋष् - जानना, जाना, पाना, अन्तदृष्टि होना, अन्तर्गमन करना, सूक्ष्मता से भीतर देखना)। **तम्=** उसको, उसे (सर्वनाम)। **सुमेधाम्॥ 3॥**

827. मया सो अन्नम् अत्ति यो विपश्यति,
यः प्राणति यः ईम् शृणोति उक्तम्।
अमन्तवो माम् ते उप क्षियन्ति,
श्रुधि श्रुत् श्रत्-धेयम् ते वदामि॥ 4॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **मया =** मेरे द्वारा (सर्वनाम)। **सो =** वह, उसने (सर्वनाम)। **अन्नम् =** अन्न को (अन् - जीवन होना, प्राणवान् होना, समर्थ होना, जाना, अद् = खाना)। **अत्ति =** खाता है (अद् - खाना)। **यो =** जो (सर्वनाम)। **विपश्यति =** विशेष देखता है (पश् = देखना)। **यः =** जो (सर्वनाम)। **प्राणति यः =** जो (सर्वनाम)। **ईम् =** समान, इस प्रकार (अव्यय)। **शृणोति उक्तम्। अमन्तवो माम् =** मुझको (सर्वनाम)। **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **उप =** समीप (उपसर्ग)। **क्षियन्ति, श्रुधि =** सुनिये (श्रु - सुनना, श्रवण करना, जाना)। **श्रुत् श्रत्-धेयम् ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **वदामि॥ 4॥**

828. अहम् रुद्राय धनुः आ तनोमि,
ब्रह्मद्विषे शरवे हन्तवा उ।
अहम् जनाय समदम् कृणोमि,
अहम् द्यावापृथिवी आ विवेश॥ 5॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **अहम् =** मैं (सर्वनाम)। **रुद्राय =** रुद्र के लिए (रुद् = रुदन् करना, रोना, रोते-रोते कहना, रुलाना, करुण होना)। **धनुः =** धनवान्, गतिकारक (धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **तनोमि, ब्रह्मद्विषे शरवे हन्तवा उ =** निश्चय ही, भी (निपात, अव्यय)। **अहम् =** मैं (सर्वनाम)। **जनाय =** जन के लिए (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **समदम् कृणोमि =** करता हूँ (कृ = करना)। **अहम् =** मैं (सर्वनाम)। **द्यावापृथिवी =** अग्रगामी विस्तार, प्रकाश, द्यावा और पृथिवी (द्यु - आगे जाना, समीप जाना, द्युत् -दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, द्यै = तिरस्कार करना, पृथु = विस्तार होना, फेंकना, उड़ाना, भेजना, प्रेरणा करना)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **विवेश =** प्रविष्ट हुआ, प्रवेश किया (सम् - सम्यक्, वि - विशेष, विश् - प्रवेश करना, अन्तर्गमन करना, सूचना करना, प्रेरणा करना) **॥ 5॥**

829. अहम् सोमम् आहनसम् बिभर्मि,
अहम् त्वष्टारम् उत पूषणम् भगम्।

अहम् दधामि द्रविणा हविष्मते,
सुप्र-अव्या यजमानाय सुन्वते ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **अहम् =** मैं (सर्वनाम)। **सोमम् =** सोम को, उत्पन्नकर्ता को, ऐश्वर्यवान् को (सु = उत्पन्न करना, अद्भुत सामर्थ्य, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, अर्क निकालना, दबाना, हिलाना। सू = प्रेरणा देना। सो–स्य, सय् - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना)। **आहनसम् बिभर्मि, अहम् =** मैं (सर्वनाम)। **त्वष्टारम् =** त्वष्टा को, प्रकाशक को (त्वक्ष् = छीलना, रेतना, त्विष् = प्रकाशित होना, चमकना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **पूषणम् =** पोषण करने वाला, पोषणकर्ता (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, पूष - बढ़ना, अधिक होना, पोषण करना)। **भगम् =** भग को, सेवा को (भग्-भज् = सेवा करना, सेवन करना, सेवित होना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना)। **अहम् =** मैं (सर्वनाम)। **दधामि =** धारण करता हूँ (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)। **द्रविणा हविष्मते =** दानयुक्त, आदान-प्रदान, तृप्ति युक्त (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **सुप्र-अव्या** = पालनीय, रक्षणीय, बन्धन (अव्य - बाँधना, पालन करना, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)। **यजमानाय =** यजमान के लिए (यज = देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना, संयोग करना)। **सुन्वते=** स्नान करने वाले, सवन करने वाले (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना) **॥ 6 ॥**

830. अहम् सुवे पितरम् अस्य मूर्धन्,
मम योनिः अप्सु अन्तः समुद्रे।
ततो वि तिष्ठे भुवनानि विश्वा,
उत अमूम् द्याम् वर्ष्मणा उप स्पृशामि ॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **अहम् =** मैं (सर्वनाम)। **सुवे पितरम् =** पितर को, पिता को, ज्ञानी को, पालन करने वाले को (पि - जाना, जानना, पाना, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **अस्य =** इसका (सर्वनाम)। **मूर्धन्, मम =** मेरा (सर्वनाम)। **योनिः =** बन्धन, मिलन, सम्बन्ध (युन्-यु - बांधना, बन्धन करना, गूंथना। यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, संयोग-वियोग करना)। **अप्सु =** पालन-रक्षण में (अप = जाना, जानना, पाना, पालन करना)। **अन्तः=** बीच में, भीतर (अव्यय, उपसर्ग, सर्वनाम) **समुद्रे =** समुद्र में (सम् = सम्यक्, भलीभांति। उन्द - आर्द्र होना, गीला होना)। **ततो =** अतः, इसलिए, उससे, उसके अनन्तर (सर्वनाम)। **वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **तिष्ठे भुवनानि =** भुवन, वर्तमान (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **विश्वा =** विश्व, सभी, सब (सर्वनाम)। **उत =** भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)। **अमूम् =** इसको (सर्वनाम)। **द्याम् =** द्यु को, सबसे बढ़कर, विशिष्ट, प्रकाशमय (द्यु - आगे जाना, समीप जाना, द्युत् -दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, द्यै = तिरस्कार करना)। **वर्ष्मणा उप =** समीप (उपसर्ग)। **स्पृशामि ॥ 7 ॥**

831. अहम् एव वातः-इव प्र वामि,
आरभमाणा भुवनानि विश्वा।
परो दिवा परः एना पृथिव्या,
एतावती महिम्ना सम् बभूव ॥ 8 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **अहम् =** मैं (सर्वनाम)। **एव =** समान, की भाँति, के समान (अव्यय)। **वातः=** वात, वायु के समान तीव्र

गति वाले (वात - सुखी होना, आनन्द करना, सेवा करना, जाना, वा - गति करना, बहना, पवन की भाँति चलना)। - **इव =** समान, की भाँति, के समान (अव्यय)। **प्र =** प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **वामि, आरभमाणा भुवनानि =** भुवन, वर्तमान (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **विश्वा =** विश्व, सभी, सब (सर्वनाम)। **परो =** पराया, परे (अव्यय)। **दिवा =** दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)। **परः =** अन्य, पार, परे (अव्यय)। **एना =** इससे, इसके द्वारा, इसके साथ (सर्वनाम)। **पृथिव्या =** पृथ्वी योग्य, पृथिवी द्वारा (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)। **एतावती महिम्ना सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **बभूव =** हो गये (भू = होना, प्राप्त होना)।**॥ 8 ॥**

25. अनुवाकः - 7

133. सेनानिरीक्षण सूक्त - 31

832. त्वया मन्यो सरथम् आरुजन्तः हर्षमाणाः हृषितासः मरुत्वन्।
तिग्म-इषवः आयुधा सम्-शिशानाः उप प्र यन्तु नरः अग्निरूपाः॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ :- त्वया = तुम्हारे द्वारा, तुमसे **मन्यो =** विचारणीय **सरथम् =** सरथ को, ले जाने वाले को, रमने वाले को **आरुजन्तः =** आरोग्यकारी, रोगहीन करते हुए **हर्षमाणाः** = हर्षमान, आनन्द मानते हुए, आनन्दित होते हुए **हृषितासः** = हर्षित, आनन्दित **मरुत्वन् =** हे मरुत्व! **तिग्म-इषवः =** तीव्र इच्छा, तीव्र गति वाले **आयुधा =** आयुध **सम्-शिशानाः =** तीक्ष्ण करने वाले **उप =** समीप **प्र =** प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक **यन्तु =** पोषण करो, उद्धार करो, प्राप्त करो नियमन-नियन्त्रण करो **नरः =** नर **अग्निरूपाः =** अनेक अग्नि-रूप**॥ 1 ॥**

पदार्थ :- त्वया = तुम्हारे द्वारा, तुमसे (सर्वनाम)। **मन्यो =** विचारणीय (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **सरथम् =** सरथ को, ले जाने वाले को, रमने वाले को (स - सहित, साथ, रम - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना)। **आरुजन्तः =** आरोग्यकारी, रोगहीन करते हुए (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, रुज - हिंसा करना, रोग होना, कष्ट होना, टूटना, आ-रुज - आरोग्य होना)। **हर्षमाणाः** = हर्षमान, आनन्द मानते हुए, आनन्दित होते हुए (हृष - हृष्ट होना, सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना, झूठ बोलना, मिथ्या बोलना)। **हृषितासः** = हर्षित, आनन्दित (हृष - हृष्ट होना, सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना, झूठ बोलना, मिथ्या बोलना)। **मरुत्वन् =** हे मरुत्व! (मृ - मरना, देहत्याग करना)। **तिग्म-इषवः =** तीव्र इच्छा, तीव्र गति वाले (तिग् - जाना, जानना, पाना, कूटचाल चलना, तिज्-तेज् - चमकना, चमकाना, पैना करना, इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना)। **आयुधा =** आयुध (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, युध - युद्ध करना, प्रहार करना, काटना)। **सम्-शिशानाः =** तीक्ष्ण करने वाले (सम् - सम्यक्, भलीभांति, शि - तेज करना, तीक्ष्ण करना, कल्याण करना, शिष् - शेष रखना, बचाना, प्रयोजन करना)। **उप =** समीप (उपसर्ग)। **प्र =** प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **यन्तु =** पोषण करो, उद्धार करो, प्राप्त करो नियमन-नियन्त्रण करो (यम् - रोकना, स्वाधीन रखना, आवरण करना, पोषण करना, नियमन करना, यन - उद्धार करना, या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, जानना)। **नरः =** नर (नृ - नम्र होना, विनय होना, कोमल होना, मृदु होना, चलना, ले जाना)। **अग्निरूपाः =** अनेक अग्नि-रूप (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना, रूप - बनाना, आकार बनाना, रचना करना, मन में रुपाकृति लाना)**॥ 1 ॥**

833. अग्निः-इव मन्यो त्विषितः सहस्व,
सेनानीः नः सहुरे हूतः एधि।

हत्वाय शत्रून् वि भजस्व वेदः ओजो,
मिमानो वि मृधो नुदस्व ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **अग्निः=** अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)।-**इव =** समान, की भाँति, के समान (अव्यय)। **मन्यो त्विषितः सहस्व =** सहनशील, समर्थ बनो (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)। **सेनानीः =** सेनानी (सि–सिन् = बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना) **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **सहुरे हूतः एधि =** जाता है (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, इ - जाना, एध - बढ़ना)। **हत्वाय =** हत्व के लिए, हनन के लिए (हन् - मारना)। **शत्रून् =** शत्रुओं को (शी-शद्-शत् - जीर्ण होना, गिरना, गिराना)। **वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **भजस्व वेदः =** वेद, ज्ञान (विद् = जानना, समझना, विद्यमान होना)। **ओजो =** ओज (ओज - शक्तिमान् होना, जीवित होना, बढ़ना)। **मिमानो वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **मृधो नुदस्व =** भेजो (नुद् = भेजना, प्रेरणा करना, जाना) **॥ 2 ॥**

834. सहस्व मन्यो अभिमातिम् अस्मै,
रुजन् मृणन् प्रमृणन् प्र इहि शत्रून्।
उग्रम् ते पाजो ननु आ ररुध्रे,
वशी वशम् नयासा एकज त्वम् ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **सहस्व =** सहनशील, समर्थ बनो (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)। **मन्यो अभिमातिम् अस्मै =** इसके लिए, हमको, हमारे लिए (सर्वनाम)। **रुजन् =** हिंसा करते हुए, रुग्ण करते हुए (रुज् - हिंसा करना, रोग होना, कष्ट होना, टूटना)। **मृणन् प्रमृणन् =** प्रकृष्ट हिंसा करता हुआ, हिंसक (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, मृण् - हिंसा करना, मारना, छिद्र करना)। **प्र =** प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **इहि =** आओ, जानों (इ = जाना, जानना, पाना)। **शत्रून् =** शत्रुओं को (शी-शद्-शत् - जीर्ण होना, गिरना, गिराना)। **उग्रम् =** उग्र को (उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना, उग् - उग्र - उग्र होना, तेज होना)। **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **पाजो =** रक्षक से जन्मा हुआ (पा - रक्षा करना, पालन करना, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **ननु =** निश्चय ही (अव्यय)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **ररुध्रे, वशी =** वश, इच्छा (वश् = इच्छा करना, चाहना, चमकना)। **वशम् नयासा एकज त्वम् =** तुम (सर्वनाम) **॥ 3 ॥**

835. एको बहूनाम् असि मन्यः ईडिता,
विशम्-विशम् युद्धाय सम् शिशाधि।
अकृत्तरुक् त्वया युजा वयम्,
द्युमन्तम् घोषम् विजयाय कृण्मसि ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **एको =** एक (संख्या)। **बहूनाम् असि =** हो (अस् - होना)। **मन्यः =** विचारणीय (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **ईडिता, विशम् =** प्रवेशी को (विश् = प्रवेश करना, भीतर जाना)।-**विशम् =** प्रवेशी को (विश् = प्रवेश करना, भीतर जाना)। **युद्धाय सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **शिशाधि। अकृत्तरुक् त्वया =** तुम्हारे द्वारा, तुमसे (सर्वनाम)। **युजा =** युक्त कीजिये (यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, बांधना, बन्धन करना, गूंथना, युज - जुड़ना, मिलाप करना, मन एकाग्र करना, एकत्र करना)। **वयम् =** हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **द्युमन्तम् =** द्युमान्

को, आगे जाने वाले को, अग्रगामी को, तेजस्वी को (द्युत् = प्रकाशित होना, द्यु = अभिगमन करना, आक्रमण करना, आगे जाना, समीप जाना)। **घोषम् विजयाय कृण्मसि॥ 4॥**

836. विजेषकृत् इन्द्रः इव अनव-ब्रवो,
अस्माकम् मन्यो अधिपा भव इह।
प्रियम् ते नाम सहुरे गृणीमसि विद्म,
आ तम् उत्सम् यतः आबभूथ॥ 5॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **विजेषकृत् इन्द्रः =** इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **इव =** समान, की भाँति, के समान (अव्यय)। **अनव-ब्रवो, अस्माकम् =** हमारा (सर्वनाम)। **मन्यो अधिपा =** अधिपालक, अधिरक्षक (अधि = अधिगत, अधिक, उच्च, पूर्णतः, पा - रक्षा-पालन करना)। **भव =** हो (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **इह =** इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **प्रियम् ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **नाम =** नाम वाले (अव्यय)। **सहुरे गृणीमसि =** शब्द करते हो, अभिसिंचित करते हो, प्रशंसा करते हो (गृ-गृण् = शब्द करना, सिञ्चन करना, घर्षण करना, जानना, समझना, निगलना, बहिर्गमन करना, गृ - शब्द करना, गा-गै = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना)। **विद्म, आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **तम् =** उसको, उसे (सर्वनाम)। **उत्सम् =** उत्स को, उत्कृष्ट सृजन को (सु = उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना)। **यतः =** जिससे (सर्वनाम)। **आबभूथ॥ 5॥**

837. आभूत्या सहजा वज्र सायक,
सहो बिभर्षि सहभूते उत्तरम्।
क्रत्वा नो मन्यो सह मेदी एधि,
महाधनस्य पुरुहूत संसृजि॥ 6॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **आभूत्या सहजा वज्र =** वज्र, गतिमान (वज् - गति करना, जाना, हस्त - देना, लेना, ग्रहण करना)। **सायक, सहो =** सहनशीलता, सहनशक्ति (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना)। **बिभर्षि =** भरण, धारण करते हो (भृ- भरना, भरण करना, धारण करना)। **सहभूते उत्तरम् =** उत्तर को, तैरने-पार जाने को (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, तृ, तॄ = तैरना, पार जाना)। **क्रत्वा =** कर्मशील, करके (कृ - करना)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मन्यो सह =** साथ, सहित (सर्वनाम)। **मेदी एधि =** जाता है (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, इ - जाना, एध - बढ़ना)। **महाधनस्य पुरुहूत =** पुरुहूत, अग्र-दत्त, पहले दिया हुआ (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, पॄ - पूर्ण करना, भरना, पालन करना, रक्षा करना, तृप्त करना, हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)। **संसृजि॥ 6॥**

838. सम्-सृष्टम् धनम् उभयम् सम्-आकृतम्,
अस्मभ्यम् धत्ताम् वरुणः च मन्युः।
भियो दधाना हृदयेषु शत्रवः,
पराजितासो अप नि लयन्ताम्॥ 7॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)।-**सृष्टम् धनम् =** धन को (धन् - शब्द करना, गति करना,

चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)। **उभयम्** = दोनों को (सर्वनाम)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)।-**आकृतम्, अस्मभ्यम् धत्ताम् वरुणः** = वरुण (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **च** = और (अव्यय)। **मन्युः** = मन्यु, गर्व विचार (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **भियो दधाना** = धारण करने वाले, धारण करता है (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)। **हृदयेषु शत्रवः, पराजितासो अप** = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। **नि** = निश्चित, निरन्तर (अव्यय)। **लयन्ताम्॥ 7॥**

134. सेना संयोजन सूक्त - 32

839. यः ते मन्यो अविधत् वज्र सायक,
सहः ओजः पुष्यति विश्वम् आनुषक्।
साह्याम् दासम् आर्यम् त्वया युजा वयम्,
सहस्कृतेन सहसा सहस्वता॥ 1॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **यः** = जो (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **मन्यो अविधत् वज्र** = वज्र, गतिमान (वज् - गति करना, जाना, हस्त - देना, लेना, ग्रहण करना)। **सायक, सहः** = साथ, सहित (सर्वनाम)। **ओजः** = ओज (ओज - शक्तिमान् होना, जीवित होना, बढ़ना)। **पुष्यति विश्वम्** = सबको, सब विश्व को (विश्व - सब कुछ)। **आनुषक्** = निरन्तर (अव्यय)। **साह्याम्** = सक्षम, समर्थ, तृप्त, सन्तुष्ट, प्रतिरोध करें (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना)। **दासम् आर्यम् त्वया** = तुम्हारे द्वारा, तुमसे (सर्वनाम)। **युजा** = युक्त कीजिये (यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, बांधना, बन्धन करना, गूंथना, युज - जुड़ना, मिलाप करना, मन एकाग्र करना, एकत्र करना)। **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **सहस्कृतेन सहसा** = सहः के लिए, सक्षम के लिए, समर्थ के लिए, तृप्त के लिए, सन्तुष्ट के लिए (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)। **सहस्वता॥ 1॥**

840. मन्युः इन्द्रो मन्युः एव आस देवो,
मन्युः होता वरुणो जातवेदाः।
मन्युः विशः ईडते मानुषीः याः,
पाहि नो मन्यो तपसा सजोषाः॥ 2॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **मन्युः** = मन्यु, गर्व विचार (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **इन्द्रो** = परम ऐश्वर्यवान् (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **मन्युः** = मन्यु, गर्व विचार (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **एव** = ही (अव्यय)। **आस** = बैठने का साधन, स्थान (अस् - होना, आस् - बैठना, उपस्थित होना, विद्यमान होना, जीवित रहना, होना)। **देवो** = देव (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **मन्युः** = मन्यु, गर्व विचार (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **होता** = आह्वान्, ग्रहण, दान करने वाले (हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)। **वरुणो** = वरणीय, वरण करने वाला (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित

करना)। **जातवेदाः** = विद्वान्, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले (जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जा-ज्ञा - जानना, विद् - जानना)। **मन्युः** = मन्यु, गर्व विचार (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **विशः** = व्याप्त, प्रविष्ट, प्रवेशी (विश - भीतर जाना, चारों ओर फैलना, धंसना)। **ईडते** = स्तुति करते हैं (ईड् = स्तुति करना)। **मानुषीः** = मानुषी, मनन करने वाले (मन् - मनन करना, समझना, जानना, मान - पूजा करना, सम्मान करना, श्रेष्ठ होना, शोध करना)। **याः** = जो (सर्वनाम)। **पाहि** = पालन करो, रक्षा करो (पा - पालन, रक्षण करना)। **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **मन्यो तपसा** = तप द्वारा (तप - ऐश्वर्य होना, तपना, दाह होना, तप करना, तप्त होना, तप्त करना, जलना, जलाना, तृषा होना)। **सजोषाः** = विचारशील, विवेकवान्, प्रीति करने वाले (स - साथ, सहित, जुष् = प्रसन्न करना, सन्तुष्ट करना, चाहना, दुलार करना, प्रीति करना, विचार करना, विवेक-विवेचना करना, हिंसा करना, सेवा करना) **॥2॥**

841. अभि इहि मन्यो तवसः तवीयान्,
तपसा युजा वि जहि शत्रून्।
अमित्रहा वृत्रहा दस्युहा च,
विश्वा वसूनि आ भरा त्वम् नः॥ 3॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **इहि** = आओ, जानों (इ = जाना, जानना, पाना)। **मन्यो तवसः तवीयान्, तपसा** = तप द्वारा (तप - ऐश्वर्य होना, तपना, दाह होना, तप करना, तप्त होना, तप्त करना, जलना, जलाना, तृषा होना)। **युजा** = युक्त कीजिये (यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, बांधना, बन्धन करना, गूंथना, युज - जुड़ना, मिलाप करना, मन एकाग्र करना, एकत्र करना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **जहि** = हनन करो, प्रगति करो, व्याप्त हो, नष्ट करो (जह - हिंसा करना, चलना, फैलना, जहा – परित्याग करना, छोड़ना)। **शत्रून्** = शत्रुओं को (शी-शद्-शत् - जीर्ण होना, गिरना, गिराना)। **अमित्रहा** = अमित्र का हनन करने वाला (अ - नहीं, मिद् - प्रीति करना, स्नेह करना, हा, हन् - मार डालना, हिंसा करना)। **वृत्रहा** = वृत्र (हिंसा) का हनन करने वाले (वृ - वरण करना, आच्छादन करना, स्वीकार करना, वृत् - वर्तना, वर्तमान होना वरण करना, सेवा करना, चमकना, बोलना, हिंसा करना, हन् - हिंसा करना)। **दस्युहा** = दस्यु-हन्ता, दस्यु को मारने वाले (दस् - रक्षण, पालन, स्थापन करना, देखना, नष्ट होना, नष्ट करना, डसना, हन् - मारना, हिंसा करना)। **च** = और (अव्यय)। **विश्वा** = विश्व, सभी, सब (सर्वनाम)। **वसूनि** = वसुओं को (वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **भरा** = पोषण करो, भरण करो (भृ = पूर्ण करना, भरना, धारण-पोषण करना)। **त्वम्** = तुम (सर्वनाम)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम) **॥3॥**

842. त्वम् हि मन्यो अभिभूति-ओजाः,
स्वयम्-भूः भामो अभिमाति-षाहः।
विश्वचर्षणिः सहुरिः सहीयान्,
अस्मासु ओजः पृतनासु धेहि॥ 4॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **त्वम्** = तुम (सर्वनाम)। **हि** = ही, निश्चय (अव्यय)। **मन्यो अभिभूति** = सर्वथा अस्तित्ववान् (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा, भू - होना)।-**ओजाः, स्वयम्** = अपने आप (अव्यय)।-**भूः** = भू, भुवन, अस्तित्व, वर्तमान (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **भामो अभिमाति-षाहः** = अभिमान को सहन करने वाला (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर,

सर्वथा, मा = मान करना, मापना, सह - सहन करना, समर्थ होना, तृप्त होना)। **विश्वचर्षणिः =** सबको आनन्द देने वाले, विश्व चेतनशील (विश्व - सभी, चृष्-चर्ष - आनन्द होना, चेतन होना, विचार करना)। **सहुरिः सहीयान्, अस्मासु =** हम सब में (सर्वनाम)। **ओजः =** ओज (ओज - शक्तिमान् होना, जीवित होना, बढ़ना)। **पृतनासु =** व्यापक, बलों में (पृत - व्याप्त होना, जीवन होना, बलपूर्वक निकालना, पृ = पूर्ण करना)। **धेहि =** धारण करें (धा-धि-धी - धारण करना, पहनना, पोषण करना, रक्षण करना, देना)।**॥ 4 ॥**

843. अभागः सन् अप परा-इतो अस्मि,
तव क्रत्वा तविषस्य प्रचेतः।
तम् त्वा मन्यो अक्रतुः जिहीड अहम्,
स्वा तनूः बलदावा नः आ इहि॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - अभागः सन् = होते हुए (असन्, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **अप =** दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। **परा-इतो अस्मि =** हूँ (सर्वनाम)। **तव क्रत्वा =** कर्मशील, करके (कृ - करना)। **तविषस्य प्रचेतः। तम् =** उसको, उसे (सर्वनाम)। **त्वा =** तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **मन्यो अक्रतुः जिहीड अहम् =** मैं (सर्वनाम)। **स्वा =** उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि या जगत्, स्वः (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **तनूः =** विस्तार, शरीर (तन् = विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना)। **बलदावा नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **इहि =** आओ, जानों (इ = जाना, जानना, पाना)**॥ 5 ॥**

844. अयम् ते अस्मि उप नः आ इहि,
अर्वाङ् प्रतीचीनः सहुरे विश्वदावन्।
मन्यो वज्रिन अभि नः आ ववृत्स्व,
हनाव दस्यून् उत बोधि आपेः॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - अयम् = यह (सर्वनाम)। **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **अस्मि =** हूँ (सर्वनाम)। **उप =** समीप (उपसर्ग)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **इहि =** आओ, जानों (इ = जाना, जानना, पाना)। **अर्वाङ् =** अभिमुख, गतिशील, शब्दकर्ता (ऋ - जाना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना, पहुँचाना, अर्-ऋ - गति करना, जाना, जानना, पाना, शब्द करना, व्याप्त होना, मिलाना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, अर्व - गति करना, जाना, चलना, जानना, पाना, पहुँचना, हिंसा करना)। **प्रतीचीनः सहुरे विश्वदावन्। मन्यो वज्रिन =** वज्रयुक्त, गतिमानयुक्त (वज् - गति करना, जाना)। **अभि =** अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **ववृत्स्व =** दूर करो (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, त्याग करना, हटाना, आच्छादित करना)। **हनाव दस्यून् =** दस्यु-हन्ताओं को, दस्युओं को, मारने वालों को (दस् - रक्षण, पालन, स्थापन करना, देखना, नष्ट होना, नष्ट करना, डसना, हन् - मारना, हिंसा करना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **बोधि =** जानता है (बुध् - बोध होना, बोध करना, जानना, समझना)। **आपेः =** आप, व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)**॥ 6 ॥**

845. अभि प्र इहि दक्षिणतो भवा,
नो अध आ वृत्राणि जङ्घनाव भूरि।
जुहोमि ते धरुणम् मध्वो अग्रम्,

उभौ उप-अंशु प्रथमा पिबाव ॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **प्र =** प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **इहि =** आओ, जानों (इ = जाना, जानना, पाना)। **दक्षिणतो =** दक्षिण से (दक्ष् - बढ़ना, समृद्ध होना, शीघ्र कार्य करना, चतुर होना, दक्ष होना, चलना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मार डालना)। **भवा =** हो, हो जाये (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **अध =** नीचे (अव्यय)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **वृत्राणि =** वृत्रों को, आच्छादनों को (वृ - वरण करना, आच्छादन करना, स्वीकार करना, वृत् - वर्तना, वर्तमान होना वरण करना, सेवा करना, चमकना, बोलना, हिंसा करना)। **जङ्घनाव भूरि =** बहुत (अव्यय, सर्वनाम)। **जुहोमि =** दान करते हैं, आदान-प्रदान करते हैं (हु-जुहु = दान करना, आदान-प्रदान करना, ग्रहण करना, तृप्त करना, जु - जाना, शीघ्र जाना, भागना)। **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **धरुणम् =** धारण करने वाले को (धृ = धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना)। **मध्वो =** मधुरता का (मध् = मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना)। **अग्रम् =** अग्र, आगे (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **उभौ =** दोनों, पूर्णता (उभय - दोनो, उभ् - पूर्ण करना, भरना)। **उपांशु =** समीप अंशु, निकट साथी, उपविभाग (उप - समीप, अंश् = विभाग करना, साथ होना)। **प्रथमा =** प्रथम (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)। **पिबाव ॥ 7 ॥**

135. पापनाशन सूक्त - 33

846. अप नः शोशुचत् अघम्,
अग्ने शुशुग्धि आ रयिम्।
अप नः शोशुचत् अघम् ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - अप = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **शोशुचत् =** पवित्र करे। (शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना, पवित्र करना, दुःख मानना, शोक करना)। **अघम् =** पाप को (अघ - पाप करना, अपराध करना) **अग्ने =** हे अग्नि (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **शुशुग्धि आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **रयिम् =** विद्या, ज्ञान को (रय्-रि, री - चलना, जाना, जानना, पाना, री-रै - शब्द करना)। **अप =** दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **शोशुचत् =** पवित्र करे। (शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना, पवित्र करना, दुःख मानना, शोक करना)। **अघम् =** पाप को (अघ - पाप करना, अपराध करना) **॥ 1 ॥**

847. सुक्षेत्रिया सुगातुया,
वसूया च यजामहे।
अप नः शोशुचत् अघम् ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - सुक्षेत्रिया सुगातुया, वसूया च यजामहे। अप = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **शोशुचत् =** पवित्र करे। (शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना, पवित्र करना, दुःख मानना, शोक करना)। **अघम् =** पाप को (अघ - पाप करना, अपराध करना) **॥ 2 ॥**

848. प्र यत् भन्दिष्ठः एषाम्,
प्र अस्माकासः च सूरयः।

अप नः शोशुचत् अघम् ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - प्र यत् भन्दिष्ठः एषाम्, प्र अस्माकासः च सूरयः । अप = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **शोशुचत् =** पवित्र करे। (शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना, पवित्र करना, दुःख मानना, शोक करना)। **अघम् =** पाप को (अघ - पाप करना, अपराध करना) ॥ **3** ॥

849. प्र यत् ते अग्ने सूरयो,
जायेमहि प्र ते वयम् ।
अप नः शोशुचत् अघम् ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - प्र यत् ते अग्ने सूरयो, जायेमहि प्र ते वयम् । अप = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **शोशुचत् =** पवित्र करे। (शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना, पवित्र करना, दुःख मानना, शोक करना)। **अघम् =** पाप को (अघ - पाप करना, अपराध करना) ॥ **4** ॥

850. प्र यत् अग्नेः सहस्वतो,
विश्वतो यन्ति भानवः ।
अप नः शोशुचत् अघम् ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - प्र = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **यत् =** जिसे, जो (सर्वनाम)। **अग्नेः =** हे अग्नि (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **सहस्वतो, विश्वतो यन्ति =** प्राप्त होते हैं, नियमन-नियन्त्रण, पोषण करते हैं (यम् = रोकना, स्वाधीन रखना, आवरण करना, पोषण करना, नियमन करना, यन - उद्धार करना, या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, जानना)। **भानवः । अप =** दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **शोशुचत् =** पवित्र करे। (शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना, पवित्र करना, दुःख मानना, शोक करना)। **अघम् =** पाप को (अघ - पाप करना, अपराध करना) ॥ **5** ॥

851. त्वम् हि विश्वतो-मुख,
विश्वतः परिभूः असि ।
अप नः शोशुचत् अघम् ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - त्वम् = तुम (सर्वनाम)। **हि =** ही, निश्चय (अव्यय)। **विश्वतो-मुख =** मुख (मुख् - जाना, खाना, मुख्य होना, जाना, खाना)। **विश्वतः =** सबसे, विश्व से (सर्वनाम)। **परिभूः =** सबसे बढ़कर, सर्वत्र रहने वाला (परि = सभी तरफ, उपसर्ग, भू- होना)। **असि =** हो (अस् - होना)। **अप =** दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **शोशुचत् =** पवित्र करे। (शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना, पवित्र करना, दुःख मानना, शोक करना)। **अघम् =** पाप को (अघ - पाप करना, अपराध करना) ॥ **6** ॥

852. द्विषो नो विश्वतो-मुख,
अति नावा-इव पारय ।
अप नः शोशुचत् अघम् ॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - द्विषो = द्वेष करने वाला (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)। **नो =** हमको, हमारे लिए,

हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **विश्वतो-मुख** = मुख (मुख् - जाना, खाना, मुख्य होना, जाना, खाना)। **अति** = बहुत, अत्यधिक (उपसर्ग, अव्यय)। **नावा-इव** = समान, की भाँति, के समान (अव्यय)। **पारय। अप** = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **शोशुचत्** = पवित्र करे। (शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना, पवित्र करना, दुःख मानना, शोक करना)। **अघम्** = पाप को (अघ - पाप करना, अपराध करना) **॥ 7 ॥**

853. स नः सिन्धुम्-इव नावा,
अति पर्षा स्वस्तये।
अप नः शोशुचत् अघम् ॥ 8 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **स** = वह, उसने (सर्वनाम)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **सिन्धुम्-इव** = समान, की भाँति, के समान (अव्यय)। **नावा, अति** = बहुत, अत्यधिक (उपसर्ग, अव्यय)। **पर्षा स्वस्तये** = कल्याण के लिए, सुख के लिए (सु - अच्छा, अस् - होना, स्वस्ति = कल्याण)। **अप** = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **शोशुचत्** = पवित्र करे। (शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना, पवित्र करना, दुःख मानना, शोक करना)। **अघम्** = पाप को (अघ - पाप करना, अपराध करना) **॥ 8 ॥**

136. ब्रह्ममौदन सूक्त - 34

854. ब्रह्म अस्य शीर्षम् बृहत् अस्य,
पृष्ठम् वामदेव्यम् उदरम् ओदनस्य।
छन्दांसि पक्षौ मुखम् अस्य सत्यम्,
विष्टारी जातः तपसो अधि यज्ञः ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **ब्रह्म** = ब्रह्म, महान्, बड़ा, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना) **अस्य** = इसका (सर्वनाम)। **शीर्षम् बृहत्** = महान्, बड़ा, विराट, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **अस्य** = इसका (सर्वनाम)। **पृष्ठम्** = पृष्ठ को (पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना, स्था - स्थित होना, ठहरना, बैठना, पृश् - पृच्छ - पूछना, जानने की इच्छा करना, प्रश्न करना, पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सहन करना)। **वामदेव्यम्** = वामदेव्य को, सुगन्ध, विद्या को, गति-ज्ञान, प्राप्ति की दिव्यता को (वा = गति करना, पवन की भाँति बहना, जाना, जानना, पाना, गन्ध होना, वम् - वमन होना)। **उदरम्** = उदर को, आद्र करने वाले को, आद्रता को देने वाले को (उ - ही, उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना, द्री - आदर करना, सम्मान करना, सत्कार करना, अर् - ऋ - जाना, फैलाना)। **ओदनस्य। छन्दांसि** = छन्द (छन्द् - बल-प्राण होना, आच्छादन करना, ग्रहण करना, अर्जन करना)। **पक्षौ** = पक्ष में (पक्ष् - पक्ष होना, पक्ष लेना, किसी एक पक्ष को ग्रहण करना, विभाग करना, ग्रहण करना, स्वीकार करना)। **मुखम्** = मुख को (जाना, खाना, मुख् - मुख्य होना, जाना, खाना)। **अस्य** = इसका (सर्वनाम)। **सत्यम्** = सत्य को (सत् = होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना)। **विष्टारी जातः** = उत्पन्न (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **तपसो** = तप का (तप - ऐश्वर्य होना, तपना, दाह होना, तप करना, तप्त होना, तप्त करना, जलना, जलाना, तृषा होना)। **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **यज्ञः** = यजन (यज - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना, संयोग करना) **॥ 1 ॥**

855. अनस्थाः पूताः पवनेन शुद्धाः,
शुचयः शुचिम् अपि यन्तु लोकम्।

न एषाम् शिश्नम् प्र दहति जातवेदाः,
स्वर्गे लोके बहु स्त्रैणम् एषाम् ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **अनस्थाः पूताः पवनेन शुद्धाः** = शुद्ध, पवित्र (शुच्-शुक्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना,जाना)। **शुचयः** = पवित्र (शुच्-शुक्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)। **शुचिम्** = पवित्रता को (शुच्-शुक्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना,जाना)। **अपि** = भी, निकट (अव्यय)। **यन्तु** = नियमन-नियन्त्रण, पोषण करो, उद्धार करो, प्राप्त करो (यम् = रोकना, स्वाधीन रखना, आवरण करना, पोषण करना, नियमन करना, यन - उद्धार करना, या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, जानना)। **लोकम्** = लोक को, दर्शन को, प्रकाश को, वाणी को (लोक् = देखना, प्रकाशित होना, बोलना)। **न** = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **एषाम्** = इनका (सर्वनाम) **शिश्नम् प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **दहति जातवेदाः** = विद्वान्, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले (जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जा-ज्ञा - जानना, विद् - जानना)। **स्वर्गे** = स्वर्ग में (सू- ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, पराक्रम होना, स्वृ-स्वर् = शब्द करना, गम् - जाना)। **लोके** = लोक में (लोक् = देखना, प्रकाशित होना, बोलना)। **बहु** = बहुत (सर्वनाम)। **स्त्रैणम् एषाम्** = इनका (सर्वनाम) **॥ 2 ॥**

856. विष्टारिणम् ओदनम् ये पचन्ति न,
एनान् अवर्तिः सचते कदा चन।
आस्ते यमे उप याति देवान्,
सम् गन्धर्वैः मदते सोम्येभिः ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **विष्टारिणम् ओदनम् ये** = जो (सर्वनाम)। **पचन्ति न** = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **एनान्** = इनको (सर्वनाम)। **अवर्तिः सचते** = अभिसिञ्चन करता है (सच् = सिञ्चन करना, सेवा करना, सन्तुष्ट करना, जानना, पूर्णतया समझना, सम्बन्धी होना)। **कदा** = कब (सर्वनाम)। **चन** = ही (अव्यय)। **आस्ते** = बैठे हुए, थे (अस् - होना, आस् - बैठना, उपस्थित होना, विद्यमान होना, जीवित रहना, होना)। **यमे** = यम (यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)। **उप** = समीप (उपसर्ग)। **याति** = जाता है (या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)। **देवान्** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों को (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **गन्धर्वैः मदते सोम्येभिः ॥ 3 ॥**

857. विष्टारिणम् ओदनम् ये पचन्ति न,
एनान् यमः परि मुष्णाति रेतः।
रथी ह भूत्वा रथयाने ईयते पक्षी,
ह भूत्वा अति दिवः सम् एति ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **विष्टारिणम् ओदनम् ये** = जो (सर्वनाम)। **पचन्ति न** = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **एनान्** = इनको (सर्वनाम)। **यमः** = यम (यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)। **परि** = सभी तरफ (उपसर्ग)। **मुष्णाति रेतः** = रेतस्, विद्या, प्रगति (रि - जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, री - गति करना, झरना-टपकना, लेना, शब्द करना, सुनना)। **रथी** = रथी, रथवाला (रम - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना)। **ह** = ही, निश्चय ही (अव्यय)। **भूत्वा** = होकर (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल

जाना, एकत्र करना)। **रथयाने ईयते पक्षी, ह** = ही, निश्चय ही (अव्यय)। **भूत्वा** = होकर (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **अति** = बहुत, अत्यधिक (उपसर्ग, अव्यय)। **दिवः** = दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **एति** = जाता है, प्राप्त होता है, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करता है (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना, इच्छा करना, प्रेरणा करना) **॥ 4 ॥**

858. एष यज्ञानाम् विततो बहिष्ठो,
विष्टारिणम् पक्त्वा दिवम् आ विवेश।
आण्डीकम् कुमुदम् सम् तनोति,
बिसम् शालूकम् शफको मुलाली।
एताः त्वा धाराः उप यन्तु,
सर्वाः स्वर्गे लोके मधुमत्,
पिन्वमानाः उप त्वा तिष्ठन्तु,
पुष्करिणीः सम्-अन्ताः ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - एष = यह (सर्वनाम)। **यज्ञानाम् विततो** = विस्तृत, वर्णन- विस्तार (वि - विशेष, तन् - विस्तार करना, वर्णन करना, शब्द करना, आश्रय देना)। **बहिष्ठो, विष्टारिणम् पक्त्वा दिवम्** = दिव को, तेजस्वी को (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **विवेश** = प्रविष्ट हुआ, प्रवेश किया (सम् - सम्यक्, वि - विशेष, विश् - प्रवेश करना, अन्तर्गमन करना, सूचना करना, प्रेरणा करना)। **आण्डीकम् कुमुदम् सम् तनोति, बिसम् शालूकम् शफको मुलाली। एताः** = ये (सर्वनाम)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **धारा** = धारण, पोषण, रक्षण (धाः = पोषण करना, रक्षण करना, देना, दान करना, धार बाँधना, धारा होना)। **उप** = समीप (उपसर्ग)। **यन्तु** = नियमन-नियन्त्रण, पोषण करो, उद्धार करो, प्राप्त करो (यम् = रोकना, स्वाधीन रखना, आवरण करना, पोषण करना, नियमन करना, यन - उद्धार करना, या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, जानना)। **सर्वाः** = सभी (सर्वनाम)। **स्वर्गे** = स्वर्ग में (सू- ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, पराक्रम होना, स्वृ-स्वर् = शब्द करना, गम् - जाना)। **लोके** = लोक में (लोक् = देखना, प्रकाशित होना, बोलना)। **मधुमत्** = मधुयुक्त (मध् = मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना, मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)। **पिन्वमानाः** = सिञ्चन, सेवा करने वाले (पिन्व = सेवा करना, सेचन करना, प्रोक्षण करना)। **उप** = समीप (उपसर्ग)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **तिष्ठन्तु** = स्थित हों, ठहरें (तिष्ठ् = ठहरना, खड़ा होना)। **पुष्करिणीः सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)।-**अन्ताः** = अन्तः, भीतर, अन्त करने वाले (अन्तः = बीच में, अन्त् - अन्त होना, समाप्त होना, बाँधना, पाना, हिंसा करना) **॥ 5 ॥**

859. घृतह्रदाः मधुकूलाः सुरा-उदकाः,
क्षीरेण पूर्णाः उदकेन दध्ना।
एताः त्वा धारा उप यन्तु,
सर्वाः स्वर्गे लोके मधुमत्,
पिन्वमानाः उप त्वा तिष्ठन्तु,

पुष्करिणीः सम्-अन्ताः ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - घृतह्रदाः मधुकूलाः सुरा = सुरा (सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सुर = अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना)।-**उदकाः, क्षीरेण पूर्णाः =** पूर्ण (पृ - पूर् - पूर्ण करना, भरना, तृप्त करना, आनन्द करना, सन्तोष होना, आनन्द होना, पूर्ण होना)। **उदकेन दध्ना =** धारण करने वाले, धारण द्वारा (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)। **एताः =** ये (सर्वनाम)। **त्वा =** तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **धारा =** धारण, पोषण, रक्षण (धाः = पोषण करना, रक्षण करना, देना, दान करना, धार बाँधना, धारा होना)। **उप =** समीप (उपसर्ग)। **यन्तु =** नियमन-नियन्त्रण, पोषण करो, उद्धार करो, प्राप्त करो (यम् = रोकना, स्वाधीन रखना, आवरण करना, पोषण करना, नियमन करना, यन - उद्धार करना, या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, जानना)। **सर्वाः =** सभी (सर्वनाम)। **स्वर्गे =** स्वर्ग में (सू- ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, पराक्रम होना, स्वृ-स्वर् = शब्द करना, गम् - जाना)। **लोके =** लोक में (लोक् = देखना, प्रकाशित होना, बोलना)। **मधुमत् =** मधुयुक्त (मध् = मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना, मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)। **पिन्वमानाः =** सिञ्चन, सेवा करने वाले (पिन्व = सेवा करना, सेचन करना, प्रोक्षण करना)। **उप =** समीप (उपसर्ग)। **त्वा =** तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **तिष्ठन्तु =** स्थित हों, ठहरें (तिष्ठ् = ठहरना, खड़ा होना)। **पुष्करिणीः सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)।-**अन्ताः =** अन्तः, भीतर, अन्त करने वाले (अन्तः = बीच में, अन्त् - अन्त होना, समाप्त होना, बाँधना, पाना, हिंसा करना) ॥ 6 ॥

860. चतुरः कुम्भान् चतुः-धा ददामि,
क्षीरेण पूर्णान् उदकेन दध्ना।
एताः त्वा धाराः उप यन्तु,
सर्वाः स्वर्गे लोके मधुमत्,
पिन्वमानाः उप त्वा तिष्ठन्तु,
पुष्करिणीः सम्-अन्ताः ॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - चतुरः = चतुर, प्रगतिशील, गतिमान, याचक (चत् - चलना, जाना, जानना, पाना, याचना करना, मांगना)। **कुम्भान् चतुः =** चार (संख्या)। -**धा ददामि =** देता हूँ (दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)। **क्षीरेण पूर्णान् उदकेन दध्ना =** धारण करने वाले, धारण द्वारा (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)। **एताः =** ये (सर्वनाम)। **त्वा =** तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **धाराः =** धारण, पोषण, रक्षण (धाः = पोषण करना, रक्षण करना, देना, दान करना, धार बाँधना, धारा होना)। **उप =** समीप (उपसर्ग)। **यन्तु =** नियमन-नियन्त्रण, पोषण करो, उद्धार करो, प्राप्त करो (यम् = रोकना, स्वाधीन रखना, आवरण करना, पोषण करना, नियमन करना, यन - उद्धार करना, या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, जानना)। **सर्वाः =** सभी (सर्वनाम)। **स्वर्गे =** स्वर्ग में (सू- ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, पराक्रम होना, स्वृ-स्वर् = शब्द करना, गम् - जाना)। **लोके =** लोक में (लोक् = देखना, प्रकाशित होना, बोलना)। **मधुमत् =** मधुयुक्त (मध् = मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना, मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)। **पिन्वमानाः =** सिञ्चन, सेवा करने वाले (पिन्व = सेवा करना, सेचन करना, प्रोक्षण करना)। **उप =** समीप (उपसर्ग)। **त्वा =** तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **तिष्ठन्तु =** स्थित हों, ठहरें (तिष्ठ् = ठहरना, खड़ा होना)। **पुष्करिणीः सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)।-**अन्ताः =** अन्तः, भीतर, अन्त करने वाले (अन्तः = बीच में, अन्त् - अन्त होना, समाप्त होना, बाँधना, पाना, हिंसा करना) ॥ 7 ॥

861. इमम् ओदनम् नि दधे ब्राह्मणेषु,
विष्टारिणम् लोकजितम् स्वर्गम्।

स मे मा क्षेष्ट स्वधया पिन्वमानो,
विश्वरूपा धेनु कामदुघा मे अस्तु ॥ 8 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - इमम् = इसको (सर्वनाम)। **ओदनम् नि =** निश्चित, निरन्तर (अव्यय)। **दधे =** धारण करते हैं (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)। **ब्राह्मणेषु =** ब्राह्मणों में, वृद्धिशीलों, उद्यमशीलों में (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **विष्टारिणम् लोकजितम् स्वर्गम्। स =** वह, उसने (सर्वनाम)। **मे =** मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **मा =** नहीं, मत (अव्यय)। **क्षेष्ट स्वधया =** स्वधा के साथ, स्वधा द्वारा (स्व = निज, अपना, धा = धारण करना, पहनना, पोषण करना, रक्षण करना, धि - पास रखना या होना, युक्त होना)। **पिन्वमानो, विश्वरूपा धेनु =** धेनु, प्रिय, पालन करने वाले (धिन - प्रेम करना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना, धी - बुद्धि होना, धे - पालना, पीना)। **कामदुघा मे =** मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **अस्तु =** हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना) **॥ 8 ॥**

137. मृत्युसंतरण सूक्त - 35

862. यम् ओदनम् प्रथमजाः ऋतस्य,
प्रजापतिः तपसा ब्रह्मणे अपचत्।
यो लोकानाम् विघृतिः न अभिरेषात्,
तेन ओदनेन अति तराणि मृत्युम् ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - यम् = जिसे, जिसको, जहाँ (सर्वनाम)। **ओदनम् प्रथमजाः =** प्रथम उत्पन्न (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना, जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना)। **ऋतस्य =** ऋत का (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)। **प्रजापतिः =** प्रजापति, प्रजा का रक्षक, पालक (प्र - प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न करना, पत - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना)। **तपसा =** तप द्वारा (तप - ऐश्वर्य होना, तपना, दाह होना, तप करना, तप्त होना, तप्त करना, जलना, जलाना, तृषा होना)। **ब्रह्मणे =** ब्रह्म के लिए, महान् के लिए (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **अपचत्। यो =** जो (सर्वनाम)। **लोकानाम् विघृतिः न =** नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **अभिरेषात्, तेन =** उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **ओदनेन अति =** बहुत, अत्यधिक (उपसर्ग, अव्यय)। **तराणि मृत्युम् =** मृत्यु को (मृ = मरना, देहत्याग करना) **॥ 1 ॥**

863. येन अतरन् भूतकृतो अति मृत्युम्,
यम् अनु-अविन्दन् तपसा श्रमेण।
यम् पपाच ब्रह्मणे ब्रह्म पूर्वम्,
तेन ओदनेन अति तराणि मृत्युम् ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - येन = जिससे, जिसके द्वारा (सर्वनाम)। **अतरन् भूतकृतो =** भूत-कृत, हुए द्वारा किया गया (भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना, कृ = करना)। **अति =** बहुत, अत्यधिक (उपसर्ग, अव्यय)। **मृत्युम् =** मृत्यु को (मृ = मरना, देहत्याग करना) **यम् =** जिसे, जिसको, जहाँ (सर्वनाम)। **अनु-अविन्दन् तपसा =** तप द्वारा (तप - ऐश्वर्य होना, तपना, दाह होना, तप करना, तप्त होना, तप्त करना, जलना, जलाना, तृषा होना)। **श्रमेण। यम् =** जिसे, जिसको, जहाँ (सर्वनाम)। **पपाच ब्रह्मणे =** ब्रह्म के लिए, महान् के लिए (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **ब्रह्म =** ब्रह्म, महान्, बड़ा,

बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना) **पूर्वम् =** पूर्व को (पूर्व = पूर्व, पहले, सर्वनाम, पूर्व - पूर्ण करना, भरना, निवास करना, आश्चर्य करना, आमन्त्रण करना)। **तेन =** उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **ओदनेन अति =** बहुत, अत्यधिक (उपसर्ग, अव्यय)। **तराणि मृत्युम् =** मृत्यु को (मृ = मरना, देहत्याग करना)॥ **2**॥

864. यो दाधार पृथिवीम् विश्वभोजसम्,
यो अन्तरिक्षम् आ अपृणात् रसेन।
यो अस्तभ्नात् दिवम् ऊर्ध्वो महिम्ना,
तेन ओदनेन अति तराणि मृत्युम्॥ 3॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - यो = जो (सर्वनाम)। **दाधार =** धारण किया, स्थापित किया (धृ - धारण करना)। **पृथिवीम् =** पृथिवी को (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)। **विश्वभोजसम्, यो =** जो (सर्वनाम)। **अन्तरिक्षम् =** अन्तरिक्ष, आकाश, अन्तर्दर्शी (अन्तः - बीच में, इक्ष् - स्वाद लेना, ईक्ष् -देखना)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **अपृणात् रसेन =** रस द्वारा (रस् = शब्द करना, स्वाद लेना, प्यार करना)। **यो =** जो (सर्वनाम)। **अस्तभ्नात् दिवम् =** दिव को, तेजस्वी को (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)। **ऊर्ध्वो महिम्ना, तेन =** उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **ओदनेन अति =** बहुत, अत्यधिक (उपसर्ग, अव्यय)। **तराणि मृत्युम् =** मृत्यु को (मृ = मरना, देहत्याग करना)॥ **3**॥

865. यस्मात् मासा निर्मिताः त्रिंशत्-अराः सम्-वत्सरो,
यस्मात् निर्मितो द्वादश-अरः।
अहोरात्रा यम् परियन्तो न आपुः,
तेन ओदनेन अति तराणि मृत्युम्॥ 4॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - यस्मात् = जिससे (सर्वनाम)। **मासा =** मास, रूपान्तरण करने, मापन करने वाले (मस् = रूपान्तरण करना, मापन करना, मापना)। **निर्मिताः त्रिंशत्=** तीस, (संख्या, सर्वनाम)।-**अराः सम्=** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)।-**वत्सरो, यस्मात् =** जिससे (सर्वनाम)। **निर्मितो द्वादश-अरः। अहोरात्रा यम् =** जिसे, जिसको (सर्वनाम)। **परियन्तो न =** नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **आपुः, तेन =** उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **ओदनेन अति =** बहुत, अत्यधिक (उपसर्ग, अव्यय)। **तराणि मृत्युम् =** मृत्यु को (मृ = मरना, देहत्याग करना)॥ **4**॥

66. यः प्राणदः प्राणदवान् बभूव,
यस्मै लोका घृतवन्तः क्षरन्ति।
ज्योतिष्मतीः प्रदिशो यस्य सर्वाः,
तेन ओदनेन अति तराणि मृत्युम्॥ 5॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - यः = जो (सर्वनाम)। **प्राणदः प्राणदवान् बभूव =** हो गये (भू = होना, प्राप्त होना)। **यस्मै =** जिसके लिए (सर्वनाम)। **लोका =** प्रकाशवान् (लोक् = देखना, प्रकाशित होना, बोलना)। **घृतवन्तः क्षरन्ति =** क्षरण करते हैं, झरते हैं, गिरते हैं (क्षर् - टपकना, झरना, गिरना)। **ज्योतिष्मतीः प्रदिशो =** प्रदिश, दिशा (प्र - प्रकृष्ट, दिश् - दिखाना, दिखाना, समझाना, कहना, देना)। **यस्य =** जिसका (सर्वनाम)। **सर्वाः =** सभी (सर्वनाम)। **तेन =** उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)।

ओदनेन अति = बहुत, अत्यधिक (उपसर्ग, अव्यय)। **तराणि मृत्युम् =** मृत्यु को (मृ = मरना, देहत्याग करना) **॥ 5 ॥**

867. यस्मात् पक्वात् अमृतम् सम्-बभूव,
यो गायत्र्याः अधिपतिः बभूव।
यस्मिन् वेदा निहिता विश्वरूपाः,
तेन ओदनेन अति तराणि मृत्युम् ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - यस्मात् = जिससे (सर्वनाम)। **पक्वात् अमृतम् =** न मरने वाले, अमर, अमृत को (अ - नहीं, मृ = मरना)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)।-**बभूव =** हो गये (भू = होना, प्राप्त होना)। **यो =** जो (सर्वनाम)। **गायत्र्याः अधिपतिः =** अधिपति (अधि = अधिगत, अधिक, उच्च, पूर्णतः, पत् - ऐश्वर्य होना, उड़ना, गिरना)। **बभूव =** हो गये (भू = होना, प्राप्त होना)। **यस्मिन् =** जिसमें (सर्वनाम)। **वेदा =** वेद, ज्ञान (विद् = जानना, समझना, विद्यमान होना)। **निहिता =** निहित, स्थित (नि - निरन्तर, निश्चित, हि - जाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना)। **विश्वरूपाः, तेन =** उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **ओदनेन अति =** बहुत, अत्यधिक (उपसर्ग, अव्यय)। **तराणि मृत्युम् =** मृत्यु को (मृ = मरना, देहत्याग करना) **॥ 6 ॥**

868. अव बाधे द्विषन्तम् देवपीयुम्,
सपत्ना ये मे अप ते भवन्तु।
ब्रह्म–ओदनम् विश्वजितम् पचामि,
शृण्वन्तु मे श्रत्-दधानस्य देवाः ॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - अव = नीचे, दूर, प्राप्त (अव्यय)। **बाधे द्विषन्तम् देवपीयुम्, सपत्ना =** ऐश्वर्यवान् (स - सहित, साथ। पत् = जाना, उड़ना, पतन होना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **ये =** जो (सर्वनाम)। **मे =** मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **अप =** दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **भवन्तु =** हों, हो जायें (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **ब्रह्म =** ब्रह्म, महान्, बड़ा, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना)**–ओदनम् विश्वजितम् पचामि, शृण्वन्तु मे =** मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **श्रत्-दधानस्य देवाः =** विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना) **॥ 7 ॥**

26. अनुवाकः - 8

138. सत्यौजा अग्नि सूक्त - 36

869. तान् सत्य-ओजाः प्र दहतु,
अग्निः वैश्वानरो वृषा।
यो नो दुरस्यात् दिप्सात्,
च अथो यो नो अरातियात् ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - तान् = उनको (सर्वनाम)। **सत्य =** सत्य (सत् = होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना)।-**ओजाः प्र =** प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **दहतु, अग्निः =** अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **वैश्वानरो =** सबको ले जाने वाला, विश्वनर, वैश्विक भावना वाला नर (विश्व - सब, नृ - चलना, ले जाना, विनय होना)। **वृषा =** पराक्रमी (वृष - गर्भवती

होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना या पीड़ा करना, दुःख देना, पीड़ित करना)। **यो =** जो (सर्वनाम)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **दुरस्यात् दिप्सात्, च =** और (अव्यय)। **अथो =** अब, इसके बाद, इसके अनन्तर (अव्यय)। **यो =** जो (सर्वनाम)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **अरातियात्॥ 1॥**

870. यो नो दिप्सत् अदिप्सतो,
यः च दिप्सति।
वैश्वानरस्य दंष्ट्रयोः,
अग्नेः अपि दधामि तम्॥ 2॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - यो = जो (सर्वनाम)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **दिप्सत् अदिप्सतो, यः =** जो (सर्वनाम)। **च =** और (अव्यय)। **दिप्सति। वैश्वानरस्य =** विश्वनायक का (विश्व - सब, नृ - चलना, ले जाना, विनय होना)। **दंष्ट्रयोः, अग्नेः =** अग्नि का (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **अपि =** भी, निकट (अव्यय)। **दधामि =** धारण करता हूँ (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना)। **तम् =** उसको, उसे (सर्वनाम)॥ **2॥**

871. ये आगरे मृगयन्ते,
प्रतिक्रोशे अमावास्ये।
क्रव्य-अदो अन्यान् दिप्सतः,
सर्वान् तान् सहसा सहे॥ 3॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - ये = जो (सर्वनाम)। **आगरे मृगयन्ते, प्रतिक्रोशे अमावास्ये =** हे अमावास्य! अमा में वासयोग्य (अ = नहीं, अम् = गति, शब्द, सेवा करना, मा - मापना, मान करना, वस् = रहना, निवास करना)। **क्रव्य =** करणीय, क्रूर, निर्दयता (क्रू, क्रूर् = निर्दय होना, निर्दयता करना, कृ - करना)। **-अदो अन्यान् =** अन्यों को (सर्वनाम)। **दिप्सतः, सर्वान् =** सभी को (सर्वनाम)। **तान् =** उनको (सर्वनाम)। **सहसा =** सहः के लिए, सक्षम के लिए, समर्थ के लिए, तृप्त के लिए, सन्तुष्ट के लिए (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)। **सहे॥ 3॥**

872. सहे पिशाचान् सहसा,
एषाम् द्रविणम् ददे।
सर्वान् दुरस्यतो हन्मि,
सम् मे आकूतिः ऋध्यताम्॥ 4॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - सहे पिशाचान् सहसा = सहः के लिए, सक्षम के लिए, समर्थ के लिए, तृप्त के लिए, सन्तुष्ट के लिए (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)। **एषाम् =** इनका (सर्वनाम)। **द्रविणम् =** द्रविण को, प्रवाही, प्रगतिशील, द्रवणशील, वेगवान् को, प्रवाहमान को (द्रु - पिघलना, बहना, चलना, जाना, जानना, पाना, अनुसरण करना)। **ददे =** दिया, दान किया (दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)। **सर्वान् =** सभी को (सर्वनाम)। **दुरस्यतो हन्मि, सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **मे =** मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **आकूतिः ऋध्यताम्॥ 4॥**

873. ये देवाः तेन हासन्ते,
सूर्येण मिमते जवम्।
नदीषु पर्वतेषु,
ये सम् तैः पशुभिः विदे॥ 5॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **ये =** जो (सर्वनाम)। **देवाः =** विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **तेन =** उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **हासन्ते, सूर्येण =** सूर्य के साथ, सूर्य द्वारा (सुर - ऐश्वर्य होना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना, सू - उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, ऐश्वर्य होना)। **मिमते =** गति, शब्द, मान, रक्षा करता है (मि - प्रक्षेपण करना, स्थापन करना, रक्षा करना, मीम - जाना, शब्द करना, मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना)। **जवम् =** वेगवान् को (जु - जाना, वेग से जाना, दौड़ना, जल्दी जाना, भागना)। **नदीषु =** नदियों में (नद् - शब्द करना, झंकार करना, चमकना)। **पर्वतेषु =** पर्वतों में (पर्व् - पूर्ण करना, पूरा करना, भरना, विभाग करना)। **ये =** जो (सर्वनाम)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **तैः पशुभिः =** पशुओं द्वारा, बन्धन द्वारा, दृष्टा द्वारा (पश्-दृश् = देखना, पश - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना)। **विदे =** जानता है, विद्वान् में (विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना) **॥ 5॥**

874. तपनो अस्मि पिशाचानाम्,
व्याघ्रो गोमताम्-इव।
श्वानः सिंहम्-इव दृष्ट्वा,
ते न विन्दन्ते नि-अञ्चनम्॥ 6॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **तपनो अस्मि =** हूँ (सर्वनाम)। **पिशाचानाम्, व्याघ्रो =** पापी, अपराधी (वि - विशेष, घ्रा-जिघ्र = सूंघना, चूमना। अघ् = पाप, अपराध करना)। **गोमताम्-इव =** समान, की भाँति, के समान (अव्यय)। **श्वानः सिंहम् =** सिंह को (सिंह् = हिंसा करना, गति करना)।-**इव =** समान, की भाँति, के समान (अव्यय)। **दृष्ट्वा, ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **न =** नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **विन्दन्ते नि-अञ्चनम्॥ 6॥**

875. न पिशाचैः सम् शक्नोमि,
न स्तेनैः न वनर्गुभिः।
पिशाचाः तस्मात् नश्यन्ति,
यम् अहम् ग्रामम् आविशे॥ 7॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **न =** नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **पिशाचैः सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **शक्नोमि, न =** नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **स्तेनैः न =** नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **वनर्गुभिः। पिशाचाः =** प्रकाशगामी, विखण्डन करने वाला, टुकड़े करने वाला (पिश् - जाना, प्रकाश होना, चीरना, टुकड़े करना)। **तस्मात् =** उससे (सर्वनाम)। **नश्यन्ति, यम् =** जिसे, जिसको, जहाँ (सर्वनाम)। **अहम् =** मैं (सर्वनाम)। **ग्रामम् आविशे॥ 7॥**

876. यम् ग्रामम् आविशते,
इदम् उग्रम् सहो मम।
पिशाचाः तस्मात् नश्यन्ति,

न पापम् उप जानते॥ 8॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **यम्** = जिसे, जिसको, जहाँ (सर्वनाम)। **ग्रामम् आविशते** = प्रवेश करो, फैल जाओ (आ- समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, वि - विशेष, विश् = प्रवेश करना, फैलना)। **इदम्** = यह, इसको (सर्वनाम)। **उग्रम्** = उग्र को (उच्-वद् - कहना, समझना, उच् - एकत्र होना, सम्बन्ध होना, उग् - उग्र - उग्र होना, तेज होना)। **सहो** = सहनशीलता, सहनशक्ति (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना)। **मम** = मेरा (सर्वनाम)। **पिशाचाः** = प्रकाशगामी, विखण्डन करने वाला, टुकड़े करने वाला (पिश् - जाना, प्रकाश होना, चीरना, टुकड़े करना)। **तस्मात्** = उससे (सर्वनाम)। **नश्यन्ति, न** = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **पापम्** = पाप को (पाप् - पाप करना, अपराध करना, दुष्ट आचरण करना)। **उप** = समीप (उपसर्ग)। **जानते॥ 8॥**

877. ये मा क्रोधयन्ति लपिताः,
हस्तिनम् मशकाः-इव।
तान् अहम् मन्ये दुःहितान्,
जने अल्पशयून् इव॥ 9॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **ये** = जो (सर्वनाम)। **मा** = नहीं, मत (अव्यय)। **क्रोधयन्ति लपिताः, हस्तिनम् मशकाः-इव** = समान, की भाँति, के समान (अव्यय)। **तान्** = उनको (सर्वनाम)। **अहम्** = मैं (सर्वनाम)। **मन्ये** = मानता हूँ (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **दुःहितान्, जने** = जन में, लोग में (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **अल्पशयून् इव** = समान, की भाँति, के समान (अव्यय)॥ 9॥

878. अभि तम् निर्-ऋतिः धत्ताम्,
अश्वम्-इव अश्व-अभिधान्या।
मल्वो यो मह्यम् क्रुध्यति,
सः उ पाशात् न मुच्यते॥ 10॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **निर्-ऋतिः**= ऋति (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)। **धत्ताम्, अश्वम्** = अश्व, तीव्र गति युक्त, व्यापक को (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)।-**इव** = समान, की भाँति, के समान (अव्यय)। **अश्व** = अश्व, तीव्र गति युक्त, व्यापक (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)।-**अभिधान्या। मल्वो यो** = जो (सर्वनाम)। **मह्यम्** = मेरे लिए (सर्वनाम)। **क्रुध्यति, सः** = वह, उसने (सर्वनाम)। **उ** = निश्चय ही, भी (निपात, अव्यय)। **पाशात् न मुच्यते॥ 10॥**

139. कृमिनाशन सूक्त - 37

879. त्वया पूर्वम् अथर्वाणो,
जघ्नू रक्षांसि ओषधे।
त्वया जघान कश्यपः,
त्वया कण्वो अगस्त्यः॥ 1॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **त्वया =** तुम्हारे द्वारा, तुमसे (सर्वनाम)। **पूर्वम् =** पूर्व को (पूर्व = पूर्व, पहले, सर्वनाम, पूर्व - पूर्ण करना, भरना, निवास करना, आश्चर्य करना, आमन्त्रण करना)। **अथर्वाणो, जघ्नू रक्षांसि =** रक्षक (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना)। **ओषधे =** हे ओषधि (उषध्-ओषध् - चिकित्सा करना, रोगमुक्त करना)। **त्वया =** तुम्हारे द्वारा, तुमसे (सर्वनाम)। **जघान =** हिंसा की, मार दिया, हनन किया (हन्-घ्न - हिंसा करना)। **कश्यपः =** कश्य का पालन-रक्षण करने वाले, प्रकाशनीय, शासनीय का पालन-रक्षण करने वाले (कश् = शासन करना, दण्ड देना, प्रकाश करना, गति करना, चलना, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **त्वया =** तुम्हारे द्वारा, तुमसे (सर्वनाम)। **कण्वो अगस्त्यः ॥ 1 ॥**

880. त्वया वयम् अप्सरसो,
गन्धर्वान् चातयामहे।
अजशृङ्ग्ि अज रक्षः,
सर्वान् गन्धेन नाशय ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **त्वया वयम् =** हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **अप्सरसो, गन्धर्वान् चातयामहे। अजशृङ्ग्ि अज =** अज, अजन्मा, प्रगतिशील (अ - नहीं, जन् = उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, अज - जाना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना)। **रक्षः =** रक्षक, रक्षा करो (रक्ष - रक्षण करना, बचाना)। **सर्वान् =** सभी को (सर्वनाम)। **गन्धेन नाशय ॥ 2 ॥**

881. नदीम् यन्तु अप्सरसो,
अपाम् तारम् अव-श्वसम्।
गुल्गुलूः पीला नलदी,
औक्षगन्धि प्रमन्दनी।
तत् परा इत अप्सरसः,
प्रतिबुद्धाः अभूतन ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **नदीम् यन्तु =** नियमन-नियन्त्रण, पोषण करो, उद्धार करो, प्राप्त करो (यम् = रोकना, स्वाधीन रखना, आवरण करना, पोषण करना, नियमन करना, यन - उद्धार करना, या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, जानना)। **अप्सरसो, अपाम् =** अपा को, पालकों का (अप = रक्षा करना, पालन करना, जाना, जानना, पाना)। **तारम् अव =** नीचे, दूर, प्राप्त (अव्यय)।-**श्वसम्। गुल्गुलूः पीला नलदी, औक्षगन्धि प्रमन्दनी। तत् =** वह, उस को (सर्वनाम)। **परा =** परम्, परे, पीछे, विपरीत (अव्यय)। **इत =** ही (अव्यय)। **अप्सरसः =** अप्स का रस, पालन करने वालों का रस (अप = जाना, जानना, पाना, पालन करना, रस् - स्वाद लेना, शब्द करना, प्रीति करना)। **प्रतिबुद्धाः अभूतन ॥ 3 ॥**

882. यत्र अश्वत्थाः न्यग्रोधा,
महावृक्षाः शिखण्डिनः।
तत् परा इत अप्सरसः,
प्रतिबुद्धाः अभूतन ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **यत्र =** जहाँ (सर्वनाम)। **अश्वत्थाः न्यग्रोधा, महावृक्षाः शिखण्डिनः। तत् =** वह, उस को (सर्वनाम)। **परा =** परम्, परे, पीछे, विपरीत (अव्यय)। **इत =** ही (अव्यय)। **अप्सरसः =** अप्स का रस, पालन करने वालों का रस (अप = जाना, जानना, पाना, पालन करना, रस् - स्वाद लेना, शब्द करना, प्रीति करना)। **प्रतिबुद्धाः अभूतन ॥ 4 ॥**

883. यत्र वः प्र-ईङ्खा हरिताः अर्जुनाः,
उत यत्र आघाटाः कर्कर्यः सम्-वदन्ति।
तत् परा इत अप्सरसः,
प्रतिबुद्धाः अभूतन॥ 5॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **यत्र** = जहाँ (सर्वनाम)। **वः** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)।-**ईङ्खा हरिताः अर्जुनाः, उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **यत्र** = जहाँ (सर्वनाम)। **आघाटाः कर्कर्यः सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)।-**वदन्ति** = बोलते हैं (वद - कहना, स्पष्ट कहना, बोलना, समझाना)। **तत्** = वह, उस को (सर्वनाम)। **परा** = परम्, परे, पीछे, विपरीत (अव्यय)। **इत** = ही (अव्यय)। **अप्सरसः** = अप्स का रस, पालन करने वालों का रस (अप = जाना, जानना, पाना, पालन करना, रस् - स्वाद लेना, शब्द करना, प्रीति करना)। **प्रतिबुद्धाः अभूतन॥ 5॥**

884. आ इयम् अगन् ओषधीनाम्,
वीरुधाम् वीर्यावती।
अजशृङ्गी अराटकी,
तीक्ष्णशृङ्गी वि ऋषतु॥ 6॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **इयम्** = यह, इसको (सर्वनाम)। **अगन्** = गये, गतिमान (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, गम् - जाना, अग् = जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, गति करना, घूमना, कुटिल गति करना, टेढ़ा जाना, लेना, ग्रहण करना)। **ओषधीनाम्** = ओषधियों का (उषध्-ओषध् = चिकित्सा करना, रोग मुक्त करना)। **वीरुधाम् वार्यावती। अजशृङ्गी अराटकी, तीक्ष्णशृङ्गी वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **ऋषतु॥ 6॥**

885. आनृत्यतः शिखण्डिनो,
गन्धर्वस्य अप्सरापतेः।
भिनद्मि मुष्कौ,
अपि यामि शेपः॥ 7॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **आनृत्यतः शिखण्डिनो, गन्धर्वस्य अप्सरापतेः। भिनद्मि मुष्कौ** = मुष्क (मुष्क् - जाना, घर्षण करना, मुष् - चुराना)। **अपि** = भी, निकट (अव्यय)। **यामि** = जाता हूँ (या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)। **शेपः॥ 7॥**

886. भीमाः इन्द्रस्य हेतयः,
शतम् ऋष्टीः अयस्मयीः।
ताभिः हविः-अदान् गन्धर्वान्,
अवका-अदान् वि ऋषतु॥ 8॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **भीमाः इन्द्रस्य =** इन्द्र का, परम ऐश्वर्यशाली का (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **हेतयः =** हेतियाँ, गतियाँ, ज्ञान, वृद्धियाँ, प्राप्तियाँ, प्रेरणाएँ (हि - गति, वृद्धि, प्रेरणा करना)। **शतम् =** सौ (संख्या, सर्वनाम)। **ऋष्टीः अयस्मयीः । ताभिः =** उनके द्वारा (सर्वनाम)। **हविः-अदान् गन्धर्वान्, अवका-अदान् वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **ऋषतु ॥ 8 ॥**

887. भीमाः इन्द्रस्य हेतयः,
शतम् ऋष्टीः हिरण्ययीः ।
ताभिः हविः-अदान् गन्धर्वान्,
अवका-अदान् वि ऋषतु ॥ 9 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **भीमाः इन्द्रस्य =** इन्द्र का, परम ऐश्वर्यशाली का (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **हेतयः =** हेतियाँ, गतियाँ, ज्ञान, वृद्धियाँ, प्राप्तियाँ, प्रेरणाएँ (हि - गति, वृद्धि, प्रेरणा करना)। **शतम् =** सौ (संख्या, सर्वनाम)। **ऋष्टीः हिरण्ययीः =** प्रकाशमान, शब्दमय (हिरण - प्रकाश होना, दीप्त होना, शब्द करना, ध्वनि होना)। **ताभिः =** उनके द्वारा (सर्वनाम)। **हविः- =** हवि, दान करने योग्य, लेने योग्य, तृप्त करने योग्य (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **अदान् गन्धर्वान्, अवका-अदान् वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **ऋषतु ॥ 9 ॥**

888. अवका-अदान् अभिशोचान्,
अप्सु ज्योतय मामकान् ।
पिशाचान् सर्वान् ओषधे,
प्र मृणीहि सहस्व च ॥ 10 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **अवका-अदान् अभिशोचान्, अप्सु ज्योतय =** प्रकाश करो (ज्युत - कान्तिमान् होना, चमकना, प्रकाशित होना)। **मामकान् । पिशाचान् सर्वान् =** सभी को (सर्वनाम)। **ओषधे =** हे ओषधि (उषध्-ओषध् - चिकित्सा करना, रोगमुक्त करना)। **प्र =** प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **मृणीहि =** मार दो (मृड - सुखी होना, सुख देना, मृण् - हिंसा करना, मारना, छिद्र करना)। **सहस्व =** सहनशील, समर्थ बनो (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)। **च =** और (अव्यय) **॥ 10 ॥**

889. श्वा-इव एकः कपिः-इव,
एकः कुमारः सर्वकेशकः ।
प्रियो दृशे-इव भूत्वा,
गन्धर्वः सचते स्त्रियः,
तम् इतो नाशयामसि,
ब्रह्मणा वीर्यावता ॥ 11 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **श्वा =** प्रगतिशील (शव-श्वा - जाना, भागना, दौड़ना, श्वित - श्वेत होना, शुभ्र होना)।-**इव =** समान, की भाँति, के समान (अव्यय)। **एकः =** एक (संख्या)। **कपिः-इव =** समान, की भाँति, के समान (अव्यय)। **एकः =** एक (संख्या)। **कुमारः सर्वकेशकः । प्रियो दृशे =** देखने के लिए, देखता है (दृश्-पश्य -देखना)।-**इव =** समान, की भाँति, के समान (अव्यय)। **भूत्वा, गन्धर्वः =** गतिशीलता, विद्वता को धारण करने वाला (गम् + धृ, गम् = जाना, जानना, पाना, धृ = धारण करना, गन्ध् = गन्ध होना, शोभित होना, मांगना, जाना)। **सचते =** अभिसिञ्चन करता है (सच् = सिञ्चन करना, सेवा करना, सन्तुष्ट करना, जानना, पूर्णतया समझना, सम्बन्धी होना)। **स्त्रियः, तम् =** उसको, उसे (सर्वनाम)। **इतो =**

पाये, गति, ज्ञान, प्रकाश प्राप्त किया (इ - जाना, जानना, पाना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)। **नाशयामसि, ब्रह्मणा** = ब्रह्म द्वारा (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **वीर्यावता ॥ 11 ॥**

890. जायाः इत् वो अप्सरसो,
गन्धर्वाः पतयो यूयम्।
अप धावत अमर्त्या,
मर्त्यान् मा सचध्वम् ॥ 12 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **जायाः इत्** = ही (अव्यय)। **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **अप्सरसो, गन्धर्वाः** = गतिशीलता, विद्वता को धारण करने वाले (गम् + धृ, गम् = जाना, जानना, पाना, धृ = धारण करना)। **पतयो** = ऐश्वर्यवान् स्वामी (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **यूयम्** = तुम दोनों (सर्वनाम)। **अप** = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। **धावत** = दौड़ते हुए (धाव - जाना, भागना, स्वच्छ करना, निर्मल करना, धोना, स्वच्छ होना)। **अमर्त्या** = अमर्त्य, अमर, मरणहीन (अ = नहीं, मृ = मरना, देहत्याग करना)। **मर्त्यान्** = मर्त्यों को, मरणशीलों को (मृ = मरना, देहत्याग करना)। **मा** = नहीं, मत (अव्यय)। **सचध्वम् ॥ 12 ॥**

140. वाजिनीवान् ऋषभ यूक्त - 38

891. उत्-भिन्दतीम् सम्-जयन्तीम्,
अप्सराम् साधुदेविनीम्।
ग्लहे कृतानि कृण्वानाम्,
अप्सराम् ताम् इह हुवे ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **उत्** = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)।-**भिन्दतीम् सम्**= सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)।-**जयन्तीम्, अप्सराम् साधुदेविनीम्। ग्लहे कृतानि कृण्वानाम्, अप्सराम् ताम्** = उसको (सर्वनाम)। **इह** = इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **हुवे** = आह्वान करते हैं, दान करते हैं, आदान-प्रदान करते हैं, तृप्ति करते हैं (हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना) ॥ 1 ॥

892. विचिन्वतीम् आकिरन्तीम्,
अप्सराम् साधुदेविनीम्।
ग्लहे कृतानि गृह्णानाम्,
अप्सराम् ताम् इह हुवे ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **विचिन्वतीम् आकिरन्तीम्, अप्सराम् साधुदेविनीम्। ग्लहे कृतानि गृह्णानाम्, अप्सराम् ताम्** = उसको (सर्वनाम)। = इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **इह** = इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **हुवे** = आह्वान करते हैं, दान करते हैं, आदान-प्रदान करते हैं, तृप्ति करते हैं (हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना) ॥ 2 ॥

893. या अयैः परिनृत्यति,
आददाना कृतम् ग्लहात्।

सा नः कृतानि सीषती,
प्रहाम् आप्नोतु मायया।
सा नः पयस्वती आ एतु,
मा नो जैषुः इदम् धनम्॥ 3॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **या =** जो (सर्वनाम)। **अयैः परिनृत्यति, आददाना कृतम् =** कृतित्व, किया हुआ (कृ = करना)। **ग्लहात्। सा =** वह (सर्वनाम)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **कृतानि सीषती, प्रहाम् आप्नोतु मायया =** माया द्वारा (मय् - जाना, क्लिष्ट कार्य करना, मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना)। **सा =** वह (सर्वनाम)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **पयस्वती =** विस्तृत, विस्तारयुक्त, गतिशील, प्रवाहमान (पय् = जाना, जानना, पाना, बहना, पयस् = विस्तार करना, फैलाना)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **एतु =** प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना, इच्छा करना, प्रेरणा करना, ए - जाना, फैलना, व्यापना, गर्भवती होना, इच्छा करना, चाहना, खाना, उड़ाना, फेंकना, भेजना, प्रेरणा करना)। **मा =** नहीं, मत (अव्यय)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा, हम दो (सर्वनाम)। **जैषुः इदम् =** यह, इसको (सर्वनाम)। **धनम् =** धन को (धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)॥ **3॥**

894. याः अक्षेषु प्रमोदन्ते,
शुचम् क्रोधम् च बिभ्रती।
आनन्दिनीम् प्रमोदिनीम्,
अप्सराम् ताम् इह हुवे॥ 4॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **याः =** जो (सर्वनाम)। **अक्षेषु प्रमोदन्ते, शुचम् क्रोधम् च =** और (अव्यय)। **बिभ्रती =** भरण, धारण करती हुई (भृ- भरना, भरण करना, धारण करना)। **आनन्दिनीम् प्रमोदिनीम्, अप्सराम् ताम् =** उसको (सर्वनाम)। **इह =** इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **हुवे =** आह्वान करते हैं, दान करते हैं, आदान-प्रदान करते हैं, तृप्ति करते हैं (हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)॥ **4॥**

895. सूर्यस्य रश्मीन् अनु याः सम्-चरन्ति,
मरीचीः याः अनुसम्-चरन्ति।
यासाम् ऋषभो दूरतो वाजिनीवान्,
सद्यः सर्वान् लोकान् परि-एति रक्षन्।
स नः आ एतु होमम् इमम् जुषाणो,
अन्तरिक्षेण सह वाजिनीवान्॥ 5॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **सूर्यस्य =** सूर्य का, उत्पन्नकर्ता, ऐश्वर्यवान् का (सुर - ऐश्वर्य होना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना, सू - उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, ऐश्वर्य होना)। **रश्मीन् =** रश्मियों को (रश् - विकिरण होना, किरण निकलना)। **अनु =** पश्चात्, पीछे, अनुकूल (उपसर्ग)। **याः =** जो (सर्वनाम)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)।- **चरन्ति =** विचरण करते हैं, चलते हैं (चर - जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास

करना)। **मरीचीः** = मरीची, मरणशील (मृ = मरना, देहत्याग करना)। **वा** = अथवा (अव्यय)। **अनुसम्-चरन्ति** = विचरण करते हैं, चलते हैं (चर - जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)। **यासाम् ऋषभो दूरतो वाजिनीवान्, सद्यः** = शीघ्र, तत्काल, तत्क्षण, अभी का, गम्य (सद्यो = शीघ्र, तत्काल, तत्क्षण, अभी का (सर्वनाम), सद् - जाना, चलना, शक्तिहीन होना, म्लान होना, सूखना, मुर्झाना, भग्न करना, नष्ट करना)। **सर्वान् लोकान्** = लोकों को (लोक् = देखना, प्रकाशित होना, बोलना)। **परि** = सभी तरफ (उपसर्ग)। **-एति** = जाता है, प्राप्त होता है, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करता है (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना, इच्छा करना, प्रेरणा करना)। **रक्षन्। स** = वह, उसने (सर्वनाम)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **एतु** = प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना, इच्छा करना, प्रेरणा करना, ए - जाना, फैलना, व्यापना, गर्भवती होना, इच्छा करना, चाहना, खाना, उड़ाना, फेंकना, भेजना, प्रेरणा करना)। **होमम् इमम्** = इसको (सर्वनाम)। **जुषाणो** = विचारशील, सेवाभावी (जुष् = विचार करना, सेवा करना, सेवन करना, विवेक होना, विवेचना करना, प्रीति करना, चाहना, दुलारना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना)। **अन्तरिक्षेण** = अन्तरिक्ष द्वारा (अन्तः - बीच में, इक्ष् - स्वाद लेना, ईक्ष् -देखना)। **सह** = साथ, सहित (सर्वनाम)। **सह** = साथ, सहित (सर्वनाम)। **वाजिनीवान्॥ 5॥**

896. अन्तरिक्षेण सह वाजिनीवन्,
कर्कीम् वत्साम् इह रक्ष वाजिन्।
इमे ते स्तोका बहुलाः आ इहि अर्वाङ् इयम्,
ते कर्की इह ते मनो अस्तु॥ 6॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **अन्तरिक्षेण** = अन्तरिक्ष द्वारा (अन्तः - बीच में, इक्ष् - स्वाद लेना, ईक्ष् -देखना)। **सह** = साथ, सहित (सर्वनाम)। **वाजिनीवन्, कर्कीम् वत्साम् इह** = इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **रक्ष** = रक्षा करो, बचाओ (रक्ष = रक्षा करना, बचाना)। **वाजिन्** = वाजयुक्त, विद्यायुक्त, गतियुक्त (वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना, वा - गति करना, बहना)। **इमे** = यह, इस, ये (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **स्तोका बहुलाः आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **इहि** = आओ, जानों (इ = जाना, जानना, पाना)। **अर्वाङ्** = अभिमुख, गतिशील, शब्दकर्ता (ऋ - जाना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना, पहुँचाना, अर्-ऋ - गति करना, जाना, जानना, पाना, शब्द करना, व्याप्त होना, मिलाना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, अर्व - गति करना, जाना, चलना, जानना, पाना, पहुँचना, हिंसा करना)। **इयम्** = यह, इसको (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **कर्की इह** = इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **मनो** = मन (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **अस्तु** = हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना) **॥ 6॥**

897. अन्तरिक्षेण सह वाजिनीवन्,
कर्कीम् वत्साम् इह रक्ष वाजिन्।
अयम् घासो अयम् व्रजः,
इह वत्साम् नि बध्नीमः।
यथानाम वः ईश्महे स्वाहा॥ 7॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **अन्तरिक्षेण** = अन्तरिक्ष द्वारा (अन्तः - बीच में, इक्ष् - स्वाद लेना, ईक्ष् -देखना)। **सह** = साथ, सहित (सर्वनाम)। **वाजिनीवन्, कर्कीम् वत्साम् इह** = इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **रक्ष** = रक्षा करो, बचाओ (रक्ष = रक्षा करना,

बचाना)। **वाजिन् =** वाजयुक्त, विद्यायुक्त, गतियुक्त (वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना, वा - गति करना, बहना)। **अयम् =** यह (सर्वनाम)। **घासो अयम् =** यह (सर्वनाम)। **व्रजः =** वज्र, गतिमान (वज् - गति करना, जाना, हस्त - देना, लेना, ग्रहण करना)। **इह =** इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **वत्साम् नि =** निश्चित, निरन्तर (अव्यय)। **बध्नीमः। यथानाम वः =** तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **ईश्महे स्वाहा =** अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार (सु = उत्तम, अच्छा, स्व - अपना, अह् = व्याप्त होना, फैलना, विस्तृत होना) **॥ 7 ॥**

141. सन्नति सूक्त - 39

898. पृथिव्याम् अग्नये,
सम् अनमन् स आर्ध्नोत्।
यथा पृथिव्याम् अग्नये सम्-अनमन्,
एवा म ह्यम् सम्-नमः सम् नमन्तु ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - पृथिव्याम् = पृथ्वी पर (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)। **अग्नये =** अग्नि के लिए, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् के लिए (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **अनमन् स =** वह, उसने (सर्वनाम)। **आर्ध्नोत्। यथा =** जिससे, जैसे, जिस प्रकार (अव्यय)। **पृथिव्याम् =** पृथ्वी पर (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)। **अग्नये =** अग्नि के लिए, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् के लिए (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **अनमन्, एवा =** ही (अव्यय)। **मह्यम् =** मेरे लिए (सर्वनाम)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **नमः =** नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **नमन्तु ॥ 1 ॥**

899. पृथिवी धेनुः तस्याः अग्निः वत्सः।
सा मे अग्निना वत्सेन,
इषम् ऊर्जम् कामम् दुहाम्।
आयुः प्रथमम् प्रजाम्,
पोषम् रयिम् स्वाहा ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - पृथिवी = पृथ्वी, विस्तृत भूमि, विस्तार (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)। **धेनुः =** धेनु, प्रिय, पालन करने वाले (धिन - प्रेम करना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना, धी - बुद्धि होना, धे - पालना, पीना)। **तस्याः =** उसका (सर्वनाम)। **अग्निः =** अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **वत्सः =** बोलने वाले (वद् - वच्- बोलना)। **सा =** वह (सर्वनाम)। **मे =** मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **अग्निना वत्सेन =** वत्स, वाणी से चलने वाले (वद् = कहना, बोलना)। **इषम् =** इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि, निरन्तर कर्मशील को (इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना)। **ऊर्जम् =** ऊर्जा को (ऊर्ज् = प्राण होना, चेतन होना, बल होना, ऊर्जा होना, शक्तिमान होना, पराक्रमी होना, चलना, जाना)। **कामम् =** कामना, स्वेच्छा अनुसार, माना कि (अव्यय)। **दुहाम्। आयुः =** आयु (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अय = जाना, जानना, पाना, ग़ति करना, आय - शब्द करना, शासन करना, यु = मिलना, अलग करना)। **प्रथमम् =** प्रथम को (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)। **प्रजाम्**

= प्रजा को (प्र - बहुत, प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **पोषम् =** पोषण करने वाले (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, पूष - बढ़ना, अधिक होना, पोषण करना)। **रयिम् =** विद्या, ज्ञान को (रय्-रि, री - चलना, जाना, जानना, पाना, री-रै - शब्द करना)। **स्वाहा =** अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार (सु = उत्तम, अच्छा, स्व - अपना, अह् = व्याप्त होना, फैलना, विस्तृत होना) **॥ 2 ॥**

900. अन्तरिक्षे वायवे,
सम् अनमन् सः आर्ध्नोत्।
यथा अन्तरिक्षे वायवे सम्-अनमन्,
एवा मह्यम् सम्-नमः सम् नमन्तु ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - अन्तरिक्षे = अन्तरिक्ष में (अन्तः - बीच में, इक्ष् - स्वाद लेना, ईक्ष् -देखना)। **वायवे =** वायु के लिए (वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वा = गति करना, पवन की भाँति बहना, जाना, जानना, पाना, गन्ध होना, प्रवाहित होना, प्रवाहित करना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण करना, घेरना, भेजना, खाना, वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **अनमन् सः =** वह, उसने (सर्वनाम)। **आर्ध्नोत्। यथा =** जिससे, जैसे, जिस प्रकार (अव्यय)। **अन्तरिक्षे =** अन्तरिक्ष में (अन्तः - बीच में, इक्ष् - स्वाद लेना, ईक्ष् -देखना)। **वायवे =** वायु के लिए (वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वा = गति करना, पवन की भाँति बहना, जाना, जानना, पाना, गन्ध होना, प्रवाहित होना, प्रवाहित करना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण करना, घेरना, भेजना, खाना, वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)।-**अनमन्, एवा =** ही (अव्यय)। **मह्यम् =** मेरे लिए (सर्वनाम)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)।-**नमः =** नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **नमन्तु ॥ 3 ॥**

901. अन्तरिक्षम् धेनुः,
तस्या वायुः वत्सः।
सा मे वायुना वत्सेन,
इषम् ऊर्जम् कामम् दुहाम्।
आयुः प्रथमम् प्रजाम्,
पोषम् रयिम् स्वाहा ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - अन्तरिक्षम् = अन्तरिक्ष, आकाश, अन्तर्दर्शी (अन्तः - बीच में, इक्ष् - स्वाद लेना, ईक्ष् -देखना)। **धेनुः =** धेनु, प्रिय, पालन करने वाले (धिन - प्रेम करना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना, धी - बुद्धि होना, धे - पालना, पीना)। **तस्या =** उसका (सर्वनाम)। **वायुः =** गतिशील, रचनात्मक शक्ति, वायु (वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वा = गति करना, पवन की भाँति बहना, जाना, जानना, पाना, गन्ध होना, प्रवाहित होना, प्रवाहित करना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण करना, घेरना, भेजना, खाना, वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना)। **वत्सः =** बोलने वाले (वद् - वच्- बोलना)। **सा =** वह (सर्वनाम)। **मे =** मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **वायुना =** वायु द्वारा (वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, व्वा = गति करना, पवन की भाँति बहना, जाना, जानना, पाना, गन्ध होना, प्रवाहित होना, प्रवाहित करना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण करना, घेरना, भेजना, खाना, वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना)। **वत्सेन =** वत्स, वाणी से चलने वाले (वद् = कहना, बोलना)। **इषम् =** इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि, निरन्तर कर्मशील को (इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना)। **ऊर्जम् =** ऊर्जा को (ऊर्ज् = प्राण होना, चेतन होना, बल होना, ऊर्जा होना, शक्तिमान होना, पराक्रमी

होना, चलना, जाना)। **कामम् =** कामना, स्वेच्छा अनुसार, माना कि (अव्यय)। **दुहाम्। आयुः =** आयु (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अय = जाना, जानना, पाना, ग़ति करना, आय - शब्द करना, शासन करना, यु = मिलना, अलग करना)। **प्रथमम् =** प्रथम को (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)। **प्रजाम् =** प्रजा को (प्र - बहुत, प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **पोषम् =** पोषण करने वाले (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, पूष - बढ़ना, अधिक होना, पोषण करना)। **रयिम् =** विद्या, ज्ञान को (रय्-रि, री - चलना, जाना, जानना, पाना, री-रै - शब्द करना)। **स्वाहा =** अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार (सु = उत्तम, अच्छा, स्व - अपना, अह् = व्याप्त होना, फैलना, विस्तृत होना) **॥ 4 ॥**

902. दिवि आदित्याय,
सम् अनमन् सः आर्ध्नोत्।
यथा दिवि आदित्याय सम्-अनमन्,
एवा मह्यम् सम्-नमः सम् नमन्तु ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - दिवि = दिव्यता में, दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय में (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)। **आदित्याय, सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **अनमन् सः =** वह, उसने (सर्वनाम)। **आर्ध्नोत्। यथा =** जिससे, जैसे, जिस प्रकार (अव्यय)। **दिवि =** दिव्यता में, दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय में (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)। **आदित्याय सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)।-**अनमन्, एवा =** ही (अव्यय)। **मह्यम् =** मेरे लिए (सर्वनाम)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)।-**नमः =** नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **नमन्तु ॥ 5 ॥**

903. द्यौः धेनुः तस्याः आदित्यो वत्सः।
सा मे आदित्येन वत्सेन,
इषम् ऊर्जम् कामम् दुहाम्।
आयुः प्रथमम् प्रजाम्,
पोषम् रयिम् स्वाहा ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - द्यौः = अग्रगामी, प्रकाशवान्, विद्वान्, द्यौ, प्रकाशयुक्त, अग्रगामी (द्युत् = प्रकाशित होना, द्यु = अभिगमन करना, आक्रमण करना, आगे जाना, समीप जाना, प्रकाश होना, जानना)। **धेनुः =** धेनु, प्रिय, पालन करने वाले (धिन - प्रेम करना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना, धी - बुद्धि होना, धे - पालना, पीना)। **तस्याः =** उसका (सर्वनाम)। **आदित्यो वत्सः =** बोलने वाले (वद् - वच्- बोलना)। **सा =** वह (सर्वनाम)। **मे =** मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **आदित्येन वत्सेन =** वत्स, वाणी से चलने वाले (वद् = कहना, बोलना)। **इषम् =** इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि, निरन्तर कर्मशील को (इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना)। **ऊर्जम् =** ऊर्जा को (ऊर्ज् = प्राण होना, चेतन होना, बल होना, ऊर्जा होना, शक्तिमान होना, पराक्रमी होना, चलना, जाना)। **कामम् =** कामना, स्वेच्छा अनुसार, माना कि (अव्यय)। **दुहाम्। आयुः =** आयु (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अय = जाना, जानना, पाना, ग़ति करना, आय - शब्द करना, शासन करना, यु = मिलना, अलग करना)। **प्रथमम् =** प्रथम को (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)। **प्रजाम् =** प्रजा को (प्र - बहुत, प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **पोषम् =** पोषण करने वाले (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, पूष - बढ़ना, अधिक होना, पोषण करना)। **रयिम् =** विद्या, ज्ञान को (रय्-रि, री - चलना, जाना, जानना, पाना, री-रै - शब्द करना)। **स्वाहा =** अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार

(सु = उत्तम, अच्छा, स्व - अपना, अह् = व्याप्त होना, फैलना, विस्तृत होना) ॥ 6 ॥

904. दिक्षु चन्द्राय, सम् अनमन् सः आर्ध्नोत्।
यथा दिक्षु चन्द्राय सम्-अनमन्,
एवा मह्यम् सम्-नमः सम् नमन्तु ॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - दिक्षु = दिशाओं में (दिश् - दिखाना, समझाना, आज्ञा करना, कहना, बोलना, देना, पारितोषिक देना, अतिरचना करना)। **चन्द्राय =** चन्द्र के लिए, आनन्द, प्रकाश के लिए (चन्द् = चमकना, आनन्द होना)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **अनमन् सः =** वह, उसने (सर्वनाम)। **आर्ध्नोत्। यथा =** जिससे, जैसे, जिस प्रकार (अव्यय)। **दिक्षु =** दिशाओं में (दिश् - दिखाना, समझाना, आज्ञा करना, कहना, बोलना, देना, पारितोषिक देना, अतिरचना करना)। **चन्द्राय =** चन्द्र के लिए, आनन्द, प्रकाश के लिए (चन्द् = चमकना, आनन्द होना)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)।-**अनमन्, एवा =** ही (अव्यय)। **मह्यम् =** मेरे लिए (सर्वनाम)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)।-**नमः =** नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **नमन्तु ॥ 7 ॥**

905. दिशो धेनवः, तासाम् चन्द्रो वत्सः।
ता मे चन्द्रेण वत्सेन,
इषम् ऊर्जम् कामम् दुहाम्।
आयुः प्रथमम् प्रजाम्,
पोषम् रयिम् स्वाहा ॥ 8 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - दिशो = दिशायें, दिशाओं को (दिश - दिखाना, समझाना, आज्ञा करना, कहना, बोलना, देना, पारितोषिक देना, अतिरचना करना)। **धेनवः =** धेनु, प्रिय, पालन करने वाले (धिन - प्रेम करना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना, धी - बुद्धि होना, धे - पालना, पीना)। **तासाम् =** उनका (सर्वनाम)। **चन्द्रो वत्सः =** बोलने वाले (वद् - वच्- बोलना)। **ता =** वे, वह, वे दोनो (सर्वनाम)। **मे =** मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **चन्द्रेण =** चन्द्र द्वारा, आनन्द, प्रकाश द्वारा (चन्द् - चमकना, आनन्द होना, प्रकाश होना, सन्तोष होना)। **वत्सेन =** वत्स, वाणी से चलने वाले (वद् = कहना, बोलना)। **इषम् =** इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि, निरन्तर कर्मशील को (इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना)। **ऊर्जम् =** ऊर्जा को (ऊर्ज् = प्राण होना, चेतन होना, बल होना, ऊर्जा होना, शक्तिमान होना, पराक्रमी होना, चलना, जाना)। **कामम् =** कामना, स्वेच्छा अनुसार, माना कि (अव्यय)। **दुहाम्। आयुः =** आयु (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अय = जाना, जानना, पाना, ग़ति करना, आय - शब्द करना, शासन करना, यु = मिलना, अलग करना)। **प्रथमम् =** प्रथम को (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)। **प्रजाम् =** प्रजा को (प्र - बहुत, प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **पोषम् =** पोषण करने वाले (पुष् = पालन-पोषण करना, धारण करना, पूष - बढ़ना, अधिक होना, पोषण करना)। **रयिम् =** विद्या, ज्ञान को (रय्-रि, री - चलना, जाना, जानना, पाना, री-रै - शब्द करना)। **स्वाहा =** अच्छी व्यापकता, आत्म विस्तार (सु = उत्तम, अच्छा, स्व - अपना, अह् = व्याप्त होना, फैलना, विस्तृत होना) ॥ 8 ॥

906. अग्नौ अग्निः चरति प्रविष्टः,
ऋषीणाम् पुत्रो अभिशस्तिपाः उ।
नमस्कारेण नमसा ते जुहोमि,
मा देवानाम् मिथुया कर्म भागम् ॥ 9 ॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - **अग्नौ =** अग्नि में (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **अग्निः =** अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **चरति =** विचरण करता है (चर -जाना, खाना, चलना, विचरण करना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना)। **प्रविष्टः =** प्रविष्ट (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, विश = घुसना, भीतर जाना, धंसना, चारो ओर फैलना) **ऋषीणाम् पुत्रो =** पुत्र (पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)। **अभिशस्तिपाः उ =** निश्चय ही, भी (निपात, अव्यय)। **नमस्कारेण नमसा =** नमन द्वारा (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **जुहोमि =** दान करते हैं, आदान-प्रदान करते हैं (हु-जुहु = दान करना, आदान-प्रदान करना, ग्रहण करना, तृप्त करना, जु - जाना, शीघ्र जाना, भागना)। **मा =** मुझे (मा-माम् - सर्वनाम)। **देवानाम् =** देवों का (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **मिथुया कर्म =** कर्म, कार्य (कृ = करना)। **भागम् =** सेवा, दान, भोजन, भाग को (भज् = सेवा करना, दान करना, भोजन पकाना, भज - अंश या भाग होना) **॥ 9 ॥**

907. हृदा पूतम् मनसा जातवेदः, विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
सप्त आस्यानि तव जातवेदः, तेभ्यः जुहोमि स जुषस्व हव्यम् ॥ 10 ॥

मन्त्रार्थ :- **हृदा =** हृदय **पूतम् =** पवित्रता युक्त, रक्षित को **मनसा =** मन से, मन द्वारा **जातवेदः =** विद्वान्, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले **विश्वानि =** सभी **देव =** देव **वयुनानि =** रचनाशील **विद्वान् =** जानने वाला, ज्ञानी **सप्त =** सात **आस्यानि =** आस्य **तव =** तुम्हारा **जातवेदः =** विद्वान्, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले **तेभ्यः =** उनके लिए **जुहोमि =** दान करते हैं, आदान-प्रदान करते हैं **स =** वह, उसने **जुषस्व =** सेवा करो, सन्तुष्ट करो **हव्यम् =** आदान-प्रदान करने योग्य को, हव्य को, देय को **॥ 10 ॥**

भावार्थ :- हमें ऐश्वर्य तथा सफलतायें प्राप्त करनी हैं तो श्रेष्ठमार्ग पर चलना होगा। अच्छे मार्ग पर चलते रहने के लिए दिव्य शक्तियों अर्थात् विशेष क्षमतावान् साधन - सम्पन्न लोगों तथा रचनाशील विद्वानों के सहयोग की आवश्यकता है। वेद से दूर होने पर हम इतने अज्ञानी और स्वार्थी होते हैं कि समाज में आदान- प्रदान करते रहने का सद्गुण सिखाने के लिए रचनाशील विद्वानोंको हमारी दुष्प्रवृत्तियों से युद्ध करने जैसा कठिन प्रयास करना पड़ता है। परमात्मा की कृपा से ऐसे धैर्यशील परोपकारी विद्वानों का सहयोग मिलता है, इसके लिए हम परमात्मा को पुनः पुनः नमन करते हैं **॥ 10 ॥**

पदार्थ :- **हृदा =** हृदय (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, लेना, ग्रहण करना, नष्ट करना)। **पूतम् =** पवित्रता युक्त, रक्षित को (पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)। **मनसा =** मन से, मन द्वारा (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **जातवेदः =** विद्वान्, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले (जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जा-ज्ञा - जानना, विद् - जानना)। **विश्वानि =** सभी। **देव =** देव (दिव्= तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना)। **वयुनानि =** रचनाशील (वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना)। **विद्वान् =** जानने वाला, ज्ञानी (विद् = जानना)। **सप्त =** सात (संख्या)। **आस्यानि =** आस्य (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, आस् - बैठना, उपस्थित होना, विद्यमान होना, जीवित रहना, होना)। **तव =** तुम्हारा (सर्वनाम)। **जातवेदः =** विद्वान्, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले (जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जा-ज्ञा - जानना, विद् - जानना)। **तेभ्यः =** उनके लिए (सर्वनाम)। **जुहोमि =** दान करते हैं, आदान-प्रदान करते हैं (हु-जुहु = दान करना, आदान-प्रदान करना, ग्रहण करना, तृप्त करना, जु - जाना, शीघ्र जाना, भागना)। **स =** वह, उसने (सर्वनाम)। **जुषस्व =** सेवा करो, सन्तुष्ट करो (जुष् = विचार करना, सेवा करना, सेवन करना, विवेक होना, विवेचना करना, प्रीति करना, चाहना, दुलारना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना)। **हव्यम् =** आदान-प्रदान करने योग्य को, हव्य को, देय को (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना) **॥ 10 ॥**

142. शत्रु नाशन सूक्त - 40

908. ये पुरस्तात् जुह्वति जातवेदः,
प्राच्या दिशो अभिदासन्ति अस्मान्।
अग्निम् ऋत्वा ते पराञ्चो व्यथन्ताम्,
प्रत्यक् एनान् प्रतिसरेण हन्मि॥ 1॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - ये = जो (सर्वनाम)। **पुरस्तात् =** पहले (अव्यय)। **जुह्वति जातवेदः =** विद्वान्, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले (जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जा-ज्ञा - जानना, विद् - जानना)। **प्राच्या दिशो =** दिशायें, दिशाओं को (दिश - दिखाना, समझाना, आज्ञा करना, कहना, बोलना, देना, पारितोषिक देना, अतिरचना करना)। **अभिदासन्ति अस्मान् =** हमें, हमको (सर्वनाम)। **अग्निम् =** अग्नि को, ऊर्ध्वगामी, तेजस्वी, विद्वान् को (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **ऋत्वा ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **पराञ्चो व्यथन्ताम्, प्रत्यक् एनान् =** इनको (सर्वनाम)। **प्रतिसरेण हन्मि॥ 1॥**

909. ये दक्षिणतो जुह्वति जातवेदो,
दक्षिणाया दिशो अभिदासन्ति अस्मान्।
यमम् ऋत्वा ते पराञ्चो व्यथन्ताम्,
प्रत्यक् एनान् प्रतिसरेण हन्मि॥ 2॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - ये = जो (सर्वनाम)। **दक्षिणतो =** दक्षिण से (दक्ष् - बढ़ना, समृद्ध होना, शीघ्र कार्य करना, चतुर होना, दक्ष होना, चलना, जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, मार डालना)। **जुह्वति जातवेदो =** विद्वान्, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले (जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जा-ज्ञा - जानना, विद् - जानना)। **दक्षिणाया दिशो =** दिशायें, दिशाओं को (दिश - दिखाना, समझाना, आज्ञा करना, कहना, बोलना, देना, पारितोषिक देना, अतिरचना करना)। **अभिदासन्ति अस्मान् =** हमें, हमको (सर्वनाम)। **यमम् =** यम को (यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)। **ऋत्वा ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **पराञ्चो व्यथन्ताम्, प्रत्यक् एनान् =** इनको (सर्वनाम)। **प्रतिसरेण हन्मि॥ 2॥**

910. ये पश्चात् जुह्वति जातवेदः,
प्रतीच्या दिशो अभिदासन्ति अस्मान्।
वरुणम् ऋत्वा ते पराञ्चो व्यथन्ताम्,
प्रत्यक् एनान् प्रतिसरेण हन्मि॥ 3॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - ये = जो (सर्वनाम)। **पश्चात् =** पीछे या पश्चिम दिशा से। **जुह्वति जातवेदः =** विद्वान्, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले (जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जा-ज्ञा - जानना, विद् - जानना)। **प्रतीच्या दिशो =** दिशायें, दिशाओं को (दिश - दिखाना, समझाना, आज्ञा करना, कहना, बोलना, देना, पारितोषिक देना, अतिरचना करना)। **अभिदासन्ति अस्मान् =** हमें, हमको (सर्वनाम)। **वरुणम् =** वरुण को (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **ऋत्वा ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **पराञ्चो व्यथन्ताम्, प्रत्यक् एनान् =** इनको (सर्वनाम)। **प्रतिसरेण हन्मि॥ 3॥**

911. य उत्तरतो जुह्वति जातवेदः,

उदीच्या दिशो अभिदासन्ति अस्मान्।
सोमम् ऋत्वा ते पराञ्चो व्यथन्ताम्,
प्रत्यक् एनान् प्रतिसरेण हन्मि॥ 4॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - य = जो (सर्वनाम)। **उत्तरतो =** उत्तर से, उत्तर दिशा से, तैरने-पार जाने से (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, तृ, तृ = तैरना, पार जाना)। **जुह्वति जातवेदः =** विद्वान्, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले (जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जा-ज्ञा - जानना, विद् - जानना)। **उदीच्या दिशो =** दिशायें, दिशाओं को (दिश - दिखाना, समझाना, आज्ञा करना, कहना, बोलना, देना, पारितोषिक देना, अतिरचना करना)। **अभिदासन्ति अस्मान् =** हमें, हमको (सर्वनाम)। **सोमम् =** सृजन-ऐश्वर्य-अन्तकर्ता को, ऐश्वर्यवान् को, सृष्टिकर्ता को, (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामथ्य, अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना। सू = प्रेरणा देना। सो–स्य, सय - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना)। **ऋत्वा ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **पराञ्चो व्यथन्ताम्, प्रत्यक् एनान् =** इनको (सर्वनाम)। **प्रतिसरेण हन्मि॥ 4॥**

912. ये अधस्तात् जुह्वति जातवेदः,
ध्रुवाया दिशो अभिदासन्ति अस्मान्।
भूमिम् ऋत्वा ते पराञ्चो व्यथन्ताम्,
प्रत्यक् एनान् प्रतिसरेण हन्मि॥ 5॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - ये = जो (सर्वनाम)। **अधस्तात् जुह्वति जातवेदः =** विद्वान्, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले (जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जा-ज्ञा - जानना, विद् - जानना)। **ध्रुवाया दिशो =** दिशायें, दिशाओं को (दिश - दिखाना, समझाना, आज्ञा करना, कहना, बोलना, देना, पारितोषिक देना, अतिरचना करना)। **अभिदासन्ति अस्मान् =** हमें, हमको (सर्वनाम)। **भूमिम् =** भूमि को (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **ऋत्वा ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **पराञ्चो व्यथन्ताम्, प्रत्यक् एनान् =** इनको (सर्वनाम)। **प्रतिसरेण हन्मि॥ 5॥**

913. ये अन्तरिक्षात् जुह्वति जातवेदः,
वि-अध्वाया दिशो अभिदासन्ति अस्मान्।
वायुम् ऋत्वा ते पराञ्चो व्यथन्ताम्,
प्रत्यक् एनान् प्रतिसरेण हन्मि॥ 6॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - ये = जो (सर्वनाम)। **अन्तरिक्षात् जुह्वति जातवेदः =** विद्वान्, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले (जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जा-ज्ञा - जानना, विद् - जानना)। **वि-अध्वाया दिशो =** दिशायें, दिशाओं को (दिश - दिखाना, समझाना, आज्ञा करना, कहना, बोलना, देना, पारितोषिक देना, अतिरचना करना)। **अभिदासन्ति अस्मान् =** हमें, हमको (सर्वनाम)। **वायुम् =** वायु को (वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वा = गति करना, पवन की भाँति बहना, जाना, जानना, पाना, गन्ध होना, प्रवाहित होना, प्रवाहित करना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण करना, घेरना, भेजना, खाना, वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना)। **ऋत्वा ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **पराञ्चो व्यथन्ताम्, प्रत्यक् एनान् =** इनको (सर्वनाम)। **प्रतिसरेण हन्मि॥ 6॥**

914. ये उपरिष्टात् जुह्वति जातवेदः,
ऊर्ध्वाया दिशो अभिदासन्ति अस्मान्।
सूर्यम् ऋत्वा ते पराञ्चो व्यथन्ताम्,
प्रत्यक् एनान् प्रतिसरेण हन्मि॥ 7॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - ये = जो (सर्वनाम)। **उपरिष्टात् =** ऊपर स्थित से (उपरि = ऊपर, स्था - स्थित होना)। **जुह्वति जातवेदः =** विद्वान्, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले (जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जा-ज्ञा - जानना, विद् - जानना)। **ऊर्ध्वाया दिशो =** दिशायें, दिशाओं को (दिश - दिखाना, समझाना, आज्ञा करना, कहना, बोलना, देना, पारितोषिक देना, अतिरचना करना)। **अभिदासन्ति अस्मान् =** हमें, हमको (सर्वनाम)। **सूर्यम् =** सूर्य को, उत्पन्नकर्ता, ऐश्वर्यवान् को (सुर - ऐश्वर्य होना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना, सू - उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, ऐश्वर्य होना)। **ऋत्वा ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **पराञ्चो व्यथन्ताम्, प्रत्यक् एनान् =** इनको (सर्वनाम)। **प्रतिसरेण हन्मि॥ 7॥**

915. ये दिशाम् अन्तः-देशेभ्यो जुह्वति जातवेदः,
सर्वाभ्यो दिग्भयो अभिदासन्ति अस्मान्।
ब्रह्म ऋत्वा ते पराञ्चो व्यथन्ताम्,
प्रत्यक् एनान् प्रतिसरेण हन्मि॥ 8॥

मन्त्रार्थ -

पदार्थ - ये = जो (सर्वनाम)। **दिशाम् =** दिशा को (दिश - दिखाना, समझाना, आज्ञा करना, कहना, बोलना, देना, पारितोषिक देना, अतिरचना करना)। **अन्तः-देशेभ्यो जुह्वति जातवेदः =** विद्वान्, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले (जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जा-ज्ञा - जानना, विद् - जानना)। **सर्वाभ्यो दिग्भयो अभिदासन्ति अस्मान् =** हमें, हमको (सर्वनाम)। **ब्रह्म =** ब्रह्म, महान्, बड़ा, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना) **ऋत्वा ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **पराञ्चो व्यथन्ताम्, प्रत्यक् एनान् =** इनको (सर्वनाम)। **प्रतिसरेण हन्मि॥ 8॥**

इति चतुर्थम् काण्डम्

ॐ

पञ्चमम् काण्डम्

27 अनुवाक - 1

71 सूक्त - 2 (2)

289. तत् इत् आस भुवनेषु ज्येष्ठम्, यतो जज्ञे उग्रः त्वेष-नृम्णः।
सद्यो जज्ञानो निरिणाति शत्रून्, अनु यत् एनम् मदन्ति विश्वे ऊमाः॥ 1॥

मन्त्रार्थ - **तत्** वह **इत्** ही **भुवनेषु** भुवनों में **ज्येष्ठम्** बडा **आस** है, **यतो** जिससे **उग्रः** उग्र **त्वेष-नृम्णः** तेजोमय ज्ञान वाले **जज्ञे** उत्पन्न हुए। **सद्यो** तत्काल **जज्ञानो** उत्पन्न **शत्रून्** शत्रुओं को **निरिणाति** शब्द करता है, चूर्ण करता है। **यम्** जिसे **विश्वे** सभी **ऊमाः** विश्वास, वाणी सम्पन्न **अनु** अनुसार **एनम्** इसे **मदन्ति** आनन्दित करते हैं॥ 1॥

भावार्थ - सभी भुवनों में, जो कुछ हुआ है, सबमें ज्येष्ठ अर्थात् सबसे बड़ा तो परमात्मा ही है। सब कुछ उससे ही उत्पन्न है तो तेजोमय विद्या वाले भी उससे ही उत्पन्न हैं। उनका विशेष उल्लेख यहाँ विशेष महत्व की दृष्टि से है। तत्कल उत्पन्न शत्रु को वाणी देने से आशय विचारपूर्वक समझाना है, चूर्ण करना, नष्ट करना अन्तिम उपाय है॥ 1॥

विशेष - त्विष् धातु का अर्थ प्रकाश होना है। नृ धातु का अर्थ गति करना, चलना, ले जाना है। नृ धातु गति अर्थ वाली होने से इसका अर्थ ज्ञान, गमन, प्राप्ति होता है। अतः नृम्णः का अर्थ ज्ञान, विद्या भी है। इस प्रकार त्वेष-नृम्णः का अर्थ प्रकाशित विद्या वाला अथवा तेजोमय ज्ञानयुक्त अथवा ज्ञान के तेज से सम्पन्न है। रिण धातु का अर्थ शब्द करना तथा चूर्ण करना या होना है। निरिणाति का अर्थ शब्द करता है अथवा चूर्ण करता है, ऐसा होगा।

पदार्थ - **तत्** = वह। **इत्** = ही। **भुवनेषु** = भुवनों में (भू - होना)। **ज्येष्ठम्** = बडा (ज्या - वृद्ध होना, बर्धित होना, बड़ा होना)। **आस** = है (अस् - होना)। **यतो** = जिससे। **उग्रः** = उग्र। **त्वेष-नृम्णः** = तेजोमय ज्ञान वाले (त्विष् - प्रकाश होना, नृ - गति करना, चलना, ले जान, ज्ञान, गमन, प्राप्ति होना)। **जज्ञे** = उत्पन्न हुए (जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **सद्यो** = तत्काल। **जज्ञानो** = उत्पन्न (जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, ज्ञा - जानना)। **शत्रून्** = शत्रुओं को निरिणाति शब्द करता है, चूर्ण करता है (रिण - शब्द करना, चूर्ण करना या होना, निः - निश्चित, इ - जाना, इण् - शब्द करना, बोलना)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **एनम्** = इसको, इसे (सर्वनाम)। **ऊमाः** = विश्वास, वाणी सम्पन्न (ऊ - शब्द करना, विश्वास करना)। **विश्वे** = सभी। **अनु** = अनुसार, पीछे। **मदन्ति** = आनन्दित करते हैं (मद् - आनन्द होना, आनन्द करना)॥ 1॥

28 अनुवाकः - 2

72 सूक्त - 1 (6)

290. ब्रह्म जज्ञानम् प्रथमम् पुरस्तात्,
वि सीमतः सुरुचो वेन आवः।
स बुध्न्या उपमाः अस्य विस्थाः,
सतः च योनिम् असतः च विवः॥ 1॥

मन्त्रार्थ- **ब्रह्म** = ब्रह्म, महान्, बड़ा, विराट, बृहत् जज्ञानम् = उत्पन्न किया, जाना **प्रथमम्** = प्रथम को **पुरस्तात्** = पहले **वि** = विशेष, विना, विलोम **सीमतः** = सीमत **सुरुचो** = सुन्दर तेजस्वी **वेन** = विद्वान्, कान्तिमान् **आवः** = रक्षक, रक्षा करो, पालन करो **स** = वह, उसने **बुध्न्या** = बोधमय, बोधयुक्त **उपमाः** = उपमान, निकट मान-मापन **अस्य** = इसका **विस्थाः** = स्थित हो **सतः** = सत्य **च** = और **योनिम्** = योनि को **असतः** = प्रकाशक से, हैं **च** = और **विवः** = वरण

किया ॥ 1 ॥

भावार्थ - विद्वान् सबसे पहले परमात्मा को जानने का प्रयास करते हैं। विशेष सीमा से उत्तम रुचि वाले वेन या विद्वान् रक्षा करते हैं। बुद्धिमान् इसके विशेष स्थित होने से उपमा देते हैं। सत् और असत् का योनि अर्थात् मिलने, अलग होने का कारण या स्थान का वरण किया ॥ 1 ॥

पदार्थ - **ब्रह्म** = ब्रह्म, महान्, बड़ा, विराट, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **जज्ञानम्** = उत्पन्न किया, जाना (जन- उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, ज्ञा - जानना)। **प्रथमम्** = प्रथम को (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना, जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना)। **पुरस्तात्** = पहले (अव्यय)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **सीमतः** = सीमा से (सि = बाँधना, मर्यादा होना, सीमा होना)। **सुरुचो** = सुन्दर तेजस्वी (सु - अच्छा, सुन्दर, रुच् - रुचना, प्रीति होना, प्रसन्न होना, उत्साह होना, प्रकाशित होना)। **वेन** = विद्वान्, कान्तिमान् (वेन - मिलाना, अलग करना, रक्षा करना, जाना, समझना, जानना, स्मरण करना, सारासार विचार करना, तारतम्य देखना, वाद्य यन्त्र बजाना, बाजा हाथ में लेना)। **आवः** = रक्षक, रक्षा करो, पालन करो (अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)। **स** = वह, उसने। **बुध्न्या** = बोधमय, बोधयुक्त (बुध् - बोध होना, बोध करना, जानना, समझना)। **उपमाः** = उपमान, निकट मान-मापन (उप- सपीप, नम् - नमन करना, नमना, नत होना)। अस्य = इसका (सर्वनाम)। **विस्थाः** = स्थित हो (वि - विशेष, स्था - स्थित होना, ठहरना)। **सतः** = सत्य (सत् = होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना)। **च** = और। **योनिम्** = योनि को (यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, बांधना, बन्धन करना, गूंथना, बन्धन होना, संयोग-वियोग करना)। **असतः** = प्रकाशक से, हैं (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **च** = और। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **वः** = तुम लोग, तुम्हारा, तुमको, तुम सबका, तुम सबको, तुम सबके लिए ॥ 1 ॥

29 अनुवाकः - 3

73 सूक्त - 2 (12)

291. समिद्धो अद्य मनुषो दुरोणे, देवो देवान् यजसि जातवेदः।
आ च वह मित्रमहः चिकित्वान्, त्वम् दूतः कविः असि प्रचेताः ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - **समिद्धो** = सम्यक प्रकाशवान् **अद्य** = आज **मनुषो** = विचारशील का **दुरोणे** = दूर ले जाने में, ज्ञान, गमन, प्रप्ति में **देवो** = देव **देवान्** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों को **यजसि** = यजन करते हो **जातवेदः** = जातवेद, जन्म से विद्वान्, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण **च** = और। **वह** = वहन करो, ले जाओ **मित्रमहः** = मित्रमह, मित्रों का मान करने वाले **चिकित्वान्** = विद्वान् **त्वम्** = तुम **दूतः** = गतिशील, विद्वान्, परिश्रमी, दुःखदायी **कविः** = ज्ञानी, कवि **असि** = हो **प्रचेताः** = प्रकृष्ठ विचार वाले ॥ 1 ॥

पदार्थ - **समिद्धो** = सम्यक प्रकाशवान् (सम् = सम्यक्, भलीभांति, इत् - इन्ध = प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना, प्रकाश करना)। **अद्य** = आज (अव्यय)। **मनुषो** = विचारशील का (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **दुरोणे** = दूर ले जाने में, ज्ञान, गमन, प्रप्ति में (द्रू-द्रूण - गति, ज्ञान, प्राप्ति करना, हिंसा करना)। **देवो** = देव (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **देवान्** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों को (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **यजसि** = यजन करते हो (यज - देवपूजा करना, अर्पण करना, संगति करना, दान करना)। **जातवेदः** = जातवेद, जन्म से विद्वान्, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले (जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जा-ज्ञा - जानना, विद् - जानना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग)। **च** = और। **वह** = वहन करो, ले जाओ (वह् = वहन करना ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)। **मित्रमहः** = मित्रमह, मित्रों का मान करने वाले (मिद् - स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, नरम होना, मृदुल होना, मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना)।

चिकित्वान् = विद्वान् (चिकित् - जानना)। **त्वम्** = तुम (सर्वनाम)। **दूतः** = गतिशील, विद्वान्, परिश्रमी, दुःखदायी (दू = जाना, जानना, पाना, सुगन्ध लेना, श्रम करना, जलना, तप्त होना, दुःख होना, दुःख देना)। **कविः** = ज्ञानी, कवि (कु - शब्द करना, कविता करना, वर्णन करना, चित्र खींचना)। **असि** = हो (अस् - होना)। **प्रचेताः** = प्रकृष्ट विचार वाले (चेत् = विचार करना, चिन्तन करना) ॥ 1 ॥

292. तनूनपात् पथः ऋतस्य यानान्, मध्वा समञ्जन् स्वदया सुजिह्व।
मन्मानि धीभिः उत यज्ञम् ऋन्धन्, देवत्रा च कृणुहि अध्वरम् नः ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - **तनूनपात्** = विस्तार, पालन करने वाले **पथः** = पथ **ऋतस्य** = ऋत का **यानान्** = यानों को **मध्वा** = मधु द्वारा **समञ्जन्** = सम्यक् प्रकाशित **स्वदया** = स्वाद द्वारा **सुजिह्व** = सुन्दर जिह्वा वाले **मन्मानि** = विचार, मनन **धीभिः** = बुद्धिर्यों द्वारा, धारणा द्वारा **उत** = ही **यज्ञम्** = यजन को **ऋन्धन्** = बढ़े, समृद्धिशाली, वृद्धिगत हो, समृद्ध हो **देवत्रा** = देवों का त्राण करने वाले **च** = और। **कृणुहि** = करो **अध्वरम्** = अहिंसक, अवर्णनीय **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा ॥ 2 ॥

पदार्थ - **तनूनपात्** = विस्तार, पालन करने वाले (तनून् - अपात्, तन् = विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना, अप् - पालन करना)। **पथः** = पथ (पथ, पन्थ् - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना, घूमना, फेंकना, त्यागना)। **ऋतस्य** = ऋत का (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)। **यानान्** = यानों को (या - जाना)। **मध्वा** = मधु द्वारा (मध् = मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना)। **समञ्जन्** = सम्यक् प्रकाशित (सम् = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग), अञ्ज - स्वच्छ करना, प्रकाशित होना)। **स्वदया** = स्वाद द्वारा (स्वद - स्वाद लेना, चखना, तुष्ट होना, प्रसन्न होना)। **सुजिह्व** = सुन्दर जिह्वा वाले (सु = अच्छा (उपसर्ग), जिह = जाना, जानना, पाना)। **मन्मानि** = विचार, मनन (मन्+म = मन्म (बहुवचन), मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **धीभिः** = बुद्धिर्यों द्वारा, धारणा द्वारा (धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि , प्रज्ञा होना, धि = धारण करना, युक्त होना)। **उत** = ही (अव्यय)। **यज्ञम्** = यजन को (यज - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना)। **ऋन्धन्** = बढ़े, समृद्धिशाली, वृद्धिगत हो, समृद्ध हो (ऋध् - वृद्धि होना, वृद्धि करना, समृद्धि होना, ऐश्वर्य होना, आनन्दित करना, पूर्ण करना)। **देवत्रा** = देवों का त्राण करने वाले (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना, त्रै - त्राण करना, रक्षा करना)। **च** = और। **कृणुहि** = करो (कृ = करना)। **अध्वरम्** = अहिंसक, अवर्णनीय (अ - नहीं, ध्वृ-ध्वर् = हिंसा करना, टेढ़ा करना, झुकाना, मार डालना, वर्णन करना)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम) ॥ 2 ॥

293. आजुह्वानः ईड्यो वन्द्यः च, आ याहि अग्ने वसुभिः सजोषाः।
त्वम् देवानाम् असि यह्व होता, सः एनान् यक्षि इषितो यजीयान् ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - **आजुह्वानः** = दानी **ईड्यो** = स्तुत्य **वन्द्यः** = वन्दनीय, स्तुति करने योग्य **च** = और। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण **याहि** = जायें, प्राप्त हों, प्राप्त करें **अग्ने** = हे अग्नि **वसुभिः** = वसुओं द्वारा **सजोषाः** = विचारशील, विवेकवान्, प्रीति करने वाले **त्वम्** = तुम **देवानाम्** = देवों का **असि** = हो **यह्व** = महान् **होता** = आह्वान्, ग्रहण, दान करने वाले **सः** = वह, उसने। **एनान्** = इनको **यक्षि** = पूजा करो **इषितो** = इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि युक्त **यजीयान्** = यजन करो ॥ 3 ॥

पदार्थ - **आजुह्वानः** = दानी (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अज् - जाना, स्थापन करना, दौड़ाना, फेंकना, हु = देना, दान करना, आदान-प्रदान करना)। **ईड्यो** = स्तुत्य (ईड - प्रशंसा करना, स्तुति करना)। **वन्द्यः** = वन्दनीय, स्तुति करने योग्य (वन्द् = स्तुति करना, प्रणाम करना, वन्दना करना, प्रशंसा करना)। **च** = और। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग)। **याहि** = जायें, प्राप्त हों, प्राप्त करें (या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)। **अग्ने** = हे अग्नि (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **वसुभिः** = वसुओं द्वारा (वस् = वसना,

रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)। **सजोषाः** = विचारशील, विवेकवान्, प्रीति करने वाले (स - साथ, सहित, जुष् = प्रसन्न करना, सन्तुष्ट करना, चाहना, दुलार करना, प्रीति करना, विचार करना, विवेक-विवेचना करना, हिंसा करना, सेवा करना)। **त्वम्** = तुम (सर्वनाम)। **देवानाम्** = देवों का (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **असि** = हो (अस् - होना)। **यह्व** = महान् (यह्व्-मह = सम्मान करना, पूजा करना)। **होता** = आह्वान्, ग्रहण, दान करने वाले (हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)। **सः** = वह, उसने। **एनान्** = इनको (सर्वनाम)। **यक्षि** = पूजा करो (यक्ष = पूजा करना, पूजना, सत्कार करना)। **इषितो** = इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि युक्त (इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना)। **यजीयान्** = यजन करो (यज - देवपूजा करना, अर्पण करना, संगति करना, दान करना) **॥ 3 ॥**

294. प्राचीनम् बर्हिः प्रदिशा पृथिव्या, वस्तोः अस्याः वृज्यते अग्रे अह्नाम्।
वि उ प्रथते वितरम् वरीयो, देवेभ्यो अदितये स्योनम् ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - **प्राचीनम्** = प्राचीन, पहले, पूर्व कालीन **बर्हिः** = बढ़ा हुआ, विराट, महान् **प्रदिशा** = प्रदिशा **पृथिव्या** = पृथ्वी योग्य, पृथिवी के **वस्तोः** = वस्तु का, प्रेरणा का, वास का **अस्याः** = इसका **वृज्यते** = त्यागता है **अग्रे** = अग्र, आगे, पहले **अह्नाम्** = व्यापक का, व्याप्त होने के समय अर्थात् दिनों का **वि** = विशेष, विना, विलोम **उ** = निश्चय ही, भी। **प्रथते** = विस्तार करता है **वितरम्** = वितर को, विशिष्ट तारने वाले को **वरीयो** = वरीय **देवेभ्यो** = देवों के लिए, देवों से **अदितये** = अदित के लिए **स्योनम्** = सुख को **॥ 4 ॥**

पदार्थ - **प्राचीनम्** = प्राचीन, पहले, पूर्व कालीन (अव्यय)। **बर्हिः** = बढ़ा हुआ, विराट, महान् (बर्ह् - श्रेष्ठ होना, प्रधान होना, प्रयास करना, उद्यम-व्यवसाय करना, खेलना, बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **प्रदिशा** = प्रदिशा (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, दिश् - दिखाना, दिखाना, समझाना, कहना, देना)। **पृथिव्या** = पृथ्वी योग्य, पृथिवी के (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)। **वस्तोः** = वस्तु का, प्रेरणा का, वास का (वस्त - प्रेरणा करना, प्रातः होना, प्रभात होना, वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)। **अस्याः** = इसका (सर्वनाम)। **वृज्यते** = त्यागता है (वृज् = छोड़ना, त्यागना, वर्जित करना)। **अग्रे** = अग्र, आगे, पहले (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **अह्नाम्** = व्यापक का, व्याप्त होने के समय अर्थात् दिनों का (अह् = फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, अर्पण करना, समर्पण करना)। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **उ** = निश्चय ही, भी। **प्रथते** = विस्तार करता है (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)। **वितरम्** = वितर को, विशिष्ट तारने वाले को (वि - विशेष, तॄ - पार जाना, जल पर तैरना, जीतना, नौकादि साधन से जल के पार जाना)। **वरीयो** = वरीय (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **देवेभ्यो** = देवों के लिए, देवों से (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **अदितये** = अदित के लिए (अ = नहीं, दी = नष्ट होना, ह्रास होना)। **स्योनम्** = सुख को (स्योन् = सुख होना, सुख देना) **॥ 4 ॥**

295. व्यचस्वतीः उर्विया वि श्रयन्ताम्, पतिभ्यो न जनयः शुम्भमानाः।
देवीः द्वारो बृहतीः विश्वम् इन्वा, देवेभ्यो भवत सुप्रायणाः ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ - **व्यचस्वतीः** = व्यापकतायुक्त **उर्विया** = उर्विया, विस्तृत, गतिशील, समर्थ, बहु-दुःखदायी **वि** = विशेष, विना, विलोम **श्रयन्ताम्** = प्राप्त हो **पतिभ्यो** = पतियों के लिए, ऐश्वर्यवान् स्वामियों के लिए, से **न** = नहीं, समान, उपमार्थक **जनयः** = उत्पन्न करो **शुम्भमानाः** = शुम्भमान, प्रकाशमान, शोभायमान **देवीः** = दिव्यगुणयुक्त **द्वारो** = द्वार **बृहतीः** = महान्, बड़ा, विराट, बृहत् **विश्वम्** = सबको,सब विश्व को **इन्वाः** = व्याप्त हो, प्रसन्न करें **देवेभ्यो** = देवों के लिए **भवत**

= हों **सुप्रायणाः** = सुप्रकृष्ट विद्वान् ॥ **5** ॥

पदार्थ - **व्यचस्वतीः =** व्यापकतायुक्त (व्यच् - व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, ठगना, वि - विशेष, अच् - जाना, मरना, आदर करना, याचना करना)। **उर्विया =** उर्विया, विस्तृत, गतिशील, समर्थ, बहु-दुःखदायी (उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना, उर्व - सहना, समर्थ होना, मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना)। **वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **श्रयन्ताम् =** प्राप्त हो (श्रा = परिपक्व करना, पकाना, रांधना, उबालना, स्वेदन करना, श्री = सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना, श्री-श्रीण = पकाना, रांधना)। **पतिभ्यो** = पतियों के लिए, ऐश्वर्यवान् स्वामियों के लिए, से (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **न =** नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **जनयः =** उत्पन्न करो (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **शुम्भमानाः =** शुम्भमान, प्रकाशमान, शोभायमान (शुम्भ - चमकना, प्रकाशित होना, सुन्दर होना, खूबसूरत होना)। **देवीः =** दिव्यगुणयुक्त (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **द्वारो =** द्वार (द्वृ-द्वृ - वरण करना, स्वीकार करना, आच्छादन करना, अपनाना, रोकना)। **बृहतीः =** महान्, बड़ा, विराट, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **विश्वम् =** सबको,सब विश्व को। **इन्वाः =** व्याप्त हो, प्रसन्न करें (इन्व् - व्याप्त होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना)। **देवेभ्यो =** देवों के लिए (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **भवत =** हों (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **सुप्रायणाः** = सुप्रकृष्ट विद्वान् (सु - सुन्दर, अच्छा, = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग), अय् = जाना, जानना, पाना) ॥ **5** ॥

296. आ सुष्वयन्ती यजते उपाके, उषासानक्ता सदताम् नि योनौ।
दिव्ये योषणे बृहती सुरुक्मे, अधि श्रियम् शुक्रपिशम् दधाने॥ 6॥

मन्त्रार्थ - **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण **सुष्वयन्ती =** सुप्रगतिशील, उत्तम प्रगति वाली **यजते =** यजन करता है **उपाके =** उपकुटिल गति में **उषासानक्ता =** उषा-नक्त, दिन-रात **सदताम् =** बैठें, जायें **नि =** निश्चित, निरन्तर **योनौ =** योनि में, मिलाने अलग करने में **दिव्ये =** दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय में **योषणे =** योषण **बृहती =** महान्, बड़ा, विराट, बृहत् **सुरुक्मे =** सुरुक में, सुप्रकाशित में **अधि =** अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार **श्रियम् =** श्रिय को **शुक्रपिशम् =** शुक्रपिश को, विद्वान् प्रकाशक को **दधाने =** धारण में ॥ **6** ॥

पदार्थ - **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग)। **सुष्वयन्ती =** सुप्रगतिशील, उत्तम प्रगति वाली (सू - उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, ऐश्वर्य होना, अय् = जाना, जानना, पाना)। **यजते =** यजन करता है (यज - यज्ञ करना, हवन करना, देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना, संयोग करना)। **उपाके =** उपकुटिल गति में (उप - समीप, अक् = जाना, जानना, पाना, वक्र गति होना, कुटिल गति होना)। **उषासानक्ता =** उषा-नक्त, दिन-रात (उषस् = प्रभात होना, उष - हिंसा करना, जलना, जलाना, ताप देना, (अव्यय, नक् - नक्क् = नष्ट होना, नष्ट करना)। **सदताम् =** बैठें, जायें (सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)। **नि =** निश्चित, निरन्तर (अव्यय)। **योनौ =** योनि में, मिलाने अलग करने में (यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, बांधना, बन्धन करना, गूंथना, बन्धन होना, संयोग-वियोग करना)। **दिव्ये =** दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय में (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)। **योषणे =** योषण (यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, बांधना, बन्धन करना, गूंथना, बन्धन होना, संयोग-वियोग करना)। **बृहती =** महान्, बड़ा, विराट, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **सुरुक्मे =** सुरुक में, सुप्रकाशित में (सु - सुन्दर, अच्छा, रुच् - रुचना, प्रीति होना, प्रसन्न होना, उत्साह होना, प्रकाशित होना)। **अधि =** अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **श्रियम् =** श्रिय को (श्रा = पकाना, रांधना, उबालना, स्वेदन करना, श्री = सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना, श्री-श्रीण = पकाना, रांधना)। **शुक्रपिशम् =** शुक्रपिश को, विद्वान् प्रकाशक को (शुक्-

शुच्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना, पिश् - जाना, प्रकाश होना, चीरना, टुकड़े करना)। **दधाने =** धारण में (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना) ॥ 6 ॥

297. दैव्या होतारा प्रथमा सुवाचा, मिमाना यज्ञम् मनुषो यजध्यै।
प्रचोदयन्ता विदथेषु कारू, प्राचीनम् ज्योतिः प्रदिशा दिशन्ता ॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ - दैव्या = दिव्य **होतारा =** आह्वान्, ग्रहण, दान करने वाले **प्रथमा =** प्रथम **सुवाचा =** सुन्दर वाणी **मिमाना =** प्रक्षेपण, स्थापन, रक्षा करता हुआ **यज्ञम् =** यजन को **मनुषो =** विचारशील का **यजध्यै =** यजन के लिए **प्रचोदयन्ता =** प्रेरित करने वाले **विदथेषु =** ज्ञान प्राप्ति में, ज्ञानियों में **कारू =** कारु **प्राचीनम् =** प्राचीन, पहले, पूर्व कालीन **ज्योतिः =** प्रकाश **प्रदिशा =** प्रदिशा **दिशन्ता =** दिशायें, दिशाओं को ॥ 7 ॥

पदार्थ - दैव्या = दिव्य (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **होतारा =** आह्वान्, ग्रहण, दान करने वाले (हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)। **प्रथमा =** प्रथम (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना, जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना)। **सुवाचा =** सुन्दर वाणी (सु - अच्छा, सुन्दर, वच, वद - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)। **मिमाना =** प्रक्षेपण, स्थापन, रक्षा करता हुआ (मि - प्रक्षेपण करना, स्थापन करना, रक्षा करना)। **यज्ञम् =** यजन को (यज - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना)। **मनुषो =** विचारशील का (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **यजध्यै =** यजन के लिए (यज् - देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)। **प्रचोदयन्ता =** प्रेरित करने वाले (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, चुद् = प्रेरणा देना)। **विदथेषु =** ज्ञान प्राप्ति में, ज्ञानियों में (विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना, विद्यमान होना, विचार करना, जीवन होना)। **कारू =** कारु (कृ = करना)। **प्राचीनम् =** प्राचीन, पहले, पूर्व कालीन (अव्यय)। **ज्योतिः =** प्रकाश (ज्युत - कान्तिमान् होना, चमकना, प्रकाशित होना)। **प्रदिशा =** प्रदिशा (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, दिश् - दिखाना, दिखाना, समझाना, कहना, देना)। **दिशन्ता =** दिशायें, दिशाओं को (दिश - दिखाना, समझाना, आज्ञा करना, कहना, बोलना, देना, पारितोषिक देना, अतिरचना करना) ॥ 7 ॥

298. आ नो यज्ञम् भारती तूयम् एतु, इडा मनुष्वत् इह चेतयन्ती।
तिस्रो देवीः बर्हिः आ इदम्, स्योनम् सरस्वती स्वपसः सदन्ताम् ॥ 8 ॥

मन्त्रार्थ - आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा **यज्ञम् =** यजन को **भारती =** प्रकाशमान, पोषक, भरण-पोषण करने वाला **तूयम् =** तूय को **एतु =** प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे **इडा =** स्तुत, स्तुति योग्य **मनुष्वत् =** मनुष्य के समान, विचारशील के समान **इह =** इसमें, यहां, यह **चेतयन्ती =** चेतन करती हुई, एकत्र करती हुई **तिस्रो =** तीन **देवीः =** दिव्यगुणयुक्त **बर्हिः =** बढ़ा हुआ, विराट, महान् **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण **इदम् =** यह, इसको **स्योनम् =** सुख को **सरस्वती =** सरस्वती **स्वपसः =** स्वपस के लिए, सुरक्षक के लिए **सदन्ताम् =** बैठें, जायें ॥ 8 ॥

पदार्थ - आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **यज्ञम् =** यजन को (यज - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना)। **भारती =** प्रकाशमान, पोषक, भरण-पोषण करने वाला (भृ - भरण-पोषण, धारण करना, भा - चमकना, प्रकाशित होना)। **तूयम् =** तूय को (तु - जाना, बढ़ना, दुःख देना, मार डालना, पूर्ण करना)। **एतु =** प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना, इच्छा करना, प्रेरणा करना)। **इडा =** स्तुत, स्तुति योग्य (इड - धारण करना, घर्षण करना, छेदन करना, ईड् = स्तुति करना)। **मनुष्वत् =** मनुष्य के समान, विचारशील के समान (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **इह =** इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **चेतयन्ती =** चेतन करती हुई, एकत्र करती हुई (चि - चुनना, एकत्र करना,

चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, सम्यक् ज्ञान होना, स्मरण करना, शंका करना, सन्देह करना)। **तिस्रो** = तीन (संख्या)। **देवीः** = दिव्यगुणयुक्त (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **बर्हिः** = बढ़ा हुआ, विराट, महान् (बर्ह् - श्रेष्ठ होना, प्रधान होना, प्रयास करना, उद्यम-व्यवसाय करना, खेलना, बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग)। **इदम्** = यह, इसको (सर्वनाम)। **स्योनम्** = सुख को (स्योन् = सुख होना, सुख देना)। **सरस्वती** = सरस्वती (सृ - जाना, सरकना, जानना, पाना, बहना, चलना, स - साथ, सहित, रस् - स्वाद लेना, प्रीति करना, शब्द करना)। **स्वपसः** = स्वपस के लिए, सुरक्षक के लिए (सु - अच्छा, स्व = निज, अपना, अप् - पालन करना)। **सदन्ताम्** = बैठें, जायें (सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना) ॥ **8** ॥

299. यः इमे द्यावापृथिवी जनित्री, रूपैः अपिंशत् भुवनानि विश्वा।
तम् अद्य होतः इषितो यजीयान्, देवम् त्वष्टारम् इह यक्षि विद्वान्॥ 9॥

मन्त्रार्थ - **यः** = जो **इमे** = यह, इस, ये **द्यावापृथिवी** = अग्रगामी विस्तार, प्रकाश, द्यावा और पृथिवी **जनित्री** = उत्पादक **रूपैः** = रूपों द्वारा **अपिंशत्** = कहा, बोला **भुवनानि** = भुवन **विश्वा** = विश्व, सभी, सब **तम्** = उसको, उसे **अद्य** = आज **होतः** = आह्वान्, ग्रहण, दान करने वाले **इषितो** = इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि युक्त **यजीयान्** = यजन करो **देवम्** = देव को **त्वष्टारम्** = त्वष्टा को, प्रकाशक को **इह** = इसमें, यहां, यह **यक्षि** = पूजा करो **विद्वान्** = विद्वान्, जानने वाला, ज्ञानी ॥ **9** ॥

पदार्थ - **यः** = जो (सर्वनाम)। **इमे** = यह, इस, ये (सर्वनाम)। **द्यावापृथिवी** = अग्रगामी विस्तार, प्रकाश, द्यावा और पृथिवी (द्यु - आगे जाना, समीप जाना, द्युत् -दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, द्यै = तिरस्कार करन, पृथु = विस्तार होना, फेंकना, उड़ाना, भेजना, प्रेरणा करना)। **जनित्री** = उत्पादक (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **रूपैः** = रूपों द्वारा (रूप - बनाना, आकार बनाना, रचना करना, मन में रुपाकृति लाना)। **अपिंशत्** = कहा, बोला (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, पिंश् = बोलना, कहना)। **भुवनानि** = भुवन (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **विश्वा** = विश्व, सभी, सब (सर्वनाम)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **अद्य** = आज (अव्यय)। **होतः** = आह्वान्, ग्रहण, दान करने वाले (हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)। **इषितो** = इच्छा, गति, ज्ञान, प्राप्ति, दृष्टि युक्त (इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना)। **यजीयान्** = यजन करो (यज - देवपूजा करना, अर्पण करना, संगति करना, दान करना)। **देवम्** = देव को (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **त्वष्टारम्** = त्वष्टा को, प्रकाशक को (त्वक्ष् = छीलना, रेतना, त्विष् = प्रकाशित होना, चमकना)। **इह** = इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **यक्षि** = पूजा करो (यक्ष = पूजा करना, पूजना, सत्कार करना)। **विद्वान्** = विद्वान्, जानने वाला, ज्ञानी (विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना, विद्यमान होना, विचार करना, जीवन होना) ॥ **9** ॥

300. उप अवसृज त्मन्या समञ्जन्, देवानाम् पाथ ऋतुथा हवींषि।
वनस्पतिः शमिता देवो अग्निः, स्वदन्तु हव्यम् मधुना घृतेन॥ 10॥

मन्त्रार्थ - **उप** = समीप **अवसृज** = अवसर्जन करो **त्मन्या** = आत्मा द्वारा **समञ्जन्** = सम्यक् प्रकाशित **देवानाम्** = देवों का **पाथ** = पाथ, मार्ग **ऋतुथा** = ऋतु के अनुसार **हवींषि** = दानयोग्य, आदान-प्रदान योग्य, तृप्ति योग्य **वनस्पतिः** = विद्वान्, वनस्पति **शमिता** = कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी **देवो** = देव **अग्निः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् **स्वदन्तु** = अच्छा खायें **हव्यम्** = आदान-प्रदान करने योग्य को, हव्य को, देय को **मधुना** = मधु द्वारा **घृतेन** = अभिसिञ्चित द्वारा, प्रकाशमान द्वारा ॥ **10** ॥

पदार्थ - **उप** = समीप (उपसर्ग)। **अवसृज** = अवसर्जन करो (अव = नीचे, दूर, प्राप्त, अव् = रक्षा करना, पालन

करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, सृज् - रचना करना, बनाना, उत्पादन करना, त्याग करना)। **त्मन्या =** आत्मा द्वारा (आत् - होना, चिरन्तन होना, नित्य होना, चेतन होना, अत् - सतत गमन करना, निरन्तर चलना, सतत चलना, जानना, पाना, वैदिक भाषा में आ का लोप हो सकता है)। **समञ्जन् =** सम्यक् प्रकाशित (सम् = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग), अञ्ज - स्वच्छ करना, प्रकाशित होना)। **देवानाम् =** देवों का (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **पाथ =** पाथ, मार्ग (पथ् - जाना, उड़ाना, फेंकना, त्यागना)। **ऋतुथा =** ऋतु के अनुसार (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)। **हवींषि =** दानयोग्य, आदान-प्रदान योग्य, तृप्ति योग्य (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **वनस्पतिः =** विद्वान्, वनस्पति (वन - शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, आपद्ग्रस्त होना, अलग करना, मिलाना, स्मरण करना, बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, याचना करना, मांगना, दुःख देना, उद्योग-धन्धा करना, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **शमिता =** कल्याणकारी, शान्तिमय, शमनकारी (शम् = कल्याण होना, शान्त होना, स्वस्थ होना प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, विचार करना, सहन करना)। **देवो =** देव (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **अग्निः =** अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **स्वदन्तु =** अच्छा खायें (स्वद - स्वाद लेना, चखना, तुष्ट होना, प्रसन्न होना, सु + अदन्तु)। **हव्यम् =** आदान-प्रदान करने योग्य को, हव्य को, देय को (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **मधुना =** मधु द्वारा (मध् = मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना)। **घृतेन =** अभिसिञ्चित द्वारा, प्रकाशमान द्वारा (घृ -गीला करना, बूंद बूंद गिरना, टपकना, क्षरित होना, सिञ्चन करना, सींचना, टपकना, क्षरण होना, झरना, चमकना, प्रकाश करना, घर्षण होना, नाश होना, शब्द होना) **॥ 10 ॥**

301. सद्यो जातो वि अमिमीत यज्ञम्, अग्निः देवानाम् अभवत् पुरोगाः।
अस्य होतुः प्रशिषि ऋतस्य वाचि, स्वाहाकृतम् हविः अदन्तु देवाः ॥ 11 ॥

मन्त्रार्थ - सद्यो = शीघ्र, तत्काल, तत्क्षण, ताजा, अभी का, गम्य **जातो =** उत्पन्न हुआ **वि =** विशेष, विना, विलोम **अमिमीत =** निर्माण, मान **यज्ञम् =** यजन को **अग्निः =** अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् **देवानाम् =** देवों का **अभवत् =** हुआ **पुरोगाः =** अग्रगामी, अग्रणी, दानी, प्रकाशक **अस्य =** इसका **होतुः =** आह्वान्, ग्रहण, दान करने वाले का **प्रशिषि =** प्रशिष में, प्रयोजन में, अनुशासन में **ऋतस्य =** ऋत का **वाचि =** वाणी में **स्वाहाकृतम् =** व्याप्त किये हुए को **हविः =** हवि, दान करने योग्य, लेने योग्य, तृप्त करने योग्य **अदन्तु =** खायें **देवाः =** विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने **॥ 11 ॥**

पदार्थ - सद्यो = शीघ्र, तत्काल, तत्क्षण, ताजा, अभी का, गम्य (सद् - जाना, चलना, शक्तिहीन होना, म्लान होना, सूखना, मुर्झाना, भग्न करना, नष्ट करना)। **जातो =** उत्पन्न हुआ (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **अमिमीत =** निर्माण, मान (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अम = जाना, जानना, शब्द करना, सेवा करना, मि - फेकना, स्थापना करना, रक्षा करना, मा - मापना, मान करना, मी - हिंसा करना, मारना)। **यज्ञम् =** यजन को (यज - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना)। **अग्निः =** अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **देवानाम् =** देवों का (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **अभवत् =** हुआ (भू - होना, रहना, उत्पन्न होना)। **पुरोगाः =** अग्रगामी, अग्रणी, दानी, प्रकाशक (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, गम् = जाना,जानना, पाना)। **अस्य =** इसका (सर्वनाम)। **होतुः =** आह्वान्, ग्रहण, दान करने वाले का (हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)। **प्रशिषि =** प्रशिष में, प्रयोजन में, अनुशासन में (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, शिष् - प्रयोजन करना, शेष रखना, अनुशासन करना, आशीर्वाद देना, हिंसा करना)। **ऋतस्य =** ऋत का (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)। **वाचि =** वाणी में (वच - बोलना, कहना, समझाना, जनाना,

पढ़ना, अध्ययन करना)। **स्वाहाकृतम् =** व्याप्त किये हुए को (सु = अच्छा, सुन्दर, स्व - अपना, अह् = व्याप्त होना, फैलना, विस्तृत होना)। **हविः =** हवि, दान करने योग्य, लेने योग्य, तृप्त करने योग्य (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **अदन्तु =** खायें (अद् - खाना)। **देवाः =** विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना) **॥ 11 ॥**

30 अनुवाकः - 4

74 सूक्त - 1 (16)

302. यदि एकवृषः असि सृज अरसः असि ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - यदि = यदि **एकवृषः =** एक वृष वाले **असि =** हो **सृज =** सृजन करो **अरसः =** रसहीन, अस्नेही **असि =** हो **॥ 1 ॥**

पदार्थ - यदि = यदि (अव्यय)। **एकवृषः =** एक वृष वाले (एक - एक संख्या, एक - विचार करना, वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना या पीड़ा करना, दुःख देना, पीड़ित करना)। **असि =** हो (अस् - होना)। **सृज =** सृजन करो (सृज् - छोड़ना, त्याग करना, विविध रूप से उत्पन्न करना, रचना करना)। **अरसः =** रसहीन, अस्नेही (अ - नहीं, रस - स्वाद लेना, चखना, प्रीति करना, प्यार करना)। **असि =** हो (अस् - होना) **॥ 1 ॥**

303. यदि द्विवृषः असि सृज अरसः असि ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - यदि = यदि **द्विवृषः =** दो वृष वाले **असि =** हो **सृज =** सृजन करो **अरसः =** रसहीन, अस्नेही **असि =** हो **॥ 2 ॥**

पदार्थ - यदि = यदि (अव्यय)। **द्विवृषः =** दो वृष वाले (द्वि - दो संख्या, वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना या पीड़ा करना, दुःख देना, पीड़ित करना)। **असि =** हो (अस् - होना)। **सृज =** सृजन करो (सृज् - छोड़ना, त्याग करना, विविध रूप से उत्पन्न करना, रचना करना)। **अरसः =** रसहीन, अस्नेही (अ - नहीं, रस - स्वाद लेना, चखना, प्रीति करना, प्यार करना)। **असि =** हो (अस् - होना) **॥ 2 ॥**

304. यदि त्रिवृषः असि सृज अरसः असि ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - यदि = यदि **त्रिवृषः =** तीन वृष वाले **असि =** हो **सृज =** सृजन करो **अरसः =** रसहीन, अस्नेही **असि =** हो **॥ 3 ॥**

पदार्थ - यदि = यदि (अव्यय)। **त्रिवृषः =** तीन वृष वाले (त्रि - तीन संख्या, वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना या पीड़ा करना, दुःख देना, पीड़ित करना)। **असि =** हो (अस् - होना)। **सृज =** सृजन करो (सृज् - छोड़ना, त्याग करना, विविध रूप से उत्पन्न करना, रचना करना)। **अरसः =** रसहीन, अस्नेही (अ - नहीं, रस - स्वाद लेना, चखना, प्रीति करना, प्यार करना)। **असि =** हो (अस् - होना) **॥ 3 ॥**

305. यदि चतुर्वृषः असि सृज अरसः असि ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - यदि = यदि **चतुर्वृषः =** चार वृष वाले **असि =** हो **सृज =** सृजन करो **अरसः =** रसहीन, अस्नेही **असि =** हो **॥ 4 ॥**

पदार्थ - यदि = यदि (अव्यय)। **चतुर्वृषः =** चार वृष वाले (चतुः - चार संख्या, वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना या पीड़ा करना, दुःख देना, पीड़ित करना)। **असि =** हो (अस् - होना)। **सृज =** सृजन करो (सृज् - छोड़ना, त्याग करना, विविध रूप से उत्पन्न करना, रचना करना)। **अरसः =** रसहीन, अस्नेही (अ - नहीं, रस - स्वाद लेना,

चखना, प्रीति करना, प्यार करना)। **असि** = हो (अस् - होना) ॥ **4** ॥

306. यदि पञ्चवृषः असि सृज अरसः असि ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ - **यदि** = यदि **पञ्चवृषः** = पांच वृष वाले **असि** = हो **सृज** = सृजन करो **अरसः** = रसहीन, अस्नेही **असि** = हो ॥ **5** ॥

पदार्थ - **यदि** = यदि (अव्यय)। **पञ्चवृषः** = पांच वृष वाले (पञ्च - पांच संख्या, वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना या पीड़ा करना, दुःख देना, पीड़ित करना)। **असि** = हो (अस् - होना)। **सृज** = सृजन करो (सृज् - छोड़ना, त्याग करना, विविध रूप से उत्पन्न करना, रचना करना)। **अरसः** = रसहीन, अस्नेही (अ - नहीं, रस - स्वाद लेना, चखना, प्रीति करना, प्यार करना)। **असि** = हो (अस् - होना) ॥ **5** ॥

307. यदि षड्वृषः असि सृज अरसः असि ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ - **यदि** = यदि **षड्वृषः** = छह वृष वाले **असि** = हो **सृज** = सृजन करो **अरसः** = रसहीन, अस्नेही **असि** = हो ॥ **6** ॥

पदार्थ - **यदि** = यदि (अव्यय)। **षड्वृषः** = छह वृष वाले (षट् - छह संख्या, वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना या पीड़ा करना, दुःख देना, पीड़ित करना)। **असि** = हो (अस् - होना)। **सृज** = सृजन करो (सृज् - छोड़ना, त्याग करना, विविध रूप से उत्पन्न करना, रचना करना)। **अरसः** = रसहीन, अस्नेही (अ - नहीं, रस - स्वाद लेना, चखना, प्रीति करना, प्यार करना)। **असि** = हो (अस् - होना) ॥ **6** ॥

308. यदि सप्तवृषः असि सृज अरसः असि ॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ - **यदि** = यदि **सप्तवृषः** = सात वृष वाले **असि** = हो **सृज** = सृजन करो **अरसः** = रसहीन, अस्नेही **असि** = हो ॥ **7** ॥

पदार्थ - **यदि** = यदि (अव्यय)। **सप्तवृषः** = सात वृष वाले (सप्त - सात संख्या, वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना या पीड़ा करना, दुःख देना, पीड़ित करना)। **असि** = हो (अस् - होना)। **सृज** = सृजन करो (सृज् - छोड़ना, त्याग करना, विविध रूप से उत्पन्न करना, रचना करना)। **अरसः** = रसहीन, अस्नेही (अ - नहीं, रस - स्वाद लेना, चखना, प्रीति करना, प्यार करना)। **असि** = हो (अस् - होना) ॥ **7** ॥

309. यदि अष्टवृषः असि सृज अरसः असि ॥ 8 ॥

मन्त्रार्थ - **यदि** = यदि **अष्टवृषः** = आठ वृष वाले **असि** = हो **सृज** = सृजन करो **अरसः** = रसहीन, अस्नेही **असि** = हो ॥ **8** ॥

पदार्थ - **यदि** = यदि (अव्यय)। **अष्टवृषः** = आठ वृष वाले (अष्ट - आठ संख्या, वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना या पीड़ा करना, दुःख देना, पीड़ित करना)। **असि** = हो (अस् - होना)। **सृज** = सृजन करो (सृज् - छोड़ना, त्याग करना, विविध रूप से उत्पन्न करना, रचना करना)। **अरसः** = रसहीन, अस्नेही (अ - नहीं, रस - स्वाद लेना, चखना, प्रीति करना, प्यार करना)। **असि** = हो (अस् - होना) ॥ **8** ॥

310. यदि नववृषः असि सृज अरसः असि ॥ 9 ॥

मन्त्रार्थ - **यदि** = यदि **नववृषः** = नौ वृष वाले **असि** = हो **सृज** = सृजन करो **अरसः** = रसहीन, अस्नेही **असि** = हो ॥ **9** ॥

पदार्थ - **यदि** = यदि (अव्यय)। **नववृषः** = नौ वृष वाले (नव - नौ संख्या, वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना,

अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना या पीड़ा करना, दुःख देना, पीड़ित करना)। **असि** = हो (अस् - होना)। **सृज** = सृजन करो (सृज् - छोड़ना, त्याग करना, विविध रूप से उत्पन्न करना, रचना करना)। **अरसः** = रसहीन, अस्नेही (अ - नहीं, रस - स्वाद लेना, चखना, प्रीति करना, प्यार करना)। **असि** = हो (अस् - होना) **॥ 9 ॥**

311. यदि दशवृषः असि सृज अरसः असि ॥ 10 ॥

मन्त्रार्थ - **यदि** = यदि **दशवृषः** = दस वृष वाले **असि** = हो **सृज** = सृजन करो **अरसः** = रसहीन, अस्नेही **असि** = हो **॥ 10 ॥**

पदार्थ - **यदि** = यदि (अव्यय)। **दशवृषः** = दस वृष वाले (दश - दस संख्या, वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना या पीड़ा करना, दुःख देना, पीड़ित करना)। **असि** = हो (अस् - होना)। **सृज** = सृजन करो (सृज् - छोड़ना, त्याग करना, विविध रूप से उत्पन्न करना, रचना करना)। **अरसः** = रसहीन, अस्नेही (अ - नहीं, रस - स्वाद लेना, चखना, प्रीति करना, प्यार करना)। **असि** = हो (अस् - होना) **॥ 10 ॥**

312. यदि एकादशः असि सः अप-उदकः असि ॥ 11 ॥

मन्त्रार्थ - **यदि** = यदि **एकादशः** = एकादश **असि** = हो **सः** = वह, उसने (सर्वनाम)। **अप-उदकः** = अप-उदक **असि** = हो **॥ 11 ॥**

पदार्थ - **यदि** = यदि (अव्यय)। **एकादशः** = एकादश (एक - एक संख्या, एक - विचार करना, वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना या पीड़ा करना, दुःख देना, पीड़ित करना)। **असि** = हो (अस् - होना)। **सः** = वह, उसने (सर्वनाम)। **अप-उदकः** = अप-उदक (अप - दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग), अप - जाना, जानना, पाना, पालन करना, उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, उद् - उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, अक् - जाना, टेढ़ा जाना, उच्च, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना)। **असि** = हो (अस् - होना) **॥ 11 ॥**

31अनुवाकः - 5

75 सूक्त - 4 (25)

313. गर्भो असि ओषधीनाम्,
गर्भो वनस्पतीनाम्।
गर्भो विश्वस्य भूतस्य सो,
अग्ने गर्भम् आ इह धाः ॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ- **अग्ने** = हे अग्नि **ओषधीनाम्** = ओषधियों का **गर्भो** = गर्भ **असि** = हो **वनस्पतीनाम्** = वनस्पतियों का **गर्भो** = गर्भ **विश्वस्य** = विश्व का, सभी का **भूतस्य** = भूत का, उत्पन्न हुए का **गर्भो** = गर्भ **सः** = वह, उसने **गर्भम्** = गर्भ को **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **इह** = इसमें, यहां, यह **धाः** = धारण करो, पोषण करो, रक्षण करो, दान करो **॥ 7 ॥**

भावार्थ - हे अग्नि स्वरूप परमात्मा तथा ऊर्ध्वगामी, तेजस्वी, विद्वान्, ओषधियों का गर्भ हो। वनस्पतियों का गर्भ, सभी भूत अर्थात् उत्पन्न हुए का गर्भ, पालकों का गर्भ हो **॥ 7 ॥**

पदार्थ - **गर्भो** = गर्भ (गृह् - ग्रहण करना, लेना, गृभ्-गर्भ् - अन्दर होना, अन्तःवास करना)। **असि** = हो (अस् - होना)। **ओषधीनाम्** = ओषधियों का (उषध्-ओषध् = चिकित्सा करना, रोग मुक्त करना)। **गर्भो** = गर्भ (गृह् - ग्रहण करना, लेना, गृभ्-गर्भ् - अन्दर होना, अन्तःवास करना)। **वनस्पतीनाम्** = वनस्पतियों का (वन - शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, आपद्ग्रस्त होना, अलग करना, मिलाना, स्मरण करना, बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न

होना, प्रकट होना, याचना करना, मांगना, दुःख देना, उद्योग-धन्धा करना, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **गर्भो =** गर्भ (गृह् - ग्रहण करना, लेना, गृभ्-गर्भ् - अन्दर होना, अन्तःवास करना)। **विश्वस्य =** विश्व का, सभी का। **भूतस्य =** भूत का, उत्पन्न हुए का (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **सः =** वह, उसने (सर्वनाम)। **अग्ने =** हे अग्नि (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **गर्भम् =** गर्भ को (गृह् - ग्रहण करना, लेना, गृभ्-गर्भ् - अन्दर होना, अन्तःवास करना)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **इह =** इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **धाः =** धारण करो, पोषण करो, रक्षण करो, दान करो (धा - धारण करना, पहनना, पोषण करना, धाः = पोषण करना, रक्षण करना, देना, दान करना, धार बाँधना, धारा होना) **॥ 7 ॥**

32 अनुवाकः - 6

76 सूक्त - 1 (27)

314. ऊर्ध्वाः अस्य समिधः भवन्ति, ऊर्ध्वाः शुक्रा शोचींषि अग्ने।
द्युमत्तमा सुप्रतीकः ससूनुः तनूनपात् असुरः भूरि पाणिः ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ :- ऊर्ध्वाः = ऊर्ध्व, उच्च चेतना वाले, ऊर्ध्वचेता **अस्य =** इसका **समिधः =** सम्यक् प्रकाशित **भवन्ति =** होते हैं **ऊर्ध्वाः =** ऊर्ध्व, उच्च चेतना वाले, ऊर्ध्वचेता **शुक्रा =** शुक्र, विद्वान्, शुद्ध, पवित्र, पावन, पवित्रकर्ता, शीघ्रकारी। **शोचींषि =** पवित्रता के लिए **अग्ने =** हे अग्नि **द्युमत्तमा =** अग्रगामी हुआ, प्रकाशमान हुआ **सुप्रतीकः =** सुप्रतीक **ससूनुः =** सन्तान के लिए **तनूनपात् =** विस्तार, पालन करने वाले, श्रद्धा, उपकार, शब्द का पालन- रक्षण करने वाले, वृद्धि के रक्षक **असुरः =** असुर, ऐश्वर्यहीन, उत्पन्न-सृजन नहीं करने वाला, प्रकाश देने वाला **भूरि** = बहु, बहुत **पाणिः =** पाणि, हाथ **॥ 1 ॥**

भावार्थ :- देवों में देव सर्वज्ञ असुर देव ने सृष्टि का विस्तार पालन रक्षण किया। हमारे जीवन पथ को मधु और घृत सिंचित करें। यहाँ पर असुर तथा देव शब्द परमात्मा के लिए ही आयें हैं। परमात्मा के असुर स्वरूप पर विशेष बल दिया गया है। जो जीवन पथ को प्रकाशित करता है, वह असुर है।

पदार्थ - ऊर्ध्वा = ऊर्ध्व, उच्च चेतना वाले, ऊर्ध्वचेता (ऊर्ध्व = उच्च, ऊपर, चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, स्मरण करना)। **अस्य =** इसका (सर्वनाम)। **समिधः =** सम्यक् प्रकाशित (सम् = सम्यक्, भलीभांति, इत् - इन्ध = प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना, प्रकाश करना)। **भवन्ति =** होते हैं (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **ऊर्ध्वा =** ऊर्ध्व, उच्च चेतना वाले, ऊर्ध्वचेता (ऊर्ध्व = उच्च, ऊपर, चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, स्मरण करना)। **शुक्रा =** शुक्र, विद्वान्, शुद्ध, पवित्र, पावन, पवित्रकर्ता, शीघ्रकारी (शुक्-शुच्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)। **शोचींषि =** पवित्रता के लिए (शुच् = शुद्ध होना, पवित्र होना, शुद्ध - पवित्र करना, दुःख मानना, शोक करना)। **अग्ने =** हे अग्नि (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **द्युमत्तमा =** अग्रगामी हुआ, प्रकाशमान हुआ (द्युत् = प्रकाशित होना, द्यु = अभिगमन करना, आक्रमण करना, आगे जाना, समीप जाना)। **सुप्रतीकः** (सु - सुन्दर, अच्छा, प्रति = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में)। **ससूनुः =** सृष्टि, सन्तान, उत्पन्न, ऐश्वर्य (सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना)। **तनूनपात् =** विस्तार, पालन करने वाले, श्रद्धा, उपकार, शब्द का पालन- रक्षण करने वाले, वृद्धि के रक्षक (तनू-नपात्, तनून् - अपात्, तन् = विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना, अप् - पालन करना, पा - पालन-रक्षण करना, पत् - उड़ना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पद् - चलना)। **असुरः =** असुर, ऐश्वर्यहीन, उत्पन्न-सृजन नहीं करने वाला, प्रकाश देने वाला (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना)। **भूरि** = बहु, बहुत (अव्यय, सर्वनाम)।

पाणिः = पाणि, हाथ (पण् - शब्द करना, स्तुति करना, प्रशंसा करना, उद्योग-व्यापार करना, व्यवहार करना) ॥ **1** ॥

77 सूक्त - 3 (29)

315. सनात् अग्ने मृणासि यातुधानान्,
न त्वा रक्षांसि पृतनासु जिग्युः।
सहमूरान् अनु दह क्रव्यादो,
मा ते हेत्या मुक्षत दैव्यायाः ॥ 11 ॥

मन्त्रार्थ - **सनात्** = सेवा से **अग्ने** = हे अग्नि **मृणासि** = सुख करो, मार दो **यातुधानान्** = यातुधानों को **न** = नहीं, समान, उपमार्थक **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **रक्षांसि** = रक्षक **पृतनासु** = व्यापक, बलों में **जिग्युः** = स्तुति करते हो **अनु** = पश्चात्, पीछे, अनुकूल **दह** = जलाओ **सहमूरान** = मूर सहित **क्रव्यादो** = क्रव्याद, निर्दयता को खाने वाला **मा** = नहीं, मत **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **हेत्या** = हेति के लिए, गति, ज्ञान, प्राप्ति, वृद्धि, प्रेरणा के लिए **मुक्षत** = एकत्र करें, छुड़ायें **दैव्यायाः** = दिव्य के लिए ॥ **11** ॥

पदार्थ - **सनात्** = सेवा से (सन् - दान करना, सेवा करना, पूजा करना, सत्कार करना, सेवा करना, चाकरी करना)। **अग्ने** = हे अग्नि (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **मृणासि** = सुख करो, मार दो (मृड - सुखी होना, सुख देना, मृण् - हिंसा करना, मारना, छिद्र करना)। **यातुधानान्** = यातुधानों को (या - जाना, यत् - यत्न करना, प्रयास करना, उद्योग करना, दुःख देना, छाया-आच्छादन करना, रोकना, धा = धारण करना)। **न** = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **रक्षांसि** = रक्षक (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना)। **पृतनासु** = व्यापक, बलों में (पृत -व्याप्त होना, जीवन होना, बलपूर्वक निकालना, पृ = पूर्ण करना)। **जिग्युः** = स्तुति करते हो (गा-जिगा - स्तुति करना, प्रशंसा करना)। **सहमूरान** = मूर सहित (सह = साथ, सहित, सर्वनाम, सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ठ होना, मुर् - घेरना, लपेटना)। **अनु** = पश्चात्, पीछे, अनुकूल (उपसर्ग)। **दह** = जलाओ (दह् - जलाना, नष्ट करना, दुःख देना)। **क्रव्यादो** = क्रव्याद, निर्दयता को खाने वाला (क्रू, क्रूर् = निर्दय होना, निर्दयता करना, कृ - करना, अद् - खाना)। **मा** = नहीं, मत (अव्यय)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **हेत्या** = हेति के लिए, गति, ज्ञान, प्राप्ति, वृद्धि, प्रेरणा के लिए (हि - गति, वृद्धि, प्रेरणा करना, जाना, जानना, पाना)। **मुक्षत** = एकत्र करें, छुड़ायें (मुक्ष = राशि करना, सञ्चित करना, एकत्र करना, छूटना)। **दैव्यायाः** = दिव्य के लिए (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना) ॥ **11** ॥

इति पञ्चमम् काण्डम्

ॐ

षष्ठम् काण्डम्

33 अनुवाक - 1

78 सूक्त - 1 (1)

316. दोषो गाय बृहद् गाय द्युमत् धेहि।
आथर्वण स्तुहि देवम् सवितारम्॥ 1॥

मन्त्रार्थ - **दोषो** = रात्रि, दोष **गाय** = गाने के लिए, गायन के लिए, गाकर **बृहद्** = महान्, बड़ा, विराट, बृहत् **गाय** = गाने के लिए, गायन के लिए, गाकर **द्युमत्** = अग्रगामी हुआ, प्रकाशमान हुआ **धेहि** = धारण करें **आथर्वण** = अविचलित-अहिंसक का **स्तुहि** = स्तुत, स्तुह **देवम्** = देव को **सवितारम्** = सविता, सृष्टिकर्ता, ऐश्वर्यवान् को, उत्पन्न करने वाले का॥ 1॥

पदार्थ - **दोषो** = रात्रि, दोष (अव्यय, दुः-दुष् - दूषित होना)। **गाय** = गाने के लिए, गायन के लिए, गाकर (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गम् - जाना, जानना, पाना)। **बृहद्** = महान्, बड़ा, विराट, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **गाय** = गाने के लिए, गायन के लिए, गाकर (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गम् - जाना, जानना, पाना)। **द्युमत्** = अग्रगामी हुआ, प्रकाशमान हुआ (द्युत् = प्रकाशित होना, द्यु = अभिगमन करना, आक्रमण करना, आगे जाना, समीप जाना)। **धेहि** = धारण करें (धा-धि-धी - धारण करना, पहनना, पोषण करना, रक्षण करना, देना)। **आथर्वण** = अविचलित-अहिंसक का (अ - नहीं, थर्व - अस्थिर होना, हिंसा करना)। **स्तुहि** = स्तुत, स्तुह (स्तुञ् - प्रशंसा करना, स्तुति करना, पूजा करना, अर्चा करना, सेवा करना, भजन करना)। **देवम्** = देव को (दिव् - तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **सवितारम्** = सविता, सृष्टिकर्ता, ऐश्वर्यवान् को, उत्पन्न करने वाले का (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)॥ 1॥

34 अनुवाक - 2

79 सूक्त - 9 (19)

317. पुनन्तु मा देवजनाः,
पुनन्तु मनवा धिया।
पुनन्तु विश्वा भूतानि,
पवमानः पुनातु मा॥ 1॥

मन्त्रार्थ - **पुनन्तु** = पवित्र करें **मा** = नहीं, मत **देवजनाः** = देवजन **पुनन्तु** = पवित्र करें **मनवा** = मन से, मन द्वारा **धिया** = धारणा शक्ति, बुद्धि **पुनन्तु** = पवित्र करें **विश्वा** = विश्व, सभी, सब **भूतानि** = भूतों को, उत्पन्न हुओं को **पवमानः** = पवित्र करने वाला, पालन-रक्षा करने वाला **पुनातु** = पवित्र करो **मा** = नहीं, मत॥ 1॥

पदार्थ - **पुनन्तु** = पवित्र करें (पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)। **मा** = नहीं, मत (अव्यय)। **देवजनाः** = देवजन (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना, जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **पुनन्तु** = पवित्र करें (पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)। **मनवा** = मन से, मन द्वारा (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार

करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **धिया** = धारणा शक्ति, बुद्धि (धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि , प्रज्ञा होना, धि = धारण करना, युक्त होना)। **पुनन्तु** = पवित्र करें (पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)। **विश्वा** = विश्व, सभी, सब (सर्वनाम)। **भूतानि** = भूतों को, उत्पन्न हुओं को (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **पवमानः** = पवित्र करने वाला, पालन-रक्षा करने वाला (पु - पालन करना, रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना)। **पुनातु** = पवित्र करो (पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)। **मा** = नहीं, मत (अव्यय) **॥ 1 ॥**

318. उभाभ्याम् देव सवितः, पवित्रेण सवेन च।
अस्मान् पुनीहि चक्षसे ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - उभाभ्याम् = दोनों के लिए, पूर्णताओं के लिए **देव** = देव, विद्वान्, तेजस्वी, दिव्यस्वरूप **सवितः** = सवित, ऐश्वर्य युक्त और उत्पन्न करने वाले **पवित्रेण** = पवित्र, पावन द्वारा **सवेन** = ऐश्वर्यवान् द्वारा, उत्पन्न करने वाले द्वारा **च** = और **अस्मान्** = हमें, हमको **पुनीहि** = पवित्र करो **चक्षसे** = देखने के लिए, देखते हो **॥ 3 ॥**

पदार्थ - उभाभ्याम् = दोनों के लिए, पूर्णताओं के लिए (उभय - दोनो, उभ् - पूर्ण करना, भरना)। **देव** = देव, विद्वान्, तेजस्वी, दिव्यस्वरूप (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **सवितः** = सवित, ऐश्वर्य युक्त और उत्पन्न करने वाले (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)। **पवित्रेण** = पवित्र, पावन द्वारा (पु - पालन करना, रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)। **सवेन** = ऐश्वर्यवान् द्वारा, उत्पन्न करने वाले द्वारा (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)। **च** = और। **अस्मान्** = हमें, हमको (सर्वनाम)। **पुनीहि** = पवित्र करो (पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)। **चक्षसे** = देखने के लिए, देखते हो (चक्ष् - स्पष्ट बोलना, कहना, देखना) **॥ 3 ॥**

35 अनुवाकः - 3

80 सूक्त - 11 (31)

319. आ अयम् गौः पृश्निः अक्रमीत्, असदत् मातरम् पुरः।
पितरम् च प्रयन् स्वः ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ : अयम् यह **गौः** गतिशील, **पृश्निः** सहनशील, सींचने वाला, **अक्रमीत्** चला, (विचरण किया अथवा पराक्रम किया)। **पुरः** पहले **मातरम्** माता के पास **असदत्** गया। **च** और **पितरम्** पिता के पास **प्रयन्** जाते हुए **स्वः** ऐश्वर्य को **अक्रमीत्** गया (पाया) **॥ 1 ॥**

भावार्थ : माता-पिता का सम्मान करते हुए शुभ गुणों को अपनाने वाला ऐश्वर्य को प्राप्त करता है **॥ 1 ॥**

पदार्थ : आयम् = यह। **गौः** = गतिशील (गम्, गा = जाना)। **पृश्निः** = सहनशील, सींचने वाला (पृश्, पृष् = सींचना, सहन करना)। **अक्रमीत्** = वृद्धि की, रक्षा की (क्रम् = जाना, बढ़ना, रक्षा करना, जानना, पाना)। **असदत्** = गया (सद् = जाना)। **मातरम्** = माता को (मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करन)। **पुरः** = पहले (पुर् = आगे जाना)। **पितरम्** = पिता को (पा = पालन करना)। **च** = और। **प्रयन्** = जाते हुए (या = जाना)। **स्वः** = स्वः (सु = उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना) **॥ 1 ॥**

320. अन्तः चरति रोचना अस्य प्राणात् अपानतः।
वि अख्यत् महिषो स्वः ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ : रोचना प्रकाश **प्राणात्** प्राण से **अपानतः** अपान तक **महिषो** पूजित, सम्मानित **स्वः** अपना, निज **वि अख्यत्** कहता हुआ **अन्तः** भीतर **चरति** विचरण करता है।

भावार्थ : प्राण अर्थात् चेतना शक्ति तथा ऊर्ध्वगामी श्वास-प्रश्वास से अपान अर्थात् अधोगामी वायु तक शरीर में व्याप्त पंच प्राणों के भीतर परमपिता परमात्मा का दिव्य प्रकाश ही विचरण करता है। वह दिव्य स्तुतियों का व्याख्यान भी करता है। अर्थात् पंच प्राण के संचरण के साथ परमात्मा की स्तुति करते रहें॥ 2॥

पदार्थ : अन्तः = बीच में। **चरति** =विचरण करता है (चर - जाना, आचरण करना)। **रोचना** = प्रकाश (रुच् = रुचना, प्रकाशित होना)। **अस्य** = इसका। **प्राणात्** = प्राण से (अन- चेतन होना, जीवन होना)। **अपानतः** = अपान तक (अप - पालन करना, अन - जीना, समर्थ होना, जाना)। **व्यख्यत्** = कहता हुआ (वि + अख्यत्, ख्या = कहना, व्याख्यान करना)। **महिषो** = पूजित, सम्मानित (महि = पूजा करना, सम्मान करना)। **स्वः** = अपना, निज (सर्वनाम) **॥ 2 ॥**

321. त्रिंशत् धाम वि राजति, वाक् पतङ्गः अशिश्रियत्।
प्रति वस्तोः अहः द्युभिः ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ : त्रिंशत् तीस **धाम** धाम **वि राजति** प्रकाशित होता है। **पतङ्गः** ऐश्वर्य **वाक्** वाणी **अशिश्रियत्** = अशिश्रय, व्याप्त, प्राप्त परिपक्व करते हुए **प्रति** प्रति (प्रत्येक या सभी) **वस्तोः** प्रातःकाल **द्युभिः** प्रकाश द्वारा **अहः** व्यापक हो **॥ 3 ॥**

भावार्थ : तीस धाम का आशय मानव जीवन या शरीर ही प्रतीत होता है। तीस संख्या से किन गुणों आदि का संकेत है, यह विचारणीय है। हमारी वाणी ही ऐश्वर्य तथा यश का कारण होती है। वाणी में स्नेह, मधुरता हो, स्तुति करें, वेदमन्त्रों का पाठ तथा स्वाध्याय करें तो प्रत्येक प्रभात प्रकाश से व्याप्त होगा। प्रातःकाल सूर्य का प्रकाश तो फैलता ही है, उसी तरह परमात्मा की कृपा, आनन्द, उल्लास का प्रकाश भी व्यापक हो, यही भावना है **॥ 3 ॥**

पदार्थ : त्रिंशत् = तीस। **धाम** = धाम (धा = धारण करना, पोषण करना)। **विराजति** = प्रकाशित होता है (राज् = प्रकाशित होना, शोभित होना, चमकना)। **वाक्** = वाणी (वच, वद - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)। **पतङ्गः** = विद्या, ऐश्वर्य (पत् = ऐश्वर्य होना)। **अशिश्रियत्** = अशिश्रय, व्याप्त, प्राप्त परिपक्व करते हुए (अश् = भोजन करना, अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, अ - नहीं, श्रा = परिपक्व करना, पकाना, रांधना, उबालना, स्वेदन करना, श्री = सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना, श्री-श्रीण = पकाना, रांधना)। **प्रति** = सम्बन्ध में, विषय में। **वस्तोः** = प्रातः (वस्त = प्रातः)। **अहः** = व्यापक (अह् = व्याप्त होना)। **द्युभिः** = प्रकाश द्वारा (द्युः = प्रकाश होना) **॥ 3 ॥**

36 अनुवाकः - 4

81 सूक्त - 1 (32)

322. अन्तः-दावे जुहुता सु एतत् यातुधान-क्षयणम् घृतेन।
आराद् रक्षांसि प्रति दह त्वम् अग्ने न नः गृहाणाम् उप तीतपासि॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - अन्तः-दावे = अन्तर्दाव में, अन्तः-दानशील, अन्तः-प्रगतिशील में **जुहुता** = दान करो, आदान-प्रदान करो **सु** = उत्तम, सुष्ठु, अच्छा, सुन्दर **एतत्** = यह **यातुधान-क्षयणम्** = यातुधान-क्षय को **घृतेन** = अभिसिञ्चित द्वारा, प्रकाशमान द्वारा **आराद् (आरात्)** = दूर से, समीप **रक्षांसि** = रक्षक **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में **दह** = जलाओ **त्वम्** = तुम **अग्ने** = हे अग्नि **न** = नहीं, समान, उपमार्थक **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा **गृहाणाम्** = गृहस्थों, गृहों, घरों को **उप** = समीप **तीतपासि** = तप करो, ताप करो **॥ 1 ॥**

पदार्थ - अन्तः-दावे = अन्तर्दाव में, अन्तः-दानशील, अन्तः-प्रगतिशील में (अन्तः - बीच में, भीतर (उपसर्ग, सर्वनाम), दु-दव् - जाना, सुगन्ध लेना, दा - देना, सौंपना, लौटाना, रखना)। **जुहुता** = दान करो, आदान-प्रदान करो (हु-जुहु = दान करना, आदान-प्रदान करना, ग्रहण करना, तृप्त करना, जु - जाना, शीघ्र जाना, भागना)। **सु** = उत्तम, सुष्ठु, अच्छा, सुन्दर (उपसर्ग)। **एतत्** = यह (सर्वनाम)। **यातुधान-क्षयणम्** = यातुधान-क्षय को (या - जाना, यत् - यत्न करना, प्रयास करना, उद्योग करना, दुःख देना, छाया-आच्छादन करना, रोकना, धा = धारण करना, क्षि - जाना, चलना,

जानना, पाना, निवास करना, रहना, बसना, क्षय होना)। **घृतेन =** अभिसिञ्चित द्वारा, प्रकाशमान द्वारा (घृ - गीला करना, बूंद बूंद गिरना, टपकना, क्षरित होना, सिञ्चन करना, सींचना, टपकना, क्षरण होना, झरना, चमकना, प्रकाश करना, घर्षण होना, नाश होना, शब्द होना)। **आराद् (आरात्) =** दूर से, समीप (अव्यय)। **रक्षांसि =** रक्षक (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना)। **प्रति =** प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग)। **दह =** जलाओ (दह् - जलाना, नष्ट करना, दुःख देना)। **त्वम् =** तुम (सर्वनाम)। **अग्ने =** हे अग्नि (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **न =** नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **गृहाणाम् =** गृहस्थों, गृहों, घरों को (गृह - लेना, स्वीकार करना, निवास करना)। **उप =** समीप (उपसर्ग)। **तीतपासि** = तप करो, ताप करो (तप् - तप्त होना, जलना, जलाना, तप्त करना, मन से या शरीर में जलना, ऐश्वर्ययुक्त होना) **॥ 1 ॥**

37 अनुवाकः - 5

82 सूक्त - 10 (51)

323. वायोः पूतः पवित्रेण,
प्रत्यङ् सोमो अतिद्रुतः।
इन्द्रस्य युज्यः सखा ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - वायोः = वायु का, प्रवाहमान का **पूतः =** पवित्रता युक्त, रक्षित **पवित्रेण =** पवित्र, पावन द्वारा **प्रत्यङ् =** प्रत्येक **सोमो =** ऐश्वर्यमय **अतिद्रुतः =** अतिशय वेगवान् **इन्द्रस्य =** इन्द्र का, परम ऐश्वर्यशाली का **युज्यः =** युज्य **सखा =** मित्र **॥ 1 ॥**

पदार्थ - वायोः = वायु का, प्रवाहमान का (वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वा = गति करना, पवन की भाँति बहना, जाना, जानना, पाना, गन्ध होना, प्रवाहित होना, प्रवाहित करना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण करना, घेरना, भेजना, खाना, वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना)। **पूतः =** पवित्रता युक्त, रक्षित (पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)। **पवित्रेण =** पवित्र, पावन द्वारा (पु - पालन करना, रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)। **प्रत्यङ् =** प्रत्येक (अव्यय)। **सोमो =** ऐश्वर्यमय (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना)। **अतिद्रुतः =** अतिशय वेगवान् (अति - अधिक, बहुत, द्रु - जाना, चलना, बहना, प्रवाहित होना)। **इन्द्रस्य =** इन्द्र का, परम ऐश्वर्यशाली का (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना, अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना, पीना)। **युज्यः =** युज्य (यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, बांधना, बन्धन करना, गूंथना, युज - जुड़ना, मिलाप करना, मन एकाग्र करना, एकत्र करना)। **सखा =** मित्र (सख् = मित्र होना) **॥ 1 ॥**

324. आपो अस्मान् मातरः सूदयन्तु, घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु ॥
विश्वम् हि रिप्रम् प्र वहन्ति देवीः, उत् इत् आभ्यः शुचिः आ पूतः एमि ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ : आपो व्यापक **मातरः** माताएँ अस्मान् हमको **सूदयन्तु** वर्षा करें, पवित्र करें। **घृतप्वः** अभिसिञ्चन से पवित्र करने वाले **नो** हमें **घृतेन** प्रकाश अभिसिञ्चन से **पुनन्तु** पवित्र करें। **देवीः** दिव्यताएँ **विश्वम् हि** सम्पूर्ण **रिप्रम्** श्रुति को **प्र वहन्ति** प्रवाहित कर रही हैं। **आभ्यः** उससे **उत् इत्** वही **शुचिः** शुद्धता **आ पूतः** पवित्रता **एमि** प्राप्त करता हूँ **॥ 2 ॥**

भावार्थ : व्यापक प्रकृति, दिव्य शक्तियाँ, व्यापक भाव विचार माता की तरह हमें शुद्ध पवित्र करते हैं। दिव्य श्रुति वेद वाणी, परमात्मा तथा प्रकृति का सन्देश निरन्तर प्रवाहित हो रहा है, उसे सुनें, समझें, आचरण करें तो पवित्रता प्राप्त होगी। उपासक दीक्षा और तप साधना का साकार विस्तार स्वरूप होता है। कल्याणकारी वरणीय का पोषण करते हुए उसे धारण करने का भाव है कि उपासकों को सहयोग संरक्षण प्रदान करें। वह भद्र अर्थात् कल्याणकारी और वरण करने योग्य है **॥ 2 ॥**

पदार्थ : आपः = व्यापक (आप् = व्याप्त होना, पाना)। **अस्मान्** = हमको। **मातरः** = माता (मा - मान करना, मापना)। **सूदयन्तु** = वर्षा करें, पवित्र करें (सूद् - टपकना, झरना, आश्रय करना, शुद्ध करना, पवित्र करना)। **घृतेन** = प्रकाश अभिसिञ्चन से (घृ = सींचना, प्रकाशित होना)। **नो** = हमको। **घृतप्वः** = अभिसिञ्चन से पवित्र करने वाले (घृ = सींचना, प्रकाशित होना ,पू = पवित्र करना)। **पुनन्तु** = पवित्र करें (पू = पवित्र करना)। **विश्वम्** = सबको, विश्व को। **हि** = ही। **रिप्रम्** = श्रुति को (री = सुनना)। **प्रवहन्ति** = प्रवाहित कर रही हैं। (वह् = वहन करना, ले जाना)। **देवीः** = दिव्य शक्तियाँ (दिव् = तेजस्वी होना, जानना)। **उदित्** (उत् + इत्) = वही। **आभ्यः** = उससे। **शुचिः** = शुद्धता (शुच् = पवित्र होना, करना)। **आ-पूतः** = पवित्रता (पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)। **एमि** = जाते हैं (ई - जाना) **॥ 2 ॥**

38 अनुवाकः - 6

83 सूक्त - 2 (53)

325. पुनः प्राणः पुनः आत्मा नः आ एतु, पुनः चक्षुः पुनः असुः नः आ एतु। वैश्वानरो नः अदब्धः तनूपा अन्तः, तिष्ठाति दुरितानि विश्वा ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ : पुनः = फिर **प्राणः** = प्राण **पुनः** = फिर **आत्मा** = आत्मा **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **पुनः** = फिर **चक्षुः** = नेत्र **पुनः** = फिर **असु =** ऐश्वर्यमय, उत्पन्न करने वाला **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **एतु =** प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे **वैश्वानरः** = विश्वनायक **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा **अदब्धः** = अहिंसनीय **तनूपा** = विस्तृत पालक रक्षक **अन्तः =** बीच में, भीतर **तिष्ठाति =** प्रतिष्ठित है, स्थित है, ठहरा है, खड़ा है **दुरितानि =** बुराइयाँ, दुःख **॥ 2 ॥**

भावार्थ : परमेश्वर से दूर होकर हम अपना सब कुछ खो देते हैं। उपासना से हमें सब कुछ पुनः प्राप्त होता है। मन, आयु, प्राण, आत्मा का पृथक् उल्लेख होने से स्पष्ट है कि ये सभी पृथक् तत्व हैं। इनके पुनः प्राप्त होने से यह भी स्पष्ट है कि जीव या प्राणी इन सभी से पृथक् है जिसे यह सब प्राप्त होता है। आत्मा के भी पुनः प्राप्त होने का स्पष्ट उल्लेख होने से स्पष्ट है कि आत्मा को मन, प्राण, आयु, देह नहीं प्राप्त होता है, अपितु आत्मा भी जीव को प्राप्त होने वाले तत्वों में एक है। इससे स्पष्ट है कि जीव या प्राणी की सत्ता या अस्तित्व आत्मा से पृथक है। यह सम्भव है कि जीव या प्राणी इन सभी का समूह, संयोग, समवाय हो। मन, आत्मा, प्राण, शरीर, आयु ये सभी जीव के अंग या भाग हो सकते हैं। शरीर भौतिक पदार्थ है यद्यपि वह भी जैविक द्रव्य है तथा निर्जीव वस्तुओं से भिन्न हैं। आत्मा परमेश्वर की चेतना शक्ति है। परमात्मा की चेतन शक्ति जीव में सक्रिय होकर आत्मा कही जाती है। मन भी आत्मा की चेतन शक्ति से कार्य करता है। मन ही शरीर तथा जीवन का संचालन करता है **॥ 2 ॥**

पदार्थ : पुनः = फिर। **प्राणः** = प्राण (अन- जीवन होना, चेतन होना)। **पुनः** = फिर। **आत्मा** = आत्मा (अत - जाना, निरन्तर गतिशील रहना)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **पुनः** = फिर। **चक्षुः** = नेत्र (चक्ष् - साफ बोलना, कहना, देखना)। **पुनः** = फिर। **असु =** ऐश्वर्यमय, उत्पन्न करने वाला (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **एतु =** प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना, इच्छा करना, प्रेरणा करना)। **वैश्वानरः** = विश्वनायक (विश्व = सभी, नृ = ले जाना)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **अदब्धः** = अहिंसनीय (अद -नष्ट करना)। **तनूपा** = विस्तृत पालक रक्षक (तन् = विस्तार करना, पा = रक्षा-पालन करना)। **अन्तः =** बीच में, भीतर (उपसर्ग, सर्वनाम)। **तिष्ठाति =** प्रतिष्ठित है, स्थित है, ठहरा है, खड़ा है (तिष्ठ् = ठहरना, खड़ा होना)। **दुरितानि =** बुराइयाँ, दुःख (दुः = बुरा, अनुचित, कठिन, दु-दुर् = जाना, दूर जाना, दुःख होना, दुःख भोगना, तप्त करना, जलना, जलाना) **॥ 2 ॥**

326. सम् वर्चसा पयसा सम् तनूभिः, अगन्महि मनसा सम् शिवेन॥
त्वष्टा नः अत्र वरीयः कृणोतु, अनु नः मार्ष्टु तन्वो यत् वि रिष्टम्॥ 3॥

मन्त्रार्थ : सम् सम्यक् **वर्चसा** तेज, **पयसा** व्यापकता, **सम्** सम्यक् **शिवेन** कल्याणकारी **मनसा** मन, **तनूभिः** वाणी द्वारा **अगन्महि** जाते हैं। **त्वष्टा** प्रकाशक **नः** हमको, हमारे लिए, हमारा **अत्र** यहाँ **वरीयः** वरीय **कृणोतु** करो **अनु** पश्चात् **नः** हमको, हमारे लिए, हमारा **यत्** जो **वि रिष्टम्** विरिष्ट को **तन्वो** वह तुम्हारा **मार्ष्टु** शोधन करे॥ 3॥

भावार्थ : हमारा जीवनपथ सम्यक् तेज, व्यापकता, कल्याणकारी मन, वाणी से युक्त हो। सुदानी प्रकाशक परमात्मा ऐसे उपासक को सद्विद्या प्रदान करता है तथा न्यूनताओं-आच्छादनों, प्रेरणाओं को शुद्ध करता है॥ 3॥

पदार्थ : सम् = भलीभाँति, सम्यक्। **वर्चसा** = प्रकाश द्वारा, तेज द्वारा (वर्च् = प्रकाशित होना)। **पयसा** = विस्तार द्वारा (पयस् = विस्तार करना, फैलाना)। **सम्** = सम्यक्। **तनूभिः** = वाणी द्वारा (तन = विस्तार करना, फैलाना, शब्द करना)। **अगन्महि** = जाते हैं (गम् = जाना, जाना, पाना)। **मनसा** = मन से (मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना)। **सम्** = सम्यक्। **शिवेन** = शिव द्वारा, कल्याणकारी द्वारा (शिव् = कल्याण करना)। **त्वष्टा** = प्रकाशक (त्विष् = प्रकाशित होना)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **अत्र =** यहाँ (अव्यय)। **वरीयः =** वरीय (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **कृणोतु =** करो (कृ = करना)। **अनु** = पश्चात्। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **मार्ष्टु** = शुद्ध करो (मृज् = शुद्ध करना, मार्ज् = शब्द करना)। **तन्वः** = विस्तार (तनु = विस्तार करना)। **यत्** = जो। **वि रिष्टम्** = विरिष्ट को (रिश्-रिष - हिंसा करना, मार डालना या दुःख देना, मारने का यत्न करना)॥ 3॥

84 सूक्त - 4 (55)

327. इदावत्सराय परिवत्सराय,
सम्वत्सराय कृणुता बृहत् नमः।
तेषाम् वयम् सुमितौ यज्ञियानाम्,
अपि भद्रे सौमनसे स्याम्॥ 3॥

मन्त्रार्थ - बृहत् = महान्, बड़ा, विराट, बृहत् **इदावत्सराय =** इदावत्सर के लिए, प्राप्त वत्सर के लिए **परिवत्सराय =** परिवत्सर के लिए, परिवत् चलने वाले के लिए, परि के समान चलने वाले के लिए, पूर्ण करने वाले के समान चलने वाले के लिए **सम्वत्सराय =** सम्वत्सर के लिए **नमः =** नमन **कृणुता =** करो। **तेषाम् =** उनका **वयम् =** हम, हम सब, हम लोग **सुमतौ =** सुमति में, सुबुद्धि में **यज्ञियानाम् =** यज्ञियों, पूज्यों में **अपि =** भी, निकट **भद्रे =** कल्याणकारी **सौमनसे =** सुमति वाले, सुमति युक्त **स्याम् =** हों॥ 3॥

पदार्थ - इदावत्सराय = इदावत्सर के लिए, प्राप्त वत्सर के लिए (इ - जाना, जानना, पाना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना, वद् - कहना, समझाना, सृ - सरकना, चलना, जाना, जानना, पाना)। **परिवत्सराय =** परिवत्सर के लिए, परिवत् चलने वाले के लिए, परि के समान चलने वाले के लिए, पूर्ण करने वाले के समान चलने वाले के लिए (परि = सभी तरफ, उपसर्ग, पृ - भरना, पूर्ण करना, वद् = कहना, बोलना, सृ - चलना, सरकना)। **सम्वत्सराय =** सम्वत्सर के लिए (सम् - सम्यक्, सम् - न घबराना, एक समान रहना, वद् - बोलना, कहना, सृ - चलना, सरकना)। **कृणुता =** करो (कृ - करना)। **बृहत् =** महान्, बड़ा, विराट, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **नमः =** नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **तेषाम् =** उनका (सर्वनाम)। **वयम् =** हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **सुमतौ =** सुमति में, सुबुद्धि में (सु - सुन्दर, अच्छा, सु - उत्पन्न करना, पैदा करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, मन - मनन करना, जानना, समझना, स्वीकार करना, अभ्यास करना, स्थिर होना, गर्व होना)। **यज्ञियानाम् =** यज्ञियों, पूज्यों में (यज् - देवपूजा, संगतिकरण, दान करना)। **अपि =** भी, निकट (अव्यय)। **भद्रे =** कल्याणकारी (भदि-भन्द् = सुख होना, शुभ

कर्म करना, कल्याण होना)। **सौमनसे =** सुमति वाले, सुमति युक्त (सु - सुन्दर, अच्छा, सु - उत्पन्न करना, पैदा करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्‌भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, मन - मनन करना, जानना, समझना, स्वीकार करना, अभ्यास करना, स्थिर होना, गर्व होना)। **स्याम् =** हों (अस् - होना) ॥ **3** ॥

39 अनुवाकः - 7

85 सूक्त - 1 (62)

328. वैश्वानरीम् सूनृताम् आ रभध्वम्,
यस्याः आशाः तन्वो वीतपृष्ठाः।
तया गृणन्तः सधमादेषु,
वयम् स्याम पतयो रयीणाम् ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - वैश्वानरीम् = वैश्वानरी को, सबको ले जाने वाली को, विश्वनर, वैश्विक भावना वाला नर को **सूनृताम् =** सुनृता, उत्पत्ति-सृजन को ले जाने वाली **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **रभध्वम् =** आनन्दित हो, उपक्रम करो **यस्याः =** जिसका **आशाः =** आशायें **तन्वो =** विस्तार **वीतपृष्ठाः =** वीतपृष्ठ, प्रकाशक **तया =** उसके द्वारा **मदन्तः =** हर्षित, तृप्त **सधमादेषु =** सधमादों में **वयम् =** हम, हम सब, हम लोग **स्याम =** हों **पतयो =** ऐश्वर्यवान् स्वामी **रयीणाम् =** विद्या गतिशीलता के लिए ॥ **2** ॥

पदार्थ - वैश्वानरीम् = वैश्वानरी को, सबको ले जाने वाली को, विश्वनर, वैश्विक भावना वाला नर को (विश्व - सब, नृ - चलना, ले जाना, विनय होना)। **सूनृताम् =** सुनृता, उत्पत्ति-सृजन को ले जाने वाली (सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, आसवन करनाा, नृ = ले जाना)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **रभध्वम् =** आनन्दित हो, उपक्रम करो (रभ - कार्य आरम्भ करना, आनन्दित होना, प्रसन्न होना)। **यस्याः =** जिसका (सर्वनाम)। **आशाः =** आशायें (आ- समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, शास् = आशीर्वाद देना, बोध करना, शासन करना, भला चाहना, आशा करना)। **तन्वो =** विस्तार (तन्-तनु = विस्तार, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, वर्णन करना, फैलाना, बढ़ाना, भरोसा करना, आश्रय देना)। **वीतपृष्ठाः =** वीतपृष्ठ, प्रकाशक (वी = जाना, व्याप्त होना, कान्ति होना, प्रकाश होना, चमकना। पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना, पृश् = प्रश्न करना, पूंछना, पृश्, पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सींचना, सहन करना)। **तया =** उसके द्वारा (सर्वनाम)। **गृणन्तः =** वाणी, बोध, अभिसिंचन करते हुए (गृ-गृण् = शब्द करना, सिञ्चन करना, घर्षण करना, जानना, समझना, निगलना, बहिर्गमन करना, गृ - शब्द करना, गा-गै = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना)। **सधमादेषु =** सधमादों में (सद् = जाना, जानना, पाना, पहुँचना)। **वयम् =** हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **स्याम =** हों (अस् = होना)। **पतयो =** ऐश्वर्यवान् स्वामी (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **रयीणाम् =** विद्या गतिशीलता के लिए (रय्-रि, री - चलना, जाना, जानना, पाना, री-रै - शब्द करना) ॥ **2** ॥

86 सूक्त - 2 (63)

329. सम् सम् इत् युवसे वृषन्,
अग्ने विश्वानि अर्यः आ।
इडस्पदे सम् इध्यसे,
स नो वसूनि आ भर ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ- वृषन् = हे शक्तिशाली, पराक्रमी **अग्ने =** हे अग्नि **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति **इत् =** ही **विश्वानि =** सभी **अर्यः =** अर्य को, प्रगतिशील को **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण **युवसे =** युक्त करते हो **इडस्पदे =** स्तुतियों के पद में **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति **इध्यसे =** गति, ज्ञान, प्रकाश करते हो

स = वह **नो** = हमारे लिए **वसूनि** = वसुओं को **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण **भर** = भरण करो, पूर्ण करो ॥ **4** ॥

भावार्थ - हे शक्तिशाली, पराक्रमी अग्निस्वरूप परमात्मा, सम्यक् रूप से सभी प्रगतिशीलताओं को सम्यक्, सम्पूर्ण रूप से युक्त करते हो। स्तुतियों के पद में भली भाँति गति, ज्ञान, प्रकाश करते हो। हमारे लिए वसुओं को समन्तात् भरण करो, पूर्ण करो। सम्पूर्ण सृष्टि गतिशील है। सम्पूर्ण गति-प्रगति को उत्पन्न करने वाला परमात्मा ही है। वह परमात्मा स्तुतियों के पदों में प्रकाशित है। वेद मन्त्रों को स्तुति भी कहते हैं। वह परमात्मा वेद मन्त्रों में प्रकाशित है अर्थात् वेद मन्त्रों से हम परमात्मा को जान सकते हैं तथा उसका प्रकाश प्राप्त कर सकते हैं। उससे प्रार्थना है कि हमें प्रगतिशीलता से संयुक्त करे। हमारे जीवन में प्रगति हो। हमें वसु अर्थात् वास-स्थान, वसन-वासन आदि संसाधन प्राप्त हों ॥ **4** ॥

पदार्थ - **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **इत्** = ही (अव्यय)। **युवसे** = युक्त करते हो (यु - संयोग-वियोग करना, मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना)। **वृषन्** = शक्तिशाली, पराक्रमी (वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना)। **अग्ने** = हे अग्नि (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **विश्वानि** = सभी (सर्वनाम)। **अर्यः** = अर्य को, प्रगतिशील को (ऋ - जाना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना, पहुँचाना, अर्-ऋ - गति करना, जाना, जानना, पाना, शब्द करना, व्याप्त होना, मिलाना, महत्व दिखाना, हिंसा करना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग)। **इडः** = स्तुति का (इड - धारण करना, घर्षण करना, छेदन करना, ईड् = स्तुति करना)। **पदे** = पद में, चलने में, विद्या में (पद् - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **इध्यसे** = गति, ज्ञान, प्रकाश करते हो (इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)। **स** = वह, उसने । **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **वसूनि** = वसुओं को (वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग)। **भर** = भरण करो, पूर्ण करो (भृ - भरण करना, पूर्ण करना) ॥ **4** ॥

40 अनुवाकः - 8

87 सूक्त - 1 (73)

330. आ इह यातु वरुणः सोमः अग्निः बृहस्पतिः वसुभिः इह यातु। अस्य श्रियम् उप-संयात् सर्वे उग्रस्य चेत्तुः सम्-मनसः सजाताः ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **इह** = इसमें, यहां, यह **यातु** = प्राप्त हो, जाये **वरुणः** = वरुण **सोमः** = ऐश्वर्यवान् सृष्टिकर्ता, सोम **अग्निः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, तेजस्वी, विद्वान् **बृहस्पतिः** = बृहस्पति, महान्, बड़ा **वसुभिः** = वसुओं द्वारा **इह** = इसमें, यहां, यह **यातु** = प्राप्त हो, जाये **अस्य** = इसका **श्रियम्** = श्रिय को **उप-संयात्** = भली-भाँति प्राप्त करो **सर्वे** = सब **उग्रस्य** = उग्र का **चेत्तुः** = चेतनशील, विद्वान् **सम्-मनसः** = समान मन वाले **सजाताः** = सम्बन्धी ॥ **1** ॥

पदार्थ - **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **इह** = इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **यातु** = प्राप्त हो, जाये (या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)। **वरुणः** = वरुण (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **सोमः** = ऐश्वर्यवान् सृष्टिकर्ता, सोम (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना, सो–स्य, सय - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना)। **अग्निः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, तेजस्वी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **बृहस्पतिः** = बृहस्पति, महान्, बड़ा (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना, पत् - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना, नीचे जाना, गिरना, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **वसुभिः** = वसुओं द्वारा (वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना,

निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)। **इह =** इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **यातु =** प्राप्त हो, जाये (या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)। **अस्य =** इसका (सर्वनाम)। **श्रियम् =** श्रिय को (श्रा = पकाना, रांधना, उबालना, स्वेदन करना, श्री = सेवा करना, व्याप्त होना, श्रेय होना, आश्रय होना, समृद्धि होना, शोभा होना, श्री-श्रीण = पकाना, रांधना)। **उप-संयात् =** भली-भाँति प्राप्त करो (उप - समीप, सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)। **सर्वे =** सब (सर्वनाम)। **उग्रस्य =** उग्र का (उग् - उग्र - उग्र होना, तेज होना)। **चेत्तुः =** चेतनशील, विद्वान् (चि - चुनना, एकत्र करना, चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, सम्यक् ज्ञान होना, स्मरण करना, शंका करना, सन्देह करना)। **सम्-मनसः =** समान मन वाले (स - सहित, साथ, सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना)। **सजाताः =** सम्बन्धी (स - साथ, सहित, सज्, संज = सम्बन्धी होना, आलिंगन करना, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना) **॥ 1 ॥**

41 अनुवाकः - 9

88 सूक्त - 5 (87)

331. आ त्वा अहार्षम् अन्तः अभूः,
ध्रुवः तिष्ठ अविचाचलत्।
विशः त्वा सर्वा वाञ्छन्तु,
मा त्वत् राष्ट्रम् अधि भ्रशत् ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण **त्वा =** तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **अहार्षम् =** व्यापक, सर्वव्यापी ऋषित्व या अन्तर्दृष्टि को **अन्तः =** बीच में, भीतर **अभूः =** हो गया, हुआ **ध्रुवः =** ध्रुव, अचल, स्थिर, अविचल गतिशील **तिष्ठ =** उठो, ठहरो, खड़े हो **अविचाचलत् =** अविचल, अविचलित **विशः =** विश, प्रतिष्ठित, प्रवेशी **त्वा =** तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **सर्वा =** सभी **वाञ्छन्तु =** वाञ्छा करें, इच्छा करें, चाहें **मा =** नहीं, मत **त्वत् =** तुमसे **राष्ट्रम् =** राष्ट्र को **अधि =** अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार **भ्रशत् =** पतित हुए **॥ 1 ॥**

भावार्थ - अहार्षम् का अर्थ अह-ऋषम् पदच्छेद करने पर व्यापक, सर्वव्यापी ऋषित्व या अन्तर्दृष्टि हो सकता है। अह् धातु का अर्थ फैलना, विस्तृत होना, व्यापना तथा ऋष् धातु का अर्थ अन्तर्गमन करना, अन्तर्दृष्टि होना, जाना, पाना, जानना होता है। इसमें हृ धातु मानने पर इसका अर्थ हरण किया, ले गये, प्राप्त किया होगा। दोनो अर्थ स्वीकार्य हैं। उस परमात्मा को हम अपने अन्तस्थल में हृदय में धारण करें। उसे अविचल प्रतिष्ठित करें। सब उसकी ही कामना करें। राष्ट्र कभी भ्रष्ट न हो **॥ 1 ॥**

पदार्थ - **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग)। **त्वा =** तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **अहार्षम् =** व्यापक, सर्वव्यापी को जानने वाले (अह-ऋषम्, अह - फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, ऋष - अन्तर्गमन करना, अन्तर्दृष्टि होना, जाना, पाना, जानना)। **अन्तः =** बीच में, भीतर (उपसर्ग, सर्वनाम)। **अभूः =** अभू, हो गया, हुआ (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **ध्रुवः =** ध्रुव, अचल, स्थिर, अविचल गतिशील (ध्रुव् = अचल होना, स्थिर होना, जाना, गति करना, जानना, पाना)। **तिष्ठ =** उठो, ठहरो, खड़े हो (तिष्ठ् = ठहरना, खड़ा होना)। **अविचाचलत् =** दर्शनीय, कथनीय, वर्णनीय (च = और। (अच् - मरना, जाना, चलना, आदर करना, मांगना। चक्ष् = स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)। **विशः =** विश, प्रतिष्ठित, प्रवेशी (विश - भीतर जाना, चारों ओर फैलना)। त्वा = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **सर्वा =** सभी (सर्वनाम)। **वाञ्छन्तु =** वाञ्छा करें, इच्छा करें, चाहें (वाञ्छ् = इच्छा करना, चाहना)। **मा =** नहीं, मत (अव्यय)। **त्वत् =** तुमसे (सर्वनाम)। **राष्ट्रम् =** राष्ट्र को (रास = शब्द करना। राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **अधि =** अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **भ्रशत् =** पतित हुए (भृश्-भ्रश - पतित होना, गिरना, भ्रष्ट होना) **॥ 1 ॥**

42 अनुवाकः - 10

89 सूक्त - 4 (96)

332. या ओषधीः सोमराज्ञीः,
बह्वीः शतविचक्षणाः।
बृहस्पति प्रसूताः ता,
नो मुञ्चन्तु अंहसः॥ 1॥

मन्त्रार्थ - **या** = जो **ओषधीः** = ओषधियाँ **सोमराज्ञीः** = ऐश्वर्यवान् सृष्टिकर्ता, सोमराज्ञी **बह्वीः** = बहुत, बहने वाले, बहुविधि **शतविचक्षणाः** = शतविचक्षणा **बृहस्पति** = बृहस्पति, महान्, बड़ा **प्रसूताः** = उत्पन्न हुई, उत्पन्न करने वाली **ता** = वे **नो** = हमको **मुञ्चन्तु** = मुक्त करें **अंहसः** = प्रकाशमान॥ **1**॥

पदार्थ - **या** = जो (सर्वनाम)। **ओषधीः** = ओषधियाँ (उषध्-ओषध् = चिकित्सा करना, रोग मुक्त करना)। **सोमराज्ञीः** = ऐश्वर्यवान् सृष्टिकर्ता, सोमराज्ञी (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना, राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **बह्वीः** = बहुत, बहने वाले, बहुविधि (बह - बहना, बहु - बहुत, सर्वनाम)। **शतविचक्षणाः** = शतविचक्षणा (शत = सौ, वि = विशेष, विपरीत,चक्ष् - स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)। **बृहस्पति** = बृहस्पति, महान्, बड़ा (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना, पत् - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना, नीचे जाना, गिरना, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **प्रसूताः** = उत्पन्न हुई, उत्पन्न करने वाली (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, सु - उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना)। **ता** = वे, वह, वे दोनो (सर्वनाम)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **मुञ्चन्तु** = मुक्त करें (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **अंहसः** = प्रकाशमान (अंह् = प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, कुटिल गति करना, मथना) **॥ 92 ॥**

333. मुञ्चन्तु मा शपथ्यात्,
अथो वरुण्यात् उत।
अथो यमस्य पड्वीशात्,
विश्वस्मात् देवकिल्विषात्॥ 2॥

मन्त्रार्थ - **मुञ्चन्तु** = मुक्त करों **मा** = नहीं, मुझको **शपथ्यात्** = शपथ लें **अथो** = अब, इसके बाद, इसके अनन्तर **वरुण्यात्** = वरण करे, वरणीय, वरण करने वाला **उत** = ही **अथो** = अब, इसके बाद, इसके अनन्तर **यमस्य** = यम का **पड्वीशात्** = पड्वीशात् **विश्वस्मात्** = सारे संसार के, सबका **देवकिल्विषात्** = देवकिल्विष॥ **2**॥

पदार्थ - **मुञ्चन्तु** = मुक्त करों (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **मा** = नहीं, मुझको (सर्वनाम)। **शपथ्यात्** = शपथ लें (शप् = शपथ लेना, प्रतिज्ञा करना, शाप देना, निन्दा करना)। **अथो** = अब, इसके बाद, इसके अनन्तर (अव्यय)। **वरुण्यात्** = वरण करे, वरणीय, वरण करने वाला (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **उत** = ही (अव्यय)। **अथो** = अब, इसके बाद, इसके अनन्तर (अव्यय)। **यमस्य** = यम का (यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)। **पड्वीशात्** = पड्वीशात् (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना, पद् - चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना। विश् = प्रवेश करना, भीतर जाना, विष्ण-विष् -विविष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना, व्यापना, फैलना, प्रसृत होना)। **विश्वस्मात्** = सारे संसार के, सबका। **देवकिल्विषात्** = देवकिल्विष (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना, किल् - श्वेत होना, खेलना, भेजना, उड़ाना, विष् - उपयोग न होने से अलग करना या निकाल देना, व्याप्त होना, फैलना, सींचना) **॥ 2 ॥**

90 सूक्त - 5 (97)

334. इमम् वीरम् अनु हर्षध्वम् उग्रम्
इन्द्रम् सखायो अनु सम् रभध्वम्
ग्रामजितम् गोजितम् वज्रबाहुम्,
जयन्तम् अज्म प्रमृणन्तम् ओजसा ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - **इमम्** = इसको **वीरम्** = पराक्रमी, वीर को **अनु** = पश्चात्, पीछे, अनुकूल **हर्षध्वम्** = आनन्दित करो, हर्ष करो **इन्द्रम्** = इन्द्र को **सखायो** = मित्र **अनु** = पश्चात्, पीछे, अनुकूल **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **रभध्वम्** = आनन्दित हो, उपक्रम करो **ग्रामजितम्** = ग्राम-जित को **गोजितम्** = गो-जित को, शब्द, मननशील, उपदेशक को जीतने वाले को **वज्रबाहुम्** = वज्रबाहु को **जयन्तम्** = जीतने वाले **अज्म** = गतिमान्, वेग से जाने वाला **प्रमृणन्तम्** = प्रमृणन्त को **ओजसा** = ओज द्वारा ॥ 3 ॥

पदार्थ - **इमम्** = इसको (सर्वनाम)। **वीरम्** = पराक्रमी, वीर को (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)। **अनु** = पश्चात्, पीछे, अनुकूल (उपसर्ग)। **हर्षध्वम्** = आनन्दित करो, हर्ष करो (हृष - हृष्ट होना, सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना, झूठ बोलना, मिथ्या बोलना)। **उग्रम्** = उग्र को (उग् - उग्र - उग्र होना, तेज होना)। **इन्द्रम्** = इन्द्र को (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **सखायो** = मित्र (सख् = मित्र होना)। **अनु** = पश्चात्, पीछे, अनुकूल (उपसर्ग)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **रभध्वम्** = आनन्दित हो, उपक्रम करो (रभ - कार्य आरम्भ करना, आनन्दित होना, प्रसन्न होना)। **ग्रामजितम्** = ग्राम-जित को (ग्राम - बुलाना, बुद्धिपूर्वक कहना, एकत्र होना, जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)। **गोजितम्** = गो-जित को, शब्द, मननशील, उपदेशक को जीतने वाले को (गु - शब्द करना, मनन करना, अस्पष्ट बोलना, जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)। **वज्रबाहुम्** = वज्रबाहु को (वज् - गति करना, जाना, बाह् - प्रयास करना, बह् - बहना, गति करना, बाहर होना, परे हो जाना, हिंसा करना)। **जयन्तम्** = जीतने वाले (जि - सब से बढ़ कर होना, जीतना)। **अज्म** = गतिमान्, वेग से जाने वाला (अज - जाना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना)। **प्रमृणन्तम्** = प्रमृणन्त को (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, मृण् - हिंसा करना, मारना, छिद्र करना)। **ओजसा** = ओज द्वारा (ओज - शक्तिमान् होना, जीवित होना, बढ़ना) ॥ 3 ॥

43 अनुवाकः - 11

91 सूक्त - 4 (106)

335. अपाम् इदम् नि अयनम्,
समुद्रस्य निवेशनम्।
मध्ये हृदस्य नो गृहाः,
पराचीना मुखा कृधि ॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ - **अपाम्** = अपा को, पालकों का **इदम्** = यह, इसको **नि** = निश्चित, निरन्तर **अयनम्** = गति, ज्ञान, प्राप्ति, उद्धार, प्रेरणा **समुद्रस्य** = समुद्र का **निवेशनम्** = प्रवेश करने वाले को, निवेश करने वाले को **मध्ये** = मध्य में **हृदस्य** = हृद का **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा **गृहाः** = गृहस्थ, गृह, घर **पराचीना** = दूसरी ओर **मुखा** = मुख **कृधि** = करो ॥ 7 ॥

पदार्थ - **अपाम्** = अपा को, पालकों का (अप - पालन करना)। **इदम्** = यह, इसको (सर्वनाम)। **नि** = निश्चित, निरन्तर (उपसर्ग)। **अयनम्** = गति, ज्ञान, प्राप्ति, उद्धार, प्रेरणा (अ - नहीं, यन् - उद्धार करना, प्रेरणा करना, अय् = जाना, जानना, पाना)। **समुद्रस्य** = समुद्र का (सम् = सम्यक्, भलीभांति, सम् - न घबराना, एक समान रहना, उत् - उच्च, ऊपर, उत्कृष्ट, रा - दान करना, देना, उन्द - आर्द्र होना, गीला होना, द्रु - पिघलना, बहना, चलना, जाना, जानना, पाना,

अनुसरण करना)। **निवेशनम्** = प्रवेश करने वाले को, निवेश करने वाले को (नि - निश्चित, विश - प्रवेश करना, भीतर जाना, धंसना)। **मध्ये** = मध्य में (सर्वनाम)। **हृदस्य** = हृद का (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)। **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **गृहाः** = गृहस्थ, गृह, घर (गृह - लेना, स्वीकार करना, निवास करना)। **पराचीना** = दूसरी ओर (परा = परम, परे, पीछे, विपरीत, अव्यय)। **मुखा** = मुख (मुख् - मुख्य होना, जाना, खाना)। **कृधि** = करो (कृ = करना) **॥ 7 ॥**

336. हिमस्य त्वा जरायुणा,
शाले परि व्ययामसि।
शीतह्रदा हि नो भुवः
अग्निः कृणोतु भेषजम् ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - **हिमस्य** = हिम का, गतिवान्, गति-वृद्धि, शीतल का **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **जरायुणा** = जीर्ण, वृद्ध या परिपक्व आयु वालों द्वारा **शाले** = हे शाल! **परि** = सभी तरफ **व्ययामसि** = व्यय करते हो **शीत-ह्रदा** = शीत-ह्रद **हि** = ही, निश्चय **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा **भुवः** = भुवः **अग्निः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, तेजस्वी, विद्वान् **कृणोतु** = करो **भेषजम्** = भेषज को, औषधि को॥ 3॥

पदार्थ - **हिमस्य** = हिम का, गतिवान्, गति-वृद्धि, शीतल का (हि - जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना, हिम - शीत होना)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **जरायुणा** = जीर्ण, वृद्ध या परिपक्व आयु वालों द्वारा (जृ - वृद्ध होना, जीर्ण होना, अय - जाना, जानना, पाना)। **शाले** = हे शाल! (शल - जाना, जल्दी जाना, चुभना, आच्छादित करना, ढकना, शल - गति करना, विस्मरण होना, शल - प्रशंसा करना, स्तुति करना)। **परि** = सभी तरफ (उपसर्ग)। **व्ययामसि** = व्यय करते हो (वि - विशेष, इ-अय् - जाना, जानना, पाना, व्यय - आच्छादन करना, उपयोग होना, खर्च होना, नाश होना)। **शीत-ह्रदा** = शीत-ह्रद (शि - तीक्ष्ण करना, पैना करना, पतला करना, सुनना, शी = सोना, शयन करना, हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, लेना, ग्रहण करना, नष्ट करना)। **हि** = ही, निश्चय (अव्यय)। **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **भुवः** = भुवः (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **अग्निः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, तेजस्वी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **कृणोतु** = करो (कृ = करना)। **भेषजम्** = भेषज को, औषधि को (भिषज् - रोग मुक्त करना, चिकित्सा करना, नष्ट करना, भेष - डरना, जाना, जानना, पाना) **॥ 3 ॥**

92 सूक्त - 6 (108)

337. याम् ऋषयो भूतकृतो, मेधाम् मेधाविनः विदुः।
तया माम् अद्य मेधया, अग्ने मेधाविनम् कृणु ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - **अग्ने** हे अग्नि, (परमात्मन्), **याम्** जिस **मेधाम्** बुद्धि को **ऋषयो** = ऋषिगण **भूतकृतो** = भूत-कृत **मेधाविनः** = मेधावी **विदुः** = विद्वान् **तया** उससे **मेधया** मेधा से, **माम्** मुझको **अद्य** आज **मेधाविनम्** मेधावी **कृणु** करो **॥ 4 ॥**

भावार्थ - देवगण तथा पितर मेधा की उपासना करते रहे हैं। मेधा की उपासना से ही सुख, शान्ति, प्रगति सम्भव है। अतः प्रार्थना की जा रही है कि हे परमात्मन्, मुझे भी उसी मेधा से मेधावी बना दो।

पदार्थ - **अग्ने** = हे अग्नि (अग् - जाना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना)। **याम्** = जिसको **मेधाम्** = बुद्धि को (मेधा - शीघ्र समझना, मेध् - समझना, जानना, सङ्गति करना, मेल करना, हिंसा करना)। **ऋषयो** = ऋषिगण (ऋष् - जानना, जाना, पाना, अन्तदृष्टि होना, अन्तर्गमन करना, सूक्ष्मता से भीतर देखना)। **भूतकृतो** = भूत-कृत (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना, कृ = करना)। **मेधाविनः** = मेधावी (मेधा - शीघ्र समझना, मेध् - समझना, जानना, सङ्गति करना, मेल करना, हिंसा करना)। **विदुः**

= विद्वान् (विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)। **तया** = उस **मेधया** = मेधा से (मेधा - शीघ्र समझना, मेध् - समझना, जानना, सङ्गति करना, मेल करना, हिंसा करना)। **माम्** = मुझको **अद्य** = आज **मेधाविनम्** = मेधावी (मेधा - शीघ्र समझना, मेध् - समझना, जानना, सङ्गति करना, मेल करना, हिंसा करना) **कृणु** = करो (कृ - करना) ॥ **4** ॥

44 अनुवाकः - 12

93 सूक्त - 10 (123)

338. एतम् सधस्थाः परि वो ददामि,
यम् शेव-धिम् आवहात् जातवेदाः।
अनु आगन्ता यजमानः स्वस्ति,
तम् स्म जानीत परमे व्योमन्॥ 1॥

मन्त्रार्थ - **एतम्** = यह, इसको **सधस्थाः** = सहस्थान, सहगामी, साथ **परि** = सभी तरफ **वो** = तुम सबको **ददामि** = देता हूँ **यम्** = जिसे, जिसको = जहाँ **शेव-धिम्** = शेवधि को **आवहात्** = वहन किया, ले गये **जातवेदाः** = जातवेद, जन्म से विद्वान्, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले **अनु** = पश्चात्, पीछे, अनुकूल **आगन्ता** = आये हुए **यजमानः** = यजमान **स्वस्ति** = कल्याण **तम्** = उसको, उसे **स्म** = है **जानीत** = उत्पन्न किया **परमे** = परम, अत्यन्त, उच्चतम, प्रमुखतम में **व्योमन्** = व्योम ॥ **1** ॥

पदार्थ - **एतम्** = यह, इसको (सर्वनाम)। **सधस्थाः** = सहस्थान, सहगामी, साथ (सद् = जाना, जानना, पाना, पहुँचना)। **परि** = सभी तरफ (उपसर्ग)। **वो** = तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका, तुम्हारा, तुमको, तुम लोग (सर्वनाम)। **ददामि** = देता हूँ (दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)। **यम्** = जिसे, जिसको = जहाँ (सर्वनाम)। **शेव-धिम्** = शेवधि को (शेव - सेचन, घर्षण, सेवा करना, सभा में होना, पवित्र होना, जाना, धा - धारण करना)। **आवहात्** = वहन किया, ले गये (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना, वह् = ले जाना, वहन करना)। **जातवेदाः** = जातवेद, जन्म से विद्वान्, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले (जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जा-ज्ञा - जानना, विद् - जानना)। **अनु** = पश्चात्, पीछे, अनुकूल (उपसर्ग)। **आगन्ता** = आये हुए (गम् = जाना, आ-गम् = आना)। **यजमानः** = यजमान (यज - देवपूजा करना, अर्पण करना, संगति करना, दान करना)। **स्वस्ति** = कल्याण (अव्यय)। **तम्** = उसको, उसे (सर्वनाम)। **स्म** = है (अस् - होना)। **जानीत** = उत्पन्न किया (ज्ञा-जा - जानना, समझना, जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **परमे** = परम, अत्यन्त, उच्चतम, प्रमुखतम में (सर्वनाम)। **व्योमन्** = व्योम (वि - विशेष, उ - शब्द करना, रक्षा करना, सुखाना, ऊ - शब्द करना, विश्वास करना) ॥ **1** ॥

339. जानीत स्म एनम् परमे व्योमन्,
देवाः सधस्था विद लोकम् अत्र।
अनु आगन्ता यजमानः स्वस्ति,
इष्टापूर्तम् स्म कृणुत आविः अस्मै॥ 2॥

मन्त्रार्थ - **जानीत** = उत्पन्न किया **स्म** = है **एनम्** = इसको, इसे **परमे** = परम, अत्यन्त, उच्चतम, प्रमुखतम में **व्योमन्** = व्योम **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने **सधस्था** = सहस्थान, सहगामी, साथ **विद** = विद्वान् **लोकम्** = लोक को, दर्शन को **अत्र** = यहाँ **अनु** = पश्चात्, पीछे, अनुकूल **आगन्ता** = आये हुए **यजमानः** = यजमान **स्वस्ति** = कल्याण **इष्टापूर्तम्** = विद्या, ज्ञान, इच्छा पूर्ति को **स्म** = है **कृणुत** = करो **आविः** = रक्षक, रक्षा करो, पालन करो **अस्मै** = इसके लिए, हमको, इस ॥ **2** ॥

पदार्थ - **जानीत** = उत्पन्न किया (ज्ञा-जा - जानना, समझना, जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **स्म** = है (अस् - होना)। **एनम्** = इसको, इसे (सर्वनाम)। **परमे** = परम, अत्यन्त, उच्चतम, प्रमुखतम में (सर्वनाम)। **व्योमन्** = व्योम (वि - विशेष, उ - शब्द करना, रक्षा करना, सुखाना, ऊ - शब्द करना, विश्वास करना)। **देवाः** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **सधस्था** = सहस्थान, सहगामी, साथ (सद् = जाना, जानना, पाना, पहुँचना)। **विद** = विद्वान् (विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना)। **लोकम्** = लोक को, दर्शन को (लोक् = देखना, प्रकाशित होना, बोलना)। **अत्र** = यहाँ (अव्यय)। **अनु** = पश्चात्, पीछे, अनुकूल (उपसर्ग)। **आगन्ता** = आये हुए (गम् = जाना, आ-गम् = आना)। **यजमानः** = यजमान (यज - देवपूजा करना, अर्पण करना, संगति करना, दान करना)। **स्वस्ति** = कल्याण (अव्यय)। **इष्टापूर्तम्** = विद्या, ज्ञान, इच्छा पूर्ति को (इष् - इच्छा करना, चाहना, बीनना, छानना, चबाना, चुनना, जाना, जानना, पाना, निरन्तर देखना, निरन्तर करना)। **स्म** = है (अस् - होना)। **कृणुत** = करो (कृ = करना)। **आविः** = रक्षक, रक्षा करो, पालन करो (अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)। **अस्मै** = इसके लिए, हमको, इस (सर्वनाम) **॥ 2 ॥**

45 अनुवाकः - 13

94 सूक्त - 1 (125)

340. वनस्पते वीड्वङ्गो हि भूयाः, अस्मत् सखा प्रतरणः सुवीरः।
गोभिः सम् नद्धो असि वीडयस्व, आस्थाता ते जयतु जेत्वानि॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - **वनस्पते** = विद्वान् **वीड्वङ्गो** = विशेष स्तुति करने वाला, विद्वान्, गतिशील, पाने वाला **हि** = ही, निश्चय **भूयाः** = होकर **अस्मत्** = हमसे **सखा** = मित्र **प्रतरणः** = तारने वाले **सुवीरः** = उत्तम वीर **गोभिः** = गो द्वारा, गो के साथ **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **नद्धो** = तत्पर, युक्त **असि** = हो **वीडयस्व** = वीडय कीजिए, दृढ़ कीजिए **आस्थाता** = प्रतिष्ठित **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **जयतु** = जीतें **जेत्वानि** = जीत, विजय **॥ 1 ॥**

पदार्थ - **वनस्पते** = विद्वान् (वन - शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, आपद्ग्रस्त होना, अलग करना, मिलाना, स्मरण करना, बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, याचना करना, मांगना, दुःख देना, उद्योग-धन्धा करना, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **वीड्वङ्गो** = विशेष स्तुति करने वाला, विद्वान्, गतिशील, पाने वाला (वि = विशेष, ईड् = स्तुति करना, वीड् - स्थिर होना, दृढ़ होना, अङ्गः = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)। **हि** = ही, निश्चय (अव्यय)। **भूयाः** = होकर (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **अस्मत्** = हमसे (सर्वनाम)। **सखा** = मित्र (सख् = मित्र होना)। **प्रतरणः** = तारने वाले (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, तॄ - पार जाना, तैरना, जीतना)। **सुवीरः** = उत्तम वीर (सु - अच्छा, सुन्दर, वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)। **गोभिः** = गो द्वारा, गो के साथ (गु - अस्पष्ट बोलना, शब्द करना, मनन करना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **नद्धो** = तत्पर, युक्त (नद् - शब्द करना, झंकार करना, चमकना, नध् - युक्त होना, जुड़ना, तैयार होना, तत्पर होना)। **असि** = हो (अस् - होना)। **वीडयस्व** = वीडय कीजिए, दृढ़ कीजिए (वि = विशेष, वीड् - स्थिर होना, दृढ़ होना)। **आस्थाता** = प्रतिष्ठित (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, अस् = होना, स्था = ठहरना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **जयतु** = जीतें (जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सबसे बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)। **जेत्वानि** = जीत, विजय (जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना) **॥ 1 ॥**

341. दिवः पृथिव्याः परि ओजः उद्भृतम्, वनस्पतिभ्यः परि आभृतम् सहः।
अपाम् ओज्मानम् परि गोभिः आवृतम्, इन्द्रस्य वज्रम् हविषा रथम् यज॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - **दिवः** = दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय **पृथिव्याः** = पृथ्वी योग्य, पृथिवी के **परि** = सभी तरफ **ओजः** = ओज

उद्भृतम् = उद्भृत् को, उत्कृष्ट भरण करने वाले को **वनस्पतिभ्यः** = वनस्पतियों के लिए **परि** = सभी तरफ **आभृतम्** = परिपूर्ण है **सहः** = सक्षम, समर्थ, तृप्त, सन्तुष्ट **अपाम्** = अपा को, पालकों का **ओज्मानम्** = ओजमान को **परि** = सभी तरफ **गोभिः** = गो द्वारा, गो के साथ **आवृतम्** = प्रकाश आदि को, आवृत को **इन्द्रस्य** = इन्द्र का, परम ऐश्वर्यशाली का **वज्रम्** = वज्र, गतिमान को **हविषा** = हविष से, दान व आदान-प्रदान द्वारा **रथम्** = रथ को **यज** = यजन करो **॥ 2 ॥**

पदार्थ - **दिवः** = दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)। **पृथिव्याः** = पृथ्वी योग्य, पृथिवी के (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)। **परि** = सभी तरफ (उपसर्ग)। **ओजः** = ओज (ओज - शक्तिमान् होना, जीवित होना, बढ़ना)।) **उद्भृतम्** = उद्भृत् को, उत्कृष्ट भरण करने वाले को (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, भृ = भरना, भरण-पोषण करना)। **वनस्पतिभ्यः** = वनस्पतियों के लिए (वन - शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, आपद्ग्रस्त होना, अलग करना, मिलाना, स्मरण करना, बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, याचना करना, मांगना, दुःख देना, उद्योग-धन्धा करना, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **परि** = सभी तरफ (उपसर्ग)। **आभृतम्** = परिपूर्ण है (आ - समन्तात्, पूर्णतः, भृ - भरण करना, पूर्ण करना)। **सहः** = सक्षम, समर्थ, तृप्त, सन्तुष्ट (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)। **अपाम्** = अपा को, पालकों का (अप - पालन करना)। **ओज्मानम्** = ओजमान को (ओज - शक्तिमान् होना, जीना, बढ़ना)। **परि** = सभी तरफ (उपसर्ग)। **गोभिः** = गो द्वारा, गो के साथ (गु - अस्पष्ट बोलना, शब्द करना, मनन करना)। **आवृतम्** = प्रकाश आदि को, आवृत को (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, भलीभाँति, वृत् = रहना, होना, वर्ताव करना, वरण करना, चमकना, बोलना)। **इन्द्रस्य** = इन्द्र का, परम ऐश्वर्यशाली का (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना, अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना, पीना)। **वज्रम्** = वज्र, गतिमान को (वज् - गति करना, जाना)। **हविषा** = हविष से, दान व आदान-प्रदान द्वारा (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **रथम्** = रथ को (रथ् = जाना, ले जाना, रम - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना)। **यज** = यजन करो (यज - यज्ञ करना, हवन करना, देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना, संयोग करना) **॥ 2 ॥**

342. इन्द्रस्य ओजः मरुताम् अनीकम्, मित्रस्य गर्भो वरुणस्य नाभिः।
सः इमाम् नो हव्यदातिम् जुषाणो, देव रथ प्रति हव्या गृभाय॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - **इन्द्रस्य** = इन्द्र का, परम ऐश्वर्यशाली का **ओजः** = ओज **मरुताम्** = मरुतों का, मरणशीलों का **अनीकम्** = स्पन्दनशील, चेतना, प्राण **मित्रस्य** = मित्र का **गर्भो** = गर्भ **वरुणस्य** = वरुण का **नाभिः** = नाभि **सः** = वह, उसने। **इमाम्** = इसको, इस **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा **हव्यदातिम्** = हव्यदाता को **जुषाणो** = विचारशील, सेवाभावी **देव** = देव, विद्वान्, तेजस्वी, दिव्यस्वरूप **रथ** = रथ **प्रति** = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में **हव्या** = दान योग्य **गृभाय** = गृभ के लिए, ग्रहण करने वाले, वाणी, बोध, अभिसिंचन करने वाले के लिए **॥ 3 ॥**

पदार्थ - **इन्द्रस्य** = इन्द्र का, परम ऐश्वर्यशाली का (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना, अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना, पीना)। **ओजः** = ओज (ओज - शक्तिमान् होना, जीवित होना, बढ़ना)। **मरुताम्** = मरुतों का, मरणशीलों का (मृ = मरना, देहत्याग करना)। **अनीकम्** = स्पन्दनशील, चेतना, प्राण (अन् = प्राण होना, चेतन होना, श्वास लेना, स्पन्दन करना, हलचल करना, जीवन होना, समर्थ होना, जाना)। **मित्रस्य** = मित्र का (मिद् - स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, नरम होना, मृदुल होना)। **गर्भो** = गर्भ (गृह् - ग्रहण करना, लेना, गृ = सींचना, गीला करना, घर्षण करना, जानना, समझना, खाना, निगलना, शब्द करना, गल्भ् - जाना, जानना, पाना, ज्ञान होना, चतुर होना, साहस होना, धैर्य रखना, गृभ्-गर्भ् - अन्दर होना, अन्तःवास करना)। **वरुणस्य** = वरुण का (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना,

नियोजित करना, आच्छादित करना)। **नाभिः =** नाभि (नभ - नष्ट होना, दुःख देना या मार डालना, हिंसा करना, मध्य में स्थित होना, केन्द्र होना)। **स =** वह, उसने। **इमाम् =** इसको, इस (सर्वनाम)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **हव्यदातिम् =** हव्यदाता को (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना, दा - दान करना, देना)। **जुषाणो =** विचारशील, सेवाभावी (जुष् = विचार करना, सेवा करना, सेवन करना, विवेक होना, विवेचना करना, प्रीति करना, चाहना, दुलारना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना)। **देव =** देव, विद्वान्, तेजस्वी, दिव्यस्वरूप (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **रथ =** रथ (रथ = जाना, ले जाना, रम - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना)। **प्रति =** सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (अव्यय)। **हव्या =** दान योग्य (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **गृभाय =** गृभ के लिए, ग्रहण करने वाले, वाणी, बोध, अभिसिंचन करने वाले के लिए (गृह् - ग्रहण करना, लेना, स्वीकार करना, निवास करना, गृ = सींचना, गीला करना, घर्षण करना, जानना, समझना, खाना, निगलना, शब्द करना, गल्भ् - जाना, जानना, पाना, ज्ञान होना, चतुर होना, साहस होना, धैर्य रखना, गृभ्-गर्भ् - ग्रहण करना, लेना, अन्दर होना, अन्तःवास करना) **॥ 3 ॥**

95 सूक्त - 2 (126)

343. उप श्वासय पृथिवीम् उत द्याम्, पुरुत्रा ते वन्वताम् विष्ठितम् जगत्।
स दुन्दुभे सजूः इन्द्रेण देवैः, दूरात् दवीयो अप सेध शत्रून्॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - उप = समीप **श्वासय =** जीवन हो, श्वास हो, प्राण हो **पृथिवीम् =** पृथिवी को **उत =** ही **द्याम् =** द्यु को, सबसे बढ़कर, विशिष्ट, प्रकाशमय **पुरुत्रा =** अग्रगामी, अग्रणी **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **वन्वताम् =** स्तुति करे, सेवा करे **विस्थितम् =** विस्तृत **जगत् =** संसार, गतिशील **स =** वह, उसने। **दुन्दुभे =** दुन्दुभ में **सजूः =** विचारशील, सेवाभावी, गले लगाने वाला **इन्द्रेण =** इन्द्र द्वारा **देवैः =** देवों द्वारा **दूरात् =** दूर से **दवीयो =** सुगन्धित **अप =** दूर, नीचे, अपकार **सेध =** सिद्ध हो **शत्रून् =** शत्रुओं को **॥ 1 ॥**

भावार्थ - दुन्दुभे शब्द, दुन् धातु और दुभ प्रत्यय के योग से बना है। (दुन्+दुभ)

पदार्थ - उप = समीप (उपसर्ग)। **श्वासय =** जीवन हो, श्वास हो, प्राण हो (श्वस - श्वास लेना, श्वासोच्छ्वास करना, जीना, जीते रहना)। **पृथिवीम् =** पृथिवी को (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)। **उत =** ही (अव्यय)। **द्याम् =** द्यु को, सबसे बढ़कर, विशिष्ट, प्रकाशमय (द्यु - आगे जाना, समीप जाना, द्युत् -दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, द्यै = तिरस्कार करना)। **पुरुत्रा =** अग्रगामी, अग्रणी (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना)। **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **वन्वताम् =** स्तुति करे, सेवा करे (वन - शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, आपद्ग्रस्त होना, अलग करना, मिलाना, स्मरण करना, बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, याचना करना, मांगना, दुःख देना, उद्योग-धन्धा करना)। **विस्थितम् =** विस्तृत (विष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना, व्यापना, फैलना, प्रसृत होना)। **जगत् =** संसार, गतिशील (जग् = गति करना, लेना, घर्षण करना)। **स =** वह, उसने। **दुन्दुभे =** दुन्दुभ में (दुन्+दुभ, दु = जाना, दुःख होना, तप्त करना, जलना, जलाना, दु-दुन = दुःख भोगना, जलना, तप्त करना, जलाना)। **सजूः =** विचारशील, सेवाभावी, गले लगाने वाला (स - साथ, सहित, संज्-सज् = गले लगाना, सम्बन्धी होना, स + जूः, जुष् = प्रसन्न करना, सन्तुष्ट करना, चाहना, दुलार करना, प्रीति करना, विचार करना, विवेक-विवेचना करना, हिंसा करना, सेवा करना)। **इन्द्रेण =** इन्द्र द्वारा (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **देवैः =** देवों द्वारा (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **दूरात् =** दूर से (दूरम् = दूर (अव्यय))। **दवीयो =** सुगन्धित (दु-दव् - जाना, सुगन्ध लेना)। **अप =** दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। **सेध =** सिद्ध हो (सिध् = जाना, सिद्ध होना)। **शत्रून् =** शत्रुओं को (शी-शद्-शत् - जीर्ण होना, गिरना, गिराना) **॥ 1 ॥**

344. आ क्रन्दय बलम् ओजो नः आ धाः, अभि ष्टन दुरिता बाधमानः।

अप सेध दुन्दुभे दुच्छुनाम् इतः, इन्द्रस्य मुष्टिः असि वीडयस्व ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण **क्रन्दय** = क्रन्दन करो, क्रन्दनयुक्त **बलम्** = बल **ओजो** = ओज **नः** हमको, हमारे लिए, हमारा **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण **धाः** = धारण करें **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा **ष्टन** = स्तन, शव्द, वाणी **दुरिता** = बुराई, दुःख **बाधमानः** = बाधित करने वाला, दुःख देने वाला **अप** = दूर, नीचे, अपकार **सेध** = सिद्ध हो **दुन्दुभे** = दुन्दुभ में **दुच्छुनाम्** = दुष्ट, दुःखी, तप्त करने वाले, गतिशील का **इत** = पाये, गति, ज्ञान, प्रकाश प्राप्त किया **इन्द्रस्य** = इन्द्र का, परम ऐश्वर्यशाली का **मुष्टिः** = मुष्टि **असि** = हो **वीडयस्व** = वीडय कीजिए **॥ 2 ॥**

भावार्थ - दुन्दुभे शब्द, दुन् धातु और दुभ प्रत्यय के योग से बना है। (दुन्+दुभ)

पदार्थ - **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग)। **क्रन्दय** = क्रन्दन करो, क्रन्दनयुक्त (क्रन्द् - रोना, पुकारना, दुःख होना)। **बलम्** = बल (बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना)। **ओजो** = ओज (ओज - शक्तिमान् होना, जीना, बढ़ना)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग)। **धाः** = धारण करें (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)। **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **ष्टन** = स्तन, शव्द, वाणी (स्तन - मेघ की गर्जना होना, शब्द करना, ध्वनि करना)। **दुरिता** = बुराई, दुःख (दुः = बुरा, अनुचित, कठिन, दु-दुर् = जाना, दूर जाना, दुःख होना, दुःख भोगना, तप्त करना, जलना, जलाना)। **बाधमानः** = बाधित करने वाला, दुःख देने वाला (बाध - रोकना, अटकाव करना, बाधा देना, दुःख देना)। **अप** = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। **सेध** = सिद्ध हो (सिध् = जाना, सिद्ध होना)। **दुन्दुभे** = दुन्दुभ में (दुन्+दुभ, दु = जाना, दुःख होना, तप्त करना, जलना, जलाना, दु-दुन = दुःख भोगना, जलना, तप्त करना, जलाना)। **दुच्छुनाम्** = दुष्ट, दुःखी, तप्त करने वाले, गतिशील का (दु = जाना, दुःख होना, तप्त करना, जलना, जलाना)। **इत** = पाये, गति, ज्ञान, प्रकाश प्राप्त किया (इ - जाना, जानना, पाना, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना)। **इन्द्रस्य** = इन्द्र का, परम ऐश्वर्यशाली का (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना, अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना, पीना)। **मुष्टिः** = मुष्टि (मुष् - चुराना, मुश् - खण्डन करना, तोड़ना, छेदना)। **असि** = हो (अस् - होना)। **वीडयस्व** = वीडय कीजिए (वि = विशेष, ईड् = स्तुति करना, वी = जाना, व्याप्त होना, कान्ति होना, प्रकाश होना, चमकना) **॥ 2 ॥**

345. प्र अमूम् जय अभि इमे जयन्तु, केतुमत् दुन्दुभिः वावदीतु।
सम् अश्वपर्णाः पतन्तु नो नरो, अस्माकम् इन्द्र रथिनो जयन्तु ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक **अमूम्** = इसको **जय** = विजय **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा **इमे** = यह, इस, ये **जयन्तु** = जीतने वाले **केतुमत्** = ज्ञानी, निवास, परामर्श दाता **दुन्दुभिः** = दुन्दुभि, दुन्दुओं द्वारा **वावदीतु** = बोलो **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **अश्वपर्णाः** = अश्व-पर्ण, तीव्र गति हरीतिमा **पतन्तु** = गिरायें, उड़ायें **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा **नरो** = नर **अस्माकम्** = हमारा **इन्द्र** = परम ऐश्वर्यशाली **रथिनो** = रथी **जयन्तु** = जीतें **॥ 3 ॥**

पदार्थ - **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **अमूम्** = इसको (सर्वनाम)। **जय** = विजय (जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सबसे बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)। **अभि** = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा (उपसर्ग)। **इमे** = यह, इस, ये (सर्वनाम)। **जयन्तु** = जीतने वाले (जि - सब से बढ़ कर होना, जीतना)। **केतुमत्** = ज्ञानी, निवास, परामर्श दाता (केत - बुलाना, आमन्त्रित करना, परामर्श देना, सम्मुख वार्ता करना, कित् - जानना, निवास करना, रोग निवारण करना)। **दुन्दुभिः** = दुन्दुभि, दुन्दुओं द्वारा (दुन्+दुभ, दु = जाना, दुःख होना, तप्त करना, जलना, जलाना, दु-दुन = दुःख भोगना, जलना, तप्त करना, जलाना)। **वावदीतु** = बोलो (वद् - बोलना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **अश्वपर्णाः** = अश्व-पर्ण, तीव्र गति हरीतिमा (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना, पर्ण - हरा करना, हरा होना)। **पतन्तु**

= गिरायें, उड़ायें (पत् = जाना, उड़ना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **नरो =** नर (नृ - नम्र होना, विनय होना, कोमल होना, मृदु होना, चलना, ले जाना)। **अस्माकम् =** हमारा (सर्वनाम)। **इन्द्र =** परम ऐश्वर्यशाली (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **रथिनो =** रथी (रथ् = जाना, ले जाना, रम - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना)। **जयन्तु =** जीतें (जि - सब से बढ़ कर होना, जीतना) **॥ 3 ॥**

इति षष्ठम् काण्डम्

ॐ

सप्तमम् काण्डम्

46 अनुवाकः - 1

96 सूक्त - 5 (5)

346. यज्ञेन यज्ञम् अयजन्त देवाः, तानि धर्माणि प्रथमानि आसन्।
ते ह नाकम् महिमानः सचन्त, यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ 1॥

मन्त्रार्थ - **देवाः** देवगण **यज्ञेन** यज्ञ द्वारा **यज्ञम्** यज्ञ का **अयजन्त** यजन करते हैं, **तानि** वे **प्रथमानि** प्रथम अर्थात् पहले या मुख्य **धर्माणि** धर्म **आसन्** थे। **ते** वे **ह** ही **नाकम्** नाक अर्थात् अक रहित (अकुटिल, अविचल) **महिमानः** महत्व से युक्त **सचन्त** प्राप्त होते हैं, **यत्र** जहाँ **पूर्वे** पूर्व में **साध्याः** साध्य **देवाः** देवगण (प्रकाशमान विद्वान्) **सन्ति** हैं॥ 1॥

भावार्थ - देवगण यज्ञ द्वारा यज्ञ का यजन कर रहे हैं। यज्ञ ही साधन है, यज्ञ ही साध्य है, यज्ञ ही कर्म है। सब कुछ यज्ञ ही है। जीवन, विचार, चिन्तन पूर्णतः यज्ञमय है। यही यजन है। यज्ञ कोईकर्मकाण्ड नहीं है कि कुछ विशेष क्रियायें कर लीं और यजन हो गया। यजन की मूल भावना देवपूजा, संगतिकरण तथा दान को जीवन में पूर्णतः आत्मसात् कर लेना यज्ञ है। ऐसे लोग ही अपनी महिमा से नाक अर्थात् अविचल तथा अकुटिल होकर अपने जीवन तथा समाज का अभिसिंचन इन भावों से करते हैं।

पदार्थ - **देवाः** देवगण (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना) **यज्ञेन** यज्ञ द्वारा (यज् = देवपूजा, संगतिकरण, दान करना) **यज्ञम्** यज्ञ का (यज् = देवपूजा, संगतिकरण, दान करना) **अयजन्त** यजन करते हैं (यज् = देवपूजा, संगतिकरण, दान करना), **तानि** वे **प्रथमानि** प्रथम (प्रथ् - प्रसिद्ध होना, फैलना, फैलाना) **धर्माणि** धर्म (धृ = धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना, स्थिर रहना) **आसन्** थे (अस् - होना)। **ते** वे **ह** ही **नाकम्** नाक अर्थात् अक रहित (न - नहीं, अक् - जाना, कुटिल गति करना, नश्-नक्क -नाश होना, नक्ष-नक्-नख् -जाना, नज् - लज्जा होना) **महिमानः** महत्व से युक्त (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना) **सचन्त** प्राप्त होते हैं (सच् - सेवा करना, सन्तुष्ट करना, सींचना, पूर्मतया समझना, सम्बनधी होना), **यत्र** जहाँ **पूर्वे** पूर्व में **साध्याः** साध्य (साध् - पूर्ण करना, सिद्ध करना, जीतना, साधना करना, यशस्वी होना) **देवाः** देवगण (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना) **सन्ति** हैं (अस् - होना)॥ 1॥

347. यत् पुरुषेण हविषा, यज्ञम् देवा अतन्वत।
अस्ति नु तस्मात् ओजीयः यत् विहव्येन ईजिरे॥ 4॥

मन्त्रार्थ - **यत्** जिस **हविषा** हविष् अर्थात् दान तथा ग्रहण करने योग्य **पुरुषेण** पुरुष (परमात्मा) के साथ **देवा** देव (विद्वान् लोग) **यज्ञम्** यज्ञ को **अतन्वत** विस्तृत करते हैं, **अस्ति** = है **नु** = ही, भी **तस्मात्** = उससे **ओजीयः** = ओजवान्, अतिशय ओजयुक्त **यत्** = जिसे, जो **विहव्येन** = विहव्य द्वारा **ईजिरे** = पूजा की॥ 4॥

भावार्थ - इस मन्त्र में यज्ञ का सत्य स्वरूप बताया गया है। यजन हविष् पुरुष अर्थात् हविगुणयुक्त परमात्मा के साथ किया जाता है। हवि शब्द हु धातु से बना है जिसका अर्थ होता है आदान-प्रदान करना तथा दान करना। परमात्मा के साथ हमारा निकट सम्बन्ध है। हम स्वयम् को परमात्मा के प्रति समर्पित कर देते हैं तो हमें दिव्य संरक्षण तथा अनुदान प्राप्त होते हैं। अन्य लोगों को भी हम अपना यह अनुभव प्रदान करते रहें, यह है दान करना। परमात्मा को हविष् विशेषण के साथ स्मरण करने का यही भाव है। यज्ञ तथा यजन शब्द यज् धातु से बनते हैं जिसका अर्थ होता है देवपूजा, संगतिकरण, दान करना। अतः यज्ञ या यजन करने के लिए परमात्मा के हविष् गुण या स्वरूप का स्मरण करना स्वाभाविक तथा उचित है। अब यजन में सहायक सामग्री के रूप में वसन्त को उस यज्ञ का आज्य अर्थात् प्रक्षेपण, स्थापन, गमन में समर्थ पदार्थ

या ऊर्जा के रूप में माना गाय है। वसन्त ऋतु ही ऐसे कार्यों के लिए उपयुक्त होती है। ग्रीष्म ऋतु में प्रकाश सर्वाधिक होता है, यही उससे प्रेरणा ले सकते हैं। शरद् ऋतु हवि है अर्थात् दान तथा आदान-प्रदान की प्रेरणास्वरूप है। सकारात्मक चिन्तन-विचार हों तो सभी ऋतुओं - अवसरों से सकारात्मक प्रेरणा ले सकते हैं तथा यजन जैसे श्रेष्ठ कार्य कर सकते हैं, अन्य प्रत्येक स्थिति में कठिनाइयाँ हमें कार्य करने से रोक सकती हैं।

पदार्थ - यत् जिस **हविषा** हविष् (हु - दान करना, आदान-प्रदान करना, ह्वे - आह्वान करना) **पुरुषेण** पुरुष के साथ (पुर् - अग्रसर होना, मुख्य होना, पृ - पूर्ण करना, भरना, पालन करना, रक्षा करना, तृप्त करना), **यज्ञम्** यज्ञ को (यज् = देवपूजा, संगतिकरण, दान करना) **देवा** देव (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना) **अतन्वत** विस्तृत करते हैं (तन् - विस्तार करना), **अस्ति =** है (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **नु =** ही, भी (निपात, अव्यय)। **तस्मात् =** उससे (सर्वनाम)। **ओजीयः =** ओजवान्, अतिशय ओजयुक्त (ओज - शक्तिमान् होना, जीवित होना, बढ़ना)। **यत् =** जिसे, जो (सर्वनाम)। **विहव्येन** = विहव्य द्वारा (वि - विशेष, हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **ईजिरे** = पूजा की (इज - पूजना, जाना, जानना) **॥ 4 ॥**

97 सूक्त - 6 (6)

348. अदितिः द्यौः अदितिः अन्तरिक्षम्,
अदितिः माता स पिता स पुत्रः।
विश्वे देवाः अदितिः पञ्च जनाः,
अदितिः जातम् अदितिः जनित्वम् ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - अदितिः = अपनाने योग्य, अक्षय, अविनाशी **द्यौः =** प्रकाशवान्, विद्वान्, द्यौ, प्रकाशयुक्त, अग्रगामी **अदितिः =** अपनाने योग्य, अक्षय, अविनाशी **अन्तरिक्षम् =** अन्तरिक्ष या आकाश **अदितिः =** अपनाने योग्य, अक्षय, अविनाशी **माता =** माता **स =** वह, उसने। **पिता =** पिता, पालन करने वाला, पिता **स =** वह, उसने। **पुत्रः =** पुत्र **विश्वे =** सभी **देवाः =** विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने **अदितिः =** अपनाने योग्य, अक्षय, अविनाशी **पञ्च =** पाँच **जनाः =** जन, लोग, उत्पन्न हुए, उत्पन्न करने वाले **अदितिः =** अपनाने योग्य, अक्षय, अविनाशी **जातम् =** उत्पन्न हुआ, जात को, उत्पन्न हुए को **अदितिः =** अपनाने योग्य, अक्षय, अविनाशी **जनित्वम् =** जनित्व को, उत्पादकता को **॥ 1 ॥**

पदार्थ - अदितिः = अपनाने योग्य, अक्षय, अविनाशी (अ - नहीं, अद् = खाना, दी = नष्ट होना)। **द्यौः =** प्रकाशवान्, विद्वान्, द्यौ, प्रकाशयुक्त, अग्रगामी (द्युत् = प्रकाशित होना, द्यु = अभिगमन करना, आक्रमण करना, आगे जाना, समीप जाना, प्रकाश होना, जानना)। **अदितिः =** अपनाने योग्य, अक्षय, अविनाशी (अ - नहीं, अद् = खाना, दी = नष्ट होना)। **अन्तरिक्षम् =** अन्तरिक्ष या आकाश (अन्तः - बीच में, अन् - प्राण होना, चेतन होना, जीवन होना, अन्त् - बाँधना, हिंसा करना, चलना, इक्ष् - स्वाद लेना, देखना)। **अदितिः =** अपनाने योग्य, अक्षय, अविनाशी (अ - नहीं, अद् = खाना, दी = नष्ट होना)। **माता =** माता (मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना)। **स =** वह, उसने। **पिता =** पिता, पालन करने वाला, पिता (पि - जाना, जानना, पाना, पा- पालन करना, रक्षा करना)। **स =** वह, उसने। **पुत्रः =** पुत्र (पु - रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)। **विश्वे =** सभी (सर्वनाम)। **देवाः =** विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **अदितिः =** अपनाने योग्य, अक्षय, अविनाशी (अ - नहीं, अद् = खाना, दी = नष्ट होना)। **पञ्च =** पाँच (पञ्च = पाँच, संख्या)। **जनाः =** जन, लोग, उत्पन्न हुए, उत्पन्न करने वाले (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **अदितिः =** अपनाने योग्य, अक्षय, अविनाशी (अ - नहीं, अद् = खाना, दी = नष्ट होना)। **जातम् =** उत्पन्न हुआ, जात को, उत्पन्न हुए को (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **अदितिः =** अपनाने योग्य, अक्षय, अविनाशी (अ - नहीं, अद् = खाना, दी = नष्ट होना)। **जनित्वम् =** जनित्व को, उत्पादकता को (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना) **॥ 1 ॥**

349. महीम् ऊ षु मातरम् सुव्रतानाम्, ऋतस्य पत्नीम् अवसे हवामहे।
तुवि-क्षत्राम् अजरन्तीम् उरूचीम्, सुशर्माणम् अदितिम् सुप्रणीतिम्॥ 2॥

मन्त्रार्थ - **महीम्** = मही को, महिमावान् को, महान् को **ऊ** = ही **षु** = अच्छा **मातरम्** = माता को **सुव्रतानाम्** = सुव्रतों का **ऋतस्य** = ऋत का **पत्नीम्** = ऐश्वर्यवती को **अवसे** = रक्षा के लिए, रक्षा करते हो **हवामहे** = आह्वान करते हैं, दान करते हैं, आदान-प्रदान करते हैं, तृप्ति करते हैं **तुवि-क्षत्राम्** = बहुत क्षत्रों को, अधिक वृद्धि को **अजरन्तीम्** = जरा-हीन रहते हुए **उरूचीम्** = अति संग्रहकर्ता को, बहुत एकत्र करने वाले को **सुशर्माणम्** = सुशर्मान को, अच्छे सुख को **अदितिम्** = अपनाने योग्य, अक्षय, अविनाशी **सुप्रणीतिम्** = सुप्रणीति को, उत्तम नीति को॥ **2**॥

पदार्थ - **महीम्** = मही को, महिमावान् को, महान् को (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना)। **ऊ** = ही (अव्यय)। **षु** = अच्छा (उपसर्ग)। **मातरम्** = माता को (मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना)। **सुव्रतानाम्** = सुव्रतों का (सु = अच्छा (उपसर्ग), वृत् = रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ = नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना)। **ऋतस्य** = ऋत का (ऋ - जाना, जानना, पाना, ऋत - चलना, सञ्चालित करना)। **पत्नीम्** = ऐश्वर्यवती को (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **अवसे** = रक्षा के लिए, रक्षा करते हो (अ - नहीं, अव = नीचे, दूर, प्राप्त, अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)। **हवामहे** = आह्वान करते हैं, दान करते हैं, आदान-प्रदान करते हैं, तृप्ति करते हैं (हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)। **तुवि-क्षत्राम्** = बहुत क्षत्रों को, अधिक वृद्धि को (तु - जाना, बढ़ना, दुःख देना, मार डालना, पूर्ण करना, क्षत्, क्षद् = खाना, कूटना, ढकना, मार डालना, रक्षा करना)। **अजरन्तीम्** = जरा-हीन रहते हुए (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, जृ - जीर्ण होना, वृद्ध होना)। **उरूचीम्** = अति संग्रहकर्ता को, बहुत एकत्र करने वाले को (उरु - बहुत, अधिक, उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना, उच् - एकत्र करना)। **सुशर्माणम्** = सुशर्मान को, अच्छे सुख को (सु = अच्छा (उपसर्ग), शर्मणि = सुख में (शर्म - सुख होना)। **अदितिम्** = अपनाने योग्य, अक्षय, अविनाशी (अ - नहीं, अद् = खाना, दी = नष्ट होना)। **सुप्रणीतिम्** = सुप्रणीति को, उत्तम नीति को (सु = सुन्दर, अच्छा (उपसर्ग)। प्र - प्रकृष्ट, अधिक, नी - पहुँचाना, प्राप्त होना, मिलना, ले जाना)॥ **2**॥

350. सुत्रामाणम् पृथिवीम् द्याम् अनेहसम्, सुशर्माणम् अदितिम् सुप्रणीतिम्।
दैवीम् नावम् सु अरित्राम् अनागसो, अस्रवन्तीम् आ रुहेम आ स्वस्तयै॥ 3॥

मन्त्रार्थ - **सुत्रामाणम्** = सुत्रामान, सुरक्षक, सुपालक, सुपोषक को **पृथिवीम्** = पृथिवी को **द्याम्** = द्यु को, सबसे बढ़कर, विशिष्ट, प्रकाशमय **अनेहसम्** = इच्छा-चेष्टा-हीन, प्रयत्न न करने वाला **सुशर्माणम्** = सुशर्मान को, अच्छे सुख को **अदितिम्** = अपनाने योग्य, अक्षय, अविनाशी **सुप्रणीतिम्** = सुप्रणीति को, उत्तम नीति को **दैवीम्** = दिव्य को **नावम्** = नाव को, तैरने वाले को **सु** = अच्छा **अरित्राम्** = हिंसकों से बचाने वाले **अनागसो** = निष्पाप, निर्दोष **अस्रवन्तीम्** = अस्रवन्ती को, अभिसिञ्चन न करने वाली को **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण **रुहेम** = चढ़े, बढ़ें **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण **स्वस्तयै** = कल्याण के लिए, सुख के लिए॥ **3**॥

पदार्थ - **सुत्रामाणम्** = सुत्रामान, सुरक्षक, सुपालक, सुपोषक को (सु - अच्छा, सुन्दर, उत्तम, त्रै = पालन करना, रक्षा करना, पोषण करना)। **पृथिवीम्** = पृथिवी को (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)। **द्याम्** = द्यु को, सबसे बढ़कर, विशिष्ट, प्रकाशमय (द्यु - आगे जाना, समीप जाना, द्युत् -दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, द्यै = तिरस्कार करना)। **अनेहसम्** = इच्छा-चेष्टा-हीन, प्रयत्न न करने वाला (अन् - नहीं, आ - समन्तात्, पूर्णतः, ईह - चेष्टा, इच्छा, प्रयत्न करना)। **सुशर्माणम्** = सुशर्मान को, अच्छे सुख को (सु = अच्छा (उपसर्ग), शर्मणि = सुख में (शर्म - सुख होना)। **अदितिम्** = अपनाने योग्य, अक्षय, अविनाशी (अ - नहीं, अद् = खाना, दी = नष्ट होना)। **सुप्रणीतिम्** = सुप्रणीति को, उत्तम नीति को (सु = सुन्दर, अच्छा (उपसर्ग)। प्र - प्रकृष्ट,

अधिक, नी - पहुँचाना, प्राप्त होना, मिलना, ले जाना)। **दैवीम् =** दिव्य को (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **नावम् =** नाव को, तैरने वाले को (नौ - तैरना)। **सु =** अच्छा (उपसर्ग)। **अरित्राम् =** हिंसकों से बचाने वाले (ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना)। **अनागसो =** निष्पाप, निर्दोष (अन्- नही, अग- कुटिल चाल चलना, अनुचित आचरण करना)। **अस्रवन्तीम् =** अस्रवन्ती को, अभिसिञ्चन न करने वाली को (अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग। अ = नहीं (उपसर्ग), स्रु = जाना, जानना, पाना, सृ - जाना, सरकना, बहना, टपकना)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग)। **रुहेम =** चढ़े, बढ़ें (रुह - बढ़ना, ऊपर जाना, चढ़ना, बीज से उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग)। **स्वस्तयै =** कल्याण के लिए, सुख के लिए (सु - अच्छा, अस् - होना, स्वस्ति = कल्याण) **॥ 3 ॥**

351. वाजस्य नु प्रसवे मातरम् महीम्, अदितिम् नाम वचसा करामहे।
यस्याः उपस्थे उरु अन्तरिक्षम् सा नः शर्म त्रिवरूथम् नि यच्छात् ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ :- वाजस्य - वाज का, बलवान्, वेगवान्, गतिशील का, **नु** - निश्चय ही, **प्रसवे** - प्रसव के लिए, उत्पन्न करने के लिए, **मातरम्** - माता को, **महीम्** - मही को, **अदितिम्** - अदिति को, अविनाशी को, **नाम** - नाम वाला, **वचसा** - वाणी से, **करामहे** - करते हैं। **यस्याः =** जिसका **उपस्थे =** उपस्थ में, सनिकट, समीप स्थित **उरु =** बहुत, विराट **अन्तरिक्षम् =** अन्तरिक्ष या आकाश **सा =** वह, उसने **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा **शर्म =** सुख, सम्मान, समृद्धि **त्रिवरूथम् =** त्रिवरूथ, त्रिकामनाएँ, त्रि-आच्छादन **नि =** निश्चित, निरन्तर **यच्छात् =** प्रदान करे **॥ 4 ॥**

भावार्थ :- इन्द्र का अर्थात् परम ऐश्वर्यशाली परमात्मा का, वज्र अर्थात् बलवान्, वेगवान्, गतिशील। उपासक भी परमात्मा का सानिध्य पाकर, तत्स्वरूप होकर उसका वज्र बन जाता है। उसके बल, वेग का अंश प्राप्त कर लेता है। मही अर्थात् महान् माता तो अदिति अर्थात् अविनाशी परमात्मा ही है। वही हमें प्रकाश, ऐश्वर्य प्रदान करता है।

पदार्थ :- वाजस्य = विद्या को, वेग को, गति को (वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना, वा - गति करना, बहना)। **नु =** निश्चय ही, शीघ ही। **प्रसवे =** उत्पन्न करे (सु = उत्पन्न करना)। **मातरम् =** माता को। **महीम्** - मही को (मह् - महान् होना, बड़ा होना, पूज्य होना)। **अदितिम् =** नष्ट न होने वाला, अविनाशी (अ = नहीं, दी = नष्ट होना)। **नाम =** नाम वाला। **वचसा** - वचन से, वाणी द्वारा (वच - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)। **करामहे** - करते हैं (कृ = करना)। **यस्याः =** जिसका (सर्वनाम)। **उपस्थे =** उपस्थ में, सनिकट, समीप स्थित (उप = समीप, स्थ = स्थित)। **उरु =** बहुत, विराट (अव्यय, सर्वनाम)। **अन्तरिक्षम् =** अन्तरिक्ष या आकाश (अन्तः - बीच में, अन् - प्राण होना, चेतन होना, जीवन होना, अन्त् - बाँधना, हिंसा करना, चलना, इक्ष् - स्वाद लेना, देखना)। **सा =** वह, उसने (सर्वनाम)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **शर्म =** सुख, सम्मान, समृद्धि (शर्म् = सुख होना, श्रीमान् होना, सम्मानित होना)। **त्रिवरूथम् =** त्रिवरूथ, त्रिकामनाएँ, त्रि-आच्छादन (त्रि = तीन (संख्या)। वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **नि =** निश्चित, निरन्तर (अव्यय)। **यच्छात् =** प्रदान करे (यच्छ = देना) **॥ 4 ॥**

98 सूक्त - 9 (9)

352. पूषन् तव व्रते वयम्, न रिष्येम कदा चन।
स्तोतारः ते इह स्मसि ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ- पूषन् हे पूषा, **तव** तुम्हारे **व्रते** व्रत में **वयम्** हम **कदा चन** कभी **रिष्येम** विनष्ट **न** नहीं हों। **ते** तुम्हारे **स्तोतारः** स्तुतिकर्ता **इह** यहाँ **स्मसि** हैं **॥ 3 ॥**

भावार्थ- पूषा अर्थात् पोषण करने वाले परमात्मा की उपासना में कभी विनष्ट न हों। हम व्रत का विनाश न होने दें, परमात्मा हमारा विनाश नहीं होने देगा। स्तुतिकर्ता उपासक इसी संसार में, समाज में हैं, हमें उनका सहयोग, मार्गदर्शन मिलता रहता है **॥ 3 ॥**

पदार्थ :- पूषन् = पोषण करने वाले (पूष - बढ़ना, अधिक होना, पोषण करना, पालन करना)। **तव =** तुम्हारा।

व्रते = व्रत में (वृ = वरण करना)। **वयम्** = हम सब, हम लोग। **न** = नहीं। **रिष्येम** = विनष्ट हों (रिष - हिंसा करना, मार डालना या दुःख देना, मारने का यत्न करना)। **कदाचन्** = कभी। **स्तोतारः** = स्तुतिकर्ता (स्तु = स्तुति, पूजा, सेवा करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए। **इह** = यहाँ। **स्मसि** = हैं (अस् - होना) ॥ 3 ॥

99 सूक्त - 10 (10)

353. यः ते स्तनः शशयुः यो मयोभूः, यो सुम्नयुः सुहवः यः सुदत्रः ॥
येन विश्वा पुष्यसि वार्याणि, सरस्वति तम् इह धातवे कः ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ :- सरस्वति हे सरस्वती, **ते** तुम्हारा **यः** जो **स्तनः** स्तन (शब्द, वाणी) **शशयुः** कूदने वाली, **यो** जो **मयोभूः** गति-ज्ञान-स्वरूपा, (सुखस्वरूप), **यो** जो **रत्नधा** रत्नधा (रत्नों को धारण करने वाला), **यः** जो **वसुवित्** वसुवित् **सुदत्रः** सुदत्र (है), **येन** जिससे **विश्वा** सभी **वार्याणि** वार्यों को **पुष्यसि** पुष्ट करती हो, **तम्** उसे **इह** यहाँ **धातवे** धारण करने के लिए **कः** करो। **उरु** व्यापक **अन्तरिक्षम्** अन्तरिक्ष का **अन्वेमि** अनुगमन करता हूँ ॥ 1 ॥

भावार्थ :- सरस्वती देवी शब्द-स्वरूपा वाणी रूप में ही प्रकट है। सभी सुख, रत्न आदि उसी में निहित हैं। वह हमारे धारण करने के लिए ही है। उसे अपनाकर, अपने में धारण कर अर्थात् विद्या पाकर ही हम अन्तरिक्ष का अनुगमन कर सकते हैं, सफलताओं का आकाश चूम सकते हैं। सरस्वती अर्थात् विद्या, ज्ञान की साधना का महत्व सर्वोपरि है।

पदार्थ :- यः = जो। **स्तनः** = स्तन, शब्द, वाणी (स्तन - शब्द करना)। **शशयुः** = कूदने वाली (शश - फुदकते हुए चलना, कूदते हुए जाना)। **यो** = जो। **मयोभूः** = गति-ज्ञान-स्वरूप (मय - जाना, जानना, पाना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना)। **यो** - जो। **सुम्नयुः** = सुविचार अथवा सृजन, रचनाशीलता द्वारा (मन - मनन करना, जानना, समझना, स्वीकार करना, अभ्यास करना, स्थिर होना, गर्व होना)। **सुहवः** = सुन्दर आह्वान द्वारा (सु - सुन्दर, अच्छा, ह्वे - आह्वान करना)। **यः**। **सुदत्रः** = सुदत्र (सु - सुन्दर, अच्छा, दा, दद् = देना)। **येन** = जिससे। **विश्वा** = विश्व का, सभी का। **पुष्यसि** = पुष्ट करती हो (पुष् = पोषण करना, पालन करना, धारण करना)। **वार्याणि** = वार्यों, वरणीयों को (वृ = वरण करना)। **सरस्वति** = सरस्वती (सृ - जाना, सरकना)। **तम्** = उसको। **इह** = इसमें, यहां। **धातवे** = धारण करने के लिए (धा = धारण करना)। **कः** = करो (कृ - करना - वैदिक प्रयोग)। **उरु** = गतिशील, व्यापक (उर् = जाना, चलना)। **अन्तरिक्षम्** = अन्तरिक्ष या आकाश (अन्तः - बीच में, अन् - प्राण होना, चेतन होना, जीवन होना, अन्त् - बाँधना, हिंसा करना, चलना, इक्ष् - स्वाद लेना, देखना)। **अन्वेमि** = जाता हूँ, प्राप्त होता हूँ (अनु + एमि, इ = जाना) ॥ 1 ॥

47 अनुवाकः - 2

100 सूक्त - 1 (14)

354. अभि त्यम् देवम् सवितारम् ओण्योः कविक्रतुम्,
अर्चामि सत्यसवम् रत्नधाम् अभि प्रियम् मतिम् ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ : देवम् देव **सवितारम्** सृष्टिकर्ता **ओण्योः** नायक **कविक्रतुम्** कवि **सत्यसवम्** सत्य को उत्पन्न करने वाले, सत्य ऐश्वर्य वाले **रत्नधाम्** रत्नधारक को **अभि प्रियम्** प्रिय **मतिम्** मति **ऊर्ध्वा** ऊर्ध्व **त्यम्** तुमको **अभि अर्चामि** पूजता हूँ ॥ 1 ॥

भावार्थ : परमात्मा के गुणों, ऐश्वर्य का वर्णन करते हुए उपासना, स्तुति करने की प्रेरणा है। हम उपासना कर अपने जीवन में परमात्मा को प्राणवान् जीवन्त करते हैं तो परमात्मा हमें प्राणवान् करता है, जीवन्त ऊर्जावान् बनाता है ॥ 1 ॥

पदार्थ : अभि = सब ओर (उपसर्ग)। **त्यम्** = तुमको। **देवम्** = देव को (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, स्तुति करना)। सवितारम् = सृष्टिकर्ता (सु = उत्पन्न करना)। **ओण्योः** = नायक (ओण् = दूर ले लाना, ले जाना)। **कविक्रतुम्** = कवि (कव् = वर्णन करना, कविता करना, चित्र बनाना)। **अर्चामि** = पूजता हूँ (अर्च् = पूजन करना, सेवा करना, मान

करना)। **सत्यसवम्** = सत्य को उत्पन्न करने वाला, सत्य ऐश्वर्यवाला (सत् = सदा रहना, चिर अस्तित्व होना, सु = उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना)। **रत्नधामभिः** रत्नधारक को (रत् = जुड़ना, धा = धारण करना)। **प्रियम्** = प्रिय को (प्री - प्रीति करना, दुलारना, तृप्त करना, सन्तुष्ट करना)। **मतिम्** = मति को (मन - जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना) **॥ 1 ॥**

355. ऊर्ध्वा यस्य अमतिः भाः अदिद्युतत् सवीमनि,
हिरण्यपाणिः अमिमीत सुक्रतुः कृपात् स्वः ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ : यस्य जिसका **ऊर्ध्वा** ऊर्ध्व **अमतिः** सेवाभावी विद्वान् **भाः** प्रकाश **अदिद्युतत्** प्रकाशमान **सवीमनि** सृष्टिकर्ता की स्तुति की है। **हिरण्यपाणिः** प्रकाशमय **सुक्रतुः** सत्कर्म कर्ता **कृपात्** कृपा, **स्वः** ऐश्वर्य **॥ 2 ॥**

भावार्थ : परमात्मा के गुणों, ऐश्वर्य का वर्णन करते हुए उपासना, स्तुति करने की प्रेरणा है। हम उपासना कर अपने जीवन में परमात्मा को प्राणवान् जीवन्त करते हैं तो परमात्मा हमें प्राणवान् करता है, जीवन्त ऊर्जावान् बनाता है **॥ 2 ॥**

पदार्थ : ऊर्ध्वा = ऊर्ध्व। **यस्य** = जिसका। **अमतिः** = सेवाभावी विद्वान् (अम् = जाना, जानना, शब्द करना, सेवा करना)। **भाः** = प्रकाश (भा - चमकना, प्रकाशित होना, सुन्दर दीखना)। **अदिद्युतत्** = प्रकाशमान (द्युत् = प्रकाश होना)। **सवीमनि** = सृष्टिकर्ता की स्तुति की (सु = उत्पन्न करना)। **हिरण्यपाणिः** = प्रकाशमय (हिरण् = प्रकाश होना, पण् = स्तुति करना, व्यवहार करना)। **अमिमीत** = बोला (मीम् = जाना, जानना, शब्द करना)। **सुक्रतुः** = अच्छा करने वाला, सत्कर्म कर्ता (कृ - करना)। **कृपात्** = सहायता, ऐश्वर्य (कृप - कल्पना करना, विचार करना)। **स्वः** = उत्पन्न, ऐश्वर्य (सु = ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना) **॥ 2 ॥**

101 सूक्त - 2 (15)

356. ताम् सवितः सत्य-सवाम् सुचित्राम्,
आ अहम् वृणे सु-मतिम् विश्व वाराम्।
याम् अस्य कण्वः अदुहत् प्र-पीनाम्,
सहस्र-धाराम् महिषः भगाय ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - ताम् = उसको **सवितः =** सविता का, ऐश्वर्यवान्, उत्पन्न करने वाले का **सत्य-सवाम् =** सत्य को उत्पन्न करने वाला, सत्य ऐश्वर्यवाला **सुचित्राम् =** सुचेतन करने वाले, चित्र स्वरूप अर्थात् चित्र की भाँति प्रत्यक्ष तथा स्पष्ट, आश्चर्यस्वरूप **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण **सु-मतिम् =** सुमति को, सुबुद्धि को **विश्व =** सभी **वाराम् =** वरणीय, प्रिय को **याम् =** जिसको **अस्य =** इसका **कण्वः =** कण्व **अदुहत् =** अदुह **प्र-पीनाम् =** पान किये गये को **सहस्र-धाराम् =** हजारों धाराओं वाला **महिषः =** महिष, महिमावान्, महान्, पूजित, सम्मानित **भगाय =** भग, सेवा, दान, ऐश्वर्य के लिए **अहम् =** मैं **वृणे =** वरण करते हैं **॥ 1 ॥**

भावार्थ - उस सविता अर्थात् ऐश्वर्यवान्, उत्पन्न करने वाले वरणीय परमात्मा का वरण करें। वही हमें उत्पन्न करने वाला तथा पालन करने वाला है **॥ 1 ॥**

पदार्थ - ताम् = उसको (सर्वनाम)। **सवितः =** सविता का, उत्पादक, ऐश्वर्यवान्, उत्पन्न करने वाला (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)। **सत्य-सवाम् =** सत्य को उत्पन्न करने वाला, सत्य ऐश्वर्यवाला (सत् = सदा रहना, चिर अस्तित्व होना, सु = उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना)। **सुचित्राम् =** सुचेतन करने वाले, चित्र स्वरूप अर्थात् चित्र की भाँति प्रत्यक्ष तथा स्पष्ट, आश्चर्यस्वरूप (सु - सुन्दर, अच्छा, चित्र् = चित्र बनाना, आश्चर्य करना, चित् = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, स्मरण करना)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग)। **अहम् =** मैं (सर्वनाम)। **वृणे =** वरण करते हैं (वृ = वरण करना, वृण - परित्याग करना, आनन्द करना, उत्साह करना)। **सु-मतिम् =** सुमति को, सुबुद्धि को (सु - सुन्दर, अच्छा, सु - उत्पन्न करना, पैदा करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, मन - मनन करना, जानना, समझना, स्वीकार करना, अभ्यास करना,

स्थिर होना, गर्व होना)। **विश्व =** सभी। **वाराम् =** वरणीय, प्रिय को (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **याम् =** जिसको (सर्वनाम)। **अस्य =** इसका (सर्वनाम)। **कण्वः =** कण्व (कण् - शब्द करना, लघु होना, कण बनाना)। **अदुहत् =** अदुह (अ - नहीं, दुह् - दूध निकालना, दोहना, रिक्त करना, लेना, खींचना)। **प्र-पीनाम् =** पान किये गये को (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, पी- पीना, प्राशन करना)। **सहस्र-धाराम् =** हजारों धाराओं वाला (सहस्र = हजार, संख्या, धाः- धारा होना, धार बाँधना)। **महिषः =** महिष, महिमावान्, महान्, पूजित, सम्मानित (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना)। **भगाय =** भग, सेवा, दान, ऐश्वर्य के लिए (भग्-भज् = सेवा करना, सेवन करना, सेवित होना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजना, भजन करना, उपभोग करना, विषय वासना का अनुभव करना) **॥ 1 ॥**

102 सूक्त - 3 (16)

357. बृहस्पते सवितः वर्धय एनम् ज्योतय एनम् महते सौभगाय। सम् शितम् चित् सन्तरम् सम् शिशाधि, विश्वे एनम् अनु मदन्तु देवाः ॥ 6 ॥

मन्त्रार्थ :- बृहस्पते = विराट, महान्, बृहस्पति **सवितः =** सवित, ऐश्वर्य युक्त और उत्पन्न करने वाले **वर्धय =** बढ़ो **एनम् =** इसको, इसे **ज्योतय =** प्रकाशवान् करो **एनम् =** इसको, इसे **महते =** महत् के लिए, महान्, पूज्य के लिए **सौभगाय =** सौभाग्य के लिए **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति **शितम् =** शित का **चित् =** चेतन **सन्तराम् =** सम्यक् पार होने वाला, पार कराने वाला **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति **शिशाधि =** तीक्ष्ण करो, कल्याण करो **विश्वे =** सभी **एनम् =** इसको, इस **अनु =** पश्चात्, पीछे, अनुकूल **मदन्तु =** आनन्दित करते हैं, हर्षित होते हैं, तृप्त होते हैं **देवाः =** विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने **॥ 6 ॥**

भावार्थ :- देवशक्तियाँ हमारा प्रबोध करें। हमारे सौभाग्य की वृद्धि करें। प्रकृति तथा मानव दिव्य शक्तियों को आनन्द प्राप्त हो।

पदार्थ - बृहस्पते = विराट, महान्, बृहस्पति (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना, पत् - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना, नीचे जाना, गिरना, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **सवितः =** सवित, ऐश्वर्य युक्त और उत्पन्न करने वाले (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)। **वर्धय =** बढ़ो (वृध् = बढ़ना, चमकना, बोलना)। **एनम् =** इसको, इसे (सर्वनाम)। **ज्योतय =** प्रकाशवान् करो (ज्युत - कान्तिमान् होना, चमकना, प्रकाशित होना)। **एनम् =** इसको, इसे (सर्वनाम)। **महते =** महत् के लिए, महान्, पूज्य के लिए (मह् - पूजा करना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना)। **सौभगाय =** सौभाग्य के लिए (सु - अच्छा, सुन्दर, सु = उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना, सींचना, भग् -भज् - सेवा करना, सेवन करना, दान करना, अलग करना)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **शितम् =** शित को (शि - तीक्ष्ण करना, पैना करना, पतला करना, सुनना। **चित् =** चेतन, (चित = चेतन होना, विचार करना, चिन्तन करना, स्मरण करना)। **सन्तरम् =** सम्यक् पार होने वाला, पार कराने वाला (सम् - सम्यक्, भलीभाँति, तृ - पार जाना, पर तीर को जाना, पार जाना) **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **शिशाधि =** तीक्ष्ण करो, कल्याण करो (शि = तेज करना, तीक्ष्ण करना, कल्याण करना, शिष् - शेष रखना, बचाना, प्रयोजन करना, शास् - शासन करना)। **विश्वे =** सभी (सर्वनाम)। **एनम् =** इसको, इसे (सर्वनाम)। **अनु =** पश्चात्, पीछे, अनुकूल (उपसर्ग)। **मदन्तु =** आनन्दित करते हैं, हर्षित होते हैं, तृप्त होते हैं (मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)। **देवाः =** विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना) **॥ 6 ॥**

103 सूक्त - 4 (17)

358. धाता रातिः सविता इदम् जुषन्ताम्, प्रजापतिः निधिपतिः नः अग्निः।

त्वष्टा विष्णुः प्रजया सम् रराणः, यजमानाय द्रविणम् दधातु ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ :- धाता - धारण करने वाला **रातिः** - दान **सविता** - उत्पत्ति कर्ता, उत्पन्न करने वाला, ऐश्वर्यवान् तथा ऐश्वर्य देने वाला **इदम्** - यह **जुषन्ताम्** - तुष्ट करे **प्रजापतिः** - प्रजा का रक्षक, स्वामी **निधिपतिः** - निधिपति **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा **अग्निः** - अग्नि **त्वष्टा** - प्रकाशक **विष्णुः** - विष्णु **प्रजया** - प्रजा के साथ **सम्** - सम्यक् रूप से, भली भाँति **रराणः** - शब्द करता हुआ **यजमानाय** - यजमान के लिए **द्रविणम्** - द्रविण को **दधातु** - धारण करे **॥ 4 ॥**

भावार्थ :- परमात्मा सर्वथा समर्थ है। वह हम विविध साधन-सुविधाएं देकर सन्तुष्ट करता है। वेद में किसी के लिए धा - धारण करना धातु का प्रयोग उसके लिए देने के अर्थ में होता है।

पदार्थ :- धाता - धारण करने वाला (धा = धारण करना)। **रातिः =** देने वाला (रा - देना, मिल जाना)। **सविता** - उत्पन्न करने वाला, ऐश्वर्यवान् (सु = उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना या करना)। **इदम् =** यह, इसको। **जुषन्ताम्** - तुष्ट करे (जुष् = विचार करना, सेवा करना, सन्तुष्ट करना)। **प्रजापतिः =** प्रजा का रक्षक, स्वामी (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, जन् = उत्पन्न होना, पत् = ऐश्वर्य होना, स्वामी होना)। **निधिपतिः** - निधिपति (नि- निश्चित, नितराम्, निरन्तर, धी = धारण करना, आधारभूत होना, उपेक्षा करना, बुद्धि , प्रज्ञा होना, धि = धारण करना, युक्त होना, पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **अग्नि =** तेजस्वी विद्वान् (अग् = ऊपर जाना, जानना, पाना, तेजस्वी होना)। **त्वष्टा =** प्रकाशक (त्वक्ष् = छीलना, रेतना, त्विष् = प्रकाशित होना)। **विष्णुः =** व्यापक, विष्णु ने (विष्ण-विष् -विविष् - अलग करना, अभिषेक करना, सींचना, व्याप्त होना)। **प्रजया =** प्रजा द्वारा, प्रजा के साथ। **संरराणः** - सम्यक् रूप से, भली भाँति शब्द करता हुआ (सम् - सम्यक्, रण् - शब्द करना, जाना, जानना, पाना, पहुंचना)। **यजमानाय** - यजमान के लिए (यजमानः= यजन करने वाला, यजन करता हुआ)। **द्रविणम् =** द्रवित होने वाले को, प्रवाही को, ज्ञानी को (द्रु - पिघलना, बहना, चलना, जाना, जानना, पाना, अनुसरण करना)। **दधातु =** धारण करे (दध - धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना) **॥ 4 ॥**

104 सूक्त - 7 (20)

359. अनु अद्य नो अनुमतिः, यज्ञम् देवेषु मन्यताम्।
अग्निः च हव्यवाहनो, भवताम् दाशुषे मम ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - नो हमको **अनुमतिः** अनुमति **अद्य** आज **देवेषु** देवों में **यज्ञम्** यजन को **मन्यताम्** मान्य करे, **च** और **हव्यवाहनो** हव्यवाहन **अग्निः** अग्नि **दाशुषे** दानी के लिए **मम =** मेरा **भवताम्** हो **॥ 1 ॥**

भावार्थ - हमारी मति अनुकूल हो, सभी की अनुमति प्राप्त हो, इस प्रकार यजन अर्थात् देवपूजा, संगतिकरण, दान जैसे सत्कर्म देवों में अनुमन्य हों। यजन जैसे उत्तम कर्म भी इस प्रकार न किये जायें जिसमें देवों की अनुमति न हो। यदि दुर्भावना से मात्र दिखावे के लिए अथवा अहंकार-पोषण के लिए यजन किया जाये तो उसे भी देव-शक्तियों की अनुमति नहीं होती है।

पदार्थ :- अनु = पश्चात्, पीछे। **अद्य =** आज। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा। **अनुमतिः=** अनुमति से (अनु = पश्चात्, पीछे, अन् = चेतन होना, जीवन होना, सामर्थ्य होना, मन् - मनन करना, विचार करना)। **यज्ञम् =** यजन को (यज - देवपूजा करना, देना, संगति करना)। **देवेषु =** देवों में (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना)। **मन्यताम् =** मानें, मान्य करे (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना)। **अग्निः =** = ऊर्ध्वगामी अग्रणी, अग्नि (अग् = ऊर्ध्वगति करना)। **च =** और। **हव्यवाहनो =** हव्य का वहन करने वाला,आदान-प्रदान करने योग्य वस्तु, विचार, ज्ञान को ले जाने वाला (हु = आदान-प्रदान करना, देना, वह् - वहन करना, ले जाना)। **भवताम्** = होओ (भू = होना)। **दाशुषे =** दानी के लिए (दा = देना)। **मम =** मेरा (सर्वनाम) **॥ 1 ॥**

360. अनु इत् अनुमते त्वम्, मंससे शम् च नः कृधि।
जुषस्व हव्यम् आहुतम् प्रजाम् देवि ररास्व नः ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ- अनुमते हे अनुमते, **त्वम्** तुम **अनु इत् मंससे** अनुमति दो, **च** और **नः** हमारे लिए **शम्** कल्याण **कृधि** करो। **जुषस्व** सेवा करो, सन्तुष्ट करो **हव्यम्** आदान-प्रदान करने योग्य को, हव्य को, देय को **आहुतम्** आदान-प्रदान किया हुआ, आहुत, आह्वान किये, बुलाये हुए, व्याप्त **प्रजाम्** प्रजा को **देवि** हे देवी **ररास्व** दान दो **नः** हमको, हमारे लिए, हमारा **॥ 2 ॥**

भावार्थ- अनुकूल मति वालों से अनुमति लेकर कार्य करना चाहिए। वे हमारे लिए कल्याणकारी हैं। उनसे कर्तव्य-प्रेरणा तथा दक्षता प्राप्त कर हम जीवन को सफल-सार्थक बना सकते हैं।

पदार्थ :- अनु = पश्चात्, पीछे। **इत् =** ही। **अनुमते =** अनुमते (अनु = पश्चात्, पीछे, मन् = मनन करना, विचार करना)। **त्वम् =** तुम। **मंससे =** मनन करते हो, मनन करो (मन् = जानना, समझना, मानना, विचार करना, स्वीकार करना, मान्य करना, बन्द करना, स्थिर करना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना)। **शम् =** कल्याण (शम = प्रसिद्ध करना, स्पष्ट करना, शमन करना, सान्त्वना देना, कल्याण करना)। **च =** और। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा। **कृधि =** करो (कृ = करना)। **जुषस्व =** सेवा करो, सन्तुष्ट करो (जुष् = विचार करना, सेवा करना, सेवन करना, विवेक होना, विवेचना करना, प्रीति करना, चाहना, दुलारना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना)। **हव्यम् =** आदान-प्रदान करने योग्य को, हव्य को, देय को (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **आहुतम् =** आदान-प्रदान किया हुआ, आहुत, आह्वान किये, बुलाये हुए, व्याप्त (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, अह - फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, हु - दान करना, आदान-प्रदान करना, ह्वे = शब्द करना, आह्वान करना, बुलाना)। **प्रजाम् =** प्रजा को (प्र - बहुत, प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **देवि =** हे देवी (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **ररास्व =** दान दो (रा- देना, लेना, ग्रहण करना, रस्, रास् = शब्द करना, रस् = रस होना, स्वाद लेना, प्रीति करना, प्यार करना, शब्द करना, रस लेना)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा **॥**

48 अनुवाकः -3

105 सूक्त - 3 (25)

361. ययोः ओजसा स्कभिता रजांसि, यौ वीर्यैः वीर-तमा शविष्ठा। यौ पत्येते अप्रति इतौ, सहोभिः विष्णुम् अगन्, वरुणम् पूर्वहूतिः ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ :- ययोः - जिनके, **ओजसा** - ओज से, **स्कभिता** - स्थापित, **रजांसि** - रजस्, **यौ =** जो दोनों **वीर्यैः =** पराक्रमों के साथ, वीरता द्वारा **वीरतमा** - अत्यन्त वीर, **शविष्ठा** - अत्यन्त समीपगामी। **यौ =** जो दोनों **पत्येते** - ऐश्वर्य करते हैं। **अप्रति** - अप्रतिम, अतुलनीय, **इतौ** - गये हुये, जाने वाले, **सहोभिः** - सामर्थ्य से, **पूर्वहूतिः** - पूर्व आह्वान किये हुए, **विष्णुम्** - विष्णु को, **वरुणम्** - वरुण को, **अगन्** - गये **॥ 1 ॥**

भावार्थ :- साधना-उपासना से परमात्म-चेतना को अवहृत, अभ्यवहृत, अवतरित किया जाता है। उस तैरते हुए, उड़ते हुए अवतरित होने वाले दिव्य चेतना की अनुभूति यहाँ महत्वपूर्ण है। उस सलिल के समान प्रतीत होने वाले बल से हम स्वयम् को वीरतम अनुभव करते हैं। वीरतमा शब्द उस चेतनाशक्ति के लिए भी है तथा उससे अनुप्लावित, ओत-प्रोत साधक उपासक के लिए भी। इसके लिए हमने विष्णु अर्थात् व्यापक तथा वरुण अर्थात् वरणीय परमात्मा का आह्वान किया है। दिव्य चेतना का अवतरण होने की अनुभूति ही सर्वव्यापी वरणीय परमात्म चेतना का आगमन है।

पदार्थ :- ययोः = जिनके। **ओजसा** - ओज से (ओज् - बल होना, शक्तिमान् होना, जीना, बढ़ना)। **स्कभिता =** स्थापित, प्रतिष्ठित (स्कभि-स्कम्भ - स्थापित करना, गति करना, रोकना, प्रतिबन्ध करना, मूर्ख होना, मतिमन्द होना)। **रजांसि =** लोकों को, रजः को (रज - रज होना, धूल होना, सूक्ष्म होना, रंग देना, रंगना, लीन होना)। **यौ =** जो दोनों (सर्वनाम)। **वीर्यैः =** पराक्रमों के साथ, वीरता द्वारा (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)। **वीरतमा** - अत्यन्त वीर (वीर् = पराक्रम करना)। **शविष्ठा =** अत्यन्त समीपगामी (शव - जाना, समीप जाना, आना, चलना-फिरना, बदले में देना, विकार होना)। **यौ =** जो दोनों (सर्वनाम)। **पत्येते** - ऐश्वर्य करते हैं (पत् = ऐश्वर्य होना)। **अप्रति** - अप्रतिम, अतुलनीय (प्रति = सम्बन्ध में, विषय में)। **इतौ =** गये हुये, जाने वाले (इ - जाना)। **सहोभिः** - सामर्थ्य से (सह् = सामर्थ्य होना, सहन करना)। **विष्णुम्** - विष्णु को (विष् = व्यापक होना)। **अगन्** - गये (अग - जाना, गम् - जाना)। **वरुणम् =**

वरुण को से (वृ - वरण करना)। **पूर्वहूतिः** - पूर्व आह्वान किये हुए (पूर्व - पूर्व होना, प्रथम होना, पहले होना, पूर्ण करना, भरना, हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना) ॥ 1 ॥

106 सूक्त - 4 (26)

362. विष्णोः नु कम् प्रवोचम् वीर्याणि, यः पार्थिवानि विममे रजांसि।
यो अस्कभायत् उत्तरम् सधस्थम्, विचक्रमाणः त्रेधा उरुगायो ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ :- हम **विष्णोः** विष्णु के **कम्** किसको **वीर्याणि** वीरकर्मों को **प्रवोचम्** कहें **यः** जिन्होंने **पार्थिवानि** पार्थिव **रजांसि** लोकों को **विममे** बनाया। **यो** जिन्होंने **उत्तरम्** उत्तर **सधस्थम्** सहस्थान को **अस्कभायत्** स्थिर किया। **त्रेधा** तीन प्रकार से **विचक्रमाणः** पराक्रम करने वाले **उरुगायो** स्तुति (है) ॥ 1 ॥

भावार्थ :- सर्वव्यापी परमात्मा की महिमा से ही सम्पूर्ण सृष्टि स्थित और संचालित है। हम उसकी ही स्तुति करते हैं। उरुगाय का अर्थ हृदय से की गयी स्तुति और तीव्रता तथा ज्ञान से की गयी स्तुति है ॥ 1 ॥

पदार्थ :– विष्णोः = विष्णु का, व्यापक का (विष्ण् = व्यापक होना)। **नु** = शीघ्र ही। **कम्** = किसको। **प्रवोचम्** = कहें (प्र + वोचम्, वच - बोलना, कहना, समझाना, जनाना)। **वीर्याणि** = वीरकर्मों को (वीर् = पराक्रम करना)। **यः** = जो। **पार्थिवानि** = पार्थिव (पृथ - फेंकना, उड़ाना, प्रेरणा करना, भेजना)। **विममे** = बनाया (वि + मा - नापना, तौलना, समाना)। **रजांसि** = लोकों (रंज - रजना, धूल)। **यो** = जो। **अस्कभायत्** = स्थिर किया (स्कभि-स्कम्भ् - रोकना)। **उत्तरम्** = उत्तर को। **सधस्थम्** = सहस्थान (सद् = जाना, जानना, पाना, पहुँचना)। **विचक्रमाणः** = पराक्रम करने वाले (चक- तृप्त होना, चकमा देना, सन्तुष्ट होना)। **त्रेधा** = तीन प्रकार से (त्रि = तीन)। **उरुगायो** = स्तुति (है) (उर् = जाना, चलना, गा = स्तुति करना) ॥ 1 ॥

363. प्र तत् विष्णुः स्तवते वीर्याणि, मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः ॥
परावतः आ जगम्यात् परस्याः ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ :- तत् वह **विष्णुः** विष्णु **वीर्याणि** सामर्थ्य द्वारा **प्र स्तवते** स्तुत हैं। **मृगो** मृग **न** के समान **भीमः** भयंकर, **कुचरो** कुचर, **गिरिष्ठाः** पर्वतों पर स्थित (है), **परावतः** रक्षा करो, पालन करो **आ** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **जगम्यात्** चलें, ग्रहण करें **परस्याः** पर का, अन्य का ॥ 2 ॥

भावार्थ :- परमात्मा की स्तुति समर्थ लोग करते हैं। असमर्थ होने पर ही स्तुति न करें, समर्थ होने पर स्तुति करें तभी सार्थकता है। कु धातु का अर्थ है शब्द करना, पुकारना। कुचर का अर्थ स्तुति की ओर चलने वाला। हृदय से पुकारो, स्तुति करो तो परमात्मा की कृपा अवश्य मिलती है ॥ 2 ॥

पदार्थ : प्र = अधिक। **तत्** = वह। **विष्णुः** = विष्णु (विष्ण् = व्याप्त होना)। **स्तवते** = स्तुत हैं (स्तु = स्तुति, पूजा, सेवा करना)। **वीर्याणि** = पराक्रम से, सामर्थ्य द्वारा (वीर् = पराक्रम करना)। **मृगो** = मृग, (मृग - मृगया करना, शिकार करना, ढूँढ़ना)। **न** = समान, नहीं। **भीमः** = भयंकर (भी - डरना)। **कुचरो** = कुचर (कु - बुरा, चर - चलना, आचरण करना, शब्द करना)। **गिरिष्ठाः** = पर्वतों पर स्थित (गिरि + स्थ = स्थित होना)। **परावतः =** रक्षा करो, पालन करो (परावतः = पराया, लौटा हुआ, अव्यय, परा = परम, परे, पीछे, विपरीत (अव्यय) अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **जगम्यात् =** चलें, ग्रहण करें (जग् = गति करना, लेना, घर्षण करना)। **परस्याः =** पर का, अन्य का (सर्वनाम) ॥ 2 ॥

364. यस्य उरुषु त्रिषु वि क्रमणेषु, अधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा।
उरु विष्णो विक्रमस्व, उरु क्षयाय नः कृधि।
घृतम् घृतयोने पिब, प्र प्र यज्ञपतिम् तिर ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ :- यस्य जिसके **उरुषु** विस्तृत **त्रिषु** तीन **वि क्रमणेषु** विक्रमों में **विश्वा** सभी **भुवनानि** भुवन **अधिक्षियन्ति**

निवास करते हैं। **विष्णो** हे विष्णु, **उरु** विस्तृत **विक्रमस्व** पराक्रम करो। **नः** हमारे **उरु** विस्तृत **क्षयाय** निवास के लिए **कृधि** करो। **घृतयोने** हे घृतयोनि, **घृतम्** घृत **पिब** पी लो। **यज्ञपतिम्** यजनपति को **प्र प्र तिर** पार उतारो ॥ 3 ॥

भावार्थ :- विष्णु का अर्थ व्यापक परमात्मा है, उससे भी यही सीखना है कि वह भी पराक्रमी है, आलसी नहीं। हमारे निवास के लिए सुन्दर संसार की रचना उसने की है। अपना निवास बनाने के लिए हमें भी पराक्रम करना होगा। इसके बाद ही हम घृत पी सकते हैं। ऐसे परिश्रमी पराक्रमी उपासक को परमात्मा पार उतारता है। घृत का शाब्दिक अर्थ है प्रकाशित, अभिसिंचित। परमात्मा और उपासक दोनो ही घृतयोनि अर्थात् घृत स्वरूप हैं। परमात्मा तो स्वयं प्रकाशरूप है ही, उपासक भी उससे उत्पन्न तथा प्रकाशित प्रकाशपुत्र है ॥ 3 ॥

पदार्थ : यस्य = जिसका। **उरुषु** = विस्तृत (उर् = विस्तार करना, जाना)। **त्रिषु** = तीनों में (त्रि = तीन)। **विक्रमणेषु** = विक्रमों में (वि + क्रम = निर्भय से जाना, वृद्धि करना, बचाना)। **अधिक्षियन्ति** = निवास करते हैं (क्षि - जाना, चलना, निवास करना)। **भुवनानि** = भुवनो में (भू = होना, प्राप्त होना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **विश्वा** = विश्व में, सभी। **उरु** = विस्तृत (अव्यय)। **विष्णो** = विष्णु का, व्यापक का (विष्ण् = व्यापक होना)। **विक्रमस्व** = पराक्रम करो (वि = विशेष, विना, विलोम, क्रम = निर्भय से जाना, वृद्धि करना, बचाना)। **क्षयाय** = निवास के लिए (क्षि - जाना, चलना, निवास करना, रहना, बसना)। **नः** = हमारे। **कृधि** = करो (कृ = करना)। **घृतम्** = घृत (घृ = सींचना, चमकना, प्रकाशित होना)। **घृतयोने** = हे घृतयोनि वाले (घृ - सींचना, प्रकाशित होना)। **पिब** = पी लो (पिब्-पा - पीना)। **प्र** = अधिक। **यज्ञपतिम्** = यजनपति को (यज - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना, संयोग करना, पत-श्री मान् होना, शक्तिमान होना)। **तिर** = पार उतारो (तृ-पार जाना) ॥ 3 ॥

365. इदम् विष्णुः विचक्रमे, त्रेधा नि दधे पदा।
सम् ऊढम् अस्य पांसुरे ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ :- विष्णुः विष्णु ने **इदम्** इसकी **विचक्रमे** रचना की। **त्रेधा** तीन प्रकार से **पदा** पद (ज्ञान, गति) को **नि दधे** धारण (स्थापित) किया। **अस्य** इसकी **सम्** सम्यक् **ऊढम्** वाणी **पांसुरे** पांसुल में ॥ 4 ॥

भावार्थ :- विष्णु का अर्थ है सर्वव्यापक अर्थात् परमात्मा। उन्होंने इस सृष्टि की रचना की। तीन प्रकार से पदस्थापित किया अर्थात् सृष्टि तीन रूपों में है। इसे चेतना, ऊर्जा, द्रव्य कह सकते हैं। सत्, रज, तम भी कहा जा सकता है ॥ 4 ॥

पदार्थ : इदम् = यह, इसको। **विष्णुः** = विष्णु (विष्ण् = व्याप्त होना)। **विचक्रमे** = रचना की (वि = विशेष, चक- तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)। **त्रेधा** = तीन प्रकार से (त्रि = तीन)। **नि** = निश्चित। **दधे** = धारण करें (दध - धारण करना)। **पदा** = पद (पद - चलना, स्थानान्तर करना)। **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **ऊढम्** = वाणी को (ऊ - शब्द करना)। **अस्य** = इसका। **पांसुरे** = पांसुल में (पा - रक्षा करना, पालन करना) ॥ 4 ॥

366. त्रीणि पदा वि चक्रमे, विष्णुः गोपाः अदाभ्यः।
इतो धर्माणि धारयन् ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ - अदाभ्यः अदाभ्य, जिसे आज्ञा देना सम्भव नहीं, अहिंसनीय **गोपाः** रक्षक **विष्णुः** विष्णु ने **त्रीणि** तीन **पदा** पद से **वि चक्रमे** पराक्रम किया। **इतो** यहां से **धर्माणि** धर्म को **धारयन्** धारण किया ॥ 5 ॥

भावार्थ - विष्णु का अर्थ है व्यापक अर्थात् सर्वव्यापी परमात्मा। उसका पराक्रम तीन लोक, तीन काल में सर्वदा होता रहता है। इससे ही धर्म प्रतिष्ठित रहता है ॥ 5 ॥

पदार्थ :- त्रीणि = तीन। **पदा =** पद से (पद - स्थानान्तर करना)। **वि =** विशेष, विना, विलोम। **चक्रमे =** पराक्रम किया (कृ - करना, चक - तृप्त होना, सन्तुष्ट होना)। **विष्णुः =** व्यापक, विष्णु ने (विष् = व्याप्त होना)। **गोपाः =** रक्षक (गुप् = रक्षा करना, चमकना, बोलना)। **अदाभ्यः =** अदाभ्य (दभ - हिंसा करना, आज्ञा देना)। **इतो =** यहां से (सर्वनाम)। **धर्माणि =** धर्म को (धृ = धारण करना)। **धारयन् =** धारण किया (धृ-धा = धारण करना) ॥ 5 ॥

367. विष्णोः कर्माणि पश्यत,

यतो व्रतानि पस्पशे।

इन्द्रस्य युज्यः सखा॥ 6॥

मन्त्रार्थ :- विष्णोः विष्णु का **कर्माणि** कर्मों को **पश्यत** देखो, **यतो** जिससे **व्रतानि** व्रतों को **पस्पशे** बाँधते हैं। **इन्द्रस्य** इन्द्र का **युज्यः** योग्य **सखा** मित्र (है)॥ 6॥

भावार्थ :- विष्णु अर्थात् व्यापक परमात्मा के कर्मों को देखें। परमात्मा निरन्तर कर्मरत है। वह कर्म करने के लिए बाध्य नहीं है, फिर भी निरन्तर कर्म करता है। स्वाभाविक है कि हमसे भी यही अपेक्षा है। सभी व्रत-संकल्प उसी परमात्मा से तथा उसकी तरह कर्म करते रहेने से ही सम्भव हो पाते हैं। वह परमात्मा तथा निरन्तर कर्मशीलता ही इन्द्र अर्थात् ऐश्वर्य का योग्य सखा है, मित्र है, साथी है।

पदार्थ :- विष्णोः = विष्णु का (विष्-विविष् - व्याप्त होना, अभिषेक करना, सींचना, अलग करना)। **कर्माणि =** कर्मों को। **पश्यत** - देखो (पश् = देखना)। **यतः =** जिससे। **व्रतानि** - व्रतों को (वृ = वरण करना)। **पस्पशे** - बाँधते हैं (पश-पष-स्पश - बांधना, एकत्र करना, संयुक्त करना)। **इन्द्रस्य** - इन्द्र का, परम ऐश्वर्यशाली का (इन्द = परम ऐश्वर्य (ऐश्वर्य) होना)। **युज्यः** - योग्य (युज - जोड़ना)। **सखा** - मित्र (सख् = मित्र होना)॥ 6॥

368. तत् विष्णोः परमम् पदम्,

सदा पश्यन्ति सूरयः।

दिवि इव चक्षुः आ ततम्॥ 7॥

मन्त्रार्थ :- तत् - वह, **विष्णोः** विष्णु के **परमम्** परम **पदम्** पद को **सदा** - सर्वदा, सर्वकाल, **दिवि** दिवलोक **इव** के समान **ततम्** विस्तृत **चक्षुः** दृष्टि वाले **सूरयः** सूरगण **आ** समन्तात्, सम्यक् **पश्यन्ति** देखते हैं॥ 7॥

भावार्थ :- विष्णु अर्थात् व्यापक परमात्मा के व्यापक दृष्टि तथा विचार वाले उपासक उसके परम पद अथवा मूल स्वरूप का अनुभव करते हैं॥ 7॥

पदार्थ :- तत् = वह। **विष्णोः =** विष्णु का (विष्-विविष् = सींचना, व्याप्त होना)। **परमम् =** परम, अत्यन्त। **पदम्** - पद को (पद - चलना, स्थानान्तर करना)। **सदा =** प्रत्येक समय, सर्वदा। **पश्यन्ति** - देखते हैं (पश् = देखना)। **सूरयः** - प्रकाशवान्, ऐश्वर्यवान् (सुर् = प्रकाश होना, ऐश्वर्य होना)। **दिवि** - दिव में (दिव् = तेजस्वी होना, विद्वान् होना)। **इव** - के समान। **चक्षुः =** आँख (चक्ष् - देखना)। **आ-ततम्** - विस्तृत (तन् = विस्तार, फैलाना, श्रद्धा, उपकार, शब्द करना, भरोसा करना, आश्रय देना, सहाय करना, शब्द करना॥ 7॥

369. दिवो विष्णो उत वा पृथिव्या, महो विष्णो उरोः अन्तरिक्षात्।

हस्तौ पृणस्व, बहुभिः वसुव्यैः आ प्रयच्छ दक्षिणात् आ उत, सव्यात्॥ 8॥

मन्त्रार्थ :- विष्णो हे विष्णु, **दिवो** दिवलोक **उत पृथिव्या** पृथ्वी **वा** अथवा **विष्णो** हे विष्णु, **महो** महान् **उरोः** विस्तृत **अन्तरिक्षात्** अन्तरिक्ष से, **हस्तौ** हाथ **पृणस्व** पूर्ण करो, **बहुभिः =** बहुत द्वारा **वसुव्यैः** = वसुओं द्वारा **दक्षिणात्** दाहिने (और) **आ** सम्यक् **उत** उसी तरह **सव्यात्** बायें (हाथों) से **विष्णवे** विष्णु के लिए **प्रयच्छ** प्रदान करो॥ 8॥

भावार्थ :- विष्णु का अर्थ है व्यापक। सर्वव्यापी परमात्मा विष्णु है तथा उस व्यापकता को अपने जीवन में धारण करने वाला उपासक भी विष्णु या वैष्णव कहा जा सकता है। वसु का अर्थ निवास, निश्छल, दया, प्रीति आदि हैं तथा वसु का सामान्य अर्थ धन भी माना जाता है। आधिभौतिक अर्थ में अर्थात् जीवन निर्वाह की आवश्यकताओं के लिए निवास आदि सम्पत्ति तथा आध्यात्मिक अर्थ में गुण ही धन माने जाते हैं॥ 8॥

पदार्थ : दिवो = दिवलोक, स्तुति का (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, स्तुति करना)। **विष्णो** = विष्णु का (विष्णृ = व्यापक होना)। **उत** = ही। **वा** = अथवा। **पृथिव्या** = पृथ्वी का (पृथ - फेंकना, उड़ाना, प्रेरणा करना, व्याप्त होना)। **महो** = महान् (मह - सम्मान करना, पूजा करना)। **विष्णो** = विष्णु का (विष्णृ = व्यापक होना)। **उरोः** = विस्तृत (उर् = विस्तार करना, जाना)। **अन्तरिक्षात्** = अन्तरिक्ष से। **हस्तौ** = हाथ से (हस्त -देना, लेना, ग्रहण करना)। **पृणस्व** = पूर्ण करो (पृ

- पूर्ण करना, भरना)। **बहुभिः** = बहुत द्वारा (सर्वनाम)। **वसुव्यैः** = वसुओं द्वारा (वसु = निश्चल होना, निःछल होना)। **आ** = सम्यक् उपसर्ग। **प्रयच्छ** = प्रदान करो (यच्छ = देना, सौंपना, लौटाना, रखना)। **दक्षिणात्** = दक्षिण से। **आ** = उपसर्ग। **उत** = ही। **सव्यात्** = बाएं से ॥ **8** ॥

107 सूक्त - 12 (34)

370. अग्ने जातान् प्र णुद मे सपत्नान्,
प्रति अजातान् जातवेदः नुदस्व।
अधः-पदम् कृणुष्व ये पृतन्यवः,
अनागसः ते वयम् अदितये स्याम ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - **अग्ने** = हे अग्नि **जातान्** = उत्पन्न हुए को **नः** = हमारे **सपत्नान्** = सपत्नों को, प्रकाश-ऐश्वर्यवान्, प्रकाश-रक्षक को **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक **णुद (नुद)** = भेजें **मे** = मेरा, मेरे लिए **जातवेदः** = जातवेद, वेद को उत्पन्न करने वाले **प्रति** = सम्बन्ध में, प्रत्येक **अजातान्** = नहीं उत्पन्न हुए को, अजन्मे को, न उत्पन्न हुए को **नुदस्व** = भेजें **अधः-पदम्** = अधस्पद को, निम्न पद को **कृणुष्व** = कीजिये **ये** = जो **पृतन्यवः** = व्यापक **अनागसः** = निष्पाप, निर्दोष **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग **अदितये** = अपनाने योग्य, अक्षय, अविनाशी के लिए **स्याम** = हों ॥ **1** ॥

भावार्थ - हे अग्नि स्वरूप परमात्मा, उत्पन्न हुए हमार सपत्नों को, प्रकाश-ऐश्वर्यवान्, प्रकाश-रक्षक को प्रेषित करें, भेजें। जातवेदः = जातवेद, वेद को उत्पन्न करने वाले प्रत्येक अजन्मे को, न उत्पन्न हुए को भी भेजें। हमारे सुन्दर मन वाले अनादर न करते हुए, व्यापक की स्तुति करते हुए बोलें। तव = तुम्हारा सुख, सम्मान, समृद्धि त्रिगुण वरणीय उद्भासित करने वाले हों ॥ **1** ॥

पदार्थ - **अग्ने** = हे अग्नि (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। जातान् = उत्पन्न हुए को (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **णुद (नुद)** = भेजें (नुद् = भेजना, प्रेरणा करना, जाना)। **मे** = मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **सपत्नान्** = सपत्न, प्रकाश-ऐश्वर्यवान्, प्रकाश-रक्षक (स - सहित, साथ, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, पत् = जाना, नीचे जाना, पतन होना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना, सप - पूर्ण ज्ञान होना, पूरा समझना, पूर्णतया जानना, संसक्त होना, संलग्न होना, मिलाप होना)। **प्रति** = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (अव्यय)। **अजातान्** = अजन्मा को (अ - नहीं, जन् - जन्म होना)। **जातवेदः** = जातवेद, जन्म से विद्वान्, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले (जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जा-ज्ञा - जानना, विद् - जानना)। **नुदस्व** = भेजें (नुद् = भेजना, प्रेरणा करना, जाना)। **अधः-पदम्** = अधस्पद को, निम्न पद को (अधः = नीचे, अव्यय। अधः - अधर् - न्यून करना, जीतना, निम्न गति करना, अ - नहीं, धृ - धारण करना)। **कृणुष्व** = कीजिये (कृ - करना)। **ये** = जो (सर्वनाम)। **पृतन्यवः** = व्यापक (पृत -व्याप्त होना, जीवन होना, बलपूर्वक निकालना, पृ = पूर्ण करना)। **अनागसः** = निष्पाप, निर्दोष (अन्- नही, अग- कुटिल चाल चलना, अनुचित आचरण करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **अदितये** = अपनाने योग्य, अक्षय, अविनाशी के लिए (अ - नहीं, अद् = खाना, दी = नष्ट होना)। **स्याम** = हों (अस् - होना) ॥ **1** ॥

49 अनुवाकः - 4

108 सूक्त - 8 (46)

371. सिनीवालि पृथुष्टुके, या देवानाम् असि स्वसा।
जुषस्व हव्यम् आहुतम्, प्रजाम् देवि दिदिड्ढि नः ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - **पृथुष्टुके** विस्तृत स्तुति वाली **सिनीवालि** सिनीवालि, **या** जो **देवानाम्** देवों की **स्वसा** स्वसा **असि** हो, **आहुतम्** आहुत **हव्यम्** हव्य को **जुषस्व** सेवन करो। **देवि** हे देवि, **नः** हमारे **प्रजाम्** प्रजा को **दिदिड्ढि** प्रदान करो ॥ 1 ॥

भावार्थ - सिनीवालि शब्द सि धातु से बनता है जिसका अर्थ बाँधना, गूँथना है। अतः इसका अर्थ हुआ बाँधने - गूँथने वाली शक्ति। यह देवों की स्वसा है। समाज को एकता के सूत्र में बाँधे रखना, माला में मोतियों की तरह समाज को गूँथकर रखना ही देवों का स्वभाव है। यही स्वसा होना है। स्व का अर्थ अपना है तथा सु धातु का अर्थ उत्पन्न करना, ऐश्वर्य होना है। देवों का स्वत्व, अपनत्व तथा सृजन-ऐश्वर्य होना ही स्वसा होन है। हू धातु का अर्थ दान करना तथा आदान - प्रदान करना होता है। जो कुछ आहुत है, अर्थात् दान किया गया है अथवा समाज के लिए आदान-प्रदान - वितरण के लिए अर्पण किया गया है, उसका सेवन करने के लिए देवजन अधिकृत हैं। वे उसका उचित उपयोग, सेवन कर सकते हैं, उनसे प्रार्थना है कि हमारे प्रजा अर्थात् परिजनों को यथायोग्य प्रदान करें ॥ 1 ॥

पदार्थ :- **सिनीवालि** = बांधने वाली (सि - बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना)। **पृथुष्टुके** = विस्तृत स्तुति वाली (पृथु = विस्तार होना, प्रेरणा करना, स्तु- स्तुति करना, प्रशंसा करना)। **या** = जो। **देवानाम्** = देवों की (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना)। **असि** = हो। **स्वसा** = स्वत्व, सृजन, ऐश्वर्य। **जुषस्व** = सेवा करो (जुष् = विचार करना, सेवा करना, सन्तुष्ट करना)। हव्यम् = आदान-प्रदान करने योग्य वस्तु, विचार, ज्ञान, हव्य का (हु = आदान-प्रदान करना, देना)। **आहुतम्** = आदान-प्रदान किया हुआ, आहुत (हु = देना, आदान-प्रदान करना)। **प्रजाम्** = प्रजा को (प्र - बहुत, प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **देवि** = देवी, तेजस्विनी (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना)। **दिदिड्ढि** = प्रदान करना (दा = देना, सौपना, प्रदान करना)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा ॥ 1 ॥

50 अनुवाकः - 5

109 सूक्त - 2 (53)

372. अमुत्रभूयात् अधि यत् यमस्य बृहस्पतेः अभिशस्तेः अमुञ्चः। प्रति औहताम् अश्विना मृत्युम् अस्मत् देवानाम् अग्ने भिषजा शचीभिः ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ :- **अमुत्रभूयात्** = निरोगी हो जाये **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार **यत्** = जिसे, जो **यमस्य** = यम का **बृहस्पतेः** = विराट, महान्, बृहस्पति **अभिशस्तेः** = सर्वथा हिंसा, विनती, स्तुति, निन्दा करने वाले का **अमुञ्चः** = त्याग किया, न त्यागने वाला **प्रति** = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में **औहताम्** = ऊहन करें, कल्पना करें, तर्क करें **अश्विना** = अश्विन, तीव्र गति युक्त, व्यापक **मृत्युम्** = मृत्यु को **अस्मत्** = हमसे **देवानाम्** = देवों का **अग्ने** = हे अग्नि **भिषजा** = चिकित्सक **शचीभिः** = उत्तम वाणी द्वारा ॥ 1 ॥

भावार्थ :- हे विराट, महान् परमात्मा बृहस्पति, हम हिंसा को न छोड़ने वाले यम के लिए निरोगी हों। हे अग्नि स्वरूप परमात्मा, तीव्र गति युक्त, व्यापक होकर देवों के चिकित्सक स्पष्ट वाणी से मृत्यु के प्रतिकूल तर्क-विचार, कल्पना करें। भाव यह है कि स्पष्ट वाणी हो, सत्य को स्वीकार करें, रोग की उचित चिकित्सा करें तो निरोगी हो सकते हैं। यहाँ स्पष्ट है कि केवल शारीरिक रोगों की बात नहीं की गयी है। सत्य स्पष्ट उत्तम वाणी बोलने का अनुपालन करते हुए मृत्यु जैसे भयावह रोग या जीवन की समस्याओं का उपचार खोज सकते हैं ॥ 1 ॥

पदार्थ :- **अमुत्रभूयात्** = अमुत्र हो जाये, निरोगी हो जाये (अम् = गति, शब्द, सेवा करना, रोग होना, भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **अधि** = अधिगत, अधिकृत, अधिक, उच्च, ऊपर, पूर्णतः, अधिकार (उपसर्ग)। **यत्** = जिसे, जो (सर्वनाम)। **यमस्य** = यम का (यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)। **बृहस्पतेः** = विराट, महान्, बृहस्पति (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना, पत् - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना, नीचे जाना, गिरना, पा - पालन करना, रक्षा करना)। **अभिशस्तेः** = सर्वथा हिंसा, विनती, स्तुति, निन्दा करने वाले का (अभि = अभिमुख, विशेष, प्रमुख, सभी ओर, सर्वथा,

शष् = हिंसा करना, मारना, निन्दा करना, अभिशस् = विनती करना, प्रार्थना करना, शंस् = चाहना, स्तुति करना)। **अमुञ्चः** = त्याग किया, न त्यागने वाला (अ - नहीं, भूतकालिक उपसर्ग, मुञ्च् - घर्षण करना, मोचन करना, त्यागना, ऐश्वर्य होना, प्रसन्न होना)। **प्रति** = सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (अव्यय)। **औहताम्** = ऊहन करें, कल्पना करें, तर्क करें (ऊह् = अनुमान करना, कल्पना करना, तर्क करना)। **अश्विना** = अश्विन, तीव्र गति युक्त, व्यापक (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)। **मृत्युम्** = मृत्यु को (मृ = मरना, देहत्याग करना)। **अस्मत्** = हमसे (सर्वनाम)। **देवानाम्** = देवों का (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **अग्ने** = हे अग्नि (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **भिषजा** = चिकित्सक (भिषज - चिकित्सा करना)। **शचीभिः** = उत्तम वाणी द्वारा (शच- स्पष्ट बोलना) **॥ 1 ॥**

373. उत् वयम् तमसः परि, स्वः पश्यन्त उत्तमम्।
देवम् देवत्रा सूर्यम्, अगन्म ज्योतिः उत्तमम् ॥ 7 ॥

मन्त्रार्थ :- **वयम्** हम **तमसः** तमस् (अन्धकार) से **परि** परे **उत्तमम्** उत्तम में **रोहन्तः** बढ़ते हुए, चढ़ते हुए **नाकम्** नाक, अक रहित, अकुटिल, अविचल **देवत्रा** देवों का त्राण करने वाले **उत्तमम्** उत्तम **ज्योतिः** ज्योति **सूर्यम्** सूर्य **देवम्** देव को **अगन्म** (हम) प्राप्त हुए **॥ 7 ॥**

भावार्थ :- स्वः का अर्थ ऐश्वर्यवान्, सब कुछ उत्पन्न करने वाला परमात्मा के साथ स्व अर्थात् अपना वास्तविक स्व-रूप भी मान सकते हैं। अज्ञान के अन्धकार से परे वह दिव्य स्वरूप उत्तर अर्थात् श्रेष्ठतर है। उसे देख सकें तो उस उत्तर से भी बढ़कर उत्तम अर्थात् श्रेष्ठतम ज्योति को प्राप्त कर सकते हैं **॥ 7 ॥**

पदार्थ :- **उत्** = ही। **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग। **तमसः** = तमस् (अन्धकार) से (तम - इच्छा करना, चाहना, मानसिक या शारीरिक व्यथा से दुःखित होना)। **परि** = सभी तरफ। **रोहन्तः** = बढ़ते हुए, चढ़ते हुए (रुह - बढ़ना, ऊपर जाना, चढ़ना, बीज से उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना)। **नाकम्** = नाक, अक रहित, अकुटिल, अविचल (नक् - नक्क् = नष्ट होना, नष्ट करना, न - नहीं, अक् - जाना, कुटिल गति करना, नश्-नक्क -नाश होना)। **उत्तमम्** = उत्तम। **देवम्** = देव को (देव्, दिव् = तेजस्वी होना, चमकना)। **देवत्रा** = देवों का त्राण करने वाले (देव्, दिव् = तेजस्वी होना, चमकना)। **सूर्यम्** = सूर्य को (सुर् = ऐश्वर्य प्रकाश होना)। **अगन्म** = गये, पाया, प्राप्त हुए (गम् = जाना, जानना, पाना)। **ज्योतिः** = प्रकाश, ज्योति (ज्युत - कान्तिमान् होना, चमकना, प्रकाशित होना)। **उत्तमम्** = उत्तम **॥ 7 ॥**

51 अनुवाकः -6

110 सूक्त - 1 (60)

374. ऊर्जम् बिभ्रत् वसुवनिः सुमेधाः अघोरेण चक्षुषा मित्रियेण।
गृहान् आ एमि सुमनाः वन्दमानः रमध्वम् मा बिभीत मत् ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ : **ऊर्जम्** = ऊर्जा को **बिभ्रत्** = धारण करते हुए **वसुवनिः** = वसु, स्नेहपूर्वक निवास करने तथा वास देने वाला, वसुवन **सुमेधाः** = अच्छे मेधा वाले **अघोरेण** = अघोर, अहिंसक, पापी, अपराधी भाव से **चक्षुषा** = नेत्रों से, दृष्टि से, स्पष्ट वाणी से **मित्रियेण** = मित्र भाव से **गृहान्** = घरों को **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **एमि** = जाता हूँ **सुमनाः** = अच्छे मन वाले **वन्दमानः** = वन्दमान **रमध्वम्** = रमण करो **मा** = नहीं। **बिभीत** = डरो **मत्** = मुझसे **॥ 1 ॥**

भावार्थ : गृहस्थ जीवन में समस्याएँ तथा कठिनाइयाँ आती हैं, परन्तु साहस, शक्ति, बुद्धि के साथ उनका समाधान करना चाहिए, भयभीत नहीं होना चाहिए।

पदार्थ : **ऊर्जम्** = ऊर्जा को (ऊर्ज - शक्तिमान होना, पराक्रमी होना)। **बिभ्रत्** = धारण करते हुए (भृ- धारण करना)। **वसुवनिः** = वसु, स्नेहपूर्वक निवास करने तथा वास देने वाला, वसुवन (वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना,

वन - शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, आपद्ग्रस्त होना, अलग करना, मिलाना, स्मरण करना, बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, याचना करना, मांगना, दुःख देना, उद्योग-धन्धा करना)। **सुमेधाः** = अच्छे मेधा वाले (मेधा = शीघ्र समझना)। **अघोरेण =** अघोर, अहिंसक, पापी, अपराधी भाव से (अ - नहीं, घुर् - भय होना, भयंकर होना, भीषण शब्द करना, घूर - हिंसा करना, जीर्ण होना, वृद्ध होना, पुराना होना, घोर - चतुराई से चलना, अघ् = पाप, अपराध करना)। **चक्षुषा =** नेत्रों से, दृष्टि से, स्पष्ट वाणी से (चक्ष् - स्पष्ट बोलना, कहना, देखना)। **मित्रियेण =** मित्र भाव से (मिद् - स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, नरम होना, मृदुल होना)। **गृहान्** = घरों को (गृह - लेना, स्वीकार करना)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **एमि** = जाता हूँ (इ - जाना)। **सुमनाः** = अच्छे मन वाले (मन - जानना, समझना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना)। **वन्दमानः** = वन्दमान (वन्द् = स्तुति करना, प्रणाम करना, वन्दना करना, प्रशंसा करना)। **रमध्वम् =** रमण करो (रम् = रमना, क्रीडा करना)। **मा** = नहीं। **बिभीत** = डरो (भी = भय होना, डरना)। **मत्** = मुझसे (सर्वनाम) **॥ 1 ॥**

375. उपहूताः इह गावः, उपहूताः अजावयः।
अथो अन्नस्य कीलालः, उपहूतो गृहेषु नः ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ : इह यहाँ **गावः** गाय-बैल, **उपहूताः** तृप्त किये गये हैं। **अजावयः** बकरी, भेड़ **उपहूताः** तृप्त किये गये हैं। **अथो** इसके पश्चात् **नः** हमारे **गृहेषु** घरों में **अन्नस्य** अन्न के **कीलालः** बन्ध **उपहूतो** तृप्त हुए हैं **॥ 5 ॥**

भावार्थ : उपयोगी पालतू पशुओं की उचित देखभाल कर उनको तृप्त रखें तो उनका उचित उपयोग कर अन्न-भण्डार भी तृप्त होंगे, अर्थात् भर जायेंगे। कल्याणकारी परमात्मा, विद्वानों, कार्यों का अनुगमन करते रहें तो सुख-शान्ति, सामर्थ्य, कल्याण प्राप्त होता रहेगा **॥ 5 ॥**

पदार्थ : उपहूताः = तृप्त की गयीं (हु = तृप्त करना, दान करना, लेना)। **इह** = यहाँ। **गावः** = गायें (गा - जाना, गमन करना)। **अजावयः** = बकरी (तथा) भेड़ (अजाः + अवयः, अज - जाना, हांकना, दौड़ाना)। **अथो** = अब, इसके बाद। **अन्नस्य** = अन्न का (अद - खाना)। **कीलालः** = बन्ध (कील् = बांधना)। **गृहेषु** = घरों में (गृह - लेना, स्वीकार करना)। **नः** = हमारे **॥ 5 ॥**

111 सूक्त - 14 (73)

376. अग्ने शर्द्ध महते सौभगाय, तव द्युम्नानि उत्तमानि सन्तु।
सम् जास्पत्यम् सुयमम् आ कृणुष्व, शत्रूयताम् अभि तिष्ठा महांसि ॥ 10 ॥

मन्त्रार्थ - अग्ने हे अग्नि, **शर्द्ध** उत्साह करो, विजयी हो। **तव** तुम्हारे **महते** बड़े **सौभगाय** सौभाग्य के लिए, **उत्तमानि** श्रेष्ठ **द्युम्नानि** प्रकाश **सन्तु** हों। **सम्** सम्यक् **जास्पत्यम्** उत्पन्न (सृष्टि) का पालन-रक्षण को **सुयमम्** सुन्दर नियमयुक्त **आ कृणुष्व** अच्छे प्रकार कीजिये, **शत्रूयताम्** शत्रुता को **महांसि** तेजों को **अभि तिष्ठा** सभी ओर से रोको **॥ 10 ॥**

भावार्थ - शृध क्रियापद है, इसका अर्थ हुआ शृध करो। शृध धातु का अर्थ आद्र होना, मुस्कराना, सहन करना, उत्साह होना, जीतना है। शर्द्ध का भावार्थ इसी अर्थ में बल भी किया गया है। अतः **अग्ने शर्ध** का अर्थ होगा उत्साह करो, विजयी हो। उत्साह, विजय प्रदान करो, यह भावार्थ भी उचित है। जास्पत्यम् का अर्थ उत्पन्न हुए अथवा उत्पन्न करने वाले के योग्य है। इसको जायापति का वैदिक रूप मानकर इसका भावार्थ दम्पति भाव भी लिया गया है। शत्रुता की भावना को ही रोका जाना चाहिए, शत्रु-भावना रखने वालों को भी रोका जाना चाहिए। भग शब्द को भज् धातु से निष्पन्न माना जाता है। भज का अर्थ सेवा करना, दान करना आदि हैं **॥ 10 ॥**

पदार्थ - अग्ने = हे अग्नि, **शर्द्ध** उत्साह करो, विजयी हो (शृध् - सहन करना, जीतना)। **तव =** तुम्हारे **महते =** महान्, पूज्य (मह् - पूजा करना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना) **सौभगाय =** सौभाग्य के लिए (सु-भग, सु - सुन्दर, अच्छा, भज्-भग् - सेवा करना, सेवन करना, दान करना, अलग करना), **उत्तमानि =** श्रेष्ठ **द्युम्नानि =** प्रकाश (द्यु - अभिगमन करना, द्युत् - प्रकाश करना), **सन्तु =** हों (अस् - होना)। **सम् =** सम्यक्, **जास्पत्यम् =** उत्पन्न (सृष्टि) के पालन-रक्षण को (जन् - उत्पन्न करना, पत् - ऐश्वर्य होना, पा - पालन करना) **सुयमम् =** सुन्दर नियमयुक्त (सु -

सुन्दर, यम् - आवरण करना, पोषण करना, खिलाना, अधीन रखना, नियमन करना) **आ =** अच्छे प्रकार **कृणुष्व =** कीजिये (कृ - करना), **शत्रूयताम् =** शत्रुता को (शी-शद्-शत् - जीर्ण होना, गिरना, गिराना) **महांसि =** महत्ताओं को (मह् - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना) **अभि =** सभी ओर से **तिष्ठा =** रोको (तिष्ठ - ठहरना, बैठना, रोकना) **॥ 10 ॥**

52 अनुवाकः - 7

112 सूक्त - 6 (79)

377. अमावास्ये न त्वत् एतानि अन्यो,
विश्वा रूपाणि परि भू जजान।
यत् कामाः ते जुहुमः तत् नो,
अस्तु वयम् स्याम् पतयो रयीणाम् ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ :- अमावास्ये हे अमावास्य! **न** - नहीं **त्वत्** - तुमसे **एतानि** - ये **अन्यो** - अन्य **विश्वा** - सभी **रूपाणि** - रूप **परि** - परितः **भू =** भू, होना, भुवन, अस्तित्व, हो गया, हुआ **जजान =** उत्पन्न किया। **यत्** - जो **कामाः** - कामनाएं **ते** - वे **जुहुमः** - देते हैं, समर्पित करते हैं **तत्** - वह **नो** - हमारा **अस्तु** - हो **वयम्** - हम **स्याम** - हों **पतयो** - पति, ऐश्वर्यवान् **रयीणाम्** - गतियों के **॥ 4 ॥**

भावार्थ :- प्रजा का अर्थ है विशेष रूप से उत्पन्न हुआ और प्रजापति उस उत्पन्न हुए का स्वामी है। जो कुछ भी सृष्टि में उत्पन्न हुआ है, उस प्रजापति परमात्मा से परे, उससे पृथक् अन्य कुछ भी नहीं है, सब कुछ परमात्मा ही है, उसी का रूप है। अतः हम जो भी कामना करते हैं, वे सभी हमारी कामनायें पूर्ण हो जाती हैं। हम रयि अर्थात् दिव्य वाणी वेद के स्वामी, अधिकारी तथा रक्षक हो, यहीं प्रार्थना है। जुहुमः का अर्थ है हम दान करते हैं, आदान-प्रदान करते हैं। हम परमात्मा के साथ आदान प्रदान करते हैं तो उसके हो जाते हैं। हमें स्वतः सब कुछ प्राप्त हो जाता है। क्योंकि सब कुछ परमात्मा ही है, उससे पृथक कुछ है ही नहीं **॥ 4 ॥**

पदार्थ :- अमावास्ये = हे अमावास्य! (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अम् = गति, शब्द, सेवा करना, मा - मापना, मान करना, वस् = रहना, निवास करना)। **न =** नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **त्वत् =** तुमसे (सर्वनाम)। **एतानि =** इनको, ये (सर्वनाम)। **अन्यो =** कोई और, इतर, अन्य (सर्वनाम)। **विश्वा =** विश्व, सभी, सब (सर्वनाम)। **रूपाणि =** रचना, आकार, रूप (रूप - आकार बनाना, रचना करना, मन में रूपाकृति लाना)। **परि =** सभी तरफ (उपसर्ग)। **भू =** भू, होना, भुवन, अस्तित्व, हो गया, हुआ (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **जजान =** उत्पन्न किया (उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन- उत्पन्न करना)। **यत् =** जिसे, जो (सर्वनाम)। **कामाः =** कामनाएं कामना, इच्छा (कम् - चाहना, इच्छा करना)। **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **जुहुमः =** दान करते हैं, आदान-प्रदान करते हैं (हु-जुहु = दान करना, आदान-प्रदान करना, ग्रहण करना, तृप्त करना, जु - जाना, शीघ्र जाना, भागना)। **तत् =** वह, उस को (सर्वनाम)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **अस्तु =** हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **वयम् =** हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **स्याम =** हों (अस् - होना)। **पतयः =** ऐश्वर्यवान् स्वामी (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **रयीणाम् =** गतिशीलताओं का (रय् = जाना, जानना, पाना) **॥ 4 ॥**

113 सूक्त - 7 (80)

378. प्रजापते न त्वत् एतानि अन्यो,
विश्वा रूपाणि परि भू जजान।
यत् कामाः ते जुहुमः तत् नो,

अस्तु वयम् स्याम् पतयो रयीणाम् ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ :- प्रजापते हे प्रजापति! **न** - नहीं **त्वत्** - तुमसे **एतानि** - ये **अन्यो** - अन्य **विश्वा** - सभी **रूपाणि** - रूप **परि** - परितः **भू =** भू, होना, भुवन, अस्तित्व, हो गया, हुआ **जजान =** उत्पन्न किया। **यत्** - जो **कामाः** - कामनाएं **ते** - वे **जुहुमः** - देते हैं, समर्पित करते हैं **तत्** - वह **नो** - हमारा **अस्तु** - हो **वयम्** - हम **स्याम** - हों **पतयो** - पति, ऐश्वर्यवान् **रयीणाम्** - गतियों के **॥ 3 ॥**

भावार्थ :- प्रजा का अर्थ है विशेष रूप से उत्पन्न हुआ और प्रजापति उस उत्पन्न हुए का स्वामी है। जो कुछ भी सृष्टि में उत्पन्न हुआ है, उस प्रजापति परमात्मा से परे, उससे पृथक् अन्य कुछ भी नहीं है, सब कुछ परमात्मा ही है, उसी का रूप है। अतः हम जो भी कामना करते हैं, वे सभी हमारी कामनायें पूर्ण हो जाती हैं। हम रयि अर्थात् दिव्य वाणी वेद के स्वामी, अधिकारी तथा रक्षक हो, यहीं प्रार्थना है। जुहुमः का अर्थ है हम दान करते हैं, आदान-प्रदान करते हैं। हम परमात्मा के साथ आदान प्रदान करते हैं तो उसके हो जाते हैं। हमें स्वतः सब कुछ प्राप्त हो जाता है। क्योंकि सब कुछ परमात्मा ही है, उससे पृथक कुछ है ही नहीं **॥ 3 ॥**

पदार्थ :- प्रजापते = हे प्रजापति!, हे प्रजा का पालन करने वाले (प्र - प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न करना, पत - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना)। **न =** नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **त्वत् =** तुमसे (सर्वनाम)। **एतानि =** इनको, ये (सर्वनाम)। **अन्यो =** कोई और, इतर, अन्य (सर्वनाम)। **विश्वा =** विश्व, सभी, सब (सर्वनाम)। **रूपाणि =** रचना, आकार, रूप (रूप - आकार बनाना, रचना करना, मन में रूपाकृति लाना)। **परि =** सभी तरफ (उपसर्ग)। **भू =** भू, होना, भुवन, अस्तित्व, हो गया, हुआ (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **जजान =** उत्पन्न किया (उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन- उत्पन्न करना)। **यत् =** जिसे, जो (सर्वनाम)। **कामाः =** कामनाएं कामना, इच्छा (कम् - चाहना, इच्छा करना)। **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **जुहुमः =** दान करते हैं, आदान-प्रदान करते हैं (हु-जुहु = दान करना, आदान-प्रदान करना, ग्रहण करना, तृप्त करना, जु - जाना, शीघ्र जाना, भागना)। **तत् =** वह, उस को (सर्वनाम)। **नः =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **अस्तु =** हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **वयम् =** हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **स्याम =** हों (अस् - होना)। **पतयः =** ऐश्वर्यवान् स्वामी (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **रयीणाम् =** गतिशीलताओं का (रय् = जाना, जानना, पाना) **॥ 3 ॥**

53 अनुवाकः - 8

114 सूक्त - 2 (83)

379. धाम्नः धाम्नः राजन्,
इतः वरुण मुञ्च नो
यत् आपो अघ्न्या इति वरुण इति,
शपामहे ततो वरुण मुञ्च नो ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ - धाम्नः = धाम द्वारा, धारण करने वाले द्वारा **धाम्नः =** धाम द्वारा, धारण करने वाले द्वारा **राजन् =** हे राजन्, प्रकाशित होने वाले **इतः =** यहां से। **वरुण =** वरुण **मुञ्च =** मुक्त करें **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा **यत् =** जिसे, जो **आपो =** आप, व्याप्त, व्यापक **अघ्न्या =** अहिंसक, अहिंसनीय **इति =** ऐसा, यह, इसी प्रकार **वरुण =** वरुण **इति =** ऐसा, यह, इसी प्रकार **शपामहे =** शपथ लेते हैं **ततो =** उससे, उसके अनन्तर **वरुण =** वरुण **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा **मुञ्च =** मुक्त करें **॥ 2 ॥**

पदार्थ - धाम्नः = धाम द्वारा, धारण करने वाले द्वारा (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)। **धाम्नः =** धाम द्वारा, धारण करने वाले द्वारा (धा - धारण करना, पोषण करना, रक्षा करना, दान करना)। **राजन् =** हे राजन्, प्रकाशित होने वाले (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **इतः =** यहां से। **वरुण**

= वरुण (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **मुञ्च =** मुक्त करें (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **यत् =** जिसे, जो (सर्वनाम)। **आपो =** आप, व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)। **अघ्न्या =** अहिंसक, अहिंसनीय (घ्न्, हन् = हिंसा करना)। **इति =** ऐसा, यह, इसी प्रकार (अव्यय)। **वरुण =** वरुण (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **इति =** ऐसा, यह, इसी प्रकार (अव्यय)। **शपामहे =** शपथ लेते हैं (शप् = शपथ लेना, प्रतिज्ञा करना, शाप देना, निन्दा करना)। **ततो =** उससे, उसके अनन्तर (सर्वनाम)। **वरुण =** वरुण (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **मुञ्च =** मुक्त करें (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम) **॥ 2 ॥**

380. उत् उत्तमम् वरुण पाशम् अस्मत्,
अव अधमम् वि मध्यमम् श्रथाय।
अधा वयम् आदित्य व्रते तव,
अनागसो अदितये स्याम ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ - **उत्** = उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च **उत्तमम्** = उत्तम, श्रेष्ठ-इच्छा, शुभ-इच्छा **वरुण** = हे वरुण, वरणीय, वरण करने वाला **पाशम्** = पाश को, दिखाने वालें को, बन्धन को **अस्मत्** = हमसे **अव** = नीचे, दूर **अधमम्** = अधम को, न फूँकने वाले को **वि** = विशेष, विना, विलोम **मध्यमम्** = मध्य को **श्रथाय** = श्रथ के लिए **अधा** = अथ **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग **आदित्य** = आदित्य, अदिति से उत्पन्न, अक्षय-अविनाशी से उत्पन्न **व्रते** = वरण करने के लिए, व्रत के लिए, व्रत में **तव** = तुम्हारा **अनागसो** = अपराध रहित, निष्पाप, निर्दोष **अदितये** = अपनाने योग्य, अक्षय, अविनाशी के लिए **स्याम** = हों **॥ 3 ॥**

भावार्थ - हम परमात्मा के व्रत-अनुशासन में रहें तो सभी सांसारिक बन्धनों से मुक्त हो सकते हैं **॥ 3 ॥**

पदार्थ - **उत् =** ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (उपसर्ग)। **उत्तमम् =** उत्तम, श्रेष्ठ-इच्छा, शुभ-इच्छा (उत् = ही, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च, तम् - अन्धकार होना, इच्छा करना, चाहना, मानसिक या शारीरिक व्यथा से दुःखित होना)। **वरुण =** वरणीय, वरण करने वाला (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **पाशम् =** पाश को, दिखाने वालें को, बन्धन को (पश् - देखना, पश - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना)। **अस्मत् =** हमसे (सर्वनाम)। **अव =** रक्षा करो, पालन करो (अव = नीचे, दूर, प्राप्त (अव्यय), अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)। **अधमम् =** अधम को, न फूँकने वाले को (अधः = नीचे, अव्यय। धम्-ध्मा - फूँकना, फूँक कर आग जलाना, फूँककर वंशी आदि वाद्य बजाना)। **वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **मध्यमम् =** मध्य को (सर्वनाम)। **श्रथाय =** मुक्त करो (श्रथ – प्रयत्न करना, जाना, मुक्त करना, छोड़ना, मारना, पीड़ा देना, बन्धन करना, बांधना, जकड़ना,निर्बल होना, शक्तिहीन होना)। **अधा =** अथ (अव्यय)। **वयम् =** हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **आदित्य =** आदित्य, अदिति से उत्पन्न, अक्षय-अविनाशी से उत्पन्न (अ - नहीं, अद् - खाना, नष्ट करना, दी = क्षय होना, नष्ट होना)। **व्रते =** वरण करने के लिए, व्रत के लिए, व्रत में (वृत् = रहना, होना, वरण करना, चमकना, बोलना, सेवा करना, वर्ताव करना, व्यवहार करना, हिंसा करना, वृ = नियोजित करना, आच्छादित करना, वरण करना)। **तव =** तुम्हारा (सर्वनाम)। **अनागसो =** अपराध रहित, निष्पाप, निर्दोष (अन्- नही, अग- कुटिल चाल चलना, अनुचित आचरण करना, जाना, घूमना, टेढ़ा जाना, टेढ़े रास्ते से जाना, लेना, ग्रहण करना)। **अदितये =** अपनाने योग्य, अक्षय, अविनाशी (अ - नहीं, अद् = खाना, दी = नष्ट होना)। **स्याम =** हों (अस् - होना) **॥ 3 ॥**

115 सूक्त - 3 (84)

381. अनाधृष्यः जातवेदाः अमर्त्यः विराट् अग्ने क्षत्रभृत् दीदिहि इह।
विश्वाः अमीवाः प्रमुञ्चन् मानुषीभिः शिवाभिः अद्य परि पाहि नः गयम्॥ 1॥

मन्त्रार्थ :- अनाधृष्यः = अनाधृष्य, निरभिमानी, अजेय **जातवेदाः** = जातवेद, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले **अमर्त्यः** = अमर्त्य **विराट्** = विराट, प्रकाशित **अग्ने** = हे अग्नि **क्षत्रभृत्** = क्षतृभृत्, क्षतृ का भरण करने वाला। **दीदिहि** = रूप बनाओ **इह** = इसमें, यहां, यह **विश्वाः** = विश्व का, सब का **अमीवाः** = शब्द, गति, सेवा युक्त, अतुल्य, अहिंसक **प्रमुञ्चन्** = मुक्त करें **मानुषीभिः** = मानुषियों द्वारा, मनन करने वालों द्वारा **शिवाभिः** = कल्याणकारियों द्वारा **अद्य** = आज **परि** = सभी तरफ **पाहि** = पालन करो, रक्षा करो **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा **गयम्** = गय, गायन, वाणी, गति, ज्ञान को॥ 1॥

भावार्थ :- अग्नि स्वरूप परमात्मा अनाधृष्य अर्थात् निरभिमानी, अजेय है। वह जातवेद अर्थात् वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाला है। वह विचार से परे, विराट अर्थात् विशेष प्रकाशित है। वह अग्नि क्षतृ अर्थात् रक्षकों का भरण करने वाला है। परमात्मा के ऐसे रूप की भावना की गयी है॥ 1॥

पदार्थ - अनाधृष्यः = अनाधृष्य, निरभिमानी, अजेय (अन् - नहीं, आ - समन्तात्, पूर्णतः, धृष् = जीतना, अधीर होना, घबराना, धृषा = गर्व करना, स्वयम् को बड़ा समझना)। **जातवेदाः** = जातवेद, जन्म से विद्वान्, वेद को जानने वाले, वेद को उत्पन्न करने वाले (जन् - उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जा-ज्ञा - जानना, विद् - जानना)। **अमर्त्यः** = अमर्त्य (अ = नहीं, मृ = मरना, देहत्याग करना)। **विराट्** = विराट, प्रकाशित (वि = विशेष, विना, विलोम, राज् = प्रकाशित होना, शोभित होना, चमकना, रट् - शब्द करना, बोलना, सम्भाषण करना)। **अग्ने** = हे अग्नि (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **क्षत्रभृत्** = क्षतृभृत्, क्षतृ का भरण करने वाला (क्षत्, क्षद् = खाना, कूटना, ढकना, मार डालना, रक्षा करना)। **दीदिहि** = रूप बनाओ (दिह् = रूप बनाना, बढ़ना, वृद्धि करना)। **इह** = इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **विश्वाः** = विश्व का, सब का (विश् = भीतर जाना, सभी तरह फैलना)। **अमीवाः** = शब्द, गति, सेवा युक्त, अतुल्य, अहिंसक (अम् = गति, शब्द, सेवा करना, रोग होना, अ - नहीं, मा = मापना, नापना, तौलना, मि - फेकना, स्थापना करना, रक्षा करना, मी - हिंसा करना, मारना, मा - मापना, मान करना)। **प्रमुञ्चन्** = मुक्त करें (मुञ्च् - बोलना, कहना, मुक्त करना, त्याग करना, प्र - प्रकृष्ट, अधिक, मुद - हर्ष होना)। **मानुषीभिः** = मानुषियों द्वारा, मनन करने वालों द्वारा (मन् - मनन करना, समझना, जानना, मान - पूजा करना, सम्मान करना, श्रेष्ठ होना, शोध करना)। **शिवाभिः** = कल्याणकारियों द्वारा (शिव् - कल्याण करना)। **अद्य** = आज (अव्यय)। **परि** = सभी तरफ (उपसर्ग)। **पाहि** = पालन करो, रक्षा करो (पा - पालन, रक्षण करना)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **गयम्** = गय, गायन, वाणी, गति, ज्ञान को (गै - शब्द, ध्वनि करना, गायन करना)॥ 1॥

382. मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः,
परावतः आ जगम्यात् परस्याः।
सृकम् संशाय पविम् इन्द्र तिग्मम्,
वि शत्रून् ताढि वि मृधो नुदस्व॥ 3॥

मन्त्रार्थ - मृगो = मृग, अन्वेषी **न** = नहीं, समान, उपमार्थक **भीमः** = भयंकर **कुचरो** = कुचर **गिरिष्ठाः** = पर्वतों पर स्थित, वाणियों में स्थित **परावतः** = रक्षा करो, पालन करो **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण **जगम्यात्** = चलें, ग्रहण करें **परस्याः** = पर का, अन्य का **सृकम्** = सृक को, प्रगतिशील को **संशाय** = संश के लिए, सम्यक् शयन के लिए **पविम्** = पवित्र, पालन, रक्षा करने वाले को **इन्द्र** = परम ऐश्वर्यशाली **तिग्मम्** = ज्ञानी, कूटचाल को **वि** = विशेष, विना, विलोम **शत्रून्** = शत्रुओं को **ताढि** = ताड़ना दो **वि** = विशेष, विना, विलोम **मृधो** = हिंसक, आद्र **नुदस्व** = भेजें॥ 3॥

पदार्थ - मृगो = मृग, अन्वेषी (मृग् - अन्वेषण करना, खोजना, आखेट करना)। **न** = नहीं, समान, उपमार्थक

(अव्यय)। **भीमः =** भयंकर (भी - डरना)। **कुचरो =** कुचर (कु - बुरा, चर - चलना, आचरण करना, कुच् - आकुञ्चन होना, लपेटना, स्वच्छ करना, लिखना, चुराना)। **गिरिष्ठाः =** पर्वतों पर स्थित, वाणियों में स्थित (गृ - सींचना, गीला करना, समझना, जानना, गृ - शब्द करना, स्थ = स्थित होना)। **परावतः =** रक्षा करो, पालन करो (परावतः = पराया, लौटा हुआ, अव्यय, परा = परम, परे, पीछे, विपरीत (अव्यय) अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग)। **जगम्यात् =** चलें, ग्रहण करें (जग् = गति करना, लेना, घर्षण करना)। **परस्याः =** पर का, अन्य का (सर्वनाम)। **सृकम् =** सृक को, प्रगतिशील को (सु = अच्छा, उपसर्ग, सृ - जाना, सरकना)। **संशाय =** संश के लिए, सम्यक् शयन के लिए (सम् - सम्यक्, भलीभांति, शी - सोना, शयन करना, शि - तीक्ष्ण करना, पैना करना, छील के पैना करना)। **पविम् =** पवित्र, पालन, रक्षा करने वाले को (पु - पालन करना, रक्षा करना, श्वास लेना, पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)। **इन्द्र =** परम ऐश्वर्यशाली (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **तिग्मम् =** ज्ञानी, कूटचाल को (तिग् = जाना, जानना, पाना, कूटचाल चलना)। **वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **शत्रून् =** शत्रुओं को (शी-शद्-शत् - जीर्ण होना, गिरना, गिराना)। **ताढि =** ताड़ना दो (तड - मारना, ताड़न करना। तड - चमकना, चमकाना, बोलना)। **वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **मृधो =** हिंसक, आद्र (मृध - दबाना, हिंसा करना, मार डालना, दुःख देना, आद्र करना, गीला करना, गीला होना)। **नुदस्व =** भेजें (नुद् = भेजना, प्रेरणा करना, जाना) **॥ 3 ॥**

116 सूक्त - 4 (85)

383. त्यम् उ षु वाजिनम् देवजूतम्,
सहोवानम् तरुतारम् रथानाम्।
अरिष्टनेमिम् पृतनाजिम् आशुम्,
स्वस्तये तार्क्ष्यम् इह आ हुवेम ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - त्यम् = उस को **उ =** निश्चय ही, भी **षु =** उत्तम, अच्छा **वाजिनम् =** वाजयुक्त को, विद्यायुक्त को, गतियुक्त को **देवजूतम् =** देव से उत्पन्न के लिए **सहोवानम् =** सहनशीलता, सहनशक्ति **तरुतारम् =** पार करने वाला, तारने वाला, तारक **रथानाम् =** रथों का **अरिष्टनेमिम् =** अत्यन्त हिंसक, गतिशील, व्यापक को जानने, प्राप्त करने वाले **पृतनाजिम् =** पृतनों का, व्यापकों, बल वालों का **आशुम् =** आशु, व्यापकता, भोजन, तीव्र गति युक्त, व्यापक **स्वस्तये =** कल्याण के लिए, सुख के लिए **तार्क्ष्यम् =** गमनीय, गम्य, प्राप्य, पाने योग्य, विद्वान् **इह =** इसमें, यहां, यह **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **हुवेम =** आह्वान करते हैं, दान करते हैं, आदान-प्रदान करते हैं, तृप्ति करते हैं **॥ 1 ॥**

पदार्थ - त्यम् = उस को (सर्वनाम)। **उ =** निश्चय ही, भी। **षु =** उत्तम, अच्छा (उपसर्ग)। **वाजिनम् =** वाजयुक्त को, विद्यायुक्त को, गतियुक्त को (वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना, वा - गति करना, बहना, वय = जाना, जानना, पाना, उड़ना, वी - जाना, जानना, पाना, व्याप्त होना, इच्छा करना, आक्रमण करना, घेरना, भेजना, खाना, वे - बुनना, रचना करना, सृजन करना)। **देवजूतम् =** देव से उत्पन्न के लिए (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रीति करना, प्रसन्न होना, खेलना, जन - उत्पन्न होना)। **सहोवानम् =** सहनशीलता, सहनशक्ति (सह = शक्तिमान् करना, सहना, सहन करना, सक्षम होना, प्रतिरोध करना, समर्थ होना, तृप्त होना, सन्तुष्ठ होना, प्रसन्न होना, वन - शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना, आपद्ग्रस्त होना, अलग करना, मिलाना, स्मरण करना, बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, याचना करना, मांगना, दुःख देना, उद्योग-धन्धा करना)। **तरुतारम् =** पार करने वाला, तारने वाला, तारक (तृ - पार जाना, पर तीर को जाना, जल पर तैरना, जीतना, जल के पार जाना)। **रथानाम् =** रथों का (रथ् = जाना, ले जाना, रम - रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना, क्रीडा करना, खेलना)। **अरिष्टनेमिम् =** अत्यन्त हिंसक, गतिशील, व्यापक को जानने, प्राप्त करने वाले (अ - नहीं, ऋ-अर् - गति करना, व्याप्त होना, महत्व दिखाना, हिंसा करना, रिष- हिंसा करना, मार डालना, दुःख देना, मारने का यत्न करना, नी - जाना, जानना, पाना, प्राप्त करना, पहुँचना)। **पृतनाजिम् =** पृतनों का, व्यापकों, बल वालों का (पृत - व्याप्त होना, जीवन होना, बलपूर्वक निकालना, पृ = पूर्ण करना)। **आशुम् =** आशु, व्यापकता, भोजन, तीव्र

गति युक्त, व्यापक (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, अश् = भोजन करना)। **स्वस्तये =** कल्याण के लिए, सुख के लिए (सु - अच्छा, अस् - होना, स्वस्ति = कल्याण)। **तार्क्ष्यम् =** गमनीय, गम्य, प्राप्य, पाने योग्य, विद्वान् (तृक्ष् -चलना, जाना, जानना, पाना)। **इह =** इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **हुवेम =** आह्वान करते हैं, दान करते हैं, आदान-प्रदान करते हैं, तृप्ति करते हैं (हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना) ॥ 1 ॥

117 सूक्त - 5 (86)

384. त्रातारम् इन्द्रम् अवितारम् इन्द्रम्,
हवे हवे सुहवम् शूरम् इन्द्रम्।
हुवे नु शक्रम् पुरुहूतम् इन्द्रम्,
स्वस्ति नो इन्द्रः मघवान् कृणोतु ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - त्रातारम् = रक्षक, पालक, पोषक **इन्द्रम् =** इन्द्र को **अवितारम् =** रक्षक को **इन्द्रम् =** इन्द्र को **हवे =** दानयोग्य, आदान-प्रदान योग्य, तृप्ति योग्य **हवे =** दानयोग्य, आदान-प्रदान योग्य, तृप्ति योग्य **सुहवम् =** सुन्दर आह्वान को **शूरम् =** शूर को, वीर को, पराक्रमी को **इन्द्रम् =** इन्द्र को **हुवे =** आह्वान करते हैं, आदान-प्रदान करते हैं **नु =** ही, भी **शक्रम् =** सक्षम को, समर्थ करने वाले को **पुरुहूतम् =** पुरुहूत को, अग्र-दत्त को, पहले दिया हुआ को **इन्द्रम् =** इन्द्र को **स्वस्ति =** कल्याण **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा **इन्द्रः =** इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान **मघवान् =** धनवान्, ऐश्वर्यवान् **कृणोतु =** करो ॥ 1 ॥

पदार्थ - त्रातारम् = रक्षक, पालक, पोषक (त्रै = पालन करना, रक्षा करना, पोषण करना)। **इन्द्रम् =** इन्द्र को (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **अवितारम् =** रक्षक को (अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना)। **इन्द्रम् =** इन्द्र को (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **हवे =** दानयोग्य, आदान-प्रदान योग्य, तृप्ति योग्य (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **हवे =** दानयोग्य, आदान-प्रदान योग्य, तृप्ति योग्य (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **सुहवम् =** सुन्दर आह्वान को (सु - सुन्दर, अच्छा, ह्वे - आह्वान करना)। **शूरम् =** शूर को, वीर को, पराक्रमी को (शूर - पराक्रमी होना, शूरवीर होना, वीरता दिखाना)। **इन्द्रम् =** इन्द्र को (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **हुवे =** आह्वान करते हैं, आदान-प्रदान करते हैं (हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)। **नु =** ही, भी (निपात, अव्यय)। **शक्रम् =** सक्षम को, समर्थ करने वाले को (शक् - सक्षम होना, कर सकना, सहना, सहन करना)। **पुरुहूतम् =** पुरुहूत को, अग्र-दत्त को, पहले दिया हुआ को (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, पृ - पूर्ण करना, भरना, पालन करना, रक्षा करना, तृप्त करना, हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)। **इन्द्रम् =** इन्द्र को (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **स्वस्ति =** कल्याण (अव्यय)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **इन्द्रः =** इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **मघवान् =** धनवान्, ऐश्वर्यवान् (मघ् = धन होना, ऐश्वर्य होना)। **कृणोतु =** करो (कृ = करना) ॥ 1 ॥

118 सूक्त - 8 (89)

385. अपो दिव्याः अचायिषम्,
रसेन सम् अपृक्ष्महि।
पयस्वान् अग्ने आ अगमम्,
तम् मा सम् सृज वर्चसा ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - **अपो =** पालन करने वाला **दिव्याः =** दिव में, दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय में **अचायिषम् =** पूजन करता हूँ, श्रवण करता हूँ **रसेन =** रस द्वारा **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति **अपृक्ष्महि =** स्पर्श किया, संयोग किया **पयस्वान् =** विस्तृत, विस्तारयुक्त, गतिशील, प्रवाहमान **अग्ने =** हे अग्नि **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण **अगमम् =** गये, पाया, प्राप्त हुए **तम् =** उसको, उसे **मा =** नहीं, मत **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति **सृज =** सृजन करो **वर्चसा =** प्रकाश द्वारा, तेज द्वारा ॥ **1** ॥

पदार्थ - **अपो =** पालन करने वाला (अप = जाना, जानना, पाना, पालन करना)। **दिव्याः =** दिव में, दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय में (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)। **अचायिषम् =** पूजन करता हूँ, श्रवण करता हूँ (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, चाय - पूजा करना, सम्मान करना, सुनना, जानना, समझना)। **रसेन =** रस द्वारा (रस् = शब्द करना, स्वाद लेना, प्यार करना)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **अपृक्ष्महि =** स्पर्श किया, संयोग किया (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, पृच - स्पर्श करना, छूना, संघर्ष करना, संयोग करना)। **पयस्वान् =** विस्तृत, विस्तारयुक्त, गतिशील, प्रवाहमान (पय् = जाना, जानना, पाना, बहना, पयस् = विस्तार करना, फैलाना)। **अग्ने =** हे अग्नि (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग)। **अगमम् =** गये, पाया, प्राप्त हुए (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अग् = जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, गति करना, घूमना, कुटिल गति करना, टेढ़ा जाना, लेना, ग्रहण करना, गम् = जाना, जानना, पाना)। **तम् =** उसको, उसे (सर्वनाम)। **मा =** नहीं, मत (अव्यय)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **सृज =** सृजन करो (सृज् - छोड़ना, त्याग करना, विविध रूप से उत्पन्न करना, रचना करना)। **वर्चसा =** प्रकाश द्वारा, तेज द्वारा (वर्च - प्रकाशित होना, चमकना) ॥ **1** ॥

386. इदम् आपः प्र वहत,
अवद्यम् च मलम् च यत्।
यत् च अभिदुद्रोह अनृतम्,
यत् च शेपे अभीरुणम् ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ :- इदम् - यह, **आपः** - आप, **प्र-वहत** - प्रवाहित हो, **यत्** - जो, **अवद्यम्** - अवद्य, अकथनीय, **च** - और, **मलम्** - मल, **च** - और। **च** - और, **यत्** - जो, जिसने, **अनृतम्** - अनृत को, ऋत-विरोधी को, **अभिदुद्रोह** - द्रोह किया, **च** - और, **यत्** - जो, जिसने, **अभीरुणम्** - अभीरुण को, **शेपे** - शाप दिया। **च** - और, **आपो** - हे आप, **मा** - मुझको, **तस्मात्** - उससे, **एनसः** - एनस से, पाप से, **पवमानः** - पवित्र करते हुए, **मुञ्चतु** - मुक्त करो ॥ **3** ॥

भावार्थ :- आप का अर्थ है व्यापक। इसका भावार्थ व्यापक भावना तथा सर्वव्यापक परमात्मा लिया जाता है।

पदार्थ : - इदम् = यह, इसको। **आपः =** आप, व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)। **प्र-वहत =** प्रवाहित हो (वह् = ले जाना, वहन करना)। **अवद्यम्** - अवद्य, अकथनीय (अ - नहीं, वद् - बोलना, कहना)। **च =** और। **मलम्** - मल, धारण करने वाला (मल - पहनना, धारण करना, धरना, पकड़ना, चिपकाना, लटकाना)। **च =** और। **यत् =** जो। **यत् =** जो। **च =** और। **अभिदुद्रोह =** सभी ओर द्रोह किया (द्रुह - द्वेष करना, मारने के लिए प्रयत्न करना)। **अनृतम्** - अनृत को, ऋत-विरोधी को (अ - नहीं, नृ - ले जाना, अन् - नहीं, ऋत - गति करना, सञ्चालित करना, व्यवस्था बनाना)। **यत् =** जो। **च =** और। **शेपे** - शाप दिया (शप - शपथ करना, सौगन्ध खाना, प्रतिज्ञा करना, शाप देना, गाली देना)। **अभीरुणम्** - अभीरुण को (अ - नहीं, भी - डरना, घबराना)। **आपः =** आप, व्याप्त, व्यापक (आप् - प्राप्त होना, अवलम्ब होना, व्याप्त होना, जाना, जानना, पाना, अप - पालन करना)। **मा =** नहीं, मुझको (मा - मापना)। **तस्मात् =** उससे (अपादान, अलग होना)। **एनसः** - एनस से, पाप से (एन - मिलाना, अलग करना, पाप करना, दूषित होना, दुष्टाचरण करना)। **पवमानः** - पवित्र करते हुए (पू - पवित्र करना, स्वच्छ करना)। **च =** और। **मुञ्चतु** - मुक्त करें, त्याग करें, कहें (मुञ्च् - मुक्त करना, त्याग करना, बोलना, कहना, पीसना, कूटना, ठगना,

फंसाना, दुराचरणी होना, गर्व करना) ॥ 3 ॥

387. एधो असि एधिषीमहि समित् असि,
तेजो असि तेजो मयि धेहि ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ - **एधो** = वृद्धि **असि** = हो **एधिषीय** = प्रकाश प्राप्त करूँ, प्रगति करूँ **समित्** = भलीभांति ही, सम्यक् प्रकाशित **असि** = हो **सम्** = सम्यक्, भलीभांति **एधिषीय** = प्रकाश प्राप्त करूँ, प्रगति करूँ **असि** = हो **तेजो** = तेज, चमक **असि** = हो **तेजो** = तेज, चमक **मयि** = मुझमें **धेहि** = धारण करें ॥ 4 ॥

पदार्थ - **एधो** = वृद्धि (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, इ - जाना, एध - बढ़ना)। **असि** = हो (अस् - होना)। **एधिषीय** = प्रकाश प्राप्त करूँ, प्रगति करूँ (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना, एध - बढ़ना)। **समित्** = भलीभांति ही, सम्यक् प्रकाशित (सम् = सम्यक्, भलीभांति, इत् - इन्ध = प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना, प्रकाश करना)। **असि** = हो (अस् - होना)। **सम्** = सम्यक्, भलीभांति। **एधिषीय** = प्रकाश प्राप्त करूँ, प्रगति करूँ (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, इध्-इधि-इन्ध् - प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना, एध - बढ़ना)। **तेजो** = तेज, चमक (तिज्, तेज् = चमकना, चमकाना, पैना करना, प्रभाव होना, तीक्ष्ण करना)। **असि** = हो (अस् - होना)। **तेजो** = तेज, चमक (तिज्, तेज् = चमकना, चमकाना, पैना करना, प्रभाव होना, तीक्ष्ण करना)। **मयि** = मुझमें (सर्वनाम)। **धेहि** = धारण करें (धा-धि-धी - धारण करना, पहनना, पोषण करना, रक्षण करना, देना) ॥ 4 ॥

54 अनुवाकः - 9

119 सूक्त - 1 (91)

388. इन्द्रः सुत्रामा स्ववान् अवोभिः,
सुमृडीको भवतु विश्ववेदाः।
बाधताम् द्वेषो अभयम् नः कृणोतु,
सुवीर्यस्य पतयः स्याम ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - **इन्द्रः** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान **सुत्रामा** = सुत्रामा, सुरक्षक, सुपालक, सुपोषक **स्ववान्** = अपनी सेवा कर्मों से युक्त, अपनत्व, अपनों से युक्त **अवोभिः** = रक्षण द्वारा, रक्षा-साधनों से **सुमृडीको** = सुख देने वाला **भवतु** = हो, हो जाये **विश्ववेदाः** = विश्ववेद **बाधताम्** = बाधित करे **द्वेषो** = द्वेष **अभयम्** = अभय, भय-हीन, भय-मुक्त **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा **कृणोतु** = करो **सुवीर्यस्य** = उत्तम वीरता का **पतयः** = ऐश्वर्यवान् स्वामी **स्याम** = हों ॥ 1 ॥

पदार्थ - **इन्द्रः** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **सुत्रामा** = सुत्रामा, सुरक्षक, सुपालक, सुपोषक (सु - अच्छा, सुन्दर, उत्तम, त्रै = पालन करना, रक्षा करना, पोषण करना)। **स्ववान्** = अपनी सेवा कर्मों से युक्त, अपनत्व, अपनों से युक्त (स्व = अपना, वन् = शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना)। **अवोभिः** = रक्षण द्वारा, रक्षा-साधनों से (अव् = रक्षा करना, पालन करना, प्रिय होना, जानना, प्रभु होना)। **सुमृडीको** = सुख देने वाला (सु - अच्छा, सुन्दर, मृड - सुख देना, प्रसन्न करना, सुखी होना, प्रसन्न होना)। **भवतु** = हो, हो जाये (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **विश्ववेदाः** = विश्ववेद (विश्व = सभी, विद् = जानना)। **बाधताम्** = बाधित करे (बाध् - रोकना, अटकाव करना, बाधा देना, दुःख देना)। **द्वेषो** = द्वेष (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)। **अभयम्** = अभय, भय-हीन, भय-मुक्त (अ - नहीं, भी = भय होना, डरना, घबराना)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **कृणोतु** = करो (कृ = करना)। **सुवीर्यस्य** = उत्तम वीरता का (सु - अच्छा, सुन्दर, वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)। **पतयः** = ऐश्वर्यवान् स्वामी (पत् = जाना, नीचे जाना, गिरना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **स्याम** = हों (अस् = होना) ॥ 1 ॥

120 सूक्त - 2 (92)

389. सः सुत्रामा स्ववान् इन्द्रो अस्मत्,
आरात् चित् द्वेषः सनुतः युयोतु।
तस्य वयम् सुमतौ यज्ञियस्य,
अपि भद्रे सौमनसे स्याम॥ 2॥

मन्त्रार्थ - **सः** = वह, उसने **सुत्रामा** = सुत्रामा, सुरक्षक, सुपालक, सुपोषक **स्ववान्** = अपनी सेवा कर्मों से युक्त, अपनत्व, अपनों से युक्त **इन्द्रो** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान **अस्मत्** = हमसे **आरात्** = दूर से **चित्** = भी, ही **द्वेषः** = द्वेष **सनुतः** = सेवक **युयोतु** = अलग करे, मिलाये **तस्य** = उसका **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग **सुमतौ** = सुमति में **यज्ञियस्य** = यजनीय का, यजनकर्ता का **अपि** = भी, निकट **भद्रे** = कल्याणकारी **सौमनसे** = सुमति वाले, सुमति युक्त **स्याम** = हों॥ 2॥

पदार्थ - **सः** = वह, उसने। **सुत्रामा** = सुत्रामा, सुरक्षक, सुपालक, सुपोषक (सु - अच्छा, सुन्दर, उत्तम, त्रै = पालन करना, रक्षा करना, पोषण करना)। **स्ववान्** = अपनी सेवा कर्मो से युक्त, अपनत्व, अपनों से युक्त (स्व = अपना, वन् = शब्द करना, सेवा करना, सहायता करना)। **इन्द्रो** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **अस्मत्** = हमसे (सर्वनाम)। **आरात्** = दूर से (अव्यय)। **चित्** = भी, ही। **द्वेषः** = द्वेष (द्विष् = द्वेष करना, विरोध करना, शत्रुता करना)। **सनुतः** = सेवक (सनु - देना, दान करना, सेवा करना, पूजा करना, सत्कार करना)। **युयोतु** = अलग करे, मिलाये (यु - मिलाना, अलग करना, बाँधना, गूँथना, यु- पृथक् पृथक् करना)। **तस्य** = उसका (सर्वनाम)। **वयम्** = हम, हम सब, हम लोग (सर्वनाम)। **सुमतौ** = सुमति में (सु - सुन्दर, अच्छा, सु - उत्पन्न करना, पैदा करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, मन - मनन करना, जानना, समझना, स्वीकार करना, अभ्यास करना, स्थिर होना, गर्व होना)। **यज्ञियस्य** = यजनीय का, यजनकर्ता का (यज - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना, संयोग करना)। **अपि** = भी, निकट (अव्यय)। **भद्रे** = कल्याणकारी (भदि-भन्द् = सुख होना, शुभ कर्म करना, कल्याण होना)। **सौमनसे** = सुमति वाले, सुमति युक्त (सु - सुन्दर, अच्छा, सु - उत्पन्न करना, पैदा करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, मन - मनन करना, जानना, समझना, स्वीकार करना, अभ्यास करना, स्थिर होना, गर्व होना)। **स्याम** = हों (अस् = होना)॥ 2॥

121 सूक्त - 4 (94)

390. ध्रुवम् ध्रुवेण हविषा, अव सोमम् नयामसि।
यथा नः इन्द्रः केवलीः विशो, समनसः करत्॥ 1॥

मन्त्रार्थ :- **ध्रुवम्** - ध्रुव को, **ध्रुवेण** - ध्रुव द्वारा, **हविषा** = हविष से, दान व आदान-प्रदान द्वारा **अव** = नीचे, दूर, प्राप्त, **सोमम्** सोम को, **नयामसि** - ले जाते हैं **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार, **नः** - हमारा, **इन्द्रः** - इन्द्र, **केवलीः** = केवली, सेवा, सिंचन **विशो** - प्रवेशी, **समनसः** - समान मन वाले, सम्यक् प्राणवान्, **करत्** - किया, करते हैं॥ 1॥

भावार्थ :- परमात्मा के समान समर्पित उपासक भी श्रेष्ठ विश्वनायक की भूमिका निभाते हैं। वे विवेकपूर्ण मार्गदर्शन से भटके हुए लोगों को भी सद्मार्ग पर ले आते हैं।

पदार्थ :- **ध्रुवम्** = ध्रुव को (ध्रुव् = अचल होना, स्थिर होना, जाना, गति करना, जानना, पाना)। **ध्रुवेण** = ध्रुव द्वारा (ध्रुव् = अचल होना, स्थिर होना, जाना, गति करना, जानना, पाना)। **हविषा** = हविष से, दान व आदान-प्रदान द्वारा (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **अव** = नीचे, दूर, प्राप्त (अव्यय)। **सोमम्** = सोम को, ऐश्वर्यवान् को (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना)। **नयामसि** - ले जाते हैं (नी = ले जाना)। **यथा** = जिससे, जैसे, जिस प्रकार (अव्यय)। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा। **इन्द्रः** = परम ऐश्वर्यवान् (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **केवलीः** = केवली, सेवा, सिंचन (केव् - सेवा

करना, सिंचन करना, घर्षण करना, रिक्त होना)। **विशः** = प्रवेशी, प्रतिष्ठित (विश् = प्रवेश करना, भीतर जाना)। **समनसः** - समान मन वाले, सम्यक् प्राणवान् (सम् = सम्यक् रूप से, भली भाँति, अन - प्राण होना, अन् = नहीं, अस् = फेंकना, बिखेरना, उड़ाना)। **करत्** - करते हुए, किया (कृ = करना) ॥ 1 ॥

122 सूक्त - 7 (97)

391. यत् अद्य त्वा प्रयति यज्ञे अस्मिन्,
होतः चिकित्वन् अवृणीमहि इह।
ध्रुवम् अयः ध्रुवम् उत शविष्ठ,
प्रविद्वान् यज्ञम् उप याहि सोमम् ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ :- यत् = जिसे, जो **अद्य** = आज **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारे। **प्रयति** - प्रगति **यज्ञे** - यजन में **अस्मिन्** = इसमें। **होतः** - होता **चिकित्वन्** = विद्वान् **अवृणीमहि** - वरण किया है **इह** = यहाँ **ध्रुवम्** = ध्रुव को, अचल, स्थिर, अविचल गतिशील को **अयः** - इससे, गतिशील, ज्ञानी, विद्वान् **ध्रुवम्** = ध्रुव को, अचल, स्थिर, अविचल गतिशील को **उत** = ही। **शविष्ठ** = अत्यन्त समीपगामी **प्रविद्वान्** = प्रकृष्ट विद्वान् **यज्ञम्** = यजन को **उप** = समीप। **याहि** - जाओ **सोमम्** = ऐश्वर्यवान् सृष्टिकर्ता, सोम को ॥ 1 ॥

भावार्थ :- यजन का अर्थ है देवपूजा, संगतिकरण, दान। विद्वानों ने इस भावना को अपनाकर ही समृद्धि प्राप्त की है। इससे ही शमन किया है, शान्ति प्राप्त की है। अतः इस तथ्य को जानते हुए इसके स्मीप जाओ, अर्थात् इस भावना को अपनाओ, जीवन में उतारो ॥ 1 ॥

पदार्थ :- यत् = जिसे, जो (सर्वनाम)। **अद्य** = आज (अव्यय)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारे। **प्रयति** - प्रगति (यत - यत्न करना, उद्योग करना, निश्चय करना, ठहराना)। **यज्ञे** - यजन में (यज् = देवपूजा, सङ्गतिकरण, दान)। **अस्मिन्** = इसमें। **होतः** - होता (हु = दान करना, आदान-प्रदान करना)। **चिकित्वन्** = विद्वान् (चिकित् - जानना)। **अवृणीमहि** - वरण किया है (वृ = वरण करना, अपनाना, नियोजित करना, आच्छादित करना, सेवा करना, परिचर्या करना)। **इह** = यहाँ (इस जीवन में, इस संसार में)। **ध्रुवम्** = ध्रुव को, अचल, स्थिर, अविचल गतिशील को (ध्रुव् = अचल होना, स्थिर होना, जाना, गति करना, जानना, पाना)। **अयः** - इससे (सर्वनाम), गतिशील, ज्ञानी, विद्वान् (अय - जाना)। **ध्रुवम्** = ध्रुव को, अचल, स्थिर, अविचल गतिशील को (ध्रुव् = अचल होना, स्थिर होना, जाना, गति करना, जानना, पाना)। **उत** = ही। **शविष्ठ** = अत्यन्त समीपगामी (शव - जाना, समीप जाना, आना, चलना-फिरना, बदले में देना, विकार होना)। **प्रविद्वान्** = प्रकृष्ट विद्वान् (प्र - प्रकृष्ट, अधिक, विद - शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा के कहना, रहना, वास करना, वसना, स्थिर रहना, विद्यमान होना, विचार करना)। **यज्ञम्** = यजन को (यज् = देवपूजा, सङ्गतिकरण, दान करना)। **उप** = समीप। **याहि** - जाओ (या - जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)। **सोमम्** = ऐश्वर्यवान् सृष्टिकर्ता, सोम को (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना, सो–स्य, सय - विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना) ॥ 1 ॥

392. सम् इन्द्र नो मनसा नेष गोभिः, सम् सूरिभिः हरिवन् सम् स्वस्त्या।
सम् ब्रह्मणा देव-हितम् यत् अस्ति, सम् देवानाम् सुमतौ यज्ञियानाम् ॥ 2 ॥

मन्त्रार्थ :- सम् = सम्यक् रूप से, भली भाँति **इन्द्र** = परम ऐश्वर्यशाली **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा। **मनसा** = मन से **नेष** = स्थान, ले जाओ **गोभिः** = गो द्वारा, गो के साथ **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **सूरिभिः** = सूर्यों द्वारा **हरिवन्** = हरि के समान, हरण करने वाले **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **स्वस्त्या** = कल्याण के लिए, सुख के लिए **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **ब्रह्मणा** = ब्रह्म द्वारा **देव-हितम्** = देवहित को **यत्** = जो **अस्ति** = है **सम्** = सम्यक् रूप से, भली भाँति **देवानाम्** = देवों का **सुमतौ** = सुमति में, सुबुद्धि में **यज्ञियानाम्** = यज्ञों का, यजनों का ॥

2 ॥

भावार्थ :- परम ऐश्वर्यशाली परमात्मा इन्द्र हमको मन, वाणी, कल्याणसाधनों आदि द्वारा सम्यक् दिशा में ले जाता है, साथ ले जाता है। जीवन में सम्यक्, उचित तथा उत्तम मार्ग पर चलने एवम् साथ रहने का सन्देश है **॥ 2 ॥**

विशेष :- सम् उपसर्ग क्रियापद से पूर्व आने पर सम्यक् रूप से, भली भाँति साथ होने, संगत होने का भावार्थ भी देता है। वेद में उपसर्ग स्वतन्त्र शब्द के रूप में ही आते हैं अर्थात् शब्द या धातु से जुड़े नहीं रहते हैं। अतः जिस धातु या शब्द के साथ जुड़कर उनका अर्थ करना होता है, उससे दूर, पृथक् भी हो सकते हैं। सम्-नेषि पद मानकर अर्थ किया जाता है। परम्परागत संहिताओं में इस मन्त्र के अन्त में स्वाहा पद भी मिलता है। छन्द तथा अर्थ की दृष्टि से स्पष्ट है कि वह पद मन्त्रा का भाग नहीं है। कर्मकाण्ड में विनियोग की दृष्टि से जोड़ दिया गया प्रतीत होता है। अनेक अन्य मन्त्रों में भी ऐसा मिलता है।

पदार्थ :- सम् = सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **इन्द्र =** परम ऐश्वर्यशाली (इन्द् - परम ऐश्वर्य होना)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा। **मनसा =** मन से (मन् - मनन करना, विचार करना)। **नेष =** स्थान, ले जाओ (निष - प्राप्त करना, ले जाना)। **गोभिः =** गो द्वारा, गो के साथ (गु - अस्पष्ट बोलना, शब्द करना, मनन करना)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **सूरिभिः** = सूर्यों द्वारा (सुर् = प्रकाश होना, ऐश्वर्य होना)। **हरिवन् =** हरि के समान, हरण करने वाले (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **स्वस्त्या =** कल्याण के लिए, सुख के लिए (सु - अच्छा, अस् - होना, स्वस्ति = कल्याण)। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **ब्रह्मणा** = ब्रह्म द्वारा (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **देव-हितम् =** देवहित को (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना, हि = गति करना, चलना, जाना, जाना, जानना, पाना, प्रेरणा करना)। **यत् =** जो। **अस्ति =** है। **सम् =** सम्यक् रूप से, भली भाँति (उपसर्ग)। **देवानाम्** = देवों का (दिव्, देव् = चमकना, तेजस्वी होना, विद्वान होना)। **सुमतौ =** सुमति में, सुबुद्धि में (सु - सुन्दर, अच्छा, सु - उत्पन्न करना, पैदा करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, मन - मनन करना, जानना, समझना, स्वीकार करना, अभ्यास करना, स्थिर होना, गर्व होना)। **यज्ञियानाम् =** यज्ञों का, यजनों का (यज् = देवपूजा, सङ्गतिकरण, दान करना) **॥ 2 ॥**

393. यान् आ अवहः उशतो देव देवान्, तान् प्रेरय स्वे अग्ने सधस्थे।
जक्षिवांसः पपिवांसः मधूनि, अस्मै धत्त वसवः वसूनि ॥ 3 ॥

मन्त्रार्थ :- यान् - जिनको, **आ** - समन्तात्, पूर्णतः, **अवहः** - वहन किया, **उशतो** - इच्छुक, **देव** - हे देव, **देवान्** - देवों को, **तान्** - उनको, **प्रेरय** - प्रेरित करो, **स्वे** - अपने, **अग्ने** - हे अग्नि, **सधस्थे** - स्थान पर। **जक्षिवांसः** - खाने वाले, हँसने वाले, **पपिवांसः** - पीने वाले **मधूनि** - मधुओं को **अस्मै** - हमारे लिए **धत्त** - धारण, पोषण करो **वसवः** - स्नेहपूर्वक निवास करने तथा वास देने वाले **वसूनि** - वसुओं को **॥ 3 ॥**

भावार्थ :- प्रसन्नता पूर्वक हँसते हुए खाने-पीने वाले देवजनों को अपने स्थान पर स्थित होने के लिए प्रेरित करने की भावना व्यक्त की गयी है। प्रकृति की दिव्य शक्तियाँ हों अथवा समाज के सुयोग्य, सज्जन देवजन, सभी को प्रासन्नता पूर्वक जीवन-यापन की समुचित व्यवस्था रहे, यही मानव समाज के हित में है। प्रकृति का संरक्षण - पोषण भी जीवन-रक्षा के लिए आवश्यक है तथा सज्जनों - विद्वानों का भी सहयोग करना महत्वपूर्ण है। सभी का स्वस्थान में पोषण होना आवश्यक है।

पदार्थ :- यान् - जिनको। **आ =** समन्तात्, पूर्णतः (उपसर्ग)। **अवहः** - वहन किया (अ - भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, वह - वहन करना, ले जाना)। **उशतः** - इच्छुक (उश - वश - इच्छा करना, चाहना)। **देव =** तेजस्वी, देव (देव्, दिव् = तेजस्वी होना, चमकना)। **देवान् =** देवों को (दिव्, देव् = तेजस्वी होना आदि)। **तान् =** उनको। **प्रेरय** - प्रेरित करो (प्र = अधिक, ईर - जाना, हांकना, प्रेरणा करना, फेंकना)। **स्वे =** अपने लिए, अपने साथ। **अग्ने =** हे अग्नि! (अग् = ऊर्ध्व गति करना, अग्रणी होना, तेजस्वी होना, चमकना, जानना, पहुंचना, पाना)। **सधस्थे** = सधस्थ में (सध = सह, साथ,

स्थ - स्थित होना)। **जक्षिवांसः =** खाने वाले, हँसने वाले (जक्ष् - खाना, हँसना)। **पपिवांसः** - पीने वाले (पी-पिब् - पीना)। **मधूनि =** मधुओं को (मध् = मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना, मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना)। **अस्मै =** हमारे लिए (सर्वनाम)। **धत्त =** धारण, पोषण करो (धा = धारण, पोषण, रक्षण, दान करना)। **वसवः =** स्नेहपूर्वक निवास करने तथा वास देने वाले (वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)। **वसूनि =** वसुओं को (वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना) **॥ 3 ॥**

394. सुगा वो देवाः सदना अकर्म ये, आजग्म सवने मा जुषाणाः।
वहमाना भरमाणा स्वाः वसूनि वसुम् घर्मम् दिवम् आ रोहत अनु ॥ 4 ॥

मन्त्रार्थ :- वो - तुमको, **सुगा** - सुन्दर गतियुक्त, **देवाः** - देवगण, **सदना** - सदनयुक्त, **अकर्म** - किया। **ये** - जो, **सवने** - सवन में, **मा =** नहीं, मत, **जुषाणाः** - तुष्ट करते हुए, **भरमाणा** - भरण करते हुए, **वहमाना** - वहन करते हुए **स्वाः =** उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि या जगत्, स्वः **वसूनि =** वसुओं को **वसुम् =** वसु को **घर्मम् =** घर्म को **दिवम् =** दिव को, तेजस्वी को **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम **रोहत =** बढ़ते हैं, चढ़ते हैं **अनु =** पश्चात्, पीछे, अनुकूल **॥ 4 ॥**

भावार्थ :- देवों ने हमें बहुत कुछ दिया है। वे इसी भाँति लोगों का भरण-पोषण करते हुए, उन्हें सन्तुष्ट करते हैं। उन्होंने हमारे लिए ही वसुओं को धारण किया है। हमें भी इसी प्रकार उदार रहना चाहिए।

पदार्थ :- सुगा - सुन्दर गतियुक्त (सु = अच्छा, गम् - जाना)। **वः =** तुम सबको, तुम सबके लिए। **देवाः =** देवगण (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, प्रीति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना)। **सदना =** सदनों, स्थानों (सद् = बैठना, स्थित होना, जाना, जानना, पाना, पहुँचना)। **अकर्म =** अकार्य, न करने योग्य। **ये =** जो। **आजग्म =** आये (आ - सम्यक्, समन्तात्, पूर्णतः, अज् = जानना, जाना, पहुँचना, स्थापित करना, फेंकना, आ-अज - आना, जग् - जाना, गति करना, लेना, ग्रहण करना, आ-जग् - आना)। **सवने =** सवन में (सु = उत्पन्न करना, ऐश्वर्य (ऐश्वर्य) होना या करना)। **मा =** नहीं, मत (अव्यय)। **जुषाणाः =** तुष्ट करते हुए (जुष् = विचार करना, सेवा करना)। **वहमानाः =** वहन करते हुए (वह् = वहन करना, ले जाना)। **भरमाणाः =** भरण करते हुए (भृ = धारण-पोषण करना, पूर्ण (पूरण) करना)। **स्वाः =** उत्पन्न, ऐश्वर्य, सृष्टि या जगत्, स्वः (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना)। **वसूनि =** वसुओं को (वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)। **वसुम् =** वसु को (वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)। **घर्मम् =** घर्म को (घृ = सींचना, चमकना, प्रकाश होना)। **दिवम् =** दिव को, तेजस्वी को (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)। **आ =** समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण, आगम (उपसर्ग)। **रोहत =** बढ़ते हैं, चढ़ते हैं (रुह - बढ़ना, ऊपर जाना, चढ़ना, बीज से उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना)। **अनु =** पश्चात्, पीछे, अनुकूल (उपसर्ग) **॥ 4 ॥**

395. यज्ञ यज्ञम् गच्छ, यज्ञपतिम् गच्छ, स्वाम् योनिम् गच्छ स्वाहा ॥ 5 ॥

मन्त्रार्थ :- यज्ञ - हे यज्ञ, **यज्ञम्** - यज्ञ को, **गच्छ** - जाओ, **यज्ञपतिम्** - यजनपति को, **गच्छ** - जाओ, **स्वाम्** - अपने, **योनिम्** - स्थान को, **गच्छ** - जाओ, **स्वाहा** - व्यापक हो **॥ 5 ॥**

भावार्थ :- यज्ञ अर्थात् देवपूजा, संगतिकरण, दान को वैदिक संस्कृति में बहुत महत्वपूर्ण माना गया है। सामूहिक धार्मिक आयोजनों को भी यज्ञ या यजन कहा जाता है। विविध प्रकार के ज्ञान यज्ञ तथा दान यज्ञ बहुधा आयोजित होते रहते हैं। यजन की महत्ता इतनी अधिक मानी गयी है कि परमात्मा को यज्ञ नाम से सम्बोधित किया गया है। यहाँ कहा गया है कि हे यज्ञ, तुम यज्ञ को जाओ। यहाँ शब्द सौन्दर्य तथा अलंकार की छटा भी दर्शनीय है। यज्ञ को ही सम्बोधित

किया गया है तथा उससे यज्ञ को जाने के लिए भी कहा गया है। यज्ञ स्वरूप परमात्मा को सम्बोधित करते हुए कहा जा रहा है कि यहाँ यजन हो, जो यजन की भावना के अनुरूप जीवन जीते हैं, उनको प्राप्त हो। इसी प्रकार से जो यज्ञ-भावना को झीवन में अपनाते हैं, ऐसे यज्ञ-पुरुषों से कहा गया है कि वे यज्ञ-स्वरूप परमात्मा को प्राप्त हों। उन्हें जीवन में सुख-सामर्थ्य प्राप्त हो, यह भी कामना की गयी है॥ 5॥

पदार्थ :- यज्ञ - हे यज्ञ (यज् = देवपूजा, सङ्गतिकरण, दान करना)। **यज्ञम् =** यजन को (यज् = देवपूजा, सङ्गतिकरण, दान करना)। **गच्छ =** जाओ। **यज्ञपतिम् =** यजनपति को (यज् - देवपूजा, संगतिकरण, दान करना, पत् - ऐश्वर्य होना, स्वामी होना, पा - पालन करना)। **गच्छ =** जाओ (गम्-गच्छ् - जाना)। **स्वाम् =** निज, अपना। **योनिम् =** योनि को, स्थान को (यु = बन्धन होना, मिलाना, अलग करना)। **गच्छ =** जाओ (गम्-गच्छ् - जाना)। **स्वाहा =** अच्छी व्यापकता, अपनी व्यापकता (सु + आहा, स्व + अहा, स्व + आहा, सु = अच्छा, अह् = व्याप्त होना, फैलना, विस्तृत होना) **॥**

396. एष ते यज्ञो यज्ञपते, सहसूक्तवाकः। सुवीर्यः स्वाहा॥ 6॥

मन्त्रार्थ :- एष - यह, **ते** - तुम्हारा, **यज्ञो** - यज्ञ, **यज्ञपते** - हे यजनपति, **सहसूक्तवाकः** - सूक्त-वचन के साथ। **सुवीर्यः** - उत्तम वीर, **स्वाहा** - व्यापक हो **॥ 6॥**

भावार्थ :- यज्ञ अर्थात् देवपूजा, संगतिकरण, दान को वैदिक संस्कृति में बहुत महत्वपूर्ण माना गया है। सामूहिक धार्मिक आयोजनों को भी यज्ञ या यजन कहा जाता है। विविध प्रकार के ज्ञान यज्ञ तथा दान यज्ञ बहुधा आयोजित होते रहते हैं। यजन की महत्ता इतनी अधिक मानी गयी है कि परमात्मा को यज्ञ नाम से सम्बोधित किया गया है। यहाँ कहा गया है कि हे यज्ञ, तुम यज्ञ को जाओ। यहाँ शब्द सौन्दर्य तथा अलंकार की छठा भी दर्शनीय है। यज्ञ को ही सम्बोधित किया गया है तथा उससे यज्ञ को जाने के लिए भी कहा गया है। यज्ञ स्वरूप परमात्मा को सम्बोधित करते हुए कहा जा रहा है कि यहाँ यजन हो, जो यजन की भावना के अनुरूप जीवन जीते हैं, उनको प्राप्त हो। इसी प्रकार से जो यज्ञ-भावना को झीवन में अपनाते हैं, ऐसे यज्ञ-पुरुषों से कहा गया है कि वे यज्ञ-स्वरूप परमात्मा को प्राप्त हों। उन्हें जीवन में सुख-सामर्थ्य प्राप्त हो, यह भी कामना की गयी है।

पदार्थ :- एषः = यह। **ते =** तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए, तुम्हारी। **यज्ञ =** यज्ञ, यजन (यज् = देवपूजा, सङ्गतिकरण, दान करना)। **यज्ञपते** - हे यजनपति (यज् = देवपूजा, सङ्गतिकरण, दान करना)। **सहसूक्तवाकः =** सूक्त-वचन के साथ (सह - साथ, सु - अच्छा, उच्-उक्-वच् - बोलना)। **सुवीर्यः** - उत्तम वीर (सु = उत्तम, सुष्ठु, अच्छा, सुन्दर, सर्वनाम, वीर् - वीरता दिखाना, शूरवीर होना)। **स्वाहा =** अच्छी व्यापकता, अपनी व्यापकता (सु + आहा, स्व + अहा, स्व + आहा, सु = अच्छा, अह् = व्याप्त होना, फैलना, विस्तृत होना) **॥ 6॥**

397. वषट् हुतेभ्यः वषट् अहुतेभ्यः।
देवा गातुविदो, गातुम् वित्वा गातुम् इत॥ 7॥

मन्त्रार्थ :- वषट् - वषट्, इच्छा, वसना **हुतेभ्यः** - हुत, दानयुक्त, आदान-प्रदान, तृप्ति युक्त के लिए **वषट्** - वषट्, इच्छा, वसना **अहुतेभ्यः** - अहुत, अदानी के लिए **गातुविदो** - गातुविद्, **देवा** - देवगण, **गातुम्** - गातु को, **वित्वा** - जानकर, **गातुम्** - गातु को, **इत** - जाएँ **॥ 7॥**

भावार्थ :- गातुविद् देवगण गातु को जानकर गातु को जाएँ, वाक्य में भाव-सौन्दर्य के साथ ही शब्द-सौन्दर्य तथा काव्य-सौन्दर्य दर्शनीय है। गातु का अर्थ है गान। वेद-मन्त्रों को विविध रूपों में गाया जाता रहा है। इस गान को ही गातु कहा गया है। जो देवगण विद्वान् इस गातु अर्थात् वेदगान को जानने वाले हैं, वे गातु को जाते हैं। इसका अर्थ है कि ऐसे वेद-ज्ञान-रसज्ञ जन ऐसे स्थानों पर जाते हैं, जहाँ वेदगान होता है। वे मनस् के पति अर्थात् स्वामी होते हैं। उनका मन विचलित नहीं होता है। वे इस प्रकार के गातु यजन को व्यापक बनाते हैं, विस्तार करते हैं, गातु अर्थात् वेदगान को वात में अर्थात् वायु-मण्डल में धारण करते हैं, स्थापित करते हैं। भाव यह है कि वेदगान को सर्वत्र प्रसारित करते हैं।

पदार्थ :- वषट् = वषट्, इच्छा, वसना (वश् = इच्छा करना, चाहना, चमकना, वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना,

लेना)। **हुतेभ्यः** = हुत, दानयुक्त, आदान-प्रदान, तृप्ति युक्त के लिए (हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)। **वषट्** = वषट्, इच्छा, वसना (वश् = इच्छा करना, चाहना, चमकना, वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)। **अहुतेभ्यः** = अहुत, अदानी के लिए (अ - नहीं, हु - दान करना, तृप्त करना, आदान-प्रदान करना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, हु-ह्वे = शब्द करना, बुलाना, आह्वान करना)। **देवाः** = देवगण, विद्वान्, तेजस्वी। **गातुविदः** = गातुविद्, गान को जानने वाले, स्तुति जानने वाले (गा = स्तुति करना, गान करना, जाना, जानना, विद् = जानना)। **गातुम्** = स्तुति को (गा = स्तुति करना, गान करना, जाना, जानना)। **वित्वा** = जानकर (विद् = जानना)। **गातुम्** = स्तुति को (गा = स्तुति करना, गान करना, जाना, जानना)। **इत** = जाएँ **॥ 7 ॥**

398. मनसस्पते इमम् नः दिवि देवेषु यज्ञम्।
स्वाहा दिवि स्वाहा पृथिव्याम् स्वाहा अन्तरिक्षे स्वाहा वाते धाम् स्वाहा ॥ 8 ॥

मन्त्रार्थ :- **मनसस्पते** = मन के पालक, रक्षक **इमम्** = इसको। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा **दिवि** = दिव्यता में, दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय में **देवेषु** = देवों में **यज्ञम्** = यजन को **स्वाहा** = अच्छी व्यापकता, अपनी व्यापकता **दिवि** = दिव्यता में, दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय में **स्वाहा** = अच्छी व्यापकता, अपनी व्यापकता **पृथिव्याम्** = पृथ्वी पर **स्वाहा** = अच्छी व्यापकता, अपनी व्यापकता **अन्तरिक्षे** = अन्तरिक्ष में **स्वाहा** = अच्छी व्यापकता, अपनी व्यापकता **वाते** = वात में, वायु-मण्डल में **धाम्** = धारण को **स्वाहा** = अच्छी व्यापकता, अपनी व्यापकता **॥ 8 ॥**

भावार्थ :- गातुविद् देवगण गातु को जानकर गातु को जाएँ, वाक्य में भाव-सौन्दर्य के साथ ही शब्द-सौन्दर्य तथा काव्य-सौन्दर्य दर्शनीय है। गातु का अर्थ है गान। वेद-मन्त्रों को विविध रूपों में गाया जाता रहा है। इस गान को ही गातु कहा गया है। जो देवगण विद्वान् इस गातु अर्थात् वेदगान को जानने वाले हैं, वे गातु को जाते हैं। इसका अर्थ है कि ऐसे वेद-ज्ञान-रसज्ञ जन ऐसे स्थानों पर जाते हैं, जहाँ वेदगान होता है। वे मनस् के पति अर्थात् स्वामी होते हैं। उनका मन विचलित नहीं होता है। वे इस प्रकार के गातु यजन को व्यापक बनाते हैं, विस्तार करते हैं, गातु अर्थात् वेदगान को वात में अर्थात् वायु-मण्डल में धारण करते हैं, स्थापित करते हैं। भाव यह है कि वेदगान को सर्वत्र प्रसारित करते हैं।

पदार्थ :- **मनसस्पते** = मन के पालक, रक्षक (मनसः + पते, मन् - मनन करन, विचार करना, पत् - ऐश्वर्य होना, स्वामी होना, पा - पालन करना)। **इमम्** = इसको। **नः** = हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **दिवि** = दिव्यता में, दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय में (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)। **देवेषु** = देवों में (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **यज्ञम्** = यजन को (यज् = देवपूजा, सङ्गतिकरण, दान करना)। **स्वाहा** = अच्छी व्यापकता, अपनी व्यापकता (सु + आहा, स्व + अहा, स्व + आहा, सु = अच्छा, अह् = व्याप्त होना, फैलना, विस्तृत होना)। **दिवि** = दिव्यता में, दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय में (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)। **स्वाहा** = अच्छी व्यापकता, अपनी व्यापकता (सु + आहा, स्व + अहा, स्व + आहा, सु = अच्छा, अह् = व्याप्त होना, फैलना, विस्तृत होना)। **पृथिव्याम्** = पृथ्वी पर (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)। **स्वाहा** = अच्छी व्यापकता, अपनी व्यापकता (सु + आहा, स्व + अहा, स्व + आहा, सु = अच्छा, अह् = व्याप्त होना, फैलना, विस्तृत होना)। **अन्तरिक्षे** = अन्तरिक्ष में (अन्तः - बीच में, अन् - प्राण होना, चेतन होना, जीवन होना, अन्त् - बाँधना, हिंसा करना, चलना, इक्ष् - स्वाद लेना, देखना)। **स्वाहा** = अच्छी व्यापकता, अपनी व्यापकता (सु + आहा, स्व + अहा, स्व + आहा, सु = अच्छा, अह् = व्याप्त होना, फैलना, विस्तृत होना)। **वाते** = वात में, वायु-मण्डल में (वा = बहना, प्रवाह होना, जाना, जानना, पाना, गन्ध लेना)। **धाम्** = धारण को (धा = धारण करना)। **स्वाहा** = अच्छी व्यापकता, अपनी व्यापकता (सु + आहा, स्व + अहा, स्व + आहा, सु = अच्छा, अह् = व्याप्त होना, फैलना, विस्तृत होना) **॥ 8 ॥**

123 सूक्त - 8 (98)

399. सम् बर्हिः अक्तम् हविषा घृतेन, सम् इन्द्रेण वसुना सम् मरुद्भिः ॥
सम् देवैः विश्वदेवेभिः अक्तम्, इन्द्रम् गच्छतु हविः स्वाहा ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ : सम् = भलीभाँति। **बर्हिः** = वृद्धि **अक्तम् =** कुटिलता, गति **हविषा** = आदान-प्रदान द्वारा **घृतेन** = अभिसिञ्चित **सम्** = भलीभाँति। **इन्द्रेण =** इन्द्र द्वारा **वसुना =** वसु द्वारा **सम्** = भलीभाँति। **मरुद्भिः** = मरुतों द्वारा **सम्** = भलीभाँति। **देवैः =** देवों द्वारा, देवों के साथ **विश्वदेवेभिः** = विश्वदेवों द्वारा, सभी विद्वानों द्वारा **अक्तम् =** कुटिलता, गति **इन्द्रम्** = परम ऐश्वर्यवान् को, इन्द्र को **गच्छतु =** जाओ **हविः =** हवि, दान करने योग्य, लेने योग्य, तृप्त करने योग्य **स्वाहा** = व्यापक ॥ 1 ॥

भावार्थ : भलीभाँति वृद्धि पाने के लिए आदान-प्रदान आवश्यक है। वसुओं-बसाने वालों, आदित्यों-प्रकाशमान तेजस्वी लोगों, मरुतों-मरणशील मनुष्यों के सम्यक् होने से सम्यक् वृद्धि होती है। हमारा जीवन सम्यक् अर्थात् भलीभाँति व्यवस्थित होना चाहिए। परम ऐश्वर्यवान् परमात्मा विश्वदेवों-विद्वानों द्वारा अपनायें, यही कामना है। इससे हम दिव्य व्यापक आकाश तक जा सकते हैं ॥ 1 ॥

पदार्थ : सम् = भलीभाँति। **बर्हिः** = वृद्धि (बृह = बढ़ना)। **अक्तम् =** कुटिलता, गति (अ = नहीं, उपसर्ग, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अक् - जाना, जानना पाना, टेढ़ा जाना, कुटिल गति करना, वक्रगति करना)। **हविषा** = आदान-प्रदान द्वारा (हु = दान-आदान करना)। **घृतेन** = अभिसिञ्चित (घृ = सींचना, चमकना, प्रकाशित होना)। **सम्** = भलीभाँति। **इन्द्रेण =** इन्द्र द्वारा (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **वसुना =** वसु द्वारा (वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)। **सम्** = भलीभाँति। **मरुद्भिः** = मरुतों द्वारा (मृ = मरना)। **सम्** = भलीभाँति। **देवैः =** देवों द्वारा, देवों के साथ (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **विश्वदेवेभिः** = विश्वदेवों द्वारा, सभी विद्वानों द्वारा (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रकाशित होना)। **अक्तम् =** कुटिलता, गति (अ = नहीं, उपसर्ग, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अक् - जाना, जानना पाना, टेढ़ा जाना, कुटिल गति करना, वक्रगति करना)। **इन्द्रम्** = परम ऐश्वर्यवान् को, इन्द्र को (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **गच्छतु =** जाओ (गम्, गच्छ् = जाना)। **हविः =** हवि, दान करने योग्य, लेने योग्य, तृप्त करने योग्य (हू = दान करना, देना, आदान-प्रदान करना, तृप्त करना, ह्वे - शब्द करना, आह्वान करना)। **स्वाहा** = व्यापक (सु + आहा, स्व + अहा, स्व + आहा, सु = अच्छा, अह् = व्याप्त होना, फैलना, विस्तृत होना) ॥ 1 ॥

55 अनुवाकः - 10

124 सूक्त - 15 (117)

400. आ मन्द्रैः इन्द्र हरिभिः,
याहि मयूररोमभिः।
मा त्वा के चित् वि यमन् विम् न पाशिनो,
अति धन्व इव तान् इहि ॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - आ = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण **मन्द्रैः =** स्तुत्यों द्वारा, आनन्दित करने वालों द्वारा, विनाश करने वालों द्वारा **इन्द्र =** इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान **हरिभिः =** हरियों द्वारा, हरि-गण द्वारा **याहि =** जायें, प्राप्त हों, प्राप्त करें **मयूररोमभिः =** मयूर-रोमों द्वारा, प्रगतिशील विद्वानों द्वारा **मा =** नहीं, मत **त्वा =** तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **के =** कौन, कोई **चित् =** भी, ही **वि =** विशेष, विना, विलोम **यमन् =** यमन करने वाला, यमन करता हुआ **विम् =** विम, गतिवान् **न =** नहीं, समान, उपमार्थक **पाशिनो =** पाश वालों का, दिखाने वालों का, बन्धन का **अति =** बहुत, अत्यधिक **धन्व =** गति, शब्द करने वाले **इव =** समान, की भाँति, के समान **तान् =** उनको **इहि =** आओ, जानों ॥ 1 ॥

पदार्थ - **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग)। **मन्द्रैः** = स्तुत्यों द्वारा, आनन्दित करने वालों द्वारा, विनाश करने वालों द्वारा (मन्द् - आनन्द करना, स्तुति करना, तुष्ट करना, प्रकाशित होना, चमकना, प्रकाश करना, उन्मत्त होना, विनाश करना)। **इन्द्र** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **हरिभिः** = हरियों द्वारा, हरि-गण द्वारा (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना)। **याहि** = जायें, प्राप्त हों, प्राप्त करें (या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना)। **मयूररोमभिः** = मयूर-रोमों द्वारा, प्रगतिशील विद्वानों द्वारा (मय् - जाना, जानना, पाना, रु - शब्द करना, जाना, चलना, जानना, पाना)। **मा** = नहीं, मत (अव्यय)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **के** = कौन, कोई (सर्वनाम)। **चित्** = भी, ही। **वि** = विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **यमन्** = यमन करने वाला, यमन करता हुआ (यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)। **विम्** = विम, गतिवान् (वी - जाना, व्यापना, घेरना, आक्रमण करना, गर्भवती होना, इच्छा करना, फेंकना, भेजना, दौड़ाना, खाना, भक्षण करना। वय - जाना, स्थानान्तर करना, उड़ना)। **न** = नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **पाशिनो** = पाश वालों का, दिखाने वालों का, बन्धन का (पश् - देखना, पश - बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना)। **अति** = बहुत, अत्यधिक (उपसर्ग, अव्यय)। **धन्व** = गति, शब्द करने वाले (धन्व - जाना, जानना, पाना, धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना)। **इव** = समान, की भाँति, के समान (अव्यय)। **तान्** = उनको (सर्वनाम)। **इहि** = आओ, जानों (इ = जाना, जानना, पाना) **॥ 1 ॥**

125 सूक्त - 16 (118)

401. मर्माणि ते वर्मणा छादयामि,
सोमः त्वा राजा अमृतेन अनु वस्ताम्।
उरोः वरीयो वरुणः ते कृणोतु,
जयन्तम् त्वा अनु देवा मदन्तु॥ 1 ॥

मन्त्रार्थ - **मर्माणि** = मर्म को **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **वर्मणा** = वर्मण **छादयामि** = आच्छादन करता हूँ **सोमः** = ऐश्वर्यवान् सृष्टिकर्ता, सोम **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **राजा** = राजा **अमृतेन** = अमृत द्वारा **अनु** = पश्चात्, पीछे, अनुकूल **वस्ताम्** = वास कर **उरोः** = बहुत, गमनीय, गतिशील, गति, व्यापकता, विस्तार **वरीयो** = वरीय **वरुणः** = वरुण **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **कृणोतु** = करो **जयन्तम्** = जीतने वाले **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **अनु** = पश्चात्, पीछे, अनुकूल **देवा** = विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने **मदन्तु** = हर्षित, तृप्त **॥ 1 ॥**

पदार्थ - **मर्माणि** = मर्म को (मृ = मरना, देहत्याग करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **वर्मणा** = वर्मण (वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, त्याग करना, हटाना, आच्छादित करना)। **छादयामि** = आच्छादन करता हूँ (छद् - आच्छादित करना, ढकना, हटाना, छिपाना, बचाना, बलवान् होना या करना)। **सोमः** = ऐश्वर्यवान् सृष्टिकर्ता, सोम (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **राजा** = राजा (राज् - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना)। **अमृतेन** = अमृत द्वारा (अ - नहीं, मृ = मरना, देहत्याग करना)। **अनु** = पश्चात्, पीछे, अनुकूल (उपसर्ग)। **वस्ताम्** = वास कर (वस्त - प्रेरणा करना, वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)। **उरोः** = बहुत, गमनीय, गतिशील, गति, व्यापकता, विस्तार (उरु - बहुत, अधिक, उर् = विस्तार करना, जाना, चलना, निरन्तर चलना)। **वरीयो** = वरीय (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **वरुणः** = वरुण (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, प्रिय होना, प्रिय मानना, प्रिय करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **कृणोतु** = करो (कृ

= करना)। **जयन्तम् =** जीतने वाले (जि - सब से बढ़ कर होना, जीतना)। **त्वा =** तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। अनु = पश्चात्, पीछे, अनुकूल (उपसर्ग)। **देवा =** विद्वान्, तेजस्वी, देवगण, देवगणों ने (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **मदन्तु =** हर्षित, तृप्त (मद- आनन्द होना, हर्षित होना, तृप्त होना) **॥ 1 ॥**

इति सप्तमम् काण्डम्

ॐ

अष्टमम् काण्डम्

56 अनुवाकः - 1

126 सूक्त - 1 (1)

402. अन्तकाय मृत्यवे नमः प्राणाः अपानाः इह ते रमन्ताम्।
इह अयम् अस्तु पुरुषः सह असुना सूर्यस्य भागे अमृतस्य लोके॥ 1॥

मन्त्रार्थ :- अन्तकाय = अन्तक के लिए, अन्त करने वाले के लिए **मृत्यवे** = मृत्यु के लिए **नमः** = नमन **प्राणाः** = प्राण **अपानाः** = अपान **इह** = इसमें, यहां, यह **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए **रमन्ताम्** = रमण करें **इह** = इसमें, यहां, यह **अयम्** = यह **अस्तु** = हो **पुरुषः** = पुरुष, परिपूर्ण, अग्रगामी, अग्रणी **सह** = साथ, सहित **असुना** = ऐश्वर्य द्वारा, आसवन द्वारा **सूर्यस्य** = सूर्य का **भागे** = भाग में **अमृतस्य** = अमृत, अविनाशी का **लोके** = लोक में॥ 1॥

पदार्थ :- अन्तकाय = अन्तक के लिए, अन्त करने वाले के लिए (अन् = प्राणवान् होना, अन्त् - बाँधना, हिंसा करना, चलना)। **मृत्यवे** = मृत्यु के लिए (मृ = मरना, देहत्याग करना)। **नमः** = नमन (नम - नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना)। **प्राणाः** = प्राण (प्र - अधिक, प्रकृष्ट, अन- जीवन होना, चेतन होना, प्रा- पूर्ण करना, तृप्त करना)। **अपानाः** = अपान (अ - नहीं, पा-पान - पीना, पान करना, अप - पालन करना, अन - जीना, समर्थ होना, जाना)। **इह** = इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **ते** = तुम्हारा, वे, तुम्हारे लिए (सर्वनाम)। **रमन्ताम्** = रमण करें (रम् = रमना, क्रीडा करना)। **इह** = इसमें, यहां, यह (सर्वनाम)। **अयम्** = यह (सर्वनाम)। **अस्तु** = हो (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना)। **पुरुषः** = पुरुष, परिपूर्ण, अग्रगामी, अग्रणी (पुर - पूर्व होना, पहले होना, अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना, पृ - पूर्ण करना, भरना, पालन करना, रक्षा करना, तृप्त करना)। **सह** = साथ, सहित (सर्वनाम)। **असुना** = ऐश्वर्य द्वारा, आसवन द्वारा (अ = नहीं, अ = भूतकालिक क्रिया उपसर्ग, अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना)। **सूर्यस्य** = सूर्य का (सुर - ऐश्वर्य होना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना, सू - उत्पन्न करना, उत्पन्न होना, ऐश्वर्य होना)। **भागे** = भाग में (भज् = सेवा करना, भजन करना, भाग करना, अलग करना)। **अमृतस्य** = अमृत, अविनाशी का (मृ - मरना)। **लोके** = लोक में (लोक् = देखना, प्रकाशित होना, बोलना)॥ 1॥

57 अनुवाकः - 2

127 सूक्त - 1 (3)

403. रक्षोहणम् वाजिनम् जिघर्मि मित्रम् प्रथिष्ठम् उप यामि शर्म।
शिशानो अग्निः क्रतुभिः समिद्धः स नो दिवा स रिषः पातु नक्तम्॥॥

मन्त्रार्थ :- रक्षोहणम् = रक्षा का विचार करने वाले को, रक्षकों का हनन करने वाले को। **वाजिनम्** = वाजयुक्त को, विद्यायुक्त को, गतियुक्त को। **जिघर्मि** = प्रकाश करता हूँ, नाश करता हूँ। **मित्रम्** = मित्र को। **प्रथिष्ठम्** = अत्यन्त प्रसिद्ध, अत्यन्त विस्तार। **उप** = समीप। **यामि** = जाता हूँ। **शर्म** = सुख, सम्मान, समृद्धि। **शिशानो** = तीक्ष्ण। **अग्निः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान्। **क्रतुभिः** = क्रतुओं द्वारा। **समिद्धः** = सम्यक् प्रकाशवान्। **स** = वह, उसने। **नो** = हमको, हमारे लिए, हमारा। **दिवा** = दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय। **स** = वह, उसने। **रिषः** = हिंसक। **पातु** = पालन करो, रक्षा करो। **नक्तम्** = रात्रि।॥॥

पदार्थ :- रक्षोहणम् = रक्षा का विचार करने वाले को, रक्षकों का हनन करने वाले को (रक्ष - रक्षण करना, पालन करना, ऊह् - अनुमान करना, विचार करना। हन - मार डालना, प्राप्त करना, जाना, समाप्त करना)। **वाजिनम् =** वाजयुक्त को, विद्यायुक्त को, गतियुक्त को (वाज् = गति करना, जाना, जानना, पाना, तैयार करना, बल होना, वा - गति करना, बहना)। **जिघर्मि =** प्रकाश करता हूँ, नाश करता हूँ (जिघ्र् - गन्ध लेना, गन्ध ग्रहण करना, सूँघना, जिघृ - प्रकाश करना, नाश करना)। **मित्रम् =** मित्र को (मिद् - स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, नरम होना, मृदुल होना)। **प्रथिष्ठम् =** अत्यन्त प्रसिद्ध, अत्यन्त विस्तार (प्रथ = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)। **उप =** समीप (उपसर्ग)। **यामि =** जाता हूँ (या- जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)। **शर्म =** सुख, सम्मान, समृद्धि (शर्म् = सुख होना, श्रीमान् होना, सम्मानित होना)। **शिशानो =** तीक्ष्ण (शि = तेज करना, तीक्ष्ण करना, कल्याण करना, शिष् - शेष रखना, बचाना, प्रयोजन करना)। **अग्निः =** अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **क्रतुभिः =** क्रतुओं द्वारा (कृ = करना)। **समिद्धः =** सम्यक् प्रकाशवान् (सम् = सम्यक्, भलीभांति, इत् - इन्ध = प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना, प्रकाश करना)। **स =** वह, उसने (सर्वनाम)। **नो =** हमको, हमारे लिए, हमारा (सर्वनाम)। **दिवा =** दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)। **स =** वह, उसने (सर्वनाम)। **रिषः =** हिंसक (रिश्-रिष - हिंसा करना, मार डालना या दुःख देना, मारने का यत्न करना)। **पातु =** पालन करो, रक्षा करो (पा = पालन करना, बचाना)। **नक्तम् =** रात्रि (अव्यय)।**॥ ॥**

58 अनुवाकः - 3

128 सूक्त - 1 (5)

404. अयम् प्रतिसरो मणिः वीराय बध्यते।
वीर्यवान् सपत्नहा शूरवीरः परिपाणः सुमङ्गलः।॥ ॥

मन्त्रार्थ :- अयम् = यह। **प्रतिसरो** = प्रतिसर, प्रगतिशील। **मणिः =** मणि, शब्द। **वीराय =** वीर के लिए। **बध्यते =** बाँधा जाता है। **वीर्यवान् =** पराक्रम युक्त, वीरता युक्त। **सपत्नहा =** सपत्नघाती। **शूरवीरः =** शूर वीर। **परिपाणः =** परिपालक, परिरक्षक। **सुमङ्गलः =** सुमङ्गल, प्रगतिशील।**॥ ॥**

पदार्थ :- अयम् = यह (सर्वनाम)। **प्रतिसरो** = प्रतिसर, प्रगतिशील (प्रति - सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में, सृ = जाना, जानना, पाना, पहुंचना)। **मणिः =** मणि, शब्द (मण् - शब्द करना)। **वीराय =** वीर के लिए (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)। **बध्यते =** बाँधा जाता है (बध - बांधना, बद्ध करना, हिंसा करना, मारना, वध करना, घृणा करना)। **वीर्यवान् =** पराक्रम युक्त, वीरता युक्त (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)। **सपत्नहा =** सपत्नघाती (सप् = पूर्ण ज्ञान होना, पत् = ऐश्वर्य होना, निम्नगति करना, गिरना, हन - मार डालना, प्राप्त करना)। **शूरवीरः =** शूर वीर (शूर - पराक्रमी होना, शूरवीर होना, वीरता दिखाना, वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)। **परिपाणः =** परिपालक, परिरक्षक (परि - सभी ओर, उपसर्ग, पा - रक्षा करना)। **सुमङ्गलः =** सुमङ्गल, प्रगतिशील (सु = उत्तम, सुन्दर, अच्छा (उपसर्ग), मङ्ग - जाना)।**॥ ॥**

59 अनुवाकः - 4

129 सूक्त - 1 (7)

405. या बभ्रवो याः च शुक्रा रोहिणी रुत पृश्नयः।
असिक्नीः कृष्णा ओषधीः सर्वा अच्छ आवदामसि।॥।

मन्त्रार्थ :- या = जो। **बभ्रवो =** भरण पोषण करने वाले। **याः =** जो। **च =** और। **शुक्रा =** शुक्र, शुद्ध, पवित्र, पावन,

पवित्रकर्ता। **रोहिणी** = चढ़ें, बढ़ें। **रुत** = रुत का, शब्द, प्रगति का। **पृश्नयः** = अभिसिञ्चक, सहनशील, प्रश्नकर्ता। **असिक्नीः** = असिक्नी, प्रकाशमान, प्रक्षेपणशील, प्रगतिशील। **कृष्णा** = कृष्णा, आकर्षण। **ओषधीः** = ओषधी। **सर्वाः** = सभी। **अच्छ** = अच्छा, निर्मल। **आवदामसि** = बोलते हो।।॥ ।

पदार्थ :- या = जो (सर्वनाम)। **बभ्रवो** = भरण पोषण करने वाले (भृ = भरण-पोषण, धारण करना)। **याः** = जो (सर्वनाम)। **च** = और (अव्यय)। **शुक्रा** = शुक्र, शुद्ध, पवित्र, पावन, पवित्रकर्ता, (शुक्-शुच्-शुध - शुद्धि करना, शुद्ध होना, पवित्र होना, जाना)। **रोहिणी** = चढ़ें, बढ़ें (रुह - बढ़ना, चढ़ना, बीज से उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना)। **रुत** = रुत का, शब्द, प्रगति का (रु - शब्द करना, ध्वनि करना, रु = जाना, चलना, मार डालना, दुःख देना, बोलना, सम्भाषण करना, क्रोध करना)। **पृश्नयः** = अभिसिञ्चक, सहनशील, प्रश्नकर्ता (पृश् = प्रश्न करना, पूछना, पृश्, पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सींचना, सहन करना)। **असिक्नीः** = असिक्नी, प्रकाशमान, प्रक्षेपणशील, प्रगतिशील (अस - होना, रहना, जाना, लेना, प्रकाश करना, चमकाना, फेकना, उड़ाना, विखेरना, अस् - प्रक्षेपण करना, फेंकना, बिखेरना, उड़ाना, सिक्-सिङ्क्-सिज-सिञ्ज - अस्पष्ट शब्द करना)। **कृष्णा** = कृष्णा, आकर्षण (कृष् = विलेखन, कर्षण करना, खींचना, आकर्षण होना, रेखा करना)। **ओषधीः** = ओषधी (उषध् - चिकित्सा करना, रोग मुक्त करना)। **सर्वाः** = सभी (सर्वनाम)। **अच्छ** = अच्छा, निर्मल (अच्छ् - अच्छा होना, निर्मल करना)। **आवदामसि** = बोलते हो (वद - कहना, स्पष्ट कहना, बोलना, समझाना)।।॥ ।

60 अनुवाकः - 5

130 सूक्त - 1 (9)

406. कुतः तौ जातौ कतमः सो अर्धः कस्मात् लोकात् कतमस्याः पृथिव्याः। वस्तौ विराजः सलिलात् उत् ऐताम् तौ त्वा पृच्छामि कतरेण दुग्धा।॥ ॥

मन्त्रार्थ :-कुतः = कहां से। **तौ** = वे दो। **जातौ** = उत्पन्न हुए। **कतमः** = कितना। **सो** = वह, उसने। **अर्धः** = आधा। **कस्मात्** = किससे। **लोकात्** = लोक से। **कतमस्याः** = कितनों का। **पृथिव्याः** = पृथ्वी योग्य, पृथिवी के। **वस्तौ** = वस्तु का, प्रेरणा का, वास का। **विराजः** = विराजमान, प्रकाशमान। **सलिलात्** = सलिल से। **उत्** = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च। **ऐताम्** = इनको। **तौ** = वे दो। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा। **पृच्छामि** = पूछता हूँ । **कतरेण** = किसके द्वारा। **दुग्धा** = दुग्ध, दुहा हुआ।॥ ॥

पदार्थ :- कुतः = कहां से (अव्यय)। **तौ** = वे दो (सर्वनाम)। **जातौ** = उत्पन्न हुए (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **कतमः** = कितना (सर्वनाम)। **सो** = वह, उसने (सर्वनाम)। **अर्धः** = आधा (अर्ध - आधा)। **कस्मात्** = किससे (सर्वनाम)। **लोकात्** = लोक से (लोक् = देखना, प्रकाशित होना, बोलना)। **कतमस्याः** = कितनों का (सर्वनाम)। **पृथिव्याः** = पृथ्वी योग्य, पृथिवी के (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)। **वस्तौ** = वस्तु का, प्रेरणा का, वास का (वस्त - प्रेरणा करना, प्रातः होना, प्रभात होना, वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)। **विराजः** = विराजमान, प्रकाशमान (वि = विशेष, विना, विलोम, राज् = प्रकाशित होना)। **सलिलात्** = सलिल से (सल् - जाना, सरकना, कांपना, थरथराना)। **उत्** = भी, ही, वैसे ही, उसी प्रकार, उत्कृष्ट, ऊपर, उच्च (अव्यय)। **ऐताम्** = इनको (सर्वनाम)। **तौ** = वे दो (सर्वनाम)। **त्वा** = तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **पृच्छामि** = पूछता हूँ (पृश्-पृच्छ् - पूछना, प्रश्न करना)। **कतरेण** = किसके द्वारा (सर्वनाम)। **दुग्धा** = दुग्ध, दुहा हुआ (दुह् - दोहन करना)।॥ ॥

ॐ

नवमम् काण्ड

61 अनुवाकः - 1

131 सूक्त - 1 (1)

407. दिवः पृथिव्याः अन्तरिक्षात् समुद्रात् अग्नेः वातात् मधुकशा हि जज्ञे।
ताम् चायित्वा अमृतम् वसानाम् हृद्भिः प्रजाः प्रति नन्दन्ति सर्वाः।।1।।

मन्त्रार्थ - **दिवः** = दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय। **पृथिव्याः** = पृथ्वी योग्य, पृथिवी के। **अन्तरिक्षात्** = अन्तरिक्ष, आकाश, अन्तर्दर्शी से। **समुद्रात्** = समुद्र से। **अग्नेः** = अग्नि का। **वातात्** = सुख से, गति से, वात से। **मधुकशा** = मधुकशा, मधु प्रकाश। **हि** = ही, निश्चय। **जज्ञे** = उत्पन्न हुए। **ताम्** = उसको। **चायित्वा** = पूजकर, समझकर। **अमृतम्** = न मरने वाले, अमर, अमृत को। **वसानाम्** = स्नेहपूर्वक निवास करने तथा वास देने वाले, वास करने वाले को। **हृद्भिः** = हृदय से। **प्रजाः** = प्रजा। **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में। **नन्दन्ति** = आनन्द करते हैं। **सर्वाः** = सभी।।1।।

पदार्थ -**दिवः** = दिव्य, तेजस्वी, ज्योतिर्मय (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतने की इच्छा करना, व्यापार करना)। **पृथिव्याः** = पृथ्वी योग्य, पृथिवी के (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)। **अन्तरिक्षात्** = अन्तरिक्ष, आकाश, अन्तर्दर्शी से (अन्तः - बीच में, इक्ष् - स्वाद लेना, ईक्ष् - देखना)। **समुद्रात्** = समुद्र से (सम् = सम्यक्, भलीभांति। उन्द - आर्द्र होना, गीला होना)। **अग्नेः** = अग्नि का (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **वातात्** = सुख से, गति से, वात से (वात - सुखी होना, आनन्द करना, सेवा करना, जाना, वा - गति करना, बहना, पवन की भाँति चलना)। **मधुकशा** = मधुकशा, मधु प्रकाश (मद् = आनन्द होना, हर्ष होना, तृप्त होना, मध् = मधुर होना, मीठा होना, मध्य होना, कश् - दण्ड देना, शासन करना, प्रकाश करना)। **हि** = ही, निश्चय (अव्यय)। **जज्ञे** = उत्पन्न हुए (जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **ताम्** = उसको (सर्वनाम)। **चायित्वा** = पूजकर, समझकर (चाय् - पूजा करना, सम्मान करना, सुनना, जानना, समझना)। **अमृतम्** = न मरने वाले, अमर, अमृत को (अ - नहीं, मृ = मरना)। **वसानाम्** = स्नेहपूर्वक निवास करने तथा वास देने वाले, वास करने वाले को (वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)। **हृद्भिः** = हृदय से (हृ = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना)। **प्रजाः** = प्रजा (प्र - प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न करना)। **प्रति** = प्रतिकार, सम्बन्ध में, विषय में, प्रत्येक में (उपसर्ग)। **नन्दन्ति** = आनन्द करते हैं (नन्द - आनन्द पाना, प्रसन्न होना, वृद्धि होना)। **सर्वाः** = सभी (सर्वनाम)।।1।।

62 अनुवाकः - 2

132 सूक्त - 1 (3)

407. उपमिताम् प्रतिमिताम् अथो परिमिताम् उत।
शलाया विश्ववाराया नद्धानि वि चृतामसि।।1।।

मन्त्रार्थ - **उपमिताम्** = उपमा युक्त, उपमित युक्त। **प्रतिमिताम्** = प्रतिमित युक्त। **अथो** = अब, इसके बाद, इसके अनन्तर। **परिमिताम्** = परिमित युक्त। **उत** = ही, भी, ओर। **शलाया** = गति, स्तुति की। **विश्ववाराया** = सबके लिए वरणीय। **नद्धानि** = तत्पर, युक्त को। **वि** = विशेष, विना, विलोम। **चृतामसि** = प्रकाशित करते हैं।।1।।

पदार्थ -उपमिताम् = उपमा युक्त, उपमित युक्त (उप- समीप, मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना। मिद् - स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, नरम होना, मृदुल होना)। **प्रतिमिताम्** = प्रतिमित युक्त (परि = सभी ओर, उपसर्ग, मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना। मिद् - स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, नरम होना, मृदुल होना)। **अथो =** अब, इसके बाद, इसके अनन्तर (अव्यय)। **परिमिताम्** = परिमित युक्त (परि = सभी ओर, उपसर्ग, मा - सम्मान करना, पूजना, ज्ञान की इच्छा करना, शब्द करना, मान करना, तोलना, तुलना करना, मापना, समानता दर्शाना। मिद् - स्निग्ध होना, पिघलना, प्रीति करना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, नरम होना, मृदुल होना)। **उत** = ही, भी, ओर (अव्यय, निपात)। **शलाया =** गति, स्तुति की (शल् - गति करना, जाना, जानना, पाना, चुभना, विस्मरण होना, प्रशंसा करना, स्तुति करना)। **विश्ववाराया =** सबके लिए वरणीय (विश्व - सब, वृ - वरण करना)। **नद्धानि =** तत्पर, युक्त को (नद् - शब्द करना, झंकार करना, चमकना, नध् - युक्त होना, जुड़ना, तैयार होना, तत्पर होना)। **वि =** विशेष, विना, विलोम (उपसर्ग)। **चृतामसि =** प्रकाशित करते हैं (चृत् - प्रकाशित करना, चमकाना, जलाना, एकत्र कर बाँधना, गूँथना, हिंसा करना)।॥ ॥

63 अनुवाकः - 3

133 सूक्त - 1 (5)

407. अजो असि अज स्वः गः असि,
त्वया लोकम् अङ्गिरसः प्र अजानन्।
तम् लोकम् पुण्यम् प्र ज्ञेषम्॥ 16॥

मन्त्रार्थ - अजो = अज, अजन्मा **असि =** हो **अज =** अज **स्वर्गः =** स्वर्ग **असि =** हो **त्वया =** तुम्हारे द्वारा, तुमसे **लोकम् =** लोक को, दर्शन को **अङ्गिरसः =** विद्वान्, गतिशील, पाने वाला **प्र =** प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक **अजानन् =** जाना **तम् =** उसको, उसे **लोकम् =** लोक को, दर्शन को **पुण्यम् =** पुण्य को **प्र =** प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक **ज्ञेषम् =** ज्ञानी को **॥ 16॥**

पदार्थ - अजो = अज, अजन्मा (अ - नहीं, जन् = उत्पन्न करना, अज - जाना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना)। **असि =** हो (अस् - होना)। **अज =** अज (अ - नहीं, जन् = उत्पन्न करना, अज - जाना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना)। **स्वर्गः =** स्वर्ग (सू - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, पराक्रम होना, स्वृ-स्वर् = शब्द करना, गम् - जाना)। **असि =** हो (अस् - होना)। **त्वया =** तुम्हारे द्वारा, तुमसे (सर्वनाम)। **लोकम् =** लोक को, दर्शन को (लोक् = देखना, प्रकाशित होना, बोलना)। **अङ्गिरसः =** विद्वान्, गतिशील, पाने वाला (अंग् = अंग होना, अवयव होना, चलना, समीप जाना, जानना, पाना)। **प्र =** प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **अजानन् =** जाना (अ - भूतकालिक उपसर्ग, अ - नहीं, ज्ञा-जा - जानना, समझना, जन- उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना)। **तम् =** उसको, उसे (सर्वनाम)। **लोकम् =** लोक को, दर्शन को (लोक् = देखना, प्रकाशित होना, बोलना)। **पुण्यम् =** पुण्य को (पुण् - सहायता करना, शुभ करना, समूह बनाना, एकत्र करना, राशि करना, ढेर करना)। **प्र =** प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **ज्ञेषम् =** ज्ञानी को (ज्ञा = जानना) **॥ 16॥**

64 अनुवाकः - 4

134 सूक्त - 1 (7)

407. प्रजापतिः च परमेष्ठी च शृङ्गे इन्द्रः शिरो।
अग्निः ललाटम् यमः कृकाटम्। 1॥

मन्त्रार्थ -प्रजापतिः = प्रजापति, प्रजा का रक्षक, पालक। **च =** और। **परमेष्ठी =** परम् में स्थित। **च =** और। **शृङ्गे =** शृङ्ग के लिए। **इन्द्रः =** इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान। **शिरो =** शिर, सुनने वाला, तीक्ष्ण, कल्याणकारी

। **अग्निः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान्। **ललाटम्** = ललाट को। **यमः** = यम। **कृकाटम्** = कृकाट को।। **1** ।।

पदार्थ -**प्रजापतिः** = प्रजापति, प्रजा का रक्षक, पालक (प्र - प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न करना, पत - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना)। **च** = और (अव्यय)। **परमेष्ठी** = परम् में स्थित (परम् = परन्तु, फिर, परम् (सर्वनाम)। **च** = और (अव्यय)। **शृङ्गे** = शृङ्ग के लिए (श्रु-शृण् = सुनना, जाना, शृ = मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना)। **इन्द्रः** = इन्द्र, परम ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्यमान (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **शिरो** = शिर, सुनने वाला, तीक्ष्ण, कल्याणकारी (शृ - सुनना, जाना, जानना, पाना, शि = तेज करना, तीक्ष्ण करना, कल्याण करना)। **अग्निः** = अग्नि, ऊर्ध्वगामी, अग्रणी, विद्वान् (अग् - जाना, जानना, पाना, अग्रणी होना, आगे जाना, ऊर्ध्व गति करना, लेना, ग्रहण करना)। **ललाटम्** = ललाट को (लट् - बालक के समान चेष्टा करना, बोलना, तुतलाना, अल्प भाषण करना, थोड़ा बोलना)। **यमः** = यम (यम - आवरण करना, अपने अधीन रखना, पोषण करना, नियमन करना, प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना, नाश करना, अन्त करना)। **कृकाटम्** = कृकाट को (कृ = करना, कट् - बरसना, घेरना, जाना, चलना, समीप जाना)।। **1** ।।

65 अनुवाकः - 5

135 सूक्त - 2 (10)

408. विधुम् दद्राणम् सलिलस्य पृष्ठे,
युवानम् सन्तम् पलितो जगार।
देवस्य पश्य काव्यम् महित्वा,
अद्य आ ममार सः ह्यः समान।। 9 ।।

मन्त्रार्थ - **विधुम्** = विशेष धारण करने वाले **दद्राणम्** = भाग जाने, निन्दा करने वाले को **सलिलस्य** = सलिल का **पृष्ठे** = पृष्ठ पर **युवानम्** = युवा को **सन्तम्** = सन्त को, सेवाभावी को, दानी को **पलितो** = फलित-पुष्पित, शुद्ध **जगार** = स्तुति, प्रशंसा करते हैं **देवस्य** = देव का **पश्य** = देखो **काव्यम्** = काव्य **महित्वा** = महित्व द्वारा, महत् होकर **अद्य** = आज **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण **ममार** = मर गया **सः** = वह, उसने **ह्यः** = कल **समान** = समान।। **9** ।।

पदार्थ - **विधुम्** = विशेष धारण करने वाले (वि - विशेष, धा - धारण करना)। **दद्राणम्** = भाग जाने, निन्दा करने वाले को (द्रा = भाग जाना, लज्जित होना, निन्दा करना, दोष लगाना, उड़ जाना, द्रु - पिघलना, बहना, चलना, जाना, जानना, पाना, अनुसरण करना)। **सलिलस्य** = सलिल का (सल - जाना, सरकना, कांपना, थरथराना)। **पृष्ठे** = पृष्ठ पर (पृ - पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना, स्था-तिष्ठ - स्थित होना, ठहरना, बैठना, पृश् - पृच्छ - पूछना, जानने की इच्छा करना, प्रश्न करना, पृष् = जाना, सरल होना, अभिसिञ्चन करना, सींचना, सहन करना)। **युवानम्** = युवा को (युव् - बल होना, तरुण होना, युवा होना, यु - मिलाना, अलग करना, बन्धन करना। **सन्तम्** = सन्त को, सेवाभावी को, दानी को (सन् - दान करना, सेवा करना, पूजा करना, सत्कार करना, सेवा करना, चाकरी करना)। **पलितो** = फलित-पुष्पित, शुद्ध (पल् - जाना, फलित- पुष्पित होना, फल देना, काटना, गिराना, उढ़ाना, शुद्ध करना)। **जगार** = स्तुति, प्रशंसा करते हैं (जिगा-गा –प्रशंसा करना, सराहना, गृ - सींचना, गीला करना, समझना, जानना)। **देवस्य** = देव का (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **पश्य** = देखो (पश्- दृश् = देखना)। **काव्यम्** = काव्य (कु, कव् = शब्द करना, कविता करना, वर्णन करना, चित्र खींचना)। **महित्वा** = महित्व द्वारा, महत् होकर (मह - पूजा करना, पूज्य होना, महत्व होना, सम्मान करना, सत्कार करना, महि - चमकना, प्रकाशित होना, बढ़ना, बोलना, कहना)। **अद्य** = आज (अव्यय)। **आ** = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण (उपसर्ग)। **ममार** = मर गया (मृ = मरना, देहत्याग करना)। **सः** = वह, उसने। **ह्यः** = कल (बीता हुआ दिन, अव्यय)। **समान** = समान (सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, सम = न घबराना, एक समान रहना, अन् - प्राण होना, जीवन होना, श्वास लेना) ।। **9** ।।

409. अपश्यम् गोपाम् अनिपद्यमानम्, आ च परा च पथिभिः चरन्तम्।
स सधीचीः स विषूचीः वसानः, आ वरीवर्त्ति भुवनेषु अन्तः ।। 11 ।।

मन्त्रार्थ :- परा परा **पथिभिः** पथियों से **चरन्तम्** आचरण करते हुए **अनिपद्यमानम्** अनिपद्यमान **गोपाम्** गोप को **अपश्यम्** देखा। **स** वह **सध्रीचीः** सध्रीची **स** वह **विषूचीः** विशूची, विसूची **वसानः** वास करते हुए **भुवनेषु** भुवनों के **अन्तः** भीतर **आ वरीवर्त्ति** आवर्तित होता है **॥ 11 ॥**

भावार्थ :- अनिपद्यमान (अ-नि-पत्) का अर्थ न गिरता हुआ भी किया गया है। पद् का अर्थ गमन लेने से इसका अर्थ अनिश्चल अथवा अविचल भी ले सकते हैं। साधारण लोगों के आचरण से ऊपर उठकर परा पथ पर चलने वाले अपने लक्ष्य से विचलित नहीं होते हैं। गोप (गुप् - रक्षा करना) का अर्थ है रक्षक। वह अपने साथ किरणों तथा सूचनाओं को लेकर सम्पूर्ण सृष्टि में संव्याप्त है।

पदार्थ :- अपश्यम् = देखा (अ + पश् = देखना)। **गोपाम् =** रक्षा करने वालों के (गुप् = रक्षा करना, चमकना, बोलना)। **अनिपद्यमानम् =** अनिपद्यमान (अ - नहीं, नि = निरन्तर, पद् - चलना, पत् - नीचे जाना, ऐश्वर्य होना)। **आ =** समन्तात्, सम्पूर्ण, (उपसर्ग)। **च =** और। **परा =** परे, परम। **पथिभिः =** पथियों से (पथ - जाना, घूमना)। **चरन्तम् =** आचरण करते हुए (चर - जाना, खाना, आचरण करना)। **सः =** वह। **सध्रीचीः =** सध्रीची (सद् = जाना, जानना, पाना, पहुँचना, स - साथ, धृ = धारण करना, रखना)। **स =** वह। **विषूचीः =** विशूची, विसूची (विष - सींचना, प्रोक्षण करना, सूच - सूचना करना, बात कहना, जताना, दूसरे की न्यूनता दिखाना)। **वसानः =** वास करते हुए (वस – टिकना, निवास करना)। **आ =** समन्तात्, सम्पूर्ण, (उपसर्ग)। **वरीवर्त्ति =** आवर्तित होता है (वृत - रहना, वर्तमान होना, वृ = वरण करना, पालन करना)। **भुवनेषु =** भुवनों के (भू = होना)। **अन्तः =** बीच में **॥ 11 ॥**

410. पृच्छामि त्वा परम् अन्तम् पृथिव्याः,
पृच्छामि वृष्णो अश्वस्य रेतः।
पृच्छामि विश्वस्य भुवनस्य नाभिः,
पृच्छामि वाचः परमम् व्योम ॥ 13 ॥

मन्त्रार्थ - पृच्छामि = पूछता हूँ **त्वा =** तुमको, तुम्हें, तुम्हारा **परम् =** परन्तु, फिर, परम् **अन्तम् =** प्राणवान् को **पृथिव्याः =** पृथ्वी योग्य, पृथिवी के **पृच्छामि =** पूछता हूँ **वृष्णो =** बलवान्, पराक्रमी **अश्वस्य =** अश्व का, तीव्र गति युक्त, व्यापक का **रेतः =** गति **पृच्छामि =** पूछता हूँ **विश्वस्य =** सबका, सब विश्व का **भुवनस्य =** भुवन का, वर्तमान का **नाभिः =** नाभि **पृच्छामि =** पूछता हूँ **वाचः =** वाणी **परमम् =** परम, अत्यन्त, उच्चतम, प्रमुखतम **व्योम =** व्योम **॥ 13 ॥**

पदार्थ - पृच्छामि = पूछता हूँ (पृश्-पृच्छ् - पूछना, प्रश्न करना)। **त्वा =** तुमको, तुम्हें, तुम्हारा (सर्वनाम)। **परम् =** परन्तु, फिर, परम् (अव्यय)। **अन्तम् =** प्राणवान् को (अन् = प्राणवान् होना, अन्त् - बाँधना, हिंसा करना, चलना)। **पृथिव्याः =** पृथ्वी योग्य, पृथिवी के (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)। **पृच्छामि =** पूछता हूँ (पृश्-पृच्छ् - पूछना, प्रश्न करना)। **वृष्णो =** बलवान्, पराक्रमी (वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना)। **अश्वस्य =** अश्व का, तीव्र गति युक्त, व्यापक का (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)। **रेतः =** गति (रि - जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, री - गति करना, झरना-टपकना, लेना, शब्द करना, सुनना)। **पृच्छामि =** पूछता हूँ (पृश्-पृच्छ् - पूछना, प्रश्न करना)। **विश्वस्य =** सबका, सब विश्व का (विश्व - सब कुछ)। **भुवनस्य =** भुवन का, वर्तमान का (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **नाभिः =** नाभि (नभ - नष्ट होना, दुःख देना या मार डालना, हिंसा करना, मध्य में स्थित होना, केन्द्र होना)। **पृच्छामि =** पूछता हूँ (पृश्-पृच्छ् - पूछना, प्रश्न करना)। **वाचः =** वाणी (वच - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)। **परमम् =** परम, अत्यन्त, उच्चतम, प्रमुखतम (सर्वनाम)। **व्योम =** व्योम (वि - विशेष, उ - शब्द करना, रक्षा करना, सुखाना, ऊ - शब्द करना, विश्वास करना) **॥ 13 ॥**

411. इयम् वेदिः परो अन्तः पृथिव्याः,

अयम् सोमो वृष्णो अश्वस्य रेतो
अयम् यज्ञो विश्वस्य भुवनस्य नाभिः,
ब्रह्मा अयम् वाचः परमम् व्योम ॥ 14 ॥

मन्त्रार्थ - **इयम् =** यह, इसको **वेदिः =** विद्वान् **परो =** पराया, परे **अन्तः =** बीच में, भीतर **पृथिव्याः =** पृथ्वी योग्य, पृथिवी के **अयम् =** यह **सोमो =** ऐश्वर्यमय **वृष्णो =** बलवान्, पराक्रमी **अश्वस्य =** अश्व का, तीव्र गति युक्त, व्यापक का **रेतः =** गति **अयम् =** यह **यज्ञो =** यजन **विश्वस्य =** सबका, सब विश्व का **भुवनस्य =** भुवन का, वर्तमान का **नाभिः =** नाभि **ब्रह्मा** = महान्, बड़ा, विराट, बृहत् **अयम् =** यह **वाचः =** वाणी **परमम् =** परम, अत्यन्त, उच्चतम, प्रमुखतम **व्योम =** व्योम **॥ 14 ॥**

पदार्थ - **इयम् =** यह, इसको (सर्वनाम)। **वेदिः =** विद्वान् (विद् = जानना)। **परो =** पराया, परे (अव्यय)। **अन्तः =** बीच में, भीतर (उपसर्ग, सर्वनाम)। **पृथिव्याः =** पृथ्वी योग्य, पृथिवी के (पृथ्, प्रथ् = विस्तार करना, पृथ् - व्याप्त होना, प्रकट होना, प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, प्रक्षेपण करना)। **अयम् =** यह (सर्वनाम)। **सोमो =** ऐश्वर्यमय (सु = उत्पन्न होना, उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, ऐश्वर्य होना, आसवन करना, सींचना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना, सू = प्रेरणा देना)। **वृष्णो =** बलवान्, पराक्रमी (वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना)। **अश्वस्य =** अश्व का, तीव्र गति युक्त, व्यापक का (अश् = व्यापक होना, व्याप्त होना, फैलना, फैलाना, व्यापना, पहुँचना, प्राप्त करना, संग्रह करना, राशि करना, ढेर करना, तीव्रता से पहुँचना, भोजन करना)। **रेतः =** गति (रि - जाना, जानना, पाना, हिंसा करना, री - गति करना, झरना-टपकना, लेना, शब्द करना, सुनना)। **अयम् =** यह (सर्वनाम)। **यज्ञो =** यजन (यज - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना, संयोग करना)। **विश्वस्य =** सबका, सब विश्व का (विश्व - सब कुछ)। **भुवनस्य =** भुवन का, वर्तमान का (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **नाभिः =** नाभि (नभ - नष्ट होना, दुःख देना या मार डालना, हिंसा करना, मध्य में स्थित होना, केन्द्र होना)। **ब्रह्मा** = महान्, बड़ा, विराट, बृहत् (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना)। **अयम् =** यह (सर्वनाम)। **वाचः =** वाणी (वच - बोलना, कहना, समझाना, जनाना, पढ़ना, अध्ययन करना)। **परमम् =** परम, अत्यन्त, उच्चतम, प्रमुखतम (सर्वनाम)। **व्योम =** व्योम (वि - विशेष, उ - शब्द करना, रक्षा करना, सुखाना, ऊ - शब्द करना, विश्वास करना) **॥ 14 ॥**

इति नवमम् काण्डम्

ॐ

दशमम् काण्डम्

66 अनुवाकः - 1

136 सूक्त - 1 (1)

412. याम् कल्पयन्ति वहतौ वधूम् इव विश्वरूपाम् हस्तकृताम्।
चिकित्सवः सा आरात् एतु अप नुदामः एनाम्॥।

मन्त्रार्थ - **याम्** = जिसको। **कल्पयन्ति** = समर्थ, रचनाशील। **वहतौ** = वहन करते हैं। **वधूम्** = वधू को। **इव** = समान, की भाँति, के समान। **विश्वरूपाम्** = विश्वरूप वाली। **हस्तकृताम्** = हस्तकृत। **चिकित्सवः** = जानो, निवास करो, शासन करो, चिकित्सा करो। **सा** = वह। **आरात्** = दूर से, समीप। **एतु** = प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे। **अप** = दूर, नीचे, अपकार। **नुदामः** = भेजें। **एनाम्** = प्रकाशित करने वाले को॥ **1**।

पदार्थ -**याम्** = जिसको (सर्वनाम)। **कल्पयन्ति** = समर्थ, रचनाशील (कल्प् - कल्पना करना, विचार करना, बनाना, रचना करना, शक्तिमान होना, समर्थ होना)। **वहतौ** = वहन करते हैं (वह् = वहन करना, ले जाना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना)। **वधूम्** = वधू को (वध्-हन् = मारना)। **इव** = समान, की भाँति, के समान (अव्यय)। **विश्वरूपाम्** = विश्वरूप वाली (विश्व - सब कुछ, रूप - आकार बनाना, रचना करना)। **हस्तकृताम्** = हस्तकृत (हस्त - देना, लेना, ग्रहण करना, कृ-करना)। **चिकित्सवः** = जानो, निवास करो, शासन करो, चिकित्सा करो (चिकित्स - जानना, निवास करना, शासन करना, चिकित्सा करना, पीड़ा निवारण करना, दुःख देना)। **सा** = वह (सर्वनाम)। **आरात्** = दूर से, समीप (अव्यय)। **एतु** = प्राप्त हो, जाये, ज्ञान, गति, इच्छा, प्रेरणा करे (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, ई = जाना, जानना, पाना, व्यापना, इच्छा करना, प्रेरणा करना, ए - जाना, फैलना, व्यापना, गर्भवती होना, इच्छा करना, चाहना, खाना, उड़ाना, फेंकना, भेजना, प्रेरणा करना)। **अप** = दूर, नीचे, अपकार (उपसर्ग)। **नुदामः** = भेजें (नुद् = भेजना, प्रेरणा करना, जाना)। **एनाम्** = प्रकाशित करने वाले को (आ - समन्तात्, सम्यक् रूप से, भलीभाँति, इन-एन = प्रकाशित करना, दोष होना, मिश्रण करना, विभाजन करना, अलग करना, मिलाना)॥ **1**।

67 अनुवाकः - 2

137 सूक्त - 1 (3)

412. अयम् मे वरणो मणिः सपत्नक्षयणो वृषा।
तेना रभस्व त्वम् शत्रून् प्र मृणीहि दुरस्यतः॥ 1॥

मन्त्रार्थ - **अयम्** = यह। **मे** = मेरा, मेरे लिए। **वरणो** = वरण। **मणिः** = मणि, शब्द। **सपत्नक्षयणो** = ऐश्वर्यशाली निवास। **वृषा** = पराक्रमी। **तेना** = उससे, उसके द्वारा। **रभस्व** = आनन्दित हो, उपक्रम करो। **त्वम्** = तुम। **शत्रून्** = शत्रुओं को। **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक। **मृणीहि** = मार दो। **दुरस्यतः** = दुख को, दूर को॥ **1**॥

पदार्थ -**अयम्** = यह (सर्वनाम)। **मे** = मेरा, मेरे लिए (सर्वनाम)। **वरणो** = वरण (वर - इच्छा करना, चाहना, आशा करना, वृ - वरण करना, पसन्द करना, नियोजित करना, आच्छादित करना)। **मणिः** = मणि, शब्द (मण् - शब्द करना)। **सपत्नक्षयणो** = ऐश्वर्यशाली निवास (स - सहित, साथ, पत् = गिरना, शक्तिमान होना, ऐश्वर्य होना, क्षि = निवास करना, जाना, जानना, पाना)। **वृषा** = पराक्रमी (वृष - गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजोत्पत्ति करने को समर्थ होना, वृष - बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना या पीड़ा करना, दुःख देना, पीड़ित

करना)। **तेना** = उससे, उसके द्वारा (सर्वनाम)। **रभस्व** = आनन्दित हो, उपक्रम करो। (रभ - आनन्दित होना, प्रसन्न होना)। **त्वम्** = तुम (सर्वनाम)। **शत्रून्** = शत्रुओं को (शी-शद्-शत् - जीर्ण होना, गिरना, गिराना)। **प्र** = प्रकृष्ट, प्रमुख, अधिक (उपसर्ग)। **मृणीहि** = मार दो (मृड - सुखी होना, सुख देना, मृण् - हिंसा करना, मारना, छिद्र करना)। **दुरस्यतः** = दुख को, दूर को (दु-दुर् = जाना, दूर जाना, दुःख होना, दुःख भोगना, तप्त करना, जलना, जलाना) **॥ 2 ॥**

68 अनुवाकः - 3

138 सूक्त - 1 (5)

412. इन्द्रस्य ओजः स्थ इन्द्रस्य सह स्थ इन्द्रस्य बलम् स्थ,
इन्द्रस्य वीर्यम् स्थ इन्द्रस्य नृम्णम् स्थ।
जिष्णवे योगाय ब्रह्मयोगैः वः युनज्मि।॥ ॥

मन्त्रार्थ - **इन्द्रस्य** = इन्द्र का, परम ऐश्वर्यशाली का। **ओजः** = ओज। **स्थ** = स्थित, हो। **इन्द्रस्य** = इन्द्र का, परम ऐश्वर्यशाली का। **सह** = साथ, सहित । **स्थ** = स्थित, हो। **इन्द्रस्य** = इन्द्र का, परम ऐश्वर्यशाली का। **बलम्** = बल को। **स्थ** = स्थित, हो। **इन्द्रस्य** = इन्द्र का, परम ऐश्वर्यशाली का। **वीर्यम्** = पराक्रम को, वीरता को। **स्थ** = स्थित, हो । **इन्द्रस्य** = इन्द्र का, परम ऐश्वर्यशाली का। **नृम्णम्** = नर, ले जाने वाले को। **स्थ** = स्थित, हो। **जिष्णवे** = जीतने वाला, जयाभिलाषी, जय की इच्छा वाला। **योगाय** = योग के लिए, सम्बन्ध के लिए। **ब्रह्मयोगैः** = ब्रह्मयोग से। **वः** = तुम लोग, तुम्हारा, तुमको, तुम सबका, तुम सबको, तुम सबके लिए। **युनज्मि** = जोड़ता हूँ।**॥ ॥**

पदार्थ - **इन्द्रस्य** = इन्द्र का, परम ऐश्वर्यशाली का (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **ओजः** = ओज (ओज - शक्तिमान् होना, जीवित होना, बढ़ना)। **स्थ** = स्थित, हो (स्था- स्थित होना, ठहरना)। **इन्द्रस्य** = इन्द्र का, परम ऐश्वर्यशाली का (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **सह** = साथ, सहित (सर्वनाम)। **स्थ** = स्थित, हो (स्था- स्थित होना, ठहरना)। **इन्द्रस्य** = इन्द्र का, परम ऐश्वर्यशाली का (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **बलम्** = बल को (बल् - बल होना, जाना, स्पष्ट करना, प्राण होना, चेतन होना, जीना, जीते रहना, रक्षा करना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना)। **स्थ** = स्थित, हो (स्था- स्थित होना, ठहरना)। **इन्द्रस्य** = इन्द्र का, परम ऐश्वर्यशाली का (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **वीर्यम्** = पराक्रम को, वीरता को (वीर - शूरवीर होना, पराक्रमी होना, पराक्रम करना)। **स्थ** = स्थित, हो (स्था- स्थित होना, ठहरना)। **इन्द्रस्य** = इन्द्र का, परम ऐश्वर्यशाली का (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **नृम्णम्** = नर, ले जाने वाले को (नृ - ले जाना)। **स्थ** = स्थित, हो (स्था- स्थित होना, ठहरना)। **जिष्णवे** = जीतने वाला, जयाभिलाषी, जय की इच्छा वाला (जि - सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना)। **योगाय** = योग के लिए, सम्बन्ध के लिए (यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, बांधना, बन्धन करना, गूंथना, युज - जुड़ना, मिलाप करना, मन एकाग्र करना, एकत्र करना, योग करना, जोड़ना, मिलना, मिलाना, चित्त स्थिर रखना, बांधना एकत्र करना)। **ब्रह्मयोगैः** = ब्रह्मयोग से (बृह् - वृद्धि होना, बढ़ना, बड़ा होना, उठाना, उद्योग करना, बोलना, शब्द करना, ध्वनि करना, रण करना, यु - मिश्रित करना, मिलाप करना, अलग करना, बांधना, बन्धन करना, गूंथना, युज - जुड़ना, मिलाप करना, मन एकाग्र करना, एकत्र करना)। **वः** = तुम लोग, तुम्हारा, तुमको, तुम सबका, तुम सबको, तुम सबके लिए (सर्वनाम)। **युनज्मि** = जोड़ता हूँ (यु = बांधना, बन्धन करना, गूंथना)।**॥ ॥**

69 अनुवाकः - 4

139 सूक्त - 2 (8)

412. प्रजापतिः चरति गर्भे अन्तः, अदृश्यमानो बहुधा वि जायते।
अर्धेन विश्वम् भुवनम् जजान यत् अस्य अर्धम् कतमः सः केतुः ॥ 13 ॥

मन्त्रार्थ - **प्रजापतिः** प्रजा का रक्षक (परमात्मा) **गर्भे** गर्भ में **अन्तः** भीतर **चरति** विचरता है। **अदृश्यमानो** =

अदृश्यमान **बहुधा** बहुत प्रकारों से **वि जायते** विशेषकर जन्म लेता है। **अर्धेन =** आधे द्वारा, अर्ध द्वारा **विश्वम् =** सबको, सब विश्व को **भुवनम् =** हो रहा, वर्तमान **जजान =** उत्पन्न किया **यत् =** जिसे, जो **अस्य =** इसका **अर्धम् =** आधे, अर्ध को **कतमः =** कितना **सः =** वह, उसने **केतुः =** ज्ञानी, निवास, परामर्श दाता **॥ 13 ॥**

भावार्थ - परमात्मा अजन्मा है, उसका कभी जन्म नहीं हुआ, वह कभी जन्म नहीं लेता है, यह परम सत्य है। परन्तु यह भी कहा जा रहा है कि वह प्रजापति परमात्मा गर्भ में विचरण करता है, वह जन्म न लेवे वाला होते हुए भी बहुधा जन्म लेता है। यही विरोधाभास अलंकार है, काव्यगुण चमत्कार है। यही काव्य की सरसता रोचकता है। वास्तव में यह सत्य है कि गर्भ में जो भी आता है, उस जीव की चेतनाशक्ति है तो परमात्मा की चेतना ही। अतः वही गर्भ में विचरण करता है। इस प्रकार जन्म नहीं लेने वाला होकर भी बहुधा जन्म लेता रहता है।

पदार्थ - **प्रजापतिः** प्रजा का रक्षक (प्र - प्रकृष्ट, जन् - उत्पन्न करना, पत - ऐश्वर्य होना, रक्षा करना)। **गर्भे =** गर्भ में (गृभ्-गर्भ् - अन्दर होना, अन्तःवास करना)। **अन्तः =** भीतर चरति विचरता है (चर् -चलना, विचरण करना)। **अदृश्यमानो =** अदृश्यमान (अ - नहीं, दृश्-पश्य -देखना)। **बहुधा** बहुत प्रकार से **वि जायते** विशेषकर जन्म लेता है (वि - विशेष, जन् - जन्म लेना, उत्पन्न होना)। **अर्धेन =** आधे द्वारा, अर्ध द्वारा (अर्ध - आधा)। **विश्वम् =** सबको, सब विश्व को (विश्व - सब कुछ)। **भुवनम् =** हो रहा, वर्तमान (भु = जाना, घर्षण करना, भू - होना, रहना, उत्पन्न होना, प्राप्त होना, कल्पना करना, चिन्तन करना, मिल जाना, एकत्र करना)। **जजान =** उत्पन्न किया (उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन- उत्पन्न करना)। **यत् =** जिसे, जो (सर्वनाम)। **अस्य =** इसका (सर्वनाम)। **अर्धम् =** आधे, अर्ध को (अर्ध - आधा)। **कतमः =** कितना (सर्वनाम)। **सः =** वह, उसने (सर्वनाम)। **केतुः =** ज्ञानी, निवास, परामर्श दाता (केत - बुलाना, आमन्त्रित करना, परामर्श देना, सम्मुख वार्ता करना, कित् - जानना, निवास करना, रोग निवारण करना) **॥ 13 ॥**

413. निवेशनः सङ्गमनो वसूनाम्,
देवः इव सविता सत्य-धर्मा,
इन्द्रो न तस्थौ समरे धनानाम् ॥ 42 ॥

मन्त्रार्थ - **वसूनाम् =** वसुओं का **निवेशनः =** प्रवेश करने वाला, निवेश करने वाला **सङ्गमनो =** संगमन करने वाला **देवः =** देव **इव =** के समान **सविता =** सृष्टिकर्ता, उत्पन्न करने वाला, ऐश्वर्यवान्, ऐश्वर्य देने वाला **सत्य-धर्मा =** सत्य धर्मयुक्त **इन्द्रो =** परम ऐश्वर्यवान् **न =** के समान **धनानाम् =** धनों का **समरे =** सम्यक् जाने वाले अथवा साथ चलने वाले **समरे =** समर में, सम्यक् प्रगति, वाणी, हिंसा में **तस्थौ =** स्थित है **॥ 42 ॥**

भावार्थ - वसुओं का प्रवेश व निवेश करने वाला, संगमन करने वाला, सभी, रूपवाला उत्तम वाणियों द्वारा अभिमुख, बोलते, देखते हैं। देव के समान सविता **अर्थात्** सृष्टिकर्ता, उत्पन्न करने वाला, ऐश्वर्यवान् तथा ऐश्वर्य देने वाला परमात्मा तथा उपासक सत्य धर्मयुक्त इन्द्र अर्थात् परम ऐश्वर्यवान् परमात्मा तथा उपासक के समान पथियों अर्थात् यात्रियों अथवा मार्गो के समर अर्थात् सम्यक् जाने वाले अथवा साथ चलने में स्थित है **॥ 42 ॥**

पदार्थ - **निवेशनः =** प्रवेश करने वाला, निवेश करने वाला (नि - निश्चित, विश - प्रवेश करना, भीतर जाना, धंसना)। **सङ्गमनो =** संगमन में (सम् - सम्यक्, गम् - जाना, सम्-गम्, सङ्गम् - मिलना, साथ चलना)। **वसूनाम् =** वसु द्वारा (वस् = वसना, रहना, धारण करना, स्थित होना, सीधा होना, निवास करना, दया-स्नेह, प्रीति-हिंसा-अपहरण करना, आच्छादन करना, वस्त्र धारण करना, कतरना, लेना)। **देवः =** देव (दिव् = तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, खेलना)। **इव =** समान, की भाँति, के समान (अव्यय)। **सविता =** सृष्टिकर्ता, उत्पन्न करने वाला, ऐश्वर्यवान् तथा ऐश्वर्य देने वाला (सु - ऐश्वर्य होना, उत्पन्न करना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, दबाना, हिलाना)। **सत्य-धर्मा =** सत्य धर्म के लिए (सत् = होना, सतत होना, निरन्तर होना, सत्य होना, अस्तित्व होना, धृ = धारण करना, नष्ट करना, टुकड़े करना, गिर पड़ना, स्थिर रहना)। **इन्द्रो =** परम ऐश्वर्यवान् (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **न =** नहीं, समान, उपमार्थक (अव्यय)। **तस्थौ =** स्थित किया है, स्थित हैं (तस - स्थापित होना, स्थापना करना, फेंकना, उड़ा देना, भेजना, खोदना, कुम्हलाना, स्था-तिष्ठ - स्थित होना, ठहरना)। **समरे =** सम्यक् प्रगति,

शब्द, हिंसा में (सम् - सम्यक् रूप से, भली भाँति, ऋ-अर् - जाना, जानना, पाना, शब्द करना, महत्व दिखाना, हिंसा करना)। **धनानाम् =** धनों का (धन् - शब्द करना, गति करना, चलना, जाना, जानना, पाना, उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना) **॥ 42 ॥**

70 अनुवाकः - 5

140 सूक्त - 1 (9)

412. अघायताम् अपि नह्य मुखानि सपत्नेषु वज्रम् एतम्।
इन्द्रेण दत्ता प्रथमा शतौदना भ्रातृव्यघ्नी यजमानस्य गातुः ॥॥

मन्त्रार्थ - अघायताम् = पापी, अपराधी। **अपि =** भी, निकट। **नह्य =** बांध दे। **मुखानि =** मुख से। **सपत्नेषु =** ऐश्वर्यवान्। **वज्रम् =** वज्र, गतिमान को। **एतम् =** यह, इसको। **इन्द्रेण =** इन्द्र द्वारा, परम ऐश्वर्य द्वारा। **दत्ता =** दिया हुआ। **प्रथमा =** प्रथम। **शतौदना** = सैकड़ो उत्कृष्ट वाली। **भ्रातृव्यघ्नी =** भ्रातृव्य का हनन करने वाला। **यजमानस्य =** यजमान का। **गातुः =** स्तुति , गान, गाय, गायक, गाने वाले **॥॥**

पदार्थ -अघायताम् = पापी, अपराधी (अघ् = पाप, अपराध करना)। **अपि =** भी, निकट (अव्यय)। **नह्य =** बांध दे (नह् - बांधना, अड़ाना)। **मुखानि =** मुख से (जाना, खाना, मुख् - मुख्य होना, जाना, खाना)। **सपत्नेषु =** ऐश्वर्यवान् (स - सहित, साथ। पत् = जाना, उड़ना, पतन होना, ऐश्वर्य होना, पराक्रम होना)। **वज्रम् =** वज्र, गतिमान को (वज् - गति करना, जाना)। **एतम् =** यह, इसको (सर्वनाम)। **इन्द्रेण =** इन्द्र द्वारा, परम ऐश्वर्य द्वारा (इन्द् = परम ऐश्वर्य होना)। **दत्ता =** दिया हुआ (दा, दद्, दत् = दान करना, देना, त्याग करना, सौंपना, लौटाना, रखना)। **प्रथमा =** प्रथम (प्रथ् = विस्तार होना, प्रसिद्ध होना)। **शतौदना** = सैकड़ो उत्कृष्ट वाली (शता = सौ (सर्वनाम), उद् = उत्कृष्ट होना, उच्च होना, उदार होना, अक् - जाना, टेढ़ा जाना, उन्द् - गीला करना, आद्र होना, कष्ट होना)। **भ्रातृव्यघ्नी =** भ्रातृव्य का हनन करने वाला (भृ = भरण करना, वि - विशेष, घ्न-हन् - मारना)। **यजमानस्य =** यजमान का (यज - देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना, संयोग करना)। **गातुः =** स्तुति , गान, गाय, गायक, गाने वाले (गा = स्तुति करना, गाना, गायन करना, जाना, गमन करना, जानना, गम् - जाना, जानना, पाना) **॥॥**

इति दशमम् काण्डम्

ॐ

स्वामी शरण कृत साहित्य

मो. 9839105629, 8687849004

1. ऋग्वेद भाष्य :- ऋग्वेद भाष्य के इस सार-संक्षेप संस्करण में सन्धियों से मुक्त सरल पाठ के साथ ही मन्त्रार्थ, भावार्थ तथा पदार्थ भी प्रस्तुत किया गया है। मन्त्रों के सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का यह इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत, पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है, कोई भी शब्द अपनी ओर से जोड़ा नहीं गया है। जन सामान्य तथा शोधकर्ताओं-अध्येताओं के लिए अत्यन्त उपयोगी संस्करण। (बृहद् आकार) **रु. 2000.00**

2. सामवेद भाष्य :- सामवेद भाष्य के इस सम्पूर्ण संस्करण में सन्धियों से मुक्त सरल पाठ के साथ ही मन्त्रार्थ, भावार्थ तथा पदार्थ भी प्रस्तुत किया गया है। मन्त्रों के सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का यह इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है, कोई भी शब्द अपनी ओर से जोड़ा नहीं गया है। अध्येताओं के लिए अत्यन्त उपयोगी संस्करण। (बृहद् आकार) **रु. 2000.00**

3. अथर्ववेद भाष्य :- अथर्ववेद भाष्य के इस सार-संक्षेप संस्करण में सन्धियों से मुक्त सरल पाठ के साथ ही मन्त्रार्थ, भावार्थ तथा पदार्थ भी प्रस्तुत किया गया है। मन्त्रों के सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का यह इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है, कोई भी शब्द अपनी ओर से जोड़ा नहीं गया है। अध्येताओं के लिए अत्यन्त उपयोगी संस्करण। (बृहद् आकार) **रु. 2000.00**

4. यजुर्वेद भाष्य :- यजुर्वेद भाष्य के इस सम्पूर्ण संस्करण में सन्धियों से मुक्त सरल पाठ के साथ ही मन्त्रार्थ, भावार्थ तथा पदार्थ भी प्रस्तुत किया गया है। मन्त्रों के सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का यह इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है, कोई भी शब्द अपनी ओर से जोड़ा नहीं गया है। अध्येताओं के लिए अत्यन्त उपयोगी संस्करण। (बृहद् आकार) **रु. 2000.00**

5. वेदायन भाष्य :- चारो वेदों से चुने हुए प्रमुख वेद सूक्तों का मन्त्रार्थ, पदार्थ, भावार्थ तथा सरस गेय पद्यानुवाद भी दिया गया है। सन्धियों-संयुक्ताक्षरों से मुक्त सरल सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत, पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है, कोई भी शब्द अपनी ओर से जोड़ा नहीं गया है। जन सामान्य तथा शोधकर्ताओं-अध्येताओं के लिए उपयोगी संस्करण। **रु. 500.00**

6. वेदायन प्रवचन :- चारो वेदों से चुने हुए प्रमुख वेद सूक्तों का मन्त्रार्थ, पदार्थ, भावार्थ तथा सरस गेय पद्यानुवाद भी दिया गया है। इसके स्नाथ ही इन मन्त्रों पर विस्तृत प्रवचन भी इस पुस्तक में संकलित हैं। सन्धियों-

संयुक्ताक्षरों से मुक्त सरल सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत, पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है। सभी के लिए उपयोगी संस्करण। **रु. 500.00**

7. वेदायन (सरल पाठ, काव्यानुवाद, भावार्थ सहित):- चारो वेदों से चुने हुए प्रमुख वेदसूक्तों का सन्धियों से मुक्त सरल पाठ, काव्यानुवाद एवम् भावार्थ। **रु. 100.00**

8. वेदायन (सरल पाठ, काव्यानुवाद) :- चारो वेदों से चुने हुए प्रमुख वेदसूक्तों का सन्धियों से मुक्त सरल पाठ, काव्यानुवाद एवम् भावार्थ। वेदपाठ तथा उपासना के लिए। **रु. 100.00**

9. वेद सूक्तायन :- चारो वेदों से चुने हुए 15 प्रमुख वेदसूक्तों का सन्धियों से मुक्त सरल पाठ (छन्द पाठ), मन्त्रार्थ, विशेष भावार्थ-व्याख्या, व्याकरण-सम्मत पदार्थ (शब्दार्थ) सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। **रु. 100.00**

10. यजुर्वेद एकादशी :- यजुर्वेद के अन्तिम 11 अध्यायों का मन्त्रार्थ, पदार्थ, भावार्थ दिया गया है। सन्धियों-संयुक्ताक्षरों से मुक्त सरल सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत, पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है, कोई भी शब्द अपनी ओर से जोड़ा नहीं गया है। जन सामान्य तथा शोधकर्ताओं-अध्येताओं के लिए उपयोगी संस्करण। **रु. 500.00**

11. चतुर्वेद सरल पाठ :- प्रथम बार प्रस्तुत सन्धियों से मुक्त चारों वेदों का सरल पाठ जन साधारण के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है। (बृहद् आकार) **रु. 2500.00**

12. ऋग्वेद सरल पाठ :- ऋग्वेद का सम्पूर्ण सरल पाठ प्रथम बार प्रस्तुत किया जा रहा है। (बृहद आकार) **रु. 900.00**

13. सामवेद सरल पाठ :- सामवेद का सम्पूर्ण सरल पाठ प्रथम बार प्रस्तुत किया जा रहा है। **रु. 500.00**

14. अथर्ववेद सरल पाठ :- अथर्ववेद का सम्पूर्ण सरल पाठ प्रथम बार प्रस्तुत किया जा रहा है। (बृहद आकार) **रु. 700.00**

15. यजुर्वेद सरल पाठ :- यजुर्वेद का सम्पूर्ण सरल पाठ प्रथम बार प्रस्तुत किया जा रहा है। **रु. 700.00**

16. वैदिक धात्वादि कोश :- पाणिनि तथा काशकृत्स्न प्रोक्त धातुपाठों को समाहित कर सम्पूर्ण धातुकोश तैयार किया गया है। उपसर्ग, अव्यय, संख्या, सर्वनाम शब्द भी दिये गये हैं। इसकी सहायता से वेद सहित सम्पूर्ण संस्कृत साहित्य का अर्थ किया जा सकता है। अत्यन्त उपयोगी संस्करण। **रु. 500.00**

17. वैदिक शब्दकोश :- वैदिक पदों (शब्दों) का धातुज, व्याकरण-सम्मत प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ। इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत वैदिक शब्दकोश। (वृहद आकार) **रु. 900.00**

18. वैदिक शब्दकोश (लघु संस्करण) :- वैदिक पदों (शब्दों) का धातुज, व्याकरण-सम्मत प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ। इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत वैदिक शब्दकोश। **रु. 200.00**

19. सरल संस्कृत व्याकरण :- व्याकरण के मूल तत्वों पर आधारित इस पद्धति से शब्द रूप, धातु रूप, पाणिनीय सूत्र रटे बिना एक मास में संस्कृत पढ़ना, लिखना, बोलना सीख सकते हैं। दशकों के अनुभव के बाद प्रस्तुत उपयोगी चमत्कारिक व्याकरण प्रणाली। **रु. 95.00**

20. वैदिक इतिहास :- ब्रह्मा व मनु से आरम्भ कर बुद्ध तक का सम्पूर्ण क्रमबद्ध इतिहास एक पुस्तक में सर्वप्रथम प्रस्तुत किया गया है। सूर्यवंश की 128 पीढ़ियों का इतिहास प्रथम बार प्रस्तुत किया है। सूर्यवंश, चन्द्रवंश

की शाखाओं सहित मनु से भोज तक सम्पूर्ण वंशावली भी दी गयी है। **रु. 200.00**

21. ओम् साधना :- ओम् साधना, वैदिक संस्कृति, वैदिक आध्यात्मिक चिकित्सा, वैदिक योग साधना। **रु. 200.00**

22. चिन्तन प्रवाह :- वैदिक संस्कृति तथा जीवन दर्शन सम्बन्धी चिन्तन। **रु. 500.00**

23. वैदिक विज्ञान :- वैदिक संस्कृति, आध्यात्मिक चिकित्सा, वैदिक योग साधना। **रु. 50.00**

24. युगबोध :- प्रबन्ध काव्य। **रु. 300.00**

25. चेतना :- काव्य संकलन। **रु. 100.00**

26. नवांकुर :- काव्य संकलन। **रु. 20.00**

आगामी प्रकाशन योजना

1. वैदिक व्याकरण : पंचपाठी व्याकरण का समयानुकूल प्रस्तुतीकरण। अष्टाध्यायी सूत्रों का अनुवृत्ति सहित प्रस्तुतीकरण, जिससे प्रत्येक सूत्र स्वयम् ही सम्पूर्ण अर्थ स्पष्ट कर सके। व्यापक प्रभाव वाले सूत्रों को महत्व देते हुए, अपवादों को स्पष्ट करना तथा उनकी सीमाओं का स्पष्टीकरण करना। पंचपाठी की अन्य पुस्तकों का भी इसी भाँति सम्पादन तथा उणादि कोष आदि का अकारादि क्रम से प्रस्तुतीकरण।

2. वैदिक महापुराण : पुराण विद्या का व्यापक शोधपरक अध्ययन कर पंच-लक्षणों के आधार पर सम्पादन।

3. वैदिक जीवन : वैदिक संस्कृति तथा जीवन दर्शन के साथ ही वैदिक साहित्य का सम्पूर्ण परिचय।

❖❖ ❖ ❖❖

पालीवाल प्रकाशन

117/एच-1/02, पाण्डु नगर, जे.के. मन्दिर के सामने, कानपुर - 208005

बेवसाईट - vedayan.simplesite.com

मो. 9839034844, 9839105629